होमियोपैथिक

भेषज-लक्षण-संग्रह

या

मेटीरिया-मेडिका

(रोग-चिकित्सा-निर्घण्टके साथ)

प्रथम खण्ड

श्रीमहेशचन्द्र भट्टाचार्य एण्ड को०

द्वारा

सङ्कलित और प्रकाशित



इकानमिक फार्मेसी

नं० ८४ क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।



प्रथम संस्करण] श्रावण सन १९३५ [मूल्य ८)

प्रकाशक—
श्रीफकीरदास सरकार
इकानमिक फार्मेसी
८४ नं० क्लाइव स्ट्रीट
कलकत्ता।

मुद्रक—
श्री शैलेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य
इकानमिक प्रेस
२५ नं० रायबागान स्ट्रीट
कलकत्ता।

मुखबन्ध ।

साधारण दृष्टिसे देखनेपर यह मालूम होता है कि दुर्गाप्रसादकी आँख-कान, नाकसे मथुरा प्रसादकी आँख, कान, नाकका बहुत कुछ सादृश्य है ; परन्तु थोड़ा ध्यान देकर देखनेसे ही स्पष्ट मालूम होता है, कि दुर्गाप्रसादके चेहरेके अवयव और मथुरा प्रसादके चेहरेके अवयव सब ठीक एक-समान नहीं हैं—उनमें प्रभेद है। भीष्म, द्रोण, भीम, अर्जुन प्रभृति सभी एक एक महारथी थे ; सभी महान योद्धा थे, पर प्रत्येककी शूरता-वीरता भिन्न भिन्न प्रकारकी थी। महाभारत पढ़नेवाले अच्छी तरह जानते हैं, कि भीमसेनका गदा-संचालन और शान्तनु-पुत्रका अत्यन्त तेजीसे ज्या-रोपण और कोदण्ड-टंकार—इसमें सन्देह नहीं, कि उनकी वीरताके परिचायक हैं ; पर ये दोनोंही वीरत्व एक जातिके नहीं हैं—भिन्न और स्वतन्त्र प्रकारके हैं। जिन्होंने होमियोपैथिक मेटीरिया-मेडिका अच्छी तरह नहीं पढ़ी, वे केवल "चिकित्सा-प्रकरण" (Practice) ग्रन्थके सहारे दवा चुननेके समय, बहुत-सी जगहोंपर, कितनी ही दवाओंका सादृश्य देखकर, उन दवाओंको समगुणवाली दवाएँ समझ लेते हैं ; पर वास्तवमें ऐसी बात नहीं है। जैसे, आर्सेनिक और सिकेलि इन दोनों दवाओंमें ही "शरीरमें दाह" "जलन" दूर करनेकी शक्ति है ; पर यदि शरीरमें दाह रहने पर भी रोगी ओढ़नेसे शरीर ढक रखना चाहे तो आर्सेनिकके प्रयोगसे लाभ होता है, पर यदि गात्र-दाहके कारण रोगी वस्त्र उतार फेंके, शरीर पर वस्त्र बिलकुल ही न रखना चाहे तो सिकेलि लाभ करता है। इस प्रथम खण्डमें प्रायः साढ़े पाँच सौ दवाओंका विवरण हैं और प्रत्येक दवाका लक्षण प्रायः इस ढंगसे वर्णन किया गया है, कि उसके पढ़नेसे उक्त दवाओंका एक वास्तविक चित्र पाठकोंके चित्त-पटपर अङ्कित हो जाये। इसमें सफलता कितनी मिली है, इसका निर्णय तो पाठक ही करें। किसी दवाको पढ़नेके समय नये सीखनेवालेको पहले उस दवाकी "वृद्धि,, "उपशम" "आभास" और "सम्बन्ध"—इन कई विषयों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। * इससे उस दवाका चित्र या

---

* अर्थात (क) किस-दवाके बाद कौन दवा ठीक बैठती है (ख) किसी दवाके बाद कौन दवा न देनी चाहिये (ग) किस दवाकी विष क्रियाको कौन दवा नष्ट करती है (विशेष विवरणके लिये पारिवारिक चिकित्सा ८ वां संस्करण, तीसरा अध्याय देखिये)।

स्वरूप बहुत कुछ समझमें आ जायगा। और यदि चिकित्सक किसी रोगकी चिकित्सा करते समय, जिस दवाको उन्होंने रोगीको देनेके लिये चुना है, उसका प्रयोग करनेके पहले, उस दवाका समस्त विवरण पढ़ने बाद "सदृश" वेराग्में दी हुई समस्त दवाएं मनोयोग-पूर्वक पढ़ें और इस तरह पढ़ लेने बाद, जिस दवाके लक्षणोंसे रोगीके रोग-लक्षणोंकी सबसे अधिक समानता दिखाई दे, सदृश-विधानाचार्य हनिमैनके मतसे उस रोगकी वही सच्ची और प्रकृट दवा है। † इस तरह जिस दवाका निर्वाचन और प्रयोग होता है, उससे रोगीका तो मंगल होता ही है, साथही चिकित्सकको भी भरपूर यश प्राप्त होता है।

इस ग्रन्थके प्रणयन और संकलनमें असाधारण परिश्रम हुआ है और वैसे ही प्रकारसे धन-व्यय। आशा है, हमारे सहृदय ग्राहक तथा पाठक, इसे भी, हमारे अन्य ग्रन्थोंकी भांति ही अपनाकर हमारा परिश्रम सार्थक करेंगे।

इकानमिक फार्मेसी न० ८४ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्ता	श्रीमहेशचन्द्र भट्टाचार्य एण्ड को०

---

† यह भी बता देना आवश्यक है, कि कभी कभी रोगके विशेष लक्षणके साथ दवाका विशेष लक्षण मिलाकर दवा देनेपर भी आशातीत लाभ होता है।

प्रथम खण्डकी

औषध-सूची ।

पाकाशय ।—बहुत भूख ; उदरके ऊपरी-प्रदेशमें (Epigastrium) चबानेकी तरह दर्द और सुस्ती मालूम होना (पल्स, सिपिया, इग्नेशिया)। मांस, चटनी, मूली वगैरह सहजमें न पचनेवाली चीजें खानेकी प्रबल इच्छा।

आँत और तलपेट ।—भोजनके बाद पेट गुड़गुड़ाना, इसके साथ ही भूख ; यकृत छोटा और कड़ा मालूम होना ।

मलद्वार और मल ।—मलद्वारमें जलन ; कब्जियत ।

मूत्रयंत्र ।—दिन, रात बार बार पेशाब होना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रोगिनी समझती है, कि उसका जरायु कमजोर और कोमल हो गया है । जरायुके ऊपरी भागमें अकड़न जैसा दर्द और दबानेपर आराम मालूम होना ।

श्वास-यंत्र ।—श्वास लेने और छोड़नेमें तकलीफ (ऐकोन, आर्स); मालूम होता है, मानो दाहिना फेफड़ा छोटा और कड़ा हो गया है ।

हृत्पिण्ड ।—पाकाशयके फूलनेके साथ ही साथ, हृत्पिण्डकी क्रियाका भी बढ़ जाना ।

गर्दन और पीठ ।—दाहिनी ओरकी स्कन्धफलकास्थिके नीचे दर्द (चेलिडो); कमरके स्थानपर कमजोरी मालूम होना ।

निद्रा ।—औंघाई या तन्द्रा ; रातमें बेचैनी ; इधर उधर करवट बदलना ।

ज्वर ।—समूचे शरीरमें बहुत अधिक कपकपी मालूम होना, मानो खून जमकर बरफकी तरह हो गया है (कैप्सि, लेके); शीत ऊपरकी ओरसे नीचेकी ओर उतरता है ।

सम्बन्ध ।—एस्कुलस, कोपेबा, नक्स, इग्नेशिया; टेरिबिन्थसे तुलनीय। यह मेद्रम-कार्ब और इग्नेशियाकी सदृश गुणवाली दवा है ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम व्यवहारमें लाना चाहिये; कभी कभी ३० वीं शक्ति।

एबीज़ नाइग्रा ।

(ABIES NIGRA)

दूसरा नाम ।—इसे "पाइनस नाइग्रा" कहते हैं ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकामें पैदा होनेवाले एक प्रकारके वृक्ष विशेषके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक है:—कब्जियत; खांसी; डकार; रक्तस्राव; व्याधि-शङ्का; मलेरिया ज्वर; चाय और तम्बाकूका दुष्परिणाम।

उपयोगिता और आभास।—इस दवाकी क्रिया पाकाशयपर, खासकर उसके श्लैष्मिक आवरणपर विशेष होती है। जिस अंशपर यह काम करती है, उसी अंशके भीतरी प्रदेशपर इसका आक्रमण हुआ करता है। इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है—"पाकाशयके बाईं ओर मानो एक सिझाया हुआ अण्डा अड़ा हुआ है।" वृद्ध मनुष्योंके और चाय और तम्बाकू बहुत व्यवहार करनेवालोंके अजीर्ण रोगमें, यदि ऊपर बताया हुआ, निर्णायक लक्षण मौजूद रहे तो यह दवा अव्यर्थ फलप्रद होती है।

लक्षणावली।

मन।—उदास और अपनेको हमेशा रोग-ग्रस्त समझता है। पढ़ने या सोचनेमें असमर्थ।

गलेके भीतर।—दम बन्द-प्राय; मालूम होता है, कि गलनालीके नीचेवाले स्थानपर कुछ अड़ा हुआ है।

पाकाशय।—भोजनके बाद पेटमें दर्द, मानो एक सिझाया हुआ अण्डा पाकस्थलीमें बाईं ओर रुका हुआ है। पाकाशयमें कोई ऐसी चीज है, जिससे दर्द पैदा होता है। अन्ननालीके नीचेवाले स्थानपर बहुत अधिक सङ्कोचन मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो सब कुछ एक साथ सटकर, एक ढेला बन गया है। डकार, सवेरे एकदम भूख न लगना, पर दोपहरके समय और रातमें बहुत अधिक इच्छा उत्पन्न हो जाना। मुँहसे बदबू आया करती है।

तलपेट।—मल कड़ा।

वक्षके भीतर।—श्वास-कष्ट; दर्द मालूम होना; मानों कोई पदार्थ छातीमें अड़ा हुआ है, जो खाँसनेपर निकाल जायगा। रोनेपर दर्द बढ़ जाना। गल-नालीमें मानों कुछ अड़ जाता है, जिससे सांस रुक जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तीन महीने तक ऋतु-स्राव बन्द रहता है।

हृत्पिण्ड ।—कतरनीकी तरह तेज दर्द ; हृत्पिण्डकी चाल धीमी और भार-मिली ।

पीठ ।—कमरमें दर्द, अङ्ग-प्रत्यङ्ग और हड्डियोंमें वातसे उत्पन्न दर्द ।

निद्रा ।—दिनमें तन्द्राका भाव, रातमें नींद न आना और बेचैनी ; बुरे सपने देखा करता है ।

ज्वर ।—पर्यायक्रमसे जाड़ा और गर्मी मालूम होना ; पुराना सविराम ज्वर और पेटमें दर्द ।

वृद्धि ।—पेटभर खा लेनेपर दर्द मालूम होना ।

सम्बन्ध ।—लैक्टिक-एसिड [मानो वक्षोस्थि (Sternum) के ऊपरी स्थानमें खायी हुई सब चीजें अड़ी हुई हैं] सिङ्कोना [मानो वक्षोस्थिके बीचके स्थानपर एक गोले जैसा पदार्थ अड़ा हुआ है ।] ; ब्रायोनिया, नक्स-वोम, कैलि-कार्ब ।

शक्ति ।—१ ली से ३० वीं शक्ति तक ।

ऐब्रोटैनम ।

(ABROTANUM)

दूसरा नाम ।—सदर्न उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दक्षिणी युरोपके एक प्रकारके छोटे पौधेके ताजे रसका मदर-टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—लक्षणके अनुसार नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक हुआ है:-फोड़ा ; जाड़ेके दिनोंमें बवाई फटना ; मृगी ; वातरक्त ; अर्श (बवासीर) ; क्षय-ज्वर ; कोरण्ड या जल कोरण्ड ; अजीर्ण और अतिसार ; बच्चोंका सुखण्डी रोग ; बच्चोंकी नाकसे खून गिरना ; पक्षाघात (लकवा) ; आमवात (पित्ती निकलना) ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—छोटे बच्चोंकी बीमारीमें, खासकर उनके दोनों पैरोंके दुबलापनकी बीमारीमें यह उपयोगी है । बहुत भूख पर भरपूर भोजन मिलनेपर भी दुर्बल होते जाना (आयोड, नेट्रम, सैनि, ट्यूब) अतिसार (पतले दस्त आना) ; रुककर या एकाएक बन्द होकर वात-रोग

पैदा हो जाना; वात-रोगका इधर उधर हटते रहना अर्थात् सन्धि-स्थानोंका वातका दर्द हटकर एकाएक हृत्पिण्ड या मेरुदण्डमें वात-रोग पैदा हो जाना। चेहरेपर झूलती हुई त्वचा या मांस झूल पड़ना; तुरन्तके जनमे हुए बच्चोंकी नाभीसे रस-रक्त बहना इत्यादि रोगोंमें इसका व्यवहार होता है

लक्षणावली।

मन।—चिड़चिड़ा, क्रोधी, नीरस और उत्कण्ठा भरा। कुछ सोच नहीं सकता; उत्तेजित; बहुत बकवादी इत्यादि; बहुत निष्ठुर और निष्ठुर कामोंमें अनुराग।

मस्तक।—माथा सीधा नहीं रख सकता। मानसिक परिश्रमसे दिमाग में कमजोरी मालूम होती है; माथेमें टनक; खुजली इत्यादि।

मुखमण्डल।— वृद्ध मनुष्योंकी तरह सिकुड़ी हुई त्वचा; सूखी, मलिन और ज्योति-हीन आंखोंके चारो ओर रेखा (बैराइटा-कार्ब, ओपियम, सार्सा)। बहुत दुबला और एक तरहके व्रणसे भरा हुआ चेहरा। नाकसे रक्त-स्राव। क्षय हुए दांतमें (Carious teeth) छेदनेकी तरह दर्द।

पाकाशय प्रभृति।— मुँहमें लसदार चीज पैदा होना और खट्टापनका स्वाद। भूख खूब लगना पर भोजन भरपूर करनेपर भी बहुत ज्यादा दुबला-पन (आयोड, नेट्रम-म्यूर, सैनिक, टियुबर); खाये हुए पदार्थ अजीर्ण अवस्थामें निकल जाते हैं। (ऐण्टिम-क्रूड, आर्जेण्टम-नाइट्रस, कैल्केरिया-कार्ब और फास, सिनकोना, फेरम, ग्रैफाइटिस, हिपर, नक्स-मस, ओलियेण्डर, फास, ऐसिड-फास, पोडोफिल, सलफर,); कतरने और चबाने जैसा दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानों पाकाशय गहरे पानीमें तैर रहा है, इसके साथ ही ठण्डा मालूम होना। दूध रोटी खानेकी इच्छा।

तलपेट और आँतें।—एक गुल्म या गोलेकी तरह पदार्थ अटका हुआ है—ऐसा मालूम होना। पेट फूलना, कब्जियत और उदरामय (पतले दस्त) पर्यायक्रमसे होने लगता है। अर्श (बवासीर); बार बार पाखाना लगना; खून मिला मल; वातका दर्द दब जाने बाद बवासीरका बढ़ जाना।

मलद्वार।—मलके साथ सूत-क्रिमि, बवासीर। अर्श बाहरी मसेमें जलन; छूने या पाखाना जानेके समय उस जलनका बढ़ जाना (कास्टिकम)

जननेन्द्रिय।—बच्चोंका कोरण्ड रोग। बायें डिम्बाशयमें दर्द।

श्वास-यंत्र ।—बहुत ज्यादा दर्द। सांस लेने और छोड़नेमें बाधा प्राप्त होना। उदरामय (पतले दस्त) के अन्तमें सूखी खांसी। फुस्फुसवेष्ट-प्रदाह (Pleurisy), इसके साथ ही वक्षमें दबाव पड़नेके कारण सांसमें तकलीफ।

हृत्पिण्ड ।—वक्ष और हृत्पिण्डके स्थानमें तेज दर्द। वात फैल जाना; नाड़ी क्षुद्र और दुर्बल।

पीठ ।—गर्दन बहुत कमजोर, मानों माथेका बोझा सहन नहीं कर सकती (इथूजा)। पीठमें सुन्न जैसा मालूम होना और दर्द। कटि-देशसे कोप-रज्जु तक दर्द। अर्श रोगके कारण त्रिकास्थि या पिछले कटिदेश (Sacrum) में दर्द। एकाएक मेरुदण्ड और मेरुमज्जाका प्रदाह (Myelitis) पैदा हो जाना। पीठमें लगातार दर्द होते रहना; हिलानेपर घटना; सुन्न भाव और पक्षाघात (लकवा)

प्रत्यङ्ग आदि ।—उदरामय एकाएक रुक जानेकी वजहसे वात-रोगका पैदा हो जाना। रोगवाली जगहपर सूजन आनेके पहले बहुत दर्द मालूम होना। वातका दर्द या अर्श या आमाशयका पर्यायक्रमसे पैदा होना। सन्धि वात रोगमें सब सन्धियां बहुत कड़ी (न झुकनेवाली) और फूली हुई हो जाती हैं और उनमें कांटा गड़ने जैसा दर्द मालूम होता है। कलाई और गुल्फ-सन्धिमें प्रदाह और दर्द। शरीरमें सब जगह सुन्नका भाव और दर्द होता है। बहुत कमजोरी और सुस्ती मालूम होना। दोनों पैर बहुत ही दुबले-पतले, शीतकालके फोड़े, बिवाई (Chilblains—ऐगरिकस)

त्वचा ।—चेहरेपर खुजली; रुकी हुई (Suppressed) खुजलीके कारण त्वचाका रङ्ग बैंगनी हो जाना, ढीला और झूलता हुआ चमड़ा, फोड़ा (हिपरके बाद इसका व्यवहार करना चाहिये)

सम्बन्ध ।-सदृश ।—फोड़ेमें हिपरके बाद ऐकोनाइट और ब्रायोनियाके बाद (प्लुरिसि या फुस्फुस-आवरणका प्रदाह); ऐसिड-बेञ्जो, सार्सा, टियुबर्क्युलिन (मांस-क्षय सुखण्डी रोगमें Marasamus)

तुलनीय ।—ऐब्सिन्थ, कैमो, सिना, नक्स, ऐगार।

शक्ति ।—मूल अर्क और १ लोसे ३० वीं शक्ति तक।

ऐब्सिन्थियम्।

(ABSINTHIUM)

दूसरा नाम।—वार्म वुड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—युरोपके एक तरहके पौधेके कोमल पत्तों और फूलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—इसके द्वारा नीचे लिखे रोग आरोग्य हुए हैं:—मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता; मूत्रपाण्डु; अजीर्ण; बच्चोंकी अकड़न; मृगी; यकृतका प्रदाह; स्नायवीयता; कर्ण-स्राव (कानसे पीब जाना); नींद न आना (निद्राहीनता); अस्थिरता (बेचैनी); कशेरुकामें रक्तकी अधिकता; सान्निपातिक ज्वर प्रभृति।

उपयोगिता और आभास।—इसकी लक्षणावलीपर विचार करनेसे मालूम होता है कि अपस्मार या मृगी (epilepsy) रोगमें (हाल्टके मतसे जहां एकदम बेहोशी नहीं आ जाती) इसका व्यवहार बहुत ही लाभदायक है। रोगका आक्रमण होनेके पहले कम्पन (कँपकपी) और आक्रमणके समय बेहोशी अथवा आक्रमणके अन्तमें बुद्धिकी क्षीणता और देहकी दुर्बलताका लक्षण दिखाई देता है। इसके द्वारा पक्षाघात तक हो सकता है। मस्तिष्क, मज्जा और मेरुदण्डमें रक्तका बढ़ जाना और इसी कारणसे मस्तिष्कमें उत्तेजना, बच्चोंकी अकड़न (तड़का वगैरह) पर इसका अधिकार है। ताण्डव (Chorea) रोगमें और बुढ़ापेमें शरीरके किसी अंशका कांपना भी इस दवाका निर्देशक (बतानेवाला) लक्षण है। बालकोंपर इसकी क्रिया बहुत ही लाभदायक है।

लक्षणावली।

मन।—अपस्मार रोगके आक्रमणके पहलेकी घटना भूल जाना, डरावनी चीजें और भ्रम देखना, पाशव प्रकृति हो जाना और उन्मत्त। भूल जाना। किसीकी बातपर विश्वास नहीं करना चाहता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—मानों पीछेकी ओर गिर जायगा; खड़े होनेपर बढ़ना। बुद्धिकी जड़ता (Dullness)। सर नीचा करके सोना चाहता है।

आंखें।—आंखोंकी पुतली फैली हुई।

मुखमण्डल।—मुखमण्डलकी पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना (Twiching)। मृगीरोगमें मुंहकी पेशियोंका सिकुड़ना और मुंहमें फेन भर आना।

कान।—अधकपारीका दर्द या सरका दर्द घटनेपर कानसे पीव बहना।

मुखगह्वर।—दोनों हनुका आपसमें कसकर जुड़ जाना—दांती लगना (Trismus)। जीभ काटता है (अपस्मार रोगाधिकारमें—कैम्फोरा ; चबानेके समय दांतसे काटता है—नाइट्रिक-ऐसिड ; साधारणतः—थूजा, इग्नेशिया ; ज्यादाकर डायस्कोरिया ; ऐसिड-फास) ; जीभका कांपना ; (बेलेडोना) ; जीभ ऐसी मालूम हो मानो फूल गयी है और बड़ी हो गयी है ; जीभ बाहर निकली हुई (Protruded) [ऐसिड हाइड्रोस, क्रोटोन-टिग, एपिस ; लाइको, मार्क]। गलेके भीतरी स्थानमें दाहकी तरह दर्द ; प्रदाह ; मानो कुछ अड़ा हुआ है।

पाकाशय।—मिचली (ओकाई), डकार और वमन—सवेरे बढ़ना। उदरके दाहिने भागमें, पित्तस्थली प्रदेशमें और उसके पासवाले अन्त्राशयमें सूजन ; पेट फूलना या वायु इकट्ठा होना ; मालूम होता है कि प्लीहा और यकृत फल गये हैं। आध्मान शूल।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डकी क्रियाका बढ़ जाना। हृत्पिण्डमें टपक, स्कन्धास्थि या पृष्ठफलक प्रदेशमें सुनी जाती है।

मूत्राशय।—बार बार पेशाबका वेग होना ; पेशाब गहरा नारङ्गी रङ्गका (केलि-फास, चेलिडो) ; पेशाबमें घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्ध।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—दाहिनी डिम्ब-ग्रन्थि (Ovary) में तेज दर्द मालूम होना। औरतोंको मृत्पाण्डु (Chlorosis) रोग। यह ऋतुस्रावमें सहायता पहुँचाता है।

श्वास-यन्त्र।—यकृतकी बीमारी, सर्दी-खांसी।

सार्वाङ्गिक लक्षण।—पैर ठण्डे। बहुत बेचैनी ; बुरे बुरे सपने मनकी शान्ति नष्ट कर देते हैं। उर्ध्व प्रत्यंगोंका एकाएक फड़कना (स्पन्दन)। दोनों हाथोंका कांपना, ताण्डव रोग। नींद न आना। भीतरी यन्त्रोंका

सम्बन्ध ।—आर्टिमिसिया-वल्; ऐब्रोट; बेलाडो, कैमो, हायोसा, स्ट्रैमो, ऐसिड हाइड्रो।

शक्ति ।—१ ली से १२ वीं शक्तितक।

ऐकालिफा इण्डिका ।

(ACALIPHA INDICA)

दूसरा नाम ।—मुक्तावर्षी या मुक्ताझुरी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—भारतवर्षमें पैदा हुए छोटे पौधेके ताजे पत्तेसे मूल अर्क बनाया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—अन्न-प्रणाली और श्वास-प्रश्वास यन्त्र पर इसकी प्रधान क्रिया दिखाई देती है। यक्ष्मा-कास रोगमें—जब सूखी खांसीके साथ चमकीला लाल रक्तमिला थूक या कफ निकला करता है, धमनीसे रक्तस्राव होता है पर बोखार नहीं रहता, रोगीको सवेरे बहुत कमजोरी मालूम होती है, पर ज्यों ज्यों दिन उठता जाता है, त्यों त्यों सबल होता जाता है।

लक्षणावली ।

वक्षके भीतर ।—तेज सूखी-खाँसीके कारण रक्त-भरा थूक, सवेरे और रातके समय बढ़ना। वक्षःस्थलमें हमेशा बहुत दर्द मालूम हुआ करता है। थूक या कफमें मिला रक्त चमकीला लाल रङ्गका होता है; सवेरे अधिक नहीं निकलता; पर सन्ध्याके समय गाढ़ा लाल रङ्गका और थक्का थक्का खून निकला करता है। नाड़ी कोमल और नमनीय रहती है।

पाकाशय आदि ।—गलकोष (Pharynx), अन्न-प्रणाली, पाकाशय और आँतमें जलन मालूम होती है। उदरामय (पतले दस्त) में कांखना; और वेग देना पड़ता है। वायु आवाजके साथ निकलती है और मल बिखरकर निकलता है। ऐसा दर्द और कुन्थन (कांखना) रहता है मानो आँतें आदि नीचेकी ओर खिंच रही हैं। पेटमें गड़गड़ शब्द, आधान और पेटमें मरोड़ होता है। मूलनालीसे खूनका स्राव, सवेरे बढ़ जाता है।

त्वचा।—पाण्डुरोग (Jaundice) खुजलानेवाला और सीमाबद्ध फोड़ेकी तरह उद्भेद और सूजन दिखाई देती है।

वृद्धि।—सभी लक्षण अक्सर सवेरे बढ़ते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश—ऐसिड-ऐसेट, कैलि नाइट्र, मिलिफो, फास।

शक्ति।—१ ली दशमिकसे ३० वीं शततमिक शक्ति।

ऐसिडम ऐसेटिकम।

(ACIDUM ACETICUM GLACIALE)

दूसरा नाम।—सिर्केकी-खटाई।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक ड्राम ऐसिटिक ऐसिडमें दस ड्राम साफ चुआया हुआ पानी मिलानेसे १x शक्ति तैयार होती है। इससे ऊँचे क्रम तैयार करनेके लिये रेक्टिफायड स्पिरिटकी जरूरत पड़ती है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें यह लाभदायक है ;—रक्ताल्पता (खूनकी कमी) ; कृमि; दाह; गठ्ठे; सुस्ती; बहुमूत्ररोग ; डिफ्थिरिया ; शोथ ; जलातङ्क; पाकाशयका कर्कटीया जखम (केन्सर) ; शरीरके कितने ही स्थानोंमें से हुआ रोग ; मसे। जरायु वगैरहसे खूनका स्राव ; नाकसे रक्तस्राव (खून गिरना) ; क्रूप या काली खांसी ; प्रलेपी या हेक्टिक ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—बच्चोंका क्षय रोग तथा दूसरी दूसरी क्षय करनेवाली बीमारियाँ (ऐब्रोट, आयोडियम, सैनिक, टियुबर), रक्तहीनता ; दुर्बलता और बार बार सुस्ती आ जाना। सांसमें तकलीफ, हृदपिण्डकी कमजोरी, वमन, भरपूर पेशाब न होना वगैरह इस दवाको बतानेवाले लक्षण हैं। शरीरके किसी भी द्वारसे रक्तस्राव होना, (फेरम, मिलिफोल), पीली ; दुबली, शिथिल और फूलती हुई पेशियों वाले मनुष्योंके लिये यह बहुत ही लाभदायक है।

लक्षणावली।

मन।—क्रोध आ जाना ; अपने रोगकी तथा बाल-बच्चोंकी-चिन्ता; काम-काजमें बहुत ही उलझा हुआ। पेट फूलना ; बहुत अधिक कब्जियत

के साथ उन्मत्तकी तरह प्रलाप। प्रलाप और बेहोशी पर्यायक्रमसे प्रकट होती हैं।

मस्तक ।—स्नायविक सर-दर्द,—तम्बाकू, अफीम, काफी, शराब वगैरहका अपव्यवहार करनेकी वजहसे सरमें दर्द। मस्तिष्कमें रक्त बहुत अधिक इकट्ठा हो जानेकी वजहसे विकार। कानपटी या शङ्खदेश (Temporal) की धमनियाँ फूल उठती हैं। जीभकी जड़में दर्द मालूम होना। चोटकी वजहसे नाकसे खून बहना (आर्नि, हैमा)

मुखमण्डल ।—घुंड़ी या काली खांसी रोगमें, ज्वरके समय, बायाँ गाल बहुत लाल हो जाता है। चेहरा उतरा हुआ; मलिन और मांसहीन जैसा हो जाता है, आँखें गड्ढेमें धँसी और काले घेरेसे घिरी हुई; पसीनेसे तर। चेहरेका भाव उत्कण्ठा भरा और पागलों जैसा।

पाकाशय आदि ।—पाकाशय और वक्ष-गह्वर (छातीका गड्ढा) में बहुत जलन मालूम होने बाद, शरीरकी त्वचा ठण्डी हो जाती है और कपाल में ठण्डा पसीना होने लगता है। चित्त सोनेपर जलन और भी बढ़ जाती है; ठण्डे पानीय (पीनेकी चीजोंसे)पाकाशयमें भार हो जाता है। उदरके ऊपरी अंशको छूनेसे तकलीफ; जखम वाली जगहकी तरह जलन मालूम होना; गर्भके समय खट्टी गन्ध लिये वायु निकलना और खट्टा स्वादवाला वमन। ऐसा मालूम होना मानो अंत्राशय भीतर घुसा जाता हैं। सारे शरीरमें शोथ (सूजन), खासकर अंत्राशयमें और दोनों पैरोंमें अधिक होता है। तेज, न रुकनेवाली प्यास, मिचली और वमन।

शोथ, सान्निपातिक ज्वर (Typhus), और यक्ष्मा वगैरह रोगाधिकारमें, पतले दस्त आना, बहुत ज्यादा परिमाणमें मल निकलना,—कमजोरी, प्यासकी अधिकता, तथा रातमें पसीना (Night-sweat); निचली आँतसे रक्तस्राव। गर्भावस्थामें मुंहमें ऐसा पानी भर आना, (Waterbrash) जिससे जलन होती हो और बहुत ज्यादा लार बहना—दिन रात, सभी समय लार बहा करती है। (लैक्टि ऐसिड; —केवल रातमें लार बहना—मार्क)।

मल ।—पानीकी तरह पतला मल,—बार बार मलका वेग होना; सवेरे बढ़ना; पेट फूला; यक्ष्माके रोगियोंको पतला या अजीर्ण मल; दोनों पैरोंपर सूजन। जरायुसे रक्तस्राव एकाएक बन्द हो जाता है। कब्जियत; सूतकी तरह कृमि।

मूत्रयन्त्र ।—बहुत पेशाब; मधुमेह या बहुमूत्रके रोगियोंकी तेज़ प्यास ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—शुक्र-क्षरण; पाखानेके समय वेग देनेपर वीर्यकी तरह पदार्थ निकलना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—मासिक ऋतुस्रावके समय बहुत अधिक मात्रामें खून जाना । जरायुसे रक्तस्राव (Metrorrhagia—ह्रिलियम इलैस्पी); प्रसवके बादका रक्तस्राव । गर्भावस्थामें मिचली । स्तनोंमें बहुत ज्यादा दूध इकट्ठा हो जानेकी वजहसे सूजन और दर्द । स्तनका दूध नीली आभा लिये, चमकीला और उसका स्वाद खट्टा; प्रसूतियोंकी रक्तहीनता ।

वक्षके भीतर और श्वासयंत्र ।—फेफड़ेसे रक्तस्राव, घुँड़ी; बिगड़ी हुई या टूटी आवाज, छातीमें साँय साँय शब्द, श्वास-कष्ट; सांस लेनेपर खाँसी आ जाती है । श्वास-नालीमें खुजलाहट या सुरसुरी । उत्तेजना (Irritation) ।

पीठ और प्रत्यङ्ग ।—पीठमें दर्द—पेट दबाकर सोनेसे आराम मिलना । प्रत्यङ्गोंका दुबलापन, दोनों पैरोंमें शोथ, मेरु-मज्जाका प्रदाह ।

त्वचा ।—मैली; मोम जैसे रङ्गकी (Waxen) और सूजी । कभी गर्म, जलन-भरी और सूखी और कभी कभी पसीनेसे तर । गट्टे; मसे । सुन्न जैसी मालूम होना; स्पर्श न मालूम होना । कीड़े पतङ्ग आदिके डङ्क मारने बाद शिराओंके फैलनेकी वजहसे सूजन । घायल या चोट खायी हुई सन्धि ।

ज्वर ।—विलेपी (Hectic) ज्वराधिकारमें खांसी; श्वास-कष्ट, रातमें पसीना होना । पतले दस्त, अङ्ग-प्रत्यङ्गका शोथ और दुबलापन । बहुत अधिक ठण्डा पसीना ।

निद्रा ।—चित्त सोनेपर अच्छी तरह नींद नहीं आती (चित्त सोनेपर अच्छी तरह नींद आती है—आर्स) ।

सम्बन्ध ।—ऐसिड एसेटिक सब तरहकी बेहोश करनेवाली दवा सूँघनेके कारण जो दोष आ जाता है, उसका प्रतिविष या दोषघ्न है । रक्तस्रावमें चिनकोनाका अनुगामी है और शोथ या उदरी रोगमें डिजिटेलिसका अनुगामी है । आर्निका, बेल, लैके, और मार्कके साथ नहीं चलता ।

शक्ति।—२ री से ३० क्रम तक व्यवहारमें आती है। घुँडी खाँसी के सिवा और किसी रोगमें बार बार प्रयोग मना है।

क्रियाका स्थायित्व। १४ से ४० दिन।

ऐसिड बेन्ज़ोयिक।

(ACIDUM BENZOICUM)

दूसरा नाम।—लोहवान या बेञ्जोयिन नामक धूनेकी तरह पदार्थ ग्रेपसे ऊर्ध्वपातन करनेपर यह उत्पन्न होता है। इसका चूर्ण रेक्टिफायड स्पिरिटमें गल जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—यह नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है। दमा या श्वास रोग, मूत्राधारकी बहुत-सी बीमारियां, जानुदेशका दर्द और सूजन; अतिसार; अनजानमें पेशाब हो जाना; आँखमें छोटे छोटे अर्बुद की तरहके उद्भेद; प्रमेह; वातरक्त; आमवात; मापक-दोष-युक्त धातुकी (Sycotic) बहुत-सी बीमारी; गलेका जखम; जीभका जखम; तालूमूल ग्रन्थिके जखम; पेशाबकी बहुत-सी बीमारियां; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—प्रमेह या उपदंश विषसे दूषित धातुके साथ यदि किसी रोगमें वातका दोष मिल गया हो तो उसपर यह दवा बहुत लाभ करती है। इसका निर्देशक लक्षण है—बहुत लाल रङ्गका और बदबूदार पेशाब।

लक्षणावली।

मन।—बच्चा बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी; उसे हमेशा यदि गोदमें लेकर स्तन पिलाया जाये तो बहुत प्रसन्न रहता है। लिखनेके समय अक्षर या बात छोड़ जाता है। मानसिक अवसाद।

मस्तक।—सरमें चक्कर (कैनाब्-कोना;) मालूम होता है मानो बगलमें गिर जायगा,—खासकर सन्ध्याके समय कनपटीके बगलकी धमनीमें टपक जैसे दर्दकी वजहसे कानमें मानो ताला बन्द हो जाता है। कोई चीज निगलनेके समय कानमें कितनी ही तरहकी मिली हुई आवाज होती है। कानकी पीछेके स्थानकी सूजन (कैप्सिकम)। जीभमें जखम। सवेरेके समय जीभपर सफेद लेप चढ़ा हुआ रहता है।

सम्बन्ध ।—ग्रन्थिवातमें कोलचिकमके बाद और प्रमेहमें कोपैवाके बाद इसका प्रयोग करना चाहिये ।

सदृश ।—आर्निका, कार्बो-ऐसिड, लीडम, रोडोडेन, सलफरके साथ तुलनीय । कोपैवा, नेट्रम, फेरम और थूजा, खासकर आपही आप पेशाब हो जानेके रोगमें नेट्रमसे लाभ न होनेपर इसका व्यवहार करना चाहिये ।

दोषघ्न या प्रतिविष ।—कोपैवा ।

शक्ति ।—१ लीसे १२ वीं तक । अमेरिकाके चिकित्सक उच्च क्रमका प्रयोग करते हैं ।

ऐसिड बोरिक या बोरैसिक ।

(ACIDUM BORICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके दाने जैसे पदार्थ सुरासारमें गला लिये जाते हैं ।

उपयोगिता और आभास ।—मूत्र-नाली (Ureters) प्रदेशमें दर्द और बार बार पेशाबका वेग होना, इस अम्लका प्रधान लक्षण है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—स्वस्थ शरीरपर परीक्षा करनेसे, इसमें सर-दर्द, माथेमें भार, कानमें आवाज, वमन, हिचकी, अण्डलाल मिला पेशाब और त्वचापर कितने ही प्रकारकी खुजलानेवाली फुन्सियाँ प्रकट हो जाती हैं । विषाद और हिमाङ्गावस्था इसका एक विशेष लक्षण है ।

लक्षणावली ।

मन ।—विषाद ; स्नायविक सुस्ती ; सरमें दर्द ।

आंख ।—आँखोंका प्रदाह ; रोशनीका सहन न होना ।

मुंह ।—लार ठण्डी ।

पाकाशय ।—मिचली, हरे रङ्गका पदार्थ कै करना ।

त्वचा ।—हाथ पैर तथा ऊपरी प्रत्यंगोंपर कितने ही तरहकी लाल फुन्सियाँ (Erythema या Rash) ददोरे । आँखके चारों ओर सूजन । इसका १५ ग्रेन, १ आउन्स पानीमें मिलाकर बाहरी प्रयोग करनेसे अंजनी या गुहेरी अच्छी हो जाती है ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—वयःसन्धिके समय (Climaxis) एकाएक उत्ताप मालूम होना और इसी वजहसे चेहरा लाल हो जाना (ऐमिल-नाइट्रो-सम, लैकेसिस)। अपत्य-पथमें बहुत शीत मालूम होना (ग्रैफा, सिपिया) मानो बरफके टुकड़े रखे हुए हैं।

सम्बन्ध ।—सदृश—ब्रोरैक्स, कार्बोलिक-ऐसिड ; कैलि-बाई ।

शक्ति ।—३ री से लेकर ६ ठी दशमिक (६x)।

ऐसिड कार्बोलिक ।

(ACIDUM CARBOLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्थरके कोयलेसे निकले हुए अलकतराकी जातिके तेलको सुखाकर यह तैयार किया जाता है। इसमें एक भाग औषध और नौ भाग अलकोहल रहता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक प्रमाणित हुआ है:—चेहरेपर मुंहासे ; दुष्ट व्रण (विषैला फोड़ा); किसी स्थानका जल जाना ; हैजा ; कब्जियत ; पेशाबकी बीमारी या बहुमूत्र ; अतिसार ; आमाशय ; अजीर्ण ; डकार ; पेट फूलना ; विसर्प ; सड़नेवाला जखम ; बहुव्यापक सर्दी रोग (इनफ्लुएंजा); सविराम ज्वर ; उत्तेजना ; कुष्ट रोग ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; स्नायुशूल ; बहुत तरहके चर्मरोग ; चेचक ; सूँघनेकी शक्तिमें गड़बड़ी ; दांतका दर्द ; कितनेही तरहके जखम ; मूत्रक्षारसे उत्पन्न विषाक्तता या इयुरिमिया ; वमन ; जरायुका अपने स्थानसे हटना (नाभी टलना)।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवासे पैदा हुए दर्दसे बहुत तकलीफ होती है ; एकाएक दर्द पैदा हो जाता है, थोड़ी देर तक ठहरता है और एकाएक बन्द हो जाता है (बेल, मैग-फास)। सुस्ती, जीवनी शक्तिकी क्रिया का एकाएक सुस्त पड़ जाना या पतनावस्था (Collapse); शरीरकी त्वचा मलीन और ठण्डे पसीनेसे भरी हुई, (कैम्फ, कार्बो-वेज, वेरेट्रम-ऐल्बम,)। शारीरिक परिश्रम, यहां तक कि अधिक भ्रमण न करनेपर भी थकान ; फोड़े निकलना—खासकर दाहिने कानमें ज्यादा ; सूंघनेकी शक्ति (घ्राण-शक्ति) की तेजी इस दवाका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है। इसके सभी स्राव गले

हुए और बहुत बदबूदार होते हैं, उनसे सड़ी गन्ध आती है,—मुखगह्वर, नाक, गलनाली या अपत्य पथ,—चाहे जिस जगहसे स्राव क्यों न हो, (ऐन्थ्रसिनम, सोरिनम, पाइरोजेन) उसमें बदबू मौजूद रहती है ।

लक्षणावली ।

मन ।—मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छा न होना ; क्रोधी स्वभाव ।

मस्तक ।—सरमें दर्द, कपालमें बहुत भार मालूम होना—मानों एक फीता कनपटी (शंख-देश) से दूसरी कनपटी तक (कपालपर) एक रबरका फीता खूब कसकर बांधा हुआ है (जेलस , प्लेटिन, सलफर) । दाहिनी भौंके ऊपर स्नायुशूल । हरी चाय या धूम्रपानके समय दर्दका घटना ।

नासा-रन्ध्र ।—घ्राण-शक्ति (सूंघनेकी शक्ति) का बहुत तेज हो जाना । नाकसे सड़ी गन्ध-भरा स्राव या बहुव्यापक सर्दी या इन्फ्लुएंजा (Influenza) और इसी वजहसे बहुत कमजोरी (बैप्टी, नेट्रम-सल्फ)

गलेके भीतर ।—मुखगह्वरसे लेकर पाकाशयतक जलन । जीभकी जड़के दोनों ओरके गह्वर (Fauces) श्लेष्मासे ढके रहते हैं । उपजिह्वापर सफेद आभा और वह संकुचित सिकुड़ी-सी रहती है । किसी पदार्थका निगलना एकदम असम्भव-सा रहता है । डिफ्थीरिया (Diphtheria) उपझिल्ली प्रदाहके रोगमें सांसमें बदबू,—पतला जलीय पदार्थ पी लेनेपर वह फिर कै हो जाता है । चेहरा लाल, मुखगह्वर और नाकका स्थान सफेद आभा लिये रहता (कैम्फ, कार्बो-वेज, वेरेट्रम)

पाकाशय ।—बार बार पानी पीनेकी इच्छा, डकार आना, भूख न लगना, शराब पीने या तम्बाकू सेवन करनेकी बहुत तेज इच्छा (ऐसेरम, कार्बो-वेज) शराब पीनेवाली गर्भवती स्त्रियां और कर्कट (Cancer) रोगके रोगियोंका वमन (पाइरो) ; पेटमें वायु होनेके साथ ही साथ अजीर्ण रोगका वमन (कार्बो-वेज, लाइको)

मल ।—अतिसार और आमाशय ; बदबूदार डकार मिली कब्जियत (ओपियम, सोरिनम)। रक्तामाशय (खूनी पेचिश)—पतली आम—मानों आंतोंका आवरण छिलकर निकल पड़ता है ;—बहुत वेग और कांखना (कैन्थ-रिस) । फेनकी तरह मल ; उदरामय—मल पतला, काली आभा लिये,

सड़ी गन्ध-भरा ; अनजानमें आपही आप निकल पड़ता है। कब्जियतके साथ साँसमें बदबू।

पेशाब।—हरी या काली आभा लिये। बहुमूत्र। ऐल्बुमिन्यु रिया।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—सब तरहके स्रावमें दुर्गन्धका रहना। योनि कपाट (Vulva)के चारों तरफ खून भरी या पीव भरी फुन्सियाँ। कमरमें बहुत ही तेज तकलीफ देनेवाला दर्द,—जाँघ तक खिंचाव पैदा हो जाता है। बाएँ अण्डाधारमें दर्द ;—बाहरकी ओर घूमनेसे बढ़ना। प्रदर ;—तेज, बहुत ज्यादा और बहुत दुर्गन्धमय तथा हरी आभा लिये स्रावका होना ; खुजली और उसमें जलन पैदा होना (क्रियोजोटम्) और इसी स्रावसे जरायु-ग्रीवाका क्षय हो जाता है या उसकी खाल उधड़ जाती है। सूतिका ज्वराधिकारमें दुर्गन्धमय मल आदिका स्राव (एचिनेसिया)।

त्वचा।—शरीरसे बदबू निकलती है और उससे जलन-भरे तथा खुजलानेवाले रस-भरे दाने निकल आते हैं। जले हुए स्थानमें जखम हो जाता है और उससे बराबर रस बहा करता है। सांघातिक या तेज आरक्त ज्वर और चेचक (हैमोन-कार्ब)। भोथरे अस्त्रसे चोट लगनेपर मांस कटकर हड्डी यदि बाहर निकल आये या चूर हो जाये या उसके कोमल अंशके जखमके ऊपर पपड़ी जमे ; (कैलेण्डु ला) विसर्प।

निद्रा।—जम्हाई और औंघाई आना।

सम्बन्ध।—खड़िया और शर्करा मिले चूनासे इसका विष दोष नष्ट हो जाता है। बहुत ज्यादा दूध पीनेसे अधिक लाभ होता है। सरके दर्दमें जेल्स, मार्क और सलफरके सदृश है। आर्सेनिक, कार्बो, बायना, दाह और बदबूदार स्रावमें ; ऐण्टिमटार्ट और वैरियोलिनम, चेचकमें।

जलनेपर।—आर्स, क्रियोजोट, जिन सब जखमोंसे बदबूदार रस निकलता है—मार्क, सल्फ।

शक्ति।—२ री से ३० और २०० शक्ति तक।

ऐसिड क्रोमिक ।

(ACIDUM CHROMICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सल्फ्यूरिक एसिडके साथ वाईक्रोमेट आफ पोटास मिलाकर बनता है। यह २ री दशमिक शक्ति तक चुआये हुये पानीमें गलाया जाता है।

इसकी "क्रोमिक ऑक्साइडेटम" के साथ सम्मिलित भावसे परीक्षाकी गयी है। डाक्टर हेरिङ्गने इसे इसी रूपमें ग्रहण किया है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—यह लक्षणके अनुसार नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक या फायदेमन्द है:—छातीका स्नायुशूल ; मस्तिष्क-प्रदाह ; खाँसी ; अतिसार ; आँखकी बहुत सी बीमारियाँ ; सड़नेवाले जखम ; वात-रक्त, अर्श (बवासीर) ; कटि-शूल ; स्वरनालीका क्षय-रोग ; सन्धिवात ; उपदंश (गर्मी रोग) ; गलक्षत (गलेका जखम) ; दाँतका दर्द ; जबड़े अटकना; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह दवा गलेमें डिफ्थीरिया या उपझिल्ली प्रदाह (Diphtheria) ; नाकके पिछले छेदमें अर्बुद और जीभके कर्कट रोगमें लाभदायक है। प्रसवके बादका खून-भरा और बदबूदार स्राव (Lochia)। लक्षणोंका एकाएक पैदा होना और एकाएक गायब हो जाना तथा यथा-समय प्रकट होना ।

लक्षणावली ।

नासा-रन्ध्र ।—नाकमें जखम और पपड़ी जमना या कटे घाव। निकली हुई सांसकी हवा बहुत बदबूदार ; जखम पैदा होनेकी तरह दर्द। पीनस या नासा-रन्ध्र (नाकका छेद) का सड़ा घाव (ऐसाफिटिडा)।

गलेके भीतर ।—डिफ्थीरिया (Diphtheria—लैक-कैनाइन ; लैकेसिस, मार्क-सायाना, मार्क-प्रोटो-आयोड, मार्क-बिन-आयोड) ; गलेका जखम (बेल, बैरा-का ; एपिस, आयोड; कैलि-बाई) गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा (हाइड्रेस्टिस,कैलि-बाई, ऐलूमिना ; कार्बो-वेज), निगल जानेकी इच्छा ; सवेरे खांसकर निकाल देनेकी इच्छाका बढ़ना (आर्जेण्ट-नाई)। नाककी पिछली हड्डी (पश्चान्नासास्थि) में अर्बुद (कैल्केरिया-कार्ब, कैलि-बाई, टियुक्रियम, थूजा)।

मल और मलाशय।—मल पानीकी तरह, बहुत ज्यादा और बार बार वेगका होना। इसके साथ ही मिचली और सरमें चक्कर आना। भीतरी रक्तस्रावी अर्श (खूनी बवासीर) (ऐसिड-म्यूर, कास्टिकम, हैमा, नक्स, सलफर); कमरमें कमजोरी (साइलि, इग्ने, सिङ्कोना, कैल्के-फास)।

सम्बन्ध।— सदृश, कैलि-बाई-क्रोमिकम, ऐसिड-म्यूर; मार्क-सायाना; आर्जेण्टम; थूजा।

दोषघ्न।—डैफनि; मार्क-कोर; रासटक्स इत्यादि।

शक्ति।— ३ रे दशमिकसे ६ ठे दशमिक क्रमतक साधारणतः इसका व्यवहार दिखाई देता है।

एसिड क्राइसोफैनिक।

(ACID CHRYSOPHANIC)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—रूबार्ब वगैरह द्रव्योंसे यह दवा तैयार होती है। (गोआ पाउडरका प्रधान उपादान)

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—दाद (वेसालिन); मसे (Fig-warts—थूजा), विचर्चिका (Psoriasis—थाइराइडिन, पेट्रोल, थूजा; प्रमेहसे उत्पन्न होनेपर=इथियोप्स, ऐण्टिमोनैलिस,—श्लेष्मा प्रधान धातु होनेपर मार्क-बिन; उपदंशसे उत्पन्न होनेपर ग्रैफा, और कानके पीछे होनेपर साइ-क्यूटा) केश-दद्रु या शिर-विसर्पिका (Herpes—सिपिया, मेडोरिन) वगैरह में इस दवासे बहुत फायदा होता है। मुँहासे या वयोव्रण; (Acne Rosa-cea=कार्बो-एनिमैल, हाइड्रोकोटाइल, ऐगरिकस, नक्स और रासटक्स)। बहुत खुजलानेवाला, बहुत ज्यादा और बहुत बदबूदार रस-स्राव होनेवाला; निचले प्रत्यङ्गोंका उकौत या खसड़ा (मार्क-कोर)में यह उपकारी है। (बाहरी प्रयोगसे बहुत तरहके रोग पैदा करनेवाले कीड़े नष्ट कर देता है)।

लक्षणावली।

आंख और दृष्टि।—पलक, योजकत्वचा, या सफेद अंश वगैरहका प्रदाह (इयुफ्रेशिया, सल्फ, ऐण्टि-टार्ट, मार्क-कोर, अर्जेण्ट-नाइट)। दर्शन

इन्द्रियोंमें अधिक चेतना अर्थात् थोड़ी भी रोशनीसे बहुत तकलीफ मालूम होती है।

कान।—खुजली और फटे घाव ;—समूचा कान और उसके चारों ओरकी त्वचामें मानों एक जखम हो रहा है।

पाकाशय।—बच्चोंका वमन और उसके बाद भूरे रङ्गका पानीकी तरह पाखाना होना।

शक्ति।—२ रा चूर्णसे ३० शक्ति तक।

एसिड फ्लुयोरिक।

(ACIDUM FLUORICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विशुद्ध कैलसियम फ्लुराइडके चूर्णके साथ सल्फ्युरिक एसिड मिलाकर उसे साफ करने बाद यह मिलता है। १ लाक्षम चुआये हुए पानीसे तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—परिपोषण शक्तिकी गड़बड़ी हो जानेपर जो रोग पैदा हो जाते हैं, उनमें यह उपयोगी है। इसलिये यह कैल्केरिया और साइलीसियाकी याद दिला देता है। जिनका शरीर पारा या उपदंश विषसे जर्जरित हो गया है और शराब आदि पीकर जिनका स्वास्थ्य नष्ट हो गया है, उनकी बीमारीमें बहुत लाभदायक है। शिराओंका फूलना, हड्डियोंकी बहुत सी बीमारियां, शय्याका जखम (Bed Sore); उपदंशका घाव, हड्डीके बीचकी नाली या दन्त नालीसे खून मिला नमकीन स्राव; अश्रुनाली, अंगुलहाड़ा सब तरहकी हड्डियोंकी बीमारी और पीव पैदा हो जानेपर यह साइलीसियाकी तरह है। केवल ठण्ढे प्रयोगसे घटना इसको अलग करनेवाला लक्षण है। यकृतकी बीमारी, जलोदर रोग, गलगण्ड, पीनस, कर्णस्राव, (कानसे पीव बहना), केश उड़ जाना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बुढ़ापा या असमयके बुढ़ापेमें होनेवाले रोगोंमें और उपदंश विष या पाराके दोषसे दूषित धातुमें इसका हमेशा व्यवहार होता है। इसका रोगी थोड़ी ही उम्रमें बुड्ढेकी तरह दिखाई देता

है। वह अक्लान्त भावसे अधिक परिश्रम कर सकता है। (कोका); गर्मीके ताप तथा जाड़ेकी ठण्डकसे वह बहुत कातर नहीं होता। त्वचापर इसकी क्रिया बहुत ही ध्वंस करनेवाली होती है। जैसे शय्या-क्षत (Bed-sores) साधारण जखम; शिराका फूलना (Varicose Veins) हमेशा शरीरको हिलानेमें दर्द अथवा कोई बीमारी हो जाती है।

लक्षणावली।

मन।—भूलनेवाला; अपने बाल-बच्चोंपर भी विराग; अपने बहुत प्रिय पात्रपर भी बहुत अनास्था प्रकट करता है; बहुत आनन्द; किसीका भय नहीं रहता और अपनी प्रकृति बहुत ही सन्तोषजनक समझता है। किसी कार्यका दायित्व अत्यन्त कम अनुभव करता है।

मस्तक।—माथेकी हड्डीमें जखम, बहुत रस-स्रावी जखम, गर्मीसे बढ़ना (शीतसे बढ़ना=साइलि)। हड्डीका बढ़ना (Exostosis हेक्ला, कैलि-बाईक्रोम); टाक पड़ना (कैलि-कार्ब, ऐसिड-फास)। कनपटी या शङ्खदेशमें (Temples) में दबाव मालूम होना।

कान।—दोनों कानोंमें खुजली।

आंख।—मानो आंख भेदकर हवा निकलती है। अश्रुनालीका नासूर (साइलि)। आंखमें मानो बालूके कण पड़े हैं, ऐसा मालूम होना।

नाक।—नाकके पासके अपाङ्गकी खुजली।

मुख-गह्वर।—दांतमें दर्द, ठण्डे पानीसे वृद्धि (ब्राई, कैल्के, कैमो कास्ट, हिपर, लैक, नैट्र-म्यूर, नक्स-मस्क, नक्स-वोम, पल्स, साइलि, स्टैफि, सल्फ) परन्तु मुंहमें पानी कुछ देर रहकर गर्म होनेपर घटना (नक्स-मस, नक्स-वोम, पल्स, रास-टक्स, सल्फ)। दांतकी हड्डीका जखम, दांतमें नासूर, और उससे लगातार रक्त मिला, नमकीन रस-स्राव, गलेमें उपदंश विषसे पैदा हुआ जखम, शीतल पदार्थके स्पर्शसे बहुत तकलीफ। दांत गर्म मालूम होते हैं। ऊपरी हनुकी हड्डीतक जखम फैल जाता है।

पाकाशय।—भूख ज्यादा लगना, पर तुरन्त ही पेट भर जाना, डकार, वमन, पेटमें दर्द।

अन्त्राशय और मल।—यकृत प्रदेशमें दर्द मालूम होना, डकार और वायु निकलना। कब्जियत, मल कड़ा या पित्तज उदरामय। काफी

पीनेकी इच्छा न होना। अच्छी तरह जलाया हुआ खाद्य पदार्थ खानेकी इच्छा।

मूत्रयंत्र।—मूत्रनालीमें जलन मालूम होना।

पुं-जननेन्द्रिय।—अत्यन्त प्रबल कामेच्छा। इन्द्रीका रातके समय, निद्रावस्थामें लिङ्गोत्थान ; पुराने मेहके कारण रातके समय मूत्रनालीसे लाला-स्राव (geety discharge थूजा, सिनाबेरिस, नाइट्रिक-ऐसिड, नैफ्-थेलिन,गुआयेकम), इससे कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु, बहुत ज्यादा स्राव और बहुत दिनोंतक स्थायी स्राव। जरायु और जरायुमुखका जखम। प्रदर, बहुत ज्यादा और जखम पैदा करनेवाला (Corrosive) स्राव। कामोन्माद (हायोसा) ओरि-गेनम ; स्ट्रैमो ; टैरेण्टुला ; कैल्के-फास ; ग्रेटियोला।

अङ्ग-प्रत्यङ्गादि।—अँगुलीकी सन्धिका प्रदाह। ऐसा मालूम होता है, मानो नखमें कोई खोंचा मार रहा है (हिप, सिलि), नख टूट जाते हैं (ग्रैफ)। दीर्घास्थिका जखम और सड़ना (Necrosis--फास)। किसी तरहके परिश्रमसे नहीं थकना (कोका)।

त्वचा।—पुराने जखमके चिन्ह-सब (Cicatrices) प्रदाह युक्त हो जाते हैं, लाल हो उठते हैं और ऐसी सम्भावना मालूम होती है, कि वहां फिर जखम पैदा हो जायगा। (कास्टि, ग्रैफ)। कैशिक धमनीका फूलना (Capillary aneurism—कैल्के-फ्लू और टियुबर्क्युलिन)। शिराका फूलना (हैमा)। मातृचिन्ह या जटुल (Naevus-थूजा ; कैल्के-फास ; लाइको), लाल और रस भरे दाने युक्त जखम ; शय्याका जखम (आर्निका, हाइपेरिक) ; बहुत अधिक रस-स्राव होनेवाला जखम,—उत्तापसे वृद्धि और शीतसे घटना। एक सीमाबद्ध स्थानपर बिजलीकी शलाका रहनेकी तरह तेज दर्द (मैग-फास)।

निद्रा।—तन्द्रालु पर नींद नहीं आती ; सवेरे नींद आती है अवश्य, पर वह सपने-भरी रहती है।

ह्रास।—हिलानेसे और भ्रमणके समय।

वृद्धि।—सवेरे, विश्रामसे उठनेके समय इत्यादि।

सम्बन्ध।—कोका और साइलिसिया—अनुपूरक। शराबियोंके उदरी रोगमें आर्सेनिकके बाद व्यवहारमें आना चाहिये। वंक्षण-सन्धि (Hip-joint)

के रोगमें कैलि-कार्बके बाद काममें लाया जाता है ; दाँतको छुआ न जा सके लक्षणमें काफिया और स्टैफिसेग्रियाके बाद ; बहुमूत्र रोगमें फास्फोरिड एसिडके बाद ; अस्थि रोगमें सिलि और सिम्फाइटमके बाद तथा कण्ठमाला रोगाधिकारमें स्पंजियाके बाद इसका प्रयोग करना चाहिये।

शक्ति।—६ ठी से ३० वीं शक्ति तक।

ऐसिड गैलिक।

(ACIDUM GALLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—(माजूफलसे उत्पन्न एक तरहका खट्टा पदार्थ)। यह तरल और विचूर्ण दोनों तरहसे बनता है। इसमें टैनिक ऐसिडके सदृश पदार्थ हैं।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—निम्न लिखित रोगोंमें इसका व्यवहार होता है:—दमा ; कब्जियत ; कमजोरी ; प्रलाप ; क्षयकास ; आमवात ; रक्तस्राव।

उपयोगिता और आभास।—इसका व्यवहार क्षय रोगमें बहुत प्रसिद्ध है। दूषित स्राव (Secretions) सबको रोकना, पाकाशयकी क्रिया की शक्ति बढ़ाना और भूख बढ़ाना इसकी प्रधान क्रिया है। कभी कभी इससे खूनका स्राव भी बन्द हो जाता है। इसकी क्रियाका प्रधान फल है, मुंहमें पानी भर आना।

लक्षणावली।

श्वासयंत्र।—दाहिने फेफड़ेमें तेज दर्द, सन्ध्याके बाद सोनेपर घटना; सवेरे कम रहता है ; खाँसने, जम्हाई लेने या भरपूर सांस लेनेपर दर्द बढ़ जाता है। यक्ष्मा ;—बाएं फेफड़ेके शिखर-देशमें (सिरा Apex) गह्वर उत्पन्न हो जाता है और पीबकी तरह कफ (Expectoration) निकला करता है। दोनों फेफड़ोंके बीचमें और ऊपरी अंशमें, खासकर बाएं फेफड़ेमें कुछ दर्द मालूम होता है। यह दर्द गर्दन और दाहिने कन्धेकी पेशी और मेरुदण्डके ऊपरी अंश तक फैल जाता है। शरीरके हिलाने डोलाने, माथा घुमानेपर और

सवेरे तकलीफ बढ़ जाती है। फेफड़ेसे खूनका स्राव होता है। रातमें पसीना तथा मुंह और गलेमें बहुत सूखापन मालूम होता है।

सम्बन्ध ।—आर्स-आयोड ; वैसिलिन ; कैल्को-कार्ब; माद्वरिका ; फास ; सल्फ ।

शक्ति ।—पहला दशमिक विचूर्ण और ६ ठो और ३० वीं शक्ति ।

ऐसिड हाइड्रोसियेनिक ।

(ACID HYDROCYANICUM)

दूसरा नाम ।—इसे Prussic Acid प्रुसिक एसिड भी कहते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—प्रूसियेट आफ पोटासके साथ पानी मिला सल्फयुरिक एसिड मिलाकर, चुआनेपर यह सांघातिक विषैला पदार्थ पैदा हो जाता है। तुरन्त बनाकर इसका क्रम तैयार करना अच्छा है। क्योंकि ज्यादा दिनोंका तैयार किया हुआ खराब हो जाता है और उससे भरपूर लाभ दिखाई नहीं देता।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखी बीमारियोंमें यह लाभदायक हुआ है:—वक्षमें स्नायुशूल रोग ; दमा ; हैजा ; अकड़न ; अजीर्ण रोग ; मृगी रोग ; अर्द्धाङ्गका पक्षाघात ; हिचकी ; प्रसवकालकी अकड़न ; पाकाशयके बहुतसे विकार ; लू लग जाना या सर्दी-गर्मी ; धनुष्टङ्कार ; मूत्रक्षारकी वजहसे अकड़न ; क्रुप-खांसी इत्यादि ।

विशेष क्रिया । डा० क्लार्कका कथन है—"यह सिलियक ग्रन्थिपर अपनी क्रिया कर आंतोंमें आक्षेप और शूल उत्पन्न करता है। अकड़न और पक्षाघात इस दवाका प्रधान निर्देशक लक्षण है।"

उपयोगिता और आभास ।—अकड़नवाली बीमारी और पक्षाघातपर इसकी प्रधान क्रिया है। किसी मारात्मक रोगमें जब जीवनी शक्तिकी क्रिया समाप्त हो जाती है, रोगी गाढ़े मोहमें पड़ा रहता है, जब सांस लेना और छोड़नाकी क्रिया बहुत लम्बी और धीमी होती है, यहांतक कि कभी कभी रोगी मुर्दे जैसा दिखाई देता है, और जब पाखाना पेशाब रुक जाता है, उस समय यह दवा संजीवनी सुधाकी तरह मृत व्यक्तिको फिरसे जिला देती है। (डाक्टर सरकार) स्वरनलीका सङ्कोचन, —ऐसा मालूम हो, मानो सांस रुक

रही है, वक्षके भीतर दर्द और सङ्कोचन मालूम होना ; हृत्पिण्डका स्पन्दन ; नाड़ी दुर्बल और विषम ; पेटका ऊपरी भाग खाली मालूम होना। निस्पन्द वायु-रोग Catalepsy = कैनाबिस इण्ड, साइक्यूटा; ऋतुकाल होनेपर—मस्कस; आक्षेप-मिला पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाना (with opisthotonos) होनेपर--पेट्रू स्ट्रा; बहिरायाम (शरीरका धनुषकी तरह पीछे टेढ़ा पड़ना) आक्षेप मिला और मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे होनेपर, इग्ने ; डरकी वजहसे एकोन, जेल्स, ओपियम ; प्रणय और ईर्षाकी वजहसे होनेपर—हायोसा, लैकेसिस और आनन्दके कारण हो तो—काफिया)। विसूचिका रोगकी पतनावस्था (कार्बो-वेज)। मृगी रोगमें जिस समय बेहोशीकी अवस्थामें, जबड़े अटक जाते हैं, अँगुली मुट्ठी बन्द हो जाती है, मुंहसे फेन निकला करता है, निगला नहीं जाता ; और रोगके आक्रमणके अन्तमें बहुत ही नींद लगती है और सुस्ती मौजूद रहती है।

लक्षणावली।

मन।—अचेतन अवस्था। उन्मत्त प्रलाप। कल्पित विपत्तिकी आशंका। सुस्ती।

शिरोदेश।—यंत्रणा देनेवाला और बेहोश करनेवाला (Stupefying), सरका दर्द ; ऐसा मालूम हो मानो सर जला जाता है।

आंखें।—आँखोंकी पुतली स्थिर या फैली। भवोंका (Supra-oribital) स्नायुशूल,—रोगवाला भाग गर्म और लाल हो जाता है।

कान।—दोनों कानोंमें दर्द।

मुखगह्वर।—दोनों हनु आपसमें कसकर जुड़ जाते हैं (Trismus) फेन निकलता है। दोनों ओंठ नीले और रक्तहीन। जीभ ठण्डी।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर अकड़न।

पाकाशय।—मीठा स्वाद। कोई पतला पदार्थ पीनेके समय अन्न-नालीमें गड़गड़ आवाज, शूलका दर्द, पेट खाली रहनेपर दर्द मालूम होता है। पाकाशय और आँतोंका प्रदाह।

मल और मलद्वार।—अनजानमें पाखाना हो जाना ; हैजा और कालरामें एकाएक पाखाना बन्द हो जाना इत्यादि।

श्वासयंत्र ।—आवाजके साथ और तेज़ श्वास-प्रश्वास । सूखी ; सांस रोकनेवाली और क्षण-क्षणपर आनेवाली खांसी । गलनालीके सङ्कोचनके साथ दमा, क्रुप, खांसी [Whooping cough—ड्रोसेरा, मिफाइटिस, नैफ्थलीन सिना ; आर्निका, ट्राइफोलियम] फेफड़ेकी क्रिया रुकना या पक्षाघात, (Paralysis of lungs) ।

हृत्पिण्ड ।—धड़कनकी क्रिया दुर्बल, अनियमित, हृत्शूल (Angina pectoris) अपस्मार, उत्कण्ठा, और उसके साथ ही असम और क्षीण नाड़ी । कलाईमें नाड़ीकी गति मालूम नहीं होती । हाथ पैरके अगले भाग बरफ जैसे ठण्डे या शीतल ।

निद्रा ।—बार बार जम्हाई आना [चेलिडो—अनिद्रा साथ रहनेपर—ऐकोन, आर्निका ; नींदसे जागनेपर, आवे तो—नक्स, इग्ने ।] ; कम्पन ; बहुत ज्यादा औंघाई । अस्पष्ट और असम्बद्ध सपने ।

ज्वर ।—कम्प ; मध्य रात्रिके बाद या सवेरे, भीतर और बाहर सर्दी मालूम होना ; हृत्पिण्डकी क्रिया असमान, इसके बाद ही प्रबल उत्ताप इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष ।—कैम्फर, काफिया, इपिकाक, नक्सवोमिका, वेरेट्रम ।

तुलनीय या समगुणवाली दवाएं ।—कैम्फर [हैजाकी हिमाङ्गावस्था या शीत], साइक्यूटा, [कशेरुकामें जलन, गर्दनका अकड़ना ; कोनायम (पक्षाघात) ; इनैन्थि (मृगी) ; लौरोसि (सूखी खांसी) ; टैवेकम (श्वास रुकनेका भाव] ; हेलिबोरस (फेफड़ा और हृत्पिण्डका पक्षाघात) ; नक्स-वो (धनुष्टङ्कार) ।

शक्ति ।—३ री से २०० शक्ति ।

ऐसिड लैक्टिक ।

(ACIDUM LACTICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी खटाई ; इसके बाद चुआये हुए पानीके साथ १म क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है। सन्धिवात, पेशिक वात (पेशियोंका वात); बहुमूत्र, अजीर्ण, अम्ल-रोग, खट्टी डकार आनेपर मानों कलेजा जल उठता है। वमन, मिचली ; गर्भवतियोंका सवेरेके समयका वमन, नाकसे खून गिरना, घुंड़ी या काली खांसी।

उपयोगिता और आभास।—गर्भवतियोंका सवेरेके समयका वमन ; बहुमूत्र और सन्धिवात और वात-व्याधिमें यह दवा बहुत लाभदायक है। स्तन-रोगके लक्षण, सरमें चक्कर आना।

लक्षणावली।

गलेके भीतर।—मानो कोई एक गोला-सा अड़ा है। ऐसा मालूम होना, घूंट लेनेपर भी वह नहीं हटता। फेन भरा श्लेष्मा हमेशा निकला करता है। सङ्कोचन मालूम होना (लैकि) और मिचली (स्वरनलीके जखमकी वीमारीमें बाहरी प्रयोगसे लाभ होता है)।

पाकाशय।—गर्भवती, खासकर उन स्त्रियोंको जिनके शरीरमें रक्त कम हो, मिचली और सवेरेके समय वमन, भोजनके बाद घटना (अधिक ओकाई आनेपर—नक्स ; भोजनके बाद घटनेपर—ऐनाकार्ड, सिरियम-आक्जे-लेट ; सिम्फरिकार्पा ; नेट्र-फास ; ऐसिड कार्बोलिक ; टेबेकम)। जीभ सूखी और रसहीन। प्यास और बहुत भूख। सड़नेवाला मुँहका रोग [Canker मार्क, फास, आर्स] बहुत ज्यादा लार बहना। कड़वा डकार।

वक्षस्थल।—स्तनमें दर्द, बगलकी गाठें (Auxillary glands) का बढ़ना ; दर्द बांहतक फैल जाता है। स्वरभङ्ग।

पेशाब।—पाकाशय और यकृतकी गड़बड़ीके कारण बहुमूत्र ; पेशाब बहुत ज्यादा परिमाणमें और बड़े वेगसे होता है, उसमें चीनी रहती है और बहुत पीली आभा लिये होता है। बहुत अधिक प्यास लगना (लैक-डिफ्लो) ओकाई आना; दुबलापन, तेज़ भूख और मलमें कड़ापन ; मूत्रग्रन्थि या मसानेमें दर्द। बार बार ज्यादा मात्रामें पेशाब करनेकी इच्छा। दिन-रात बराबर पेशाब का वेग ; पेशाब रोकनेकी चेष्टा करनेपर दर्द होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—दाहिने डिम्बाधारके स्थानपर हमेशा दर्द—तेज़ीसे चलनेपर इस दर्दका बढ़ जाना। ऋतुके समय—थोड़ा खून जाना ; निर्धारित समयसे १० दिन आगे बढ़कर ऋतुस्राव होना या दो दिन पहले ही हो जाना;

कभी कभी बहुत अधिक स्राव भी होता है । तलपेट और कमरमें दर्द मालूम होता है । ऋतुस्रावके समय योनिके बगलमें खुजलाहट होती है । प्रदर ;—प्रदरके स्रावका दाग कपड़ेमें पीला लगता है; स्राव रुकनेपर, सर्दी आरम्भ हो जाती है । ऐसा दर्द होता है, मानो रजःस्राव होगा । पैर ऊँचा रखकर बैठनेसे सब तकलीफें घट जाती हैं ।

प्रत्यङ्गादि ।—सन्धियाँ कन्धे, मणिबन्ध (कलाई) जङ्घा वगैरहमें वातका दर्द और कमजोरी ; चलनेके समय समूची देहका काँप उठना ।

निद्रा ।—नींद न आना ।

सम्बन्ध ।—ऐसिड-ऐसिटिक, ऐसिड ; फास ; ऐक्टिया रेसिमोसा । ऐकोन, बेलाडो, इपिका, नक्सके साथ तुलनीय ।

शक्ति ।—३रीसे २०० शक्ति ।

ऐसिड म्यूरियैटिकम
(ACID MURIATICUM)

दूसरा नाम ।—ऐसिड हाइड्रोक्लोरिकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये पानीमें निम्न क्रम और उसके बाद सुरासारकी जरूरत पड़ती है । नमक और सल्फ्युरिक ऐसिडसे तैयार हुआ करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— डा० क्लार्कके मतसे—गुह्यद्वारका निकलना ; ताण्डव या कोरिया ; बहरापन ; डिफ्थीरिया ; सान्निपातिक ज्वर ; अर्श ; मुँहमें बहुत तरहके सड़े घाव ; आरक्त ज्वर ; शोताद ; हूप खांसी ; पाराके अपव्यवहारका दुष्परिणाम ।

डा० काउपरथायेट कहते हैं—सान्निपातिक ज्वरमें कमजोरीकी अवस्था ; अनजानमें पाखाना हो जाना ; दांतपर कीट जमना ; स्वल्प विराम ज्वर वगैरहमें जबड़ेका लटक पड़ना ; शय्यामें पैतानेकी ओर खिसक जाना वगैरह लक्षणवाली अवस्थामें यह बहुत उपयोगी है । मुँहमें जीभपर बहुत तरहके सांघातिक सड़नेवाले ज़खम ; डिफ्थीरिया ; यकृतकी बीमारीमें पतले दस्त आना ; विषैला फोड़ा ; जखममें जलन इत्यादि लक्षणोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास।—काले केश, काली आंखें और गहरे रङ्गवाले तथा क्रोधी मनुष्योंकी बीमारियोंमें फायदेमन्द है। जिन रोगोंमें बलका क्षय हो जाता है, रोगी हमेशा कराहता रहता है। अचेतन अवस्था और किसी तरह भी उसे सन्तोष या आराम नहीं मिलता। शेवालकी तरह (fungoid) उद्भेदवाला जखम और आंतोंमें नकली झिल्ली पैदा हो जाती है। रोगी इतना कमजोर हो जाता है कि बैठनेके साथ ही उसकी आंखें मुंदने लगती हैं; निचली हनुवटी झूल पड़ती है और वह शय्यासे फिसल पड़ता है। खास कर मुख गह्वर और मलद्वारपर इसका हमला होता है। जीभ और मलद्वारकी अवरोधक पेशी क्रियाहीन हो जाती है। रक्तके ऊपर अपनी पीव पैदा वाली शक्ति प्रकटकर रोगीको बलक्षय करनेवाले रोगमें डाल देती है। उत्ताप जितना ही अधिक होता है, कमजोरी भी उसी अनुसार बढ़ने लगती है और शरीरके रसोंका सड़ना आरम्भ हो जाता है। पेशाब करनेके समय आप ही आप पाखाना हो जाता है।

लक्षणावली।

मन।—अचेतन्य, अस्पष्ट शब्दसे यंत्रणा प्रकट करना अथवा कराहना, क्रोध आ जाना, अन्तर्दृष्टिशील और शान्त, भविष्यकी चिन्तामें बहुत व्याकुल रहता है, बेचैनी और सरमें चक्कर आना। [ऐलो, पोडो]

मस्तक।—सरमें चक्कर, माथेके पिछले भागमें भार मालूम होना। ऐसा मालूम होना मानो माथा टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है ऐसा दर्द। सरका दर्द—नित्य सवेरे ८ बजेसे दोपहरके १ बजे तक रहता है। बाईं भौंके पास दर्द आरम्भ होता है और बाईं आंख, नाकका आधा बायां भाग, ललाट और कनपटी या शङ्खदेशसे सरके पिछले भागतक फैला रहता है। मानो मस्तिष्क छिन्न भिन्न हुआ जाता है, आंखें हिलानेपर (ब्रायो) या उठ बैठनेपर दर्द बढ़ जाता है, थोड़ा परिश्रम करनेपर घटता है। केश सब मानो खड़े हो गये हैं (लैकनेन्थिस) ऐसा अनुभव होता है।

आंख।—सीधे भावसे आधी दृष्टि (Perpendicular half-sight) ऊपरका आधा भाग या निचला आधा भाग दिखाई देता है। पुतली सिकुड़ी; रौशनी अच्छी न लगना; अंधेरेमें आराम मिलना।

नाक।—हूप खांसी (कुक्कुर खांसी) में नाकसे खून गिरना, बहुत दिनों तक रक्त-स्राव (लिडम); बार बार छींक।

मुखमण्डल। निचला हनु झूल पड़ता है; व्रण आदि; दो ओंठ सूखे, फटे। निचले ओंठके बाईं ओर दिनके ४ बजेसे आधी रात त दर्द।

मुख-गह्वर।—दूषित रोग या जखमसे भरा, गहरे, त्वचाको छेद दें वाले जखमोंकी तली घोर लाल या काली आभा लिये रहती है, छोड़ी हु सांसमें दुर्गन्ध रहती है और बहुत दुर्बलता मालूम होती है। गलनालीव झिल्लीका प्रदाह (Diphtheria); कर्कट (Cancer), जीभ चमड़ेकी तर सूखी और क्रिया हीन, दांतकी जड़ और मसूढ़ेमें सूजन। दांतमें दाग र मैल चढ़ी (Sordes)।

गलेके भीतर।—उपजिह्वा फूली। गलेमें घाव और नकली झिल्ल या पर्दा पैदा हो जाना। गलनाली फूली, गाढ़ा लाल रङ्ग और दर्दसे छुआ जाना। कुछ निगलनेकी चेष्टा करनेपर झिल्लीका सिकुड़ना, फैलना आरम्भ होता है और सांस रुकनेका लक्षण पैदा हो जाता है।

पाकाशय।—मांसको देखना तो दूरकी बात है, याद आनेपर भी रोगीको घृणा लगने लगती है। (ऐसिड-नाइट्रिक) कभी कभी बहुत भूख और जलीय पदार्थ पीनेकी बार बार इच्छा होती है।

हृत्पिण्ड।—कलेजेकी धड़कन मुंहमें अनुभव करना। नाड़ीकी गति धीर और क्षीण—कभी कभी रुक रुककर (Intermitting)। दिनमें धीर गति और रातमें अपेक्षाकृत तेज।

मल और मलान्त्र।—बवासीर रहे या न रहे, मलद्वारमें बहुत स्पर्श अनुभव होता है। ऋतुके समय मलद्वारमें बहुत तकलीफ रहती है। अर्शकी बलि फूली, नीली आभा लिये, दर्द भरी और उसका छुआ न जाना। बच्चेको एकाएक बवासीरकी बीमारी हो जाती है, इतना दर्द कि कपड़ेकी रगड़तक सहन नहीं होती। पेशाब करनेके समय कांच निकल आती है (Prolapsus-ani)। गर्भावस्थामें अर्श, उदरामय—पेशाब करनेके समय आप ही आप पाखाना हो जाना, वायु निकलनेके समय भी मल निकल जाता है (ऐलो); इस तरह पेशाब नहीं कर सकता कि पाखाना न हो।

पेशाब।—धीरे धीरे पेशाब निकलता है, मूत्राशय दुर्बल—पेशाब करनेके समय बहुत देरतक राह देखनेपर तब कहीं पेशाब होता है। इतना वेग देना पड़ता है, कि मूत्रनली बाहर निकल पड़ती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—असमयमें ही ऋतु हो जाना—मानसिक सुस्ती, बात नहीं करती;—मानों उसकी मृत्यु निकट है। कमरमें दर्दके साथ प्रदर। ऋतुकालमें मलद्वारमें दर्द, जननेन्द्रियमें जखम, जननेन्द्रियमें स्पर्शानुभूति, उसमें साड़ीकी रगड़तक सहन नहीं होती (मर्‌क्यूरियस)।

प्रत्यङ्ग आदि।—भार, दर्द-भरा और क्षीण। चलते चलते ढुलक पड़ता है। गुल्फस्थिके पेशी सूत्रमें (Pondo Achilles) दर्द (ऐसिड-बेञ्जोयिक)

त्वचा।—बहुत खुजलानेवाली फुन्सियां और रस-भरे दाने (रास-टक्स); दुष्ट-व्रण (Carbuncle—ऐन्थ्रु स)। निचले प्रत्यङ्गका बदबूदार जखम। आरक्त ज्वर,—नीली आभा लिये देह, फुन्सी-भरे थोड़ी संख्यामें उद्भेद।

ज्वर।—सान्निपातिक ज्वर और आन्त्रिक (Enteric), गाढ़ी बेहोशी जैसी नींद, जाग्रत अवस्थामें भी चेतनाका न रहना, जोरसे कराहना, जीभके दोनों पार्श्व मैल चढ़े, सूखे चमड़ेकी तरह सिकुड़े और सुन्न जैसे, पेशाबके समय आप ही आप बदबूदार पाखाना हो जाना। शय्यामें पायताने खिसक जाता है। प्रत्येक तीसरे स्पन्दनपर नाड़ी रुक जाती है या विलोप हो जाती है।

वृद्धि।—तर हवामें।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न—कैम्फर, ब्रायोनिया, इपिका। सम-गुण—ब्रायो—फास्फो-ऐसिड, एपिस, बैप्टी' बेलाडो, जेल्स, नाइट्रिक-ऐसिड इत्यादि। ब्रायोनिया, मार्क्युरियस और रास-टक्सके बाद इसका प्रयोग होता है।

द्रष्टव्य।—बहुत ज्यादा तम्बाकू या अफीमके कारण शरीरकी दुर्बलताको विशेष रूपसे नष्ट करता है।

शक्ति।—१ लीसे ६ ठी दशमिक और ३० या २०० क्रम।

ऐसिड नाइट्रिक।

(ACIDUM NITRICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—(यवक्षार द्रावक या यवक्षारका अम्ल) अर्थात् नाइट्रेट आव पोटास और सल्फ्यूरिक एसिडसे यह तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक हुआ है ;—(डा० क्लार्कका मत) = गुह्यद्वारका फटना ; बगलमें बदबूदार पसीना ; बदबूदार श्वास-प्रश्वास, मूत्रग्रन्थिकी बीमारी, श्वासनली ; बागी ; उपदंश ; पैरकी खाल उधड़ना ; मसे ; कब्जियत ; गठे, खांसी ; रक्तामाशय ; अजीर्ण ; बहुतसी कानकी बीमारियाँ ; मृगी ; बहुतसे चक्षुरोग (आँखोंकी बीमारियाँ); पैरमें पसीना होना ; नासूरका जखम ; ग्रन्थियोंका फूलना ; प्रमेह ; मसूढ़ेका जखम ; पेशाबमें खून ; रक्तस्राव ; चर्ममें विकार ; बहुतसे चर्मरोग ; आँखोंका प्रदाह (आंख उठना) ; उपदंशकी वजहसे उत्पन्न आइराइटिस ; बहुत रक्तस्राव ; क्षीण-दृष्टि ; नखके बहुतसे विकार ; नाकमें पुराना जखम ; चमड़ी ; नाकका अर्बुद ; गुह्यद्वारका प्रदाह और निकलना ; प्रोस्टेट ग्रन्थिमें पीव ; जीभकी बहुतसी बीमारियाँ ; हड्डीमें गड़बड़ी ; मुँहमें जखम और लार बहना ; उपदंश ; स्वादमें गड़बड़ी ; हूप खांसी (कुकुर खाँसी) इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।–मनुष्य शरीरके नवद्वारकी श्लैष्मिक झिल्ली और त्वचाके संयोग-स्थलपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है (ऐसिड-म्यूर)।

उपयोगी धातु ।—डा० एलेनका मत—क्षीण देह होनेपर भी सुदृढ़ कृष्ण वर्ण और स्नायविक धातुवाले मनुष्योंकी बीमारी । जिन सब रोगियोंको पुराना वात रोग है अथवा सामान्य कारणसे ही जिन्हें सर्दी लग जाती है, जिन्हें हमेशा पतले दस्त आते हों, उनपर ही इस दवाकी क्रिया होती है। कब्जियत रहनेपर यह प्रायः फायदा नहीं करती । कमजोर, उदरामयग्रस्त वृद्ध मनुष्योंको भी इस दवाकी जरूरत पड़ती है। शारीरिक उत्तेजनाशीलता भी इससे उत्पन्न और आराम होती है । इसका दर्द सुई वेधने या कांटा गड़नेकी तरह होता है—मानों एक नोकीली चीज़ गड़ी हुई है। दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक अच्छा हो जाता है। जाड़ा और गर्मीके अदल बदलसे पैदा हो जाता है। नींदके समय दर्द, जगह जगहपर चबानेकी तरह [illegible] जखम पैदा हो गया है। ऐसा मालूम होता है [illegible] भी व[illegible] कसकर बांधा हुआ है (ऐसिड कार्बोलिक, [illegible] जगह पर जखममें, गलनालीमें और दे[illegible] दार चीज़ गड़ी हुई है,ऐसा [illegible] किसी सांघातिक विषसे, या [illegible] विष,

यह प्रतिविष (Antidote) की तरह काम करता है और जिनका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है और जिनके धातुमें विकार पैदा हो गया है, ऐसे शरीरपर ऐसिड नाइट्रिक विशेष उपयोगी है। सब तरहके स्राव, खासकर मल, मूत्र और पसीने में सड़ी गन्ध रहती है।

लक्षणावली।

मन।—रातमें बार बार नींद खुल जाना और बहुत दिनोंतक रहनेवाली उत्कण्ठा ; रोगीको शुश्रूषाकी वजहसे बहुत अधिक दैहिक और मानसिक परिश्रम (कक्यूलस); किसी प्रियतम बन्धुके वियोगकी वजहसे मनःकष्ट ; सब विषयोंमें उदासीनता ; जीवनसे वितृष्णा ; ऋतुके पहले मानसिक अवसाद। अपनी बीमारीके सम्बन्धमें बहुत चिन्ता ; बीती हुई विपत्तियोंपर सोचा करना ; विसूचिकाका भय (आर्स); तीसरे पहरके समय मानसिक अवसाद और उत्सुकता। क्रोधी स्वभाव, अपने मतको प्रधानता रखना चाहता है, बात न माननेवाला ; बदला लेना प्रिय मालूम हो, दुष्टमति और किसीको क्षमा नहीं करना चाहता—क्षमाशीलताहीन।

मस्तक।—ऐसा मालूम होना, कि माथा एक बन्धनसे बँधा हुआ है (ऐनाकार्ड, ऐसिड कार्बोलिक, सलफर); सरमें दर्द,—टपक, मानो बाई कानपटी या शंखदेशको कोई हथौड़ीसे ठोंक रहा है ;—सवेरे धीरे धीरे आरम्भ होकर पहली बार भोजन करनेके समय निवृत्त हो जाता है। टोपीकी गर्मीसे बढ़ना (केल्के-फास ; कार्बो ; नेट्रम); ठण्डी हवामें घटना। सरमें पूर्णता मालूम होना ;—रास्तेकी गड़बड़ीसे वह बढ़ जाता है। माथेमें रसभरे दाने होकर केश उड़ जाते हैं। खोपड़ी (Scalp) छुई नहीं जाती, उसमें स्पर्श सहन नहीं होता।

कान।—सुननेकी शक्तिका घटना—सवारीपर चढ़नेसे घटना। (ग्रैफा) पत्थरके बने रास्तेपर चलनेवाली सवारी का घड़घड़ शब्द सहन न होना। (काफिया, नक्स)। चबानेके समयमें कानमें कटकट आवाज।

आँख।—दो देखना अर्थात् एक चीजका दो दिखाई देना (Diplopia); तेज कांटा वेधने जैसा दर्द मालूम होना ; आंखके सफेद अंश (Cornea) में जखम।

नाक।—पुराना पीनस (Ozoena) रोग ; पुरानी सर्दी, पीली आभा लिये बदबूदार और जखम पैदा करनेवाला श्लेष्मा-स्राव। नित्य नाकसे पीली

आभा लिये पपड़ी निकलना। सर्दीकी वजहसे नाकके छेदमें दर्द और उससे खून बहना। नाक लाल, उपदंश विषके कारण नासारन्ध्रमें सूखी, श्लेष्मासे ढकी सूजन। नाकके पिछले छेदसे मैला, खून मिला श्लेष्मा निकलना। सुई वेधने जैसा दर्द—मानो कोई नुकीली चीज गड़ी हुई है। (आर्जेण्ट नाईट्रि ; हिपर)। कानके पीछेवाली (Mastoid) हड्डीको चूर चूर कर देनेवाला जखम (Caries) ; वक्षके भीतरकी रोगके साथ नाकसे रक्त-स्राव।

मुख-गह्वर।—बदबू निकलना। लार बहना। मसूढ़ोंसे खून जाना। जीभकी बगलमें गहरा, टेढ़ा, सीमाबद्ध जखम ; उसमें तेज सुई वेधने जैसा दर्द ; मानो कोई बारीक सींक गड़ी हुई है।

गलनाली।—तालुमूलके बगलमें और गांठमें समूचे नाकके छेद भरकी डिपथिरिटिक या नकली झिल्ली (Diphtheritic Membranes) द्वारा ढकी रहना। उससे भयङ्कर दुर्गन्ध निकलती है (कैलि-पार्मैङ्ग) ; कानकी जड़की कर्णमूल ग्रन्थि भी फूल जाती है। हमेशा श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा करता है ; जगह जगहपर सफेद लेप चढ़ी रहती है ; निगलनेके समय सींक गड़नेकी तरह दर्द होता है।

पाकाशय।—बहुत भूख ; मुँहका स्वाद मीठा। न पचनेवाली चीजें या खड़िया अथवा मिट्टी वगैरह खानेकी इच्छा ; ह्रत्पिण्डके पासवाले अंशमें दर्द मालूम होता है।

अन्त्राशय।—मलद्वार फटा हुआ या फटना (Rectal Fissures);— पाखाना फिरनेके समय क्षणभरके लिये छेदनेकी तरह तकलीफ ; नर्म पाखाना होनेपर भी कतरनेकी तरह दर्द (ऐल्यूमेन ; नेट्रम-कार्ब ; रेटान)। उदरामय,—बहुत कोखना पड़ता है, पर पाखाना बहुत थोड़ा होता है : मानो मलनालीमें मल अटका हुआ है और निकलता नहीं (ऐल्यूमिना) ; मलनाली या मलद्वार मानो फूट रहा है या फटा जाता है (नेट्रम-म्यू) ; पाखाना होने बाद, बहुत देरतक काटनेकी तरह दर्द रहता है (रेटान, सलफर ;—पाखाना फिरनेके समय और पीछे होनेपर = मार्क)। आंतोंसे खून निकलना—सान्निपातिक या आन्त्रिक ज्वरमें (क्रोटेलस, सैंगुई) ; या ज्यादा शारीरिक परिश्रमसे रक्तस्रावमें—रक्त चमकीला, लाल, परिमाणमें ज्यादा या गाढ़ा। थोड़ेसे मामान्य कारणसे भी अर्शसे बहुत ज्यादा रक्तस्राव।

मलनालीका बाहर निकलना (काँच निकलना)। मूलका दर्द—कसकर कपड़ा पहननेसे घट जाता है।

पेशाव।—थोड़ा, गाढ़ा भूरा रङ्ग, तेज गन्ध—घोड़ेकी पेशाबकी तरह (ऐसिड-बेञ्जो) गन्ध ; निकलनेके समय ठण्ढा और गदला ; जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाला। इसके अलावा खून और लार मिला पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय।—लिङ्गमुण्ड और लिङ्गाग्रत्वचा (Prepuce) में दर्द। उपदंशकी वजहसे गहरा जखम,—नासूरका जखम, उनके किनारे उठे हुए, सीसाकी आभा लिये हुए जखम, मांसांकुरोंसे भरे हुए। लिङ्ग-प्रदेशके केश झड़ जाना (नेट्रम-म्यूर, जिङ्कम) जखमसे दुर्गन्ध मिला खून जाना। मसे, लिङ्गार्श और श्लेष्मागुटि (Warts Condylomata),—प्रमेह और उपदंश विषकी वजहसे उत्पन्न बड़ा, असम पृष्ट और खोल भरा नोकदार (Pedunculated = थूजा) मसा ; धोनेके समय उससे खून निकलता है। दूसरे समय उससे रस बहा करता है—सुई वेधने जैसा उसमें दर्द (स्टैफ, थूजा)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाहरी भाग जखम आदि कारणोंसे दर्द-भरा (हिपर, मार्क)। ऋतु—बँधे समयके पहले ही हो जाता है ; अनियमित,—थोड़ा स्राव [illegible] तरह : पानी जैसा. ऊरुदेशसे योनितक सुई वेधने जैसा दर्द।

होनेपर—ऐसिड-फ्लुड ; स्वर सम्बन्धी पेशीकी क्रिया लोप हो जानेके कारण होनेपर—ऐसिड-आक्जेलिक)। वक्षोस्थि (Sternum) के नीचे दर्द मालूम होना। ऊँचेपर चढ़नेपर श्वासकष्ट और दमा (आर्स ; कैल्के)। छातीमें पीव संचय होना,—बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा और पीव भरा थूक।

खाँसी।—सूखी,—पुरानी—स्वरनलीसे उत्पन्न खांसी—जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द, मानो स्वरनालीमें जखम हो गया है। (हमेशा एक ही पार्श्वपर आक्रमण होता है)।

पुरानी हँफनी खाँसी।—सूखी हो या कफ मिली हो, मलमें कड़ापनके साथ रातमें और सवेरे बढ़ जाती है। निद्रावस्थामें खांसी (कैमो)।

प्रत्यङ्गादि।—बदबूदार पैरका पसीना,—दर्द पैदा करनेवाला,—सुई वेधने जैसी तकलीफ ; पैरकी अँगुलीमें जाड़ेके फोड़े बवाई या पानी लगना (ऐगारिकस ; यदि इसका कारण औरतोंका ऋतु रुकना हो—पल्स)।

त्वचा।—जखम, सामान्य कारणसे ही उससे खून बहने लगना ; मुँहके कोनेमें (नेट्र-म्यु); छूनेपर काँटा गड़ने जैसी तकलीफ (हिपर); टेढ़ी सीमावाला ; तलीमें कच्चे मांसकी तरह रंग ; मांसांङ्कुर (Granulations) की अधिकता ;—श्लेष्मा-प्रधान धातुके साथ पारा या उपदंशविष मिल जानेसे उत्पन्न। स्राव,—पतला, बदबू, कटु ; रङ्ग भूरा या मैलके साथ पीलापन लिये हरा रङ्ग ; निर्दोष-पीव प्रायः नहीं दिखाई देता। जननेन्द्रिय और मलद्वार प्रदेशमें मसे, प्रमेह या उपदंश विषकी वजहसे लिङ्गाग्रे (Warts or Condylomata), बड़ा, पीठ असम, नुकीला (सवृन्त-Pedunculated), धोनेके समय उससे सहजमें ही खून निकलना, खूनका स्राव करनेवाला, उसमें कांटा गड़ने जैसा दर्द (स्टैफ, थूजा, कास्टि, ड्युफ्रेशिया)।

वृद्धि।—(Aggravations)-सन्ध्या और रात्रिके समय। आधी रातके बाद ; छूने और सर्दी-गर्मीके परिवर्त्तनसे ; पसीना निकलनेके समय। (जागनेपर—लैके) ; टहलनेके समय।

घटना।—सवारी आदिमें भ्रमण करनेके समय (कक्यूलस विपरीत]।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न**।—कैल्केरिया ; हिपर, मार्क, मेजेरियम, सलफर। अनुपूरक—आर्स ; कैलेडियम। लैकेसिस-से इसका शत्रुता भाव है। विसूचिकाके आक्रमणमें—डरके सम्बन्धमें आर्सेनिकके सदृश है। पाराके

अपथ्यव्यवहारकी वजहसे बीमारीमें विशेष उपयोगी है ; डिजिटेलिसका बार बार प्रयोगसे पैदा हुए रोगमें प्रतिषेधक रूपमें कार्य करता है।

कैल्केरिया, हिपर, मार्क्यूरियस, नेट्रम-कार्ब ; पल्सेटिला या थूजा वगैरहके बाद प्रयोग करनेपर, ज्यादा फायदा हुआ करता है, और कैलि-कार्बोनिकमके बाद यह आश्चर्यजनक रूपसे फायदा दिखाता है। [डा० एड्च, सी, ऐलेन]।

शक्ति।—६ ठी से २०० शक्ति तक। पाराके विकारको नष्ट करने या घटनाके लिये २०० शक्तिसे बहुत लाभ दिखाई देता है।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ६० दिन।

ऐसिड नाइट्रोम्यूरियैटिकम।

[ACIDUM NITRO-MURIATICUM]

दूसरा नाम। -ऐकोवा रिजिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—१८ भाग नाइट्रिक ऐसिड और ८२ भाग मियु-ऐसिडका सम्मिश्रण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;— गुह्यद्वारका सङ्कोचन ; कब्जियत ; अजीर्ण ; अश्मरी ; शीताद या मसूढ़ेसे रक्तस्राव ; रह रह कर लार बहना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—आक्जैलूरिया [Oxaluria] नामक एक तरहकी पेशाबकी बीमारी [रेवत चीनी वगैरहसे एक तरहका द्रावक पैदा होता है, उसे आकजेलिक ऐसिड कहते हैं—जब पेशाबमें यह ऐसिड अधिक रहता है, उस समय उस रोगको आकजैलुरिया कहते हैं।] पित्तज अवस्था-विशेष, संकुचित मलद्वार और मूत्राश्मरी या मूत्ररेणु (पथरी-Gravel) रोगादिमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है।

लक्षणावली।

मुखज्वर।—गला हुआ मुखौष रोग अर्थात सड़नेवाला मुख-रोग (Cancrum Oris—मार्कं-कोर, आर्स।) ; मुखगह्वर और जीभकी जड़में

छिछला Superficial जखम । धातव स्राव (कयूमम)। मसूढ़ेसे सहजमें ही खून निकलने लगता है। मलस्राव—रातमें लगातार लार बहा करती है [मार्क]।

पाकाशय ।—खट्टी डकार और पाकाशयमें भूख मालूम होना—खा लेनेपर भी यह भूख नहीं जाती। कलेजा हिलना या कलेजा धड़कना।

मलनाली ।— कब्जियत—मलका कड़ापन और वृथा ही वेग। मलद्वारावरोधक पेशी [Sphincter ani] संकुचित। मलद्वारसे रस बहना या तर [Moist] रहना तथा दर्द।

पेशाब ।—गदला। मूत्रनालीमें जलन मालूम होना। आक्जेलुरिया [कैलि-फास]।

ज्वर ।—निम्नाङ्गसे उर्द्धाङ्गतक कम्प होता है ;—बहुत पसीना।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट और निम्न क्रम।

ऐसिड आक्जेलिकम ।

(ACIDUM OXALICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रेवत चीनसे उत्पन्न एक तरहका विषैला द्रावक। इसका विचूर्ण बना करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है। डा० क्लार्क कहते हैं;—वक्षका स्नायुशूल; पीठमें दर्द ; वक्षकी बहुत बीमारियाँ; बच्चोंकी विसूचिका; आक्षेप; हाथमें वातका दर्द; बिछावनमें पेशाब कर देना; आँखकी बीमारी; वातरक्त; मूत्राश्मरी; आँत उतरना; अजीर्ण; मस्तिष्कावरण प्रदाह; मेरुमज्जाका प्रदाह; स्नायुशूल; नाककी बीमारी; सुन्न हो जाना; शुक्रनालीमें दर्द; पाकाशयकी बीमारी; धनुष्टङ्कार; अण्डकोषकी बीमारी; जीभकी बीमारियाँ; मूत्रविकार; स्वरविकार इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—रोग या दर्दके विषयमें सोचनेपर ही उसका बढ़ जाना—ऐसे विशेष लक्षण या रोग आदिमें यह विशेष उपकारी है। यह मेरुदण्डपर आक्रमण करता है, और गति विधायिनी शक्तिको नष्ट करता है [Motor paralysis]; शरीरमें जगह जगह सीमित स्थानपर दर्द

होता है। [इग्ने ; कैलि-बाई]; शरीरको हिलाने और दर्दके विषयमें सोचनेपर बढ़ता है (बैराई-कार्ब ; कोल्को-फास ; कास्टि ; हेलोन ; म्यूर ; आक्साइड्रोप ; पेट्रोल)। गलनाली और वक्षके भीतर आक्षेपिक लक्षण आदि। स्नायविक सुस्ती (Neurasthenia) पैदा कर देता है।

लक्षणावली।

मन।—मनःसंयोगकी शक्तिका न रहना ; अत्यन्त फुर्ती ; कोई भी बात मनमें आते ही तुरन्त कर डालता है ; किसी बीमारीके विषयमें सोचते ही उसका तुरन्त पैदा हो जाना [बैराइटा ; कोल्कि-फास ; कास्टिकम ; हेलोन ; म्यूर ; आक्साइड्रोपिस ; पेट्रोलियम]।

मस्तक।—सरमें चक्कर—खिड़कीसे मुँह निकालकर देखनेपर और आसनसे उठनेपर सरमें चक्कर आना। सोनेपर ऐसा मालूम होना कि मानो उड़ा जा रहा है। ऐसा दबाव मालूम होना मानो प्रत्येक कानके पीछे पेंच [स्क्रू] कसा जा रहा है ; गर्मी मालूम होना। पाखाना होनेके पहले और समय पर सरमें दर्द। (पाखाना हो जानेपर=कार्बो-सल्फ, इग्ने)।

आंख।—आँखकी पुतलीमें बहुत दर्द और फैली-सी मालूम होना। रेटिना या अक्षिमुकुरमें चैतन्याधिक्य (Hyperaesthesia)। समरेखाके भावमें अवस्थित (Linear) द्रव्य बड़े मालूम होते हैं और दूर मालूम होते हैं।

पाकाशय।—ऊपरकी ओर उठनेवाली जलन ; पाकाशय प्रदेशको छूनेसे असह्य दर्द मालूम होता है।

अंत्राशय।—यकृतमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, शूलका दर्द। किसी सीमाबद्ध स्थानमें जलन मालूम होना। उदरामय—बार बार आप ही आप अनजानमें पाखाना हो जाना;—समूचे अंत्राशयमें एकाएक तकलीफ पैदा हो जाना और अच्छा न मालूम होना। ऐसा मालूम होना मानो नाभि प्रदेशको कोई मरोड़ रहा है। नीचेकी ओर वेग; गाढ़ा, गदला और बहुत अधिक परिमाणमें मल—सवेरे छः बजनेके समय वृद्धि ; काफी पीनेकी वजहसे पतले दस्त आना।

पुं-जननेन्द्रिय और पेशाब।—रेतःरज्जु या शुक्रवाहीनली (Spermatic cord) में असह्य स्नायुशूल (Neuralgia) ; दोनों कोष (Testes) मानो निष्पेषित और भारयुक्त मालूम होते हैं। पेशाबकी बात याद आते ही पेशाब लग जाता है।

श्वास-यंत्र ।—बाएं फेफड़ेमें अस्त्रकी चोट जैसा दर्द—श्वासरोध करनेवाली यन्त्रना। बाएं फेफड़ेकी तलीमें खूनका इकट्ठा होना और प्रदाह। गलनाली और वक्षके भीतर संकोचनके साथ अकड़न-भरा श्वास-प्रश्वास। स्वर-भङ्ग; स्वर लोप; स्वरोत्पादक तन्त्री (स्वरयंत्र—Vocal Cord) की क्रियाका न होना (Parlaysis) पक्षाघात।

हृत्पिण्ड ।—हृत्शूल,—हृत्पिण्ड और बाएं फेफड़ेमें तेज अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द—यह उदरके ऊपरतक फैल जाता है। पीठका सुन्न और क्षीण जैसा मालूम होना; दोनों पैर बरफ जैसे ठण्ढे और उनकी क्रियाशक्तिका न रहना। क्षण भरके लिये काष्ट साध्य श्वास-प्रश्वास,—मानो रह रहकर रोगी अपनी असह्य यन्त्रना घटानेके लिये फेफड़ेमें भरी सम्पूर्ण वायु निकाल डालनेकी चेष्टा करता है। दोनों बाहुओंमें तेज कतरनेकी तरह दर्द मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—सुन्न, क्षीण और दर्द भरे। मेरुदण्डमें दर्द पैदा होकर हाथ पैरमें फैल जाता है—सिकुड़न और कतरनेकी तरह दर्द। पैशिक अवसाद (Muscular Prostation)। कलाईमें दर्द—मानों चोट लगी है (अलमस) मस्तिष्कमें मेरुमज्जीय आवरण प्रदाह (Spinal Meningitis) रोगाधिकारमें दोनों पैर अकड़कर क्रियाहीन हो जाते हैं।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—क्रियोजोट; फास-ऐसिड; पल्स; सल्फ;—आर्स; कोल्चि; आर्जेण्टम; एसिड पिक्रिक।

दोषघ्न ।—कार्बोनेट आव लाइम और मैग्नेशिया।

शक्ति ।—६ से ३० शक्ति तक।

ऐसिड फास्फोरिक ।

(ACIDUM PHOSPHORICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—महात्मा हनिमैनके मतसे—कैल्केरिया मिली हड्डीमें सल्फ्युरिक एसिडकी सम्मिलित क्रियासे इसकी उत्पत्ति होती है। वि॰ फा॰ के मतसे नाइट्रिक एसिड और फास्फोरसकी सम्मिलित क्रियासे यह उत्पन्न होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—क्षीण दृष्टि; दमा; मस्तिष्ककी दुर्बलता; उपदंश; श्वासनालीका प्रदाह; हैजा; गठ्ठे; खाँसी; कटि स्नायुशूल; दुर्बलता; बहुमूत्र; अतिसार; अजीर्ण; शुक्रक्षय; आन्त्रिक ज्वर; शय्यामें पेशाब; पेट फूलना; वातरक्त; मूत्राश्मरी; केश झड़ना; सर-दर्द; क्षय-ज्वर; वंक्षण सन्धिकी बीमारी; ध्वजभङ्ग; गण्ड-मालाका दोष; सन्धियोंकी बीमारी; स्तनमें विकार; गर्भिणीका उदरामय; नकली मैथुन और प्रणय भङ्ग हो जानेका परिणाम; मानसिक विकार; पारा और उपदंशका विकार; कामोन्माद; बहुत पसीना; पेशाबमें फास्फेट प्रभृति; लिङ्गको ढकनेवाली त्वचामें मसे; सूतिकाक्षेप; वात; झुनझुनी वाला वात; सान्निपातिक ज्वर; क्षत रोग; जरायुमें विकार; सरमें चक्कर आना; कृमि इत्यादि।

उपयोगी धातु।—रस रक्तका क्षय होना, बहुत अधिक इन्द्रिय सेवन, कड़ी नयी बीमारीके बादकी बीमारी और मनःक्षोभ, दुःख, शोक और प्रणय भङ्ग हो जानेके कारण जिनका शरीर और मन सुस्त पड़ गया हो, उनके लिये उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास।—कोमल, आत्मसमर्पण करनेवाली प्रकृति। जिन बच्चोंको पतले दस्त आया करते हैं और वे अच्छी तरह चल नहीं सकते, अकालवार्द्धक्य अर्थात् जो शिशु और थोड़ी उम्र वाले बालक जल्दी जल्दी बढ़ जाते हैं (जल्दी मोटे होते हैं=कैल्के; दुबले हुए जाते हैं=आर्स; बैराइटा; फास)। अस्थि-वेष्टनी त्वचा (Periosteum) को मानो कोई छुरीसे छील रहा है, इस तरहका दर्द होना (रास-टक्स),—आराम करनेपर दर्दका बढ़ना और शरीरको हिलाते रहनेपर घटना (डलका; केलिका; रास-टक्स; विश्रामसे घटना और शरीर हिलानेपर बढ़ना—ऐकोन; ब्राई; हियर; मार्क)। नश्तर लगाये हुए अङ्गका स्नायुशूल और स्नायविक रोग। अस्थिर चित्त, सकरुण भाव इत्यादि।

लक्षणावली।

मन।—मृदु और कोमल स्वभाव; (इग्ने, पल्स); गृहस्थीके विषयमें हो या और जिस-किसी दूसरे विषयमें जिसमें पहले बहुत अनुराग था, उन सभी विषयोंमें उदासीनता। शोकसे भरा हुआ और सुस्त (खासकर इसके

श्वास-यंत्र ।—बाएं फेफड़ेमें अस्त्रकी चोट जैसा दर्द—श्वासरोध करनेवाली यन्त्रना । बाएं फेफड़ेकी तलीमें खूनका इकट्ठा होना और प्रदाह। गलनाली और वक्षके भीतर संकोचनके साथ अकड़न-भरा श्वास-प्रश्वास । स्वर-भङ्ग ; स्वर लोप ; स्वरोत्पादक तन्त्री (स्वरयंत्र—*Vocal Cord*) की क्रियाका न होना (Parlaysis) पक्षाघात ।

हृत्पिण्ड ।—हृत्शूल,—हृत्पिण्ड और बाएं फेफड़ेमें तेज अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द—यह उदरके ऊपरतक फैल जाता है । पीठका सुन्न और क्षीण जैसा मालूम होना; दोनों पैर बरफ जैसे ठण्ढे और उनकी क्रियाशक्तिका न रहना । क्षण भरके लिये कष्ट साध्य श्वास-प्रश्वास,—मानो रह रहकर रोगी अपनी असह्य यन्त्रना घटानेके लिये फेफड़ेमें भरी सम्पूर्ण वायु निकाल डालनेकी चेष्टा करता है । दोनों बाहुओंमें तेज कतरनेकी तरह दर्द मालूम होना ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—सुन्न, क्षीण और दर्द भरे । मेरुदण्डमें दर्द पैदा होकर हाथ पैरमें फैल जाता है—सिकुड़न और कतरनेकी तरह दर्द । पैशिक अवसाद (Muscular Prostation) । कलाईमें दर्द—मानों चोट लगी है (अलमस) मस्तिष्कमें मेरुमज्जीय आवरण प्रदाह (Spinal Meningitis) रोगाधिकारमें दोनों पैर अकड़कर क्रियाहीन हो जाते हैं ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—क्रियोजोट ; फास-ऐसिड ; पल्स ; सल्फ ;—आर्स ; कोल्चि ; आर्जेण्टम ; एसिड पिक्रिक ।

दोषघ्न ।—कार्बोनेट आव लाइम और मैग्नेशिया ।

शक्ति ।—६ से ३० शक्ति तक ।

ऐसिड फास्फोरिक ।

(ACIDUM PHOSPHORICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—महात्मा हनिमैनके मतसे—कैल्केरिया मिली हड्डीमें सल्फ्युरिक एसिडकी सम्मिलित क्रियासे इसकी उत्पत्ति होती है। वि० फा० के मतसे नाइट्रिक एसिड और फास्फोरसकी सम्मिलित क्रियासे यह उत्पन्न होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—क्षीण दृष्टि; दमा; मस्तिष्ककी दुर्बलता; उपदंश; श्वासनालीका प्रदाह; हैजा; गठिया; खाँसी; कटि स्नायुशूल; दुर्बलता; बहुमूत्र; अतिसार; अजीर्ण; शुक्रक्षय; आन्त्रिक ज्वर; शय्यामें पेशाब; पेट फूलना; वातरक्त; मूत्राश्मरी; केश झड़ना; सर-दर्द; क्षय-ज्वर; वंक्षण सन्धिकी बीमारी; ध्वजभङ्ग; गण्ड-मालाका दोष; सन्धियोंकी बीमारी; स्तनमें विकार; गर्भिणीका उदरामय; नकली मैथुन और प्रणय भङ्ग हो जानेका परिणाम; मानसिक विकार; पारा और उपदंशका विकार; कामोन्माद; बहुत पसीना; पेशाबमें फास्फेट प्रभृति; लिङ्गको ढकनेवाली त्वचामें मस्से; सूतिकाक्षेप; वात; झुनझुनी वाला वात; सान्निपातिक ज्वर; क्षत रोग; जरायुमें विकार; सरमें चक्कर आना; क्रिमि इत्यादि।

उपयोगी धातु।—रस रक्तका क्षय होना, बहुत अधिक इन्द्रिय सेवन, कड़ी नयी बीमारीके बादकी बीमारी और मनःक्षोभ, दुःख, शोक और प्रणय भङ्ग हो जानेके कारण जिनका शरीर और मन सुस्त पड़ गया हो, उनके लिये उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास।—कोमल, आत्मसमर्पण करनेवाली प्रकृति। जिन बच्चोंको पतले दस्त आया करते हैं और वे अच्छी तरह चल नहीं सकते, अकालवार्द्धक्य अर्थात् जो शिशु और थोड़ी उम्र वाले बालक जल्दी जल्दी बढ़ जाते हैं (जल्दी मोटे होते हैं=कैल्के; दुबले हुए जाते हैं=आर्स; बैराइटा; फास)। अस्थि-वेष्टनी त्वचा (Periosteum) को मानो कोई छुरीसे छील रहा है, इस तरहका दर्द होना (रास-टक्स),—आराम करनेपर दर्दका बढ़ना और शरीरको हिलाते रहनेपर घटना (डल्का; कैलिका; रास-टक्स; विश्रामसे घटना और शरीर हिलानेपर बढ़ना—ऐकोन; ब्राई; हिपर; मार्क)। नश्तर लगाये हुए अङ्गका स्नायुशूल और स्नायविक रोग। अस्थिर चित्त, सकरुण भाव इत्यादि।

लक्षणावली।

मन।—मृदु और कोमल स्वभाव; (इग्ने, पल्स); गृहस्थीके विषयमें हो या और जिस किसी दूसरे विषयमें जिसमें पहले बहुत अनुराग था, उन सभी विषयोंमें उदासीनता। शोकसे भरा हुआ और सुस्त (खासकर इसके

साथ यदि शारीरिक दुर्बलता और दुबलापन भी मिला रहे=सिनकोना ; लाइको मार्क ; सिपिया), बातचीतकी इच्छा न होना (वेल ; कोनायम ; इग्ने ; ऐसिड नाई); गुम और दुखित भाव (इग्ने ; पल्स)। म्रियमाण और भविष्यकी चिन्तामें भरा हुआ (लाइको ; नेट्रम-मयू ; एसिड-नाई)। स्मरणशक्तिका घट जाना (ऐनाका)। मन स्थिर नहीं रख सकता ; अपने भाव प्रकट करनेवाले वाक्य याद नहीं कर सकता। प्रलाप, निरर्थक, अस्पष्ट शब्दोंमें बताना ; मोहमें पड़ा हुआ है, ऐसी नींद ; रोगी अपने सामनेकी घटना भी समझ नहीं सकता ; सुषुप्ति दूर होनेपर एकदम होशमें रहने जैसा बोलता है और कोई बात पूछने पर धीरे धीरे सम्बद्ध भावसे ठीक ठीक उत्तर देता है और फिर बेहोश जैसा हो जाता है (आर्निका—जवाब खतम करनेके पहले ही सो जाता है—बैप्टी ; बुद्धि मलिन रहनेपर भी ठीक ठीक उत्तर देता है—कोलचि; कक्यू ; आइरिस-वार्सि ; प्लम्बम)।

कान।—श्रवणशक्तिमें गड़बड़ी और कर्ण-विवरमें गड़गड़ शब्द, आन्त्रिक या सान्निपातिक (मोतीझरा) ज्वरके बाद स्नायविक [Nervous] बहरापन।

मस्तक।—सरमें दर्द—खोपड़ी-मूर्द्धदेशमें (Vertex) चूर करने जैसा भार मालूम होना। बहुत दिनोंके शोक या स्नायविक अवसादसे पैदा हुई बीमारियाँ ; पश्चाद्देश (माथेका पिछला भाग) और ग्रीवापृष्ठ (गर्दनके पीछे) में ; इसकी गति साधारणतः पीछेकी ओरसे सामनेकी ओर रहती है;—वृद्धि=थोड़ा भी हिलानेसे या किसी तरहकी आवाजसे ; विशेष कर गाने बजानेकी आवाजसे। सोनेके बाद (ब्राई, जेल्स, सिलि) घटना। पढ़नेवाली बालिकाओंका सर दर्द—आँखोंसे बहुत काम लेने या अपथ्यव्यवहारकी वजहसे (कैल्के-फास ; नेट्रम-म्यू); बच्चोंका सर दर्द, पढ़नेके समय दर्द पैदा हो जाना (तेजीसे और जल्दी बढ़नेवाले बालकोंको ही ऐसा दर्द होता है)। थोड़ी उम्रमें ही केश पक जाते हैं या उड़ जाते हैं, वमनके बाद धीमा सरका दर्द।

कानको दर्द।—सुई बेधनेकी तरह दर्द, गाल तथा दाँतोंतक संकोचन मालूम होना ; सङ्गीतकी आवाजसे बढ़ जाना। सङ्गीत असह्य (लाइको, फास, सल्फ)।

आंख।—मदाह और ऊपरी पलकमें गुहौरी (Styes=लाइको, पलस,—निचली पलकमें=रास्टक्स) बहुत चमकीली चीज देखनेपर आंख झिलमिलाने लगती है। दोनों आंखोंके चारों ओर नीला घेरा। पलकके भीतर ठण्डक मालूम होना। (ऐल्यू, आर्ज-नाई; कैलि-कार्ब); आंखका गोला बड़ा मालूम होना। दृष्टिकी मलिनता (Amblyopia) से उसकी उत्पत्ति होना, पलकोंकी बगलमें सूजन, लाली; बरुनी उड़ जाती हैं और उसमें पीबके कण-से चिपटे रहते हैं।

नाक।—नाकसे रक्तका स्राव होना। नाककी छेदको अंगुली डाल कर खोंटता रहता है (सिना; खोंट खोंटकर खून निकाल डालता है—अरम)

मुखमण्डल या मुख-विवर।—मुखमण्डल रक्त-शून्य, मैला और पीले रंगका चेहरा—मानो उसपरकी लसदार चीज सूख गयी है (मैंग-कार्ब) सामने वाले दांतमें रातमें जलन मालूम होना, गर्म या ठण्डा पानीय पीनेपर घटना। सब मसूढ़े दाँतसे अलग हो जाते हैं। मसूढ़े दर्द भरे और उन्हें मलनेपर उनसे खून बहता है [कार्बो-वेज, मार्क, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम; मसूढ़े में शीताद रोग (Scorbutic); मसूढ़ा=ऐमोन-कार्ब, क्रियो; ऐसिड-म्यूर।] लसदार लेईकी तरह श्लेष्मासे ढका मुखगह्वर और जीभ (मार्क, नक्स-मस, पलस; साफ काली आभा लिये जीभ=आर्स, लैके, लाइको, मर्क) जीभ और गलनाली सूखी पर प्यासका न होना (बेल, नक्स-मस; प्यास-भरी=ऐसिड-नाई, ब्राई, फास)।

पाकस्थली और अंत्राशय।—मिचली, यह मानो तालुसे पैदा होती है। तर या रस भरी चीजें खानेकी इच्छा (वेरेट्र); रोटी बेस्वाद मालूम होती है (सभी खाद्य बेस्वाद मालूम होते हैं=ब्राई, कोलो, पलस)। ऐसा मालूम होता है मानो पाकाशयमें कोई भारी चीज है और उसके साथ ही औंघाई (आर्स, ब्राई, नक्स, पलस, सिपिया); पाकाशय मानों शून्यमें हिल रहा है। (पाकाशय मानो शिथिल और झूल पड़ता है=आर्ज-नाई, स्टाफ,—मानो एक जन्तु हिलता है=कैनाब-सैट, क्रोकस, लैके, थूजा, सैबाडि, सल्फ—मानों पानीमें तैर रहा है=ऐब्रोट)। यकृत प्रदेशमें भार मालूम होना (पीडी देखो)। प्लीहाका बढ़ना (सियानो)

मल।—विसूचिका रोग (हैजा) जिस समय फैला हुआ हो, उसके पहलेका उदरामय (पतले दस्त आना) [फास, सिकेलि, वेरेट्र]; मल बहुत

ज्यादा परिमाणमें ; बिना तकलीफके पाखाना होता है (रास-वेन, कैष्टोरि फास, पोडो ; काला मल=कैम्फो, सिङ्कोना, लेप, वेरेट्र)—सुस्ती न आये (बहुत सुस्ती लानेवाला = आर्स, सिङ्को, सिकेलि, वेरेट्र); सफेद या हरी आभा लिये और पानीकी तरह पतला ; अम्लकी वजहसे; वायु निकलनेके समय आप ही आप मल निकल जाता है (एलो, नेट्रम-म्यूर); विसूचिकाके भयकी वजहसे बीमारियां और विसूचिकाके मलकी तरह पाखाना होना।

पेशाब।—पेशाब दूधकी तरह और लारकी तरह खून मिला पेशाब, वह तुरन्त बिगड़ जाता है ; रातमें चुआये हुए पानीकी तरह बहुत ज्यादा पेशाब होना और पेशाब होते ही वह सफेद हो जाता है। मधुमेह (Diabetes Mellitus=आर्जेण्ट-नाई ; बोविष्ट ; ट्रिल-पि)।

पुं-जननेन्द्रिय।—हस्तमैथुन—जब रोगी अपनी कुप्रवृत्तिके कारण ज्ञान हीन जैसा हो जाता है। रेतःस्खलन—बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें वीर्यस्खलन और इससे कमजोरी आ जाती है ; रमणके बाद और वीर्यस्खलनके अन्तमें बहुत ज्यादा मिचली ; रातभरमें कई बार वीर्यस्खलन ; रोगी लजालु, म्रियमाण और अपने आरोग्य होनेके सम्बन्धमें निराश रहता है (हस्त-मैथुन करनेकी अनिवार्य इच्छा=आस्टिलेगो)। शुक्राधारका प्रदाह (एसिड-आक्जैलिक)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—नियमित समयके बहुत पहले और परिमाणमें अधिक ऋतुका स्राव होना ; इसके साथ ही यकृतमें दर्द ; यह ऋतुका स्राव बहुत दिनों तक जारी रहता है ; जरायुमें जखम,—बहुत ज्यादा बदबूदार खून भरा स्राव, खुजली और जखमकी तरह दर्द मालूम होना (हिपर, सिकेलि, जिङ्कम)। आर्त्तवके बाद पीले रङ्गका प्रदरका स्राव।

श्वास-यंत्र।—बातचीतमें या खांसनेपर छातीके भीतर कमजोरी मालूम होना (स्टैनम); यक्ष्मा रोगमें स्नायविक दुर्बलता,—जीवनी शक्ति देनेवाले रस आदिका क्षय हो जानेके कारण या जल्दी जल्दी बढ़नेकी वजहसे और शोक आदिसे उत्पन्न सुस्ती लानेवाली बीमारियां। गलनालीमें दर्द और स्वरभङ्ग (कार्बो-एनिमिलिस, फास)। गलनाली और उदरके ऊपरी भागमें खुजलीकी वजहसे खांसी ; सबेरेके सिवा और किसी समय कफ नहीं निकलता (बेग-कार्ब, नक्स, पल्स, सिपि—केवल रातमें कफ निकलता

है = कास्टि, स्टैफि ; स्वरभङ्गता (आवाज दबाना) के साथ जोरकी आवाजके साथ खाँसी = बेल, ड्रोसे, ऐसिड-नाइ, बार्व स्लाम)।

अस्थि और प्रत्यङ्ग आदि।—हड्डी आदिके भीतरी पदार्थका प्रदाह, प्रमेह-विष, उपदंश विष या पाराके दोषसे पैदा हुआ अस्थि वेष्ट (Periosteum) का प्रदाह—जलन और छेदने जैसी तकलीफ—मानो अस्त्रसे छीला (Scraped) जाता है (रास-टक्स); अस्थिक्षत (वैसिलिन ; माँसहीन दुर्बल शिशुको होनेपर=सिलि ; मोटे-ताजे लड़केको=कैल्केरिया ; उपदंश विषसे दूषित मनुष्योंको=ऐसिड-फ्लू ; कफ प्रधान धातु=सिलि; क्षय हुई हड्डी= फास ; दीर्घास्थिका होनेपर—ऐङ्गस्टियुरा), बालास्थिविकृति (Rachitis) कोमल तन्तुवाले मोटे-ताजे बच्चेको=कैल्के-फास ; मांसहीन शिशुको= आर्स ; मांसहीन और माथे और पैरमें पसीना होने वाले बच्चेको=सिलि ; क्षयशील—वैसिलिन, फास) ; क्रमसे बढ़नेवाली तकलीफ। कटी हुई अंगुलीके कटे हुए अगले भागमें दर्द—श्वास-प्रश्वाससे बढ़ना ; नश्तर लगवाने बाद कटे हुए प्रत्यङ्गमें दर्द (सिपा)। रातमें दर्दका बढ़ जाना। सहजमें ही पैर फिसल जाता है।

त्वचा।—फुन्सियाँ, व्रण और लाल फोड़ा ; बदबूदार पीब बहनेवाला जखम; आरक्त ज्वरके दानोंकी तरह दाने निकलना (Exanthema=ऐमोन कार्ब, बेल ; काले मसूरकी तरह=आर्स, रास)। शरीरमें सब जगह ददोरे (Rash) ;—खुजलीकी अपेक्षा जलन ज्यादा होती है। कितने ही स्थानोंमें खुजली। टाक पड़ना या केश झड़ जाना (कैलि-कार्ब, ऐ-फ्लू, नेट्र-म्यू, सेलिन)। ज्वरके बाद त्वचामें फोड़े निकलनेका लक्षण।

ज्वर आदि।—सविराम ज्वर, शामके समय कपकपी जैसा शीत, सब अँगुलियां बरफ जैसी ठण्डी हो जाती हैं, प्यास नहीं रहती ; उत्तापावस्था ;—प्यास न रहना ;—बहुत अधिक उत्तापके कारण रोगी बेहोश हो जाता है। भीतरी ताप बहुत ज्यादा। सबेरे और रातमें बहुत पसीना (सिङ्कोना ; ऐसिड-सल्फ—कमजोरी और सुस्ती लानेवाला रातका पसीना=कैल्के, मार्क, सिलि, स्टैन); मस्तिष्कमें विकारके साथ आन्त्रिक या सान्निपातिक ज्वर (Typhus); बेहोशी और मूर्च्छा जैसा भाव; ज्ञान न रहना; "काठके टुकड़ेकी तरह पड़ा रहता है"—कौन क्या कर रहा है, इसपर बिलकुल ही ध्यान नहीं ; आंतोंसे रक्तस्राव—रक्तका रङ्ग—घोर लाल।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बाएँ डिम्बाधारमें दर्द ; ऋतुके समय पीला भूरा प्रदरका स्राव ; योनि-पार्श्वमें खुजली ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दुर्बलता मालूम होना—शरीरके हिलानेपर साधारण क्लान्ति मालूम होनेसे लेकर सारे शरीरका पक्षाघात तक हो सकता है। मेरुदण्डकी क्षीणता (ऐ-आक्जे) और उसमें जलन मालूम होना ; मेरुमज्जाका पतलापन (फास, जिङ्कम)। सारे शरीरमें भार मालूम होना,—खासकर प्रत्यङ्गोंमें ;—परिश्रमसे बढ़ना ।

वृद्धि ।—सामान्य परिश्रमसे, विशेषकर मानसिक ; नींदके बाद और पानी भरी तर हवामें ।

घटना ।—ठण्डी हवा और पानीमें ; कसकर बांधनेपर ।

सम्बन्ध ।—ऐसिड—पिक्रिकके साथ जेल्सि, ऐसिड-फास, फास, आर्जेण्ट-नाई, सलफर, ऐल्युमिना और साइलीसियासे तुलना करनी चाहिये ; क्योंकि ये कई दवाएँ मस्तिष्क मेरुमज्जा और समस्त स्नायु-विधानपर आक्रमण किया करती हैं। (नेश)। मेरु-सम्बन्धी अवसाद—आक्से-ऐसिड ; इन्द्रिय-परिचालनकी वजहसे कमजोरी—फास-ऐसिड ;—मस्तिष्कमें क्लान्ति—जेल्स ; सरमें दर्द,—आर्जेण्ट नाई, प्रबल लिङ्गोद्रेक,—कैन्थ इत्यादि ।

शक्ति ।—३ री से २०० तक ।

ऐसिड सैलिसिलिक ।

ACIDUM SALYCYLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह कार्बोलिक और फेनलसे तैयार हुआ करता है। विचूर्ण और अरिष्ट दोनों तरहसे ही तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—अस्थि-क्षय रोग ; वय:सन्धिके समयकी बीमारी ; सर्दी ; उदरामय ; अजीर्ण ; आध्मान ; पैरका पसीना रुकना ; पाकाशयका प्रदाह ; वात ; सन्धिवात ; गृध्रसी या झुनझुनीवाला वात; मुँहमें जखम ; सूतिका ज्वर ; आंखोंके ताराका—प्रदाह इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास।—इसकी लक्षणावली पर ध्यान देनेसे मालूम होता है, कि अजीर्ण रोग, वात रोग, और श्रवणेन्द्रियके विकारके कारण सरमें चक्कर आना रोगमें (चिनिन-सल्फ, लैके, थिरिड) और बहुव्यापक सर्दी इनफ्लुएंजा रोगके बाद जो कमजोरी आ जाती है, उसमें, इससे बहुत लाभ होता है।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना;—बाईं ओर गिर जानेकी सम्भावना (ऐसिड-बेन; सरमें दर्द); एकाएक शय्यासे उठनेपर मस्तिष्कमें दुर्बलता मालूम होना। सर्दीकी पूर्वावस्था। कनपटीमें या कपालमें बेधने जैसा दर्द। कानके छेदमें झन-झन, कन-कन, आवाज; बहरापनके साथ सरमें चक्कर आना।

गलनाली और पाकाशय।—गलनालीमें दर्द, लाली और सूजन। गलकोष प्रदाह (Pharyngitis),—निगलनेमें दर्द मालूम होना; सड़नेवाला मुखरोग (Cancrum Oris=ऐसिड-म्यू, मार्क, आर्स,); जलनकी तरह दर्द और बदबू। उदराध्मान (पेट फूलना); गर्म और खट्टा वायु निकलना। पूति-जनक उत्सेचन (Fermentation), उत्सेचनके साथ अजीर्ण रोग। जीभका रंग बैंगनी, या सीसाकी आभा लिये (रैफैनस; हाइड्रैस्ट, ओपि, स्ट्रैमो—सीसेकी आभा=आर्स, कार्बो-वेज, सिकेल)।

मल।—सड़ी गन्ध मिले पतले दस्त,—मल हरा, काईकी तरह (मैग-कार्ब)।

प्रत्यङ्गादि।—दोनों जानु फूले और दर्द भरे। तेज़ सन्धिवात,—छूने और हिलानेसे बढ़ना; पसीना अधिक होना। जगह बदलने वाला दर्द (पल्स, लैक-कैन), कटि-स्नायुशूल (Sciatica=कैलो, नैफे, ऐमोन-म्यू, मैग-फास),—जलनकी तरह दर्द, रातमें बढ़ना। तलवेमें पसीना।

त्वचा। – खुजलानेवाले रस-भरे दाने और पीब-भरी फुन्सियां, खुजलानेपर घटना। अनिद्राके साथ पसीना होना (जागनेकी अवस्थामें पसीना=सैम्बियु; आंख बन्द करनेपर पसीना=सिङ्कोना, कोनायम)। आमवात (आर्टिका युरेन्स; ऐपिस); त्वचा गर्म और जलन-भरी (यह दवा अधिक पीब होना बन्द कर देती है=कैल्के-हाइपो;—यह सड़ना रोकनेवाली *एक बढ़िया दवा है*)। *किण या गढ़े*—उसका छूना असह्य, बहुत दर्द करने वाले और जलन भरे। (फ़ेरम-फास, ऐसिड-लैक्टिक)

सम्बन्ध ।—सदृश ।—वातमें– कौलचि, सिङ्कोना ; पैरमें पसीना—सोद्गलि ; वाचाल भाव—ल्रैकेसिस ; ऐसिड-लैक्टिक ।

शक्ति ।—२ रीसे ६ ठीं दशमिक विचूर्ण या ३० वाँ क्रम ।

एसिड सल्फ्यूरिक ।

(ACIDUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—गन्धकका तेजाब ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—महात्मा हनिमैनने काँचके रिटर्टमें इसे तैयार करनेके लिये कहा है ; यह सलफरसे पैदा होता है ।

सतर्कता ।—एसिड-सल्फ्यूरोससे इसका भ्रम न होना चाहिये या यह सल्फ एसिड भाफसे उत्पन्न होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—क्लार्कका मत ;—अम्ल रोग ; शराब पीनेका मन्द फल । मुंहका घाव ; मस्तिष्कका संघात ; कैन्सर ; मुंहका सड़ा जखम ; स्त्रियोंकी वय सन्धिकालकी बीमारियाँ ; कब्जियत ; बहुमूत्र ; अतिसार ; डिप्थीरिया ; अजीर्ण ; सड़नेवाले जखम ; पाकाशयका शूल ; जीभका प्रदाह ; केश झड़ जाना ; आँतोंका बढ़ना या हटना ; हिचकी ; ध्वजभङ्ग ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारी ; सीसाका काम करनेकी वजहसे पक्षाघात ; अधिक पसीना होना ; क्षय-कास ; फेफड़ेका प्रदाह ; गर्भिणीकी बीमारी ; वात ; प्लीहाकी बीमारी ; वन्ध्यात्व (बाँझपन) ; जरायु और अपत्य-पथका हटना ; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—थोड़े केशवाले मनुष्य, वृद्धगण; खासकर स्त्रियाँ—इनपर इस दवाकी बहुत उत्तम क्रिया होती है । स्त्रियोंकी वयःसन्धिके समय रह रहकर क्षण क्षणमें उत्ताप मालूम होना, इससे पैदा हुआ दर्द, भोथरे शस्त्रसे चोट पहुँचाने जैसा होता है, दबाव मालूम होना—धीरे धीरे बढ़नेवाला दर्द और भरपूर बढ़ जानेपर एकाएक बन्द हो जाना—(पल्स) और बार बार उस दर्दका पैदा होना । किसी भी जगह चोट लगने पर खासकर वृद्ध मनुष्योंको, उस स्थानका सड़ना, देहके किसी गभीर प्रदेशमें छिपे हुए किसी विशेष विष या धातु विकारकी वजहसे बहुत क्षीणता मालूम

होना—देहके दूसरे द्वारसे काले रंगका खूनका स्राव होना (क्रोटेलस, ऐसिड-म्यू; ऐसिड-नाई, टेरिबि); उदरमें शिथिलता मालूम होनेके साथ नशीली चीजें खाने पीनेकी इच्छा। नशीले पदार्थ सेवन करने वालोंका क्षीणतासे उत्पन्न कम्पन; प्रकृत कम्पन न रहनेपर भी समूची देहमें कम्पन मालूम होना।

लक्षणावली।

मन।—असहिष्णु; प्रश्नका उत्तर नहीं देना चाहता—ताकत न रहनेके कारण, अवाध्यताकी वजहसे नहीं, हमेशा घबड़ाया हुआ जल्दबाज; सभी काम बहुत तेजीसे करना चाहता है (आर्जेण्ट-नाइ)

मस्तक और मस्तिष्क।—मस्तिष्कका सामनेवाला भाग मानो उठा हुआ है और ऐसा मालूम होना कि एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक घूमता फिरता है (बेल, ब्राई, रास, स्पाइजि)। सरमें दर्द—मानो एक सलाई तेजीसे और क्रमवर्धनशील आघातके द्वारा शिरामें घुसती जा रही है; दर्द क्रमसे बढ़कर एकाएक गायब हो जाता है। दाहिनी ओरका स्नायुशूल (Neuralgia); तकलीफ देनेवाला आघात मालूम होना; त्वचा मानो नखसे खरोंची जा रही है। गिरने या चोटकी वजहसे मस्तिष्ककी विक्षति या संघात (Concussion of Brain); शरीरकी त्वचा बरफकी तरह और शरीर ठण्डे पसीनेसे भरा हुआ। सरके पीछेके पार्श्व-देशमें पीसने जैसा दर्द,—माथेके पास हाथ रखनेपर घटना।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—निचला हनु, दाहिना कपाल या कनपटीका स्नायुशूल—रातके ८ बजेसे आरम्भ, रोगवाली करवट सोने या गर्म प्रयोग करनेपर घटना [मैग फास],—धीरे धीरे बढ़कर गायब हो जाता है। मुंहका जखम—मुखगह्वर अर्थात मसूढ़ा और समूचे गलेके भीतरी भागमें बीमारी पैदा हो जाना। मसूढ़ेसे सामान्य कारणसे ही खून जाने लगना; जखममें बहुत दर्द, मुंहमें बदबू। [बोरेक्स, ऐसिड-म्यू)

आंख।—चोटकी वजहसे सफेद अंशके स्वच्छावरक (Cornea) के भीतर रक्त-स्राव; आंखके योजकत्व (Conjunctiva) की सूजन,—उसमें तकलीफ और तेज दर्द।

पाकाशय।—पुरानी कलेजेकी जलन (Heart-burn) रोग,—खट्टी डकारसे दांततक खट्टे हो जाते हैं। (रोबिनिया), पाकाशयमें शिथिलता

मालूम होना और शराब पीनेकी इच्छा। खट्टे पदार्थ वमन। ताजे पदार्थ खानेकी इच्छा। हिचकी (आक्षेपिक हिचकी=मस् कस्; सामान्य=नक्स या उसके बाद साइक्लामेन; खाने-पीनेके बाद=इग्नेशिया; उसके साथ आक्षेप और डकार आना=इयूजा; मलेरियाके आक्रमणमें=नेट्रम-म्यूर; दुर्निवार्य=ऐसिड हाइड्रो या ऐसि-सल्फ; स्वादहीन या मीठी स्वाद मिली लार। शराब पीनेकी वजहसे बीमारियां।

अन्त्राशय और तलपेट।—पुट्ठे और उरूमें भार मालूम होनेके साथ आँतोंमें सुस्ती मालूम होना। अंत्राशयमें दबाव मालूम होना,—मानों आंत बढ़ने या आंत उतरने (Hernia) की तैयारी हो रही है—विशेषकर बाईं ओर (नक्स-वोम; दाहिनी ओरका=लाइको; मोटे-ताजे बच्चेका=केल्के; क्षीण और रोगी बच्चेका=सिलि; दाहिनी ओर कतरनेकी तरह स्नायविक दर्द, इसके बाद पुट्ठेके नीचे (Inguinal) अन्त्र-वृद्धि=इस्कयुलस-हिप्)

मलान्त्र।—अर्श,—खूनी बवासीर और उससे हमेशा रस बहा करता है। मानो मलद्वारमें एक गोला या गोल खील या खूंटी (Plug) अड़ी हुई है (ऐनाकार्ड); उदरामय,—टुकड़े टुकड़े मल मिला हुआ, उसका रङ्ग केशर जैसा, आम मिला, लसदार और फेन-भरा; या हरी आभा लिये पानीकी तरह पतला—आँतोंमें क्षीणता और खालीपन मालूम होता है और मलद्वारमें दबाव जान पड़ता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतुस्राव,—बँधे समयके पहले ही हो जाता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है। जरायु-ग्रीवामें जखम,—सामान्य कारणसे ही रक्तस्राव होने लगता है। प्रदर,—स्राव कड़ुवा दूधकी तरह और जलन करनेवाला—कभी कभी खून-भरा और श्लेष्मा मिला। वन्ध्यात्व,—जल्दी जल्दी होनेवाला और बहुत ज्यादा परिमाणमें आर्त्तव-स्राव (अरम-म्यू-नेट्री); आत्महत्याकर लेनेकी इच्छाके साथ थोड़ा विलम्बसे ऋतुस्राव होता है या ऋतु रुक रुककर वन्ध्यापन (बांझपन) पैदा हो जाता है=अरम; बहुत अधिक स्राव होनेवाले और असमयमें होनेवाले आर्त्तवस्रावके साथ=केल्के; बहुत रमणेच्छाकी वजहसे=फास; सुस्त, मूह्यमान, रोनी, समझाना सहन न करनेवाली और मलीन वर्णकी स्त्रियोंका=नेट्रम-मर्; कड़वा प्रदरकी

बजहसे=बोरैक्स ; ऋतुका स्राव थोड़ा और दर्द भरे स्तन=कोनायम ; स्तन और अण्डाधारका क्षय (Atrophy)=आयोड।

श्वास-यंत्र।—खांसी प्रत्येक बार दो बार खांसी आती है (मार्क ; लोन—वारस्टैन) ; पृष्ठ-फलका दोनोंके बीचमें दर्द ; क्लान्ति ; वक्षके भीतर खुजलाहट मिली खांसी ; कफ—सबेरे गहरे रङ्गका रक्त या पतला, पीला और खून मिला ; खांसने बाद वायु निकलना या डकार ; वायु सेवनसे घटना ; चलने-फिरने (डिजि, रियुमेक्स) ; ठण्डा पानी पीने (लाई ; स्कीला) और काफीकी गन्धसे बढ़ना।

त्वचा।—अच्छी तरह धोनेपर भी बच्चेके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है (हिपर, मैग-कार्ब, रियुम,—स्नान करनेपर भी दुर्गन्ध—सोराइनम) नहीं जाती। कुचलना (Bruises) खाल उधड़ना और शरीरमें जगह जगह नीला दाग वगैरह यांत्रिक चोट आदिका कुफल (आर्निका ; ऐसिड-ऐसेट) काला दाग पड़ना ; पुराने अस्त्रोंके जखम सब फिरसे लाल या नीली आभा लिये हो जाते हैं और उनमें दर्द होता है (ऐसिड-फ्लू, लैके ; हरा हो जाता है=लिडम)। हरी पीली फुन्सियां (जैसी सान्निपातिक ज्वरमें होती हैं)। रक्तस्राव करनेवाला धूम्र-रोग—त्वचाके नीचे फैलनेके कारण त्वचाका ऊपर स्थान जगह जगहपर लाल हो जाता है (फास, रास, विनि, हैमा, कैलि-आयो, मार्क, लैके, ऐसिड-फास, क्रोटेलस, आर्निका) और शरीरके अन्य द्वारोंसे रक्त-स्राव (आर्स, जिङ्क, इरि-जि, हैमा, इपिका, लैके, स्यूरेक्स)

प्रत्यङ्गादि।—हाथ और बाहुमें पक्षाघात लक्षणका सङ्कोचन मालूम होना ; लिखनेके समय अंगुलीका फड़कना या एकाएक कांप उठना। (कास्टि, साइक्लामेन, स्टैनम)

वृद्धि।—छूने, मलने, घसने, और भोथरे यन्त्र आदिकी चोट ; सबेरे शीत लगने, ठण्डा पानी पीने, शराब पीने, सन्ध्या और रात्रिमें तथा उठकर टहलनेपर और घुड़सवारीसे बढ़ना।

घटना।—गर्म प्रयोग और रोगवाली करवट सोनेपर (ब्राई; रोग वाली करवट सोनेसे बढ़ना—बेल, मार्क) और विश्रामसे घटता है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न और अनुपूरक—पल्स। सदृश आर्नि, बोरैक्स, कैलेण्डिउला ; लीडम ; रियुटा और सिम्फिटम। कोमल अंशके कुचलने और

फटने आदि आघातमें यह कैलेण्डुलाका समकक्ष है। अजीर्णमें कार्बोवेज; अम्लरोगमें—रोबिना। सर-दर्दमें—नेट्रम। रक्तस्रावमें—क्रोटेलस।

शक्ति।—३ रीसे २०० क्रमतक।

ऐसिड टार्टारिक।

(ACIDUM TARTARICUM)

दूसरा नाम।—अंगूरका सिर्का।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानीमें १ क्रम तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी बन सकता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—उदरामय, बहुत अधिक कमजोरी; चलनेकी शक्तिका घटना और जीभ सूखी तथा भूरी (सं'जिया; सलफर); लगातार वमन [श्लेष्मा या खाया हुआ पदार्थ वमन=इपिक; शराब पीनेवालोंका सवेरेके समयका वमन=ऐण्टि-टार्ट; पीते मात्र वमन=ऐण्टि-टार्ट; पेटमें पानी धारण करनेकी क्षमता न रहनेके साथ=आर्स; पेट फूलना और कोष्ठबद्धताके साथ=ऐसिड कार्बोलिक; मांस हीनता और अजीर्णरोगमें=आयोड; दूध पीते ही—इथूजा; बच्चोंको एकाएक दूध वमन करना—माव.-सोल; अपरिचित भुक्तद्रव्य वमन—फेरा-म्यू, ऐन्टोट; अम्ल या पित्त वमन=आइरिस; सरमें दर्दके साथ श्लेष्मा और पित्त वमन=एपोमार्फि; शरीर हिलानेपर-काकुलस]। डा० क्लार्क कहते हैं, गले और पाकस्थलीमें तेज़ जलन, मानो आग छू गयी है, इसका प्रधान लक्षण है।

लक्षणावली।

अन्नाशय।—नाभीके चारों ओर और पुट्टेमें दर्द मालूम होना। मल काफीके चूरकी तरह, रातमें बढ़ना। जीभ भूरी और सूखी; गाढ़ा पीला वमन। नाड़ी कमजोर बार बार जम्हाई आना।

शक्ति।—३ री (दशमिक) और ६ ठी दशमिक विचूर्ण।

ऐकोनाइटिनम ।

(ACONITINUM)

दूसरा नाम ।—ऐकोनाइटिन ; ऐकोन-इटिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ऐकोनाइट नेपेलसकी जड़ और काण्डसे प्रस्तुत किया हुआ एक तरहका उपचार ।

लक्षणकी अनुसार प्रयोग ।—कम्प; मृत्यु-भय ; बेचैनी ; जलातङ्क ; स्नायुशूल ; धनुष्टङ्कार ; वमन ; पक्षाघात ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐकोनाइटकी तरह यह भी एक तेज विष है । ऐकोनाइटकी भाँति इसमें भी मृत्यु-भय, अस्थिरता, कम्प, मानो शरीरके भीतर किसीने बरफ ढाल दिया है ; गड़बड़ी मालूम होना, सुन्न हो जाना, सुरसुरी मालूम होना, कीड़े काटने या शूल बेधनेकी तरह यंत्रणा और उत्तापका लक्षण दिखाई देता है ।

इसके लक्षण साधारणतः उर्द्धाङ्गसे निम्नाङ्गकी ओर फैलते हैं । ऐकोनाइटकी तरह एकोनाइटिनका रोग-लक्षण भी जिस तरह एकाएक पैदा हो जाता है और रोगीपर प्रचण्ड भावसे आक्रमण करता है, उसी तरह अच्छी तरह इलाज होनेपर बहुत जल्द निर्मल भावसे आरोग्य भी हो जाता है ।

शरीरका भारी मालूम होना, आँखके ऊपरी भागमें स्नायुशूलके लक्षणमें भी इससे फायदा होता है ।

वृद्धि ।—सामान्य हिलानेसे, मानसिक परिश्रमसे, स्पर्शसे वृद्धि ।

घटना ।—सीधे होकर बैठने या खड़े होनेपर मिचली घट जाती है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—ऐकोन, बेल, हायोसा, कोन्यरिस, लैकेसिस (जलातङ्क) ।

शक्ति ।—१x—६ ।

ऐकोनाइटम कैमेरम।

(ACONITUM CAMMARUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—निसन्द वायु ; चर्म्मरोग ; सर दर्द ; स्नायुशूल ; स्वप्नदोष ; लार बहना ; जीभका पक्षाघात ; वमन।

उपयोगिता और आभास।—इसके बहुतसे लक्षणोंका सादृश्य एकोनाइटके साथ है। निसन्द वायु, पहले जीभसे सुरसुरी आरम्भ होकर क्रमसे मुंहमें और सारे शरीरमें फैल जाती है ; इसी तरह कितनी ही तरहसे मुखभङ्गी और अङ्ग भङ्गी रोगी दिखाया करता है। सामनेकी ओर टेढ़े पड़नेपर सर दर्द घटता है ; मुखमण्डलका स्नायुशूल और उसके साथ ही कानमें टुन-टुन शब्द और सरमें चक्कर आना ; उद्गार, मिचली पर कैन होना, स्वप्न देखना, इसके अलावा नींदके समय अनजानमें शुक्रस्राव लक्षणकी यह एक लाभदायक दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—एकोनाइटिनम—न्यूमोगटेनम।

शक्ति।— १x—६।

ऐकोनाइटम लाइकाकटोनम।

(ACONITUM LYCOCTONUM)

दूसरा नाम।— ऐकोनाइटम टेलिफोनम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल खिलनेका उपक्रम होनेपर समूचा ताजा वृक्ष लेकर मूल अरिष्ट तैयार होता है। एकमात्र इसी जातिके एकोनाइटसे उपक्षार (Alkaloid) "एकोनाइटिन" तैयार नहीं होता।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।— कब्जियत, उदरामय, गण्डमाला, मूत्र-कृच्छ्रता।

उपयोगिता और आभास ।—और और एकोनाइटोंकी तरह त्वचा पर (लाल आभा, सूजन, उत्ताप, सूखापन, जलन वगैरह) इसकी क्रियाकी प्रधानता दिखाई नहीं देती । पर नाक, आँख, मलद्वार, योनिद्वार वगैरहमें खुजली, नाककी त्वचाका फट जाना वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं । गलदेश, बेगल और स्तन-देशके ग्रन्थि-समूहोंके ऊपर ही इसकी क्रिया अधिक है । **गण्ड-माला धातुमें** यहाँतक कि हाज्किन्स डिजीज (गलगण्ड रोग) पर एकोनाइटम लाइकाकटोनमके प्रयोगसे विशेष लाभ होता दिखाई देता है ।

खांसीमें खूनका स्वाद लक्षणमें यह फैरम फासके साथ और सूअरका मांस खानेकी वजहसे उदरामयमें पल्सके साथ यह समलक्षण सम्पन्न है ।

वृद्धि ।—तीसरे पहर (लाइको); मानसिक परिश्रमसे; पियाज खानेसे ; शराब पीने बाद वृद्धि ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—सिस्टस, लेपिस, ऐलो, कोनायम, आयोड, लाइको, पल्स (सूअरका मांस खानेकी वजहसे बीमारी) ।

शक्ति ।—३, ६ ।

ऐकोनाइटम नेपेलस ।

(ACONITUM NAPELLUS)

दूसरा नाम ।—उल्फस बेन, मीठा विष इत्यादि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—केमेरम, लाइकाक्टन, फेरोक्स वगैरह कितने ही तरहके ऐकोनाइट हैं, उनमें फेरोक्स बहुत तेज़ है और नेपेलसका व्यवहार अधिक होता है । औषधिके लिये जब इसकी केवल जड़ ली जाती तब उसे रैडिक्स—कहते हैं । समूचे पौधेसे मूल अर्क प्रस्तुत होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग । डा० क्लार्कके मतसे नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक है ;—अस्थापन ; संन्यास ; दमा ; श्वासनाली प्रदाह ; वक्षकी अनेक प्रकारकी बीमारियाँ ; विसूचिका ; बच्चोंकी विसूचिका ; सर्दी ; क्षयकास ; आक्षेप ; खाँसी ; घुँड़ी (काली खाँसी) ; मूत्राधार-प्रदाह ; दाँत निकलनेके समयकी बहुत-सी बीमारियाँ ; अतिसार ; शोथ ; रक्तामाशय

(पैचिश); कष्ट-रज: (मासिक ऋतुस्रावमें तकलीफ) ; कर्ण-प्रदाह ; अन्त्र-प्रदाह ; आँखोंका प्रदाह ; डर जानेका कुफल ; जीभका प्रदाह ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; बवासीर ; सर-दर्द ; स्तन-विकार (स्तनमें गड़बड़ी) ; स्वरनालीका प्रदाह ; फुसफुस और उसके आवरणका प्रदाह ; छोटी माता ; मस्तिष्कका प्रदाह ; यकृत-प्रदाह ; मूत्रग्रन्थी (मसाना) का प्रदाह ; स्नायुशूल ; सुन्न हो जाना ; अन्ननालीका प्रदाह ; पक्षाघात (लकवा) ; अन्त्रावरण प्रदाह ; गर्भवती-की बहुत सी बीमारियाँ ; सूतिकाज्वर ; अनिद्रा ; अण्डकोषकी बीमारियाँ ; धनुष्टङ्कार ; प्यास ; जीभ और गलकोषका प्रदाह ; दाँतका दर्द ; चोटकी वजहसे बोखार ; पेशाबमें पथरी ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; गो-बीज टीका दिलवानेका दुष्परिणाम ; सरमें चक्कर आना ; हूपिङ्ग कफ (कुकुर खांसी) ; जम्हाई इत्यादि ।

उपयोगी धातु या उपयोगिता और आभास ।—जो युवक और युवतियाँ पूर्ण अवयव (जवान) और रक्त-प्रधान धातुवाले हैं, जो आलस्यमें दिन बिताते हैं, उन्हें कोई नयी बीमारी होनेके समय ऐकोनाइटम अधिक लाभ करता है । जो लोग जलवायुके परिवर्त्तनसे सहजमें ही बीमार पड़ जाते हैं और जिनके केश काले हैं, आंखें काली और सुदृढ़ तन्तुवाली बलिष्ट देह है, उनपर ही इसकी उत्कृष्ट क्रिया होती है । नीचे लिखे लक्षण भी इसको बतानेवाले हैं—सूखी, शीतल और उत्तरी या पश्चिमी हवासे या पसीना निकलते समय ठण्डी हवा लगकर रुके हुए (Checked) पसीना आदि दोषकी वजहसे रोगोंमें ; हमेशा रोग या मृत्युका भय, उत्कण्ठा ; मानसिक और शारीरिक बेचैनी और रोगका नया और एकाएक जोरका आक्रमण—ये ऐकोनाइटके सिद्धि-प्रद लक्षण हैं । सब तकलीफें असहनीय और चित्तकी स्थिरताको नष्ट करनेवाली होती हैं ; रोगी बेचैन हो पड़ता है ; रातके समय ही सब कष्ट बढ़ जाते हैं, जलनकी तरह और कड़मड़ाहट तथा कपकपी पैदा करनेवाला और सुन्न करनेवाला दर्द ; उत्कण्ठा, उद्वेग, और डरके सभी लक्षण रोगीमें दिखाई देते हैं, प्रदाह आदिकी रक्त-सञ्चयवाली अवस्थामें और यंत्रगत या सीमाबद्ध (Localised) होनेके पहले ऐकोनाइट उपयोगी है । ऐकोनाइटका रोगी भीड़में जानेसे डरता है ; यही सोच सोचकर व्याकुल रहता है, कि भविष्यमें न जाने क्या होगा ; वह सोचता है, कि इस रोगसे अब उसका छुटकारा न होगा और अवश्य ही उसकी मृत्यु हो जायगी ;

शय्यापर करवट बदला करता है, किसी तरह भी उसे आराम नहीं मिलता ; रह रहकर चौंक उठता है ; नाड़ी तेज, कोमल और लोहेकी तरह न दबनेवाली रहती है। आवाज़ बिलकुल ही सहन नहीं होती ; पानीके सिवा अन्य सभी चीजें तीती मालूम होती हैं। तेज़ प्यास ; बहुत-सा पानी पीनेपर आराम मालूम होता है। पेटमें इतना भार मालूम होता है, मानो पत्थरका एक टुकड़ा दबाया हुआ है। मल हरा और पोसी हुई सागकी तरह रहता है। कमरमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है। पेशाब थोड़ा और गर्म होता है तथा मूत्रनालीमें सिकुड़न और मूत्रनालीमें जलन होती है। नाकका स्राव(Coryza) या सर्दी, नाकमें ठण्डी हवा घुसनेपर मस्तिष्कके भीतर तक ठण्डक मालूम होती है ; नासा-मूल (नाककी जड़) में दबाव मालूम होता है। खाँसी सूखी, श्वास-रोधकर ;—गर्म कमरेसे ठण्डे स्थानमें जानेसे ही बढ़ जाती है। ज्वरमें शरीरकी त्वचा सूखी और जलन-भरी; गर्म या दाह-भरी रहती है, चेहरा लाल ही उठता है या पर्यायक्रमसे एकबार लाल फिर मलिन हुआ करता है; भयानक बेचैनी ; सन्ध्याके समय और सोनेके समय यन्त्रणाएँ असह्य हो जाती हैं।

लक्षणावली।

मन।—स्नायविक ; उत्तेजनाकी अधिकताके साथ बहुत डर और उत्कण्ठा। घरके बाहर अथवा जहाँ बहुतसे आदमी एकत्र हों, खासकर वहाँ यदि किसी तरहकी उत्तेजनाका लक्षण हो तो वहाँ जानेसे भय ; या चौड़ा रास्ता पार करनेमें अत्यन्त भय। चेहरेपर हमेशा ही डरके चिन्ह मौजूद रहते हैं, डरके कारण रोगीका जीवन दूभर हो पड़ता है ; रोगीके मनमें दृढ़ विश्वास जमा रहता है, कि इस रोगमें अवश्य ही उसकी मृत्यु होगी ; वह अपना मृत्युकाल पहलेसे ही निर्णय कर देता है ; गर्भावस्थामें मृत्यु-भय ; (रोगिनी समझती है, कि उसकी बीमारी अच्छी न होगी=आर्स.कैक्टस, इग्ने, लेक-कैन, लिल-टाई, मिडोरि, नेट्र-मयू, सोराइन, ऐसिड नाई ; उसका रोग अन्तमें सांघातिक हो जायगा—ऐसा समझता है=आर्जेण्ट-नाई, मयूर, ऐसिड-नाई; सोराइन ; सैबाड ; सिफिल)। अन्धेरेमें डर ; रातके समय प्रलाप : भयकी वजहसे बीमारी। उसे संगीत सहन नहीं होता, उससे विषाद पैदा हो जाता है (संगीत-ध्वनि असह्य=ऐकोन, नेट्र-कार्ब, थूजा, बिन, पॅका, क्रियोजोट, नेट्र-सल्फ, -नक्स-वोम, सैबाड ; विषषता पैदा करनेवाला=ग्रेफा,

सैवाड, नैट्र-कार्ब ; ऋतुके समय—थूजा, क्रुगडन, क्रियोजोटम ; उत्तेजक=टैरेण्ट,ला—क्युबेन्सिस)। ममता-हीनता ; क्रोधी प्रकृति, कभी विद्वेष, कभी आनन्द ; सवालका जवाब देनेपर नाराज होता है ; पर्यायक्रमसे हँसना और रोना।

मस्तक ।—मस्तकमें स्तब्ध करनेवाला दर्द ; आसनसे उठनेपर, सर झुकानेपर या ऊपर देखनेसे सरमें चक्कर आना (ब्राई, पोडो, पल्स) ; दाहिनी ओर गिर जानेका उपक्रम। माथेमें रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे चेहरा लाल हो जाना और गर्म हो उठना (बेल, ब्राई)। ललाटकी पीछे पूर्णता और भार मालूम होना,—मानो आँखकी राहसे मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा। (बेल, ब्राई, मार्क ; खालीपन मालूम होना=कोराल-रूब्र, काकु, दूग्ने, ओपि) ललाट देशमें,—बेधने जैसा और टपकका दर्द और शरीर हिलानेपर बढ़ना। जलन करनेवाला सरका दर्द, माथेमें मानो गर्म पानी हिल रहा है (ड्रसिडगो) ; कपालमें ऐसा दर्द मानो मस्तिष्क आँखकी राहसे बाहर निकल पड़ेगा। ऐसा मालूम होता है मानो मूर्द्धा देश (खोपड़ी) के केश सब खड़े हो गये हैं (बैरा-का, डालका), मानो कोई केश खींच रहा है।

आँख ।—नया आँखोंका प्रदाह, जलन और चिलक मारनेकी तरह दर्द। धूपसे डर मालूम होना (बेल, कोनायम, इयुफ्रे ; दीयेकी रोशनीसे भय=जेल्स)। पलकोंकी कड़ी और लाली भरी सूजन। आँखोंमें मानो बालू गिर गयी है(आर्स, ऐसि-फ्लू, इयुफ्रे)—इस ढंगका दर्द। किरकिराहट, सूखी ठण्डी हवा लगने और राखके कण निकल जाने बाद आँखका प्रदाह ; तिमिर दृष्टि डेरा देखना (Amourosis) ; गर्मीके दिनोंमें ठण्डे पानीसे स्नान करनेके कारण एकाएक या अकारण पैदा हुई दृष्टिहीनता=जेल्स। रतौंधी=लाइ ; अधिक तम्बाकू खानेकी वजहसे=नक्स-वोम) कनीनिकाका फैलना।

कान ।—कानसे एक तरहकी आवाज (सिङ्कोना) ; श्रवण शक्तिकी प्रखरता ; आवाजका सहन न होना (मैग-कार्ब, ऐसिड-फास, सिलि)। बाहरी प्रदेशमें प्रदाह। गाना-बजाना असह्य। कानमें गरजनेकी आवाज।

नाक ।—रक्तस्राव—खासकर रक्त-प्रधान प्रकृतिवाले मनुष्योंका (ब्राई, बेल),—रक्त चमकीला लाल। सूँघनेकी शक्तिकी तेजी या प्रखरता (बेलाडो) ; नासामूलमें दर्द मालूम होना ; नयी सर्दी ; बार बार छींक आना ; टपक जैसा दर्द ; नाककी जड़में दबाव मालूम होना (मर्क्यु, नैट्रम-आर्स)।

मुखमण्डल।— सोये सोये उठनेपर चेहरा रक्त-शून्य या मुर्दे जैसा हो जाता है या रोगी अवसन्न होकर और सरमें चक्कर आनेके कारण गिर पड़ता है। फिर उठनेसे डरता है; कितनी ही बार इसके साथ ही दिखाई न देना और बेहोशी भी आ जाती है (सामान्य मानसिक उद्वेगसे चेहरा लाल हो जाता है=फेरम)। लाल रङ्ग, गर्म, फूला और उद्दीप्त (तमतमाया) चेहरा; मुंहके बाईं ओर स्नायुशूल (Propalgia),—बेचैनी, कनकनी जैसा दर्द, इसके साथ ही सुन्न हो जाना (स्पाइजि)।

मुख-विवर और गलेके भीतर।— दोनों ओठ सूखे और काली आभा लिये (आर्स, ब्राई, मार्क); मुखगह्वर और जीभ बहुत सूखी (आर्स ब्राई, कैमो। प्यास न रहनेके साथ=बेल, लाइकी, नक्स-मस); जीभपर सफ़ेद लेप; तालु, तालुमूलीय ग्रन्थि (Tonsils) और दोनों तालु-पार्श्व (Fauces) का प्रदाह,—इसके साथ ही तेज़ बोखार;-रोगवाली जगहपर लाली और जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द (एपिस, बेल, मार्क),—कोई पदार्थ निगलनेके समय गलेमें डंक मारने जैसी तकलीफ मालूम होना (एपिस); दांतमें दर्द;— ठण्ड लग जानेकी वजहसे टपकका दर्द; रोगवाले पार्श्वका गाल लाल हो जाता है; निचली हनुवटीका चबानेकी तरह हिलाना (ब्राई); गर्म और प्रदाह भरे मसूड़े।

पाकस्थली और अंत्राशय।—पानीके सिवा सब चीजोंका स्वाद तीता मालूम होता है (सब तरहका पानीय पदार्थका स्वाद कड़वा मालूम होता है=ब्राई, कोलो, सिङ्कोना, पल्स)। प्यास कभी तृप्त ही नहीं होती, पर धीरे धीरे पानी पीता है (आर्स, एपिस, सिङ्कोना, ह्यायोसा; बहुत देरका अन्तर देकर ज्यादा मात्रामें पानी पीता है—ब्राई); बहुत प्यासके साथ मुख-गह्वर, तालु और जीभ वगैरहमें सूखापन (सलफर—आधी रातमें जीभ सूखी, लसदार पर प्यास न रहना और तालुमूलमें लारका इकट्ठा होना—नक्स-वोम; तीता स्वाद; पित्त वमन और ठण्डा पसीना होना (इसके साथ ही ठण्डा पसीना—वेरेट्रम); पाकाशयका प्रदाह (आर्स, कैन्थ, फास, नक्स)। पीने या भोजनके बाद पाकाशयमें शूलकी तरह दर्द (आर्स, फेरम, नक्स, पल्स)। नये यकृत-प्रदाहमें दबाव मालूम होना। अन्त्राशयका प्रदाह—समूचे अन्त्राशयमें तेज, पर क्षण भरके लिये पैदा होनेवाला दर्द; अन्त्राशयका एकदम छुआ न जाना। पित्त वमनके साथ आंत उतरना (Hernia); वंक्षण

या कुचकी (Inguinal) प्रदेशका (Kernial Stricture) संकोचन और प्रदाह (नक्स देखो); रक्त-वमन (Haematemesis)—रक्त चमकीला लाल ; पाकाशयसे गलनाली तक जलन। शूलका दर्द,—किसी भी अवस्थामें आराम नहीं मिलता ; आँतोंमें आवाज या पेट गड़गड़ाना (ऐसिड-फास)

मल ।—पेट गड़गड़ाकर बार बार थोड़ा पाखाना होना (आर्स, बेल, कोल्चि,कार्बो); हरे रङ्गका पतला मल,—सागके चूर या मेंडक-भरो पुष्करिणीकी काईकी तरह मल=मैग-कार्ब ; सफेद मल (कैल्के, चायना, हिपर; काला मल= कैम्फोरा,चायना लेप्टेण्ड्रा , वेरेट्रम) ; सूत्र क्रिमिकी वजहसे मलद्वारमें खुजलाहट। विसूचिका—मलका पतलापन—शारीरिक क्रियाका पतन या हिमाङ्ग (Collapse)। इसके साथ ही उत्कण्ठा और अस्थिरता । रक्त-स्रावी अर्श या खूनी बवासीर (हैमा, सलफर ; ऐलो) ; मलनालीका (Rectum) का सुन्न हो जाना और इसी कारणसे अनजानमें पाखाना होना (कोलो, जेल्स, रूटा) । कब्जियत, कीचड़ जैसा मल, (टैबेक—इसके साथ ही यकृतका बढ़ना=चियोनेन, डिजि ।) आम-रक्त (खूनी पेचिश Dysentry),—ज्वर, प्रदाह, काँखना और खून भरा पाखाना होनेके साथ मलनालीमें भयानक जलन ।

पेशाब ।—मूत्र-रोध; ठण्ड लग जानेकी वजहसे बीमारी—मूत्रग्रन्थि (kidneys) के भीतर सुई वेधनेकी तरह दर्द (बार्बे) ; चिल्लाना,; बेचैनी और बच्चा बार बार लिङ्गमें हाथ लगाता है ; चमकीले लाल रङ्गका थोड़ा पेशाब, पेशाब करनेके समय तकलीफ। मूत्राशयके ग्रीवा-देशमें जलन और सङ्कोचन । पेशाब करनेके पहले बहुत चिन्ता। मूत्रनालीमें जलन,—प्रमेह रोगकी नयी अवस्था ;—इसके साथ ही मानसिक और शारीरिक अस्थिरताका लक्षण मौजूद रहना [कैना-सेट, जेल्स]

पुं-जननेन्द्रिय ।—पेशाब करनेके समय लिङ्गमणि (Glans penis-सुपारी) में वेधने और कांटा या नख गड़नेकी तरह तकलीफ। अण्ड-कोषमें पोसनेकी तरह (Contusive=आर्जेण्ट-मेट, आर्जेण्ट-नाई, रोडो, स्टेफिसेग) दर्द मालूम होना ; मूत्रनालीका प्रदाह (Urethritis) वाला रोगी बार बार अपने लिङ्गकी ओर हाथ फैला देता है ; पेशाबका वेग और बूंद बूंद खून मिला पेशाब ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव स्राव एकाएक रुक जानेके कारण अण्डाधारका प्रदाह (Ovaritis) ; प्रदरु—बहुत दिनोंतक स्थायी और स्राव

ज्यादा परिमाणमें होता है, खासकर रक्तप्रधान धातुवाली स्त्रियोंकी [(बेल, कैल्के) बीमारी। डरकी वजहसे और पैरोंमें ठण्ड लग जानेके कारण रजःरोध (शीत लग जानेके कारण=डाल्का, पोडो, पल्स, सलफर; सरमें चक्कर आना, सरमें दर्द और देखनेकी शक्तिकी गड़बड़ीके साथ=साइक्लामिन; मलका कड़ापन, जाड़ा सहन न होना, मानसिक विषाद और जागनेपर सरमें दर्द=नेट्र-मयू)। प्रसवान्तिक स्राव (प्रसवके बादका स्राव Lochia) रुकना या घटना; (फोड़ेकी तरह दर्द-मिला सरका दर्द रहनेपर—ब्राइ); प्रसवके समय जरायुका कड़ापन (Rigid os); कृत्रिम वेग, बार बार दर्द; बहुत डर मालूम होना, (कम्पन और अवसन्नता रहनेपर=जेल्सि; चीण वेगके साथ होनेपर=कालीफाइ।) अपत्य-पथ सूखा, गर्मी-भरा और उसके छूनेमें तकलीफ। ऋतुस्रावके आरम्भमें उन्मत्त भाव (मैग-म्यू)।

जरायु-प्रदाह।—(Metritis)—तेज शूलकी तरह दर्द। अंत्राशय प्रदेशमें इतनी तकलीफ कि वह छुआ न जाये। बाधक या रजःकृच्छ्रता; प्रसवके दर्दकी तरह वस्ति-प्रदेशमें (Pelvic Region) दबावकी तरह दर्द,—रोगिनीको बाध्य होकर झुक जाना पड़ता है, पर किसी अवस्थामें भी उसे आराम नहीं मिलता। सूतिका ज्वर; क्लेद-स्राव रुका हुआ (Suppressed-Lochia); दोनो स्तन ढीले और खाली; त्वचा सूखी और गर्म; नाड़ी कड़ी तेज या सङ्कुचित; चमकीली आँखें और उन्मत्तकी तरह दृष्टि; जीभ सूखी; पेट फूला और उसको छूना सहन नहीं होता। प्रसवके बादका स्राव (Lochia) का फिरसे जारी हो जाना;—सौरी घरसे निकलनेपर इधर उधर घूमनेकी वजहसे (रास, क्रियो) स्राव हुआ करता है।

श्वास-यन्त्र।—वायुनली भुज-प्रदाह (Bronchitis) (बेल, कैल्के, हिप, स्पंजि] घुंडी खाँसी (काली खाँसी Croup); सूखी ठण्डी हवा लगनेके कारण पैदा हुई,—पहली अवस्था,—सूखी खांसी और जोरसे आवाजके साथ श्वास-प्रश्वास (स्वच्छिया); प्रत्येक प्रश्वास टूटी आवाजके साथ और तकलीफ देनेवाली खाँसीमें बदल जाता है। प्रत्येक बार बच्चा मानो श्वासनालीकी तकलीफ रोकनेके लिये अपने कण्ठपर हाथ रखता है, नींदके समय या खड़े होनेपर श्वास रुकनेका भाव (सोनेपर सांस रुकना=ऐमोन-कार्ब, क्लोरम, जेल्सि, ग्रिण्डेलिया, लेक-केन, लैकेसिस, ओपियाई)। क्षण क्षण भरपर श्वास-रोध होनेका उपक्रम और छटपटाना (आर्स, हिप, लैके)। वक्षावरण-प्रदाह (Pleurisy) और फेफड़े-

का प्रदाह,—सुई वेधने जैसा दर्द ; दाहिनी करवट नहीं सो सकता (बाईं करवट नहीं सो सकता=मार्क ; केवल चित या मुँह ऊँचा कर सो सकता है या सोया रहता है ; तकलीफ देनेवाली सूखी खाँसी ; बहुत अधिक उत्ताप मालूम होना ; बहुत प्यास और स्नायविक उत्तेजना [ब्राई, कैलि-कार्ब, फास]। फेफड़ेमें गर्मी मालूम होना। कलेजा धड़कना [Palpitation]। मानो छातीके भीतर कोई गर्म पानी ढाल रहा है, मानो हृत्पिण्डसे गर्म पानीकी बूंदें टपक रही हैं=कैनाबिस-इण्डिका और सैंटाइका] इसके साथ ही बहुत अधिक मानसिक उद्वेग। कफ [Sputa] के साथ रक्त निकलना। नाड़ी पुष्ट, कड़ी, डोरीकी तरह दृढ़ और उछलती हुई, (उछलती हुई और ऐसा मालूम हो मानो परीक्षककी अँगुलीके नीचे छोटा लोहेका गेंद चल रहा है=वेल) ; रुक रुक कर [Intermitting] ; बैठनेपर गर्दनकी नाड़ी [Carotid] का टपाटप स्पन्दन [throbbing] अनुभवमें आता है।

पृष्ठदेश ।—पीठमें दर्दकी वजहसे लम्बी साँस लेनेमें दर्द मालूम होना। चोट लगने जैसा दर्द, यह दर्द पैरतक फैल जाता है ; अकड़न और सुन्न हो जाना ; दर्दके कारण रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी मसानेमें बीमारी हो गयी है। [डाक्टर ऐनार्ड]। बाईं बाँहका सुन्न हो जाना ; अँगुलियोंमें झुनझुनी [Tingling] ; गर्दनके पीछे अकड़ जाना [ऐक्टि-रेस] ; दोनों पृष्ठ फलकोंके बीचमें [Between Scapulae] तेज दर्द।

प्रत्यङ्ग ।—दोनो ऊरुके सामनेवाली जगहपर मानो ठण्डे पानीकी बूंदें टपक पड़ती हैं—ऐसा मालूम होना। हाथ पैरका सुन्न होना और झुनझुनी [tingling], चिलक मारनेकी तरह दर्द। हाथ पैरमें ठण्डक और सुन्न हो जाना। हाथ गर्म पर पैर ठण्डे। बीचमें वाताश्रय—रातमें बढ़ना ; लाल, चमकीली सूजन, उसका स्पर्श बिलकुल ही सहन न हो, सोनेके बाद कूल्हेके जोड़ [Hip-joint] और उरु देशमें सुन्न जैसा भाव। जानु देशकी शिथिलता,—चलनेके समय पैर घूम जाता है।

निद्रा ।—बहुत बेचैनीके साथ नींद न आना [आर्स, वेल, कैमो—औंघाई आती है पर नींद नहीं आती=वेल, कैमो, ओपि]। स्वप्न और कुछ परिमाणमें अदृश्य चीजें देखनेकी शक्ति आ जाना [फास]। रातके समय प्रलाप ; बार बार जम्हाईके साथ नींद न आना।

त्वचा।—लाल और गर्म, पसीना न होना; फूली, चिकनी (बेल) त्वचा। छोटी माता,—खुजली तथा त्वचाकी खाल निकलना, शीत सहन न होना; इसके साथ ही त्वचा सूखी और रातमें बहुत प्यास। चिलक मारना, या मच्छड़ काटनेकी तरह दाग; धूम्र रोगकी तरह उद्भेद। चींटी चलने जैसी सुरसुरी और शीत सहन न होना तथा सुन्न जैसा मालूम होना। चेहरा पीली आभा लिये।

ज्वर।—ज्वराधिकारमें,—त्वचा पसीनेसे रहित गर्म; चेहरेपर लाल या मलिनता और सुन्न जैसा भाव पर्यायक्रमसे प्रकट होता है (ऐमिल, कैम्फ, सिङ्को, मैग-कार्ब); ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी बहुत इच्छा; बहुत अधिक स्नायवीय अस्थिरता,—रोगी तकलीफसे छटपटाता है; सन्ध्याके समय और नींदके समय यन्त्रणा असह्य हो जाती है। जिस ज्वरमें शरीरपर दाने (Eruption) निकल आते हैं, उनमें बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजना और अस्थिरता यदि न रहे तो ऐकोनाइटम बिलकुल ही उपयोगी नहीं है। कपकपी, प्रादाहिक ज्वर; ठण्डा पसीना; नाड़ी पूर्ण और तेज़, कभी कभी सविराम, मृदु और सूतकी तरह। शिरा और धमनीमें जाड़ा मालूम होना (वेरेट्रम; मानो शिरामें गर्म जल प्रवाहित हो रहा है=आर्स, रास्टक्स) पसीना रुकनेकी वजहसे बीमारियाँ। सरमें दर्द, शीत और मुंहकी ओर गर्मी मालूम होती है।

स्नायु।—जिन बच्चोंको दाँत निकल रहा हो, उन्हें अकड़नकी बीमारी; उत्ताप, पेशियोंका फड़कना [एगार, इग्ने, जिङ्कम],—बच्चा अपनी मुट्ठीको दाँतसे काटता है, झुँझलाता और चिल्लाता है; त्वचा गर्म और पसीनेसे रहित।

वृद्धि।—शामको और रातके समय सब तकलीफें असह्य हो जाती हैं। गर्म घरमें शय्यासे उठनेके समय; रोगवाली करवट सोनेपर (हिपर; नक्स-मस्केटा); **घटनी**=वायु सेवनसे (ऐल्यू; मैग-कार्ब, पलस, सैबाइना।)

सम्बन्ध।—बेलाडो, कैमोमिला, काफिया, नक्स, पिट्री, सिपिया, सल्फिया, सलफर।

दोषघ्न।—ऐसेटिक ऐसिड और सुरासार तथा उद्भिदोंकी खटाईसे यह प्रतिषेधित [Antidoted] हुआ करता है।

समतुल्य औषध ।— पल्स, लाइको, सिकेल, कैम्फर [शरीर खोल देनेपर घटना]; हिपर कार्फिया [असह्य दर्द] ; चायना [सफेद दस्त] ; जेल्स [बुरी खबर, क्रोध और भयका कुफल] ; ब्रायो, नक्स [क्रोधकी वजहसे दस्त]; ब्रायो [सूखी हवाके कारण] ।

दोषघ्न ।— ज्वराधिकारमें, अनिद्रा, तकलीफ सहन न होनेके सम्बन्धमें काफिया इसका अनुपूरक [Complementary] है ; चोट आदिके सम्बन्धमें आर्निका अनुपूरक है ; सभी अवस्थाओंमें सलफर ।

जिन रोगोंकी नयी अवस्थामें ऐकोनाइटका प्रयोग होता है, उन सभी रोगोंकी पुरानी अवस्थामें सलफरका प्रयोग होता हैं ; इसलिये, ऐकोनाइटम और सलफर आपसमें पहले और बाद सभी समय प्रयोग किया जाता है। ऐकोनाइटसके अपव्यवहारपर सलफरका प्रयोग करना चाहिये ।

शक्ति ।—१ म दशमिक, ६ ठीं, ३० से १००० शततमिक तक ।

क्रियाका स्थिति काल ।—एक घण्टेसे एक सप्ताह तक ।

ऐकोनाइटम फेराक्स ।

(ACONITUM FEROX)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— हिमालय पर्वतपर पैदा होने वाला एक बहुत विषैला काठ विष । इसीसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें इसका प्रयोग हुआ करता है ; दाह मिली जलन ; रह रहकर श्वास लेना ; कपकपी ; श्वास-कष्ट ; पाकाशयका शूल ; स्नायुशूल ; सुन्न हो जाना ।

उपयोगिता और आभास ।— यह ऐकोनाइटम नेपेलसकी अपेक्षा भी अधिक तेज विष है । इनमें ज्वरका नाश करनेकी अपेक्षा पेशाव लानेकी अधिक शक्ति है ; हृत्पिण्डमें विकारके कारण श्वासकृच्छ्रता ; स्नायुशूल और नये सन्धिवात आदि रोगोंमें बहुत लाभदायक है ।

लक्षणावली।

मन।—पहले तो मानसिक अवस्था खूब तेजपूर्ण रहती है, पर इसके बाद ही बोध शक्ति घट जाती है। जीभ सुन्न हो जाती है; जीभपर गाढ़ा सफेद पीली आभा लिये लेप; पेटमें दर्द; अनिद्रा; ज्वर।

श्वासयंत्र।—श्वासकृच्छ्रता,—जब तक उठकर बैठ नहीं जाता तबतक बहुत तकलीफ रहती है; श्वास-प्रश्वास तेज। ऐसा अनुभव होना कि श्वास-प्रश्वासको चलानेवाली पेशियोंकी क्रिया बन्द हो गयी है। इसके साथ ही श्वासकृच्छ्रता और उत्कण्ठा। उठँगनेकी अवस्थामें हाथपर माथा रखकर सांस लेनी पड़ती है।

शक्ति।—१ म दशमिकसे ३ री दशमिक तक।

सम्बन्ध।—कुरेरि और फास्फोरससे तुलनीय।

ऐक्टिया-रेसिमोसा या सिमिसिफ्यूगा।

(ACTIA RACEMOSA)

दूसरा नाम।—ब्लैक स्नेक-रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी सोरसे मूल अर्क तैयार होता है। सूखी सोरका मूल अर्क प्रूफ स्पिरिटमें तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—बार बार गर्भ-स्राव हो जाना; बच्चका स्नायुशूल; पीठमें दर्द; स्तनके दूधमें विकार; वयः सन्धिके समयकी बीमारियां; आँखकी बीमारी; ताण्डव; मृगी; मूर्च्छाभाव; सरका दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; व्याधि-शङ्का; गुल्मवायु; कटि-शूल; विषाद-उन्माद; मस्तिष्कावरण प्रदाह; आर्त्तवमें विकार; स्नायुशूल; डिम्बाधारकी बीमारियाँ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह; गर्भिणीकी बीमारी; सूतिकावस्थामें उन्माद; आमवातसे पैदा हुई बीमारियाँ; वात; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात; अनिद्रा; कशेरुका मज्जाकी उत्तेजना; गर्दन अकड़ना; कम्पन; जरायुकी गड़बड़ी; गर्भवतियोंका वमन इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० केण्ट कहते हैं,—गुल्मवायु और वात प्रधान धातुवालोंके लिये यह उपयोगी है। रोगिनी सहजमें ही शीतसे घबड़ा उठती है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण यहाँ लिखे जाते हैं:—(१) प्रसवके बादकी उन्माद अवस्था (Puerperal Mania)। रोगिनी समझती है, कि जल्द ही उन्माद रोग हो जायगा; अपने शरीरपर चोट पहुँचानेकी चेष्टा करती है (२) स्नायुशूल दूर हो जानेपर उन्माद अवस्थाका पैदा हो जाना। रोगिनी समझती है कि वह मेघ-समुद्रमें डूबी हुई है और अपने चारों ओर वह अन्धकार देखती है (३) नाना प्रकारकी चीजें भ्रम भरी देखना,—जैसे उसके आसनके नीचेसे चूहा भाग गया (४) आँखोंमें स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia); आँखके गोलेमें दर्द और तेज शूल बेधने या कुछ विद्ध होने जैसा दर्द और वह दर्द माथेके चारो ओर फैल जाता है। (५) जरायु या अण्डाधारकी विकृतिका प्रतिक्षेप (Reflection) की वजहसे हृत्पिण्डकी बहुत तरहकी बीमारियाँ,— रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका हृत्पिण्ड रह रहकर स्थिर हो जाता है। मानो उसकी साँस रुकना चाहती है; शरीर हिलानेसे ही कलेजा धड़कने लगता है (डिजि)। (६) आर्त्तव,—अनियमित, सुस्त करनेवाला; मानसिक आवेग, सर्दी लग जाने और बोखार आदिकी वजहसे विलम्बसे ऋतुस्राव। ऋतुस्रावके समय मानसिक लक्षणोंका बढ़ जाना (७) जरायुके विकारकी प्रतिक्षिप्त क्रियाकी वजहसे गुल्म-वायु और अपस्मार आदि अकड़नवाली बीमारियाँ पैदा हो जाना। आर्त्तव स्रावके समय उसकी वृद्धि। (८) बायें स्तनके नीचे तेज दर्द (९) गर्भावस्थामें मिचली, अनिद्रा, नकली प्रसव वेदना,—तलपेटके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वमें फैलनेवाला तेज दर्द; हर तीसरे महीने गर्भ-स्राव। प्रसवके दर्दके समय सिहरावन और कम्पन। धनुष्टंकार आदि आक्षेप; जरायुद्वारका कड़ापन या फैल न सकना (Rigid os); बहुत देरतक ठहरनेवाला तेज दर्द। (१०) प्रसवके बादका दर्द (After Pains), पुट्ठेमें बहुत ज्यादा दर्द। (११) पेशियोंमें व्यथा, गर्दन और पीठमें वातका दर्द और मेरुदण्डमें स्पर्श सहन न हो। इसमें पेशियोंके सभी स्थूल अंश अधिक आक्रान्त होते हैं।

लक्षणावली।

मन।—रोगिनी समझती है कि एक टुकड़े घने काले मेघमें उसका माथा डूबा हुआ है (आर्जेण्ट-नाई),—इसी वजहसे उसे चारों ओर अँधेरा दिखाई देता है। बहुत विषाद और हमेशा आसन्न विपत्तिकी आशङ्का। बन्द गाड़ीपर चढ़ना नहीं चाहती, कहीं उसमें न रह सकनेके कारण कूद न पड़े। लगातार बका करती है (स्ट्रैमो) ; भ्रम देखना—,मानो उसके आसनके नीचेसे एक चूहा भाग गया (इथूजा, लैक-कैन)। मदात्यय (Dilirium Tremens),—अपने ऊपर चोट पहुँचानेकी चेष्टा करती है। स्नायुशूल आपद्धा होनेपर उन्माद रोगका पैदा हो जाना। प्रसवके बादका उन्माद (Puerperal Mania); सूतिकावस्थामें उन्माद ; रोगिनी सोचती है कि वह मानो उन्मादिनी हो रही है ; अपनी शरीरपर ही आघात करनेकी चेष्टा करती है (कामोन्मादके साथ—हायोसा ; हर्ष-विषाद आदि पर्यायक्रमसे प्रकट होते हैं=क्रोकस-सैटाई, मानसिक यन्त्रना, धर्म सम्बन्धी विषाद और ललाटपर ठण्डा पसीना=वेरेट्रम)। एकान्त पसन्द करता है। देश देशान्तरमें घूमनेकी इच्छा। मृत्युका भय,—समझता है, वह मुमूर्षु हो रहा है। कोई बात पूछनेपर जल्दीसे और असम्बद्ध उत्तर देता है। काम काजके सम्बन्धमें असफल होनेपर या प्रेमका बदला न मिलनेके कारण विषाद। गृहस्थीके सम्बन्धमें उदासीनता (सिपिया)

मस्तक।—मानो खोपड़ी उड़ जायगी (बैप्टी, कैम, कोबाल्ट, नैट्रम-क्लोरेट्रम, इयुका)। मानसिक थकान, बहुत बढ़ने या जरायु रोगके प्रतिक्षिप्त कारणसे शिरामें तेज और टपक जैसी तकलीफ। मानो माथेमें तरङ्गें उठ रही हैं, या माथेकी हड्डी पर्यायक्रमसे खुलती और बन्द होती है (कैनाब-इण्डिका) माथा बहुत बड़ा मालूम होता है। ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो भीतरसे बाहरकी ओर कोई दबाव डाल रहा है।

आंख।—पलकोंका स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia),-आँखके गोलेमें लगातार तेज सलाई बेधने जैसा दर्द। कनपटी या कपालमें, मूर्द्धा और सरके पश्चाद्भागतक दर्द,—सीढ़ी चढ़नेसे बढ़ना और सोनेपर घटना। दीयेकी रौशनीसे डर (Photo-phobia from artificial light), दो दिखाई देना (Diplopia) ; दृष्टिपथपर काले काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देना (Muscoe volitan)।

पाकाशय।—मेरुदण्ड और गर्दनके पीछे दबावसे पैदा हुई मिचली और वमन। पेटके ऊपरी भागमें खालीपन मालूम होना (सिपि, सल्फ़)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव स्राव अनियमित; सुस्ती लानेवाला (ऐल्यू, काक्यु); देरसे रजःस्राव होना या रज-रुकना; मानसिक उद्वेग; शीत लगने या बोखारकी वजहसे : इसके साथ ही ताण्डवरोग, या मूर्च्छावायु (Hysteria)। रजःस्रावके समय मानसिक विकार (रजस्रावके बाद मानसिक उत्तेजना = ऐकोन); बांएँ स्तनके नीचेवाली जगहमें दर्द,—खासकर अनूढ़ा बालिकाओंका (दो ऋतुओंके मध्यमें होनेपर = आस्टि, ; थोड़े रजःस्रावके साथ = पल्स ; वातकी वजहसे = रैनान, वाल्वो ; प्रदरके साथ = सियानो) गुल्मवायु, अपस्मार (मृगी) की वजहसे पेशियोंका आक्षेप (Spasm)—जरायु-विकारके प्रतिचिह्न (Reflex) लक्षण सब ;-ऋतुकालमें बढ़ना। ताण्डव रोग (Chorea)-बाईं ओर अधिक। अण्डाधार या जरायुकी उत्तेजना (Irritation) की वजहसे शरीरके कितने ही स्थानोंमें तेज कतरने और बिजलीकी लहरकी तरह दर्द ; जरायु और अन्त्राशयके पासवाले स्थानमें एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक तेज, सलाई वेधने जैसा दर्द। गर्भावस्थामें,—अनिद्रा ; नकली प्रसव-वेदना ; तीसरे महीने गर्भस्राव (सेबाई, अन्तिम आधे भागमें = सिकेलि ;—दुर्घटनाकी वजहसे = आर्निका ; क्रोध आदिसे उत्पन्न = कैमो ; बार बार गर्भस्राव—उपदंशके विषकी वजहसे होनेपर = मार्क-कोर ; श्लेष्मा-प्रधान धातुके कारण होनेपर = केल्के ; यक्ष्मा आदि दोषसे होनेपर = बैसिलिन ; उद्भेद निकलनेवाली प्रकृति होनेपर—सलफर ; अस्थि-वृद्धि-न होनेका रोग रहनेपर = सिलि ; साधारणतः वाइबर्नम ओप्युलस और वाइबर्नम-प्रूणिफोलियम)। प्रसव-वेदनाकी पहली-अवस्थामें कम्पन ; स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे आक्षेप ; दर्द बहुत ही तेज़। आक्षेपिक ; क्लान्तिजनक, बहुत देरतक ठहरनेवाला—सामान्य शब्दसे वृद्धि। प्रसवके बादवाला दर्द,—योनि पार्श्वमें दर्दकी अधिकता। वातमिला बाधकका दर्द (Rheumatic Dysmenorrhoea)।

बहुदर्शी चिकित्सकगण कहा करते हैं, कि गर्भवतीके अन्तिम महीनेके अन्तिम कई दिवस इस दवाको सेवन करनेपर [यदि उपयोगी लक्षण रहें] प्रसवका दर्द बहुत थोड़ी देरतक रहता है, और बिना तकलीफके प्रसव हुआ करता है [यदि ऐसा मालूम हो कि प्रसवमें तकलीफ होगी तो अन्तिम

महीनेमें=श्यानिका ; उदराधान आदि रहनेपर=कैल्के-फ्ल ; कब्जियत रहने पर=कौलिनसोनिया ; पालोट दर्दकी अधिकता रहनेपर=कालीफाइलम ; अजीर्ण रोग होनेपर=पनस]। बहुत रजःस्राव होनेपर [Menorrhagia]— पीठसे लेकर पुट्ठेकी राहसे उरुदेशतक रुका हुआ या बहुत दबावकी तरह दर्द। प्रसवके बादका स्राव रुका हुआ ; [Suppressed]; मानसिक उद्वेग या ठण्ड लगनेके कारण स्रावका रुकना ; पानी जैसा और छोटे थक्के-मिला (With clots) स्राव।

हृत्पिण्ड।—जरायु या डिम्बाधारकी बीमारीके कारण हृद्रोग— हृत्पिण्डकी क्रिया एकाएक निरुद्वेग-सी हो जाती है ; श्वास रुकनेकी तैयारी ; थोड़ा भी शरीर हिलानेपर कलेजा धड़कना [डिजिटेलिस] ; अनियमित गति और कांपती हुई नाड़ी ; कलेजेमें दर्द—बाईं बांहका सुन्न पड़ जाना [ऐकोन] ; मालूम होता है, कि इसी शरीरके साथ बँधा हुआ है।

पीठ।—पैशिक वात वेदना [पेशियोंका वातका दर्द].—पीठ और गर्दनकी पेशियोंका अकड़ना ; सुन्न और संकुचित हो जाना ; मेरुदण्ड (Spine) में स्पर्श असह्य—ज्यादा सिलाई करना, टाइप राइटर लिखना या बहुत अधिक पियानो बजानेके कारण इस बीमारीकी उत्पत्ति [ऐगार, रैनाल, वाल्ब्री]। पंजरेके भीतर वाला (Inter-costel) वातका दर्द। पीठकी ऊपर वालीकी कशेरुका या शिर-दण्डके बन्धस्थलपर (Prosterior Spinal Sclorosis) में बिजलीकी लहरकी तरह तेज और क्षणभर रहनेवाला दर्द। (मैग-फास)।

प्रत्यङ्ग।—अशान्ति और बेचैनी मालूम होना ; प्रत्यङ्गोंकी पेशियोंका (Muscular) दर्द (Soreness)। पेशियोंके स्थूल अंशके वातका दर्द ; सङ्कोचन और सुई बेधनेकी तरह मालूम होना, इसके साथ ही दोनों पैरोंका कांपना, और इसी कपकपीके कारण चल न सकना ; स्नायविक चंचलता; (नीलापन और शीतके साथ प्रत्यङ्गोंका कम्पन=ऐगर, थाइराइडिन)

निद्रा।—नींद न आना। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय मस्तिष्ककी उत्तेजना। नींदके समय चौंक उठता है (बेल, कैमो)।

वृद्धि।—छूनेपर, शरीर हिलानेसे, ठण्डी हवा लगनेपर, गर्म कमरेमें रहनेके समय, रातमें और सवेरे, संध्या होनेपर, गुल्फके पीछेवाली पेशीके अगले

भागमें या कण्डरामें दर्द और आर्तव स्रावके समय, रजःस्रावके परिमाणके अनुसार तकलीफ घटा बढ़ा करती है ।

घटना ।—विश्रामके समय, निर्मल हवा लगनेपर, गर्म प्रयोगसे और भोजनके बाद घटना ।

सम्बन्ध ।—जरायु और वातके दर्दके सम्बन्धमें ऐक्टिया, कालोफाइलम और पलसेटिलाके सदृश है । बेचैनी और मृत्यु-भयमें—ऐकोन ; वातमें—पलस, ब्रायो ; पार्श्व वेदनामें—लाइको ; अकेलेमें भय—आर्सेनिक ; दूहा काटनेपर—कैल्केरिया ; ऐगार, लिलियम और सिपिया ।

शक्ति ।—२ य से २०० । २ य दशमिक अधिक व्यवहृत होती है ।

ऐक्टिया-स्पाइकेटा ।
(ACTIA SPICATA)

दूसरा नाम ।—बेन-बेरि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें इसकी उपयोगिता दिखाई देती है ; छोटी सन्धियोंमें वातका दर्द ; पाकाशयमें कैन्सर या कर्कट रोग ; भयकी वजहसे बीमारी ; आमवात ; दन्तशूल इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—छोटी सन्धियोंमें दर्दके साथ इसका सम्बन्ध (कालोफाइलम) है, खासकर मणिबन्ध (कलाई) पर इसकी प्रधान क्रिया होती है । दाहिना हाथ और दाहिने हाथकी कलाई ही इसका प्रधान आक्रमण स्थल है । छेदनेकी तरह दर्द इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है । व्यायामके बाद हड्डियोंके भीतर दर्द मालूम होना । ऐक्टिया रेसिमोसाके प्रत्यंगों के कम्पनके बदले ऐक्टिया स्पाइकेटासे शरीरके सभी स्थानोंमें टपक मिला दर्द आराम होता है । यकृत और हृक्क प्रदेशमें (मसाना) दर्द अधिक रहता है ।

लक्षणावली ।

मन ।—रातमें सोनेपर मृत्यु भय ; प्रलाप ; डर वगैरह मानसिक उत्तेजना ।

मस्तक ।—मतवालों जैसा भाव ; सरमें चक्कर आना ; चारों ओर नीले रंगकी रेखा।

ज्वर ।—पानी पीने बाद कंपकंपी ; कम्पनके साथ डकार इत्यादि।

मुख-गह्वर ।—ऊपरी हनुमें भयानक दर्द,—क्षय हुए दाँतको छेदकर हनुकी पेशीसे कनपटी (Temples) या कपाल तक फैला हुआ दर्द। चेहरे और माथेमें अधिक पसीना।

पाकाशय ।—ऊपरी उदरमें छेदने और सलाई घुसाने जैसा दर्द मालूम होना और वमन। श्वास-कृच्छ्रताके साथ ऊपरी पेटमें सङ्कोचनकी तरह यन्त्रणा (मानो चिपक जाता है), मानो सांस रुक जाती है। भोजनसे आलस्य और एकाएक सुस्ती।

प्रत्यङ्ग आदि ।—कलाई, अँगुली, गुल्फ, पैरकी-अँगुली वगैरह छोटी सन्धियोंके स्थानपर वातका दर्द (अँगुली आदिके अकड़नेके साथ मणिबन्धमें और अँगुलियोंमें सङ्कोचनकी तरह दर्द=कालोफाइलम) ; अँगूठेकी पहली सन्धिमें वेधने जैसा दर्द और दूसरी अँगुलियोंमें छेदने और सुई वेधनेकी तरह दर्द—(अस्थिवेष्टमें स्पर्श असह्य रहनेके साथ=लीडम ; विश्रामसे या हिलानेपर, मणिबन्ध और अँगुलियोंकी पीठकी हड्डीमें दर्द=रियुटा ; कलाईमें पीसनेकी तरह और अँगुलियोंकी सन्धियोंमें स्थानपर छेदने जैसा दर्द,—स्थिर रहनेपर दर्दका बढ़ना=रासटक्स ; अँगुलियोंका फूलना और संचालनके समय अकड़नकी तकलीफ मालूम होना,=पल्स ; अँगुली उत्तप्त और पीले रङ्गकी सूजन—हिलानेपर बढ़ना=ब्राई) कलाई सूजी हुई, लाली (थोड़ा भी हिलानेपर दर्द बढ़ जाना=ब्राई)। पक्षाघातकी तरह बाहुकी दुर्बलता। बोलने चालने बाद एकाएक आलस्य मालूम होने लगना।

सम्बन्ध ।—नक्सके बाद खूब लाभ करता है ; सदृश—ऐक्टिया—रेसिमोसा, कालोफाइलम, लिडम, ब्रायोनिया, रियुटा।

शक्ति ।—३ री दशमिकसे ६ ठीं दशमिक तक।

ऐडोनिस वर्नैलिस।

(ADONIS VERNALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछका अर्क ; इसका सार भाग विचूर्ण (ऐडोनिडिन) है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है:—अण्डलाल मिला पेशाब ; शोथ ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ; दमा।

उपयोगिता और आभास।—यह हृत्पिण्डकी बीमारीकी एक महौषधि है। नाड़ीका विकार दूर करता है और हृत्पिण्डकी सङ्कोचन शक्तिको बढ़ाता है; इसके द्वारा पेशाब आनेवाली शक्ति भी बढ़ा करती है। हृत्पिण्डका कपाट या द्वारावरोधिनी (Valves) की गड़बड़ीमें इसका व्यवहार बहुत ही लाभदायक और प्रसिद्ध है। हृत्पिण्डका शोथ या हृत्पिण्डके बाहरी आवरणमें जल-सञ्चय होना रोगकी भी एक अत्यन्त आवश्यक दवा है।

लक्षणावली।

मस्तक।—हलका मालूम होना ; ललाट और शिरोपश्चात्‌से लेकर कनपटी या शङ्ख देश (Temples) होकर आँख तक फैला हुआ सर दर्द। सरमें चक्कर आना। माथेकी त्वचामें खींचन मालूम होना।

मुख-विवर।— मुँहमें लसदार भाव। जीभ मैल चढ़ी, पीली, दर्दभरी और झुलसी हुई-सी मालूम होना (जीभका पार्श्व झुलसा हुआ मालूम होना=पल्स, सिपिया ; जीभका अगला भाग=लाई, सोराइन, सैङ्गु्ई, ऐमोन-ब्रोम, आइरिस, सिपिया ; पहली बार भोजनके एक घण्टा बाद= मार्क-बिन)

हृत्पिण्ड।— हृद्‌कोषका आवरक सम्बन्ध (Mitral) और हृद्-धमनीके रक्तका पीछे लौटना या पुनरुद्गरण (Regurgitation) (आरम, कैक्टस, कानवेलेरिया, लरोसिरेसस, स्पाइजि, जिङ्कम]। हृदावरक झिल्लीका प्रदाह (Pericarditis),—हृद्-स्पन्दन (कलेजा धड़कना) और श्वास-कष्ट ; शिरा प्रभृतिमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे सूजन; हृत्पिण्ड-रोगसे पैदा हुआ दमा।

पाकाशय ।—बहुत भार मालूम होना। भूखकी अधिकताकी वजहसे मानो पाकाशय ही चबाया जा रहा है। ऊपरी पेटमें खालीपन मालूम होना। घरसे बाहर रहनेपर घटना।

पेशाब ।—पेशाबकी ऊपर तेल जैसा पदार्थ तैरा करता है।

निद्रा ।—बेचैन नींद; भयङ्कर सपने देखा करता है।

प्रत्यङ्ग ।—गर्दनके पीछेमें दर्द; मेरुदण्ड अकड़ा और उसमें हमेशा दर्द रहना।

ऐडोनिससे उत्पन्न उपक्षार ।— (Alkaloid) **ऐडोनाइडिन** यह हृत्पिण्डका बल बढ़ानेवाला और पेशाब लानेवाला है। धमनी आदिकी सङ्कोचनी शक्तिको बढ़ाता है। हृत्पिण्डका फैलना बढ़ाता है और देरतक ठहरनेवाला बनाता है और शिराओंके रक्त छोड़नेमें सहायता पहुँचाता है।

सम्बन्ध ।—समतुल्य—डिजिटेलिस, स्ट्रोफैन्थ; कानवे।

शक्ति ।—मूल अर्क, ५ से २० बून्द तक। इसकी सारका १ म दशमिक विचूर्ण (१x) एक ग्रेन मात्रा।

ऐड्रेनैलिन।

(ADRENALIN)

(विचूर्ण और टिञ्चर)

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—आँतकी ग्रन्थियोंका दोष; त्वचाका बदरङ्ग (विवर्ण) हो जाना; दुर्बलता; रक्त मिला पेशाब; हृत्कम्पन (कलेजा काँपना) वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

इसक्यूलस ग्लेब्रा।

(AESCULAS GLABRA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकाके एक तरहके वृक्षके पके फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— कब्जियत ; खाँसी ; पाकाशयमें मरोड़ ; बवासीर ; मस्तिष्कावरण-प्रदाह ; पक्षाघात ; बोलीकी जड़ता ; सरमें चक्कर आना ; गर्दनका कड़ापन या गर्दन अकड़ना ।

उपयोगिता और आभास ।—स्वस्थ शरीरमें इस दवाकी परीक्षा करते समय मालूम हुआ है, कि मलान्त्र या मलनालीसे इसका बहुत निकटस्थ सम्बन्ध है और इसके अधिकांश लक्षण शरीरके इसी अंशमें प्रकट होते हैं, अतएव, मलनालीके उन लक्षणोंवाली बीमारीमें यह ज्यादा लाभदायक है । मलद्वारमें गर्मी और सङ्कोचन ; मलद्वारका बाहर निकलना (काँच निकलना) और अर्श—खासकर जो आलस्यमय जीवन व्यतीत करते हैं और शराब आदि पिया करते हैं, उनकी बीमारीमें यह अधिक उपयोगी है ।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्करके साथ मोह । स्थिर-दृष्टि ; जीभके पक्षाघातकी वजहसे बोलीमें जड़ता (बोलते बोलते रुक जाती है=कैलि-ब्रोम ; बात छोड़ जाता हैं=कैमो ; बात या बातका कोई अंश छोड़ देता है=नक्स ; जड़वाक या तोतलाना=स्ट्रैमो ; अनुपयोगी वाक्य या वाक्यांशका व्यवहार करता है=लाइको ; पक्षाघातसे आक्रान्त=कास्टि ; सूजन और अकड़न, मानो पक्षाघात ग्रस्त=डलकेम ; जीभके बहुत मोटापनकी वजहसे बोलनेकी शक्तिका प्रायः न रहना=जेल्स)। दृष्टि-शक्तिका घटना ।

पाकाशय ।—मिचली ; भूख न लगना इत्यादि ।

मलान्त्र और मल ।—दर्द-भरा, गाढ़ा बैंगनी रङ्गका मसा या अर्श,—मलमें कड़ापन, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना (नीला रङ्ग—कार्बोवेज ; मलमें कड़ापनके साथ दर्द भरा, जलन-भरा और श्लेष्माका स्राव करनेवाला बवासीर=ऐमोन-म्यूर)। कड़ा गांठ गाँठ मल । गुह्यद्वार या मलान्त्रका बाहर निकलना ; गर्मी और उसमें सङ्कोचन मालूम होना (बच्चोंका कांच निकलना) फेरम फास ; उदरामय, रक्तस्राव और कुन्थनके साथ मलान्त्रका बाहर निकलना=ऐलो ; पाखाना फिरनेके समय थोड़ा वेग देनेपर=इग्ने ; हरबार पाखाना हो आनेपर छींक और उसके साथ ही साधारण वेग और उदरामय=पोडो ; पेशाब करनेके समय=ऐसिड-म्यू)।

प्रत्यङ्ग।—त्रिकास्थि (Sacrum) और दोनों पैरोंका पतला और चीण हो जाना। कम्पन,—पैर कांपनेकी वजहसे चल नहीं सकता (ऐक्टिया-रेसि ; नीलापन और ठण्डापनके साथ पैर आदिका कांपना=ऐगरि ; कमजोरी और सुस्तीके साथ=थाइराइडिन)। पैर आदिमें सङ्कोचन पैदा होनेका लक्षण (गुल्फ स्थानकी पेशीके अगले भागका सिकुड़ना=ऐमोन-म्यूर, कास्टि, साइलेक्स)। इसके साथ ही धीरे धीरे घटनेवाली दृष्टि शक्ति और मत्यङ्गोंकी आंशिक निष्क्रियता (Ptosis) या पक्षाघात।

साधारण लक्षण।—आक्षेप या तड़काके बादका पक्षाघात।

सम्बन्ध।—सदृश-ऐलो, कोलिन्सोनिया ; इस्क्यूलस-हिप ; इग्ने ; नक्स-वोमिका।

शक्ति।—१ ली दशमिकसे ३ री दशमिक।

इस्क्यूलस हिपोकैस्टेनम।

(AESCULAS HIPPOCASTANUM)

दूसरा नाम।—कटूस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—भारतवर्ष और अमेरिकामें पैदा हुए वृक्षके फलकी गिरीसे अर्क तैयार होता है। अमेरिकन मतसे ताजे फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मलद्वार और कमरकी बहुत-सी बीमारियां ; कब्जियत ; खांसी ; अर्श ; सरका दर्द ; आंत उतरना ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारी ; कामला ; कटिशूल ; प्रोस्टेट-ग्रन्थिकी बीमारी ; त्रिकास्थि-प्रदेशमें दर्द ; स्वाद बिगड़ना ; गले और मुखगह्वरकी बीमारियां ; जीभकी बीमारी ; जरायुका अपने स्थानसे हटना।

उपयोगी धातु।—जिन्हें बवासीर है, जिनके पाकाशयमें विकार है, सर्दीका धातु है और जो दुःखित हैं और जिन्हें सहजमें ही क्रोध आ जाता है, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है।

आभास।—कमरमें दर्दके साथ अर्श और तालुमूलकी कोषिक झिल्ली प्रदाहित (Follicular pharyngitis) रोगमें यह अधिक लाभदायक

है । इसके कुछ प्रधान निर्णायक लक्षण यहाँ लिखे जाते हैं (१) दुःखित और क्रोधी स्वभाव (२) पश्चात कटिदेश और नितम्बमें भार और क्षीणता मालूम होना । (३) कमरमें लगातार धीमा धीमा दर्द,—रोगी बहुत कष्टसे चल सकता है और शरीर झुकाकर खड़ा हो सकता है (४) ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारमें कुछ पतली खीलें गड़ रही हैं (५) अर्श आदिकी शिराका फूलना, इसके साथ ही मलद्वार सूखा और भरा हुआ मालूम होना (६) प्रदर—नितम्ब और दोनो उरु-शिखरमें क्षीणता मालूम होनेके कारण रोगिनीके लिये चलना बहुत कठिन हो जाता है और बहुत तकलीफ होती है ।

लक्षणावली ।

मन ।—विमर्ष, अवसादग्रस्त ; बहुत क्रोधी स्वभाव ; सामान्य कारणसे ही धीरज नष्ट हो जाता है, धीरे धीरे चित्तमें स्थिरता आती है ; सभी विषयोंमें असन्तुष्ट (कैमो) ; किसी विषयमें मन नहीं लग सकता (इग्नेशा)।

मस्तक ।—मस्तिष्ककी जड़ता । मिचली या वमनेच्छाके साथ ललाट देशमें दबाव मालूम होना. माथेकी त्वचामें दर्दके साथ मस्तकके पश्चात् देशसे लेकर ललाट देशतक फैलनेवाला दर्द,—सवेरे बढ़ना, ललाट देशके दाहिनी ओरसे बाईं ओर स्नायुकी तरह तेज और जल्दीसे फैलनेवाला दर्द और इसके अन्तमें ऊपरी पेटमें उछलने जैसा दर्द ।

आंख ।—पलक और बाईं आँखकी नीचेवाली पेशीका फड़कना । बाएं अक्षि-कोटरमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द । आँखसे आँसू बहना ; इसके साथ ही आँखोंमें भार और उत्ताप मालूम होना ।

नाक ।—पतली सर्दी (Fluent Coryza) पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव और जलन ; स्पर्श सहन न हो, और नाकसे खींची हुई हवा बहुत ठण्डी मालूम हो ।

मुख-गह्वर ।—तालुमूल या गलनालीका कौषिक प्रदाह (Follicular Pharyngitis)-कण्ठनालीमें बहुत जलन, छुआ न जाना ; सूखापन और रुखड़ापन मालूम होना ; यकृतमें रक्तसञ्चयकी अधिकताकी वजहसे और अर्शके धातुवाले मनुष्योंकी बीमारी । जलन और सुई या डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ बार बार घूंट लेनेकी इच्छा ; जिह्वा-मूलके दोनो पार्श्वके गह्वरोंका (Fauces) संकुचित मालूम होना । (एपिस, बेल) ।

वक्षके भीतर।—एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक सुई वेधने जैसा दर्द—वह दाहिनी ओरसे बाईं ओर फैल जाता है।

पाकाशय।—दर्द और चबाने जैसे दर्दके साथ ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयमें पत्थरकी एक टुकड़ेकी तरह कोई भारी चीज रखी हुई है (ब्राइ; नक्स; पल्सेटिला); भोजनके तीन घण्टे बाद, ठीक ऐसा ही कष्ट मालूम होता है, यकृत प्रदेशमें भरापन और स्पर्शका सहन न होना।

मलान्त्र और मल।—गुह्यद्वार या मलान्त्र (Rectum) सूखा और गर्म; मानो पतली खीलोंसे भर रहा है; गलनालीसे ऊपर फैलनेवाला कतरने जैसा दर्द (इग्ने, सलफर); अन्धवलि या बादी बवासीर—उसमें दर्द, जलन और उसका रङ्ग बैंगनी (इस्क्युलस-ग्लैबरा देखो), कभी कभी उससे रक्तस्राव होता है। मलान्त्रमें दर्द, पूर्ण (भरा) मालूम होना, (कांटी अड़नेकी तरह=ऐनाकार्ड), जलन और खुजलाहट (सलफर); मल कड़ा, सूखा; कड़ा मल, पाखाना फिरनेमें बहुत तकलीफ मालूम होना। मलनाली सूखी और गर्म; पश्चात कटि और त्रिकास्थिके बीचवाले प्रदेशमें (Lumbo-sacral region) लगातार ऐंठन (Aching)। पाखाना हो जाने बाद,—मलांत्रमें भार मालूम होना और मलद्वारमें बहुत देरतक ठहरनेवाला तेज दर्द (ऐलो, इग्ने, ऐसिड-म्यूर, सल्फ)।

पुं०-जननेन्द्रिय।—पाखाना फिरनेके समय मूलाधार सुखशायी ग्रन्थिसे रस-स्राव (Discharge of Prostratic fluid—ऐलू, कास्टि।)

स्त्री-जननेन्द्रिय।—विटपास्थि सन्धि अर्थात् गुह्यद्वारसे जननेन्द्रियके मध्यवर्ती प्रदेश (Pubic Symphysis) में टपकका दर्द। जरायु-भ्रंश (Uterine Prolapsus) के साथ प्रदर,—त्रिकास्थि और पश्चात कटिके संयोगस्थलका सुन्न हो जाना; गाढ़े, पीले रङ्गका, लसदार, त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव; ऋतु स्रावके बाद बढ़ना।

पीठ।—पीठमें बहुत दर्द;—पश्चात् कटि और त्रिकास्थिके सन्धि स्थानमें (Lumbo sacral articulation),—थोड़ा और दीर्घकाल स्थायी दर्द; कभी कभी त्रिकास्थि वगैरह प्रदेश भी आक्रान्त हो जाते हैं। श्रोणि या पश्चात् कटि सुन्न हो पड़ती है,—गर्भावस्थामें, जरायु-भ्रंशकी अवस्थामें और प्रदाह रोगमें; टहलने और सर झुकाने (Strooping) के समय रोगी

बैठ जाता है या सो पड़ता है। पीठमें भार या सुन्न मालूम होना। टहलनेके समय पैर घूम जाते हैं। तलवा थका हुआ, दर्द भरा और फूला हुआ मालूम होता है। हाथ पैर फूलते हैं और धोनेके बाद लाल हो जाते हैं। बाहु, दोनों पैर, मेरुदण्ड वगैरहमें मानो पक्षाघात हो गया हो।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—अर्श आदि रोगमें—ऐलो; कोलिन, ग्रैफ, ऐसिड-म्यू, नक्स, सलफर, कोलिनसोनियाके प्रयोगसे जब अर्शमें कुछ लाभ दिखाई दे तो इस्क्यूलससे एकदम आराम हो जाता है।

नक्स और सलफरसे जब अर्शमें पूरा पूरा लाभ नहीं होता तब इस्कुलसकी प्रयोगकी बहुत आवश्यकता होती है। गलेके भीतरके लक्षणोंमें कैलि-बाई।

वृद्धि ।—देह संचालनसे; पीठमें लगातार दर्द और तकलीफ, चलने और सर झुकानेपर पैदा हो जाता है। सर्दी वगैरह ठण्डी हवाके सेवनसे वृद्धि।

घटना ।—स्थिर हो रहनेपर और ठण्डे प्रयोगसे घटना।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक शक्ति।

इथियोप्स ऐण्टिमोनेलिस ।

(AETHIOPS ANTIMONALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दो भाग सल्फ्युरेट आव ऐण्टिमोनी और एक भाग पाराका विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है,—आँखोंका प्रदाह; कानका स्राव; गण्डमाला; चर्म-रोग; उपदंश।

उपयोगिता और आभास ।—श्लेष्मा प्रधान-धातु-ग्रस्त मनुष्यकी आंख, कान त्वचा वगैरहकी बीमारीमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है।

लक्षणावली ।

त्वचा ।—कच्छ, (खसड़ा) की तरह खुजलानेवाले, दर्द भरे उद्भेद (Eruptions) और मधुचक्रको तरह लाल रङ्गका एक तरहका चर्मरोग (Favus); श्लेष्मा प्रधान धातुवाले मनुष्योंका विचर्चिका रोग (Psoriasis)

और गण्डमाला दोष-युक्त (Scrofulous) मनुष्यकी आँखोंका प्रदाह, बदबूदार कर्ण-स्राव (कानसे पीव बहना—Otorrhoea) वंश-परम्परागत उपदंश।

शक्ति।—३ री दशमिक विचूर्णसे ६ ठे क्रमतक।

इथ्यूजा सिनेपियम।

(AETHUSA CYNAPIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—युरोपके एक तरहके फूलवाले गाछ या पौधेसे स्पिरिटके सहारे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें यह लाभदायक है;—मस्तिष्ककी क्लान्ति; बच्चोंकी विसूचिका; आक्षेप; खाँसी; प्रलाप; फटना; आंख और ग्रन्थिकी बहुत-सी बीमारियाँ; सिरका दर्द; हिचकी; मानसिक जड़ताका भाव; बचपनके समयका पक्षाघात; अनिद्रा; हनुस्तम्भ या दांती लगना; वमन;

उपयोगिता और आभास।—जो बच्चे दूध सहन नहीं कर सकते और जो सब युवक मनःसंयोग नहीं कर सकते; बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजनाके साथ बच्चोंके पाकाशय और आंतोंका (Gastro-intestinal) रोग आदिमें यह विशेष उपयोगी है। इससे पैदा हुए सब लक्षणोंकी प्रबलता (Violence) और बच्चोंका दूध सहन न होना, इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है। आगे लिखे कुछ सिद्धिप्रद लक्षण=(१) सब लक्षणोंकी तेजी, बहुत वमन, एकदम धनुष्टंकारकी तरह आक्षेप, बहुत तकलीफ और बहुत ही अधिक विकार। (२) बहुत उत्ताप और प्यास न होना। (३) बहुत ज्यादा पसीना निकलना, बहुत पसीना निकलनेके समय भी शरीरका कपड़ा नहीं उतारना चाहता। (४) नाक और ओठमें एक तरहका दाग, (Lenia Nasalis); मुखमण्डलका अत्यन्त यंत्रणा-सूचक सङ्कोचन विशेष। (५) दूधका बिलकुल सहन न होना; पीते ही जमकर दही जैसा वमन हो जाता है। (६) मलका पतलापन—मल पतला हरी आभा लिये (Greenish); मलके साथ थक्का थक्का गाढ़ा दूध मिला रहता है; पाखाना होनेके पहले अन्त्र-शूल (Colic) और पाखाना हो जाने बाद सुस्ती और औंघाई। (७) वमनके समय पसीना

निकलना और बहुत तकलीफ मालूम होना। (८) वमन या पाखाना हो जाने बाद औंघाई।

लक्षणावली।

मन।—बच्चे की जड़-बुद्धि ; सोचनेकी शक्तिका न रहना ; किंकर्त्तव्य-विमूढ़ भाव। बेचैनी, उत्कण्ठा-भरा, रोनी प्रकृति। ऐसा भ्रम दिखाई देना मानो चूहा आदि जन्तु चल-फिर रहे हैं (ऐक्टिया, लेक-कैन); मनःसंयोग की शक्तिका न रहना; (ऐलेट्रिस-फेरि, एइलेन्थस, ऐवेना-सैट, बोविष्टा, डालका, आइरि, वार्सि, लेक-कैन, लाइकोपस, सिलि-लोट, ऐसिड-आकजेलिक; ऐसिड-फास,); औंघाई (वमनके बाद); बच्चा बुड्ढे जैसा दिखाई देता है।

डाक्टर गार्नसी कहते हैं—"बच्चोंकी और कितनी ही बार जवानोंकी मानसिक यन्त्रना बढ़ जाना और रोना—इस दवाका अत्यन्त साधारण लक्षण है। रोग जितना ही बढ़ता जाता है, उतना ही निर्जनता-प्रिय और रोना भी बढ़ता जाता है।

मस्तक :—भयानक यंत्रणा, मानों कोई माथा जोरसे पटककर टुकड़े टुकड़े कर रहा है (कार्बो-ऐनिम)। माथा आदि मानो बंधा हुआ है और शिकंजेमें (As if in vice) कसा हुआ है, (कैक्टस; काक्युलस, मैग-सल्फ, मार्क, थिरिड)। मेरुदण्डमें फैलनेवाला सरके पिछले भागका दर्द—सोने और दबानेपर घटना (सोनेके समय—कैल्के-फास, कूप्रम, हेलिबो, इग्ने, ओलियेण्डर ; दबानेपर घटना—साइमेक्स—लेक्ट्)। माथेका दर्द, वायु छूटनेपर घटना। (साइक्यूटा)

चक्षु।—रोशनीसे भय (आर्स, बेल, कैल्के, इयुफ्रे, हिपर, मार्क, नक्स-वो, फास, पल्स, रास); श्लेष्मासे पैदा हुआ आंखोंका प्रदाह (Conjunctivitis आंख उठना) ;—योजकत्वक् (Conjunctiva) और पलककी भीतर वाली ग्रन्थिका फूलना ; पलकोंका किनारा प्रदाहित, रातमें पलक सट जाती है, सबेरे पानी लगाकर छुड़ानी पड़ती है (बोरैक्स ; ग्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कैमो, साइक्यूटा, क्रोकस, इग्ने, लाइको, फास, पल्स, रास, सिपि, साइलि, स्टैफ, सल्फर), अकड़नके समय आंखें नीची किये रहता है और पुतली फैली रहती है।

कर्ण।—कानमें सुई बेधने जैसी तकलीफ। ऐसा मालूम होता है मानो कोई गर्म चीज कानसे निकल रही है। कानमें सांय सांय शब्द।

नासिका ।—गाढ़ा सर्दीका स्राव । नाकको ठोरमें दादकी तरह उद्भेद। बार-बार छींकनेकी इच्छा ।

मुखमण्डल ।—चेहरे पर बहुत मानसिक और शारीरिक यन्त्रणा—प्रकट होती है और नाकके बाहरी छेदसे, ओंठके संयोगस्थल तक, एक सफेद रेखा मिली सिकुड़न प्रकट होती है। उसे नेसिक रेखा (Linea Nasalis) कहते हैं— यह एक खास लक्षण है ।

मुखगह्वर ।—विशुद्ध ।—ऐसा मालूम होता है, कि जीभ बहुत लम्बी हो गयी है। कण्ठनालीमें जलनके साथ निगलनेमें तकलीफ मालूम होती है।

पाकाशय ।—एकदम प्यासका न रहना (एपिस); दूधका सहन न होना, किसी तरहका दूध पचा नहीं सकता; पीनेके साथ ही जमी हुई दहीके आकारमें कै हो जाता है; कै हो जाने बाद सुस्ती आ जानेके कारण बच्चा सो जाता है (मैग-कार्ब देखो); जिन बच्चोंको दांत निकल रहा हो, उनका अजीर्ण रोग,—फेन भरा दूधकी तरह पदार्थका ज्यादा वमन होना या पीली आभा लिये वमन और उसके बाद खट्टा दूध और पनीरकी तरह पदार्थकी कै होती है, भोजनके प्रायः एक घण्टा बाद खाया हुआ पदार्थ कै हो जाता है और बहुत-सा हरे रङ्गका पदार्थ कै हुआ करता है (खट्टे गन्ध-वाला पाखाना होनेके साथ दहीकी तरह पदार्थ वमन=कैल्के-कार्ब); खानेके पदार्थ देखनेके साथ ही मिचली (आर्स, कौलचि, सिपि); ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशय उलट गया है और वक्षस्थल तक जलन मालूम होती है। छेदने जैसा दर्द ।

अन्त्राशय ।—भीतर और बाहर शीत मालूम होना और आंतोंमें दर्द, शूल वेदनाके अन्तमें वमन, सरमें चक्कर आना और सुस्ती; पेट वायुसे भरा, उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। नाभि-प्रदेशमें कुटकुटाहटका शब्द ।

मल ।—शूल जैसे दर्दके अन्तमें, कांखनेके साथ अजीर्ण; पतला, हरी आभा लिये मल-त्याग, पाखाना होने बाद बहुत सुस्ती और औंघाई। बच्चोंका गर्मीके दिनोंका अतिसार; विसूचिका (Cholera Infantum) बच्चे प्रत्यङ्ग सब बरफकी तरह ठण्डे—शरीर लसदार पसीनेसे भरा; बच्चा मोश-कनकी तरह पड़ा रहता है, टकटकी लगाकर देखता रहता है और पलक

नहीं गिरती। दुरारोग्य कब्जियत, मानो आंत प्रभृति सब यंत्र निष्क्रिय हो गये हैं। मूत्राशयमें कतरनेकी तरह दर्द और बार बार पेशाबका वेग होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—अस्त्रके चोटकी तरह दर्द। फुन्सियोंकी तरह (Pimples) उद्भेद ; उत्तापके स्पर्शसे खुजलाहट। आर्त्तवका स्राव पानीकी तरह। स्तन वृन्तका फूलना और उसमें कतरनेकी तरह यंत्रणा।

श्वास यंत्र ।—सांस लेने और छोड़नेमें कष्ट, बाधा मिला और उससे उत्कण्ठा पैदा हो जाती है ; फेफड़ेमें दर्द भरा सङ्कोचन ; हृदस्पन्दन। यंत्रणासे रोगीकी बोली नहीं निकलती।

प्रत्यङ्ग ।—खड़े होने या सर ऊंचा रखनेकी शक्तिका न रहना (ऐब्रोट) ; पीठमें कस जानेका भाव। कटि देशमें लगातार दर्द। निचले प्रत्यङ्ग आदि कमजोर। हाथ पैरोंका सुन्न हो जाना। अपस्मार या मृगीकी तरह अकड़न,—मुट्ठी बाँध लेता है, चेहरा लाल, नजर नीची, पुतली स्थिर और फैली हुई ; मुंहसे फेन निकलना ; दोनों जबड़े कसे और नाड़ी क्षीण ; कठिन और द्रुत। वमन, पाखाना होना और मृगीके दौरेके बाद बहुत कमजोरी, सुस्ती और औंघाई।

त्वचा ।—भ्रमणकी वजहसे उरुदेशकी त्वचा (दांत निकलनेवाले बच्चे का एक तरहका उद्भेद या त्वाच रोग—मध्य द्रोही (Interrigo=कास्टि, लाइको)। सामान्य परिश्रमसे ही पसीना निकल आना। शरीरकी त्वचा बरफकी तरह या लसदार पसीनेसे भरी। लसिका-ग्रन्थियाँ (Lymphatic glands) फूली। सन्धि-प्रदेशमें खुजलानेवाले उद्भेद। तलहत्थीकी त्वचा सूखी और सिकुड़ी हुई ; काला दाग। सर्वाङ्गीन शोथ [Dropsy]।

ज्वर ।—बहुत अधिक उत्ताप ; प्यास न रहना ; बहुत-सा बरफकी तरह पसीना निकलता है। पसीना निकलनेके समय भी ओढ़ना उतार नहीं सकता [नक्स-वोम]।

निद्रा ।—सोते सोते चौंक उठता है (ऐस्का, आर्निका, बेल, कास्टि, कैमो, ह्युफ्रे, ड्रोसेरा, सिना, लाइको, पलस, ऐण्टि-टार्ट, ब्रोम, थूजा) ; ठण्डा पसीना निकलना (नींद लगते ही पसीना=आर्स, ऐसिड-म्यू ; नींदके समय=थायना, फेरम, फायो, मेलिन ; नींदके लिये आंख बन्द करते ही पसीना आने लगना=सिङ्कोना, कोनायम ; नींद लगते ही उत्ताप पैदा हो

जाना=सेम्बु)। वमन होने या पाखाना होने या अकड़नके बाद औंघाई वमन और पाखाना होने बाद बच्चा इतना कमजोर हो जाता है, कि वह सो जाता है।

वृद्धि।—खाने-पीने बाद; वमन, मल-त्याग और अकड़नके बाद सभी उपसर्गोंका बढ़ जाना।

उपशम।—वायु सेवन और बन्धु-समाजमें जानेपर अच्छा रहता है।

सम्बन्ध।—सदृश—दूध वमनमें—ऐण्टि-क्रूड, आर्स, कैल्के, सेनिक्यु, साइक्यूटा; कोनायम; इसके अलावा एथिरस, क्यूप्रम, इपिका, ओपियम।

दोषघ्न।—उद्भिदसे प्रतिषेधित होता है। डा० टेस्टी इसको सलफरका समगुण कहते हैं और यही उन्होंने स्थिर किया है।

शक्ति।—३ री दशमिक, ३० या २०० शततमिक।

ऐगरिकास एमेटिकस।

(AGARICUS EMETICUS)

परिचय।—युरोपमें पैदा हुए बेंगका छत्ता जातिका एक वृक्ष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह दूसरे दूसरे ऐगरिकसोंके समान लक्षणवाला ही है पर इसको एक विशेषता यह है, कि ठण्डे पानीसे ऐगरिकास-मस्कके रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं। पर ऐगरिकास एमेटिकसके रोग-लक्षण **ठण्डे पानीके प्रयोगसे तेजीसे और पूरी तरह** आरोग्य हो जाते हैं।

पाकाशयके प्रदाहमें।—पाकाशयमें तेज जलन, मिचली, कपालमें ठण्डा पसीना, ठण्डा पानी या बरफका पानी पीनेपर घटना लक्षणको यह एक बहुत बढ़िया दवा है।

बहुत **मिचली**; मिचलीको वजहसे खड़े होने या बैठनेको सामर्थ्य न रहना और इसी वजहसे शय्यापर लेट जाना इसका एक निर्देशक लक्षण है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—ऐकोन, सल्फ (ठण्डा पानी पीनेपर बेचैनीका कुछ घटना); ऐण्टिम-क्रूड, आर्स, बेल, ब्रोम, फ़ेरम, सिपि, सल्फ (विनिगर सेवनसे वृद्धि) ।

शक्ति ।—निम्न शक्ति ।

ऐगरिकस मस्केरियस ।

(AGARICUS MUSCARIUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे छत्तेको धोकर डाइल्यूट अलकोहलमें मूल अर्क तैयार होता है । सूखी अवस्थामें विचर्ण हुआ करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मुंहासे; पलकोंका काँपना; मस्तिष्कको कोमलता; जाड़ेके दिनोंके फोड़े; ताण्डव; खांसी; ऐंठन; मदात्यय या शराब पीनेका दुष्परिणाम; बाधक; अतिसारिका विकार या सान्निपातिक ज्वर; मृगी; सड़नेवाले जखम; बहुत अधिक ताप; खुजलाहट; कामला; आंखका नासूर; कटि-वेदना; मस्तिष्कावरण-प्रदाह; निकट दृष्टि (पासकी चीज दिखाई देना); स्नायुशूल; सुन्न हो जाना; क्षय-कास; वात; अर्बुद; बहुत इन्द्रिय परिचालनका दुष्परिणाम; प्लोहाकी बीमारी; कम्पन या फड़कन; आक्षेप; दांतका दर्द; सान्निपातिक ज्वरका लक्षण; मस्तिष्कका सान्निपात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जिनकी त्वचा और पेशियाँ शिथिल हैं; जो मतवाले, अमिताचारी, वृद्ध और जीर्ण-शीर्ण हो रहे हैं, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है । सङ्कोचन या फड़कन (Twichings) और कम्पन इस दवाका एक अनन्य साधारण लक्षण है; देहकी सभी पेशियोंका स्पन्दन किसी किसी समय इतना बढ़ जाता है, कि अन्तमें वह एकदम ताण्डव (Chorea) रोगमें परिणत हो जाता है । इस दवाकी लक्षणावलीमें ताण्डवके सभी लक्षण दिखाई देते हैं और इन्हीं लक्षणोंके कारण, इसके गुणसे बहुत ताण्डव रोग इससे आराम हुए हैं । त्वचामें हर जगह सुरसुरी और खुजलाहट मालूम हुआ करती है; केवल त्वचामें ही नहीं, कभी कभी पेशियोंके भीतर भी ऐसा मालूम होता है, मानो चींटी चल रही है; खुजलाहट भी सब जगह

मौजूद रहती है ; खुजलानेपर दूसरी जगह पैदा हो जाती है। इसके अलावा कभी कभी त्वचापर या प्रत्यंगोंमें एक प्रकारका ऐसा विचित्र अनुभव हुआ करता है कि मानो त्वचा बरफकी तरह ठण्डी हो गयी है या असंख्य बरफके टुकड़ेकी भांति शीतल हो रही है। अथवा शरीरके किसी अंशमें गर्म सुई घुसाई जा रही है। कान, नाक, हाथ, पीठ और हाथ पैरकी अंगुलियोंमें छेदनेकी तरह दर्द ; डंक मारनेकी तरह दर्द और जलन मालूम होती है, मानो (Frost-bitten) हो गयी है। जलन और खुजलाहट मिली लाली भी किसी विशेष स्थानपर दिखाई देती है। शीतकालके फोड़े (Chilblains पानी लगना, खाल उधड़ना) की यह एक उत्कृष्ट दवा है। खुजलाहट, सुई वेधनेकी तरह दर्द ; कानकनी वगैरह तकलीफें, मानसिक परिश्रमसे बढ़ जाती हैं और शारीरिक परिश्रमसे घट जाती हैं।

ऐगरिकससे पैदा हुए सभी लक्षण, खासकर मेरुदण्डके लक्षण, रमण आदिसे बढ़ जाते हैं। विवाहिता स्नायु-प्रधाना स्त्रियोंको रमणके अन्तमें अपस्मार या मृगी अथवा मूर्च्छा वगैरह लक्षण दिखाई-देते हैं—इसमें यह विशेष लाभ-दायक है।

लक्षणावली।

मन।—अस्थिर चित्त, क्रोधी, मानसिक अवसाद-ग्रस्त, अत्यन्त मानसिक परिश्रम और पढ़ने-लिखनेकी वजहसे मानसिक बीमारियाँ। प्रलाप,—हमेशा उन्मत्तताका प्रकट होना ; शय्यासे उठनेकी चेष्टा करता है (मोह-ज्वर या आन्त्रिक ज्वरमें) ; बहुत जोर लगाता है। परिश्रमसे कातर हो पड़ता है या उदासीनता पैदा हो जाती है। प्रलाप आदिमें कभी गाता है, कभी चिल्लाता है और कभी कभी बुदबुदाया करता है, बच्चा देरसे बोलना और चलना सीखता है (देरसे बोलना आरम्भ करता है=नेट्रम-म्यूर ; देरसे चलना आरम्भ करता है=कैल्के) ; स्नायु प्रधाना बालिकाओंका जब तिरस्कार किया जाता है तब उन्हें आक्षेप (Convulsion) पैदा होता है। बच्चा कोई भी विषय याद नहीं रख सकता ; पाठ देरसे सीखता है। जवान भी पढ़ने और सीखनेमें भ्रम करते हैं ; मूर्खोंकी तरह निरर्थक बात बोलते हैं। प्रलापमें मीठी बातें और गाते हैं ; पद्य लिखते हैं। मानसिक लक्षण सबेरे बढ़ जाते हैं और ज्यों ज्यों सन्ध्या होती जाती है त्यों त्यों घटते जाते हैं।

मस्तक ।—सरमें दर्द,—शराबियोंका,—शराब पीने और मौज करने बाद (लोबेलिया, नक्स, रैनान) सरमें दर्द; जो बोखार आनेपर या कोई तकलीफ होनेपर सहजमें ही प्रलाप बकने लगते हैं। (बेल) ताण्डव रोगवाले मनुष्योंका या जिनकी पेशियाँ सब जभी तभी फड़का और संकुचित हुआ करती हैं; मेरुमज्जाके विकारकी वजहसे उपसर्ग। धूपकी वजहसे सरमें चक्कर आना; पीछेकी ओर गिर जानेकी सम्भावना;—मानो माथेके पिछले भागमें कोई भारी चीज है। (एथिस, कैनाबिस-सेट)। अधकपारीका सर दर्द—मानो कपाल या कानपटीमें कोई प्रेक बेध रहा है। (काफिया, इग्ने, नक्स; अधकपारीका दर्द=आर्स, ब्राइ, कैल्की, चायना, साइक्यूटा, कोलोसिन्थ, इग्ने, मार्क, नक्स, पल्स, रास, बैडो, सिपि, स्टैफि, वेलो, वेरेट्र)। बहुत देरतक लिखने पढ़नेकी वजहसे असह्य सरका दर्द। मानो अनगिनती बहुत ठण्डी सुइयाँ बिध रही हैं। गर्म सुई बेधनेके लक्षणमें आर्सेनिक; गर्म कपड़ेसे माथा ढकनेपर अच्छा रहता है। खुजलाहट—खुजलाने बाद जाड़ा मालूम होना। सवेरे बिछावन छोड़नेपर, खोपड़ीकी त्वचामें खुजली। फटे घाव मिला खसड़ा रोग (Eczema)। तेज सरका दर्द—दर्द नाककी जड़तक फैल जाता है—इसके साथ ही नाकसे खून या गाढ़ा श्लेष्मा निकलना।

आंख ।—आंखके गोले या पलकोंमें फड़कन (सङ्कोचन) और स्पन्दन,—नींदके समय अच्छा होना (साइक्यू, आर्स, सलफर, पल्स)। दो देखना—काँपती हुई दृष्टि, बड़े कष्टसे पढ़ सकता है। काले कीड़ेकी तरह पदार्थ आंखके सामने उड़ा करते हैं (सुस्त करनेवाले स्रावकी वजहसे होनेपर=चायना; यकृतके विकारकी वजहसे होनेपर=ऐसिड नाइट्रिक; बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवनकी वजहसे=फास; बहुत शराब पीनेके कारण=नक्स)। आँखोंसे बहुत काम लेनेकी वजहसे दृष्टि शक्तिका घटना या ह्रास। (रातमें महीन काम नहीं किया जा सकता=बैप्टी; बहुत परिश्रमकी वजहसे=आर्निका, रियुटा); छोटी चीज बड़ी दिखाई देना=ऐसिड-आक; महीन सिलाई या कसीदेका काम या बहुत पढ़नेकी वजहसे=रियुटा; दूरकी चीज देखनेकी शक्ति घट जाना=फाइजसटिग्मा)। मालूम होता है मानो आँखोंके सामने कुहासा, मेघ या मकड़ेका जाल फैला हुआ है (लिलि-टाई)। पलकोंके बगलमें लाली; पलकोंमें खुजली या जलन मालूम होना और सट जाना।

कान।—लाल, जलन भरे और खुजलानेवाले—मानो बरफ आदि लगकर वैसे ही हो गये हैं। कानका सिकुड़ना और फैलना, कर्णपटह (Tinnitus) का प्रदाह।

नाक।—भीतर और बाहर खुजलाहट; एक बार छींक आना आरम्भ होनेपर सहजमें बन्द नहीं होती; बिना जलनका पानीकी तरह स्राव। रक्तस्राव,—बहुत ज्यादा परिमाणमें और सड़ी गन्ध लिये स्राव; नाकका अगला भाग लाल (लीडम, लैके)।

मुखमण्डल।—मुंहकी पेशियोंमें अकड़न मालूम होना; खुजली और जलन, मानो बरफसे जल गया है। गालमें काटने और छेदनेकी तरह दर्द;—मानो काठकी सलाई बिध रही है। (आर्जेण्ट, डलिकास, हिपर, ऐसिड-नाई) मुंहका स्नायुशूल,—मानो बरफकी तरह ठण्डी सुई बेधी जा रही है या बरफ छुलाया जा रहा है। चेहरेमें जड़-बुद्धिता (Idiocy) का भाव; कम्पन, विशेषकर सवेरे बढ़ना।

मुखगह्वर।—ओंठमें विसर्प; ओंठका फड़कना; मुंहका स्वाद मीठा। जीभके अगले भागमें लकड़ीकी सलाई वेधने जैसा दर्द। जीभ कांपती हुई (ऐब्सिन्थ, वेल, हायो, कैल्के) मृगी रोगमें फेन निकलना। दांत सब बहुत लम्बे और दर्द भरे मालूम होते हैं (ब्राई, आर्निका, वेल, कैल्के, कास्टि, कैमो, लैके, नैट्र-म्यू, पल्स, स्टैफि, सल्फ)।

कण्ठनाली।—कर्णनालीके पिछले छेदसे लेकर कानतक सुई वेधने की तरह तकलीफ; गलनालीमें संकोचन मालूम होना। श्लेष्मामय कड़े गोले सब कफके रूपमें (With sputa) निकलते हैं। तालुमूल विशुष्क पर निगलनेमें तकलीफ। पुराना गलेका जखम।

पाकाशय।—असह्य प्यास; सर्वग्रासी भूख। खानेकी इच्छा नहीं, पर भूखकी अधिकतासे मानो पाकाशय चबाया जा रहा है। लगातार बदबूदार वायु निकलना; बहुत पेट फूलना; आंतोंमें गड़गड़ शब्द; छूटी हुई वायु बदबू भरी; खट्टा स्वाद और गन्ध मिली डकार; स्नायविक बीमारीमें हिचकी; भोजनके प्रायः तीन घण्टे बाद; पाकाशयमें जलन मालूम होना और उसके साथ ही अस्पष्ट दबाव मालूम होना।

आंतोशय।—यकृत, प्लीहा और आंतोंमें सुई वेधनेकी तरह दर्द। बहुत ज्यादा परिमाणमें गर्म वायु निकलना। इसके साथ ही गर्मीके समय

उदरामय (ऐलो); मलान्त्रमें जलन ; बहुत कांखनेके साथ कोमल मल निकलना ; असह्य वेग ; पाखाना होनेके पहले, समयपर और बादमें, आपसे आप अत्यन्त वेग,—मानो मलनाली फट जायगी । बदबूदार मल । बार बार पेशाबका वेग, मूत्रनालीमें सुई वेधनेकी तरह तकलीफ । लिङ्ग आदिमें खुजलाहट । बूंद बूंद पेशाब होना । पेशाब धीरे धीरे निकलता है । पेशाबमें वेग बहुत अधिक । मल त्यागनेके समय कांखनेपर पाखाना नहीं होता पर अन्तमें आपही आप पाखाना निकलता है । (आर्जेण्ट-नाइ) ; मूत्रके ऊपर तेल जैसा पदार्थ तैरता रहता है,—दो पहरके पहले पानीकी तरह, तीसरे पहर दूधकी तरह या सफेद तली जमती है । पेशाब थोड़ा होते ही सरकी बीमारियां बढ़ जाती हैं ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव—परिमाणमें अधिक और समयके पहले ही होता है । योनि और पीठमें खुजली और छेदनेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होना । आक्षेपिक (Spasmodic) बाधक (वात या श्लेष्मा से उत्पन्न—ऐंठिया) ; मानो जरायु बाहर निकला आता है,ऐसा दर्द—खासकर वयःसन्धिके समय जब फिर ऋतु नहीं होता । (लिलियम ; म्यूरेक्स ; सिपिया) इन्द्रियोंकी उत्तेजना । स्तन-वृन्तमें खुजली ; प्रसवके बादका दर्द आदि । प्रदर—बहुत ज्यादा स्राव, गाढ़ा खून मिला काड़वा और जखम पैदा करनेवाला (ऐसिड-फ्लूरिक)

श्वास-यंत्र ।—रातमें सोनेपर आक्षेपिक (Spasmodic) खांसी, कड़ा श्लेष्मा या कफ निकलना । श्वास-प्रश्वास श्रान्ति-जनक और कष्टकर । प्रत्येक बार खांसीके बाद छींक (बेल) । सब शरीरको हिला देनेवाली खांसी, सन्ध्याके समय पसीना, नाड़ीकी गति द्रुत, पीबकी जगह श्लेष्माका स्राव—ऊपरकी ओर मुंहकर सोनेपर बढ़ना । हृत्पिण्डका कांपना या स्पन्दन,—सोनेके समय वृद्धि । डा० एस० एम० गिल्डलेगेट कहते हैं, कि "खड़े होते ही कलेजा धड़कने लगता है ।"

प्रत्यङ्ग ।—जागनेवाली अवस्थामें इच्छा न रहनेपर भी (शरीरके कितने ही अंगोंका) फड़कना या सिकुड़ना, नींद लग जानेपर बन्द हो जाता है (केवल मुंहकी पेशीका कांपना = माईगेल) । मेरुदण्डमें स्पर्श असहिष्णुताके साथ चैतन्याधिक (थिरिडि),—सवेरे बढ़ना । मेरुमज्जाकी खुजली, बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवनके कारण (कैलि-फास; कमरके पीछेकी जगह और

त्रिकास्थि (Sacrum) प्रदेशमें दर्द और यन्त्रणा, दिनमें परिश्रम करनेपर या बैठनेपर बढ़ना। देहको घुमाने फिरानेपर मेरुदण्डमें तकलीफ मालूम होती है। कशेरुका (Vertebrae) का छुआ न जाना ; चलनेमें डगमगाना ;—प्रत्येक कदमपर डगमगा जाता है ; खड़े होनेपर गुल्फ-देशमें दर्द मालूम होता है। सभी तरहका दर्द कोना कोनी भावसे प्रकाशित होता है अर्थात् बाएँ अर्द्धाङ्ग और दाहिने निम्नाङ्गमें मालूम होता है (ऐसिट-टार्ट, स्ट्रैमो—दाहिने अर्द्धाङ्ग और बाएँ निम्नाङ्गमें मालूम होता है=ऐम्रा, ब्रोम, मेडोरिन फास, ऐसिड-सल्फ)। सारी देह मानो अकड़ी हुई, नितम्ब क्षीण। वातका दर्द और सन्धि-वात रोग।

त्वचा।—शीत-स्फोटक (Chilblains या शीतकालके फोड़े, पानी लगना ; खाल उधड़ना),—बेहद खुजली और जलन (टैमासका मूल अर्क बाहरी प्रयोग)। घोर लाल और बहुत अधिक जलन-भरा—रास-टक्स ; गाढ़ा बैंगनी रङ्ग=वेरेट्रम-विर ; पीव पैदा होनेवाला=हिपर)। फुन्सियाँ (Pimples) कड़ी, मच्छड़ काटनेकी तरह, घमौरी, उसके साथ ही बहुत खुजली और जलन (बहुत अधिक चर्म-संयोगसे=कैबोरैण्डाई या पाइलोकार्पास)। पाटल व्रण (Acne Rosacea) लाली-भरा और शीतकालके फोड़े निकलनेके साथ (जरायु रोगके साथ मिला हुआ=हाइड्रोकोटाइल ; शराब पीनेकी वजहसे=नक्स ; लाली और बहुत अधिक खुजली मिला हुआ=रास ; दुर्दमनीय (अच्छा न होता हो=आर्स-आयोड);—ऐसा मालूम हो मानो अनगिनती बरफकी तरह ठण्डी सुइयाँ बेधी जा रही हैं। ठण्डी हवाका सहन न होना (कैल्के, कार्बो-कार्ब, सेप्न-राई)। रुका हुआ, बाधा प्राप्त या स्तम्भित उद्भेदके कारण उत्पन्न अपस्मार या मृगी रोग (Epilepsy)। कान, नाक, मुख-मण्डल और हाथ पैर आदिमें खुजली, जलन और लाली मालूम होना ; रोग वाली जगह लाल, फूली और गर्म हो जाती है।

नींद।—जलन और खुजलीकी वजहसे बेचैन नींद। नींद आनेपर त्वचा आदिका नाचना या फड़कना अथवा बार बार चौंक उठना। सच्ची घटनाकी तरह सपने। दिनमें औंघाई।

ज्वराधिकारमें।—ठण्डी हवा सहन नहीं होती। शामके समय बहुत अधिक उत्ताप ; बहुत ज्यादा पसीना। शरीरमें जगह जगह जलन।

वृद्धि ।—भोजनके बाद ; रमणके अन्तमें (कैलि-कार्ब) ; ठण्ढी हवा सेवन करनेपर ; मानसिक परिश्रमसे ; अन्धड़ पानीके पहले (फास ; सोराइन)

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐक्टिया ; आर्स, कैल्के, कैनाबिस-इण्डिका, हायोसा ; कैलि-फास, वोविस्टा ; लैकेसिस, नक्स, ओपियम; स्ट्रैमो, काफिया, विरेट्रम । (शराबियोंका प्रलाप और उन्माद ; ताण्डव-रोग और मेरुमज्जाकी उत्तेजना) ; माइगेल, टैरेण्टेकम और जिङ्कम (ताण्डव रोगमें), साइक्यूटा और कोडेइनम ।

दोषघ्न ।—यह शराब, काफी वगैरहके द्वारा प्रतिषेधित (Antidoted) होता है। यह बेलोड, कैल्के, ओपि, पर्स, और टैबे इसके बाद ही लाभदायक होता है (पलकोंका फड़कना और अकड़न)। स्ट्रैमो और लैकेसिस मध्यवर्ती दवाएँ हैं।

शक्ति ।—३ री, ३० से २०० क्रम। उच्च क्रमसे ताण्डव आदि रोगोंमें अधिक लाभ होता है। मृगी रोगका आक्रमण होनेके पहले निम्न क्रम प्रयोग करना चाहिये ।

क्रियाकी स्थिति ।—४० दिनोंतक ।

ऐगरिकस फैलायडिस ।
(AGARICUS PHALLOIDIS)

दूसरा नाम ।—ऐमोनिटा फाल्वोसम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—युरोपमें पैदा हुआ कुकुरमुत्ता जातिका एक वृक्ष। ताजी छत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—कालेरा ; आक्षेप : उदरामय ; पाकाशयका प्रदाह ; पेशाब रुक जाना, वमन, दांती लगना ; ताण्डव ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक तेज विष है। इसके सेवनके दस बारह घण्टे बाद एशियाटिक कालराके सभी लक्षण प्रकट हो जाते हैं और फिर क्रमसे मृत्यु हो जाती है।

तेज प्यास, सिचली वार वार श्लेष्मा और पित्त-भरे पदार्थका वमन, बदबूदार हरी आभा लिये वमन, रक्त वमन, पाकाशय और उदरमें आक्षेपकी तरह दर्द, पेटका दर्द, दबानेसे बढ़ना (डायस्को ; दबानेसे घटना=कोलोसिन्थ) ; उदरामय ; बार बार पाखाना लगना ; बहुत अधिक सुस्ती, ठण्डा पानी पीनेपर तेज प्यास, पेशाब रुकना, वगैरह ऐशियाटिक कालराके लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐगरिकस मस्का (कालेराका लक्षण)

शक्ति ।—६-३० ।

ऐगैव अमेरिकाना ।
(AGAVE AMERICANA)

दूसरा नाम ।—अमेरिकान ऐलोज ; सैन्चुरी प्लैण्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पीसे हुए पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—प्रमेह, जलातङ्क, स्कार्वी, मुंहका जखम ।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाका अबतक प्रूविङ्ग नहीं हुआ। हाइड्रोफोबिया या जलातङ्क रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। शीताद रोग, प्रमेह, मुंहका जखम, वगैरह रोगोंमें भी इससे लाभ होता देखा गया है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लिसिन, फेगास, लेके, ऐलो ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न शक्ति ।

ऐगनस कैस्टस ।
(AGNUS CASTUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके फलसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—स्तनमें दूध कम होना ; मलद्वारका फटना ; उदरी ; प्रमेह ; सन्धि-प्रदाह ; ध्वजभङ्ग ; प्रदर ; मुंहका घाव ; वात ;

प्लीहाकी बीमारी; वन्ध्यात्व; अण्डकोषका फूलना; दाँतका दर्द आदि रोगोंमें फलप्रद है।

उपयोगिता और आभास।—डाक्टर एलेनने लिखा है:—जिनका धातु लसिका-ग्रन्थि-युक्त है, अकाल वृद्ध हो गये हैं; विषन्नता; आत्म-ग्लानि, और मानसिक विपर्यय, जिनके सहचर हो रहे हैं, उनकी बीमारीमें बहुत उपयोगी है; कामेन्द्रिय (इन्द्रिय-परिचालनका दुष्परिणाम) इसका क्रिया-स्थल है, यह इन्द्रिय-परिचालना शक्तिका ह्रास और उसके साथ ही मानसिक स्नायविक शक्तिमें अवसाद पैदा करता है। स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंपर ही इसकी क्षमता अधिक प्रकट होती है। बहुत ज्यादा काम-तृप्तिकी वजहसे असमयमें ही बुढ़ापा और बार बार प्रमेहका आक्रमण इसके विषय हैं। कुचलने या मोच खानेके कारण पैदा हुए दर्दमें विशेष लाभ करता है। त्वचामें हर जगह कुचल जानेकी तरह दर्द और खुजली;—खासकर पुट्ठेमें। स्त्रियोंका प्रदर,—स्राव साफ पानीकी तरह; इतनेपर भी कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है; अनजानमें आप ही आप स्राव हुआ करता है,—इस रोगमें भी यह खासा फायदा करता है।

लक्षणावली।

मन।—अन्यमनस्क, अन्तर्दृष्टिकी शक्तिका न रहना; कोई विषय याद नहीं रख सकता; जब तक किसी पाठको दो तीन बार नहीं पढ़ लेता, तबतक उसका भाव ग्रहण नहीं कर सकता। (लाइको, एसिड-फास, सिपिया); बहुत अधिक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे या बहुत अधिक वीर्यपातके कारण अकाल वार्द्धक्यके साथ विषन्नता, उदासी, अनस्थिर चित्तता (चित्त-चाञ्चल्य), अपनेही प्रति आप घृणा। मृत्यु-भय। जल्दी मृत्यु हो जायगी; ऐसे विश्वासके साथ खेद। साहस-हीनता। ऐसा मालूम होता हैं, कि किसी मछली या मृगनाभि (कस्तूरी) की गन्ध आ रही है।

मुख-विवर।—पीनेकी या खानेकी चीज़ छू जानेपर दाँतमें दर्द होने लगता है, जीभ सूखी; लार लेईकी तरह—खींचनेपर सूतकी तरह बढ़ती है (केलि-बाई); खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें कपड़ेका टुकड़ा झूल रहा है।

पाकाशय।—मिचली और ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें दबावके कारण नीचेकी ओर जा रही हैं। अन्नाशय अर्थात् तलपेट टेढ़ाकर

रखना चाहता है। प्लीहा-प्रदेशमें अत्यन्त दर्द; सविराम ज्वरके साथ प्लीहा कड़ी और फूली। यकृत प्रदेशमें लगातार दर्द मालूम होते रहना। छूनेपर दर्द और भी बढ़ जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—पुराने पापी या बहुत दिनोंतक काम-वासना परितृप्त करनेवालोंकी नपुंसकता या ध्वजभङ्ग और लाला-मेह (gleet) या पुराना मेह-रोग; अविवाहित पुरुषोंका स्नायविक दौर्बल्य, सम्पूर्ण क्लैव्य या ध्वजभङ्ग। लिङ्ग ठण्ढा और शिथिल। इन्द्रियमें उत्तेजना और रमण-शक्ति नहीं रहती (केलेडियम, सेलिनियम); बार बार प्रमेह रोग हो जानेकी वजहसे ध्वजभङ्ग। रुके हुए या स्तम्भित प्रमेहके स्रावसे पैदा हुई बीमारी (मेड्राइन) लाला-मेहकी वजहसे रमणेच्छा या लिङ्गोत्थान न होना। मूत्रनालीसे पीली आभा लिये पीवका स्राव। पाखाना फिरनेके समय वेग देनेपर मूत्राधार-मुख-शायी ग्रन्थि अर्थात् प्रोस्टेट ग्रन्थिसे रस-स्राव। दोनों अण्डकोष ठण्ढे, फूले, कड़े और दर्द-भरे।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदरका स्राव साफ पर कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है, शिथिल इन्द्रियसे आप ही आप बहा करता है। प्रसवके बाद स्तनमें दूध न उतरना (*Agalactia*=ऐसाफि, लैक डिफ्लोरेटम, रिसिनस, कस्यूनिस); इस अवस्थामें बहुत अधिक मानसिक अवसाद मौजूद रहता है, रोगिनी कहती है, कि उसकी मृत्यु निश्चित है। बन्ध्यात्व (अरम; अरम-म्यूनेट्रोनेटम; नेट्रम-म्यूर; बोरैक्स)

पैर आदि।—चलनेके समय दोनों ऊरूमें रगड़ लगनेकी वजहसे त्वचाका क्षय होना रोकता है। (इथ्यूजा, ऐगार)। गुल्फ आदिकी सन्धि मोच खाकर दर्द करने लगती है (टियुरा)।

सम्बन्ध।—इसके प्रयोगके बाद ... सल्फ और सेलोनियमकी ... अभावमें प्रायः ही केलेडियम ... पड़ती है और उससे ...

तलनीय।—नक्स, ...

दोषघ्न। ...

ऐग्राफिस-न्यूटैन्स।

(AGRAPHIS NUTANS)

दूसरा नाम।—ब्लू-बेल ; सिला-न्यूटेन्स।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये हुए उद्भिद और अंकुरोंसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—एडिनायड (नासिका-मूलके स्थानके तन्तुका बढ़ना); सर्दी, बहरापन ; उदरामय।

उपयोगिता और आभास।—नासिका मूल पर (नाककी जड़) इसकी प्रधान क्रिया होती है। एडिनायेड या नासिका मूल देशीय तन्तु समूह बढ़कर सर्दी, श्वास, प्रश्वासमें कष्ट, बहरापन और तालमूल ग्रन्थि-प्रदाह, सर्दी हो जाना, सर्दी लगकर उदरामय होना आदि लक्षणमें लाभदायक है।

ठण्डी हवामें कम्पके लक्षणमें साइलीसियाके साथ इसकी तुलना की जा सकती है।

कोई भी बीमारी क्यों न हो, ढक लेनेपर घटनेके लक्षणमें इस दवाके प्रयोगसे विशेष उपकारकी आशा की जाती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐलि-सिपा, ऐलि-सैटा, सिला, साइ-लीसिया।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

ऐग्रोस्टोमा गिथैगो।

(AGROSTOMA GITHAGO)

दूसरा नाम।—लिस-निस-गिथैगो ; कार्ण-ककल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बीयेसे विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—पाकाशय प्रदाह, पक्षाघात, कुन्थन।

उपयोगिता और आभास।—मुखविवरसे मलद्वार तक जलन, माथेमें जलन, सरमें चक्कर आना; सरमें दर्द, विह्वलता (कोमा), चलने और खड़े होनेमें कष्टके लक्षणमें लाभदायक है।

तुलनीय।—लैथिरिस; सिकेलि-कार।

शक्ति।—६, ३०।

ऐड्लेन्थस ग्लैण्डियुलोसा।

(AILANTHUS GLANDULOSA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूलवाली शाखाकी त्वचा और मूलकी छालसे मदर टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहासे; मस्तिष्कावरण और मेरुमज्जाका प्रदाह; उपदंश; डिप्थीरिया; सरका दर्द; कर्ण-मूल प्रदाह; सूतिका ज्वर; वात ज्वर; सान्निपातिक ज्वर; आरक्त ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० क्लार्कका मत;—पित्त और स्नायु प्रधान धातु तथा मनुष्योंके लिये उपयोगी है। इससे पैदा हुए चर्म लक्षणोंको देखकर स्पष्ट मालूम होता है, कि यह सुस्ती लानेवाली और उद्भेद या स्फोट (Exanthematic) ज्वर आदिमें उपयोगी है; खूनका खराब होना और निकृष्टता पैदा होती है। रोगीके शरीरकी त्वचा नीला या पीली आभा लिये नीला रंग धारण करती है, मुखमण्डलका रंग तांबे जैसा और वह गर्म हो जाता है। दांतपर मैल या एक तरहका दाग रहता है; कण्ठनाली फूली; पीली आभा लिये नीली या नीलाभ हो जाती है (ऐमोन कार्ब देखो); रोगका आक्रमण आरम्भ होते ही बहुत सुस्ती (एपिस, एसिड-कार्बोलिक); अर्द्ध चेतना; प्रदाह; और नाड़ी बहुत क्षीण हो जाती है। सभी लक्षण प्रायः आरक्त ज्वरकी तरह रहते हैं। बहुत कमजोरी; कमजोरीके साथ उदरामय, आमाशय और आमरक्त इसके क्रिया फल हैं।

लक्षणावली।

मन।—मनोवृत्तियोंको किसी विषय पर केन्द्रीभूत नहीं कर सकता (द्रष्टव्य ऐलेट्रिस, ऐवेना-सैट, लैक-कैन, ऐसिड-फास) इत्यादि; पढ़नेपर भ्रम

ग्रहण नहीं कर सकता (ऐसिड-फास, ऐग्नस, लाइको, सिपिया); स्पर्श ज्ञानका न रहना ; बेहोशी ; और बहुत अधिक उदासीनता । सुस्ती और बारम्बार दीर्घ श्वास छोड़ना । प्रलापावस्थामें हमेशा कुछ बुदबुदाया करता है (ऐगार, बेल, कैन्थ, क्यूप्रम, इनैन्थि—क्रो, टैरेण्टियु, वेरेट, कोलचि, हायोसा, ओपि, स्ट्रैमो) ।

मस्तक और मुखमण्डल ।—ललाट देशमें दर्दके साथ औंघाई । माथेमें चक्कर, चेहरा गर्म, उठकर बैठ नहीं सकता ; बहुत बेचैन और चिन्तित ; लगातार बुदबुदाकर प्रलाप बका करता है और रोगी किसीको भी पहचान नहीं सकता । आँख गदली अस्वच्छ और पुतली फैली हुई ; रोशनीसे भय । चेहरा मानो काला । नाकसे गन्धहीन पानीकी तरह खूनका स्राव ।

कण्ठनाली ।—प्रदाहित, फूली ; मैल भरी ; लाल, भीतर और बाहर अधिक सूजन । कण्ठनाली नीली और फूली ; दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियाँ (Tonsils) लाल जखमसे भरीं ; सड़ी गन्ध भरा थोड़ा स्राव ; गर्दनमें स्पर्श सहन न होना और सूजन ; मानो श्वास रुक रही हैं ; स्वर-भङ्ग और गलेमें सांय सांय शब्द । जीभके बीचका स्थान लाल और भूरे रंगका—बैप्टी ; आयोडम, स्पंजिया, सलफर ऐकिडिया-रेस) दांतमें मैल और दाग पड़ना ; निगलनेके समय कानतक फैलनेवाला दर्द ।

मल ।—पानीकी तरह पतला, बदबूदार मल ; पेशाब करनेके समय आप ही आप निकल जाता है (ऐलो) ; सूता जैसी कृमि (Tape-worm) ।

श्वास-यन्त्र ।—विषम (असमान) और तेज़ श्वास-प्रश्वास । सूखी, यन्त्रणादायक खाँसी, श्वास कष्ट, छातीके भीतर जलन और दर्द मालूम होना ; थोड़ा थूक या कफके साथ सांय सांय शब्द ; फेफड़ा दर्द भरा,—परिश्रमसे वृद्धि । सोने और शय्या छोड़नेके समय खांसी ।

त्वचा ।—मुखमण्डल और समूचे शरीरकी त्वचापर पीली आभा लिये या बैंगनी (Purplish) उद्भेद ; अँगुलीसे दबानेपर गायब हो जाते हैं ; फिर धीरे धीरे निकल आते हैं ।—(डा० आर्गुट) । नीली आभा लिये रस-भरा बड़ा-सा छाला ; त्वचा बरफ जैसी ठण्डी ।

निद्रा ।—औंघाई और बेचैन ; रोगी तुरन्त आच्छन्न भावमें जा पड़ता है ।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—(अस्पष्ट सरका दर्द)=ऐलो (२ री दश-मिक); (सरमें दर्द और विसर्प भरा मुखमण्डल)=रास-टक्स; साधारणत: नक्स-वोम। **सदृश**=ऐमोन-कार्ब, बेप्ट, आर्निका (दर्द भरा फेफड़ा); ऐसिड-म्यूर (कण्ठनालीका जखम इत्यादि); लेकेसिस।

शक्ति ।—१ म से ३० शततमिक।

ऐलेट्रिस फेरिनोसा।

(ALETRIS FARINOSA)

नामान्तर ।—कालिक रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकामें पैदा हुए एक वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है— गर्भस्राव; रक्तकी कमी; शूल; कब्जियत; अकड़न; वाधक; पेशाबमें कष्ट; जरायुका विकार; ज्वर; अर्श; मूर्च्छावायु जैसी अवस्था; अजीर्ण; श्वेत-प्रदर; बहुत रक्तस्राव; स्नायुशूल; गर्भावस्थामें वमन; बन्ध्यात्व; जरायु-च्युति, जरायुमें दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—मानसिक और शारीरिक क्लान्तिके साथ जरायु और पाकाशयमें गड़बड़ी हो तो यह उपयोगी है। जिन स्त्रियोंमें जरायुके विकारके साथ प्रदर और बहुत कब्जियत रहती है, खूब कांखने बिना पाखाना नहीं होता, मुँहमें फेन-भरी लार संचित रहती है और जिनकी पाचन शक्ति थोड़ी रहती है और भोजनके बाद पेटमें तकलीफ और भार मालूम होता है, उनके लिये यह दवा विशेष उपयोगी है। वे सब स्त्रियां हमेशा इतनी क्लान्त और थकी मांदी जैसी रहती हैं, कि न जाने कितना परिश्रम किया है। बहुत दिनोंतक रोग भोगनेकी वजहके कमजोरी (सीराइन; कैल्के-फास)।

लक्षणावली।

मन ।—मानसिक शक्ति और परिश्रम करना सहन करनेकी शक्ति न रहना। बोध-शक्तिकी क्षीणता। किसी विषयमें मन-संयोग नहीं कर सकना। सरमें चक्करके साथ सुस्ती। भोजनमें अरुचि।

पाकाशय ।—बहुत थोड़ा खानेपर भी तकलीफ मालूम होती है। गर्भावस्थामें बहुत कै होना। स्नायविक अजीर्ण रोग। पेटमें आध्मानवायुकी वजह से शूलका दर्द। सरमें चक्कर आनेके साथ बेहोश हो जानेका उपक्रम। औंवाई और दुबलापन। भोजनसे अरुचि; मिचली (Nausea); दुरारोग्य अजीर्ण रोग। सन्ध्याके समय खाई हुई चीजका डकार और गलेमें जलन; सवेरे उठनेपर पाकाशयका खाली मालूम होना=भोजनसे घटना। पेटमें दर्द—खासकर तलपेटमें; वायु और थोड़ी मात्रामें पतला मल निकलने बाद घटना; दर्द सामनेकी ओर झुकनेपर बढ़ता है और पीछेकी ओर शरीर झुकानेपर घटता है (डायस्को)

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—असमयमें और परिमाणमें बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव होता है और प्रसव जैसा दर्द होता है (बेल, कैमो, काली-कार्ब, प्लैट) जरायुका भारी मालूम होना। बहुत अधिक कब्जियतके साथ जरायुका अपने स्थानसे हटना और प्रदर रोग। जरायुमें कमजोरीकी वजह से बार बार गर्भस्राव [एपिस, काली-फाइल, सेबाई, सोपिया, वाइबार्नम प्रुनिफोलियम]। गर्भावस्थामें पेशियोंमें दर्द।

सम्बन्ध ।—सदृश या तुलनीय—हेलोनियस (रोगिनीकी रक्तहीनता और मानसिक विषादके साथ गर्भस्राव); वाईबार्नम प्रूनिफोलियम (बार बार गर्भस्राव)। चायना, हाइड्रो, सेबाइना, पल्स, कोलोफा (शूल); कास्टिका, फेरम (खांसनेके समय मूत्रस्राव); एलूमिना (कब्जियत) कोलोफा।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३ री शततमिक तक साधारणतः व्यवहारमें आती है।

एलियम सिपा ।

(ALLIUM CEPA)

दूसरा नाम ।—प्याज़।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—निम्न लिखित रोगोंमें लाभदायक है:—मलद्वारका फटना; शोथ (उदरी); सर्दी-खाँसी; अतिसार; मुंहका पक्षाघात; आंत उतरना; बहुव्यापक तरुण-सर्दी (इन्फ्लुएंजा); स्वरनालीका प्रदाह; फिफड़ेका प्रदाह; घेंगुल-फाड़ा; क्रुप खाँसी; पील ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—श्लैष्मिक झिल्लीका सर्दीसे पैदा हुआ प्रदाह और ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव इसका प्रधान लक्षण है। गर्म घरमें और सन्ध्याके समय बढ़ना (पल्स—वायु सेवनसे—इयुफ्रेशिया), वायु सेवनसे घटना। नश्तर लगवाने या चोट खाये हुए स्नायुओंसे उत्पन्न स्नायुशूल भी इससे अच्छा हो जाया करता है—तेज दर्द, सूतकी तरह सूक्ष्म-भावसे चारों ओर फैल जाता है,—मुख-मण्डलमें, मस्तकमें और गर्दनमें, बहुत कमजोरीकी वजहसे हमेशा पड़े रहनेकी इच्छा।

लक्षणावली।

मन।—अंगुलीमें पीब पैदा हो जानेकी वजहसे इतनी तकलीफ होती है, कि रोगी समझता है कि वह पागल हो जायगा। बुद्धिकी जड़ता और विमर्ष भाव।

मस्तक।—सर्दीकी वजहसे धीमा (Dull) सरका दर्द,—संध्याके समय या गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर बढ़ जाता है और निर्मल वायु सेवनसे घट जाता है (युफ्रे, पल्स देखो)। ऋतुके समय सरका दर्दका आराम हो जाना और स्राव बन्द होते ही फिरसे पैदा हो जाना (लैकेसिस, जिङ्कम)। सूतकी तरह सूक्ष्म भावसे शूलका दर्द दौड़ पड़ता है।

आंख।—धुआं लगनेकी वजहसे जलन और किरकिराहट होती है; अंगुलीसे रगड़े विना नहीं रह सकता है। आंख अस्वच्छ और आंसूसे भरी रहती है; कैपिलरी या कैपिलरी (केशकी तरह सूक्ष्म) शिराएं सब खूनसे भर जाती हैं और आंखसे लगातार आंसू बहा करता है।

कान।—कर्णमूल—तालुमूलसे कर्णपश्चात्वाली तक तेज दर्द मालूम होता है (पल्स, हाइड्रो, बेल, कैमो, नक्स-वोम); कानमें शब्द (कास्टि, ग्रै.फा. पल्स)।

नाक।—सर्दी—नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें, पानीकी तरह और जखम पैदा कर देनेवाला स्राव (आर्स, मार्क, ऐसिड-ना,ई, नक्स, पल्स) और आंखसे बहुत ज्यादा, चिकना, कड़वा वगैरह गुण रहित (*Bland*) आंसू बहना (आंखोंसे अपर्याप्त जखम पैदा करनेवाला और नाकसे स्निग्ध स्राव= युफ्रेशिया)। नाकके अगले भागसे बूंद बूंद पानीकी तरह जखम पैदा करनेवाला श्लेष्मा निकलना (आर्स, आर्स-आयोड)। वसन्त ऋतुमें होनेवाली

सर्दी—जलभरी ; उत्तर-पूर्वीय हवाकी वजहसे निकलनेवाला श्लेष्मा नासारन्ध्र और ऊपरी ओठकी त्वचाको क्षय कर देता है। हैमन्तिक सर्दी (Hay Fever नये शस्यकी गन्धसे उत्पन्न एक प्रकारकी सर्दी); शय्यासे उठनेके समय तेज छींक या चुल्लार (आर्स, साइक्लामेन, क्रियोजोट, लैके)। नासा रोग या नासार्बुद=सैरम-वेरेम, कैल्के, कैलि-बाई, थूजा—सरके दर्दके साथ रहनेपर=सैङ्गियु, सङ्गेयु-नाइट्रि ; नाककी जड़में जकड़जानेका भाव, दुर्गन्धित स्राव=कैडमियम-सल्फ ; छूते ही खून निकलना और उसके साथ ही हरा या पीली आभा लिये श्लेष्माका स्राव=फास ; पुराना या बहुत दिनोंतक स्थायी सर्दीका स्राव। सर्दी मालूम होना और कमजोरी=सोराइनम)। मालूम होता है, कि नाकके छेदमें कुछ अड़ा हुआ है।

कण्ठनाली।—सर्दीके वजहसे कण्ठनालीका प्रदाह (Catarrhal Laryngitis); खांसीके दर्दकी वजहसे रोगी हाथसे कण्ठनाली पकड़ लेता है ; मानो खांसनेपर कण्ठनाली टूट जायगी।

पाकाशय।—शूलका दर्द—पैरमें ठण्ड लग जानेके कारण या कोंहड़ा चटनी वगैरह खानेकी वजहसे पैदा हुई बीमारी ; अर्शकी वजहसे बीमारी ; बच्चोंकी बीमारी ; बैठनेसे बढ़ना और टहलते रहनेपर घटना।

श्वासयंत्र।—स्वरभङ्ग। यन्त्रणादायक खाँसी—नाकमें ठण्डी हवा लगनेकी वजहसे खाँसी। कण्ठनालीमें खुजली। श्वास-कष्ट। उपजिह्वा (Epiglottis) प्रदेशमें सिकुड़न मालूम होना। कानतक फैलनेवाला दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—सूतकी तरह तेज स्नायुशूल, इधर उधर दौड़ता है (मुंहमें, वक्षमें, माथमें, गर्दनमें) ऐसा मालूम होता है। पुरानी चोटकी वजहसे स्नायु-प्रदाह (Neuritis); नश्तर लगवाने बाद कटे हुए अङ्गमें स्नायु शूल,—जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। अंगुलीकी हड्डीका प्रदाह ; अंगुल-हाड़ा ; लाली, हाथकी रेखाएं सब ऊपरकी ओर फैल जाती हैं ; दर्दसे पागल बना डालता है,—प्रसवके बाद (कट् कट् झन झन करनेवाला दर्द-भरा=डायस्कोरिया ; कट् कट् झन झन जैसा दर्द और रोगवाली जगहसे नीली रेखा चारों ओर फैली हुई=लैकेसिस ; अंगूठा और अन्यान्य अँगुलियाँ प्रदाहित, टपक जैसा दर्द, काठकी सलाई विधनेकी तरह दर्द=एसिड फ्लुओरिक ; उत्तापसे टपककी वजहसे सूजन और तकलीफकी वजहसे नींद न आना=अंगुली उठाये रहता है—हिपर ; पैरका कोई विशेष अंग बहुत

दर्द भरा रहता है, उसमें स्पर्श सहन नहीं होता ; विशेषकर एंड़ीके नीचे (नैङ्—क्लोरेट) या तलवेका क्षय होकर बहुत दर्द होता है। यंत्र आदिकी सहायतासे प्रसव कराने बाद शिराका प्रदाह (Phlobotis=पल्सेटिला : साधारण शिरा-प्रदाह=हैमा ; पीब आशोषण (Absorption) की वजहसे शिरा-प्रदाह=लैके)।

चर्म।—छाल,—एक तरहका उद्भेद, छोटी माता, आमवात इत्यादि।

ज्वर।—खुजलानेवाला सर्दी ज्वर। प्यास, बहुत पसीना,। नाड़ी पूर्ण और द्रुत।

सम्बन्ध।—अनुपूरक ; फास, पल्स, थूजा ; नाकके अर्बुद रोगमें=कैल्केरिया और साइलिसियाके पहले काममें आता है। **प्रतिषेधक या दोषघ्न**=आर्निका ; (दन्तशूल) कैमो ; पेटमें दर्द=नक्स, थूजा।

शक्ति।—३ री दशमिकसे १८ वीं दशमिक द्वारा अधिक लाभ होता है।

ऐलियम सेटाइवम।

(ALLIUM SATIVUM)

दूसरा नाम।—लहसुन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे फलसे मदर टिंचर या मूल अर्क बनता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है:—केश-हीनता या चँदला पड़ जाना ; दमा ; श्वासनालीका प्रदाह : सर्दी ; कब्जियत ; खांसी : कटिशूल ; बहुमूत्र ; अतिसार ; अजीर्ण ; ज्वर ; सरमें दर्द ; वाकिवात ; स्वरभंग ; आर्त्तवकी अधिकता या बहुत ज्यादा खूनका स्राव ; वाकि: उठना ; लार बहना ; शीताद ; बहुत तरहके चर्मरोग ; अँगुल-हाडा ; कृमि इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—अजीर्ण और श्लैष्मिक रोग-ग्रस्त मोटे-ताजे मनुष्योंपर ऐलियम और सेटाइवम्‌का उत्तम क्रिया होती है। फेफड़े में क्षय रोग हो जानेकी सम्भावनामें इस दवाका प्रयोग करनेपर, यह परिणाम

होता है, कि खांसी, थूक या कफ थोड़ा आता है (बैसिलाइन); शरीरके उत्ताप स्वाभाविक अवस्थामें आ जाता है, रोगीके शरीरपर मांस चढ़ने लगता और नींद आदि नियमित हो जाती हैं। रक्त-कास (Hoemoptysis) या फेफड़ेसे खून जाना रोगमें भी इसके द्वारा कितनी ही बार बहुत फायदा हुआ करता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा निकलनेके साथ पुरानी खांसी, शीतका सहन न होना और विसर्प या दाद पैदा होनेवाले धातुमें भी इससे उत्तम फल प्राप्त होता है।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना;—बहुत देरतक टकटकी लगाकर देखनेपर बढ़ना (कास्टिकम); सरमें दर्द; सरके पीछेकी ओर दर्द; सबेरेके समय बहुत दर्द, चित सोनेपर बढ़ना।

आंख ।—सर्दीसे उत्पन्न (Catarrhal ophthalmia); आंखोंका प्रदाह; सर्दी और शीत आदिसे उत्पन्न योजकत्वकका प्रदाह; रातमें और पढ़नेके समय आंखोंका किरकिराना, जलन और आँखोंसे आँसू निकला करता है; पलक सट जाती है और बड़े कष्टसे अलग होती है।

मुख-गह्वर ।—भोजनके बाद और रातके समय मुंहमें बहुत ज्यादा परिमाणमें मीठा स्वाद; लार संचित होना।

पाकाशय ।—सर्वग्रासी भूख। जलन करनेवाली डकार। जरा भी खानेके पदार्थमें अदल बदल हुआ कि बीमारी पैदा हो गयी। तलपेटमें लगातार दर्दके साथ कब्जियत,—जीभ मैलके साथ लाल और जीभपरके कांटे (Papillae) मानो गायब हो गये हों, ऐसा मालूम होना।

श्वास-यंत्र ।—वायुनली भुजमें बराबर श्लेष्माकी घड़घड़ाहटकी आवाज। सबेरे शय्यात्याग त्यागनेपर खाँसी; गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा-भरा थूक। बड़े कष्टसे निकलता है। शीत सहन नहीं होता। श्वासनालीमें सूजन या फैलमा; सड़ी गन्ध-भरा श्लेष्मा-स्राव—(क्रियोजोट, सूंघनेपर अधिक लाभ होता है)।

हृत्पिण्ड ।—नाड़ीका स्पन्दन उछलता हुआ।

चर्म ।—रूखापन, चैतन्याधिक्य।

निद्रा ।—भोजनके बाद औंघाई।

ज्वर।—एक अङ्गमें शीत या कम्पन, ज्वरके समय वमन।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—ऐलियम-सिपा; ग्रायो, कौष्टि (दुर्गन्ध श्वास); कोलोसिन्थ (दर्द), इग्ने, कैलि, रास, लाइको, नक्स, सिनेगा।

दोषघ्न।—लाइको। अनुपूरक=आर्सेनिक।

शक्ति।—निम्न और मध्यवर्त्ती क्रम।

ऐलनस रूब्रा।

(ALNUS RUBRA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नये पल्लव या जड़से मदर टिंचर या चूर्ण अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—ऋतु प्रकट न होना; ग्रन्थियोंका बढ़ना; प्रमेह; रक्तस्राव; दादकी तरह उद्भेद; श्वेत-प्रदर; वात; गण्डमाला दोष; उपदंश और सोरा दोष इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—यह शरीरके यन्त्र आदिकी पोषण क्रिया उद्दीप्त कर देता है; इसलिये लसिका-ग्रन्थियोंको स्वाभाविक अवस्थामें रखनेमें विशेष सहायता करता है। पाकाशयिक रस थोड़ा सञ्चय होनेकी वजहसे अजीर्ण-रोगमें यह बहुत फायदा करता है और किसी किसी चर्म-रोगमें भी इससे लाभ हुआ करता है। स्त्री-जननेन्द्रियपर इसकी आश्चर्य-जनक क्रिया होती है।

लक्षणावली।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर—स्राव जखम करनेवाला और जरायु ग्रीवाकी झिल्लीके क्षयकी वजहसे सहजमें खूनका स्राव होने लगना। रजो-राहित्य या रजःस्तम्भ;—पीठसे लेकर विटपास्थि—संयोग स्थल (Pubis) तक जलन जैसी तकलीफ; पाखाना होने बाद मलान्त्रमें जलन।

त्वचा।—बहुत दिनोंका विसर्पिका रोग या दाद। हनुके नीचेवाली लसिका ग्रन्थिका फूलना। खुरण्ड़ा रोग, त्वचामें खुजली (बिना उद्भेदकी खुजली=डलिकस; खुजली और सुरसुरी=ऐम्ब्रिड-सल्फ। ऐसी खुजलाहट

आंख।—चेहरेमें लालीके साथ कांपती हुई दृष्टि; ऐसा मालूम हो मानो पीली आभा लिये गोले आगे उड़ते हुए मालूम होते हैं। अक्षिकोटरके भीतरी प्रदेशमें दर्द;—दाहिनी आँखमें अधिक मालूम होना। आँख लाल और सारी चीजें लाल दिखाई देती है। ललाटमें दर्दकी वजहसे आँख अधमुंदी रखना पड़ता है।

कान।—दोनों हनुको हिलानेसे कानमें चिलक मारने जैसा दर्द हो उठता है।

नाक।—सवेरे जागनेपर और शय्या त्याग करनेके पहले रक्तस्राव होता है; नाक लाल हो जाती है; बाहरी हवामें बढ़ना।

पाकाशय।—मुंहमें तीता स्वाद। मांससे अरुचि (ग्रैफा; सल्फ) और रस-भरी चीजें खानेकी इच्छा (ऐसिड-फास); भोजनके बाद पेट फूलना; मलनालीमें टपक जैसा दर्द और खट्टी चीज सहन नहीं होती। सरमें दर्दके साथ मिचली; पैर फिसल जानेपर पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्द मालूम होना। भोजनके बाद बाध्य होकर पाखाना जाना पड़ता है।

अंत्राशय और मलनाली।—नाभी प्रदेशमें टपकका दर्द। विटपास्थि (गुह्यद्वारसे जननेन्द्रियकी ओर) और मेरुदण्डके निम्नतम प्रदेशके बीचवाले स्थानमें मालूम होता है, मानो खूटीं अड़ी हुई है,—मलवेग, इसके साथही यकृत प्रदेशमें भरापन मालूम होना और दाहिने पँजरेके निचले प्रदेशमें दर्द। बहुत अधिक वायु-सञ्चय और नीचेकी ओर दबावके कारण मलान्त्रमें बहुत तकलीफ मालूम होना। शूलका दर्द,—दाहिने उदरके निम्न प्रदेशमें कतरने और दाँतसे काटनेकी तरह दर्द; पाखाना होनेके पहले और पाखाना होते समय मोच खानेकी तरह दर्द; पाखाना हो जाने बाद सभी तकलीफें घट जाती हैं, केवल पसीना और कमजोरी बाकी रह जाती है, आक्रमणके पहलेके कई दिन, दुर्दमनीय कब्जियत रहती है।

उदरामय।—भोजन करना समाप्त करते ही तेजीसे पाखाना जाना पड़ता है (क्रोटन); मलद्वार आवरक पेशी (Spincter Ani) अत्यन्त शिथिल हो जाती है; सवेरे शय्यासे उठते ही पाखानेकी ओर दौड़ना पड़ता है (सोरा-इनम, रियुमेक्स, सलफर)। वायु त्यागनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो पाखाना निकल जायगा। (ओलियेण्डर; ऐसिड-म्यू, नेट्रम-म्यू,)। छूटी हुई हवामें बहुत बदबू और जलन रहती है, तथा बहुत ज्यादा परिमाणमें

वायु छूटती है। मल थोड़ा निकलता है, पर उसके साथ ज्यादा परिमाणमें और आवाजके साथ हवा निकलती है (ऐगारि)। गाढ़ा मल और चाशनीकी तरह "ढेला ढेला" आँव निकला करती है। उदरामय रोगाधिकारमें भूख ज्यादा लगना (बैराइटा-कार्ब ; कैल्के, कैल्कि-फास, आयोड, मार्क, सोराइन, सल्फ ; भूख खत्म न होनेपर बहुत सुस्ती = फास)। पाखाना होनेके पहले आंतोंका गड़-गड़ाना, एकाएक पाखानेका वेग होना , मलान्त्रमें भार मालूम होना ; पाखाना फिरनेके समय काँखना और बहुत ज्यादा आवाजके साथ वायु निकलना, पाखाना हो जाने बाद सुस्ती। अर्श—नीला रङ्ग, अंगूरके गुच्छेकी तरह (ऐसिड-म्यू); मलनालीमें बराबर दबाव मालूम होना ; बलि ; रक्तस्रावी ; दर्द-भरी, उसका छुआ न जाना, उपशम—ठण्डे पानी आदिका प्रयोग करनेपर घटना (गर्म प्रयोगसे घटना = ऐसिड-म्यू); बहुत खुजली ; मलद्वारमें खुजली और जलनकी वजहसे नींद न आना (इग्निशिया)।

श्वासयन्त्र।—शीतके समय खांसी और श्वासनालीमें खुजली ; यकृत-प्रदेशसे वक्षःस्थलतक सुई बेधनेकी तरह दर्द। इसके साथ ही श्वास-कष्टता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मलनालीमें बहुत दबाव मालूम होना,—खड़े होने और रजः निकलनेके समय बढ़ना। जरायुमें भार मालूम होना (चायना ; नक्स, सिपिया)। पैरतक फैलनेवाला और पश्चात कटि-देश तथा नितम्बमें दर्द—प्रसवके दर्दकी तरह दर्द। स्त्रियोंका वयः सन्धिके समयका (Climacteric) रक्तस्राव। असमयमें आर्त्तव स्राव और भरपूर स्राव न होगा। खून मिला स्लेष्मा भरा प्रदर स्राव।

पीठ।—कटिवात,—सरमें दर्द और कटिवात पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है ; कभी कभी बवासीरके साथ पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। त्रिकास्थि देशसे लेकर श्रोणि-देश या नितम्ब (अर्थात पश्चात कटि-प्रदेश) तक सुई बेधनेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग।—सब ही प्रत्यंग मानो सुन्न जैसे। सन्धि देशमें अकड़नकी तरह दर्द। चलनेके समय तलवेमें दर्द होता है।

त्वचा।—प्रत्येक शीत ऋतुमें खुजली खसड़ा पैदा होना। (सोराइन)।

वृद्धि।—सवेरे ; निकम्मेकी तरह दिन बितानेपर ; गर्म सूखी हवामें ; पीने या भोजनके बाद ; खड़े होनेपर और टहलनेपर बढ़ना।

घटना।—ठण्डे पानीके प्रयोगसे ; ठण्डी वायु और मल निकलनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—सलफर (अन्त्राशयमें रक्तकी अधिकता और यकृत स्थानमें ज्यादा रक्त सञ्चय होना ; रुके हुए उद्भेदके फिरसे निकल आनेके सम्बन्धमें सहायता पहुँचाता है) ; एमोन-म्यू, गैम्बोजिया, नक्स, पोडो, कैलि-बाई, लाइको ।

दोषघ्न ।—सलफर ; मस्टर्ड, कैम्फर द्वारा प्रतिषेधित होता है ।

शक्ति ।—१ म से २०० शततमिक तक । ६ ठी, ३०, २०० वगैरह क्रम अधिक व्यवहार होते हैं ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० से ४० दिन ।

ऐलस्टोनिया स्कोलरिस ।

(ALSTONIA SCHOLARIS)

दूसरा नाम ।—सप्तपर्णी ; इस पेड़की छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ऐलस्टोनिया कानिष्ट्रक्टा न्यू साउथवेल्स और क्वीन्सलैण्डमें पाया जाता है । इसकी छालमें रेक्टिफायड स्पिरिट मिलाकर मदर टिञ्चर बनाया जाता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—कमजोरी ; अतिसार ; रक्तामाशय ; ज्वर ; बहुत दूध स्तनसे पिलानेका दुष्परिणाम ; श्वेत-प्रदर ; हृत्स्पन्दन ; गर्भावस्थामें वमन ; जरायुकी दुर्बलता ।

उपयोगिता और आभास ।—इससे दुर्बलता ; सुस्ती लानेवाला बोखार, कितनी ही बार उदरामय और अधिक मात्रा सेवन करानेपर कम्पन, पसीना, बार बार पाखाना, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें मरोड़ और सरमें चक्कर, प्रभृति लक्षण पैदा हो जाते हैं । व्यवहारमें—जाड़ा बोखार, शोत्त- ज्वर और मलेरियासे पैदा हुआ (सड़ी गन्ध लग जानेकी वजहसे) उदरामय वगैरहमें इससे बहुत लाभ होता देखा गया है—(फैरिङ्गटन) ; पाकाशयमें खालीपन मालूम होना और कमजोरी इसका निर्णायक लक्षण है । पाचन शक्तिका घट जाना और दुर्बलता ; जीभ साधारणतः मैली और सफेद लेप चढ़ी,—खासकर जड़में ; मिचली—सबेरे भोजनके पहले ज्यादा मालूम होती है ; असमयमें पाकाशय खाली मालूम

होना ; तलपेटमें फटने या दबावकी तरह दर्द ;—मानों समस्त यंत्र योनिकी राहसे बाहर निकल जायँगे (ऐलेट्रिस-फार, लिलि-टाइ, हेलोन); मुख-मण्डल मलिन, मानो खून न हो—थोड़ी-सी बातमें ही उत्तेजित हो पड़ता है (वेरे); खाये हुए पदार्थ बहुत देरतक अजीर्ण अवस्थामें पाकस्थली में पड़े रहते हैं। खाना समाप्त करते ही अजीर्ण पदार्थ मिला पाखाना होना ; खाना समाप्त होते न होते ही पाखाना जाना पड़ता है (ऐलो); प्रदर और जरायु आदिका नीचेकी ओर आकर्षण (Bearing down—सियेनोथस)। चलनेसे बढ़ना। दाहिने डिम्बाधार प्रदेशमें सूजन मालूम होना (ऐपिस, फेरं-आयोड)। पाकाशयके बाईं ओरसे पीठ तक तेज बेधनेवाला दर्द (सियेनोथस)। एकाएक सो जाता है और जागनेके पहले कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाया करती है। सब शिराओंमें टपक मालूम होती है और जीभ सूख-सी मालूम होती है (बलक्षय करनेवाले ज्वर आदिके बाद इसको बलकारक रूपमें व्यवहार करते हैं)।

अंत्राशय।—प्रबल बिरेचन (बहुत पतले दस्त आना) और मलाशयमें ऐंठन। तलपेटमें खुजली और उत्ताप मालूम होना। खीमामें रहनेके समय अर्थात् विदेशमें तम्बूमें रहनेके कारण पतले दस्त आना और खूनी आँव, खून भरा मल ; खराब पानी आदि पीने या सड़ी गन्धसे (चायना) भरा बिना दर्दका पानीकी तरह मल निकलना (ऐसिड-फास)।

सम्बन्ध।-तुलनीय।—ऐलिट्रिस, लिलियम, हेलोनियस, सिङ्कन, सियेनोथस, चायना।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ या ६ ठीं शक्ति तक।

ऐल्यूमेन।

(ALUMEM)

दूसरा नाम।—फिटकिरी ; पोटास ; अलम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और २० भाग चुआया हुआ पानी मिलाकर १ ला क्रम ; इसके बाद ... २ उच्च क्रम तैयार होते हैं।

लक्षण अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—शराब पीनेका दुष्परिणाम ; गुह्य-द्वारकी बीमारियाँ ; सर्दी ; श्वासनाली प्रदाह ; कैन्सर या कर्कटका जखम ; शूल वेदना ; कोष्ठबद्धता ; खाँसी ; बहुमूत्र ; अतिसार ; आमाशय ; एकजिमा या शूल ; श्वेत-प्रदर ; पैरका पक्षाघात ; अन्ननालीका सङ्कोचन ; पालिपस ; योनिद्वारमें खुजली ; शीताद ; चर्म रोग ; तिर्यक-दृष्टि (डेरा देखना) ; दाँतकी बीमारीमें नश्तर लगवाना ; सान्निपातिक ज्वरमें रक्तस्राव ; कितनी ही तरहके जखम ; जरायुमें विकार ; अपत्य-पथका स्नायुशूल इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—रोग आरोग्य-जनित अभिज्ञतासे मालूम होता है, कि अंत्राशयपर ऐल्यूमेनका विशेष अधिकार है ; क्या मलका कड़ापन, और क्या सान्निपातिक ज्वरमें आँतोंसे रक्तस्राव—दोनों ही स्थानों पर इससे विशेष लाभ हुआ करता है। शरीरमें सब जगह पक्षाघातसे पैदा हुई कमजोरीकी तरह पेशियोंकी दुर्बलता—अन्तवाली अवस्थामें यह बहुत ही लाभदायक है। इसके द्वारा शरीरमें एक तरहकी विकृत-तन्तुजनन शक्तिका आविर्भाव होता है और इसी वजहसे पेशियोंमें कड़ापन पैदा हो जाना भी इसकी एक क्रियाका परिणाम ही है। आँखोंके स्वच्छ आवरक (Cornea) का गदलापन इससे अच्छा हो जाता है ; जिन वृद्धोंकी वायुनालीमें प्रायः श्लेष्मा पैदा हो जाया करता है और सञ्चित रहता है, उनके लिये ऐल्यूमेन विशेष उपयोगी है। बहुत ही अधिक मलका कड़ापन,—मल पत्थरकी तरह कड़ा ; दो तीन दिनोंतक पाखाना बिलकुल ही नहीं लगा करता (ओपि)।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—मस्तकमें जलन जैसी यन्त्रणा, मानो खोपड़ीमें किसी भारी चीजका एक टुकड़ा दबाया हुआ है (कैक्टस, कैनाबिस-सैट, सलफर) ; हाथसे दबानेपर आराम मालूम होता है [ऐमोन-कार्ब; एपिस, आर्जेण्ट-नाई ; एलाफि, बेल, कौक्के (ठण्डे हाथसे) ; ऐक्टिया, सिङ्कोना, मिनियेन]। उदरके ऊपरी भागमें कमजोरी मालूम होनेके साथ सरमें चक्कर आना, चित्त होकर सोनेपर बढ़ना (मार्क)।

चक्षु ।—डेरा देखना (Squint डेरा)-दाहिनी आँखकी पुतली नाक की ओर लीन हो जाती है अर्थात भीतरी तिर्यक दृष्टि ; दाहिनी या बाईं कोई भी आँख—एल्यूमिना ; (जेल्सि)

मुखमण्डल।—मुँहका जखम (Aphthae),-वृद्ध मनुष्योंके नकली दाँतसे उत्पन्न मुँहका जखम। दाँत उखड़वाने बाद दाँतसे बहुत खून जाना।

गलेके भीतर।—तालुमूलमें सर्दी पैदा होना; जिह्वा-ग्रन्थि (Tonsils) फूले और कड़े। गलेके जखममें अलिजिह्वामें शिथिलता। थाइरमें स्वरभङ्ग या स्वरलोप (Aphonia) [ऋतुके समय=जैलस; उत्ताप लगनेसे हो=ऐण्टि-क्रूड; स्वर पैदा करनेवाले तन्तुकी निष्क्रियताकी वजहसे=ऐसिड-भाकजैलिक]।

गुह्यद्वार या मलनाली और मल।—विदारित मलद्वार (Anal Fissure) बहुत नरम पाखाना होनेपर भी छुरीसे काटनेकी तरह यन्त्रणा (ऐसिड-नाइ; नेट्र-कार्ब; रैटान); निम्नगामी स्थूलांत्र (बड़ी आंत) [Descending colon) का दोहरा जानेवाले (Sigmoid Flexure) प्रदेशमें या मलांत्रमें कर्कटका अर्बुद (Cancerous Tumour); भयङ्कर और असह्य कष्ट [साइजि]। पाखानेमें बहुत तकलीफ,—खून मिला मल। अर्श,—बवासीरमें बहुत दर्द और उससे खूनका स्राव [हैमा; सलफर, इस्क्यूलस-हिप, ऐलो, कैप्सि, कोलिन्सो, हाइपेरिकम]; शराब आदि पीनेके बाद रक्तस्राव। कब्जियत —गोलीकी तरह बहुतसे काले गुठले निकल जानेपर भी मालूम होता है, कि मलांत्र मलसे भरा हुआ है। मलद्वारमें खुजली। बवासीरका मसा पीला [नीला—कार्बोवेज]। आंत्रिक [Enteric] ज्वराधिकारमें गाढ़ा, बड़ा, जमा हुआ खूनका टुकड़ा मलके रूपमें निकलता है। [ऐसिड-नाइ]।

श्वास-यन्त्र।—रक्तकास या कफके साथ फेफड़ेसे रक्तस्राव [Pulmonary hoemorrhage=ऐकालिफा, मिलिफो, इपिकाक]; फेफड़े आदिकी बहुत कमजोरी; श्लेष्मा निकालनेमें बहुत तकलीफ, वृद्ध मनुष्योंको सवेरे अपर्याप्त परिमाणमें लेईकी तरह श्लेष्मा निकलता है। दमा; खांसी।

हृत्पिण्ड।—हृत्स्पन्दन,—दाहिनी-करवट दबाकर सोनेपर। [बाईं करवट सोनेपर—ब्रोम, नेट्र-म्यू, पलस]।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु ग्रीवा [Cervix uteri] और अन्य ग्रन्थिमें कड़ापन पैदा हो जानेकी सम्भावना [कार्बो-ऐन, कोनायम] योनिगत [Vaginal] पुराना प्रदर,—पीले रङ्गका स्राव [एल्यूमिना); योनि-झिल्लीमें अगह जगहपर सुंहमें जखमकी तरह जखम [कोलोफाइ]। आर्त्तव,—पानी जैसा पतला स्राव।

पुं-जननेन्द्रिय ।—पुराना प्रमेह या लाला मेह ; पीली आभा लिये पीव-स्राव ; कभी कभी मूत्रनालीसे जमा हुआ पीवका टुकड़ा निकलता है ।

त्वचा ।—कड़ी, त्वचापर जखम । फूली और कड़ी ; लसिका-ग्रन्थियाँ । उपत्वकका कर्कट रोग [Epithelioma थूजा, हाइड्रेस्ट, कैली, लाइको, आर्स-आयोड] । शिराका फैलना [Varicosis] और उससे रक्तस्राव [हैमा] ।

प्रत्यङ्ग ।—हाथ पैरकी पेशियोंकी दुर्बलता । प्रत्यङ्गोंमें कसकर जकड़ जानेका भाव ।

ज्वर ।—नाड़ी मृदु ; प्रबल प्रलाप इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐलूमिना ; ऐलो [सरलांत] ; कैप्स ; कैलि-बाई, मार्क [जरायुका अपने स्थानसे हटना] ; मार्क-कोर, ऐसिड-नाइट, म्यूरिक, नक्स, ओपियम, प्लैटि, प्लम्बम, रैटानिया, सलफर ; जिङ्कम ।

दोषघ्न ।—कैमो [पेटमें मरोड़] ; नक्स ; इपिकाक [वमन आदि] ; सलफर ।

शक्ति ।—पहली शततमिकसे हजार शक्ति तक । २०० शक्तिसे उच्चतम शक्तितकके प्रयोगसे आश्चर्यजनक लाभ होता है ।

ऐल्यूमिना ।

(ALUMINA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण और इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—गुह्य-द्वारकी बीमारी ; फोड़ा ; बागी ; सर्दी ; मृत्पाण्डु ; कोष्ठ-बद्धता ; स्तन पीनेवाले बच्चोंकी कब्जियत ; खाँसी ; रक्तामाशय ; अजीर्ण ; वकौत ; आँखकी बीमारियाँ ; मलद्वारका फटना ; भगन्दर ; सरका दर्द ; आँत उतरना ; श्वेत-प्रदर ; पक्षाघात ; नखकी बीमारी ; कानसे स्राव ; नकसीर ; गर्भिणीकी कब्जियत ; दाँतका दर्द ; प्रोस्टेट ग्रन्थिसे रस-स्राव ; गण्डमाला ; डरा देखना ; स्वादमें गड़बड़ी ; कितनी तरहके चर्म-रोग ; गलक्षत (गलेका जखम) ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना । मस्तिष्कका सान्निपात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास।—रेचनमें क्षीण; मांस सिकुड़ा हुआ और सूखी देहवाले वृद्ध मनुष्य या सूत्याण्ड, अथवा हरित्पीड़ा (Chlorosis) रोग ग्रस्त बड़ी उमरकी बालिका और नकली दूधसे जिनका प्रतिपालन हुआ है तथा लसिका-ग्रन्थिकी बीमारीकी धातुवाले बच्चे ऐलूमिनाके उत्कृष्ट और उपयोगी चेत्र हैं। इन मनुष्योंको प्रायः हमेशा ही कब्जियत बनी रहती है। मल कोमल रहनेपर भी बिना कांखे पाखाना नहीं होता। इसका कारण यही है, कि (ऐलूमिनाके उपयोगी) रोगीकी आँतें बिलकुल ही निष्क्रिय हो जाती हैं। बच्चोंको शुष्क नासा रोगके साथ पुराना नकसीर हुआ करता है और उनकी नाकसे सॉंय सॉंय शब्द निकला करता है। ये बच्चे दांत निकलनेके समय डेरा देखा करते हैं, जवान मनुष्य अवसादवायुग्रस्त (Hypochondriac) रहते हैं। शीत ऋतुमें बढ़ना, खुजलानेवाले, सूखे उद्भेदोंसे उनका शरीर भरा रहता है (पेट्रो)। शय्याके उत्तापमें बेहद खुजलाहट प्रारम्भ हो जाती है। उनके प्रत्यंग जड़ भावसे परिपूर्ण रहते हैं। उनमें भार मालूम होता है और सुन्नकी तरह रहता है।

लक्षणावली।

मन।—रोगी समझता है, कि बोलने या देखनेके पहले वह किसी दूसरे मनुष्यमें परिवर्त्तित हो जायगा। उसे थोड़ी भी बाधा ऐसी मालूम होती है, कि उसे पार न कर सकेगा। आत्महत्या करनेकी इच्छा होती है पर मरनेसे भय मालूम होता है। हमेशा दुःखित रहता है; समझता है, कि वह पागल हो जायगा। अपने आरोग्यके सम्बन्धमें निराश रहता है; समय बहुत धीरे धीरे बीतता है (कैनाबि-इण्डि, आर्जेण्ट-नाई)। मनकी गति परिवर्त्तनशील जितना ही समय बीतता है, यह अवस्था भी उतनी ही घटती जाती है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ—मिचली ऐसा मालूम होता है मानो सभी चीजें उनके साथ घूम रही हैं, (ऐलो); पहली बार भोजनके बाद, आँख खोलनेपर और झुकानेपर बढ़ना (बेल, नक्स, पल्स, थ्राई, लाइको, पेट्रोल); खानेके बाद या आँख मलनेपर घटना। कपालमें टपकाकी तरह दर्द, सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना। सरमें दर्द—स्थिर होकर सोनेपर घटना। कनपटीमें या शङ्ख देशमें (Temples) रस बहानेवाले फटे घाव,—खुजलाने बाद खून निकलने लगता है;—सन्ध्याके समय, अमावास्या और पूर्णिमाके दिवस

बढ़ जाता है। केश सूखे और उड़ जाते हैं; मूर्द्धा या खोपड़ीमें खुजलानेवाले उद्भेद।

आंख।—आँखें बन्दकर और अन्धकारमें एक कदम भी नहीं चल सकता। आखें बन्दकर चलनेकी चेष्टा करनेपर डगमगाया करता है और गिर जाता है (आर्जेण्ट-नाई; जेल्स) दूसरी आँखकी भीतरी तिर्यक् दृष्टि (जेल्स, दाहिनी आंखकी=ऐल्यूमेन); आँखकी भीतरी सरल (Rectus) पेशीकी निष्क्रियता। दोनों आंखें प्रदाहित—नाकके ओरके कोनेमें खुजली, रातमें पलकें सट जाती हैं, दिनमें आँसू निकलता है; दीप-शिखा (दीयेकी लौ) के चारों ओर पीली आभा लिये मण्डल दिखाई देता है, आँसू गर्म और जखम करनेवाला (कषाय-रस)। चीजें पीली दिखाई देती हैं। पलकोंका आंशिक पक्षाघात। उनका कड़ापन, उनमें जलन और करकराहट।

कान।—कानमें शब्द कर्णनाद (Tinitis) कर्णपथनाली (Eustachian tube) में ऐसा मालूम होता है, मानो काँटो ठोकी हुई है। (ऐनाक, मैङ्गे)। दोनों जबड़ेको हिलानेके समय कानके छेदमें चिलक मारने जैसा दर्द (पैलो, मैंगो, मस्कस, सिड्लि)

नाक।—सर्दी, बार बार छींकके साथ ही लगातार सर्दी या श्लेष्माका स्राव, एक नाक खुली, दूसरी बन्द, इसके साथ ही आँसू बहना। नाक लाल (आरम-म्यू, वेल, मैंग-म्यू, मार्क, फास, रेनान) नाकका अगला भाग फटफटा। पुराना पीनस (Chronic Catarrh); पपड़ी जमना; छेदमें दर्द; गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलना। इसके अलावा कभी कभी सूखी, कड़ी, पीली नीली पपड़ी निकलती है (ऐसिड-क्रूड, कैल्के, केलि-कार्ब, कैलि-बाई, लेके, लाइको, मैंग-म्यू, स्टैफ, थूजा)। नाक फूली (ब्राइ, सिपि, सल्फ, जिङ्कम) लाल रङ्ग और स्पर्शका सहन न होना, सन्ध्याके समय बढ़ना। नाककी जड़में भयानक दर्द।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—त्वचाका संकुचित मालूम होना, मानो चेहरेपरका रस सूख गया है। चेहरेपर मुंहासे या लाल फोड़े। निचले हनुका फड़कना या सङ्कोचन; इसके साथ ही अन्त्राशयसे रक्तस्राव। बोलते बोलते बहुत थक जाता है और सुस्त हो पड़ता है (स्टैन)। बोलने और गानेसे खांसी आ जाती है। दांतका दर्द—दांत उठे और लम्बे मालूम होते हैं—चबानेके समय दर्द बढ़ जाता है; हवा खानेपर और सन्ध्याके समय भी

ढ़ आता है। दांतोंपर मैल चढ़ी रहती है या दाग पड़ा रहता है; मसूढ़ेमें दर्द और खून बहता है।

कण्ठनाली।—तालुमूलसे लेकर पाकाशयतक समूची अन्ननाली मानो संकुचित, खानेकी चीज उसमें प्रवेश नहीं कर पाती। मालूम होता है, कि कण्ठनालीमें कांटी ठोंकी हुई है,— इसके साथ ही दर्द और सूखापन। देखनेमें चिकनी और साफ। नाकके पिछले छेद (Posterior Nares) से लसदार श्लेष्मा कण्ठनालीमें आता है। वक्ताओंके गलेका जखम (Speakers या Clergymans Sore-throat) रोग। खासकर क्षीण मनुष्योंका (आर्निका) जिह्वामूलके बगलवाले गह्वरका जखम (Ulcers in Fauces),—छेदभरा बदबूदार, पीला, भूरा (Yellowish Brown) पीव निकलनेवाला जखम; जिह्वामूल पार्श्व से लेकर दाहिनी कनपटी और माथेतक फाड़नेवाला दर्द।

पाकाशय।—अद्भुत रुचि,—श्वेतसार (माड़ या फेन), खड़िया, साफ सुथड़ा कपड़ेका टुकड़ा, कोयला, बड़ी इलायची, खटाई, काफी या चायका चूर, सूखा चावल वगैरह न पचनेवाली चीजें खानेकी इच्छा (साइक्य, सोराइन)। आलू खानेपर रोग आदिका बढ़ना। श्लैष्मिक झिल्लीमें उद्दीपना पैदा करनेवाले पदार्थ, जैसे, नमक, सुरा, सिर्का (Vineger), काली मिर्च,—खानेके साथ ही खांसी आने लगती है। बहुत देरतक स्थायी डकार,—शामके समय बढ़ना। मांस खानेसे अरुचि (ऐलो, ग्रैफ, पल्स आर्निका)। छोटे ग्रासके सिवा और कुछ निगल नहीं सकता। कलेजेमें जलन (थोड़ी होनेपर=आर्जेण्ट-नाइ; सफेद लेप चढ़ी जीभ, लाल पेशाब, पेट फूलना और मलमें कड़ापनके साथ=लाइको, उदरामय और मोटे लेपसे ढकी जीभ=पल्स; आक्रमणके समय=कैप; दांत खट्टे हो जानेपर=ऐसिड-सल्फ; खट्टी कैके साथ=रोबीनिया; खाई हुई चीज खट्टी होकर कै हो जानेपर= सलफर)। अन्ननालीमें संकोचन मालूम होना (आर्स, ब्राई, नक्स, फास, रास, ऐरिट-टा)।

अंत्राशय।—पेट फूलनेके साथ शूलका दर्द,—चित्रकारोंका आंतोंके शूलकी तरह दर्द। सन्ध्याके समय दोनों बन्धन या पुट्ठेकी जगहसे लेकर लिङ्गकी ओर दबाव मालूम होना। तीसरे पहर टहलनेके समय पेट मानो झूल पड़ता है। बाईं ओरके अंत्राशयकी बीमारी। मलमें कड़ापन,—आंतोंमें ज्यादा परिमाणमें जबतक मल इकट्ठा नहीं हो जाता, तबतक पाखानेका वेग

या इच्छा बिलकुल ही नहीं होती (मिलि-लोट); बहुत वेग देना अर्थात काँखना पड़ता है, यहाँतक कि दीवार पकड़कर जोर देना पड़ता है; मल कड़ा, गुठला, भेड़के मलकी तरह और श्लेष्मासे लिपटा हुआ (ग्रैफ); या कोमल, लसदार, कीचकी तरह मलद्वारमें सट जाता है (प्लैटि)। मलनाली (Rectum) की निष्क्रियता (Inactivity)-पतला मल रहनेपर भी भयानक वेग दिये बिना नहीं निकलता (ऐनाका, हिपर, प्लैटि, सिलि, वेरैट)। मलकाठिन्य,—स्तनसे दूध पीनेवाले बच्चोंको नकली दूध पिलानेकी वजहसे अथवा जिनकी माताके स्तनमें दूध न होनेके कारण बोतलसे दूध पिलाया जाता है; वृद्ध मनुष्योंका (लाइको, ओपि); गर्भावस्थामें (कोलिन्सो),—मलांत्रकी निष्क्रियताकी वजहसे (सिपिया) कब्जियत। रोगिनीको पेशाब करते समय पतला पाखाना निकल जाता है। पाखाना फिरनेके समय वेग न देनेपर पेशाब नहीं होता। आंत्रिक (Enteric) ज्वरमें अन्त्राशयसे थक्का थक्का रक्तस्राव होता है—वह कितनी ही बार देखनेमें यकृतके टुकड़ेकी तरह मालूम होता है। (ऐल्यूमेन)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—रमणेच्छाकी अधिकता। पाखानेमें वेग देनेपर अनजानमें वीर्य निकल जाता है या मूत्राधार मुखशायी ग्रन्थिके रसका स्राव होता है (Discharge of Prostatic fluid=इक्यूलस-हिप, ऐनाक, कोनायम, कैल्के, हिपर, नैट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपिया, स्टैफि, थूजा; पेशाबके समय=हिपर-सलफर)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रदर,—कसैला और बहुत ज्यादा—पैरसे लेकर एँड़ीतक चू पड़ता है (सिफिलाइन); दिनमें अधिक स्राव; ठण्डे पानीसे नहानेपर घटता है। आर्त्तव,—एकदम असमयमें, थोड़ी देरतक ठहरनेवाला और थोड़ा स्राव; मैला रक्त; सरमें दर्दके बाद स्राव होने लगता है। ऋतुस्रावके बाद रोगिनी शारीरिक और मानसिक सुस्त हो पड़ती है, यहांतक कि उसे बोलनेमें भी ताकत लगानी पड़ती है (कार्बो-ऐन; काकु); बोलनेपर श्रान्त हो पड़ती है; इतनी सुस्ती और थकन मालूम होती है कि खड़ी नहीं रह सकती है और बैठ जाती है।

श्वास-यंत्र ।—स्वर भङ्ग; स्वर लोप; तालुमूलमें खुजली, सांय सांय घड़ घड़ शब्द। छातीमें अत्यधिक कसावट मालूम होना (कैक्टस); चटनी या खटाई खानेसे खांसी आती है। बोलनेपर छातीका दर्द बढ़ जाता है।

खांसी ;—बार बार झोंकके साथ सूखी और यन्त्रणादायक खांसी ; ऐसा मालूम होता है मानो स्वरनालीके मुँहपर मांसका एक टुकड़ा झूल रहा है (लेकि, कास) ; उपजिह्वा बढ़ जानेकी वजहसे खांसी, बोलने या गानेपर बढ़नी ; दाहिने शंखदेश या दाहिनी कनपटी [Temple] और मूर्द्धा प्रदेश (खोपड़ी) में दर्द मालूम होना ; सवेरे जागनेपर बहुत देर तक खांसना पड़ता है और अन्तमें बड़े कष्टसे एक टुकड़ा सा सफेद आभा लिये श्लेष्मा निकलता है ; खाँसनेके समय हृष्ट और पुष्ट दिखाई देनेवाले मनुष्योंको अनजानमें पेशाब हो जाना (कास्टि, स्किला, वेरेट्रम)।

हृत्पिण्ड ।—भयानक हृद्स्पन्दन ; वक्षस्थलके बीचमें दबावकी तरह दर्द और हृद्स्पन्दन पर्यायक्रमसे प्रकट होता है—खासकर मध्याह्न भोजनके बाद ; प्रति दिवस टहलनेके समय।

पीठ और अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—मेरुमज्जाके क्षयकी वजहसे गति शक्ति का न रहना। (Locomotor Ataxia) निम्न प्रत्यङ्गोंमें बहुत भार मालूम होना,—बड़े कष्टसे पैर खींचकर चल सकता है, चलते चलते डगमगा जाता है और श्रमके समय वाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है। दिनमें और आँख खोले बिना एक कदम भी नहीं चल सकता। चलनेके समय गुल्फदेश सुन्न मालूम होता है। बहुत क्लान्ति और थकान मालूम होती है, बैठकर विश्राम करना पड़ता है ; पीठमें ऐसा दर्द, मानो निम्न कशेरुका (Vertebrae) के भीतरसे एक जलती हुई लोहेकी सलाई बेधी जा रही है। नखके नीचे चबानेकी तरह दर्द। नख सब टूटनेवाले [Brittle]।

त्वचा ।—सूखी और फटी फटी। शय्याके उत्तापसे असह्य खुजली ; खुजलाते खुजलाते खून निकाल देता है और इसके बाद जलन होती है।

निद्रा ।—सवेरे औंघाई ; निद्रित अवस्थामें छटपटाता है और असम्बद्ध सपने देखता है।

वृद्धि ।—ठण्डी हवामें ; जाड़ेके दिनोंमें ; बैठनेके समय ; आलू खानेके कारण ; एक दिनका नागा देकर ; अमावस्या और पूर्णिमाके समय घटना। वसन्त और गर्मीके दिनोंकी हवामें ; गर्म पानी आदि पीनेसे ; भोजनके बाद [ब्रायोनिया] ; तर पानीके भाप हवामें बहनेपर [Damp=कार्बो]।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—ब्रायो, कैमो, इपिकाक, ब्रायोनिया—
अनुपूरक—ब्रायो ; लैकेसिस और सलफर वगैरहके बाद इसका प्रयोग होता है।

जिस रोगकी नयी अवस्थामें ब्रायोनियाका प्रयोग होता है, उसी रोगकी पुरानी अवस्थामें ऐल्यूमिनाका प्रयोग किया जाता है ।

सदृश ।—ऐलूमेन, एलुमिनियम ; आर्जेण्ट ; बैराइटा-कार्ब [बूढ़ोंकी बीमारी] ; ब्रायो, कैल्कि, कोनायम, फेरम [हरित रोग] ; फेरम आयोड ; ग्रैफाइट ; इपिक ; कैलि ; लैके ; पल्स ; पिकरिक ऐसिड ; रूटा ; सिपिया ; सार्स ; सल्फ ; जिङ्कम ।

शक्ति ।—६ से २०० तक । इसकी क्रिया धीरे धीरे प्रकट होती है, इसलिये जल्दी जल्दी बदलना न चाहिये ।

क्रियाकी स्थिति ।—४० से ६० दिनोंतक ।

ऐम्ब्रा ग्रिसिया ।

(AMBRA GRISIA)

दूसरा नाम ।—तिमि जातिकी मछलीकी आँतमें मिलनेवाला एक तरहका सुगन्धित द्रव्य ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण अथवा बीस भागका एक भाग विचूर्ण या औषध द्रव्य । इसी हिसाबसे सुरासारमें टिंचर भी बनता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—गुह्यद्वारमें उत्तेजना ; दमा ; बहुत लज्जा युक्त भाव ; मस्तिष्कका कोमल मालूम होना या कोमलता ; हृदपिण्डके रोगकी वजहसे दमा ; आक्षेप ; खाँसी ; बहरापन; दुबलापन ; नाकसे रक्तस्राव ; मुंहासे ; मूर्च्छावायु ; कमला ; आर्त्तवमें विकार ; गाना-बजाना सहन न होना ; कामोन्माद ; योनिद्वारकी खुजलाहट ; सूतिकावस्थामें अकड़न ; जीभके नीचे अर्बुद ; प्लीहा प्रदेशमें दर्द ; पेट फूलना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० एलेनका मत ;—बच्चा और जो थोड़ी उम्रवाली बालिकाएँ उत्तेजना वाली प्रकृतिकी, स्नायु प्रधान और क्षीण होती हैं (ऐम्ब्रा) उनके लिये यह बहुत ही उपयोगी है । गृहस्थीके कारण क्लान्त वृद्ध मनुष्योंके स्नायविक रोगोंमें भी अधिक उपयोगी है । मांसहीन, दुर्बल, दुःखित व्यक्ति, जिन्हें थोड़ी भी सर्दी लगते ही बीमारी पैदा हो जाती है, व्यवसायमें जिन्हें हानि हो गयी है ऐसे मनुष्य भी इसकी उत्कृष्ट क्रिया-भूमि

हैं। आक्षेपिक [Covulsive] खाँसीके साथ मेरुमज्जामें उत्तेजना, इससे आराम हो जाती है। कोई न कोई स्नायविक लक्षण मौजूद रहे बिना ऐम्ब्रा-ग्रीसियाके निर्वाचनसे लाभ नहीं होता। मस्तिष्क और मेरुमज्जागत स्नायु-विधानपर (Corebro-Spinal Nerve-System) क्रियाकी वजहसे इसकी द्वारा आक्षेप विक्षेपके लक्षण पैदा हो जाया करते हैं; चेहरेको पेशीमें फड़कन या सङ्कोचन हुआ करता है। इसके कुछ निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) रोगी बहुत दुखी रहता है। दिन रात सोया करता है [२] नाना प्रकारके विषय-सम्बन्धी गड़बड़ीके कारण उसे नींद नहीं आती, शय्यासे उठकर टहला करता है [३] जीभकी तलीमें अर्बुद [Ranula] हो जाता है और उससे बहुत बदबू आया करती है [४] तलपेटमें बहुत सर्दी मालूम होती है [५] बच्चेकी पाखाना होते समय वह किसीका अपने पास रहना, यहाँतक कि अपनी धायका पास रहना भी सहन नहीं कर सकता। बार बार वृथा ही मलवेग होनेके कारण अत्यन्त चिन्तित रहता है [६] ऋतुस्रावके समय थोड़े भी कारणसे रक्तस्राव होने लगता है [७] प्रदर-स्राव—विशेषकर केवल रातमें होता है, गाढ़ा नीला—सफेद श्लेष्मा मिला (८) प्रचण्ड आक्षेपिक क्रुप खाँसी; इसके साथ ही डकार और स्वरभङ्ग, बोलने या जोरसे पढ़नेपर बढ़ना।

लक्षणावली।

मन।—स्थूल बुद्धि,—दो तीन बार भी एक विषयको पढ़नेपर समझ नहीं सकता। उन्माद हो जानेसे भय [ऐलि-सिपा, ऐल्यूमिना]; ऐसिड-पाइ-रिन, कैल्के, कैनाब-इण्डिका, चेलिडोन, सिमिसि, युपेटोर, हाइड्रोफो, आयोड, कैलि-फ्रास, लैक-कैन, लिल-टाइ, मेन्सि, मिडोराइन, मार्क, नक्स, सिफिलाइन) समस्त रात्रि मानसिक यन्त्रणा और पसीना बहना। भीड़ या समाजमें जानेसे भय; अकेलेमें रहना चाहता है; गाना सुननेपर रुलाई आ जाती है। (ऐकी, सेबार्ड, नेट्र-कार्ब, क्रियोजोट, थूजा); अत्यन्त विषाद=दो तीन दिनोंतक लगातार रोता रहता है। व्यापार वगैरहमें विफल हो जानेकी वजहसे नींद न आना; रातमें खाटसे उतरकर टहला करता है। (ऐक्टिया, सिपि) लज्जाशीलता; जीवनसे उदासीनता)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—रोगीके शरीर हिलाते ही और टहलनेके समय ढुलक पड़ता है,—इसके साथ ही मस्तक और पाकाशयमें कमजोरी। सरमें चक्कर आनेके कारण रोगी बाध्य होकर सोया रहता है।

ललाटमें छेदनेकी तरह दर्द ; बाई कनपटीसे मूर्द्धादेश (खोपड़ी) तक छेद मारनेकी तरह दर्द । मस्तककी ओर दर्द ; केश उड़ जाना ।

कान ।—श्रवण-शक्तिका घटना । कानके छेदमें कुट कुट आवाज (घड़ीमें चाभी देनेकी आवाजकी तरह) ; सङ्गीतकी आवाजसे खाँसी बढ़ जाती है। सङ्गीत सुननेपर माथेकी ओर खून दौड़ जाता है।

नासिका ।—शोणित स्राव (नाकसे खून जाना),—विशेषकर सवेरे (साधारणत:—मिलिफो; चोटकी वजहसे—आर्निका ; माथेमें टपक जैसा दर्दके साथ=बेल ; चमकीला रक्त—सवेरे शय्यासे उठनेपर=ब्राई ; सवेरे जमा हुआ रक्तका टुकड़ा=नक्स ; खींचनेपर रबरकी तरह बढ़ता है=क्रोक ; अकसर नाकसे खून गिरा करता है; रक्तस्राव—प्रवण-धातु=फास ; वृद्ध मनुष्यको बारम्बार स्राव=कार्बो-वेज ; यकृतमें विकारकी वजहसे=चेलिडो) ।

मुख-विवर ।—जीभके नीचेका अर्बुद (Ranula or Frog tongue) थूजा ; कार्बो ; कैल्के ; ठीक बँधे समयपर प्रति वर्ष—हाइड्रोफोब) मुंहमें दुर्गन्ध ; जीभकी तलीमें दर्द होता है । हूप खांसीकी बीमारीमें मुंहमें दुर्गन्ध ।

पाकाशय ।—गर्म पीनेका पदार्थ, खासकर गर्म दूध पीनेपर सब रोग-लक्षणोंका बढ़ना । भोजनके बाद घटना । आक्षेपिक खाँसी (Spasmodic) के साथ बहुत डकार आना । छातीमें जलन (आर्जेण्ट-नाई । ऐल्यूमिना देखो) विफल या तृप्ति न करनेवाली डकार—वायु सेवनके लिये टहलनेके समय ; दूध पीनेकी वजहसे डकार । पाकाशय और अन्त्राशयमें आध्मान,—पाखाना जानेके पहले आँतोंमें गड़गड़ाहट अर्थात् कलकल शब्द होना (ऐलो, नेट्रम-सल्फ, पल्स) ।

तलपेट या अन्त्राशय और मलान्त्र ।—अन्त्राशयमें ठण्डक मालूम होना (कैल्के, आर्ष्ट्र) ; पाखाना फिरनेके समय, दूसरे मनुष्योंका यहाँतक कि धायका उपस्थित रहना भी बच्चा सहन नहीं कर सकता । बार बार पाखाना लगने और न होनेकी वजहसे रोगिनी बहुत चिन्तित हो उठती है ।

श्वासयंत्र ।—हूप खाँसी ;—डकार और टूटी फूटी आवाज, (भग्न-स्वर) इसके साथ ही बार बार अकड़न-भरी और शरीरको हिला देनेवाली खाँसीका आक्रमण ; जोरसे पढ़ने या बात करनेपर ही खाँसीका बढ़ना (ड्रोसेरा,

सब); सन्ध्याके समय श्लेष्मा नहीं निकलता। सवेरे निकलता है (कायोसा)।
हूप खाँसी, पर खाँसी आने बाद साँस लेनेके समय जो "कों" शब्द हुआ करता है उसका न होना ("कों" शब्द मिली—सिना)। थूक या कफ (Expectoration) भूरा-सफेद, कभी कभी पीली आभा लिये होता है और उसका स्वाद नमकीन या खट्टा होता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषकी त्वचामें बहुत ही आराम देनेवाली खुजलाहट। लिङ्गोद्रेकसे आकांक्षा या आनन्द नहीं मिलता। रातमें अनजानमें या स्वप्नमें वीर्यपात हो जाना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—दो ऋतुओंके बीचके समयमें सामान्य कारण होनेपर भी रक्तस्राव होने लगना,—थोड़ा ज्यादा घूमने-फिरने और कड़ा पाखाना होनेपर भी रक्त दिखाई देता है इत्यादि। प्रदर—गाढ़ा, नीला ; सफेद श्लेष्माकी तरह पदार्थका स्राव, खासकर रातके समय अधिक (कास्टि०, मार्क०, ऐसिड-नाई०); प्रत्येक बार स्रावके पहले योनि-देशमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। सोनेपर जरायुके लक्षण सब बढ़ जाते हैं।

हृत्पिण्ड।—भयानक हृत्कम्पन,—पीसनेकी तरह दर्द मानो वक्षके भीतर एक ढेला या कोई जड़ पदार्थ रुका हुआ है; मानो वक्षका भीतरी भाग भरा हुआ है—वायु सेवनके लिये टहलनेके समय वह बढ़ जाता है—उसके साथ चेहरा मलिन रहनेका लक्षण भी इसके साथ मिला रहता है।

प्रत्यङ्ग।—विश्राम और रातके समय बाहु मानो "सो जाते हैं" अर्थात सुन्न हो जाते हैं या उनमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। मालूम होता है, मानो दोनो पैर सो गये हैं। अर्थात् पैरमें झुनझुनी होती है। हाथ बहुत देरतक ठण्डा रहता है। प्रायः प्रत्येक रातमें जानु देश (घुटना) और जंघाकी पोटलीकी पेशियोंमें (Calves) ऐंठन हो जाती है या वह जकड़ जाता है (नक्स, वूफ्रम, कैम्फोरा) स्नायविक बीमारीमें पेशीमय प्रदेशोंका फैलना और सिकुड़ना।

त्वचा।—लिङ्ग-प्रदेशमें खुजली और दर्द। त्वचामें स्पर्श-ज्ञानका न रहना। जलन करनेवाला दादकी तरह उद्भेद (Herpes)।

ज्वराधिकार।—दोपहरके पहले आलस्य और औंघाईके साथ शीत या कम्प; भोजनके बाद घटना। हर पन्द्रह मिनिटका अन्तर देकर उत्ताप पैदा

होना,—संध्याके समय बहुत अधिक । रातमें, खासकर आधी रातके समय बहुत पसीना । रोगवाले पार्श्वमें अधिक पसीना होना ।

निद्रा ।—विषय-सम्बन्धी दुर्भावनाकी वजहसे नींद न आना ; खाटसे उठकर घूमना पड़ता है । शरीर बरफकी तरह ठण्डा और निद्रित अवस्थामें प्रत्यङ्गोंका सिकुड़ना (निद्रावस्थामें फड़कना बन्द होता है=ऐगारि) ।

वृद्धि ।—गर्म चीजें पीने, गर्म घर, सङ्गीत, सोने, जोरसे पढ़ने या बात चीतसे, बहुत लोगोंकी भीड़भाड़ और टहलना वगैरह कारणोंसे बढ़ना ।

घटना ।—भोजनके बाद ; ठण्डी हवामें ; ठण्डी चीजें खाने पीने ; शय्यासे उठकर घूमनेपर ।

सम्बन्ध ।—ऐम्ब्रा-ग्रीसियासे तुलनीय:—मस्कस [मूर्च्छाभाव और जरायु रोगसे उत्पन्न दमा) ; ऐसाफि, सोराइनम, वेलेरि, कोका (सलज्ज भाव) ; कैलि, ब्रायो, नक्स, कैल्के, नेट्रम-कार्ब, सिमिसि, आर्स, (दमा ; स्नायवीय दौर्बल्य) ; बोविस्टा (ऋतुके मध्यवर्त्ती समयमें आर्त्तव स्राव) ; लैके, सिपिया, काफिया ; चायना ; इग्ने, सल्फ, पल्स, स्टेफ ; सिकेलि (आलसी स्त्रियोंका)

दोषघ्न ।—कैम्फ, काफिया, नक्स, पल्स, स्टेफी । यह स्वयं स्टेफी और नक्सका दोषघ्न है ।

शक्ति ।—२ री दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक या उससे भी ऊँचा क्रम लाभदायक है ।

ऐम्ब्रोसिया ।

(AMBROSIA)

दूसरा नाम ।—वार्म उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नये पल्लव और फूलसे मूल अर्क बनता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—सर्दी और दमा रोगमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह सर्दी खांसी और हुपकांसीकी एक उत्तम दवा है ।

लक्षणावली।

नाक।—सर्दी, छींकके साथ नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव। नाकसे रक्तस्राव, श्वासनाली और श्वासनाली भुजमें खुजली, श्वासकृच्छ्रता (ऐरोलिया, युकेलिप्] इसके साथ साँय साँय शब्द करनेवाली खाँसी मौजूद रहती है।

हूप खांसी।—[Pertussis]—रात ८ बजेसे १२ बजेतक खाँसी दमा और वक्षके भीतर दर्दके साथ सांय सांय शब्द ; नाकसे रक्तस्राव ; नाकका छेद, मस्तक और वक्ष मानो भरा हुआ है, ऐसा मालूम होना। आँखें लाल और करकराती हैं। आंखसे बहुत ज्यादा आँसू निकलते हैं (डा० ई० ई० होलमैन)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ री दशमिक क्रमतक।

ऐमोनियम ऐसिटिकम।
(AMMONIUM ACETICUM)

दूसरा नाम।—ऐमोनिया-ऐसिटेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीमें क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—बहुमूत्र ; ज्वर ; पसीना।

उपयोगिता और आभास।—बहुत प्राचीन कालसे ऐलोपैथगण इसे फीवर मिक्सचरके एक उपादानके रूपमें व्यवहार करते आ रहे हैं। त्वचापर विशेषकर चेहरे और पेटपर तापका बढ़ जाना, गलेमें खुरच जानेकी तरह दर्द, माथेमें भार मालूम होना—इन लक्षणोंमें यह लाभदायक है। बहुत पेशाब ; पेशाबमें सैकरिन या चीनी निकलना ; बहुत अधिक पसीना = कार्बो-वेज। मानो पसीनेमें नहा गया है—लक्षणोंमें यह बहुमूत्र रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है।

शक्ति।—३०-२००।

ऐमोनियैकम गमाई।

(AMMOMIAOUM GUMMMI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक प्रकारकी गोंद या गोंद जैसे पदार्थसे रेक्टिफायड स्पिरिटके सहयोगसे मदर-टिंचर तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी बना करता है।

उपयोगी धातु।—विपन्न प्रकृतिवाले, क्षीण देह वृद्ध मनुष्योंके लिये तथा पुराने स्वरनालीभुज प्रदाह (Bronchites) में यह बहुत लाभदायक है। रोगीको ऐसा मालूम होता हैं मानो उसकी जांघ फल गयी है।

लक्षणावली।

मन।—असन्तुष्ट, चिड़चिड़ा; बकवादी; मस्तिष्ककी जड़ता।

आंख।—अस्पष्ट दृष्टि, ऐसा मालूम होता है कि तारे और आगकी चिनगारियाँ आँखोंके आगे उड़ रही हैं (ऐमोन-कार्ब देखो); पढ़नेके समय आँख बहुत जल्द थक जाती है (रियुटा)। दीयेकी रोशनीमें पढ़नेसे आँखें करकराती हैं और उनमें जलन पैदा हो जाती है—लाल हो जाती हैं और उनमें टपकका दर्द होता है (बेल)। कानमें फाड़ने या तोड़ने जैसा दर्द।

श्वास-यंत्र।—तालुमूल सूखा; निर्मल हवाके नाकमें जानेपर वृद्धि। श्वास-कृच्छ्रता; वायुनली भुजकी पुरानी प्रादाहिक सर्दी,—पीवकी तरह श्लेष्मा अधिक परिमाणमें संचित होता है, परन्तु कफ (Sputa) की मात्रा बहुत थोड़ी रहती है। ठण्डी हवामें बढ़ना; श्लेष्मा गाढ़ा, लसदार और कड़ा। हृत्पिण्डकी गति प्रबल और ऊपरी पेटतक फैली हुई; पतला श्लेष्मा मिला दमा—गाढ़ा लेईकी तरह थूक या कफ निकालनेकी चेष्टा करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षके भीतरका कोई यंत्र टूट जायगा।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—आर्निका; ब्रायोनिया; ऐसाफि; क्रोना; साइक्यूटा (बहुश उद्भेद), ऐम्ब्रा; अरम, आर्निका (चोट); प्रत्युस: बेल रूटा (आँख)

शक्ति।—६ ठे दशमिक विचूर्ण से ३० शक्तितक प्रयोग हुआ करता है।

ऐमोनियम।—डाइल्यूट एसेटिक ऐसिडके साथ ऐमोनिया मिलाकर मदर टिंचर तैयार होता है।

फलप्रद।—बहुमूत्र, ज्वर और पसीनेके लक्षणमें व्यवहृत होता है।

ऐमोनियम वेञ्जोयिकम।

(AMMONIUM BENZOICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीमें गलाकर मदर-टिंचर तैयार होता है; विचूर्ण भी बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—पेशाबमें अण्डलाल; शोथ; गठिया या सन्धिवात; जीभकी जड़में अर्बुद; अजीर्ण और सन्धिवातमें इसका प्रयोग किया गया है और लाभ हुआ है।

उपयोगिता और आभास।—लाला-मूत्र रोगकी यह अन्यतम दवा है। खासकर यदि रोगीकी धातु सन्धिवात (Gouty) वाली हो। पैरकी अँगुलियोंमें रस-संचयके साथ ही साथ सन्धिवात रोग हो तो यह बहुत फायदा करती है।

लक्षणावली।

मस्तक।—भारी और गड़बड़ी मालूम होना।

मुखमण्डल।—दोनो आँखें फूलीं, जीभ फूली,—मानो जीभके नीचे अर्बुद (Ranula) हो गया है (ऐस्म्ब्रा)।

पेशाब।—गाढ़ा और गदला—अण्डलाल मिले पेशाबमें (ऐसिड बेन, आर्स, कार्बोवेज, कैलि-कार्ब, टेरिबिन्थ); पेशाब-परिमाणमें बहुत थोड़ा।

स्वरनली।—स्वरनालीके भीतर सर्दी।

पीठ।—पाखानेके वेगके साथ त्रिकास्थि (Sacrum) प्रदेशमें दर्द। हक या मूत्रग्रन्थि (Kydney region) प्रदेशमें दर्दका भाव।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, आर्निका, ऐसिड-बेन, बोपियम, कास्टिक; कार्बो-वेज; काली-कार्ब, नेफोलियम, टेरिबिन्थ।

शक्ति।—२ री से ६ ठी विचूर्ण या टिंचर।

ऐमोनियेकम गमाई।

(AMMOMIACUM GUMMMI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक प्रकारकी गोंद या गोंद जैसे पदार्थसे रेक्टिफायड स्पिरिटके सहयोगसे मदर-टिंचर तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी बना करता है।

उपयोगी धातु।—विपन्न प्रकृतिवाले, क्षीण देह वृद्ध मनुष्योंके लिये तथा पुराने स्वरनालीभुज प्रदाह (Bronchites) में यह बहुत लाभदायक है। रोगीको ऐसा मालूम होता हैं मानो उसकी जांघ फल गयी है।

लक्षणावली।

मन।—असन्तुष्ट, चिड़चिड़ा; बकवादी ; मस्तिष्ककी जड़ता।

आंख।—अस्पष्ट दृष्टि, ऐसा मालूम होता है कि तारे और आगकी चिनगारियाँ आँखोंके आगे उड़ रही हैं (ऐमोन-कार्ब देखो); पढ़नेके समय आँख बहुत जल्द थक जाती है (रियुटा)। दीयेकी रोशनीमें पढ़नेसे आँखें करकराती हैं और उनमें जलन पैदा हो जाती है—लाल हो जाती हैं और उनमें टपकका दर्द होता है (बेल)। कानमें फाड़ने या तोड़ने जैसा दर्द।

श्वास-यंत्र।—तालुमूल सूखा ; निर्मल हवाके नाकमें जानेपर वृद्धि। श्वास-कृच्छ्रता ; वायुनली भुजकी पुरानी प्रादाहिक सर्दी,—पीवकी तरह श्लेष्मा अधिक परिमाणमें संचित होता है, परन्तु कफ (Sputa) की मात्रा बहुत थोड़ी रहती है। ठण्डी हवामें बढ़ना ; श्लेष्मा गाढ़ा, लसदार और कड़ा। हृत्पिण्डकी गति प्रबल और ऊपरी पेटतक फैली हुई ; पतला श्लेष्मा मिला दमा—गाढ़ा लेईकी तरह थूक या कफ निकालनेकी चेष्टा करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षके भीतरका कोई यंत्र टूट जायगा।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न।**—आर्निका ; ब्रायोनिया ; ऐसाफि ; कोना ; साइक्यूटा (बट्टम उड्डेट), ऐम्ब्रा ; अरम, आर्निका (चोट) ; प्रभृस : बेल रूटा (आँख)

शक्ति।—६ ठे दशमिक विचूर्ण से ३० शक्तितक प्रयोग हुआ करता है।

ऐमोनियम।—डाइल्यूट एसेटिक ऐसिडके साथ ऐमोनिया मिलाकर मदर टिंचर तैयार होता है।

फलप्रद।—बहुमूत्र, ज्वर और पसीनेके लक्षणमें व्यवहृत होता है।

ऐमोनियम बेञ्जोयिकम।

(AMMONIUM BENZOICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीमें गलाकर मदर-टिंचर तैयार होता है; विचूर्ण भी बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—पेशाबमें अण्डलाल; शोथ; गठिया या सन्धिवात; जीभकी जड़में अर्बुद; अजीर्ण और सन्धिवातमें इसका प्रयोग किया गया है और लाभ हुआ है।

उपयोगिता और आभास।—लाला-मूत्र रोगकी यह अन्यतम दवा है। खासकर यदि रोगीकी धातु सन्धिवात (Gouty) वाली हो। पैरकी अँगुलियोंमें रस-संचयके साथ ही साथ सन्धिवात रोग हो तो यह बहुत फायदा करती है।

लक्षणावली।

मस्तक।—भारी और गड़बड़ी मालूम होना।

मुखमण्डल।—दोनो आँखें फूलीं, जीभ फूली,—मानो जीभके नीचे अर्बुद (Ranula) हो गया है (ऐम्बा)।

पेशाब।—गाढ़ा और गदला—अण्डलाल मिले पेशाबमें (ऐसिड बेन, फास, कार्बोवेज, कैलि-कार्ब, टेरिबिन्थ); पेशाब-परिमाणमें बहुत थोड़ा।

स्वरनाली।—स्वरनालीके भीतर सर्दी।

पीठ।—पाखानेके वेगके साथ त्रिकास्थि (Sacrum) प्रदेशमें दर्द। वृक्क या मूत्रग्रन्थि (Kydney region) प्रदेशमें दर्दका भाव।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—एपिस, आर्निका, ऐसिड-बेन, ओपियम, कास्टिक; कार्बो-वेज; काली-कार्ब, नैफोलियम, टेरिबिन्थ।

शक्ति।—२ री से ६ ठी विचूर्ण या टिंचर।

ऐमोनियम ब्रोमेटम।

(AMMONIUM BROMATUM)

दूसरा नाम।—ब्रोमाइड आफ ऐमोनिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले चुआये हुए पानीमें गलाया जाता है। इसके बाद उच्च क्रम सुरासारमें तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—आँखोंके स्नायु और पेशीका शूल; चर्बी बढ़ जाना और स्थूलता; सर्दीको वजहसे खाँसी; मृगी; मूलग्रन्थिकी बीमारी; स्वरनालीकी बीमारी; गण्डमाला; दूषित आँखोंका प्रदाह; डिम्बाधारका प्रदाह; हूप खाँसी [कुक्कुर खांसी]; श्वास-नाली प्रदाह इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—तालुमूल और स्वरनाली (Larynx); मुंहकी पुरानी सर्दी प्रभृति रोगोंमें उपयोगी है। इसके अलावा शिरःशूल (Clavus) और मेदाधिक्य (शरीरका मोटापन) रोगमें (फाइटोलैका, वेरि) साधारणतः इसका व्यवहार हुआ करता है। मस्तक, वक्षस्थल वगैरह स्थानोंमें कसावट या जकड़ जानेकी तरह मालूम होना (कैक्टस)

लक्षणावली।

मन।—डर; निरुत्साह।

मस्तक।—मालूम होता है, कि कानके ऊपरी अंशसे एक बन्धन मस्तकको कसकर लपेटे हुए है (ऐनाका)। दाहिनी कनपटीमें दर्द,—मानो काँटी ठोंकी जा रही है। (इथि, काफि)

कण्ठनाली।—मुख-गह्वरमें जलन और कण्ठनालीमें खुजली,—सूखी; अकड़न-भरी खाँसी; रातके समय बढ़ना। दिनके समय गलेमें खून मिला सफेद कफ भरा रहता है।

श्वास-यंत्र।—यन्त्रणादायक और शरीरको हिला देनेवाली आक्षेपिक खाँसी, कभी कभी कई मिनिटका अन्तर देकर बार बार दो तीन घण्टे तक आती रहती है, खासकर रातमें शयनावस्थामें स्वर-नालीमें खुजली मालूम होती है। खाँसी, विरक्ति पैदा करनेवाली, उसके साथ ही स्वरभङ्ग और श्वास-कष्टता

और थकावट तथा सुस्ती मालूम होती है। श्लेष्मा नहीं निकलता। एकाएक ऐसी खाँसी, मानो श्वास-रोध हो जायगा। रात ३ बजनेके समय खाँसता खाँसता जाग उठता है। एकाएक पाखाना लग जाता है, पतला मल। छातीके पीछे और गर्दनके पीछे जाड़ा मालूम होनेके साथ बोखार।

सम्बन्ध।—आर्जेण्ट-नाइ; कोनायम; कास्टिकम; लैकेसिस; ड्रायोसा; कैलि-ब्रोम; सिनेगा।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे ३ य दशमिक क्रम व्यवहारमें आता है।

ऐमोनियम कार्बोनिकम।

(AMMONIUM CARBONICUM)

दूसरा नाम।—कार्बोनेट आफ ऐमोनिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआए हुए पानीमें २ दशमिक क्रमतक तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—(डा० क्लार्क कहते हैं)—दमा; श्वासनालीका प्रदाह; खाँसी; हड्डी खिसक जानेकी वजहसे दर्द; अनजानमें पेशाब हो जाना; विसर्प; मसूड़ेमें दर्दका बढ़ जाना; अर्श; गुल्मवायु; फेफड़ेकी सूजन या शोथ; छोटी माता; नाकको बहुत-सी बीमारियाँ; कर्णमूल-प्रदाह; बालास्थि-विकृति; आरक्त ज्वर; आघात; मोच खाना, वक्षोस्थिमें दर्द; दांतका दर्द; मूत्रभारसे पैदा हुई विषाक्तता; अँगुलहाड़ा इत्यादि।

उपयोगी धातु या आभास।—रक्तस्रावी धातु। रक्तके लाल कणोंका क्षय हो जाना और खूनका पानीकी तरह पतलापन वगैरह ऐमोन कार्बकी क्रियाके परिणाम हैं। सभी जखम सड़नेवाले होते हैं। बलिष्ट और मोटे ताजे व्यक्ति, खासकर वे स्त्रियाँ जो आलस्यमें दिन काटती हैं और इसी कारणसे उन्हें नाना प्रकारकी बीमारियाँ होती हैं और जो सब थोड़ेमें ही कातर हो पड़नेवाली स्त्रियाँ हमेशा सुगन्धित ऐमोनियाकी गन्ध लिया करती हैं और जाड़ेके दिनोंमें जिन्हें [illegible] करती हैं, उनके लिये ऐमोनियम कार्बोनिकम विशेष उपयोगी [illegible] परन्तु [illegible]

(Calves) और पैरके तलवेमें ऐंठन [एकोना, नक्स, क्यूप्रम] । बैठनेके समय, बहुत देरतक खड़े रहने और रातमें पैर दबाकर सोनेपर, दोनो पैर निष्क्रिय हो जाते हैं और उनमें झुनझुनी पैदा हो जाती हैं। शरीरके दाहिनी ओरको बीमारियाँ आदि [ब्राई, लाइको-पो ; बाईं ओरका—लैके, रासटक्स]।

त्वचा ।—आरक्त ज्वरकी तरह शरीर लाल हो जाता हैं, (एइलैन्थस देखो ।) विषाक्त आरक्त ज्वराधिकारमें—गहरी नींद ; नाकसे जोरकी आवाजके साथ श्वास-प्रश्वास ; जीवनी शक्तिका अभाव [Low vitality] की वजहसे उद्भेद (Eruption) भरपूर नहीं निकलते और मस्तिष्कमें पक्षाघात हो जानेकी सम्भावना रहती हैं (टियुबर, जिङ्कम)। दुर्बल वृद्धोंका विसर्प रोग (Erysipelas) ; मुंहमें बाईं ओर आरम्भ होकर दाहिनी ओर फैल जाता हैं=ग्रैफा ; विशेषकर दाहिनी ओरका। कीड़े आदिके डङ्क मारनेपर= ऐन्थ्राक्स ; लिडम ।

निद्रा ।—दिनमें औंघाई। निद्रावस्थामें सांस रुक जाती है। प्रेत, मरे और मुमूर्ष मनुष्योंके सपने देखना ।

ज्वर ।—सन्ध्यामें ज्वर ; नाड़ी पूर्ण और कठिन ; रातके समय पसीना इत्यादि ।

वृद्धि ।—ठण्डी तर हवामें ; गीली पोलटीस (Poultice) के प्रयोगसे ; नहलानेपर ऋतुके समय ।

घटना ।—नीचेकी ओर पेट दबाकर सोनेपर (ऐसिड-ऐसेटिक) ; बीमार और दर्दवाली करवट सोनेपर (ब्राई, पल्स,—सूखी हवामें उपसर्गोंका घटना)।

सम्बन्ध ।—कैम्फर, आर्निका और हिपरके द्वारा प्रतिषेधित होता है। रासटक्स, विषसे उत्पन्न चर्म-रोग और कीड़े डङ्क मारनेका प्रतिविष है। लैकेसिस इसका शत्रुभावपन्न (Inimical) है।

सदृश ।—ऐण्टि-टार्ट, आर्स, अरम, फास, सलफर।

शक्ति ।—२ री दशमिकसे ३० शततमिक तक । निम्न-क्रम और उच्च क्रमका व्यवहार होता है।

क्रियाका स्थायित्व ।—४० दिन।

ऐमोनियम कास्टिकम।
(AMMONIUM CAUSTICUM)

दूसरा नाम।—ऐमोनियमका एक तरहका उग्र द्रव्य।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानोमें गलता है। उच्च क्रम तैयार करनेके लिये स्पिरिटकी जरूरत पड़ती है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—स्वरलोप; मसानेका प्रदाह; अन्ननालीका प्रदाह; वात; सड़नेवाला जखम; वमन इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—ऐमोनियम कास्टिकम हृत्पिण्डकी एक जबर्दस्त उद्दीपक दवा है, इसलिये, एकाएक हृत्पिण्डकी सुस्ती या निष्क्रियता, शिराओंमें जमा हुआ रक्त प्रवेश करनेकी वजहसे शिराका रुकना, रक्तस्राव, साँप काटने और क्लोरोफार्मकी गन्धसे उत्पन्न मत्तता वगैरह लक्षणोंमें सुंघाकर इसका प्रयोग होता है। अन्ननालीमें जलनके साथ कृत्रिम झिल्ली पैदा करनेवाली घुंड़ी खाँसी (कालो खाँसो) (Membranous Croup) रोगके साथ इसीकी वजहसे श्लैष्मिक सूजन और जखम हो जानेका लक्षण हो जाता है। प्रबल वमन,—नाक और मुँहसे निकलता है। मुंह नाक वगैरह नवद्वारसे रक्तका स्राव होने बाद सुस्ती और भयका भाव।

लक्षणावली।

मल।—बार बार खून मिला मल। बहुत काँखनेके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें खून मिला मल।

श्वासयंत्र।—तालुमूलमें जलनके साथ स्पर्श सहन न हो और स्वरलोप। गलनालीका उपझिल्ली प्रदाह (Diphtheria) रोगमें पहले नासारन्ध्र (नाककी छेद) में रोगका हमला होता है। जलन और जखम करनेवाला स्राव और बहुत अधिक शारीरिक अवसाद। फेफड़ेमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा सञ्चय के साथ लगातार खाँसी। श्वासनालीके द्वार या उपजिह्वाका (Epiglottis) सिकुड़ना और फैलना—इसी कारणसे श्वास-रोध,—रोगी मानो मुंह फाड़ा करता है—हाँफा करता है। कण्ठनाली और अन्ननालीमें कुट कुट और जलन होती है। अलिजिह्वा (Uvula) सफेद श्लेष्मासे ढकी रहती है।

प्रत्यङ्ग ।—बहुत थकन और पेशियोंमें कमजोरी मालूम होती है। सारा अङ्ग काँपता है। कन्धेमें वात-वेदनाकी बीमारी। त्वचा गर्म और विशुष्क।

तुलनीय ।—ऐमोन-कार्ब प्रभृति। विनिगर (सिर्का) या खटाई इसका प्रतिषेधक या दोषघ्न है।

शक्ति ।—१ म दशमिकसे ६ ठी दशमिक तक क्रम साधारणतः लाभदायक हैं।

ऐमोनियम म्यूरियेटिकम।

(AMMONIUM MURIATICUM)

दूसरा नाम ।—ऐमोन क्लोराइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और टिंचर। पहले पानीमें गलाकर; उसके बाद उच्च क्रम स्पिरिटके सहारे तैयार किया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— अनिद्रा; श्वासनालीका प्रदाह; कोष्ठबद्धता (कब्जियत); सर्दी, खाँसी; अतिसार; आँखकी बीमारी; ग्रन्थिका बढ़ना; अर्श; यकृतकी बीमारी; विषाद; उन्माद; ऋतुकालकी बीमारियाँ; फेफड़ेका प्रदाह; पैरका झुनझुनीवाला वात; शीताद; प्लीहामें दर्द; मोचखाना इत्यादि; नश्तर लगवाने बाद जखम आराम हो जानेपर भी उस स्थानमें स्नायविक दर्द; तालुमूल ग्रन्थियोंका बढ़ना; कितने ही प्रकारका जखम इत्यादि।

उपयोगी धातु ।—जो व्यक्ति स्थूलकाय हैं; पर उनके हाथ पैर बहुत दुबले होते हैं; और जो आलसी और स्थूलकाय होते हैं, उनके लिये यह दवा अधिक उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास ।—ऐमोनियम म्यूरियेटिकमके कई प्रधान निर्णायक लक्षण:—(१) नाकसे स्राव या सर्दी, स्राव कड़वा (Acrid=सोरा, नेट्र-म्यू), पानीकी तरह;—ओंठकी त्वचाको क्षय करनेवाला। (२) नासारन्ध्र और नाकका कुछ न जाना,—मानो त्वचा क्षय हो गयी है; खुजलाहट; नाक बन्द रहना बहुत खराब मालूम होना, नाकका रुद्ध भाव दूर करनेके लिये बारम्बार नाक छिड़कना पड़ता है (३) भंग और

कर्कश स्वर ; स्वरनाली (Larynx) में जलन। (४) कण्ठका भीतरी और बाहरी भाग फूला हुआ ; गलेकी ग्रन्थियाँ दोनों (Tonsils) में भार मालूम होता है और कोई चीज निगलनेमें तकलीफ होती है (५) सूखी और वक्षको विदारण करनेवाली खाँसी, तीसरे पहरके समय श्लेषा पतला रहता है ; वक्षमें घड़घड़ शब्द होता है और बहुत सा श्लेषा निकल पड़ता है। (६) उपजिह्वाके पिछले अंशमें जखम मालूम होता है। कुछ खानेसे आराम मालूम होता है [७] छातीमें जगह जगहपर जलन मालूम पड़ती है। (८) दोनों पृष्ठ-फलकके बीचमें बरफ छू जानेकी तरह ठण्डक मालूम होती है (नैट्र-कार्ब, सिपि, ऐगार, पल्स, कास्टि), अच्छी तरहसे ढका लेनेपर भी जाड़ा दूर नहीं होता। (९) यकृतमें बहुत दिनोंका रक्त-सञ्चयकी अधिकता (Congestion)। (१०) मल-काठिन्य, चूर चूर होकर निकलता है और श्लेषासे ढका रहता है ; पाखाना होने बाद मलद्वारमें जलन और जखम मालूम होता है। (११) उदरामय या पतले दस्त,—हरा रङ्ग, श्लेषा भरा मल (ऋतुके समय भी होता है) ; (१२) आर्त्तव—असमयमें ही प्रकट हो जाता है,—स्राव बहुत ज्यादा, घोर लाल या काला रङ्ग ; थक्का थक्का (Clotted); रातमें बहुत अधिक स्राव हुआ करता है ; ऋतुके समय दोनों पैरोंमें दर्द होता है। (१३) प्रदर,—स्राव अण्डलालकी तरह, इसके साथ ही नाभि-प्रदेशमें शूलकी तरह दर्द। (१५) बैठने या सोनेके समय मेरुदण्डके निचले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो चोट लग गयी है। पेशाबके बाद योनिसे भूरा गोंदकी तरह पदार्थ निकलता है। (१६) ग्रध्रसी या कटि-स्नायु शूलकी तरह दर्द, रोगी को ऐसा मालूम होता है मानो उसकी पीछेवाली कण्डरा या पेशीका अन्तिम भाग संकुचित या छोटा हो गया है, और इसी वजहसे पैर खींचकर चलता है। इसकी क्रियाका एक आश्चर्य व्यापार यह है, कि इसमें, शरीरके उर्द्ध, मध्य और निम्न, अंशके रोग आदिकी घटा बढ़ी दिनके प्रथम, मध्य और शेष भागके अनुसार विभक्त रहती है ;—जैसे,—मस्तक और वक्षस्थलकी बीमारियाँ सवेरे ; अन्त्राशयके रोग तीसरे पहर ; और प्रत्यंग त्वचा तथा ज्वर आदिके लक्षण सब सन्ध्याके समय बढ़ते है।"—(डा० बोरिक)।

लक्षणावली।

मन।—बातचीतसे अनिच्छा। शङ्कित चित्त और दुःखित, मानो उसके भीतर न जाने कितना दुःख भरा हुआ है। रोनेकी इच्छा होती है और कभी कभी वास्तवमें रोने लगता है। सभी विषयोंमें घबड़ा उठता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर और पूर्णता मालूम होना ; कभी कभी बगलकी ओर गिर जानेकी सम्भावना हो जाती है। बाईं कनपटी (Temple) और माथेके बाम पार्श्वमें सुई बेधने जैसा दर्द, माथा झुकानेपर, माथेके शीर्ष भाग अर्थात मूर्द्धदेशमें ऐसा दर्द। मालूम होता है, मानो माथा दो टुकड़े हो जायगा। रूसी (Dandruff), खुजलीके साथ केश झड़ जाना।

आंख ।—आंखके सामने कुहरेकी तरह मालूम होना, घरके बाहरी भाग या चमकीली रौशनीमें बढ़ना ; कोठरीके भीतर घट जाना। ऐसा मालूम होता है, मानों किसी चीजने सामने आकर दृष्टि-पथको रोक दिया। प्लवमान रसरेण (Muscoe Volitantes),—मानो आंखके आगे मक्खीकी तरह अर्थात काले काले बिन्दुकी तरह कुछ उड़ रहा है (ऐमोन-कार्ब देखो)। रातमें जलन और आँसुओंका स्राव।

नाक ।—सर्दी,—पानीकी तरह, कड़वा श्लेष्माका स्राव, ओठमें लग जानेपर जखम पैदाकर देता है (सिपा ; नैट्र-म्यू)। बार बार छींक ; बाएँ नासारन्ध्रमें घाव पैदा हो जानेकी तरह दर्द और उसका छुआ न जाना, सर्दीके कारण घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना। नासारन्ध्रमें खुजलाहट और बारम्बार नाक छिड़कनेकी इच्छा ; मालूम होता है, किसी रुखड़ी चीजने नाक बन्दकर रखी है। दिनमें एक नाक बन्द रहती है, और रातमें दोनों ही बन्द हो जाती है (सैम्बि ; नक्स)।

मुख ।—मुंहका प्रादाहिक स्नायुशूल (Neuralgia); बाईं ओरके निचले मसूढ़ेमें सूजन,—सुई बेधनेकी तरह दर्द ; यह दर्द बाईं कनपटी तक फैल जाता है। मुख-गह्वर और दोनों ओठमें स्पर्श सहन नहीं होता ; खाल उधड़ जाती है। ओठमें आग छू जानेकी तरह जलन। निम्न हनुवटीकी सन्धिकी नीचेवाली गांठ [Gland] में सूजनके साथ गालका फूलना ; वहाँ टपक जैसा दर्द और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है।

गलेके भीतर ।—जिह्वा-मूल-ग्रन्थियों [Tonsils] में सूजन और टपकका दर्द ; निगलनेमें बहुत तकलीफ। गलक्षत रोगाधिकारमें [Sore-throats], गलनालीमें, इतना गाढ़ा श्लेष्मा इकट्ठा होता है कि खाँसकर निकाला नहीं जा सकता।

पाकाशय ।—लेमोनेड या शराब पीनेकी बहुत इच्छा। खाया हुआ पदार्थ और खट्टा पानी, डकारके साथ गलेमें आ जाता है। भोजनके बाद

मिचली आती है और मुंहमें पानी भर आता है। भोजनके बाद ऊपरी पेट (Pit of stomach) में दर्द।

अन्त्राशय या निम्नोदर।—बैठनेके समय प्लीहामें सुई बेधनेकी तरह दर्द। नाभिके चारों ओर मरोड़की तरह मालूम होना। तलपेटमें कोई भारी चीज रहनेकी तरह मालूम होना और दर्द,—मानो पेट फट जायगा। यकृतमें बहुत दिनोंकी रक्ताधिक्यता या रक्त-सञ्चय (Congestion)। अन्त्राशयमें अर्थात तलपेटमें चर्बीका बढ़ जाना (Fatty Deposit)। विटपास्थि (Os pubis) से लेकर योनि देश अर्थात गुह्यद्वारसे जननेन्द्रियके बीचके स्थानमें कतरने या सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। गर्भावस्थामें तलपेटकी बहुत तरहकी बीमारियाँ पैदा हो जाती है।

मल और मलांत।—दुरारोग्य कब्जियत,—इसके साथ ही बहुत पेट फूलना; मल कड़ा और बाहर निकलनेके समय चूर चूर हो जाता है; पाखाना फिरनेके समय बहुत काँखना पड़ता है; मलद्वारसे ही मल टूट जाता है (मैग-म्यूर)। हर बार अलग अलग रंगका पाखाना होता है (पल्स) अर्श,—वह छुआ नहीं जाता और जलन भरी रहती है। पाखाना होने बाद बहुत देरतक मलनालीमें जलन हुआ करती है और डङ्क मारने जैसा दर्द होता है (इस्कयूलस, सल्फ); खासकर स्राव रुक जाने बाद ऐसा अर्श होता है। कड़ा और हरे रङ्गका पतला मल पर्यायक्रमसे होता है। मलद्वारमें जखम पैदा हुआ दर्द और पीव भरा फोड़ा (Pustules) निकलता है और पतले दस्त आते हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतुके समय दस्त और कै (एमोन कार्ब देखो); आँतोंसे रक्तस्राव (फास); पैरके निचले भागमें शूलकी तरह दर्द; रातमें अधिक आर्त्तव-स्राव होना (बोवि; केवल सोनेपर ही स्राव होता है और बैठने या टहलनेपर रुक जाता है=क्रियो; केवल शरीर हिलानेके समय स्राव, टहलना या चलना रोकते ही स्रावका रुक जाना=लिलि-टाइ; केवल रातमें या सोने बाद स्राव, चलनेके समय रुक जाता है=मैग-कार्ब)। प्रदर, अण्ड लालकी तरह,—स्राव आरम्भ होनेके पहले नाभि-स्थानमें मोच खानेकी तरह दर्द मालूम होता है; प्रत्येक बार पेशाब करने बाद, भूरे रङ्गका, लसदार और बिना तकलीफका स्राव, (भूरा—एसिड-नाइ; अण्डलालकी तरह सफेद=एल्यू, बोवि, मैगो, नैट्र-म्यू, पोडो, स्टैन)।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभङ्ग और स्वरनालीमें जलन ;—सन्ध्याके समय बार बार श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा करनेपर थोड़ा थोड़ा श्लेष्माका टुकड़ा निकलता है। उपजिह्वाके पिछले अंशमें जखम होनेकी तरह मालूम होना ;—छाती फाड़नेवाली खाँसी ;—मानो स्वरनालीकी झिल्ली वारकर करती है ऐसा मालूम होना ;—दाहिनी पार्श्व या ऊपर मुंह उठाकर सोनेपर और ठण्डी चीज पीने या भोजन करनेपर खाँसी बढ़ जाती है। तीसरे पहर सहजमें ही श्लेष्मा निकलता है। बहुत ज्यादा कफ (Expectoration) और गलेमें घड़ घड़ शब्द। छातीमें दबाव या सुई वेधनेकी तरह दर्द,—मानो एक ग्रास खाया हुआ पदार्थ वहीं अड़ा है।

पीठ ।—दोनों स्कन्धास्थिके बीचवाले प्रदेशमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना (ऐगार, नेट्र-कार्ब, सिपि),—क्षय कास रोगाधिकारमें (लाच-नैन ; जलन मालूम होना = क्लोनोइन, लाइको, फास) ; गरम ओढ़नेपर भी नहीं घटना ; इसके बाद खुजली। बैठने या सोनेपर मेरुदण्डके सबसे निचले अग्रभाग—पिकाचंचु अस्थिमें (Coccyx) चोटकी तरह मालूम होना। श्रोणि या त्रिकास्थिके मध्यवर्त्ती प्रदेश अर्थात नितम्ब और कटि-देशमें (Lumbo-sacral-region) भयानक दर्द।

प्रत्यङ्ग ।—टहलनेके समय पैरकी पिछली हड्डीमें, कण्डरा या पेशीके अन्तिम भागमें सङ्कोचन मालूम होना ; सन्धि प्रदेशमें सङ्कोचन मालूम होना,—मानो पेशियाँ सिकुड़ रही हैं (कास्टि, साइमेक्स)। दुर्गन्ध भरा पैरका पसीना (ऐलू, ग्रैफ, सोराइन, सैनिक, सिलि)। कटि-स्नायुशूल (Sciatica),—बैठनेके समय बढ़ना ; टहलनेके समय थोड़ा घटना और सोने बाद एकदम आराम हो जाना ; रजःस्वलावस्थामें पैरके तलवेमें दर्द मालूम होना (एँड़ीमें दर्द = साइक्ल, मैंगोनम, लीडम और कास्टिका)। नश्तर लगवाये हुए प्रत्यङ्गका स्नायुशूल (सिना)। सवेरे उठनेके समय सारी देहमें दर्द मालूम होता है ; पर दिन चढ़नेपर आराम हो जाता है।

त्वचा ।—सन्ध्याके समय शरीरके कितने ही स्थानोंमें खुजली आरम्भ होना।

सम्बन्ध ।—सद्यः—श्लैष्मिक झिल्लीके प्रदाहमें = [ऐपिस-मेल्ड] ; [दोनों स्कन्धास्थिके बीचमें सर्दी मालूम होना] कौल्के, नेट्र-कार्ब ; [कण्ड-राके सङ्कोचनमें] = कास्टि, और साइमेक्स ; रबरकी तरह श्लेष्मा = केलि-बाई,

हिपर ; सर्दीके सम्बन्धमें =कैलि-क्लोर, नेट्र-म्यूर ; टुकड़े टुकड़े मल=मैग-म्यूर=[बैठनेके समय सन्धि-स्थानमें दर्दकी अधिकता] रासटक्स, [ऐंठन] सिनेगा ; [स्थूल व्यक्ति] सिपिया, सलफर।

द्रष्टव्य।—गर्म पानीसे नहानेपर ऐमोन म्यूरसे पैदा हुए लक्षण घट जाते हैं।

वृद्धि।—चित्त सोनेपर, भोजनके बाद, ठण्डी पतली चीजें पीनेपर, सवेरे शय्यासे उठनेके समय।

प्रतिविष या दोषघ्न।—काफिया, नक्स-वोमिका।

शक्ति।—२ री दशमिकसे २० शततमिक शक्तितक।

क्रियाको स्थायित्व।—२० से ३० दिन।

ऐमोनियम फास्फोरिकम।

(AMMONIUM PHOSPHORICUM)

दूसरा नाम।—ऐमोनि फास्फोरस।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—पानीमें गलता है। इसके बाद स्पिरिटमें उच्च शक्ति तैयार होती है। इसका विचूर्ण भी बनता है।

उपयोगिता और आभास।—धातुगत गठिया (Gout) रोगाधिकारमें, रोगवाली सन्धियोंमें अस्थि-गुल्म (*Nodes*) या वातिका क्रियाके कारण सञ्चित पदार्थ विशेषका संस्थित (Gouty Deposit) होनेपर ऐमोन फास एक प्रधान औषधिके रूपमें व्यवहृत हुआ करता है। बीमारीकी नयी अवस्थामें चिलक मारनेकी तरह दर्द रहनेपर यह लाभ नहीं करता, पर जब रोग शरीर विधानके अंशकी तरह हो जाता है और रोग पीड़ित सन्धियोंमें युरेट आफ सोडा या सज्जी मिट्टीके चूरकी तरह पदार्थ (Urate of Soda) संचित होता है, अस्थि-गुल्मका लक्षण पैदा हो जाता है और गांठमें टेढ़ापन पैदा होकर उसका आकार बिगड़ जाता है, उसी समय ऐमोनियाका प्रयोग करना चाहिये (स्ट्रेफिसेग्रिया)। मुंहका पक्षाघात (*Facial Paralysis*) । स्कन्ध-देशका वातका दर्द, इससे अच्छा होता है।

शक्ति।—२ य से ६ ठी दशमिक।

ऐमोनियम पाइक्रेटम।

(AMMONIUM PICRATUM)

दूसरा नाम।—पाइक्रेट आफ ऐमोनिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—प्रथम क्रम विचूर्ण या पानीमें तैयार करने बाद सुरासारमें ४ थं क्रम होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक है ;—सर-दर्द ; स्नायुशूल और हूप खाँसी (कुकुर खाँसी)।

उपयोगिता और आभास।—सड़ी भाफ लगनेकी वजहसे स्नायु-शूल और पित्त विकारके कारण सरमें दर्द होनेपर इससे लाभ होता है।

लक्षणावली।

मस्तक।—बीच बीचमें कभी कभी पैदा होनेवाला स्नायुशूल (Neuralgia)—शिरोपश्चातके दाहिने पार्श्वका—कान, आँखका गड्हा और हनुदेश तक फैला हुआ वेधनेकी तरह दर्द (बेल, कोलोसिन्थ); सड़ी भाफके कारण (चिनिनम-सल्फ; माथेके पश्चात-देशमें आकर दाहिनी आँखपर ठहर जाता है=सेङ्गिविन); और पित्त-मिला सरका दर्द (आइरिस, सेङ्गि, चियोनैन्थस)।

शक्ति।—२ री से ६ ठीं दशमिक विचूर्ण।

ऐम्पिलोप्सिस।

(AMPELOPSIS)

दूसरा नाम।—वार्जिनिया क्रीपर ; ऐमेरिकन आइवी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे और सतेज उद्भिदसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—शोथ, हैजा, उदरामय, स्वरभङ्ग, एकशिरा।

उपयोगिता और आभास।—मूत्रग्रन्थिकी बीमारीकी वजहसे उदाङ्गका शोथ, गण्डमाला दोषके कारण बालकोंका स्वरभङ्ग और दस्त के, आक्षेप आदि लक्षणोंकी यह एक लाभदायक दवा है।

सम्बन्ध।—इग्नूजा।

शक्ति।—२-६ शक्ति।

ऐम्फिसबिना।

(AMPHISBOENA)

दूसरा नाम।—ऐम्फिसबीना-वार्सिकुलरिस। सांपकी आकृतिवाली हाथ पेरसे हीन एक तरहकी छिपकिली।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके विषभरे जबड़ेसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—जबड़ेका फूलना, सर दर्द, हड्डीकी बीमारी, चर्म्मोद्भेद।

उपयोगिता और आभास।—जबड़े और हड्डीपर इसकी प्रधान क्रिया होती है और दाहिने अङ्गकी बीमारी पर ही इसकी ज्यादा क्रिया होती है। जबड़े विशेषकर दाहिने जबड़ेकी सूजनमें अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द और हवा तथा तरीमें बढ़नेके लक्षणमें विशेष लाभदायक है।

सर दर्दमें अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द और त्वचापर फुन्सियों जेसे दानेके लक्षण में यह बढ़िया काम करता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—क्राटेलस, लेपीडिया, नेजा, हेलोडर्मा, साइलिसिया।

शक्ति।—३०-२००।

ऐमिग्डेला ऐमेरा।

(AMYGDALAE AMARAE)

दूसरा नाम।—बिटर आलमण्ड (तीता बादाम)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसका विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है। इसके साथ जल संयोग क्रियाके द्वारा हाइड्रोसियेनिक ऐसिड तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—जिह्वामूल-ग्रन्थि (Tonsils) और गलनालीको नयी उपझिल्ली प्रदाहकी अवस्था विशेषमें यह बहुत लाभदायक है।

लक्षणावली ।

गलनाली ।—जिह्वामूल ग्रन्थिका प्रदाह (Tonsilitis),—जिह्वामूलके, पार्श्वकी, जिह्वामूलकी ग्रन्थि और उपजिह्वामें तेज दर्द और लाली पैदा हो जाती है. कोई चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है; कभी कभी तकलीफ इतनी ज्यादा हो जाती है, कि रोगी चिल्ला उठता है। इन लक्षणोंके मौजूद रहनेपर उपझिल्ली प्रदाह (Diphtheria) रोगकी पहली अवस्थामें, जब रोगी बहुत ही सुस्त और श्रान्त रहता है, उस समय इसका व्यवहार होता है।

प्रत्यङ्ग ।—सारे शरीरमें धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़न, बहुत देर तक यह अकड़न बनी रहती है और रोगी धनुषकी तरह पीछेकी तरफ टेढ़ा पड़ जाता है (Opisthotonos)। हाथ पैर शिथिल,—उठा रखनेपर किसी जड़ पदार्थकी तरह गिर जाते हैं (ओपि)। पैरमें झुनझुनी आ जाती है और चलता चलता ढुलक पड़ता है।

वक्षःस्थल ।—बाएँ स्तनके नीचे क्षणस्थायी सुई बेधनेकी तरह दर्द। इस दर्दकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ होती है। (ऐक्टिया-रेसि);

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—लोरोसि; ऐसिड-हाइड्रो, ओपियम, बेल, ऐरम ट्राइफि, एपिस, फाइटोलैक्का। स्ट्रैमो, टैबेकम, लैके, ऐण्टिम-टार्ट, नेजा (हृत्पिण्ड)।

दोषघ्न ।—ओपियम।

शक्ति ।—३ य दशमिकसे ३० शक्तितक।

ऐमिग्डेला पार्सिका।

(AMIGDALAE PERSICA)

दूसरा नाम।—पीचकी छाल।

उपयोगिता और आभास।—कितने ही तरहकी वमन रोगकी यह एक बहुत ही उत्कृष्ट औषधि है। खासकर गर्भावस्थामें, सबेरेके समयका वमन (सिम्फोरि-कार्पस, ऐपोमार्फिया, सिरियम-आक्सलेट, ऐसिड-कार्बोलिक), मूत्रस्थलीसे रक्तस्राव (टेरिबिन्थ, चिनिनम-सल्फ, हैमा, आर्निका)। बच्चोंके पाकाशयका विकार,—किसी तरहका खाद्य पदार्थ सहन नहीं होता (ऐल्नेट)

शक्ति।—मूल अर्क और १ म दशमिक क्रम।

ऐमिलेनम नाइट्रोसम।

(AMYLENUM NITROSUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रेट आव ऐमिल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नाइट्रिक ऐसिडके साथ ऐमिलिक सुरासारका संमिश्रण होनेपर यह रासायनिक पदार्थ तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—हृत्शूल ; वक्षका स्नायुशूल ; लज्जाके कारण गाल या चेहरा लाल हो जाना ; ताण्डव ; मृगी ; मस्तक आदिमें खूनका दबाव ; सर दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; मूर्च्छावायु ; सर्द गर्मी।

उपयोगिता।—स्नायु-प्राधान्य, मेदाधिक्य धातुवाली वयःसन्धि काल प्राप्त स्त्रियोंकी बीमारीमें उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास।—इस उड़जानेवाले (Volatile) पदार्थको सूंघनेपर शरीरकी छोटी धमनियाँ और कैशिक नाड़ियाँ सब फैलती हैं और इसी वजहसे रक्तसञ्चय अधिक होता है और चेहरा लाल तथा माथा प्रभृति स्थान गर्म हो उठते हैं। वयःसन्धिके समय मुखमण्डल और मस्तकमें अधिक रक्तसञ्चय होता है, बहुत तरहकी व्याकुलता मालूम होती है और इससे हृत्पिण्डका स्पन्दन आदि अच्छा हो जाता है। हिचकी, जम्हाई और प्रत्यङ्गोंका

फैलना (Stretching) (चेलिडोन) । अपस्मार या मृगीका आक्रमण (Epileptic Fits) में क्षणिक लाभ होता है। कितने ही दुरारोग्य रोगोंमें यह क्षणिक उपकारक औषध (Palliative) के रूपमें व्यवहृत हुआ करता है और एकाएक श्वास-रोध हो जानेकी वजहसे मृत्युमें यह प्रायः प्राणदान दिया करता है।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—हमेशा आसन्न विपत्तिकी आशङ्का (ऐमोन-का, ऐक्रिया ऐसिड-हाइ, लोरोसि, लिलि-टाई, वेलि) ; निर्मल वायु सेवनका आग्रह, रोगी शरीरका ओढ़ना उतार फेंकता है, और घोर जाड़ेमें भी खिड़की आदि खोल देता है (आर्जेण्ट-नाइ, लैके, सलफर, ऐको) ; माथा और मुखमण्डलकी ओर बड़े वेगसे खून दौड़ता है, (वेल, ग्लोनोइनम)। उत्तापका सञ्चार (Flushigs) मुखमण्डल पाकाशय वगैरहसे आरम्भ होता है, और इसके बाद गर्मी और बहुत ज्यादा पसीना होता है (ऐको) ; निचले प्रत्यङ्ग आदि बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं और इसीके अनुसार बहुत अधिक सुस्ती भी आ जाती है, थोड़ीसी मानसिक उत्तेजना होनेपर भी चेहरा तमतमा उठता है और गर्म हो जाता है (कोका, फिरम); बिना किसी कारणके ही चेहरा लाल हो जाना (Blushing) पुरानी या नयी अवस्था ; सरमें चक्कर आना,—नाव या जहाज आदिमें समुद्रमें भ्रमण करनेकी वजहसे। अधकपारीका दर्द [Hemicrania]—रोगवाला पार्श्व रक्तशून्य और मलिन मालूम होता है।

कण्ठ ।—गर्दनपर पहना हुआ कोई अलंकार या कपड़ा बहुत कसा हुआ मालूम होता है। जबतक नहीं खोल देता है, तबतक व्याकुल रहता है [लैके]।

श्वास-यन्त्र और हृत्पिण्ड ।—हृत्शूल [Angina Pectoris] हृत्पिण्डकी गति प्रबल वेगशाली , हृत्पिण्ड और ग्रीवा पार्श्ववाली [Carotid] धमनी दोनोंमें भयानक टपक ; हृत्पिण्डका दृढ़ आवद्ध भाव और दर्द (कैक्टस): श्वासकृच्छ्रता और दमा ; छातीके भीतर पूर्णता और दबाव मालूम होना । हूप-खांसी :—क्षणभर रहनेवाली और श्वास-रोध कर देने वाली [ड्रुसिरा, काक्टस-कैक्टाई]। थोड़ी भी मानसिक उत्तेजना होनेपर कलेजा धड़कता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रसवके बादका दर्द और चेहरा लाल अर्थात चेहरा लाल हो जाता है (Blushing)। इसके साथ ही रक्तस्राव। वयःसन्धि-कालीन [Climactric] सिरका दर्द और मस्तिष्कमें उत्तापका पैदा होना; मानसिक यन्त्रणा और उसके साथ ही हृदकम्पन। सन्तान भूमिष्ट होते ही प्रसवान्तिक आक्षेप [Convulsion] = साइक्युटा, जेल्सि, ऐसिड-हाइड्रो।

प्रत्यङ्ग। – बहुत देरतक बार बार प्रत्यङ्गोंको फैलाना [Stretching] या अँगड़ाई लेना—इससे तृप्ति नहीं होती; पलङ्ग पकड़कर हाथ पैर खींच देनेके लिये दूसरे आदमियोंकी सहायता चाहता है। बार बार और गहरी जम्हाई लेना (कैलि-का), हाथकी शिराएँ सब फूल [मार्क-पेरेन, लीरो] जाती हैं और अँगुलीके अगले भागतक टपकका दर्द होता है।

वृद्धि।—शारीरिक और मानसिक परिश्रमसे और गर्म कमरेमें रहनेके समय।

सम्बन्ध।—सदृश।—बेल, कैक्टस, कोका, फेरम, ग्लोनोइनम और लैकेसिस।

दोषघ्न या प्रतिविष।—कैक्टस, आर्गट (आक्षेप-विकारमें स्ट्रिकनिया)।

शक्ति।—सूंघनेसे बहुत जल्दी लाभ होता है। जब कि बेहोश करनेवाली दवाकी शक्तिकी वजहसे कोई रोगी क्रमशः सुस्त हो पड़ता है, उस समय यह एक उत्कृष्ट उत्तेजक और फिरसे जिला देनेवालोंका काम करती है। इसका मूल अरिष्ट थोड़ी देरके लिये आराम पहुँचानेमें समर्थ (Paliative) है और इसीलिये, उसका बार बार प्रयोग करना चाहिये। उच्चतम क्रममें प्रयोग करनेपर इससे रोग आरोग्य हुआ करता है। क्रम या शक्तिको उच्चताके अनुसार पूरा या अधूरा आरोग्य या स्थायी उपकार हुआ करता है।

सूंघनेके लिये २ से ५ बूंद—रूमालमें डालकर सूँघना चाहिये।

ऐनाकार्डियम ओरियण्टेलि।
(ANACARDIUM ORIENTALE)

दूसरा नाम।—भल्लातक या भेलावा,—जिसके रससे धोबी कपड़ेपर चिह्न लगाते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसका विचूर्ण या टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—शराब पीनेका दुष्परिणाम;—सं न्यास; मस्तिष्ककी क्लान्ति; कब्जियत; खाँसी; दुर्बलता; अजीर्ण; खसड़ा; अर्श (बवासीर); सरका दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; व्याधि शङ्का; मूर्च्छा वायु; उन्माद रोग; स्मरण-शक्तिकी कमजोरी; हृत्कम्पन; पक्षाघात; वात; कृत्रिम मैहका दुष्परिणाम; चर्म्म-रोग; मेरुदण्डकी बीमारी; गर्दन अकड़ना; गर्भिणी का वमन; क्रुप खाँसी (कुकुर खाँसी); मसे; लिखनेवालोंका हाथ काँपना।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायविक विकारकी वजहसे अजीर्ण रोग, स्मरण शक्तिमें गड़बड़ी, निममंता और उत्तेजित प्रकृति; काम-काजमें उदासीनता; आत्म-विश्वासका न रहना और शपथ खाने और लोगोंको दुर्वचन कहनेकी अनिवार्य इच्छा; ऐसा मालूम होना कि शरीरके किसी न किसी द्वारमें कील ठोंकी हुई है और माथा प्रभृति किसी बन्धनसे घिरे हुए हैं— पाकाशयका खाली मालूम होना; खा लेनेबाद सब तरहकी गड़बड़ीका कुछ दब जाना,—ये ही कई ऐनाकार्डियमके सर्वश्रेष्ठ प्रकृतिगत और अव्यर्थ सिद्धि-प्रद लक्षण माने जाते हैं। सुन्न भये हुए अंशमें मानों सुई गड़ी हुई है—ऐसा ही मालूम होता है। जगह जगहपर पैदा हुए जखमोंपर ऊँची पपड़ी जमी रहती है और स्पर्श ज्ञानसे रहित होती है—इत्यादि लक्षण तथा कुष्ठ आदि चर्म-रोगोंमें अवश्य लाभ करता है। नीचे लिखे कई लक्षण भी इसके अव्यर्थ निर्णायक हैं:—रोगी इस संसारमें किसीका भी विश्वास नहीं करता; अपनेको हमेशा रोग ग्रस्त समझता है; उसमें अपने दायित्व या जिम्मेदारीका ज्ञान नहीं रहता। सरमें दर्द,—भोजन करते ही, पर थोड़ी देरके लिये, बन्द हो जाता है; मानसिक या शारीरिक परिश्रम करते ही बढ़ जाता है। रोगी बहुत घबड़ाया हुआ;—खाना-पीना बहुत जल्दी और त्रस्त-भावसे करता है। कब्जियत,—रोगी समझता है, कि उसकी मलनालीमें एक कील ठोंकी हुई है और इसीलिये मल नहीं निकल सकता है। सारे शरीरमें दुर्दमनीय खुजलाहट,— एक तरहके विषके जैसे घाव निकलते हैं।

लक्षणावली

मन ।—समझता है, कि दूर देशोंमें रहनेवाले माता, भ्राता वगैरहका कण्ठ स्वर सुन रहा है। (कैमो); मानो उसकी दो तरहकी मतियां हैं,—एक

काममें लगाना चाहती है और दूसरी कामसे हटाना। मानो वह जगतसे अलग है। उसका शरीर और आत्मा अलग अलग वास करते हैं। [थूजा] सभी विषय सपनेमें देखते हुएसे मालूम होते हैं; चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसका पीछा कर रहा है (केलि-ब्रोम); सबपर सन्देह करता है, सबपर ही अविश्वास करता है। [हायो]। अद्भुत प्रकृति,—हँसनेकी बातमें तो गम्भीर हो जाता है और गुरुतर विषयोंमें दिल्लगी करता है। अर्श और कब्जियतमें तो उसे व्याधि-शङ्का घेरे रहती है; अवसाद वायु-ग्रस्त रहता है। (Hypocondriasis)। दुर्वृत्त स्वभाव। बुरे कामोंमें खूब अधिक आसक्ति। शपथ खाने और गाली गलौज करनेकी अनिवार्य इच्छा (लैक-कैन, लिलि-टाइ, नाइट्रिक-ऐसिड)। सभी इन्द्रियोंकी दुर्बलता। अपनेको राक्षस या बहुत भारी बदमाश समझता है। समझता है, कि उसके शरीरका कोई खास अंश बन्धनी द्वारा घिरा हुआ है (कैक्टस, ऐसिड-कार्बोलिक, सलफर)। या किसी भोथरे दाँतमें कोई खास अंग दबाया जा रहा है; मानो शरीरके किसी एक द्वारमें कील ठोंकी हुई है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—सामने, दृष्टि-पथमें अन्धेरा छा जाता है (फेरम, मार्क): चलने अथवा सर झुकानेपर मानो रोगी और उसके चारो ओरके पदार्थ ढुलक रहे हैं; झुका हुआ माथा उठानेके साथही ऐसा मालूम होता है मानो बाईं ओर घूमकर गिर पड़ेगा। मानसिक परिश्रम करनेपर ललाट, कनपटी [Temples], सरके पिछले भागमें छेदने और दबानेकी तरह दर्द मालूम होता है। सर दर्द,—भोजन करते ही एकदम आराम हो जाता है, परन्तु यह आराम होना स्थायी नहीं होता [एपियम ग्रैवि, कैल्के-फास, सोराइन], शय्यापर सोनेके समय और जब नींद आने लगती है; शरीर हिलाने और परिश्रम करनेपर बढ़ना। आलस्यमय जीवन बितानेवालोंके पाकाशय और स्नायुमें विकार हो जानेकी वजहसे सर-दर्द (आर्जेण्ट-नाई, ब्राई, नक्स)

आंख।—धुँधला देखना। दीयेके लौके चारो ओर शोभा या दीप्ति दिखाई देती है। ऐसा मालूम होता है कि भवोंपर भोथरे अस्त्रसे बेधा जा रहा है।

कान।—कर्ण-विवर (कानका छेद) में भोथरे यन्त्रसे छेदनेकी तरह दर्द। छेदने या सुई बेधनेकी तरह दर्द,—कोई चीज निगलनेके समय बढ़ना। कर्ण-स्राव, बहरापन।

नाक ।—हमेशा कबूतर या मुर्गेकी मलकी तरह गन्ध आया करती है। सर्दी,—पानीकी तरह श्लेष्मा ; आँसू बहना और बार बार छींक। (सिपा; युफे्शिया ; साइक्लामेन) नाकसे खून गिरना ; सूँघनेकी शक्तिका घटना।

मुखमण्डल और मुखविवर ।—आँखें नीली और काले घेरेसे घिरी। चेहरा मलिन और उतरा हुआ। किसी चीजका स्वाद नहीं मिलता। मुंहसे बदबू निकलती है, पर रोगी उसे स्वयं अनुभव नहीं करता; जीभ फूली मालूम होती है,—इस सूजनकी वजहसे बोली साफ नहीं निकलती ; (बैप्टि, ऐ-फास, नैट्र-मयू)।

दांतका दर्द ।—मुंहमें गर्म पानी लेनेपर दाँतका दर्द बढ़ना (ठण्डी चीज छू जानेपर=काफि, पल्स, नक्स ; गर्म द्रव्य=ब्राई, कैमो)। खाने पीनेके समय अकसर छातीमें ग्रास अटक जाता है और श्वास रुकनेकी तैयारी हो जाती है (कैनाबि-सैट, कैवा-कैवा, ऐसिड-नाई) ; खाने पीनेकी चीजें बड़ी घबड़ा-हटसे निगलता है (बेल, काफि, हिप, प्लैट); भोजन करने बाद सब लक्षण घट जाते हैं। (कैलि-फास, सोराइन)।

पाकाशय ।—सब तरहके रोग लक्षण खाने बाद घटते हैं, पर दो घण्टे बाद ही फिर पैदा हो जाते हैं (खाई हुई चीज पच जाने बाद अर्थात भोजनके दो तीन घण्टे बाद लक्षण घटते हैं=नक्स)। पेट खाली रहनेपर ऐसा मालूम होता है मानो बहुत दिनोंतक उसने भोजन नहीं किया हो। भोजनके बाद घटना (चेलिडोन, आयोड); पचनेकी क्रिया होनेके समय घटना (भोजनके बाद या जबतक पच नहीं जाता, तबतक लक्षणोंका बढ़ना—ब्राई, नक्स) ; डकार,—शून्य ; कभी कभी गलेमें पानी चढ़ आता है; पाकाशयमें क्षण भरके लिये दर्द। छातीमें जलन—मांसका शोरवा वगैरह पीनेकी वजहसे रोग होनेपर ; पाकाशयसे लेकर तालुमूलतक जलन (कैलि-कार्ब, नैट्र-म्यू, सिनैबिस) मालूम होना।

तलपेट ।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसी भोथरी सलाईसे आंतें बेधी जा रही हैं; आँतोंका बोलना या पेट गड़गड़ाना (Borboryg-mi)। ऐसा मालूम होता है मानो पेट मरोड़ रहा है। पाखानाका वेग बहुत अधिक होता है, पर पाखाना फिरनेकी चेष्टा करने या पाखाना जानेपर बिलकुल ही वेग नहीं रहता ; मलान्त्र मानो शक्तिहीन या निष्क्रिय हो पड़ा है, मानो खील ठोका हुआ है (वेग यथेष्ट होता है, परन्तु मल थोड़ा ही

निकलता है=नक्स); कोमल मल भी भरपूर वेग दिये बिना नहीं निकलता (हिपर, सिलि, ऐल्यू, प्लाटिना, वेरेट) खूनी या बादी बवासीर—बहुत दर्द रहता है (ऐसिड-नाइ, हाइपेरि, रैटान)।

मूत्रयंत्र।—गदला पेशाब या बहुत अधिक पानीकी तरह पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियमें बहुत उत्तेजना। दिनमें उत्तेजनाके अलावा लिङ्गमें कड़ापन। कामोत्तेजना पैदा करनेवाली खुजलाहट।, इन्द्रियोंमें उद्दीपना पैदा होनेवाला सपना देखनेके बिना भी वीर्य-स्खलन हो जाना। पाखाना फिरनेके समय मूत्रनालीकी मुखशायी ग्रन्थि-रस (Prostratic Fluid) का स्राव (ऐल्यूमिना देखो)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—थोड़ा आर्त्तवका स्राव। प्रदर,—त्वचा क्षय करनेवाला (क्रियो, युपियोन), खुजलानेवाला स्राव।

श्वास-यंत्र।—भीतरी उत्ताप और पित्तजनक यन्त्रणाके साथ वक्षःस्थल और हृत्पिण्डमें दर्द। दबाव मालूम होना, रोगीको ऐसा श्वास-कष्ट हो जाता है, कि उसे निर्मल वायु सेवनके लिये तेजीसे घरके बाहर दौड़ जाना पड़ता है (ऐमिल, लैके)। खांसी,—बोलने और अवाध्य बच्चोंके क्रोध प्रकट करनेपर बढ़ना।

प्रत्यङ्ग।—पक्षाघात रोगके बादकी (Post Paralytic) कमजोरी। जानु देश सुन्न हो जाता है। पैरकी पोटली (Calves) में ऐंठन होती है (ऐम्ब्रा, एमोन-का, कैम्फो, क्यूप्रम); नितम्बकी पेशीमें कांटा गड़ने जैसा मालूम होता है। तलहत्थीमें मसे। (नेट्र-म्यू) बाईं बांहमें झुनझुनी पैदा हो जाती है।

त्वचा।—बहुत खुजलाहट; छालेकी तरह उद्भेद; सूजन; पीत-पार्णिका या पित्ती निकलना (Urticaria) या आमवात। छाला,—पीला, सफेद रस-स्राव करनेवाला; निकला हुआ रस हवामें सूख जाता है और पपड़ी जम जाती है। कुष्ठ-व्याधि—सुई वेधनेकी तरह मालूम होना, रोगवाली जगह बरफकी तरह ठण्डी; लाल, कड़ी पपड़ीसे ढकी; स्पर्श-ज्ञान-रहित।

निद्रा।—सच्ची घटनाकी तरह स्वप्न। दिन रात रोगी अघोरावस्थामें पड़ा रहता है। कितनी ही तरहके भयानक सपनेसे भरी नींद।

नाक ।—हमेशा कबूतर या मुर्गेके मलकी तरह गन्ध आया करती हैं। सर्दी,—पानीकी तरह श्लेष्मा ; आँसू बहना और बार बार छींक। (सिपा ; युफे शिया ; साइक्लामेन) नाकसे खून गिरना ; सूँघनेकी शक्तिका घटना।

मुखमण्डल और मुखविवर ।—आँखें नीली और काले घेरेसे घिरी। चेहरा मलिन और उतरा हुआ। किसी चीजका स्वाद नहीं मिलता। मुंहसे बदबू निकलती है, पर रोगी उसे स्वयं अनुभव नहीं करता ; जीभ फूली मालूम होती है,—इस सूजनकी वजहसे बोली साफ नहीं निकलती ; (बैप्टि, ऐ-फास, नेट्र-मयू)।

दांतका दर्द ।—मुंहमें गर्म पानी लेनेपर दाँतका दर्द बढ़ना (ठण्डी चीज छू जानेपर=काफि, पल्स, नक्स ; गर्म द्रव्य=ब्राई, कैमो)। खाने पीनेके समय अकसर छातीमें ग्रास अटक जाता है और श्वास रुकनेकी तैयारी हो जाती है (कैनाबि-सैट, कैवा-कैवा, ऐसिड-नाई) ; खाने पीनेकी चीजें बड़ी घबड़ाहटसे निगलता है (बेल, काफि, हिप, प्लैट) ; भोजन करने बाद सब लक्षण घट जाते हैं। (कैलि-फास, सोराइन)।

पाकाशय ।—सब तरहके रोग लक्षण खाने बाद घटते हैं, पर दो घण्टे बाद ही फिर पैदा हो जाते हैं (खाई हुई चीज पच जाने बाद अर्थात भोजनके दो तीन घण्टे बाद लक्षण घटते हैं=नक्स)। पेट खाली रहनेपर ऐसा मालूम होता है मानो बहुत दिनोंतक उसने भोजन नहीं किया हो। भोजनके बाद घटना (चेलिडोन, आयोड) ; पचनेकी क्रिया होनेके समय घटना (भोजनके बाद या जबतक पच नहीं जाता, तबतक लक्षणोंका बढ़ना—ब्राई, नक्स) ; डकार,—शून्य ; कभी कभी गलेमें पानी चढ़ आता है ; पाकाशयमें क्षण भरके लिये दर्द। छातीमें जलन—मांसवा शोरवा वगैरह पीनेकी वजहसे रोग होनेपर : पाकाशयसे लेकर तालुमूलतक जलन (कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यू, सिनेबिस) मालूम होना।

तलपेट ।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसी भोथरी सलाईसे आंतें बेधी जा रही हैं ; आँतोंका बोलना या पेट गड़गड़ाना (Borborygmi)। ऐसा मालूम होता है मानो पेट मरोड़ रहा है। पाखानाका बेग बहुत अधिक होता है, पर पाखाना फिरनेकी चेष्टा करने या पाखाना जानेपर बिलकुल ही बेग नहीं रहता ; मलान्त्र मानो शक्तिहीन या निष्क्रिय हो पड़ा है, मानो खोल-ठोका हुआ है (बेग यथेष्ट होता है, परन्तु मल थोड़ा ही

निकलता है=नक्स); कोमल मल भी भरपूर वेग दिये विना नहीं निकलता (हिपर, सिलि, ऐल्यू, प्लाटिना, वेरेट) खूनी या बादी बवासीर—बहुत दर्द रहता है (ऐसिड-नाइ, हाइपेरि, रैटान)।

मूत्रयंत्र।—गदला पेशाब या बहुत अधिक पानीकी तरह पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियमें बहुत उत्तेजना। दिनमें उत्तेजनाके अलावा लिङ्गमें कड़ापन। कामोत्तेजना पैदा करनेवाली खुजलाहट। इन्द्रियोंमें उद्दीपना पैदा होनेवाला सपना देखनेके विना भी वीर्य-स्खलन हो जाना। पाखाना फिरनेके समय मूत्रनालीको मुखशायी ग्रन्थि-रस (Prostratic Fluid) का स्राव (ऐल्यूमिना देखो)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—थोड़ा आर्त्तवका स्राव। प्रदर,—त्वचा क्षय करनेवाला (क्रियो, युपियोन), खुजलानेवाला स्राव।

श्वास-यंत्र।—भीतरी उत्ताप और पित्तजनक यन्त्रणाके साथ वक्षःस्थल और हृत्पिण्डमें दर्द। दवाव मालूम होना, रोगीको ऐसा श्वास-कष्ट हो जाता है, कि उसे निर्मल वायु सेवनके लिये तेजीसे घरके बाहर दौड़ जाना पड़ता है (ऐमिल, लैके)। खाँसी,—बोलने और अबाध्य बच्चोंके क्रोध प्रकट करनेपर बढ़ना।

प्रत्यङ्ग।—पक्षाघात रोगके बादकी (Post Paralytic) कमजोरी। जानु देश सुन्न हो जाता है। पैरकी पोटली (Calves) में ऐंठन होती है (ऐम्ब्रा, एमोन-का, कैम्फो, क्यूप्रम); नितम्बकी पेशीमें कांटा गड़ने जैसा मालूम होता है। तलहत्थोंमें मसे। (नेट्र-म्यू) बाईं बांहमें झुनझुनी पैदा हो जाती है।

त्वचा।—बहुत खुजलाहट; छालेकी तरह उद्भेद; सूजन; पीत-पार्णिका या पित्ती निकलना (Urticaria) या आमवात। छाला,—पोला, सफेद रस-स्राव करनेवाला; निकला हुआ रस हवामें सूख जाता है और पपड़ी जम जाती है। कुष्ठ-व्याधि—सुई वेधनेकी तरह मालूम होना, रोगवाली जगह बरफकी तरह ठण्डी; लाल, कड़ी पपड़ीसे ढकी; स्पर्श-ज्ञान-रहित।

निद्रा।—सच्ची घटनाकी तरह स्वप्न। दिन रात रोगी अघोरावस्थामें पड़ा रहता है। कितनी ही तरहके भयानक सपनोंसे भरी नींद।

ज्वर ।—नाड़ी तेज ; शीत ; भीतरी उत्ताप ; रातके समय पसीना इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—सदृश—कैमो-ला, रास-टक्स, एण्टि-टार्ट, एपिस, फेरम, आयोड, लाइको, नाइट्रिक-एसिड ; नक्स, फास्फोरिक-एसिड, पल्स, नेट्रम, यूजा प्रभृतिके साथ तुलनीय । यह रासका दोषघ्न है और काफियासे प्रतिषेधित होता है ; लक्षण आदि दाहिनी ओरसे बाईं ओर फैल जाते हैं। (लाइको) ।

लाइकोपोडियम और पल्सेटिलाके बाद ऐनाकार्डियमका प्रयोग होता है। प्लाटिना एनाकार्डियमके बाद और पहले, दोनों ही समय व्यवहारमें बहुत फायदेमन्द है ।

शक्ति ।—६ ठे से १००० क्रमतक व्यवहारमें आता है ।

ऐनाकार्डियम आक्सिडेण्टेल ।

(ANACARDIUM OCCIDENTALE)

प्रभेद ।—एनाकार्डियम ओरियेण्टलि देखनेमें हृत्पिण्डकी तरह है (Heart shaped) ; पर यह एनाकार्डियम आक्सिडेण्टल देखनेमें मूत्र-ग्रन्थि या मसानेकी तरह (Kydney shaped) होता है ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके भीतरी और बाहरी आवरणसे जो काला रस निकलता है । उसीसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—डा० क्लार्क कहते हैं, कि यह नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—गट्ठे, विसर्प ; खुजली ; मस्तिष्ककी सूजन ; रास-टक्सकी विषाक्तता ; दाद ; चेचक ; मसे इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—एनाकार्ड, रास-टक्स, कैन्थ, मेजे, क्रोटोनके साथ तुलनीय ।

दोषघ्न ।—रास-टक्स ।

ऐनागैलिस आर्वेन्सिस ।

(ANAGALLIS ARVENSIS)

दूसरा नाम ।—वेदर ग्लास (Weather glass) ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस पौधेके समूचे अंशसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—यह नीचे लिखे रोगोंमें फायदेमन्द है—चीण दृष्टि ; आँखोंमें जाला ; कब्जियत ; शोथ ; मृगी ; नाकसे खून गिरना ; प्रमेह ; वात ; अर्श ; सर-दर्द ; मूर्च्छा-वायु ; अवसाद-वायु ; उन्माद ; स्नायु-शूल ; दाद वगैरह चर्मरोग ; उपदंश ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—त्वचापर ही इसकी प्रधान क्रिया है । वात और सन्धिवात वगैरह रोगमें लक्षणके अनुसार प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है। मूत्रनालीमें कामोद्दीपक खुजली इसका एक निर्णायक लक्षण है ।

लक्षणावली ।

मन और मस्तक ।—बहुत आनन्द । डकार या आँतोंमें गड़गड़ाहटके साथ आँखके गोलेपर (Supra-Orbital) सरमें दर्द ; काफी पीनेसे घटना । मुखमण्डलकी पेशियोंमें दर्द मालूम होना । समूचे शरीरमें दर्दके साथ, सरमें दर्द और मिचली । दाहिनी गण्डास्थिसे लेकर भवोंतक फैलनेवाला मुखका स्नायुशूल—रातमें बढ़ना । मुखमण्डलपर एक तरहकी खुजली चकत्तेके रूपमें निकलती है ।

पेशाब ।—मूत्रनालीमें एक तरहकी कामोद्दीपक खुजली मालूम होना, पेशाबके समय जलन होती है, और मूत्रद्वार जुड़ जाता है । (क्यूप्रम) पेशाबकी धार कितनी तरहसे विभक्त होकर निकलती है (आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-सैट, कैन्थ, मार्क, रास) ; जोर लगाये बिना पेशाब ही नहीं होता ।

प्रत्यङ्ग ।—वातादि आन्वित वेदना । कन्धे और बाहुमें दर्द मालूम होना । अंगूठेके कोमल स्थानमें और अंगूठेमें ऐंठन । अंगुलियोंकी सन्धियाँ वातकी वजहसे फूल जाती हैं । बाएँ कन्धे से गर्दनतक अकड़ जाता है ।

त्वचा ।—खुजली, सूखे धान आदिकी भूँसीकी तरह आवरणवाले उद्भेद (Eruption) ; खासकर हाथ और अंगुलियोंमें । तलहत्थीमें बीमारी सबसे अधिक होती है । काठकी सींक आदि गड़नेपर इसके सेवनसे निकल जाती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—साइला ; काफिया (आनन्द), लिथिक-ऐसिड (चर्म) ; सीपिया, टेल्यू (दाद), पल्स, रास्टक्स ।

शक्ति ।—१ ला दशमिकसे लेकर ६ ठा दशमिक क्रम ।

ऐनान्थेरम म्यूरिकेटम ।

(ANANTHERUM MURICATUM)

दूसरा नाम ।—Cuscus grass (एक तरहका घास ।)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसकी जड़से मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें फलप्रद है:— फोड़ा ; स्वरलोप ; व्रण ; कर्कटका जखम ; विसर्प ; ग्रन्थि-स्फीति ; (गांठोंका फूलना) ; जलातङ्क ; उपदंश ; कितनी ही तरहके आक्षेप और अर्बुद ; जखम ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक तरहकी मतवालापन जैसी अवस्था उत्पन्न कर देता है ; खुजली ; दाद ; फोड़े और जखम आदि रोगोंकी यह एक महौषधि है । शरीरके कितने ही अंशोंमें पीब पैदा होनेवाली सूजन और ग्रन्थि वगैरहके प्रदाहमें भी इसका व्यवहार प्रसिद्ध है । खास खास लक्षणोंमें प्रमेह रोगमें भी यह फायदा करती है ।

लक्षणावली ।

मन ।—अवसाद वायु ग्रस्त (अर्थात हमेशा यह चिन्ता बनी रहती है, कि मैं बीमार हूँ), समाज-भय—जहाँ दस आदमी रहते हैं, वहां नहीं जाना चाहता (अरम, बेराइटा, साइक्यूटा, कैलि-ब्राई, लाइको, सिपिया ; स्टैन, सल्फर) ; निर्जनता प्रिय (आर्निका, कैम्फि, कार्बो-ऐन, ऐक्टिया, जेल्स, इग्ने, नैग-म्यू, बायो, आक्साइको, सिपि, थूजा) अपने आत्म महत्वका बहुत अधिक

श्लान अर्थात अहमन्यता (ऐनहैलो ; प्लाटिनम)। अपनी प्रकृति और कामोंसे बहुत ही सन्तुष्ट।

मस्तक।—सरमें दर्द,—ऐसा अनुभव होना मानो माथेमें एक सूक्ष्म तीर विध रहा है (ऐस्क्लिपियस-सिरि) तीसरे पहरकी वृद्धि। भवोंके बीचमें मसेकी तरह उद्भेद। नाकके अगले भागमें फोड़ा और अर्बुद, खून अधिक सञ्चय होनेके साथ सरमें चक्कर—पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम।

पेशाव।—लिङ्गोद्रेकके साथ पीली आभा लिये या हरे रङ्गका गाढ़ा पीवका स्राव; मूत्रनालीमें जलन और छेदनेकी तरह तकलीफ; पुट्ठे या वंक्षण-प्रदेशीय ग्रन्थिका (Inguinl Glands) प्रदाहके साथ शिश्नका प्रदाह और सूजन। वारवार पेशावका वेग—मूत्राशयमें थोड़ा भी पेशाव सञ्चय होनेपर पेशावका वेग होने लगता है।

मल।—बहुत दिनोंकी कब्जियत (प्लाटिना, प्लम्बम, हाइड्रैस्टिस कास्टिकम); इसके बाद सूखा, भूरा और बहुत ज्यादा परिमाणमें पाखाना होता है,—इसके बाद ही पतले दस्त आने लगना। मल बड़ा, कड़ा और गाँठ गांठ (ब्राई, ओपि); मलद्वारमें असह्य खुजलाहट (बाहरी जननेन्द्रियमें खुजलीके साथ=ऐम्ब्रा ; कृमिकी वजहसे उत्पन्न=टियुक्रियम ; कृमिसे उत्पन्न बोखारके साथ=सिना ; मलनाली और मलद्वारमें भयानक खुजलाहट=इग्ने ; पाखाना होने बाद और हवा खानेके लिये टहलते समय=ऐसिड-नाई ; खुजली और जलन ; ऐल्यूमिना ; रातमें जलन और खुजली=ऐग्रिक्स ू ड)।

सम्बन्ध।—प्लैटिना, स्टैन, थूजा।

शक्ति।—२ रे दशमिकसे ६ ठों दशमिक क्रम।

ऐन्सिस्ट्रोडन कांण्टर्ट्रिक्स।

(ANCESTRODON CONTORTRIX).

"सेड्रिस- कण्टर्टिक्स" देखिये।

ऐङ्गोफोरा।

(ANGOPHORA)

दूसरा नाम।—ऐङ्गोफोरा—लैन्सियोलेरा ; रेड-गाम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विशुद्ध गोंदसे विचूर्ण या अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बार बार मलवेग। ऐसा मालूम होना, कि आँतें मलद्वारकी राहसे बाहर निकल पड़ेंगी, पेटमें दर्द, लम्बे-लम्बपर होकर सो जानेपर कूँथन और दर्दका घटना लक्षणवाले आमाशय रोगमें और बहुत अधिक कब्जियत—कड़ा खून-भरा मल लक्षणोंमें कब्जियत रोगमें लाभ करता है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—इपिकाक।

शक्ति।—६-३०।

ऐङ्गष्टुरा-स्पुरिया।

(ANGUSTURA SPURIA)

"ब्रूसिया—ऐण्टि-डिसेण्टरिका" देखिये।

ऐङ्गस्टियुरा वेरा।

(ANGUSTURA VERA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—छालसे विचूर्ण और टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—हड्डीमें दर्द ; हड्डीका क्षय रोग ; अतिसार ; चोट ; सविराम ज्वर ; निकट दृष्टि दोष ; धनुष्टङ्कार ; दाँतका दर्द ; हूप खाँसी।

उपयोगिता और आभास।—यह उत्तेजना शील प्रकृतिवालोंके लिये उपयोगी है। इसका एक निर्णायक लक्षण है—काफी पीनेकी अत्यन्त

इच्छा। इसकी क्रियाका परिणाम यह होता है, कि पेशी और सन्धि-स्थानोंमें सङ्कोचन और अकड़न और चोटकी वजहसे पैदा हुआ दर्द और उस स्थानमें स्पर्श सहन न होना—खासकर कनपटी या शङ्खदेशमें और दोनों हनुकी बगलवाली पेशीमें मानो हनुस्तम्भ (Trismus) या जबड़े अटकना रोग पैदा हो जायगा ; धनुष्टङ्कार, पक्षाघात वगैरह भी इसके भीतर आ जाते हैं। कॉखनेके साथ बहुत पतला पाखाना और अत्यन्त वेगके साथ बहुत अधिक पेशाब होना भी इसका लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—क्रोधी प्रकृति—सामान्य कारणसे भी क्रोध आ जाता है; जब किसी तरहका मानसिक परिश्रम करना पड़ता है; उस समय बहुत मौजमें रहता है, पर पढ़ना आरम्भ करते ही सरमें चक्कर आना आरम्भ हो जाता और इसके बाद ही सो जाता है। बहुत अन्यमनस्क, नीच मन और आत्म-निर्भरता नहीं रहती।

मस्तक।—ऐसा गोलमाल भाव मानो नशा खाया है। कोई झरना, नदी या जल-राशि पार करनेके समय शरीर ढलमलाया करता है (लाइसिन) सन्ध्याके समय पीसनेकी तरह सरमें दर्दके साथ मूर्च्छाका उपक्रम। दोनों शङ्खदेश या कनपटीमें ऐसा दर्द मानो कुछ बेधा जा रहा है। आँखोंका प्रदाह, दोनों आँखें लाल, गर्मी और जलन भरी, रातमें आँख सट जाती है (युफ्रे)। तिमिर दृष्टि—चारों ओर अन्धेरा दिखाई देना। सब चीजें मानो बहुत दूर है (ऐक्, नक्स-मस)।

मुखमण्डल।—चेहरेपर नीली आभा, लाली और उत्ताप। गण्डा-स्थिके भीतर और चर्वण-पेशीमें अकड़न मालूम होना। कभी कभी वह दर्द आँखके गोलेके भीतर होकर कनपटी की ओर आता है। माथा झुकानेपर टहलनेके समय या मानसिक उत्तेजना पैदा हो जानेपर बढ़ जाना। हनुस्तम्भ (Trismus); ओठ दोनो खुलकर दांत बाहर निकल पड़ते हैं। (आक्षेपके अन्तमें भी कुछ देरतक चेहरा और दोनो ओंठ नीले मालूम होते हैं।)

श्वास-यंत्र।—वक्षोस्थि (Sternum) के नीचे एक तरहकी खुज-लाहटकी वजहसे बार बार खाँसी आती है; श्वासनालीमें गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा सञ्चित होता है। और बहुत कुछ चेष्टा करनेपर भी नहीं निकलता।

सवेरे श्वासनालीके गंभीरतम प्रदेशमें खाँसीका वेग होता है और पीली आभा लिये कफ (Sputa) । निकलता है। ऐसा दर्द होता है, मानो हृत्पिण्ड प्रदेशमें छुरी वेधी जा रही है। सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर या सीधे बैठनेपर या सन्ध्याके बाद बाईं करवट सोनेपर, हृत्पिण्डमें टपकका प्रचण्ड दर्द मालूम होता हैं। ऐसा मालूम होता है, कि मानो हृत्पिण्ड एकाएक फूल गया है और अत्यन्त मृत्यु-भय पैदा हो जाता है—बाईं करवट सोनेपर घटता है। हृत्पिण्डमें कष्टकर सङ्कोचन मालूम होता है।

जननेन्द्रिय ।—लिङ्गमुण्डमें इतनी अधिक कामोद्दीपक खुजली पैदा हो जाती है, कि जोरसे घसनेकी इच्छा होती है। ऋतु होनेके एक दिन पहले थोड़ासा सफेद श्लेष्मा निकलता है। जननेन्द्रियमें खुजलाहट।

मल ।—बार बार ऐसा वेग होता है, मानो पतला पाखाना होगा,—इसके साथ ही मुखमण्डलपर एकाएक ठण्डक मालूम होने लगना। पाखाना हो जाने बाद भी ऐसा मालूम होता है, मानो मलनालीमें और भी मल रह गया है तथा और भी पाखाना होगा। (नक्स-वोम)।

प्रत्यङ्ग ।—बाहु उरु और निचले पैरकी दीर्घास्थिमें जखम, अस्थि आवरक झिल्लीमें चोटके कारण पैदा हुआ दर्द और धनुष्टङ्कार (स्ट्रिकनो)—पेशी और सन्धियोंमें सङ्कोचन, अकड़न, दर्द और स्पर्शका सहन न होना वगैरह तकलीफें मालूम होना ; कनपटी या शंखदेशमें हनुकी बगलवाली पेशीमें इतनी अधिक खींचन मालूम होना और ऐसी अकड़न मालूम होना, मानो हनुस्तम्भ (Trismus या Lock-jaw) या जबड़े अटकनाकी बीमारी हो जायगी।

निद्रा ।—सन्ध्याके समय औंघाई, इसके बाद ही नींद।

ज्वर ।—तीसरे पहर ३ बजनेके समय भयानक कम्प,—प्यास, वमन इत्यादि।

सम्बन्ध ।—रियुटा (हड्डीमें), स्ट्रिकनिया, नक्सवोमिका, ब्रु सिया ; बेल ; ब्रायो ; कैमो, काफिया (दाँतका दर्द) ; इग्ने, नक्स (धनुष्टङ्कार) ; मार्क, फास, साइलि, पल्स, सीपिया।

दोषघ्न ।—काफिया द्वारा प्रतिषेधित होता है।

शक्ति ।—२ री दशमिकसे २०० शततमिक तक।

ऐन्हेलोनियम लिविनाई ।

(ANHALONIUM LEWINIE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गर्म पानीमें इसका मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—मस्तिष्ककी क्लान्ति; प्रलाप; सर-दर्द; भ्रम-पूर्ण चीजें देखना; अधकपारीका दर्द; मानसिक दुर्बलता और स्नायविक उत्तेजना; पक्षाघात; दृष्टिमें गड़बड़ी इत्यादि रोगोंमें यह लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—डा० क्लार्क कहते हैं—डा० हेलने जो लक्षण संग्रह किये हैं, उनसे मालूम होता है, कि कितनी ही रङ्ग-बिरङ्गी चमकीली मूर्त्तियां और दृश्य सब नाना प्रकारकी भाव भङ्गीसे आंखोंके सामने घूमा करते हैं और ये मूर्त्तियाँ सङ्गीतके ताल लयके अनुसार नाचा करती हैं—यह इसका एक आश्चर्य-जनक क्रिया-फल है। कितना समय बीत रहा है इसका ज्ञान न रहना, माथेके पश्चाद्भागमें दर्द, मस्तिष्कमें क्लान्ति-मालूम होना और मिचली इत्यादि, पेशियोंका स्पन्दन, जानु-देशका एकाएक फड़क उठना, उसमें जोरका झटका लगना (Knee-jerk) और सब पेशियोंकी क्रियामें विशृंखलता वगैरह इसके लक्षण हैं। आँख सम्बन्धी लक्षण आँख बन्द करनेपर बढ़ जाते हैं, मिचली सुस्ती वगैरह शरीरसे काम लेनेपर बढ़ते हैं और सभी लक्षण सोनेपर घट जाते हैं।

लक्षणावली ।

मन ।—जागनेवाली अवस्थामें सपने देखना। समय बहुत दीर्घ मालूम होना। बोलनेके समय भाव प्रकटकरनेवाले वाक्य याद नहीं आते। रोगी सबको सन्देह करता है और सभी विषयोंमें उसे मोह रहता है। समझता है कि उसके बन्धु उसका उपहास, कर रहे हैं (बैराइटा-का), उनपर अत्याचार करनेकी इच्छा, समझता है, कि उसमें न जाने कितनी ताकत और बुद्धि है; आत्म-महत्वज्ञान (ऐनाल्थेरम, प्लैट)।

मस्तक ।—ललाटके बाईं ओर सरमें दर्द—इसके साथ हो दृष्टि-शक्तिमें विकार, पश्चाद्भाग (Occipital) में सर दर्द। माथेके पिछले भागमें लगातार दर्द बना रहता है—४।५ दिनोंतक इतना अधिक दर्द कि काम नहीं कर सकता।

आंख।—लाल रङ्गसे रँगी मूर्त्तियाँ और दृश्य हँसानेवाले भावसे, उसकी आँखोंके सामने नाचा करती हैं और गाने-बजानेके ताल लयपर नाचा करते है; आँख खोलनेपर बिलकुल ही नहीं रहते,—दूसरा आकार धारण करते हैं। आँखकी पुतली फैल जाती है।

सम्बन्ध।—सदृश—कैनाबिस-इन (समय और बुद्धिमें गड़बड़ी); जेल्स; (दृष्टि शक्तिकी टेढ़ी और लगानेकी शक्तिका गायब हो जाना); बेल; स्ट्रैमो; ओपि; पिकरिक-ऐसिड; प्लैट [सब चीजें छोटी देखता है]; सोराइन।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे ३ री और ६ ठी दशमिक शक्ति।

ऐनाइसम स्टेलेटम।

(ANISUM STELLATUM)

दूसरा नाम।—इलिसियम [Illicium] या ऐनिसेटम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—सर्दी; शूल; खाँसी; खून मिली खाँसी; फेफड़ेकी बीमारी; पाकस्थलीकी सर्दी; सन्धिवात; उदरदेशमें दर्द वगैरहमें फलप्रद है।

उपयोगिता और आभास।—क्षयकास तथा और और तरहकी खांसीकी बीमारीमें भी तृतीय पञ्जरास्थिके पास दर्द इसका एक निर्णायक लक्षण है। पेटमें वायु होना और "त्रैमासिक शूल-वेदना" [तीसरे महीने दर्द खासकर यदि बँधे समयपर होता हो] इसका एक उत्कृष्ट निर्देशक लक्षण है। पुराने श्वासरोगी-[Asthematics] और पुराने शराबियोंका उदरामय या पाकाशयकी सर्दी रोगमें यह विशेष लाभ करता है [हेरिङ्ग]।

लक्षणावली।

मुख-विवर।—ऊपरी ओठमें डंक मारनेकी तरह दर्द;—मानो फटकर खून निकल पड़ेगा; ऐसा मालूम होना और स्पर्शसे घटना। समूची जीभमें खासकर दोनों पार्श्वमें जखम [Aphthae]; (गर्भवतियोंका—काली-

फाइस) स्तन पीनेवाले बच्चेका सियानो; थोरेक्स, सार्सा, मस्क-पोन, सलफर; ऐसिड-सल्फ, इयूजा, फास, प्लम्बम)।

नाक।—सर्दी, नाकसे पानीकी तरह स्राव बहना; नाक-रन्ध्रमें जलन और तकलीफ मालूम होना और बार बार छींकें [छींक—सिपा; सिड्र-म्यू]; नाकके अगले भागमें तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द।

पाकस्थली।—पाकस्थली आधान युक्त और फूली; अम्ल रोग, झीहा-प्रदेशमें दर्द। त्रैमासिक शूल वेदना,—ठीक बँधे समयपर पैदा होता है [सिड्रो]।

श्वास-यंत्र।—श्वास-कष्टता। खूनके साथ यक्ष्मा-कास या खून मिली खाँसी;—तीसरी पञ्जरास्थिके पास दर्द; वक्षोस्थिसे तीन अँगुल दूर—साधारणतः दाहिनी ओर, —कभी कभी बाईं ओर भी मालूम होता है (बाईं ओरके ऊपरी अंशमें=मार्टस-क्म्यूनिस; बाईं ओर—पिक्स-लिक्विडा। स्तनके नीचे—ऐसिड-फ्लू, एसिड आक्जेलिक, ऐक्टिया; स्तनसे वक्षको भेदकर पीठतक=लिलियम; वक्षस्थलसे पीठतक=काली-का, सलफर; पीठसे वक्ष-तक=सार्सा-पेरिला; ऊपरी तीन पञ्जरास्थिके पास पीवकी तरह श्लेष्मा रहनेपर गुयाइयेकम; अधिकतर—थिरीडियन, फास, सिलि); उसी तरहके दर्दके साथ बार बार खाँसी। पीवकी तरह श्लेष्मा निकला करता है—एनाईं, लाई, सिलि। मुंहमें जखमके साथ हृत्स्पन्द। खून मिली खाँसी।

सम्बन्ध।—सदृश—सलफर, थिरीडियन, पिक्स। लिक्विडा, कैल्कि-कार्ब।

शक्ति।—३ य दशमिकसे लेकर ६ ठाँ दशमिक क्रम।

ऐन्थिमिस नोबिलिस।

(ANTHEMIS NOBILIS)

दूसरा नाम। रोमन कैमोमिल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस वृक्षके समूचे अंशसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—सूत जैसे क्रिमि ; शूल वेदना ; अजीर्ण ; सर दर्द ; यकृतमें रक्तको अधिकता वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास । —डा० वेरिज और बार्नेटके मतसे अंजीर्ण और पाकाशयके लक्षणमें लाभदायक है। सर्दी, पानीकी तरह श्लेष्मा का स्राव, गलनालीमें सङ्कोचन और त्वचाके क्षयकी वजहसे दर्द और खुज-लाहटकी वजहसे खाँसी,—कमरेमें बढ़ना—वगैरह इसके निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत विषाद-भरा। ऐसा मालूम होता है, मानो कोई विपत्ति आना ही चाहती है (ऐमोन-कार्ब, ऐमिल, चिनिन-सल्फ, ऐक्टिया, लिलि-टाई इत्यादि) ; सन्ध्याके समय घरसे निकलकर बाहरी ओर जानेपर सशङ्कित भाव और गाड़ीसे दब जानेका बहुत भय (ऐको)

आंख ।—बिछावनसे उठनेपर आँखसे पानी गिरना और नाककी दोनों छेदोंसे निर्मल पानीका स्राव।

नाक ।—सर्दी, बहुत ज्यादा आँसू बहना। नासा-रन्ध्रसे चुआये हुए पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव (युफ्रे)।

अन्त्राशय ।—यकृत प्रदेशमें लगातार दर्द मालूम होना और आँतमें मरोड़ जैसा दर्द और शीत अनुभव होना। मलद्वारमें खुजलाहटके साथ सफेद लसदार कीचड़की तरह पाखाना होना (लेईकी तरह मलद्वारमें चिपका रहता है=सलफर, प्लैटि और लसदार कीचकी तरह गालमें लगा रहता है=ग्रैफा।)

श्वासयंत्र ।—तीसरे पहर तालुमूलमें सुरसुरी होती है। (Tickling)। इसी वजहसे लगातार खाँसी आया करती है। परन्तु खाँसनेपर तालुमूलका खुजलानेका भाव बहुत कुछ घट जाता है ; गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर खाँसी बढ़ जाती है ; पर रातमें शय्यामें सो जानेपर फिर खाँसी नहीं रहती (मैगी, इयुफ्रे, मैन्सि, लाइ) कमरा गर्म हो जानेपर भी खाँसी नहीं आती।

पेशाब ।—मूत्राशय (Bladder) फूल जाता है। रेतोरज्जुमें (Spermatic Cord) में दर्द और मोटा मालूम होना,—मानो वह फूल गया है। बार बार पेशाबका वेग होना।

त्वचा।—तलवेमें खुजली,—मानो शीत-स्फोट (या अँगुलीका सड़ना रोग) की वजहसे (ऐगार, ऐम्ब्रा, सिलि ; पैरकी अँगुलीकी खुजली=ऐगार, तैकिटयुका, नक्स, स्टैफ, जिङ्कम)।

सम्बन्ध।—सदृश—ऐलियम-सिपा, इयुफ्रेशिया, कास्टिकम, ऐगार, सिलि।

तुलनीय।—सिपा ; चायना (जब कैमोमिलाके अपव्यवहारसे जरायुसे रक्तस्राव होता है।)

शक्ति।—३ री दशमिकसे १२ वीं दशमिक तक।

ऐनिलिनम।

(ANILINUM)

दूसरा नाम।—फेनिलामिन ; कायानल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सुरासारमें मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—रक्त-स्वल्पता (खूनकी कमी) ; कैन्सर या कर्कटोया जखम, विसूचिका ; सफेद खसड़ा रोग।

उपयोगिता और आभास।—विषाक्त लक्षणोंके द्वारा मालूम हुआ है, कि इसकी क्रिया बहुत कुछ आर्सेनिककी तरह है ; दस्त, कै, सर-दर्द, मूर्च्छा ; मृगीकी तरह रङ्ग नीला हो जाना वगैरह इसका निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें चक्कर ; सर-दर्द।

पाकस्थली।—पाकाशय और माथेमें जलन ; इसके बाद कै, दस्त, पेटमें दर्द, साथ ही प्रत्यङ्ग सब बरफकी तरह ठण्ढे।

जननेन्द्रिय।—लिङ्गमें दर्द ; ध्वजभङ्ग।

चर्म्म।—कितनी ही तरहके खसड़ा रोग।

सम्बन्ध।—ऐण्टि-पाइरिन, एण्टि-फेब्रिन; फिनासिटिन, कोनोयन और आर्स निकसे तुलनीय।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

ऐन्थोक्सैन्थम।

(ANTHOXANTHUM)

दूसरो नाम।—ऐन्थोक्सैन्थम आयोडेटम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये खिले वृक्षसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह सर्दी और ज्वरकी एक बहुत बढ़िया दवा है। युरोप और अमेरिकामें हे फीवर नामक एक तरहका बोखार होता है—इसे औषधि ज्वर भी कह सकते हैं। इस बोखारमें इसका काढ़ा या यह दवा मिली चाय सेवन करनेकी चाल है।

सम्बन्ध।—सिपा, आर्स, नैफ्थलिन, सैबाडि, सोरि, ऐनान्थि ऐवेना, एराण्डु, लोलियम, सैकाराम, ड्राफिसि।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न शक्ति।

ऐन्थ्राकोकालि।

(ANTHRAKOKALI)

प्रस्तुत प्रक्रिया।—एक तरहका रसायनिक पदार्थ;—हंगरीके एक तरहके पत्थरके कोलयेके साथ कास्टिक पोटास मिलानेपर उत्पन्न होता है। इसका विचूर्ण या टिंचर बना करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—क्षय रोग; बहुमूत्र; पेशावमें तकलीफ; खसड़ा, खुजली आदि चर्मरोग; बात; माथेका प्रदाह; नासा-रन्ध्रकी बीमारियां; सन्धिवात; कच्छु या खुजली; कण्ठमाला; प्रमेह विष; आमवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० हेरिङ्गका कथन है, कि इसकी अच्छी तरह परीक्षा नहीं हुई।

सम्बन्ध।—कार्बोन-सल्फ; एण्टि-मोनी; रास-टक्स; डलकामारा; केलि-ब्रायोड (खुजली इत्यादि) से तुलनीय।

शक्ति।—निम्न-क्रम व्यवहृत होता है।

ऐण्टिमोनियम आर्सेनिकोसम।

(ANTIMONIUM ARSENICOSUM)

दूसरा नाम।—आर्सेनियेट आव ऐण्टिमोनी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण; इसके बाद टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—न्यूमोनिया; फेफड़ेकी सूजन; आंखोंका प्रदाह; हृदवेष्ट प्रदाह; क्षयकास; श्वासरोग; फुसफुस आवरण प्रदाह इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—फेफड़ेके वायु-स्फीति रोगमें (Emphysema) बहुत अधिक श्वास कष्टता और खाँसी,—भोजनके बाद और सोनेपर बढ़ना—ऐसी अवस्थामें यह अधिक उपयोगी है, फुसफुस वेष्ट या फुसफुस आवरक झिल्लीका प्रदाह (Plurisy)—खासकर बांएँ फेफड़ेसे रस-स्राव, हृत्पिण्डके वहिरावरणके प्रदाहमें रस सञ्चय और रस स्राव वगैरह अवस्थामें यह लाभदायक है। रोगीको बहुत सुस्ती मालूम होती है। आँखोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है। मुखमण्डलका फूलना, और बच्चोंके फेफड़ेके प्रदाहमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—सदृश—अरम, वेन्यरिस, ब्रायोनिया, सीकेसिस, लोबेलिया, पल्स, मार्क, आर्स, अन्यान्य ऐण्टिमोनि, सलफर।

सदृश।—३ री दशमिकसे ६ ठी दशमिक विचूर्ण।

ऐण्टि फ़े ब्रिनम ।

(ANTI FEBRINUM)

दूसरा नाम।—एसेट निलिडम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और जलीय द्रव दोनों ही आकार
तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—दमा, नीलपाण्डु, माथेका ब
मालूम होना, हृद्स्पन्दन, धमनीमें रक्त जम जाना वगैरह।

उपयोगिता और आभास।—इसके व्यवहारसे शारीरिक उत्त
बहुत जल्द घट जाता है। अधकपारीका सर-दर्द, माथा बड़ा हो जाता है, ऐ
मालूम होना, मानो समूचे माथा उस कमरेमें समा नहीं सकता। आंख
पुतलीका फैलना, चक्षुमण्डल मलिन, रक्तवहा शिरामें रक्त जमा रहता
रक्तके दौरानमें गड़बड़ी, दमा, अनियमित हृत्स्पन्दन, पैरका शोथ वगैर
लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—एण्टिपाइरिन, एनिलिनम, ग्लोनोयन।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

ऐण्टिमोनियम क्रूडम।

(ANTIMONIUM CRUDUM)

दूसरा नाम।—नेटिव सल्फाइड आव ऐण्टिमोनी—सुर्मा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका ६x तक विचूर्ण; इसके बादका क्रम य
शक्ति टिंचर छुपा करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मलद्वार और सरलान्त्रमें उत्तेजना
सर्दीसे उत्पन्न रोग; तारुण्य रोग; कब्जियत; गट्टे; उदरामय; अजीर्ण
स्नमड़ा रोग; पैरमें गट्टे और जख्म; ज्वर; दांत निकलनेकी वजहसे चर्मरोग
मनका विकार; आमवात; बवासीर; गुठलीदार बाहर निकलना या कांच-निक

लना ; स्वल्प विराम ज्वर ; पाकाशयमें विकार ; सर्दी गर्मी ; या पेशीके अन्त या अग्रभागकी बीमारी ; जीभमें सफेद रङ्गका लेप ; स्वर-क्षीणता ; मसे ; क्षय-खाँसी इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—बहुत अधिक क्रोध परायणता और सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट होनेके साथ सफेद लेप चढ़ी जीभ इसका प्रधान और सर्वश्रेष्ठ निर्णायक लक्षण है। सभी लक्षण उत्तापसे और ठण्डे पानीसे नहाने पर बढ़ जाते हैं। धूप बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता। जो सब बच्चे और थोड़ी उमरवाले बालकोंके मोटे होनेकी सम्भावना रहती हो, या जिन सब व्यक्तियोंको पतले दस्त आते हों, उन्हें यदि एकाएक कब्जियत पैदा हो जाये या पर्यायक्रमसे कब्जियत और उदरामय, नाड़ी कठिन, तेज वगैरह लक्षण दिखाई दे तो ऐण्टिम क्रूड विशेष उपयोगी है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—
(१) बच्चेकी ओर किसीको देखनेपर या कोई उसको छूए तो वह बड़ा ही असन्तुष्ट होता है, ठण्डे पानीसे नहाना नहीं चाहता; रोगी उत्ताप बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता (२) चेहरेपर मुँहासे ; ओंठके जोड़परका स्थान फटा (Cracked) ; गाल और चिबुकके ऊपर पीले रङ्गकी पपड़ी (Crusts) जमना। (३) जीभपर सफेद रङ्गका लेप चढ़ा ;—मानो किसीने दूध लगा दिया है। (४) कानके ऊपर और पीछे रस-भरी फुन्सियाँ निकलना। [५] हाथके नख सब आप ही आप फट जाते हैं और उनके नीचेका माँस कड़ा पड़ जाता है। [६] शरीरमें जगह जगह मांसांकुर पैदा हो जाते हैं [Horny excrescenes] [७] मसूढ़े सब फूले और छेद भरे हो जाते है,—उनसे सहजमें ही खून निकलता है। [८] स्वाद बिगड़ा रहता है, चटनी और खटाई खानेकी बहुत इच्छा होती है। [९] हमेशा वायु निकला करता है या हवा छूटा करती है [१०] पतले दस्त,—आवाजके साथ वायु निकलता है, उसके साथ ही पतला लेईकी तरह पाखाना होता है। पतले मलके साथ गांठें मिली रहती हैं (११) वक्षमें खुजलीकी वजहसे खाँसी ; गर्म घरमें प्रवेश करनेपर बढ़ना (१२) शरीरमें जगह जगह और चिबुकके ऊपर मोटी पपड़ी जमा हुआ जखम ; छूते ही उससे खून निकलता है। (१३) शरीरकी त्वचापर फोड़े, रस-भरी फुन्सियाँ और चकत्ते (Vesicles) निकलते हैं। (१४) इतना दर्द होता है कि तलवा बिलकुल ही छुआ नहीं जाता, तलवेमें और पैरकी पीठपर गट्टे (Corns) पैदा हो जाते हैं।

लक्षणावली ।

मन ।—बच्चा सभी विषयोंमें असन्तुष्ट रहता है; चिड़चिड़ा, यदि कोई उसे छू लेता है अथवा उसकी ओर देखता है तो सहन नहीं कर सकता; किसीसे बोलना अथवा दूसरा कोई उससे बोलना चाहे तो वह भी पसन्द नहीं करता (ऐण्टि-टार्ट, आयोड, सिलि)। यदि कोई उसका कोई काम करता है, तो उसे क्रोध आता है। बहुत ही दुःखित भाव और रोना। जीवनसे घृणा। हमेशा रोगिनी चिन्तित और रोनी बनी रहती है, सामान्य कारणसे भी उसके मनमें दुःख या शोक पैदा हो जाता है (पल्स); बहुत निराशा, पानीमें डूबकर आत्महत्या करना चाहती है (ड्रोसेरा, रस-टाक्स, सिकेलि, सिलि)। छन्द या कविता पढ़नेकी दुर्दमनीय इच्छा। चाँदनीमें काव्यमय भाव या प्रेम उबल पड़ता है और प्रेमोन्माद पैदा हो जाता है; प्रेमका बदला न मिलनेकी वजह से बीमारियाँ (कैल्के-फास)।

मस्तक ।—सरका दर्द,—नदीमें नहानेकी वजहसे; सर्दी लगनेके कारण; शराब वगैरह पीनेके कारण; पाचन शक्तिकी गड़बड़ीसे; खटाई, तेलके बने पदार्थ और फल आदि खानेकी वजहसे सरमें दर्द,—मूर्द्धदेशमें और सीढ़ी चढ़नेके समय दर्दका बढ़ जाना; उद्भेद (गोटियाँ या दाने) निकलना रुक जानेके कारण सरमें दर्द, सरमें चक्कर आना, मिचली और नाकसे रक्तस्रावके साथ ललाट देशमें भार मालूम होता है।

आंख ।—बहिरापाङ्गमें [External Canthi] में दर्द। पलकोंकी बहुत दिनोंकी लाली। आँखें लाल, खुजली और प्रदाह-भरी और श्लेष्मा जमा हो जाता है, इसी कारणसे पलक सट जाती है। आँखके भीतर और पलकके ऊपर रस भरे दाने निकलते हैं।

कान ।—लाल, फूले और कानके पीछेवाली नली [Eustachian tube] में दर्द मालूम होना। कानमें ढं ढं आवाज़ और बहरापन, कानके चारों ओर रस भरे दाने निकलना।

नाक ।—नासारन्ध्र और ओंठके संयोगस्थलपर दर्द; फट जाना और पपड़ी जमना [काण्डिउ, रैंगो, थैफा, ऐसिड-नाई]; नाकसे रक्तस्राव,—शामके समय और सर दर्दके अन्तमें (नाकसे खून गिरनेबाद सर दर्दका घट जाना= व्यूफो, मिलिलोट, मैग-सल्फ, फेरम-फास)। इसके साथ ही सरमें चक्कर आना।

खाँसनेपर नाकके पिछले छेदसे (Posterior Nares) श्लेष्मा निकलता है (एलेन, बेराई, हिप, लिलि-टाई, नेट्र-सल्फ); थोड़ी भी ठण्ड लग जानेपर सर्दी हो जाती है।

मुखमण्डल।—रस भरे दाने (Vesicles); फुन्सियाँ (Pimples), फोड़े [Boils], गालमें पीली आभा लिये पपड़ी जमा जखम। दोनों ओठोंका संयोगस्थल फटा और दर्द भरा। दोनों ओंठ सूखे।

मुखगह्वर।—नमकीन लार। जीभ,—सफेद लेप चढ़ी;—मानो चूना या दूध लगा हुआ है (आर्निका, आर्स, ब्राई, ग्लोनोयन, नक्स; सिपिया) दाँतसे मसूढ़े अलग (मार्क) हो जाते हैं और सामान्य कारणसे भी रक्तस्राव होता है। दांतका दर्द,—कीड़े खाये हुए खोखले दाँतमें (कार्बो-वेज, कैमो, इग्नो, लैके, मार्क, स्टैफ) दर्द बढ़ना=रातमें, (बेल, कार्बो-वेज, मार्क, रास, स्टैफि); भोजनके बाद (बेल, ब्राई, मार्क, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, स्टैफ, सलफर) और ठण्डे पानीमें (सलफर, नक्स, पल्स, काफि); जीभ दाँतमें लगते ही ऐसा मालूम होता है मानो एक शिरा टूट गयी है; घरसे बाहरी हवा सेवन करनेपर घटना। मुँहका सड़नेवाला जखम (Cancrum Oris) प्रायः हो जाता है (आर्जेण्ट-नाइ, मार्क-कोर, ऐसिड-सल्फ)।

कण्ठनाली।—खाँसनेपर नाकके पिछले छेदसे (Posterior Nares) पीली आभा लिये श्लेष्मा निकलता है (ऐलेन, बैराइ, नैट्र-सल्फ, लिलि-टाइग्रिन)।

पाकाशय।—बहुत खानेकी वजहसे पाकाशयिक (Gastric) रोग आदि। पाचन शक्ति बहुत कमजोर, सहजमें ही गड़बड़ा जाती है। जीभ मोटी, दूधकी तरह सफेद लेप चढ़ी। रोटी, मिठाई, खटाई, खट्टी या खराब शराब पीना, ठण्डे पानीसे नहाना, बहुत गर्मी लग जाना और गरमी प्रभृति कारणोंसे पाकाशय और अन्त्राशयकी बीमारियाँ। खट्टी चटनी खानेकी बहुत इच्छा। भूख न लगना। शामके समय और रातमें प्यास। डकारके साथ बिनापची और अजीर्ण चीजोंका स्वाद और गन्ध मिलती है (कैल्के, काष्टि, इपिका, फास, सिलि)। छातीमें जलन, मिचली और वमन। बच्चा स्तन पीने बाद दहीकी तरह जमा हुआ कै करता है (इथ्यू, मैग-फास) और इसके बाद फिर स्तन पीना नहीं चाहता और एकदम चिढ़ उठता है। ऊर्द्ध-द्वार और अधोद्वार (डकार और मलद्वारसे) दोनों ओरसे बार बार वायु निकलता है। मुँहमें

बार बार मीठी स्वाद मिली लार एकत्र होती है। भोजनके बाद पेट फूलता है ।

मल ।—उदरामय (पतले दस्त) और कब्जियत पर्यायक्रमसे पैदा होता है,—(विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका) । खटाई, खट्टी, शराब, ठण्डे पानीमें स्नान और बहुत खानेकी वजहसे पतले दस्त आना। कड़े मलके साथ पतला मल मिला रहना ; आँतोंसे खूनका स्राव। मलद्वारसे रस-स्राव,—पहननेका वस्त्र पीले रङ्गका हो जाता है । श्लेष्मा-स्रावी अर्शसे बराबर श्लेष्मा निकला करता है ;—बेधनेकी तरह दर्द और जलन (ऐमोन-म्यू, कैप्सि, पल्स) । केवल आँव मिला मल । पानीकी तरह पतले मलके साथ कड़ा गांठ गांठ या जमा हुआ दुग्ध-पिण्ड (पेलि) निकलना ।

मूत्र ।—बार बार वेग,—पेशाब गदला और बदबूदार—निकलनेके समय जलन और कमरमें दर्द। सोनेकी तरह पीली आभा लिये (ऐमो-कार्ब; कडियास-सोरि, सिफिलाइन) ; कभी कभी फीका लाल और बहुत देरतक रहनेपर उसमें रक्तके कण दिखाई देते हैं ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—रमणेच्छाकी वृद्धि ; मनमें अश्लील भावका पैदा होना ; रातमें रेतःस्राव या स्वप्न-दोष ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—कामोत्तेजना और खुजली ; ऋतु होनेके पहले ही दन्तशूल (आर्स, नैट्र-म्यूर) ; ऋतु अत्यन्त असमयमें होता है और बहुत अधिक स्राव होता है । ठण्डे पानीमें नहानेकी वजहसे ऋतु बन्द होनेके कारण डिम्बाधार प्रदेशमें (Ovarian Region) स्पर्श सहन न होना और तलपेटमें दबाव मालूम होना । प्रदर स्राव पानीकी तरह, कसैला (Carrosive—कैमो, क्रियो, नैट्र-फास) और जमा हुआ श्लेष्मा खण्ड खण्ड निकलता है ।

श्वास-यंत्र ।—हूप खाँसी ;—धूपमें शरीर बहुत उत्तप्त होनेपर या ठण्डे पानीमें नहानेसे बढ़ना ; प्रकोपके अन्तमें केवल एकबार खाककर खाँसी आती है । खाँसी,—गर्म घरमें प्रवेश करनेपर वृद्धि (ब्राई, लाई, पल्स),—छातीमें जलन (लैके, फास, स्पञ्जि, जिङ्क) और खुजलाहट । धूपमें बहुत घूमनेकी वजहसे स्वरभङ्ग । खाँसनेपर नाककी पिछली नलीसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है ।

पीठ ।—आसनसे उठनेके समय स्योणि अथवा नितम्ब देशमें भयानक दर्द (साइली, लैके, सल्फ) मालूम होता है, पर थोड़ा भी चलनेपर बन्द हो

जाता है (मार्जेण्ट-नाइ)। सन्ध्याके बाद या सोनेके बाद अथवा सवेरे ग्रीवा पृष्ठ (Nape of Neck) और पीठकी हड्डी (अंश फलक) तक मानो अकड़ जाता है या चिपक जाता है। झुकने, बांह हिलाने और बाईं ओर माथा फिरानेपर वृद्धि।

प्रत्यङ्ग।—प्रत्येक बार लक्षण प्रकट होनेके समय भिन्न भिन्न पार्श्वपर आक्रमण करते हैं या स्थान परिवर्त्तन करते हैं। तलवेमें बड़े और बहुत कड़े गट्ठे (ग्रैनान-बालञो) पैदा हो जाते हैं। चलनेके समय बहुत दर्द होता है, खासकर पत्थरकी बनी भूमिपर चलनेसे। अँगुलीमें वातकी तरह दर्द—अंगुलीके नख-सब किसी भारी चीजसे दब जानेपर या आपसे आप टूटकर दर्द पैदा होता है और नखके नीचेका मांस गट्ठेकी तरह कड़ा हो जाया करता है।

त्वचा।—धूप बिलकुल ही सहन नहीं होती; धूपमें परिश्रम करनेपर तकलीफ बढ़ जाती है। (लैके, नैट्र-म्यू); आगकी गर्मी ज्यादा लगनेपर भी लक्षणोंकी वृद्धि हो जाती है; गर्मीके दिनोंमें थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बहुत थकावट आ जाती है; धूप लगनेके कारण रोग;—फुन्सियां, खुजली, व्रण, प्रभृति। शराब पीनेकी वजहसे बड़ा लाल व्रण। ठण्डे पानीसे नहाना अच्छा न मालूम होना; बच्चे धोने और ठण्डे पानीसे नहलानेपर चिल्लाने लगते हैं। ठण्डे पानीसे नहानेके कारण ऋतुरोध; पानीमें गिरने या तैरनेकी वजहसे सर्दी (रास-टक्स); आमवात; छोटी माता वगैरहकी तरह उद्भेद; चिपटे मसे; कड़े गट्ठे। शय्यापर शरीर गर्म होते ही खुजलाहट आरम्भ हो जाती हैं। मसा (थूजा, डैवाई, कास्टि, टियुक्रि)।

निद्रा।—दिनमें विशेषकर पूर्वान्हमें, बहुत औंघाई। सवेरे ७ बजनेके समय नींद आने लगती है।

ज्वरादि।—मध्यान्हमें प्यासके साथ कम्प देकर ज्वर आता है। तीसरे पहर ४ बजनेके समय शीत मालूम होना—गर्म घरमें,—आग या चूल्हेके निकट बैठनेपर भी जाड़ा नहीं घटता। (उत्तापसे घटना=आर्स, कौरालियम-रुब्रम; इग्ने; उत्तापसे अधिकता=एपिस, इपिका); ज्वरका प्रकोप थोड़ा भी घटते ही रोगी गाढ़ी नींदमें सो जाता है। श्वास लेनेपर नाकमें शीतलता मालूम होती है। त्वचाका सूखापन और पसीना—पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है;—नित्य एक ही समय होता है, साधारणतः प्रत्येक द्वितीय रातमें; सविराम ज्वरमें

रोगी बहुत चिड़चिड़ा और दुःख पूर्ण अन्तःकरणवाला हो जाता है"—(डा० नैश)।

वृद्धि।—भोजनके बाद ; ठण्डे पानीसे नहानेपर ; खट्टी चीजें खानेपर धूप या आगकी गर्मीसे ; जाड़ा या गर्मीकी अधिकतासे वृद्धि।

घटना।—हवा खानेपर ; विश्रामसे और गर्म पानीसे नहानेपर उपसर्ग घट जाते हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—साइलिसिया=नखका बढ़ना बन्द हो जाना ; ग्रैफाइटिस=नख मोटा और वृद्धिमें रुकावट ; थूजा—नाखून टूट टूट जाते हैं, चूर हो जाते हैं और टेढ़े पड़ जाते हैं। पसीना निकलनेकी वजहसे पैरके तलवेमें जखम हो जाना=बैराइटा ; तलवा छुआ न जाये और दर्द-भरा हो=पल्सेटिला ; टहलनेके समय एँड़ी और पैरकी अँगुलीमें दर्द मालूम हो=लीडम ; जांघपर सहारा दिये बिना चल नहीं सकता=मिडोरिनम ; पैरका तलवा फूला और दर्द-भरा=लाइकोपोडियम। स्ट्रैमो=किसीके देखनेसे ही चिढ़ उठता है ; सलफर=नहानेकी इच्छा न होना।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—स्क्विला।

दोषघ्न।—कैल्के, हिपर, मार्क। पल्सके पहले और बाद उपयोगी है।

शक्ति।—३ री दशमिकसे ३० या २०० शततमिक पर्यन्त व्यवहारकर बहुत लाभ देखा गया है।

क्रियाका स्थायित्व।—४० दिनों तक।

ऐण्टिमोनियम आयोडेटम।

(ANTIMONIUM IODATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—दमा, श्वासनालीका प्रदाह और फेफड़ेका प्रदाह वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

ऐण्टिमोनियम सल्फ्युरेटम आरियम।

(ANTIMONIUM SULPHURATUM AUREUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक है;—मुंहमें मुंहासे; क्षीण दृष्टि; सर्दी; कब्जियत; अतिसार; अजीर्ण; आँखोंमें जलन; नाकसे खून गिरना; फेफड़ेका प्रदाह।

उपयोगिता।—वक्ष और आँखोंपर इसकी क्रिया अधिक होती है। नाक और वायुनलीभुजमें प्रवेश की हुई, बहुत तरहकी पुरानी सर्दी और कफ आदिमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है। मस्तकमें जलन; अन्धापन वगैरह लक्षणमें भी लाभदायक है।

लक्षणावली।

नाक और गलेके भीतर।—हाथ मुंह धोनेके समय नाकसे रक्त-स्राव (ब्राई, नक्स-वोम)। नासा-रन्ध्र और गलेके भीतर बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा एकत्र होना। गलेके भीतरसे बदबूदार कफ निकलता है। गलेमें रूखड़ापन और कुटकुटाहट मालूम होती है। घ्राण-शक्ति लोप हो जाती है। मुंहमें धातुका स्वाद आता है।

श्वास-यंत्र।—तालुमूलमें खुजलाहट। श्लेष्मा अधिक सञ्चय हो जाता है और दोनो वायुनलीभुजोंमें श्लेष्मा भरा रहता है। श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ होती है। वायुनलीभुजमें सङ्कोचन और दबाव मालूम होना। तालु देश और वायुनलीभुजमें लेईकी तरह श्लेष्मा जमा रहता है (ब्राई, केलि-बाइक्रोम)। वायुनलीभुजके भीतर पीब मिले श्लेष्मा-सञ्चयसे पैदा हुआ दमा (ऐण्टि-टार्ट।)

मल।—अधिक परिमाणमें पाखाना होना; वायु निकलनेके अन्तमें एकाएक मलका वेग, इसके बादही पहले कड़ा मल, इसके बाद पीले रंग का पतला लसदार मल और अन्तमें आँतोंमें भयानक शूल और नाभिके चारों ओर आंतोंमें आवाज या कलकल गड़गड़ शब्द। मलमें कड़ापन, कड़ा मल बड़े कष्टसे निकलता है।

त्वचा ।—पीवभरी फुन्सियोंमें (Pustules) व्रण । शरीरमें खुजलाहट, विशेषकर मुष्कत्वक् (Scrotum) में (कास्टि, ग्रैफ, पेट्रोल) और दोनो उरुके बीचके स्थानमें खुजलाहट ।

सम्बन्ध । — सदृश ।—अन्यान्य ऐण्टिमोनी, अरम (आंखोंमें); आर्स, फेरम, मार्क-सोल (नाकसे रक्तस्राव) ।

शक्ति ।—३ री से ६ ठो दशमिक विचूर्ण ।

ऐण्टिमोनियम मारियेटिकम ।

(ANTIMONIUM MURIATICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—ओंठके कैन्सरमें लाभदायक है ।

ऐण्टिमोनियम टार्टारिकम ।

(ANTIMONIUM TARTARICUM)

दूसरा नाम ।—टार्टरेट आफ ऐण्टिमोनी ; पोटास या टार्टार ऐमेटिक ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया । – विचूर्ण ; पहले चुआये हुए पानीमें, इसके बाद स्पिरिटमें उच्चक्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मदात्यय या शराब पोनेका दुष्परिणाम ; मुंहमें उपक्षत ; नये पैदा हुए बच्चे का श्वासरोध ; दमा ; श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दी ; पनसाहा माता ; चेचक ; विसूचिका ; खांसी ; हुंड़ी खांसी ; अजीर्ण ; कितने ही तरहकी आँख और त्वचाकी बीमारी ; सविराम ज्वर ; स्वरनालीका प्रदाह ; कटिवात ; फेफड़ेकी बीमारी ; हृदपिण्डकी बीमारी ; कपकपीके साथ पक्षाघात ; फेफड़े का प्रदाह ; सन्धिवात ; दाद ; ग्रीवा-स्तम्भ (गर्दन अकड़ना) ; प्रमेह दोष ; अस्थिवेष्ट-प्रदाह ; प्यास ; कम्प ; वमन ; हूप खाँसी (कुकुर खांसी) इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास।—आलसी स्वभाव और श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले व्यक्तियोंकी बीमारियोंमें यह विशेष लाभदायक है। खासकर जो सब मनुष्य (डा० ग्रेवोग्लके मतसे) रस वात प्रधान धातुवाले हैं और जो सब बीमारियाँ नीचे घरोंमें रहनेकी वजहसे होती हैं (आर्स, ऐरेनिया; टेरिबिन्थ) उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। फुसफुस, पाकाशयिक स्नायु (Pneumo gastric)के ऊपर इसकी क्रिया अधिक रहनेकी वजहसे, ऐण्टिम टार्ट, श्वास-प्रश्वास और रक्त-संचालनकी क्रियामें रुकावट पैदा कर देता है, इसी वजहसे नीचे लिखे सिद्धिप्रद लक्षण पैदा हो जाया करते हैं—रोगीके खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है मानो उसके दोनों वायुनलीभुज श्लेष्मासे परिपूर्ण हो रहे हैं,—मानो खाँसने पर बहुत अधिक बलगम निकल जायगा; परन्तु वास्तवमें कुछ निकलता नहीं है। निद्रालुता; दुर्बलता और पसीना इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है:—(१) अत्यन्त सुस्ती और तन्द्रा। (२) श्वास-प्रश्वासमें ऐसा शब्द होता है मानो आरेसे लकड़ी चीरी जा रही है। (३) बच्चा हमेशा शङ्कायुक्त रहता है; पासके आदमीको पकड़ रखता है; उसकी यही इच्छा रहती है, कि कोई उसे गोदमें लेकर घूमता रहे; बहुत चिड़चिड़ा,—कोई उसका शरीर छू लेता है, तो एकदम महाक्रोध करने लगता है। (४) चेहरा म्लान, मानो यंत्रणासूचक, बिगड़ी हुई भावभंगी और ठण्डापन; चेहरेकी पेशियाँ सब सिकुड़ती और फैलती (Twitch) रहती हैं। (५) शरीरकी त्वचा ठण्डी; लसदार पसीना। . जीभपर पतला सफेद रंगका लेप चढ़ा रहता है और बीच बीचमें काँटे सब (Papillae) दिखाई देते हैं। लाल रेखामय या मध्य-रेखायुक्त शुष्क जिह्वा। (७) वायुनली श्लेष्मासे परिपूर्ण रहनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ होती है। (८) खाँसनेपर गलेमें घड़घड़ शब्द होता है; कण्ठ और फेफड़ेमें श्लेष्माके बुलबुले फूटने जैसी आवाज सुन पड़ती है। (८) खाँसी, भोजनके बाद या क्रोध आनेपर बढ़ जाती है; प्रायः ही खाँसते खाँसते बहुत-सा श्लेष्मा वमन हो जाता है और फिर तुरन्त आराम मिलता है। (१०) शरीरपर जगह जगह पीवभरे दाने ['Pustules] निकल आते हैं और उसके आराम होनेपर नीला दाग रह जाता है; बहुत धीरे धीरे पकता है और बहुत देरसे उसमें पीव इकट्ठा होता है।

लक्षणावली।

मन।—दिनमें प्रफुल्लता,-सन्ध्याके समय उत्कण्ठा और भय। जो पासमें रहता है, बच्चा उसीको पकड़ रखता है, उसकी प्रधान इच्छा यह रहती है, कि कोई उसे गोदमें लेकर घूमता रहे ; कोई छूता है तो नकियाकर रोने लगता है ; चिकित्सकको नाड़ी नहीं देखने देता (ऐण्टि-क्रूड ; सैनिक) अकेला नहीं रहना चाहता, डर जानेके भयसे। प्रलापावस्थामें बुदबुदाकर कुछ बका करता है और बहुत निद्रालु हो जाता है।

मस्तक।—मस्तकमें जड़ता और सरमें चक्कर आना—आँखें बन्दकर लेनेपर (आर्जेण्ट-नाई, ष्ट्रैमो, लैके ; थूजा ; थिरिड), टहलनेपर (नैट्र-म्यु॰, नक्स, पल्स) ; दृष्टि काँपती हुईके साथ ; सर उठानेके समय (सर घुमाने पर=कोनायम, कैल्के ; कैलि-कार्ब ; मस्तकके सँचालनसे=ब्राई ; कैल्के ; कोनायम ; ऊपर देखनेपर=पल्स, सिलि) सरमें चक्कर आना ; वाध्य होकर सो जाना पड़ता है (ब्राइ, काक्यु, फास, पल्स) ; सरमें दर्द, मानो ललाटको किसीने बन्धनसे कसकर बाँध दिया है (ऐसिड-कार्बोलिक, ऐसिड-नाई)।

आँख।—आँखोंमें थकावट, आँखें इस तरह बन्द हो जाती हैं मानो नींद आ रही है ; आँखोंमें चिलक मारनेकी तरह दर्द, क्षीण दृष्टि इत्यादि।

कान।—कानमें गुन गुन शब्द इत्यादि।

मुख।—जीभ लसदार ; पतला सफेद लेप चढ़ा हुआ—बीच बीचमें लाल काँटे और किनारे लाल (दूधकी तरह सफेद लेप=ऐण्टि-क्रूड, आर्निका, आर्स, ब्राई, ग्लोनोइनम, नक्स सिपि; बीचका स्थान सफेद, किनारा लाल=बेलेस्यिम, आर्स आयोड ; मैलके साथ सफेद और मोटा लेप चढ़ी अथवा कुछ पीली आभा लिये=माइरिका)। कभी कभी बीचका स्थान लाल और सूखा (बीचका स्थान लाल और अगल बगल सफेद=कैमो ; बीचका स्थान लाल रङ्गका=आर्स, कास्टि ; कभी कभी धुमैला और सूखा (बीचका स्थान धुमैला और सूखा=फास ; धुमैली और सूखी जीभ=सब्जिया)। चेहरा,—बरफकी तरह ठण्डा, नीलिमा युक्त और रक्तहीन, ठण्डे पसीनेसे भरा (टैबेकम)

वाताश्रयसे पैदा हुआ दन्तशूल।—मुंहके समस्त पार्श्वमें फैला हुआ या कभी कभी उसी पार्श्वके समूचे मुंह, माथा और गर्दनमें छेदनेकी तरह दर्द (ऐसिड-फास)।

पाकाशय ।—खाली डकार ; सेब खानेकी प्रबल इच्छा (ऐलो ; खटाई और चटनी खानेका आग्रह=ऐण्टि-क्रूड). वमन,=दाहिनी करवट सोनेके अलावा और सभी अवस्थाओंमें बहुत के होना, अन्तमें रोगी सुस्त हो पड़ता है ; दूध पीने बाद ही वमन, प्रबल वमनेच्छा और चेष्टा, इसके बाद ही औंघाई और बहुत सुस्ती । विसूचिका रोगाधिकारमें बहुत दस्त, ललाटमें बहुत ठण्ढा पसीना (वेरेट्रम) । ठण्ढा पानी पीनेके लिये बहुत आग्रह ; बार बार पर थोड़े परिमाणमें (आर्स) पीना ।

तलपेट ।—पेटमें दर्दके साथ शारीरिक और मानिक उत्तेजना ।

मल ।—पीला, भूरा अर्थात पीला या भूरे रङ्गका पतला-मल, पित्त मिश्रित और श्लेष्मामय मल ; कभी पानीकी तरह ; हरा और मलद्वारमें गर्म मालूम होनेवाला मल ; कभी कभी चटचटा शराबके फेन (Yeast) की तरह, अत्यन्त दुर्गन्ध या सड़ी गन्ध-भरा मल ; पर्यायक्रमसे कब्जियत और अतिसार ।

श्वासयंत्र ।—श्वास-रोध,—पानीमें नहाने आदि बाहरी कारणसे ; वायु नलीभुजमें श्लेष्माकी अधिकताकी वजहसे ; फेफड़ेका=तुरन्त होनेवाला पक्षाघात-सूचक ; गलेमें और वायुनलीमें बाहरसे (Foreign) कोई पदार्थ प्रवेश करनेकी वजहसे उत्पन्न बीमारी ; औंघाई, आच्छन्नता या मोह । बच्चा पैदा होनेके समय रक्तशून्यकी तरह रहता है, साँस नहीं चलती और मानो हांफता और मुंह फाड़ता है,—नवजात शिशुका श्वासरोध । मुमूर्ष मनुष्यकी गलेकी घड़घड़ाहट बन्द करता है (टेरेण्टिउ) ; फेफड़ेका प्रदाह (Pneumonia) के साथ पाण्डु रोग (Jaundice),—खासकर दाहिने फेफड़ेका प्रदाह । स्वर-भङ्ग—सवेरे गलेके भीतर खरखरापन और पतला कफ इकट्ठा होना,—खाँसनेके बाद और बोलनेसे बढ़ना । वायुनलीमें श्लेष्माकी घड़घड़ाहट होती है, पर खाँसनेपर निकलता नहीं है । वायुनली भुजके ऊपरी अंशमें घड़घड़ शब्द बहुत दूरसे सुन पड़ता है । रात ३ बजनेके समय छातीमें दबाव मालूम होता है और श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है । श्वास-प्रश्वासमें सरलता प्राप्त होनेके लिये रोगी बाध्य होकर उठ बैठता है ; कुछ देरतक खाँसने और कुछ श्लेष्मा निकल जाने बाद आराम मिलता है । श्वास-प्रश्वास तेज—मानो उसका श्वास रुक जायगा । पर्यायक्रमसे खांसी और जम्हाई आना । खानेपर खाँसी बढ़ जाती है ;—खाँसते खाँसते जम्हाई आने लगती है (बेल, लोबेल ; ओपि) ।

फेफड़ेमें सूजन और पक्षाघात होनेकी सम्भावना । फेफड़ेका प्रदाह (Pneumonia) फेफड़ेकी यकृद्‌भाव प्राप्ति (Hepatization) वाली अवस्था ;—फेफड़ेमें सूजन आ जाती है और उससे रस-स्राव (Exudation) हुआ करता है ; वक्षपर अंगुलीसे आघात करनेपर ढप ढप शब्द होता है ; श्वास-प्रश्वासकी गड़गड़ाहट (Crepitation) नहीं सुन पड़ती ; श्वास-प्रश्वास द्रुत ; रोगी रक्त हीन, दुर्बल और निद्रालु रहा करता है ।

हृत्पिण्ड और नाड़ी ।—कलेजा धड़कना ; नाड़ी—कड़ी ; द्रुत ; क्षुद्र ; कमजोर और काँपती हुई ; अनुभवमें नहीं आती ।

पीठ ।—त्रिकास्थि-श्रोणिदेशीय (Sacro-Lumbar) अर्थात् पश्चात् कटिके निम्न-प्रदेशमें भयङ्कर दर्द ;—उठनेकी सामान्य चेष्टा करनेसे ही मिचली आती है और ठण्डा लसदार पसीना हुआ करता है । मेरुदण्डके निचले अंशमें अत्यन्त भार मालूम होता है ।

प्रत्यङ्ग ।—पेशियोंका स्पन्दन । समस्त शरीरका आभ्यन्तरिक कम्पन, माथे और हाथ पैर आदिका पाक्षाघातिक स्पन्दन । शराबियोंका शरीरका काँपना और जी घबड़ाना ।

त्वचा ।—त्वचापर खुजलानेवाली फुन्सियाँ या उद्भेद ; खसड़ा या चेचककी तरह खुजलीके दाने या उद्भेद ; पृष्ठव्रण (पीठपरका फोड़ा) । इत्यादि ।

ज्वराधिकार ।—शीत मालूम होना, कम्पन और शीत-प्रधान ज्वर । बहुत तेज उत्ताप । बहुत अधिक पसीना । ठण्डा लसदार पसीना और बहुत औंघाई । ज्वरके प्रकोपके समय रोगी आँख नहीं खोल सकता । इतनी नींद आती है पर नींद खुलनेपर एकदम निराशा और विषाद पैदा हो जाता है । बहुत देरतक जाड़ा रहता है और फिर उतना ही दीर्घकाल व्यापी उत्ताप भी रहता है,—जरा शरीर हिलानेसे ही बढ़ जाता है । नीचे तले वाले मकानमें या गीली जमीनमें रहनेकी वजहसे (आर्स, आयोड, नेट्र-सल्फ) ज्वर ।

नींद ।—प्रायः सब लक्षणोंके साथ अत्यन्त निद्रालुता या अनिवार्य निद्राका आवेश । नींदमें एकाएक शरीर भड़क उठता है या रोगी चौंक उठता है ।

वृद्धि।—निचले तलेमें या गीली जमीनमें रहनेपर; शीतल जलीय वायुमें; रातमें सोने बाद; घरकी गर्मीसे; वसन्त ऋतुमें वायु परिवर्त्तनके समय (कैलि-सल्फ, नेट्र-सल्फ)।

घटना।—निर्मल, शीतल वायुमें; सीधे होकर बैठे रहनेपर; श्लेष्मा निकल जानेपर; दाहिनी करवट सोनेपर (टैवेकम)

सम्बन्ध।—सदृश—ऐकोन (काली खाँसी), थूजा, इपिका (वमन) ऐकोन-ब्राई, आर्स, ब्रायो (फेफड़ेमें); लैकेसिस (श्वास-कष्ट); लाइको (फेफड़ा); विरेट्रम (शूल और वमन); ओपियम (तन्द्रा)

दोषघ्न।—ऐसाफि, चायना, काकुलस, कोना, इपिका, ओपि. पल्स, सिपिया इत्यादि।

तुलनीय।—लाइकोपोडियमके सदृश है; परन्तु इसकी नासापुटको पंखेकी तरह गतिके बदले, ऐण्टि-टार्टमें केवल नासापुटका फैलना और सिकुड़ना दिखाई देता है। यह वेरेट्रमके सदृश भी है; क्योंकि दोनोंमें ही दस्त कै, मिचली, ठण्डा पसीना और खट्टी चीजें खानेकी इच्छा मौजूद रहती है, वेरेट्रमकी अपेक्षा ऐण्टिम-टार्टमें पेशियोंका फड़कना, औंघाई और पेशाबका वेग ज्यादा मौजूद रहता है, परन्तु इसके साथ ही वेरेट्रममें ऐण्टि-टार्टकी अपेक्षा अधिक ठण्डा पसीना और सुस्ती मौजूद रहती है। कुछ अंशोंमें इपि-काकुआन्हा भी सदृश है, परन्तु ऐण्टिम-टार्टमें बाधा प्राप्त श्वास-प्रश्वासकी वजहसे निद्राका आवेश अधिक रहता है और मिचली तथा वमनके बाद घटनेका लक्षण मौजूद रहता है। जब फेफड़ा अवसन्न होता जाता है उस समय इपिकाकके बदले ऐण्टिम-टार्टका प्रयोग करना चाहिये। गोवीजका टीकाके दोषकी वजहसे पैदा हुए रोगोंमें, यदि थूजासे लाभ न हो और साइ-लिसियाके लक्षण न दिखाई दें तो ऐण्टिम-टार्टका प्रयोग करना चाहिये।

वायुनलीमें यदि और कोई पदार्थ प्रवेश करनेकी वजहसे श्वास-कष्टता पैदा हो जाय तो साइलीसियाके पहले, रुके हुए प्रमेहमें पल्सटिलाके पहले और गीली जमीन पर सोनेकी वजहसे पैदा हुए रोग आदिमें टेरिबिन्थके पहले इसका व्यवहार प्रसिद्ध है।

बच्चोंकी खाँसीमें यदि ऐण्टिम टार्टसे लाभ न हो तो हिपरका प्रयोग करना चाहिये। वसन्त ऋतुमें और शरत ऋतुमें, यदि तर हवा बहनी प्रारम्भ हो

और उस समय बच्चोंकी जो खांसी बढ़ जाती है, उसमें ऐण्टिम टार्ट बहुत फायदा करता है।

शक्ति।—२ रे दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रम और २०० शक्ति लाभदायक है।

ऐण्टिपाइरिनम।

(ANTIPYRINUM)

दूसरा नाम।—फेनाजोन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अलकतरेसे पैदा हुए एक प्रकारके पदार्थसे विचूर्ण और टिंचर दोनों ही तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;— रजःकृच्छ्रता ; अनजानमें पेशाब होना ; मृगी ; नाकसे रक्तस्राव ; लाल रङ्गकी फुन्सियाँ ; छोटी माता ; सरमें दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; मानसिक विकार ; गलेका जखम ; दाँतका दर्द और आमवात।

उपयोगिता और आभास।—गर्दनके दोनों ओर ऐसा मालूम होता है, मानो हजारों पिनें बेधी जा रही हैं : वक्षस्थल और उदरके भीतरवाले यन्त्र-सब ऊपरकी ओर खिंच रहे हैं—ऐसा होनेके साथ ही साथ मूर्च्छा और गिर जाना ; सारे शरीरकी पेशियोंका सङ्कोचन, दाँत कड़मड़ाना और जी घबड़ाना वगैरह यदि मालूम हो और इसके साथ ही मृगीकी तरह (Epileptic) आक्षेप या आवेश ; शरीरका नीला रङ्ग हो जाना ; हिमाङ्ग और शारीरिक क्रियाका रुक जाना या हिमाङ्ग अवस्था (Collapse) ; ऐसा मालूम होता है, कि शरीरमें बरफ भरा हुआ है ; शरीरके कितने ही स्थानोंमें जगह जगहपर पित्तज उद्भेद, अरुणिमा (Erythema) या आमवात,—पहले मुखमण्डल और बाहुमें और अन्तमें दोनों पैरोंमें बहुत ज्यादा पसीना निकलना ; नाकसे रक्तस्राव ; रातमें अनजानमें पेशाब हो जाना वगैरह कई इसके प्रधान क्रियाफल हैं। दाहिने अङ्गके साथ इसकी अधिक घनिष्टता है, जैसे दाहिना वक्ष, दाहिना मुष्कत्वक और अण्डकोषमें अधिक दर्द होना (आलपीन गड़ानेकी

तरह) मालूम होता है। गर्म पानी आदि पीनेसे लक्षण घट जाते हैं। स्त्री-जननेन्द्रियके ऊपरकी क्रियामें मानसिक विषादके साथ रजःकृच्छ्रता। मनो-वृत्तिपर इसकी यह क्रिया है, कि उन्माद होनेकी सम्भावना मालूम होती है और श्वास-यन्त्रके ऊपरकी क्रियामें क्रमशः घटनेके बाद क्रमशः बढ़नेवाला श्वास-प्रश्वास (Cheyne Strokes Respiration = ऐको. फेरासा, स्टफिङ्, कैलि-सायो इत्यादि) प्रकट हुआ करता है।

लक्षणावली।

मन।—बेहोशी; उन्माद होनेका भय (ऐब्रा, ऐक्टिया; कैल्के-कार्बोनिका, लैक-कैन, लिलि-टाइ, सिफिल,); स्नायविक उद्वेग या उत्कण्ठा (ऐको, चिनिन-आर्स, कैलि-फास, लैकेसिस, लिल-टाइ, मेडोराइन, सैङ्गु, सिपि); देखने और सुननेकी इन्द्रियोंमें गड़बड़ी (ऐनहैलो, कैनाबिस-इण्ड, ऐबसिन्थ, ऐक्टि, कोकेइन, कैलि-ब्रोम, ओपि, स्ट्रैम) लगातार दर्द।

मस्तक।—सरमें टपकका दर्द साथ ही दाँतमें दर्द (बेल, युपेटोर, क्रियोजोटम, पेट्रोल, सिपिया, सलफर, वेरेट्रम); दृढ़ आबद्ध भाव (एकोन, ग्लानि, कैक्टस, काक्यु, ग्रैफ, नेट्र-म्यू, ऐण्टि-टार्ट) और उत्तापका सञ्चार (एमिल, लैके)। दोनो कानके नीचे फाड़नेकी तरह दर्द; दन्तशूलके साथ सरमें दर्द।

आंख।—पलकोंकी सूजनकी वजहसे आँखें बन्द रहती हैं; आंसू बहनेके साथ ही पलकोंके भीतर (Conjunctiva) का स्थान लाल और फूला हुआ (बेल, इयुफ्रे हायो, मार्क, नक्स, स्पाइजि, थूजा आर्जेण्ट, सैबाड बेलि)। आँखोंके सफेद अंशके (Cornea) ऊपर लाल बूंद बूंद दाग। (एपिस)

कान।—दर्द और भिन्न भिन्न आवाज (ऐमोन-कार्ब, बेल, कैल्के कास्टि, ग्रेफा, मस्कस, नेट्र-म्यू, पलस, सलफर)। कानके छेदमें खुजलाहट (ऐगार, एमोन-कार्ब, आर्जेण्ट, सलफर)।

मुखमण्डल।—फूला हुआ, उसका रङ्ग गहरा लाल (बेल, ग्लानि; कैमो, हायो, ओपि, स्ट्रैमो,); दाँतमें दर्द।

मुख-विवर।—दोनों ओंठ फूले (बेल, लाइकोपो, मार्क, नेट्र-म्यू, रास)। मुंहके भीतर और मसूढ़ेमें जलन मालूम होना (कार्बो-वेज, मेजे-

रियम); ओंठ और जीभमें जखम, रस-भरी फुन्सियाँ और काले (बोरेक्स, मार्क, ऐ-नाइट्रिक, आर्जेंण्ट, हेलिबो, लाइको, नेट्र-म्यू)। गालपर कुछ ऊँची सूजन (एपिस, मार्क); जीभ फूली (आर्स, अरम, बेल, कैन्थ, हेलिबो, मार्क, रास, सलफर)। खून-भरी लार बहना।

गलेके भीतर।—निगलनेके समय दर्द मालूम होना (बेल, एपिस, आयोड, मार्क, आयोड, फलेवस, फाइटो, मार्क-सायानेटस); बदबूदार पीव कफके रूपमें व्यवहृत होता है (Expectorted = कैल्के, कार्बो-वेज, सिङ्कोना, कोनायम, फेरम, हिपर; कैलि-का, क्रियोजोट, लाइकोपो, ऐसिड-नाई, नाइ-ट्रम, फास, सिपि, स्टेन, स्टैफ)। फोड़ा—सफेद रङ्गकी पपड़ीसे भरा। जलन मालूम होना (आर्स, कैन्थ, लैके, मार्क, फास)।

पाकाशय।—मिचली, वमन, जलन मालूम होना और दर्द (आर्स); पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्दकी वजहसे रोगी झुक जाता है और चिल्ला उठता है (कोलो)।

जननेन्द्रिय।—मूत्रयंत्र और मूत्रका परिमाण कम हो जाना। अपत्यपथमें खुजली और जलन। रजःस्राव रुका हुआ और पानीकी तरह प्रदर स्राव (कार्बो-एनिमि, सिङ्कोना, ग्रैफ, केलि-हाइ-नाइट्रोसम)।

श्वास-यंत्र।—सर्दी,—पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव (ऐको, आर्स, एलियम-सिपा, युफ्रेशिया)। नासा-रन्ध्रके भीतरकी झिल्ली फूली हुई; ललाट पश्चात् स्थित गह्वर (ललाटके पीछेवाला गह्वर—Sinus) के भीतर अस्पष्ट या धीमा धीमा दर्द मालूम होना। स्वरलोप (Aphonia) सर्दीकी वजहसे= कास्टि; ऋतुके समय=जेल्स; उत्तापकी प्रबलताकी वजहसे=एण्टि-क्रूड; स्वरतन्तुके पक्षाघातसे उत्पन्न=एसिड आक्जेलिक) फेफड़ेमें दबाव मालूम होना और श्वास-कष्ट। क्रमशः घटनेके बाद क्रमशः बढ़नेवाला श्वास-प्रश्वास (Cheyne Stokes Respiration)

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्ड मानो स्थिर हो गया है ऐसा (लिल-टाइ, साइ-क्यूटा, जेलसि, अरम, लोबेल) अनुभव होनेके साथ ही साथ सुस्ती आ जाना; समूचे शरीरमें टपक मालूम होना (नेट्र-म्यू)। नाड़ी तेज, क्षीण और उसकी गति अनियमित।

स्नायु।—मृगीकी तरह अकड़न भरा रोगका आक्रमण। पेशीका सङ्कोचन, स्पन्दन और ऐंठन (कैल्के, कास्टि, युपेय-, ग्रैफ, लैके, फास, सलफर,

(थिड-सम्फ, टियुक्रियम)। पेशियोंमें लचीलापन रहना और त्वचापर चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना। समूचे शरीरमें बहुत सुस्ती मालूम होना।

त्वचा।—बमौरी, एकजिमा (Eczema = ग्रैफ, रास, बायोला-ट्राई); छाले। अत्यन्त खुजली (Phemphigus)। आमवात (एपिस, आर्टिका-यु, डालकेमेरा; यकृत विकारसे उत्पन्न = ऐस्टेकास, फ्लूवियाटिलिस)।

ज्वर।—बहुत पसीना; सारे शरीरमें टपकका दर्द, हाथ पैर बहुत ठण्डे; स्नायविक कम्पन, सन्ताप या शरीरकी तापके साथ नाड़ीकी तेजी घटा बढ़ा करती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐनिलि (चर्म); आर्स (ऐकोन—शुद्ध होना) तेज आक्रमण।

शक्ति।—२ री दशमिकसे ३० शततमिक तक।

एपिस मेलिफिका।

(APIS MELLIFICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह मधुमक्खीसे तैयार होता है। मधुमक्खीका डङ्क छेद और पीसकर, क्रमसे अरिष्ट और विचूर्ण तैयार होता है। इसका सार "एपियम्-वीरस" इत्यादि हैं।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—फोड़ा; एँड़ी फूली हुई; संन्यास; दमा; मूलाधारकी बीमारियाँ; दुष्ट-व्रण; उपदंश; बच्चोंकी कब्जियत; अतिसार; उपझिल्ली प्रदाह; शोथ; कानमें विसर्प; अरुणिका; आँखकी बीमारी; पैरमें जलन; सड़नेवाला जख्म; ज्वर; हाथ फूलना; हृत्पिण्डकी बीमारी; गर्मीके दिनोंका व्रण; जानुकी सूजन; मस्तिष्कोदक रोग; वक्षोदक रोग; आघात (चोट); सविराम ज्वर; उत्तेजना; ईर्षाका दुष्परिणाम; मसानेकी बीमारी; मधुमेह; योनिके बाहरी भागकी सूजन; स्वरनालीका प्रदाह; मस्तिष्क-झिल्ली प्रदाह; पार्श्वमें विकार; आमवात; नजर लगजानेका दुष्परिणाम; डिम्बाधारका दर्द, प्रदाह और अर्बुद; अँगुलहाड़ा; अस्थावर्त्तन-प्रदाह; फुसफुसावरक झिल्ली प्रदाह; मूत्रा-

धार और मुखशायी ग्रन्थिका प्रदाह ; लाल (आरक्त) ज्वर ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; उद्भेद बैठ जाने या भरपूर न निकलनेका दुष्परिणाम ; मायक धातु [Sycosis]; गलेका जखम ; जीभमें सूजन और जखम ; अर्बुद ; सान्निपातिक ज्वर ; मूत्रनालीका प्रदाह ; मूत्रमें विकार ; गो-बीजका टीका लगवानेका दुष्परिणाम ; चेचक ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता ।—गण्डमाला-दोषयुक्त धातु ; विधवा, बालक और बालिकाएँ, जिनके हाथसे सब पदार्थ सहजमें ही गिर जाते हैं ; ईर्षा, भय क्रोध, विरक्ति या कोई दुःसम्वाद सुननेकी वजहसे बीमारी ; स्नायविक उत्तेजनाशील; हताश और रोगी प्रकृतिवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह उपयोगी है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऊपर लिखे रोगोंमें और कर्कटीया अर्बुद [Scirrhous Tumours] और जखममें यह विशेष उपयोगी है। यदि मधुमक्खी डङ्क मार दे तो उसके बाद जो लक्षण पैदा हो जाते हैं, उनमें और इनके अलावा कितने ही स्थानोंकी सूजन, गाढ़ा लाल रङ्ग, डङ्क मारनेके जैसी तकलीफ, स्पर्शका सहन न हो सकना, गर्मी, उत्तापका सहन न होना वगैरह एपिसके निर्णायक लक्षण हैं । तीसरे पहर रोगका बढ़ना भी इसका निर्देशक है। विसर्पकी तरह (Erysipelatous) त्वचाका प्रदाह ; शोथकी तरह सूजन और उनमें जल-सञ्चयी रोग और सारे शरीरका शोथ ; किडनी या मूत्रग्रन्थिका नया प्रदाह (Acute Nephritis) और दूसरे दूसरे जालकी तरह या विरल तन्तु अथवा झिल्लीक प्रदाह एपिसकी क्रियाभूमि हैं और एपिस से ही ऐसे रोग आराम होते हैं। किसी स्थानमें स्पर्श सहन न हो और तन्तु, आदिमें संकोचन मालूम हो, यह भी इसका निर्णायक लक्षण है।

नीचे लिखे कई लक्षण इसके अत्यन्त सिद्धिप्रद हैं :— (१) सुस्ती और मानो समूचे शरीरमें चोट लग गयी है (Bruised) (२) आँखके नीचे कोष या थैलीकी तरह सूजन (आँखके ऊपर—केलि-कार्ब)। (३) सब लसिका-ग्रन्थियाँ फूली हुई और उनमें डंक मारनेकी तरह दर्द। (४) ऐसा मालूम हो मानो जीभकी खाल उधड़ गयी है (raw) या जल गयी है ; जीभका अगला भाग लाल और गर्म। (५) बिना प्यासका शोथ रोग (Dropsy), पेशाब थोड़ा। (६) अत्यन्त श्वास-कृच्छ्रता—हरेक श्वास अन्तिम

ख़ास मालूम होता है। (७) गलेमें गहरा ज़खम और उसका पार्श्व-भाग सूजनसे भरा। (८) मूत्रकृच्छ्रता—थोड़ा पेशाब,—पेशाबके पहले और बाद अत्यन्त जलन। (९) बिना प्यासका बोखार। (१०) वक्षोस्थिके ऊपरी अंश (Supra Sternal fossa) में उत्तेजना [irritation] की वजहसे खाँसी। (११) तालुमूलके पीछे, थोड़ा-सा श्लेष्मा अड़ा रहनेकी वजहसे, जबतक वह श्लेष्मा नहीं निकल जाता; तबतक खाँसी आया करती है। [१२] प्रचण्ड खाँसी;—खाँसनेपर समूचा माथा हिल जाता है और उसमें एक तेज कनकनी मालूम होती है। रोगी आराम मिलनेकी आशामें माथा पीछेकी ओर झुका रखता है। [१३] उदरामय,—मल पीला हरे रंगका; इसके साथ ही उदरकी पेशीमें दर्द—इस दर्दका सवेरे बढ़ना। (१४) डिम्ब या अण्डाधारका फूलना, जलन और उनमें डंक मारनेकी तरह दर्द। (१५) तलपेटमें भार मालूम होना;—मानो रक्तस्राव आरम्भ हो जायगा और इसके बाद थोड़े परिमाणमें काला श्लेष्मा निकलना। [१६] ज्वराधिकारमें—तीसरे पहर ३ बजे से ५ बजेके बीचमें शीत मालूम होना, जाड़ा पीठ होकर निम्नाङ्गमें उतरता है, गर्म कमरेमें, और बोरसी या चूल्हेके पास बढ़ना।

लक्षणावली

मन।—स्थूल-बुद्धि—हाथसे चीजें गिर जाती हैं (बोविस्टा); प्रणय और ईर्षा, भीति, क्रोध, विरक्ति और दुःसंवाद वगैरहसे पैदा हुए रोग। क्रोधी प्रकृति; डरपोक; चंचल; सहजमें ही सन्तुष्ट नहीं होता। रोना-स्वभाव; बिना रोये रह नहीं सकता; आशा-भरोसा उसका मानो छूट जाता है; विमर्ष (पल्स) उदासी और बेहोशी। बीच बीचमें तेज या कष्ट सूचक चीत्कारके साथ मोह प्राप्त अवस्था (हेलिबो)। कामोन्माद, आच्छन्नावस्था ये दोनों पर्यायक्रमसे प्रकट होते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो आयु समाप्त होती आ रही है, अमनोयोगी—किसी काममें मन नहीं लगता। साफ साफ सोचनेकी शक्तिका न रहना इत्यादि।

मस्तक।—समूचे मस्तिष्कमें सुस्ती मालूम होना। सरमें चक्कर आना;—सोनेके अन्तमें (कोनाइम) या आँखें बन्द करनेपर बढ़ना (आर्जेण्ट-नाई, थ्रैमो; आंख खोलनेपर बढ़ना=टैबेकम; पल्स; थिरि)। एकाएक छुरी लगनेकी तरह तकलीफ; सरके पिछले भागमें भार मालूम

होना ; यह गर्दन तक फैल जाता है—मानो किसीने आघात किया है,—दबा रखनेसे आराम मालूम होता है, इसके साथ ही इन्द्रियकी उत्तेजना। नया मस्तिष्कोदक [Hydrocephalus आयोडो-फार्म, वैसिलाइन]। रुका हुआ [Suppressed] या अच्छी तरह उद्भेद [eruptions] न निकलने बाद बच्चा बेहोश जैसा आच्छन्न अवस्थामें पड़ा रहता है, प्रलाप बकता है और बीच-बीचमें लोमहर्षक तीक्ष्ण चिल्लार कर उठता है ; डेरा देखना ; दाँत पर दाँत घसता है, तकियेमें सर गड़ाता है [बेल, हेलिबो], चेहरेके एक पार्श्वमें स्पन्दन होता है और दूसरा पार्श्व सुन्न हो जाता है ; माथेमें पसीना ;—पेशाब थोड़ा और दूधकी तरह सफेद, पैरका अंगूठा ऊपरकी ओर टेढ़ा हो जाता है, शयनावस्थामें मिचली इत्यादि।

आंख ।—शोथकी तरह रस-भरी सूजन ; आँखके नीचे थैलीकी तरह हो जाता है (आंखके ऊपरमें = कैलि-कार्ब)। पलकोंका फूलना, लाल रंग, बाहर निकली हुई [Overted] या उलटी पलक। इसके साथ प्रदाह ; डंक मारनेकी तरह दर्द और जलन। आंखोंकी योजकत्वचा (Congunctive] चमकीली लाल और फूली हुई, गर्म आँसूका स्राव। रोशनीसे भय ; एका एक बेधनेकी तरह दर्द, आँखके गह्वरके चारों ओर दर्द। रसस्राव, शोथकी तरह सूजन और तेज यन्त्रणा। आँखके स्नायुका प्रदाह। [Optic Neuritis]

कान ।—दोनों कानका बाहरी भाग लाल, प्रदाह-भरा और उसमें स्पर्श सहन न होना ; डंक मारनेकी तरह तकलीफ। विसर्प ; कर्ण-प्रदाह ; बहरापन।

नाक ।—नाकका अगला भाग बरफकी तरह ठण्डा ; नासारन्ध्रके बीच बीचमें फोड़ा,— ठण्डे प्रयोगसे घटना। नाक फूली और लाल। सर्दी।

मुखमण्डल ।—फूला, लाल और उसमें बेधनेकी तरह दर्द, उसका रंग मोमकी तरह बदरंग, मलिन और शोथकी तरह (ऐसिड-ऐसेटिक)।

मुखविवर ।—श्वासरोगाधिकारमें दोनों ओंठ नीले, जीभ फूली और उसमें स्पर्श सहन न हो, फटी फटी और रसभरे दानोंसे भरी (Vesicles)= जीभ फूली और उसके दोनो किनारोंपर छाले=लैके। रसभरे दानेसे भरी= रासटक्स, मूत्रा, बोरै, कैप्स, हिप, इग्नेशिय-क्रोकेटा, फाइटो, रास-वेन, स्क्विला, बार्बेरा)। मुंह और गलेमें जल जानेकी तरह मालूम होना। ऐसा मालूम

हो मानो जीभ जल गयी है। (आर्स, वेप्टी, कोलो, मैफा, ह्रायो, आइरिस, मार्क-सोल, टिलिया-इण्डि, फाजस, रासवेनि, रियुमेक्स, सेङ्गियु, स्टिलि, वेरेट-विर); लाल, गर्म और हिलती हुई (ऐब्सिन्थ, वेल; बाहर निकालनेके समय काँपती है=लेके); जीभका अगला भाग लाल रंगका या सूखा और पोछेसे अगले भागतक, बीचमें एक भूरे रंगकी रेखा रहती है, दोनो पार्श्व तर रहते हैं; दांत निकलनेके समय,—मसूढ़े फूल उठते हैं (Sacculated) और जल भरे दिखाई देते हैं, बच्चा चिल्लाकर जाग उठता है; बदनपर जगह जगह सीमावद्ध भावसे लाल रंगके चिन्ह दिखाई देते हैं। ऊपरी ओंठ फूले।

गलेके भीतर।—गल-ग्रन्थि (Tonsils) फूली, गर्म, लाल और कोई चीज निगलनेके समय डंक मारनेकी तरह तकलीफ होती है। अलि-जिह्वा फूलकर थैलीकी तरह बन जाती है। गलग्रन्थि और तालुमें गहरे जखम पैदा हो जाते हैं; उसके चारों ओरका प्रदेश विसर्प-भरा (Erysipelatous) और रसभरी सूजनसे युक्त [Oedematus] मालूम होता है। गलेमें गाढ़ा, लसदार श्लेष्मा जमा रहता है (हाइड्रैस्ट, पेल्यू, आर्जण्टनाइ, नैट्र-कार्ब) उपजिह्वाका शोथ या रस-भरी सूजन [Oedema Glottidis]।

पाकाशय।—प्यास न रहना, सारे शरीरके शोथ रोगमें और उदरीमें (एसिड एसेटिक,—परन्तु इसमें चेहरेका रंग और भी उतरा हुआ और बहुत प्यास मौजूद रहती है); दर्द-भरा मालूम होता है; खाई हुई चीज कै हो जाती है; वायुनलीगत सर्दी, उदरामय, गलेके भीतरकी उपझिल्लीका प्रदाह [Diphtheria] वगैरहमें दुर्दमनीय प्यास; दूध पीनेकी बहुत इच्छा (रास); पेटमें जलन, मानो अम्ल रोग हो गया है।

अन्त्राशय।—आमाशय रोगाधिकारमें ऐसा मालूम होता है, मानो अन्त्राशयमें अत्यन्त दर्द होता है—चलनेसे दर्द मालूम होता है; एकदम छुआ नहीं जाता। अन्त्रावरणी एकदम न लचनेवाली मालूम होती है; बड़ी आँतके साथ छोटी आंत जहांपर मिलती है, उस जगह बहुत अधिक स्पर्श असह-नीयता मालूम होना;—खासकर मोहज्वर (Typhus) में। उदरी,—प्यास न रहना (प्यास=एसिड-एसेटिक, एपोसाइनम कैन); अन्त्रावरण प्रदाह [Peritonitis],—इसके साथ ही रस निकलना [Exudation],—कितनी बार जरायुप्रदाहके साथ,—पेशाब परिमाणमें थोड़ा, गाढ़ा, लाल रङ्ग, पेटकी त्वचाका लचीली न रहना और अन्धान्त्र (Coecum) के साथ क्षुद्रान्त्र (छोटी

आंतके संयोग स्थानपर इतना दर्द कि छुआ न जाये (कैन्थर, ब्राई)। मौजूद रहता है।

मल ।—मलका कड़ापन । ऐसा मालूम होता है, कि वेग देनेपर भीतरका कोई न झुकनेवाला अंश टूट जायगा। मलनालीका बाहर निकलना (काँच निकलना Prolapsus Recti); गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटने या भ्रंश होनेपर अन्त्राशयसे रक्तस्राव, भयानक जलन और मलद्वारकी त्वचाका क्षय हो जाता है; वार वार काँखना। शराबियोंका उदरामय, उद्भेदयुक्त (Eruptive) रोगमें या रुके हुए उद्भेद (Suppressed) की वजहसे बीमारी; प्रत्येक वार पेशाब करते समय मल निकल जाता है। मल= पानीकी तरह; पीला; पानीकी तरह और बहुत बदबूदार; पानीकी तरह बहुत ज्यादा और काली आभा लिये; हरा-पीला श्लेष्मा मिला; सवेरे वृद्धि; लेईकी तरह आम और रक्तमय; सुस्त करनेवाला।

पेशाब ।—मूत्राशयद्वारपर बहुत खुजली; इसके साथ ही वार वार और जलन करनेवाला पेशाब। वार वार इच्छा या वेग होनेपर भी कई बूंद पेशाब निकलता है। पेशाब परिमाणमें थोड़ा और गाढ़ा लाल रङ्गका होता है; लाल, खून मिला, गर्म और बहुत थोड़ा; बहुत थोड़ा और बदबूदार; बहुत थोड़ा, रङ्ग हलका लाल; कुछ देरतक रख छोड़नेपर गदला दिखाई देता है; परिमाणमें थोड़ा, दूधकी तरह सफेद और लार-भरा, काली आभा लिये और उसमें काफीके चूरकी तरह तली जमती है; पेशाबके साथ मसानेके भीतरका बहुत पतला सूक्ष्म नलखण्ड (Tubuli Uriniferi) और उपत्वक (Epithelium) मिला रहता है। मूत्रकृच्छ्रता; डङ्क मारनेकी तरह दर्द; अन्तका कई बूंद पेशाब होनेके समय बहुत जलन और तकलीफ मालूम होना (काइङ्का, लिमैट, कैन्थ, कोचली, मार्क)। पेशाब रोकने की शक्तिका न रहना।

पुं-जननेन्द्रिय ।—अण्डकोषकी सूजन, विशेषकर दाहिने अण्डकोषकी; मुष्कत्वक (Scrotum) में भयानक खुजली और लाली; छूनेसे दर्द मालूम होता है। मुष्कत्वमें जल-सञ्चय होना; एकशिरा (सल्फिया; रोडो)

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—डिम्बाधार या अण्डाधारका शोथ (Ovarian Dropsy); —खासकर दाहिने डिम्बाधारका। जरायु और डिम्बाधार प्रदेशमें

जलन और डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ। गर्भके पहले दो तीन महीनेके भीतर ही गर्भ-स्राव। स्तनका विसर्प; स्तनके कर्कटीय अर्बुदमें या कर्कटीय जखममें जलन और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा। योनिका बाहरी भाग फूला; शीतल पानीके प्रयोगसे घटना। मासिक ऋतुस्राव रुके रहने (Suppressed) की वजहसे मस्तक और मस्तिष्कमें यन्त्रणा और दर्द (खासकर छोटी उमरवाली बालिकाओंको), बाधक, डिम्बाधार प्रदेशमें भयानक यंत्रणा और बहुत सामान्य लसदार स्राव। बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव (Menorrhagia), तलपेटमें बहुत भार मालूम होना; सुस्ती; बेचैनी; बार बार जम्हाई आना और त्वचापर जगह जगह बहुत ही तकलीफ देनेवाले सीमाबद्ध (Circumscribed) लाल चकत्ते। तलपेटमें बहुत भार मालूम होना,—मानो ऋतुस्राव आरम्भ होगा (क्रोकस, लेथियम, मैग-कार्ब, कोना, लिलि-टाइ; मस्क; ऐसग्) प्रदर, स्राव बहुत अधिक कड़वा और हरी आभा लिये। जिन स्त्रियोंको मूत्रकृच्छ्रता हो अथवा गर्भ-स्राव हो जाया करता हो, उन्हें यह दवा देना उचित नहीं है।—यदि बहुत ही अधिक आवश्यकता हो तो बहुत ऊँचा क्रम देना चाहिये।

श्वास-यंत्र |—सवेरेके समय स्वरभंग,—(कास्टि, युपेटोर; सन्ध्याके समय स्वरभङ्ग—कार्बो-वेज, फास); श्वास-कष्टता; श्वास-प्रश्वास तेज और और जोर लगाना पड़ता है; किसी तरहका गलेका बन्धन या गलाबन्द सहन नहीं होता (लेके)। प्रत्येक बार साँस लेने और छोड़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो वही उसकी अन्तिम साँस है, इसके बाद फिर साँस न ले सकेगा; हृत्पिण्डका शोथ, एकाएक किसी शस्त्रकी चोटकी तरह या तीर बेधनेकी तरह और डङ्क मारने जैसा दर्द, यह दर्द हृत्पिण्डके नीचे पैदा होकर कोना कोनी भावसे, दाहिने वक्षकी ओर फैलता है और साँस बहुत रुकती हुई मालूम होती है। रोगी समझता है, कि साँसकी कमीसे उसका दम रुक जायगा; पानी-भरी या एकाएक शोथकी तरह सूजन; श्वास-कष्ट: बहुत बेचैनी और चिन्ता; हृत्पिण्डका फैलना (Diastole) के समय घरघराहट [वेगसे रक्त प्रवेश करनेके कारण सों सों शब्द]; वक्षस्थलमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है; हृत्पिण्डके प्रत्येक सङ्कोचनमें समूची देह मानो काँपती है [नैट्र-म्यू]। रोगी बहुत बेचैन रहता है और किसी अवस्थामें आराम नहीं मिलता [ऐको]; सवेरेके समय बहुत जी घबड़ाता है और

तकलीफ मालूम होती है; हृत्पिण्डके दोनों द्वारोंकी अक्षमता [Mitral Insufficiency]; हृत्पिण्डकी गड़बड़ी (अर्थात चारों ओर समभावसे नहीं) बढ़ना [Hypertrophy]; नाड़ीकी गति असम, प्रति तृतीय या चतुर्थ स्पन्दन रुककर सविराम होता है। रक्तहीन दिखाई देता है। नाड़ी ऐसी मालूम होती, मानो एक बन्दूकके छर्रेकी तरह चिकित्सककी अँगुलीके नीचेसे धीरेसे निकल जाती है"—[डा० ग्रैनन]।

प्रत्यङ्ग।—अँगुलीकी हड्डीका प्रदाह [अँगुलहाड़ा]; जलन, डङ्क मारनेकी तरह और टपक जैसा दर्द। रस और जल-भरी सूजन। प्रत्यङ्गकी सन्धिमें तेलकी तरह रस-स्रावी [Synovial] झिल्लीका प्रदाह,—जानुदेश फूला; चमकीला; उसमें स्पर्श सहन न हो और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। ऐसा मालूम हो मानो पैरके तलवे बहुत बढ़ गये हैं।

त्वचा।—दर्द,—सब जगह और सब रोगोंमें जलन पैदा करनेवाला; डंक मारनेकी तरह दर्द और उस स्थानका छुआ न जाना; एकाएक एक अंशसे दूसरे अंशमें यह दर्द फैल जाता है (काली-बाइ, लेक-कैन, पल्स)। स्पर्श-ज्ञान अत्यन्त तीक्ष्ण,—जरासा छू देनेसे ही बहुत दर्द मालूम होता है (बेल, लैके)। विसर्प—बहुत लाली लिये सूजन और उसका छूना सहन नहीं होता। आमवात, जलन-भरा और उसमें डंक मारनेकी तरह तकलीफ (आर्टिका यूरेन्स); पीठका फोड़ा, उरुस्तम्भ, पैरका फोड़ा वगैरह विषैले फोड़े=उनमें जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द (ऐन्थ्राक्स, आर्स, हिपोजिनिनम, युफोर्बियम।

निद्रा।—बहुत औंघाई; चिन्ता और परिश्रमवाले कामोंके सपने। निद्रावस्थामें एकाएक चिल्लाकर जाग उठता है।

ज्वराधिकारमें।—शीत,— तीसरे पहर ३ बजेसे ४ बजेके भीतर शुरू=(रातमें ३ बजे और तीसरे पहर ३ बजे तक), शीतके समय प्यास भी मौजूद रहती है; वक्षस्थलमें इतना दबाव मालूम होना मानो श्वास रुक जायगी,—गर्म घरमें बढ़ना। ज्वर या उत्तापावस्थामें,—छातीमें श्वास रोध करनेवाला दबाव मालूम होना; हाथ, छाती और पेटके ऊपरी प्रदेशमें उत्ताप की अधिकता। आमवात, पसीनेवाली अवस्था,— यह अवस्था प्रायः नहीं रहा करती है, विशेषकर बहुत दिनोंके बोखारमें। एक बार पसीना, और एक बार पसीना न होना, ऐसा पर्यायक्रमसे दिखाई देता है,—इस अवस्थामें भी, निद्रा-

गुता मौजूद रहती है। "पसीनेवाली अवस्थामें प्यास बिलकुल ही नहीं रहती।" (एस, एफ, शेनन)। सविराम ज्वरमें जब यह दिखाई दे, कि रोगीकी त्वचा एक बार पसीनेसे तर हो जाती है और फिर सूख जाती है, उसी समय एपिसको याद करना चाहिये।"—(नेश)

वृद्धि।—नींदके बाद (लैके); बन्द और खासकर गर्म कमरा असह्य; पानीमें भींजनेपर वृद्धि (रासटक्स); पर रोगवाला अंश ठण्डे पानीसे धोनेपर या भिजानेपर घटना।

घटना।—निर्मल वायु-सेवनसे, ठण्डे पानीमें भींजने पर या स्नान करनेपर; ओढ़ना उतारने पर; खाँसने पर, टहलने या सोनेपर, बैठने वगैरहकी अवस्थाके परिवर्त्तनसे; सीधे होकर बैठनेपर घटना।

सम्बन्ध।—अनुपूरक=नेट्र-म्यू, रासटक्सके पहले या बाद इसका व्यवहार करना उचित नहीं है। वेसा, सर्व-विष, ऐसे-ऐसिड (शोथ); ऐनाका (आमवात); ऐपोसा, आर्निका (चोटसे); आर्सेनिक (सान्निपातिक, सड़ा घाव, शोथ); वेलाडो, ब्रोमि, ब्रायो (मस्तक); कैन्थ (जलना), चायना, क्रोटोन, ह्युफि, आयोड, लैकेसि, लाइकोपो, मार्क, नेट्रम (कम्पज्वर, आमवात); पल्स, रासटक्स (आँखकी बीमारी); रियुमेक्स, सैबाई, सिपिया, साइलि इत्यादि।

दोषघ्न।—नेट्रम, इपिका, लैकेसि, लीडम।

शक्ति।—२ री दशमिकसे ३० और २०० शततमिक या इससे ऊँचा क्रम।

ऐफिस चिनापोडाई ग्लुकाई।

(APHIS CHENOPODII GLAUCI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह चिनोपोडियम वृक्षमें रहनेवाला एक तरहका कीड़ा है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—शूल-वेदना, सर्दी, खाँसी, उदरामय, सरमें दर्द, पाखाना होनेके समय काँखना; दाँतमें दर्द।

उपयोगिता और आभास।—सर्दी, जखम करनेवाला सर्दीका स्राव, इसीलिये, नाकका छेद खासकर दोनों नासारन्ध्रके बीचके अस्थि-खण्डको मानो खाल उखड़ जाती है (सिपा)—यह इसका एक निर्भर योग्य लक्षण है।

सोनेपर दाँतके दर्दका बढ़ जाना, पसीना होनेपर घटना (कैमो), उदरशूल, पेटमें गड़गड़ शब्द, बार बार पाखाना होनेकी इच्छा, मलान्त्रमें दर्द, पाखाना होनेके समय वायु निकलना, पतला चिकना मल, मलका रंग काला, रक्तका दाग वगैरह लक्षणोंकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—इथूजा (पाखाना होने बाद मल-वेग, पाखाना होनेके पहले, चिकोटी काटनेकी तरह या कतरनेकी तरह दर्द। पाखाना होने बाद काँखना), नेट्रम-सल्फ (शय्यासे उठनेपर मलवेग, मल-त्यागके साथ वायु निकलना), नक्स-वोम (बार बार पाखाना पेशाबका वेग); जेल्स (पीठके ऊपर और नीचे शीतका फैलना)।

शक्ति।—६—३०।

ऐपियम विरस।

(APIUM VIRUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मधुमक्खियोंको चिढ़ा देनेपर उनके डङ्कसे जो रस निकलता है, उसीसे यह दवा तैयार की जाती है। पहले इसका हमेशा व्यवहार होता था। एपिस मेलिफिकाकी तरह ही इसके भी लक्षण हैं। इसकी विशेष क्रिया यह है; कि रोगीके शरीरमें अपने ही जखम आदिका पीव जब सोख जाता है। (Auto-taxoemina) और इसी वजहसे जो रोग पैदा होते हैं, वे इससे अच्छे हो जाते हैं।

ऐपियम ग्रेवियोलेन्स।

(APIUM GRAVEOLENS)

सतर्कता।—यह ऐपियम विरससे बिल्कुल ही दूसरी चीज है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहके फलसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—सरमें दर्द; बेचैनी; छातीमें जलन; कानसे स्राव; दाँतका दर्द; पेशाब रुका हुआ; आमवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पेटमें गड़बड़ी मालूम होना; बहुत उत्ताप मालूम होना; छातीमें जलन; खाई हुई चीजका डकार आना या के हो जाना; पाकाशय खाली मालूम होना; खानेके बाद कुछ कुछ घटना; पेशाब रुकना या मूत्राघात,—कैथिटर या शलाका दिये बिना पेशाब नहीं होता। चिन्ता किये बिना रह नहीं सकता। शरीरकी चंचलताकी वजह से स्थिर होकर बैठ या सो नहीं सकता; त्रिकास्थि और कटिके पिछले भाग के नीचेवाले प्रदेशमें अत्यन्त दर्द; सोनेसे वृद्धि; टहलनेसे घटना; मालूम होता है, मानो दोनों आँखें गड़हेमें धँस गई हैं। टपक जैसा सर दर्द, जरा भी शरीर हिला देनेपर दर्दका बढ़ जाना; विश्रामसे घटना। कपकपीके साथ आमवात पैदा होता है। बहुत खुजलाहट और डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ; एक जगहकी खुजलाहट बन्द होनेपर दूसरी जगह पैदा हो जाती है।

लक्षणावली।

मन और मस्तक।—बहुत बेचैनी मालूम होना; बहुत चिन्ताके कारण नींद नहीं आती (काफिया)। सर दर्द,—आँख बन्द करनेपर (बेल वैस्के, हायो); विश्रामसे, ठण्डा पानी पीनेसे और भोजनके समय घटना; (भोजनके समय=नेट्रसल्फ, रैनान; भोजनके बाद=बिसमथ, सिंकोना, कैलि-, कार्ब, नक्स, नक्स-मस; भोजनके समय घटना=ऐनाका, कैलि-फास, सोराइन; सरमें दर्दके समय भूख लगना=सोराइन।)

श्वास-यंत्र।खुजलाहटकी वजहसे सूखी खाँसी। वक्षोस्थिके ऊपर अत्यन्त सङ्कोचन भाव (Constriction=कैक्टस, स्टैन); और सोनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो छाती भेदकर पीठतक खिंच रहा है।

निद्रा।—नींद तृप्ति-जनक नहीं होती; अनिद्रा।

शक्ति।—१ लीसे ६ ठीं दशमिक तक।

ऐपोसाइनम ऐण्ड्रोसिमिफोलियम।

(APOCYNUM ANDROSAEMIFOLIUM)

दूसरा नाम।—डाग्स बेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समस्त गाछ या मूलसे मदर टिञ्चर अर्थात् मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;— अतिसार; शोथ; मिचली या ओकाई; मुँहका स्नायुशूल; वमन; इधर उधर हटनेवाला सन्धिवात; मूत्राश्मरी; कृमि वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—सन्धि या आमवात और वातजनत शक्ति ही इसकी प्रयोजनीयताका प्रधान कारण है। इसका दर्द जगह बदला करता है; अकड़न और सङ्कोचन उसकी प्रधान प्रकृति है। शरीरमें कम्पन; ऐसा मालूम हो, कि मानो मुंह और शरीर फूल गया है। ऐपोसाइनम् कैना बिनम और स्ट्रोफान्थसकी तरह इससे भी हाथ, पैरमें शोथ पैदा हुआ करता है। डा० हेलने इससे सन्धिवात वगैरह रोग आरोग्य किये हैं।

लक्षणावली।

मस्तक।—माथेके पिछले भागमें और गर्दनमें दर्द और अकड़न मालूम होती है।

मुंह।—पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना (ऐगरिकस, निक्सम) खुजली और जलन मालूम होना। निचली पंक्तिके बाईं ओरके सभी दांतोंमें दर्द मालूम होना।

पाकाशय।—दस्त और कै। कब्जियत।

जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा साफ और निर्मल पेशाब होता है। ऋतुस्राव बहुत ज्यादा; आठ दिनोंतक रहनेवाला और तलपेटमें अत्यन्त दबाव की तरह मालूम होना।

प्रत्यङ्ग।—सब सन्धियोंमें ही दबाव मालूम होता है। अँगुली और पैरके तलवेमें दर्द (ऐक्टि-रू ड, एपियोल, बैराइटा-कार्ब, लीडम, मिडोराइनम,

लाई)। तलवेमें बहुत गर्मी मालूम होती है और पसीना होता है (ऐसोनम्यू, ऐल्यू, सोराइन, बेराइटा, सैनिक्युला, सिलि, थेफ); पैरके तलवेमें बहुत जलन (ऐब्रा, कैल्के, लैके, ऐसिड-फास, सलफर) । हाथ पैरोंमें फूलन। दर्द जगह बदला करता है,—आज एक जगह है तो कल उस जगहसे हटकर दूसरी जगहपर आक्रमण करता है (एपिस, कैलि-बाई, लैक-कैन, पल्स)। दर्द निम्नगामी—नीचेकी ओर उसकी गति रहती है (कैक्ट-कैल्मिया—उर्द्धगामी=लीडम)।

त्वचा ।—समूचे शरीर और मुखमण्डलमें असह्य खुजलाहट मालूम होना। शरीरके सब अंशोंमें भरपूर और बहुत ज्यादा पसीना होता है (समूची देह खासकर जननेन्द्रिय प्रदेशमें=ऐसिड-फास ; सुस्त करनेवाला पसीना—फास ; यक्ष्मादि रोगमें, उसके साथ ही स्नायवीय अवसाद—जेबोरैण्डी)

सम्बन्ध ।—सदृश—ब्रायो, आइरिस, कोलचि, केल्के, सलफर, ऐसिड-फास, ऐपोसाइनम-कैन, स्ट्रापन्थ ।

शक्ति ।—मूल अर्क और १ म दशमिक क्रम और ३ री दशमिक।

ऐपोसाइनम कैनाबिनम् ।

(APOCYNUM CANNABINUM)

दूसरा नाम ।एक तरहकी अमेरिकन भाँग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे वृक्ष या मूलसे मूल अर्क तैयार होता है। इसके जलीय सारको "इनफ्यूशन कैनाबिनम" कहते हैं। और इसके सारांशको (विचूर्ण) ऐपोसाइनिन कहते हैं।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—शोथ ; सर्दी ; बहुमूत्र ; अतिसार ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; मस्तिष्कोदक ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; जरायुसे खूनका स्राव ; स्नायुशूल ; वमन ; मिचली ; पेशाबमें कष्ट इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके क्रियाका परिणाम है, पसीना, और पेशाबका घटते जाना और रक्तरसस्रावी झिल्लीमय प्रदेशमें लाल रंगका

प्रदाह और शोथ पैदा हो जाता है। लाल मूत्र या अण्डलालमूत्र रोगाधिकारमें (Albuminuria) पाकाशयमें विकारकी वजहसे मिचली, वमन, निद्रालुता, श्वासकृच्छ्रता वगैरहमें यह विशेष लाभदायक है। इसकी वजहसे शोथ रोगाधिकारमें, यकृतमें विकारकी वजहसे प्यासकी अधिकता और पाकाशयकी बीमारी पैदा होनेका लक्षण, इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली।

मन।—किंकर्त्तव्यविमूढ़; स्नायविक लक्षण; निस्तेज।

मस्तक।—नया मस्तिष्कोदक (Hydrocephalus-हाइड्रोकेफालस),—अस्थि-फलककी सन्धियाँ खुल जाती हैं; रोगी मानो तन्द्रामें पड़ा रहता है; उसकी एक आँखसे दिखाई नहीं देता, एक हाथ और एक पैर हमेशा हिला करते हैं (बायाँ हाथ और पैर—ब्राई); ललाट बाहर निकलता हुआ (projected) मालूम होता है।

नाक।—नासारन्ध्र और गलेमें पीला गाढ़ा श्लेष्मा भरा रहता है। बच्चोंकी नाक बन्द करनेवाली सर्दी (Snuffles—सैम्बियुकस) बहुत देरतक आनेवाली छींकका रोग।

पाक और अन्त्राशय।—नयी प्रादाहिक उदरी (Dropsy), बहुत प्यास (ऐसिड-ऐसेट) परन्तु पानी पीनेसे ही तकलीफ मालूम होने लगती है,—या कै हो जाती है (आर्स); इसके साथ आंत्रिक रोग आदि प्रायः मिले नहीं रहते हैं; आन्त्रिक ज्वर, यकृतका छोटा हो जाना (Cirrhosis—सिरोसिस) और क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे मिचली और निद्रालुता; नींद खुलते ही प्यास लगना; बहुत वमन; कुछ भार मालूम होना और तकलीफ; पेटके ऊपरी भाग और वक्षस्थलमें दबाव मालूम होना, मानो श्वास रुक जायगी। पेट फूलना, खासकर थोड़ा भी खानेसे वृद्धि।

मल।—सवेरे सामान्य उदरामय; बहुत ज्यादा पीली आभा लिये, पानीकी तरह मल, साथ ही वायु निकलता है और मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है, कि खाल उधड़ गयी है—खानेके बाद वृद्धि; वेग; बवासीरके साथ उदरामय।

मूत्र-स्राव।—मूत्राशय बहुत फैला हुआ। गदला, गर्म और बहुत सा श्लेष्मा मिला हुआ पेशाब। पेशाब होनेके समय मूत्रनालीमें जलन। वेग

बहुत कम ; बूंद बूंद पेशाब निकलता है, मूत्रकृच्छ्रता ; अनजानमें पेशाब होना।

पुं-जननेन्द्रिय।—शोथ, अण्डकोषमें सूजन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—थोड़ी उम्रकी स्त्रियोंका रजोलोप (Amenorrhoea) अन्नाशय और हाथ पैरमें शोथकी तरह सूजन, इसके साथ ही जरायुसे रक्तस्राव (Metrorrhagia) रुक रुक कर या लगातार होता रहता है। रक्त पतला और जमा हुआ ; मिचली, वमन और उसके साथ ही कलेजा धड़कना, जीवनी-शक्तिका अवसाद, तकियेसे सर उठानेकी चेष्टा करते ही मूर्च्छा आ जानेकी तरह हो जाता है।

श्वास-यंत्र।—श्वास-कष्ट ; बोल नहीं सकता : खाँसी,—थोड़ी और सूखी या गर्भावस्थामें गहरी और पतले श्लेष्मासे युक्त (कोनायम)। वक्षोदक या वक्षस्थलका शोथ (Hydrothorax),—उदरके ऊपरी भाग और वक्षमें दबाव मालूम होना, थोड़ा भोजन कर लेनेपर बोलने योग्य श्वासकी क्रिया नहीं कर सकता।

हृत्पिण्ड।—कलेजेमें धड़कन और दर्द, सुस्ती मालूम होना ; दम रुकना ; नाड़ी द्रुत, दुर्बल, सविराम, असमान, इसके बाद कोमल।

विधान तन्तु।—(Tissues)।—सारे शरीरका शोथ,—पेटके ऊपरी भागमें खालीपन मालूम होना, आमाशयमें चोटकी वजहसे दर्दकी तरह दर्द (एपिस) ; सामान्य कारणसे भी पाकाशयमें गड़बड़ी जैसा हो जाना ; रोगीको बाध्य होकर सीधे बैठना पड़ता है ; सोनेपर भयानक श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है (आर्स) ; पेशाब बहुत थोड़ा, गाढ़ा, पीला और गदला होता है।

निद्रा।—बहुत बेचैनी और बहुत थोड़ी नींद।

सम्बन्ध।— तुलनीय—ऐसिड-ऐसेटिक, ब्रायोनिया, एपिस (परन्तु इसमें प्यास नहीं रहती) ; आर्स, सिङ्कोना, बेलाडो, ब्रायो, चायना, कोलचि, हेलिबोरस (मस्तिष्कोदक) ; अतिसार, गैम्बोज, रास ; लाइको, मार्क, नक्स, स्पाइजि, सल्फर प्रभृति। शोथ रोगाधिकारमें एपिस, ऐपोसाइनम और डिजिटेलिससे यदि लाभ न हो तो ब्लैटा ओरियेण्टेलिससे भी दुरारोग्य सर्वाङ्गीन शोथ रोग आरोग्य हो जाता है। (डा० हेल्स)

शक्ति ।—मूल अर्क (डा० क्लार्कका कथन है, कि इसका प्रयोग अत्यन्त सावधानतासे करना चाहिये ; क्योंकि बहुतसे रोगियोंमें यह वमन, जीवनी क्रियामें अवसाद या हिमाङ्ग (Collapse) पैदा कर देता है। १म दशमिक का बार बार प्रयोग करना चाहिये ।

ऐपोमार्फाइनम या ऐपोमार्फिया ।

(APOMORPHINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह अफीमके उपचारसे तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मदात्यय ; अफीम सेवनका अभ्यास ; गर्भावस्थामें वमन ; मस्तिष्क-विकृतिकी वजहसे वमन ।

उपयोगिता और आभास ।—इसकी वमन पैदा करनेवाली शक्ति ही प्रधान निर्णायक लक्षण है। मिचली और यन्त्रणा-रहित वमन ।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, आँखकी पुतलीका फैलना । श्रवण-शक्तिकी गड़बड़ी ।

पाकाशय ।—मस्तिष्ककी उत्तेजना (Irritation) की वजहसे वमन (Cerebral Vomitting)—वमनके पहले मिचली नहीं होती, वमनके बाद सरमें दर्द, औंघाई और सुस्ती (एथ्यू) पैदा होती है। एकाएक और बहुत ज्यादा वमन ; साधारण मिचली और वमन ; वमन करनेका असह्य वेग। सारे शरीरमें खासकर माथेमें उत्ताप मालूम होना। सूखी ओकाई (Retching) और सरमें दर्द ; छातीमें जलन ; स्कन्धास्थिके बीचके स्थानमें दर्द । गर्भावस्थामें वमन,—(सिम्फोरिकार्पस, ऐसिड-कार्बोलिक)। खाया हुआ पदार्थ और श्लेष्माका वमन होता है। कभी कभी पित्तकी कै होती है (पेट्रोल) ; खासकर भोजनके बाद ; जीभ निर्मल। कै होने बाद सुस्ती और औंघाई आने लगना (इथ्यू)

सम्बन्ध ।—तुलनीय—ओपियम, इपिका, ऐण्टि-टार्ट ।

शक्ति ।—१ रा और ६ ठों क्रम ।

ऐण्टिर्हिनम लिनारियम।

(ANTIRRHINUM LINARIUM)

दूसरा नाम।—लिनारिया वलगैरिस (Linaria Vulgaris)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—अतिसार ; अनजानमें पेशाब ; मूर्च्छा ; अर्श ; आँखोंका प्रदाह ; जीभका रुखड़ापन ; जीभमें काँटा गड़नेकी तरह दर्द इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—हृत्पिण्डकी निष्क्रियतासे पैदा हुआ अवसाद (डा० फैरिङ्गटन) ; अनजानमें पेशाब, जीभ रुखड़ी और सूखी (रुखड़ी और सूखी जीभ, बहुत लार बहना, उसके साथ ही प्यास—डालका)। और गलेमें सङ्कोचन मालूम होना (रुखड़ी जीभ और गलेमें गर्मी मालूम होना=साम्बुक)। मस्तिष्ककी गड़बड़ी और हतबुद्धिकी तरह भाव (Confusion—आर्जेण्ट-नाई, ऐसा, बेल ; ब्राई, कैम्फोरा, साइक्यूटा, ग्रैटियोला, हेलिबो, काली-का, लैकि-युका, मस्कस, नैट्र-म्यू, नक्स, ओपि, फ़ैलैण्ड्र, ऐसिड-फास, पलस, रोडो, रास, सिपि)। अनिवार्य निद्रालुता (ऐण्टि-टार्ट, क्रोकस, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओपि, पलस)। घरके बाहर टहलनेपर सब लक्षण बढ़ जाते हैं (आर्निका, बेल,ब्राई, कैल्के; कार्बो-वेज, सिङ्कोना, कोनायम, डिजिटि, लिडम, सिपिया, सलफर ; टहलनेसे घटना=आर्स, डालका, मस्कस, ऐसिड-म्यू, प्लैट, पलस, रास, स्ट्रैम, वैलि, वैरेट्रम।)

सम्बन्ध।—सदृश—दोषघ्न—दूधके साथ चाय पीना। लाइनम युसि-टेटिसिनमसे दमा खाँसी और आमवातमें लाभ होता है ; डिजिटे (मूर्च्छा) ; कास्टिकम, युपे, इक्विसेट, [पेशाब होना]

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ रा या ६ठा दशमिक क्रम।

ऐपियोल।

(APIOL)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पिट्रोसेलिनम सैटाइवसके तेलकी तरह पदार्थसे इसका मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणावली।

मस्तक।—माथेमें अकसर चक्कर आया करता है। पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो दाहिने पृष्ठके छपे अक्षर बाएं पृष्ठके छपे अक्षरपर आ पड़े हैं। सर बहुत बड़ा मालूम होना (आर्जेण्ट-नाइ)।

मूत्र।—प्रत्येक पाँच मिनिटके बाद पेशाबका वेग, पर पेशाब बहुत थोड़ा निकलता है। बार बार वेग। पेशाबका रङ्ग कुसुम फूलकी तरह होता है।

हृत्पिण्ड।—स्थिर होकर बैठने या सोनेके समय अथवा रातमें एका-एक कलेजा धड़कने लगना—मानो रोगिनी डर गयी है या ऊपरसे नीचे दौड़ आयी है,—इसके बाद लम्बी साँस लिया करती है। कलेजेकी धड़कन बन्द होने बाद बहुत उत्ताप मालूम होता है, चेहरा लाल हो उठता है और ऐसा मालूम हो उठता है, मानो माथा फैल गया है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अपत्य-पथसे पतला सफेद श्लेष्माका स्राव; स्राव सूखकर कड़ा हो जाता है। (बेल, ओलि—ऐनिम, स्ट्रैनम)

प्रत्यङ्ग।—टहलनेके समय तलवेमें दर्द (ऐसिट-क्रूड, बेराइटा-कार्ब, मिडोराइन, लाइको)—खड़े होनेपर बढ़कर सुई बेधनेकी तरह दर्दमें परिणत हो जाता है।

निद्रा।—बेचैनी—रात १, २ बजनेके पहले नींद नहीं आती, यदि १२ बजनेके समय नींद आती भी है तो १, २ बजनेके समय नींद खुल जाती है और सूर्योदयतक फिर नींद नहीं आती। हाथ-पैर लगातार हिलाये बिना सो नहीं सकता (नींदके समय दोनो पैर लगातार हिला करते हैं—इग्ने, जिङ्कम, वेलि)

शक्ति।—१ म दशमिकसे ३ री दशमिक तक।

ऐकोया मेरिना।

(AQUA MARINA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह समुद्रके पानीसे तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—पित्त-विकार; कब्जियत; सर-दर्द; वमन; समुद्र किनारे रहनेका दुष्परिणाम।

सम्बन्ध।—सदृश—नेट्रम; साइलिसि।

शक्ति।—उच्च क्रम।

ऐक्विलिजिया वलगेरिस।

(AQUILEGIA VULGARIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास और लक्षणके अनुसार प्रयोग।—गुल्म-वायु (Hysteria) रोग आदिमें इसका प्रधान व्यवहार है। गुल्म-वायु (Globus Hystericus=मस्कस, इग्ने, ऐसाफि) और शिरःशूल-रोगमें (कैलि-कार्ब, इग्ने) और औरतोंके वयःसन्धिकालमें (Climaxis) हरी कै, खासकर सवेरे बढ़नेके लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐकोन, सिमिसि, ऐसाफिटिडा, इग्नेशिया, मस्कस।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

ऐरेलिया रेसिमोसा।

(ARALIA RACEMOSA)

दूसरा नाम।—स्पाइक नेयार्ड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—दमा ; श्वास-कृच्छ्रता और खाँसी—सोनेपर बढ़ना ; सामान्य सर्दी भी सहन नहीं होती—ऐसी अवस्थामें यह विशेष उपयोगी है । क्षयकास, प्रदर, रजोलोप वगैरह रोगमें भी यह बहुत फ़ायदा किया करता है ।

लक्षणावली ।

मन ।—फेफड़ेकी बीमारीका भय ।

नाक ।—कपाल और त्वचाको क्षय करनेवाले श्लेष्माका स्राव होनेकी वजहसे नाकके पिछले छेद (Posterior Nares) में बहुत जलन और दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, मानों दोनों नासा-पुट फट गये हैं। बार बार छींक । ठण्डी हवा लगनेके साथ ही छींक आती है और त्वचाको क्षय करनेवाला (Excoriating) पानीकी तरह और नमकीन श्लेष्मा निकलता है (सिपा)

श्वास-यंत्र ।—सूखा ; साँय साँय शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास (आर्स, ड्रूसिरा, कैलि-कार्ब, नैट्र-स्यू) ;—मानो श्वास रुकना चाहता है ; साँस लेते समय अधिक साँय साँय शब्द, सोनेपर बहुत बढ़ जाता है, रोगीको बाध्य होकर उठकर बैठ जाना पड़ता है। (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, कैलि-कार्ब, कैलि-नाई) । खाँसता खाँसता जाग उठता है (आर्स, सैम्बियुकस) और खाँसीकी वजहसे फिर नींद नहीं आती । वक्षोस्थिके पीछेकी ओर और दोनों फेफड़ोंमें (खासकर दाहिने फेफड़ेके भीतर बहुत जलन और दर्द मालूम होता है ।) ऐसा मालूम होता है । मानो वक्षस्थल खूब कसा हुआ है ; वायु-नलीमें किसी दूसरी जातिका पदार्थ प्रवेश कर गया है (ड्रोसेरा, फास, सिफाइटिस, आर्जेण्ट-मेट) ; श्वास रोगका प्रकोप दब जानेपर सहजमें ही नमकीन, गर्म थूक या बलगम निकला करता है ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ठण्ड लग जानेकी वजहसे एकाएक रजोलोप (ऐकि, डालका, कोना, पलस, ओलि, कैजुपुट) । प्रदर,—खट्टा, बदबूदार स्राव और जरायुमें दबाव मालूम होना । प्रसवके बादका स्राव (Lochia) रुक जानेकी वजहसे पेट फूलना (Tympanites=कोली, हायोसा) मूत्राशय और जरायु प्रदेशमें भयानक यंत्रणादायक दर्द ।

सम्बन्ध । — सदृश ।—कैल्केरिया, रियुमेक्स (खाँसी) ; क्लोरोफ, आर्स-आयोड, सिपा, सैम्बुकस, रोजा, सिनैप-नाइग्रा ।

शक्ति ।— मूल अर्कसे १२ दशमिक क्रम ।

ऐरेनियेरम-टेला ।

(ARANEARUM TELA)

दूसरा नाम ।—मकड़ेका जाला ।

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—मकड़ेके जालसे विचर्ण या अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह नींद न आनेकी एक बढ़िया दवा है । इसके सेवनसे नाड़ीका स्पन्दन बहुत जल्द मृदु हो जाता है और क्रमसे मानसिक प्रसन्नता और अन्तमें नींद आ जाती है । अफीमकी तरह इससे भी मानसिक प्रसन्नता पैदा होती है, परन्तु इससे अफीमकी तरह अनेक बुरे लक्षण या दुष्परिणाम नहीं पैदा होते ।

शक्ति ।—निम्न शक्ति ।

ऐरेनिया साइनेनसिया ।

(ARANEA SEINENCIA)

परिचय ।—पुरानी दीवारोंमें रहनेवाला एक तरहके भूरे रंगका मकड़ा । ये जाल नहीं तैयार करते ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— इससे अरिष्ट नहीं तैयार होता ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—दुर्बलता, आँखकी बीमारी, सर दर्द ।

उपयोगिता और आभास ।—लगातार दोनों आँखोंकी निचली पलकोंका काँपना—इसका एक उल्लेख योग्य लक्षण है । कोरियाके लक्षणमें माइगेलके साथ इसका सादृश्य है ।

आँखमें सूजन, आँसू बहना, पलकोंका फूलना, बहुत ज्यादा लार बहना, मुँहका स्वाद मीठा, सरमें दर्द, नींद न आना, लक्षणमें यह बढ़िया काम करता है । इसके रोग लक्षण सब गर्म कमरेमें बढ़ जाते हैं ।

सम्बन्ध ।—ऐगरिकस, कार्बोवेज, पल्स, एपिस, सल्फ, और दूसरी दूसरी मकड़ेसे तैयार दवाएँ ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ऐरेनिया डायाडेमा ।

(ARANIA DIADEMA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके युरोपीय और अमेरिकन मकड़ेसे अर्क तैयार होता है ; इसका विचूर्ण भी हो सकता है ।

उपयोगिता और आभास ।—बँधे समयका अन्तर देकर रोग आदिका पैदा होना ; सर्दी और सामान्य ठण्ड लग जानेपर भी बीमार हो जाना ; जिन मनुष्योंको तर हवाके सेवनसे या जिसे साधारणतः रसवात या श्लेष्मा-प्रधान धातुवाला कहा जाता है, उनके देशमें पूतिवाष्पज (Malaria) विषके प्रवेशसे उत्पन्न रोगोंमें यह उपयोगी है । रोगी अपनी गभीरतम हड्डीमें भी शीत अनुभव करता है और किसी तरह भी वह शीत नहीं घटता । ऐसा मालूम होता है, मानो प्रत्यङ्ग सब बड़े और भारी हो गये हैं । रातमें नींद खुलनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका हाथ लम्बाईसे दूना हो गया है । बहुत जाड़ा मालूम होने बाद बहुत थोड़ा बोखार ; निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर शीत-ज्वर या स्नायुशूल आदि रोगोंका आविर्भाव होता है ; रोग आदिका एकाएक पैदा हो जाना और उसका प्रचण्ड प्रकोप ; मस्तक मुखमण्डल, हाथ वगैरह प्रत्यङ्ग मानो फूले हुएसे मालूम होते हैं ; ऐसी सर्दी या जाड़ा मालूम होता है, मानो हड्डियाँ सब तुषारमय हो गयी हैं ; शरीरके कितने ही स्थानोंसे रक्तस्राव होता है ; चोट लगी हुई जगहसे खूनका-स्राव ; बिजलीके वेग (Current) की तरह चारों ओर दौड़नेवाला स्नायुशूल (मैंग-फास) ; बहुत सुस्ती ; हमेशा सोनेकी इच्छा ; दाँतका दर्द,—रातमें सोनेके बाद बढ़ना ; दाहिनी ओर लक्षणोंकी अधिकता ; बाहरी उत्ताप और शीतसे वह नहीं घटती । बोखारके अन्तमें पसीना न होना,—वगैरह कई डायाडेमाके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली।

मन।—हताश, मृत्युकी आकांक्षा।

मस्तक।—मुखमण्डलके बाईं ओरके स्नायुकी सीमासे अन्तरतम प्रदेशतक दर्द मालूम होता है। माथेके सामनेवाले भागमें अधिक दर्द, मस्तिष्ककी दुर्बलता,—घरके बाहरी भागमें जाने या धूम्रपान करनेपर सरका दर्द और कमजोरी दोनों ही एकदम आराम हो जाते हैं। (ऐ-कार्ब) आँखोंमें गर्मी मालूम होना और काँपती हुई दृष्टि,—जलीय वायुमें वृद्धि। सरमें दर्द घटनेका समय आनेके पहले सरमें चक्कर आना और दृष्टिका धुँधलापन,—रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। सर दर्द—इसके साथ ही आँखोंमें जलन और चेहरेमें उत्ताप मालूम होना। ललाट और मुखमण्डलमें आगकी तरह उत्ताप।

मुंहके भीतर।—रातमें सोनेके कुछ ही बाद समूची ऊपरी और निचली दन्तपंक्तियोंमें एकाएक तेज़ दर्द पैदा हो जाता है (किसी एक समूची पंक्तिमें=कैमो, मार्क, रास, स्टैफि)। जीभ प्राय: सुन्न-सी मालूम होती है। बोली अस्पष्ट और जकड़ी हुई और जिह्वामूल तथा निचले हनुमें असह्य यन्त्रणा।

श्वास-यंत्र।—पंजरेके भीतरके स्नायुओंके अन्तिम अंशसे मेरुदण्ड तक दर्द मालूम होता है। दुबले-पतले और रक्त-शून्य रोगियोंके फेफड़ेसे चमकीले लाल रङ्गका रक्तस्राव (Hoemoptysis=ऐकोन, डालका, हायोसा, इपिका, मिलिलोट, रास)

स्त्री जननेन्द्रिय।—ऋतु,—नियमित समयके आठ दिन पहले ही हो जाता है और बहुत तेज तथा अत्यन्त अधिक स्राव होता है। तलपेट वायुसे भरा और फूला रहता है। चूतड़, पुट्ठे और समूचे तलपेटमें स्नायुशूल। जरायुसे (Metrorrhagia) चमकीले लाल रङ्गका रक्तस्राव होता है=ट्रिल-थेन, थलैस्पी)। योनिसे गाढ़ा लसदार श्लेष्माका स्राव,—गाढ़ा लसदार प्रदर-स्राव (बोवि, हाइड्रैस्ट, कैलि-बाई); बाधक।

पाकाशय।—पाकस्थलीमें यंत्रणाजनक सिकुड़ना और फैलना या आक्षेप (Spasm) आरम्भ होता है।

मल।—तलपेटमें दर्दके साथ पतला तरल मल निकलता है; हाथसे मलनेपर पेटका दर्द घट जाता है। पानीकी तरह मल और आँतोंमें हुड़ हुड़

गुड़गुड़ शब्द,—मानो पेटके भीतर उत्तेजन (Fermentation) की क्रिया हो रही हैं। उदरामयके साथ,—बाहु और दोनों पैर सुन्न मालूम होते हैं।

प्रत्यङ्ग ।—हाथ-पैरकी हड्डीमें दर्द। पैरकी पीटलीकी हड्डीमें या उसकी बगलवाली हड्डीमें दर्द ; हाथ पैर मानो लम्बे और बहुत भारी मालूम होते है और रातमें नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों हाथ दूने लम्बे हो गये हैं। ऐसा मालूम होता है, कि प्रत्यङ्ग आदि फूल गये हैं और सुन्न हो गये हैं। प्रत्यङ्ग एक ही समय दर्द पैदा होता है [सिड्रन ; बन्दूककी गोली लगनेबाद रक्तस्राव। हड्डियाँ मानो बरफकी तरह ठण्डी मालूम होती है [हेलीडर्मा]। बाएं गुल्फके नीचे जखम पैदा हो जाना [कार्ब्हि]।

निद्रा ।—बेचेन नींद और जागनेपर हाथ आदि मानो फूले और भारी हो गये हैं, ऐसा मालूम होता है।

ज्वराधिकारमें ।—जाड़ा नित्य या एक दिनका अन्तर देकर ठीक एक ही समय होता है (सीड्रन) ; शीत सबसे ज्यादा, हमेशा—जाड़ा मालूम होता रहता है ; बसांतके दिनोंमें या तर हवामें वृद्धि (डालका, नेट्र-सल्फ, नक्स, रास, रोडोडे) ; प्लीहा बढ़ी हुई। नित्य एक ही समय ऐसा मालूम होता है, मानो उदरमें पत्थरकी तरह कोई कड़ी चीज है। दीर्घास्थिमें दर्द और शीत मालूम होता है। शीत पैदा होनेके पहले पाकस्थलीमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम होना। वमन और कटिवेदना। हमेशा जाड़ा मालूम होना। सेंकने आदिसे भी जाड़ा नहीं जाता, मानो हड्डियाँ सब बरफ-भरी है। नित्य ४ बजनेके समय शीत। प्यास और बिना पसीनाका बोखार। उत्तापावस्थामें सरमें दर्द और नींद आना (जेलस)। बोखार छूटनेपर वमन और अवसन्नता ; मुर्देकी तरह पड़ा रहता है : आँखोंमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होना।

सार्वाङ्गिक ।—नवद्वारके प्रत्येक द्वारसे रक्तस्राव हो सकता है। स्नायु-शूल,—अधिकांश स्थानोंमें दाहिनी तरफ,—जोरसे मलनेपर घटता है ; ऋतुके समय वृद्धि ; यंत्रणा असह्य हो उठती है—रोगिनीको वाध्य होकर शय्या छोड़ देनी पड़ती है ; प्रति तीन सप्ताहका अन्तर देकर ऋतुस्राव होता है। अत्यन्त सुस्ती और आलस्य मालूम होना। बैठनेकी अवस्थामें प्रत्यङ्ग हमेशा हिलाया करते हैं।

वृद्धि ।—जलीय वायु ; भींजी जमीन ; तीसरे पहर और पिछली रातमें वृद्धि।

घटना।—निर्मल वायु और धूम्रपानसे।

सम्बन्ध।—सदृश,—म्याङ्गेल, आर्स, ईलोडर्मा, सोइन (ग्रीष्म-प्रधान देशका सविराम ज्वर; डायाडिमा—शीतप्रधान देशका); नेट्र-सल्फ, टूपिका, थिरिड, टेरिण्टिउला, आर्स (सविराम ज्वर)।

दोषघ्न।—आयना, क्विनाइन, मार्क।

शक्ति।—६ ठें से २०० क्रम।

आर्बिउटस ऐण्ड्राचिन।

(ARBUTUS ANDRACHNE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नये ब्लू-बेरिके वृक्षको फुनगीसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—डा० कूपरने इसकी स्वस्थ्य शरीरपर परीक्षा की थी। इसके बाद इसका प्रचार किया था। उनके मतसे गठिया वात और ऐक्जिमा रोगकी यह एक बहुत ही उत्कृष्ट दवा है। छोटी सन्धियोंकी अपेक्षा बड़ी सन्धियोंपर इसकी क्रिया अधिक होती है। ऐलोपैथगण इसे एक पेशाब लानेवाली दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—लेडम, कैलमिया, ब्रायो, इयुवा-उर्सि।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

ऐक्टियम लैप्पा।

(ARCTIUM LAPPA)

दूसरा नाम।—लैप्पा आफिसिनेलिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मुंहासे; पामा; ग्रन्थियोंकी बीमारी; नाना प्रकारके उद्भेद; प्रमेह; वात; ध्वजभंग; श्वेतप्रदर; दाद; कण्ठमाला; वन्ध्यत्व; जखम; जरायु-भ्रंश इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—चर्म-रोग और स्त्रियोंके जरायु भ्रंश या स्थान-च्युति रोगमें यह अत्यन्त लाभदायक है ।

लक्षणावली ।

मस्तक और मुखमण्डल ।—मस्तक, सुखमण्डल और गलेपर रस-भरी फुन्सियाँ, फोड़े, दूधिया फोड़े (Crusta Lactea) या दूधिया पपड़ी जमनेवाले फोड़े, खसड़ा आदि उद्भेद पैदा हो जाते हैं । चेहरेपर फोड़े और पलकपर गुहौरी (Styes=पलस, स्टेफि) और जखम आदि पैदा हो जाते हैं । बच्चोंके मस्तक वगैरह स्थानोंमें दुधिया पपड़ी (Crusta Lactea) जमने वाला फोड़ा या फटे घाव और जूँ पैदा हो जाती है ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—योनि-तन्तुकी अत्यन्त शिथिलताके साथ जरायुमें तेज दर्द, उसमें स्पर्श सहन नहीं होना और वस्ति गह्वर (Pelvis) में मानो कोई भारी चीज है, ऐसा मालूम होता है । खड़े होने, टहलने और पैर फिसलनेपर या किसी तरह एकाएक शरीर हिलने पर दर्द बहुत बढ़ जाता है (हेलोनियस, लिसिन) । बहुत तेज नीचेको और खींचनके साथ जरायुभ्रंश (Prolapsus uteri) रोग या जरायुका अपने स्थानसे हट जाना (फेक्सिनस-ऐमे, लिलि-टाइ, सिपी, प्लैटि) ।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा और बार बार पेशाब । पेशाब कर लेने बाद मूत्राशयमें दर्द मालूम होता है ।

प्रत्यङ्ग ।—बाँह, जंघा और पैरकी पीटलीसे दर्द पैदा होकर हाथ-पैरकी अँगुलियोंतक फैल जाता है । सभी सन्धियोंमें दर्द । प्रत्यङ्गोंमें नाना प्रकारके उद्भेद (Eruptions) और फोड़े निकल आते हैं, बचमें या बगलमें बदबूदार पसीना (लैक-कैन, सिपि, नक्स-मस्केटा=औरतोंका) । वातकी वजहसे दर्द, पतले दस्त आना आरम्भ होनेपर घटता है (एकाएक उदरामय रुकनेकी वजहसे वात-वेदना=ऐब्रोट) । बगलकी गाँठमें (Axillary glands) पीब पैदा हो जाना । (युग्-रिजो, ग्लैफ)

त्वचा ।—बार बार असंख्य फोड़े पैदा होना, बड़े कष्टसे वे आराम होते हैं (आर्निका, सल्फ, बेलिस) । चकत्तेकी तरह दाद (Tinea Favosa) माथेके ऊपर, मुखमण्डल पर और गर्दनमें धुमैला-सफेद (Greyish white) चकत्तेकी तरह जखम पैदा हो जाता है ।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्निका, कौलोफ्इला, सिना, ब्रायो (वात); बेल ; हेलोनियस ; लिसीन, वेलिस, फ्रैक्सिनस अमेरिकानम, लिलियम-टाइ, सिपा (जरायु-च्युति), कैल्के-फास, तायला (चर्म्म)।

शक्ति।—मूल अर्क से ६ ठा दशमिक तक।

ऐरिका।

(ARECA)

दूसरा नाम।—ऐरिका कैटेचू ; सुपारी ; बिटल-नट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—क्रिमिका धातु, अदूर-दृष्टि—दूरकी चीज देख नहीं सकता ; लार बहना ; फीता जैसी क्रिमि।

उपयोगिता और आभास।—भारतवर्षमें, भोजनके बाद मुख-शुद्धिके लिये पानके साथ या केवल सुपारी ही खानेकी प्रथा है। इसे चबानेसे मसूढ़े मजबूत होते हैं, पर ज्यादा मात्रामें प्रयोग करनेपर मृत्युतक हो सकती है ; दूरकी चीज न दिखाई देना, लार बहना वगैरह लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

शक्ति।—निम्न शक्ति और विचूर्ण।

आर्जेण्टम सायेनेटम।

(ARGENTUM CYANATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण ; इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—वक्षका स्नायुशूल या हृत्शूल ; दमा ; खांसी ; ऐंठन इत्यादि।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

आर्जेण्ट आयोडेटम।

(ARGENTUM IODATUM)

(Iodide Siver)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—सर्दी; स्वरभङ्ग; पक्षाघात; उपदंश।

शक्ति।—निम्न क्रम।

आर्जेण्टम मेटेलिकम।

(ARGENTUM METALLICUM)

दूसरा नाम।—चाँदी। रौप्य।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण; इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—पलकोंका प्रदाह; मस्तिष्ककी क्लान्ति; हड्डियोंका क्षय; हरिपाण्डु रोग; खाँसी; बहुमूत्र; अनजानमें पेशाब; मृगी; हृत्पिण्डकी बीमारी; वंक्षण सन्धिकी बीमारी; डिम्बाधारका प्रदाह; क्षयकास; स्वप्न-दोष; बात; जरायुका कर्कटीया जखम; जरायुका अपने स्थानसे हटना; स्वरभङ्ग।

उपयोगिता और आभास।—लम्बे, रोगी और चिड़चिड़े मनुष्योंके लिये तथा जो रोग पाराके अपव्यवहारकी वजहसे पैदा हुए हैं; उनमें विशेष उपयोगी और लाभदायक है। अस्थि-संयोजक स्थान, अस्थि, उपास्थि (Cartilages) और हड्डियोंकी बन्धनी (Ligaments) वगैरहके ऊपर ही चाँदीकी क्रिया प्रकट हुआ करती है। वायुनलीके मुखपर भी इसका विशेष अधिकार है। इसीलिये, पेशेवर गवैयोंके स्वर विकारकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। पलक, कान, नाक और कानके पीछेवाली उपास्थियोंपर यह आक्रमण किया करता है और इन सब अंगोंकी उपास्थिके रोगादिमें बहुत ही उत्कृष्ट फल दिखाता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) स्नायविक

सरका दर्द ; नित्य होनेवाला, बाईं कनपटीका (Left temporal) दर्द ; सहजमें चक्कर आना (२) पेशेवर गवैयोंका स्वर-भङ्ग और स्वरलोप (Aphonia) । (३) खाँसी,—हँसनेपर बढ़ जाती है (४) वक्षोस्थिके ऊपरी अंश-वाले गह्वरमें लाली पैदा हो जाना । (५) बाएं वक्षकी कमजोरी । (६) खाँसीकी स्वरनली (Larynx) के ऊपरी अंशमें, खाल उधड़नेकी तरह (Soreness) मालूम होना । परन्तु निगलनेके समय ऐसा मालूम नहीं होता । (७) स्वरनलीमें गाढ़ा माड़की तरह श्लेष्मा इकट्ठा होता है, जो सवेरेके वक्त निकलता है । (८) सिझाये हुए माँड़की तरह श्लेष्मा सहजमें ही निकलता है । (९) हाथ-पैरकी सन्धियोंमें अकड़न ;—चोट खा जानेकी तरह दर्द (१०) सीढ़ी चढ़नेके समय पैरकी पोटली छोटी मालूम होती है या उसमें खींचन होती है (११) हाथ-पैरोंमें और सन्धि-स्थानोंमें बिजलीका करेण्ट लग जानेकी तरह चिलकका दर्द मालूम होता है । (१२) हस्तमैथुनकी कुप्रवृत्तिके बाद रेतःस्खलन ; प्रत्येक रातमें ,—पर लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता ; इसके साथ ही शिश्नका पतलापन ; अण्डकोषमें कुचलनेकी तरह दर्द (रोडो-ड्रेन) । (१३) जरायु-भ्रंश ; बाएँ डिम्ब-कोष [Ovary] और उसके साथ ही कमरमें दर्द (दाहिने डिम्बकोषमें दर्द=पैलेड) ; वयःसन्धिकालमें जरायुसे स्राव । [१४] अवसादक (Exhausting) सर्दी ; बार बार छींक [ऐरेलिया-रैस, सिपा, साइली] और पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव । (१५) दोनों वायुनलीभुजके संयोगस्थलके ऊपरी अंशमें क्षय हुई त्वचाकी तरह मालम होना ।

लक्षणावली ।

मन ।—संन्यास या सर्द-गर्मी रोग हो जानेका भय (काफि, फेरम,—विसूचिकाका भय—ऐ-नाइ) ; खासकर उसके साथ ही हृत्कम्पन । चिड़चिड़ा स्वभाव और बात करनेकी इच्छा न होना (कैमो, जेल, ब्लोनो) ; बेचैनी और दुश्चिन्ताकी वजहसे एक स्थानपर रह नहीं सकता (कैल्के, आर्स, अरम, जेल्स, टैबेकम) प्रलापकी तरह क्रोध ।

मस्तक ।—मध्य-रात्रिके कुछ ही पहले नींदके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका मस्तक शय्यासे लुढ़का जाता है और इसके बाद ही वह चौंक उठता है । नित्य बाएँ शङ्खदेश या कनपटीमें (Temple) स्नायु-शूलकी तरह दर्द ; धीरे धीरे बढ़कर एकाएक आराम हो जाता है । मूर्द्धादेश [खोपड़ीका मध्य-स्थान] का छूना सहन न हो । सरमें चक्कर आना,—ऐसा

मालूम हो, मानो शराब पी है [आर्जे-नाइ, बेल, कैमो, कैम्फ, चिनिन-सल्फ, साइक्लूटा, ग्रैटी, नक्स, ओपि, पल्स, रास, सिकेलि, ष्ट्राम]। बहते हुए सोतेकी तरफ देखनेसे ही सरमें चक्कर आने लगता है [लिसिन]। माथा शून्य मालूम होता है (काकुलस)। पलकें लाल और मोटी हो जाती हैं। सर्दीकी वजह से सुस्ती (Exhausting); बार बार छींक (साइक्लामेन, ऐलियम-सिपा); पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव। मुंहकी हड्डीमें दर्द मालूम होता है।

आंख।—आंखमें खुजलाहट। पलकोंका किनारा फूला और लाल।

कान।— कानमें चिलक मारनेकी तरह दर्द ; कान रुकेसे मालूम होना।

नाक।—नाकसे खून गिरना। नाक बन्द। छींक।

गलेके भीतर।—पेशेवर गवैये और वक्ताओंका स्वरभङ्ग [ऐल्यू ; ऐरम-ट्राइ]। पेशेवर गवैयोंका स्वरलोप। निगलनेके समय या खांसनेपर गलेके भीतर और स्वरनलीके मुखपर चय हुई त्वचा और जखमकी वजहसे दर्द मालूम होना। हँसनेके समय खांसी आती है [ड्रोसेरा, फास, स्टैन] और स्वरनलीमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा सञ्चित होता है। जोरसे पढ़नेके समय बार बार गला साफ करना पड़ता है। पेशेवर गवैये और प्रकाश्य वक्ताओंकी स्वर चढ़ा लेनेकी शक्तिमें विकार पैदा हो जाना [अरम-ट्राई]।

पाकाशय और अन्त्राशय।—पाकाशयमें वक्षस्थलतक फैलनेवाला दर्द। बोखारकी अत्यन्त उत्तापावस्थामें भी प्यासका न रहना। उदरकी पेशीमें अत्यन्त सङ्कोचनकी वजहसे रोगीको झुककर चलना पड़ता है। बहुत ओकाई आना और कसैले पदार्थ वमन करने बाद गलेमें रुखड़ापन और जलन मालूम होना। भोजन करना आरम्भ करते ही समूचे उदर और विटप देश (Pubis) पर्यन्त दबाव मालूम होता है ; श्वास-प्रश्वासकी वृद्धि होती है और खड़े हो जानेपर ह्रास होता है। बार बार पाखानेका वेग।

पेशाब।—मूत्राधिक्य,—बहुत ज्यादा गदला और मीठी गन्ध लिये पेशाब ; बार बार पेशाबका वेग ; बहुमूत्र [लैक-डिफ्लो]।

पुं-जननेन्द्रिय।—रेतःस्खलन,—इन्द्रियके अस्वाभाविक व्यवहार की वजहसे रोग ; प्रायः प्रत्येक रातमें रेतःस्खलन ; शिश्नका पतलापन। ऐसा दर्द मानो अण्डकोष पीसा जा रहा है। (रोडोडे)

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुभ्रंश—बायाँ डिम्बाधार और योनिदेशमें या नितम्ब-देशमें दर्द और यह दर्द उदरके सामने या नीचेको ओर फैल जाता है (दाहिने डिम्बाधारमें दर्द=पैलेडियम); वयःसन्धि कालीन (Climacteeric) जरायु-स्राव। डिम्बाधार बड़ा मालूम होना। जरायुग्रीवाको खींचने या किसी सामान्य कारणसे रक्तस्राव होना; बदबूदार और त्वचाको क्षय करनेवाला प्रदर। जरायुमें एक अर्बुद (Uterine scirrhosis), जरायुसे रक्तस्राव,—शरीरको हिलानेसे ही रोग बढ़ जाता है। समूचे तलपेटमें स्पर्श असहनीयता मालूम होती है,—किसी तरह हिलने-डोलनेसे ही दर्द बढ़ जाता है।

श्वासयंत्र।—फेफड़ेमें बहुत कमजोरी मालूम होना (स्टैनम) बाईं ओर वृद्धि। खाँसनेपर सहजमें गाढ़ा लेईको तरह या सिझाये हुए माड़की तरह श्लेष्मा निकलता है। दोनों वायुनलीभुजके संयोगस्थलपर क्षय हुई त्वचा जैसा मालूम होता है; स्वरका व्यवहार करने, बोलने या गानेके समय वृद्धि। सीढ़ी चढ़नेके समय और सर झुकानेपर वायुनलीमें श्लेष्मा आ जाता है और खाँसते ही निकल जाता है।

प्रत्यङ्ग।—हड्डियोंमें स्पर्श असहनीयता और छेदनेको तरह दर्द तथा पीसने जैसा मालूम होना। सन्धियाँ कमजोर और दर्द भरी मालूम होती हैं, खासकर किसी स्थानसे उतरनेके समय सन्धिमें वातका दर्द, खासकर किसी केहुनी और जानु-सन्धिमें। दोनों पैर पतले, क्षीण और काँपते हुए। अपस्मार या मृगी (Epilepsy), भयानक उन्मत्तता और जो कोई पास रहता है उसीको प्रहार करता है। अत्यन्त सुस्ती,—हमेशा लेटकर सो जानेको इच्छा (एबिजकैन, वेलिस, नेट्र-कार्ब)

ज्वर।—विलेपी या क्षय ज्वर (Hectic fever);—रोज ११ बजेसे १२ बजेतक या १ बजेके बीचमें बोखार आता है। पीठ और तलवेमें शीत मालूम होता है। रातमें थोड़ा भी ओढ़ना उतारनेसे ऊपरी अंगमें शीत मालूम होता है। ज्वरके लक्षण दो पहरमें फिर पैदा हो जाते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश और तुलनीय—ऐल्यूमिनाके बाद ज्यादा फायदा करता है, हँसनेकी वजहसे खाँसीमें स्टैनमके सदृश। जरायु और डिम्बाधारके लक्षणके सम्बन्धमें आर्जेण्टम मेटालिकम, पैलेडियम सम्पूर्ण, सदृश गुणयुक्त

है। पर पैलेडियमको क्रिया दाहिने डिम्बाधारके ऊपर और आर्जेण्टमकी क्रिया बायें डिम्बाधारपर होती है। जिङ्कम (आँखके कोनेमें खुजली)।

दोषघ्न।—मार्कुरियस और पल्सेटिला।

शक्ति।—२ रे से लेकर ६ ठा दशमिक विचूर्ण और ३० शततमिक क्रम।

आर्जेण्टम नाइट्रिकम।

(ARGENTUM NITRICUM)

दूसरा नाम।—(नाइट्रेट आफ सिलवर, लूनर कास्टिक)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआए हुए पानीमें निम्नतर-क्रम प्रस्तुत होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— अम्ल-रोग; खूनकी कमी; उपदंश; अजीर्ण; मृगी; डकार; विसर्प; चक्षु रोग; पेट फूलना; पाकाशयका जखम; प्रमेह; हाथ फूलना; सरका दर्द; छातीमें जलन; पक्षाघात; स्नायुशूल; बच्चोंके आँखोंका प्रदाह; मूलद्वारशायी ग्रन्थिको सूजन; चेचक; कशेरुकाकी उत्तेजना; उपदंश; गलेके भीतर कितनी ही तरहकी बीमारियाँ; जीभका जखम; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० एइच० सी० एलेनका कथन है, कि जब कभी सूखी देह, चय हुआ मांस, देखनेमें वृद्ध जैसा आदमी दिखाई दे, उसी समय आर्जेण्टम नाइट्रिकमको स्मरण करना चाहिये। (क्षीण-देह, चिपके हुए गाल, गड्ढेमें धँसी आँखें—सिकेलि), क्रमसे बढ़नेवाला दुबलापन और शीर्णता—विशेषकर अधमाङ्गका (ऐमोन-म्यू); प्रार्थना-मन्दिर या अभिनय गृह (थियेटर) में जानेमें भय मालूम होता है और इसीसे अतिसार पैदा हो जाता है; उत्तेजनाशील प्रकृति। स्थूलकायता रोग भी इसके विषयके अन्तर्गत हैं (ऐण्टीम, बैसिलाइन, आयोड, सार्सा-पैरिला)। दर्द धीरे धीरे बढ़ता है, और धीरे धीरे घटता जाता है। रोगी हमेशा घबड़ाया हुआ रहता है। निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित रहता है। लोगोंको प्यार नहीं करता। किसी सभा-समितिमें जानेकी बात होते ही उसे पतले दस्त आने लगते हैं। उसके दिन मानो नहीं कटते, एक दिन एक वर्षकी तरह मालूम

होता है। उसे ऐसा अनुमान होता है, कि मानो रोगवाले अंश सब बढ़ रहे हैं। स्नायु-विधान, मस्तिष्क, मेरुमज्जा प्रभृति स्थान इसके क्रिया-क्षेत्र हैं। इसकी प्रकृतिगत क्रियाका फल है, तालुमूल, पाकाशय और अन्त्राशयमें तीव्र प्रदाह पैदा हो जाना। मिठाई अच्छी लगना, रोगवाली जगहमें ऐसा मालूम होना, मानो सलाई दी जा रही है और आक्रान्त श्लैष्मिक झिल्लीसे पीबकी तरह श्लेष्माका स्राव वगैरह इसके प्रकृतिगत और अवश्य फल देनेवाले लक्षण हैं। इसका एक निर्देशक लक्षण यह भी है, कि ऐसा मालूम होता है, कि शरीरका कोई अंश विशेष फैलता जा रहा है। सरमें दर्द, माथा कपड़ेसे कसकर बाँध लेनेपर आराम मालूम होना, आँखोंमें भयानक उत्ताप मालूम होना, आँखोंका प्रदाह (Ophthalmia)—पलकोंकी त्वचा क्षय हो जाती है, फूल जाती है और रोशनी सहन नहीं होती; आँखोंमें बहुत गर्मी मालूम होती है। पीबकी तरह श्लेष्मा या पपड़ी निकला करती है; सवेरे आँख सट जाती है। नव-जात शिशुकी आँखोंका प्रदाह (आँख उठना—Ophthalmia Neonatrum)। नाकमें खुजली,—रगड़नेपर खून गिरता है। चढ़े सुरमें गानेपर खाँसी आती है; बहुत दिनों तक स्वरभङ्ग बना रहता है, गलेमें इस ढंगका दर्द होता है, मानो फोड़ा हुआ हो। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें कोई नुकीली शलाका बिंध रही है। पाकाशयका शूल (Gastralgia); आगे उठी नाभीमें बीचवाली अंगुलीके अगले भाग जितने अंशमें सीमाबद्ध वेदना; इसके साथ ही बहुत अधिक स्पर्श असहनीयता; दर्द पीठ, कन्धा और दोनों कोखों तक फैल जाता है। पाकाशयका दर्द हाथकी मुट्ठी बाँधकर दबानेसे घटता है। बहुत अधिक पाकाशयिक (Gastric) विकृति—पेट फूलना (Flatulency), उदरामय,—सागके चूरकी तरह पानी जैसा हरे रङ्गका मल; थक्का थक्का आँव निकलती है; चीनी या मिष्टान्न भोजनसे ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थली फट जायगी; बड़े कष्ट और बड़ी आवाजसे वायु निकलता है। खाते ही मलका वेग होता है। मूत्रनाली (Urethra) के बीचके अंशमें जखम हो जानेकी तरह दर्द, मानो कोई कांटा चुभा हुआ है। पेशाबके समय, अन्तमें कई बूंदें निकलनेके समय, मूत्रनालीके पीछेवाले स्थानसे मलद्वारतकके स्थानमें कतरनेकी तरह तकलीफ मालूम होती है। दोनों पैरोंकी क्षीणता और सुन्न हो जानेके कारण खड़े होने और चलनेके समय रोगी डगमगाया करता है।

लक्षणावली।

मन।—किसी काममें हस्तक्षेप नहीं करना चाहता, हमेशा यही सोचता है कि उसके काम काज सब निष्फल होंगे। (अरम, सोराइनम), बहुत व्यस्त, समझता है कि समय बहुत धीरे धीरे बीत रहा है (कैन-इ, ऐलू, अरम, कैमो, मिडोराइन, नक्स, ऐनहैलो ; बहुत तेजीसे बीतता है=काक्युलस, थिरीडियन) सब काम तेजीसे करना चाहता है; चलनेके समय बहुत तेज चलता है ; भावनायुक्त, क्रोधी स्वभाव, कोमल हृदय (अरम, लिलियम)। खिड़कीसे कूद पड़नेकी चेष्टा करता है (ग्लोनोइनम) ; अवसादग्रस्त और कम्पनशील। दुःखित ; रोशनी और बातचीत रोकनेके लिये आँखें बन्दकर सोया रहता है। रोगीको ऐसा विश्वास रहता है कि उसके पुत्र कलत्र आदि उससे घृणा करते हैं। समझता है कि बादलका एक टुकड़ा उसके माथेपर मंडरा रहा है (ऐक्टिया-रे) ; इसके साथ ही अत्यन्त विषाद, भय, इस बातका कि शायद उसका रोग सांघातिक न हो जाये (मिडोराइन ; सैबैड ; सिफिलाइन)। सभासमितिमें जानेकी बात होते ही दस्त आने लगते हैं ; (जेल्स)

मस्तक।—अधिक शोणित संचय होनेकी वजहसे सरमें दर्द;—माथेमें भरापन (ऐको, बेल, ब्राई,, डैफनी, रास-रैडि) और उसके साथ ही भारीपन मालूम होना (बेल, कार्बो-वे,नक्स-वोम, रास-रैडि; टैबेकम) ; मस्तकमें फैलाव मालूम होनेकी वजहसे सरमें दर्द (बेल, ब्राई, कोरैली, डैफनी, इग्ने, नक्स, फेलेन, सिनि, स्पाइजि) ; साहित्यानुरागी, मनुष्योंकी पुरानी पाकाशयिक विकृतिकी वजहसे सर-दर्द ; नर्त्तनकी वजहसे सर-दर्द, अधकपारीका सर-दर्द या शिरार्द्धशूल (Hemicrania),—पीसने और रूक्रू-बेधनेकी तरह दर्द,—ललाटमें ; शृङ्गदेशमें (Frontal eminence) या बाईं कनपटी या शंखदेशमें दर्द ; सर-दर्दके बाद पित्त आदिका वमन (ऐल्यू, ब्राई, सिङ्को, कोनायम, ग्रेफा, इपिक ; कैलि-कार्ब, मक्सस नैट्र-म्यू, ऐसिड-नाई, नक्स, पलस, सैङ्गियु, सिपि, वेरेट्र ; अवसादजनक, मानसिक परिश्रमसे वृद्धि (नक्स, सलफर) ; दबाने या कसकर बांध देनेसे घटना (एपिस, पलस)। दर्द, चरम सीमातक बढ़ जानेपर समूची देह कांपा करती है और रोगी अचेतन अवस्थामें आँखें बन्द कर पड़ा रहता है। बोलनेकी इच्छा नहीं रहती और रोशनीकी ओर देख नहीं सकता। मूर्द्धाकी त्वचाकी खुजलाहट और माथेकी हड्डियां सब अलग हुई जैसी मालूम होती हैं।

स्नायु-विधान।—ऊंची अट्टालिका देखनेसे ही रोगीके सरमें चक्कर आ जाता है और वह टुलका करता है। उसे ऐसा मालूम होता है, कि मानो रास्तेके दोनों ओरके मकान सब उसके पास इस तरह हटे आते हैं, मानो उसे दबा देंगे। सड़कपर चलते समय, सड़क पार करते समय डरता है; क्योंकि उसे ऐसा मालूम होता कि इस मोड़के कोनेका कोई मकान आगे बढ़ आयगा और उसपर गिर पड़ेगा।

आंख।—आंखके योजकत्वकका नया अङ्कुरमय (Granular) प्रदाह (Acute Granular Conjunctivitis) या चक्षु-प्रदाह; योजक त्वचा लाल हो उठती है; स्राव बहुत ज्यादा और पीवकी तरह श्लेष्मामय रहता है; नव प्रसूत शिशुका चक्षु-प्रदाह (Ophthalmia neonatrum),—बहुत अधिक पीवकी तरह स्राव; आंख खोलनेपर यदि बहुत ज्यादा पीव पैदा हो जाय तो मार्कसोल अधिक लाभदायक होता है—(डा० नैश)।—स्वच्छावरक (Cornea) कोया गदला और जखम-भरा मालूम होता है। पलकोंमें दर्द रहता है और पलकें मोटी और फूली रहती हैं; सवेरे जुड़ी हुई दिखाई देती हैं [एपिस, मार्क-सोल, रास]। दर्शन-शक्तिके बहुत व्यवहारकी वजहसे—बहुत अधिक सीनेका काम या सिलाईके कामके कारण बीमारी; गर्म कमरेमें वृद्धि; निर्मल वायुमें घटना (नेट्र-म्यू, रूटा)। पेशी प्रभृतिकी क्रियाके सामंजस्यमें गड़बड़ी होनेकी वजहसे बीमारी; बहुत देरतक एक ओर देख नहीं सकता। आंखोंके कोने या दोनों अपाङ्ग खूनकी तरह लाल; बहिर अपाङ्गस्थित (External Canthi) त्रिकोन झिल्ली फूलकर कच्चे मांस पिण्डकी तरह दिखाई देती है और नाकके पासवाले कोनेसे कैशिक (Capillary) शिरा आदि लाल रङ्गकी होकर स्वच्छ आवरक (सफेद कोया) की ओर फैल जाती हैं।

नाक।—सर्दी, लगातार जाड़ा लगनेका भाव, आंखसे आंसू बहना। छींक और सरमें बहुत तेज दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य हो आंखें बन्दकर सो जाना पड़ता है, नाकमें इतनी खुजली होती है, कि रोगी नाक मल मलकर जखम पैदा कर लेता है (अरम-ट्राई); घ्राण-शक्तिका ह्रास।

मुखमण्डल।—रोग बतानेवाला चेहरा और आंखें गड़हेमें धसी और मुखमण्डलकी त्वचा हड्डीके ऊपर दृढ़ भावसे चारों ओर फैली रहती है।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—मसूढ़ेमें दर्द और सहजमें ही उससे रक्तस्राव होना। जीभका अगला भाग लाल, दर्द और जलन-भरा तथा सूखा—कार्बो-वेज, नेट्र-म्यू, फास); जिह्वा-कण्टक (Papillae) उठे हुए और स्पष्ट दिखाई देते हैं; बीचमें आदिसे अन्ततक लाल रेखा। स्वस्थ दाँतों में दर्द (कास्टिकम); गायकोंका बहुत दिनोंका (पुराना Chronic) स्वरनाली प्रदाह (Laryngitis), थोड़ा भी स्वर चढ़ानेकी चेष्टा करनेपर खाँसी आ जाती है (ऐल्यू, आर्ज-मेट, अरम); निगलनेके समय गलेके भीतर छोटी और तेज शलाकाएँ बेधनेकी तरह मालूम होता है (डलिकास; हिपर; ऐसिड-नाइ; सिलि)। गलेमें या वायुनलीमें सवेरे गाढ़ा लसदार श्लेष्मा संचित होनेके कारण बार बार खाँसकर निकाल डालनेकी चेष्टा करता है (हाइड्रेस, ऐल्यू, फास, नेट्र-कार्ब, लैके); तम्बाकू सेवन करनेवालोंकी सर्दी: गलेमें मानो केशखण्ड अड़ा है, ऐसा अनुभव होना और खुजली।

पाकाशय।—मीठा अच्छा मालूम होना,—बच्चा मीठी चीजें पसन्द करता है, परन्तु इससे उसके पेटमें बीमारी पैदा हो जाती है। उर्द्ध या अधोवायु निकलना,—पाकाशयकी बीमारीमें ऐसे लक्षणोंकी अधिकता; पेट-फूलनेके साथ अजीर्ण रोग,—प्रत्येक बार भोजनके बाद वायु छूटना; पेटमें इतना वायु भर जाता है कि ऐसा मालूम होता है, कि पेट फट जायगा। सहजमें ही वायु त्याग नहीं होता, पर बहुत जोर देनेपर जोरकी आवाजके साथ निकलता है। पाकाशय शूल (Gastralgia); कुल्फी बरफ खानेके बाद बीमारी,—दर्द चारो ओर फैल जाता है—भोजनके बाद वृद्धि। इसके साथ ही वायु; ऐसा मालूम होता है, मानो वायु शिकञ्जेमें (As if in vise) कसी हुई हो। (साइक्यू, आयोड, मेग-सल्फ, प्लैट, पल्स, स्टैन, सलफर)। पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्द-भरी सूजन,—इसके साथ ही चिन्ता। बालकोंकी तम्बाकू सेवनकी वजहसे बीमारी (आर्स, वेरेट्र)। पाकाशयका स्नायुशूल (Gastrodynia)। अग्रकाड़ा और नाभीके बीचके एक क्षुद्र अंगमें स्पर्श असहनीयता; दर्द चारों ओर फैलता है और धीरे धीरे बढ़ता है और घटता है।

अन्त्राशय और मल।—पेट फूलनेके साथ अन्त्रशूल। पाकाशयके बाईं ओर पंजरेके नीचे सुई बिंधने और जखम करनेकी तरह दर्द। उदरामय,—मल हरा श्लेष्मामय,—सागके चूरकी तरह मल या बिछावनके चादरके ऊपर

कुछ देर रहनेसे ही पीले रङ्गका या हरा हो जाता है (रियुम ; नीला हो जाता है=फास, जोरकी आवाज निकलनेके साथ वायु निकलनेके साथ हो मल वेग (ऐलो) से निकलता है (मानो नलसे गिर रहा है=क्रोटन-टिग, वेगके साथ निकलता है=फ़ीरम ; पाखानामें चारों ओर फैल जाता है=नेट्र-सल्फ़ ; पतली धारमें निकलता है=इलेट) ; मिठाई खाने बाद पतले दस्त ; आंव और लसिका (Lymph=एक तरहका पीवका रस) थक्का थक्का या सूतकी तरह आकारमें निकलता है (ऐसेरम)। पानीय [पतली पीनेकी चीजें] पीते ही पाखाना लग आता है (आर्स, क्रोटन, टाम्बिडी) ; आमाशय,—पूर्णावस्थामें—ऐसा मालूम होता है, मानो जखम पैदा हो गया है ; रसरक्त मिला हुआ मल ; थक्का थक्का लाल या हरा और सूतकी तरह आंव निकलती है ; इसके साथ ही तलपेटमें भयानक ऐंठन।

पेशाब। – दिन रात अनजानमें पेशाब निकला करता है [कास्टि] ; मूत्रनलीका प्रदाह, दर्द, जलन और खुजलानेवाला—ऐसा मालूम हो, मानो एक तेज काठकी सलाई बेधी जा रही है। पेशाबके अन्तमें बूंद बूंद पेशाब निकला करता है। प्रमेहकी तरुणावस्थामें—बहुत ज्यादा पीव बहना और कतरनेकी तरह असह्य दर्दको तकलीफ ; प्रमेहकी नयी अवस्था,—बहुत ज्यादा पीव स्राव और कतरनेकी तरह असह्य दर्द ; ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्रनाली रुक गयी है ; पुं-जननेन्द्रियकी उत्तेजना होनेपर चरचराने लगता है ; कभी कभी खून मिला पेशाब भी होता है। पेशाबकी अन्तवाली कई बूंदें निकलनेके समय मूत्रनालीकी जगहसे मलद्वार तक भयानक कतरनेकी तरह तकलीफ मालूम होना [एपिस, कैन्थ]।

पुं-जननेन्द्रिय।—ध्वजभङ्ग (Impotence),—स्त्री संसर्गकी चेष्टा करनेपर लिङ्ग शिथिल हो जाता है (ऐगनस, कैलेडियम, सेलिन) ; रमणकी इच्छा बिलकुल ही नहीं रहती। लिङ्ग शिथिल हो जाता है। स्त्री-संसर्ग अत्यन्त कष्ट जनक। कर्कटीया जखमकी तरह चर्मरोग।

स्त्री-जननेन्द्रिय। – रमण अत्यन्त कष्ट-जनक,—योनिसे रक्त निकलता है [ऐ-नाइट्रिक]। रातमें कामाग्निकी प्रबलता ; जरायु-भ्रंश (Prolapsus Uteri) इसके साथ ही जरायु मुख या जरायु-ग्रीवामें (Cervix) में जखम ; पीली आभा लिये प्रदरका स्राव, बहुत अधिक और त्वचाको क्षय

करनेवाला । जरायु (Metorrhagia),—कम उम्रवाली विधवाओंको बहुत अधिक शोणित-स्राव ; बन्ध्या स्त्रियोंके वय:सन्धिके समय (at climaxis) इसके साथ ही स्नायविक उत्तेजना [लैके],—ऋतुके दो सप्ताह बाद सब उप-सर्ग प्रकट होते हैं। गर्भावस्थामें आध्मान [पेट फूलना],—मानो पेट फट जायगा। ऐसा मालूम हो मानो माथा फैल रहा है। बच्चा पैदा होनेपर प्रत्येक बार अस्थिक्षय (Rickets) होकर मर जाता है। मालूम होता है, मानो जरायुमें तेज काठकी शलाका बिंध रही है। विशेषकर टहलने या सीढ़ी चढ़नेके समय [ऐ-नाइट्रिक, डलिकास, हिपर] ; ऐसा अनुभव होना।

श्वास-यंत्र ।—गवैयोंका पुराना स्वर नालीका प्रदाह (Laryngitis) स्वर चढ़ानेपर खाँसी आती है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-मेट ; अरम)। रोगी निर्मल हवा सेवन करनेके लिये लालायित रहता है। [एमिल, पल्स, ऐको, सलफर] श्वासरोध करनेवाली खाँसी ; ऐसा मालूम हो मानो गलेमें केश अड़ा है, [नैजा] खाँसी ; वक्षस्थलमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक लोहेके बन्धनसे बँधा हुआ है [कैक्ट] ; देहको हिलाने, सीढ़ी चढ़ने या किसी तरहका शारीरिक परिश्रमका काम करनेपर दमा और कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाती है [आर्स, कैल्के, आयोड, मार्क, नक्स, ओलियम-ऐनिम; स्टैन]। कलेजा धड़कना—दाहिनी करवट सोनेसे बढ़ जाता है। [कैलि-नाइ; बाईं करवट सोनेसे वृद्धि=कैक्टस, स्पाइजि]

गर्दन और पीठ ।—गर्दनकी [Cervical] ग्रन्थियोंका फूलना और कड़ा हो जाना ; उपदंशके विषकी वजहसे [कैलि-बाई,सिफिलाइन, मार्क-बिन, मार्क-प्रोटो] बीमारी। कमर और नितम्ब देशमें दर्द,—बैठने या सोने बाद, पहले पहल उठनेके समय बहुत तकलीफ मालूम होती है, पर कुछ देर खड़े रहने या टहलनेपर फिर दर्द नहीं रहता [रास]। पीठ या कमरके दर्दमें रोगीको बहुत सुस्ती [कार्लो-कार्ब] और थकावट मालूम होती है,—खासकर हाथ-पैरके निचले अंशमें और जंघाकी पोटलीमें अधिक। सरमें चक्कर आना और हाथ-पैरमें कपकपी मालूम होना। [डा० नैश]

प्रत्यङ्ग ।—निचले प्रत्यंग बहुत क्षीण और काँपते हैं (ऐनाक, आर्स, काष्टि, शाइक्यूटा, ग्रैनेट, आयोड, लाइकोप, नक्स, ओपि, फास , प्लम्ब, पल्स, रास, सिपा, स्ट्राम, सल्फ, थिरिड, वैरेट ; आँखें बन्द कर एक कदम भी नहीं

चल सकता है (ऐल्यू, जैल्म, स्ट्राम); खड़े होने और टहलनेके समय पैर डगमगाते हैं; जब उसे यह मालूम होता है कि कोई उसे देख नहीं रहा है। मृगी की तरह आक्षेप (Epileptic fits), आक्रमणके बाद रोगीमें बहुत बेचैनी हो जाती है। (दो आक्रमणोंके बीचके समयमें बेचैनी दिखाता है=क्यूप्रम) और उसके दोनों हाथ काँपा करता है,—ऋतुके समय या डरनेकी वजहसे बीमारी; आक्रमणके पहले रोगीके मनमें एक तरहकी अव्यक्त भीति पैदा हो जाती है, और उस समय वह जान जाता है, कि उसे शीघ्र ही यह रोग होगा (ऐमिल, नैट्र-म्यू)

त्वचा।—भूरे रंग (Brown) की त्वचा; नरम नहीं रहती और कड़ी। ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचापर कोई लसदार चीज सूख गई है या मकड़े का जाल लगा हुआ है। त्वचा सूखी और ऊँची नीची,—मानो झोल पड़ गया है। आराम होनेके अवसरपर जखम आदिमें बहुत अधिक मांसाङ्कुर (Granulations) पैदा हो जाता है। दर्द तेजीसे बढ़ता है और वैसी ही तेजीसे घटता है या धीरे धीरे पैदा होता है, और धीरे धीरे ही गायब हो जाता है।

निद्रा।—मनुष्यकी आँखके सामने या मनमें नाना प्रकारके दृश्य पैदा हो जानेके कारण नींद नहीं आती। स्वप्नमें मृत-बन्धु और प्रेतात्मा देखता है। सड़ी गन्ध भरा पानी, साँप, मछली,—वगैरह सपनेमें देखकर बहुत डरता है। इन्द्रिय परितृप्तिके सपने। औंघाई और आच्छन्न भाव।

ज्वराधिकारमें।—शरीरके वस्त्र खोलनेसे बहुत जाड़ा मालूम होता हैं (नक्स देखो) पर शरीर ढकनेपर ऐसा मालूम होता है, कि साँस रुक जाती है (लेक); निर्मल वायु सेवनका आग्रह प्रकट करता है। बहुत ज्यादा पसीना निकलकर मुखमण्डलके ऊपर मोतीके दानेकी तरह दिखाई देते हैं; ज्वरके समय वक्षके बगलमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना (वक्षमें=बाईं ओर, काली कार्ब) और खुजली दिखाई देती है। सवेरेके वक्त पसीना। शय्यामें शरीर गर्म होते ही पसीना और शीत पैदा हो जाता है (ऐल्यू)।

वृद्धि।—ठण्डे भोजनसे, ठण्डी हवा; चीनी आदि मिष्टान्न, कुलफी बरफ खाने और बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम और व्यायामसे वृद्धि।

उपशम।—निर्मल वायु और ठण्डे पानीसे स्नान। रोगीके चेहरेपर ठण्डी हवा लगनेसे बहुत आराम मालूम होता है।

सम्बन्ध।—आर्जेण्टम नाइट्रिकम या सिलवर नाइट्रेट अर्थात् कास्टिकमके द्वारा कोई अंश जल जानेपर, यदि किसी तरह स्वास्थ्य खराब हो जाये (नेट्रम म्युरियेटिकम) और दूध वगैरह उसके प्रतिविषके रूपमें व्यवहार होता है।

दोषघ्न।—पल्स, कैल्के; सिपिया, लाइकी, साइलीसिया; रास। सल्फ।

सदृश।—आर्जेण्ट-मेंट, अरम, क्यूप्रम, लैके, नेट्र म्यू, ऐ-नाइ, मार्क-कोर, मार्क-प्रोटो, और केली-बाई। कैल्के; ब्रायो, कास्टिकम, सार्सा, पल्स; स्टैनम; रक्ताधिक्यकी वजहसे सर दर्द—ग्लोनो। सदृश, गलेमें दर्द—एसिड, नाइट; हिपर।

शक्ति।—३ रीसे २०० शततमिक क्रम लाभदायक है; उच्चसे उच्चतम क्रम व्यवहारसे, पुराना अजीर्ण और आमाशय वगैरहमें विशेष लाभ करता है।

आर्जेण्टम आक्साइडम।

(ARGENTUM OXIDUM)

दूसरा नाम।—चांदीका विकार;—रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—औरतोंकी हरित् पीडामें या स्त्यापाण्डु, रोगमें (Chlorosis) ऋतुके समय बहुत ज्यादा स्राव और उदरामय प्रवणता मौजूद रहनेपर इसका प्रयोग आर्जेण्टम नाइट्रिकमके बदलेमें होता है। जरायुके सूत्रमय अर्बुदके साथ (Fibroid tumor) उससे रक्तस्राव यदि होता हो, तो उसमें भी फायदा करता है।

शक्ति।—६ ठी, और ३० वीं।

ऐरिस्टोलोचिया सर्पण्टेरिया ।

(ARISTOLOCHEA SERPENTAREA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—आर्जेण्टम फास्फोरिकम, आर्जेण्टम म्यूरियेटिकम का व्यवहार होता है ; इनकी सूक्ष्म दैहिक परीक्षा अभी नहीं हुई, इसी लिये, लक्षण नहीं लिखे गये ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—अजीर्ण और आध्मान ।

शक्ति ।—निम्न क्रम ।

ऐरिस्टोलोकिया ग्रैण्डिफेरा ।

(ARISTOLOCHIA GRANDIFERA)

दूसरा नाम ।—ऐरिस्टोलोकिया मिलहोमेन्स ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके फूलसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है। यह एक जातिका और भी होता है, उसे ऐरिस्टोलोकिया क्लिमेटाइटिस कहते हैं।

उपयोगिता और आभास ।—बहुमूत्र वगैरह रोगोंमें इसका व्यवहार होता है।

लक्षणावली ।

वक्षस्थल ।—हृत्पिण्ड शिखर (Apex) प्रदेशमें मानों छुरी बिद्ध हो रही है, इस तरहकी तकलीफके साथ श्वास-रोध (वेक्टस, सिफिलाइनम) वक्षस्थलके वाम पार्श्वमें चोटकी वजहसे पैदा हुएकी तरह दर्दका भाव ; रातमें इस अंशमें इतना दर्द होता है, कि दर्द बिलकुल ही सहन नहीं होता (ऐको, बेरा-कार्ब ; नैट्र-म्यू ; दाहिने पार्श्वमें = जिङ्कम-मेट ; स्पर्श सहन न हो = रैङ्स्टियुरा, रैनान, एसिड-फास ।)

सम्बन्ध ।—एकोन, बेराइटा-कार्ब, नैट्र-म्यूर ।

शक्ति ।—सद्दश—मूल अर्कसे २ रा दशमिक क्रम ।

आर्मोरेसिया रेस्टिकेना या कोचलियारिया।

(ARMORACEA RUSTICANA)

or

(COCHLEARIA ARMORACEA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी मूलसे मदर-टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—अण्डलाल मिला पेशाब; स्वरभङ्ग; दमा; मोतिया बिन्द; शूल; उद्भेद या खुजली; प्रमेह; पथरी; सरका दर्द; प्रदर; वात; फेफड़ेकी सूजन; पेशाबमें तकलीफ; दाँतका दर्द; जखम इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—मूत्र आदिमें विकार और प्रमेह, तथा शीताद (Scurvy नामक दन्तरोग) वगैरहमें यह बहुत लाभदायक है। मन्दाग्नि रोगमें यह पाचककी गोलीकी तरह काम करता है (जेन्शियाना लुटिया देखो); श्लैष्मिक झिल्लीपर क्रिया रहनेकी वजहसे इससे आम मिला दस्त, प्रदर, श्लेष्माकी अधिकता, जिसमें बहुत पैदा होता है, ऐसे श्वास-रोग (Pituitous Asthma) और श्लेष्मा, बहुत पैदा होनेवाले यक्ष्मा रोगमें इससे विशेष उपकार हुआ करता है। आँतोंके शूलके साथ कमरमें दर्द इसका प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। दर्द तलपेटसे पीठ और पीठसे उतरकर त्रिकास्थि प्रदेश (Sacrum) में ठहर जाता है। स्थान बदलनेवाली पुरानी वात व्याधिमें और पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे होनेवाली बीमारीमें विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें दर्द, कभी बाईं ओर और कभी दाहिनी ओर पैदा हो जाता है,—एकदम पूरी पूरी आँख खोलनेसे बढ़ जाता है, मिचलीके साथ सरमें तेज दर्द,—बैठनेपर बढ़ जाता है, ऐसा दर्द, मानो माथा फटकर माथा बाहर निकल पड़ेगा। हूप खाँसीमें नाकसे खूनका स्राव (ऐ-स्यू, आर्निका; ड्रोसे, इपिका।)

पाकस्थली ।—पाकस्थलीसे लेकर पीठकी ओरतक दर्द ; पीठके बीच
ाली कशेरुका (Vertebrae) दबने या रगड़नेसे दर्दका बढ़ना आरम्भ हो
ाता है। अन्त्राशयसे पीठतक फैलनेवाला दर्द, तलपेटसे लेकर पीठ और पीठसे
तरकर त्रिकास्थि (Sacrum) के ऊपर दर्द स्थिर हो जाता है। बहुत ज्यादा
ौर यंत्रणा रहित अतिसारके साथ ही अस्वाभाविक भूख। पित्तमय पदार्थकी
ं होना (Regurgitation) ; पेटमें ऐंठन (Cramps) की तकलीफसे
ोगी बेचैन हो जाता है।

पेशाब ।—पेशाब करनेके समय, पहले और बाद मूत्रनलीमें जलन
ौर कतरनेकी तरह यन्त्रणा (कैप्स, आर्जेण्ट-नाई, कैन्थ, मार्क, नक्स, ओलि-
म, ऐनिम, लैके, कैनाब-सैट, लाइकोपो, बार्बेरिस, कोलचि, डिजि, कैलि-
ार्ब, नैट्र-कार्ब, नैट्र-सल्फ, सैबाड; सार्सा, सेनेग, स्टैफि, थूजा; वैरेट, जिङ्कम)।
ार बार और असंख्य बार पेशाबका वेग (आर्जेण्ट, बेराई-कार्ब, कास्टि,
ोपेवा, युफ्रे, मार्क, रास, स्क्रिला, स्टैफि)। मूत्रकृच्छ्र (Strangury)
कैनाब, कैन्थ डालका, नक्स-वोम ; चलना आरम्भ करते ही पेशाबका वेग और
ोनेपर या अर्द्धशायित अवस्थामें (लेटनेपर) घट जाता है=डिजि-टेलिस)
अण्डलाल मिला पेशाब (Albuminuria)

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—पेशाब करनेके समय योनिसे गाढ़ा लसदार
कोकस-सैट) काला खूनका स्राव। आर्त्तव,—प्रत्येक दस या पन्द्रह दिनोंपर
रतुस्राव आरम्भ होजाता है। रुका हुआ आर्त्तव, (Suppressed Menses)
—इसके साथ ही हरित् या मृत्पाण्डु रोग (with Chlorosis)। वय:
सन्धिकालके-आरम्भसे पेटमें अकड़नकी तरह दर्द या ऐंठन।

मलान्त्र और मल ।—मलद्वारसे अनजानमें श्लेष्माका स्राव (ऐगार,
ोलचि, ग्रैफ; रातमें शय्यामें सोनेके समय=ऐसिड-कार्बोलिक ; निद्रावस्थामें=
ल, हायो, ऐसिड-म्यू, रूटा, फास,—खाँसने या छींकनेमें=स्क्विला ; खड़े
ोनेपर, टहलनेपर या भोजनके बाद=ऐलो ; वायु त्यागनेके समय=ऐलो ;
ऐसिड-म्यू, ओलि-ऐन, ऐसिड-फास, पोडो, वेरेट्रम ; पेशाब करनेके समय=
ऐलो ; ऐसिड-म्यू, नैट्र-सल्फ, स्क्विला,—शरीरमें प्रत्येक सञ्चालनसे=एपिस)।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभङ्गके साथ सर्दी (बेल, कार्बो-वेज, कैमो, ड्रोसेरा,
डालका, हिपर; मार्क, नक्स, फास, पल्स, ऐण्टि-टार्ट) फेफड़ेका शोथ। वक्ष-
स्थलको छूनेसे बहुत दर्द मालूम होता है।

सम्बन्ध।—सदृश—कैनाब, कैन्थ, सिनेप, कोपेवा, क्यूबेब। रसोहन, आर्जेण्ट-नाई।

शक्ति।—१ म दशमिकसे ३० शततमिक तक।

आर्निका माण्टेना।

(ARNICA MONTANA)

दूसरा नाम।—लियो पार्ड्स बेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समस्त वृक्ष और मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,— फोड़ा; संन्यास; पीठमें दर्द; शय्याका जखम; व्रण; मस्तिष्ककी बीमारी; टाक पड़ना; बदबूदार श्वास; चोट; दुष्ट-व्रण; (दूषित फोड़ा); श्वासनलीका प्रदाह; पार्श्व-शूल; फुसफुसकी आवरक झिल्लीका प्रदाह और वहाँ स्नायुशूल; ताण्डव; गट्ठे; बहुमूत्र; अकड़न; ऐंठन; अतिसार; रक्तामाशय; चोट लगनेकी वजहसे काला दाग पड़ना; खाल उधड़ना; सुस्ती; आँखोंमें चोटकी वजहसे बीमारी; पैरका जखम; रक्त वमन; खून-भरा पेशाब; सरका दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; ध्वजभङ्ग; प्रसव वेदना; प्रसवके बादका दर्द; कटि-वात; मस्तककी आवरक झिल्लीका प्रदाह; मानसिक रोग; गर्भ-स्राव; चुचुकका जखम; नाककी बीमारी; पक्षाघात; वस्तिगह्वरका लाल अर्बुद; रक्तका विषैला हो जाना; प्लीहाका स्नायुशूल; मोच खाना; काँटा गड़ना; पीब सञ्चय; प्यास; स्वादका बिगड़ना; हूप खाँसी; जखम या तुरन्तका घाव; जम्हाई इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—स्नायु-प्रधान, रक्तप्रधान या स्थूल-काया स्त्रियाँ, रस-वात धातु, लाल या प्रफुल्ल चेहरेवालोंकी बीमारी; चोटका दुष्परिणाम वगैरह क्षेत्रोंमें यह उपयोगी है। इससे शरीरकी चोट; गिरना; कुचलना; दबना और अत्यधिक शारीरिक परिश्रमकी तरह अवस्था पैदा हो जाती है। शरीरमें हमेशा दर्द बना रहता है और ऐसा मालूम होता है, कि सन्धियाँ मोच खा गयी हैं, रोगी चाहे कितनी ही कोमल और कैसी भी शय्यापर क्यों न सोये, वह उसे बहुत कड़ी मालूम होती है। यदि कोई पाससे

आता है, तो रोगीको डर मालूम होता है, कि कहीं वह दर्द-भरे हाथ पैर छू न ले। रक्तस्राव और सुस्ती लानेवाली बीमारियोंपर इसका प्रधान क्रियाफल है। इससे शरीरके विधान-तन्तुओंका अपजनन (Degeneration) हो जाता है तथा पीब सञ्चय और फोड़ा पैदा होनेकी भित्ति स्थापित होती है। शरीरके कितने ही स्थानोंपर फोड़े निकला करते हैं। पर वे पकते नहीं हैं। अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दर्द, काम करनेकी शक्तिका न रहना, सुन्न हो जाना और कुचल जानेकी तरह मालूम होना। शरीरके किसी भी अंशमें चोटकी वजहसे विकार, चाहे कितने भी दिनोंका क्यों न हो, इससे आराम हो जाता है। कण्डराकी पेशी वगैरहके साथ अस्थि-भङ्ग होनेपर (Compound Fracture) इससे विशेष उपकार होता है और पीब पैदा होना रुक जाता है। (कैलेण्ड्ला)। सारे शरीरमें दर्द और अकड़न, मानो किसीने खूब पीटा है। दोनों उरुमें बहुत दर्द और स्पर्श सहन नहीं होता और इसी वजहसे रोगी टहल नहीं सकता। माथा गर्म और बाकी अंश शीतल। हाथ-पैर ठण्डे पर भीतरी उत्ताप मालूम होना। ज्वरकी शीतावस्थामें प्यास। मुंह सड़ा रहता है ; पाकस्थलीमें ऐसा भार मालूम होता है, मानो एक पत्थरका टुकड़ा रखा हुआ है। उदरामय,—मल बदबू-भरा, भूरा, बदरङ्ग, सड़ी गन्ध-भरा (Putrid) और खून मिला : पाखाना होने बाद बहुत कमजोरी ; इसी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। शरीरमें जलन और सारे शरीरमें खुजलानेवाली फुन्सियाँ या फोड़े। जगह जगह काले दाग और नीला दाग इत्यादि इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—भुलक्कड़, जो कुछ करता है, वह उसी समय भूल जाता है, बातचीतके समय यह भूल जाता है कि वह क्या कह रहा था। (मोह-ज्वराधिकारमें)। शय्याके वस्त्र नोंचा करता है (बेल, हेलिबो, ह्यायो, जिङ्कम-म्यूर) ; रंगालय आदि भीड़ भाड़वाली जगहमें जानेसे डरता है। कोई पाससे जाता है, तो उसे ऐसा मालूम होता है, कि उसका दर्द-भरा अंग छू न ले (कार्बो-कार्ब, लेके, नक्स-मस, सैनिक, टेलार, थूजा)। अचैतन्य,—कोई बात पूछनेपर, जवाब तो ठीक ठीक देता है; पर तुरन्त ही फिर प्रलाप करने लगता है और बेहोशसा हो जाता है। बात खतम होते न होतेतक सो जाता है=बैप्टी)। रोगीसे जब यह पूछा जाता है; कि वह कैसा है, तो कहता है, कि कोई

बीमारी नहीं है, अच्छा है (हाइयो, क्रियो, ओपि) बहुत देरतक परिश्रम नहीं कर सकता। स्नायु-प्रधान धातु—किसी तरहके दर्दको भी असह्य समझ लेता है, अकेला रहना पसन्द करता है (कैम्फि, सिमिसि, कोका ; साइक्ला, जेलसि, हेलिबो, इग्ने; लीडम, मैग-म्यू, हायो, आका-ड्रोपोस, रास, थूजा।)

मस्तक।—मस्तिष्का-वरक झिल्ली-प्रदाह;=चोट आदि बाहरी कारणसे (जैसे गिरना, संघात Concussion वगैरह) बीमारी : यदि यह सन्देह हो कि मस्तिष्क गह्वरमें शोणित-स्राव होता है; उसके सोखनेमें यह सहायता पहुँचाता है। मस्तिष्कोदक (Hydrocephalus),—बच्चेके बाहुका आधा अगला अंश ठण्डा (उदरामयमें इसी तरह बाहुका अगला भाग ठण्डा हो जानेपर=ब्रोमाइन) ; संन्यास या सर्दी-गर्मी,—बेहोशी, अन्त्राशय, मूत्राशयसे अनजानमें पाखाना, पेशाब होना ; नयी बीमारीकी अवस्थामें रक्त-स्राव रोकता है और सोखनेकी क्रियामें सहायता पहुंचाता है। (इसका तबतक बार बार प्रयोग करते रहना चाहिये जबतक लक्षण बदलनेकी वजहसे अन्य दवाकी जरूरत न हो।) सरमें चक्कर आना;—माथा हिलानेपर उठानेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो सब चीजें उसके साथ ही घूम रही हैं (बेल, ब्राई, साइक्लि, लाइको, लरो, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, फास, वेली, वेरट) बैठनेके समय या सर झुकाये रखनेपर, कुछ भी मालूम नहीं होता। सरमें असह्य दर्द,—सवेरे नींद खुलनेपर—दिनके ८ बजे इतना बढ़ जाता है कि बाहर चलनेके समय ऐसा मालूम होता है कि सरमें चक्कर आकर गिर जायेगा। दस बजनेके समय एकदम छूट जाता है। ललाटमें सीमाबद्ध स्थानपर बरफकी भाँति शीतलता मालूम होती हैं, मानो कोई ठण्डी अंगुली द्वारा उसका ललाट स्पर्श कर रहा है। मालूम होता है मानो शङ्खदेश या कनपटीमें कोई मेकसे ठोंक रहा है (इग्ने, काफिया)। शरीरका निचला अंश ठण्डा अथच माथेके भीतर मानो आग जल रही है, ऐसा मालूम होना (कार्ब्हि, ऐको, मार्क, नक्स, रास)। सरमें चक्कर आना—पाकाशयमें विकारकी वजहसे,—मिचली, इसके साथ ही वमन और पतले दस्त आना (नक्स)। मूर्द्धा-देशमें शीत बोध,—मानो बरफ दबा हुआ है (आर्स, कैल्के, लोरोसि, सिपि, सल्फर, वेरेट)

आँख।—योजकत्वक या आँखका भीतरी भाग (Congunctive) और चित्रपत्र (Retina जहाँ दिखाई देनेवाली चीजकी छाया पड़ती है)

में खून इकट्ठा होता है। रक्त-भरी शिराएँ सब ऊँची उठ जाती हैं,—चोट या खाँसीके प्रतिक्षेपकी वजहसे ऐसा लक्षण (लीडम; नक्स)। आँख गड्ढेमें धँसी, कांचकी तरह चमकीली और फैली हुई पुतली मिली। दृष्टिकी अस्पष्टता।

कान।—चोट लगते ही दर्द; कानसे रक्तस्राव; कानसे कम सुनना।

मुखमण्डल।—आनन्द बतानेवाला और लाल; दोनों ओठ उत्तप्त। मुखमें उत्ताप मालूम होता है पर पसीना और प्यास नहीं रहती; नश्तर लगवाने बाद दाँतमें दर्द।

नाक।—बार बार रक्तस्राव; गाढ़ा और तरल;—परिश्रमसे वृद्धि। पहले दिवस कोई भारी चीज उठानेकी वजहसे छींक।

मुख-विवर।—मुंहसे बदबू निकलना, जीभपर सफेद लेप चढ़ा हुआ (ऐण्टि, ब्राई); जीभका सूखापन, प्यासकी अधिकता; स्वाद कड़वा।

पाकाशय।—वायु निकलना, बार बार डकार;—सड़ी गन्ध मिला। भूख न लगना। जमा रक्त कै करना। ओकाई। पेट हमेशा—भरा मालूम होता है और भोजनसे अरुचि रहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें पत्थर दबाया हुआ है;(नक्स, पल्स, ब्राई); ऐसा भाव मालूम होता है।

तलपेट या अंत्राशय।—वस्ति-गह्वर (Pelvis) में दर्दकी वजहसे सीधा होकर चल नहीं सकता। आमाशय और उसके साथ ही मूत्रकृच्छ्रता; वृथा वेग; बहुत समयका अन्तर देकर पाखाना होना, मल लसदार और श्लेष्मामय; खून मिला; पीबकी तरह बहुत बदबू; नींदमें अनजानमें पाखाना होना; चोटके बाद बाईं करवट सोनेसे बढ़ना। मल काठिन्य,—मलान्त्र (Rectum) मलसे परिपूर्ण अथच मल नहीं निकलता; मूत्रनाली मुखगायी (Prostate) ग्रन्थि फूली, जरायुका पश्चाद् आवर्त्तन (Retroversion) की वजहसे फीतेकी तरह मल निकलता है (खड़ियेकी तरह कड़ा और सफेद रङ्ग— फेलेन;—फीका रङ्ग और यक्ष्मा यक्ष्मा=कोलिन,—भेंड़की मलकी तरह छोटा छोटा गाँठमय=वेल, प्लम्बम, रूटा, वार्बेस्कम,—कड़ा, पतला और लम्बा; कुत्तेकी तरह मल=कास्टि, फास, मूनस, सारई; अत्यन्त बड़ा, कड़ा और कष्ट-जनक=ब्राई, केलि-कार्ब, नक्स, वेरेट)। प्रतिबार पाखाना होनेबाद बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। अनजानमें मल-मूत्रके सामके साथ मोहावस्था।

भूरा और शराबके फेनकी तरह मल। उप-पञ्जरके नीचे सुई बेधनेकी तरह दर्द। पेट बदबूदार वायुसे भरा। तलपेटमें तेज अस्त्राघातकी तरह दर्द मालूम होता है। सूत जैसी क्रमि।

पेशाब ।—बहुत अधिक परिश्रमकी वजहसे मूत्ररोध,—बहुत देरतक बैठे रहे बिना पेशाब नहीं होता। रातमें अनजान अवस्थामें पेशाब निकलता है। पेशाबके अन्तमें मूत्ररोध या अनजानमें पेशाब निकलना (ओपि.); ईंटके चूरकी तरह पदार्थ निकलता है (Sediment) (ऐको, ऐण्ट, कैनाब, कैन्थ, काली बाई, लाइको, नैट्र-म्यू, पल्स, सीपि, स्क्विला, वैले)। खून भरा पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय ।—लिङ्ग और अण्डकोषकी लाल आभा लिये सूजन; चोटकी वजहसे अण्डकोष प्रदाह; जलकोरण्ड; रति इच्छाकी वृद्धि; ध्वज-भङ्ग।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—संघातकी वजहसे (Concussion) जरायु-भ्रंश या रक्तस्राव; जरायु प्रदेशमें चोटसे पैदा हुआ तेज दर्द और इसी कारणसे सीधे होकर चल न सकना (अर्जेण्ट-मैट) पेशाब करने बाद प्रसव द्वारमें दर्द; (प्रसवके बाद सेवन करनेपर प्रसवके बादका रक्तस्राव और पीब पैदा हो जानेके कारण लक्षणोंकी जटिलताको दूर करता है)। प्रसवके बादका दर्द असह्य। रमणके बाद या चोटकी वजहसे रक्तस्राव। स्तनकी घुंड़ीमें जखम। स्तनमें चोटकी वजहसे या स्तन पीनेवाले शिशुके मस्तक दबनेकी वजहसे ठुनका रोग (Mastitis) ऐसा मालूम होता है, मानों भ्रूण प्रसूतिके गर्भके भीतर बाई ओर या दाहिनी ओर लम्बा हो रहा है। गिरने या चोट लगने बाद गर्भ-स्रावकी आशङ्का।

श्वास-यंत्र ।—बच्चोंके रोनेकी वजहसे खाँसी; वक्ष-पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (ब्रायो, सेङ्गियु, काली-कार्ब)। खाँसनेके समय पंजरेमें दर्द मालूम होना; समूचे शरीरको हिला देनेवाली खाँसी; रोज सबेरे जागने बाद सूखी खुसखुसी खाँसी,—वायुनलीसे निम्न-तम प्रदेशमें खुजली पैदा करनेवाली खाँसी। कफके साथ खून मिला रहता है। रक्त कासके साथ श्वास-कृच्छ्रता। हूप खाँसी;—आरम्भ होनेके पहले बच्चा रोया करता है। नाकसे रक्तस्राव होता है या कफके साथ रक्तकी बूंद निकलती है। खाँसते खाँसते आँखकी त्वचाके पीछे रक्तस्रावकी वजहसे आँखें लाल हो जाती हैं (खाँसनेके पहले रोता है—कैप्स, बेल; खाँसने बाद रोता है—कैप्स।)

हृत्पिण्ड।—बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलनेवाला सुई बेधनेकी तरह दर्द,—इसके साथ ही सुस्ती। छातीमें धड़कन मालूम होना, हृत्पिण्ड प्रदेशमें दर्द मालूम होना,—मानो उसे कोई पीस रहा है।

ग्रीवा।—पेशियोंकी कमजोरी। चोटकी वजहसे अकड़न।

प्रत्यङ्ग आदि।—वात और छोटी सन्धियोंका वात (Gout); रोगवाली जगहमें इतना दर्द होता है, कि कोई पास आनेपर उसे डर मालूम होता है, कि कहीं दर्दवाला अंश छू न ले या उसमें चोट न लगा दे। बाएं अङ्गका पक्षाघात,—नाड़ी पुष्ट और प्रबल; लम्बी सांस लिया करता है, कुछ बुदबुदाकर बका करता है और श्वास-प्रश्वासमें घड़घड़ आवाज सुन पड़ती है। प्रसवके बाद उरुदेशमें दर्द। मेरुदण्डमें भयानक दर्द,—मानो स्नायविक वेदना हो गयी है। पश्चात् कटि या नितम्बमें और प्रत्यङ्गोंमें चोट लगनेकी तरह दर्द,—कुचल जाने और सन्धि-भ्रष्ट (Dislocated) जैसा मालूम होता है। अपरिमित परिश्रमके बाद शरीरमें दर्द। देहका ऊपरी अंश गर्म, निचला अंश बरफकी तरह ठण्डा। रोगी चाहे जैसी शय्यापर सोये वही उसे कड़ी मालूम होती है, लगातार कष्ट प्रकट करता है और कोमल जगहकी खोजमें इस करवटसे उस करवट लेटा करता है (मानो तख्तेपर सोया है और जो अंश दबाकर सोता है, वही अंश दर्द-भरा मालूम होता है=बैप्ट, पाइरोज; आराम मिलनेकी इच्छासे लगातार हिला डोला करता है या करवट बदला करता है=रास; माथेसे पैरतक बहुत दर्द मालूम होना, पेशियोंमें दर्द और जरा भी शरीर हिलानेपर दर्दसे कराहने लगता है=फाइट); मस्तिष्कमें जल-सञ्चय (Hydrocephalus) रोगमें दोनों बाहुओंका अगला भाग मुर्देकी तरह ठण्डा।

त्वचा।—एकके बाद दूसरा छोटा और बहुत दर्द-भरा फोड़ा बराबर निकला करता है (एकदम बहुतसे फोड़े बार बार निकलते हैं=सलफर)। पीब पैदा होनेकी सम्भावना नष्ट करता है और रक्तके साथ पीबके कण मिलनेकी वजहसे पैदा हुए रोगादिमें प्रतिविषका काम करता है; चोटकी वजहसे काली लकीर पड़ जाना,—त्वचाके भीतर शिरामें बहनेवाला रक्त आ जानेके कारण=फास)

निद्रा।—सन्ध्यामें बार बार जम्हाई आती है, पर नींद नहीं आती (ऐको)। क़ब्रस्तान, श्मशान, काला कुत्ता, वज्राघात, टुकड़े टुकड़े किया हुआ

मृत शरीर वगैरह डरावनी चीजें स्वप्नमें देखता है। नींदके बाद भी आराम नहीं मिलता।

ज्वर।—सविराम ज्वरमें,—जाड़ा पैदा होनेके पहले या उसी समय बहुत प्यास; बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है और फिर उसे कै कर देता है; जम्हाई और प्रत्यङ्गोंका फैलाना। सभी हड्डियोंमें दर्द, सभी तरहकी शय्या कड़ी मालूम होती है। पेटके ऊपरी प्रदेशमें ज्यादा जाड़ा मालूम होता है; हाथ पैर बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं परन्तु चेहरा और मुखमण्डल गर्म रहता है और एक ओरका गाल लाल रहता है; उत्तापका आविर्भाव होनेपर रोगी अपनी अवस्थाके सम्बन्धमें उदासीनता दिखाता है। पूछनेपर कहता है, कि वह अच्छा है,पर बेहोशकी तरह पड़ा रहता है; उस समय पानी थोड़ा ही पीता है; रातमें खट्टा पसीना निकता है; विज्वरावस्थामें (Apyrexia) प्लीहा प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है; अंगुलीसे प्लीहाको दबानेपर दर्द मालूम होता है, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें ऐसा मालूम होता है, मानों चोट लगी है। सवेरे ६ बजनेके समय शीत पैदा होता है। (७ बजे—युपेटो, हिपर, पोडो,—६ बजे—वेरेट्रम-ऐल्बम)

वृद्धि।—विश्रामावस्थामें, सोनेके समय, शराब पीनेसे, जलीय तर हवा में और ठण्ड लगनेपर।

उपशम।—सर झुकाकर सोनेपर, छूनेसे और शरीर हिलानेपर (रास, रूटा)

सम्बन्ध।—अनुपूरक—ऐकोन, हाइपेरि, रासटक्स।

सदृश।—ऐकोन, ऐमोन, क्रोटन, आर्सेनिक, चोट लगनेकी तरह दर्दके सम्बन्धमें और सान्निपातमें वैप्टि, वेल, कैमो, चायना, फाइटो, ड्रसुफ्रे, कैलेण्डुला, हाइपि, हैमा, इपिका, लिडम, मार्क, पल्स, पाइरोज, रास, रूटा और स्टैफि, साइलि, सल्फ, वेरेट। शराब पीने या कोयलेका धुआं सूंघनेकी वजहसे बीमारीमें यह अधिक लाभदायक हुआ करता है (ऐमोन-का, बोविस)

दोषघ्न।—कैम्फर, इपिका, काफिया, ऐकोन, मार्क, चायना, इग्ने।

शक्ति।—आर्निकाका दुष्परिणाम शराब पीनेसे बढ़ जाता है। १ म से २०० शक्ति तक। पुराने सविराम ज्वरमें उच्चतम क्रमसे ही विशेष लाभ होता है।

आर्सेनिकम ऐल्बम ।

(ARSENICUM ALBUM)

दूसरा नाम ।—संखिया ; शङ्ख-विष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसका विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—फोड़ा ; मुंहासा ; खूनकी कमी ; रजोरोध ; मुंहका जखम ; दमा ; दुबलापन या शीर्णता ; श्वासनाली-प्रदाह ; आँतकी बीमारी ; कर्कटका घाव ; मुंहका सड़नेवाला जखम ; दूषित फोड़े ; विसूचिका ; ऐसियाटिक कालेरा ; हिमाङ्गावस्था ; खाँसी ; काली या घुंड़ी खाँसी ; प्रलाप ; अतिसार ; उपझिल्ली-प्रदाह ; शोथ ; अजीर्ण ; आँखकी बीमारी ; मूर्च्छा ; ज्वर ; सड़नेका लक्षण ; पाकाशयका जखम ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; चय-ज्वर ; वक्षोदक रोग ; मूत्र-ग्रन्थिकी बीमारियाँ ; श्वेत-प्रदर ; ओंठमें जखम ; उद्भेद ; नाना प्रकारका पक्षाघात ; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह ; वक्ष और फुसफुसके आवरणका प्रदाह ; स्नायुशूल ; फेफड़ेका प्रदाह ; रक्त-विषाक्तता (खूनका विषैला हो जाना) ; स्वल्प-विराम-ज्वर ; वात ; सन्धि-प्रदाह ; आमवात ; दद्रु ; कम्पन ; मोच खाना ; पीवका पैदा होना ; प्यास ; गलेका जखम ; पाकाशय और जीभकी बहुत सी बीमारियाँ ; गलनालीकी बीमारी ; अभियातिक ज्वर (फौजी बोखार) ; सान्निपातिक ज्वर ; बहुत तरहके घाव ; वमन ; हूप खाँसी ; कास ; क्रमि ; पीत-ज्वर इत्यादि रोगोंमें लाभदायक सिद्ध हुआ है ।

उपयोगिता और आभास ।—हताश, दुःखित, अनमना, उद्विग्न, भय, बेचैन, उत्तेजित, डरपोक, कर्कश और सहजमें ही चिढ़ उठनेवाला तथा मृत्यु भयसे भीत मनुष्योंकी बीमारीमें यह उपयोगी है । जीवनी शक्तिका बहुत जल्दी जल्दी सुस्त हो जाना ; सारे शरीरमें कमजोरी ; अस्थिरता ; मानसिक अवसन्नता ; निराशा ; चिन्ता ; डर मालूम होना ; क्रोध पैदा होना प्रभृति और रात्रिके समय सब लक्षणोंका बढ़ना इसका सबसे बड़ा प्रकृतिगत लक्षण है । शरीरके सभी अंशोंपर इसकी क्रिया प्रकट हुआ करती है,इसलिये, सभी रोगोंकी अवस्था विशेषमें यह उपयोगी है । सभी लक्षण तीसरे पहर १ से ८ बजनेके बीचमें और रातमें १२ से २ बजनेके बीचमें बढ़े दिखाई देते हैं । जो बीमारियाँ

प्रति वर्ष पैदा हो जाती हैं (कार्बो.वेजे, सलफर, थूजा) उनमें अधिकांश ही इसके अन्तर्गत आ जाती हैं।

यहाँ इसके कुछ प्रधान निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं;—(१) चेहरा म्लान, दुबला, ठण्ढा और ठण्ढे पसीनेसे भरा, उसको देखनेसे ही ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें कुछ तकलीफ हैं। (२) अशेष यन्त्रणा, निराशा, मृत्युका भय और आत्महत्या करनेका आवेग पैदा होना। (३) माँस और बलका बहुत जल्दी जल्दी क्षय होते जाना, रोगी जीर्ण हो जाता है और उसमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती। जीवनी शक्तिका बहुत ही तेज अवसाद। (४) बहुत अधिक बेचैनी, रोगी लगातार एक शय्यासे दूसरीपर जाना चाहता है या जानेकी इच्छा प्रकट करता है। (५) शरीर बरफकी तरह ठण्ढा हो जाता है। (६) बहुत ही तेज प्यास, बार बार, पर हरेक बार बहुत थोड़ा थोड़ा पानी पीता है, पर या तो ठण्ढा पानी पेटमें रहता नहीं है या तकलीफको बढ़ाता है। (७) नयी सर्दी, कसैला श्लेष्मा निकलना, नाक रुकना। (८) बहुत अधिक श्वास-कृच्छ्रता, रोगी समझता है, कि उसकी अवश्य ही मृत्यु हो जायगी, उसकी मृत्यु अनिवार्य है। श्वास-प्रश्वासमें सुविधा प्राप्त करनेकी आशासे उठकर बैठ जाता है। बहुत थोड़ा गाढ़ा लेईकी तरह और फेन भरा कफ (Expecto ration) निकलता है और रात तीन बजनेके समय श्वास-कृच्छ्रता बहुत बढ़ जाती है। कलेजेमें धड़कन हुआ करती है और चित्त सो नहीं सकता। (९) खाने पीने बाद बहुत सुस्तीके साथ मिचली, ओकाई और पानी, श्लेष्मा, पित्त या खून-भरी कै; वमन हो जाने बाद भयानक सुस्ती आ जाती है और पाकस्थलीमें दर्द पैदा हो जाता है। (१०) जलन भरी यन्त्रणा मानो रोगवाली जगहपर किसीने जलता हुआ अंगारा रख दिया है। (११) उदरामय, भयानक बदबू-भरा, घोर धूमैले रङ्गका मल, खाने-पीने बाद बढ़ जाना। (१२) लगातार दस्त और कै (विसूचिका) (१३) पेशाव बहुत थोड़ा, घोर, लार-भरा (१४) जाड़ा जोरका, पर उसमें प्यासका न रहना। (१५) जलन करनेवाले जखम आदि गर्म प्रयोगसे घटते हैं।

लक्षणावली।

मन।—अपने दोस्तोंसे मिलना नहीं चाहता क्योंकि वह मन ही मन समझता है, कि मैंने पहले उसके साथ दुर्व्यवहार किया है।—क्या और किस

तरह किया है, यह बता नहीं सकता (क्लिमेट, कैलि-फास, प्लिपि, स्टैन, थूजा) अकेला रहनेमें डर लगता है (ऐण्टि-टार्ट, बिसमथ, क्लिमेट, कोना, ह्यायो, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लिल-टाई, लाइको, सिपि, स्ट्रैमो, इलेप्स, वैरेट) कहीं वह अपने ऊपर ही कुछ अत्याचार न कर बैठे। बहुत अधिक तकलीफकी वजहसे आत्महत्या करनेकी प्रतिज्ञा करता है। आधी रातके समय तकलीफ इतनी बढ़ जाती है, कि वह शय्यासे उठकर भागना चाहता है। बहुत अधिक मानसिक अस्थिरता, एक स्थानपर बहुत देरतक बैठ नहीं सकता, पर रोगीमें इतनी ताकत नहीं रहती, कि वह हट जाय; बार बार जगह बदलता है; वह चाहता है, कि एक शय्यासे दूसरीपर कोई ले जाये। अभी एक जगह सोया हुआ है, तुरन्त ही दूसरी जगहपर जाकर सोता है। बहुत ही यन्त्रणादायक मृत्यु-भय; समझता है, कि उसका रोग दुरारोग्य है, उसे मरना ही होगा, अतएव, दवा खाना निष्प्रयोजन है। अकेला रहना या अकेले सोनेमें डर लगता है। मृत्यु-भय पैदा हो जाता है। बहुत कृपण (लाइको, सिपि); हमेशा दूसरेकी अनिष्ट चिन्ता किया करता है (ऐनाक्, लाइको, नक्स); स्वार्थ-परता (सलफर); कापुरुषता (ऐगनस, एपिस, जेलस, स्टैन)। रातके समय भयानक प्रलाप,—इसके साथ ही बहुत अधिक अस्थिरता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—मानो गिर जायगा। (ग्लोन, जेल), पूतवाष्प (Malaria) की वजहसे सरमें चक्कर आना, श्रवण-शक्तिकी प्रखरता, सर्दी रोगमें नाकके ऊपर ललाट देशमें टपककी तरह सर-दर्द। टपककी तरह दर्द, मानो मस्तिष्कमें कोई भारी चीज रखी हुई है। शय्यापर उठ-बैठने या शरीर हिलानेसे वृद्धि। ठण्ढा पानी पीने या क्षण भर निर्मल वायुमें टहलनेपर एकदम आरामकी तरह मालूम होना; दर्द माथा और मुंहके बाएँ पार्श्वमें बहुत तेज मालूम होता है; रोगी बीमारीवाली करवट सो नहीं सकता; मूर्द्धाकी त्वचा इतनी दर्द-भरी होती है, कि यदि कोई केश भी छू लेता है, तो दर्द मालूम होने लगता है। कभी कभी अस्थिरताके साथ जलन पैदा करनेवाला दर्द मालूम होता है—सर्दी लगनेसे ही बढ़ता है। अध-कपारीका दर्द,—मूर्द्धाकी त्वचा बरफकी तरह ठण्डी मालूम होती है,—इसके साथ ही बहुत कमजोरी। मूर्द्धाकी त्वचामें हमेशा असह्य खुजली; जगह जगहपर गोलाकार केश उड़ जाते हैं, वह स्थान रुखड़ा, मैला, सूखा और पपड़ीसे ढका रहता है, उसे छुआ नहीं जाता—स्पर्श असह्य मालूम होता है;

रातके समय जलन और खुजली, रूसी (Pityriasis) [सोराइन, सलफर] माथा हिलानेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो सरके भीतर मस्तिष्क भी डोल रहा है (Moving) (कास्टि, क्रोकस, नक्स-मस) और खोपड़ीमें धक्का देता है।

आंख।—पलक फूली,—इतनी कि कभी कभी आँख भी ढक जाती है। आँखसे कषाय (Acrid) आँसू निकलता है और वही लगकर गाल और पलकमें जखम हो जाता है। सभी चीजें हरी (Green) दिखाई देती हैं,—(सिना, साइक्ले, डिजि, फास ; लाल रंगकी दिखाई देती हैं—बेल ; पीले रङ्गकी = सैण्टोनाइनम)। धुँधली दृष्टि।—आँखको जोड़नेवाली त्वचा फूल जाती है और कच्चे मांस-खण्डकी तरह मालूम होती हैं (आर्जेण्ट-नाइ)। आँखका बाहरी प्रदाह और बहुत ज्यादा दर्दका मालूम होना,—दर्द जलन-भरा। गर्म और त्वचाको क्षय करनेवाला आँसू निकलना। स्वच्छ-आवरक (Cornea) जखम-भरा। बहुत अधिक आलोकातङ्क (रोशनीका सहन न होना = Photophobia),—बाहरी उत्तापसे घटना। कनीनिकाका सङ्कोचन। आँखोंमें जलन। पलकोंका स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia),—सूक्ष्म भावसे जलन पैदा करनेवाला दर्द यदि कण्ठमाला दोषकी वजहसे आँखोंका प्रदाह हो (In scrofulous Ophthalmia) तो ऐसा ही होता है।

कान।—कर्ण-विवर (कानके छेद) के भीतरकी झिल्ली ऐसी मालूम होती है, मानो क्षय हुई त्वचा हो, उसमें जलन मालूम हुआ करती है। पानीकी तरह, त्वचाको क्षय करनेवाला और बदबूदार पीबका स्राव। सुननेकी शक्तिका घटना। आदमीकी आवाज़ अच्छी तरह सुन नहीं पड़ती। यंत्रणाके समय कानमें सों सों और घण्टा बजनेकी तरह आवाज।

नाक।—नयी सर्दी—बार बार छींक और जखम करनेवाला श्लेष्माका स्राव। पानीकी तरह श्लेष्मा बहकर नाकमें बहुत ही गड़बड़ी और जलन पैदा कर देता है, मानो नाकमें जखम हो गया है। नाकमें कर्कटीय रोग (हाइड्रोकोट, वेसिलाइन)। ऐसा मालूम होता है, मानो अलकतरा और गन्धककी गन्ध आ रही है।

मुखमण्डल।—चेहरा पसीनेसे तर और उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि भीतर कोई तकलीफ है। मुर्देकी तरह रक्तहीन, म्लान और जीर्ण-शीर्ण, पीली आभा लिये और भीतरी विकारको प्रकट करनेवाला।

चेहरा फूला हुआ। आंख और गाल गड़हेमें धँसे और ठण्ढे पसीनेसे तर। बिगड़ी हुई भावभङ्गी। मुँहका रङ्ग सीसेकी तरह, ओठमें कर्कटीया जखम।

मुख-विवर।—रातमें नींदमें दांत कड़मड़ाता है (बेल, कैनाब, सिना, हायो)। दांत निकलनेके समय बच्चेका रङ्ग उतरा हुआ, क्षीण, अत्यन्त असन्तुष्ट और हमेशा गोदमें चढ़कर एक जगहसे दूसरी जगह जाना चाहता है (कैमो देखो)। मुँहमें जखम—इसके साथ ही सुखापन और जलन। जीभका अगला भाग लाल, सूखा या सूखा और भूरा लेप-चढ़ा, मुंह बहुत सूखा और तेज़ प्यास, पर बार बार और बहुत थोड़ा पानी पीता है। दोनों ओठ इतने सूखे रहते हैं और फट फट जाते हैं, कि रोगी बार बार जीभसे उन्हें तर किया करता है। जीभ या तो लाल रहती है और उसके कांटे सब उठे रहते हैं या लाल और दोनों किनारे ऊँचे नीचे रहते हैं या खड़ियाकी तरह सफेद आभा लिये या सीसा (Lead) का रङ्ग, अथवा आन्त्रिक ज्वरमें सूखी, भूरी या काली आभा लिये रहती है। दांतमें दर्द,—दांत बड़े और दर्द-भरे रहते हैं। आधी रातमें बढ़ना ; गर्म प्रयोग घटना।

गलेके भीतर।—सूजन, शोथ-भरा, संकुचित और जलन-भरा ; एकाएक कण्ठनालीका सङ्कोचन (Stricture),—के साथ निगलना असम्भव सा हो जाता है, तकलीफ होती है। सुखापन और जलन मालूम होना। गलेका भीतरी रङ्ग धुमैला, पीली आभा लिये ; नमकीन या तीता स्वाद मिला श्लेष्मा संचित होता है।

पाकाशय।—दुर्दमनीय तृष्णा, पर रोगी पानी पीनेके लिये कोई विशेष आग्रह नहीं करता ; मालूम होता है, मानो पाकाशय उसे सहन नहीं कर सकता। क्योंकि रोगीका पाकाशय ठण्ढे पानीको शरीरके पोषण करनेवाले उपादानमें परिणत नहीं कर सकता। पानी पीनेपर, ऐसा मालूम होना मानो पेटमें एक पत्थरका टुकड़ा रखा हुआ है। पानी पीनेकी आवश्यकता है परन्तु रोगी पी नहीं सकता या पीनेका साहस नहीं होता। (ऐपोमाई-कैन)। खानेका पदार्थ देखना या सूँघना=दोनों ही सहन नहीं होता। (कौलचि, सीपि)। ठण्ढे पानीकी प्यास मालूम होना,—बार बार पानी पीता है, पर थोड़े परिमाण में ; रोगी शायद ही कभी खाता है, पर जब खाता है, तब बहुत अधिक खाता है। पाकाशयमें विकार या रोग—बासी फल खानेके बाद। (कार्बो-वेज, चायना, सिट्रस-कैन, कोलो, पल्स,—खट्टा फल खाने बाद—इपिका) ; कुल्फी बरफ

(ब्राई, आर्जेण्ट-नाई, कार्बो-वेज, पल स, पाइरोज) ; बरफका पानी या खट्टी हुई बियर नामक शराब पीनेपर (लैकै, ऐगरि, नक्स) या उत्तेजक पानीय पीनेपर। खाने-पीने बाद मिचली, ओकाई और वमन। पेटके ऊपरी प्रदेशमें गड़बड़ी मालूम होना ; जलन। छातीमें जलन,—कड़वा और खट्टा पदार्थ कै होता है और इसके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो गलेकी त्वचा छिल गयी है। बहुत देरतक डकार आती रहना (आर्जेण्ट-नाइ) ; रक्त, पित्त, हरे रंगका श्लेषा और भूरा काली आभा लिये पदार्थ रक्तके आकारमें कै होते हैं। पाकाशयका शूल,—इसके साथ ही बहुत भय और श्वास-कृच्छ्रता तथा सुस्ती। शरीर बरफकी तरह ठण्ढा और क्लान्त मालूम होना। रोगी जो कुछ खाता है, वह सब अन्ननालीमें अड़ा हुआ सा मालूम होता है।

अन्त्राशय।—आँतोंमें भयङ्कर दर्द,—अत्यन्त यन्त्रणा, किसी स्थानमें आराम नहीं मालूम होना, जमीनमें पड़कर तकलीफसे लेटा करता है और जीवनकी आशा त्याग देता है,—समूची देह कितनी ही प्रकारसे घुमाया करता है। चिबानेकी तरह जलन करनेवाला दर्द,—मानो कोई जलता हुआ अङ्गारा झुला रहा है। प्लीहा और यकृत फूले रहते हैं और उनमें दर्द रहता है। आँतकी बीचवाली ग्रन्थिका कड़ापन। नाभीके ऊपर जखम ; आध्मान—पेट फूलना ; प्लीहा सूजी हुई ; शोथ इत्यादि।

मलान्त्र और मल।—मलान्त्र और मलद्वारमें जलन और ऐंठनकी तरह मालूम होना। मलान्त्र और गुह्यद्वारमें (Rectum) दर्द ; एकाएक बाहर निकल पड़ता है। काँखना, उदरामय,—खाने-पीने बाद (इस्किडि, आर्जेण्ट-नाई, क्रोटन, लाइकोप,—भोजनके समय—फेर) ; मल परिमाणमें थोड़ा, गाढ़ा, पीली आभा लिये, बदबूदार और थोड़ा हो या अधिक रोगी बहुत कमजोर हो जाता है। मल,—लेईकी तरह, पीली, आभा लिये और श्लेषामय ; मलद्वारमें कतरनेकी तरह दर्द और काँखनेके समय थोड़ा थोड़ा श्लेषा निकलना ; लगातार वमनके साथ काला श्लेषा और काला कषाय (Acrid) और सड़ी गन्ध-भरा मल ; पीली आभा लिये मल—कुन्थन और जलनके साथ ; विसूचिका—बहुत यन्त्रणा—मानसिक और शारीरिक अवसन्नता और ज्वालामयी तृष्णाके साथ ;—शरीर बरफकी तरह ठण्ढा। (वेरेट्र, कैम्फो)। अर्श,—चलने और बैठनेके समय (पाखाना फिरनेके समय नहीं) सुई गड़नेकी तरह तकलीफ सोने या बैठने नहीं देती ; आगसे छू जानेकी तरह

जलन,—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे घटना ; मलद्वार फट जाने या विदारणकी वजहसे पेशाब करनेके समय बहुत तकलीफ। मलद्वारके चारों ओरकी त्वचा क्षय हो जाया करती है। अर्श या बलीमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। कब्जियत, मलका वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता।

मूत्रयन्त्र और पेशाब।—पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें बहुत जलन। अनजानमें पेशाब होना,—रोगिनीके पेशाब करनेके स्थानपर पहुँचनेके पहले ही पेशाब हो जाता है। मूत्राशयमें मानो पक्षाघात हो गया हो। पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा और निकलनेके समय बहुत जलन मालूम होती है। मूत्रनाश या मूत्रलोप जनित विकार (Uraemia) ; मानसिक यन्त्रणा और इसके साथ ही साथ हत्या करनेकी चिन्ता—खासकर शराबियोंका पेशाबका रंग गहरा पीला ; कभी मैला या श्लेष्मा-भरी तली जमती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—लिङ्गकी आवरक त्वचा और लिङ्गमणि (सुपारी) में खुजलानेवाले और जलन पैदा करनेवाले दर्दका पैदा हो जाना ; जननेन्द्रियका प्रदाह और दर्द-भरी सूजन, दोनों अण्डकोषोंकी विसर्पयुक्त सूजन। पतला पाखाना होनेके समय मूलाधार मुखशायी ग्रन्थिसे रस-स्राव होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय। — आर्त्तव,—स्राव एकदम असमयमें होने लगता है। डिम्बाधार प्रदेशमें जलन मालूम होती है। प्रदर,—पीले रङ्गका और गाढ़ा स्राव और शरीरके जिस स्थानमें यह लगता है, उसी स्थानमें जखम पैदा हो जाता है। मानो जलते हुए धातुमय सूत सब चारों ओर फैले हुए हैं—ऐसी तकलीफ मालूम होना,—परिश्रम मात्रसे ही इस लक्षणका बढ़ जाना ; गर्म कमरेमें ह्रास ; बहुत ही सुस्ती लानेवाला स्राव। जरायुका कर्कटोया जखमकी तरह मालूम होना।

श्वास-यंत्र।—श्वास-प्रश्वास,—दमाकी तरह ; रोगीको बाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है या माथा झुका लेना पड़ता है। वह चित्त होकर सो नहीं सकता (काली-नाइट्र, लैके, नैजा, सिलि) ; आधी रातके बाद शय्यासे उछलकर बाहर निकल पड़ता है और श्वास रोध होनेके भयसे सो नहीं सकता (नींद आनेके समय श्वास रोध होने लगता है=क्लोरम, जेल्सि, ग्रिण्डि, लैक-कैन, लैके, ओपि) ; दमा रोगमें साधारणतः जिस तरह आमवात हो जाता है, वैसा न होकर, रोग घुंड़ो या काली खाँसीकी तरह हो जाता है। अन्धड़ पानीके समय, श्वास-कष्टता बढ़ जाती है ; तेजीसे चलने, ऊँचेपर चढ़नेसे

समय, गर्म और हलकी पोशाकें और शीत या उत्तापके परिवर्त्तनसे रोग बढ़ जाता है। सीटी देने (Whistling) की तरह श्वास-प्रश्वास ; खाँसी ; फेन-भरा और गोंदकी तरह बलगम (Expectoration),—मानो कुचले हुए अण्डेकी तरह (Beaten white eggs),—फेफड़ेकी वायु स्फीति (Emphysema) ; बहुत अधिक श्वास-कृच्छ्रता ; नीला और ठण्डे पसीनेसे भरा चेहरा ; इसके साथ ही बहुत अधिक मानसिक उद्वेग। खाँसीका क्षण-भरके लिये आ जाना, रातमें ही इसका आक्रमण आरम्भ होता है, रोगीकी नींद खुल जाती है और अन्तमें बहुत थोड़ा कफ निकलता है। आधी रातके बाद खाँसी बढ़ती है ; इसी वजहसे रोगी चित सो नहीं सकता।

हृत्पिण्ड।—हृत्स्पन्दन,—मानसिक यन्त्रणाके साथ हृत्स्पन्दन। चित सो नहीं सकता (बाईं करवट सोनेपर बढ़ना = कैक्टस, स्पाइजि ; दाहिनी करवट सोनेसे बढ़ना = आर्जेण्ट-नाइ, कैली-नाइ) सीढ़ी चढ़नेके समय बढ़ जाती है (बेल, नेट्र-म्यू, एसिड-नाइ, कैल्के, सलफर, थूजा)। हृत्शूल—हृत्पिण्डके ऊपरी प्रदेशमें एकाएक कसावटका भाव आ जाता है (कैक्ट, लिलि-टाई) बहुत तकलीफ देनेवाला कलेजेका दर्द (Proecodial Pain); गर्दन और माथेके पश्चात भागतक यह दर्द फैल जाता है (वेरेट); उद्वेग, दबाव मालूम होना, श्वास-कृच्छ्रता और मूर्च्छा पैदा हो जानेका उपक्रम ; जरा भी शरीर हिलानेपर साँस रुकने लगती है ; (प्रूनस); या तो सर झुकाकर (चिनिन-आर्स) अथवा माथा पीछेको झुकाकर बैठा रहता है (लैके); वृद्धि = रातके समय विशेषकर रातके १ बजेसे ५ बजेतकके बीचमें। तम्बाकू खानेवालोंका किसी सामान्य कारणसे हृदय सम्बन्धी रोग (फास, स्पाइ)। पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे कलेजा धड़कना। हृद्पिण्डको ढँकने-वाली पर्देमें जल-सञ्चय।

गर्दन और पीठ।—ग्रीवामें प्रबल सूजन ; कटि-देश दुर्बल। त्रिकास्थि (Sacrum) से लेकर पीठतक अकड़न मालूम होना ; पीठमें जलन मालूम होना,—छूनेसे ही यह जलन बढ़ जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—प्रत्यङ्गोंमें बहुत कमजोरी रहनेकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सोये रहना पड़ता है। (ऐमिगडे, फेरम) ; दोनों पैरोंमें तकलीफ मालूम होना, रोगी रातमें स्थिर भावसे सो नहीं सकता और दोनों पैरोंको बार बार एक जगहसे दूसरी जगह रखा करता है। आराम मिलनेकी आशामें स्वयं

उठकर टहलने लगता है। काँपकँपी, फड़कना, अकड़न, दुर्बलता, भार मालूम होना और अस्वाच्छन्द्य मालूम होना। पैरकी पोटली (Calves) में ऐंठन (कैम्फ, क्यूप्रम-ऐसेट, प्लम्ब, सिकेलि); दोनों तलवोंमें सूजन। वातिकायु-शूल (Sciatica); ज्वाला-भरी यंत्रणा, गर्म प्रयोग (सेंकने) से घटना। सन्धियोंमें उजले रङ्गकी सूजन और उसमें इस ढंगकी जलन मालूम हो, मानो किसीने जलता हुआ अङ्गारा रख दिया हो। थोड़े भी परिश्रमसे बहुत थकावट मालूम होना (ऐमोनियक), रोगी जबतक सोया रहता है, तबतक समझ नहीं सकता, परन्तु शरीर हिलाते ही समझ जाता है, कि वह कितना कमजोर हो गया है।

त्वचा ।—जल्दी जल्दी मांसका क्षय या दुबलापन (Emaciation फास, प्लम्ब, पोडो) बरफकी तरह ठण्ढा पसीना और बहुत कमजोरी (टियुबर, वेरेट)—खासकर बीमारीवाले अंगमें। बच्चोंका मांस-क्षय (सुखण्डी) रोग (ऐ-ऐसेट, एराम ; कैल्के-फास ; आयोड, इथ्यू, लाइ, फास); सार्वाङ्गिक—(समूचे शरीरमें) शोथ—त्वचा राखकी तरह बदरङ्ग सफेद; मिट्टी जैसा रंग (ऐसिड ऐसेट)। ज्वालामयी यंत्रणा, रोगवाले स्थान सबमें इतनी जलन मालूम होती है, मानो जलता हुआ अङ्गारा रखा हो (ऐन्थ्रासीन); गर्म पानी पीने या सेंकनेसे तकलीफ घटती है। त्वचा सूखी रहती है और निकल जाती है। ठण्ढी, नीली और सिकुड़ी हुई ; ठण्ढा लसदार पसीना ; पार्चमेण्ट कागजकी तरह ; सफेद आभा लिये और लेई जैसा ; काली आभा लिये, रस-गुटीमय और जलन-भरा। ओठके चारों ओर लाल रंगके दादकी तरह उद्भेद,—उसमें बहुत जलन और दर्द मालूम होता है। विषैले फोड़े आदि—उसमें अंगारा छू जानेकी तरह जलन (युफोर्बि)। जखम या घावोंसे क्लेदमय रसका स्राव होता है। आमवातमें जलन और बेचैनी पैदा हो जाती है (एपिस, नैट्र-म्यू)। जलनभरा कर्कटीया क्षत [Cancerous Ulcers)। फूली हुई शिराएं सबमें (Varicose) आग छू जाने या जल जानेकी तरह जलन होती है। पीब पैदा होनेवाला पुराना जखम—बहुत सुस्ती, विलेपी (Hectic) ज्वर, लाल रङ्गकी जीभ, प्यास, बेचैनी और चिन्तामें रोगी भरा रहता है।

स्नायुशूल ।—अविमिश्र (*Pure*) स्नायुशूल, जलन और बहुत तकलीफ, इसके साथ ही शारीरिक और मानसिक अस्थिरता ; सविराम (रह रहकर) ठीक समयपर होनेवाला स्नायविक ; पहले ठण्ढे प्रयोगसे आराम

मालूम होता है, पर इसके बाद ही तकलीफ बढ़ जाती है। विश्रामसे वृद्धि; व्यायाम और गर्म प्रयोगसे घटना; पाकाशयका शूल; मलेरियासे उत्पन्न स्नायु-शूल (Malarial Neuralgia=मलेरिया—आर्सि)

निद्रा।—नींदमें चौंक उठता है। नींद खुल खुल जाती है। मानसिक उद्वेगसे परिपूर्ण रहती है और बेचैन नींद रहती है। नींदके समय बीच बीचमें श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है (आरम, सम्बु) माथेके ऊपर बाँह रखकर सोता है। स्वप्न,—भावना या चिन्तासे परिपूर्ण; अन्धड़—पानी,वज्राघात, अग्नि, काला पानी और अन्धकारके सपने देखता है।

ज्वर।—आक्रमणके पहले=सरमें चक्कर आना; सरमें दर्द, जम्हाई; प्रत्यङ्गोंका फैलाना (अँगड़ाई लेना); सारे शरीरमें अस्वाच्छन्द्य मालूम होना, दुर्बलता, उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और डकार; आँतमें कतरनेकी तरह दर्द। शीतावस्था, प्रायः उत्ताप मिली रहती है या पर्यायक्रमसे शीत और उत्ताप पैदा होता है। शीतावस्थामें प्यास प्रायः नहीं रहती, यदि रहती भी है और रोगी पानी भी पीता है तो उससे जाड़ा बढ़ जाता है और कै होनेकी तैयारी हो जाती है। छातीमें दबाव और यंत्रणादायक खाँसी। उदरका ऊपरी प्रदेश वायुसे भरा रहता है, वेदना, उद्वेग, अस्थिरता और नख सब नीले मालूम पड़ते हैं, मानो उत्ताप या उत्तापावस्था बिल्कुल होती नहीं है या जाड़ा और शीत पर्याय-क्रमसे पैदा होते हैं अथवा अत्यन्त उत्ताप, विकार, अचेतनावस्था और माथेमें दर्द, बेचैनी और उद्वेग; सारे शरीरमें टपककी तरह दर्द (लिलि-टाई, जिङ्क); बार बार थोड़ा या बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है; वक्षस्थलमें भार या दबाव मालूम होना और श्वास-प्रश्वास तेज तथा कलेजेमें धड़कन हुआ करती है। बहुत देर बाद पसीनेवाली अवस्था पैदा होती है या पसीना बिलकुल ही नहीं होता। पसीनेवाली अवस्थामें प्यास बहुत अधिक रहती है और उत्तापावस्था में तकलीफ बहुत घट जाती है। विज्वरावस्थामें (बोखार छूट जाना) प्रायः स्पष्ट नहीं मालूम होती। चेहरा उतरा हुआ पीला; आँखें और गाल दोनों धँसे; मिट्टीके रंगके दोनों ओठ पीली आभा लिये; मुंहका स्वाद बिगड़ जाता है या तीता हो जाता है—विशेषकर भोजनके बाद जीभका रंग सफेद और रूखा अथवा पीला लेप चढ़ा हो जाता है दोनो ओंठ सूखे, मलिन, फटे और पपड़ी जमेसे हो जाते हैं। कभी कभी भूख ज्यादा लगती है; खानेपर मिचली और उत्ताप पैदा हो जाता है और उसकी परितृप्ति यदि न की जाये तो

जो एकदम खराब मालूम होता है। मल पतला; दोनों कोखोंमें सूजन; विशेषकर बाएं कोंखमें; पेट फूलना; पेशाब थोड़ा और गदला; दोनों पैर फूले और शोथ-युक्त मालूम होते हैं; त्वचा पीली और लसदार पसीनेसे ढकी रहती है। नींद नहीं आती—खासकर ज्वर आनेके पहलेवाली रातमें। (आक्रमणके पूर्ववाली रातमें बहुत बेचैनी—सिङ्कोना; रोग आक्रमणके पहले दिवस बहुत अच्छा मालूम होना=सोराइन)। वृद्धि=नित्य दिनके १।२ बजेके बीचमें और रातमें १२।२ बजेके मध्यमें (नित्य दिनके २ बजनेके समय=एपिस, सिङ्कोना, नक्स, पलस, सैबाडिला)। ज्वरावस्थामें हड्डियोंमें, कमरके पीछे और ललाटमें दर्द मालूम होता है। नींदके आरम्भमें पसीना।

वृद्धि।—आधी रातके बाद या रातके १ से ८ बजेके भीतर जाड़ा लगकर रातमें, ठण्डी चीजें खाने बाद या ठण्डी चीजें पीनेपर; रोगवाली करवट या सर झुकाकर सोनेपर वृद्धि।

उपशम।—सभी लक्षण गर्म प्रयोगसे (सिकेल इसके विपरीत है)—पर सरका दर्द उत्तापसे बढ़ जाता है—ठण्डे पानीसे नहानेपर कुछ देरके लिये घटता है (स्पाइजि); जलन भरी यंत्रणा उत्तापसे घटती है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—कैम्फर; चायना, फेरम, ग्रेफाइट, हिपर, आयोड, इपिका, नक्स, सैम्बु, टैबेकम, विरेट्रम; अनुपूरक=ऐलियम, सैटाइवम, कार्बो-वेज, फास, पाइरोजिनियम। तम्बाकू खाने, मदात्यय (Alcohlism); समुद्रमें नहाने, कृत्रिम उपायसे जीर्ण खाद्य आदिका भोजन; मुर्दा चीरनेके समय उसी अस्त्रके द्वारा अपने शरीरको काटना, पीठके फोड़े आदि विष दूषित खूनसे उत्पन्न और विषैले कीड़े आदि काटनेकी वजहसे या डङ्क मारनेकी वजहसे पैदा हुए रोग आदिमें अत्यन्त लाभदायक है।

सदृश।—ऐकोन, ऐपीसाइन, आर्जेण्ट-नाइ, बेलाडो। बिस्मथ, कैल्क, कैनाब, कार्बो-वेज, चायना, फेरा, हायो, इपिका, क्रियो, लैके, लाइ, नक्स, फास, पलस, रास, सिलि टैबेक, वेरेट।

शक्ति।—३ री दशमिकसे १००० शततमिक क्रम। पुराने और कठिन रोगोंमें कभी कभी इससे भी ऊँचा क्रम लाभदायक होता है।

क्रियाका स्थितिकाल।—६० से ९० दिन।

आर्सेनिकम ब्रोमेटम।

(ARSENICUM BROMATUM)

दूसरा नाम।—ब्रोमाइड आफ आर्सेनिक।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मुँहासा और बहुमूत्र रोगमें लाभ होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह कच्छु विष (Psora) और उपदंश विष (Syphilis) दूषित धातुकी एक प्रतिषेधक दवा है। दाद, चकत्ते और उपदंशसे उत्पन्न उपमांस (excrescenes), ग्रन्थिमय अर्बुद, ग्रन्थियों का कड़ा हो जाना, कार्कट रोग, कशेरुकाके भीतरकी मज्जाका क्षय हो जाने की वजहसे शरीरकी संचालन शक्तिका लोप हो जाना या लोप होनेका उपक्रम; दुरारोग्य सविराम ज्वर (कैल्के-आर्स, वैसिलाइन) और बहुमूत्र वगैरह रोगोंमें यह अत्यन्त लाभदायक है। चेहरे पर पाटल व्रण (Acne Rosacea) और नाकके ऊपर नीली पीली फुन्सियाँ या दाने (papules) वगैरहमें इसकी (कार्बो-ऐन, जरायु रोगकी वजहसे व्रण आदि=हाइड्रोकोटाइल; शराब पीनेकी वजहसे=ऐण्टि-क्रूड, नक्स-वोम; अत्यन्त लाली और खुजलाहट, रासटक्स; नीलिमा लिये=ऐगार; दुरारोग्य=आर्स आयोड, ऐण्टि-टार्ट) विशेष क्रिया है।

शक्ति।—निम्न क्रम व्यवहार करना चाहिये।

आर्सेनिकम हाइड्रोजेनिसेटम।

(ARSENICUM HYDROGENISATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीमें गलाया जाता है। इसके बाद सुरासारका व्यवहार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— विसूचिकाकी हिमाङ्गावस्था; हिचकी; रजोरोध; पीतज्वर इत्यादिमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इसके द्वारा आर्सेनिककी तरहके ही लक्षण पैदा हुआ करते हैं, पर आर्सेनिकके लक्षण प्रबल होते हैं और बहुत ही तीव्र भावसे प्रकट होते हैं। रक्तशून्यता, उद्वेग, निराशा, खूनका पेशाब, लिङ्गमुण्ड और आवरकपर पीवभरी फुन्सियां (Pustules) और गोल चकत्ते की तरह जखम,—वगैरह अवस्थाओंमें लाभदायक है। हैजा, जीवनी-क्रिया-का एकदम अवसाद या हिमाङ्ग अवस्थामें इसका उत्तेजक रूपमें प्रयोग होता है।

लक्षणावली।

मन।—मानसिक उद्वेग, रोगी समझता है, कि उसकी मृत्यु बहुत पास आ गयी (ऐकोन, एपिस, आर्स, लैके, डिफ्लो, कैनाब-इन, हाइड्रैस, पेट्रोल, फाइटो, पोडो, सिलि); अपने आराम होनेके सम्बन्धमें निराशा (लैका-कैन, ऐसिड-फास, सिफिलिनम)

मस्तक।—सीढ़ी चढ़नेके समय सरमें चक्कर आना (बोरैक्स, कैल्के-आस्ट्र, सलफर)। माथेपर मानो कोई एक भार दबाया हुआ है।

आंख।—पीली आभा लिये गड्ढेमें धंसी और उसके चारों ओर चौड़ी नीली रेखा (आर्स, सिना क्यूप्रम, डिजि, ह्यायोसा, ओपि, वेरेट; गड्ढेमें धंसी=आर्स, कैम्फर, कार्बो-वेज, लोरो, सिकेल, वेरेट)। चेहरा देखनेमें वृद्धोंकी तरह और यन्त्रणा-व्यंजक।

नाक।—भयानक छींक (आर्स, कैलोड, साइक्ली, डालका, सिपा, क्रियो, लैके, स्क्विला, स्टैफ) और नाक इतनी ठण्डी रहती है, कि उसे गर्म कपड़ेसे ढँक लेना पड़ता है (आर्निका, प्रम्बम, वेरेट)

पाकाशय।—पेटमें जो कुछ जाता है, सब वमन हो जाता है। (इपिक, इथ्यू, फेरम-म्यू, क्रियो, पेट्रोल); पानी या कोई भी पतले पदार्थ पेटमें नहीं रहते (ऐण्टि-टार्ट, आर्स; बच्चा दूध पीते ही कै कर देता है—कैल्के, इथ्यूजा, इपिक); भयानक वमन,—पेटमें कुछ भी रहता नहीं है (ऐपोमार, आर्स, क्यूप्रम, आयोड, जैट्रोफा, नक्स, वेरेट)।

पेशाब।—खूनका पेशाब,—दो तीन आउन्स खून निकलता है। (कैनाब—सैट, पल्स, टेरिबिन्थ, चिनिन-सल्फ, हैमा; चोटकी वजहसे—आर्निका)

पुं-जननेन्द्रिय ।—ऊपरी त्वचा (Prepuce) और लिङ्गमुण्डपर पीव भरे दाने पहले पैदा होते हैं और अन्तमें छोटा गोलाकार, छिछला (Superficial) जखम हो जाता है (मार्क, ऐसिड-नाई, थूजा ; मसाना या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें (Region of kydneys) असह्य दर्द, इसके साथ ही बार बार पेशाबका वेग (बार्बेरिस, कैनाब-सैट, क्लिमैट, ओसिमम-कैनम, टेरिबिन्थ, हैमा)

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—एकाएक रजोरोध होकर आन्तरिक कम्प और इसके बाद ही हाथ-पैरमें छेदनेकी तरह दर्द, मस्तिष्ककी दुर्बलता, पतला लाल मल निकलना और रातमें खाँसी तथा ओकाई आना ।

ज्वर ।—प्रत्येक तीसरे दिवस दिनके ३ बजनेके समय (एपिस, सिङ्कोना, नक्स, पल्स, सेबाडिला) । भयानक शीत पैदा हो जाना, बार बार जंभाई आना ; मानसिक अस्थिरता, शीत मालूम होना और वक्षस्थलमें दबाव मालूम होनेके साथ ही साथ शीत आरम्भ हो जाता है, गर्दनमें दर्द और खोंचन मालूम होना ; ललाट देशकी शिराओंमें दर्द। इसके बाद ही उत्ताप पैदा हो जाना—हलका उत्ताप—यह रातके ८ बजेतक रहता है—मुखगह्वर एकदम गर्म—साथ ही प्यास और इसके बाद बहुत थोड़ा पसीना। पसीना आरम्भ होते ही रोगी सो जाता है (ओपि, पोडो, रास) और नींदमें चौंक उठता है । रात १२ बजने बाद फिर कोई तकलीफ नहीं रह जाती।

सार्वाङ्गिक लक्षण ।—निचला अङ्ग दुर्बल और सुस्त । एकाएक बहुत सुस्ती पैदा हो जाना और जी मिचलाने लगना । त्वचा गह्वर खाकी रंगकी हो जाती है । कलाईके ऊपरतक बाहु, घुटनेतक दोनों पैर और नाक तथा दोनों भवें सुन्न हो जानेकी तरह मालूम होती हैं । नाड़ीकी गति रुक जाती है और जीवनका कोई चिन्ह नहीं रहता,—पर हाथ पैरोंमें हिलानेकी शक्ति रहती है ।

सम्बन्ध ।— सदृश,—आर्सेनिक ।

दोषघ्न ।— ऐमोन—ऐसेटिक, नक्स-वोम ।

शक्ति ।—३ य से लेकर ६ दशमिक क्रम ।

आर्सेनिक आयोडेटम ।

(ARSENIC IODATUM)

दूसरा नाम ।—आयोडाइड आव आर्सेनिकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह विचूर्ण और मूल अर्कके रूपमें तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—चेहरेपर मुँहासा, लाल अर्बुद, हृदशूल ; कलेजेका दर्द ; वक्षमें अर्बुद ; श्वास-नालीका प्रदाह ; कर्कटीय जखम ; सर्दी ; क्षयकास ; दुर्बलता ; शोथ ; पाकाशय का प्रदाह ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियां ; वक्षोदक रोग ; स्वरनालीका प्रदाह; नाना प्रकारके चर्म्म-रोग ; यकृत और फेफड़ेकी बीमारी ; खसड़ा , कानसे स्राव ; फेफड़ेका प्रदाह ; आमवात ; कण्ठमाला दोषयुक्त धातु ; आँखोंका प्रदाह (आँख उठना) ; उपदंश इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहमें जब त्वचाको क्षय करनेवाला और खुजलानेवाला स्राव निकला करता है ; निकला हुआ रस कभी कभी बहुत बदबूदार और पानीकी तरह पतला होता है ; तथा जिस श्लैष्मिक झिल्लीमें प्रदाह होता है वह बहुत लाल हो जाती है, उसमें सूजन, जलन और खुजलाहट होती है, उस समय आर्स-आयोडसे विशेष लाभ होता है । बहुव्यापक सर्दी (Influenza) ; नये पैदा हुए शस्य आदिकी गन्धकी वजहसे पैदा हुए या वसन्त ऋतुमें होनेवाले सर्दीके ज्वरमें (Hay fever) ; पुराना पीनस रोग और मध्यकर्णसे (कानका बिचला भाग) पीब आदिका स्राव ; नासा-रन्ध्र (नाकके छेद) के भीतरवाले तन्तुओंमें सूजन और कर्ण-पश्चान्नलीकी सूजन और बहरापन वगैरह लक्षणोंमें उपयोगी है। डा० जी० एच० क्लार्क वगैरह चिकित्सकोंका कथन है, कि यह क्षय रोग-वाले धातु रोगीकी एक महौषधि है ; इसका निर्देशक लक्षण यह है, कि ;—बहुत ही तेज शारीरिक अवसन्नता, तेज और उत्तेजना शील नाड़ी, बार बार बोखार और पसीना होना तथा तेजीसे मांस-क्षय होते जाना या दुबलापन ; उदरामय, पुराना फेफड़ेका प्रदाह और फेफड़ेमें फोड़ा होना ;

विलेपी ज्वर (Hectic fever) ; क्षीणता और रातके समय पसीना। फेफड़ा और वायु तथा श्वासनलीमें (Bronchial Tubes) कभी कभी पैदा होनेवाला प्रदाह ; बहुत ज्यादा हरी आभा लिये पीला (Greenish Yellow) पीवकी तरह श्लेषा निकलना और श्वासका छोटापन—इसका एक प्रधान निर्देशक लक्षण है। डा० केण्टका कथन है, कि अगर शहदके रङ्गका गाढ़ा लसदार लेईकी तरह बलगम निकलता हो तो यह एक अव्यर्थ सिद्धिप्रद लक्षण है। ऊपर बताया हुआ कटु और त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव, इसी वजहसे पैदा हुए श्लैष्मिक झिल्लीके स्रावमें ही दिखाई दिया करता है,—कानसे भी इसी ढङ्गका स्राव या स्त्री-योनिसे ऐसा ही प्रदर स्राव इसका निर्देशक लक्षण है।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—इसके साथ ही शरीरमें थोड़ा स्पन्दन मालूम होना। खासकर वृद्ध मनुष्योंकी बीमारी ; नींद खुलने बाद सरमें धीमा दर्द,—मानो भीतरसे कुछ बाहरकी ओर ठेल रहा है ; माथा हिलाने, झुकाने और पढ़नेके समय वृद्धि। दर्दके कारण माथा बहुत बड़ा मालूम होता है।

मुखमण्डल, आंख और कान।—ओंठकी ; श्लैष्मिक झिल्लीके कार्कट रोगसे विषाक्त जखम (Epithelioma) ;—श्लेषा प्रधान धातुवाले मनुष्योंकी आँखोंका प्रदाह। दुरारोग्य पाटल व्रण (Acne Rosacea) ;—कानके प्रदाहके साथ बदबूदार जखम पैदा करनेवाला पीवका स्राव। कर्ण-पटह (कानका पर्दा) मोटा हो जानेके कारण बहरापन।

नाक।—नाकके पिछले और बगले छिद्रमें खुजलाहट और जलन पैदा करनेवाला तथा त्वचाको क्षय करनेवाला पानीकी तरह श्लेषाका स्राव (ऐलियम सिपा) ; बार बार छींक (सिपा, आर्स, साइक्लेमेन) ; नये पैदा हुए शस्य आदिकी गन्धकी वजहसे सर्दी ज्वर (Hay fever) ; पुरानी सर्दी,—श्लैष्मिक झिल्ली फूली और लाल ; बहुत ज्यादा गाढ़ा पीली आभा लिये श्लेष्माका स्राव (पल्स) ; निर्मल वायु-सेवनसे वृद्धि। नासा-रन्ध्रमें जखम।

गलेके भीतर।—तालुमूलमें जलन। जिह्वामूलकी ग्रन्थि भी आक्रान्त हो जाती है। तालुमूलीय झिल्लीका प्रदाह या गलनालीकी उपझिल्ली (Diphtheria) का प्रदाह,—उसके साथ ही त्वचाको क्षय करनेवाला पीले रङ्गका गाढ़ा लेईकी तरह स्राव (कैलि-बाई; कैली-आयो)

नाड़ी ।—द्रुत, क्षीण और अनियमित।

श्वास यंत्र ।—यक्ष्मा-श्वास,—स्वरभङ्ग मिली यन्त्रणादायक खाँसी; पीब की तरह पीले रङ्गका कफ (Sputa) और उसके साथ ही हृत्पिण्डकी दुर्बलता, शीर्णता और सारे शरीरमें कमजोरी तथा पुराना उदरामय, पानीकी तरह काली आभा लिये मल। सामान्य खुसखुसी खाँसी और सूखा और रुका हुआ नाकका छेद। फेफड़ेका प्रदाह;—रोगकी नयी अवस्था बीत जानेपर भी फेफड़ा साफ नहीं होता या फ़ोड़ा पैदा हो जाने की तैयारी हो जाती है। वायुनली-भुज-प्रदाह (Bronchitis),—ज्वरके साथ रातमें पसीना और पीबकी तरह श्लेष्मा निकलना; यक्ष्माका लक्षण और कमज़ोरी मौजूद रहती है। छातीमें कसावटका भाव।

पाकाशय ।—भूख यथेष्ट रहती है। भरपूर खाता है, पर इतनेपर भी रोगी दिनों दिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, आयोड, सैनिक्यूला; सार्सा; बैसिलाइन)

ज्वर ।—बार बार आनेवाला बोखार और पसीना होना। रातमें इतना पसीना होता है, कि रोगीकी समूची देह भींज जाती है। ऐसा मालूम होता है, मानो स्नान कर लिया है। विलेपी (Hectic) ज्वर, रातमें पसीना और बहुत कमजोरी; रोगीको भरपूर भूख रहनेपर भी दिनों दिन क्षीण होता जाता है। (टियुबर्क्युलिनम।)

मल ।—उदरामय,—मल पानीकी तरह पतला और काला; रातमें बिलकुल नहीं होता; परन्तु सवेरे जरा इधर उधर टहलनेपर ही पाखाना लग आता है और पहले दस्त आने लगते हैं (ब्राई, नैट्र-सल्फ, सलफर);—इसके साथ ही आँतोंमें जखम।

त्वचा ।—सूखी, जलन और खुजली; मछलीके चोंयटेकी तरह चर्म-खण्ड उड़ जाते हैं। सभी लसिका ग्रन्थियां फूली रहती हैं। सुस्ती लानेवाला रातका पसीना। श्मश्रु-पामा (दाढ़ीमें पैदा होनेवाला एक तरहका उकौत) इसके साथ ही पानीकी तरह रस बहना और खुजली—धोनेसे ही खुजली बढ़ती है। क्रमसे दुबलापन आते जाना या माँस-क्षय (सुखण्डी) रोग (Marasmus),—पुराना दुरारोग्य रोग; अरुणिमा (Erythema)—जगह जगहपर बिना फूला ही उद्भेद,—हाथ पैरकी अंगुलियाँ सड़कर गिर जाती हैं: सभी ग्रन्थियाँ फूलीं; बाघी।

ज्वर ।—अनमनीय पुष्ट नाड़ी ; निचली पलक और चेहरा फूला ; जीभ मोटी और सफेद आभा लिये और जीभका पार्श्व भाग तथा अगला भाग लाल ।

निद्रा ।—रातमें रोगी छटपटाता है, सो नहीं सकता ।

वृद्धि ।—ठण्डी हवा और तर जमीनमें (डायोडेम, नैट्र-सल्फ, डलकैम—जलीय वायुमें उपशम=कास्टिकम ।)

सम्बन्ध ।—सदृश—टियुबर्क्युलिनम ; ऐलियम-सिपा ; सैङ्ग्इने-नाई ; ऐरेनिया ; नैफथैलिन । वैसेलिन ; कर्ण-स्राव—ऐ-नाई ; क्रियो ; अरम ; कोना ।

दोषघ्न ।—वेलाडो ।

अनुपूरक ।—फास्फोरस । सलफरके बाद उपयोगी है ।

शक्ति ।—२ री से लेकर ६ ठी दशमिक (पाकाशयकी बीमारीमें निम्न-क्रम और भोजनके बाद ही इसका प्रयोग करना चाहिये—डा० क्लार्क)

आर्सेनिकम मेटेलिकम ।

(ARSENICUM METALLICUM)

दूसरा नाम ।—मेटालिक आर्स ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण, इसके बाद टिंचर ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं ;—कब्जियत ; सर्दी ; अतिसार ; आँखकी बीमारी ; अर्श ; सर-दर्द ; खुजलाहट ; उपदंश कमरका स्नायुशूल ।

उपयोगिता और आभास ।—धातुगत उपदंशज विषको पुनः जागरित कर रोगको आरोग्य करता है । इसके लक्षण निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होते हैं । दो या तीन सप्ताहका अन्तर देकर सर्दी हो जाती है रोगी को बहुत अधिक सुस्ती मालूम होती है । जीभपर सफेद लेप चढ़ा रहता है और उसपर दाँतके दाग दिखाई देते हैं (मार्क, पोडो, युका, फिलैमेण्टोसा, रास,

छूनेसे, मुखगहवरमें बहुत दर्द रहता है और जखम भरा रहता है (मार्क्यूरियस कोर, कैलि-क्लोरिकम) रोगवाली जगह फूली मालूम होती है (बाहु फूला मालूम होना=वेरेट ; हाथ, गर्भघरमें प्रवेश करनेपर=इथ्यूजा ; हाथकी तलहत्थी रातमें—आर्स ; कन्धा=कैलि- आयोड ; जानुदेश=ऐमोनियेकम ।)

सम्बन्ध ।—तुलनीय—आयोड, मार्क, नेट्रम-कार्ब (उपदंश) ; नक्स (तन्द्रालुता), रास-टक्स (दर्द) ; सल्फ (नाड़ी) ; आर्स ।

दोषघ्न ।—बेलाडो ।

शक्ति ।—३ री दशमिकसे ६ ठीं दशमिक ।

आर्सेनिकम सलफ्युरेटम फ्लेवम और रूब्रम ।

(ARSENICUM SULPHURATUM FLAVUM AND RUBRUM)

(Yellow Sulphuret of Arsenic and Red Sulphuret of Ars)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें,—लाभदायक है :—संन्यास, क्षय-रोग, अतिसार, प्रमेह, अजीर्णता, स्वरनालीका क्षयरोग ; चर्म्म-रोग ; व्रण, पाकाशयका प्रदाह, स्नायुशूल, विचर्चिका इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्वास कष्टता ; जननेन्द्रियका चर्म्म-रोग । धवल रोगकी यह एक बहुत उत्कृष्ट दवा है । उपदंश विषकी वजहसे शल्क (सूखी मरी छाल) से ढका चर्म रोग वगैरहमें लाभदायक है ।

(Arsenicum Sulphuratum Rubrum—आर्सेनिकम सल्फ्युरेटम रूब्रम)—कटि स्नायुशूल (Sciatica), बहुव्यापक सर्दी (Influenza) रोगके आक्रमणके बाद पैदा हो जानेपर और आर्सेनिक तथा सलफर दोनोंका ही वामाङ्गिक (बाएं अङ्गका) लक्षण मौजूद रहनेपर विशेष लाभदायक है । इस लक्षणवाला विचर्चिका रोग (Psoriasis) ; व्रण और बहुव्यापक सर्दी रोग आदिमें इसके व्यवहारसे लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सलफर, कैल्केरिया ।

शक्ति ।—६ ठीं दशमिकसे लेकरे ३० शततमिक तक ।

आर्टिमिसिया वलगैरिस।

(ARTEMISIA VULGARIS)

दूसरा नाम।—वार्म उड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया—मूलसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—निस्पन्द वायुरोग (Catalepsy) आक्षेप; ताण्डव; बाधक; मृगी; मस्तिष्कोदक; मूर्च्छावायु; कृमि रोग वगैरहमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—मृगी और कृमिके कारण बच्चोंमें जो अकड़न पैदा हो जाती है, वैसे रोगोंमें उपयोगिताके लिये यह बहुत ही प्रसिद्ध है। रोगका आक्रमण होनेके पहले ही उत्तेजना आ जाती है—वगैरह इसके निर्देशक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मस्तक।—आक्षेपिक सङ्कोचन और प्रसारणकी वजहसे मस्तक पीछेकी ओर और मुंह बाईं ओर निकल जाता है।

आंख।—रंगीन रोशनीसे सरमें चक्कर आने लगता है। पढ़ना-लिखना आदि नजरोंका काम करनेपर आँखमें दर्द पैदा हो जाता है। दृष्टि, मानो धुंधली-सी होती जाती है। हाथकी अंगुलीसे रगड़नेपर या आँख बन्द कर लेनेपर थोड़ी देरके लिये आराम मिलता है।

स्नायुमण्डल।—मृगी रोग,—भयानक मानसिक उद्वेग या डरकी वजहसे बीमारी, कई बार एकके बाद दूसरा आक्रमण होनेपर कुछ देरके लिये बन्द हो जाना;—इसके बाद फिर उसी तरह लगातार एकके बाद दूसरा आक्रमण होता है। इसके आक्रमणके बाद रोगी प्रायः सो जाया करता है। थोड़ी देरतक ठहरनेवाला मृगी रोग (Patil Mal) में भी यह बहुत फायदा करता है; रोगी कहीं जाता जाता एकाएक रुक जाता है; शून्य दृष्टिसे एकबार चारों ओर देखता है। कई बातें बुदबुदाकर कहता है; इसके बाद उसी समय होशमें आकर चलने लगता है। पर इस थोड़े समयमें उसे क्या हो गया था, इस

सम्बन्धमें कुछ भी नहीं कह सकता। बच्चोंको कृमिकी वजहसे अकड़न (सिना स्टेनम) क्या हुआ था, इस सम्बन्धमें कुछ भी नहीं कह सकता।

पुं-जननेन्द्रिय।—रातमें रेतःपात हो जाना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—गर्भावस्थामें जरायुमें भयानक यन्त्रणादायक सङ्कोचन और प्रसारण होता है। प्रसव वेदनाकी तरह दर्द होता है। गर्भ-स्राव होनेका उपक्रम हो जाता है। ऋतुके समय बहुत अधिक रक्त-स्राव होता है। जरायुसे खूनका स्राव (Motrorrhagia)। ऋतुमें विकृति या गड़बड़ी रहनेकी वजहसे अपस्मार

पसीना।—बहुत ज्यादा पसीना,—बहुत ही सड़ी गन्ध-भरा—लहसन को तरह गन्धवाला पसीना (पेयाजवाली गन्धका=बोविस्टा)

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐब्रोट, ऐबिसिन्थ, सिना, कीमो, आर्निका, मिलिफोलियम। सदृश-साइक्यूटा, सिना हेलिबो, ब्यूफो, कास्टिक, कैमो, रूटा, सिनकोना, ब्रायो।

शक्ति।—१ लासे ६ ठों शततमिक क्रम।

एरम ड्रैकाण्टियम।

(ARUM DRACONTIUM)

दूसरा नाम।—ग्रीन ड्रैगोन।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—इसकी जड़से टिंचर और विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—घुंड़ी या काली खांसी; कानकी बीमारी; स्वरभङ्ग; ध्वजभङ्ग; बहुव्यापक सर्दी; योनिमें खुजली; गलेका जखम; आमवात इत्यादि।

कान।—विचले छेद (मध्य-विवर Middle ear) में पूर्णता और बहुत तेज दर्द मालूम होना।

मुख-विवर।—सूखापन और जलन, वार वार घूंट लेने या खांसकर गला साफ करनेका आग्रह, गलेमें चय हुई त्वचा या खान उधड़ जानेकी तरह

मालूम होना और उस स्थानमें स्पर्शका सहन न होना। गह्वर, लसदार; बदबूदार और स्वाद कड़वा। जीभपर मैल चढ़ी। मुंहका स्वाद बहुत कड़वा।

श्वास यंत्र।—स्वरनालीमें अत्यन्त दर्द ; आधी रातके समय श्वास-प्रश्वास रुक जानेकी तरह मालूम होना। छातीमें दबाव मालूम होना और दर्दके साथ श्वास कष्ट—स्वरनलीमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा इकट्ठा हो जाता है। कफ बहुत ज्यादा परिमाणमें निकलता है और गाढ़ा पीला या सफेद आभा लिये और पीवकी तरह होता है। गलेमें ऐसा मालूम होता है,मानो खाल उधड़ गयी हो और स्वरभङ्गके साथ श्वासरोध करनेवाली खाँसी आती है।

सम्बन्ध। —**तुलनीय**।—कैलेडियम ; त्वचा—अरम ट्राई इत्यादि।

शक्ति।—२ रीसे लेकर ३० शततमिक तक।

अरम ड्रेकनकुलस।

(ARUM DRACUNCULUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सारे शरीरमें विशेषकर हाथकी अँगुलीमें दर्द, मानो हाथमें बिछुआ लग गया है ऐसा मालूम होना, वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—१x ३०।

अरम इटालिकम।

(ARUM ITALICUM)

प्रस्तुत प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—माथेके पीछेकी ओर दर्द—तर हवामें बढ़ना ; थोड़े भी मानसिक परिश्रमसे माथेमें धीमा दर्द, नाभि प्रदेशमें शूलका दर्द, उदरामय, पाखाना होनेके समय मलद्वारमें दर्द, त्वचापर छोटे छोटे उद्भेद, सुई वेधनेकी तरह दर्द और खुजलीके लक्षणमें लाभदायक है

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐवासि, इयूजा, पिक्रि-ऐसिड; ऐनाकार्ड।

शक्ति।—१x—३०।

एरम मक्युलेटम।

(ARUM MACULATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकन मतसे ताजी जड़से मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—छोटी क्रमि; दमा; सर्दी; बहुव्यापक सर्दी; नाकमें अर्बुद; गुह्यद्वार या मलान्त्रका अपने स्थानसे हट जाना इत्यादि।

लक्षणावली।

मुखगह्वर।—जीभ इतनी फूल जाती है, कि कोई चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है। जीभके ऊपर सुई बेधनेकी तरह दर्द और जलन। जीभ फूली और लाल, दर्द-भरी और उठी हुई तथा प्रदाह-भरीकी तरह और काँटेसे ढकी रहती है (Pallilae—एरम-ट्राइफि)

गलेके भीतर।—गलेमें बहुत सूजन;—जीभ, गलेके भीतर और अन्न-नालीमें डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ मालूम होना, निगलना असम्भव हो जाता है।

पाकाशय।—खूनकी कै। पेट दबानेपर दबाव मालूम होता है।

पेशाब।—मूत्रनालीसे खूनका स्राव। पेशाब बहुत ज्यादा और स्वच्छ पानीकी तरह होता है; जली हुई सींगकी तरह उसमें गन्ध रहती है और कुछ देर तक रख छोड़नेपर उसमें तली जमती है।

श्वास-यन्त्र।—खून मिला बलगम (कफ—आर्निका; फेर; इपिका, नाइट्रम, फास, पल्स)

नींद और स्वप्न।—दुर्दमनीय औंघाई,—खासकर भोजनके दो, अढ़ाई दण्ड बाद; नींदके समय चेहरा लाल हो जाता है।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—दूध इत्यादि।

शक्ति ।—३ रीसे ३० शततमिक क्रमतक हमेशा व्यवहारमें आता है।

एरम ट्राइफिलम ।

(ARUM TRIPHYLLUM)

दूसरा नाम ।—वेट कोल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी डालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—मस्तिष्क प्रदाह; गलेका जखम; प्रलाप; उपझिल्ली प्रदाह; ग्रन्थियोंका फूलना; सरमें दर्द; मुंहमें जखम; जीभका फटना; सान्निपातिक ज्वर; स्वरभङ्ग इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—वेट कोल जातीय कई वृक्षोंमें प्रदाहकी तरह एक प्रकारकी क्रिया उत्पन्न कर देनेकी शक्ति है और इसी वजहसे इसके द्वारा श्लैष्मिक-झिल्ली मात्रमें ही पहले प्रदाह और पीछे उनका ध्वंस संसाधित होता है। इस उद्भिदका रस कसैला होता है और इसी वजहसे यह गलेके बीच वाले उपझिल्ली प्रदाहमें या रोहिनी रोगमें (Diphtheria) लाभदायक होता है; विषाक्त या आरक्त ज्वरमें और आन्त्रिक ज्वरमें इससे लाभ हुआ करता है। मुख-विवर, नासा-रन्ध्र और दोनों ओठोंकी त्वचा उड़कर लाल हो जाती है और उसमें खुजली पैदा हो जाती है। रोगी दोनों ओठोंको नोच नोचकर खून निकाल देता है; मुँहके कोनेमें जखम हो जाता है, फटी हुई त्वचा (Cracked) और उससे खून निकलता है। वह हमेशा नख और नाक खोंटा करता है। जीभ फट जाती है और उससे खून निकलता है। पेशाब बहुत थोड़ा होता है या रुद्ध (Suppressed)—रुका हुआ रहता है। रोगी बेहोश होकर पायताने उतर जाता है। तकियेमें सर गड़ाया करता है। इससे पैदा हुए सभी स्राव त्वचाको क्षय करनेवाले होते हैं और मुंह, नाक आदिके रन्ध्रोंमें उत्तेजना (Irritation) पैदा कर देता है। सर्व साधारणमें व्याख्यान देनेवाले वक्ताओंका स्वरभङ्ग, कण्ठ स्वरमें परिश्रम पड़नेकी वजहसे स्वरभङ्ग—इत्यादि एरमके कई मिश्रित लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—बेचैनी, प्रलाप, नाकमें अँगुली प्रवेश करना और अन्यमनस्कता।

मस्तक।—तकियेमें सर गड़ाया करता है (बेल, हेलिबो, वेरेट)। सरमें दर्द,—गर्म वस्त्र ओढ़ लेने या गर्म काफी पीनेकी वजहसे (कैमो, इग्ने-नक्स) बच्चा दर्दकी वजहसे माथेके पिछले भागमें हाथ रखकर रोया करता है। उसका मूर्द्धादेश ठण्डा और खुला मालूम होता है। माथेमें भयानक उत्ताप रहता है।

आंख।—ऊपरी पलक काँपती है। रोशनीकी ओर देखना नहीं चाहता। मानो दृष्टि दोष हो गया है। मेघके भीतरसे चीजें देखता है।

नाक।—सर्दी—श्लेष्मा कड़वा—खाल उधड़नेवाला (Excoriating) और पानीकी तरह और लगातार नाकसे स्राव हुआ करता है। नाकके छेदकी खाल उधड़ जाती है। नाक रुकी हुई मालूम होती है;—खासकर बांयी नाक। यद्यपि बराबर उससे पानी टपका करता है, पर रोगी मुंहसे साँस लेना छोड़ता है (ऐमोन-कार्ब, सैम्बुकस, सिनेपिस)—सवेरे वृद्धि; लगातार ऊपरके ऊपर छींक आती है,—रातमें वृद्धि। कड़वा (Acrid) क्लेदकी तरह स्राव,—नासारन्ध्र, नासाद्वार और ऊपरी ओंठकी खाल उधड़ जाती है (आर्स, सिपा)। सान्निपातिक ज्वरमें रोगी लगातार नाक खोंटा करता है,—खोंटते खोंटते नाकसे खून निकाल देता है,—नासारन्ध्रमें अंगुली घुसाकर बराबर खोंटा करता है। गलेके भीतरवाली उपझिल्लीके प्रदाह रोगमें (Diphtheria) पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है। पानी आदि पीने बाद नाकसे निकला करता है (ऐनान्थि, लेके, मार्क, फाइटो)

मुखगह्वर।—ओंठ खोंट खोंटकर खून निकालता है; दोनों ओंठोंके जोड़की जगहपर दर्द, पपड़ी और खून-भरा (विष दोष नष्ट होनेपर=काण्डिउ) हो जाता है। दाँतसे नख काट काटकर खून निकाल देता है,—सब श्लैष्मिक झिल्लियोंमें बहुत दर्द रहता है; खाल उधड़ जाने और खून निकलने पर भी रोगी उसे नोचता ही रहता है। दर्दसे चिल्ला उठता है, तब भी काटना नहीं छोड़ता। मुख-विवर और गलेके भीतर दर्द बना रहता रहता है और त्वचा क्षय हो जानेकी वजहसे रोगी खा-पी नहीं सकता (मार्क); सो नहीं सकता।

लार,—बहुत ज्यादा और कषाय (Corroding)—श्लैष्मिक झिल्लीकी त्वचा क्षय करनेवाला ; जीभ और गलेकी भीतरवाली झिल्ली विदाही या खाल उधड़ने वाली और रक्तस्रावशील ।

गलेके भीतर और श्वास-यंत्र ।—वक्ताओंके गलेका जखम (Clergyman's Sore throat),—आवाज टूटी हुई,—इच्छानुसार स्वर नीचा ऊँचा नहीं किया जा सकता;—बार बार परिवर्त्तनशील,—वृद्धि = बोलने, वक्तृता देने, गाना गाने (आर्जेण्ट-नाइ, आर्निका, कास्टि, फास, सेलिन)। स्वरलोप,—सम्पूर्ण,—उत्तर-पश्चिमी हवाकी वजहसे (ऐको, हिपर); गाना गाने (आर्जेण्ट-नाइ; कास्टि, फास, सेलिन)। जीभ और गलेमें तेज दर्द और गलेमें सड़ा घाव ; दर्दकी वजहसे खाना पीना नहीं चाहता। स्वरभङ्ग,—सवेरे वृद्धि (कास्टि, हिपर)। हनुतलस्थ (Submaxillary) ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं (कैल्कि, कैल्कि-आयोड, लैक-कैन, मार्क, फाइटो, सिलि)।

ज्वर ।—आन्त्रिक ज्वर (Enteric),—रोगी लगातार अँगुलीका अगला भाग खोंटा करता है और नाकके छेदको खोंटकर खून निकाल डालता है; बराबर छटपटाता रहता है और शय्यासे उठकर भागना चाहता है; अचैतन्य भाव, सभी विषयोंमें (ताच्छिल्य भाव = ऐ-फास, ओपि) प्रकट करता है; पेशाब रुकनेकी वजहसे मूत्रचार विकार (Uraemic Coma) होनेका उपक्रम हो जाता है (आरक्त ज्वराधिकारमें—ऐइलैन्थस)।

त्वचा ।—आरक्त ज्वरमें रोगीकी नाकसे दो तीन बार सूखी जैसी रूसी (मरी छाल) निकला करती है (ऐ-फ्लु, औरिक, कोमोक्लेडिया)।

सम्बन्ध । —दोषघ्न ।—मठा ; लैक-ऐसिड ; पल्स ।

तुलनीय ।—कैलेडि ; एलैन्थ ; सिना (नाकमें अँगुली) ; ऐमोन-कार्ब ; ऐमोन-म्यूर ; आर्जेण्ट-नाइट्रि ; आर्स ; कैन्थ ; कैम्फ ; सिपा ; हिपर लैके ; मार्क ; मेजे ; नाइट्रिक-ऐसिड ; सैंगु ; सल्फ ।

सदृश ।—स्वरभङ्गयुक्त श्वासरोधक सूखी खाँसीमें = हिपर और ऐसिड नाइट्रिकके अनुपूरक रूपमें इसका प्रयोग होता है और सवेरेके वक्त होनेवाले स्वरभङ्ग और बहरापनमें हिपर और कास्टिकमका अनुगामी हुआ करता है।

शक्ति ।—१२ से २०० शततमिक क्रम (बार बार निम्नक्रमका प्रयोग करनेपर अकसर नुकसान होता है—उच्चतम क्रमसे बहुत जल्दी और स्थायी लाभ होता है।)

एरण्डो मारिटेनिका।

(Arundo Mauritanica)

दूसरा नाम।—इटेली देशका एक तरहका घास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—सर्दी; बहुव्यापक सर्दी; दाँत निकलना; अतिसार; कानमे स्राव; दमा; पाकाशयकी गड़बड़ीकी वजहसे मुंहका जखम; पेशाबमें कितनी ही तरहकी तली या अधःक्षेप।

उपयोगिता और आभास।—सर्दी और दांत निकलनेके समय बच्चोंके उदरामय रोगमें लाभके लिये यह बहुत प्रसिद्ध है। मूलमें लाल बालू-भरी तली; गण्डमाला दोषकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (Scrophulous Ophthalmia); कानसे पीवका स्राव इत्यादि इसके विषयीभूत हैं।

लक्षणावली।

मन।—अश्लील भावका उदय होना; सहजमें ही हँसी आ जाना।

मस्तक।—लाली लिये फुन्सियां (Pustules),—ये पक और गल-कर पपड़ी जमे घावमें परिणत हो जाती हैं। ललाटमें खुजली मालूम होना। मूर्द्धादेशमें सुरसुरी और चैतन्य लोप करनेवाला (Stupefying) दर्द। बच्चेके केश उड़ जाते हैं। केशकी जड़ोंमें दर्द। सरमें चक्कर आना;—शय्यासे उठनेपर (कैल्के-फास, चेलिडो, चायना)।

आंख।—बच्चोंका कण्ठमाला दोषयुक्त (Scrofulous) आँखोंका प्रदाह; ऊपरकी ओर देख नहीं सकता; आँखके सफेद अंशमें या योज-कलकमें कुटकुटी, खुजलाहट पैदा हो जाती है और जलन पैदा हो जाती है।

कान।—कर्ण विवर (कानके छेद) में लगातार जलन और असह्य खुजली। पीवका स्राव। बाएं कानसे चमकीले लाल रङ्गका पानी स्राव। कानमें टुन टुन शब्द (कैल्के, कार्बि, क्रियो, नेट्र-म्य, पेट्रोल, [illegible])।

नाक ।—छींकने पर नाकके छेदसे हरे रङ्गका श्लेष्मा-खण्ड निकलता है। सर्दी—पहले पानीकी तरह श्लेष्मा (इयुफ्रेशिया), इसके बाद हरे रङ्गका या जमा हुआ श्लेष्माका स्राव। घ्राण शक्तिका लोप हो जाना (सलफर, स्वाद-शक्ति और घ्राण शक्ति लोप होना=मैग-म्यूर)

मुखविवर और पाकाशय ।—जीभमें जलन, खुजली और प्रदाह। मसूढ़ेसे रक्तस्राव। भूख न लगना। बहुत ज्यादा और लगातार प्यास बनी रहती है। खट्टी चीज खानेकी इच्छा। वायु निकलने या डकार लेनेकी चेष्टा किया करता है, पर होता या आता नहीं है। सवेरे शय्यासे उठने पर मिचली, (ऐनाक, ग्रैफ, क्रियो, लेके, लाइको, नक्स, पेट्रोल, फास, सिलि)। पाकाशयमें सर्दी मालूम होना (आर्स, कोलचि, लेक, नाइट्रस, ओलियम-ऐन, फास-ऐसिड, सल्फ, टैबेकम)।

अन्त्राशय ।—ऐसा मालूम होता है, मानो अन्त्राशयमें कोई जीव हिल रहा है (कैल्क-फास, कैनाबिस-सैट, क्रोकस-सैट, सैबाइना, सलफर, थूजा) मानो एक कृमि दाहिने कोंखमें रेंग रही है।

मल ।—मल पहले कड़ा पीछे पतला। पाखाना होने बाद मलद्वारमें जलन। स्तनपीनेवाले बच्चोंको लगातार उदरामय (कैमो, कैल्क-फास),—मल कुछ हरे रङ्गका। अर्श और सरलान्त्रका अपने स्थानसे हटना। (काँच निकलना)।

पेशाब ।—पेशाब करने बाद मूत्रनालीमें खुजली और जलन [पेट्रोसेलिनम); लाल आभा लिये पेशाब [कैन्थरिस, लाइको बार्बेरिस, पलस, स्किला, फास, जिङ्कम] और लाल रङ्गकी बुकनी की तरह पदार्थकी तली जमती है (Red Sandy Sediment—लाइको, सिपि, नेट्र-मयू, पलस, सिपि, स्किला, वैलि ।)

जननेन्द्रिय ।—रमणके बाद रेतोरज्जुमें (Spermatic Cord] दर्द मालूम होना [क्लिमेट, पलस]। रमणके बाद श्वासकृच्छ्रता ;—ऋतु एकदम असमयमें होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है—स्राव बहुत दिनों तक होता रहता है। काला थक्का थक्का ऋतुस्राव हुआ करता है (कैक, काकु, ग्रैफ, कैलि-नाइ, मैग-कार्ब, प्लैट, ठैन्यफस)। मुंहसे कन्धेतक और विटपास्थि [Pubes] तक स्नायुशूल फैल जाता है और इतना जला करता है, मानो आगसे छू गया है।

श्वासयंत्र।—खांसनेपर छातीमें धड़कन होती है (इपिका, ऐण्टिटार्ट आई)। चण भरमें स्वरलोप। सूखी खांसी और श्लेष्मा भरा वमन [कैमो, इपिक, क्रोकस, फ्यू प्रम, पैरिस, फास, सेक्लि, सेना, स्टैन)। गोलाकार भूरे रङ्गका जमा हुआ श्लेष्मा या वलगम (Sputa) निकलता है, स्तन-वृन्तमें जलन और दर्द (ग्रेफ, फास, सलफर]; माताके स्तनमें अधिक दूधका सञ्चय होना, इसी कारणसे बाएं स्तनमें दर्द—[बेल, ब्राई, पल्स, रास]।

पीठ।—गर्दनके बाईं ओर मानो एक कीड़ा रेंग रहा है। बाएं अंस फलक (Scapula) के नीचे दर्द। कटिवात (Lumbago=रास; देह सञ्चालनसे उपशम=डालका; बहुत देरतक माथा झुकाए रहनेकी तरह दर्द; बार्बेरिस=अकड़न जैसे भावसे बैठना, सोने या सवेरे नींद खुलनेपर वृद्धि; रोडो=अन्धड़ पानीसे वृद्धि)।

प्रत्यङ्ग।—ऐसा दर्द, मानो कसकर बाँध दिया है। दोनों हाथ ठण्डे मालूम होते हैं। ऊपरी देशसे आरम्भ होकर कलाईसे निचली अंगुली और वहांसे अँगूठेतक जलन मालूम होना। हाथ अकड़े और रस-भरी सूजन (Oedematous)। मालूम होता है, मानो हाथके ऊपर चींटी रेंग रही है। कटि-स्नायुशूलकी तरह (Sciatica) वंक्षण या पुट्ठेके स्थानसे लेकर गुल्फतक जलन करनेवाला दर्द, जानुदेशमें रस-भरी सूजन। बायें पैरकी पोटलीकी पेशीमें दर्द,—खड़े होने और चलनेके समय। पैरमें बहुत ज्यादा बदबूदार पसीना (कैलि-कार्ब, लाइ, ऐ-सेलि, सिलि)। पैरकी तलवेमें जलन और सूजन, मानो रोगी बहुत दूरसे चलकर आ रहा है।

त्वचा।—त्वचाका अंश विशेष लाल, मानो शरीरके लहसनके दागकी तरह (Noeves)। वक्षपर और बच्चेके कानके पीछे जलन-भरे खसड़ेकी तरह उद्भेद। बच्चेके शरीरपर खुजलानेवाली फुन्सियां (Papules) और छाती तथा बाँहोंपर सड़नेवाले दाने निकलते हैं। कमर और कन्धेमें और कभी कभी समूचे शरीरमें ऐसा मालूम होता है, मानो चींटी रेंग रही है।

ज्वर।—पहले जाड़ा मालूम होना और फिर प्यास; बच्चोंको उत्ताप मालूम होना—उत्ताप बहुत अधिक हो जानेपर ही शरीर नीला हो जाता है। बोखारके समय प्यास हमेशा मौजूद रहती है। शरीर हिलानेसे ही बहुत ज्यादा पसीना होता है। कन्धे और छातीमें पसीना होकर ज्वर छूटता है और इसी समय सरमें चक्कर आने लगता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—लिलियम, टिम्यूलेण्टम (पेरको पोटलीकी पेशीमें कसावटका भाव) ; सिपा, युफ्रेशिया, ऐनाल्थि, संवाड, सोराइन।

शक्ति ।—२ री दशमिकसे १२ वीं शततमिक तक ।

ऐसाफिटिडो ।

(ASAFOETIDA DISGUNENSIS)

दूसरा नाम ।—हींग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह गोंदकी तरह पदार्थ वृक्षोंसे मिलता है इससे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—दमा ; अस्थि-सम्बन्धी रोग ; ताण्डव ; अतिसार ; अजीर्ण ; उदरामय ; सरदर्द ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ ; बहुत चेतनता ; गुल्म वायु या मूर्च्छा रोग ; आँखके तारकामण्डलका प्रदाह। स्तनके स्रावके विकारसे पैदा हुई बीमारी ; पारेका विकार ; स्नायुशूल ; मेदकी अधिकता ; आँखकी पुतलीका स्नायुशूल ; नकसीर फूटना ; उदरामय (पेट फूलना) ; जखम ; कर्ण-प्रदाह (कानके पर्दे) का प्रदाह , अंगुलहाड़ा इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जिन स्नायु-प्रधान मनुष्योंके रसस्रावी फोड़े फुन्सियाँ बाहरी प्रयोगसे आराम किये गये हों या उदरामय एकाएक बन्द कर दिया गया हो ; वगैरह स्राव रोध होनेकी वजहसे जो बीमारियाँ पैदा होती हैं और जिनके शरीरमें पारा और उपदंशका विष है और इसी वजहसे जिन्हें अस्थि या अस्थिवेष्टनीमें जख्म आदि हो जाया करता है, उनके लिये ऐसाफिटिडा बहुत उपयोगी है। इन सब रोगियोंका अवसाद ,वायु गुल्मवायु रोग हो जाया करता है। उनके जखम आदिको छूनेसे बहुत अधिक दर्द होता है और यह टपकका दर्द रातमें इतनी तकलीफ बढ़ा देता है, कि रोगीको बेचैन कर डालता है। प्रसूताओंके स्तनमें बहुत थोड़ा दुग्ध सञ्चय होता है (ऐग्नस, लैक-कैन, लैक-डिफलो, रिसिनस)। इसके कई प्रधान निर्णा-लक्षण हैं यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं ;—(१) गुल्मवायु-ग्रस्तता, मानो एक गुल्म पेटसे ऊपर उठकर गला रोध करता है (Globus Hystoricus

(२) नाक और कानसे बदबूदार हरे रङ्गका पीवका स्राव होना। (३) बहुत दर्द और स्पर्श असहनीयता; अस्थिवेष्टमें सूजन और दर्द। (४) मुँहमें चर्बीका स्वाद; खानेके पदार्थ पर अरुचि; मिचली। (५) बड़े कष्टसे डकार आती है, रोगीको पक्का विश्वास रहता है, कि डकार आनेसे बीमारी दब जायगी या आराम मिलेगा। (६) वक्ष और हृत्पिण्डमें दबाव मालूम होना, वायु निकलने बाद तुरन्त आराम मालूम होना। (७) कलाई, हाथ वगैरह अस्थिमय प्रदेशोंमें फोड़े निकलना और उससे पतला रस निकलना,—रगड़नेपर आराम मालूम होता है। (८) रोगवाली जगहपर भीतरसे बाहरकी ओर टपकाकी तरह दर्द होता है या फटने और शूल वेधनेकी तरह दर्द होता है।

लक्षणावली।

मन।—अस्थिर-मति; कोई भी काम आग्रहके साथ अधिक देर तक नहीं कर सकता। इधर उधर घूमता फिरता है। कभी कभी तो बहुत ही प्रसन्न होता है, पर किसी किसी समय एकदम अस्थिर और उद्वेग-पूर्ण हो जाता है। हमेशा अपनी बीमारीकी चिन्तामें ही लगा रहता है (ऐसिड-टार्ट, नक्स-वोम)। क्रोध-प्रवणता।

मस्तक।—ललाटमें भीतरसे बाहरकी ओर बहुत दबाव मालूम होना, बाई भौंमें एकाएक वेधनेकी तरह दर्द, अक्षि-कोठरगत स्नायुशूल (Orbital Neuralgia),—दबानेपर और विश्रामसे आराम मालूम होता है। सरके दर्द का बढ़ना = सन्ध्याके समय घरके भीतर बैठने या सोनेके समय घटना = निर्मल वायुमें टहलनेसे।

आँखें।—आँखके स्वच्छावरक (Cornea) में बड़ा बाहरी ज़खम, उसके साथ ही जलन और भीतरसे बाहरकी ओर निचोड़ने या सुई वेधनेकी तरह दर्द; विश्राम या अंगुलीसे रगड़नेसे आराम मिलना। उग्रता या प्रदाह (Iritis) और आँखके भीतरका प्रदाह या उसके साथ ही रातमें वेधनेकी तरह दर्द या टपक जैसा दर्द; उपदंश दोषकी वजहसे उग्रता या प्रदाह (Syphilitic Iritis = आर्जेण्ट-नाई, कैलि-आयोड, थे-नाई, मार्क-कोर)।

नाक।—बदबूदार क्लेद-स्राव। नाकके छेदसे सड़ी गन्ध आती है। पूतिनस्य या पीनस (Ozœna) रोग,—नाकसे बहुत ही बदबूदार हरे रंगका पीब निकलता है। हड्डियाँ फूली या प्रदाहयुक्त हो जाती हैं। (ऐनाग्ज)

गलेके भीतर ।—मूर्च्छा-वायु गुल्म (Globus Hystericus) (इग्ने, मस्कस, कैलि कार्ब- लेक-डिफ्लो)। ऐसा मालूम होता है; मानो पाकस्थलीसे एक गोलाकार पदार्थ अन्ननलीको राहसे उठकर गलेमें रुक जाता है—रोगी बार बार घूंट लेता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी आंतोंकी क्रियाने विपरीत गति धारण की है और खाये हुए पदार्थ नीचेकी ओर न जाकर पाकाशयसे ऊपर अन्ननलीको राहसे गलेमें आ रहे हैं।

पाकाशय ।—डकार, लहसुनकी तरह गन्ध और बहुत ही तेज या सड़ा स्वाद-मिला डकार। डकार सहजमें हो नहीं होती। मूर्च्छावायुकी वजहसे उत्पन्न (Hysterical) आध्मान—पेट बहुत फूला और फैला हुआ, ऊपरी पेटके स्थानपर टपककी तरह दर्द, दिनके १२ बजनेके समय डकार और उसके बादही जलीय पदार्थ गलेमें आ जाता है। यंत्रणाजनक पाकाशयका शूल,—पाकाशय और उदरकी व्यवच्छेदक पेशी (वक्षोदर मध्यस्थ पेशी—Diaphragm) में काटने और जलनकी तरह दर्द। पेट फूलना—आध्मान वायु (Flatus) ऊपरकी ओर उठा करता है। सभी द्रव्योंमें अरुचि।

अन्त्राशय ।—पेट फूलना, मालूम होता है, मानो मरोड़ रहा है; इसके बाद ऐसी ही यंत्रणाजनक भूख, मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचवाले स्थानपर या विटपके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानो कोई चीज भीतरसे धक्का दे रही है। उदरामय,—इसके साथ ही बदबूदार मल, पेट फूलना और डकारके साथ ही खायी हुई चीजका निकल जाना। पेटमें हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द और इसके साथ ही बहुत जोरकी आवाजके साथ डकार! वायु सब ऊपरकी ओरसे निकलता है,—नीचेसे बिलकुल ही नहीं निकलता। अन्त्राशयके ऊपरी स्थानमें दर्द—मानो सर्दी लग गयी है या उदरामय आरम्भ होनेका उपक्रम हो गया है। (ऐग्नस, ऐसिट-क्रूड, नाइ, टेरिब; लिलियम-टाइ ; प्रसव के बाद वेगका घटना =लिलियम)। राक्षसी भूख (आयोड-ऐब्रोट)।

श्वास-यंत्र ।—वक्षस्थलमें दृढ़ आबद्ध भाव, मानो फेफड़ा अच्छी तरह फैल नहीं पाता (कैक्टस, ब्राई, फास)। वक्षस्थलका दबाव बढ़कर बहुत ही यंत्रणादायक भाव धारण करता है, श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा कर देता है और रोगीको बेचैन बना देता है। स्तन पीनेवाले बच्चोंको क्रुप खांसी,—घुंड़ी खांसी (Croup) की तरह आवाज; श्वास-प्रश्वासके समय कलेजेमें घड़घड़ आवाज होती है; बच्चा शारीरिक और मानसिक अस्थिरता प्रकट किया करता

है ; पेट और छाती बहुत गर्म रहती है, पेशाब फीके रंगका होता है। कलेजे की धड़कन कुछ कम्पनकी तरह होती है। बैठनेपर बढ़ना (कार्बो-वे, मैग-म्यू०)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्नायु-प्रधाना रोगिनी बीमारीके बाद जल्दी स्वस्थ नहीं हो पाती (कैस्टोरियम)। प्रबल रतीच्छा, ऋतु बहुत जल्दी जल्दी होता है, स्राव बहुत थोड़ा होता है और दो एक दिन बाद ही बन्द हो जाता है। जरायु-प्रदेशमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द मालूम होता है और काटने और दबानेकी तरह दर्द मालूम होता है। जरायुका जखम,—दर्द भरा और उसमें स्पर्श सहन न हो। प्रदर,—बहुत ज्यादा, हरा रंग, पानीकी तरह और बदबूदार क्लेद निकलना। दोनो स्तन दूधसे भर और फूल उठते हैं,—(गर्भ न रहने पर भी)। स्तनमें दूधका अभाव—जरा भी छू लेनेसे ही दर्द होता है (लैक-डिफ्लो, लैक-कैन, रिसिनस ; अत्यन्त विपन्नताके साथ=ऐग्नस कैस्टस।

तन्तु-अस्थि।—सभी ग्रन्थियाँ कड़ी, फूली, गर्म, उसमें टपककी तरह दर्द। तेज चिलक मारनेकी तरह दर्द। उरुमें नश्तर लगवानेबाद नश्तरवाली जगहपर स्नायुशूल (ऐलियम-सिपा)। अस्थि-प्रदाह और अस्थिका जखम,—रोगवाली जगह कुछ नीलापन लिये लाल रहती है और फूली रहती है। जखम,—प्रान्त देश नीली आभा लिये, कड़ा और थोड़ा भी छू देनेपर बहुत दर्द होता है। जखमसे साफ पानीकी तरह और बदबूदार स्राव होता है या क्लेद निकलता है।

त्वचा।—चत आदिमें बाहरी प्रयोगसे रस निकलना रोक देनेकी वजहसे उत्पन्न बीमारी ; चत ऊँचा; कड़ा, किनारे नीले, स्पर्श सह न सके और जरासे में ही रक्त निकलने लगता है। पीव बहुत ज्यादा निकलता है। हरी आभा लिये पानीकी तरह पतला, बदबूदार और क्लेदकी तरह होता है, फोड़ा यदि ज्यादा दिनोंतक रह जाता है, तो काला पड़ने लगता है। पुराने जखमके चिन्होंपर ही फिर फोड़ा हो जाता है (ऐ-फ्लू, ग्रैफा, हिपर) और उसका रङ्ग काला हो जाता है। खुजलाहट, खुजलानेपर बन्द होना।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—पल्स, कास्टिकम, कैम्फर ; सदृश। चायना ; मार्क ; वेलेरि। आर्जे-नाइट ; लैक, डिफ्लो, मस्कस, अरम (हड्डीकी

बीमारीमें) चायना, कास्टिकम, क्रोटन (क्रुप खाँसी—ब्रेसिलाइन, ऐङ्गस्टियुरा, सिलि) । हिपर (चैतन्याधिक्य) । कैलि—आयोड, इग्ने; पल्स, थूजा वेले ।

शक्ति ।—२ री दशमिकसे २०० तक ।

क्रियाका स्थायित्व ।—६० दिन ।

ऐसेरम यूरोपियम ।

(ASARUM EUROPEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे गाछ और जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मदात्यय ; मलद्वार और सरलान्त्रका अपने स्थानसे हटना ; सर्दी ; उदरामय ; बाधक ; आँखकी बहुतसी बीमारियाँ ; मूर्च्छा-वायु तथा सान्निपातिक ज्वरमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायु-प्रधान, उद्वेगशील, उत्तेजना-प्रवण या दूषित विमर्ष भाववाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है । इसका रोगी रेशमकी रगड़का शब्द सहन नहीं कर सकता, उनकी पेशियाँ सब आक्षेप और विक्षेप युक्त रहती हैं ; किसी तरहकी मानसिक उत्तेजना होनेपर वे काँप उठती हैं और हमेशा उन्हें जाड़ा लगा करता है । स्नायवीय विकारकी वजहसे बहरापन और दृष्टि-शक्तिका घटना वगैरह लक्षणमें ऐसेरम अत्यन्त लाभदायक है ।

लक्षणावली ।

मन ।—मानसिक वृत्तियोंका धीरे धीरे लोप होते जाना,—जैसा नींद आनेके पहले हो जाता है । इसके साथ ही ललाटकी त्वचामें संकोचन मालूम होना । हवा खानेके लिये टहलनेके समय समझता है कि मानो वह प्रेतात्माकी तरह शून्यमें उड़ रहा है (लैक-कैन, स्टिक्टा ; वैलि), परिश्रम करनेकी शक्तिका न रहना ; कोई काम करनेकी इच्छा न होना । रहता है, दुःखित पर उत्तेजना बनी रहती है ।

मस्तक।—कनपटी या शंखदेशमें (Temporal) सर दर्द मालूम होता है, मानो दोनो कनपटीकी गिराएं माथेमें खिंच रही हैं, दिनके दो बजनेके समय निर्मल वायुके सेवन पर और सोनेसे घटना। बाईं कनपटीमें और कानके पीछे पीसनेकी तरह दर्द, खाने और सर झुकाने पर बहुत दर्द होता है; बैठनेपर घटता है। मूर्धाकी त्वचामें खींचन मालूम होती है।

आंख।—पढ़नेके समय बहुत दबावकी तरह दर्दकी वजहसे ऐसा मालूम होता है मानो दोनों आँखें आपसमें अलग अलग हो रही हैं या बाहर निकल पड़ेंगी; ठण्डे पानीसे धोनेपर घटता है। ठण्डी हवा या पानी आंखोंमें बहुत आराम पहुँचाता है; दृष्टि शक्तिकी दुर्बलता (नेट्र-म्यूर, फाइजस-टिग्मा।)

कान।—श्रवण शक्तिकी बहुत अधिक प्रखरता—नये कपड़ेका खस-खस शब्द या कागजकी खड़खड़ाहट सहन नहीं होती (फेरम, टैटान)। कानके छेदमें मानो खील टोंकी हुई है या ठेपी लग रही है, ऐसा मालूम होना (ऐनाक)।

नाक।—सूखी सर्दी—नाकका छेद रुक जाता है। नाकके छेदमें खुजली;—बहुत चेष्टा करने पर छींक आती है और निर्मल पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता है। भयानक छींक या चुतकार। (साइली, आर्स, युफ्रे)।

पाकाशय।—मिचली;—कभी कभी या लगातार मिचली (इपिकाक), भोजनके बाद मिचलीका बढ़ना; जीभ साफ (सलफर); गर्भावस्था में मिचली (सिम्फोरि-कार्पस, ऐसिड कार्बोलि)। शराब पीनेकी बहुत अधिक इच्छा। रातमें शराब आदि पीनेके कारण उन्मत्तता पैदा होने बाद सबेरे नींद खुलने पर पाकाशयमें भयानक पीसनेकी तरह या खोंचा मारनेकी तरह तकलीफ मालूम होना। बहुत सुस्ती मालूम होना और बार बार जम्हाई आना (चेलिडो, इग्ने); मिचली,—ललाटमें दबावकी तरह दर्द और इसके साथ ही मुंहमें पानी भर आना। हरी आभा लिये खट्टी कै। भूख न लगना या भोजनसे अरुचि।

अन्त्राशय।—गन्ध हीन, डोरीकी तरह लम्बा गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है। कड़ा श्लेष्मा मिला पतला मल, इसके साथ ही छोटी क्रिमिसे भरा रखड़ा श्लेष्मा निकलता है। पाखाना होनेके पहले और समय अन्त्राशय और मलान्त्रमें काटनेकी तरह अनुभव होना; वायु निकलने पर उपशम।

श्वास-यंत्र।—गलेमें गाढ़ा श्लेष्मा;—खाँसकर निकालनेमें तकलीफ होती है (हाइड्रास, आर्जेण्ट-नाइ, फास; नेट्र-कार्ब); खाँसनेके पहले गला साँय साँय करता है। वायुनलीमें श्लेष्मा रहनेकी वजहसे बार बार खाँसी; गलेमें श्लेष्मा उठकर श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है और अन्तमें फिर खाँसनेपर श्लेष्मा निकलता है। क्षयकास; रोगीको खुसखुसी खाँसी।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वायुकी अत्यन्त प्रधानताके कारण गर्भस्रावका उपक्रम। आर्त्तव निकलने बाद कमरमें इतना भयानक दर्द हो जाता है, कि रोगिनी साँस नहीं छोड़ सकती।

गर्दन और पीठ।—गर्दन अकड़ना या गलेकी पेशीकी अकड़न (Stiff-Neck) या कोई भोथरी शलाका वेधी जा रही है। गर्दनकी पीठ वाली पेशीमें सुन्न जैसा दर्द। कमरमें एक ओरसे दूसरी ओरतक छेदनेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग।—बाएँ हाथकी कलाईमें संकोचनका दर्द। चलनेके समय वंक्षण सन्धि या पुट्ठे (Hip-joint) में और उसके बीचमें असह्य दर्द मालूम होना; पैरका तलवा सुन्नकी तरह मालूम होता है,—उस पर भार नहीं दे सकता। हमेशा जाड़ा मालूम होना। हाथ, पैर जानु और तलपेटमें बहुत अधिक शीत मालूम होना, गर्म घरमें और गर्म कपड़े पहने रहने पर भी बहुत जाड़ा मालूम होना।

स्नायु।—संध्याके समय इतनी कमजोरी और मिचली मालूम होती है, कि सोये सोये उठने पर उसको ऐसा मालूम होता है, मानो उसी समय गिरकर मर जायगा, बाध्य होकर सो जाना पड़ता है।

वृद्धि।—ठण्डी सूखी या निर्मल निर्मेघ वायुमें (कास्टि), उपशम—मुंह या रोगवाली जगह ठण्डे पानीसे धोने पर और जलीय तर हवामें (कास्टि)।

सम्बन्ध-सदृश।—ह्रास-वृद्धिके सम्बन्धमें कास्टिकमके सदृश और श्लेष्मा भरी डोरीकी तरह मलके सम्बन्धमें=ऐलो, आर्ज-नाइ, मार्क, पोडो, ऐसिड-सल्फकी तरह।

दोषघ्न।—कैम्फर, विनिगर।

तुलनीय ।—ऐकोन, ऐलोज, कैम्फर (विसूचिकाकी तरह उदरामय), क्रूप्रम, इपिक, नक्स, पल्स, सिपिया; विरेट्रम इत्यादि ।

ऐसेरमके बाद बिस्मथ, कास्टिकम, पलसेटिला और ऐसिड-सल्फका व्यवहार होता है ।

शक्ति ।—३ य दशमिक से ३० शक्ति (मध्यमिका) ।

ऐसक्लिपियम सिरियेका ।

(ASCLEPIAS SYRIACA OR CORNUTI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसकी जड़से मदर-टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्राव ; श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दीका बोखार ; शोथ ; वाधक या कष्ट-रजः ; सरका दर्द ; अजीर्ण ; पार्श्व-वेदना ; आमवात ; जरायुमें दर्द ; मूत्र-क्षार जनित विकार ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायुतन्तु, हृत्पिण्ड और मसाना (Kydney) में विकारकी वजहसे उदरी या शोथ रोग, कष्टरजः और पसीना तथा पेशाब आदिके बढ़नेकी अवस्थामें यह विशेष उपयोगी है ।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—वमन होने बाद ऐसा मालूम होता है, मानो एक धारदार सलाईसे एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक बेधा जा रहा है। ललाट-की त्वचा बहुत संकुचित मालूम होती है। पसीना रुकनेकी वजहसे माथेका स्नायुशूल और इसके बाद ही बढ़े हुए आपेक्षिक-गुरुत्व (increased specific gravity) मिला पेशाब होना ; मल-मूत्राशयमें अवस्थानकी वजहसे सरका दर्द ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—कष्टरजः (*Dysmenorrhœa*)—स्नानवीय, क्षणभर रहनेवाले प्रसवके दर्दकी तरह यंत्रणादायक (उदरी रोगाधिकारमें) और इसके बाद बहुत थोड़ा स्राव हुआ करता है ।

सार्वाङ्गिक।—उदरी (Ascites)—हृत्पिण्ड या मसानेकी बीमारीमें प्रतिचिप्त कारणकी वजहसे पैदा हुआ रोग, और लाल ज्वरके बाद इस दवा-का प्रयोग करनेपर पसीना और पेशाबकी मात्रा बढ़कर शोथ घट जाता है (ऐसिड-ऐसेट, ऐपोसाइन) उदरी रोगाधिकारमें रजोरोध।

सम्बन्ध।—तुलनीय,—सिलिसि, ब्रायो, कोलचि इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम।

ऐस्क्लीपियस ट्यूबरोसा।
(ASCLEPIAS TUBEROSA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस गाछके मूल अर्कसे मदर टिंचर तैयार होता।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—टांक पड़ना; दमा; पैत्तिक ज्वर; श्वासनाली प्रदाह; सर्दी; उपदंश; शूल; कास; अतिसार; आमाशय; सरका दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; आँखोंका प्रदाह; हृद्वेष्ट-प्रदाह; पार्श्व-शूल; वात; गण्डमाला दोष इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रस-प्रधान या वात-रोग-ग्रस्त धातु में यह उपयोगी है। ठण्डी तर हवामें रोग आदिका बढ़ना; कोना-कोनी भावसे अर्थात बाएँ अर्धाङ्ग और दाहिने निम्नाङ्ग या इसके विपरीतवाले दोनों अंगोंमें आक्रमण करनेवाला वातका दर्द। पेशियों अथवा सन्धियोंकी वात-वेदना; नुकीली सलाई घुसानेकी तरह,—इसके साथ ही घोर लाल रंगका और गर्म पेशाब तथा त्वचामें पसीना; तम्बाकू पीना सहन न होना; खाँसने पर ललाट और उदरमें दर्द मालूम होना; मलनेपर आराम मिलना; हैमन्तिक रक्तातिसार; वक्षमें उत्ताप मालूम होना; सूखी; स्वरभङ्ग पैदा करनेवाली और संघात-जनक श्वासकृच्छ्रता; स्वरतन्तुके आक्षेपकी वजहसे (Croupy) श्वास-प्रश्वासमें व्याघात और स्वरनालीके रुकनेकी वजहसे (Pleura) में तेज दर्द; सामनेकी ओर झुकनेपर आराम होनेवाला फेफड़े-का दर्द; वक्षके बाएँ पार्श्वमें सुई वेधनेकी तरह दर्द; वक्षको भेदकर दाहिनी ओर या बाएँ कन्धे तक फैल जाता है; फुसफुसवेष्टमें शलाका बेधने

की तरह दर्दवाला वहुव्यापक सर्दी रोग,—इसमें वचोस्थिके पीछे कतरनेकी तरह दर्द होता है ; वचोस्थिके पासवाले पँजरेके भीतरी प्रदेशमें स्पर्श-कातरता ; हृत्पिण्ड प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो कोई सुई बेध रहा है ; हृत्पिण्डमें संकोचन की वजहसे दर्द ; गर्दनके बाईं ओर अकड़नके साथ स्तन-ग्रन्थसे नीचेकी ओर फैलनेवाला दर्द ; बहुत सुस्तीके कारण चलनेकी शक्तिका न रहना और प्रबल ज्वराधिकारमें गर्म पसीना वगैरह कई ऐस्क्लिपियस ट्यूबरोसा के प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—मानसिक अवसाद और दुःखित भाव। स्मृति-शक्ति क्षीण, कोई विषय सोच नहीं सकता।

मस्तक।—खाँसने बाद ललाटमें दर्द मालूम होना (खाँसनेपर ऐसा मालूम हो मानो खोपड़ी फट जायगी=कैप्सि ; प्रत्येक बार खाँसनेपर सरमें दर्द पैदा हो जाता है=नेट्रम-म्यू ; खाँसनेपर माथेके पिछले भागमें दर्द मालूम होना=सलफर ; माथा झुकानेपर दर्द मालूम होना=हिपर)। दो एक बार ही धूम्रपानमें धुआँ खींचनेपर नशा हो जाता है और दृष्टि क्षीण हो जाती है। ललाटके पीछे जड़ता मालूम होनेके साथ ही साथ ऐसा मालूम होना, मानो माथा उड़ा जाता है। ललाट (Fore-head) और मूर्द्धादेशमें (Vertex) धीमा सर-दर्द ; शरीर या माथा हिलानेसे बढ़ना ;—सोनेबाद घटना। सवेरे नींद खुलनेपर सरमें दर्द, गर्म पानीसे दोनों पैर धोनेपर दर्द घट जाता है।

नाक।—सर्दी, पानीकी तरह स्राव और बार बार छींक (शुफ्रे, सैङ्गि-विन, सिपा, नेट्र-म्यू)।

मुख-विवर।—गाढ़ी लेईकी तरह पीली आभा लिये लेपसे ढकी जीभ, मुँहका स्वाद एकदम कड़वा और सड़ा (Putrid—जीभ पीली आभा लिये लेपसे ढकी और उसपर दाँतका दाग=मार्क-वाई, पीली आभा लिये लेप और लसदार=हाइड्रेस, सवेरे पीली आभा लिये लेपसे आवृत्ति=वावेंस ; सवेरे पीली लेपसे ढकी, जड़का भाग बहुत मोटा=मेनिस-पार्माम ; पीले रङ्गकी लेपसे ढकी=ओलियमयेक-ऐसेलाई)

पाकाशय और अंत्राशय।—मिचली और बार बार वमनकी चेष्टा। दस्त और कै, इसके साथ ही बहुत सुस्ती। सर्दीसे उत्पन्न (Catarrhal) रक्तातिसार रोग,—पीली और हरी आभा लिये माड़की तरह मल मानो आँतकी छालमें मिली हुई है। अत्यन्त बदबूदार, छोटी क्रिमि मिला गाढ़ा पीले रङ्गका मल—रातमें और जाड़ेके दिनोंमें वृद्धि या जब दिनमें गरमी और रातमें सर्दी मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो आँतोंमें आगकी लपटें जल रही हैं और मानो आँत बाहर निकल पड़ेगी। मलान्त्र (Rectum) और मलद्वारमें जलन और दर्द मालूम होना। भोजनके बाद पेट फूलना और तलपेटमें दर्द। पाखाना होनेके पहले आँतोंमें गड़गड़ाहट या पेट गड़गड़ाना (Rumbling) भयानक दर्द (ऐलो, एपिस, आइरिस, ऐसिड-म्यू, नेट्र-सल्फ, पल्स, थूजा,वेरैट)।

श्वासयंत्र।—श्वास-प्रश्वासके समय बार बार फेफड़ेके नीचे दर्द मालूम होता है। वक्षोस्थिके पासवाले प्रदेशमें पञ्जरेके भीतरी स्थानमें अत्यन्त स्पर्श-कातरता और दर्द। फेफड़ेमें दर्द,—सामने झुकनेसे उपशम होता है। घड़घड़ शब्दवाली खाँसी (न्यूमोनिया); इसके साथ ही वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द; रोगीको बहुत सुस्ती रहती है और चलनेकी शक्ति नहीं रहती। झुककर बैठनेसे तकलीफ घट जाती है। फुसफुस आदिकी वेष्टनीका प्रदाह (Pleurisy),—बहुत दर्द; सन्ध्याके आरम्भसे अन्ततक दर्द भरा (खासकर बाएं फेफड़ेके नीचे); श्वास-प्रश्वास, खाँसी सूखी, चण प्रकोपयुक्त (थोड़ी देर तक रहनेवाली) और तकलीफ देनेवाली; बहुत थोड़ा कफ निकलता है; झुकनेपर सब लक्षण घट जाते हैं। वक्षके भीतर दर्द;—बाएं स्तनसे तेजीसे नीचेकी ओर फैल जाता है। गर्दनका अगला भाग अकड़ा हुआ, इसके साथ ही ललाट और खोपड़ीमें (मूर्द्धा-देशमें) दर्द,—शरीर हिलानेसे वृद्धि। सोनेपर घटना; वक्षोस्थिके पीछेके स्थानपर भयानक तेज दर्द,—दीर्घ-निश्वास लेने या हाथ हिलानेपर बढ़ना। झुक जानेपर घटना। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचवाले अंशमें कतरनेकी तरह दर्द।

त्वचा और प्रत्यङ्ग।—रस-भरे दाने, फुन्सियां और पीव-भरे दाने समूचे शरीरमें निकल आते हैं। हाथ पैरोंमें वातका दर्द। वाताश्रित वेदना,—दाहिने अर्द्धाङ्ग और बाएँ निम्नाङ्गमें या इसके विपरीतवाले दोनो अंशपर हमला होनेपर=ऐगार, ऐपिस-टार्ट, ष्ट्रैमो—दाहिने अर्द्धाङ्ग और बाया

निम्नाङ्ग=ऐक्टा, ब्रोम; मिडोराइन, फास, ऐ-सल्फ), पेशिका या सन्धिवात (Articular) वात, दर्द सुई बेधनेकी तरह,—इसके साथ ही घोर लाल और गर्म पेशाब और पसीना निकलना। गर्दन अकड़ना (Stiff Neck),—बाईं ओर; बाईं ओर गलेका पिछला भाग अकड़ जाना।

सम्बन्ध।—सदृश-नेट्र-सल्फ, ब्राई, स्टेनम; ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, डालका।

शक्ति।—मदर टिंचर या मूल अर्कसे ६ ठीं शततमिक।

ऐसिमिना ट्राइलोबा।
(ASIMINA TRILOBA)

दूसरा नाम।—पेपया वल्गेरिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकाका एक तरहका पपीता। इसके पके, बिन पके फल, पत्ते, छाल और जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहका जखम; दूषित फोड़ा; अतिसार; ज्वर; आरक्त ज्वर; ऐंठन इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—गलेका जखम, बोखार, वमन, लाल रङ्गके उद्भेद, जिह्वामूल और-निम्न हनुके नीचेकी ग्रन्थियोंका फूलना और उदरामय वगैरह आरक्त ज्वरके लक्षण पैदा हो जाते हैं। बरफकी तरह ठण्डी चीजें खानेकी इच्छा, (फास, वेरेट)।

लक्षणावली।

मुख।—मुँहमें जखम; गाठोंका बढ़ना। अतिसार।

श्वास-यंत्र।—स्वर-भङ्ग, बात स्पष्ट नहीं कह सकता, बोलनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है (कार्बोवेज, हिपर, ऐसिड-नाई, फास) सामान्य सूखी खांसी। वक्षके ऊपरी देशमें अत्यन्त दर्द,—दाहिनी ओर बहुत दर्द, दाहिनी ओरकी अपेक्षा बाईं ओर अधिक।

त्वचा।—व्रण,—वस्त्र आदि खोलने पर खुजली आरम्भ हो जाती है। (रियुमेक्स)। ज्वर; बरफ आदि ठण्डी चीजें खानेकी इच्छा, प्यास।

सम्बन्ध।—सदृश—कैप्सिकम, बेलेडोना।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० दशमिक।

ऐस्पेरेगस आफिसिनेलिस।
(ASPARAGUS OFFICINALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तोंसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मूत्राशय;—मसाना और हृत्पिण्डपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। इसलिये, शोथ, हृत्पिण्डका अवसाद और वात का दर्द वगैरहमें इससे लाभ होता है। नयी सर्दी,—पतले सफेद आभा लिये श्लेष्माके साथ बार बार छींक; गलेसे गाढ़े लेईकी तरह श्लेष्माका स्राव, बार बार पेशाब और मूत्र मार्गमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द, पेशाब करने बाद जलन और ऐसा मालूम होना, कि लाल पेशाब निकल रहा है, पेशाब गदला;—पेशाबके बर्तनके नीचे तली चर्बीकी तरह लगी रहती है; मूत्राश्मरी (Gravel); शिश्न और योनिके बाहरी स्थान पर खुजली; वक्षमें जल सञ्चय; कलेजेकी धड़कन ऊपरसे दिखाई देती है; बैठनेके समय,—बेचैनी; इसके साथ ही शरीर हिलाने या सीढ़ीपर चढ़नेसे बढ़ना,—छातीमें दबाव मालूम होना; बायाँ कन्धा, बायां कण्ठतल और समूची बाईं बाँहमें दर्द और हमेशा गोदमें चढ़कर घूमनेकी बच्चोंकी इच्छा इसका प्रधान लक्षण है।

लक्षणावली।

मस्तक।—मस्तकमें गड़बड़ी।—भयानक सर्दी,—नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला सफेद आभा लिये श्लेष्माका लगातार स्राव हुआ करता है। गलेमें खाल उधड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है और खांसीके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा निकलता है (हाइड्रैस, ऐल्यूमिना, आर्जेण्ट-नाई, नेट्र-कार्ब, ऐस्टेकस-फ्लूवि)।

पेशाब।—बार बार पेशाबका वेग और मूत्रद्वारपर महीन सुई गड़ने की तरह दर्द मालूम होता है; पेशाब करने पर जलन और ऐसा मालूम होना कि और भी पेशाब होगा। पेशाब निर्मल होता है पर उसमें एक तरह की अद्भुत गन्ध रहती है। मूत्राशय प्रदाह,— खाँसनेके साथ ही पीब और श्लेष्मा निकलता है। अश्मरी पैदा होनेका लक्षण (Lithiasis अर्थात् जैसे विकारसे पथरी पैदा होती है—आर्टिका युरेन्स)। पेशाबके बर्त्तनमें चर्बीकी तरह तली लगी रहती है।

श्वास-यंत्र।—बार बार छींक और खांसीका आना तथा कफ निकालनेकी चेष्टा, परन्तु सहजमें ही वायुनलीसे छूट नहीं जाता है। खाँसीके प्रकोपमें,—रोगीको आसन छोड़कर उठकर खड़े हो जाना पड़ता है,—पहली बार के भोजनके बाद आराम हो जाती है। छातीमें दबाव मालूम होनेके साथ सवेरे खांसी और बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव। खांसते खाँसते ओकाई आ जाती है (ऐ-नाई. नेट्र-म्यू, लैक)। कण्ठमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा सञ्चित होता है,—वक्षमें लगातार श्लेष्माकी घड़घड़ाहट और कण्ठमें कर्कशता मालूम हुआ करती है। लिखनेके समय छातीमें दबाव मालूम होना; शरीर हिलाने, सीढ़ी चढ़नेके समय और कभी कभी रातमें (ओपि) श्वास-कच्छ्रता पैदा हो जाती है,—रोगी शय्यासे उठ बैठनेके लिये बाध्य होता है (आयोड)। पहली बार भोजनके बाद (ऐसाफिटिडा, नक्स-मस, फास) घटती है। वक्षगह्वरमें जगह जगह पर चिलक मारने (Shooting) की तरह दर्द,—विशेषकर बाएं पृष्ठ-फलकके नीचे (ब्राई. सिपि)।

हृत्पिण्ड।—बैठनेके समय कलेजा धड़कना (कार्बो-वेज, मैग-म्यू, फास, रास, स्पाइजि) बाएं कन्धेमें दर्दके साथ वृद्ध मनुष्योंकी हृत्पिण्डकी बीमारी। इसके साथ ही मूत्राशयमें विकारकी वजहसे श्वास-कच्छ्रता।

प्रत्यङ्ग।—पीठमें वातका दर्द—विशेष कर बाएं कन्धे और हाथ पैरोंमें, दोनों कन्धोंके बीचमें वातका दर्द (लोबेल-इन, लाइकोपो-वार्जि, वैरेट)। दाहिने ऊरु शिखरमें सन्धि टूटनेकी तरह या हाड़ खिसक जानेकी तरह (Dislocation) दर्द और उसी पैरमें लङ्गड़ापन। रातमें दोनों जङ्घाओंमें बेधने जैसा दर्द—और इसके बाद बैठने पर जानु-फलकके नीचे (Under patella) दर्द; बाएं ऊरुमें रगड़ खाने या चोट लगनेकी तरह दर्द—रोगीको चलने—खासकर सीढ़ी चढ़नेमें बहुत तकलीफ होती है। दाहिने पैरकी पोटलीकी पेशीमें बहुत तेज खींचनकी तरह दर्द—सवेरे नींद खुलनेपर और इस पैरके फैलानेपर दर्द; दोनों पोटलियोंमें ऐंठन (कैमो, क्यूप्रम, नैफेल, प्लम्ब, सिकेल, सिलि, कैम्फो)।

सार्वाङ्गिक।—उदरी या शोथ—चेहरा मलिन, मोमकी तरह उजला, (ऐसिड-ऐसेट) और फूला हुआ। उद्वेग और यन्त्रणा-व्यंजक मुखमण्डल। रातमें कलेजा धड़कना;—दूरसे दिखाई देता है। छातीमें पूर्णता मालूम होना; परिमाणमें थोड़ा, घासके रङ्गका और बदबूदार पेशाब (ऐसिड-ऐसेट, डिजि, ऐक्लिलप, सिरि, ऐपोसाइन, कैन)।

दोषघ्न।—ऐकोन, एपिस।

सम्बन्ध।—सदृश—डिजि, ऐसक्लिपियस, सिरि, आइजि, ऐसिड-ऐसेटिक, सार्सा, ऐपोसाइन-कैन, कानवेलेरिया इत्यादि।

शक्ति।—तृतीय दशमिक से ६ ठा दशमिक क्रम।

ऐस्पिडास्पर्मा कुइब्रेको।

(ASPIDOSPERMA QUEBRACO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ब्रेजिल देशके एक तरहके वृक्षसे मदर टिंचर तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बहुत तरहके दमा रोगमें इससे लाभ दिखाई देता है। क्योंकि यह श्वास-प्रश्वास बढ़ानेवाले केन्द्रकी क्रिया बढ़ा देता है और फेफड़ेके भीतरकी वायुमें अधिक परिमाणमें अम्लजान मिला देता है। किसी तरहका जोर लगाकर साँस लेनेका भाव इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कैल्की, कोका, आयोड, नक्स, फास, स्टैन)

सदृश।—ताजा कोला ; ऐमोन-कार्ब, कैल्के, स्टैन।

शक्ति।—प्रथम या द्वितीय दशमिक क्रम या विचूर्ण।

ऐस्टेकस फलूवियाटिलिस या केन्सर ऐस्टेकस।

(ASTACUS FLUVIATILIS OR CANCER ASTACUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहके केकड़ेसे इसका मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;— पित्तिका लक्षण ; शूल ; खाँसी ; अतिसार ; ज्वर ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; सविराम ज्वर ; कँवल ; यकृतकी बीमारी ; आमवात ; स्नायुशूल ; पाकाशयका विकार ; दाँतका दर्द ; अर्बुद।

उपयोगिता और आभास।—बहुत जाड़ा मालूम होना ; यकृत विकार और आमवात वगैरह रोगोंमें ऐस्टेकस विशेष लाभदायक है। फूली

हुई लसिका (Lymphatic) ग्रन्थिके साथ दुधिया खसड़ा रोग (Crusta Lactea) ; बच्चे और हड्डोंकी गलेकी गांठका बढ़ना ; यकृतको छूनेसे दर्द ; कँवल ; सफेद कोचड़की तरह मल ; भीतरी जाड़ा और हवा सहन न होना ; ओढ़ना उतारनेपर बढ़ना ; सरमें दर्द;—तमतमाया हुआ लाल चेहरा और भीतरी जाड़ेके साथ तेज बोखार ; शरीरमें जगह जगह सुरसुरी (Crawls) मालूम होना ; नवीन अर्बुद आदि। शराबियोंका क्षुद्र सन्निपात और दर्द वगैरह इसके कई प्रधान क्रिया-फल हैं।

लक्षणावली।

मस्तक ।—प्रबल छींक और माथेमें तेज दर्द (खाँसनेपर माथेमें तेज दर्द=ब्राई; कैप्सि; नेट्र-म्यू, सल्फ)। दूधिया उकौत—माथेमें फोड़ेपर पपड़ी जमती है,—इसके साथ ही ग्रन्थियोंका बढ़ना।

आंख ।—आँखकी योजकत्वचा लाल ; पीली आभा लिये (चेलिडो, फास, कैली)। पुतली फैली हुई। धुंधली दृष्टि। पढ़नेके समय पुस्तकमें जगह जगह कितने ही रङ्ग दिखाई देते हैं।

कान ।—दाहिने कानमें ऐसा मालूम होता है, मानो अन्य जातीय पदार्थ प्रवेशकर बहरापन पैदा कर रहे हैं। (मैङ्गनम)।

नाक ।—बार बार तेज छींक। रक्तस्राव,—छः सात दिनोंतक लगातार रक्तस्राव। चेहरा लाल और फूला हुआ। नाकसे शोणित-स्राव होनेबाद बहुत से लक्षणोंका घट जाना।

पाकाशय ।—किसी तरहका आयास या मिचली नहीं मौजूद रहे तथापि सब खाई हुई वस्तु कै हो जाती है ; भूख अच्छी रहती है ; वमन होते ही फिर भोजनकी प्रबल इच्छा ; पेटमें भार मालूम होना ; पेटके ऊपरी प्रदेशमें जलन और इसके बाद मलद्वारमें वेग मालूम होना ; अन्त्राशय—तलपेट फूला और उसमें दर्द और नाभीके चारों ओर भी दर्द मालूम होता है। ऐसा बोध होता है मानो किसीने मुट्ठीमें पकड़ लिया है, इसके बाद हो पाखाना लग आता है। द्वादश अङ्गुलि नामवाली आँतमें (Duodenum) बहुत तेज दर्द, यकृतमें प्रदाह और स्पर्श सहन न होना ; बच्चोंका यकृत और पाण्डुरोग (Jaundice), प्लीहा प्रदेशमें दबाव मालूम होना। आंतोंमें शूलकी तरह दर्द,—इसके साथ ही मरोड़ और उठनेकी शक्तिका न रहना—टहलनेसे हवि।

श्वास-यंत्र।—वायुनलीके निम्न देशमें सुरसुरी या खुजलाहटकी वजहसे खांसी पैदा हो जाती है। (फास, वायुनलीके ऊपरी अंशमें खुजलाहटसे खांसी=कास्टि, हिपर), वायुनली और वायुनली भुजमें बहुत ज्यादा परिमाण में श्लेष्मा एकत्र हो जाता है और वह गोंदकी तरह चिपक जाता है, सहजमें ही निकलता नहीं है। सवेरे खांसी आती है और उसके द्वारा वायुनलीभुजमें श्लेष्मा उठता है और वक्षके भीतरकी त्वचा क्षय हुई-सी मालूम होती है; श्लेष्माका रङ्ग कुछ पीली आभा लिये। कफका स्वाद कुछ मीठा। खून मिला कफ और यक्ष्मा-कास रोग। टहलनेके समय स्थिर होकर खड़े होनेपर खांसी का बढ़ना (इग्ने)।

त्वचा।—पीली या पाण्डु; यकृतमें स्पर्श असहिष्णुता;—और मिट्टीके रङ्गका पाखाना (हिपर; आयोड); पेशाबका रङ्ग सुनहला (कार्डिया-मेसिफिलाइन)। पेशाब लार, आंसू और नाकसे निकला हुआ श्लेष्मा और रक्ताम्बु सभी पित्तमय। मल एकदम पित्त वर्जित और प्रायः सफेद आभा लिये और भूरे रङ्गका। शरीरमें सब जगह पीले रङ्गका आमवात (Urticaria=आर्टिका इयु) खुजलानेवाला दुधिया उकौता (Crusta Lactea) इसके साथ ही ग्रन्थियोंका बढ़ना। गर्दनकी गाँठका फूलना।

ज्वर।—भीतरी जाड़ा, हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती; शीतकी वजहसे—शरीरका कपड़ा उतारने पर बढ़ना (नक्स, हेलोड, कार्बो-वेज, लोरो, लाइको, सिपिया, वेरेट्रम)। तमतमाया हुआ और लाल चेहरा, सरमें दर्द इसके साथ ही तेज बोखार। (बेल, नक्स)।

सम्बन्ध।—सदृश—एपिस, मार्क, चेलिडो, आर्टिका, हेलोडर्मा, होमेरस, नक्स।

दोषघ्न।—ऐकोन।

शक्ति।—२ री दशमिक से ३० शततमिक क्रम।

ऐस्टिरियस रूबेन्स।
(ASTERIAS RUBENS)
or
(Uraster Rubens)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहकी मछलीसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—मुख-व्रण (मुंहासा); संन्यास; कर्कटीया जखम; कब्जियत; आक्षेप; मृगी; सरमें दर्द; मूर्च्छावायु; लार बहना; जीभकी सूजन और सुन्न हो जाना; जखम; जरायुकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—प्रमेह-विषवाला विकृत धातु, शिथिल मांस पेशी, श्लेष्मा-प्रधान और उत्तेजना-प्रवण प्रकृतिवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है। स्नायविक विकारकी वजहसे स्नायुशूल, ताण्डव रोग और गुल्मवायु रोग वगैरह इसके निर्देशक लक्षण हैं। कर्कट रोगमें (Cancer), विशेषकर स्त्रियोंके स्तनमें होनेपर, इससे विशेष लाभ हुआ करता है। स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही प्रबल रमणेच्छा रहती है।

लक्षणावली।

मन।—उत्तेजनाशील या चिड़चिड़ा स्वभाव; किसी तरहका मानसिक आवेग पैदा होनेपर उत्तेजित हो उठता है। प्रतिवाद बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता (ऐनाक्, कोनायम, अरम-म्यू ; नेझ, कैमो, हेलोनि, सिना)।

मस्तक।—शिरमें उत्ताप, मानो माथा आग-भरी भाफसे घिरा हुआ है, माथेमें अधिक रक्त-सञ्चय (ऐको, बेल, लैके, नक्स, ओपि)। संन्यास या सर्द-गर्मी (Apoplexy-मुँह लाल = बेल; गाढ़ा लाल रङ्गका चेहरा = ओपि), नाड़ी अनमनीय, पुष्ट और उसकी गति तेज। सरमें चक्कर आना,—क्षणभरके लिये होनेवाला,—चलनेके समय दोनों पैरोंका सुन्न मालूम होना (दोनों पैर मानो शून्यमें उड़ रहे हैं, ऐसा मालूम होना = नक्स-मस)। रातमें सोते सोते शिरमें बिजलीका धक्का लगने जैसा मालूम होना और इसी वजहसे नींद खुल जाना। संन्यास रोगकी आशङ्का (आर्जेण्ट-मेट, एपिस; फेरम-फास)। बहुत कब्जियतके साथ शिरमें अधिक रक्त-सञ्चय हो जाना। ललाटमें भयानक दबावकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो दोनो आँखें पीसी जा रही हैं। माथेके सभी अस्थिफलक बहुत दर्द भरे रहते हैं। सरके दर्दका लक्षण सवेरेके वक्त पैदा होता है, दिनको नहीं रहता और शामको फिर पैदा हो जाता है; दोनों आँखें मानो पीछेकी ओर खिंच रही हैं—ऐसा मालूम होना (हिप, ओलियेन, वारिस), कानके छेदमें ऐसा मालूम होता है, मानो बिजलीकी सलाई बेधी जा रही है, कानमें ढन ढन शब्द (बैराइ, पैल्स)।

वक्षस्थल।—स्तनमें कर्कट रोग (Cancer of the breasts-रातमें स्तनमें तेज अस्त्राघातकी तरह दर्द ; रोगवाले स्तनमें बहुत कसावट और खींचन मालूम होना ; स्तन फूले, जैसे ऋतुके पहले हो जाया करते हैं ; स्तन मानो भीतरकी ओर खिंच रहे हैं और ऐसा मालूम होता है, मानो स्तन गोल कड़े मांस-पिण्डसे भरे हुए हैं। इसके साथ ही रजःरोध (कोनायम ; स्तन मानो कड़े मांस पिण्डसे भरे हैं पर ठीक निश्चय नहीं होता कि कर्कट रोग है या नहीं=ब्राई ; सूजन एक भावसे रहनेपर=कोल्के-आयोड)। एक स्तनके ऊपर एक लाल फुन्सी हो गयी और फिर गल गयी, वही जखम क्रमसे समूचे स्तनमें फैल जाता है, उससे बदबू आती है, जखमके किनारे उठे रहते हैं, फुन्सियोंका आकार (क्षुद्र स्तनाकार) कड़ा और बाहरकी ओर घूमा रहता है, और जखमकी तलीमें हलके लाल रङ्गका मासांकुर (Granulation) रहता है। बायें वक्ष और बायें हाथमें स्नायुशूल। बायां स्तन ऐसा मालूम होता है, कि पीछेकी ओर खिंच रहा है और यह दर्द बायें कोषसे कनिष्ठिका अँगुली तक फैल जाता है। बायें हाथकी अँगुली सुन्न हो जाती है। बगलकी (Axillary) गांठ सब कड़ी और पिण्डमय हो जाती हैं।

स्नायवीय लक्षण।—हाड़ खिसकना, अर्थात चलते समय हड्डी खिसक जाती है (ऐल्यू, ऐसेराम, बेल, कास्टि) ; पैरकी पेशियाँ इच्छानुसार काम नहीं करतीं ; अर्थात हाथ पैर इच्छानुसार घुमाये फिराये नहीं जा सकते। (ऐसेटम, ऐल्यू, जेलस, ब्राई)। अपस्मार या मृगी रोग (Epilepsy), आक्रमणके चार पाँच दिन पहलेसे पेशियोंका स्पन्दन आरम्भ हो जाता है।

मलान्त्र।—मलका कड़ापन,—दुरारोग्य (प्लम्बम—ऐसेट),—निष्फल वेग=(ऐनाक),—मल कड़ा और गोल गाँठ गाँठ (ओपि, ब्राई ; मेषके मलकी तरह छोटी गांठ गांठ=मेग-म्यू, कास्टि) उदरामय,—मल पानीकी तरह, भूरे रङ्गका, वेगवान—तेज धार में सोतेके आकारमें निकलता है (क्रोटन—टिग, थ्रैटि, गैम्बो, जैट्रोफा, थूजा)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही प्रबल रमणेच्छा। जरायुका आवर्त्तन या घूम जाना अथवा स्पन्दन। जरायुसे मानो कुछ नीचेकी ओर धक्का दे रहा है। यन्त्र आदिके दबावकी वजहसे चलनेमें तलपेटमें तकलीफ ; मानो कभी कभी बाहर निकल पड़ेगा। योनि-मार्ग एकदम रस—सिक्त रहता

है, उससे रोगिनीको आराम मिलता है। अन्त्रशूल आदिकी यन्त्रणा; परन्तु रक्तस्राव होने बाद तकलीफ घट जाती है (लेके, सिरियम-आक्सैल)। दोनों स्तनोंके मध्यभागमें छोटे खसड़ेकी तरह (Miliary) उद्भेद।

प्रत्यङ्ग आदि और त्वचा।—शरीरकी त्वचा लचीली और स्थिति-स्थापक नहीं रहती। जगह जगह पर खुजली पैदा हो जाती है। जख्मसे सड़ी गन्ध-भरा क्लेद निकलता है। बगलकी गांठें (Axillary glands) फूली और कड़ी हो जाती हैं। हाथके अँगूठेसे कन्धे तक दर्द रहता है। केहुनी (Elbow), प्रदेशमें अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द। बायें पैरके अँगूठेके कुछ ऊपर वातका दर्द, यह अंश लाल और गर्म मालूम होता है; जगह जगहपर सूखी छाल या पपड़ी जमे जखम प्रकट हो जाते हैं।

वृद्धि।—शरीरके बायें पार्श्वमें; काफी पीनेपर; रातमें जलीय वायुमें।

सम्बन्ध।—सदृश—प्लम्ब-ऐसेट, कोनायम, कार्बो, आर्स, कार्डुयस; संगी रोगोंमें—बेल, फेलेके। सलफर—रमणेच्छा आदिकी सम्बन्धमें=म्यूरेक्स सिपिया।

दोषघ्न।—प्लम्बम।

शक्ति।—१ म दशमिक से २०० क्रम तक।

ऐस्ट्रागेलस।

(ASTRAGALUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तेके रससे मदर-टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—शून्यता या खालीपन मालूम होना। मुँहकी हड्डियोंमें दर्द; सिर दर्द।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक कम्प,—अर्थात ऐसा मालूम होता है, मानो सब स्नायु काँप रहे हैं (ऐसिड-सल्फ, इग्ने, ऐक्टिया, थाइरायडिन)। नींदमें छटपटाता है और कलहके सपने देखता है (ऐथ्यु,

क्राष्टि, कोनायम, लैके, नेट्र-मर, निकोलम, फ़ास, सेलिन)। दोनों हनुकी हड्डी में (मेग-कार्ब, स्टैट, कार्बो-एन, स्पाइजि) और चबानेवाली पेशीमें दर्द मालूम होना।

सम्बन्ध।—ऐसिड-सल्फ, काष्टि, कार्बो-ऐन।

शक्ति।—मूल अर्क से ३ रा दशमिक क्रम।

ऐथामाण्टा।

(ATHAMANTA OREOSELINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मस्तककी जड़ता; सर-दर्द; अजीर्ण; सरमें चक्कर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सरमें चक्कर आना; कान बन्द हो जाना; मुँह-बेस्वाद और उसमें लार सञ्चय और ज्वराधिकारमें हाथ पैर बरफ की तरह ठण्डे वगैरह कितने ही लक्षण पैदा हो जाया करते हैं।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, सोनेसे उपशम (कैल्के-फास, क्यूप्रम, फेलैण्ड्रियम) शरीर हिलाने और चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके पीछेकी ओरसे एक तरहकी भाफने निकल कर उसे बेहोश कर दिया।

कान।—मालूम होता है, मानो रूईसे कान बन्द कर दिया गया है।

पाकाशय।—मुँह बेस्वाद, जितनी ही वार खाता है, उतनी ही वार यह भाव पैदा हो जाता है। रातमें खानेके पहले बहुत भूख लगती है और मुंहका स्वाद तीता और तीती ही लार एकत्र होती है। डकार पूरी पूरी नहीं आती, गले तक आकर गायब हो जाती है।

प्रत्यङ्ग।—चलनेके समय उसमें अकड़न मालूम होती है,—मानो उसमें चोट पहुँची हो। हाथ पैर बरफकी तरह ठण्डे और रोगीका समूचा शरीर कांपा करता है और उसे इतनी सुस्ती मालूम होती है, कि वह बिना सोये नहीं रह सकता।

सार्वाङ्गिक लक्षण।—रोगीको मानसिक और शारीरिक सुस्ती मालूम होती है, पर कुछ भी परिश्रम और बलका प्रयोग करने पर भी उसे मालूम हो जाता है, कि उसकी कमजोरी केवल कल्पना-सम्भूत है। शरीरके कितने ही अंगोंमें जलन मालूम होती है पर जिन अंगोंमें जलन होती है, वहाँ हाथ रखनेपर जलन घट जाती है।

सम्बन्ध।—सट्टम=इयूजा।

शक्ति।—१ ले दशमिक से ६ ठा क्रम।

ऐट्रोपिनम।

(ATROPINUM)

दूसरानाम।—ऐट्रोपिन। बेलेडोनाका एक तरहका क्षार।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल रूपमें क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—आँखकी बीमारियाँ; संन्यास; पक्षाघात; दृष्टि-विभ्रम; पाकाशयका जखम; क्लोम-प्रदाह; गर्दन अकड़ना।

उपयोगिता और आभास।—यद्यपि यह बेलेडोनासे ही तैयार होता है, परन्तु इसकी क्रिया एक नहीं है। यह अनुभूति-विधायक स्नायुमें चेतनाकी अधिकता पैदा कर देता है। आँखके ऊपर ही इसकी क्रिया अधिक दिखाई देती है। ऐट्रोपिनके रोगियोंको सब चीजें बड़ी दिखाई देती हैं (विपरीत-ग्लैटिना); ऐसा मालूम होता है मानो एक-मैले-पर्देके भीतरसे देख रहा है, और नाना प्रकारकी भ्रम-पूर्ण चीजें देखता है; उसे दृष्टि-विभ्रम पैदा हो जाता है। बायें अङ्गकी अपेक्षा दाहिने अङ्गपर ही इसकी क्रिया अधिक होती है, इसके द्वारा पुराना गलेका अकड़न रोग आराम हो जाया करता है।

सम्बन्ध।—यह मस्कॅरिन और ओपियमका दोषघ्न है। ओपियम और फाइसोस्टिग्मा इसका विष-दोष नष्ट करता है।

शक्ति।—६ से ३० क्रम तक व्यवहारमें आता है।

आरेण्टियम ।
(AURANTIUM.)

दूसरा नाम ।—साइट्रस-वलगेरिस, कमला लेबू ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कमला नेबूकी छालसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—श्वासरोध भाव, वेहोश होने जैसा मालूम होना ; सर दर्द ; स्नायुशूल ; कलेजा धड़कना ; बहुत रजःस्राव वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३x क्रम तक व्यवहृत होता है ।

आरम आर्सेनिकम ।
(AURUM ARSENICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सोना और संखिया को मिलाकर यह दवा तैयार होती है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—रक्ताल्पता ; कर्कटोया जखम ; रक्ताण्डु ; उपदंश ; सरका दर्द ; क्षय-कास ।

शक्ति ।—६ ठी और ३० वीं ।

आरम ब्रोमेटम ।
(AURUM BROMATUM)

दूसरा नाम ।—ब्रोमाइड आव गोल्ड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सर दर्द,—अधकपारीका दर्द, रातमें डर मालूम होना ; सपनेमें घूमना वगैरह स्नायु-सम्बन्धी बीमारियाँ और

हृत्पिण्डका फैलना, सारे शरीरको शीतलताके साथ बेहोश हो जाना, हृद्नाड़ी, बहुत कलेजा धड़कना, चेहरा लाल वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—६ दशमिकसे २०० शततमिक तक।

आरम आयोडेटम।

(AURUM IODATUM)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आव गोल्ड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—पुराना हृद्वेष्ट-प्रदाह,—अर्थात् हृत्पिण्डकी वेष्टनीका प्रदाह (Pericarditis = हृद्वेष्ट = Pericardium और Itis = प्रदाह—व्राई, मार्क-सोल, आर्स) हृद्पिण्डकी मुखावरक झिल्ली का (Valves) विकार; सब धमनियोंसे सूजन और मोटाई, पीनस, दुष्ट-रोग (Lupus—गले आदिमें एक तरहका विषैला जखम); अस्थि-प्रदाह, उपदंश और वृद्ध मनुष्योंका पक्षाघात; डिम्बाधारमें कोषकी तरह अर्बुद पैदा होना; जरायुकी पेशीमें टेढ़ापन वगैरह शारीरिक विकार आदिमें और वृद्धोंकी पक्षाघातकी तरह अङ्ग प्रत्यङ्ग आदिकी कार्यक्षमतामें इससे विशेष लाभ दिखाई देता है।

शक्ति।—२ रे से ६ ठों दशमिक विचूर्ण

अरम मेटालिकम।

(AURUM METALLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—खूब महीन सोनेके वर्कका चूर्ण बनाकर उससे ६ठें क्रम तक विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार किया जाता है।

उपयोगिता।—रक्त-प्रधान धातु; अस्थिर; उत्कण्ठापूर्ण; वृद्ध-व्यक्ति; स्थूलकाय; जीवनसे वितृष्णा; पारा और उपदंश विषसे जर्जरित; खूब दुबला शरीरवाला बालक; निस्तेज; आत्महत्याकी इच्छा; गहरे विषादसे भरा; शोक, निराश प्रणय वगैरह कारणोंसे उत्पन्न रोग या धातुमें उपयोगी है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक प्रमाणित हुआ है:—शराब पीनेका दुष्परिणाम ; रजोरोध ; बदबूदार श्वास ; हृद्-शूल ; दमा ; अस्थि-विकार ; स्थूलता ; विषाद ; कानकी बीमारी ; विसर्प ; आँखकी बहुत सी बीमारियाँ ; ज्वर ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; अर्श ; अण्डकोषमें जल-सञ्चय ; कामल ; श्वेत प्रदर ; गति-शक्ति देनेवाले यन्त्रोंकी बहुत सी बीमारियाँ ; पाराका विकार ; नाककी सर्दी ; रातमें भय ; नकसीर ; विषाद ; पक्षाघात ; यक्ष्माकास ; धीरे धीरे दुबला होते जानेवाला बच्चा ; गण्डमाला ; सूंघनेकी शक्तिका विकार ; उपदंश ; बच्चेका अण्डकोष छोटा होते जाना या उसमें पूर्णता न प्राप्त होना ; जीभके ऊपर गुटिका (दाना) ; जरायुका कड़ापन ; अर्बुद ; सरमें चक्कर आना ; दृष्टिमें व्याघात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरके रक्त, हड्डी और स्नायु वगैरहपर पारा या उपदंश विष जैसा विकार पैदा कर देता है, सोना भी ठीक वैसा ही विकार पैदा कर देता है, उपदंश वगैरहमें रोगीका मन एकदम विषाद युक्त, निराशा पूर्ण रहता है और उसकी इच्छा आत्महत्या कर लेनेकी होती है—ठीक वैसे ही कई मानसिक लक्षण आरम मैटालिकमके सर्वश्रेष्ठ निर्णायक लक्षण हैं । पारा और उपदंश विषसे दूषित व्यक्तिकी हड्डीमें नाना प्रकारके विकार पैदा हो जाते हैं, सभी तकलीफें रातमें बढ़ जाया करती हैं और रोगीको बेचैन कर डालती हैं—उपदंश विषसे तैयार की हुई सिफिलिनम दवाके लक्षण भी रातमें ही बढ़ते हैं । इसका एक प्रकृतिगत लक्षण यह है और इसमें आश्चर्य का विषय यह है, कि स्वर्णसे पैदा हुई यन्त्रणाएँ भी रोगीको रातमें ही इतनी बेचैन बना डालती हैं कि वह आत्महत्या कर अपनी असीम यन्त्रणासे छुटकारा पाना चाहता है । पारा और उपदंश विष आदिके गौण (Secondary) या आनुसङ्गिक लक्षणादिमें आरम बहुत लाभदायक है। देखने, सुनने, सूँघने स्वाद लेने सभी लक्षण बहुत तीक्ष्ण रहते हैं । आरमके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) अत्यन्त विषाद, आत्महत्या करनेकी इच्छा प्रकट करता है,—अधिकांश स्थानोंमें शिराओंमें रक्तकी अधिकता पैदा हो जाती है और कामोन्मादका संयोग रहा करता है । कभी कभी एकाएक कुछ आनन्द और स्फूर्ति रोगी प्रकट करता है, परन्तु अधिकांश समय ही उसमें गहरे विषादका भाव दिखाई देता है (२) यन्त्रणा और शीत बिलकुल ही सहन नहीं होता (३) कभी अरुचि और कभी कभी राक्षसकी तरह भूख दिखाई देती है (४)

सरमें बहुत प्रचण्ड दर्द होता है,—रक्त-सञ्चयकी अधिकताकी वजहसे आँखोंमें चकचौंधी पैदा हो जाती है ; चेहरा लाल हो जाता है और कर्णेन्द्रियमें बहुत उत्तेजना दिखाई देती है। (५) आँखोंके चारों ओर अस्थिगत वेदना, ऊपरसे नीचे और आँखके गोलेमें फैल जाती है,—ठण्डे प्रयोगसे घटती है। (६) दाँत की जड़में जखम या स्पर्श असहिष्णुता न रहने पर भी लार बहती है। मुँहसे सड़े पनीरकी तरह गन्ध निकलती है—विशेषकर बालिकाओंके यौवनारम्भके समय (७) नाकसे बदबूदार खून मिला और पीवकी तरह स्राव, सड़ी गन्ध निकलना और हड्डीमें बेधनेकी तरह दर्द। (८) चुचुकास्थिके जखम रोगमें ; कानके बाहरी छेद पीव भरे दिखाई देते हैं। पुट्ठेकी गाँठें फूल जाती हैं और कड़ी पड़ जाती हैं ; पुट्ठेसे उसके भीतर तक खींचनकी तरह दर्द रहता है। अण्डकोषकी पुरानी सूजन और कड़ापन, गर्दनकी ग्रन्थियाँ सब कड़ी और फूली ;—छूनेसे बढ़ना। (९) माथा और वक्षमें रक्त-सञ्चयकी अधिकताके साथ ही जोर जोरसे कलेजा धड़कना, रोगी बहुत कातर हो पड़ता है, उसके हाथ पैर ठण्डे मालूम होते हैं और नाड़ी क्षीण, तेज और अनियमित गति धारण करती है। (१०) वक्षमें रक्त-सञ्चयकी अधिकताकी वजहसे श्वास रोग (Asthma),—रोगी अस्थिरता और असहिष्णुता प्रकट करता है ; हृत्प्रदेशमें रह रह कर चौंका देनेवाला भाव और चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है; रोगी लगातार इधर उधर कर अपनी यन्त्रणाकी अधिकता प्रकट करता है। और किसी तरह भी एक स्थानपर स्थिर नहीं रह सकता है। (११) पाकाशय और अन्त्राशयमें दर्द,—इसके साथ ही हाथ पैरमें शीतलता। (१२) पेशाब मठाकी तरह सफेद दिखाई देता है, तुरन्त सड़ जाता है, झालकी तरह गन्ध रहती है और जितना जलीय पदार्थ पीता है, पेशाब उससे कहीं अधिक होता है। (१३) जरायु भ्रंश और जरायुका कड़ापन तथा सूजन। (१४) योनिमें जलन और खुजलीकी वजहसे अस्वाभाविक उपायोंसे खुजली मिटाने की चेष्टा करती है ; जननेन्द्रियमें जगह जगह पर स्पर्श सहन नहीं होता।

लक्षणावली।

मन।—जीवनसे विहृष्णा ; हमेशा आत्महत्याकी चेष्टा और परामर्श (नैफा ; आत्महत्या करनेकी इच्छा, परन्तु मरनेसे भय मालूम होता है=आर्स, नक्स)। गहरा विषाद, सभी विषयोंमें घृणा और कलह प्रिय। जीवन एक-भार सा मालूम होता है (सभी रोगोंमें)। अस्वाच्छन्द भाव-युक्त, व्यस्त ; मानसिक

और शारीरिक परिश्रम अच्छा मालूम होता है ; सभी काम जल्दी जल्दी करनेकी इच्छा,—विलम्ब असह्य (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाइ, कैनाबिस-इन, कैमो, मिडोराइन, नक्स-वोम)। शोक, निराश-प्रणय, डर, क्रोध, प्रतिवाद, मर्म-पीड़ा, विरक्ति, मनका क्रोध मनमें ही दबा रखना (स्टैफि) वगैरह मानसिक उद्वेगकी वजहसे बीमारी,—(मृत्युकी आकांक्षा और चिन्ताके साथ निराश प्रणयकी वजहसे बीमारियाँ = कैल-की फास, ऐक्टिया, हायो, इग्ने, लैके ; शोककी वजहसे = कास्टि, कोलचि, इग्ने, नैट्र-म्यू, फास, प्लैट, स्टैफ ;—मनका क्रोध मन ही में दबा रखनेके कारण = लाइको, नैट्र-म्यू, इग्ने, स्टैफ, विरेट, सिपि ;—डरकी वजहसे = जेलसि, हाइड्रोफोब, हाइपिरि, ओपि, ऐसिड-फास ; किसीकी बात सहन नहीं होती ; अभिमानी ; सामान्य प्रतिवादसे भी क्रोध आ जाना (ऐनाक, ऐस्टिरियस, अरम-म्यू-नेट्र, कैसो, सिना, काकुलस, कोनायम, फ़ेरम, हेलोनियस, लाइको)—दिनोंदिन क्षय होनेवाला शिशु,—उत्साहहीन, उद्यमहीन, स्मरण शक्ति दुर्बल, बालकोंमें जैसा आनन्द और फुर्ती रहती है, वैसी न रहना ; अपुष्ट अण्डकोष (आयोड); समाजमें जानेसे भय—लोगोंके पास जाना नहीं चाहता। जवाबकी राह देखे बिना ही जल्दी जल्दी सवाल किया करता है। रातके समय भयानक प्रलापयुक्त विकार और भ्रम देखना (Hallucination), मानो कुत्ता आ रहा है, मानो दीवारपर किसीका हाथ है। दरवाजे पर थोड़ी भी आवाज हुई कि डर जाता है। समझता है कि वह इस पृथ्वीके अयोग्य है, वह कभी किसी काममें सफल नहीं हो सकता। दर्द एक स्थानसे दूसरे स्थानपर घूमा करता है (आर्जेण्ट, कैल-के, फास, आर्स, जेलसि, टैबे)। अकेला नहीं रह सकता। "पुरुषोंके यकृत रोगमें और स्त्रियोंके जरायु सम्बन्धी रोगमें हमेशा आत्महत्याकी चिन्ता दिखाई देती है"—डा० नैश।

मस्तक।—सरमें दर्दके साथ दुःखित भाव, बोलनेसे अनिच्छुक, सामान्य मानसिक परिश्रमसे ही सर दर्द, केश उड़ जाना (खासकर उपदंश और पारा दोषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंका), सरमें भार मालूम होना और कानमें गुन गुन शब्द (बेल, कास्टि, ग्रैफा, नक्स, पल्स, सलफर),—घरके बाहरकी हवा खानेके समय नहीं रहता, पर लौट कर घर आते ही फिर आरम्भ हो जाता है। ललाटमें भयानक दर्दके साथ सरमें चक्कर आना,—माथेके किसी एकपार्श्वमें आँख तक फैल जानेवाला धीमापर बार बार चोट पहुँचा देनेकी तरह दर्द, दोनो भवोंके बीचके प्रदेशमें और नासिका मूल (नाककी जड़) में

पकको तरह दर्द। अधकपारी या शिराशूल। मांसमें किसी एक पोरकी आँखतक फैलनेवाला धीमा और बार बार धक्का देनेकी तरह दर्द।

आंख।—अर्द्ध-दृष्टि (Hemiopia)—सभी चीजोंका सिर्फ आधा भाग दिखाई देता है (केवल दाहिना आधा भाग दिखाई देता है=कास्टी; बायाँ आधा भाग=लिथिया-कार्ब; ऊपरी या निचला भाग=ऑरम-म्यू)। बहुत अधिक रोशनीका भय (Photophobia=लिलियम, बेल)। चीजका आधा भाग दिखाई देता है और दूसरा आधा अन्धेरेमें ढका दिखाई देता है। पलकें लाल; उनमें पीव-सञ्चय; डङ्क मारने या सुई बेधनेकी तरह दर्द (हिपिस) और खुजलाहट; सवेरे आँखें सट जाती हैं (ऐलू, कैमो, गुफे, ग्रेफि-कार्ब, लाइको, मार्क, पल्स, रास, स्टैफ)। पलकके केश झड़ जाते हैं। दो देखना (Diplopia) (बेल, हायो, नेट्र-म्यू, ओलियेण्डर)। आँखकी पुतली लाल और मांस-भरी हो जानेपर धीरे धीरे स्वच्छावरक झिल्ली (Cornia) में जखम हो जाता है। उसमें भीतरसे बाहरकी ओर पीसनेकी तरह दर्द मालूम होता है; दबानेसे बढ़ना।

नाक।—पूतिनस्य (नकसीर) या पीनस रोग,—बहुत बदबूदार पीव का स्राव और ललाटमें भयानक दर्द मालूम होना। सर्दी,—गाढ़ा अण्डेके लालकी तरह श्लेष्माका स्राव और बार बार छींक (युफ्रे. साइक्ल; आर्स)। नासास्थिमें जखम,—दाहिने पार्श्वकी नासास्थिमें और उसके साथ लगे हनुतक दर्दका फैलना और स्पर्श असहिष्णुता। बाईं नासास्थिके भीतर बेधनेकी तरह दर्द,—जो हनुतक फैल जाता है, सभी तकलीफें रातके समय बढ़ जाती हैं। भयानक सड़ी गन्ध निकलती है।

कान।—कानसे स्राव या कानसे बदबूदार पीव (Otorrhœa), कानमें बहुत अधिक गुनगुन शब्द, निर्मल वायु सेवनके समय ऐसा बिलकुल नहीं होता परन्तु घरमें प्रवेश करते ही फिर आरम्भ हो जाता है। कानके भीतरकी मेस्टायड अस्थिमें जखम (Caries of Mastoid), उसमें इतना भयङ्कर दर्द होता है, कि रोगी बेचैन हो पड़ता है।

मुखमण्डल और मुखविवर।—मुँहकी सभी हड्डियोंका प्रदाह; गण्डास्थिका जखम, छेदने, बेधने, जलन करने या सुई बेधनेकी तरह दर्द,—रातमें इस रोगका बहुत बढ़ जाना। मुँहसे भयानक बदबू निकला करती

है । बालिकाओंके यौवनमें पदार्पणके समय (Puberty) मुंहसे एक तरहकी सड़ी गन्ध आया करती है । चेहरा फूला तमतमाया (नैट्र-म्यू),—मानसिक उत्तेजना या परिश्रमसे बढ़ना ; नीली आभा लिये चेहरा । निगलनेके समय गलेमें सुई वेधनेकी तरह दर्द (हिपर, ऐसिड-नाई, डलिकस) ; कर्णमूलग्रन्थि (Parotids) में बहुत दर्द और उसमें स्पर्श सहन न होना । तालुकी हड्डीमें जखम—बहुत बदबू निकलती है ।

श्वास-यन्त्र और हृत्पिण्ड ।—बहुत श्वास-कृच्छ्रता और रातमें श्वास-प्रश्वासमें व्याघात । बार बार लम्बी साँस लेना पर उससे भी उसकी तृप्ति नहीं होती । सांस लेनेके समय वक्षमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होना । कभी कभी हृत्पिण्डकी गति दो तीन मिनटतक रुकी रहती है और इसके बाद ही प्रबल वेगसे उछलनेकी तरह चलना आरम्भ हो जाता है । इसके साथ ही उदरोर्द्ध प्रदेशमें सुस्ती मालूम होना (सिपिया ; कभी कभी हृत्पिण्ड उछलकर पंजरेमें आघात करता है) । बहुत तेज हृद्स्पन्दन, इसके साथ ही उद्वेग तथा शारीरिक परिश्रम करनेपर माथा और वक्षमें अधिक रक्त-सञ्चय हो जाना—हृत्पिण्डकी गति क्षीण, तेज और अनियमित और गर्दनके बगलकी (Carotid) शङ्खदेशीय या कनपटीकी (Temporal) पार्श्वकी धमनीकी गति स्पष्ट मालूम होती है (बेल, ग्लोनोइन) । वक्षमें रक्त-सञ्चय अधिक हो जानेके कारण दमा ; रातमें और वायु सेवनके लिये टहलनेके समय छातीपर भार मालूम होना ; वक्षःस्थलमें कसावटके भावके साथ कभी कभी श्वास-रोधक भाव; मुखमण्डल नीली आभा लिये लाल ; हृत्स्पन्दन आरम्भ होनेपर रोगी बेहोश हो जाता है । हृत्पिण्डमें मेदापजनन (Fatty Degeneration= फास) ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—शिथिल शिश्न (Penis) से मूत्राधारकी मुखशायी ग्रन्थिका रस (Prostatic fluid) निकलता रहता है,—मानसिक विषादके साथ दाहिने अण्डकोषकी सूजन,—छूनेपर उसमें पीसनेकी तरह दर्द मालूम होता है । बच्चोंका अण्डकोष पुष्ट नहीं रहता अथवा धीरे धीरे क्षय होता जाता है । बहुत दिनोंकी या पुरानी (Chronic) इसके साथ ही रेतोरज्जु और कोषमें तेज दर्द । (स्पंजिया) ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायु स्थान-भ्रष्ट और कड़ा,—बहुत ऊंचे पर रखी चीज उतारनेकी वजहसे या कांखनेकी वजहसे (पोडो, रास) या

जरायुके अत्यन्त बढ़ जानेके कारण (कोनायम)—चोटसे उत्पन्न और सूची-धनकी तरह दर्द ; ऋतुके समय दर्दका बढ़ना। बन्ध्यात्व—उपदंश विषसे दूषित धातुवाली स्त्रियोंका या जो स्त्रियाँ बहुत चीणकाय होती हैं और जिन्हें सन्तान नहीं होती और इस कारणसे जो बहुत दुःखित रहती हैं, उनका प्रदर,—गाढ़ी सफेद आभा लिये स्राव ; योनिद्वारमें जलन रहती है और बाहरी भाग लाल या लाल आभा लिये और फूला रहता है।

प्रत्यङ्ग।—माथेसे सब खून पैरकी ओर दौड़ पड़ता है—ऐसा अनुभव होता है ; दोनों पैर सुन्न मालूम होते हैं और रोगिनीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। सबेरे सोकर उठनेके समय पैरकी एंड़ीमें शोथ हो जाता है ; कुछ दूर चलने पर यह तकलीफ घट जाती है। ऐसा मालूम होता है, मानो शिरामें गर्म अग्निमय शोणितका प्रवाह हो रहा है। सन्धियोंमें सुई जैसा मालूम होना और छेदनेकी तरह दर्द मालूम होता है। जानु दुर्बल। दोनों पैरोंमें खुजली।

निद्रा।—निद्रितावस्थामें ऊंचे स्वर से रो उठता है ; चोरी आदिके सम्बन्धके सपने देखता है और चिल्ला उठता है (नेट्र-म्यू)। हड्डीमें दर्दकी अधिकताकी वजहसे जाग उठता है और तकलीफसे इतना अधीर हो पड़ता है, कि अपना जीवन ही नष्ट कर डालना चाहता है।

ज्वर।—सन्ध्याके समय ज्वरका शीत पैदा होता है ; मुंह गर्म और हाथ पैर ठण्डे रहते हैं ; सबेरे सारे शरीरमें, विशेषकर जननेन्द्रियमें पसीना होता है ; नाड़ी क्षुद्र और द्रुत।

वृद्धि।—ठण्डी हवामें ; जाड़ा मालूम होनेपर ; सोनेके समय ; मानसिक परिश्रमसे कितने ही लक्षण केवल जाड़ेके दिनोंमें पैदा होते हैं।

उपशम।—गर्म हवामें, गर्म मालूम होनेपर ; सबेरे और ग्रीष्म ऋतुमें।

सम्बन्ध।— तुलनीय।—ऐसाफिटिडा (आँखमें दर्द, अस्थि-क्षत), बेल, कैल्क (स्थूलता, हड्डोकी बीमारी) ; कैल्केरिया (रातमें दस्त) ; काकुलस [शून्य मालूम होना] ; कूमम [दमा] ; कैलि-बाई, जखम [पीनस] ; कैलि-आयोड [उपदंश] ; नक्स-वोमिका [जरायुका अपने स्थानसे हटना] ; टैरेण्टुला [हृदपिण्ड मानो उतर गया है] ; पलस इत्यादि।

सदृश।—सिपि, हिपर; मार्क; कैलि-आयोड; मेजेरियम।

दोषघ्न।—बेलाडोना, चायना, काफिया, कूप्रम, मार्क, पल्स, सार्स्राजि इत्यादि।

शक्ति।—३ री दशमिकसे २०० क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—५० से ६० दिन।

आरम म्यूरियेटिकम।
(AURUM MURIATICUM.)

दूसरा नाम।—क्लोराइड आव गोल्ड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सोनेके साथ नाइट्रो-हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड मिला कर यह बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—अण्डलाल मिला पेशाब; अन्धापन; हृत्शूल; गुह्यद्वारमें नासूर; दमा; बाघी; कैन्सर; उपदंश; मसे; शोथ; प्रमेह; रक्तस्राव; केश झड़ जाना; हृत्पिण्डमें विकार; यकृतकी बीमारी; आँखोंका प्रदाह; पूतिनस्य; अस्थि-वेष्टका प्रदाह; यक्ष्मा; प्लीहाका बढ़ना; बन्ध्यात्व; जरायुका अर्बुद; जरायुसे रक्तस्राव; अपत्य-पथमें उत्ताप, जलन और खुजली; स्वरभङ्ग इत्यादि।

लक्षणावली।

मस्तक।—समूचे माथेमें जलन।

आँख।—लड़कपनमें एकाएक अन्धापन; आँखके किनारे नासूर।

मुख-विवर।—जीभके ऊपर मसेकी तरह उद्भेद निकलते हैं।

नाक।—नाककी बाईं ओर लाल सूजन; नासारन्ध्रमें गहरा जख्म पैदा हो जाता है और उससे सूखी पीली आभा लिये पपड़ी निकलती है; ऐसा मालूम होता है, मानो नासारन्ध्र रुक गया है; नासारन्ध्रसे एक तरहका बदबूदार पानीकी तरह स्राव हुआ करता है।

मलद्वार।—अर्श,—पाखाना होनेके समय रक्तस्राव होता है (हैमा, सलफर, ऐलो, कैप्सि, कालिन्सो)।

जननेन्द्रिय।—योनिद्वारसे लगातार रस-स्राव। योनिद्वारमें जलन और खुजलाहट ; अपत्य-पथ अत्यन्त गर्म और खुजलानेवाला ; प्रदर पीली आभा लिये, कषाय-गुण-युक्त और जलन पैदा करनेवाला स्राव। पुं-जननेन्द्रियके ऊपर मसे निकलते हैं (थूजा, ऐसिड-नाइ, कास्टि)

श्वासयंत्र।—स्वरभङ्ग ; बोलनेमें तकलीफ होती है। श्वासकष्टता,— स्वरनली मालूम होती है, मानों बन्द हो गयी है। उपदंश या पारा विषकी वजहसे स्वरनालीकी बीमारियां। वक्षोस्थिमें दबाव मालूम होना। आवाजके साथ खांसी ; बलगम गाढ़ा और पीले रङ्गका श्लेष्मा-भरा। (श्वासरोग—Asthma—दमा) रातमें बढ़ना। बाईं ओरके फुसफुस वेष्ट [Pleura] के भीतर दर्द, कभी कभी यह दर्द दूसरी जगह भी मालूम होता है। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द। प्रचण्ड हृदकम्पन, बहुत दर्द, हृत्पिण्डमें भार मालूम होना और दृढ़ आबद्ध भाव ; हृत्पिण्डमें रक्तकी अधिकता।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग।—मणि-बन्धनमें सूजन ; दोनों पैरोंमें सूजन ; बहुत बेचैन।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न**।—बेलाडो ; कैनाबिस ; मार्क।

सदृश।—आर्जण्टम, आर्स, बेलाडो, लाइको, मार्क, नाइट्रिक-ऐसिड, सलफर।

शक्ति।—२ य दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक तक।

आरम म्यूरियेटिकम कैलिनेटम।
(AURUM MURIATICUM KALINATUM)

दूसरा नाम।—डबेल क्लोराइड आव पोटासियम एण्ड गोल्ड।

उपयोगिता और आभास।—जरायुके अर्बुदका कड़ापन और रक्त स्राव आदिकी एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध ।—आरम-म्यूर—नेट्रोनेटम ; हाइड्रैस्टिनिन—म्यूर ।

शक्ति ।—१ म दशमिक से ६ ठी दशमिक तक ।

आरम म्यूरियेटिकम नेट्रोनेटम ।

(AURUM MURIATICUM NATRONATUM).

दूसरा नाम ।—क्लोराइड आव गोल्ड ऐण्ड सोडियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—उदरी ; कर्कटीया-रोग ; अर्श ; खल-वाट हो जाना ; सर दर्द ; ज्वर ; कामला ; यक्ष्मा ; प्रमेह ; उपदंश ; अर्बुद ; जरायुका कड़ापन और कर्कटीया जखम ; मसे ;

उपयोगिता और आभास ।—पारा और उपदंश विषसे दूषित शरीरके लिये उपयोगी है । स्त्री-जननेन्द्रियके ऊपर क्रिया और जरायु आदिके बहुत तरहके विकारमें इसकी उपकारिता बहुत प्रसिद्ध है । डाक्टर हेलका कथन है, कि इसके सेवनसे तम्बाकूसे अनिच्छा पैदा हो जाती है और अफीम सेवनका अभ्यास छोड़नेका एक बहुत ही सुन्दर उपाय है (१ म शततमिक सेवन करना चाहिये) । बाईं आँखके ऊपरी प्रदेशमें, खोपड़ी या माथेकी हड्डी (Skull) के भीतर, वक्षमें, जङ्घास्थिमें (Tibia) और अन्यान्य अस्थियोंमें ऐसा मालूम होना, मानो नोच रहा है । इसके दर्दकी ऐसी ही प्रकृति होती है । इसके लक्षण ठण्डी तर हवा लगने और हेमन्तसे वसन्त ऋतुतक बहुत बढ़ जाते हैं । जीभके ऊपर मसेकी तरह ; कोमल या पाण्डु, रोगमें सफेद रङ्गका पाखाना होता है ; दुरारोग्य कमल रोग,—कभी काला और कभी सफेद पाखाना होता है (डा० नैश) । लालामूत्र और उपदंश ; लिङ्गार्श (Condylomata) ; बाघी ; अण्डाधार बहुत बड़ा और कड़ा मालूम होता है । जरायुका एक अंश कोमल तथा दूसरा कड़ा रहता है । त्वचाको क्षय करनेवाला प्रदरका स्राव ; जननेन्द्रिय आदिके ऊपर पीब भरी—फुन्सियाँ (Pustules) निकलना ; स्तन या जरायुका कर्कट रोग या कर्कटीया अर्बुद (Scirrhus) ; बहुत दिनोंकी वात व्याधि या छोटी सन्धियोंका वात (Gout) गण्डमाला (Scrofula) ; विश्राम करनेपर लक्षणोंका बढ़ना ; उदरके

ऊपरी प्रदेशमें दर्द, मिचली, मन्दाग्नि, पेट फूलना और कब्जियत ; स्नायविक अजीर्ण रोगमें खाते ही पाखाना लग आना और पतला पाखाना होना ; पाकाशय या आँतोंकी सर्दी या प्रतिश्याय ; जरायु और डिम्बाधारमें रक्त-सञ्चयकी अधिकता या उपदाह, जरायुका धीमा प्रदाह (Metritis) ; डिम्बाधारका प्रदाह ; असमयमें ही बहुत ज्यादा रजःस्राव ; बार बार गर्भ-स्राव ; कामोन्माद ; जरायुमें जखम ; जरायु-ग्रीवाका अन्तर्वेष्ट प्रदाह (Endocervicitis); जरायुकी पेशीमें क्षीणताके कारण रजोरोध ; विलम्बसे आर्त्तव-स्राव ; स्वल्परजः ; कामाग्निका कम पड़ जाना ; डिम्बाधारमें निष्क्रियतासे उत्पन्न वन्ध्यत्व ; डिम्बाधारका शोथ [Ovarian Dropsy] ; प्रसवके बादका उन्माद और कामकी प्रबलता इत्यादि स्त्री रोगोंमें अरम म्यूरियैटिकम-नैट्रोनैटमसे अत्यन्त लाभदायक हुआ करता है।

लक्षणावली।

मस्तक।--समूचे माथेमें छेदनेकी तरह दर्द। केश झड़ना।

आँखें।—अन्धापन इत्यादि।

नाक।—जखम ; नकसीर।

जीभ।—कड़ी और जलन भरी; सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अन्नाशयमें शीत मालूम होना। जरायु और दोनों डिम्बाधारमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे उनमें प्रदाह पैदा हो जाता है (Ovaritis) ; असमयमें ही बहुत अधिक ऋतु-स्राव होता है, बार बार गर्भस्राव (वाइवर्नम) ; कामोन्माद, समय समयपर जरायुमें जखम और जरायु ग्रीवाका अन्तर्वेष्ट प्रदाह। प्रसवके बादका उन्माद ; पाक और अन्नाशयका प्रदाह (Gastro Intestinal Irritation) के साथ आत्महत्या करनेकी प्रबल इच्छा। जरायुकी पैशिक दुर्बलतासे उत्पन्न (Atomic) रजोलोप (नैट्र-म्यू ; कैलि-कार्ब, पल्स) ; डिम्बाधारकी क्रिया न होनेके कारण बाँझपन पैदा हो जाना ; डिम्बाधारका शोथ।

त्वचा।—सारे शरीरमें खुजली ; ज्वर इत्यादि।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—आर्जेण्ट, आर्स, ग्रैफाइट, हिपर, आयोड, कैलि-सल्फ, मार्क, नाइट्रिक, सल्फ, थूजा।

शक्ति।—२ रा या ६ ठा दशमिक विचूर्ण।

आरम सल्फ्यूरेटम ।

(AURUM SULPHURATUM)

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—शय्यामें पेशाब कर देना ; गलगण्ड ; ध्वजभङ्ग ; कँवल ; पक्षाघात वगैरह रोगमें लाभदायक है। सलफर और आरमके संमिश्रित लक्षणोंमें यह अधिक उपयोगी होता है ।

ऐवेना सैटाइवा ।

(AVENA SATIVA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यवनाल या यनीरके ताजे गाछसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मदात्यय या शराब पीनेकी वजहसे उपसर्ग ; विसूचिका ; दुर्बलता ; बहुव्यापक सर्दी ; अफीमका अभ्यास ; हृदकम्पन (कलेजा धड़कना) ; बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवाका दुष्परिणाम ; अनिद्रा ; यक्ष्मा रोग ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायविक अवसाद,—अफीम आदि नशीले पदार्थ छोड़नेपर जैसा हो जाता है ; जननेन्द्रियकी कमजोरी और कोई क्षय करनेवाली या बहुत दिनोंकी बीमारीके बादकी कमजोरी इससे दूर हो जाती है । दुर्बलताकी वजहसे वीर्य-स्खलन । शराब आदि पीनेकी इच्छा यदि बहुत अधिक होती हो तो इसके सेवनसे अच्छी हो जाती है। शराबी और अफीमचियोंका अभ्यास छोड़नेके कारण अनिद्रा और मानसिक विकार ; मनको एक विषयमें लगा रख नहीं सकता ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—पैसिफ्लोरा—इनकार्निटा और अफीम छोड़ने का अभ्यास त्यागनेमें सहायक—भरम-म्यू-नेट्र ।

शक्ति ।—मूल अर्क दो से २० बूंद तक ।

ऐवियैरि ।

(AVIAIRE)

परिचय ।—क्षयरोग-ग्रस्त पक्षीसे यह दवा तैयार होती है। बैसिलिनम, टियुबरकुलिनमके साथ यह दवा प्रायः सम-लक्षण सम्पन्न है। परन्तु फेफड़ेके सूक्ष्म अन्त्रोंपर ही इसकी विशेष क्रिया दिखाई देती है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—बैसिलिनम, बैसिलिनम-टियु, टियुबर्कु-लिनम ; आर्स, आयोड।

शक्ति ।—३० और इससे उच्च क्रम।

ऐजाडिरिक्टा इण्डिका ।

(AZADIRECTA INDICA)

दूसरा नाम ।—नीम।

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—नीमकी छालसे मूल अर्क या मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—कब्जियत ; अतिसार ; सविराम ज्वर ; क्विनाइनका अपव्यवहार ; प्लीहामें रक्तसञ्चय।

उपयोगिता और आभास ।—कलकत्तेके विख्यात चिकित्सक डाक्टर प्रतापचन्द्र मजुमदार महाशयके द्वारा इसकी परीक्षा हुई है। तीसरे पहरमें बोखार, शरीरके नाना स्थानोंमें वातकी वजहसे दर्द। तलहत्थीमें जलन और उत्ताप और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना।

लक्षणावली ।

मन ।—विषन्न भाव और भुलक्कड़। लिखनेमें विवर्णकी भूल हो जाती है। केवल सोये रहनेकी इच्छा।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना (Giddiness)—मानो माथा दमदम कर रहा है—बैठनेकी अवस्थासे उठनेके समय बढ़ना। कानमें भौं भौं शब्द

(ऐमोन-कार्ब, कास्टि, ग्रैफा, मस्कस, पल्स, सिलि)। आँखोंमें जलन (ऐलू, कैमो, लाइको, पल्स, रस, स्टैफि) नाकसे पानीकी तरह श्लेष्मा निकलना (ऐलियम-सिपा, युफ्रे, आर्स, कैमो, ग्रैफ, मार्कु, नक्स, सलफर)।

मुख-विवर।—प्यास नहीं लगती पर मुँह लसलसाया करता है (नक्स-मस, युफोर्बिया, लाइको)। ऐसा मालूम होना मानो जीभ जल गई है (पार्श्व-देश जलनेकी तरह=पल्स, सिपि ; जीभका अगला भाग जलनेकी तरह मालूम होना=सैङ्गिविने)।

प्रत्यङ्गादि।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें वातसे पैदा हुआ दर्द, वक्षोस्थिमें, पञ्जरेके बीचमें, कन्धेमें और हाथ-पैरोंमें दर्द मालूम होना। तलहत्थी गर्म, जलन-भरी और उसमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

ज्वर।—हलका जाड़ा मालूम होनेके साथ ही साथ तीसरे पहर ज्वर बढ़ना, मुंहमें बहुत अधिक उत्ताप मालूम होना, तलहत्थी और पैरका तलवा बहुत गर्म और शरीरके ऊपरी अंशमें बहुत अधिक पसीना होता है (आर्जेण्ट ऐसेरम, कैमो, ओपि रियुम, वेरेट)।

त्वचा।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें खुजली पैदा हो जाना ; पर किसी तरहका उद्भेद नहीं पैदा होता। (डलिकस)।

सम्बन्ध।—सदृश।—सीड्रन, चायना, आर्स, नेट्रम, गोयारिया।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ ठा दशमिक क्रम तक।

बेसिलिनम टेष्टियम।

(BACILLINUM TASTIUM)

उपयोगिता और आभास।—यह एक जान्तव पदार्थ है। गुटिका-दोष-युक्त अण्डकोषसे यह दवा विचूर्णके आकारमें तैयार होती है।

निम्न अङ्गके गुटिका रोगपर (अर्द्धाङ्गका=बेसिलिनम-टियु) इसकी विशेष क्रिया दिखाई देती है। पुट्ठेकी-ग्रन्थियाँ तलपेटकी ग्रन्थियाँ और अण्डकोषके गुटिका दोषमें इससे विशेष लाभ दिखाई देता है। अर्द्धाङ्गके गुटिका रोगमें इसका व्यवहार होता है।

तुलनीय।—ऐविवेरी, वैसि, टियुबरकुलिनम ; आयोडियम, बेरा-आयोड।

शक्ति।—३० शततमिक और २०० क्रम।

बैडियेगा।

(BADIAGA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह रूस देशका पानीसे उत्पन्न स्पञ्ज है ; सूखी अवस्थामें विचूर्ण और उससे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—स्तनमें कर्कटीया जखम ; बाघी ; काला दाग ; सर्दी ; आँखमें दर्द ; ग्रन्थियोंकी बीमारी ; अर्श ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; हृदकम्पन ; सन्धिवात ; गण्डमाला ; उपदंश ; क्रुप-खांसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—लसिका ग्रन्थि और श्वास-यन्त्रपर ही इसकी क्रिया दिखाई देती है। सब ग्रन्थियोंका फूलना, और कड़ा हो जाना ; सर्दी, खांसी और शीत आदिकी वजहसे पेशी और पेशी-बन्धनीमें दर्द होता है। जहां दर्द होता है, उस जगह पर पहननेके कपड़ेकी रगड़तक बर्दाश्त नहीं होती। बार बार छींक और श्वास-कृच्छ्रताके साथ सर्दी और क्रुप-खांसीमें इससे लाभ हुआ करता है। संक्षेपमें, इसके ये कई प्रधान लक्षण हैं:—(१) सरमें दर्दके साथ आँखके गोलेके पीछे दर्द—दिनके २ बजेसे ७ बजेतक बढ़ना=माथा हिलानेसे, मूर्धा या माथेके शीर्ष-देशमें (In Vertex) प्रचण्ड सरका दर्द=रातमें घटना ; पहली बार भोजनके बाद बहुत जोरसे पैदा हो जाता है। चक्षु प्रदाहके साथ सरमें दर्द। (२) आँखके कोयेमें दर्द—माथेके भीतर तक दर्द फैल जाता है। (३) माथेकी त्वचामें (Scalp) घाव हुई त्वचाकी तरह स्पर्श सहन न होना, सूखी और पसीनेसे रहित ; खुजलाती रहती है और उसमें रूसी जम जाती है। (४) केवल रोगवाली जगह छुई जा सकती है। (५) नाकसे बहुत पानी गिरता है। (६) बांया गाल और गण्डास्थिमें स्पर्श सहन नहीं होता। (७) पाकस्थली और यकृतमें और अंशफलक (Scapula) के नीचे, मूत्र मार्गमें और वक्षमें अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द। (८) बाघी और

बीमारी वाली ग्रन्थियां सब पत्थरकी तरह कड़ी हो जाती हैं और फूल जाती हैं। उनमें इतनी तकलीफ होती है, मानो जलती हुई सुई घुसाई जा रही है। (९) कास्टिक आदिसे रुका हुआ उपदंशका जखम। (१०) बचपनका धातुगत उपदंश विष और उसीकी वजहसे पैदा हुए जखम। (११) स्तनमें कार्कटीया क्षत (Mammary Carcinoma)। (१२) खाँसते खाँसते छींक आ जाती है और नाकसे बहुत अधिक श्लेष्माका स्राव होता है। कभी कभी बहुत खांसी आती है, खाँसते खाँसते मुंहसे गाढ़ा, लेईकी तरह जमा हुआ कफ ऐंठकर बाहर निकलता है ; गलेमें खुजलाहटकी वजहसे खाँसी ; गर्म घरमें घटना। (१३) शरीरको जरा हिलानेसे ही कलेजा धड़कने लगता है, दाहिनी करवट सोनेसे बढ़ना। प्रसन्नताके बाद कलेजा धड़कना। (१४) पैरोंके सामने की पेशीको छूना सहन न होना। चलनेपर पैरकी अंगुलियां टेढ़ी पड़ जाती हैं। (१५) दाहिनी एँड़ीके नीचे, पीछेकी ओरकी पेशीमें तेज डङ्क मारने की तरह दर्द,दबानेसे ही बढ़ना। (१६) पुरानी बात व्याधि ;—जाड़ा,—खास-कर ठण्ढी हवा लगनेपर वृद्धि।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें दर्द—दिनके दो बजेसे सवेरे ७ बजे तक यह दर्द बना रहता है, पहले आंखके गोलेके पीछे यह दर्द धीरे धीरे आरम्भ होता है। ललाट देशीय (Frontal)—कपालमें होनेवाला सरका दर्द। यह बाईं आंखके पीछे तक फैल जाता है,—आंख हिलाने पर बढ़ता है। मूर्द्धा-देशका सर-दर्द,—यह नींदके बाद घट जाता है, रातमें और सवेरे कम रहता है, पर पहली बार भोजनके बाद ही बहुत भीषण आकार धारण करता है,· माथेकी त्वचा=क्षय हुई त्वचाकी तरह या खाल उधेड़नेकी तरह हो जाती है, सहिष्णुता ; सूखी, खुजलानेवाली और रूसीकी तरह छालसे ढकी हुई।

आंख।—दोनो पलकोंके किनारे नीले और आंखके नीचेवाली जगह भी नीली मालूम होती है। बाईं आंखके गोलेमें बहुत दर्द रहता है, यहाँतक कि कसकर आंख बन्द करनेपर भी दर्द मालूम होता है। आंखके गोलेमें दर्द, वह माथेके भीतर तक फैल जाता है।

कान।—कानमें कभी कभी कुछ चोटसी मालूम होती है—मानो दूर पर गोला दग रहा है या तोप छूट रही है। थोड़ी आवाज भी बहुत ज्यादा मालूम होती है। (अरम)।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—म्लान, पीला या सीसेकी रङ्ग की तरह मुखमण्डल, मुखगह्वर और सांस बीखारकी अवस्थाकी तरह गर्म रहती है और प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें बार बार पानी पीनेकी इच्छा बनी रहती है। (नाई)। सवेरे खांसते खाँसते एक टुकड़ा खून-भरा जमा हुआ श्लेष्मा निकलता है (लाइकी)। निगलनेके समय गलेमें बहुत दर्द मिला प्रदाह मालूम होता है।

नाक।—सर्दी, बार बार छींकके साथ पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव, दमाकी तरह श्वास-प्रश्वास और सांस रोक देनेवाली खांसी। बहुव्यापक सर्दी (Influenza) या कफज्वर (सिपा, इपिक, नैट्र-सल्फ, युपेटोर, युफ्रेशिया) नाकसे बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव हुआ करता है।

श्वास-यंत्र।—क्षण क्षण भर पर बहुत खांसी पैदा हो जाती है,—खांसनेके समय नासा-रन्ध्र और मुंहसे छोटे छोटे श्लेष्माके जमे हुए टुकड़े छिटक कर निकलते हैं (चेलिडो, कैलि-कार्ब); उक्त लक्षणवाली हुप-खाँसी;—सन्ध्याके समय बढ़ना और गर्म घरमें घटना; वक्ष-स्थल, ग्रीवा और पीठमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। नये उत्पन्न शस्य आदिकी गन्ध लगकर सर्दी ज्वर (Hay Fever), इसके साथ ही श्वास-कष्ट। खाँसते खांसते छींक आ जाती है। गलेमें एक तरहकी सुरसुरी या खुजलीकी वजहसे खांसी। छातीकी बगलमें दर्द,—शरीर हिलाने या श्वास-ग्रहण करनेके समय ऊर्ध्व जत्रुकास्थि प्रदेशमें (Supraclavicular region) अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द। दाहिनी करवट सोनेपर एकाएक श्वास रुकनेकी तैयारी हो जाना,—रोगी एकाएक करवट बदल लेता है। फुस-फुस प्रदाहकी वजहसे विकार (Typhoid pneumonia)।

गर्दन और पीठ।—गर्दनमें दर्द और सुन्न भाव। गर्दनके पीछे सुई वेधनेकी तरह दर्द; माथेको सामने और पीछे पर्यायक्रमसे हिलानेपर बढ़ जाता है। दाहिने ओरके पृष्ठ-फलकके नीचेवाले स्थानमें भयानक अस्त्राघात और सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होना;—छाती सामनेकी ओर, एक कन्धा पीछेकी तरफ घुमानेपर दर्दका बढ़ना। ऐसा दर्द मानो पेशी और त्वचामें चोट लग गयी है। गर्दन बेतरह अकड़ जाती है। (ऐण्टि-टार्ट, कौलचि; सर्दी लगकर होनेपर=डलकामारा; दाहिनी ओर अकड़ी हुई=चेलिडो)। लसिका ग्रन्थियोंका बढ़ना, कड़ापन और पीव-सञ्चय होनेका लक्षण।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुसे रक्त-स्राव,—रातमें बढ़ जाना (ऐमोन-कार्ब); इसके साथ ही साथ फैला हुआ मालूम होना (आर्जेण्ट, कोरैलि, ऐपिग्रोल, डेफनी, इग्न)। स्तनमें कर्कट रोग (ऐस्टेरि, कोनायम, कार्बो-ऐन, प्लम्बम्-आयोड।)

प्रत्यङ्गादि।—बाघी,—रोगवाली ग्रन्थि लोहेकी तरह कठिन, हड्डी और ग्रन्थियोंमें रातके समय भयानक यन्त्रणा—तपती हुई सुई बेधनेकी तरह, मानो उसमें एक गर्म सलाई प्रवेश करायी जा रही है। कास्टिक वगैरह द्वारा जलाया या पारा आदि मिले प्रलेपके प्रयोगसे दबे हुए (Suppressed) उपदंश का जख्म आदि, इसके साथ ही ऊँचा और मैला जखमका चिन्ह। (कार्बो-ऐनि-मैलिस)

सम्बन्ध।—अनुपूरक।—सल्फ, आयोड, मार्क।

तुलनीय।—स'जिया, सिनेगा, (छींकनेपर खाँसी पैदा हो जाती है) थिरिडलिया, स'जिया (खाँसीके साथ छींक); कैलि-कार्ब (मुँहसे श्लेष्मा निकल पड़ता है); कैल्के-सल्फ (कड़ापन); कार्बो-ऐनि [व्रण, कड़ा]; सिस्टस [कण्ठमाला]; हिपर; आयोड; कैलि-आयोड; लैके, मार्क, नाइट्रिक, ऐसिड, सल्फ। लैकेसिसके बाद उपयोगी है।

शक्ति।—१ म दशमिकसे ३० शततमिक क्रम। उच्चतरसे उच्चतम क्रम।

बालसमम पेरुवियनम।

[BALSAMUM PERUVIANUM]

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गाछके तनेका रस या गोंदसे तैयार होता है। यह रेक्टिफायड स्पिरिटमें गलता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—श्वासनाली-प्रदाह; सर्दी; नाकसे खून गिरना; क्षय-कास; कच्छ, विष; यक्ष्मा; जखम।

उपयोगिता और आभास।—वायुनलीभुजकी सर्दीमें पीवकी तरह श्लेष्मा निकलनेपर यह बहुत लाभ करता है। कफ गाढ़ा, मक्खनकी तरह, पीली

आभा लिये सफेद ; छातीमें घड़घड़ शब्द (Rales); रातमें पसीना और विलेपी ज्वर इसका प्रधान लक्षण है।

लक्षणावली।

नाक।—बिना कारण ही रोज सन्ध्याके ७ बजे बार बार रक्तस्राव। बहुत ज्यादा गाढ़े श्लेष्माका स्राव। नासारन्ध्रमें फटे घाव और जखम। पुरानी सड़ी बदबूदार सर्दीका स्राव [अरम, ऐसिड-नाई, सिलि, मार्क]। तालु लाल और दर्द-भरा।

पाकाशय।—खाये हुए पदार्थ और श्लेष्मा वमन [इपिका, पेट्रोल, ऐपोमार्फि, क्रियोजोटम]

श्वास-यंत्र।—वायुनलीभुज प्रदाह [Bronchitis],—गाढ़े पीबकी तरह पीली आभा लिये सफेद, श्लेष्मामय, मक्खनकी तरह कफ निकला करता है [केल्के, कार्बोवेज, सिङ्कोना, कोनायम, केलि-कार्ब, लाइको, फास, सिलि, स्टेन, स्टेफ]। छातीमें घड़घड़ आवाज होती है (ऐण्टि-टा, ब्राई, कास्टि, कैमो, इपिक, नेट्र-म्यू, पल्स, सैम्बु, कैलि-सल्फ); थोड़ा श्लेष्मा मिली खाँसी; बिलेपी ज्वर (बैप, आर्स, सिनकोना, चिनिनू-आर्स) और रातमें पसीना [ऐसिड-फास, फास, कार्बो-ऐन ; अन्तिम रातमें=कैल्के ; नींद आते ही पसीना आने लगता है=सिनकोना, कोनायम; नींद लगते ही पसीना रुक जाता है=सैम्बुकस]।

पेशाब।—मूत्रनालीमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना। पेशाब करनेके समय कतरनेकी तरह दर्द [कैन्थ, लैके, लाइको]। बार बार पीले निर्मल रङ्गका पेशाब होना; पेशाबके बर्त्तनमें लाल रङ्गका लेप दिखाई देता है [लाइको, नेट्र-म्यू, पल्स, सिपि, स्किला]। पेशाबकी तली श्लेष्मामय [कैन्थ, कैमो, लेके, मेजेरियम, सार्सा, जिङ्कम]। मूत्राशयका श्लेष्मा-स्राव रोग (कैन्थ; जलीय वायुकी वजहसे होनेपर=डल्का ; रातमें अनजानमें पेशाब=पल्स ; बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा-सञ्चय होनेके साथ=पेरीरा-ब्रावा ; घोड़ेके पेशाब की तरह गन्धवाला पेशाब=ऐसिड-बेन ; दुरारोग्य होनेपर=चिमाफिला।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कैन्थरिस, ब्रायोनिया, मार्कुरियस, एसिड-फास।

शक्ति।—१ म दशमिक क्रम। मूल अर्कके बाहरी प्रयोगसे खुजली और उकौतामें विशेष लाभ होता है और उसके कीड़े मर जाते हैं।

बैप्टीशिया-कनफ्यूसा-ऐसेटिका ।
(BAPTISIA-CONFUSA-ACETICA)

परिचय ।—आस्ट्रेलिया देशकी बैप्टीशिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तने और पत्ते से मूल अर्क बनता है ।

उपयोगिता और आभास ।—दाहिने जबड़ेमें दर्द, बाई ओरका कटिशूल, पेटमें बाई ओर दबाव मालूम होना और इसीलिये श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, सीधे खड़े होने या बैठनेपर घटना या कुछ खानेपर घटना और पेटमें गड़गड़ शब्द—इन लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

बैप्टीशिया टिङ्कटोरिया ।
(BAPTISIA TINCTORIA)

दूसरा नाम ।—बननील ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़ और छालसे मूल अरिष्ट बनता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;— गर्भस्रावकी आशङ्का ; संन्यास ; मस्तिष्कका कोमल हो जाना ; ऐपेण्डिसाइटिस या उपाङ्ग प्रदाह ; कर्कट रोग ; यक्ष्मा कास ; उपझिल्ली प्रदाह ; रक्तामाशय ; आन्त्रिक ज्वर ; चक्षु-रोग ; सर दर्द ; विलेपी ज्वर ; मूर्च्छा ; सर्दी ; कर्णमूल-प्रदाह ; प्लेग ; बुरी भापसे पैदा हुई बीमारियाँ ; पाकाशयका प्रदाह ; मुँहका जखम ; जीभमें वायु ; बहुव्यापक क्षत ; सान्निपातिक ज्वर ; चेचक ; कृमि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लेष्मा या रस-प्रधान धातुमें यह विशेष उपयोगी है । इस दवासे बहुत सुस्ती आती है और इससे एक तरहका सड़न पैदा करनेवाला विलेपी ज्वर पैदा हो जाता है । बीमारीकी अवस्थामें शरीरसे निकलनेवाले सभी पदार्थ [मल, मूत्र, पसीना, साँस, जखमसे निकलनेवाला रस वगैरह] बहुत दुर्गन्धमय होता है [सोराइन, पाइरो) ; रोगी शय्यागत ही पड़ता है और उसे बहुत सुस्ती मालूम होती है । उसकी पेशियोंमें इतना

दर्द होता है, कि रोगी एक करवट अधिक देरतक सो नहीं सकता,—थोड़ी देरतक एक पार्श्वमें रहनेसे ही उसे बहुत ही: दर्द होने लगता है (पाइ-रोजिनियम)। आगे लिखे हुए कई लक्षण भी इसके प्रकृतिगत हैं;—चेहरा तम-तमाया हुआ,नशा-खाने जैसा और बहुत मलिन ; उसकी छोड़ी हुई सांसमें बहुत बदबू रहती है। (२) जीभ पीली, भूरी या पीली आभा लिये भूरी (Yellowish Brown) लेप चढ़ी रहती है, उसके बीचका अंश सूखा औरदोनों किनारे पार्श्व लाल रहते हैं ; फटी हुई त्वचा (Cracked) रहती है और उसमें बहुत दर्द रहता है ; दन्तमल (Sordes) या दाँतमें दाग लगना (३) रोगी तन्द्रालु ; कोई बात पूछनेपर उसका पूरा पूरा उत्तर देते न देते सो जाता है। (४) माथा जखमकी तरह स्पर्श असहिष्णु हो जाता है। (५) नाड़ी नमनीय (६) रोगी जिस करवट सोता है, उसी ओर बहुत दर्द हो जाता है। (७) विकार, प्रलाप: असम्बद्ध,—एक बात कहते न कहते दूसरी बात कहने लगता है; बुदबुदाकर अपने मन ही मन कुछ बकने लगता है; उसे बराबर ऐसा ही मालूम होता है कि उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग सब शरीरके टूटकर खाटपर बिखरे पड़े हैं। वह उन्हें एकत्रित नहीं कर सकता, इसीलिये उन्हें नींद नहीं आती। सभी विषयोंमें ताच्छिल्य और उदासीनता प्रकट करता है। (८) शरीरके कितने ही स्थानोंमें और हाथ पैरके ऊपर नीला दाग निकल आता है। (९) मलका पतलापन, मल बहुत बदबूदार, गाढ़ा और खून मिला। (१०) सवेरे ११ बजनेके समय जाड़ा देकर बोखार आता है। (११) गलेके भीतरकी त्वचा क्षय हो जाती है और उसमें बहुत बदबू रहती है। दूसरोंको ऐसा मालूम होता है, मानो रोगीके कण्ठके भीतर बहुत दर्द है। पर रोगी उस विषयमें तकलीफ वाली कोई भी बात नहीं कहता।

लक्षणावली।

मन।—मानसिक परिश्रमसे कातर, कोई विषय सोच नहीं सकता या किसी विषयकी इच्छा नहीं करता। एकदम उदास, किसी विषयमें हस्तक्षेप नहीं किया चाहता,किसी विषयमें पूरापूरा जी नहीं लगा सकता। आच्छन्नावस्था, कोई बात बोलता बोलता खतम करते करते न करते तुरन्त सो जाता है (बात खतम न कर तुरन्त बेहोश हो जाता है=आर्निका)। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह दो आदमी है या मानो उसका माथा और हाथ पैर आदि शरीरसे अलग होकर शय्यापर बिखरे हुए हैं और वह उन अलग और

टूटे हुए अंशोंको जोड़नेके लिये शय्यापर घूमता फिरता है। बहुत अधिक मानसिक अस्थिरता, परन्तु इतना नहीं कि छटपटाये [आर्स]। सो नहीं सकता ; क्योंकि शरीरके टूटे हुए अंशोंको जोड़ नहीं सकता। मानो तीन आदमी हैं,—तीन आदमियोंको ढक नहीं सकता। [पेट्रोल]। रोगी जिस करवट सोता है उसी ओर बहुत दर्द मालूम होता है ; आन्त्रिक ज्वरमें (Enterio) शय्याक्षत [आर्निका, एसिड-म्यू, पाइरोजिनियम] पैदा हो जाता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—इसके साथ ही समूची देहमें, विशेष कर जांघमें बहुत सुस्ती मालूम होती है ; ललाट देशीय (Frontal) शिरो वेदना (ऐको, आर्निका, कोलो, नेट्र-म्यू, ओलियेन, वेलि.); नासिका मूलमें कुचलनेकी तरह दर्द (ऐकी, ऐगार, ऐमोन-म्यू, कैम्पि, इग्ने ; नाककी जड़में बेधनेकी तरह दर्दके साथ=हिपर) ; मानो माथा परिपूर्ण हो रहा है (ऐकी, बेल, ब्राई, डेफनो, सिनकोना, रास, रास-रैड, सलफर) ; और माथेकी त्वचा जोरसे कसी हुई है (एको, एसेराम, कैम्फ, कार्बोवेज, कास्टि, साइकि, क्लिमैट, ग्रैफ, मैङ्ग, मार्क, मस्कस, पलस, स्ट्रान्सि, सल्फ)। माथा भार-युक्त (बेल, कार्बो-वेज, नक्स, रास-रैड) और फैला हुआ मालूम होता है (आर्जण्ट-नाइ, बेल, कोरेलियम, ऐपियम, डेफनो, इग्ने, फिलैन, साइलि; माथेने फूल कर बहुत बड़ा आकार धारण किया है=बोवि)। माथेकी खोल (Skull—खोपड़ी) ऐसा मालूम होता है कि उड़ जायगी (ऐक्टिया-रेसि, कोमो. कोबैल्टम, नैट्र, क्लोरेटम, युका ; मानो मूर्द्धास्थि एकबार जुड़ती है एकबार खुलती है=कैना-इन, ऐक्टिया)। आँखके गोलेमें बहुत दर्द होता है ; हिलानेपर भी दर्द होता है (आर्निका. सिङ्कोना, रास, वेरेट)।

आंख ।—रोशनी सहन नहीं कर सकता ; आँखमें जलन ; आँखके गोलेमें अकड़न ; इसके साथ ही दृष्टिकी अस्पष्टता। पलकोंका आंशिक पक्षाघात।

कान ।—अच्छी तरह सुन नहीं सकता ; प्रलापके साथ बहरापन।

नाक ।—नासामूलमें धीमा धीमा दर्द ; छींक और सर्दी या बादवाली अवस्थाकी तरह मालूम होना ; दाहिनो नाकसे गाढ़ा लाल रक्तका स्राव। गन्धमें गड़बड़ी, मानो जला हुआ पर सूँघ रहा है। ऐसा मालूम होना।

मुखमण्डल ।—लाल और उन्मादकी तरह (हायोसा, जेलस, ओपि, बेल, ष्ट्रैम)। दोनों गालोंमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप (आर्निका

बैल, आर्ट, ब्रैटि, इग्ने, नैट्र-कार्ब, नक्स, प्रैट, रास-टेक, सैङ्गिवन, वैरेट)। निचला जबड़ा फूल पड़ता है (चोपि); मैला और लाल रङ्गका चेहरा। (आर्ट)।

मुख-विवर।—जीभ पहले लाल कांटे भरे सफेद लेपसे परिपूर्ण इसके बाद सूखी, फटी और उसके बीचकी जगह पीली आभा लिये भूरी (Yellowish brown) लेपसे ढकी (कालिन्सो); अन्तमें सूखी फटी और जखम भरी (एपिस, आर्स, रासटक्स)। बहुत ज्यादा लार बहती है, लेईकी तरह फीका स्वाद। मुंह बहुत बेस्वाद कड़वा (आर्ट, कैमो, मार्क, नक्स, पल्स, वैरेट)। सड़ी गन्ध-भरी; मसूड़ा या दांतकी जड़का जखम (कार्बो-वेज, मार्क, नैट्र-म्यू, स्टैफ, ऐसिड-मयू)।

गलेके भीतर।—पतले जलीय पदार्थके सिवा और कुछ भी निगल नहीं सकता (बैराइटा कार्ब; सभी पदार्थ निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है खासकर जलीय पदार्थ=बैल; कड़े पदार्थ निगलनेमें आराम मिलता है=इग्ने; जलीय पदार्थ निगल सकता है पर वे एकदम अच्छे नहीं लगते=सिलि)। गलकोष या जिह्वामूलके दोनो पार्श्व (Faucos) गाढ़े लाल रङ्गके, काली आभा लिये सड़नेवाले जखमसे भरे; जिह्वामूल ग्रन्थि (Tonsils) और कर्णमूल-ग्रन्थि फूली (बैल, कैन्थ, लैके, मार्क, एसिड-नाई, थूजा) ऐसा गल-क्षत जिसमें बिलकुल ही दर्द न हो (Quinsy या Sore-throat)-सड़ी गन्ध-वाला क्लेद निकलता है (डिफियरिन)। अन्ननाली संकुचित—खाये हुए पदार्थ निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है।

पाकाशय।—पाकस्थली एकदम खाली मालूम होना (एमोन-कार्ब, कैमो, कक्यु, गैस्बो, इग्ने, हूपिक, लैके, एसिड-मयू नैट्र-मयू; दिनके ११ बजनेके समय ऐसा ही मालूम होता है, भोजनमें बिलम्ब सहन नहीं होता=सलफर; दिनके १० या ११ बजे भोजनके बाद घटना=नैट्रम-कार्ब।) बार बार पानी पीनेकी इच्छा; मिचली; भूख न लगना (मुंहमें कड़वापनके साथ खाने पीने और तम्बाकू खानेकी इच्छाका न होना=इग्ने; किसी पदार्थके खानेकी इच्छा न होना=रास; कई ग्रास खाते ही पेट भर आना=पल्स; सिलि; साधारणतः जिस तरह भूख लगती है उसमें जेनसियाना लूटिया या मैयोरा।) उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्द=कैमो, लाइको, नैट्र-मयू; सिपिया)

पाकाशयमें मानो एक कड़ा जड़ पदार्थ रहनेकी तरह मालूम होना=एबीज-नाई, ब्राई. पल्स, नक्स, निकोलम, रास-रेड ; सिपि, सिलि।)

अन्त्राशय।—दाहिनी ओरकी बीमारीका आक्रमण अधिक हुआ करता है [चेलिडोन, ब्राई, लाइको—दाहिनी ओरसे बाई ओर गति ; बाएं पार्श्वसे दाहिनी पार्श्वकी ओर गति=लैके]। आध्मान और कलकल शब्द भरा [आर्जेण्ट-नाई, बिस्मथ, कैल्के, कार्बो-ऐन, कार्बो-वेज, ऐलो, ऐसेरम-इयु, गैम्बो, जैट्रोफा, जिङ्कम] ; रोगी मनमें समझता है, कि कै हो जाय तो यह पेट फूलना और पेटका कलकल गड़गड़ शब्द बन्द हो जायगा। पित्तस्थली [Gall Bladder) के ऊपर दर्दके साथ पतले दस्त आना (बोलिटस, मार्क-वाई, नैट्र-सल्फ]। आँमरक्त (Dysentry)—जाड़ा मालूम होना, हाथ पैर और पुट्ठेमें दर्द ; मल थोड़ा—केवल रक्त और गाढ़ा रक्त ; काँखना ; बहुत सुस्ती ; मल बहुत बदबूदार ; शरद या ग्रीष्म ऋतुमें अवसाद लानेवाले बोखारके साथ वृद्ध मनुष्य और बच्चोंको पतले दस्त आना—खासकर मल बहुत ही बदबूदार (कार्बो-वेज, पोडो, कैल्के-फास, सोराइन) ; यकृत प्रदेशमें बहुत दर्द,—इतना अधिक कि रोगी चल नहीं सकता।

श्वासयंत्र।—श्वास रुकनेकी वजहसे रोगीकी नींद खुल जाती [रोगी चौंककर जाग उठता है और हांफने लगता है—ग्रण्डि ; नींदका झोंका आते ही साँस रुक जाती है=क्लोरम, जेलस लैक-कैन, ओपि] ; फेफड़ा कसा मालूम होता है [कैक्टस],—दम करनेवाली साँस नहीं ले सकता [ब्राई] ; खिड़की खोलकर निर्मल वायुकी साँस लेता है [एकी, लैके] शरीरमें प्रदाह ; सूखी जीभ ; नाड़ीकी गति तेज ; सब लक्षण ही सोनेपर बढ़ जाते हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—गर्भस्राव होनेका उपक्रम,—मानसिक अवसाद या शोथ, रातमें जागरण और विलेपी ज्वरकी वजहसे। ऋतु बहुत जल्दी जल्दी प्रकाशित होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है। प्रसवके बादका स्राव (Lochia) खाल उधड़नेवाला [Excoriating] और सड़ी बदबू-भरा, प्रसवके बादका बोखार (Puerperal Fever] के साथ विकारके लक्षण आदि [एकिनेसिया, पाइरोजिनम]

पीठ और प्रत्यङ्ग आदि।— गला क्षीण,—सीधा रखनेमें तकलीफ होती है। अकड़न और भार मालूम होता है ; हाथ पैरमें दर्द और सङ्कोचन।

त्रिकास्थि या कामरके पीछेवाली हड्डीके निम्न भाग (Sacrum) और उरु तथा पैरमें दर्द मालूम होना। देहमें बहुत दर्द मालूम होना।

नींद।—अस्थिरता और अनिद्रा। निद्रावस्थामें साँस रुक जाना और डरावने सपने देखना। शरीरके भिन्न भिन्न अंश सब एकत्र नहीं कर सकता इसीलिये रोगीको नींद नहीं आती। सवालका जवाब देता न देता सो जाता है।

त्वचा।—बहुत बदबूदार पसीना आता है। आन्त्रिक Enteric ज्वरमें शय्याक्षत Bed-Sore—(आर्निका, एसिड-म्यू, पाइरोज।) त्वचा-विशेषकर मुखमण्डलमें जलन और उत्ताप मालूम होना। शरीरमें जगह जगह नीला दाग दिखाई देता है।

ज्वर।—आन्त्रिक (Enteric Typhoid) ज्वर,—पहली अवस्थामें रोगी बहुत उत्तेजित रहता है, उसे शीत मालूम होता है। सारे शरीरमें दर्द होता है,—खासकर माथा पीठ और हाथ पैरोंमें; मानो कोई प्रहार कर रहा है। इसके बाद ही रोगी अवसन्न और दुर्बल हो पड़ता है। उसका चेहरा और दोनों आँखें भूरी, लाल और भाव पागलकी तरह हो जाता है (जिलस)। मस्तिष्क इतना आच्छन्न हो जाता है, कि रोगी सवालका जवाब देता देता या पूरा करता न करता सो जाता है। इस समय जीभके बीचमें रेखा दिखाई देती है। यह रेखा पहले सफेद रङ्गकी होती है और धीरे धीरे धुमैली या भूरी (Brown) रङ्गकी हो जाती है और रोगीमें विकार जितना ही बढ़ता जाता है उतना ही वह बुदबुदाकर बका करता है; वह मनमें समझता है, कि उसके शरीरके सभी अंश देहसे अलग होकर इधर उधर बिखरे पड़े हैं और इन सब वियुक्त और विक्षिप्त अंशको एकत्र करनेके लिये वह शय्यामें इधर उधर हटा करता है; इस समय पेट नरम होना आरम्भ हो जाता है, गुड़-गुड़ाया करता है,—खासकर अन्धान्त्र प्रदेशमें,—जहाँ बड़ी आँतके साथ छोटी सूक्ष्माग्र आँत मिली है (Ileo-Cecal Region)—इस अंशमें स्पर्श एकदम सहन नहीं होता और इसके कुछ ही देर बाद पाखाना होना आरम्भ हो जाता है—पाखाना, पेशाब और पसीना सबमें ही बहुत दुर्गन्ध होता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता (पाइरोज, रास्टक्स)। आन्त्रिक ज्वरमें शय्याक्षत (Bed Sore—आर्निका, एसिड-म्यू, पाइरोज)

सामान्य अविराम ज्वर ।—[Simple Continued Fever] पाकाशय और पित्त आदिके साथ शरीरमें बहुत दर्द मालूम होता है। प्रायः दिनके ११ बजनेके समय शीतका आविर्भाव होता है और, तीसरे पहर उत्ताप प्रकट होता है।

सम्बन्ध ।—सदृश और तुलनीय ।—आर्निका, आर्स, ब्राई, जेबस एचिनेसिया, हायोस, कैलि-मयूर, लैके, मयूरियेटिक-एसिड, नक्स-वो, ओपि, रास। आन्त्रिक ज्वरमें आर्सका यदि अधिक प्रयोग हो गया हो तो बैप्टीशिया उसका दोष दूर करता है। बैपटीशियाके बाद आन्त्रिक ज्वरमें रक्तस्राव होनेपर क्रोटेलस, हैमा, ऐसिड-नाई और टेरिबिन्थ विशेष लाभदायक होता है।

शक्ति ।—मूल अरिष्टसे २०० क्रमतक। ३ रा और ३० क्रम ज्वर आदिकी नयी अवस्थामें बहुत बार व्यवहारमें आया करता है।

बैरोस्मा ।

[BAROSMA GRANULATA]

दूसरा नाम ।—बूचू ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मूत्रस्थलीकी बीमारी; मूत्राश्मरी या पित्त मिला; सर्दी; श्वेतप्रदर; मूत्रनालीकी- मुखशायी ग्रन्थिकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास ।—पाकाशयिक झिल्लीकी सर्दी (Gastric Catarrh) की वजहसे अजीर्ण रोग; आँतोंकी दीर्घ-काल व्यापी पुरानी सर्दी (Intestinal catarrh); मूत्रयन्त्र और जननेन्द्रिय आदिके पुराने रोग आदिकी वजहसे पीब भरा श्लेष्मा-स्राव; मसानोंके भीतर या मूत्रपिण्डका शोथ (Pelvis of kidneys) और मूत्रस्थलीकी झिल्लीका पुराना प्रदाह,—इसके साथ ही बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव (ऐसिड-बेन्जो, चिमाफि, युरेनियम-नाई, सिना, ऐसिड-आक्स); मूत्रनालीका सङ्कोचन (Stricture), स्राव शोल पुराना प्रमेह (Gleet); अश्मरी [पथरी] पैदा हो जानेका लक्षण (Lithi-

asis or gravel); मूत्रनालीकी ग्रन्थिकी बीमारी (Prostatic disorders)—अपर्याप्त स्राव ; बहुत ज्यादा स्राव ; मूत्रग्रन्थिके गलेमें खुजलाहटके कारण अनजानमें पेशाब हो जाना (स्त्रियोंके मूत्राशय ग्रीवामें खुजलाहटके साथ=कोपेवा ; दिनमें अनजानमें पेशाब होना=फेरम-फास ; निद्रावस्थामें=सेनेगा;दिनमें या रातमें निद्रावस्थामें=बेल ; खांसी या छींकनेके समय=कास्टि, स्किला, वैरेट्रम) ; धातु विकारकी वजहसे शोथमें (ऐपोसाई); मूत्राशयकी बीमारीके साथ प्रदर और बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवाकी वजहसे मूत्रनालीसे या सुखगामी ग्रन्थि या रेतःकोषसे बहुत ज्यादा स्राव।

सम्बन्ध-सदृश।—कोपेवा ; बार्बेरिस, काकुलस, थूजा, सिला, सेबाल।

शक्ति।—मूल अर्क या प्रथम दशमिक क्रम २।४ बूंद।

बैराइटा ऐसेटिका।

(BARYTA ACETICA)

दूसरा नाम।—ऐसिटेट आव रेडियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कार्बोनेट आफ रेडियमके साथ डाइल्यूट ऐसेटिक ऐसिड मिलाकर यह तैयार होता है।

मन्तव्य।—डा० क्लार्ककी पुस्तकमें लिखा है—"हेरिङ्ग और हनिमैनके मतसे इन दो दवाओंमें (बैराइटा कार्बोनेट और ऐसिटेट) कुछ भी प्रभेद नहीं है।" एक तरल है, दूसरी विचूर्ण।

लक्षणावली।

मन।—दो उद्देश्योंमें बहुत देरतक मन डोला रहता है (ऐनाकं)। दिनमें कोई काम करना स्थिर करता है पर सन्ध्यामें उसके लिये पछताता है और यह स्थिर नहीं कर सकता कि वह काम करे या नहीं। भुलक्कड़ ; बात करते करते भूल जाता है, कि वह क्या कह रहा था। (ऐनाकं, बेराइ-कार्ब।)

मुखमण्डल और आंखें।—ऐसा मालूम होता है, मानो समूचे मुखमण्डल पर मकड़ेका जाल ढका हुआ है (बेराइ-कार्ब, बोरेक्स, ब्रोमियम,

रैनान, सालिसिएटस, ग्रैफ,), सभी चीजें अन्धेरेमें ढंकी या अन्धकारमय मालूम होती हैं (ऐल्यू, बेल, कैल्के, कास्टि, क्रोकास, फास, रूटा, सल्फ)।

पाकाशय।—कोई चीज खानेपर ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो पाकाशयकी समस्त अन्त्र-मण्डलीको कोई मरोड़ रहा है—ऐसी तकलीफ होती है,—ऐसा मालूम होता है, मानो खाया हुआ पदार्थ किसी दर्द-भरी नलीके भीतरसे प्रवेश कर रहा है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें बहुत दर्द।

प्रत्यङ्ग।—मलवेगके साथ पुट्ठेमें बेचैनी और गड़बड़ी मालूम होना। बाएँ पैरमें ऊपरसे तलवेतक संकोचनकी तरह दर्द मालूम होता है।

त्वचा।—त्वचामें सुरसुरी मालूम होना, मानो जलती हुई सुई घुसाई जा रही है; रोगीको बाध्य होकर खुजलाना पड़ता है, पर इससे उसकी खुजलाहट कम नहीं होती।

शक्ति।—३ रा दशमिक से ६ दशमिक तक विचूर्ण। कोई-कोई ३० शततमिक क्रम तक व्यवहार किया करते हैं।

बैराइटा कार्बोनिका।

(BARYTA CARBONICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—क्लोराइड आव बेरियमके साथ कार्बोनेट आव ऐमोनियाको मिलाकर उसमें जो अधःक्षेप या तली जमती है, उससे तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अर्बुद; संन्यास; खलवाट पड़ जाना; मस्तिष्कमें विकार; कोषमय अर्बुद; (Cysts); पैरमें पसीना; ग्रन्थियोंका फूलना; अर्श; हृत्पिण्डकी बीमारी; स्मरणशक्तिकी दुर्बलता; अन्ननालीका आक्षेप; अंगुलहाड़ा; पक्षाघात; कर्ण-मूल-ग्रन्थि-प्रदाह; प्रोस्टेट ग्रन्थिका बढ़ना; गलेका जखम; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सोरा धातु और गुटिका-दोषयुक्त धातुमें निम्न-लिखित लक्षणोंमें उपयोगी है:—जिन बच्चोंकी उम्रके साथ दैहिक और मानसिक उन्नति नहीं होती; प्रायः सर्दी आदि श्लैष्मिक रोग लगे रहते

है, बुद्धि अत्यन्त स्थूल, हमेशा लार चुआ करती है। जिन बच्चोंको गलकोषका प्रदाह या और गलेका जख्म आदि रोग हो जाया करते हैं, जरा भी सर्दी लग जानेसे ही आँख उठ जाती है और नाकसे सर्दीका स्राव हुआ करता है; यह बच्चा घरके एक कोनेमें चुपचाप बैठा रहता है, हिलना नहीं चाहता, क्योंकि उनमें फुर्ती बिलकुल नहीं रहती। बैराइटा कार्ब मानव जीवनकी दो अवस्थाओंमें विशेष लाभदायक होता है,—एक अत्यन्त शैशव और दूसरी एकदम बुढ़ापा। जिन युवकोंने अस्वाभाविक रूपसे इन्द्रिय-परिचालन किया है, उन युवकोंके अजीर्ण आदि रोगोंमें भी बहुत फायदा करता है। ग्रन्थि-मण्डली, शिरा और धमनी वगैरहमें इससे विकार पैदा हुआ करता है। पैरके पसीनेकी बीमारीमें भी यह बहुत लाभदायक है। वृद्धोंमें बच्चेका भाव और बच्चोंमें वृद्धोंका भाव दिखाई देता है। श्लेष्मा प्रधान धातुवाले, खर्व आकृति वाले और उम्रके अनुसार जिनकी वृद्धि नहीं होती, जिन्हें सर्दीके कारण आँखोंमें प्रदाह हो जाया करता है, पेट फूला हुआ, दोनों गाल फूले और सारे शरीरका मांस क्षय होता हो, जिन्हें बार बार आँतोंमें शूलकी बीमारी हो जाया करती हो, ऐसे बच्चोंके लिये बैराइटा कार्बोनिका सबसे अधिक उपयोगी है। छोटे आकारवाली, गुल्मवायु ग्रस्त तथा जिन्हें ऋतु बहुत थोड़ा होता है, जिन युवतियों और प्रौढ़ाओंको शीत बहुत लगता हो, तथा क्षीण देह और रोगी शरीरवाले वृद्धगण; मोटे ताजे पर श्लेष्मा प्रधान धातुवाले मनुष्य तथा वे जिन्हें अकसर सन्निपात हो जाया करता है (ऐसिड-फ्लू), इन सब मनुष्योंकी बीमारीमें यह दवा बहुत ज्यादा फायदा करती है। मूत्राशय-मुख-स्थायी ग्रन्थिका फैलना और सूजन और मानसिक तथा शारीरिक दुर्बलता वगैरह वृद्धोंकी बीमारियोंमें, वृद्धोंकी संन्यास-प्रवणतामें और वृद्ध मनुष्योंके सर दर्दमें बेराइटा कार्बोनिका विशेष उपयोगी है। नीचे लिखे कई लक्षण इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं;—श्रवण शक्तिका घटना और कानके चारों ओरकी ग्रन्थियोंका फूलना और दर्द। हनुतलस्थित (Sub-maxillary) और कर्ण मूलीय (कानके जड़की) ग्रन्थिकी सूजन। दोनों गल-ग्रन्थियोंका बढ़ना और पीब-सञ्चय होना, सामान्य सर्दी लगनेसे ही बढ़ना; वायुसे भरा और कसा हुआ पेट; आँतोंका शूल; प्रायः कब्जियत रहती है और गाँठ गाँठ कड़ा पाखाना होता है। शरीरमें एक ओर पसीना इत्यादि।

लक्षणावली ।

मन ।—सामान्य विषयोंमें भी इधर उधर किया करता है, किंकर्त्तव्य विमूढ़ (वेराट्टा-ऐसेटिका ; आर्जेण्ट-नाई ; काकुलस-इन, क्रोकस, कुरारी- ग्रेफ, इग्ने, पल्स, टैबाकम)। बहुत भुलक्कड़ ; उसमें आत्म-निर्भरता बिलकुल नहीं रहती। अपरिचित मनुष्योंसे डर मालूम होता है,—किसीके आनेपर वह दौड़कर भाग जाता है और छिप रहता है (अपने बन्धु-बान्धवोंसे मिलना नहीं चाहता=आर्स, क्लिमेट, कैलि-फास, सिपि, स्टेन, थूजा ; मनुष्योंका भय—जहाँ अधिक मनुष्य रहते हैं, वहाँ जाना नहीं चाहता। अरम, साइक्यूटा, कैलि-बाई, लाइको, सिपिया, सलफर)। सोचता है, कि लोग उसके दोष-गुणपर विचार कर रहे हैं। मानो लोग उसका उपहास कर रहे हैं (कोई उसका पीछा करता है=ऐनाक, कैलि-ब्रोम ; मानो शत्रु उसपर अत्याचार करते हैं=सिङ्कोना, कैलि-ब्रोम, लैके)। बच्चा घरके कोनेमें बैठ जाता है—खेलना नहीं चाहता। बच्चा बहुत भुलक्कड़ और अमनोयोगी ; सिखानेपर सीख नहीं सकता, क्योंकि उसे कुछ भी याद नहीं रहता। जड़ बुद्धि होनेका उपक्रम। [बैसिलाइन, थाईराइडिन] अपने रोगके विषयमें सोचने या याद करनेसे रोग बढ़ जाता है [रोगके विषयमें सोचनेपर घटना=कैम्फो, कैल्के-फास, कास्टि हेलोन, मिडोर, ऐसिड-आकसेल, पेट्रोल, आक्साइट्रोप ; अनमना रहनेपर अच्छा रहता है=हेलोन, फाइपर-म्यू]

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; धूपमें खड़े होनेपर माथेमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। माथा उठा हुआ मालूम होता है,—जिधर माथा झुकाता है उसी तरफ ढुलक जाता है [ऐको, ऐमोन-कार्ब, बेल, कार्बो-ऐन, सिङ्कोना, साइक्यू, हायो; नक्स-मस, नक्स-वोम, रास, सिपि]। केश झड़ जाना या टाक पड़ना [कैलि-कार्ब, ऐसिड-फ्लू, ऐसिड-फास,]। चारों ओर कुहासे भरा दिखाई देता, सवेरे और भोजनके बाद [ऐल्यू, बेल, बेराट्टा-आर्स, कास्टि, ऐसिड-फास, रूटा]। मस्तिष्कका जड़ भाव ; [बेल, नक्स, ओपि] ; दुधिया पपड़ी या बच्चोंके माथेका एक तरहका फोड़ा [Crust Lactia], सूखी या रस-भरी पपड़ी जमना ; खुजली और जलन, केश उड़ जाना ; इसके साथ ही गर्दनकी [Cervical] गांठका फूलना [वायोला-ट्राई, विङ्कामाई, सिपिया, लाइको, कैल्के-म्यू]। आंखोंमें जाला (कैल्के-फास, सिलि)

कान।—छींकने या निगलने अथवा टहलनेमें कानमें "कड़ाक" सी आवाज होती है (कैल्के, मैङ्ग, मस्कास, सिलि)। श्रवण-शक्तिका घट जाना (-पश्चात नाली रुकनेकी वजहसे=मार्क, हाइड्रास ; चोटके कारण=चिनिन-सल्फ ; गड़बड़ीमें अच्छा सुन पड़ता है=ग्रेफा, ऐसिड-नाई ; इसके साथ ही कानमें आवाज और सरमें चक्कर आना=नेट्र, सेलि, सिङ्कोना ; बहुत दिनोंतक पीव निकलनेके साथ=हूलेप, कोरैल ; खूनमें विकार होनेकी वजहसे=फेरम-फास और फेरम-पाइक)। कानके चारों ओरकी ग्रन्थि सबका फूलना और दर्द। नाक साफ करनेके समय कानमें आवाज (कास्टि. फास, ऐसिड-फास)

नाक।—नासा-रन्ध्र सूखा, बार बार छींक ; ऊपरी ओंठ और नाकमें सूजनके साथ सर्दी। गाढ़ी पीली आभा लिये श्लेष्माका स्राव (कैल्के, क्रियो, लाइको, फास, पल्स, सिलि)। बार बार रक्त-स्राव (मिलि-फोल, फास, फेरम-फास ; बूढ़ोंका बार बार=कार्बो-वेज) पपड़ी पड़ा जखम (ग्रेफ, ऐसिड-नाई, ऐसिड-फास) ; नासा-पुट।

मुख-मण्डल।—मुखमण्डल फूला मालूम होता है। मुखमण्डलकी त्वचामें खींचन मालूम होती है। मानो मकड़ेका जाल उस पर लगा हुआ है (दाहिने गालपर=बोरैक्स ; नाकके ऊपर ब्रोमियम ; कपालमें=ग्रेफ ; मुखमण्डल=रैनान ; स्लिरैटस)।

मुख-विवर।—नींद खुलनेपर मुँहमें सूखापन मालूम होता है, और प्यास लगती है। मसूढ़ेसे प्रायः खून बहा करता है (मार्क-सोल)। रजः प्रकाशके पूर्व दाँतमें दर्द (आर्स)—दाँतमें दर्दकी बात मनमें आते ही दाँत में दर्द पैदा हो जाता है और उधर ध्यान न देने पर घटना। समूचे मुख-विवर में प्रदाह पैदा करनेवाले रस भरे दाने (Vesiclo) भरे रहते हैं (एमोन-मयू, ऐम्ब्रा, मैग-सल्फ, मैंगे, मार्क, नेट्र-मयू, नक्स, सलफर)। रोज सवेरे मुंह बेस्वाद हो जाता है। [ब्राई, कैमो, मार्क, पलस, वेरैट, ऐल]। जीभकी पक्षाघातकी वजहसे बोलनेकी शक्तिका घट जाना [कास्टि, जेलस, प्लम्ब, अस्पष्ट बात=इस्कू-लबेरा]। जीभके आगे कुरकुरी और जलन [वैप, आर्जेण्ट-नाई, फास, इस्कुलस-हिप)। जीभके बीचमें, अगले भागमें और तल-देशमें रस-भरे दाने [Vesicles]।

गलेके भीतर।—थोड़ी भी सर्दी लगनेपर गलेमें जखम ; थोड़ी भी सर्दी लगते न लगते गल-ग्रन्थि [Tonsils] का प्रदाह और उनमें पीव पैदा

हो जाना [हिपर, सोराइन]। जलीय पदार्थ के सिवा और कोई चीज निगल नहीं सकता [बैप, सिलि, बेपटीसिया देखो]। अलिजिह्वा-बढ़ी हुई; थोड़ी भी सर्दी लगनेसे ही बढ़ना [ऐल्यू]। निम्न हनुतलस्थ (Sabmaxillary) ग्रन्थियोंका फूलना—निगलनेमें तकलीफ मालूम होना; घूंट लेनेमें दर्दका बढ़ जाना। पैरका पसीना रुकनेके कारण, गल-ग्रन्थिकी बीमारी (ग्रैफ, सोराइन, सैनिक, सिलि)

पाकाशय।—भूख रहती है, पर रुचि नहीं रहती (ऐल्यू, फेर, लाइको, नेट्र-मयू, ओपि, रास, सिलि); पाकाशयके भीतर पत्थरकी तरह कोई भारी चीज है ऐसा मालूम होना, डकार आनेपर आराम मालूम होना (ब्राई, नक्स, पल्स)। खाते ही दर्द और भार मालूम होना और पेटके ऊपरी प्रदेशमें (Pitof-stomach) स्पर्शका सहन न होना (कैलि-कार्ब),—गर्म चीजें खानेसे बढ़ना।

अंत्राशय।—पेट कड़ा, वायुसे भरा और दर्द भरा; शय्यापर करवट बदलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो आंत आदि समस्त चीजें उसी ओर ढुलक पड़ीं। बच्चोंको बार बार अन्त्रशूलका पैदा हो जाना। मध्यान्त्र त्वचाकी सब ग्रन्थियोंका (Mesenteric gland) फूलना। कब्जियत, मलमें कड़ापन—कड़ा गाँठ गाँठ मल। पेशाब करनेके समय बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ता है। मलान्त्र (Rectum) के बीचमें सुरसुरी और मलद्वारसे थोड़ा थोड़ा तरल मल निकलना। बड़े केंचुएकी तरह कृमि निकलना (सिना, सैण्टोनाइन)।

पुं-जननेन्द्रिय।—बच्चोंके अण्डकोष और मूत्राधार-मुखगामी ग्रन्थिका (Prostate-Glands) बढ़ना और उसमें लचीलापनका न रहना (आर्जेण्ट, नाई, थूजा)। प्रबल रमणेच्छा। पर शिश्न शिथिल और बहुत जल्दी वीर्यपात हो जाता है। सङ्गमके समय रेतस्खलन होते न होते सो जाता है। मुष्क और दोनों उसके बीचवाले अंगोंकी खाल उधड़ जाना और उस स्थानसे रस-स्राव होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजःप्रकाशके पहले पाकाशय और पुट्ठेमें दर्द मालूम होना; आर्त्तव आरम्भ होनेके कुछ पहले प्रदर-स्राव।

श्वास यंत्र।—कच्छु-विष दूषित धातु (Psoric) बच्चेको जन्मसे ही खाँसी; गलग्रन्थि (Tonsils) या अलिजिह्वा (Uvula) का बढ़ना।

सामान्य सर्दी लगनेसे ही बढ़ना (ऐल्यू) ; सूखी ; श्वास रोधक खाँसी। वायु-नलीके मुखपर ऐसा मालूम होता है मानो धुँआँ घुस गया है। हड्डोंकी श्वास-नाली रोध करनेवाली सर्दी,—फ़ेफड़ेका पक्षाघात होनेका उपक्रम। तालुके बीचमें रूखड़ापन और खुजलीके कारण होनेवाली खाँसी ; सन्ध्याके समय और आधी रातके समय बढ़ना। खाँसनेपर वक्षस्थलमें दर्द मालूम होता है। खाँसी का बढ़ना=संध्यासे आधी रात तक ; दोनों पैरोंमें ठण्ढी लगनेपर ; शारीरिक व्यायामके अन्तमें ; बाईं करवट सोनेपर (लाइ, फेरिस, फास, रास) ; ठण्ढी हवा लगने और खाँसीके विषयमें सोचनेपर।

हृत्पिण्ड।—कलेजा धड़कना,—बाईं करवट दबाकर सोनेपर (डेफनी, नेट्र-म्यू, पलस) ; हृत्पिण्डके पास दर्द मालूम होना, बहुत बेचैनी इस विषयकी सोचनेसे ही रोगका बढ़ जाना। (ऐल्यू, ऐसिड-आक्ज़ेल)

गर्दन और पीठ।—गर्दनकी गाँठोंका कड़ापन और फूलना और उनमें पीव पैदा होनेका लक्षण। ग्रीवा देशीय मेदार्बुद (Fatty Tumors) अर्बुदके नीचे भयङ्कर जलन मालूम होना। पृष्ठ फलकके बीचमें चोटकी तरहसे दर्द। त्रिकास्थि या पश्चात कटिके नीचेवाले अंशके (Sacrum) बीचमें दर्द,—बैठनेके समय बहुत तकलीफ। श्रोणि या नितम्ब देशमें अकड़नकी वजहसे रोगी बैठ नहीं सकता।

प्रत्यङ्ग।—खड़े होनेपर दोनों पैर काँपा करते हैं,—कुछ पकड़े बिना स्थिर होनेपर खड़ा नहीं हो सकता। दोनों पैरमें खींचन मालूम होना मानो कण्डरा या पेशीका अगला भाग संकुचित हो गया है (ऐमोन-म्यू, कास्टि),—खड़े होनेपर बढ़ना और सोनेपर घटना। नींदके समय शरीरकी सब पेशियोंका सिकुड़ना और फैलते रहना (सोनेपर पेशियोंका फड़कना बन्द हो जाता है—ऐगार) । बदबूदार पैरका पसीना,—पैरकी अंगुली और तलवे जखमसे भरे। गुल्फके नीचे पसीना होना (ग्रैफा, सोराइन, सिलीराइन, सैनिक सिलि)। शीत एकदम सहन नहीं होता (केल्के, कैलि-कार्ब, सोराइन) निम्न प्रत्यङ्गोंमें जलन। एक ही पार्श्वमें पसीना (ऐम्ब्रा, ऐग्नौरैन, नक्स, पलस ; बाएं पार्श्वमें=पलस, फास ; जिस करवट सोता है, उसी पार्श्वमें=ऐको, ऐसिड-नाई, जिस करवट सोता है, उसके विपरीत पार्श्वमें=ऐको, ऐसिड-नाई ; बेञ्जिनम ; खुले अनावृत अंगमें=थूजा]। दाद (बैसिलाइन)।

निद्रा।—निद्रावस्थामें बोलता है; बार बार नींद खुल जाती है;—बहुत जलन मालूम होती है। भयानक सपने देखकर पसीनेसे भर जाता है।

वृद्धि।—रोगके विषयमें सोचनेपर; रोगवाली करवट सोनेपर; भोजनके बाद; रोगवाली जगह धोनेपर।

घटना।—निर्मल वायु सेवनके लिये टहलनेके समय और सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—सोराइनम, सलफर और बेसिलाइनमके पहले और बाद ज्यादा फायदा करता है। गलकोषका प्रदाह पैदा होनेके लक्षणोंमें बेराइटा कार्बके बाद सोराइनम इस दोषको एकदम आराम कर देता है। —(ऐल्यू, ऐण्टि-टार्ट, कैल्के-आयोड, कास्टिकम, कैमो, चायना, डालकेमेरा, ऐसिडफ्लू, सिलि, आयोड, नैके, लाइको, मार्क, नेट्रम, फास, पल्स, सल्फ।)

दोषघ्न।—ऐण्टि-टार्ट, बेलाडो, डालके, मार्क, जिङ्कम। कैल्केरियाके बाद इसका व्यवहार नहीं होता।

शक्ति।—३ री दशमिकसे २०० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—४१ दिन।

बेराइटा आयाडेटा।

(BARYTA IODATA)

दूसरा नाम।—बेरी आयोडाइडम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—स्तनका कर्कटीया जखम; कैन्सर या कर्कट रोग; ग्रन्थियोंका बढ़ना; अर्बुद।

उपयोगिता और आभास।—गलकोष प्रभृति ग्रन्थियोंका फूलना और कड़ापन; गर्दनकी गांठें सब अर्बुदका आकार धारण कर लेती हैं और दोनों अण्डकोषोंमें बहुत दूरतक फैली हुई सूजन तथा कड़ापन पैदा करता है। अवस्थाकी वृद्धिके साथ ही साथ दैहिक और मानसिक उन्नति नहीं होती।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐकोनाइटम लाइकोटोनम (Aconitum lycotonum)—ग्रीवा-देशकी और बगलकी और स्तनकी सब गांठें फल

जाती हैं। इसके अलावा ग्रन्थि-मण्डलोंके रोगादिमें लेपिस ऐल्बम (गर्दनकी) कोनायम ; (स्तनको) ; मार्कु रियस आयोडेटम ; (वंचण प्रदेशकी Inguinal) और कार्बो-ऐनिमेलिस (बाघी—जब कड़ी हो जाती है,पर उसमें पीब सञ्चय नहीं होता) ; कैल्केरिया आयोडेटा—बदरङ्ग और शिथिल मांसवाले व्यक्तिका बहुत दिनोंको ग्रन्थियोंका फूलना), एरम-ट्राइफिलम ; (निम्न हनुको नीचेकी ग्रन्थिका फूलना कैलि आयोडेटा) और गल-ग्रन्थिकी (Thyroid gland) विवृद्धिमें—थाइरायडिन और आयोडेटम सबसे ज्यादा लाभदायक है। गलकोष प्रदाह [Tonsilitis]—दाहिने पार्श्वके गलकोषमें प्रदाह और सूजन होनेपर,—गुयाइकम ; श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर रस भरे दाने निकलनेके साथ—फाइटोलैका ; दाहिने कोषमें आरम्भ होकर बाएं कोषमें फैलनेपर—लाइको-पोडियम और बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलनेपर—लैकेसिस।

शक्ति।—२ री दशमिकासे ३० शततमिक क्रम।

बैराइटा म्यूरियेटिका।

[BARYTA MURIATICA]

दूसरा नाम।—क्लोराइड आव बेरियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अर्क।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—धमनीमें अर्बुद ; गुह्यद्वारमें फोड़ा ; दमा ; अकड़न ; बहरापन ; अजीर्ण ; ग्रन्थियोंका फूलना ; प्रमेह ; नया मेह ; श्वेत-प्रदर ; उन्माद ; कर्णमूल प्रदाह ; कामोन्माद ; कास ; स्राव ; पक्षाघात ; गण्डमाला ; वन्ध्यत्व ; कर्ण-पटहका प्रदाह ; अर्बुद ; कर्ण-मूल-ग्रन्थि-प्रदाह ; अण्डकोषकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान लक्षण है—अन्ननली के मुंहके सङ्कोचनकी वजहसे किसी चीजके निगलनेमें तकलीफ और दर्द (नैजा, माका-कोर, जेल्स) मालूम होना और गलनालीमें ऐसा मालूम होना मानो कोई ठेपी लगी हुई (plugged) (ऐनाक) है ; धमनीकी (artery) सूजन (aneurism)—शिरा (vein) की varicosis— वेरिकोसिस कहते हैं) और बहुत दिनोंकी गलकोषकी विवृद्धिमें यह विशेष

फायदा किया करता है। इसकी क्रिया जननेन्द्रियपर रहनेके कारण स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही कामोद्रेक हुआ करता है। रक्त-संचालनमें व्याघात पैदा करता है, इसलिये इसके द्वारा शरीरका बरफकी तरह ठण्ढा मालूम होना और इसके साथ ही पक्षाघात पैदा हुआ करता है।

लक्षणावली ।

कान ।—कर्ण-पटहका प्रदाह (Tinnitis Aurium), कानमें भिन्न भिन्न आवाज (ऐमोन-कार्ब ; कास्टि, कोना, चिनिन-सल्फ ; मस्कस, नैट्र-म्यू, सिलि, सलफर)। चिबाने, निगलने या छींकनेके समय कानमें "कड़ाक" से आवाज हो जाती है या सों सों शब्द होता है (कैल्‌के, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम ; खाँसनेके समय (ऐब्रा); कर्णमूलीय ग्रन्थिका फूलना। कर्णशूल ठण्ढा पानी धीरे धीरे थोड़े परिमाणमें पीनेपर घटना। बदबूदार पीवका स्राव (कैलि-मयू, ऐसिड-नाई)।

गलेमें ।—श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले मनुष्योंको बहुत दिनोंका गलकोष-का बढ़ना—निगलनेके समय दर्द मालूम होना और गलनालीमें ऐसा मालूम होता है, मानो ठेपी बैठी हुई है। अन्ननालीका मुँह और कर्ण-पश्चान्नालीको पक्षाघात जैसी अवस्था।

पाकस्थली ।—अरुचि। सवेरे वमन और उसके साथ ही ओकाई। ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयसे वक्षमें और माथेमें गर्मी चढ़ रही है, वमनके साथ पाकाशयमें जलन। पेटके ऊपरी प्रदेशमें प्रदाह और उसपर बीचबीचमें काले दाग दिखाई देते हैं। पाकस्थलीमें गड़-बड़ी मालूम होना, जैसा क्रमि रहनेपर मालूम होता है।

उदर ।—उदरमें टपक (Pulsations—इग्ने, कैलि-कार्ब ; सब शरीरमें,—खासकर उदरमें = सेलिनियम ; पेटके ऊपरी प्रदेशमें = कैलेड, रास, ऐण्टि-टार्ट ; तलपेटमें—सिना ; बाएँ कुक्षि-प्रदेशमें = ग्रैफो, रैनानक्यू, रूटा ; दाहिने कोषमें = कोलो, सिपि ; दाहिने पार्श्वमें = सिङ्कोना ; नाभि-प्रदेशमें = ऐको, ऐलो ; वंक्षण प्रदेशमें = लाई, सलफर), क्लोम-ग्रन्थिमें (Pancreas) सूजन मिला कड़ापन (कैलि-आयोड, मार्क-सोल) ; पुट्ठेकी ग्रन्थिका फूलना (मार्क-आयोड, बेडियेगा, कैलि-आयोड)।

जननेन्द्रिय ।—स्त्री-पुरुष दोनों ही कामोन्माद-ग्रस्त हो पड़ते हैं (आत्महत्याकी प्रवृत्तिके साथ कामोन्माद=ओरिगेनम ; सद्य प्रसूताओंका=प्लेटिना ; पुरुषोंका=ऐसिड-नाई, कैन्थरिस, फास, हाइड्रोफोब ; शराबियोंका नक्स-वोम ।)

सर्वाङ्गीन ।—अकसर मस्तिष्क और मेरुमज्जामें मेद पैदा हो जाता है (प्लम्बम, प्लम्बम-आयोड, आरम-म्यूर)। शरीर बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है और पक्षाघातग्रस्त रहता है। शरीरके कितने ही स्थानोंपर क्षण भरके लिये पैदा होनेवाला और फिर तुरन्त गायब हो जानेवाला दर्द, अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका काँपना और हाथकी अँगुलीका बढ़ना। अँगुलीकी भादाहिक सूजनके साथ बाहुका सुन्न हो जाना और पेशियोंका फड़कना (थूजा) और सुन्न करनेवाला पक्षाघात।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—बैराइटा-कार्ब, प्लम्बम-आयोड, आरम-म्यू, सिनिन-सल्फ ; नैजा, इग्ने ।

तुलनीय ।—कोनायम (उदर-ग्रन्थिका कड़ापन) ; आयोड ; काली आयोड ; आदरिस, (क्लोम-ग्रन्थि), सेलेन (पेटमें टपक), वमन—ऐथूजिन्थि द्वारा प्रतिषेधित होता है।

शक्ति ।—१म दशमिक से ३० शततमिक क्रम ।

वेलेडोना ।

(BELLADONA)

दूसरा नाम ।—सोलेनम मैनियेकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे वृक्षमें जब फूल खिलना आरम्भ होता है, उस समय उससे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—फोड़े और मुंहासे ; अस्थापन ; संन्यास ; व्रण ; मस्तिष्ककी बीमारियाँ ; दूषित फोड़ा ; शूल ; कब्जियत ; अकड़न या तड़का ; खांसी ; घुँड़ी (काली) खांसी ; अवसाद ; अतिसार ; रक्तामाशय ; आँखकी बीमारियाँ ; कानकी बीमारियाँ ; आन्त्रिक ज्वर ; मृगी ; विसर्प ; उत्तेजना ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; गलगण्ड ;

फायदा किया करता है। इसकी क्रिया जननेन्द्रियपर रहनेके कारण स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही कामोद्रेक हुआ करता है। रक्त-संचालनमें व्याघात पैदा करता है, इसलिये इसके द्वारा शरीरका बरफकी तरह ठण्डा मालूम होना और इसके साथ ही पक्षाघात पैदा हुआ करता है।

लक्षणावली।

कान।—कर्ण-पटहका प्रदाह (Tinnitis Aurium), कानमें भिन्न भिन्न आवाज (ऐमोन-कार्ब ; कास्टि, कोना, चिनिन-सल्फ ; मस्कस, नैट्र-म्यू, सिलि, सलफर)। चिबाने, निगलने या छींकनेके समय कानमें "कड़ाक" से आवाज हो जाती है या सों सों शब्द होता है (कैल्के, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम ; खाँसनेके समय (ऐम्ब्रा); कर्णमूलीय ग्रन्थिका फूलना। कर्णशूल ठण्डा पानी धीरे धीरे थोड़े परिमाणमें पीनेपर घटना। बदबूदार पीवका स्राव (कैलि-मयू, ऐसिड-नाई)।

गलेमें।—श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले मनुष्योंको बहुत दिनोंका गलकोष-का बढ़ना—निगलनेके समय दर्द मालूम होना और गलनालीमें ऐसा मालूम होता है, मानो ठेपी बैठी हुई है। अन्ननालीका मुँह और कर्ण-पश्चान्नालीकी पक्षाघात जैसी अवस्था।

पाकस्थली।—अरुचि। सवेरे वमन और उसके साथ ही ओकाई। ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयसे वक्षमें और माथेमें गर्मी चढ़ रही है, वमनके साथ पाकाशयमें जलन। पेटके ऊपरी प्रदेशमें प्रदाह और उसपर बीचबीचमें काले दाग दिखाई देते हैं। पाकस्थलीमें गड़-बड़ी मालूम होना, जैसा कृमि रहनेपर मालूम होता है।

उदर।—उदरमें टपक (Pulsations—ड्रग्ने, कैलि-कार्ब ; सब शरीरमें,—खासकर उदरमें = सेलिनियम ; पेटके ऊपरी प्रदेशमें = कैलेड, रास, ऐण्टि-टार्ट ; तलपेटमें—सिना ; बाएँ कुक्षि-प्रदेशमें = ग्रैफी, रैनानक्यू, रूटा ; दाहिने कोखमें = कोलो, सिपि ; दाहिने पार्श्वमें = सिङ्कोना ; नाभि-प्रदेशमें = ऐको, ऐलो ; वंक्षण प्रदेशमें = लाई, सलफर), क्लोम-ग्रन्थिमें (Pancreas) सूजन मिला कड़ापन (कैलि-आयोड, मार्क-सोल); पुट्ठेकी ग्रन्थिका फूलना (मार्क-आयोड, बेडियेगा, कैलि-आयोड)।

जननेन्द्रिय ।—स्त्री-पुरुष दोनों ही कामोन्माद-ग्रस्त हो पड़ते हैं आत्महत्याकी प्रवृत्तिके साथ कामोन्माद=ओरिगैनम ; सद्य प्रसूताओंका=टिना ; पुरुषोंका=ऐसिड-नाई, कैन्थरिस, फास, हाइड्रोफोब ; शराबियोंका क्स-बोम ।·)

सर्वाङ्गीन ।—अकसर मस्तिष्क और मेरुमज्जामें मेद पैदा हो जाता है ग्रम्बम, प्लम्बम-आयोड, अरम-म्यूर)। शरीर बरफकी तरह ठण्ढा मालूम होता है और पक्षाघातग्रस्त रहता है। शरीरके कितने ही स्थानोंपर क्षण रके लिये पैदा होनेवाला और फिर तुरन्त गायब हो जानेवाला दर्द, अङ्ग-त्यङ्गोंका काँपना और हाथकी अँगुलीका बढ़ना। अँगुलीकी प्रादाहिक सूजनके साथ बाहुका सुन्न हो जाना और पेशियोंका फड़कना (थूजा) और सुन्न करनेवाला पक्षाघात।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—बैराइटा-कार्ब, प्लम्बम-आयोड, अरम-म्यू, चिनिन-सल्फ ; नैजा, इग्ने ।

तुलनीय ।—कोनायम (उदर-ग्रन्थिका कड़ापन) ; आयोड ; काली आयोड ; आइरिस, (क्लोम-ग्रन्थि), मेलेन (पेटमें टपक), वमन—ऐबूसिन्थि द्वारा प्रतिषेधित होता है।

शक्ति ।—१म दशमिक से ३० शततमिक क्रम।

बेलेडोना।

(BELLADONA)

दूसरा नाम ।—सोलेनम मैनियेकम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे वृक्षमें जब फूल खिलना आरम्भ होता है, उस समय उससे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—फोड़े और मुंहासे ; अन्धापन ; संन्यास ; व्रण ; मस्तिष्ककी बीमारियाँ ; दूषित फोड़ा ; शूल ; कब्जियत ; अकड़न या तड़का ; खांसी ; घुंड़ी (काली) खांसी; अवसाद ; अतिसार ; रक्तामाशय ; आँखकी बीमारियाँ ; कानकी बीमारियाँ ; आन्त्रिक ज्वर ; मृगी ; विसर्प ; उत्तेजना ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; गलगण्ड ;

सन्धिवात ; अर्श ; शिरका दर्द ; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय ; जलातङ्क ; रक्ताधिक्य ; बहुव्यापक सर्दी ; फेफड़ेकी बीमारी ; दुष्ट-व्रण ; रतौंधी या रात्रग्न्धता ; कामोन्माद ; पक्षाघात ; डिम्बाधार प्रदाह ; जरायु प्रदाह ; फेफड़ेके वेष्टका प्रदाह ; फुसफुस प्रदाह ; गर्भिणी रोग ; सूतिकोन्माद ; आमवात ; आमरक्त ; छोटी माता ; नींदका विकार ; मूत्र-क्लेश ; कांखना ; प्यास ; अण्डकोषकी बीमारी ; गलेका जखम ; गुटिका रोग ; जखम ; जरायुकी बीमारी ; गो-बीजके टीकाका दुष्परिणाम ; सरमें चक्कर आना ; हूप खाँसी ; कृमिकी वजहसे ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पित्त प्रधान, स्थूलकाय और रस-प्रधान धातुवाले मनुष्य और जो बालक बालिकाएँ और स्त्रियाँ सुन्दर केश-वाली हों तथा जिनकी आँखें पीली हों, जो सहजमें ही उत्तेजित हो जाती हों अथवा जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती हो, जिनके चेहरे और माथेमें सहजमें खून चढ़ जाता हो, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। स्नायु-मण्डलके सभी रोगोंमें बेलेडोनाका अधिकार है। माथेमें रक्तका दवाव बढ़ जाना, मस्तिष्कमें विकार, उन्मत्तता, प्रलाप, भ्रम देखना, पेशियोंका फड़कना और ग्रन्थि-मण्डली का फड़कना और ग्रन्थि मण्डलीका प्रदाह—ये कई इसकी क्रियाके प्रधान फल हैं। लाल चेहरा, लाल आँखें, उत्ताप और जलन-भरी देह, ग्रीवा देशीय (Carotid) धमनीकी सूजन और टपक, इन्द्रियोंमें चेतनाकी अधिकता, विकार, प्रलाप, बेचैन नींद, नींद न आना, मुख-विवरका सूखापन, जल-भीति वगैरह इसके निर्णायक लक्षण हैं। इसके कई निर्णायक लक्षण संक्षेपमें दिये गये हैं :—(१) शिरमें खूनका अधिक सञ्चय होना, मुखमण्डल उत्ताप-युक्त। आँखें चढ़ीं, टकटकी लगाकर देखना, गर्दनकी (Carotids) धमनीमें टपक का दर्द और बहुत अधिक मानसिक उत्तेजना। (२) सभी शोणित मार्गमें टपक, रोगीको सोनेके समय शिराओंमें धमकका शब्द सुन पाता हैं और इसलिये उसे नींद नहीं आती। (३) देखने, सुनने (दर्शन, श्रवण) आदि सभी इन्द्रियोंमें उत्तेजना (Irritation),—आँखोंमें रोशनी सहन नहीं होती, जरा भी ऊँची आवाज कानोंके लिये असह्य हो जाती है और नाकमें नाना प्रकारके गन्धोंकी कल्पना होती है। (४) प्रचण्ड प्रलाप,—रोगी भागनेकी चेष्टा करता है ; जो सामनेमें रहता है, उसीको दाँत काटने या मारनेकी चेष्टा करता है और जो कुछ सामने पाता है, उसे ही तोड़ फोड़ डालनेकी चेष्टा करता है। (५) सरमें दर्द,—शोणित सञ्चयकी अधिकताकी वजहसे (Conjestive),—शिरामें

टपक और पूर्णताका मालूम होना ; रोशनीमें एकाएक माथा हिलानेपर शब्द और सोनेसे हृद्धि=दबाने और अधलेटी अवस्थामें आराम मिलना। सरमें दर्द, केश कटवाने और तेज धूप लगनेपर। (६) सरमें चक्कर आना,—झुकने—पीछे या बाईं ओर गिर जानेका उपक्रम। (७) जीभ,—सफेद रङ्गकी और दोनों किनारे लाल ; लाल या ऊंचे लाल कण्टकोंसे भरे (Strawberry like) (८) गलेके भीतर खाल उधड़ जाना,—खासकर दाहिने पार्श्वमें ; बार बार लार निगल जानेकी इच्छा ; निगलनेमें कष्ट, विशेषकर जलीय पदार्थ,—जलीय पदार्थ निगलनेके समय वे प्रायः नाककी राहसे बाहर निकल जाते हैं। (८) पेट गर्म, फूला हुआ,—कतरनेकी तरह दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो आंतोंको कोई पकड़कर निचोड़ रहा है,—बहुत दर्द होता है,—छूने, दबाने या एकाएक धक्का लग जानेसे यहां तक कि शय्याका वस्त्र भी लगनेसे दर्द बढ़ जाता है और रोगी अनुभव करता है, कि दर्द बढ़ गया। (१०) मल पतला और हरा ; या चाय, खड़ियाकी तरह थक्का थक्का। (११) रमणियोंकी प्रसवके दर्दकी तरह दर्द और वस्तिगह्वरके यंत्रोंका बड़े जोरसे नीचेकी ओर खिंचना—मानो सभी पदार्थ योनि-मार्गसे बाहर निकल जायंगे। (१२) जरायुका स्राव (Metrorrhagia), खूब गर्म और चमकीला लाल रङ्गका। ऋतु,—असमयमें ही ऋतु हो जाता है,—स्राव बहुत ज्यादा। (१३) खांसी,—खुस-खुसी खांसी;—सूखी और वायुनलीमें खुजलाहट ; घं घं शब्द करनेवाली खांसी, शरीरको हिला देनेवाली और आक्षेपिक (Convulsive) खांसी ; स्वरनालीमें (Larynx) दर्द और क्षय हुई त्वचाको बतानेवाली खांसी। हृद्प्रदेशमें ऐसा मालूम होना मानो (Bubbling) बुलबुले उठ रहे हैं। (१४) शरीर की त्वचा गर्म और सूखे उद्भेद आदि एक साथ मिल जाते हैं या एक ही आकारके रहते हैं, उनका रङ्ग लाल, अंगुलीसे दबानेपर अदृश्य हो जाते हैं और अंगुली हटानेपर फिर पैदा हो जाते हैं। (१५) दर्द धीरे धीरे बढ़ता है और क्रमसे बहुत तेज होकर, एकाएक गायब हो जाता है और फिर इसी भावसे पैदा हो जाता है। (१६) दाहिने अंशमें लक्षणोंका अधिक पैदा होना।

लक्षणावली।

मन।—जीवनसे विराग और पानीमें डूबकर आत्महत्या करनेकी इच्छा। अस्पष्ट भावसे कुछ बका और बुदबुदाया करता है और शय्याको नोचा करता है, मानो किसी चीजकी खोज रहा है। (आर्निका, हेलियो.

हायोसा, जिङ्कम-म्यूर) रोगी अपने मनमें समझता है कि यह भूत प्रेत, भयङ्कर मूर्त्तियाँ और नाना प्रकारके कीट, पतङ्ग, काला कुत्ता वगैरह देखता है (स्ट्रैमो; असंख्य सर्प घरमें प्रवेश कर रहे हैं,—लैक-कैन)। काल्पनिक वस्तुका भय,—भागनेकी चेष्टा करता है। भ्रम देखना। प्रचण्ड विकार,—दांत काटना, लोगोंके बदनपर थूक देना, मारता है और कपड़े फाड़ डालता है (स्ट्रैम); भागनेकी चेष्टा करता है (हेलिबो); रोशनी और आवाज बिलकुल ही सहन नहीं होती। विकारावस्थामें माथा गर्म और दर्द-भरा हो जाता है। उद्दीप्त और उन्मादकी तरह दृष्टि, शून्य दृष्टिसे एक ओर देखा करता है, पुतली फैली हुई, नाड़ी पुष्ट और उछलती हुई; मानो छोटा लोहेका एक गोला चिकित्सकके हाथमें धक्का दे रहा है; मुख-विवर सूखा; मल धीरे धीरे निकलता है और पेशाब रुक जाता है। नींद आनेसा लगता है, पर नींद नहीं आती (कैमो, ओपि)। कुत्तेकी तरह गरजना और शब्द करना। बोलना नहीं चाहता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ बाईं ओर गिरनेका उपक्रम—मानो उसके चारों ओरके सब पदार्थ घूम रहे हैं (कोना, ब्राई; आर्नि; बैलि, नक्स, वेरेट)—माथा झुकानेपर (नक्स, पल्स, सलफर, लाई, पेट्रोल); झुके रहनेपर उठने केसमय=(ब्राई,ग्रैफा, पेट्रोल,रास); रातमें सोनेमें करवट बदलने के समय, अवस्था परिवर्त्तन करते ही सरमें चक्कर आना; मस्तक और मुख-मण्डलमें रक्तका अधिक सञ्चय होना (ऐमिल, ग्लोनोइन; मिलिलोट)। सरमें दर्द—रक्तसञ्चयकी अधिकताकी वजहसे—लाल मुखमण्डल और मस्तिष्कमें ग्रीवा-देशीय धमनीकी टपक मालूम होना (Pulsation of Carotids) (मिलि-लोट, क्रियो, पेट्रोल; सैङ्गिविन, सिपि; सिलि, सल्फ, वेरेट; टोङ्गो); एकाएक शरीर;हिलाने, रोशनी, सोने; परिश्रम करने वगैरहसे बढ़ना। कसकर बांधने; कपड़ा ओढ़ लेने और ऋतुके समय घटना। तकियेमें सर गड़ाया करता है (एपिस, हेलिबो; पोडो)। सरमें दर्द—दाहिनी ओर रहता है और केश कटवानेसे बढ़ जाता है।

आँख।—चमकीली और टकटकी लगी दृष्टि; पुतली फैली हुई; आँख मानो बाहर निकल पड़ेगी। रोशनीका ज्ञान न रहना; आँख लाल और चेहरा फूला हुआ। सूखा मालूम होना; आंख हिलानेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो वे सूखी और अकड़ी हुई हैं। दीप-शिखाओंके चारों ओर आगका

गोला दिखाई देना। उसका थोड़ा अंश लाल रंगका दिखाई देता है; कभी कभी दीयेको लौ मानो किरणोंकी रेखाओंमें बैठी हुई सी मालूम होती है। आंखके सामने आगकी चिनगारियां दिखाई देती हैं; पलक तेजीसे गिरती है। रौशनीसे भय मालूम होता है। आंखमें तेज दर्द। भ्रम देखना। दो देखना। डेरा देखना (Squintinig=तड़का और दूसरी तरहके आक्षेपोंकी वजहसे=एमोन; ताण्डव (Chorea) रोग-ग्रस्त व्यक्तियोंका=हायो; कृमिकी वजहसे—सिना; स्पाइजि; किसी एक आंखकी तिर्यक दृष्टि—ऐल्यू; दाहिने आंख-की—ऐल्यू मेन)। पलकोंका आक्षेप या स्पन्दन (कोडोया; ऐगार, उज्ज्वल-दृष्टिके साथ—पल्स)। सारी चीजें अन्धकारसे ढकी मालूम होती हैं। रतौंधी (Hemeralopia=हेलिबो; दिनौंधी—मार्क, ऐको, सिपि, सिलि)।

कान।—दाहिनी कर्ण-मूल ग्रन्थिका फूलना और लाली, उसमें तेज दर्द मालूम होना (मार्क-कोर, पल्स)। छेदनेकी तरह (कैमो,नक्स, पल्स) कर्ण-पटह फूला और लाल मालूम होता है, ऊँची आवाज सहन नहीं होती—चौंक उठता है। श्रवण-शक्तिकी अत्यन्त प्रखरता या बधिरता।

नाक।—एकाएक सर्दी रुक जानेकी वजहसे तेज और उन्मत्त करने वाला सर दर्द। नाना प्रकारकी काल्पनिक चीजोंकी गन्ध आती है। नाक-का अगला भाग लाल, फूला, चमकीला, और जलन-भरा। लाल मुखमण्डलके साथ नासा-रन्ध्रसे रक्तस्राव। बाएं नासारन्ध्रमें खुजलाहटके साथ बार बार सूखी छींक। खूनभरा श्लेष्मा निकलता है। सूंघनेकी शक्तिका बहुत बढ़ जाना; बच्चा सोया सोया तकलीफसे चिल्लाता और रो उठता है।

मुखमण्डल।—चेहरा तमतमाया हुआ, लाल और गर्म; पर पसीना बिलकुल नहीं होता,—इसके साथ हो माथेमें भयंकर यंत्रणा। सब पेशियां अकड़नकी वजहसे सिकुड़ती और फैलती हैं और मुंह टेढ़ा पड़ जाता है। चेहरा और ऊपरी ओंठ फूला मालूम होता है।

मुख-विवर।—सूखा—दांतका दर्द,—भोजनके बाद ही धीरे धीरे बढ़कर धीरे धीरे घट जाता है (स्टैन); बच्चोंको दांत निकलनेके समय तड़का और ज्वर होता है (ज्वर-रहित होनेपर—मैग-फास), एकाएक आरम्भ होता है,—माथा गर्म और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे, जीभ लाल कांटोंसे भरी; फूली और प्रदाह-भरी; सूखी, लेपसे ढकी; अगला भाग सूखा और ठण्डा

मालूम होता है, विकारावस्थामें दाँतपर दाँत घसता है। तोतलाना (स्ट्रैम) दाँत खट्टे मालूम होना।

गलेके भीतर।—गलकोष-प्रदाह (Tonsilitis)—दाहिनी ओर अधिक मालूम होना; रोगवाली जगह बहुत लाल; पानी आदि पीनेके समय गलेमें दर्द; (एक बूंद पानी भी निगलनेके समय दर्द—आयोड, मार्क-आयोड; फेर): अन्ननालीका संकुचित मालूम होना (कैप); गलेमें मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ अड़ा मालूम होना (ऐनाक, लैके, बेराइटा-म्यूर) तालुमूल अकड़न भरा। बार बार लुक निगलनेकी इच्छा (लिसिन, मार्क-आयो-फ्लेव)। गलेके भीतरकी झिल्लीमें रुखड़ापन मालूम होना। जलन और रुखापन मालूम होना (सेबाड)।

पाकाशय।—पानी अच्छा न लगना। पानीसे भय (Hydrophobia=स्ट्रैम, हाइड्रोफोब); भूख न लगना (बेरिटयाना-लूट)। मांस और दूधसे अरुचि। पेटके ऊपरी प्रदेशमें सिकुड़न और फैलाव मालूम होना। सङ्कोचन और इस सङ्कोचनसे पैदा हुआ दर्द मेरुदण्डतक फैल जाता है। मिचली और वमन (इपिका, ऐपोमार्फिया)। आक्षेपिक हिचकी।

अंत्राशय।—उसमें स्पर्श सहन न हो और वायुसे फूला हुआ—जरा सा हिलने डोलनेसे दर्द बढ़ा मालूम होता है,—यहाँतक कि शय्या छू जाना या शय्यापर हिलने डोलनेसे भी दर्द बढ़ा हुआ मालूम होता है; चलनेके समय बड़ी सावधानीसे पैर रखना पड़ता है; दाहिने अन्धान्त्र-प्रदेशमें जहां स्थूलान्त्रके साथ सूक्ष्मान्त्र जाकर मिली है (Ileo Cœcal region) वहां दर्द;—जरा भी शय्याके स्पर्शसे दर्द बढ़ जाता है। दाहिने कोखसे बायें कोखतक फैली हुई स्थूलान्त्र (Transverse Colon) एक गोलेके आकारमें फूल जाती हैं—अन्त्रशूलके आक्रमणके समय ऐसा ही हो जाता है। मालूम होता है, कि कोई आँतोंको हाथसे पकड़कर मरोड़ रहा है—हिलाने या दबानेसे बढ़ना। खाँसनेके समय, छूनेसे, छींकनेपर और बाएँ पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्द।

मल।—आमातिसार सुलभ; पतला और हरे रङ्गका। कब्जियत,—मल खड़ियाके टुकड़ेकी तरह खण्ड खण्ड निकलता है। पाखाना फिरनेके समय शरीर सिहर उठता है। मलनालीमें डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा (एपिस);

है। शीतलाना (हैम)

[illegible])—दाहिने और
[illegible] यदि दिनके समय
[illegible] दर्द—पाखंड, माई-
[illegible] (क्रैप) ; [illegible]
[illegible], [illegible]-म्यूर)
[illegible] ([illegible],
मालूम होना। [illegible] और

[illegible] भय (Hydropho
[illegible]-म्यूट)। [illegible] और
[illegible] पेशाब मालूम होना।
[illegible] पैदा आता है।
[illegible] हिचकी।

[illegible] मालूम हुआ—ऐसा
[illegible] कि [illegible] है जाना
मालूम होता है ; [illegible]
[illegible] प्रदेशमें जहां
(Cæcal region) वहां
दाहिने कोखमें [illegible]
एक गोलेके आकारमें [illegible]
हो जाता है। मालूम होता
[illegible] है—हिलाने या दबानेसे
[illegible] [illegible] दर्द [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] हो [illegible]
[illegible] ; [illegible] हुआ [illegible]
[illegible] ([illegible])

पेशाब।—पेशाबकी [illegible]
मालूम होना ([illegible] होकर ही
[illegible] बूंद बूंद पेशाब निकलता है—
[illegible], [illegible]) । पेशाब [illegible]
[illegible] और [illegible]। [illegible] दर्द। [illegible]
निकलता है (दिनके समय [illegible]
[illegible] [illegible] ([illegible],
[illegible] ([illegible], [illegible],

पुं-जननेन्द्रिय।—[illegible]
[illegible] (हैना) ; [illegible]
[illegible]—[illegible]=[illegible], [illegible] ;
[illegible], [illegible], [illegible]—[illegible]
[illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible]।)

स्त्री-जननेन्द्रिय।—[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]
होने या [illegible] होकर [illegible] [illegible] ;
[illegible]=[illegible]—[illegible] ; [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]=[illegible] ; [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] समय और [illegible]
[illegible]। [illegible] ऐसा [illegible] मालूम हो
[illegible], [illegible] [illegible]-[illegible], [illegible]—[illegible]
दाहिने डिम्बाधारका [illegible]—और [illegible]
[illegible] ; दर्द [illegible] पैदा होता है और
[illegible] ( )

मालूम होता है, विकारावस्थामें दांतपर दांत घसता है। तोतलाना (स्ट्रैम) दांत खट्टे मालूम होना।

गलेके भीतर ।—गलकोष-प्रदाह (Tonsilitis)—दाहिनी ओर अधिक मालूम होना ; रोगवाली जगह बहुत लाल ; पानी आदि पीनेके समय गलेमें दर्द ; (एक बूंद पानी भी निगलनेके समय दर्द—आयोड, मार्क-आयोड ; फेर) : अन्ननालीका संकुचित मालूम होना (कैप) ; गलेमें मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ अड़ा मालूम होना (ऐनाक, लैके, बैराइटा-म्यूर) तालुमूल अकड़न भरा। बार बार थूक निगलनेकी इच्छा (लिसिन, मार्क-आयो-फ्लेव)। गलेके भीतरकी झिल्लीमें रुखड़ापन मालूम होना। जलन और रुखापन मालूम होना (सेंगाड)।

पाकाशय ।—पानी अच्छा न लगना। पानीसे भय (Hydrophobia=स्ट्रैम, हाइड्रोफोब) ; भूख न लगना (बेप्टियाना-लूट)। मांस और दूधसे अरुचि। पेटके ऊपरी प्रदेशमें सिकुड़न और फैलाव मालूम होना। सङ्कोचन और इस सङ्कोचनसे पैदा हुआ दर्द मेरुदण्डतक फैल जाता है। मिचली और वमन (इपिका, ऐपोमार्फिया)। आक्षेपिक हिचकी।

पक्वाशय ।—उसमें स्पर्श सहन न हो और वायुसे फूला हुआ—जरा सा हिलने डोलनेसे दर्द बढ़ा मालूम होता है,—यहांतक कि शय्या छू जाना या शय्यापर हिलने डोलनेसे भी दर्द बढ़ा हुआ मालूम होता है ; चलनेके समय बड़ी सावधानीसे पैर रखना पड़ता है ; दाहिने अन्धान्त्र-प्रदेशमें जहां स्थूलान्त्रके साथ सूक्ष्मान्त्र जाकर मिली है (Ileo Cœcal region) वहां दर्द;—जरा भी शय्याके स्पर्शसे दर्द बढ़ जाता है। दाहिने कोखसे बायें कोखतक फैली हुई स्थूलान्त्र (Transverse Colon) एक गोलेके आकारमें फूल जाती हैं—अन्त्रशूलके आक्रमणके समय ऐसा ही हो जाता है। मालूम होता है, कि कोई आंतोंको हाथसे पकड़कर मरोड़ रहा है—हिलाने या दबानेसे बढ़ना। खांसनेके समय, छूनेसे, छींकनेपर और बाएं पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्द।

मल ।—आमातिसार सुलभ; पतला और हरे रङ्गका। कब्जियत,—मल खड़ियाके टुकड़ेकी तरह खण्ड खण्ड निकलता है। पाखाना फिरनेके समय शरीर सिहर उठता है। मलनालीमें डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा (एपिस);

मलद्वार एकाएक संकुचित हो जाता है। कमरमें दर्दके साथ बहुत दर्द-
बवासीर ; उस स्थानका छुआ न जाना। मलद्वार या गुह्यद्वारका अपने स्था
हटना (पोडो)

पेशाब।—पेशाबकी नलीमें मानो एक कीड़ा रेंग रहा है,—ऐ
मालूम होना (मूत्रनालीके भीतर होनेपर=पेट्रोसेल, जिङ्कम)। मूत्र-रोध
केवल बूंद बूंद पेशाब निकलता है=आर्निका, कैम्फो, कैन्थ, क्लिमे, कोपेब
युफोर्बिया, स्टैफ, सलफर)। पेशाब परिणाममें बहुत थोड़ा, पीली आभा लि
गाढ़ा और पतला। मूत्राशयमें दर्द। लगातार स्राव होना—बूंद बूंद पेशा
निकलता है (दिनके समय सोनेमें अनजानमें हो जाना—फेरम-फास), मूत
थलीका क्षणिक पक्षाघात (साइक्लू, डालका, हायो, लैके, लौरो, फास)
मूत्राशयका सङ्कोचन (बार्बे, कैम्फ, सार्सा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोष कड़े, ऊपरकी ओर उठे और प्रदा
भरे (हैमा); रातमें इस स्थानपर पसीना होता है (कैलेड, मार्क, सिपि
थूजा,—बदबूदार=नेट्र-म्यू, सलफ ; मुष्कत्वकसे पसीना निकलना=कैलेड
सिपि, सिलि, थूजा,—मूत्राधार सुखशायिका ग्रन्थि (Prostate Glands)
से रस-स्राव (इस्का, ऐग्नस, ऐल्यू, ऐनाक, कैलके, कास्टि, हिपर, नेट्र-कार्ब,
ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि।)

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तलपेटमें भयानक दबाव मालूम होना मानो
जरायु वगैरह समूचे यंत्र अपत्य-पथसे बाहर निकल आना चाहते हैं; खड़े
होने या सीधे होकर बैठनेपर घटना ; बदबूदार स्राव (गर्म पसीना निकलनेके
साथ=टीलियां—ह्यु ; हाथसे योनि-मुख दबा लेनेपर घटना=सिपि ; प्रबल
रमणेच्छाके साथ=म्यूरेक्स ; अधिकतर फेलिसनस—ऐमे ; एलेट-फेरिनो);
झुककर बैठने, चलनेके समय और सवेरे तकलीफका बढ़ जाना। अपत्य-पथ
सूखा। कमरमें ऐसा दर्द मालूम होता है मानो कमर टूट जायगी (आर्जेण्ट-
नाइ, बार्बेरिस; मैग-सल्फ, रास—कमरमें कमजोरीकी अधिकतासे—स्टैन)।
दाहिने डिम्बाधारका बढ़ना—और उसमें सुई वेधनेकी तरह दर्द या टपक जैसा
दर्द ; दर्द एकाएक पैदा होता है और उसी तरह एकाएक गायब हो जाता है।
ऋतुके समय स्रावका बढ़ जाना (Monorrhagia)—खून चमकीला लाल,
बहुत जल्दीजल्दी स्राव होता है। खून बहुत ज्यादा। गर्म, चमकीला लाल; कभी
कभी यह रक्तस्राव जमा हुआ और बदबूदार होता है ; ऋतुके बीचके समय

रक्तस्राव (ऐस्यू, ऐन्थ्र-काको, आर्निका, बोवि, कैल्के, कैमो, काक्यु जमा हुआ। ऋतु=कैमो, सिङ्कोना, फेर, पल्स, राम, सेबाई ; बदबूदार— कार्बोवेज ; कैमो ; क्रोकस ; सैबाइ)। प्रसवका दर्द—एकाएक पैदा होता है और एकाएक अच्छा हो जाता है। स्तन-प्रदाह (Mastitis),—स्तनमें दर्द टपक, लाली—स्तनवृन्तसे लाल रेखा चारों ओर फैल जाती है (ब्राई, फाइटो दोनों स्तनोंमें भार, लाली और कड़ापन मालूम होता है। प्रसवके बादके लोद स्राव (Lochia) बदबूदार और परिमाणमें घट जाता है (कार्बो-ऐन हैपटी)।

श्वास-यंत्र ।—नासारन्ध्र, मुखविवर, तालुमूल और वायुनलीमें बहुत सूखापन मालूम होना। खुजलाहटकी वजहसे वायुनलीसे पैदा हुई खांसी,— सन्ध्याके समय बढ़ना; आक्षेपिक खांसी ; मुखमण्डल गर्म और आंखें मानो ज रही हैं ; वायुनलीके मुखपर खुजलीकी वजहसे खांसी—मानो पोछेकी ओर धू पड़ी है,—परिश्रम, सोने या ठण्डी सांस लेनेके समय खांसी पैदा हो जाती है ; वायुनलीमें दर्द मालूम होना ; श्वासकृच्छ्रता और फेफड़ेमें दबाव मालूम होना ; स्वरभङ्ग, स्वरलोप ;—सर्दीकी वजहसे क्रुप खांसी—घुंड़ीकी तरह घ घड़ शब्द करनेवाली और तेज—बच्चेका चेहरा लाल हो उठता है। (नीलिम युक्त होता है—कोरैल, रूब्र, ड्रपिक)। आंख फूली और उसका सफेद अंश लाल हो जाता है और नाकसे खूनका स्राव हुआ करता है। खांसनेके पहले बच्चा रोया करता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्निका), खांसनेपर छातीमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना (एको, ब्राइ, फास) ; कलेजा धड़कना, गर्दन और सर ऐसा मालूम होता है मानो टपकका दर्द हो रहा है।

पीठ ।—(Stiffneck),—दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचके अंशमें और गर्दनका पिछला भाग अकड़ा हुआ (कैलि-कार्ब, फास, सिपि ; ग्रीवा साम की ओर अकड़ी हुई=ऐण्टिम-टार्ट ; दर्दवाली जगह छूने या हिलनेसे वृद्धि= ब्राई ; सर्दीकी वजहसे,—मानो सोनेके समय गर्दन ठंडी हो गयी थी ; इसी वजहसे दर्द हो गया है=डालका)। लगातार कमरमें दर्द,—मानो टूट गयी है=मैग-कार्ब, ग्रैफ, फास) गर्दनकी ग्रन्थिका फूलना (कोनायम)।

प्रत्यङ्ग ।—दोनों बाहुओंमें भार मालूम होना (ऐसिड-म्यू, नैट्र-म्यू पल्स, स्ट्रैम)। बाहुओंका सुन्न मालूम होना, उसमें केटनेकी तरह दर्द

मालूम हो (ब्राई, रास)। मेरुदण्डके निचले अंशमें दर्द (Coccygodynia), व'क्षण-सन्धिमें (Hip joint) डंक मारनेकी तरह या जलनकी तरह दर्द के साथ रातमें और थोड़ा भी हिलानेसे दर्दका बढ़ना (खींचने या चोटकी वजहसे दर्द=कास्टि; मानो उरुमें कोई भारी चीज लटक रही है और रोगीको खींचकर बैठा देना चाहती है=ऐण्टि-टार्ट ; छेदनेकी तरह या झटकेकी खींचनकी तरह दर्द=साइक्यू ; दबानेसे दर्द=सिलि ; बैठनेपर लगता है—घूमने या छूनेपर दर्दका बढ़ना=कैलि-नाई)। सूतिका-स्तम्भ या नव-प्रसूति-की जंघाकी शिराका प्रदाह (Phlegmasia Alba Dolens)—पल्स, हैमा, विस्मथ।

त्वचा।—चिकनी, चमकदार और लाल—सब जगह एक समान ; सूखी ; उत्तापयुक्त और जलन-भरी—कोई रोगीका शरीर हाथसे छूता है तो ऐसा मालूम होता, कि उसका हाथ जल जायगा। इसके साथ ही सूजन (घमौरीकी तरह उद्भेद और बीचकी जगह मोटी या नीली=आइलैन्थस, रासटक्स) फैलनेवाले त्वचाका प्रदाह विसर्प,—चमकीली, चिकनी त्वचा और सामान्य सूजन (सूजनकी बहुतायत=एपिस ; विस्फोटकवत् प्रदाहयुक्त Phlegmonous=वेरेट्रम-विराइड ; इधर उधर घूमनेवाला—दाहिनी ओरसे बाईं ओर=रासटक्स। दर्द दाहिने पार्श्वसे आरम्भ होता है (मार्क, ग्रम्बम, चायना, बैप, कैन्थ, आइरिस) ; बाएँ पार्श्वसे (आयोड, एपिस, सल्फर, बोवि)।

नींद।—औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती (एपिस, कैमो, लैके, ओपी ; दिनमें औंघाई पर रातमें नींद न आना=लाइको, मार्क, सल्फ)। औंघाई और लगातार कुछ बड़बड़ाना या अस्पष्ट भावसे अपनी तकलीफ कहना या कराहना। सोते न सोते चौंक उठता है, मानो डर गया है (आर्स, ब्राई, सिना, नक्स—सोते ही चौंककर रोने लगना है=कैमो, स्ट्रैमो, सिना, जिङ्कम ; नींदकी अवस्थामें हाथ पैर पटककर मानो चौंक उठता है=आर्स, लाइको, कास्टि, पल्स ; सोनेपर चौंककर जाग जाता है=कैमो ; सैम्बुकस ; सल्फ ; स्ट्रैम ; लोमहर्षक भयानक चित्कार करता है=एपिस, हेलिबो)

ज्वर।—नाड़ी, तेज और पुष्ट या धीरगति और पुष्ट, संध्याके समय कपकपी या जाड़ा मालूम होना, इसके साथ ही हाथ पैर और माथेमें उत्ताप मालूम होना (माथा गर्म और शरीरका बाकी अंश ठण्डा=आर्स, ब्राई, हायो);

सेंकने या आग तापनेपर जाड़ा नहीं जाता। (फास, नक्स ;—इसके विपरीत होनेपर= आर्स, इग्ने, केलि-कार्ब) शरीर ढके रहनेपर भी हिलने डोलनेपर जाड़ा मालूम होता है (नक्स ; पल्स) ज्वाला-जनक उत्ताप;—भीतर और बाहर और उसके साथही बेचैनी ; आन्त्रिक (Enteric) ज्वरके साथ मस्तिष्क में उत्तेजनाकी अधिकता ; आरक्त (Scarlet) ज्वर,—चिकनी उज्ज्वल, लाल त्वचा—और बहुत उत्ताप, लगातार प्यास ; इसके साथ ही आन्तरिक यंत्रणा और कम्पन ।

सार्वाङ्गिक ।— दाहिने पार्श्वपर ही रोगका सबसे अधिक आक्रमण होता है (बैप, कोन्य, आइरिस,—बाएँ पार्श्वपर= एपिस, लैकै) । दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक गायब हो जाता है (धीरे धीरे पैदा होता है और धीरे धीरे जाता है = ष्टेट, ष्टैन) । सन्धि-स्थानोंमें दर्द,—एक स्थानसे दूसरी जगह पर हट जाता है (केलि-बाइ पल्स, सल्फ) । अकड़न या पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना,—छूने या रोशनीसे या चमकीली चीज देखनेसे फिरसे पैदा हो जाता है (ष्ट्रैम, हाइड्रोफोर) सारा शरीर अकड़ जाता है। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय अकड़न (Convulsions)—ज्वर अकड़न (ज्वर न रहनेपर= मैग-फास) । एकाएक रुक जाना या निवृत्त हो जाना। माथा गर्म और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे ।

वृद्धि ।— छूने, शरीर हिलानेसे, आवाजसे या वायुका प्रवाह लगनेपर, चमकीली या चमकदार चीज देखनेसे (लिसिन, ष्ट्रैम) ; दिनके ३ बजनेके समय ; रातमें—दो पहरके बाद ; पीनेके समय ; माथा ढक लेनेपर या माथा मुड़वा लेनेपर ; गर्मीके दिनोंकी धूपमें और सोनेपर ।

घटना ।—विश्रामसे, खड़े होनेपर या सीधे होकर बैठनेपर और गर्म घरमें घटना ।

दोषघ्न ।—(अधिक मात्रामें) उद्भिदोंकी खटाई, चाय, काफी (क्षुद्र-मात्रामें) काफिया ; हिपर ; हायोसा ; ओपि , सल्फ ; सेबाडिला ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐकोन, आर्स (कर्कटकी वेदना), ब्राइयो (आमवात), कैल्के, कैमो, साइक्यूटा, कूप्रम, ओपि, सुपेट (मूत्रक्लेश); जेल्स, हिपर , हायसा, लैके, लिलियम, मर्क,नक्स, ओपि पल्स, रास, ष्ट्रैम (क्रोध) ; विरेट, आर्निका । इसका अनुपूरक—केल्के-कार्ब । जिस रोगकी नयी अवस्थामें बेलेडोनाका प्रयोग होता है, उसी रोगकी पुरानी या दीर्घकाल स्थायी

अवस्थामें केल्केरियाका प्रयोग होता है। यदि बेलेडोनासे किसी रोगमें कुछ लाभ पहुंचे तो उसे एकदम आराम करनेके लिये केल्केरियाका प्रयोग करना पड़ता है।

शक्ति।—१ म दशमिक, ६ठी, ३०, २०० क्रम व्यवहार होता है।

क्रियाका स्थायित्व।—१से ७ दिन।

परीक्षक।—महात्मा हनिमैन।

बेलिस पेरेनिस।

(BELLIS PERENIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस पौधेके समूचे अंशसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—वयोव्रण; क्लान्ति; सरमें चक्कर आना; फोड़ा; छोटी सन्धियोंका वात; सरका दर्द; अजीर्ण; नकली मैथुनका दुष्परिणाम; पसीना; गर्भावस्थामें बहुतसी बीमारियाँ; चर्म-रोग; आमवात; अनिद्रा रोग; प्लीहाकी बीमारी; चोटका दुष्परिणाम; अर्बुद; जरायुकी क्लान्ति; शिराओंका फैलना।

उपयोगिता और आभास।—डा० कमटस बार्नेटका कथन है कि जहाँ यह दिखाई दे, कि किसी तरहका अत्याचार हुआ है, वह रोगिनीका निजका किया हुआ हो या दूसरेका अथवा स्वामीका किया हुआ हो, उन सब बीमारियोंमें बेलिस अमोघ लाभदायक है। (हाइपेरिकम)। युवतियाँ बहुत ज्यादा सन्तान होनेके भयसे या सन्तान बिल्कुल ही न हो इसलिये कितने ही उपाय कर जरायुको उत्पीड़ित किया करती हैं, और इसीलिये, उनका जरायु उस अत्याचारको चुपचाप सहन न कर उसके अर्थात उस स्थानकी अधिकारिणीके शरीरमें नाना प्रकारकी बीमारियाँ पैदाकर बदला चुका लिया करता है। ऐसी युवतियोंके दोनों स्तन सूख जाते हैं यहाँतक कि उनमें कुछ भी नहीं रहता। डा० बार्नेट कहते हैं—× × ×Genesinc fraud causes disease and produces a debased state of the womb; it becomes too fibrous, hard; loses its erectility and contracti-

lity, and instead of ballooning about in the abdomen in happy unconsciousness it flops down on the floor of the pelvis miserable and discontent and a sorry burden,—it has been cheated and it verily does not bear it uncomplainingly-"

वस्ति-गह्वर प्रदेशमें बहुत दर्द मालूम होता है। अस्वाभाविक मैथुन आदिसे पैदा हुई बीमारीमें और कोई स्थान (एँड़ी या कलाई) में मोच खा जानेपर या चोट लग जानेपर जो दर्द होता है, उसमें यह बहुत लाभदायक है। लगातार और शरीरके सभी अंशोंमें फोड़े निकलना; व्रण; शरीरकी गर्म अवस्थामें पानीय (शरबत आदि) पीनेकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें यह विशेष लाभदायक है। ठण्डी हवा लगनेपर जो बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, उनमें भी इससे फायदा दिखाई दिया करता है।

लक्षणावली।

मस्तक।—बुड्ढोंके सरमें चक्कर आना। शिर-पश्चात (सरका पिछला भाग Occiput) से मूर्द्धदेश (Vertex) तक दर्द। कपालकी त्वचा संकुचित मालूम होती है। चोटकी वजहसे दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियके अत्याचारकी वजहसे जरायुका सामनेकी ओर या पीछेकी ओर हट जाना (अरम-म्यूनेक्स, हाइपिरिक, फ्रेंक्सिनस-ऐमे)। दोनों स्तन और जरायुमें अधिक रक्त-संचय हो जाना (Congestion); शिराका फैलना (हैमा)। गर्भावस्थामें चल न सकना। तलपेटकी सब पेशियाँ सुन्न और-शक्ति शून्य मालूम होती हैं। जरायुमें बहुत दर्द होता है। प्लीहामें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग।—दाहिनी बगलमें दर्द—मानो फोड़ा निकलेगा। कभी कभी बायें हाथकी मध्यमा अंगुलीमें दर्द,—मानो फोड़ा निकलना चाहता है।

त्वचा।—सारे शरीरमें एकके बाद दूसरे, इस तरह लगातार फोड़े निकलना (आर्निका, सलफर)। काला दाग और सूजन,—विसर्पकी तरह (erysipelatous),—बहुत दर्द और छुआ न जाना। चोटकी वजहसे शिराका फैलना या शिरामें खूनका अधिक इकट्ठा हो जाना।

सार्वाङ्गिक।—शरीरमें बहुत थकान मालूम होना,—सोये रहनेपर आराम मालूम होना। (ऐसिड-कैन, आर्जेण्टम, आर्स, कैमो, साइक्ल, फ़ेर, नक्स, रास-टैड, थोया, नेट्र-कार्ब)। बाई ओर बीमारीका होना (लैकेसिस)।

सम्बन्ध।—सदृश।—या तुलनीय—आर्निका, आर्स, ईमा, हाइ-पिरिकम, फ्रेक्सिनस-ऐमे, हेलोनि, स्टैफ।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे ३रा दशमिक क्रम।

बेन्‌जिनम।

(BENZINUM)

दूसरा नाम।—बेन्‌जन्।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अलकतरेको चुआकर एक तरहका पदार्थ निकाला जाता है और उससे सुरासारमें मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—रक्तामाशय; ज्वर; सर दर्द; अनिद्रा; पसीना; सान्निपातिक ज्वर; दृष्टिका विकार।

लक्षणावली।

मन।—सामान्य कारणसे ही रोने लगना (पल्स, नेट्र-मि, लिलि-टाई, सिपिया); अपने आराम होनेके सम्बन्धमें निराशा (आर्स, कैक्टस, लैक-कैन, लिलि-टाई, मेडोर, पल्स, आर्जेण्ट-नाई, ऐसिड-हाई, सोराइन, सिफिलि) बहुत ही क्रोधी और परछिद्रान्वेषी (दूसरोंका दोष देखनेवाला—वैरेट-ऐल्ब)।

आंख।—ऊपर देखनेपर सरमें दर्द मालूम होना। अन्धकारमें मानो एक सफेद हाथ सामने आकर, उसके मुंहकी ओर अग्रसर हो रहा है। यही भ्रम देखकर रोगी भयसे चिल्ला उठता है।

मुख-मण्डल।—कभी कभी बायें गाल और बाई जंघास्थिकी पेशी एकाएक फूल जाती है और ऐसा मालूम होता है मानो रोगवाली जगह वायुसे भर गयी है।

मुख-विवर।—दाँतोंपर एक तरहका मैला दाग पड़ता है (Sordes) जीभ सूखी, भूरा रंग। दर्द-भरा, गोल आकारका मुँहका जखम—खासकर दोनों गालोंके भीतरकी ओर।

पाकाशय ।—भूख न लगना ; कमलानिबू खानेकी इच्छा। बरफका पानी पीनेकी प्रबल इच्छा रहती है पर एक घूंट पीने पर ही तृप्ति हो जाती है और फिर तुरन्त भागने लगता है (आर्स)

पेशाब ।—काला, बदबूदार। तली, लाल बालूकी तरह जमती है। लाइकी, सिपि, सफेद = सिना, वार्बा, ग्रैफ)।

सार्वाङ्गिक ।—दर्द ऊपरकी ओर जाता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है: मानो वह शय्या और छत भेदकर नीचे गिरा जाता है। (ब्राई)

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—ब्रायो, (आंख हिलानेसे वृद्धि), बेनजिन नाइट ; सलफर (नीचेकी ओरसे ऊपरकी ओर गति।)

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३री दशमिक।

—

बेञ्जिनम डाइनाइट्रिकम ।

(BENZINUM DINITRICUM)

दूसरा नाम ।—डाई-नाइट्रो-बेञ्जोल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सुरासारमें गलाकर क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—खूनकी कमी, तम्बाकूसे विटृष्णा, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, रंगोंका न दीख पड़ना, दृष्टि-शक्तिका घटना, काला रक्त और पेशाब वगैरह लक्षणोंमें उपयोगी है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—बेञ्जिनम ; बैञ्जिनम-नाइट्रि, हाइड्रोसायनिक-एसिड, आर्स ।

दोषघ्न ।—स्ट्रिकनिन ।

शक्ति ।—६ शततमिकसे ३० शततमिक तक ।

बेनजिनम नाइट्रिकम ।

(BENZINUM NITRICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बेञ्जलके साथ नाइट्रिक एसिड मिलाकर यह तैयार होता है। सुरासारमें मदर-टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— अवसादन ; आक्षेप ; नीलिमा रोग ; मृगी ; श्वास-प्रश्वासमें रुकावट ; डेरा देखना ; धनुष्टङ्कार ; दांती लगना।

उपयोगिता और आभास।—सुस्ती, भ्रम, मूर्च्छा, अकड़न, पेशियोंका संकोचन और प्रसारण (सिकुड़ना और फैलना) ; मोहाच्छन्न तन्द्रा ; श्वास-प्रश्वासमें खर्वता ; पुतलियोंका फैलना , मुंदी हुई आंखें ; बाईं ओरसे दाहिनी ओर घूमनेवाला आंखका गोला ; ओंठ, चेहरा और हाथके नख नीले ; नासा-पुटका सिकुड़ना और फैलना ; आक्षेपावस्थामें पीछेकी ओर या बगलमें माथा लटक जाना ; अनजानमें पाखाना पेशाब हो जाना ; सारे शरीरका पक्षाघात इत्यादि इसका प्रधान क्रियाफल है।

लक्षणावली।

मन।—बेहोश, चेहरा नीलिमा लिये, नीले-नीले ओंठ, फैली हुई पुतली, श्वास-प्रश्वास इतना धीमा और आयास-साध्य (जोरसे लगाकर लेना छोड़ना पड़ता है), कि देखनेपर ऐसा मालूम होता है, कि रोगी जीवित नहीं है,— इसके बाद मृत्यु। बहुत बोलना और इसके बाद मोह।

मस्तक।—माथेकी त्वचाके नीचे ऐसा मालूम होना मानो चींटी रेंग रही हैं, मानो रोएं खड़े हो रहे हैं [आर्निं, कैल्म, जिङ्कम ; ग्रोटेलस]।

आंख।—आंखका गोलक बराबर दाहिनी ओरसे बाईं ओर हिला करता है।

कान।—कानमें भयानक हुड़ हुड़ गुड़गुड़ शब्द। (चिनिन-सल्फ, डिजि ; सरमें चक्कर आनेके साथ=नैट-सैलिसाईट ; बहरेपनकी वजहसे=ग्रैफ, ऐसिड-नाई ; कर्णपटावालोंके प्रतिश्याय (सर्दी) की वजहसे (हाइड्रैस, मार्क-सोल।)

नाक।—नासापुट सिकुड़ा और फैला करता है (लाई, ऐण्टि-टार्ट)

मुखमण्डल।—फूला और मृत्यु-व्यंजक, चेहरा उतरा हुआ और नीला ; दोनों ओंठ गहरे नीले, जीभ फूली और सफेद ; तोतलाकर बोलना।

श्वास-यंत्र।—सांस लेने और छोड़नेके समय वक्षमें घड़घड़ शब्द होता है और बीच बीचमें श्वास-प्रश्वासकी गति बहुत धीमी, कष्टजनक और लम्बी सांसकी तरह हो जाती है।

प्रत्यङ्गादि।—हाथ पैरकी पेशियाँ स्पन्दनशील (हिलती रहती हैं।) बाहु एकाएक टेढ़े हो जाते हैं या मुड़ जाते हैं। सब नख नीले मालूम होते हैं। टहलनेके या चलनेके समय ढुलक पड़ता है और बार बार पैर फिसल जाता है—मानो नशेमें मतवाला हो रहा हो।

पेशियोंका तेज सिकुड़ना, फैलना या अकड़न।—रोगी बेहोश जैसा रहता है; उसका माथा ढुलक कर कन्धे पर आ जाता है; ओंठ दोनो पीले-नीले और दाँतपर दाँत बैठे रहते हैं; आँखें बन्द; ऊपरी अंगकी संकोचनी पेशी और चर्वण-पेशीका धनुष्टंकारकी तरह सिकुड़ना और फैलना, देह नीली,—विशेषकर चेहरा और गला।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-हाइड्रे सियेनिक, साइक्युटा, ध्रूनैन्थि, क्रोकेटा, जेल्स।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

बेनजोयिन।

[BENZOIN]

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहके पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—ज्वर; तेलहे केश; सरमें चक्कर आना।

सम्बन्ध।—सदृश।—लेकेसिस।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

बार्बेरिस ऐक्विफोलियम।

(BERBERIS AQUIFOLIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—पित्त-दोष; श्वासनालीकी सर्दी; सरका दर्द; श्वेत-प्रदर; कितने ही प्रकारके चर्मरोग; पाकाशयिक सान्निपातिक ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—कितने ही तरहके चर्म-रोगमें, गौण (Secondary) उपदंश रोगकी सभी अवस्थाओंमें और सर्दी आदि रोगमें इसकी उपकारिता बहुत प्रसिद्ध है।

लक्षणावली।

मस्तक।—ऐसा मालूम होता है, मानो कानके उपरसे माथेको घेरकर एक चौड़ी लोहेकी पट्टी बँधी हुई है। (इथू, ऐनाक्, लोबेलिया) पित्त के कारण (Bilious) सरका दर्द। भयानक विचर्चिका अर्थात एक प्रकार के विष-दोषसे पैदा हुआ चर्म रोग (Psoriasis), मूर्द्धा देशसे लेकर मुख-मण्डल और वक्षस्थल पर्यन्त यह फैल जाता है। कान, शिरोपश्चाद्भाग और गर्दनके बीचमें सीमाबद्ध विचर्चिका रोग; चेहरे पर मुँहासे और फुन्सियाँ (ऐक्टिया)। मिचलीके साथ माथेको जड़ता। माथा शून्य मालूम होता है,—नींदके बाद या शरीरके संचालनसे बढ़ना।

आँख।—आंखोंमें रक्तसंचयकी अधिकताकी वजहसे आँखें लाल। आँख मानो एक झिल्ली या मलाईकी तरह पदार्थ (Film) से ढकी हुई है (ऐमिल, लैक-कैन, फाइजस)। दोनो आंखें बहुत थकीं; और गड्हेमें धँसी मालूम होती हैं और उनमें जलन और दर्द मालूम होता है।

पाकाशय।—जीभ गाढ़ी पीली भूरी (Yellowish brown) लेपसे चढ़ी (बैप्ट, सिना, कैलि-बाई, फास; पिटलिया, झाई; जीभ पर मानो छाले हो गये हैं, ऐसा मालूम होना। जीभके अगले भागमें=नेट्र-फास, नेट्र-सल्फ, ऐमोन-म्यू, नाइट्रम; दोनो पार्श्वमें=फाइटो, एपिस); पाकाशयकी भीतर जलन मालूम होना (आर्स, बिस्मथ, साइक्यूटा, कोलचि, सिकेलि, आइरिस)। भोजनके बाद मिचली और वमन (आर्स, सिकेल; खट्टी हो जाती है=कैल्के, हिपर, पल्स; ताजे मांसके भोजनके बाद=कास्टि; खानेकी चीज देखते ही=आर्स, कोलचि; गन्ध मिलने पर=कोलचि, स्ट्रेम; अण्डे या मछली के गन्धसे=कोलचि)। प्लीहा बहुत दर्द-भरी।

पेशाब।—मूत्रनालीमें सुई वेधने की तरह (कैन्थ, लैके, लाइको) यंत्रणा, तल-पतित पदार्थ (तलौ—Sediment) गाढ़ा श्लेष्मा भरा, चमड़ी लाल और साबूदानेकी तरह। बहुत ज्यादा या थोड़ा पेशाब।

त्वचा।—रमणियोंके मुखमण्डलकी त्वचाको कर्कशता और दाग-ढ़ापन। देह सूखी, खखड़ी और रूसीसे भरी—स्तनका अर्बुद (Tumor of

the breast) तेज दर्द-भरा, रातमें बढ़ना (ब्राई, बेल, फाइटो); स्तन कड़ा और पिण्डमय,—मानो कर्कटीय अर्बुदसे भरा है (Cancersus tumor) (कोनायम; फाइटो, कौल्को, आयोड, आर्स-आयोड, हाइड्रेस.)। सारे शरीरमें फैली हुई विचर्चिका (Psoriasis Deffusa) और व्रण।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड कार्बोलिक, कौन्य, बार्बेरिस।

शक्ति।—मूल अर्क और १ म दशमिक क्रम।

बार्बेरिस वल्गरिस।
(BERBERIS VULGARIS)

दूसरा नाम।—बार-बेरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी जड़की छालसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—पित्तके कारण या पैत्तिक शूल; मूत्राश्मरी या पथरी; मूत्राधारको बीमारी; बाधक या रजःशूल; नाना प्रकारके बोखार; नासूर या नालिघात; दादकी तरह उद्भेद; यकृत प्रदाह; सन्धि-प्रदाह या सन्धियोंमें दर्द; घुटनेमें दर्द; श्वेत-प्रदर; यकृतके बहुतसे विकार; कटिवात; आँखोंका प्रदाह; पेशाबके बहुतसे दोष; दूधकी तरह पेशाब; पालिपस या अर्बुद; आमवात; पार्श्व-वेदना; शुक्रवाही नालीमें स्नायुशूल; प्लीहाका प्रदाह; प्लीहाका विकार; अपत्य-पथका स्नायुशूल इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करते ही यह उसके मसानोंपर अपनी क्रिया आरम्भ कर देता है और मसानेसे लेकर मूत्रवाही प्रणालीके भीतरसे मूत्रस्थली और मूत्रस्थलीकी सर्दी (Catarrh) और पित्ताश्मरी पैदा होनेके लक्षणमें (Gall stone) और इसी कारणसे शूलके दर्दमें यह बहुत लाभदायक है। खासकर जब बायें मसाने या मूत्र-ग्रन्थिपर रोगका आक्रमण होता है, कमरसे आरम्भ होकर यह दर्द समूची देहमें मालूम हुआ करता है। इसका एक और भी प्रधान गुण यह है कि

यह यकृतसे पित्त निकालनेकी क्रियाको बढ़ा देता है। मूत्रयंत्रकी विकृतिके साथ वात और सन्धि-वात रोगमें भी यह विशेष लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) सबेरे प्रथम भोजनके पहले मिचली (२) कमरमें दर्द,—दर्द कमरसे लेकर शरीरमें चारों ओर फैल जाता है, (३) मसानेमें स्पर्श-कातरता या उस स्थानमें स्पर्श सहन न होना, पेशाब घोर लाल (४) बाँह, कन्धा, पेर और दोनों पेरोंमें वातकी वजहसे दर्द; कटि-वात (Lumbago)। (५) पीठके सामनेवाले प्रदेशमें (Renal Region) एक नोकदार सलाई प्रवेश कर जानेकी तरह दर्द (Stitching pain),—दर्द पक्वाशय, उरु-शिखर, कमर, मूत्रस्थली वगैरहमें फैल जाता है=शरीर हिलाने और श्वास-प्रश्वासमें दर्द बढ़ जाता है। पेशाबके समय उरु और कमरमें दर्द—यकृत, पित्तकोष (Gall bladder) और दोनो मसानोंके सामनेवाले अंशमें नोकदार सलाई वेधनेकी तरह दर्द,—शरीरके विभिन्न अंशोंमें दर्द फैल जाया करता है और कोखसे खूब भीतरी प्रदेशमें भी दर्द मालूम होता है (७) पेशाब चमकीला लाल रंगका और गाढ़ा श्लेष्मामय; तली (Sediments) मैदेके गोलीकी तरह जमती है। (८) पाखाना पतला (Diarrhoea),—बिना तकलीफका और मल कीचकी तरह रंगका होता है। शरीरकी त्वचा खुजलाती है और जलन-भरी होती है,—खुजलाने बाद बढ़ना; छोटे छोटे फोड़े और पीव-भरे दाने (Pustules) निकलते है।

लक्षणावली।

मन।—सभी चीजें, यहां तक कि अपना शरीर भी दूना बड़ा मालूम होता है (निकोलस; नक्स-मस); एकाग्रता के साथ सोच नहीं सकता। विषण्णता, उदासी—सामान्य कारणसे भी विचारका सिलसिला टूट जाता है; विषण्णता, उदासी—सभी विषयोंमें उदासीन (फास, एसिड-फास, लिल-टाई, नक्स-वोम)। बोलनेमें अनिच्छा (एमो-म्यू, एण्टि-क्रू, एसिड-कार्ब, हिलिबो, इग्ने, मेग्नि, नेजा, फाकाइट्रोप, स्ट्रैम); असन्तुष्ट चित्त, जीवनसे विराग (एण्टि-क्रू, भरम, नेट्र-सल्फ, फास ग्लेट, सिफिलाइन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ सुस्ती मालूम होना (कोक, सेके, सल्फ, नक्स वोम)। ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फैल गया है (आर्जेण्ट-नाई, बेल, ग्लाई, कोराल-रू, एपियोल; डेफ्नी, इग्ने, फेलेन)। शिरःपश्चातमें और पीठमें जाड़ा मालूम होना। दाहिनी कनपटीमें (ड

ple) में ठपकन मालूम होना। सारे मस्तकमें, ललाटमें और कनपटीमें छेदने की तरह दर्द।

मुखमण्डल।—चेहरा उतरा हुआ, रोग भोगनेकी तरह। दोनों गाल और आँख गड़हेमें धँसे और दोनों आँखोंके चारो ओर नीला घेरा।

मुख-विवर।—लसदार भाव; लार संचय होना घट जाता है। लसदार फेनभरी लार मानो रूईकी तरह। (नक्स-मस, नेट्र-म्यू, केलि-नाई); सवेरे पहली बार खानेके पहले मिचली (इग्ने)। छातीमें जलन।

पंचाशय।—पित्तशूल (Bilious colic)—यह रोग होनेपर समुची देह पीली हो जाती है, कीचकी तरह रंगका मल होता है (ग्रायोड-हिपर, चियोनैन)। भगन्दर (Fistula in ano)—यह पित्त आदिसे पैदा हुआ लक्षण और खुजलीमें; खुसखुसी खांसी और दूसरी दूसरी वक्षकी बीमारी के साथ,—खासकर भगन्दर आदिमें नश्तर लगवानेके बाद (कैल्क-फास, सिलि); पाखाना होने बाद मल द्वारमें चाहे उसके ऊपरी प्रदेशमें अण्डकोषके नीचे भयानक जलन और यंत्रणा मालूम होती है, बार बार पाखाना लगता है।

मूत्रयन्त्र आदि।—कमरमें दर्द; मसाना और उसके पासके स्थानोंमें स्पर्शका सहन न होना; बैठने, सोने या संघात (Jar) या थक जानेपर दर्द बढ़ जाता है, मसानेके प्रदेशमें जलन और बहुत दर्द; सुन्नता अकड़न आदि, बहुत दबाव मालूम होता है, पेशाबकेयंत्रके विकारके साथ वात और सन्धिवात रोग, पित्ताश्मरी (Gall Stone) की वजहसे शूलका दर्द (कैलके, चियोनैन, डायस्को)। बाएँ मसानेसे मूत्रस्थलीको भेदकर मूत्रनाली तक सुई बेधनेकी तरह तकलीफ मालूम होती है (टेबाक्; दाहिने मसानेमें=लाइको) मसानेमें शूल (Renal Colic),—बाएँ पार्श्वमें ही अधिक (टेब; किसी भी ओर—बहुत पेशाबका वेग, पेशाब रुकनेके साथ=कैम्फ); मसानेके भीतर बुलबुले उठनेकी तरह शब्द (मिडोराइन; पर फड़फड़ानेकी तरह मालूम होना Fluttering=चिमैफि)। पेशाबका रङ्ग हरा, लाल-खूनकी तरह, गाढ़ा। लसदार श्लेष्मा मिली तली (Sediment) स्वच्छ, लार या मांड़की तरह। शरीरके सञ्चालनसे मूत्रयंत्रके रोगोंकी वृद्धि, पेशाब के समय ऊरुमें और कमरमें दर्द मालूम होना।

पुं-जननेन्द्रिय।—रेतोरज्जु (Spermatic Chord) और अण्डकोषके भीतर शूलके दर्दकी तरह तकलीफ (स्ब्जिया, रोडो, अरम, पल्स, क्लिमैट)। अण्डकोष, मेढ्रत्वक और मुष्कत्वककी भीतर जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामाद्रि (Mons vernis) प्रदेशमें संकोचन मालूम होना और ऐसा मालूम होता है मानो सिकुड़ा जाता है। अपत्य-पथमें जलन और जखमकी तरह मालूम होना। रमणेच्छा, घट जाती है; मसानेके प्रदेशमें दर्दके साथ थोड़ा आर्त्तव स्राव होना। प्रदर—भूरा (Gray) श्लेष्मा स्राव और इसके साथ ही मूत्रयंत्रके यंत्रणादायक लक्षण।

श्वास-यंत्र।—वक्षमें ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचा घय हो गयी है और उसमें दर्द भर जाता है, नयी सर्दीके समय जैसा हुआ करता है। वक्षमें सुई वेधनेकी तरह दर्द,—खासकर बाएँ पार्श्वमें। वक्षस्थलसे तलपेट तक मानो जकड़ जाता है और रोगीको वाध्य होकर झुक जाना पड़ता है, हृत्प्रदेशमें भी सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है, सीढ़ी चढ़नेके समय या हाथ उठानेके समय श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है।

पीठ।—गर्दन और पीठमें सुई वेधनेकी तरह दर्द,—सांस लेने और छोड़नेके समय वृद्धि। कटि-वात (Lumbago)—सोनेपर, बैठनेपर खासकर सवेरे शय्यापर सोनेसे बढ़ना। पीठ सुन्नकी तरह मालूम होना और अवश मालूम होना,—इसके साथ ही कमर, या वृक्क (मसाने) के स्थानमें दर्द और दबाव मालूम होना; परिश्रमसे थक जानेपर बढ़ना (रास, ऐसिड-टार्ट)।

प्रत्यङ्ग।—कन्धेमें बुलबुले उठनेकी तरह मालूम होना या ऐसा मालूम होना, कि सन्धियोंके भीतर कोई सजीव पदार्थ है,—क्रोकस, सैबा, थूजा),—खासकर आधी रातके बाद (माथेमें मानो कोई सजीव पदार्थ हिल रहा है—पेट्रोल, सिलि) निम्न-प्रत्यङ्गकी पेशियोंका संकोचन और प्रसारण मालूम होना या ऐसा मालूम होना मानो उसमें कोई जीव हिल रहा है। कन्धे, बाहु, हाथ, अँगुली, पैर और तलवा वगैरहमें वातका दर्द। हाथकी अँगुलीके नखके नीचे भयानक स्नायुशूल,—इसके साथ ही अँगुलीकी सन्धियोंका फूलना। उरुके बाहरी भागमें ठण्डक मालूम होना; गुल्फ अर्थात घुट्ठीमें बहुत दर्द मालूम होना, मानो उसमें जखम हो गया है। चलनेके समय पैरके तलवेके पिण्डमय स्थानमें दर्द मालूम होना।

त्वचा।—खुजली, जलन और घाव हुई त्वचाकी तरह तकलीफ; खुजलानेसे बढ़ना। खुजली फोड़े,—पीव पैदा होना बन्द करता है और फिरसे पैदा होना रोकता है (

वृद्धि।—शरीर हिलाने, चलने, किसी तरहका एकाएक धक्का पहुँचने, बैठने और सोनेके समय।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—हेलो, ऐण्टि-टार्ट, आर्स, कैल्के-फास (नाली), कैन्थ, कार्ब्बो, चायना, लाइकोपो, नेट्रम, नाइट्रिक-ऐसिड, नक्स, पल्स इत्यादि।

सदृश।—कैन्थ, लाइको, सार्सा, टैमाक=मसानेके शूल सम्बन्धी घाव आदिके दर्दमें=आर्निका, ब्राई, केलि-बाई, रास और सलफरके बाद इसका व्यवहार विशेष लाभदायक है।

दोषघ्न।—कैम्फर, वेलाडो।

शक्ति।—१म दशमिकसे ३० शततमिक तक।

बिस्मथ।

(BISMUTHUM SUBNITRICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले चूर्ण इसके बाद अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—तलपेटमें नश्तर लगवाने बाद वमन; कलेजमें दर्द; विसूचिका, खाँसी; मूत्राधारका प्रदाह; कपकपीके साथ प्रलाप या विकार; अतिसार; हिचकी; सड़नेवाला जखम; पाकाशयका शूल; पाकाशयका प्रदाह; सरमें दर्द; वमन; प्रसवके बाद पैरमें सफेद रंगकी सूजन; पाकाशयमें कर्कट का जखम; दाँतका दर्द।

उपयोगिता और आभास।—अन्नवहानलीपर इसकी प्रधान क्रिया होती है; इसके द्वारा इस नलीमें प्रदाह युक्त सर्दी जमी रहती है और इसलिये, पाकाशयसे पानीके छू जाते ही वह कै हो जाता है। हैजेकी तरह दस्त और कै भी इसके भीतर आ जाता है। नीचे लिखे कई लक्षण इसके निर्वाचनमें बहुत सहायता पहुँचाते हैं; और ये बहुत ही आवश्यक है:—

(१) चेहरा उतरा हुआ, मानो उसमें खून नहीं है;—मानो रोगी अभो किसी प्राणघातक बीमारीसे अच्छा हुआ है,—आँखें चारों ओर नीले घेरेसे घिरी रहती हैं। (२) बहुत आलस्य मालूम होता है;—अकेला नहीं रहना चाहता,—कहीं अकेले न रहना पड़े इस लिये बच्चा माताका हाथ नहीं छोड़ना चाहता। (कैलि-कार्ब, लिलियम, लाइ)। बहुत चंचलता,—कभी बैठना, कभी टहलना और फिर कभी सो जाना; एक भावसे बहुत देरतक नहीं रह सकता। (४) संध्याके समय शरीरमें गर्मी न मालूम होनेपर भी ठण्ड़े पानीकी प्यास लगने लगती है। पाकाशयका शूल (Gastralgia)=दर्द, पाकस्थलीसे शरीर भेदकर मेरुदण्ड की ओर फैल जाता है; पाकस्थलीमें एक जगह ऐसा मालूम होता है मानो कोई भारी चीज दबा रही है; (५) पाकस्थलीमें भयानक आक्षेपिक और यंत्रणादायक वेदना; पकाशयमें पानी जाते ही के हो जाती है; पर दूसरी दूसरी खायी हुई चीजें बहुत देर तक रह जाती हैं। पाकस्थलीमें दर्दके साथ कितनी ही बार दस्त और कै होता है। (७) बहुत अधिक मानसिक उद्वेग, नाड़ी क्षीण और सरमें चक्कर आता है, इसके अलावा सुस्ती के साथ बहुत ज्यादा वमन हुआ करता है। कभी कभी पाकस्थलीमें कई दिनोंकी खायी चीजें इकट्ठी होनेपर बहुत ज्यादा वमन हुआ करता है। (८) पानी पीने बाद भाफभरी डकार। (९) पाकस्थली शून्य मालूम होती है। अंत्रगत (Intestinal) आध्मान या पेट फूलना; (Flatulence)। छूटी हुई हवा या मल बहुत सड़ी गन्धसे भरा रहता है। (१०) सांघातिक विसूचिका और गर्मी के दिनों का अतिसार,—दस्तकी अपेक्षा कै ज्यादा होती है; मल बदबूदार, माड़की तरह, पानीकी तरह और सुस्ती लानेवाला होता है।

लक्षणावली।

मन।—अकेले रहना एकदम सहन नहीं होता; बिना साथी के तो रह ही नहीं सकता, कहीं अकेले न रहना पड़े इसलिये, बच्चा माताको छोड़ना नहीं चाहता (केलि-कार्ब, लिलियम-टाइ, लाइको, स्ट्रैम)। अस्थिर चित्त,—कभी बैठता है, कभी घूमता है, कभी सो जाता है,—एक स्थानपर अधिक देर-तक रहना नहीं चाहता। एक काम छोड़ते ही दूसरे काममें हाथ डाल देता है—वह भी थोड़ी देरके लिये।

मस्तक।—सरमें दर्द,—प्रति वर्ष जाड़े के दिनोंमें यह दर्द पैदा हो जाता है। पाकाशयका शूल और सरमें दर्द पर्यायक्रमसे पैदा होते हैं। स्नायुमें

शूलकी तरह यंत्रणा, मानो चिमटेसे मांस नोचा जा रहा है। यह दर्द समूचे चेहरे और दांततक फैल जाता है। ठण्डे प्रयोगसे घटना। मस्तिष्कमें धीमा धीमा कतरनेकी तरह दर्द,—दाहिनी भँवसे माथेके पश्चाद् भागतक फैल जाता है। सरके पश्चाद् भागमें पीसनेकी तरह यंत्रणा—(मानो भारयुक्त=ऐगार, ऐपिस, कैनाबिस-इण्डि) ; देह हिलानेसे ही बढ़ना।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—मुर्देकी तरह रक्तशून्य और आँखके चारों ओर नीली रेखा, मानो अभी किसी भयंकर बीमारीसे आराम हुआ है। दांतमें दर्द,— मुँहमें ठण्डा पानी लेनेसे घटना (ब्राइ, काफि, पल्स) मसूढ़े फूले। जीभपर सफेद लेप ;शरीरमें गर्मी न मालूम होनेपर भी ठण्डे पानीय पीनेकी इच्छा (विशेष कर सन्ध्या के समय)

पाकाशय और अंत्राशय।—वमन,—पेटमें पानी जाते ही कै हो जाती है, बल्कि अन्यान्य खाये हुए पदार्थ कुछ देर तक पेटमें रहते हैं (खाते ही पानी और दूसरे खाये हुए पदार्थ दोनों ही कै हो जाते हैं=आर्स),—बहुत दिनोंके बाद पाकाशय खाये हुए पदार्थसे भर जानेपर बहुत ज्यादा परिमाणमें वमन हो जाता है। पतले जलीय पदार्थ खानेसे ही कै हो जाती है ; पेटमें नश्तर लगवाने बाद अर्थात तलपेटमें किसी तरहका नश्तर लगवाने पर,—आक्षेपिक और श्वासरोधक वमन और बहुत तेज़ दर्द बना रहता है (नक्स, स्टैफ),—वमनके साथ ही बहुत बदबूदार पाखाना होता है (पानीकी तरह मल=वैरेट्रम) ; पाकाशयके भीतरके किसी एक अंशमें बहुत दबाव मालूम होता है। मानो उस अंशमें कोई भारी चीज़ रखी हुई है ; भार मालूम होना और जलन पर्यायक्रमसे प्रकट होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो अकड़न पैदा हो रही है, मानो पाकाशयकी पेशी सिकुड़ रही है ; पाकाशयमें गड़बड़ी और अस्वाच्छन्द्य मालूम होना ; इसके साथ ही छातीमें जलन और मुंहमें पानी भर आना। सांघातिक विसूचिका और गर्मीके दिनोंका अतिसार,-दस्तकी अपेक्षा वमन बहुत अधिक होता है; बदबूदार, सूखा या पानीकी तरह दस्त ; उससे बहुत सुस्ती पैदा हो जाती है। (आर्स, वैरेट्र) पाकाशयके कर्कटमें यदि ये सब लक्षण मौजूद हों तो इसके द्वारा विशेष उपकार होता है।

श्वास यंत्र।—उदर वक्षव्यवधायक पेशी (Diaphragm) के बीचमें ऐंठनकी तरह दर्द और चिकोटीकी तरह दर्द। वक्षस्थलके भीतर तक

फैल जाता है।—टहलनेसे बढ़ना। वक्ष-शूल—कलेजेमें दर्द—दर्द बाईं बाँहसे अँगुली तक फैल जाता है।

प्रत्यङ्गादि ।—हाथ पैरोंमें अकड़न होती है। कलाईमें छेदनेकी तरह दर्द होता है (बावेरिस)

त्वचा ।— बिचले पैरकी सामनेवाली हड्डीमें और पिछले भागमें और गुल्फ सन्धिके पास त्वचाकी क्षय करनेवाली खुजली ; खुजलानेसे बढ़ जाती है ; पर जब तक खून नहीं निकलता तब तक वाध्य होकर खुजलाना ही पड़ता है।

निद्रा ।—सवेरे शय्या त्यागनेके दो एक घण्टा पहले बहुत औंघाई, रातमें निद्रावस्थामें बार-बार जाग उठता है, मानो डरा गया हो ; रातमें गहरी नींद नहीं आती—कारण लगातार कामोत्तेजक सपने देखता है और प्रायः स्वप्नदोष हो जाता है — यद्यपि नित्य रातमें नहीं होता।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐण्टि-क्रूड (वमन), पाकाशयका प्रदाह ; कैन्सर, (सड़े जखम) ; बेलाडो ; ब्रायो (दन्त-शूल) ; कैलके ; हग्ने, लैकेसि (गलेका जखम) ; लाइको ; मार्क, नक्स, (पाकस्थलीकी बीमारी) ; रास, पल्स, साइलि, स्टैफिसे।

दोषघ्न ।—कैल्के, कैम्फि, काफिया, नक्स-वोमिका।

शक्ति ।—१ ली से ३० शततमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व ।— १० से २५ दिन।

ब्लैटा अमेरिकाना ।

(BLATTA AMERICANA)

दूसरा नाम ।—अमेरिका देशका झींगुर ; तेलचिट्टा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित तेलचिट्टेको दूधकी चीनीके साथ विचूर्ण कर, उससे मूल अर्क तैयार किया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगमें लाभदायक है ;— दमा ; शोथ ; कामला।

उपयोगिता और आभास ।—उदरी और अन्यान्य अङ्गोंके शोथ रोगमें यह विशेष लाभदायक है। शरीरका रंग पीला ; बहुत सुस्ती और पेशाब के समय मूत्रनालीमें दर्द ।

लक्षणावली ।

मुखमण्डल ।—आंखोंका सफेद अंश और चेहरा बहुत पीले रंगका (चेलिडो, चियोनैन, मार्क-सोल ।)

पाकाशय ।—दाहिनी ओरसे बाएं पार्श्व तक सरल-रेखा भावसे विस्तृत स्थूलान्त्र (Transverse Colon) और डियोडोनम या द्वादश अङ्गुलिका (Duodenum) के भीतर और उदरके ऊपरी-प्रदेश (Epigastrium) में दर्द ।

पेशाब ।—पेशाबके समय मूत्रनलीमें जलन पैदा करनेवाली गर्मी मालूम होती है (कैन-इण्डि, कैनाब-सैट, कैन्थ)। पेशाब चमकीला पीले रंगका और लार-भरा (चेलिडो, चिनोपोड, कैमो, मार्क, आर्स, एड्रिनैलिन आर्जेण्ट-नाई)

ग्रीवा और पीठ ।—गर्दनके बाईं ओर सुई बेधनेकी तरह मालूम होना,—दर्द पीठसे लेकर पृष्ट-फलक तक फैल जाता है ।

वक्षःस्थल ।—श्वासके अभावके साथ वक्षमें भयानक दर्द (ब्लैटा-ओरियण्ट) ।

सार्वाङ्गिक ।—सीढ़ी चढ़नेके समय बहुत कमजोरी मालूम होना (पैनाक, कैल्के, काकु, कोना, लैके, नैट्र-कार्ब, स्टैन)

सम्बन्ध-सदृश ।—चेलिडो, एपोसाइन-कैन, मार्क-सोल, कैन्थ ।

शक्ति ।— ३रा दशमिक क्रम ।

परीक्षक ।—डा० मूर प्रभृति ।

ब्लेटा ओरियेण्टेलिस ।

(BLATTA ORIENTALIS)

दूसरा नाम ।—बंगालका तिलचट्टा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित तिलचट्टेके सूखे चूर्णसे इसका मदर-टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— दमा ; श्वासनलीका प्रदाह ; यक्ष्मा-कास ।

उपयोगिता ।—स्थूलकाय मोटे ताजे मनुष्य, सड़ी गन्ध (Malarious) विषाक्त धातु और अन्धड़-पानीके दिनोंमें जिनका रोग बढ़ जाता है उनके रोगमें यह विशेष लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका बड़ेही आश्चर्य रूपसे आविष्कार हुआ है । किसी आदमीको बड़े जोरोंका दमा था और वे नित्य सवेरे चाय पीते थे; परन्तु उनका रोग दिनों दिन बढ़ता ही जाता था । बहुत तरहकी चिकित्सा की पर कोई लाभ न हुआ । एक दिन चाय पीने बाद उन्हें एकाएक बहुत आराम मालूम हुआ । वे इसका कारण खोजने लगे । पता लगा, कि उनकी चायकी केतलीमें एक तेलचिट्टा पड़ा था जो उसमें खूब सिद्ध हो गया और यही चाय पीकर उन्हें लाभ हुआ है । भारत-विख्यात ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाशयने इसके बाद डा० डी० एन० रायसे तेलचिट्टेका अर्क भी तैयार कराया और उससे असंख्य मनुष्योंका उपकार हुआ । कोई तो एकदम अच्छा हो गया और किसीका रोग दब गया ।

शक्ति ।—आक्रमणावस्थामें मूल अर्कका बार बार प्रयोग करना चाहिये। इसके बाद रोग आरोग्यके लिये उच्च क्रमका प्रयोग करना चाहिये। डा० सी. एम. एलेन और हेनिसका कहना है, कि भयानक शोथ रोगमें जहाँ एपिस, एपोसाइन और डिजिटेलिससे कोई उपकार नहीं हुआ है, वैसे स्थान पर ब्लेटा ओरियेण्टेलिस रोगीको एकदम आरोग्य कर देता है ।

बोलिटस लेरिसिस ।

(BOLETUS LARICIS)

दूसरा नाम ।—पोलिपोरस आफिसिनेलिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह चिल जातीय परगच्छासे तैयार होता है। पहले चूर्ण बनता है, इसके बाद टिंचर ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—अतिसार ; रक्तामाशय ; ज्वर ; सरमें दर्द ; यकृतकी बीमारी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—रोज आनेवाला सविराम ज्वर और यक्ष्मा रोगमें रातमें पसीना । पसीना थोड़ा होता है और उससे आराम नहीं मिलता ; इसके साथ ही यदि पतले दस्त आते हों तो यह अधिक लाभदायक है ।

लक्षणावली ।

मन ।—अत्यन्त दुःखित और गम्भीर भाव, थोड़ेमें ही क्रोधित हो जाता है ।

मस्तक ।—बहुत हलका और शून्य मालूम होता है (आर्जेण्ट, चिनिन-सल्फ, काक्यु, क्यूप्रम, ग्रेनेट, पल्स)। ललाटके गभीरतम प्रदेशमें दर्द मालूम होता है,—इसके साथ ही सुस्ती (लाइको, स्ट्रैम) ।

आंख ।—रोज सवेरे आँखें सट जाती हैं (ऐल्यू, लाई, कैमो, युफ्रे, लाइको, मार्क, पल्स रास) और आँखके गोलेमें तेज दर्द (बेल, क्रोक, हिप, रास, रियुटा, स्पाइजि, ऐण्टि-टार्ट))

मुख-विवर ।—दाँतके मसूढ़ेमें अत्यन्त दर्द—चय हुई त्वचाकी तरह जीभपर गाढ़ा सफेद रंगका लेप और उसपर दन्ताङ्क या दाँतका दाग पड़ता है (मार्क-वाइ, चेलिडो, पोडो, रासटक्स) ; स्वाद ग्रहण करनेकी शक्तिका गायब हो जाना या तमैला (ताँबेका) स्वाद (जीभके मध्य भाग या जड़में पीला लेप चढ़ा रहता है और स्वाद तीता रहता है=काक्यु) । लगातार मिचली या ओकाईकी वजहसे पाकाशयमें गड़बड़ी मालूम होना । तीते तरल पदार्थोंकी के होती है । पाकाशयमें खालीपन और सुस्ती मालम होना (ऐनाक, अरम, ऐसा,

सिङ्को, लैके, मिनियैन, नक्स-मस, फास, स्टैन)। पूरी तरह श्वास लेनेपर यकृत के दाहिने खण्ड (right lobe) और पीछेकी तरफ पित्तस्थली प्रदेशमें तेज दर्द मालूम होता है, पित्तस्थली प्रदेशमें भी तेज दर्द होता है।

मल।—पीली आभा लिये जलमय, फेनभरा और रुखड़ा मल। कभी कभी पित्त फेन-भरा श्लेष्मा या तेलहे पतले फेन-मिले, दस्त,—पाखाना हो जाने बाद यकृत और नाभि-प्रदेशमें दर्द हुआ करता है; अजीर्ण पदार्थ मिला और बिना तकलीफका; मल बहुत ज्यादा परिमाणमें और बड़े वेगसे निकलता है (क्रोटन, ऐड्री, फेरम-म; छिटक पड़ता है = नेट्र-सल्फ; कितनी ही विभक्त धारोंमें अकसर निकलता है = इलैट)

पेशाब।—गाढ़ा, लाल और परिमाणमें थोड़ा।

पीठ और प्रत्यङ्ग आदि।—धीमा भार मालूम होनेकी तरह दर्द,-पीठ और दोनों पैरोंमें होतो है। सभी सन्धियोंमें लगातार दर्द मालूम होता रहता है। आधी रात तक रोगी छटपटाया करता है। बहुत कमजोरी और और सुस्ती मालूम होती है।

ज्वर।—रोज आनेवाला सविराम ज्वर (Quotidion Intermittent) कैल्के, कैप्सि, डायोडेमा; सैवाड़, आर्स चायना, सीड्रन, इपिका, नक्स-वोम; मेरुदण्डके एक ओर से दूसरी ओर तक शीत घूमा करता है और इसके बाद ही एकाएक उत्ताप पैदा होकर पसीना निकलनेके बाद आराम-हो जाता है; शीतावस्थामें बार बार जम्हाई और हाथ पैर फैलाता है (अँगड़ाई लेता है, शरीरको मरोड़ता है = ऐमिल, साइमेक्स); त्वचा सूखी और उत्ताप-युक्त खासकर दोनों तलहत्थियाँ, शीत और उत्तापवाली अवस्थामें कान्धे और प्रत्येक सन्धिमें बहुत दर्द मालूम होता है। पाण्डुरोग।

सम्बन्ध।—**सदृश**—बोलेटिस-ल्यूटिडस,—पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और गुठिला दोषयुक्त आमवात; ऐनाक; ऐस्ट्रेकस-फ्लूब, नेट्र-म्यू।

शक्ति।—१ ली दशमिकसे ३० शततमिक तक; ज्वराधिकारमें २०० शततमिक अधिक लाभदायक है।

परीक्षक।—डा० वार्टने परीक्षाकी है।

बोलेटस लूरिडस।

(BOLETUS LURIDUS)

दूसरा नाम।—बोलेटस—माइप्रिस्टेन्स।

परिचय।—बेंगके छत्ता जातिका एक उद्भिद।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता।—यह एक विषैला उद्भिद है। इसकी विष-क्रियामें प्रलाप, सुस्ती, नाक और ओंठका कथई रंग, तेज प्यास, उदरके ऊपरी प्रदेश में असह्य दर्द। शीत पित्त, ठण्डा पसीना वगैरह लक्षण प्रकट होकर अन्तमें रोगीकी मृत्यु होती है। इन ऊपर लिखे लक्षणोंमें यह दवा सुन्दर काम करती है।

शक्ति।—६ शततमिक से ३० तक।

बोलिटस-सैटेनस।

(BOLETAS SATANUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक दूसरी जातिके जूँसे इसका पहले विचूर्ण और इसके बाद मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार; रक्तामाशय इत्यादि।

लक्षणावली।

मन।—डर भरा और चंचल।

दोनों आंखें।—ऐसा मालूम होता है, मानो आंखोंके आगे आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं (सुस्ती लानेवाली बीमारियोंके बाद=चायना; यकृत में विकारकी वजहसे=एसिड-नाइ; इन्द्रिय-परतंत्रतासे उत्पन्न=फास।)

कर्ण-विवर।—ऐसा अनुभव होता है, मानो कानमें नाना प्रकारके शब्द हो रहे हैं (कैलि-आयोड, चिनिन-सल्फ, डिजि, कार्बोनि-सल्फ)।

मुंह और गलेके भीतर।—तकलीफ-भरा सूखा भाव। गलेमें भयानक जलन और सूखापन मालूम होना।

मल।—आमातिसार,—बहुत ज्यादा परिमाणमें, रक्त और आंतोंसे श्लैष्मिक झिल्लीके टुकड़े मिले मल निकलता है। वक्षःस्थलमें दबाव मालूम होना।

नाड़ी।—नाड़ी बहुत क्षीण, प्रायः लुप्तकी तरह।

प्रत्यङ्ग आदि।—मुंह और प्रत्यङ्गोंकी पेशीमें भयानक यंत्रणादायक भावसे अकड़न पैदा हो जाती है;—एकाएक प्रत्यङ्ग आदिके भीतर टनक-सी हो जाती है;—मानो तुरन्त ही रोगीको संन्यास रोग हो जायगा।

सार्वाङ्गिक।—एकाएक बहुत सुस्ती मालूम होती है। ज्वालामय प्यास; एकाएक कै; मिचली; पाकस्थलीमें असह्य यंत्रणा। दो तीन घण्टेमें १०।२० बार वमन; पेट भीतरकी ओर धँस जाता है (प्लम्ब); भयानक यंत्रणाजनक भावसे चिपक जाता है। वमनके बाद और वमन होते समय बहुत सुस्ती मालूम होती है। हाथ पैर भी कभी कभी बरफकी तरह ठण्डे पड़ जाते हैं।

शक्ति।— नम्न-तम क्रम।

बाम्बिक्स प्रोसेसनिया।

(BOMBYX PROCESSIONEA)

दूसरा नाम।—प्रासेशन-मथ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित प्रत्यङ्गसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह शीत-पित्त रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—एपिस, ऐण्टि-क्रू, रास-टक्स, आर्टिका-यूरा।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

बोरैक्स वेनेटा।

(BORAX VENETA)

दूसरा नाम।—सोहागा, बोरेट आव सोडियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण और अर्क तैयार हुआ करता है; पानीमें गल जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहका जखम ; गट्ठे ; दांत निकलनेके समयकी बीमारियाँ ; अतिसार ; कानसे पीब बहना ; विसर्प ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ ; अँगुलीकी सन्धियोंमें जखम ; दादकी तरह उद्भेद ; रज-शूल या बाधक ; स्तनकी घुँड़ीमें जखम ; नाककी बहुत सी बीमारियाँ ; फेफड़ेकी आवरक झिल्लीका प्रदाह ; विचर्चिका ; चिल्ला उठना ; नाव या गाड़ीमें चढ़नेपर वमन या मिचली ; बन्ध्यात्व ; उपदंश दोषसे पैदा हुआ गलेका जखम ; स्वादमें गडबड़ी ; बहुत तरह के जखम ; पेशाबमें तेज गन्ध ; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० एलेन कहते हैं,—बहुत ही स्नायविक, सहजमें ही डर जाता है ; नीचेकी ओरकी गतिमें प्रबल भय वगैरह स्वभाववाले रोगीमें यह बहुत लाभदायक है। "शरीरकी नीचेकी ओरकी गतिमें प्रबल भय—यह लक्षण अधिकांश बच्चे या छोटी उमरके रोगियोंमें ही दिखाई देता है, बच्चेको लेकर सीढ़ी उतरते समय, वह तुम्हें कसकर पकड़ लेगा और रोने लगेगा ; धात्री या माता सोये हुए बच्चेको जब उसकी शय्यापर सुलाने लगती है, तो वह चौंककर जाग उठता है (एपिस, सिना, स्ट्रैम) ; शब्द बिलकुल ही सहन नहीं होता। ये सभी बोरैक्सके निर्णायक लक्षण हैं,बच्चों के मुँहके जखम रोगमें; विशेषकर यदि उसके साथ पतले दस्त भी आते हों और किसी ऊँची जगहसे उतरनेमें डरता हो तथा अपस्मार (मृगी) और ऐसे रजःकृच्छ्र रोगमें जिसमें झिल्ली निकलती हो—यह विशेष लाभदायक है। इसके और भी कई प्रधाननिर्णायक लक्षण यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं (१) चेहरे पर उद्भेद मालूम होता है, थोड़ी-सी बातमें भी डर जाता है ; थोड़ेमें ही कातर हो पड़ता है। (२) एकाएक कोई आवाज कानमें पड़ते ही है, बहुत कातर हो जाता है (३) चेहरेपर ऐसा मालूम होता है मानो मकड़ेका जाल लगा हुआ

है। (४) माथेके केश-सूअरके केशकी तरह कड़े और रुखे होते हैं; चोटी करने या केश-सँवारनेके समय वे किसी तरह नहीं झुकते, या तो जटा-से बँध जाते हैं या अलग अलग हो जाते हैं (५) मांसाङ्कुरमय (Granulates) पलक, रातके अन्तिम भागमें पलकें जुड़ जाती हैं; दोनों आँखें जखमसे भरीं और दोनों अपाङ्ग या आँखमें खुजली, (६) मुख-विवरमें उत्ताप, दर्द और जखम मिले; मुंहके भीतरके जखम सबमें स्पर्श सहन नहीं होता और छूते ही उससे खून जाने लगता है; मुंहमें जखम होना; बच्चा स्तन नहीं पीना चाहता, मुंहमें दर्दकी वजहसे एकबार तो स्तन में मुंह लगाता है और फिर मुंह हटा लेता है और रोने लगता है। (७) मलका पतलापन—मल कोमल, पीली आभा लिये, लसदार और मांड़की तरह। बच्चोंका हरे रंगका मल मिला उदरामय। (८) बांझपन (९) प्रदर-स्राव; अण्डेके सफेद अंशकी तरह और स्रावके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो गर्म पानी निकल रहा है।

लक्षणावली।

मन।—अतिशय उद्वेग,—खासकर शरीरकी नीचेकी ओरकी गतिमें; सोये हुए बच्चेको सुलानेके समय वह धाय या माताको पकड़ रखता है; झूलेमें झुलानेके समय या हिलानेके समय बच्चा डरने लगता है, सोया हुआ बच्चा एकाएक चौंककर जाग उठता है और पालनेका किनारा पकड़ कर रोया करता है;—क्यों रोता है, उसका कोई कारण नहीं मालूम होता (एपिस; सिना; जेलसि; सैनिक, स्ट्रैम)। बहुत ही स्नायु-प्रधान स्वभाव या थोड़ेमें ही कातर,—सामान्य आवाजसे, यहाँ तक कि छींक या खांसनेकी आवाजसे भी डरता या चौंक उठता है (ऐसेट, कैलेड)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—ऊपर चढ़नेके समय (कौक्कु, सल्फ); सबेरे १० बजनेके समय मिचली और समूचे शरीरके कम्पनके साथ सरमें दर्द। माथेके केशके अगले भाग-सबमें जटा बँध जाती है और वह लसदार हो जाती है। इन केशोंके काट डालनेपर फिर बढ़कर जटा बँधना आरम्भ हो जाता है। केश झाड़नेके समय या झाड़नेपर केश सम-भावसे नहीं रहते (एसिड-फ्लु, लाइको; सोराइन, टियुबर, विङ्का-माइ)

आँख।—बरुनी या पलक सब सूखे लसदार रससे भर जाते हैं, रातके पिछले पहरमें,आँख सट जाती है (युफ्रे, पल्स, मार्क); बरुनी टेढ़ी होकर

आँखोंके भीतर घुस जाती है और आँखमें प्रदाह पैदा कर देती है, सबेरे कांपती हुई दृष्टि,—लिखनेके समय स्पष्ट दिखाई नहीं देता।

नाक ।—दोनों छेदोंमें पपड़ी जमती है और प्रदाह हो जाता है; नाकका अगला भाग लाल और चमकीला; युवतियोंकी नाक लाल नाकके छेद में बार बार सूखी पपड़ी पैदा हो जाती है और दाहिनी नाकका छेद सूख जाता है, या पहले दाहिनी फिर बाईं नाक रुक जाती है; बार बार रोगी नाक झाड़ा करता है (एमोन-कार्ब, लैक-कैन, मैग-म्यू)।

कान ।—डा० नेश कहते हैं कि इस दवाकी सहायतासे उन्होंने कानसे चौदह वरस तक पीब निकलनेवाला रोग अच्छा किया है, बाएं कानमें सुई बेधनेकी तरह यंत्रणा कानमें आवाज और श्रवण-शक्तिका घट जाना।

मुखमण्डल और मुखविवर ।—चेहरा उतरा, पीला और उससे ऐसा मालूम होता है, मानो भीतर तकलीफ है। नाक और ओंठके ऊपर व्रण रहनेके कारण चेहरा फूला हुआ मालूम होता है। मुंहके दाहिनी ओर, मानो मकड़ेका जाल लगा हुआ है ऐसा मालूम होना (ब्रोम, ग्रैफा, बैराई), मुंहके भीतर जीभके ऊपर और दोनों गालोंके भीतर सफेद रंग, बूंद बूंदकी तरह जखमके चकते; सामान्य कारणसे भी उनसे खून निकलने लगता है। भोजनके समय या छूनेपर यह अवस्था होती है; दर्दकी वजहसे बच्चा स्तन नहीं पी सकता—एक बार स्तन खींचता है, पर छोड़कर तुरन्त ही रोने लगता है; मुखके भीतर उत्ताप और सूखापन; प्यास अधिक होना (आर्स); जीभ फटकर उससे खून निकलता है (अरम); दाँत निकलनेके समय बहुत ज्यादा लार बहना; मुँहमें जखमके कारण मुख-विवरमें बहुत दर्द होता है। छूने अथवा नमकीन या खट्टे पदार्थ खानेपर दर्द और भी बढ़ जाता है; बुड्ढोंके नकली दाँतकी रगड़ लगकर मुंहमें जखम (ऐल्यूमेन), मसूड़ेमें फोड़ा (Gum-boil),—मसूढ़े, बाहरकी ओर फूले और बहुत दर्द भरे; बायें गाल और समूचे बाएँ पार्श्वमें सूजन। मुंहका स्वाद कड़वा।

पाकाशय, अन्त्राशय और मलान्त्र ।—भोजनके बाद पेट फूलना और गड़बड़ी मालूम होना, कोई भारी चीज उठानेकी वजहसे पेटमें दर्द— दर्दकी वजहसे रोगिनी रातमें करवट नहीं बदल सकती। जरायुमें गड़बड़ी या विकृतिकी वजहसे पाकाशयका शूल। पेटमें दर्द,—पतले दस्त आनेका

उपक्रम (ऐलो देखो)। दस्तका पतलापन—दस्त पतला, पीली आभा लिये, फीका, पीला रंग और आँव-भरा : कभी पीले रंगका आँव-भरा, कभी कभी बहुत पतला, भूरे रंगका फेन-भरा, बहुत बदबूदार और बिना किसी तरहका वेग दिये निकला करता है। (जब मल भूरा रहता है),—स्तन पीनेवाले बच्चोंका और दाँत निकलनेके समय बच्चोंके पाखाना होनेके पहले, बच्चा चिड़-चिड़ा हो जाता है ; चिड़चिड़ा भाव प्रकाशित करता है ; पाखाना फिरनेके समय जलन और कमजोरी मालूम होना और पाखाना हो जाने बाद अच्छा मालूम होना।

पेशाब।—बच्चा बार बार पेशाब करता है और पेशाब करनेके पहले चिल्लाता है (पेशाबके समय तेज जलन और कतरनेकी तरह यंत्रणा=इक्वि-सेटा ; पेशाब करनेके बाद असह्य यंत्रणा—बच्चा तकलीफसे छटपटाने लगता है=सार्सा ; मसानेमें और कमरमें असह्य दर्द—पेशाब करने बाद घटना=ल्यू र ; बच्चा पेशाब करनेके पहले रोता है=लाइको)

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव,—निर्दिष्ट समयके बहुत पहले पैदा हो जाता है, बहुत ज्यादा स्राव और उसके साथ ही तलपेटमें दर्द और मिचली। प्रदर,—अण्डलालकी तरह या माड़की तरह बहुत ज्यादा स्राव,—स्रावके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो अपत्य-पथसे चमकीला स्राव होता है, दो ऋतुस्रावके बीचके समयमें प्रदर पैदा हो जाता है और दो सप्ताहतक स्थायी रहता है। (बोविस्टा और कोनायम) प्रदाहके साथ बन्ध्यात्व ; जरायु-भ्रंशके साथ बन्ध्यात्व=अरम-म्यू-नैट्र)। प्रसव-वेदनाके समय प्रबल और बार बार डकार। बहुत ज्यादा माताके स्तनसे स्राव (कैल्के, कोना, बेल)

श्वासयंत्र।—सीढ़ी चढ़नेपर इतना हाँफता है, कि मुंहसे बोली नहीं निकलती; कुछ देर बाद बोलनेके समय दाहिनी छातीमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होता है (कैक्ट देखो) ; या छातीकी बगलमें दर्द (Pleurodynia) —दाहिने पार्श्वके ऊपरी अंशमें अधिक। खांसने या सांस लेनेमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना (कतरनेकी तरह दर्द, शामको सोनेके बाद और सांस लेने पर सुई बेधनेकी तरह मालूम होना=कैलि-कार्ब ; बहुत परिश्रमकी वजहसे पार्श्व-वेदना=आर्निका ; दाहिने पार्श्वमें दर्द ठहर जानेपर=बोरैक्स, चेलिडो ऐसक्लिप-ल्यू ब ; बाईं ओर होनेपर=रैनान ; जरायु-विकृतिके प्रतिचिम्ब (Reflex) कारणकी वजहसे=ऐक्टिया। (सोनेपर सांस रुक जाती है, रोगी

उछल पड़ता है, तब साँस ले सकता है,—इसी वजहसे दाहिनी ओर-दर्द मालूम होता है। हृत्पिण्ड मानो वक्षकी दाहिनी ओर है और मानो कोई हाथसे दबा रहा है ऐसा मालूम होता है। खांसनेके समय दर्द दूर करनेके लिये दाहिनी करवट दबाकर सोता है।

त्वचा।—रक्त बहुत दूषित,—शरीरमें किसी तरहका नखका खरोंच आदि लगनेपर या कट जानेपर, उसमें पीव पैदा होकर जखममें परिणत हो जाता है (कैलेण्डुला, हिप, मार्क, ग्रैफ, सिली)। पुराना जखम और नश्तर या घावके चिन्ह-में फिरसे पीव संचय हो जाता है। (ऐसिड-फ्लू, कास्टि, ग्रैफ); अंगुलीकी सन्धियोंकी पीठपर खुजलाहट। चेहरेपर फैलनेवाला त्वचाका प्रदाह या विसर्प—(एपिस, रास)

निद्रा।—रात तीन बजनेके समय नींद खुल जाती है और शरीरमें विशेषकर माथेमें उत्तापकी वजहसे फिर नींद नहीं आती। इसके साथ ही उरुमें पसीना निकलना, बच्चा रोता रोता चिल्ला उठता है, और माताको पकड़ रखता है, मानो स्वप्न देखकर डर रहा है। रोगिनी स्वामीके साथ रमणमें नियुक्त रहनेपर ऐसे ही सपने देखती है।

उपशम।—दबाने, दर्दवाला अंश हाथसे दबा रखता है।

वृद्धि।—नीचेकी ओर गतिमें, एकाएक शब्दसे, धूम्रपान करनेपर (इससे उदरामय तक हो सकता है); जलीय ठण्डी हवामें और पेशाब करनेके पहले, जबतक पेशाब नहीं होता।

दोषघ्न।—कैमोमिला ; काफिया।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—मैग-म्यू (दक्षिण नासारन्ध्रमें); कौल्कि (गहरी श्वास लेनेकी प्रवृत्ति); कैलि-बाई (कड़ा-श्लेष्मा); पल्स [पर्यायक्रमसे रोना और हँसना); बेञ्जो-ऐसिड (उग्रमूत्र), अरम (मुँहमें जखम); बैराइटा-कार्ब (मकड़ेके जालकी तरह अनुभव); नेट्रम-सल्फ (दस्तके बाद आनन्द)। ऐसेटिक-ऐसिडके पहले या बाद इसका व्यवहार नहीं होता।

शक्ति।—१ म दशमिकसे ३ रा दशमिक विचूर्ण और ६ से ३० शक्ति तक।

क्रियाका स्थायित्व।—३० दिन।

बोथ्राप्स लेनसियोलेटस ।

(BOTHROPS LANCEOLATUS)

दूसरा नाम ।—एक तरहका पीले रंगका सांप—यलो-वाइपर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— पहले ग्लिसरिनमें मदर-टिंचर तैयारकर इसके बाद सुरासारमें उच्चक्रम तैयार होता है ।

लक्षणानुयायी प्रयोग ।—अन्धापन, अस्थिचय रोग ; दिनौंधी ; सड़नेवाला जखम ; फेफड़ेमें खूनकी अधिकता ; जिह्वाका पक्षाघात ।

लक्षणावली ।

आंख ।—तिमिर दृष्टि या अन्धापन (Amaurosis)—दिनौंधी,—सूर्योदयके बाद फिर राह दिखाई नहीं देती और चल नहीं सकता (Nyctalopia = ऐको, फास ; सिलि, स्ट्रैम ।)

मुख-विवर ।—जीभमें कोई विकार नहीं है, पर बोल नहीं सकता (Aphasia = चिनोपोड-ऐन्थ)

श्वास-यंत्र ।—फेफड़ेमें अधिक रक्त संचय हो जाना ; खून भरा कफ ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दाहिने पैरके बड़े अँगूठेमें दर्द मालूम होना । हाथ पैर फूलकर तिगुने मोटे हो जाते हैं । अर्द्धाङ्ग पक्षाघात अर्थात एक हाथमें हाथ या एक पैरका पक्षाघात Hemiplegia-हड्डीको होनेपर = बैराइटा कार्ब ; पाचन-शक्तिमें विकारके कारण होनेपर = नक्स ; सरके पिछले स्थानमें दर्द, कपकपी, कष्टके कारण बोली नहीं निकलती = जेल्स ; धीरे धीरे बात करता है = लैके ; अत्यन्त विमर्ष-भाव और रुलाईके साथ = ग्रस ; यदि एकदम अकड़न (Anchylosed) पैदा हो जानेका उपक्रम हो तो = सिकेल) ; हाथ पैर एकदम ठण्ढे ।

सार्वाङ्गिक ।—हृदयंग्व्यापी पीव-सञ्चय (कैल्के-सल्फ़ोफास) होना ; सड़े घावकी वजहसे हड्डी बाहर निकल आती है । खून पानीकी तरह पतला और काले रंगका, रक्तस्राव,—(खासकर नश्तर लगायी हुई जगहसे) अत्यन्त पतला काला रक्त रह रहकर सोतेकी तरह निकलता है, हड्डीका जखम (सैंगु ; स्नायवीय कम्पन —इग्ने, जेल्स, ऐण्टि-टार्ट ; प्रकृत बाहरी कम्पन म

रहनेपर भी रोगी समझता है, कि उसकी देह काँप रही है=ऐसिड-सल्फ़; भयजनित=स्ट्रैम); बार बार बेहोशी आ जाना या हृत्पिण्डकी, क्रियाका न होना (मस्कस; मूर्च्छावायुसे उत्पन्न=इग्ने), दर्द कोना कोनी भावसे चलता है (बायें उर्द्धाङ्ग और दाएँ निम्नाङ्ग=ऐम्ब्रा; ब्रोम, मिडोरि, फास, ऐसिड-सल्फ़)।

त्वचा।—नीली या पीली। शरीरमें दर्द—मानो बहुत मार खायी है, क्षत आदि सहजमें आरोग्य नहीं होते।

ज्वर।—सामान्य शीत या कम्पके बाद बहुत ज्यादा पसीना होना; ठण्डा पसीना। रोगके आरम्भ और अन्तमें ठण्डा पसीना होता है।

सम्बन्ध।—दूसरे दूसरे सर्प-विष—बेलाडो (रतौंधी)

शक्ति।—३री दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

बोविस्टा।

(BOVISTA NIGRESCENS)

दूसरा नाम।—वाटेड पाक-बाल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण इसके बाद टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—पीठके नीचे दर्द; गट्ठे; बहुमूत्र; अतिसार; कानमें एक तरहका विषैला जखम; प्रमेह; रक्तस्राव; सरका दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; कामला; डिम्बाधारकी बीमारी; सन्धिकी बीमारी; ऋतुका बिकार; बात; तोतलाना जीभका जखम; अर्बुद; आमवात; अंगुलहाड़ा; जखम।

उपयोगिता और आभास।—जिन मनुष्योंको अक्सर खुजलाने वाले उद्भेद निकला करते हैं, वे चाहे जो करें, उनका एक हाथ हमेशा शरीर खुजलानेमें लगा रहता है और जो बूढ़ी स्त्रियाँ प्राय ही हृत्स्पन्दन (कलेजेकी धड़कन) के रोगसे ग्रसित रहती हैं, उनके लिये और तोतलानेवाले बच्चोंके लिये यह दवा बहुत लाभदायक है; इससे नाना प्रकारके रक्त स्राव भी उत्पन्न हो जाया करते हैं; आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक लक्षण हैं (१) इससे पैदा हुई श्लैष्मिक झिल्लीकी सर्दी या प्रतिश्याय आदिका स्राव गाढ़ा

डोरीकी तरह कड़ा गोंदकी तरह होता है। (२) कमरमें वस्त्र आदि कसकर पहन नहीं सकता, (३) कचदेश या बगलसे निकले हुए पसीनेकी गन्ध प्याज की तरह (४) उखाड़े हुए दांत, जखमवाली जगह और नाकसे बहुत ज्यादा खून निकलना, (५) छुरी, कैंची या सुईका व्यवहार करनेपर अंगुलीमें गहरा दाग पड़ जाता है (६) प्रत्यङ्ग आदिकी सन्धि और हाथ पैरमें बहुत क्षीणता मालूम होना (७) अत्यन्त असावधान और दुर्बल हाथ, प्रायः हाथसे चीजें गिर जाती हैं और रोगिनी माथा खुजलाती हुई अप्रस्तुत भावसे परिचय देती है (निर्बोधकी तरह खड़ी होकर देखती है या हँसती है=एपिस) (८) रजःस्राव केवल रातके समय होता है; आर्त्तव स्राव आराम होनेके पहले पतले दस्त आने लगते हैं; रजःनिवृत्ति (ऋतु-स्राव बन्द होना) के बाद पांच सात दिनोंका अन्तर देकर फिर खून दिखाई देता है; प्रत्येक पक्षके अन्तमें गाढ़ा और काले रंगका रक्त-स्राव होता है,—इसके साथही जरायु आदिमें दर्द-भरी नीचेकी ओर खींचन रहती है (८) मेरुदण्डके निचले अगले भागमें असहनीय खुजली,—खुजलाते खुजलाते खाल उधड़के जखम बना देता है; (१०) बहुत धूआं सूंघनेकी वजहसे श्वासरोध या अलकतरा लगाने या प्रयोग की वजहसे बीमारी।

लक्षणावली।

मन ।—बहुत अधिक अन्यमनस्क; सहजमें ही किसी विषयमें मन नहीं लगा पाता; ऐसा मालूम होता है, कि अङ्ग-प्रत्यङ्ग बड़े हुए जाते हैं (प्लैट, आर्जेण्ट-नाई, स्टैफ, स्ट्रेम)—अत्यन्त असावधानी,—सभी चीजें उसके हाथसे गिर जाती हैं (एपिस देखो)। मुँह फाड़कर एक ओर देखा करता है (स्टैफ)। बहुत अभिमानी;—थोड़ेमें ही क्रोधित हो जाता है।

मस्तक ।—ऐसा मालूम होता है, मानो माथा बड़ा हुआ जाता है, (बेल, कोरेल-रू; एपियोल; डैफनी, ग्लने, फिलैन, सिली, साइजि)। माथा फैलनेकी अनुभूति मालूम होनेके साथ ही सरमें दर्द,—सवेरे टहलने और सोनेपर अत्यन्त वृद्धि। माथेमें चोट लगनेकी तरह दर्द,—माथेके आवरक (खोपड़ी Scalp) में बहुत खुजली—गर्मीसे बढ़ना; स्पर्श सहन न होना; खुजलाकर खून निकाल देता है।

मुखमण्डल ।—सवेरे शय्यासे उठनेपर चेहरा एकदम उतर जाता है (उतरा हुआ और आंख तथा गाल गड़हेमें धँसे दिखाई देते हैं—ओलि-

रहनेपर भी रोगी समझता है, कि उसकी देह काँप रही है=ऐसिड-सल्फ; भयजनित=स्ट्रैम); बार बार बेहोशी आ जाना या हृत्पिण्डकी, क्रियाका न होना (मस्कस; मूर्च्छावायुसे उत्पन्न=इग्न), दर्द कोना कोनी भावसे चलता है (बायें उर्द्धाङ्ग और बाएँ निम्नाङ्ग=ऐम्ब्रा; ब्रोम, मिडोरि, फास, ऐसिड-सल्फ)।

त्वचा।—नीली या पीली। शरीरमें दर्द—मानो बहुत मार खायी है, क्षत आदि सहजमें आरोग्य नहीं होते।

ज्वर।—सामान्य शीत या कम्पके बाद बहुत ज्यादा पसीना होना; ठण्डा पसीना। रोगके आरम्भ और अन्तमें ठण्डा पसीना होता है।

सम्बन्ध।—दूसरे दूसरे सर्प-विष—बेलाडो (रतौंधी)

शक्ति।—२री दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

बोविस्टा।

(BOVISTA NIGRESCENS)

दूसरा नाम।—वाटेड पाक-बाल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण इसके बाद टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,— पीठके नीचे दर्द; गट्ठे; बहुमूत्र; अतिसार; कानमें एक तरहका विषैला जखम; प्रमेह; रक्तस्राव; सरका दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; कामला; डिम्बाधारकी बीमारी; सन्धिकी बीमारी; ऋतुका विकार; वात; तोतलाना जीभका जखम; अर्बुद; आमवात; अंगुलहाड़ा; जखम।

उपयोगिता और आभास।—जिन मनुष्योंको अकसर खुजलाने वाले उद्भेद निकला करते हैं, वे चाहे जो करें, उनका एक हाथ हमेशा शरीर खुजलानेमें लगा रहता है और जो वृद्धा स्त्रियाँ प्राय ही हृत्स्पन्दन (कलेजेकी धड़कन) के रोगसे ग्रसित रहती हैं, उनके लिये और तोतलानेवाले बच्चोंके लिये यह दवा बहुत लाभदायक है; इससे नाना प्रकारके रक्त स्राव भी उत्पन्न हो जाया करते हैं; आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक लक्षण हैं (१) इससे पैदा हुई श्लैष्मिक झिल्लीकी सर्दी या प्रतिश्याय आदिका स्राव गाढ़ा

हो जाता है,—लिलि-टाई ; केवल सोनेके समय स्राव, उठ बैठने या चलते रहनेपर बन्द होता है=क्रियो) ; ऋतुके समय और ऋतुके पहले उदरामय पैदा हो जाता है [ऐमोन-कार्ब]। रजोनिवृत्तिके समय और ५।७ दिन बाद रक्त दिखाई देता है (बोरैक्स) ; प्रत्येक दो सप्ताहके अन्तरपर लाल रंगका और जमा हुआ रक्त निकलता है (नक्स-वोम, सलफर) ; ऋतुके समय तलपेटमें बहुत भार मालूम होना, मानो आँतें आदि बाहर निकल पड़ना चाहती हैं। (बेल, सिपि, ट्रिलि-पेन)। प्रदर,—स्राव बहुत गाढ़ा, कसैला और त्वचाको क्षय करनेवाला और डोरीकी तरह काढ़ा तथा हरे रंगके श्लेष्मासे भरा हुआ। कमरमें वस्त्र आदि कसकर नहीं पहना जा सकता (कैल्के, लैके, सल्फ)। ऋतुके समय विटपदेश (Pubes) में बहुत दर्द मालूम होना।

श्वासयंत्र।—दमाके साथ आक्षेपिक भावसे हँसना और रोना। सूखी खाँसी, स्वरभङ्ग, कष्टकर श्वास-प्रश्वास, वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, कलेजा धड़कना।

प्रत्यङ्ग आदि।—कैंची,छुरी आदिका व्यवहार करनेपर अँगुलीमें बहुत गहरा दाग पड़ता है या गहरा हो जाता है। कन्धे या बगलमें प्याजकी तरह गन्ध आती है और इसी गन्धका पसीना निकलता है (सुगन्धित पसीना= कोपैवा, रोडो ; कड़वी गन्ध=फेरेट ; खूनकी गन्ध=लाइको ; कपूरकी गन्ध= कैम्फो ; कस्तूरीकी तरह=पल्स, सल्फ ; बदबू=आर्नि, बैराई, कार्बो-ऐन, लैके, मार्क, ऐसिड-नाई, रास ; प्याजकी गन्ध=बोविस्टा, लैके, लाइको ; सड़ी गन्ध=स्टैफ ; खट्टी गन्ध=ब्राई, कास्टि, कैमो ; गन्धककी गन्ध=फास ; पेशाब की गन्ध=बार्बा, कैन्थ, कोलो, ऐसिड-नाई ; घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्ध= ऐसिड-नाई)। सन्धियाँ बहुत बलहीन और हाथ-पैर आदिका बहुत चोम हो जाना। द्रव्य आदि हाथसे गिर जाते हैं,—इतना बल नहीं कि कसकर पकड़ रख सके (असावधानतासे गिर जाते हैं=ऐपिस)। जंघाकी पोटलीकी पेशी (Calves) अत्यन्त सङ्कुचित मालूम होती है—सवेरे ऐंठन होती है (आर्निका, नक्स, कैम्फो, क्यूप्रम)।

त्वचा।—आमवात—बहुत दिनोंका—वातकी वजहसे त्वचाका सुन्न हो जाना, हृत्स्पन्दन और इसके साथ ही पतले दस्त आना (डालका),—शरीर गर्म होते ही खुजली आरम्भ हो जाती है ; सारे शरीरमें खुजली (रास-से लाभ न होनेपर)। तलहत्थीकी पीठपर रसस्रावी अकौत। मेरुदण्डका सबसे निचला

येन)। नासारन्ध्र और अन्यान्य श्लैष्मिक झिल्लीसे गाढ़े डोरीकी तरह कड़े श्लेष्माका स्राव होता है,—खींचनेसे बढ़ता है (कैली-बाइ)। स्तनका दूध पीनेके समय बच्चा जितनी ही बार स्तन खींचता है, उतनी ही बार मसूढ़ेसे खून निकलता है और मसूढ़ेमें दर्द होता है, जितनी ही बार छींकता है, उतनी ही बार नासारन्ध्रसे कई बूंद खून गिरता है। सवेरे नाकसे रक्तस्राव (मिलिफो, ब्राइ, नक्स ; ऐसा खून जो खींचनेपर डोरीकी तरह बढ़ता है= क्रोकस)। उखाड़े हुए दांतकी जड़से बहुत अधिक खून बहना (हैमा, क्रियो); आंतके जखमसे खून बहना (ब्रोथ्रूप्स)। दोनों ओंठ फटे, उनपर पपड़ी जमी या दाग पड़े। पलकोंका प्रदाह; रोज रातके अन्तिम प्रहरमें आंखें सट जाती हैं (इयुफ्रे, पल्स)। एक दृष्टिसे टकटकी लगाकर और मुँह फाड़कर आकाशकी ओर देखता रहता है। तोतलाना—काँपती हुई बोली (स्ट्रैम, मार्क) सभी चीजें बहुत पास दिखाई देती हैं (कैनाब-इण्डि); डकारमें जलन या शून्य डकार (आर्जेण्ट-नाई ; खाई हुई चीजके स्वादका डकार— पेट फूलनेके साथ=कार्बो-वे ; श्वासरोध करनेवाली डकार=कार्बो-ऐन ; इसके साथ ही खाये हुए पदार्थ या खट्टे कणोंका निकलना=सलफर।)

अन्नाशय । - मानो पाकाशयमें बरफका एक टुकड़ा रखा हुआ है, ऐसा मालूम होना,—इसके साथ ही दर्द (मानो पाकाशयमें एक आधा सिझा हुआ अण्डा रखा हुआ है=ऐबियेज नाइग्रा ; मानो पत्थरका टुकड़ा रखा है= ब्राइ, नक्स, पल्स)। अन्त्रशूल,—इसके साथ ही लाल रङ्गका पेशाब—खानेसे घटना, दर्दके कारण रोगी सामनेकी ओर झुक पड़ता है। नाभीके चारों ओर दर्द (कैल्के, सिना, ऐनाक, रास-रैड, रैफेनस, रियूम, लैके, टैबाक)। वृद्ध मनुष्योंका उदरामय—रातमें और सवेरे बढ़ना ; कुन्थन (Tenesmus) और मलद्वारमें जलन,—पानीकी तरह पाखाना होनेके बहुत देर बाद तक यह कुन्थन मौजूद रहता है—(इग्ने)। ऋतुके पहले और ऋतुके समय पतले दस्त आना (ऐमोन-का, वेरेट)। बार बार पेशाबका वेग,—पेशाब बार आनेपर फिर तुरन्त लग आता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु,—शोणित-स्राव—सिर्फ रातमें होता है,— दिनमें कोई चिन्ह भी नहीं रहता (ऐमोन-म्यू, मैग-कार्ब ; केवल दिनमें और सोनेके साथ स्राव रुक जाते हैं=कैक्ट, कास्टि, लिलि-टाइ ; जबतक वह चलती फिरती रहती है, तबतक स्राव होता है, चलना बन्द करते ही स्राव बन्द

हो जाता है,—लिलि-टाई ; केवल सोनेके समय स्राव, उठ बैठने या चलते रहनेपर बन्द होता है=क्रियो); ऋतुके समय और ऋतुके पहले उदरामय पैदा हो जाता है [ऐमोन-कार्ब]। रजोनिवृत्तिके समय और ५।७ दिन बाद रक्त दिखाई देता है (बोरैक्स) ; प्रत्येक दो सप्ताहके अन्तरपर लाल रंगका और जमा हुआ रक्त निकलता है (नक्स-वोम, सलफर) ; ऋतुके समय तलपेटमें बहुत भार मालूम होना, मानो आँतें आदि बाहर निकल पड़ना चाहती हैं। (बेल, सिपि, ट्रिलि-पेन)। प्रदर,—स्राव बहुत गाढ़ा, कसैला और त्वचाको क्षय करनेवाला और डोरीकी तरह कड़ा तथा हरे रंगके श्लेष्मासे भरा हुआ। कमरमें वस्त्र आदि कसकर नहीं पहना जा सकता (कैल्के, लैके, सल्फ)। ऋतुके समय विटप्रदेश (Pubes) में बहुत दर्द मालूम होना।

श्वासयंत्र।—दमाके साथ आक्षेपिक भावसे हँसना और रोना। सूखी खाँसी, स्वरभङ्ग, कष्टकर श्वास-प्रश्वास, वक्षमें सुई वेधनेकी तरह दर्द, कलेजा धड़कना।

प्रत्यङ्ग आदि।—कैंची,छुरी आदिका व्यवहार करनेपर अँगुलीमें बहुत गहरा दाग पड़ता है या गहरा हो जाता है। कन्धे या बगलमें प्याजकी तरह गन्ध आती है और इसी गन्धका पसीना निकलता है (सुगन्धित पसीना= कोपेवा, रोडो ; कड़वी गन्ध=फेरेट ; खूनकी गन्ध=लाइको ; कपूरकी गन्ध= कैम्फो ; कस्तूरीकी तरह=पल्स, सल्फ ; बदबू=आर्नि, बैराई, कार्बो-ऐन, लैके, मार्क, ऐसिड-नाई, रास ; प्याजकी गन्ध=बोविस्टा, लैके, लाइको ; सड़ी गन्ध=स्टैफ ; खट्टी गन्ध=ब्राई, कास्टि, कैमो ; गन्धककी गन्ध=फास ; पेशाब की गन्ध=बार्बा, कैन्थ, कोलो, ऐसिड-नाई ; घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्ध= ऐसिड-नाई)। सन्धियाँ बहुत बलहीन और हाथ-पैर आदिका बहुत क्षीण हो जाना। द्रव्य आदि हाथसे गिर जाते हैं,—इतना बल नहीं कि कसकर पकड़ रख सके (असावधानतासे गिर जाते हैं=ऐपिस)। जंघाकी पोटलीकी पेशी (Calves) अत्यन्त सङ्कुचित मालूम होती है—सबेरे ऐंठन होती है (आर्निका, नक्स, कैम्फो, क्युप्रम)।

त्वचा।—आमवात—बहुत दिनोंका—वातकी वजहसे त्वचाका सुन्न हो जाना, हृत्स्पन्दन और इसके साथ ही पतले दस्त आना (डालका),—शरीर गर्म होते ही खुजली आरम्भ हो जाती है ; सारे शरीरमें खुजली (रास-से लाभ न होनेपर)। तलहथ्थीकी पीठपर रसस्रावी अकौत। मेरुदण्डका सबसे निचला

अंश खुजलाने लगता है, रोगी खुजला खुजलाकर जखम बना डालता है। रोज ७ बजे संध्याके समय उत्ताप पैदा हो जाता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऋतु-विकारमें ऐमोन-कार्ब, ऐमो-म्यू, बेल, मैग-कार्ब, मैग-सल्फ, सिपिया वगैरह बोविस्टासे तुलनीय हैं; इसके अलावा स्ट्रैमो (हँसना और रोना पर्यायक्रमसे), सल्फ (भोजनके बाद कमजोरी); ब्यूफो (मानो हृत्पिण्ड पानीमें डूबा हुआ है); ऐम्ब्रा (दो आर्त्तवोंके बीचके समयमें खूनका स्राव) इत्यादि; अलकतराके बाहरी प्रयोग और धूएँकी वजहसे श्वास रुक जानेके कारण पैदा हुई बीमारीमें बोविस्टा बहुत लाभदायक है।

दोषघ्न ।—कैम्फर, काफिया।

शक्ति ।—३री दशमिक से २०० क्रम तक हमेशा व्यवहारमें आता है।

क्रियाका स्थायित्व ।—५० दिन।

ब्रैकिग्लोटिस रिपेन्स ।

(BRACHYGLOTIS REPENS)

दूसर नाम ।—न्यूजिलैण्ड देशके प्यूका नामक एक तरहका फूलका गाछ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते और फूलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है;—मूत्रग्रन्थिकी बीमारी, (ब्राइटकी बीमारी) बाधक इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—इसके द्वारा लालामय मूत्र और मूत्र नलीके अन्यान्य विकार पैदा हुआ करते हैं। ब्राइट्स या लाला मूत्र-रोगमें इससे विशेष लाभ हुआ करता है।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना और तमतमाया हुआ चेहरा।

कान ।—कानमें खुजलाहट, सुई बेधनेकी तरह मालूम होना।

नाक ।—नासा-रन्ध्रमें खुजली और जलन।

अंत्राशय।—अन्त्राशय और दाहिने डिम्बाधार प्रदेशमें बहुत अस्वाच्छन्द्य मालूम होना,—मानो कुछ धड़फड़ कर रहा है (Fluttering sensation)

पेशाब।—पेशाब लालामय (बोवि, हेलोन, मार्क-कोर)। मसाना या मूत्र-ग्रन्थि प्रदेशमें ऐसा बहुत अधिक दर्द मालूम होना मानो त्वचा च्यय हो गयी है। मूत्रस्थलीके ग्रीवादेशमें च्यय हुई त्वचाकी तरह दर्द और पीसने जैसा मालूम होना; पेशाबका वेग। मूत्रनालीमें जखमकी तरह मालूम होना और ऐसा मालूम होना मानो पेशाब आपसे आप ही निकल जायगा। पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना। पेशाबकी नलीमें डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होना (एपिस), श्लेष्माके कण और मूत्रनलीका ग्लक मिला बहुत ज्यादा परिमाणमें फीके रंगका पेशाब निकलना। पेशाब होनेके पहले तलपेटमें दर्द। मूत्रनालीमें टपक और पेशाबका वेग।

श्वासयंत्र।—श्वास-प्रश्वासमें बाधा और प्राय: रुकी-सी सांस। संध्याके समय वक्षस्थलके बाएं पार्श्वमें और हृत्प्रदेशमें दर्द मालूम होना। लम्बी सांस लेनेपर श्वासकृच्छ्रताका घट जाना।

मलान्त्र और मल।—निष्फल वेग। कब्जियत—मल सूखा—गांठ गांठ,—निकलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो मलान्त्रमें जखम हो गया है,—विशेषकर सन्ध्याके समय (ग्रैफ)

प्रत्यङ्ग आदि।—चलने फिरने बाद नितम्ब प्रदेशमें बहुत सुस्ती और दर्द मालूम होना, हाथ-पैरमें चीणता मालूम होना, लिखनेके समय हाथकी अँगुलीमें, अँगूठे और कलाईमें ऐंठन—कलाईसे लेकर प्रकोष्ठ तक पेशियोंकी खींचन पड़ती है।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस (मूत्रनलीमें डंक मारनेकी तरह तकलीफ), हेलेन, मार्क-कोर, (ऐलबुमिनुरिया), ग्रैफ, फेरम-फास, आर्स, कैलेण्डु, सेनेसियो, आर्निका, (चोटकी तरह अकड़न); बोविस्टा; नक्स (वेग); ओपियम (कब्जियत)।

शक्ति।—३री दशमिक से ६ठी दशमिक तक।

परीक्षक।—डा० फिङ्कर।

ब्रैङ्का अर्सिना ।

(BRANCA URSINA)

or

(HERACLEUM SPHONDYLIUM)

उपयोगिता और आभास ।—भूख रहनेपर भी खा नहीं सकता। मिचली, वमन, आँतोंका शूल, उदरामय, प्लीहामें दर्द, औंघाईके साथ सरमें दर्द हो आदि इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—पढ़नेके समय या बैठनेके समय (ऐमोन-कार्ब, क्यूप्रम, ग्रेटि, लैके, स्ट्रैन,) औंघाईके साथ सरमें दर्द,—हवा खानेके लिये टहलते समय बढ़ना ; वस्त्रसे माथा बाँध रखनेपर घटना ; माथेमें बहुत पसीना,—माथेमें तेल-भरा पसीना (ग्रैफ, प्लम्बम, नेट्र-म्यू) ; माथेमें बहुत खुजली ; बार बार छींक और इसी कारणसे प्लीहामें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना ।

पाकाशय ।—भूख लगती है पर मिचली और सब तरहके भोजनोंसे अरुचि रहती है। प्लीहा प्रदेशमें टपकको तरह दर्द होता है ; शूल वेदना, कोई मानो मरोड़ता है या सुई बेध रहा है ; गोंदकी तरह तथा बदबू-दार मल।

त्वचा ।—अकौतकी तरह रस बहानेवाले उद्भेद और शरीरमें बहुत खुजली ; छातीमें सूखे उद्भेद, खुजलानेपर जलन होती है।

शक्ति ।—तृतीय दशमिक से ६ ठा शततमिक क्रम तक।

ब्रैसिका-नेपस ।

(BRASSICA NAPUS)

दूसरा नाम ।—कोल-सीड ; रेप-सिड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे सतेज उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—शोथ, मुखविवरमें शीतादका जखम, बहुत अधिक भूख, उदरमें वायु-संचय, शरीरके भिन्न भिन्न स्थानोंमें आगसे जलनेकी तरह दाग, नख निकल जाना, सड़नेवाले जखम वगैरह रक्तके विषाक्त हो जानेके लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध-तुलनीय।—रैफेनस; आर्मोरैसिया; सिनापिस, सिकेलि।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

ब्रोमियम।

(BROMIUM)

दूसरा नाम।—ब्रोमिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समुद्र अथवा नमकीन झरने आदिके पानीमें यह पाया जाता है। सुरासार मिलाकर उच्च क्रम तैयार किया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं;— संन्यास; दमा; छातीमें कर्कटका जखम; खांसी; घुंड़ी; उपझिल्ली प्रदाह या डिफ्थीरिया; कष्टरजः, पलकोंके किनारे नासूर; ग्रन्थियोंमें विकार; गलगण्ड; हृत्पिण्डका बढ़ना वगैरह रोग; स्वरनालीकी अकड़न; अधकपारीका सर-दर्द; कर्ण-मूल रोग; कर्ण-मूल ग्रन्थिका कड़ापन; श्वास प्रश्वासकी बीमारी; गण्डमाला; अण्डकोषका कड़ापन या विवृद्धि; गलेका जखम; तालुमूल ग्रन्थिका प्रदाह और कड़ापन; गुटिका दोष; क्षय कास या यक्ष्मा; नाना प्रकारके जखम; जरायु या अपत्य पथमें वायु इकट्ठा होना; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—गोरा रंग, कुछ नीली आभा लिये कोमल केश और कोमल त्वचावाले मनुष्य, श्लेष्मा प्रधान धातुवाले मनुष्य जो प्राय: स्वरनली प्रभृति श्वासयन्त्रके रोगसे ग्रसित रहा करते हैं; और थोड़ी भी सर्दी लगनेपर जिनकी रस-ग्रन्थियां सब प्रदाहित हो जाती है, उनके शरीरमें ब्रोमियम बहुत लाभ करता है। कर्णमूल ग्रन्थिका प्रदाह और

गण्डमाला रोगमें भी इससे आश्चर्य-जनक लाभ होता है। इसके ये कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं,—(१) नासा मूलमें दबावके साथ नयी सर्दी या नाकसे पानी बहना,—दोनो नासारन्ध्रकी त्वचा मानो क्षय हो गयी हो और उसमें स्पर्श सहन न होता हो। (२) बहुत अधिक स्वरभङ्ग (३) श्वास लेनेके समय गलेमें सर्दी मालूम होती है और खांसी आने लगती है; आक्षेपिक खांसी,—खांसनेपर गला घड़घड़ाता है,— गला रुकना—गलरोध नहीं होता है, (४) छातीमें दबाव मालूम होता है,—श्वास प्रश्वासमें बहुत तकलीफ होती है और दर्द होता है।

लक्षणावली ।

मन ।—सन्ध्याके समय अकेले रहनेपर उसे ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसके पीछे खड़ा है, जमीनकी ओर देखा करता है, मानो कोई जीव-जन्तु जमीन भेदकर निकलेगा—ऐसी प्रत्याशा करता है; मानसिक परिश्रम करनेका अत्यन्त आग्रह।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—पुलपर खड़े रहनेपर या बहते हुए सोतेकी ओर देखनेसे (ऐङ्गस, फेरम, मिलिन, सलफर); अधकपारीका सर दर्द (Hemicrania)—बाईं ओर।—झुकनेपर और दूध पीनेपर बढ़ जाना (ऐसे, बेराइ, ब्राई, हिप, क्रियो, इग्ने, प्लेट, ष्टैफ; फाइटो), सरमें दर्द,—धूपमें और जोरसे माथा हिलानेपर बढ़ना (ब्रूसिया, लैके, नेट्र-कार्ब; माथा हिलानेपर=कैप, आकोराल, ग्रेफ, लैक, नेट्र-म्यू, स्पाई)। आंखें भेदकर तेज दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो चेहरेपर मकड़ेका जाल लगा हुआ है (बेराई, बोरैक्स, ग्रेफ)।

नाक ।—दोनों नासा पुटोंको सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे पंखा हिलाने जैसी गति (ऐण्टि-टार्ट, लाइको); बहुत दिनोंकी स्थायी दुरारोग्य सर्दी,—नासारन्ध्रके नीचे और रन्ध्रके मुँहपर जखम पैदा हो जाता है और नासा-मूलमें दबाव मालूम होता है। पानीकी तरह निकलनेवाला सर्दीका स्राव,—पहिले दाहिनो और फिर बाईं नाकका छेद बन्द हो जाता है, (बोरैक्स), नाकका अगला भाग हमेशा खुजलाया करता है,—मानो उसमें मकड़ेका जाल हमेशा ही लगा हुआ है। नाककी जड़में दबाव मालूम होना और बार बार छींकके साथ सर्दी।

कान।—बाईं कर्णमूलीय ग्रन्थि (Parotid gland) कड़ी और फूली हुई,—छूनेसे गर्म मालूम होती है, पीव संचय होनेका लक्षण, पककर फट जानेपर त्वचाको क्षय करनेवाला पानीको तरह स्राव होता है, पर इतने पर भी फूला हुआ अंश कड़ा और न झुकनेवाला रहता है, नरम नहीं होता।

अन्नाशय।—जीभसे पाकाशय तक तेज दर्द। ऐसा मालूम होता है मानो पाकाशयमें पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है, (ब्राई,नक्स, पल्स); पाकाशयका शूल,—कुछ खा लेनेपर घटना (बोविस्टा)। अन्नाशयमें बहुत वायु भरा रहता है; काले पाखानेके साथ दर्द भरा बवासीर।

श्वास-यंत्र।—गलेके भीतर उपझिल्ली प्रदाह (Diphtheria),—जिह्वामूल अर्थात जीभकी जड़में नकली झिल्ली निकलती है; वायुनली-भुजके भीतर, या स्वरनालीके मुंहपर, नकली झिल्ली आरम्भ होकर ऊपरकी ओर फैल जाती है; वक्षस्थलका दर्द ऊपरकी ओर फैलता है। नकली झिल्ली पैदा करनेवाली काली खांसी (Croup)—खांसनेके समय बहुत घड़-घड़ाहट सुन पड़ती है, पर सांस नहीं रुकती (हिपरकी तरह); पतले श्लेष्माका शब्द परन्तु कफ नहीं निकलता (ऐण्टि-टार्ट)। क्रुप-खांसी,—स्वरभंग और घुंड़ी (काली) खांसीकी तरह लक्षण वाली; रोगी हांफता है और मुंह फाड़ा करता है। श्वास-कृच्छ्रता—सांस लेनेसे जी नहीं भरता,—मानो किसी छेदभरी चीजके भीतरसे सांस खींच रहा है (स्पंजिया) या सब श्वासनालियां मानो धूआं या गन्धकके धुएंसे भर रही हैं; घड़घड़ और सांय-सांय शब्द वाला श्वास-प्रश्वास; आवाज—स्वर इतना टूटा रहता है, कि सुना नहीं जाता; स्वरनालीमें श्लेष्मा भरा रहनेकी वजहसे सांस रुक जानेका उपक्रम हो जाता है (यदि वायुनली-भुजमें ऐसा हो जाये=ऐण्टि-टार्ट)। बढ़ने वाले बालकोंके व्यायामकी वजहसे हृत्पिण्डका फैलना। युवतियोंके उपयोगी शारीरिक व्यायामकी वजहसे हृत्पिण्डका फैलना (कास्टि)। सांस लेनेके समय स्वरनालीके मुंहपर बहुत सर्दी मालूम होना। (रास, सल्फ); हजामत बनवाने बाद घटना या आराम हो जाना (हजामत बनवाने बाद बढ़ना=कार्बो-वेज)। दाहिने फेफड़ेमें ही अधिकांश स्थानोंमें रोग हुआ करता है। यक्ष्मा-रोगमें छातीमें कतरनेकी तरह दर्द, ऊपरकी ओर फैलता है। फेफड़ेके प्रदाहमें सभी निम्नांश यकृत-भावापन्न (Hepatized—अर्थात यकृतकी तरह रंग और कड़ापन) हो जाता है।

ग्रन्थि-मण्डली।—निम्न-हनुके नीचेवाली और कण्ठ (Submaxillary) और कर्ण-मूल ग्रन्थि और अण्डकोष वगैरह पत्थरकी तरह कड़े हो जाते हैं (अरम, पल्स, क्लिमैट) और श्लेष्मा-ग्रित या यक्ष्मासे विदूषित सूजन-भरे रहते हैं। अत्यन्त अनमनीय गलगण्ड [Goitre—स्'जिया ; थाइरायड] रोगमें यह लाभदायक है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुमें वायुकी सूजन [Physomete]—अपत्य-पथसे जोरसे वायु निकलता है [लैक-कैन, लाइको, ऐसिड-फास, बेल]। नकली झिल्ली-निर्मोचक वाधकका दर्द (बोरैक्स),—ऋतु बहुत जल्दी जल्दी होता है, स्राव बहुत ज्यादा और उसमें झिल्लीके टुकड़े मिले रहते हैं। ऋतु होनेके पहले मन चिड़चिड़ा हो जाता है। स्तनमें अर्बुद पैदा हो जाता है; उसमें सुई वेधनेकी तरह दर्द—बाएँ स्तनमें अधिक। स्तनसे कनपटी तक सुई वेधनेकी तरह दर्द।

सम्बन्ध।—सदृश।—घु'ड़ी (काली-खाँसी) और अन्यान्य रोगोंमें क्लोरम, हिपर, आयोड, स्पञ्जिया वगैरहके सदृश। कड़ापन-मिला गण्डमाला रोगमें "आयोडम" से यदि लाभ न हो तो ब्रोमियमसे फायदा होता है।

डा० हैरिङ्ग कहते हैं, कि ब्रोमियम और आयोडियममें यही प्रभेद है, कि ब्रोमियम नीली आँखवाले मनुष्योंके लिये और आयोडियम काली आँखवाले व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है। लैकेसिस, एपिस, आर्जेण्ट-नाई, कोना, कुप्रम, लाइको-पो, मार्कु, फास्फोरस (हृत्पिण्डका कड़ापन), सिपिया, सलफ ऐण्टि-टार्ट, पल्स इत्यादि।

दोषघ्न।—कैम्फ, ऐमोन-कार्ब, मैग-कार्ब, ओपियम।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे तीसरी दशमिक तक घु'ड़ी (काली) वगैरह रोगोंमें (हमेशा नया तैयार कर लेना चाहिये) तथा अन्यान्य रोगोंमें उच्च क्रम व्यवहार होता है।

ब्रूसियो ऐण्टि-डाइसेण्टरिका।

(BRUCEA ANTI DYSENTERICA)

दूसरा नाम।—ऐङ्गस्टुरा-फल्सा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट किसी भी आकारमें तैयार किया जा सकता है।

उपयोगिता और आभास ।—नक्सवोमिकाकी छालमे यह दवा तैयार होती है। **सर-दर्द**, इसके साथ ही बहुत अधिक औंघाई, संन्यासमें घटना और **पाकाशय और समूचे उदरमें** टपक जैसा दर्द होना इसका निर्देशक लक्षण है।

सम्बन्ध-तुलनीय ।—जिनसेङ्ग, हिराक्लियम, जेल्स, नक्स-म, नेट्रम-स, सल्फ, सर-दर्दके साथ निद्रालुता।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

ब्रूसिनम।

(BRUCINUM)

दूसरा नाम ।—ब्रसिन। स्ट्रिकनियाकी छाल और बीजसे तैयार किया हुआ एक तरहका उपचार।

उपयोगिता और आभास ।—निम्नाङ्गका एकाएक फड़कना लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-क्रम।

ब्रायोनिया ऐल्बा।

(BRYONIA ALBA)

दूसरा नाम ।—हमारे देशका गाछ न होनेपर भी सफेद जंगली सीजकी तरहका एक पौधा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क या मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— शराब पीनेका दुष्परिणाम; ऋतु थोड़ा होना; मुँहमें जखम; संन्यास; दमा; पित्तका विकार; स्तनका प्रदाह; श्वासनलीका प्रदाह; कैन्सर;

मृत्याण्ड ; कब्जियत ; क्षयकास ; सर्दी ; खांसी ; दाँत निकलनेकी बीमारी ; उदर और फुसफुस-व्यवच्छेदक पर्देका आमवात ; अतिसार ; शोथ ; अजीर्ण ; अकौता ; आंत्रिक ज्वर या सान्निपातिक ज्वर ; नाना प्रकारकी उद्भेद ; पाकाशय और आँतोंका प्रदाह ; रक्त-स्राव ; सर-दर्द ; हृदपिण्डका प्रदाह ; आँतका हटना ; (आँतउतरना) हिचकी ; कोरण्ड; मस्तिष्ककी बीमारी ; सविराम ज्वर ; कामला ; मस्तिष्कोदककी बीमारी ; स्तनके दूधका विकार ; यकृतका विकार ; कमरका दर्द ; खसड़ा ; वात ; मस्तिष्क प्रदाह ; ऋतु-स्रावमें विकार ; ठुनका ; स्नायुशूल ; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह ; नाकसे खून गिरना ; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह ; फुसफुस आवरक झिल्ली प्रदाह ; सूतिकावस्थाकी बीमारियाँ ; सूतिका ज्वर ; स्वल्प-विराम ज्वर ; पार्श्व-वेदना ; गर्दन अकड़जाना ; उद्भेद बैठ जानेकी वजहसे बीमारी ; प्यास ; दाँतका दर्द ; सरमें चक्कर आना ; मुंहमें पानी भर आना ; क्रुप खांसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—सन्धिवात धातुवाले मनुष्य और जो अकसर पित्त-संचयके विकारकी वजहसे रोग भोगा करते हैं, जिनका स्वभाव चिड़चिड़ा रहता है, जो साधारण-सी बातमें भी क्रोधमें अन्धे हो जाते हैं,—जिनके केश गहरे काले होते हैं ; जो सांवले और दृढ़ पेशीवाले मनुष्य हैं ; जिन्हें पसीना नहीं होता, थोड़ेमें ही कातर हो पड़ते हैं,जो बहुत क्षीण नहीं है, उनको बीमारीमें यह उपयोगी है । इससे शरीरमें कितनी ही जगह सुई बेधनेकी तरह या कतरनेकी तरह दर्द पैदा होता है और वे सब दर्द बढ़ते हैं—रातमें, शरीर हिलानेके साथ ही, साँस लेने या खांसनेपर और स्थिर होकर बैठनेपर या रोगवाली करवट सोनेपर आराम मालूम होता है (टिलिया, पल्स—सुई बेधनेकी तरह दर्द पर शरीर हिलानेसे घटना ; स्थिर होकर बैठनेपर वृद्धि= केलि-कार्ब) । इसके द्वारा मुँहके भीतर, श्वासनालीके भीतर या मलद्वारमें जहां कहीं भी क्यों न हो,— श्लैष्मिक झिल्ली मात्रमें ही बहुत सूखापन पैदा हो जाता है । शरीरके दाहिने पार्श्वमें, संध्याके समय, निर्मल-वायु सेवनसे, शीतके बाद ग्रीष्म आदिमें इसकी क्रिया पूरी पूरी दिखाई देती है । इसके अलावा निम्न-लिखित लक्षण इसके निर्णायक लक्षण हैं:—(१) प्रलाप,—दिनके किये हुए कामके सम्बन्धमें रातमें प्रलाप बका करता है । (२) सरमें दर्द,—फटनेकी या फाड़नेके तरह या भीतरसे बाहरीकी ओर दबानेकी तरह दर्द, अधिकांश स्थानोंमें माथेके पिछले भागमें दर्द ; देह या देहांश, यहाँ तक कि आँखतक

हिलानेसे दर्द बढ़ जाता है ; (३) सरमें दर्द—तेज शलाका वेधनेकी तरह या टपककी तरह दर्द—ललाट-देशमें,—दर्द नीचे जानेवाला--ललाटसे सरके पीछे और वहांसे गर्दन, गर्दनसे कन्धा और कन्धेसे पीठतक फैल जाता है। मुख-विवर सूखा और स्वाद तीता ; जीभपर घना सफेद या पीली आभा लिये और भूरे रंग का लेप रहता है और नीरसता। (५) तेज प्यास,--प्रति बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है। (६) वमन,—भोजनके बाद तुरन्त ही पित्तभरा पानीकी तरह पदार्थ कै हो जाता है, (७) पाकस्थली—स्पर्श सहन नहीं होता ; ऐसा अनुभव होता है, कि पाकस्थलीके भीतर मानो एक बहुत भारी पत्थर दबा हुआ है, खासकर खानेके बाद ; खांसनेपर पाकाशयमें दर्द मालूम होता है। (८) मलकाठिन्य,—बहुत कड़ा और गांठ गांठ मल। मल सूखा,—मानो जल गया है। (८) आमाशयमें स्पर्श सहन न होना अर्थात तलपेटपर इतना दर्द होता है कि हाथ रखना सहन नहीं होता (८) उदर हिलानेसे,—खाँसनेसे, श्वास प्रश्वासमें और हाथसे दबानेपर दर्दका बढ़ जाना। (१०) पेशाब,—बहुत थोड़ा, गर्म, गदला, बियर नामक शराबकी तरह। (११) दोनों स्तन बहुत कड़े और दर्द भरे हो जाते हैं। (१२) खांसी,—दोनों कण्ठमें खुजलानेवाली सूखी खांसी,—रातमें वृद्धि, इसके साथ छातीको फैलाये बिना सांस लेने और छोड़नेमें ऐसा मालूम होता है कि आराम न मिलेगा। उदरके ऊपरी प्रदेशमें (Epigastrium) खुजलाहट मालूम होनेके साथ खाँसी,—गर्म कमरेमें प्रवेश करने पर और भी बढ़ जाना ; मिचली न रहनेपर भी ओकाईके साथ खांसी और खाई हुई चीजको कै ; (१३) वक्षमें नोकीली सलाई वेधनेकी तरह दर्द,—श्वास प्रश्वासमें बाधा पैदा करनेवाला,—शरीर हिलानेसे वृद्धि, (१४) खांसनेपर मालूम होता है मानो छाती फटकर दो हो जायगी ; छातीपर जोरसे रगड़नेपर घटना। (१५) बलगम (Expectoration) का रंग जंगकी तरह, डोरीकी तरह कड़ा ;—थक्का थक्का, मांड़की तरह। (१६) सभी प्रत्यङ्गोंकी सन्धियाँ गर्म, लाल, फूली, दबाने और शरीर हिलानेपर दर्दका बढ़ जाता है (१७) ज्वराधिकारमें (बोखारमें) तेज प्यास और खट्टी गन्धभरा पसीना। (१८) ज्वरकी आच्छन्न (बेहोश) अवस्थामें चिबानेकी तरह जबड़ेका हिलानाया दण्ड संचालन।

लक्षणावली।

मन।—बहुत चिड़चिड़ा—सब बातोंमें वह क्रोधी हो उठता है (कैमो, हिप, कैलि-कार्ब, लाई,—फुर्तीला=क्रोक, हेके, सेबाई) ; मर्म-वेदना,

निराशा, और क्रोधकी वजहसे बीमारियाँ (कोलो, इपिका, स्टैफ), क्रोधके बाद बहुत शीत और ठण्डा मालूम होता है पर माथा गर्म और चेहरा लाल हो उठता है (अरम) ; बच्चेको यह अच्छा नहीं लगता कि कोई उसे उठाये और गोदमें लेकर घूमे (कैमो और सिनाके विपरीत), जो नहीं मिलता है वैसी ही चीज माँगता है, परन्तु देनेपर फिर लेना नहीं चाहता। (कैमो) ; विकार-युक्त,—रातमें अपने दिनके किये हुए काम काजके या विषय व्यापारके सम्बन्धमें प्रलाप बकता है ; शय्या छोड़कर भागनेकी चेष्टा करता है या अपने घर जानेकी इच्छा करता है (ऐक्टि, कैम्फि, युपेटो, ओपि, हायो), विकारावस्थामें रोगी लगातार बायाँ हाथ हिलाया करता है (ऐपोसाइन, हेलिबो)।

मस्तक ।—शय्यामें उठकर बैठते ही सरमें चक्कर आने लगना, मिचली, सुस्ती पैदा हो जाती है (ऐको, पल्स) ; सरमें दर्द,—झुकनेपर ऐसा मालूम होता है मानो ललाट फटकर माथा बाहर निकल पड़ेगा। (ऐको, मार्क, बेल, रास-टक्स)—वस्त्र आदिपर इस्तरी करनेकी वजहसे (सिपि)—खाँसनेपर सवेरे शय्यासे उठने या पहली बार सोकर आँख खोलते ही, रोगोंकी बढ़ जाना ; सवेरे आराम मालूम होता है और संध्यातक बढ़ा करता है ; कब्जियतकी वजहसे माथेमें दर्द (ऐलो, कौलिन, ओपि), ऐसा मालूम होता कि माथेके सामनेवाला भाग मानो भरा हुआ है। (खाली मालूम होना=कोरैल-रु, काकु, इग्ने, ओपी— मस्तिष्कमें मानो गोलेकी तरह एक पदार्थ है=कोना ; मानो मस्तिष्क समूचा सजीव है=पेट्रोल) माथा गर्म और चेहरा लाल पर शरीरका बाकी अंश ठण्डा (आर्निसिना)। सरमें चक्कर आना—शय्यापर सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वह नीचे जा रहा है ; मानो बहा जा रहा है—आँख बन्द करनेपर बढ़ना (थिरिड)

नाक ।—नाक फूली ; मासिक ऋतु-स्रावके बदले नाकसे रक्तस्राव होना—अनुकल्प रजः (बेल, हैमा ; फास, पल्स)। सूखी सर्दी, दिनमें श्लेष्मा निकलता है पर रातमें नाकका छेद सूख जाता है (नक्स) ; नाकमें सूखा श्लेष्मा जमा रहता है।

कान ।—श्रवण-शक्तिके विकारकी वजहसे सरमें चक्कर आना (एमिल-नाइ ; अरम ; सिड्रो, नेट्र, सैलि, सिलि, थिरिड)। बहरापन और कानमें

आवाजके साथ सरमें चक्कर आना ; कानके पीछे और सामने ऊँची सूजन,—कर्णमूल प्रदाह (Parotitis) । कानसे खून निकलना ।

मुखमण्डल ।—उतरा हुआ सफेद चेहरा ; गर्म और कोमल, सूजा या लाल (बेल ; गाढ़ा लाल भाव=हायो ; ओपि), नाना प्रकारके उद्भेद ; मुंहका नासूर ।

मुखविवर ।—ओंठ और जीभ बहुत सूखी ; लार हीन और फटी (सूखी, बिना लारकी और कालिमा-युक्त—ऐको, आर्स, हायो, मार्क) ; मुख-विवर—गलेके भीतर और जीभ समूची बहुत सूखी (ऐको, आर्स, बेल), जीभ पर सफेद या पीला लेप, जीभ रूखड़ी, फटी और गाढ़े भूरे रंगकी, दांतमें दर्द ;—मुँहमें गर्म पदार्थ आदि ले लेनेसे बढ़ना (कोल्चि ; मार्क ; पल्स—ठण्डा पानी लगनेपर घटना=ब्राई, काफि, पैरिसे), दर्द भरे दांत बड़े मालूम होते हैं (आर्नि, कास्टि ; कैमो, लैके, नक्स, रास, सलफर) लगातार चबानेकी तरह जबड़े हिलाना—मानो कोई चीज चबा रहा है । दांतमें दर्द । ज्वाला-मय तृष्णा । बच्चोंका उतसङ्ग या मुँहका जखम=जब तक स्तनके दूधसे बच्चेका मुँह तर न कर दिया जाता है तब तक वह स्तनमें मुंह नहीं लगाता ।

गलेके भीतर ।—गलेका जखम (Sore-throat) स्वरभङ्ग और निगलनेके समय दर्द मालूम होना । निगलनेके समय सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना, मानो गलेमें तेज काठकी सलाई बेधी जा रही है=आर्जेण्ट-नाई, हिपर, डलिकास ; ऐसिड-नाई,—मानो गलेके भीतर गर्म लोहेका गोला अड़ा हुआ है=फाइटो ; गलनालोमें सङ्कोचन मालूम होना (आर्स, बेल, हायो, नक्स) ; गलेमें रूखड़ापन मालूम होना, गलेमें मानो श्लेष्मा अड़ा हुआ है, बिना जोर लगाये अर्थात सहजमें नहीं निकलता ।

पाकाशय ।—भोजनके बाद पेटके ऊपरी प्रदेशमें बहुत भार मालूम होना । ऐसा मालूम होता है मानो उसमें पत्थरका एक टुकड़ा दबाया हुआ है (नक्स, आर्स, मार्क, सिपि, पल्स—डकार आनेपर आराम मालूम होता है । राक्षसी भूख,—बार बार खाना चाहता है ; स्वादकी शक्तिका लोप हो जाना (ऐनाक्, हिप, लाइको, नैट्र-म्यू), पीने और खानेकी सब चीजें तीती मालूम होती हैं (कोलो, पल्स ;—खट्टा स्वाद मिला मालूम होता है=सिङ्को, लाइको, नक्स ; मीठा स्वाद मालूम होता है=एसिड-म्यू, स्किला) ; मुँह मानो सड़ गया है (आर्निका, मार्क, नक्स), ज्वालामयी तृष्णा—प्रत्येक

बार बहुत ज्यादा परिमाणमें और बहुत देरका अन्तर देकर पानी पीता है। (बार बार परन्तु प्रतिबार थोड़े परिणाममें पानी पीता है=आर्स, ऐपिस, सिङ्को हायोसा), हिचकी, खाते ही कै हो जाना (आर्स, नक्स, पल्स)। पित्तमय पानी कै हो जाता है (श्लेष्मा और खाया हुआ पदार्थ कै होता है=हृपिक; पानी आदि पीनेके वर्त्तनमें कै कर देता है=ऐण्ट-टार्ट, बिस्मथ ; दूध पीते ही वमन=इथू, मार्क, सोल ; अम्ल और पित्त वमन=आइरिस-वार्सि) ; स्पर्श सहन नहीं होता ; खांसनेपर पेटमें दर्द होता है ; खाली डकार ।

तलपेट और अन्त्राशय ।—यकृत प्रदेशमें दर्द भरी सूजन, चय हुई त्वचाकी तरह दर्द और अनमनीय रहना,—जलन और सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होना, दबाने और खांसने पर दर्दका बढ़ना ; (मार्क, नक्स,)। उदरमें स्पर्श सहन न होना। प्लोहामें चिलक मारनेकी तरह दर्द। अन्त्रशूल (आंतोंमें दर्द) ; यकृतमें प्रदाह ; उदर-शोथ इत्यादि ।

मल ।—मलमें कड़ापन—मलान्त्र निष्क्रिय, वेगहीन, (पाखाना नहीं लगता), मल बड़ा कड़ा, काली आभा लिये, सूखा गांठ गांठ—मानो जला हुआ है। समुद्र यात्राके समय (प्लैट; मल बड़ा गांठ गांठ=केल्के, केलि-कार्ब ; नक्स ; छोटा कड़ा काला और गांठ गाँठ,—चेलिडो, ओपि, प्लम्ब,)। उदरामय एकाएक बहुत गर्मी पड़ जानेपर; पित्तभरा और कषाय—मलद्वारमें जखम पैदा हो जानेवाला मल ; कादे भरा पानीकी तरह (पोडो) ;—अजीर्ण खाई हुई चीज मिला (ऐण्टि-क्रू), आर्जेण्ट नाई, कैल्के, सिङ्कोना, फेरम, ग्राफ, हिप ; नक्स-मस, ओलियैन, ऐसिड-फास, फास, पोडो सल्फ,) ; बहुत देरतक धूपमें घूमनेपर, ठण्डा पानी पीनेकी वजहसे दस्त [आर्स, पल्स] ; फल खानेकी वजहसे (कार्बो-वे, सिङ्को, सिस्टस, कोलो, पल्स) या जली हुई कोबी वगैरह खानेकी वजहसे (पेट्रोल) ; सवेरे शरीर तथा हाथ या पैर हिलानेसे बढ़ना (लेप्टैन, नेट्र-सल्फ ; शय्यासे उठते ही—लाइको, सल्फ ; शय्यासे उठनेके पहले—ऐलो ; नूफर-लूट ; सोराइन ; रियुमेक्स ; सलफर—सवेरे नींद खुलते ही=केलि ब्राई, पेट्रोल : सवेरे ठीक ६ बजनेके समय=आर्जेण्ट-नाई) ; पाखाना होनेके पहले आंतोंमें दर्द,—कतरनेकी तरह दर्द ।

पेशाब ।—पेशाब गर्म, लाल और भूरा रंग और बहुत थोड़े परिमाणमें तली सफेद जमती है (सिना, ऐसिड-भायस)। पेशाब करनेके समय

मूत्रनालीमें जलन (कैन्थ) और कतरनेकी तरह तकलीफ मालूम होना (वार्ब, कैन्थ, कोष्टि, डिजि, लैके, लाइको, मार्क)। अनजानमें पेशाब होना। बार बार पानीकी तरह पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय।—लिङ्गमूलमें लाल और खुजलानेवाले उद्भेद; अण्डकोषमें चिलक मारने की तरह दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव—ऋतुस्राव बहुत जल्दी जल्दी होता है, स्राव बहुत अधिक और गाढ़ा लाल रंगका,—शरीर हिलानेसे ही बढ़ जाता है (क्रोक, सेबाइ)। ऋतुके समय दोनों पैरोंमें छेदनेकी तरह दर्द (कैमो) प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia),—जरायुमें जलन और बहुत ज्यादा स्राव या माथा दो हो जायगा—इस ढङ्गका सर-दर्दके साथ स्राव रुका हुआ (जरायुमें भरापन मालूम होना और जलनके साथ=पल्स); स्तनका प्रदाह (Mastitis), रोगवाला स्तन पत्थरकी तरह कड़ा हो जाता है, लाल हो जाता है, गर्म और दर्द-भरा रहता है (फाइटो); अनुकल्परजः (Vicarious menstruation) ऋतुके बाद नाकके छेदसे रक्त-स्राव। दो ऋतुओंके बीचमें तलपेटमें दर्द,—तलपेट और वस्ति-गह्वरमें (Pelvis) बहुत दर्द और स्पर्श सहन न होना। (हैमा)

श्वास-यंत्र।—स्वरभङ्ग—खासकर घरके बाहरकी हवाकी वजहसे खाँसी,—इसके साथ ही पसीना निकलना, सूखी और आक्षेपिक (Spasmodic) श्वासरोध करनेवाली और वमन लानेवाली खांसी (कैलि-कार्ब), खाँसीसे वक्षके बगलमें दर्द पैदा हो जाता है, इसके साथ ही सरमें दर्द,—मानो माथा फटकर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। (कैप्स ; प्रत्येक खाँसीमें सरमें दर्द मालूम होता है=नैट्र-म्यू, माथेके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है=सल्फ ; बेहोश करनेवाला सर दर्द पैदा हो जाता है=इग्नेशा—उन्मत्त कर देनेवाला—मानो माथा फट जायगा, इस ढंगका सर दर्द पैदा हो जाता है, नक्स ; छातीमें दर्द पैदा करता है= ऐगार ; खाँसनेके समय पेशाब हो जाता है=कास्टि, फेरम, पल्स, वेरेट, स्किला), खाने-पीने बाद, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर और जोरसे सांस लेनेपर खाँसी बढ़ जाती है (खाने पीने बाद खाँसी घटती है=स्पंजिया ; ठण्डा पानी पीनेपर घटना=कास्टि, क्युप्रम)। लगातार ठण्डी सांस लेनेकी प्रवृत्ति। खाँसनेपर खायी हुई चीज कै हो जाती है (डिजि, फेर, ड्रोसे, फास)। खांसी रातमें शय्यापर सोनेके समय ; खाँसीकी वजहसे

बार बहुत ज्यादा परिमाणमें और बहुत देरका अन्तर देकर पानी पीता है। (बार बार परन्तु प्रतिबार थोड़े परिणाममें पानी पीता है=आर्स, एपिस, सिङ्को ह्वायोसा), हिचकी, खाते ही के हो जाना (आर्स, नक्स, पल्स)। पित्तमय पानी के हो जाता है (श्लेष्मा और खाया हुआ पदार्थ के होता है=इपिक ; पानी आदि पीनेके वर्त्तनमें के कर देता है=ऐण्ट-टार्ट, बिस्मथ ; दूध पीते ही वमन=इथू, मार्क, सोल ; अम्ल और पित्त वमन=आइरिस-वार्सि) ; स्पर्श सहन नहीं होता ; खांसनेपर पेटमें दर्द होता है ; खाली डकार।

तलपेट और अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें दर्द भरी सूजन, क्षय हुई त्वचाकी तरह दर्द और अनमनीय रहना,—जलन और सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना, दबाने और खांसने पर दर्दका बढ़ना ; (मार्क, नक्स,)। उदरमें स्पर्श सहन न होना। प्लीहामें चिलक मारनेकी तरह दर्द। अन्त्रशूल (आंतोंमें दर्द) ; यकृतमें प्रदाह ; उदर-शोथ इत्यादि।

मल।—मलमें कड़ापन—मलान्त्र निष्क्रिय, वेगहीन, (पाखाना नहीं लगता), मल बड़ा कड़ा, काली आभा लिये, सूखा गांठ गांठ—मानो जला हुआ है। समुद्र यात्राके समय (प्लेट; मल बड़ा गांठ गांठ=केल्के, कौलि-कार्ब ; नक्स ; छोटा कड़ा काला और गांठ गाँठ,—चेलिडो, ओपि, प्लम्ब,)। उदरामय एकाएक बहुत गर्मी पड़ जानेपर; पित्तभरा और कषाय—मलद्वारमें जखम पैदा हो जानेवाला मल ; कांदे भरा पानीकी तरह (पोडो) ;—अजीर्ण खाई हुई चीज मिला (ऐण्टि-क्रू), आर्जेण्ट नाई, केल्के, सिङ्कोना, फेरम, ग्राफ, हिप ; नक्स-मस, ओलियैन, ऐसिड-फास, फास, पोडो सल्फ,) ; बहुत देरतक धूपमें घूमनेपर, ठण्डा पानी पीनेकी वजहसे दस्त [आर्स, पल्स] ; फल खानेकी वजहसे (कार्बो-वे, सिङ्को, सिस्टस, कोलो, पल्स) या जली हुई कोमो वगैरह खानेकी वजहसे (पेट्रोल) ; सवेरे शरीर तथा हाथ या पैर हिलानेसे बढ़ना (लेप्टैन, नेट्र-सल्फ ; शय्यासे उठते ही—लाइको, सल्फ ; शय्यासे उठनेके पहले—ऐलो ; नूफर-लूट ; सोराइन ; रियुमेक्स ; सलफर—सवेरे नींद खुलते ही=कौलि ब्राई, पेट्रोल ; सवेरे ठीक ६ बजनेके समय=आर्जेण्ट-नाई) ; पाखाना होनेके पहले आंतोंमें दर्द,—कतरनेकी तरह दर्द।

पेशाब।—पेशाब गर्म, लाल और भूरा रंग और बहुत थोड़े परिमाणमें तली सफेद जमती है (सिना, ऐसिड-आक्स)। पेशाब करनेके समय

हाथ और बायाँ पैर हमेशा हिलाया करता है (एक हाथ और पैर=एपो-साइन, हेलिबो)। दाहिने कन्धेके शिखर देशमें पोमनेकी तरह दर्द,—छूने से दर्दका बढ़ना ; लम्बी सांस लेने और छोड़नेपर एक मोटी सलाई घुसानेकी तरह दर्द बढ़ता जाता है, ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो कलाई मोच खा गयी है,—हिलानेसे ही दर्द मालूम होता है। उरुके शिखरपर या पुट्ठेके निकट छुरी बेधनेकी तरह दर्द, सीढ़ी चढ़नेके समय दोनो उरुमें थकन मालूम होती है। दाहिने उरुमें बहुत दर्द। दाहिने उरुमें इतना दर्द कि रोगी तीसरे पहर टहल या चल नहीं सकता, रोगीको वाध्य होकर यह पैर स्थिर रखना पड़ता है।

निद्रा।—लगातार जम्हाई लेते रहना ; दिनमें बहुत नींद आना (मार्क, नक्स, फास, सिपि)। नींद आते न आते चौंक उठता है, नींद खुलते ही विकार पैदा हो जाता है। रातमें विकारावस्थामें रोगी दिनके किये हुए काम बका करता है। दिनमें किये हुए काम काजके सपने देखता है, (साइक्य, लाइ, पलस, रास)। सपनेमें घूमना इत्यादि।

ज्वर।—नाड़ी पुष्ट, अनमनीय और द्रुत। मस्तिष्कमें गड़बड़ी या आच्छन्न भावके साथ ही साथ बहुत जाड़ा मालूम होना, गाल लाल और बहुत प्यास। सविराम ज्वर,—बहुत जाड़ा,—शीत और उत्तापावस्थामें प्यास ज्यादा रहना ; इसके साथ ही सूखी खांसी और वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (शीतावस्थाके पहले और शीतावस्थाके साथ सूखी और जलन करनेवाली खाँसी=रास) ; ओंठ और हाथ पैरकी अँगुलीसे शीत आरम्भ होता है। उत्ताप सूखा और जलन पेदा करनेवाला—भीतरी, मानो शिरामें गर्म खून खूब प्रवाहित हो रहा है। (श्वास देखो)।

त्वचा।—पीली या पाण्डु-वर्ण=नैजा। प्रसवके बाद प्रसूति और नये पैदा हुए बच्चेको एक प्रकारका दाना निकल आना (ऐको, कैमो)। उद्भेदयुक्त (Eruptive) ज्वरमें सभी उद्भेद धीरे धीरे प्रकाशित होते, या निकलते हैं या अच्छी तरह दाने निकलते न निकलते बैठ जाते हैं और उसके अन्तमें छातीमें प्रदाह और श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है।

सार्वाङ्गिक।—जाड़ेके बाद एकाएक गर्मी पड़ जाने या गर्मीके दिनोंमें ठण्ढी चीजें अथवा बरफ आदि मिले पानी पीनेके कारण या गर्मीके दिनोंमें सर्दी लगने या शरीर बहुत ही उत्तप्त होनेपर या शरीरको बहुत ही गर्म

रोगी खाटपर उठकर बैठ जाता है (उठ बैठता है और हाथ पर माथा रख लेता है=निकोल ; दोनो वक्ष पार्श्व पकड़ लेता है=नेट्र-सल्फ ; उठ बैठने पर घटती है=ह्यायोसा)। खाँसनेपर छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है और लाल मिर्चके रंगका कफ निकलता है (फास, रास, सैङ्गियु ; लाल आभा लिये कफ=बेल, मार्क, नाइट्रम)। वक्षमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ और इसी वजहसे श्वासमें तकलीफ और तेज श्वास-प्रश्वास ;—शरीरके हिलाने पर बढ़ जाना। खाँसनेपर अनजानमें पेशाब हो जाना। खाँसनेके साथ ताजा खून निकलना और पीली आभा लिये कफ इत्यादि। बांये स्तनके नीचे तेज दर्द मालूम होता है, जो सांस लेनेपर बढ़ता है। गाढ़े लेईकी तरह श्लेष्मासे वायुनली भरी रहती है, पर बहुत चेष्टा करनेपर भी उसका एक कण नहीं निकलता। गर्म घरमें प्रवेश करनेपर खांसी बढ़ जाती है (नेट्र-कार्ब); वक्षोस्थिके नीचेसे दाहिने कन्धे तक भार मालूम होता है। दाहिने पार्श्वकी फेफड़ेका प्रदाह ; इसके साथ ही छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (बेल, मार्क ; बाईं और रुका हुआ=फास, रास)

वक्षःस्थल ।—श्वास-कष्ट ; तेज और छोटी सांस। वक्षका कस जाना।

हृत्पिण्ड ।—बार-बार स्पन्दन, नाड़ी पूर्ण—हृदयके स्थानपर सुई बेधनेकी तरह दर्द।

गर्दन और पीठ ।—दोनो अंसफलकों (Scapulae) के बीचके अंशमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ ; तीसरे पहर लेटी हुई अवस्थामें ;—दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें जलन मालूम होना (लाइको—ठण्डक मालूम होना=एमोन-म्यू)। कमर और नितम्ब देशमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना और इसी वजहसे रोगी चल फिर नहीं सकता, कमर दबाकर सोनेपर दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—सन्धियां फूलकर लाल और चमकीली हो जाती हैं ; बाहुके ऊपरी अंशमें सुई बेधने और फाड़नेकी तरह दर्द,—हिलाते ही दर्दका बढ़ जाना (ऐको, बेल ; हिलानेपर घटना=कोना, लाइको, रास, सिपि)। उत्ताप और प्रदाह-भरी पैरकी सूजन (आर्निका, कक्कु, पल्स)। दोनो जंघोंमें दर्द और अकड़न। शोथकी तरह सूजन—सवेरेसे सन्ध्यातक क्रमशः बढ़ती जाती है और रातमें आराम हो जाती है। विकारावस्थामें रोगी बायाँ

अवस्थामें सर्दी लग जानेपर (रोगी लात मारकर शरीरके ऊपरके कपड़े फेंक देता है=एपिस, लाइ) या शरीरमें सर्दी लगनेपर (ऐको, हिप) या ऋतु, स्तन का दूध वगैरह स्राव रुककर या नयी पनसाहा माता आदिके दाने बैठ जानेके कारण—जो सब बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, उनमें ब्रायोनिया बहुत ही लाभदायक है, इसके पैदा हुए सभी रोग शरीर हिलानेसे बढ़ते हैं और एकदम स्थिर भावसे रहनेपर घटते हैं। प्रदाहवाली जगह कुछ लाल हो जाया करती है, (बेलेडोना या ऐकोनाइटकी तरह एकदम गहरी लाल नहीं हो जाती)।

वृद्धि ।—शरीर हिलानेपर, शारीरिक परिश्रमसे, छूनेपर ; सीधे होकर बैठने, उठकर बैठनेपर उसे ऐसा मालूम होता है मानो बेहोश हो जायगा। या जी मिचलाने लगता है ; उत्तापसे, गर्म भोजनसे और किसी तरहका स्राव रुकनेपर बढ़ना ।

घटना ।—सोनेपर, विशेषकर रोगवाली करवट या अंशको दबाकर सोनेपर (टिलिया, पल्स)। दबने या दबानेपर ; विश्रामसे या स्थिर होकर सोये रहनेपर ; ठण्ड लगने या सर्द चीज खाने पीनेसे ।

दोषघ्न ।—ऐकोन, अलम, कैमो, चेलिडो, क्लिमे, इग्ने, नक्स, पल्स रास, सिनेगा। ब्रायोनियाका पुराना (Chronic) ऐल्यूमिना है।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक=ऐल्यूमिना, रासटक्स। तेजीसे बोलना या जल्दी जल्दी पानी आदि पीनेके सम्बन्धमें=बेलेडोना और हिपर इसके सदृश हैं, वक्षस्थल या फेफड़ेके वाताश्रित दर्दके सम्बन्धमें रेननकुलस इसका समगुण सम्पन्न है ;यकृत या यकृत प्रदेशमें दर्द और भार मालूम होना, दाहिने पार्श्वको दबाकर सोनेपर घटना और बायें पार्श्व सोनेपर बढ़ना और बाईं करवट पलटने पर ऐसा मालूम होना मानो किसीने खींच रखा है, इस सम्बन्धमें टिलिया ब्रायोनियाके सदृश है। ब्रायोनियाके प्रयोगके बाद ऐल्यूमिना, कैलि-कार्ब, नक्स, फास, रास, सलफर वगैरहका व्यवहार होता है।

शक्ति ।—१ली दशमिकसे १००० शततमिक तक। ज्वराधिकारमें ब्रायोनिया और अन्यान्य सभी दवाएँ उच्चसे उच्चतम क्रममें व्यवहार करनेपर ज्यादा फायदा हुआ करता है। डा० विलियम ए, ऐलेन, जिन्होंने सविराम ज्वर आदिके सम्बन्धमें बहुत बड़ी अभिज्ञता प्राप्त की थी। अपनी पुस्तककी

ोगके लक्षणसे इसका यही प्रभेद है, कि इससे पैदा हुए रक्तके संचालनमें ग्राघातकी वजहसे शरीरमें मृगी रोगके आक्रमणके पहले जो एक तरहका "सुरसुरी" (Aura) मालूम होती है, वह जननेन्द्रिय प्रदेशसे उत्पन्न होकर क्रमसे सारे शरीरमें फैल जाती है और रोगी एकदम एक बार जोरसे लोमहर्षण रूपसे चिल्लाकर जमीनपर गिर पड़ता है और आक्रमणके बाद ही गहरी नींदमें सो जाता है। निद्रावस्थामें ही इससे उत्पन्न अपस्मारका प्रकोप ;प्राविर्भूत हो जाया करता है (क्युप्रम, लैके)। ये सब लक्षण पैदा होनेके पहले रोगीका मन बहुत उत्तेजित हो जाया करता है और वह लगातार बिना मतलबकी बातें अनर्गल बका करता है ; यदि कोई उसकी बात समझ नहीं पाता, तो रोगी उसपर बहुत अधिक नाराज और क्रोधित हो जाता है और उसे दाँतसे काटने को तैयार हो जाता है।

लक्षणावली ।

मन ।—दाँतसे काटनेकी इच्छा। हाय हाय कर चिल्लाता है ; धीरज-हीन, थोड़ेमें ही कातर ; पुरुषत्वहीन, अस्वाभाविक उपायोंसे काम परितृप्त करनेके लिये एकान्त स्थान खोजा करता है। बच्चा बहुत दुर्बल चित्तका रहता है। निर्लज्जता।

मस्तक ।—रक्त संचयकी अधिकताकी वजहसे एक पार्श्वमें होनेवाला सरका दर्द ; नाकसे खूनका स्राव हो जानेपर घटना (मिलिलोट, फेर-फास, मैग-सल्फ)। सवेरे भोजनके पहले सरमें दर्द (भोजनमें विलम्ब होनेपर सरमें दर्द ; आर्स, कैक्ट, लैके, लाइकोपो)—रोशनी और आवाजसे बढ़ना, इसके साथ ही दोनों पैर ठण्डे और कलेजा धड़कना।

आँख ।—लाल, शिरायें फूलीं ; खुजली भरी और फूलीं। चमकीली चीजकी ओर देख नहीं सकता। आँखोंमें छोटे छोटे छाले निकल आते हैं। आँखका गोला ऊपरकी ओर घूमता है।

कान ।—संगीतकी आवाज असह्य (ऐकी, बेल, ग्रैफ, नेट्र-कार्ब, नेट्रसल्फ, नक्स, सेबाइ, थूजा) आवाजसे ही चिढ़ या चिड़चिड़ापन पैदा हो जाता है (आर्निका, बेल, काफि, नक्स, अरम, सिङ्को, लाई, सिपि)।

मुखमण्डल।—चेहरा उतरा हुआ या पीला (आर्स, सिङ्को, लाइको लैके)। सर्दीके साथ पेटके ऊपरी ओंठमें दाने। रह रह कर चेहरा लाल हो जाता है (ऐमिल, फेर)

पाकाशय।—सड़े अण्डेकी गन्ध डकारमें आती है, पानी आदि पीने के साथ ही कै हो जाती है (बिस्मथ, आर्स)। दूध पीने बाद शूलका दर्द पैदा हो जाता है (रैफेनस ;—गर्म दूध पीनेपर घटना=क्रोटन—टिग)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत जल्दी जल्दी होता है। इसके साथ ही सरमें दर्द, प्रदर,—स्राव पानीको तरह (ऐमोन-कार्ब, ग्रैफ, कैलि-आयोड, नाइट्रम, ओलियम-ऐन) काम प्रवृत्तिकी उत्तेजनाके साथ अपस्मारकी तरह आक्रमण (कैलि-ब्रोम) ऋतुके समय अपस्मार या मृगी रोग पैदा हो जाना। स्तन-ग्रन्थिका कड़ा हो जाना। डिम्बाधार और जरायुमें जलन मालूम होना ; जरायु-ग्रीवामें जखम,—दुर्गन्धमय बदबूदार खून मिला स्राव। जरायुमे दोनों पैरोंतक दर्द फैल जाता है। सूतिकावस्थामें पैरोंमें सफेद रङ्गकी सूजन, इसके साथ ही बोखार और बेचैनी (ऐकी ; शिरावाही वेदना और स्पर्श-असहनीयता,—शरीरपर कपड़ा नहीं रखना चाहता=पल्स, हैमा, बिस्मथ)। शिराओंका फैलना (हैमा)

पुं-जननेन्द्रिय।—लगातार हस्त-मैथुनकी इच्छा। उसका बाँया हाथ बार बार जननेन्द्रियको स्पर्श करता है। अनजानमें वीर्यपात हो जाना। रमणके समय बहुत ही शीघ्र वीर्यस्खलन (ऐपाइ, कार्ब, कैल्के, जेल्सि)। हस्तमैथुन और उसीकी वजहसे अपस्मार रोग (कैल्के, लैके, प्लैट, स्ट्रैमो)। अपस्मार (Epilepsy) के आक्रमणके आरम्भमें रोगी एक हृदय-विदारक चिल्लार कर जमीनपर गिर पड़ता है और बेहोशीकी अवस्थामें इस तरह चिल्लाता है कि सुननेवालोंके रोएँ खड़े हो जाते हैं ; निद्रावस्थामें ही आरम्भ होती है (क्यूप्रम, ओपि, लैके), और आक्रमणके बाद रोगी गहरी नींदमें सो जाता है।

त्वचा और प्रत्यङ्ग।—अँगुलीमें चोटकी वजहसे दर्द,—बाहुकी राह से ऊपरकी ओर फैल जाता है। तलहत्थीमें एक बहुत बड़ा छाला निकल आता है। अँगुलहाड़ा, नखके चारों ओर काली लकीरकी तरह सूजन और इसके बाद ही पीब इकट्ठा हो जाना। पैरमें ऐंठन होना ; तलवेमें भी छाला पैदा हो जाता है। सामान्य चोट लगे अंगमें पीब पैदा हो जाता है (ग्रैफ,

डिपर)। तलहत्थी और पैरके तलवेके छाले सब फट जानेपर उससे क्लेद-भरा स्राव होता है। त्वचा पीले रंगकी और फोड़ोंसे भरी। जलन-भरे जख्म। बहुत सुस्ती और कमजोरी, समूचा शरीर फूला ; पेशियोंका संकोचन ; भयकी वजहसे मृगी-रोग।

वृद्धि ।—गर्म घरमें और रातमें।

उपशम ।—ठण्डी अवस्थामें।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न** ।—लैकै, सिनेगा।

सदृश ।—कूबेब आर्स, कैन्थ, लैक (पीवकी वजहसे आक्षेप) ; कैल्के, नक्स, साइलि (मृगीका आवेश) ; लैके, सलफर (ताण्डव) ; हायोसा, सलफर (नकली मैथुन) ; ऐन्थ्रैकस (दुष्ट व्रण)

शक्ति ।—३ रे से २०० क्रम।

कैक्टस ग्रैण्डिफ्लोरस।

(CACTUS GRANDIFLORUS)

दूसरा नाम ।—सिरियस—ग्रैण्डिफ्लोरस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नये कोमल पल्लवके साथ फूलसे मदर टिंचर तैयार हुआ करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—धमनीका अर्बुद ; हृत्शूल ; संन्यास ; दमा ; मूत्राधारका पक्षाघात ; मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता ; श्वासनालीका प्रदाह ; उदर और वक्ष व्यवधायक पेशीका आमवात ; शोथ ; कानोंका प्रदाह ; नासूर ; गलगण्ड ; रक्त मिला पेशाब ; रक्तस्राव ; सर दर्द ; हृत्पिण्डकी बहुत सी बीमारियाँ ; अजीर्ण ; सविराम ज्वर ; फेफड़ेसे रक्तस्राव ; विषाद ; काष्ट रजः ; स्नायुशूल ; डिम्बाधारका प्रदाह ; वात ; फेफड़ेका प्रदाह ; सूर्याघात या लू लगना ; आभिघातिक ज्वर ; योनि-पथका स्नायु-शूल इत्यादि।

उपयोगिता ।—स्थूलकाय व्यक्तियोंमें रक्तवेग या रक्त-सञ्चय लक्षणमें और रक्त-स्राव प्रबलतामें यह उपयोगी है। इन मनुष्योंमें मृत्युभय बहुत अधिक रहता है। रोगी विश्वास करता है कि उसकी बीमारी आराम न होगी (आर्स)

आभास ।—इससे देहमें सब जगह कसावट और संकोचन उत्पन्न हुआ करता है। गलेके भीतर, वक्षःस्थल, हृत्पिण्ड, मूत्रनाली, मलान्त्र, जरायु, अपत्य-पथ वगैरह शरीरके सभी द्वार रुक जाते हैं; मानो किसीने कसकर बाँध दिया है, यहां तक कि सारी देह किसी पींजरेमें बँधी-सी मालूम होती है और वह पींजड़ा मानो धीरे धीरे संकीर्ण और छोटा होता जाता है। हृत्पिण्ड और धमनी आदि इसकी प्रधान क्रिया-भूमि हैं:—ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डको किसीने लोहेकी मुट्ठीसे कसकर पकड़ लिया है और रोगीकी सभी मनोवृत्तियां हृत्पिण्डकी बीमारियोंके अनुसार हो जाती हैं। रोगी बहुत दुःखित और चिन्तित हो पड़ता है और उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसका रोग अब अच्छा न होगा; नाक, फेफड़ा, पाकस्थली, मलान्त्र (Rectum) मूत्रस्थली वगैरहसे खूनका स्राव, सरमें दर्द, रजमें गड़बड़ीकी वजहसे बीमारियां और स्नायु शूल (Neuralgia) हृत्शूल वगैरह रोगमें यह हाथोहाथ फायदा दिखाता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) अधिक रक्त सञ्चय होनेकी वजहसे सरमें दर्द—मानो माथेकी धमनियाँ आदि फूल उठी हैं और माथा खूब दृढ़ भावसे कसा हुआ है, कानमें टपकके साथ सरमें दर्द (२) हृत्पिण्ड, अन्ननाली (Æsophagus), पाकस्थली, मूत्रकोष; और जरायु मानो खूब कसा हुआ है; (३) श्वास-कृच्छ्रता—हृत्पिण्डका दृढ़ आबद्ध भावके साथ —मानो हृत्पिण्ड एक लोहेके बने हाथसे दबाया जा रहा है या किसी वज्र मुष्टि-से पकड़ा हुआ है। (४) हृत्स्पन्दन,—बायीं बाँहकी राहसे तेज दर्द नीचेकी ओर चलता है,—आर्तव-स्रावका समय पास आनेपर हृत्शूल (Angina pectoris)। (५) मृत्यु-भय। (६) बाधक या रजःकृच्छ्रता=अलकतरेकी तरह घोर काले रङ्गका स्राव, जरायु और डिम्बाधार प्रदेशमें टपकका दर्द, कलेजेका धड़कना और रोगवाली जगह खूब कसी मालूम होना। (७) चलने पर ऋतु-स्राव होना बन्द हो जाता है।

लक्षणावली ।

मन ।—विमर्ष,—बोलना नहीं चाहता। मृत्यु-भय,—सोचता है कि यह आराम न हो सकेगा। (आर्स, लैक-कैन, लिलि-टिग, ऐसिड-नाई, सोरा-इन, स्यूर, पल्स।) बिना कारणके ही रोना,—सान्त्वना देनेपर रोना और भी बढ़ जाता है (हेलिबो, लिलि-टिग, नैट्र-म्यू, सिपी=सान्त्वना नहीं दी जाती—कैली-ब्रोम; सान्त्वना देनेपर आराम मिलता है=पल्स)।

विमर्ष भाव और अवसाद वायु-ग्रस्त या व्याधिशंका ग्रस्त (Hypochondriacal) ।

मस्तक ।—रक्त-प्रधान व्यक्तियोंमें खूनकी अधिकता या रक्त संचयकी वजहसे संन्यास (Apoplexy)। सरमें दर्द,—मानो मूर्द्धा-देश (खोपड़ीपर) एक भारी चीज दबायी हुई है (धीमे दर्दके साथ मूर्द्धा-स्थानमें भार मालूम होना = जेलस ; कनपटीमें दर्द और जलनके साथ मूर्द्धा-देशमें बहुत अधिक भार मालूम होना = फेलेन ; जिनको ऋतुस्राव होना बन्द हो गया है, उनके मूर्द्धा-स्थानमें दर्द = लैके ; दबानेपर आराम मालूम होना = मिनियेन) ; वयःसन्धिके समयका (Clemacteric) सर-दर्द (ग्लोन, लैके); धूपमें रहनेकी वजहसे,—भरापन और सङ्कोचन मालूम होनेके साथ या आर्त्तवके विकारके साथ (मूर्द्धा-देशमें मानो कोई भारी चीज दबायी हुई है = ऐलो, कैन-सेट, कैली-बाई)। स्नायुशूल (Neuralgia)—अधिक रक्त सञ्चय हो जानेके कारण,—कभी कभी उत्पन्न हो जाता है ; दाहिनी ओर धीमा, टपकका दर्द ; मध्याह्नमें भोजनमें देर होनेसे ही सरमें दर्द पैदा हो जाता है (आर्स, लैके, लाई,—सबेरेके भोजनके पहले = व्यूफो) ; ऐसा मालूम होता है कि चिमटेसे कसकर माथा पकड़े हुए है (साइक्यूटा ; लोरो ; मैग-सल्फ ; प्लैट ; पल्स, स्टैन, सल्फ)। सर दर्दके रोगमें ऐसा मालूम होता है, मानो माथेकी शिरायें फूली हुई हैं ; चेहरेका स्नायुशूल (Prosopalgia),—दाहिने पार्श्वका (बेल, कैलमिया ; बायें पार्श्वका—स्पाइजि) ; पुराना, सामान्य परिश्रमसे ही बढ़ जाता है, स्थिर होकर सोनेपर ऐसा मालूम होता है, कि सहन हो जायगा। सुरापान, संगीत-ध्वनि, चमकीली रोशनी या भोजनमें विलम्ब होनेपर सरमें दर्द पैदा हो जाता है या बढ़ जाया करता है ; रोज एक ही समय पैदा हो जाया करता है (सीड्रन) ; तकलीफसे रोगी चिल्ला उठता है ; कानके छेदमें टपकका दर्द मालूम होता है, कानमें ऐसा शब्द होता है, मानो नदीका सोता बह रहा है [ऐस्टीर, कल्कियु, पेट्रोल, पल्स,), पसीना गिरनेकी वजहसे कानमें दर्द ।

नाक ।—बहुत ज्यादा खूनका स्राव, तुरन्त ही रुक जाता है। सर्दी, पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव ; रातमें रोगी मुंह फाड़कर सांस फेंकता है । श्लेष्मा कषाय (कसैला) जहां लगता है, वहींकी खाल उधड़ जाती है, रन्ध्र का मुंह जखमसे भर जाता है ।

गलेके भीतर।—गलनालीका संकोचन। जीभ सूखी, मानो जल गयी है (पल्स, रियुमेक्स, सेङ्गि), जबतक बहुत सा पानी नहीं पी लेता तब तक खायी हुई चीज गलेके नीचे नहीं उतरती। हृत्‌शूलकी बीमारीमें गलेका भीतरी भाग संकुचित होकर श्वास-रोध होनेके लक्षण पैदा हो जाते हैं और गर्दनकी धमनियोंमें टपकका दर्द हुआ करता है।

पाकाशय।—दृढ़ आवद्धभाव (कसावट) पैदा करनेवाला, टपक और भार मालूम होना। बहुत-सा खून कै करना। पाकाशय और आमाशयमें शूल अर्थात ऊपरी पेट और तलपेटमें दर्द (Gastrio-entoritis)। मुँहका स्वाद खट्टा।

मल।—मलद्वारमें बहुत भार मालूम होना (सिपि) और खुजलाहट, मलद्वारसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव (कोल्कि, कैसकैरिला, हैमा)—पर वह जल्दी ही रुक जाता है, कड़ी, काली आभा लिये मल (गांठ गांठ निकलता हो तो ओपियम, प्लम्ब)। अर्शका मसा फूला और दर्द-भरा।

पेशाब।—मूत्राशय-ग्रीवाका सङ्कोचन (क्लिमैट, पेट्रोल) की वजह से मूत्ररोध [कार्बे, कैम्फि, पल्स, सार्सा, सिगी, प्रूसस]। पेशाबका बहुत अधिक वेग, पर पेशाब निकलता नहीं है। जलनके साथ बूंद बूंद पेशाब निकलता है। मूत्रस्थलीसे रक्तस्राव, मूत्रस्थलीके भीतरसे जमे हुए छोटे छोटे खूनके टुकड़े निकलते हैं। पेशाबका रंग सूखी हुई घासके पानीकी तरह; पेशाबमें लाल बालूकी तरह तली जमती है (लाइ, सिलि; भूरे रंगकी बालूकी तरह=लेके); खून मिला पेशाब (इपिका, मिलिफो, ऐसिड-नाइ, सिकेलि)।

जननेन्द्रिय।—जरायु और डिम्बाधार-प्रदेश संकुचित मालूम होना [भार मालूम होना=जेल्सि]। रजःकृच्छ्रता बोधक,—जरायु और डिम्बाधार प्रदेशमें टपकका दर्द और भयंकर तकलीफ,—रोगिनी तकलीफसे बेचैन रहती है। [कैमो, क्यूप्रम, नक्स] और बेचैनीकी वजहसे जोरसे रो पड़ती है। जरायु और उसकी ग्रन्थियोंमें दर्द, यह दर्द उरु देशतक फैल जाता है। नित्य संध्याके समय पैदा हो जाता है। ऋतु आठ दिन पहले प्रकट होता है—पर लेटते ही स्राव बन्द हो जाता है (बोवि, कास्टि, लिलि-टाइग्रि; सोनेपर स्राव बन्द होता है=क्रियो); ऋतुके समय कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाती है। ऋतुस्राव गाढ़ा काला [काकु, मेग-कार्ब, कैमो, इग्ने, क्रोकस, प्लेफ, नाइट्रम]।

श्वास-यंत्र ।—वक्षस्थलमें दबाव मालूम होना,—मानो छातीपर कोई भारी चीज दबाकर रखी हुई है (ऐम्ब्रा, आर्स, ब्राई, कैम्फो, कोमो, काष्टु, क्रोटन, डालका, ग्रेफ, हुग्ने, क्रियो, लैके, लेक्टियुका, भक्स-मस, फास, रास, स्टैन, वायोला-ओडो); मानो कोई लोहेकी बन्धनी इसका फैलना और सिकुड़ना रोक रहा है (आर्स, कार्बो-वेज, लैके, फास, पल्स, स्टैनम)। ऐसा मालूम होता है, कि वक्षस्थलका निचला अंश एक डोरीसे कसकर बाँधा हुआ है (ऐगार, रैनन); मानो किसी मजबूत लोहेके हाथसे एक बार जोरसे दबाया जाता है और एक बार छूट जाता है—मानो कसकर बाँधा हुआ है—मानो सिकुड़ने फैलनेकी जगह नहीं है ; मानो हृत्पिण्ड जोरसे दबाया जाता है (आयोड ; मानो पर्यायक्रमसे मजबूत और दृढ़ हाथोंसे एक बार पकड़ा और फिर छोड़ दिया जाता है=लिलियम-टाई ; जागनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड सिकुड़ गया है और रोगी ओढ़ना दूर फेंक देता है= लैके ; टहलने या चलनेके समय हृत्पिण्ड संकुचित होता है या मानो दबाया जाता है—ऐसाही मालूम होता है=आर्स । श्वास-कृच्छ्रता, कभी कभी ऐसा मालूम होता है, मानो सांस रुक जायगी, चेहरे पर ठण्डा पसीना आ जाता है=ग्रेफ, नेट्र-म्यू, पेरिस, स्टैफ) और रातके समय (आर्स) बाईं करवट सोनेपर (ऐंगस, बेराई, ब्रोम, ग्रेफा, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यू, पल्स, टैवेक—सिर्फ खड़े होनेपर=ऐगार ; दाहिनी करवट सोनेपर=आर्जेण्ट-नाई, कैलि-नाई)। हृत्पिण्डमें बहुत दर्द,—बाएँ हाथकी राहसे अँगुली तक बहुत तेजीसे दौड़ पड़ता है। आक्षेपिक (Spasmodic) खांसी—शरीरको हिला देनेवाली ; खून मिला कफ (इपिक)। थोड़ी देरतक ठहरनेवाली खाँसी, बहुत श्लेष्मा मिला कफ। छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ।

प्रत्यङ्ग ।—बाहुकी सूजन,—बाएँ हाथमें अधिक ; तलवेसे जांघ तक सूजन ; (एपिस) ; बाएँ हाथका सुन्न हो जाना । ऊपरी अंगमें आरम्भ होकर सन्धिके भीतर बातके दर्दका आक्रमण हो जाता है। हमेशा पैर हिलाता है।

निद्रा ।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें टपक जैसा दर्द हो जाता है और इसी वजहसे नींद नहीं आती। रातमें नींद खुल जानेपर प्रलाप बकना आरम्भ कर देता है या विकार पैदा हो जाता है (ब्राई)। डरावने सपने देखना ।

ज्वर ।—पीठ और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे। शीत—कपड़ा भरपूर ओढ़ लेनेपर भी जाड़ा नहीं जाता ; नित्य बँधे समयपर—एक ही समय

कम्प पैदा होता है (सोइन) ; रोज नियमित भावसे दिनके ११ बजे या रातके ११ बजे बोखार होता है (दिनके ११ बजे=नेट्र-म्यू, नक्स, सिपि)। सविराम ज्वर—माथेमें रक्त ज्यादा सञ्चय हो जानेके कारण ; मुंहमें कभी कभी उत्तापका आविर्भाव हो जाता है ; पेशाब रुकना—मूत्रस्थलीमें दर्द ; हृत्प्रदेशमें छुरी मारनेकी तरह तकलीफ और तेज वमन ; पसीना नहीं निकलता, धूपमें रहने की वजहसे ज्वरकी उत्पत्ति। शीतके बाद उत्तापका आविर्भाव,—श्वास-कृच्छ्रता, सरमें दर्द और प्यास ; आधी रात तक होश न होना ; इसके बाद साँस छोटी ; रोगी सोया नहीं रह सकता, इसके बाद बहुत अधिक पसीना और प्यास।

दर्द आदि।—प्रायः शरीरके सभी अंगोंमें दर्द,—दर्द बहुत तेज और तेजीसे फैलनेवाला,—उछलनेकी तरह, लगातार बिजलीकी तरह दर्द (चिलक मारनेकी तरह) एक स्थानसे दूसरी जगह तक फैलता है और अन्तमें रोगवाली जगह बहुत तेज़ दर्द मालूम होता है,—मानो चिमटेसे कसकर कोई पकड़े हुए है ; इसी तरह बार बार दर्द पैदा होना।

दोषघ्न।—ऐकोन, कैम्फ, चायना, युपेटो।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐको, डिजि, जेल्सि, कैलि-कार्ब, लिलियम टाइग्रि, आयोडम, लैके, और टैबेकम।

तुलनीय।—मानसिक लक्षणमें—डिजि, लैके ; मस्तकमें रक्तकी अधिकता,—बेलाडो, ग्लोनोय ; हृत्पिण्डकी बीमारी—ऐकोन, ऐक्टिया, ऐमिल-नाइट्रेट, क्रोटे, कैलमि ; लैके, नैजा, स्पाइजे ; रजःस्राव रातमें बन्द,—कास्टिक ; श्वेत-प्रदर,—ऐमोन म्यूर ; सविराम ज्वरमें—आर्स, कैल्के, युपि, नेट्रम ; सन्धि-शोथमें—डिजिटे, कैलमिया ; अनिद्रामें—सलफर ; स्नायुशूलमें आर्स ; रक्तस्राव में—डायाफ्रेममें दर्द—रैनान।

वृद्धि।—ऊंचे चढ़नेमें, रातमें चलनेमें, बाईं करवट सोनेपर बढ़ना।

शक्ति।—मूल अर्क से ६ठा शततमिक क्रम ; ३० शततमिक शक्तिसे उत्तम काम होता है।

परीक्षक।—डा० रुबनी और उनकी स्त्री।

कैडमियम ब्रोमेटम।

(CADMIUM BROMATAM)

परिचय।—कैडमियम—ब्रोमाइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल दोनों ही तरहसे तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—कैडमियम सल्फके साथ इसके बहुत से लक्षणोंका सादृश्य है। मुख-विवर, गलनली और पाकाशयमें जलन और दर्द और वमनके लक्षणमें यह सुन्दर कार्य करता है।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

कैडमियम सल्फ्युरिकम।

(CADMIUM SULPHURICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार किया जाता है। कैडमियम ब्रोमेटम, तरल और विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— सन्यास; स्फोटक; फोड़ा; बच्चोंकी विसूचिका; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; मुँहकी पेशीका पक्षाघात; अजीर्ण; मस्तिष्कावरण प्रदाह; नाकका अर्बुद; नकसीर फूटना।

उपयोगिता और आभास।—पाकाशयपर इसकी प्रधान क्रिया होती है और इसके द्वारा पाकाशयके विकारके साथ बहुत तरहकी सुस्त करने वाली बीमारियाँ पैदा हो जाया करती हैं,—जैसे, पीतज्वर, विसूचिका वगैरह, जिन सब रोगोंमें रोगी बहुत सुस्त हो जाते हैं और बार बार दस्त और के आनेकी वजहसे उनमें घोर अवसाद पैदा होकर मृत्यु-मुखमें जा पहुँचते हैं। काली चीजोंकी के होती है, बहुत ठण्ड मालूम होती है, पाकाशय और तल-पेट छुआ नहीं जाता और चेहरेपर ठण्डा पसीना होने लगता है—ये कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। गर्भावस्थामें अजीर्ण रोग आदि इसके अन्यतम

क्रियाफल हैं। रातमें सोनेपर शरीरमें बहुत खुजली—छूने या शीत लगनेके कारण खुजली पैदा हो जाती है; खुजलाहटका बन्द होना या महासुखका उदय होता है।

लक्षणावली।

मन।—किसीके पास आनेपर डर मालूम होता है (आर्नि, सिना लैके); बेहोशी।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—घर और खाट मानो घूम रही है (आर्नि, बेल, सांइक्यू, नक्स,—मानो शय्याके साथ नीचेकी ओर जा रहा है=ब्राई); वमनके कुछ ही पहले ऐसा मालूम होता है मानो माथेमें कोई छोटी हथौड़ीसे मार रहा है (क्लिमि, फेरम-ऐसेट, इग्ने, नेट्र-म्यू, फास, पल्स, सिलि)। बेचैनी; हिमाङ्ग, नाकसे खूनका स्राव होना, कण्ठनालीका सिकुड़ना, प्यास, मिचली, और वमनके साथ सरमें दर्द,—अधिकांश स्थानोंमें नींद खुलने बाद, निर्मल हवा लगनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर या धूप लगनेपर ये लक्षण पैदा होते मालूम हुआ करते हैं।

नासिका।—पीनस या पूतिनस्य (Ozæna)=(हाइड्रास, अरम) नासा-मूल मानो सट जाता है, नासारन्ध्र (नाकका छेद) मानो बन्द हो जाता है; नाककी हड्डीमें जखम (अरम)। नासा-व्रण या फोड़ा। नासा-रोग (Polypus),—नासा-मूल मानो सटा रहता है—चिपक जाता है, ऐसा मालूम होता है, मानो नाक खिंची हुई है और इसके साथही बदबूदार स्राव निकलता है (सोराइन)।

आँख।—एक आँखकी पुतली फैली हुई और दूसरी आँखकी पुतली सिकुड़ी हुई। रतौंधी (बेल, हेलि-बोरस-नाई)। आँखका सफेद आवरण मैला होना (Opacity of the cornea=शुफ्रे, मैग-कार्ब, कैल्के, फेन-सेट, सिलि)। आँखके चारों ओर नीलापन।

कान।—सुनने और देखनेमें भ्रम पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। सभी शब्द माथेमें प्रतिध्वनित होते हैं (फास, कास्टि, ऐसिड-फास,—सभी शब्दों से ऐसा मालूम होता है मानो सारी देहको भेदकर प्रवेश कर रहा है; थिरिडियन)। कानमें करकराहट होती है ('कर'से शब्द होता है=मेङ्ग, मस्क, सिलि)।

मुखमण्डल।—चेहरेमें ऐसा मालूम होता है मानो, कुछ सड़सड़ा रहा है (ऐगनस ; ऐम्ब्रा, ग्रेनेटम, पियोनि, रास, सेबाडि) ; मुखकी बिगड़ी हुई भङ्गी (ऐङ्गस, कैम्फो, क्युप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लोरो ओपि, प्लैट, ष्ट्रैम) ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना। मुँहकी पेशियोंका पक्षाघात (ऐको, कास्टि. कैलो-म्यु ; मकड़ीका जाल लगा हुआ है ऐसा मालूम होता है, इसके साथ ही=ग्रैफ)—बांई ओर अधिक,—ठण्डी हवा लगनेकी वजहसे दोनों ओठोंका फूलना।

मुखविवर।—अन्ननालीका संकोचन (बैप, कैक्ट) की वजहसे किसी पदार्थके निगलनेमें दर्द मालूम होना (बेल, एपिस, आयोड, मार्क आयोड-फ्लैव, फाइटो—जलीय पदार्थके अलावा और कुछ भी निगल नहीं सकता=कैप्सि, बैराइ, सिलि ; जलीय (पतले) पदार्थ निगलनेमें तकलीफ होती है=बेल ; कड़ी चीज निगलनेमें आराम मालूम होता है=इग्ने)। नमकीन हवा निकलना और डकार। मुँहमें बदबू और उससे लसदार गोंदकी तरह पदार्थ निकलता है। मुंहका स्वाद नमकीन।

पाकाशय।—ऊपरी प्रदेशमें दबाव डालने पर खाल उधड़ जानेकी तरह या स्पर्श-असहनीयता मालूम होती है,—जलन और कतरनेकी तरह दर्द, बहुत ओकाई आती है, श्वासरोध होनेकी तैयारी हो जाती है, कै हुई चीज काली होती है (आर्स, नक्स, फास, वेरेट) या पीले रंगका (आर्स, कोलचि, डालका, आयोड) दोपहरके समय बदबूदार डकार आती है (कार्बो-वेज)। वमनके समय चेहरे पर ठण्डा पसीना होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो तलपेट मरोड़ खा रहा है (फास, जिङ्कम)। दस्त के आदि पाकाशय के लक्षण गर्भावस्थामें बढ़ जाते हैं। अन्त्राशयसे काले रंगका बदबूदार जमा हुआ खून निकलता है। माड़की तरह पीली आभा लिये हरे रङ्गका मल। पेट फूला हुआ ; और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता अर्थात पेटपर हाथ रखना सहा नहीं जाता। मल खून-भरा, काला और बदबूदार ; इसके साथ ही पेशाब रुक जाना।

हृत्पिण्ड आदि।—हृत्पिण्डके संकोचनके साथ कलेजा धड़कना (कैक्ट) ; बेहोशी, चंचलता, चेहरा लाल, पाकाशयमें दर्द या पित्त वमनके साथ खांसी।

शीत-उत्ताप।—अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि बरफकी तरह ठण्ढे हो जाते हैं (वेरेट, कैम्फो; इतना जल्दी मानो रक्त जमकर मर जायगा=हेलोड) और बहुत जाड़ा मालूम होना,—आगके पास बैठनेपर भी जाड़ा नहीं घटता।

त्वचा।—त्वचा नीली या पीली रंगकी, उजली रूखी भरी, और फटी फटी। हाथ पैरमें लाल दाग पड़ जाते हैं। छातीमें भूरे रंगका दाग। ललाट, नाकके ऊपर और मुँहके चारों ओर व्रण आदि उद्भेद पैदा हो जाते हैं। त्वचा बहुत खुजलानेवाली; खुजलानेके बाद आराम मालूम होता है और खुजलानेपर घट जाता है। बगलकी गांठें पक जाती हैं (युगलैन्स-रिजि)।

निद्रा।—आँख खोलने अर्थात देखते ही नींद आ जाती है। निद्रा-वस्थामें भी आवाज होती है और हँसता है। नींद आते ही सांस रुकनेकी तैयारी हो जाती है (क्लोरम, जेल्स, ग्रिण्डीलिया, लैक-कैन, लैके, ओपि); हाँफते-हाँफते जाग उठता है। फिर दुबारा सोनेसे डरता है। बहुत दिनोंतक गड़बड़ी भरी नींद।

वृद्धि।—चलनेके समय, भारी चीज उठाने और निद्रित अवस्थामें या नींदके बाद (लैके, क्लोरम, स्टरिङ्ग)।

सम्बन्ध।—सदृश।—कैडमियम-ब्रोमेटम—पाकाशयमें दर्द और जलनके साथ वमन। कैडमियम आयोडेटम—सेलिका या रस-ग्रन्थि, सन्धियोंकी सूजन। सब सन्धियोंका पुराना प्रदाह और रोगवाली सन्धियोंमें श्लेष्मा-भरी *गुटिकायें (Nodes) पैदा हो जाती हैं। श्लेष्मा-प्रधान धातु।* डा० क्लार्कके मतसे—जिङ्कम (जिङ्कमकी क्रिया पहले मस्तिष्कमें; पर कैडमियमकी पाकाशयपर होती है); छातीके संकोचनमें कैलि-क्लोर; वमनमें आर्सेनिक; काला वमन, दुर्बलता, आर्स, लैकेसिस; मिचलीमें इपिका, टैबेकम; मल,—ऐलोज, पोडो; नींदके समय श्वास रुकना—कार्बो, ओपियम, लैकेसिस।

शक्ति।—२ रे शततमिकसे ३० शततमिक तक।

काइङ्का ।
(CAINCA)

दूसरा नाम ।—ब्रेजिल देशका एक तरहका उद्भिद ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे मूलकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—खाँसी, शोथ, क्लान्ति, मूत्र-ग्रन्थिकी बीमारी, आँखोंका प्रदाह, बहुमूत्र, प्लीहामें दर्द ।

उपयोगिता और आभास ।—पसीना न होना या सूखी त्वचाके साथ शरीरमें शोथ, उदरी, भ्रमणके अन्तमें बहुमूत्र और लालामेह रोगमें यह विशेष लाभदायक है ।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें तेज दर्द,—पिछले भागमें अधिक (ऐनाक, बैराइ, ग्रैफ, लैके, नक्स, रास, सिपि) ; पढ़ना आदि मानसिक परिश्रम बिलकुल सहन नहीं होता । (आर्स, अरम, लैके, नक्स,) । दाहिनी कनपटीमें (Temple) बेधनेकी तरह दर्द ।

आंख ।—आँखमें जलन । खुजलानेके साथ पलकोंका फूलना । तीसरे पहर सोनेके बाद कोई चीज साफ नहीं दिखाई देती,—मानो आँखोंके सामने कुहरा (Mist) छाया हुआ है । ऐसा मालूम होता है (ऐगार, आर्ज-नाई, बेल, कास्टि, फार्मि, जेल, ग्लोन, ग्रैफ, पेट्रोल, रेनान-बाल्बो) ।

कान ।—कानमें झुन झुन आवाज,—मानो कानके भीतर बहुतसे कीड़े उड़ रहे हैं (ऐमो-कै, कास्टि, ग्रैफ, नेट्र-म्यू, पल्स, सिलि) ।

नाक ।—भयानक सर्दी,—बहुत पतले श्लेष्माका स्राव होता है, इस स्रावसे नासा-रन्ध्रके मुँहमें जखम पैदा हो जाता है (ऐलियम-सिपा, आर्स आयोड) । मुँहसे बहुत बदबू निकलती है ।

गलेके भीतर ।— गलेमें जलन मालूम होती है, मानो मिर्चकी झाल लगी हुई है । रुखड़ापन दूर होनेकी आशामें बार बार गला साफ करता है

अन्ननालीमें ठण्डक मालूम होना ; बार बार स्वाद-रहित डकार। उदरकी ऊपरी भागमें सर्दी मालूम होना (कैफो, सिङ्को)

अंत्राशय ।—उदरमें सुई वेधनेकी तरह मालूम होना ; ओकाई आनेके साथ पेट भरा मालूम होना (ऐण्टि-क्रू, ऐसा, जैएट-सुट, ग्रैफ, ऐसिड-म्यू, स्टैन), तलपेटमें गड़गड़ाहट हुआ करती है (कैलो, आरम, साइक्लैम, सल्फ, ऐसिड-सल्फ)। छूनेपर या पीछेकी ओर झुक पड़नेपर तलपेटमें दर्द मालूम होता है (बेल, एपिस, मार्क, नक्स, पल्स, सल्फ)। प्लीहामें सुई वेधनेकी तरह दर्द।

मल ।—बार बार वेग, पर सिर्फ वायु निकला करता है। मलद्वारमें जलन, सन्ध्याके बाद सोनेके लिये लेटनेपर मलद्वारमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है और रोगीको बार बार बाध्य होकर खुजलाना पड़ता है।

पेशाब ।—मूत्रनलीके सामने वाले प्रदेशमें जलनके साथ मूत्रकृच्छ्रता (कैन, कैन्थ, लैके, कैप्स)। बार बार पेशाबका वेग, (ऐपो-साइन ; इक्विसेट) देशभ्रमणके समय बहुमूत्र (स्क्विला-; रातमें वृद्धि=एसिड-फास, कास्टि ; ज्यादाकर म्यूरेक्स ; युरेन-नाई, रातमें बहुत ज्यादा, पर बहुत देरतक बैठे रहने पर कहीं पेशाब होता है=कैलि-कार्ब ; पानी पीतेही पेशाबका वेग— कार्लस-बैड ; कब्जियतके साथ बार बार वेग—नक्स)। पेशाब बहुत गर्म (कैन्थ), उसमें तेज गन्ध, पेशाब करनेके समय तकलीफ। पेशाब गर्म आगकी तरह पेशाबके समय लिङ्गमें कड़ापन और भीतर भयानक जलन (ऐपोसाइन, सार्सा)

पुं-जननेन्द्रिय ।—सन्ध्याके समय अण्डकोष और रेतःरज्जुमें बार बार खींचनकी तरह दर्द, इसके साथही मुष्कलककी शिथिलता और ऐसा मालूम होता है मानो वह बहुत फैल गया है, इसके बाद दर्द—तेज गन्ध वाला पेशाब निकलनेके समय दर्दका बढ़ना। रात्रिमें लिङ्गमें उत्तेजना होना और बेचैनीके साथ भयंकर कामोत्तेजक सपने देखना और सबेरे नींद खुलनेके समय रेतःस्खलन हो जाता है।

पीठ ।—मसानेकी जगह पर दर्द,—पीछेकी ओर टेढ़े होकर सोनेपर आराम मालूम होता है (डायस्को, पैरीरा-ब्रा, ओसिमम-कैन)।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐसिड-ऐसेट, ऐसिड-फास, ऐपोसाइन, ब्रायोनिया ।

दोषघ्न ।—कोलचि, रासटक्स, विरेट्रम ।

शक्ति ।—३ रे दशमिकसे ६ ठा दशमिक तक ।

कैजुपुटम ।

(CAJUPUTUM)

दूसरा नाम ।—तेजपत्तेका तेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस तेलमें अलकोहल मिलाकर मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगमें लाभदायक है:— बहरापन, रातके समयका अतिसार ; शोथ ; मृगी ; छोटी सन्धियोंका वात ; सरका दर्द ; छातीमें जलन ; हिचकी ; मूर्च्छावायु ; आर्त्तवमें विकार ; पक्षाघात ; वात ; जीभकी बीमारियाँ ; दांतका दर्द ; सरमें चक्कर आना ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत ज्यादा पसीना बहना, जगह बदलनेवाला सन्धिवात या वातरक्त (Gout), स्नायवीय विकारकी वजहसे श्वासकृच्छ्रता और प्रदाह न पैदा करनेवाली स्नायविक बीमारियाँ, इसके मुख्य क्रियास्थल हैं। पेट फूलना और जीभकी सूजन और अङ्ग-प्रत्यङ्गका बढ़ना मालूम होना वगैरह भी इसके लक्षण हैं, नीचे लिखे कई लक्षण भी इसके निर्णायक हैं,—सारे शरीरमें बढ़ना मालूम होना अर्थात ऐसा मालूम होता है कि माथा एक टोकरीके बराबर बढ़ गया है, मानो अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग इकट्ठे नहीं कर सकता, (बैप्टी), रोगीको ऐसा ही मालूम होता है। वस्त्र आदि बहुत पासमें रहनेपर भी लेनेमें देर होती है। रोगीको ऐसा विश्वास होता है, मानो उसे कोई विष दे रहा है । मानो उसके दोनों हाथ शरीरसे बँध गये हैं और वे भारी तथा अकर्मण्य मालूम होते हैं ; सारे शरीरमें स्पर्शका अनुभव नहीं होता । छोटी माताकी तरह सारे शरीरमें दाने निकल आते हैं, उनमें बहुत खुजली होती है । जरायु आदि स्त्री-जननेन्द्रियके विकारकी प्रति-

चिप्त (Reflected) स्नायविक बीमारियाँ (ऐक्टिया)। मूर्च्छावायु (हिस्टीरिया Hysteria) रोग-ग्रस्तकी तरह कभी श्वास रुकनेके जैसा मालूम होता है, और स्नायविक पेट फूलना। सुख-शूल और कर्ण-शूल। कर्णपुटका लाल हो जाना ;-दोनों नासा-पुट एकाएक लाल हो जाते हैं और नाक फूली हुई मालूम होती है। बोलने-चालने, हँसने, शरीरके संचालन-मात्रसे जोरकी हिचकी आने लगना। इसके लक्षण एकाएक पैदा होते हैं और एकाएक गायब हो जाते हैं— दिनके ५ बजनेके समय पैदा होकर भोजनके बाद एकाएक गायब हो जाते हैं, धम्रपानसे जी मिचलाने लगना (ऐगार, स्टैल्ड)।

लक्षणावली।

मन।—वह ऐसा नहीं चाहता कि कोई उससे बातें करें (ऐषट, आयोड, सिलि)। औरतोंके बीचमें रहनेसे उसे आनन्द मिलता है। बहुत उदास मानो रोना ही चाहता है। रातके दस बजे उसे ऐसा मालूम होता है, मानो प्रत्यङ्ग आदि उससे अलग हुए जाते हैं,—उन्हें इकट्ठा नहीं कर सकता। वस्त्र आदि पासमें रहनेपर भी उन्हें लेनेमें देर होती है। निर्मल वायुके सेवनसे घटना।

मस्तक।—ललाट देशमें सरमें दर्द (ऐकी, लेप्टान)=विशेषकर माथा झुकानेपर आँखके गोलेमें दर्द बढ़ जाता है (एक आँखसे दूसरी आँख तक दर्द,—दबानेसे आराम मिलता है और माथा झुकानेपर बढ़ जाता है=ग्राई)। दिनके ५ बजनेके समय सरमें बहुत दर्द,—और उसके साथ ही दोनों जबड़े अकड़ जाना। रोगी समझता है कि उसका माथा एक टोकरीके बराबर हो गया है।

आँख।—दोनों आँखोंमें भार मालूम होना। दोनों आँखोंकी ऊपरी पलकें जूतेके चमड़ेकी तरह भारी मालूम होती हैं *तथा मोटी मालूम होती हैं*, आधी रातके बाद घरसे बाहर निकलनेपर कुछ दिखाई नहीं देता,—देखनेकी आशामें आँखें मला करता है (क्रोकस)

मुखमण्डल आदि।—दोनों कर्णपुट लाल और दोनों नासापुट एकाएक लाल आभा हो उठते हैं ; *मुखमण्डलमें जलन मालूम होना। लगातार* ऐसा मालूम होता है, कि कण्ठनालीमें संकोचनकी वजहसे श्वास-रोध होने की तैयारी हो रही है। अन्ननलीका एकाएक संकोचन। ऐसा मालूम

होता है मानो जीभने फूलकर समूचा मुख-विवर छेंक लिया है। (जीभ फूलनेकी वजहसे श्वास-रोध होनेका भय=क्लोरो-हाइड्रेट या क्लोरेलम); सूजनकी वजहसे जीभ बाहर निकल पड़ती है—ष्ट्रेम,जीभकी सूजनकी वजहसे बाहर नहीं निकालसकता=मार्क-कोर; फूली हुई जीभ बाहर रहती है=इनेन्यि श्रोक; जीभकी सूजनकी वजहसे बोलनेमें तकलीफ होती है=बैप)। जीभ सफेद लेपचढ़ी और रूखी मालम होती है; ऐसा मालूम होता है, मानो जल गयी है और मानो उसकी छाल उधड़ जायगी (जिह्वा-पार्श्वमें दग्ध होनेकी तरह मालूम होना—पल्स, सिपि—मानो सफेद लेप चढ़ी और जली=साइमेक्स; जीभकी खाल या चमड़ा निकल जाता है=रैनन, स्किलिरेटस; जीभका सफेद आवरण छालकी तरह उधड़ जाता है=टैरैक्स)

पाकाशय ।—भूख-प्यासका न रहना। मिचली और बोलने चालने हँसने, खाने, शरीर हिलाने वगैरह सामान्य कारणसे ही हिचकी आने लगती है (ऐसिड हाई, ऐसिड-सल्फ, साइक्लेमेन); पान खाने, या धूम्रपान करनेके बाद=इग्ने; उदरकी पेशीके सिकुड़ने फैलने और वायु छूटनेके साथ साइक्यू; आक्षेपिक=इथ्यूजा; मलेरिया आदिकी वजहसे बीमारीमें हिचकी= नेट्र-म्यू)

अन्त्राशय ।—पेट फूलनेके साथ आँतोंका शूल (कैमो, सिना, ऋतुके समय=कक्यु इन; रोगी और काले केश वाले मनुष्योंकी कब्जियतके साथ =नक्स); पेट बहुत फूल जाता है (ऐसा, टेरिब), बिल्लीके पेशाबकी गन्धकी तरह पेशाबमें गन्ध (वायोला-ट्राई; घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्धकी=ऐवेन, ऐसिड-नाई; वायोलेट फूलकी तरह गन्धयुक्त=कोपेबा; टेरिब, नक्स-मस; माँसकी गन्ध=युरेन-नाई)। आक्षेपिक (Spasmodic) विसूचिका,—अङ्ग प्रत्यङ्गमें ऐंठन (क्यूप्रम, सिकेलि)। उदरामय,—पानीकी तरह और पीला मल; रातमें बढ़ जाता है (आर्स, सिङ्को, नक्स-मस, सोराइन, पल्स)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—लिङ्गमें कड़ापन और बहुत रमणेच्छा (स्त्री आदिका प्यार और आलिङ्गन करनेपर भी लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता=कैलेड, सेलिन)।

वक्षस्थल ।—एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक दर्द और बाएँ कन्धेमें दर्द मालूम होना; श्वास-कृच्छ्रता; बायाँ हाथ ऐसा मालूम होता है मानो सन्धि-

भ्रष्ट हो गया है अर्थात जोड़ से हट गया है। (निकोल); बायाँ हाथ उठाने में बहुत दर्द होता है ; छोटी सन्धियोंका बात—एकाएक रोगवाली जगह छोड़कर शरीरके अन्तर्तम प्रदेशमें दूसरे रोगके रूपमें पैदा हो जाता है। (कप्रम)

त्वचा।—समूचे शरीरमें, बाहुमें और पैरके ऊपरी अंशमें छोटी माताकी तरह एक प्रकारके दाने निकलते हैं, उनमें बहुत खुजली होती है, खुजलाने बाद बढ़ना।

शीतोत्तापादि।—बहुत जाड़ा मालूम होता है और समूचे शरीरमें बहुत पसीना निकलता है (फास)।

वृद्धि।—सवेरे ५ बजे और रातमें।

सम्बन्ध-तुलनीय।—बोविस्टा (सूजन मालूम होना); प्लेण्टेगो (कान और दन्तमूल); कोलचि (बात)। ऐकोन और बेलाडो (पसीना आदि)। युकैलिप्टस इत्यादि। सदृश—ऐसा, बोवि टेरेबिन्थ ; पल्स-नक्स, मस, इग्ने, क्यूप्रम,।

शक्ति।—१म दशमिकसे ६ ठे शततमिक क्रम तक।

कैलेडियम सेग्विनम।

(CALADIUM SEGUINUM)

दूसरा नाम।—अरम सेग्विनम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा ; शोथ ; प्रमेह ; ध्वजभङ्ग ; उत्तेजना ; कामोन्माद ; योनिमें खुजली ; सान्निपातिक अवस्था ; कामिका लक्षण इत्यादि।

उपयोगिता।—श्रवणेन्द्रियके सभी स्नायु बहुत उत्तेजित हो जाते हैं —आवाजसे ही रोगी चौंक उठता है और उसकी नींद खुल जाती है (ऐसे, नक्स, टेरेण्टियु) इसके सेवनसे तम्बाकूका धुआँ पीनेकी इच्छा घट जाती है।

उपयोगिता और आभास।—स्त्री-जननेन्द्रिय पर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है—यह क्लीवता उत्पन्न करता है और योनिमें इस ढंगकी खुजली और कामकी उत्तेजना पैदा करता है कि अस्वाभाविक उपायसे उसको परितृप्ति करनेकी प्रबल इच्छा पैदा हो जाती है। रोगी एक-दम हिलना नहीं चाहता; स्थिर होकर सोया रहता है, पर बांई कर-वट सोनेसे ही उसकी यन्त्रणाएँ बढ़ जाती हैं; बार बार डकार आती है; पर डकारमें बहुत थोड़ा वायु निकलता है—पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है मानो सूखे और नीरस पदार्थसे भरी हुई है। नपुंसकता; रोगीका मन बहुत ही दुःखित रहा करता है; रमणकी इच्छा बहुत अधिक रहती है और कामो-त्तेजना मनमें तो होती है, पर शिश्न शिथिल रहता है, स्त्री आदिका आलिङ्गन या प्यार करनेपर लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता,—प्यार करनेके समय उत्तेजना (कोल्चि, सेलिन) या वीर्यस्खलन नहीं होता। योनिमें अकौत (ऐग्नस, रास, सल्फ, ग्रैफ),—अस्वाभाविक उपायोंसे काम परितृप्त करनेकी इच्छा होती है (ओरिगैनम, जिङ्कम), शामके वक्त बोखार आनेपर रोगी सो जाता है और बोखार छोड़नेपर नींद खुल जाती है। पसीनेकी गन्धसे मक्खियाँ लगने लगती हैं, मच्छड़ आदि कीड़े काटनेपर जलन और खुजली आदि इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—रोगी दवा नहीं खाना चाहता, जबर्दस्ती खिलाये बिना दवा नहीं निगलता, अपने स्वास्थ्यकी उसे बहुत चिन्ता और यत्न रहता है। डर-भरा चित्त अर्थात उसके मनमें हमेशा भय समाया रहता है; कामोद्दीपक चिन्ता; श्रवण-शक्ति बहुत प्रखर; सामान्य शब्दसे भी चौंक उठता है और उसकी नींद खुल जाती हैं (आर्स, नक्स, टैरेण्टिउ)। जरा भी हिलना नहीं चाहता; हिलनेसे ही उसे डर मालूम होता है (ब्राई)।

मुखमण्डल।—मानो जगह जगहपर मकड़ेका जाल लगा हुआ है (बेराई बोरैक्स, ग्रैफा), मुखमण्डल और माथेपर मीठे स्वादका पसीना निक-लता है; इसी वजहसे मक्खियाँ लगने लगती हैं।

नाक।—नाककी जड़में एकाएक जलन आरम्भ हो जाती है, साथ ही लगातार छींक आती रहती है मानो छेदमें मिर्चका चूर लग गया है, पानीकी तरह सर्दीका स्राव और बार बार हलकी छींक।

पाकाशय आदि।—दाँतमें दर्द,—मानो कोई दाँतकी जड़में गढ़हा खोद रहा है, कानमें सूई बेधनेकी तरह मालूम होना। जीभके बीचवाले स्थान पर गाढ़े भूरे रंगकी रेखा दिखाई देती है, बार बार डकार आती है, मानो पाकाशय सूखे और नीरस पदार्थसे भर रहा है। पाकाशयमें ऐसा अनुभव होना मानो कुछ फड़फड़ कर रहा है और इसी वजहसे मिचली। श्वास प्रश्वास दीर्घ, तम्बाकूके धूम्रपानसे चिढ़ पैदा कर देता है। (ग्रैफ्टेगो, सिङ्कोना)।

पुं-जननेन्द्रिय।—बहुत उदासभावके साथ नपुंसकता या ध्वजभङ्ग (ब्यूफो से तुलनीय) लिङ्गेन्द्रिय बहुत शिथिल, पर रमणेच्छा बहुत प्रबल रहती है (लाई, सेलिन)। आलिङ्गन या प्यार करनेपर भी लिङ्गोद्रेक नहीं होता; रमणके समय वीर्य एकदम नहीं निकलता (कैल्के, सेलिन)। शिश्न बड़ा और पसीनेसे भरा मालूम होता है। अर्द्ध-निद्रित अवस्थामें लिङ्गमें कड़ापन आ जाता है पर जागते ही कड़ापन दूर हो जाता है। जननेन्द्रियमें खुजलाहट।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—योनि-देशमें पामा (Pruritus Valvae) गर्भावस्थामें योनि-देशमें ऐसी कामोद्दीपक खुजली पैदा होती है, कि रोगिनी अस्वाभाविक उपायोंसे वह खुजलाहट मिटाना चाहती है। (ओरिगेन, जिङ्कम); योनिसे श्लेष्माका स्राव। आधी रातके बाद एकाएक जरायु चिपक जाती है।

श्वासयंत्र।—वक्षोस्थिके बाईं ओर वक्षःस्थलमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है; चिन्ताके साथ दाहिनी ओर भी दर्द मालूम होता है,—बाईं करवट सोनेसे बढ़ना (मार्क),—दाहिनी करवट सोनेपर घटना। स्वर-नालीके संकोचनकी वजहसे श्वास-कृच्छ्रता, सर्दीकी वजहसे दमा रोग। स्वर-नालीके ऊपरी अंशसे खांसी पैदा हो जाती है, कफ नहीं निकलता और बोलनेपर बढ़ जाता है (बेराई, नैट्र-म्यू, स्टैन, लैके, फास)।

त्वचा।—पसीनेकी मीठी गन्धके कारण मक्खी लगती है। मच्छड़ आदि कीड़े काटनेकी वजहसे बहुत जलन (ऐन्थ्र) और खुजली। छातीपर आमवात या दमा पर्यायक्रमसे प्रकट होते हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है (ऐगार); निम्न बाहुके भीतर-की ओर बहुत खुजलाहट और जलन करनेवाली लाल रंगकी फुन्सियां (red pimples) निकल आती हैं,—वक्षस्थलपर अत्यन्त दबाव मालूम होता है और

इसके साथ ही वायुनालीके भीतर श्लेष्मा अधिक हो जानेके कारण श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है।

निद्रा ।—श्वासके समय ज्वर आनेपर रोगी सो जाता है और बोखार छूटनेपर नींद खुल जाती है। बहुत औंघाई। निद्रावस्थामें रोगी गों गों करता है। सच्ची घटनाकी तरह सपने देखता है। (बेल, सिना ; कैमो, बोरेक्स)। जरासी आवाजसे ही नींद खुल जाती है, बहुत दिन हुए जिन घटनाओंको रोगी भूल गया है, उसे स्वप्नमें वे सब ही याद आती हैं।

वृद्धि ।—शरीर हिलाने, बाईं करवट सोने और उत्ताप लग जानेपर।

घटती ।—जरा भी नींद लगनेपर, पसीना निकलनेपर, ठण्डे पानीसे धोनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर और स्थिर रहने पर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—अनुपूरक – ऐसिड-नाइट्रिक। मार्कुरियसका दोषघ्न है। इसके दोषघ्न हैं—कैम्फि, इग्नेशिया ; कार्बो-वेज ; हायोसा ; जिजियाई, मार्क इत्यादि।

तुलनीय ।—ऐकोन, ब्रायो, कास्टिक, कार्बो, कैम्फि, सिना (क्रमि) ; जेलस [इन्द्रियोंका परिचालन] ; हायोसा, इग्ने, लाइको, मार्क, नाइट्रिक-सल्फ, जिजिया, नक्स-वोम, फास [कामोन्माद] ; पल्स, सिपि।

शक्ति ।—३ री दशमिक से ३० शततमिक क्रम।

कैल्केरिया ऐसेटिका।

(CALCAREA ACETICA)

दूसरा नाम ।—बिना साफ किया हुआ कैलसियम ऐसिटेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कैल्केरिया कार्बोनिकाकी तरह यह भी एक अपरिशुद्ध चूना (Lime) से तैयार होता है। महात्मा हनिमैनने इसकी स्वस्थ शरीरपर परीक्षा की है। इसका तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—(डा० क्लार्कका मत)—मलद्वारमें खुजली ; उपझिल्ली-मिला श्वासनालीका प्रदाह ; कार्कट या कैन्सर रोगमें दर्द ; बाधक ; सर दर्द और सरमें चक्कर आना।

उपयोगिता और आभास।—इसकी क्रिया प्रायः कैल्केरिया आस्ट्रियमकी तरह है; इसका प्रधान क्रिया फल है, नकली झिल्लीका पैदा हो जाना—श्लैष्मिक झिल्लीसे जरायु आदिके बीचमें नकली झिल्लीका पैदा हो जाना; कर्कट रोगकी तकलीफमें यह बहुत ही लाभदायक है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं:—घरके बाहर टहलनेसे ही सरमें चक्कर आने लगना; ललाटमें बेहोश करनेवाला दबावकी तरह दर्द; समूचा माथा मानो पिसा जा रहा है, ऐसा मालूम होना; इसके साथ ही अध्ययनके समय सुनने देखने आदिकी शक्तिका गायब हो जाना; पढ़ते पढ़ते रोगी रुक जाता है और वह कहाँ है, यह कुछ भी स्थिर नहीं कर पाता। मुँहमें खट्टा स्वाद, माथेमें खालीपन और शून्य मालूम होना। एक आँख और एक पार्श्वमें दर्द,—आँखें लाल, उनसे बहुत आँसू बहा करता है। खट्टी और बदबूदार डकार, उदरामय,—बहुत ज्यादा, बिना तकलीफका और कमजोर करनेवाला नहीं। मलद्वारमें बहुत अधिक खुजली। नकली झिल्ली पैदा करनेवाली रजः कृच्छ्रता या बाधकका दर्द और वायुनली भुजके प्रचण्ड विकारकी वजहसे खाँसी।

लक्षणावली।

मन।—बहुत चिन्ता, मानो उसने न जाने कितना अपराध किया है (चेलिडो, फेरम) या वह ऐसी आशा करता है कि उसका बहुत अधिक तिरस्कार किया जायगा। विचारोंमें शंकायें, मानो किसी अमंगल-सूचक खबर की राह देख रहा हो (ऐस्टीरि-रियुब, लिसिन)। हमेशा कोई न कोई काम करते रहनेका आग्रह (कैल्के-आर्सेनिकम)। दिनके पहले आधे भागमें विषाद और अन्तिम भागमें प्रसन्न रहता है। बहुत दुःखित भाव-युक्त,—मानो रुलाई आ रही है। उसके अलावा वर्त्तमान और भविष्य कालके कामोंको लेकर बहुत घबराहट प्रकट करता है। बहुत अधिक असन्तुष्ट चित्त और किसीके साथ भी बात नहीं करना चाहता। घरके बाहर निर्मल वायु सेवन करनेमें उसे आराम मिलता है।

मस्तक।—वायु सेवनके लिये टहलते समय सरमें चक्कर आना,—(नेट्र-म्यू, नक्स, फास, पल्स)। पढ़नेके समय इस ढंगका दर्द कि बेहोशी आ जाती है (बोवि, क्रोक, साइक्लैमन, डालका, हेलिबो, हायो, लिडम, फास)। शिराईशूल या अधकपारीका सर-दर्द, दाहिनी स्कन्ध-देशीय पेशीमें दबाने और खींचनेकी तरह दर्द,—सरमें सर्दी मालूम होना, खट्टी स्वादका डकार, और

उसके साथ ही वमन। मूर्द्धा-देशमें असह्य टपक। मूर्द्धा-प्रदेशमें खुजली और केशकी जड़में दर्द होता है, घिसनेपर नहीं घटता।

आंख।—बहुत खुजली। सवेरे नींद खुलनेके समय आँखें सट जाती हैं। (साइक्लोम, पल्स)।

नाक।—सर्दी नहीं, पर बार बार छींक आती है, पानी जैसा सर्दीका स्राव, इसके साथ ही बार बार तंग करनेवाली छींक।

मुंहके भीतर।—मुँहमें उत्ताप और जलनके साथ जीभपर छाले निकल आना (जीभके आगे छाला=नेट्र-सल, ऐमोन-म्यूर, नाइट्रम, जलन और डंक मारनेकी तरह दर्दके साथ जीभके बगलमें छाला—एपिस ; जखमकी तरह दर्द और जलन करनेवाला छाला=आर्जेण्ट, कैप्स ; मुँहका भीतरी भाग और जीभ छालेसे भरी=स्टैफ, सल्फ ; जीभके ऊपर जलन और दर्द भरे छाले =ऐसिड-म्यूर)। जीभपर सफेद लेप चढ़ी और उसपर खाल उधड़ जाने या क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होना, निचले जबड़ेकी नीचे वाली गांठोंका फूलना और पीसनेकी तरह दर्द होना।

पाकाशय आदि।—बार बार हिचकी (नक्स, मस्कस)। खांसी और छातीमें जलनके साथ मिचलीकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है, बांये पुट्ठे या वंक्षण प्रदेशीय (Inguinal) ग्रन्थि समकी सूजन (आर्स, अरम, बेडि, केल्के, कार्बो-वेज, क्लिमेट, मार्क, आयोड, ऐसिड-नाई, स्टैफ, थूजा,)। मलद्वारमें बहुत अधिक खुजली (ऐम्ब्रा ; ऐमोन-कार्ब, बैराइ, केल्के, कार्बोविज, कास्टि, सिना, कोक, इग्ने, लाइको, ऐसिड-नाई, सिलि, सल्फ, टियुब, जिङ्क)

जननेन्द्रिय।—बार बार पेशाबका वेग होता है। बहुत देरतक रख छोड़नेपर पेशाब गदला हो जाता है। प्रायः रेतःस्खलन हो जाता है। योनिके बाहरी स्थानपर खुजली (कैलेडा), जरायुमें नकली झिल्ली पैदा करनेवाला (Membraneous) बाधक—विशेषकर जिन स्त्रियोंके शरीरमें अधिक चूना पैदा हुआ करता है।

श्वास-यंत्र।—वायुनली वगैरहमें धड़ धड़ आवाज और खुजलाहटकी वजहसे खांसी पैदा हो जाना (कैलेड, मार्क, प्रूणस, रास ; सिना ; सिपा)। बड़े और जमे हुए पीबके टुकड़ोंकी तरह कफ, श्वास प्रश्वास लेनेमें थकावट और धड़कड़ी, दोनो कन्धोंको कुछ पीछेकी ओर हटा लेनेपर थोड़ा आराम

मिलता है (कैसकेः—वृद्धि=ऐमोन-कार्ब, आर्स)। दोनों कान्धोंको पीछे झुकाने पर बचमें दर्दकी अधिकता=बोरैक्स, रैटान।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथकी कलाई या मणिबन्धके कुछ ऊपर और बांई जांघकी फलकास्थिमें मानो मोच खानेकी तरह दर्द मालूम होना (ब्राई, युफ्रे, आर्निका, ऐसिड-सल्फ, रास ; रियुटा)। स्थिर होकर रहनेपर बढ़ना (रास, आर्निका)। रातमें और जूता पहननेके समय तलवे और पैरकी अंगुलीमें अकड़न होना (तलवेमें=ऐमोन-कार्ब, कैल्के—ऐसि, लाइकी, क्यूप्रम, फेर, मार्क)।

नींद।—झगड़ा और विवादसे भरी घटनाओंका प्रत्यक्षकी तरह सपने देखना।

ज्वर।—रोज रातमें पसीना होता है (ऐल्यू, फेर, मैग-कार्ब, मार्क ऐसिड नाई, पैरिस ; ऐसिड-फास, फास रास ; सल्फ)।

त्वचा।—कर्कट रोगमें भयानक जलन और यंत्रणा—(जब आर्स, युफोर्बियम, ह्युफोर्बिया, हैटोरोडक्सके द्वारा आराम नहीं मिलता है)

सम्बन्ध।—**सदृश**—ब्रोमि ; बोरैक्स, युफोर्बियम।

शक्ति।—३ रे दशमिक विचूर्ण से १२ या ३० शततमिक क्रम।

कैल्केरिया आर्सेनिका।

(CALCAREA ARSENICA)

दूसरा नाम।—आर्सेनाइट आव लाइम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

मन्तव्य।—कितने ही सोचते हैं, कि कैल्केरिया और आर्सेनिकके सम्मिलित लक्षणमें इसका प्रयोग किया जाता है ; पर वास्तवमें स्वस्थ दैहिक परीक्षामें यह एकदम दूसरे ही लक्षण प्रकट करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—अम्ल ; अण्डलाल मिला पेशाब ; दमा ; विसूचिका ; यकृतकी शीर्णता ; कब्जियत ; क्षयकास ; शोथ ; मेदाधिक्य ;

हृत्पिण्डकी बीमारी ; मृगी ; सरमें दर्द ; पाकाशयमें विकारकी वजहसे जखम ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारी ; हृत्कम्पन ; अर्बुद ; सान्निपातिक ज्वर ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत अधिक मानसिक अवसाद। हृत्पिण्डका द्वार रोकनेवाली झिल्लीमें विकारकी वजहसे अपस्मार रोगमें मस्तक और वक्षमें रक्तसंचयकी अधिकता (ऐमिल, ग्लोन)। सामान्य मानसिक उत्तेजना होनेपर भी हृद्कम्प और वक्षमें धड़फड़ी मालूम होती है=लिथिया-कार्ब)। शराबियोंका शराब पीनेका अभ्यास छोड़नेके समय स्वास्थ्य-विकार और शराब पीनेकी दुर्दमनीय आकांक्षा (ऐसेट, सिङ्कोना—रुब्रा, ऐसिड-सल्फ, ऐवेना-सैट, पैसिफ्लोरा)। वयःसन्धिके समय रजोरोधकी वजहसे बीमारी,—सामान्य मानसिक आवेग पैदा हो जानेपर छातीमें धड़कन पैदा हो जाती है और छातीमें और माथेमें खून दौड़ पड़ता है। (लैके, ऐमिल)

ज्वर ।—मलेरियासे उत्पन्न (Malarious) सविराम ज्वर ; लगातार होनेवाला और विलेपी ज्वर ; रोगीको बहुत जाड़ा मालूम होता है। त्वचा और उसके पासवाले अंशमें उत्ताप मालूम होनेके साथ जाड़ा पैदा हो जाना। रातमें ३ बजेके बाद पसीना होता है (आधी रातके बाद=मार्कुरियस, पोलिपोरस ; सवेरेके समय पसीना—मार्क, ऐसिड-नाई, फास, ऐसिड-फास); यकृत और प्लीहा दोनोंका ही आकार बढ़ा हुआ। डा० प्रतापचन्द्र मजुमदार महाशयके मतसे बच्चोंके प्लीहा और यकृत बढ़नेकी बीमारीमें यह ज्यादा लाभ-दायक है (नैट्र-म्यू, सिङ्को, चेलिडो, नक्स, लेप्टन, मार्क)

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—कोनोयम, ग्लोनाइनम, लिथिया-कार्बोनिका, पलस, नक्स, या श्लेष्मा-प्रधान धातु हो, या यक्ष्मा प्रवण धातु हो—सभी धातुओं में कोनायमके बाद बहुत लाभदायक है।

शक्ति ।—६ ठे दशमिक विचूर्णसे २०० क्रम तक विशेषलाभदायक है।

कैल्केरिया ब्रोमेटा।

(CALCAREA BROMATA)

दूसरा नाम।—ब्रोराइड आव कैलसियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—*शिथिल पेशीवाले, स्नायु प्रधान* बहुत ग्रन्थियोंवाले और चिड़चिड़े मिजाजवाले बच्चोंके लिये कैल्केरिया और ब्रोमिनके सम्मिलित लक्षणमें लाभदायक है।

नींद न आना, चिड़चिड़ा मिजाज, मस्तिष्कमें रक्तसंचय वगैरह लक्षणमें इसका विशेष लक्षण दिखाई देता है। किसी किसीके मतसे यह जरायुका प्रदाह अच्छा करनेकी एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बेल, इथूजा, कैल्के, ब्रोमियम।

शक्ति।—१x और निम्नशक्ति।

कैल्केरिया कार्बोनिका या आस्ट्रियेरम।

(CALCAREA CARBONICA)

or

(CALCAREA OSTREARUM)

दूसरा नाम।—कैलसियम कार्बोनेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे कार्बोनेट आफ लाइमसे यह तैयार होता है। पहले ६x तक विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—डा॰ क्लार्कके मतसे नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक है;—पेट मोटा; *अम्लरोग;* खूनकी कमी; भूख ठीक ठीक न लगना; अस्थि-विकार; ताण्डव; सर्दी; यक्ष्मा; मेद-वृद्धि; खाँसी; घुंड़ी; माथेमें चर्मरोग; *मदात्यय;* दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ; बहुमूत्र; अतिसार; शोथ; अजीर्ण; कानसे स्राव; मृगी; आँखकी

हृत्पिण्डकी बीमारी ; मृगी ; सरमें दर्द ; पाकाशयमें विकारकी वजहसे जख़म ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारी ; हृत्कम्पन ; अर्बुद ; सान्निपातिक ज्वर ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत अधिक मानसिक अवसाद। हृत्पिण्डका द्वार रोकनेवाली झिल्लीमें विकारकी वजहसे अपस्मार रोगमें मस्तक और वक्षमें रक्तसंचयकी अधिकता (ऐमिल, ग्लोन)। सामान्य मानसिक उत्तेजना होनेपर भी हृद्‌कम्प और वक्षमें धड़फड़ी मालूम होती है=लिथिया-कार्ब)। शराबियोंका शराब पीनेका अभ्यास छोड़नेके समय स्वास्थ्य-विकार और शराब पीनेकी दुर्दमनीय आकांक्षा (ऐसेट, सिङ्कोना—रुब्रा, ऐसिड-सल्फ, ऐवेना-सेट, पैसिफ्लोरा)। वयःसन्धिके समय रजोरोधकी वजहसे बीमारी,—सामान्य मानसिक आवेग पैदा हो जानेपर छातीमें धड़कन पैदा हो जाती है और छातीमें और माथेमें खून दौड़ पड़ता है। (लैके, ऐमिल)

ज्वर ।—मलेरियासे उत्पन्न (Malarious) सविराम ज्वर ; लगातार होनेवाला और विलेपी ज्वर ; रोगीको बहुत जाड़ा मालूम होता है। त्वचा और उसके पासवाले अंशमें उत्ताप मालूम होनेके साथ जाड़ा पैदा हो जाना। रातमें ३ बजेके बाद पसीना होता है (आधी रातके बाद=मार्कुरियस, पोलिपोरस ; सवेरेके समय पसीना—मार्क, ऐसिड-नाई; फास, ऐसिड-फास); यकृत और प्लीहा दोनोंका ही आकार बढ़ा हुआ। डा० प्रतापचन्द्र मजुमदार महाशयके मतसे बच्चोंके प्लीहा और यकृत बढ़नेकी बीमारीमें यह ज्यादा लाभ-दायक है (नेट्र-म्यू, सिङ्को, चेलिडो, नक्स, लेप्टन, मार्क)

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—कोनीयम, ग्लोनाइनम, लिथिया-कार्बोनिका, पलस, नक्स, या श्लेष्मा-प्रधान धातु हो, या यक्ष्मा प्रवण धातु हो—सभी धातुओं में कोनायमके बाद बहुत लाभदायक है।

शक्ति ।—६ ठे दशमिक विचूर्णसे २०० क्रम तक विशेष लाभदायक है।

कैल्केरिया ब्रोमेटा।

(CALCAREA BROMATA)

दूसरा नाम।—ब्रोमाइड आव कैलसियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—शिथिल पेशीवाले, स्नायु प्रधान बहुत ग्रन्थियोंवाले और चिड़चिड़े मिजाजवाले बच्चोंके लिये कैल्केरिया और ब्रोमिनके सम्मिलित लक्षणमें लाभदायक है।

नींद न आना, चिड़चिड़ा मिजाज, मस्तिष्कमें रक्तसंचय वगैरह लक्षणमें इसका विशेष लक्षण दिखाई देता है। किसी किसीके मतसे यह जरायुका प्रदाह अच्छा करनेकी एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बेल, इथूजा, कैल्के, ब्रोमियम।

शक्ति।—१x और निम्नशक्ति।

कैल्केरिया कार्बोनिका या आस्ट्रियेरम।

(CALCAREA CARBONICA)
or
(CALCAREA OSTREARUM)

दूसरा नाम।—कैलसियम कार्बोनेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।— ताजे कोर्बोनेट आफ लाइमसे यह तैयार होता है। पहले ६x तक विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—डा० क्लार्कके मतसे नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक है;—पेट मोटा; अम्लरोग; खूनकी कमी; भूख ठीक ठीक न लगना; अस्थि-विकार; ताण्डव; सर्दी; यक्ष्मा; मेद-वृद्धि; खाँसी; घुंडी; माथेमें चर्मरोग; मदात्यय; दाँत निकालनेके समयकी बीमारियाँ; बहुमूत्र; अतिसार; शोथ; अजीर्ण; कानसे स्राव; मृगी; आँखकी

बहुत-सी बीमारियाँ ; ज्वर ; नासूर; पित्ताश्मरी या पथरी ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; प्रमेह ; गलगण्ड ; सन्धिवात ; सरमें दर्द ; अन्त्रवृद्धि ; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय ; व्याधि-शंका ; मूर्च्छावायु ; ध्वजभंग ; सन्धियोंकी बीमारी ; स्तन्य-विकार या स्तनके दूधमें विकार ; श्वेत-प्रदर ; नकली मैथुनकी वजहसे बीमारियाँ ; आर्त्तवमें विकार ; स्तनके रोग ; ज्वर ; गर्भ-स्राव ; स्नायविक ज्वर ; स्नायुशूल ; रातके समय डर जाना ; पक्षाघात ; कर्णमूल ; ग्रन्थियोंमें विकार ; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह ; बहुत अधिक पसीना ; नाकके भीतर अर्बुद ; गर्भावस्थाकी बीमारी ; मुंहका स्नायुशूल ; जीभकी जड़का अर्बुद ; मूत्ररेणु या अश्मरी (पथरी) या इसी वजह से पैदा हुआ दर्द ; वात ; दाद ; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात ; गण्डमाला ; चर्मरोग ; अनिद्रा ; घ्राण-शक्तिमें गड़बड़ी ; मसे ; मध्यान्त्रकी बीमारी ; स्वादमें गड़बड़ी ; दाँतका दर्द ; दाँतकी बहुत सी बीमारियाँ ; गुटिका ; स्वरनलीका प्रदाह ; अर्बुद ; सान्निपातिक रोग ; आमवात ; जरायुकी बीमारी ; शिराकी बीमारी ; सरमें चक्कर आना ; अंगुलहाड़ा ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लेष्मा और रस प्रधान धातुवाले (साधारण भाषामें हमलोग जिसे जलवात कहते हैं) केश थोड़े, गोरे रंगके मनुष्योंके लिये और सोरा तथा गण्डमाला दूषित धातुवालोंके लिये यह उपयोगी है । ये सब मनुष्य साधारणतः बहुत ही स्थूलकाय (मोटे) होते हैं और उनकी मांसपेशियाँ शिथिल होती हैं, थोड़े ही परिश्रमसे वे थक जाते हैं, मनमें भय बना रहता है । चेहरा मलिन और उतरा हुआ रहता है और उनकी प्रकृति कच्छु, दोष प्रवण होती है, ये धीरे धीरे बहुत मोटे होते जाते हैं, और उनमें चलनेकी शक्ति नहीं रह जाती । बच्चोंका चेहरा लाल, पेशियाँ शिथिल और सामान्य कारणसे ही पसीना होने लगता है । इसके अलावा उन्हें अकसर सर्दी आदिकी बीमारी लगी ही रहती है, बच्चेके सब अङ्ग प्रत्यङ्ग समान रूपसे नहीं बढ़ते अर्थात उनका माथा बड़ा, पेट मोटा, और गला तथा हाथ पैर पतले रहते हैं, माथेमें सब अस्थि-संयोगस्थल (Fontanelles) बहुत धीरे धीरे भरते हैं ; अङ्ग प्रत्यङ्गकी हड्डियाँ सब लचीली रहती हैं और बहुत धीरे धीरे बढ़ती हैं ; उनके पोषणकी क्रिया ठीक ठीक नहीं होती । लसिका-ग्रन्थि सब खासकर गर्दन और मध्यान्त्रकी भीतरवाली (Mesenteric) ग्रन्थि प्रायः ही फूल जाती है और निद्रित अवस्थामें उनके माथेमें इतना अधिक पसीना होता है कि यहां तक तकिया भींज जाती है । इन सब बच्चोंके दाँत

निकलनेमें बहुत देर होती है और दूध पीते ही दहीके आकारमें जमकर वह कै हो जाता है, देहके किसी खास अंशमें पसीना ज्यादा होना—इसका एक निर्णायक लक्षण है। श्लेष्मा प्रधान धातुवालेको परिवर्तित कर शीतोत्ताप सहन करानेमें कैल्केरिया आस्ट्रियेरम सर्वश्रेष्ठ है। तेजीसे बढ़ने वाले और बहुत मोटी ताजी युवतियोंको जिन्हें बहुत जल्दी जल्दी ऋतुस्राव होता है, जिन्हें ऋतुकालमें बहुत अधिक स्राव हुआ करता है, जिनका पैर अकसर पसीनेसे तर रहता है तथा ठण्ढा रहता है, उनके लिये कैल्केरिया आस्ट्रियेरम विशेष लाभदायक है। बहुत देर तक पानीमें रहने या पानीका व्यवहार करनेपर जो बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, उनमें भी यह फायदा करता है। इनके अलावा आगे लिखे कई लक्षण भी कैल्केरियाके प्रकृति-गत लक्षण हैं:—इसके रोगी खासकर रोगिनियाँ, देखनेमें ताकतवर मालूम होती हैं पर थोड़े ही परिश्रमसे थक जाती हैं, दो सीढ़ी चढ़नेमें ही हाँफने लगती हैं और उन्हें बाध्य होकर, उसी जगह बैठकर हाँफना पड़ता है। रोगिनी सभी विषयोंमें निराशा प्रकट करती है, उसे विश्वास रहता है कि उपस्थित रोगसे वह अच्छी नहीं हो सकती, उसकी बुद्धि-भ्रंश हुआ चाहती है और वह डरती है कि शायद फिर कोई इसे लक्ष्य न कर ले। ठण्ढी हवा सहन नहीं होती। दोनों पैर हमेशा पसीनेसे तर रहते हैं। प्रत्येक वायु-परिवर्त्तनमें उसे सर्दी हो जाती है, सरमें दर्द,—भार मालूम होता है,—किसी किसी समय एक अंशपर रोगका हमला होता है, कभी कभी माथेमें उत्ताप और रक्त-संचयकी अधिकता मालूम होती है; पर कभी कभी ऐसा भी होता है, कि जाड़ा ही मालूम हुआ करता है। भ्रम-भरी गन्ध आया करती हैं—मानो बारूद या सड़े अण्डेकी गन्ध आ रही है। नाककी सर्दी (Nasal catarrh), बदबूदार, पीले रंगका श्लेष्मा निकलता है और नाकमें बदबू मालूम होती है। कर्णस्राव (Otorrhœa),—पीबकी तरह श्लेष्मा निकलनेके साथ ग्रन्थियोंका बढ़ना, कभी कभी कानमें फुरफुर आवाज और सुई बेधनेकी तरह और टपक जैसा दर्द मालूम होता है। मुँहका स्वाद खट्टा, खट्टी डकार और खट्टा मल और सारे शरीरमें खट्टी गन्ध, पेटके ऊपरी प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह स्थान भीतर घुस गया है पर वास्तवमें पेट फूला और ढोलकी तरह कसा हुआ रहता है। अधपका अण्डा खानेकी बहुत अधिक इच्छा होती है,—खासकर बच्चोंको रोगसे आरोग्य होनेके समय, मांस और गर्म सिझाये हुए खाद्यमें

अरुचि,—बिना किसी चीज़ें खानेकी बहुत इच्छा ; दूध सहन नहीं होता ; पेटमें वायु इकट्ठा होकर, पेट फूल जाता है और उसमें कतरनेकी तरह दर्द होता है । पुट्ठे या वंक्षण प्रदेशकी (Inguinal) ग्रन्थियाँ सब बढ़ी हुई रहती हैं । कब्जियत,—मल बड़ा, कड़ा—या पहला अंश कड़ा, इसके बाद मांड़की तरह और अन्तमें पतला पानीकी तरह । मलान्त्र (Rectum) में जलन—टपक और चिलक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है । वक्षस्थलमें बहुत दबावके साथ और छूनेसे दर्द मालूम पड़ता है । रातमें खांसी आया करती है,—जलीय भाफ लगनेसे छातीमें दबाव मालूम होना और कण्ठारके नीचे स्पर्श सहन न होनेके साथ ही साथ खाँसी ; श्लेष्मा रातमें प्रायः सूख जाता है,—सवेरे पतला और दो पहरके पहले पीले रंगका सरल बलगम निकलता है । जरायु-भ्रंश प्रवणता । रजः ;—असमयमें ही पैदा हो जाता है,—स्राव बहुत ज्यादा, बहुत दिनों तक स्थायी रहता है, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना और हाथ पैर ठण्डे । सामान्य उत्तेजनासे ही आर्त्तव बन्द हो जाता है, पर फिर पैदा हो जाता है (थोड़ा भी शरीर हिलानेपर—ऐम्ब्रा) । प्रदर,—स्राव दूधकी तरह, बहुत ज्यादा, इसके साथ ही, योनिमें जलन और खुजलाहट । स्त्री-पुरुष, दोनोंके ही जननेन्द्रिय-प्रदेशमें जलन और खुजली पैदा हो जाती है । पेशाब गाढ़ा, भूरा, बदबूदार ; उसमें सफेद रंगकी, तली जमती है ।

लक्षणावली ।

मन ।—शंकासे भरा या भय-युक्त चित्त ; रोगिनी हमेशा डरा करती है कि उसकी बुद्धि लोप हो जायगी ; उसे उन्माद रोग हो जायगा (ऐलियम सिपा ; ऐल्यूमिना ; ऐम्ब्रा ; कैना-इन, ऐक्टिया, आयोड, लैक-कैन सिफिलि) और लोग सब उसके चित्तकी यह विकलता लक्ष्य कर रहे हैं । किसी तरहका परिश्रम करनेकी उसे इच्छा नहीं होती । विषन्न चित्त और दुःखित भाव ; हमेशा ही उसे कोई अमंगल होनेका भय बना रहता है (ऐमोन-कार्ब, चिनिन-सल्फ, ऐक्टिया ; क्यूप्रम, लिलि-टाइग, सिपि, वेलि, वेरेट, डिजि) । हमेशा निराशाका भाव प्रकट करता है और मनमें सोचा करता है, कि उसका रोग आरोग्य न होगा ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—वायु सेवनके लिये टहलने या चलनेके समय (नैट्र-म्यू, नक्स, फास, पल्स, पोडो, सिपि), उसके साथही सबेरे

उसका बढ़ जाना—मिचली और वमन, (मिचलीके साथ=ऐमोन-कार्ब, ऐपिस-म्यू, आर्स, बैराई, काक्यु, मार्क, मस्कस, फास, पल्स, सिलि—वमनके साथ=लैके, नेट्र-सल्फ, ब्रोम, थिरिडि)। सरमें दर्द—सीढ़ीपर चढ़नेके समय, बोलनेके समय, चलनेके समय, गर्मीके दिनोंमें और सर्दीके दिनोंमें बढ़ता है। पुराना सरका दर्द—मस्तिष्कसे बहुत परिश्रमकी वजहसे, कसकर बाँधनेपर (आर्जेण्ट-नाई, बेल, एपिस, पल्स); आँख बन्द करनेपर (ब्राई, सिङ्को, जेल्सिया-सुटि); श्लेष्मा और पित्त वमनके बाद, सोनेपर (ऐम्ब्रा, फैल-फास, क्यूप्रम, हेलि, ब्राई, इग्ने, ओलियैन) और ठण्डे हाथसे मलनेपर (आर्स, साइमैक्स, पेरिस) घटता है। बड़े माथेवाले बच्चेके माथेसे नींदवाली दशामें इतना पसीना निकलता है कि उससे माथेकी तकिया या वस्त्र बहुत दूर तक भींज जाता है, माथेके पीछे और गर्दनसे बहुत ज्यादा पसीना निकलता है (माथेसे पसीना निकलना=ऐकी, बेल, ब्राई, कैमो, सिङ्को, सिना; कोलो, डिजि, ग्रैफ, गुयायेक, हिप, लिड, मार्क, सिपि, सिलि, वेरेट बगलसे=बोवि, सल्फ, थूजा; पीठसे=सिङ्को, चिनिन-सल्फ, लाइको, सिपी, गर्दनसे=बेल, क्लिमे, युफोर्बि)। नव-प्रसूताओंके केश झड़ जाते हैं (नेट्र-म्यूर, सिपि)। माथेमें और मूर्द्धादेशमें बहुत सर्दी मालूम होती है,—खोपड़ीमें ऐसा मालूम होता है मानो बरफ रखा हुआ है। (माथेमें ठण्डक मालूम होना=आर्नि—लोरो, फास, फाइटो, वैलि, सिपि, सल्फ, वेरेट); मूर्द्धादेशमें बरफकी तरह मालूम होना=आर्निका, आर्स, ऐगार, बेल, लोरो, अरम-म्यू, सल्फ, वेरेट); मूर्द्धादेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो आग निकल रही है (आर्स, ब्राई, कोलो, क्रोटन, क्युप्र, मार्क, ओलि-ऐन रनान, सैबाड, टैबाक)। माथेके अस्थि-संयोग-स्थान सब (Fontanelles) बहुत धीरे और विलम्बसे मिलते या भरते हैं, (कैल्के, फास, सिलि, सलफर) ललाटके स्थानपर भार-मालूम होना;—लिखने और पढ़नेपर बढ़ जाता है। भारी चीज़ उठानेकी वजहसे सरमें दर्द। माथेमें खुजली—नींद खुलनेपर वह बढ़ जाती है (बोवि, ग्रैफ; ओलियैन, रोडो, सिपि, स्टैफ); ऋतुके समय माथेमें रक्त-संचयकी अधिकता और उत्ताप मालूम होना।

आँख।—पलकें फूली और लाल, रातमें आँखें सट जाती हैं (पल्स, ग्रैफ, युफि); दिनमें पपड़ी से भर जाती हैं और जलन हो जाती है। ठण्डी—हवा लगनेसे ही आँखसे आँसू गिरने लगते हैं। सर्दी लगकर अश्रुनाली रुक जाती है। दृष्टि-पथ अन्धकारमय दिखाई देता है और इसी वजहसे चीजोंका

एक पार्श्व ही देखता है । (चीजोंका दाहिना भाग नहीं देख पाता = लिथिया-कार्ब; बायाँ आधा नहीं देख पाता है = लाइको) । पलक और आँखमें खुजलाहट (आँखमें खुजली = क्रियो, मार्क, नक्स, फेलैन, सिलिसिया, स्टैफ, सल्फ ; पलकोंमें खुजलाहट = नक्स, रास, रोडो-स्टैफ) । बहुतों दिनोंसे अकड़न फैली रहती है।

कान ।—बाएँ कानके सामनेवाला अंश फूला हुआ । छूनेसे ही उसमें दर्द मालूम होता है । कानमें उत्ताप मालूम होता है (आर्स, कैन्थ, क्रियो, सेङ्गिविन) । कोई खाई हुई चीज निगलनेमें कड़ाकसे आवाज होती है (मैङ्ग, मस्क, सिलिसिया, वैराट्रि, ऐसिड-नाई) । कोई तरहका खाद्य पदार्थ चिबानेके समय कानके छेदमें टपक (कैन, मैग-म्यू फास), सांय सांय शब्द (ग्रैफ, पेट्रो, सेल, ओलि-एन), गड़ गड़ शब्द (बेल, कास्टि, ग्रैफ, नक्स, पल्स, सल्फ) और कट कट शब्द (वैराट्रि, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यू, ऐसिड-नाई, पेट्रोल), पानीमें काम करनेकी वजहसे बहरापन (डालका); कानसे पीव गिरना (कार्लो-म्यू) । कर्णमूल ग्रन्थिका प्रदाह (Parotids) गांठ फूली (बेल, यदि प्रदाह अण्डकोषमें चला जाये = पल्स ; क्विनीन सेवनकी वजहसे मार्क-कोर) सविराम ज्वर रोकनेके कारण बहरापन ।

नाक ।—बार बार छींक (सिपा, साइक्लैम, सिना, गैम्बो, मार्क, नेट्र-म्यू, रास, रास-वे, सैबाड) और नाकके अगले भागमें दर्द और जखम । नाकसे बदबूदार गन्ध निकलती है (कार्बो-वे, कैमो, मार्क, ऐसिड-नाई, पोडो, पल्स, रास-टे, सिपि ; बालिकाओंके प्रथम यौवनागमनके समय = अरम, हायो, पल्स, सिपि, सल्फ) । पीनस (Ozœna),—रातमें नाकका छेद सूखा और रुका हुआ ; दिनमें स्राव होता है ; लगातार श्लेष्मा निकला करता है (नक्स, सैम्बू) । प्रतिबार जाड़ा गर्मीकी घटी बढ़ीके समय सर्दी हो जाती है (ब्राई, डालका, मैङ्गो, मार्क, नक्स-मस, फास रोडो, रास, सिलिसिया ; सल्फ, वेरेट) । नासार्बुद (Polypus) – नासारन्ध्रकी जड़में (थूजा; कैलि-बाई ऐसिड-नाई, टियुक्रि ; सर-दर्दके साथ—सैङ्गीयु ; नासा-मूल (नाककी जड़) चिपक जाती है, ऐसा मालूम होता है और बदबू मालूम होती है—कैडमि, सल्फ ; सहजमें ही रक्तस्राव होता है = फास) । सर्दी होनेपर बदबूदार पीले रंगका श्लेष्मा निकलता है (पल्स) ; सवेरे नाकसे खूनका स्राव (ब्राई ; जमा हुआ रक्त = नक्स ; गाढ़ा, लसदार और खींचनेपर रबरकी तरह बढ़ने वाला रक्त = क्रोकस ; जभी तभी निकलता है और बहुत ज्यादा = फास) ।

मुखमण्डल।—सवेरे ऊपरी ओंठ फूल जाते हैं, निचले जबड़ेके नीचेवाली हनुतलस्थ (Submaxillary) ग्रन्थियोंका फूलना (कैमो, सिष्टस, मार्क, सल्फ), चेहरा मलिन, आँखें गड़हेमें धँसी और दोनों आँखों के चारों ओर काला घेरा ; दुधिया पपड़ी जमती है (Crust-lactea= वायोला-ट्राई, बिद्दा-माई, सिपि, लाइको).—बहुत खुजलानेवाले और पानीसे धोनेपर उनमें जलन पैदा हो जाती है । चिबुक कुटकुटाता है !

मुखविवर।—दाँतोंसे बदबू निकलती है। दाँतपर दाँत रगड़नेकी इच्छा होती है,—दाँत कटकटाते हैं—जैसा जाड़ेकी कपकपी समय होता है। ऋतुस्राव होनेके बाद ही दाँतमें दर्द पैदा हो जाता है ; (ब्राई, कैमो, फास) जाड़ा या ठण्डी हवा लगनेपर तकलीफ होती है, सहन नहीं होती और इसी वजहसे दाँतमें दर्द पैदा हो जाता है। कभी कभी मुँह खट्टा मालूम होता है और मुँहमें खट्टा पानी भर आता है। बच्चोंके दाँत निकलनेमें बहुत देर होती है (कैल्के-फास, सिलि), जीभपर सफेद लेप चढ़ा रहता है ; जीभके अगले भागमें बहुत जलन मालम होती है=मानो उनमें जखम हो गये हैं,—गर्म चीजें खानेपर दर्द बढ़ जाता है, बड़ी कठिनतासे मुँहसे साफ बात निकलती है। दाँत निकलनेके समय मुँहमें जखम (बीर, कैमो)।

गलेके भीतर।—कण्ठनालीमें दर्द,—मानो भीतर फूल गया है,—दर्द कान तक फैल जाता है, निकालनेके समय गलेके भीतर सुई बेधनेकी तरह मालूम होना। गलकोष (Tonsils) और हनुके नीचेवाली ग्रन्थि फूलकर मुर्गेके अण्डेकी तरह हो जाती है,—चबानेके समय तेज खींचन और छूनेके समय सुई बेधनेकी तरह दर्द हुआ करता है। गलगण्ड रोग (Goitre) —(आयोड, लेपिस, ऐल)।

पाकाशय।—बीमारीकी अवस्थामें और आरोग्य होनेके समय भी रोगी आधा सिझा अण्डा खानेके लिये *अत्यन्त आग्रह प्रकाश करता है* ; ऐसी चीजें खानेकी इच्छा करता है जो न पचा सके (ऐलू). ; मांससे एकदम अरुचि (ग्रैफ, सल्फ ; सिझाये हुए मांससे अरुचि=बेल, ऐसिड-नाई,—रोटीसे अरुचि=नेट्र-म्यूर ; अण्डेसे अरुचि=फेर ; मछलीसे अरुचि=ग्रैफ ; माताका दूध पीनेसे अरुचि=सिलिसि ; मिष्टान्नसे अरुचि =बेराट्रं, कार्ष्टि, ग्रैफ, ऐसिड-नाई ; धूम्रपानसे अरुचि=कैक्ट, काक्यु, इग्न, नक्स) समूची अन्नवहानाली खट्टी हो जाती है (हिप, रियुम), खट्टी डकार ; खट्टी गन्धकी

वमन, खट्टा मल, शरीरसे खट्टी गन्ध निकलती है=हिप, रियुम; पाकस्थलीका ऊपरी अंश औंधाएँ हुए ढकनेकी तरह ऊँचा हो जाता है और दबानेपर दर्द मालूम होता है। दूध बिलकुल सहन नहीं होता (आलि, हिपर)। ठीक ठीक भोजनके बाद दबानेकी तरह दर्द,—मानो पाकस्थलीमें कोई भारी पदार्थ दबाया हुआ रखा है,—शरीरको हिलानेसे बढ़ना और चित्त होकर स्थिर भावसे सोनेपर घटता है। गर्म चीजें खानेसे अरुचि (लाइको; गर्म पतली चीजें पीनेकी इच्छा=चेल, क्यूप्र), राक्षसी भूख (आयोड, ऐब्रोट, वेसिलाइन)। अरुचि पर खानेसे चीजें अच्छी लगती हैं। खाई हुई चीजकी गन्धकी डकार; बहुत प्यास,—ठण्ढी चीजें पीनेकी इच्छा (फास, वेरेट)। भोजनके समय पाकाशयके लक्षण सब बढ़ जाते हैं। भोजनके बाद कण्ठ तक जलन होती है, रातके समय खट्टी चीजोंकी कै (फास)

अन्त्राशय।—कमरमें कसकर कपड़ा पहनना बिलकुल ही सहन नहीं होता। (ऐमोन-म्यू, ब्राई कार्बो-वे, कास्टि, काफि, हिपर, क्रियो, लैके, लाई, नक्स, स्पञ्जि, सल्फ,); उदरके ऊपरी प्रदेशमें पेट फूल उठता है—वायु इकट्ठा होती है (अरम, हिपर, इपि; ऐण्टि-टार्ट)। यकृत प्रदेशमें दबाव मालूम होना,—प्रत्येक कदम चलनेपर या चलनेके समय, सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है,—माथा झुकानेपर दर्द मालूम होता है। आध्मान वायु आँतोंके खास अंशमें जमा रह जाता है (कैल्क, कार्बो-ऐन, आयोड, कैलि-कार्ब, लाई, नेट्र-म्यू, नाइट्रम, ऐसिड-नाई,नक्स, फास, प्रूनस, हाइपिरिक, सल्फ)। उदराध्मान—पेट बहुत फूला, हुआ और कड़ा हो जाता है (नक्स, मस, कार्बो-वे, ऐसिड-कार्बोलिक, कैमो, लाई, लैके, रैफेनस, कैल्के-आयोड) मध्यान्त्र और पुट्ठेकी (Inguinal) ग्रन्थि सब फूल जाती हैं और उसमें दर्द हो जाता है (आयोड, वेसिलाइन, मार्क)। पिताश्मरी (Gall-stones) निकलनेके समय बेहद तकलीफ होती है (बार्ब, डायस्को; प्रतिषेधक=सिङ्कोना)। नाभिदेशकी आँतोंका हट जाना (Umbilical Hernia) स्थूलकाय बच्चोंकी। अन्त्रवेष्ट या अन्त्रावरक झिल्लीका प्रदाह (Peritonitis),—शीतल प्रयोगसे घटना।

मलान्त्र और मल।—कृमिकी वजहसे मलद्वारमें खुजली (ऐको, ऐसेट, सिङ्को, सिना, क्रोटन, कुप्रम, ऐसेट, फेर, इग्ने, मेग-सल्फ, मार्क,

स्याद्रजि, स्टैन, सल्फ, टियुक्रि,),— सोनेके समयसे लेकर कई घण्टे तक बहुत तकलीफ हुआ करती है। अर्श—चलनेके समय मसा बाहर निकल पड़ता है और उसमें दर्द होता है,—बैठनेपर घटता है। पतला पाखाना होनेके समय भी बहुत दर्द होता है; अर्शसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव हुआ करता है। ऐसा भाव मानो अतिसार या पतला पाखाना होगा;—शामके समय बढ़ना, मल काठिन्य—मल कड़ा और बड़ा तथा गांठ गांठ। *कब्जियतवाली अवस्थामें* सभी लक्षण घट जाते हैं। मल इतना कड़ा होता है कि अँगुलीका सहारा लगाये बिना बाहर नहीं निकलता (ऐल्यू, ऐलो, सैलिक, सेलिन, सिफि, सिलिसिया)। मल पहले कड़ा इसके बाद लसदार कादेकी तरह और इसके बाद या अन्तमें पतला पाखाना होता है,—*अर्थात क्रमशः अत्यन्त कड़े मलके* बाद पतला पाखाना होने लगता है (सिङ्को)। उदरामय,—पतला, सड़े अण्डेकी तरह उसमें बदबू, पीला धुमैले रंगका या कीचड़की तरह मल मिला हुआ; इसके अलावा कभी कभी कुछ सफेद आभा लिये भी होता है; पानीकी तरह; तीसरे पहर बढ़ जाता है; *प्रायः अम्लगन्ध युक्त*, अजीर्ण, 'खाये हुए पदार्थ मिला। दाँत निकलनेके साथ बच्चोंको प्रायः खड़ियाकी तरह सफेद गांठभरा पाखाना होना।

पेशाब।—पेशाबके समय मूत्रनालीमें जलन मालूम होती है। बार बार पेशाब होता है। पेशाब घोर लाल या भूरा, बदबूदार और खट्टी गन्ध मिला, बहुत ज्यादा तली, कभी सफेद आभा लिये या कभी ईंटके चूरकी तरह, मूलस्थली उत्तेजित होकर अर्थात सामान्य कारणसे स्नायु आदिकी क्रियाकी अधिकताकी वजहसे विकार पैदा होता है; भीजी जमीनपर बैठना (ऐरेमिया); बहुत देरतक पानीमें खड़े होने या कीचड़ लेकर काम करनेके कारण पेशाब बन्द हो जाता है या पेशाब नष्ट हो जाता है।

पुं-जननेंद्रिय।—रातके २ बजनेके समय प्रबल रमणेच्छा। थकाड़न, रातमें वीर्यपात हो जाता है और इसी कारणसे शरीर और मन दोनों ही सुस्त हो पड़ते हैं, रमणके समय बहुत जल्दी वीर्यक्षय हो जाता है। रमणके बाद शरीर दुर्बल हो पड़ता है और सब स्नायुओंमें बहुत उत्तेजना पैदा हो जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्थूलकाया (मोटी-थुलथुली) रक्त प्रधान बालिकाएँ,—उनकी उमरकी उपेक्षा उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग और अन्यान्य स्त्री-

लक्षण आदि बहुत शीघ्र पूर्णताको प्राप्त होते हैं ; उन्हें ऋतु-स्राव भी बहुत जल्दी होने लगता है और बहुत दिनोंतक हुआ करता है और कई वर्ष बाद ही उनको रजोलोप, रक्त-की कमी या रक्ताल्पता (anæmia) या हरित् रोग (Chlorosis) रोग हो जाते हैं और जब ऋतु होता है तब बहुत थोड़ा हुआ करता है। वयस्था रमणियाँ,—बहुत जल्दी जल्दी ऋतुमती हो जाया करती हैं और उन्हें रज-स्राव बहुत अधिक हुआ करता है। उनके दोनों पैर हमेशा तर रहते हैं,—मानो गीला मोजा पहने हुए हों ; रोगीको सोनेके समय हमेशा जाड़ा मालूम हुआ करता है (सिहरावनका भाव)। थोड़ी सी मानसिक उत्तेजनाका कारण पैदा होते ही फिर ऋतु-स्राव होने लगता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है, (बोरेक्स, ब्राई, कैल्क, कास्टि, सिङ्को, क्रोक, हायो, इग्ने, लाइको, मैग-म्यू, मार्क, नैट्र-म्यू, फास, प्लैट, सैबाई, सिकेल, सिपि, सेलिन, सल्फ, ऐसिड-सल्फ, वैसिलाइन, वेरेट) ; रजोलोप या अवरुद्ध—ऐको, आर्स, कास्टि, कैमो, सिङ्को, कक्यु, कोना, क्युप्र, ग्रैफ, आयोड, काली-कार्ब, लाइको, मार्क, नैट्र-म्यू नक्स-मस, ओपि, प्लैट, पल्स, रोडो, सैबा, सिपि सिलिसिया ; स्टैफ, स्ट्रैम, सल्फ, वैलि, वेरेट, जिङ्क)। बहुत देरतक पानीमें रहनेकी वजहसे रजोलोप (डालका)। ऋतुके समय जरायुमें कतरनेकी तरह दर्द (म्युरेक्स, पल्स) ; प्रदर,—दूधकी तरह स्राव (पलस, ऐसिड-सल्फ, कोना, फास, सैबाई, सिपि, सिलिसिया)। इसके साथ ही जलन और खुजली। अल्पवयस्का युवतियोंको ऋतुके पहले और बाद योनिमें जलन और खुजली होती है। रमणेच्छा बहुत प्रबल हो जाती है वह जल्दी जल्दी गर्भवती भी होती हैं (मार्क, नैट्र-कार्ब) ; स्तन गर्म और फूले रहते हैं (बेल, ब्राई, फाइटो, कोना), स्तनका दूध बहुत ज्यादा होता है, बच्चा पीना नहीं चाहता (बोर, रास,)। ऋतु होनेके पहले दोनों स्तनोंमें दर्द हो जाता है (कोना) और वे फूल जाते हैं। स्तनमें दूध कम पैदा होता है (ऐसा, रोगिनी स्त्रियोंके लिये = सिलिसिया ; यक्ष्मा प्रवण ; धातु-औरतोंका = फास),—श्लेष्मा प्रधान रमणियोंका, प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia) बहुत अधिक दिन स्थायी होता है (सिकेल),—स्राव दूधकी तरह (लाल ,—रास, सिके, बदबूदार = बेल, कार्बो-ऐन, सिकेल, सल्फ ; रक्ताम्बकी तरह या रसकी तरह = कार्बो ऐन ; रुका हुआ या बहुत थोड़ा = कोलो, हायो, नक्स, प्लैट, सिकेल, विरेट ; तेज गन्ध = क्रोक, हिप, पल्स, रास,

सिकेल)। योनिके बाहरी स्थानपर बहुत अधिक पसीनेका स्राव (ऐसिड-फास, कैलेड, कोरैल, मार्क, सिपि, थूजा; मुष्कत्वकमें=डेफनी, इग्ने, नैट्र-सल्फ, रोडो, सिपि, सिलि, थूजा)। बहुत अधिक आर्त्तव-स्रावके साथ बन्ध्यात्व (मार्क, नैट्र-म्यूर, सल्फ, एसिड-सल्फ—देरसे ऋतुके साथ=कास्टि, ग्रेफ; रुके हुए रजके साथ=कोना; बहुत थोड़ा स्राव होनेवाले ऋतुके साथ=एमोन कार्ब; साधारणतः=अरम-म्यू, नैट्र, बोर) जरायुमें झिल्ली भरा अर्बुद (Polypus=थूजा, टियु, फास; कण्ठ-ग्रन्थि बढ़नेवाली औरतोंका=थाइरायडिन, सिकेल)।

श्वासयंत्र।—लम्बी आकृति, बहुत मोटी नहीं और जल्दी-जल्दी बढ़नेवाले युवकोंकी फेफड़ेकी बीमारी—दाहिने फेफड़ेके ऊपरी तृतीयांश पर साधारणतः रोगका आक्रमण होता है (आर्स; बायां ऊपरी आधा अंश=माईरिका, सल्फ)। दो एक सीढ़ी चढ़नेसे ही, श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है (ऐमोन-कार्ब, आर्स,ऐङ्गस, बोर, लिड, हायो, मार्क, ऐसिड-नाई, रैट, रियुटा, सेना, नाइट्रम, आयोड, नक्स, ओलि-ऐनि, स्टैन)। स्वरभङ्ग—सवेरेके वक्त स्वरभङ्ग बढ़ जाता है,—बोल नहीं सकता (कास्टि, युपेटोर; सन्ध्या-समय वृद्धि=कार्बो-वे, फास)। घरमें रहनेके समय निर्मल वायु सेवनकी आकांक्षा पैदा हो जाती है,—क्योंकि उससे उसमें फुर्ती आती है और ताकत पैदा हो जाती है (पल्स, सल्फ)। खाँसी—पहली नींदके बाद,—कण्ठमें खुजलाहटकी वजहसे; ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें या स्वरनालीमें धूल भर गयी है; यचोस्थि (Sternum) के बीचमें बराबर खुजली मालूम होती है और इसी वजहसे खाँसी आती है,—भोजनके समय और उसके बाद भी खाँसी आती है; खाँसी पहले सूखी आती है,बादमें बहुत ज्यादा नमकीन स्वादका बलगम निकलता है; ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो स्वरनालीमें कुछ छिल गया है; वक्षमें घड़ घड़ शब्द; सवेरे पीले रङ्गका श्लेष्मा या कफ निकलता है। वक्षस्थलमें बहुत अधिक दर्द, समूचे वक्षःस्थलमें स्पर्श सहन नहीं होता और साँस लेने तथा छोड़नेके समय दर्द होता है। वक्षःस्थलके बायें ओर सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। कलेजा धड़कना,—सन्ध्याके समय और शय्यापर शयन करनेके समय और नींद आनेके पहले और भोजनके बाद (कैम्फो, लाई, ऐसिड-नाई)। इसके साथ ही चिन्ता और उत्कण्ठा।

गर्दन और कराठ।—गलेकी ग्रन्थि फूली और कड़ी (आयोड कोना, बेसिलाइन)। पीठमें बहुत दर्द,—मानो मोच खा गयी है,—भारी चीज उठानेकी वजहसे (आर्निका)—उठनेमें बहुत तकलीफ होती है। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें बहुत दर्द,—हिलनेपर सांस रुकनेकी तैयारी हो जाती है। कमरमें इतना दर्द कि बैठ जानेपर उठनेमें बहुत तकलीफ होती है। ग्रीवापृष्ठ (Nape of the neck) में बहुत तकलीफ होती है (ऐको; गर्दन घूमी रहती है=ऐक्टिया,— गर्दन सामनेकी ओर और माथेके पीछेकी ओर घूमी हुई= ऐण्टि-टार्ट; दर्द और अकड़न मालूम होना=कोलचि; ठण्डा या शीत लगकर होनेपर और इस तरहके दर्दके साथ मानो माथा टेढ़ा कर सोया है=डालका; अम्बल पानीमें बढ़ना=रोडो; दाहिनी ओर दर्द और अकड़न=वेल)।

प्रत्यङ्ग आदि।—खाई हुई चीजके पाचनकी वजहसे रस आदिका असम विभाग या नियमित विभागके अभावकी वजहसे अस्थि-गठन शक्तिमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है और इसीलिये बच्चोंके खड़े होने या चलनेमें देर होती है; बच्चा बिलकुल ही चलनेकी चेष्टा नहीं करता या चलनेकी इच्छा भी नहीं करता। सारे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें कमजोरी। हड्डीका टेढ़ापन,—विशेषकर मेरुदण्ड और हाथ पैरकी दीर्घास्थिमें;—हड्डीके अगले भाग घूमे हुए और टेढ़े आकार में। पसीना बहनेकी वजहसे पैरके तलवेमें जख्म हो जाता है, तलवेमें छाला हो जाता है और बदबूदार पसीना होता है (बैराइ, ग्रैफ, कोली-कार्ब, मार्क, सिलिशिया, सैनिक्यूला, सोराइन); शरीरके अंश विशेषसे पसीना निकलता है: जैसे माथा, मूर्द्धादेश, गर्दनकी पीठ, वक्षःस्थल, जननेन्द्रिय प्रदेश, हनु, जानु और पदतल (सिपि)। ठण्डा लगनेसे वातकी तरह दर्द मालूम होता है। हाथ दबाकर सोनेपर झुनझुनी आ जाती है। सन्ध्याके बाद बैठनेके समय दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं। रातमें ३ बजनेके समय पैरकी पोटलीकी पेशीमें (Calves=कैल्फ्रो), जानुके पीछेके गह्वरमें; पैर पसारनेके समय और बांये पैरके तलवे और पैरकी अंगुलीमें ऐंठन होती है। दोनों पैर हमेशा तर मालूम होते हैं। पैरके तलवेमें जलन (ऐम्ब्रा, ऐनाक, लेके, मैङ्ग, फास, ऐसिड-फास, सेङ्गियु, सिपि, सिलिया स्टेन, सलफर)। हाथमें पसीना (कोना, नेट्र-म्यू, सलफर, थूजा)। रमणके बाद जानुके ऊपर और नीचेका अंश कमजोर मालूम होता है और कांपा करता है। चलनेके समय बहुत थकावट मालूम होती है। रोगिनी सीढ़ी नहीं चढ़ सकती। अपस्मार—

आक्रमणके पहले ऐसा मालूम होता है मानो बाहुके निचले भागसे ऊपरकी ओर या ऊपरके उर्द्ध-देशसे तलपेटके बीच होकर पैरतक च्यूंटीकी तरह "सरसर" न जाने क्या चला जाता है। पूर्णिमाके समय और जन और दिसम्बरके अन्तिम भागमें और उत्तरायण और दक्षिणायणके समय बढ़ जाता है।

त्वचा।—शरीरके अंश विशेष अर्थात मस्तक, उदर और दोनों पैर बहुत ठण्डे मालूम होते हैं (केलि-बाई); ठण्डी हवा बिल्कुल नहीं सहन होती, मानो ठण्डी हवा उनका शरीर भेदकर एकदम अन्तरतम प्रदेश में प्रवेश कर रही है, थोड़ी भी सर्दी लगनेसे बढ़ जाता है। जखम पैदा होनेवाली देह,—सामान्य कारणसे ही शरीरमें जखम पैदा हो जाता है। थोड़ी सी चोट लगकर यदि जखम पैदा हो जाता है तो वह जल्दी अच्छा नहीं होता। आमवात—ठण्डी हवामें अच्छा रहता है (एपिस, नैट्र-म्य) दाद (वेसिलाइन, टेलर, सिपि)। मुखमण्डल और हाथमें मसे निकल आते हैं। (थूजा, मिडोराइन, ऐसिड-नाई ; हाथके मसे=केलि-म्यूर ; बाहु, हाथ, पलक और मुखमण्डलमें=कास्टि ; तलहथीमें=नैट्र-म्यू)

निद्रा।—नाना प्रकारकी चिन्ताओंकी वजहसे नींद न आना (काफि)। आँख खोलनेपर भयंकर चीजें सब दिखाई देती हैं। प्रत्येक शब्द पर चौंक उठता है। संध्याके आरम्भमें नींद आती है। रातमें बार बार नींद खुलती है।

ज्वर।—दो पहरमें और दो बजनेके समय जाड़ा आरम्भ होता है। शीतावस्थामें प्यास रहती है। बार बार उत्ताप पैदा हो जाता है और इसके साथ ही कलेजा काँपता है। तापके समय प्यास नहीं रहती। उत्तापके बाद फिर शीत पैदा हो जाता है और हाथ सर्द मालूम होता है, उत्तापके समय शरीरपर कपड़ा नहीं रखता। बदन गर्म पर भीतर शीत रहता है। सन्ध्याके समय पसीनेवाली अवस्थामें प्यास नहीं रहती। सवेरे पसीना निकलता है। नाड़ी पुष्ट और तेज रहती है। शरीरके एक एक अंगमें पसीना होता है (कैमो, सिङ्को, नक्स, स्ट्रैम, थूजा)। रातके समय पसीना,—तीन बजने बाद—खासकर माथेमें, गलेमें और वक्षमें, ऋतुके समय रातमें उत्ताप और बेचैनी मालूम होती है। जीभपर सफेद लेप चढ़ा रहता है। ज्वर एकदम नहीं छूट जाता।

सम्बन्ध ।—बेलेडोना। आर्योंके साथ—विषम। लाइकोपोडियम, नक्सवोमिका, फास्फोरस और सिलीसियाके पहले कैल्केरियासे बहुत अधिक लाभ होता है। महात्मा हनिमैनके मतसे नाइट्रिक एसिड और सलफरके पहले कैल्केरियाका व्यवहार अनुचित है, इससे दूसरे दूसरे उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। बच्चोंको बार बार सेवन कराया जा सकता है, पर वृद्धोंको बार बार न देना चाहिये, खासकर यदि पहली खुराकमें ही लाभ हुआ हो।

वृद्धि ।—ठण्डी हवासे, जलीय हवासे, ठण्डे पानीसे नहानेपर, सवेरे और पूर्णिमाके समय, आधी रातके बाद, नींद खुल जानेपर, वस्त्र आदिके भार से, वायु-सेवनके लिये टहलते समय, भोजनके बाद भारी चीज उठानेपर, मानसिक परिश्रमसे, झुकनेपर और रोशनीमें।

घटना ।—सूखी हवा और रोगवाली जगह दबाकर सोनेपर (ब्राई, पल्स)। अन्धकारमें, चित्त होकर सोनेपर, सोनेके बाद, मलनेसे, खुजलानेपर और उठनेपर।

दोषघ्न ।—कैम्फर, इपिका, नाइट्रिक-ऐसिड, नक्स, सलफर।

तुलनीय ।—ऐमोन-म्यूर (वक्षका कसा भाव); आर्निका (जोरसे खींचन पड़ना); आर्सेनिक (मध्यान्त्रकी ग्रन्थिका फूलना); रस रक्तका क्षय—चायना; बाईं तालुमूल ग्रन्थि (बैराइटा); मिचली (पल्स); श्वेत-प्रदर (ग्रेफाइ, सल्फ); पाकाशयमें अम्ल (लाइकोपो, सलफर, पल्स); बहुत रज (बेला); अन्धकारमें भय (ऐमोन-म्यूर; स्ट्रैमो); दूध कै करना (इथूजा; ऐण्टि-क्रूड); मृगी (कूप्रम); मूर्द्धादेशमें ताप (सल्फ); नाकका अर्बुद (टियुक्रियम) इत्यादि।

शक्ति ।—६, ३०, २०० शततमिक और इसका ऊँचा क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—६० दिन।

कल्कारया कास्टिका

(CALCAREA CAUSTICA)

दूसरा नाम ।—ऐकोया कैलसिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—उबाले हुए पानीमें चूना मिलाकर और उसके बाद उसमें सुरासार मिलाकर तली जमायी जाती है, और वही दवा ले ली जाती है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—पीठमें दर्द; पिकचंचु-प्रदेशमें दर्द; कादर या गट्ठे; एँड़ीमें दर्द; स्वरभङ्ग, जबड़ेमें दर्द; मुँहकी हड्डीमें दर्द; स्नायुशूल; पक्षाघात; वात या आमवात; प्लीहामें विकार; ग्रीवा-स्तम्भ या गर्दन अकड़ना; फीतेकी तरह क्रमि; दन्तशूल इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—सरमें दर्द, सरमें चक्कर आना और पीठमें, गर्दन, हनु और मुँहके पश्चात् भागमें तथा दाँतमें दर्द पर इसकी प्रधान क्रिया होती है। नीचे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं;—कोई विषय सोचनेमें रोगीको बहुत चेष्टा करनी पड़ती है। मस्तिष्ककी जड़ता; सरमें चक्कर आना,—ऐसा मालूम होता है, मानो एक मकान घूम रहा है। शरीरके विभिन्न अंगमें तेज नोकीली सलाई बेधने या फाड़नेकी तरह या टपककी तरह दर्द। दाहिनी आँखमें दर्द, मानो उसमें कुछ गिर गया है। आँखोंमें जलन और फटनेकी तरह दर्द। दाहिनी गण्डास्थि और दाहिनी हनु-सन्धिमें फाड़ने या उखाड़नेकी तरह दर्द। प्रत्येक रातमें दो बजनेके समय दाँतमें दर्द होता है, दाँत सब हिला करते हैं और लम्बे मालूम होते हैं। कण्ठमें कफ-सञ्चय, जलन और मानो मछलीकी हड्डी गड़ गयी है, पाकस्थलीमें जलन ऐसा मालूम होना। पट्ट-क्रमि; कण्ठमें दर्दके साथ स्वरभङ्ग; वायुनली में ऐसा मालूम होता है मानो त्वचा चय हो गयी है और इसके साथ ही खाँसी, छातीमें पतली सलाई बेधनेकी तरह दर्द, समूची पीठमें और खासकर पीठके निचले अंगमें अकड़न और उखाड़नेकी तरह दर्द मालूम होना। दाहिने कन्धेसे बाहुके अग्रभाग तक एक तरहका दर्द मालूम होना; बाएँ गुल्फकी पीछेवाले वृहत कण्डारमें और बायें गुल्फमें फाड़नेकी तरह दर्द। गट्ठे

(Corns) में सुई वेधनेकी तरह दर्द। दोनों पैर पानीमें धोनेके बाद हाथ तथा पैरोंमें दर्द मालूम होना, अन्धान्त्र-प्रदेशमें नया प्रदाह,—उपाङ्ग प्रदाह (Appendicitis) = क्षय करनेवाले जखममें परिणत हुए बवासीरमें भयानक दर्द (लार्का)।

लक्षणावली।

मस्तिष्क।—मस्तिष्ककी जड़ता (बेल, नक्स, ओपि)। सरमें चक्कर आना—मानो समूचा मकान ही चक्कर खा रहा है (आर्स, ऐसा, बेल, ब्राई, साइक्यू, लाई, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, फास, वेलि, वेरेट); मानो वह चौकीसे गिर पड़ेगा। सर झुकानेसे ही भयानक दर्द होता है, मानो माथा पृथ्वीके आकर्षणके अनुसार झुका जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो कोई केश पकड़कर नीचेकी ओर खींच रहा है (ऐको, ऐल्यू, कैन्थ, सिङ्को, इग्नि, रास, सेलिन)।

आँख।—सवेरे नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो आँखमें एक कांटा गड़ रहा है, रोगीको बाध्य होकर आँख मलनी पड़ती है; आँख खोल नहीं सकता। घरके बाहरकी हवा लगते ही आँखसे आँसू गिरने लगता है (फेलैन, फास, पल्स; रियुम; रियुटा; सैबाड; सिपिया; सिलिसिया; सल्फ, थूजा,) पलकोंको जोड़नेवाली त्वचा लाल हो जाती है। ऐसा दर्द होता है, मानो आँखका गोला बाहर निकल पड़ेगा।

कान।—सुई वेधनेकी तरह दर्द, कर्णविवरको भेदकर वह मस्तिष्कमें प्रवेश करता है। कानमें ढं ढं, गड़ गड़, शब्द सुन पड़ता है (कैल्के, कास्टि, बेल, कोना, क्रियो ग्रैफ, लाइको, नेट्र-म्यू, नक्स, पेट्रो, पल्स, सिलीसिया, स्पाइजि, सल्फ,)।

श्वास-यंत्र।—गलेमें दर्दके साथ स्वरभङ्ग (कास्टि, कार्बो-वेज, फास,—बिना दर्दका = कैल्के-कार्ब)। छातीमें सुई वेधनेकी तरह दर्द; ऐसा मालूम हो कि गलेकी त्वचा क्षय हो गयी है और उसके साथ ही खाँसी, (ऐको, ब्राई, कार्बो-एनि, केली-कार्ब, लेके, नाइट्रम; स्किला, सल्फ, एक्टिया-रेस) और श्लेष्मा तथा रक्त-भरा बलगम निकलता है। (ऐल्यू, ऐमोन-कार्ब, बेल, फेर-एसेट, केलि-कार्ब, नेट्र-म्यू, नाइट्रम, साइलिसिया)। वक्षोस्थिके बाईं ओर सुई वेधनेकी तरह दर्द (एमोनियम, एमोन-कार्ब, आयोड,

लैकटियुका, फास, स्टैन, सल्फ, वैल, कैलि-कार्ब, ओलि-ऐन, सेनेगा)—छठे और सातवें पंजरेके बीचवाले प्रदेशमें दर्द।

गर्दन और पीठ।—गर्दन अकड़ी हुई, बैठनेके समय दोनों पृष्ठ-फलकसे लेकर कमरतक तेज़ दर्द मालूम होता है। ८ बजे रातके समय दोनों पृष्ठ फलकोंमें (Scapulæ) सुन्न जैसा मालूम होता है। दोनों पृष्ठफलकोंके बीचके स्थानमें वातकी वजहसे दर्द और सांस छोड़नेमें सुई, बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है और इस स्थानसे वक्षास्थितक (Sternum) ऐसा मालूम होता है मानो किसीने दबा रखा है, नींद खुलनेके समय कमरमें बहुत दर्द होता है पर जरा हिलने-डोलनेसे ही घट जाता है (मार्क, सलफर, रास; कड़ी शय्यापर चित्त होकर सोनेसे आराम मालूम होता है=नेट्र-म्यू) समूची पीठमें और मेरुपुच्छमें छेदनेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ पैर कमजोर और कांपते हुए (बाहु=ऐगार कैल्के, कास्टि, आयोड, लैके, फास, स्टैम, सल्फ, टैबाक, ऐण्टि-टार्ट, वैलि, जङ्क; दोनो पैर=बेराइ, साइक्यू, कोलो, प्लैट, पल्स, रियुटा),—बैठनेके समय बढ़ना। हाथ-पैर आदिमें स्थान परिवर्त्तन करनेवाला दर्द, (पल्स, कैलि-बाई, डेफनी, लैक्टियु, मैङ्गो, मिफाइट, नक्स-मस, प्रूम)। दाहिना बाहु इतना सुन्न हो जाता है कि उठाया नहीं जाता (ऐम्ब्रा; कार्बो-ऐन; काकु, क्रोक, जिनसेङ्ग; नोरो, लाई, रास रेड, सिलिशिया); दोनो बाहुओंको झुलानेपर आराम मालूम होता है (कैल्के-कार्ब); दाहिने कन्धेसे बाहुके अग्रभाग तक उखाड़नेकी तरह दर्द रहता है।

त्वचा।—बहुत खुजलाता है, और कुटकुटी होती है—खासकर गर्दन और पीठमें। लालीसे घिरी छोटी फुन्सियां सब रसभरी हो जाती हैं।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कैल्के-आर्स्ट्रेयेरम; बेलेडोना, कैमो, रास: मार्क।

तुलनीय।—कैल्केरिया, रासटक्स, (सन्धि-वेदना); मेजे, मैग-कार्ब (मुंहकी हड्डीमें दर्द); वेलेरि (एंड़ीमें दर्द); सिपिया (कमरमें दर्द); हिपर, नाइट्रिक (ऐसा मालूम होना मानो गलेमें कांटा अड़ा है)।

शक्ति।—३री शततमिकसे ३० शततमिक क्रम तक साधारणतः व्यवहृत होता है।

कैल्केरिया क्लोरिनेटा

(CALCAREA CHLORINATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—फोड़े और विस्फोटकमें इसका व्यवहार होता है ।

कैल्केरिया फ्लुयोरेटा ।

(CALCAREA FLUORATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—लक्षणके अनुसार प्रयोग करनेपर नीचे लिखे रोगोंमें फायदा होता है । :—ग्रन्थियोंका बढ़ना ; धमनीमें अर्बुद ; अस्थि-विकार ; स्तनकी ग्रन्थिमें कड़ापन ; रोहा ; सर्दी ; सर्दीकी वजहसे जखम ; खांसी ; अस्थिका बढ़ना ; उदराध्मान (पेट-फूलना) ; ग्रन्थियोंमें कड़ापन ; रक्तोत्कास (खूनमिली खाँसी) ; दादकी तरह उद्भेद ; सन्धियोंमें खट खट आवाज ; यकृतकी बीमारी ; कमरमें दर्द ; पूतिनस्य (नकसीर) ; पेशाब करनेके समयके उपसर्ग ; चोट ; उपदंश ; शोथ ; भगन्दर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह दवा डा० सुसलरकी बहुत ही प्रिय है । ऐसि-फ्लुओरिक और साइलिसियाके एकत्र होनेपर बहुत कुछ कैल्केरिया-फ्लुओरेटाकी तरह ही हो जाता है । इसका प्रधान आधिपत्य है, ग्रन्थि और अस्थियोंपर, गांठें फूलीं और लोहेकी तरह कड़ी हो जाती हैं ; शिराएँ फूल जाती हैं और देखनेमें डोरीकी तरह मालूम होती हैं और हड्डियोंके निर्माणमें विकारकी वजहसे अस्थिमय अर्बुदका उत्पन्न होना आरम्भ हो जाता है और हड्डियां सड़ने लगती हैं । रोगवाली जगह या सभी ग्रन्थियोंमें पीब पैदा हो जानेका लक्षण दिखाई देता है । कभी कभी आँखोंपर भी इसकी क्रिया होती है और आँखोंमें रोहा पड़ता है या मोतियाबिन्दु हो जाता है ।

लक्षणावली।

मन।—बहुत विषाद-भरा; वृथा ही आर्थिक हानि होनेका भय प्रकट करता है।

मस्तक।—नये पैदा हुए बच्चेके माथेके पार्श्वदेशमें लाल रंगका रक्तार्बुद पैदा हो जाता है (फास, थार्मो-ऐन, सिलिशिया)। मूर्धादेशमें कड़ी या अस्थिमय बतौड़ी या अर्बुद पैदा हो जाता है। मूर्धा-स्थानका जखम,—उसके बगलका भाग गड्ढेकी तरह कड़ा। माथेमें काट काट शब्द (बैराई, मस्कस, ऐसिड-नाई)।

कान।—कर्ण-पटह पर चूनेकी तरह चूर पैदा हो जाता है। कानके भीतरकी छोटी हड्डियां सब (Ossicula) और शिलास्थि (Petrous Bone) मोटी हो जाती हैं। इसी वजहसे रोगी बहरा हो जाता है और कानमें ढं ढं हू हू शब्द होता है (कैल्के, कास्टि, बेल, कोना, क्रियो, ग्रैफ, नेट्र-म्यू, पेट्रोल, पल्स, साइलिसिया)।

आंख।—कांपती हुई दृष्टि और आगकी चिनगारियां (अरम, बेल, कास्टि, कैलि-कार्ब, लैके, नेट्र-म्यूर, ओपि, फास, स्टैफ, क्यूप्रम-आर्स, बैलि)। आंखोंके स्वच्छ आवरक (Cornea) के ऊपर धब्बे धब्बे जैसा दाग मालूम होता है; आंखकी योजक त्वचा (Conjunctivitis=मार्क, आर्जेण्ट-नाइ, युफ्रे)। मोतियाबिन्दु (चोटकी वजहसे होनेपर=कोना; आंखोंके भीतर अस्वच्छता-Opacity=इयुफ्रे; अधिकतर कैल्के, फास, साइलिसिया)।

नाक।—सर्दी—माथा बहुत भारी मालूम होता है, सूखी खांसी; नासारन्ध्रसे बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार गाढ़ी, पीली या पीली आभा लिये सर्दी निकलती है।

मुख।—दांतमें दर्दकी वजहसे गला फूला और न झुकनेवाला और जबड़ेकी हड्डियोंका फूलना और कड़ा हो जाना। दांतकी जड़ या मसूढ़ेमें पीव पैदा होनेकी वजहसे हनुके ऊपरी भागमें सूजन, जो लोहेकी तरह कड़ी हो जाती है। दर्दके साथ जीभ भी फटी फटी दिखाई देती है। कभी कभी प्रदाहकी वजहसे जीभ फूली और कड़ी हो जाती है। असमयमें ही दांतोंसे मसूढ़े अलग हो जाते हैं—उनमें दर्द नहीं रहता। दांतमें दर्द,—कोई खानेकी चीज दांतमें लगते ही दर्द बढ़ जाता है, (कार्बो-वे, कास्टि, कैमो, लैके, मार्क, पल्स,

स्टैफ)। (ज्ञानदन्त या अकलदन्त निकलनेके समय जो दर्द होता है, उसमें चिड्रैन्थस बहुत फायदा करता है)।

गलेके भीतर।—कण्ठमें जलन (आर्स, वेल, कार्बो-वे, कैम्फो; कास्टि कैमो, युफोर्बि, लोबेल, लाई, मार्क, मेजेर, ऐसिड-नाई, फास, रैनान-फ्लिरेटस,रास-रैड, सब्जि)

पाकाशय।—खाई हुई चीज अजीर्ण अवस्थामें कै हो जाती है (फेरम-म्यूर, पेट्रोल)। हिचकी (नक्स, कैजुपुट, साइक्लेमेन, ऐसिड-सल्फ,—खाने पीने या धूम्रपानके बाद=इग्ने; आक्षेप और वायु-निर्गमनके साथ=साइकि; आक्षेपिक=ह्यय; मलेरियाकी वजहसे रोगोंमें यन्त्रणा दायक हिचकी—नेट्र-म्यूर; गुल्म-वायु रोगमें—मस्कस।)

अन्त्राशय।—पेट फूलना (ऐ-कार्बोल, कार्बो-वेज, रैफेना; नक्स-मस, कैमो) दाहिने कोषमें ग्यारहवें पञ्जरेके नीचे तेज छुरी वेधनेकी तरह दर्द,—दर्दकी वजहसे प्रायः आधी रातके समय नींद खुल जाया करती है; वृद्धि—रोगवाली करवट सोनेपर और सामनेकी ओर शरीर टेढ़ा करनेपर; रोगी बहुत बेचैन हो जाता है। सवेरे ८ बजनेके समय यकृत प्रदेशमें बार बार छुरी वेधनेकी तरह दर्द; वृद्धि—बैठे रहनेपर; घटना—रातमें सोनेके बाद। दाहिनी कोखमें बहुत धीमा और अच्छा न मालूम होनेवाला भार मालूम होना।

मलान्त्र और मल।—मलद्वारका फटना; मलान्त्रके नीचे बहुत जखम पैदा करनेवाला फटा घाव (ऐसिड-नाई, ग्रैफ, रैटान)। खूनी बवासीर (हैमा, सलफ, कैल्थ, कोलिन्सो, हाइपिर)। मलद्वारमें खुजली मानो छोटी क्रमि पैदा हो गयी है (साइना, इग्ने, टियुक्रि, ऐम्ब्रा, कैलके-कार्ब, कैलके-कास्टि, ऐसिड फ्लू) बादी या बिना स्रावका बवासीर, अकसर कमर और नितम्बमें दर्द मालूम होता है, इसके साथ ही कब्जियत (इस्कु-हिप, नक्स, इग्ने)। तलपेटमें बहुत वायु सञ्चित हो जाना (ऐको, अरम, सिङ्को, कोलो, साइक्लेम, फास, साइलीसिया, सलफ, ऐसिड सलफ)।

पुं-जननेन्द्रिय।—एकशिरा (जन्मसे—ब्राइ; चोटकी वजहसे—आर्निका, आयोड, सब्जिया, रडो, अरम, पलस); अण्डकोष बहुत कड़े मालूम होते हैं [सब्जिया, क्लिमैट, रोडो]।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा रजःस्राव [बेल, सिङ्गो सिनेमो, इपिका] और तलपेटमें दबाव मालूम होना ; जरायुका अपने स्थानसे हटना (फ्रेक्सिनस, ऐमे, थरम-मूर-नेट, लिलिटाई, सिपि, हैलोन, मूरेक्स, सेबाइ),—जरायु मानो बाहर निकल पड़ेगा ;—जरायुसे उरुतक खींचनकी तरह दर्द मालूम होना (बेल, लिलि-टाइ, सिपि, फ्रेक्सिनस-ऐमे]। स्तनमें कड़ी गांठ पैदा हो जाती है (कोना, बेल)।

श्वासयंत्र।—स्वरभङ्ग (कास्टि, फास, कार्बो-वेज); घुँड़ी (क्लोरैल, वयूमम, मस्कस)। सोने बाद वायुनलीमें खुजली और कुट,कुटी मालूम होनेके साथ खांसी ;—पीली आभा लिये छोटा छोटा जमा कफ निकलता है।

गर्दन और पीठ।—बहुत दिनोंका पुराना कटिवात,—हिलना आरम्भ करनेके समय दर्द अधिक बढ़ जाता है, पर कुछ देर तक चलनेपर घट जाता है (रास, कैल्के-कास्टि)। अस्थिमय अर्बुद (एसिड-फ्लू, सिलिसिया)।

प्रत्यङ्गादि।—कलाईकी पीछेवाले भागमें कोषवेष्टित अर्बुद। अँगुलीकी सन्धियाँ सब वातकी वजहसे फूल जाती हैं। अँगुलीका अस्थि-वर्द्धन (हड्डी का बढ़ना Exostosis = उपदंशसे उत्पन्न = मार्क-कोर ; माथेका = कैलो-माई ; दर्द-भरा = हेक्ला ; अस्थि-संयोजक स्थानपर = काल्मियोलिन)।

त्वचा।—नाड़ी-मय अर्बुद; फूली हुई शिरामिला लहसन या मातृचिन्ह (Nævus = थूजा ; फास, लाई, ऐसिड-फ्लू, टियुवक्यु लिनम)। शिरा फूलना (Varicose Veins = हैमा, एसिड-फ्लु), इसके साथ ही तेज वेधनेकी तरह दर्द; स्त्री-योनिके बाहरकी शिराका फूलना (हैमा, लैके)। शरीर फटना ; तलहत्थी फटना ; (नेट्र-कार्ब, पेट्रोल, कैल्के)। मलद्वारका फटना ; अँगुल-हाड़ा,—मानो अंगुलीमें कोई काँटा वेध रहा है (ऐसिड-फ्लू, लैके, सिलि)। दुरारोग्य नासूर (Sinus)—पीले रंगका गाढ़ा पीब या रस निकलता है (सिलि, एसिड-फ्लू, मार्क, कैल्के, सल्फ)। ग्रन्थियाँ सब फूली और लोहे जैसी कठिन—कोना ; आयोड)।

निद्रा।—वर्त्तमान घटनाकी तरह सपने देखना और ऐसा मालूम होता है, कि विपत्ति आया ही चाहती है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एसिड-फ्लू, कैल्के-सल्फ, कोना, लैपिस-एल्बम, वैराई-म्यूर, हेक्ला ।

तुलनीय ।—कैल्के फास (नकसीर), नेट्रम, साइलिसिया इत्यादि ।

शक्ति ।—२ री, छठी ; ३० से २०० शततमिक क्रम ।

केल्केरिया हाइपोफास्फोरोसा ।

(CALCAREA HYPO-PHOSPHOROSA)

दूसरा नाम ।—हाइपो फास्फेट आव लाइम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—हृत्शूल, दमा, रक्ताधिक्य, सरदर्द, पक्षाघात, पसीना ।

उपयोगिता और आभास ।—माथेके मूर्द्धदेशमें धीमा भार मालूम होना और इसी वजहसे मानसिक अवसाद, छातीमें भार मालूम होना और दबाव मालूम होना तथा श्वासकष्टता ; बाहु, हाथ, गला और माथेकी शिरायें सब फूलकर डोरीकी तरह हो जाती हैं ; श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ीकी वजहसे खिड़की आदि खोल देता है ; समूची देहमें बहुत ज्यादा पसीना होता है और पेशियोंकी दुर्बलताकी वजहसे हाथ पैर अवश मालूम होते हैं ।

डा० नैशके मतसे फोड़ा निकलनेके समय जब किसी तरह भी पीब पैदा होना बन्द नहीं किया जा सकता, और पैदा हुआ पीब भी सोखा नहीं जाता, ऐसे स्थानपर इस दवाके प्रयोगसे फोड़ा बैठ जाता है और वह किसी तरह नहीं पकता । इकट्ठा हुआ पीब सब भी नष्ट हो जाता है ।

सदृश ।—कैल्की-फास, बैराइटा, ग्लोनोयन ।

शक्ति ।—१ म दशमिकसे ३ रा दशमिक क्रम ।

परीक्षक ।—डा० बारेट ।

कैल्केरिया आयोडेटा।

(CALCAREA IODATA)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आव लाइम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—कैन्सर या कर्कटका जखम; क्षयकास या यक्ष्मा; पेट फूलना; ग्रन्थियोंका फूलना; कर-दर्द; स्तनका अर्बुद।

उपयोगिता और आभास।—शैशवमें पैदा हुई बीमारियोंमें यह विशेष लाभदायक है, ग्रन्थियोंका फूलना, गल-ग्रन्थि (Tonsils) प्रदाह (पुराना),—खासकर ऐसे आदमियोंको जिनमें खून कम है, जिनका रंग उतरा हुआ, और जिनकी मांस-पेशियां शिथिल हैं, उनकी बीमारीमें यह लाभदायक है। जरायुके तन्तुमय अर्बुद रोगमें भी यह खासा फायदा दिखाया करता है।

लक्षणावली।

मन।—सभी विषयोंमें उदासीनता-प्रदर्शित करता है।

मस्तक।—ठण्डी हवाके प्रतिकूलमें घुड़ सवारी करने पर या दौड़नेपर सरमें दर्द मालूम होता है (जोरसे हवा लगनेपर=ऐको, बेल, सिङ्को, कोलो, नक्स, वैलि; ठण्डी हवामें=सिङ्को; ऐसिड-म्यूर)। दाहिनी कनपटी (Temple) में तेज बेधनेकी तरह दर्द (बेल, आयोड, लैके, मैङ्ग, निकोल, नाइट्रम, स्टैफ, ऐसिड-सल्फ) मस्तक बहुत हलका मालूम होता है (स्ट्रैम)

नाक।—पुरानी सर्दी,—नासा मूलमें अधिक दर्द मालूम होना (ऐगा, हायो, सिनी, पेट्रोल, पल्स, रियुटा),—छींक नहीं आती। कान और नासारन्ध्रमें झिल्ली भरा अर्बुद (Polypi=थूजा; कैल्के, कैली-बाई, फास, टियुक्रि, सैङ्ग्वि, कैड-सल्फ, सोराइन)।

मुख-विवर।—जह्वा और दोनों ओठोंमें ऐसा मालूम होता है, मानो लेप चढ़ी हुई है। मुँह और मसूढ़ेमें आग छू जानेकी तरह जलन (मसूढ़े जलन-भरे=बेल, कैमो, मार्क, नैट्र-सल्फ, नक्स, पेट्रोल, पलस, रास; टेरिब; मुँहमें जलन=ऐसेर, सेजी, नैट्र-सलफ, नाइट्र-स्पिरि, डाल, वैरेट); जिह्वामूल

कैल्केरिया फास्फोरिका।

(CALCAREA PHOSPHORICA)

दूसरा नाम।—फास्फेट आफ लाइम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—क्लोराइड आव कैलसियम, फास्फेट आव सोडा और ऐमोनियाके साथ चुआया हुआ पानी मिलाकर यह तैयार होता है। विचूर्ण और अर्क।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:- खूनकी कमी; पीठ और पैरमें कमजोरी; अस्थिका विकार; बच्चोंकी विसूचिका; ताण्डव; क्षयकास; दुर्बलता; दाँत निकलनेमें गड़बड़ी; बहुमूत्र; अजीर्ण; रेतःक्षरण; मूत्रकृच्छ्रता; मृगी; मुँहासे; नासूर; अस्थिभङ्ग; मेह; प्रमेह; सर-दर्द; आँत उतरना; कोरण्ड; सर्दीसे पैदा हुआ रोग; श्वेत-प्रदर; कमरमें दर्द; कामोन्माद; बात; कानकी हड्डीमें विकार; नकली मैथुनकी वजहसे उपसर्ग या बीमारियाँ; धातु जाना; गर्दनकी अकड़न; अण्डकोषकी सूजन; गलेका जखम; तालुमूल ग्रन्थिकी सूजन; जरायुका अपने स्थानसे हटना; जम्हाई आना।

उपयोगिता।—जिन मनुष्योंके शरीरमें खून कम हो, जिनका रंग काला हो, जो दुबले हों, दाँत निकलनेके समयकी बच्चोंकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है।—डा ऐलेन।

उपयोगिता और आभास।—इसके द्वारा खाये हुए पदार्थोंसे उत्पन्न रस सभोंका अनियम विभाग या नियमित विभागका अभाव पैदा हुआ करता है। इसलिये यह दाँत निकलनेवाले बच्चे, यौवनमें आनेवाली बालिकाएँ और बालक तथा वृद्धोंको—इन तीन अवस्थाओंमें यह विशेष उपयोगी है। बच्चा बहुत ही रोगी रहता है, मांसहीन, आँख और गाल गड्ढेमें धंसे, पेटका निचला भाग शिथिल; गांठों और हड्डियोंकी बीमारीका उपक्रम, माथा बड़ा, माथेके सामने और पीछेवाले दोनों ही अस्थि-फलकोंके जोड़ खुले हुए और ये हड्डियाँ सब पतली और टूट जानेवाली, बहुत धीरे धीरे और देरसे दाँत निकलता है, बच्चा बहुत देरसे बोलना और चलना सीखता

है। गर्दन इतनी पतली और कमजोर रहती है कि माथेका बोझा नहीं सम्हाल सकती,—माथा ढुलका करता है। बच्चा दूध पीनेके साथही के कर देता है। प्रत्येक बार भोजन करने बाद उसके पेटमें ऐंठन हुआ करती है। मल साधारणतः हरा लसदार और अजीर्ण पदार्थ मिला होता है। कभी कभी मल पतला पानीकी तरह गर्म और परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है, उसका छोटा मुंह रक्तहीन और उतरा हुआ दिखाई देता है और शरीरके उठे हुए अंश सब (कान, नाक, इत्यादि) बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं, उनकी बुद्धि भी अस्थि आदिकी तरह जड़-भाव की हो जाती है। सहजमें कोई भी बात समझमें नहीं आती और हमेशा वह बिना फुर्तीका —सुस्त दिखाई देता है। उम्र बढ़नेके साथ ही साथ (यद्यपि शरीरका आयतन नहीं बढ़ता), सर्दी सहन नहीं होती, किसी तरह जरा भी सर्दी लग जानेपर, समूची देहमें हवा आदि लगते ही, उत्ताप पैदा हो जाता है और अस्थि-वेष्टन (periosteum) और सभी सन्धियोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है—यह सिर्फ बालास्थि-विकृति (Ricket) का लक्षण है। इसके सिवा और कुछ भी नहीं है। टूटी हुई हड्डी जल्दी नहीं जुड़ती। नवजात बच्चेकी नाभिसे खून मिला रस निकलता है। यौवनोद्गम-मुखी बालक-बालिकाओंके मुंहमें मुँहासे पैदा हो जाते हैं; मूर्द्धा-देशमें सर-दर्द और आध्मान वायुकी वजहसे अजीर्ण रोग पैदा हो जाता है। भोजनके बाद घटना। शोक या प्रणय भंगकी वजहसे बीमारियाँ, रोगकी बात सोचते ही ऐसा मालूम होता है, कि रोग फिर पैदा हो जायेगा। अनजानमें बार बार ठण्डी सांस लेता छोड़ता है। बढ़नेवाली दशामें बालक बालिकाओंका सर-दर्द। भगन्दर; छातीमें दर्द पर्यायक्रमसे पैदा होता है।

मन ।—बच्चा बहुत चिड़चिड़ा। असंतोष पैदा करनेवाले समाचारसे उत्तेजित हो उठता है, बुद्धिकी जड़ताकी वजहसे उदासी, शारीरिक या मानसिक परिश्रमसे विरक्ति, बुद्धि लड़ाकर काम करना एक महान विपत्ति सी मालूम होती है। या तो भूल लिखता है या उसी बातको दुबारा लिख डालता है। विस्मृति,—इस समय उसने जो कुछ भी किया; क्षणभर बाद ही उसे वह याद नहीं रहता। शोक और प्रणय भंगकी वजहसे बीमारियाँ (अरम, इग्ने ऐसिड-फास, ऐक्टिया, हायो, लैके), रोगकी बात सोचते ही मनमें बहुत अधिक तकलीफ होती है (बैराइ, कास्टि, हेलोन, मिडोराइ, ऐसिड-आक्ज,

पेट्रोल)। रोगी घरमें रहनेपर बाहर जाना चाहता है, इधर उधर घूमा करता है। अनजानमें ठण्डी लम्बी सांसे निकलती हैं (इग्ने, नेट्र-फास)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ;—बैठे बैठे उठनेपर लुढ़क पड़ता है (ऐको, आर्स, ब्राई पेट्रो, सैबाड, सल्फ); बढ़ना=वायु सेवनार्थ टहलनेके समय (ऐनाक, आर्स, ऐस, लाइकी, नैट्र-म्यू, साई, वायोला-ट्राई); अन्धड़ पानीके दिनोंमें कब्जियतके साथ और बड़ी उमर वाले तथा पढ़नेवाले बालक बालिकाओंके सरमें दर्द (नेट्र-म्यू, सोराइन)। सरमें दर्द,—माथेकी हड्डीके संयोग-स्थलपर—जाड़ा-गर्मीके परिवर्तनकी वजहसे, ऐसा मालूम होता है मानो माथेके पिछले स्थानपर एक टुकड़ा बरफका रखा हुआ है। बहुत दिनोंतक मस्तकका संयोगस्थल नहीं जुड़ता, दरार सी रहती है (कैल्के, कैल्के-फूल) मस्तकका अस्थि-फलक सब पतला और लचीला—दबानेसे पटपट करता है। श्रवण-शक्तिमें विकार, बालिकाओंके यौवनोद्गमके समय मूर्द्धदेशमें सर-दर्द और आधान (पेट फूलना) मिला अजीर्ण रोग,—खानेपर घटना। माथा गर्म ; केशकी जड़में कुटकुटी होती। गर्दन इतनी कमजोर कि माथेका भार सहन नहीं कर सकती—चलनेके साथ डगमगाया करता है (ऐब्रोट, आयोड)। ऐसा दबाव मालूम होना, मानो मस्तिष्क करोटीके गात्रसे पिसा जा रहा है,—वृद्धि—सोनेपर, बठने आदिकी अवस्थाके परिवर्तनसे। घटना=स्थिर होकर सोये रहनेपर। धूम्रपानके आग्रहके साथ सरमें दर्द—धूम्रपानसे घटना ; निर्मल वायु लगने और झुकनेपर सरका दर्द बढ़ जाता है। कानसे त्वचा क्षय करनेवाले पीवका स्राव।

आंख।—आँखोंमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ गिर गया है। कोई इस सम्बन्धमें इसके सामने यदि उससे बात कहता है, तो उसे मालूम होता है मानो उसकीआँखमें कुछ गिर गया है। दीयेकी रोशनी सहन नहीं होती ; पढ़ नहीं सकता।

मुख-विवर।—जीभके अगले भागकी खाल उधड़ जाती है, उसमें जलन और छोटे छोटे छाले हो जाते हैं। सबेरे सरमें दर्दके साथ मुंहका स्वाद तीता हो जाता है। जिह्वामूलकी दोनों ग्रन्थियां (Tonsils) फूल जाती हैं, मुंह फाड़नेमें दर्द होता है ; दाँत निकलनेके समय कितनी ही तरहसे स्वास्थ्यमें विकार हो जाता है, दाँत बहुत धीरे धीरे और देरसे निकलते

हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंपर गांठों जैसी सूजन पैदा हो जाती है (ऐपिस, ऐको, लाइको); दाँत धीरे धीरे निकलते हैं, पर जल्दी जल्दी क्षय हो जाते हैं,—कीड़ाओं द्वारा (स्टैफ, क्रियो)। ऊपरी ओंठ फूल जाते हैं कड़े हो जाते हैं, उनमें दर्द और जलन होती है, ऊपरी हनुके दाहिनी ओर से बाईं ओर फैलनेवाली दर्दकी अनुभूति होना, दर्द शरीरके दूसरे अंशसे मुँहमें और मुँहसे दूसरे अंशमें फैलता है। मुंहके ऊपर मसे (कास्टि, थूजा); चेहरेपर फुन्सियाँ या व्रणकी तरह उद्भेद; तांबेकी तरह मुंहासे (Acne in the face) या व्रण;—लाल, पीली आभा लिये और पीब भरे,—छूनेपर सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है।

नाक।—सर्दी (Coryza)—ठण्डे कमरेमें रहनेपर पानीकी तरह सर्दीका स्राव, घरके बाहर जानेपर या गर्म गर्म वायु लगनेपर सर्दीका स्राव बन्द हो जाता है। जिनकी ग्रन्थियाँ बढ़ा करती है (Scrofulous) या श्लेष्मा प्रधान धातुवाले बच्चोंकी नाक फूली और नासारन्ध्रका मुंह जखमसे भरा हो जाता है। मांसार्बुद (Polypi=थूजा, टियुक्रि, सैङ्गियु)। नाकसे तीसरे पहरके समय खूनका स्राव होता है, नाकसे पतली सर्दी (Mucus) का प्रवाह और मुंहसे लार बहनेके साथ ही साथ बार बार छींक (सिपि, आर्स, मार्क।) नाक झाड़नेपर उसकी भीतरसे खून निकल आता है।

पाकाशय।—तीसरे पहर ४ बजनेके समय बहुत भूख लगती है। पाकाशय खाली मालूम होता है। पेटमें जलन होती है और मुंहमें पानी भर आता। ऐसा मालूम होता है, मानो पेट बड़ा हो गया है (सैङ्गनम), बच्चा बराबर स्तनसे दूध पीना चाहता है—दूध पीना नहीं छोड़ता और बहुत सहजमें ही उसे कै हो जाती है; बहुत पेट फूलना—खट्टी डकार आनेपर कुछ देरके लिये आराम मिलता है। छातीमें जलन (नक्स, पल्स, सलफर, फास, रियुम, कैलि-नाई) बच्चा लगातार दूध वमन करता है।

अन्नाशय।—जितनी ही बार खानेकी चेष्टा करता है, उतनी ही बार पेटमें दर्द होता है (बेराइ, नाइट्रम, सिपि)। पेट थैलेकी तरह और शिथिल। नाभिके चारों ओर दर्द और जलन मालूम होती है (इग्न्यू, ऐल्यू, ऐसिट-फ्लू, आर्स, बेराई, कैम्फो, कास्टि, इग्ने, कैली-कार्ब नक्स-मस, ओलि-ऐनि, स्ट्रैम, रेवे, स्टैन)। बच्चेकी नाभीसे खूनमिला रस स्राव होता है

(ऐलोट ; पेशाब निकलता है—हायो) कतरने या चिकोटी काटनेकी तरह तेज शूल वेदना और इसके बाद ही पतला पाखाना होना ।

मलान्त्र और मल ।—मलद्वारमें जखम और सुई वेधनेकी तरह जलन पैदा करनेवाला और टपककी तरह दर्द मालूम होना । कड़ा पाखाना होनेके बाद खून गिरता है । रसीले फल खानेकी वजहसे और दांत निकलनेके समय उदरामय । मल हरा, लसदार, गर्म, अजीर्ण पदार्थ मिला और बदबूदार वायु निकलनेके साथ छिटककर निकलता है, (ऐलो, क्रोटन, गैम्बो, ग्रेटि, जैट्रो, नेट्र-सल्फ, पोडो, सल्फ) मलद्वारमें नासूर, भगन्दर और फुसफुस आदिके रोगोंमें पर्याय-क्रमसे प्रकट होता है—अर्थात जब भगन्दर आराम होता है, तब फेफड़ेकी बीमारियां पैदा हो जाती हैं और जब वक्षस्थलकी कोई बीमारी नहीं रहती, उस समय भगन्दर पैदा हो जाता है (कार्ब) और उससे पीव बहना आरम्भ हो जाता है ; सवेरे बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला मल निकलता है ; बच्चेका मलद्वार साफ कर देनेके बाद ही फिर वेग होता है और थोड़ा सा मल निकल जाता है । सन्ध्याके समय बहुत थोड़ा पाखाना होता है और उसके साथ ही बहुत अधिक वायु निकलती है ।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब और इसके बाद ही कमजोरी मालूम होती है, कोई भारी चीज उठानेके समय और नाक छिड़कनेके समय मसाना या मूलग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बालिकाओंको बहुत जल्दी ऋतुका आविर्भाव होता है—स्राव=बहुत ज्यादा परिमाणमें और लाल चमकीला । पर अवस्था प्राप्त स्त्रियोंको बहुत समयका अन्तर देकर ऋतु होता है=खून गाढ़ा, लाल या पहले चमकीला लाल, इसके बाद गाढ़ा लाल । ऋतुके समय कमरमें बहुत दर्द मालूम होता है (ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, बार्व, कैस्टोर, क्रियो, लाइ, नेट्र-कार्ब, नाक्स्म, ओलि-ऐन, फास, पलस, कैलि-नाइ, सल्फ ; ऋतुके बाद=पलस) । बच्चेको स्तन पिलानेके समय कामोद्रेक, स्त्रियोंका कामोन्माद (Nymphomania)—जरायु प्रदेशमें दर्द या कमजोरी मालूम होना (प्लैट) । बच्चोंको बहुत दिनोंतक स्तन आदि पिलानेकी वजहसे क्षीणता आदि पैदा होकर माताका स्वास्थ्य बिगड़ जाना । प्रदर,—दिन रात अण्डलालकी तरह स्राव (बोरैक्स, बोवि, ऐमोन-म्यू, मेजेर, पेट्रोल, प्लैट) ,—सवेरे वृद्धि (रमणके बाद=नेट्र-कार्ब ; टहलनेके समय=मैग-कार्ब ; मैग-

सल्फ, टोङ्गा ; रातमें = ऐम्ब्रा, कास्टि ; पेशाबके समय = एमोन-म्यू, कैल्के, सिलिसिया) बच्चा स्तन नहीं पीना चाहता ; स्तनका दूध नमकीन मालूम होता है। दुबली पतली स्त्रियोंका जरायु (श्रम-मूर, नैट्र, पोडो) पाखाना पेशाब के समय बढ़ना। स्तनवृन्तमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी है।

श्वास-यंत्र।—अनजानमें लम्बी सांस निकल जाना (इग्ने)। दिन रात स्वरभङ्ग और खांसी ; बच्चे को पालनेंसे उठाते समय श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है ; खांसी,—पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है,—सबेरे अधिक ज्वर, पसीना न होना और प्यास ; सबेरे ६ बजसे सन्ध्या ६ बजे तक,—कितनीही तरहकी बीमारी पैदा करनेवाला ; दांत निकलनेके समयकी बीमारी, खांसनेके समय वक्षमें सूई बेधनेकी तरह दर्द और वक्षःस्थलके निचले अंशमें और दोनों बाहुओंके ऊपरी अंशमें गर्मी पैदा हो जाती है। वक्षमें संकोचन की वजहसे श्वास कृच्छ्रता ; सन्ध्यासे १० बजे तक—सोनेसे घटना और चढ़नेसे बढ़ना।

गर्दन और पीठ।—मेरुदण्ड बलहीनकी तरह मालूम होता है—टेढ़ापन (सिलि, सल्फ) ;—खासकर बाईं ओर ; देहका भार सहन नहीं कर सकता ;—गर्दन पतली और चीण,—माथेका भार सहन नहीं कर सकती ;—बच्चा माथा सीधा नहीं रख सकता ;—चलनेके समय ढलमलाया करता है (ऐब्रोट ; आयोड)। ठण्ढी हवा लगकर वातका दर्द पैदा हो जाता है,—पीठ अकड़ी हुई और शिराओंमें धीमा धीमा दर्द मालूम होता है। नितम्बमें बहुत दर्द रहता है,—मानो टूट गया है (इस्कु-हिप)।

प्रत्यङ्ग।—पानीमें भींजनेके बाद नितम्बसे दोनों पैरतक दर्द चक्कर लगाया करता है (रास)। दुर्बलताके साथ हाथ पैर आदिमें दर्द। पैर, तलपेट, और कमरमें ऐसा मालूम होता है, मानो वे सब सुन्न हो गये हों—बैठकर उठ नहीं सकता, बच्चा दुबला, कंकालसार, खड़ा नहीं हो सकता, बहुत देरसे चलना सीखता है (ऐगार, कैल्के, सिलिसिया, कास्टि, सलफर ; चलते चलते डगमगा जाता है = बेल, ब्राई, कास्टि, हायो, लौरो, ऐसिड-म्यूर, नक्स, ओलि-ऐन, ओपि, प्रुनस, रास, सिकेलि, स्ट्रैमो, सल्फ)। जवानीका समय आनेपर बालिकाएं बहुत जल्दी जल्दी बढ़ जाती हैं ; उनकी हड्डियां लचीली रहती हैं और उनके

टेढ़े पड़ जानेकी सम्भावना रहती है (सिलि., थिरिड)। शीतकालमें वातका दर्द ; वसन्त ऋतुमें अच्छा हो जाता है और हेमन्त ऋतुमें फिर पैदा हो जाता है।

सार्वाङ्गिक ।—सीढ़ी चढ़नेके समय खींचन मालूम होना (ऐनाक, कैल्के-आस्ट), बैठा रहना चाहता है = आर्जेण्ट, ऐसिस-कार्ब, नेट्र-कार्ब, बेलिस, सोराइनम)। बैठना छोड़कर उठना बहुत बुरा मालूम होता है। सर्दी लगने पर सन्धि प्रदेशमें और अस्थि संयोग-स्थलपर दर्द होता है।

वृद्धि ।—ठण्डी जलीय वायु लगनेपर, तेज जल्दी जल्दी बदलनेवाले जलवायुमें, पूर्वी हवामें और मानसिक परिश्रमसे।

घटना ।—ग्रीष्म और बसन्त ऋतुमें, जब हवा गर्म और सूखी रहती है।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—रियुटा ; कार्बो-ऐन (ये सब गुण वाली दवाएं हैं)।

सदृश ।—कैल्के-आस्ट्र, ऐसिड-फ्लु, कैलि-फास, कैल-सिलिकेटा, (क्योंकि अस्थि क्षय करनेवाले रोगमें) कैल्केरिया फास्फोरिकाके सदृश। कठिन रोगादिके बाद बलकारक औषधिके रूपमें सोराइनमकी तरह प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है। कण्ठीयोला इनमें हड्डियोंके जोड़के स्थान पर अस्थिमय अर्बुद पैदा हो जानेपर यह दवा बड़ी उपयोगी है। थाइरायडिनम—डा० क्लार्क)। आयोडम, सोराइन सैनिकुला और सलफर वगैरह कैल्केरिया फासके बाद अच्छा फायदा दिखाते हैं।

शक्ति ।—निम्न-क्रम विचूर्णसे लेकर ६ ठा और ३० वां तथा २०० क्रम तक।

कैल्केरिया-पाइक्रिका ।

(CALCAREA PICRICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण इसके बाद अर्क ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—कानमें बार बार फोड़ा होना ।

शक्ति ।—निम्न क्रमका चूर्ण और ३० वां क्रम ।

कैल्केरिया-साइलिसिया ।

(CALCAREA SILICIA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— आँखोंके सफेद अंशमें जखम ; गण्डमाला ; जखम ।

शक्ति ।—निम्न क्रमका विचूर्ण और ३० ।

कैल्केरिया सल्फ्युरिका ।

(CALCAREA SULPHURICA)

दूसरा नाम ।—सलफेट आफ कैलसियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—प्लैष्टर आफ पेरिससे विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— गुह्य-द्वारके पास फोड़ा ; व्रण ; छालोंका घाव ; आँखमें जखम ; खाँसी ; दूधिया-पपड़ी ; रक्तामाशय ; खसड़ा ; नासूर ; प्रमेह ; ग्रन्थियोंका फूलना ; रक्त-स्राव ; फेफड़ेका प्रदाह ; नासार्बुद ; उपदंश ; शुक्रतारल्य ।

उपयोगिता और आभास।—इसकी क्रिया बहुत कुछ अंशोंमें साइलिसिया और कैलेण्डुलाकी तरह है,—फोड़े आदिसे पीव निकलता है, ऐसी अवस्थामें कैल्केरिया सल्फ्युरिका प्रयोग करने पर जल्द आराम हो जाता है। मलद्वारके नासूर रोगमें यह साइलिसियाकी अपेक्षा किसी अंशमें कम नहीं हैं। अकौता खुसड़ा (Eczema) और दुरारोग्य ग्रन्थि-स्फोति और कोषमय और सूत्रमयअर्बुद रोगमें यह बहुत फायदा करता है। इससे पैदा पीव गाढ़ा पीला और जमा हुआ होता है।

लक्षणावली।

मन और मस्तक।—अस्थिर मति, घण्टे घण्टेमें मत परिवर्तित होता है, बच्चोंको दुग्ध-चिपिटिका (Lactea)-पीव भरा रस निकलता है या माथेपर पीली पपड़ी जमा फोड़ा पैदा (वायोला-ट्राइ, विङ्का-माइ, सिपि) हुआ करता है।

आंख।—आँखोंका प्रदाह,—गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है, (पल्स, मार्क-कोर, आर्जेण्ट-नाइ)। चीजोंका आधा अंश ही दिखाई देता है=लिथिया-कार्ब, दाहिना आधा भाग=लाइ, ऊपरी आधा और निचला आधा=ऐसिड-म्यू ; निचला आधा=ओरम,) आँखोंका प्रदाह (Conjuctivitis), गाढ़ा पीले रङ्गका पीव निकलता है।

कान।—बहरापन,—बिचले कानसे पीवका स्राव,-खून भी कभी कभी पीवमें मिलकर निकलता है। कर्ण-विवर (कानका छेद) के चारों ओर फुन्सियाँ निकल आती हैं [कर्ण-विवरमें बार बार छोटे फोड़े निकलते हैं= कैल्केरिया-पाइक्रोटा]।

नाक।—सर्दी,—गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा-स्राव, कभी कभी खून और पीव निकला करता है (क्रियो, लाइ, नेट्र-कार्ब, फास, पल्स, सिपि) कभी कभी केवल एक रन्ध्रसे श्लेष्मा निकलता है। नासा-पश्चान्नली (Posterior-Nares) से पीले रङ्गका श्लेष्मास्राव। रन्ध्रमुख जखम भरे (ऐण्टि-क्रूड, सिपा, कैली-कार्ब, लैके, मैग-म्यू, फास, जिङ्कम)।

मुखमण्डल।—मुख-दूषिका या फुन्सियाँ, उनमें पीव सञ्चय होनेपर विसर्पिका या दादकी तरह उद्भेद पैदा हो जाते हैं।

मुख-विवर।—ओंठके भीतरकी ओर जखम। जीभ शिथिल—ऐसा मालूम होता है, मानो उसपर कीचड़का एक स्तर जम गया है। मुँह खट्टा और कसैला स्वाद। जीभकी जड़ पीले रङ्गकी लेप चढ़ी (मार्क, आयोड); बाकी अंशपर कीचड़की तरह लेप। जिह्वाके प्रदाहमें पीव इकट्ठा हो जानेकी सम्भावना।

गलेके भीतर।—जिह्वा-मूलीय-ग्रन्थि-प्रदाहकी अन्तिम अवस्थामें गाढ़े पीले रङ्गके पीवका स्राव। गलक्षत रोगमें पीले रङ्गका पीव स्राव।

उदर।—सुस्ती, मिचली और पाकस्थलीमें दर्दके साथ दाहिने कोख और यकृतके भीतर दर्द मालूम होना। उदरामय—रक्त और पीव मिला पाखाना होता है ; शीत उत्तापके परिवर्तनसे बढ़ जाना। मलद्वारके नासूरकी बीमारीमें दर्द भरे फोड़े निकलते हैं। मसानेमें बहुत दर्दके साथ पेशाबके साथ पीव निकलना (डा० नैश); मलान्त्रसे पीवकी तरह और लेईकी तरह स्राव होना।

जननेन्द्रिय।—प्रमेह (Gonorrhœa),—पीव भरा रस निकलता है। ज्वर—देरसे, बहुत दिनोंतक लगा रहने वाला,—सरमें दर्द, पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना और इसके साथ ही बहुत कमजोरी।

श्वास-यंत्र।—खांसी ;—पीवकी तरह रस निकलनेके साथ श्लेष्माका स्राव ; विलेपी ज्वर (Hectic) के साथ फेफड़े और वायु-नलीमें और फेफड़ेके कोषमें पीव-सञ्चय, पीवकी तरह रसमय पीव निकलता रहता है। सर्दी (Catarrah) रोगमें,—गाढ़ा जमा हुआ सफेद पीले रंगके श्लेष्माका स्राव।

प्रत्यङ्गादि।—पैरके तलवेमें जलन और खुजली। अँगुल हाड़ा,—मानो पीव-सञ्चय होना आरम्भ हो गया है। चोट वाली जगहमें पीव पैदा होना।

ज्वर।—पीव सञ्चय होनेकी वजहसे विलेपी ज्वर, इसके साथ ही खांसी और तलवेमें जलन (चिनन-आर्स, सेपूटिसिमिन)।

त्वचा।—कटे, जले या चोटकी वजहसे फटने या कुचलनेके कारण जखम हुए अंशसे पीवका स्राव होता रहता है और वह सहजमें आराम नहीं होता। गाढ़ा पीले रंगका पीव निकलनेवाले फोड़े या जखम आदि। पीली आभा लिये पपड़ी जमने वाले चर्मरोग। केशके भीतर फुन्सियाँ,—खुजलानेपर खून गिरता है। फोड़ा।

तन्तु।—खाँसी ; प्रदर ; प्रमेह—प्रभृति रोगोंमें गाढ़ा पीला जमा हुआ पीवका स्राव।

सम्बन्ध।—सदृश।—हिपर, साइलीसिया ; कैलेण्डुला। जहाँ पीव सञ्चय हुआ करता है अथच फोड़ा बैठता नहीं है या फटता नहीं है, ऐसे स्थानमें कैल्केरिया-हाइपोफास्फोरिकाके प्रयोगसे सञ्चित पीव सूखकर फोड़े अच्छे हो जाते हैं। हिपरकी अपेक्षा कैल्केरिया सल्फकी क्रिया गहरी होती है। हिपरके बाद साइलिसियाका प्रयोग कर यदि फ़ायदा न हो तो कैल्केरिया-सल्फ्युरिकाका प्रयोग करना चाहिये।

शक्ति।—२ रे दशमिकसे ६ ठा दशमिक विचूर्ण या ३०, क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

कैलेण्डुला आफिसिनेलिस।
(CALENDULA OFFICINALIS)

दूसरा नाम।—मेरी गोल्ड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गेंदेका पत्ता और फूलसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—फोड़ा; स्तनमें पीव सञ्चय ; बाघी ; दूषित फोड़ा ; जले हुए जखम ; बहरापन ; आँखोंका प्रदाह ; ज्वर ; नासूर ; ग्रन्थियोंका विकार ; कामला ; प्रसव वेदना ; स्तनमें जखम ; धनुष्टङ्कार ; जखम ; कर्कटका जखम ; शिराओंका प्रदाह या सूजन। अँगुलहाड़ा ; ताजे जखम या कटे घाव।

उपयोगिता और आभास।—जखम आदिमें इसका बाहरी प्रयोग करने पर आर्निकाकी तरह लाभदायक है। चोट या कुचलनेके कारण जहाँ त्वचा फट जाय—वहांके तन्तु ध्वंस हों या न हों, वहाँ इसका प्रयोग करनेपर बहुत जल्द मांसाङ्कुर पैदा होकर ज़खम आदि आराम हो जाते हैं। इस औषधिके रोगी सर्दी लगते ही, खासकर तर हवामें, उन्हें तुरन्त ही सर्दी लग जाती है। साथ ही उन्हें फैलनेवाला विसर्प रोग हो जाया करता है। जखमके परिमाणकी अपेक्षा दर्द अधिक रहता है। दाँतमें दर्द, बहरापन, सहज़ या चोटकी वजहसे

युक्ता अर्बुद, त्वचा या तन्तुओंके फट जानेके कारण स्नायु-प्रदाह (Neuri-
-तिस), बहुत अधिक खूनका चय, और तेज दर्द। इसीकी वजहसे
ही, संन्यास (Apoplexy) के बाद, पक्षाघात और बहुत दिनोंका पुराना
ग्रयुका या अन्तर्वेष्ट प्रदाह वगैरह रोगमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली।

मन।—सहजमें ही डर जाना ; उत्तेजना ; सुस्ती इत्यादि।

मस्तक।—स्नायविक उत्तेजना-प्रवण-चित्त,—थोड़ेमें ही डर जाता और कातर हो पड़ता है, थोड़ी ही आवाजसे चौंक उठता है, सरमें दर्द,—टने या फाड़नेकी तरह दर्द (बेल, कोना, लाईं, नक्स, ओलि-ऐन, पल्स, लिसिया) ; मस्तिष्ककी जड़ता,—मानो गत रात्रिमें शराब आदि पी थी। रगार, बेल, नक्स, ओपि) ; भोजनके बाद ललाट देशीय अर्थात कपालमें नेवाला सर-दर्द और उसमें उत्ताप मालूम होना। (ऐकी, आर्स)।

नाक।—जलीय हवा या ठण्डी हवा लगते ही सर्दी होती है और कसे (कैल्के-सल्फ) हरे रंगका श्लेष्मा-स्राव होता है।

आँख।—चोटवाली जगहमें पीव पैदा हो जाना, नश्तर लगवाने बाद श्रु-स्थलीसे श्लेष्मा-स्राव। आँखोंमें धूआँ प्रवेश कर जानेके कारण उत्तेजना।

कान।—बहरापन—कानके भीतरवाली चक्रनालीकी (*Labyrinth*) कारकी वजहसे (पाइलो-कार्प),—जलीय वायु लगनेकी वजहसे बढ़ना। रेल ड़ीमें या दूरसे आई हुई आवाज अच्छी तरह सुन पड़ती है (ग्रेफ,ऐसिड-ड़ि) ; श्रवण-शक्ति बहुत तेज,—सामान्य शब्दसे ही चौंक उठता है (थार्नि, त, फ़ाफ़ि, कैमो, कोना, ऐसेरम, नक्स मेर, टेरेण्ट)। [डा० कूपर कहते हैं, -चौदह बरसके बच्चेके बहरापनमें कैल्केरिया आस्ट्रियेरम, और पन्द्रहसे ५ वर्षके मनुष्योंकी वधिरतामें कैलेण्डुला उपकारी और लाभदायक है।]

मुँह और गलेके भीतर।—ओंठसे आँख और कपाल तक ऐसा लूम होता है, मानो फूल गया है और उसमें जलन तथा डंक मारनेकी तरह र्द होता है। निम्न हनुकी नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और उनमें तना दर्द मालूम होता है, कि उन्हें छूना सहन नहीं होता और ऐसा मालूम ोता है, कि उनमें पीव संचय हो गया है या होनेकी सम्भावना है।

तन्तु।—खाँसी ; प्रदर ; प्रमेह—प्रभृति रोगोंमें गाढ़ा पीला जमा हुआ पीवका स्राव।

सम्बन्ध।—सदृश।—हिपर, साइलीसिया ; कैलेण्डुला। जहां पीव सञ्चय हुआ करता है अथच फोड़ा बैठता नहीं है या फटता नहीं है, ऐसे स्थानमें कैल्केरिया-हाइपोफास्फोरिकके प्रयोगसे सञ्चित पीव सूखकर फोड़े अच्छे हो जाते हैं। हिपरकी अपेक्षा कैल्केरिया सल्फकी क्रिया गहरी होती है। हिपरके बाद साइलिसियाका प्रयोग कर यदि फ़ायदा न हो तो कैल्केरिया-सल्फ्युरिकाका प्रयोग करना चाहिये।

शक्ति।—३ रे दशमिकसे ६ ठा दशमिक विचूर्ण या ३० क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

कैलेण्डुला आफिसिनैलिस।

(CALENDULA OFFICINALIS)

दूसरा नाम।—मेरी गोल्ड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गेंदेका पत्ता और फूलसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—फोड़ा ; स्तनमें पीव सञ्चय ; बाघी ; दूषित फोड़ा ; जले हुए जखम ; बहरापन ; आँखोंका प्रदाह ; ज्वर ; नासूर ; ग्रन्थियोंका विकार ; कामला ; प्रसव वेदना ; स्तनमें जखम ; धनुष्टङ्कार ; जखम ; कर्कटका जखम ; शिराओंका प्रदाह या सूजन। अँगुलहाड़ा ; ताजे जखम या कटे घाव।

उपयोगिता और आभास।—जखम आदिमें इसका बाहरी प्रयोग करने पर आर्निकाकी तरह लाभदायक है। चोट या कुचलनेके कारण जहां त्वचा फट जाय—वहांके तन्तु ध्वंस हों या न हों, वहां इसका प्रयोग करनेपर बहुत जल्द मांसाङ्कुर पैदा होकर जखम आदि आराम हो जाते हैं। इस औषधिके रोगी सर्दी लगते ही, खासकर तर हवामें, उन्हें तुरन्त ही सर्दी लग जाती है। साथ ही उन्हें फैलनेवाला विसर्प रोग हो जाया करता है। जखमके परिमाणकी अपेक्षा दर्द अधिक रहता है। दांतमें दर्द, बहरापन, सहज या चोटकी वजहसे

स्नायुका अर्बुद, त्वचा या तन्तुओंके फट जानेके कारण- स्नायु-प्रदाह (Neuritis=स्नायुप्रदाह), बहुत अधिक खूनका चय, और तेज दर्द। इसीकी वजहसे सुस्ती, संन्यास (Apoplexy) के बाद, पक्षाघात और बहुत दिनोंका पुराना जरायुका या अन्तर्वेष्ट प्रदाह वगैरह रोगमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली।

मन।—सहजमें ही डर जाना; उत्तेजना; सुस्ती इत्यादि।

मस्तक।—स्नायविक उत्तेजना-प्रवण-चित्त,—थोड़ेमें ही डर जाता है और कातर हो पड़ता है, थोड़ी ही आवाजसे चौंक उठता है, सरमें दर्द,—छेदने या फाड़नेकी तरह दर्द (बेल, कोना, लाई, नक्स, ओलि-ऐन, पल्स, सिलिसिया); मस्तिष्ककी जड़ता,—मानो गत रात्रिमें शराब आदि पी थी। (एगार, बेल, नक्स, ओपि); भोजनके बाद ललाट देशीय अर्थात कपालमें होनेवाला सर-दर्द और उसमें उत्ताप मालूम होना। (ऐको, आर्स)।

नाक।—*जलीय हवा या ठण्डी हवा लगते ही सर्दी होती है और* नाकसे (कैल्के-सल्फ) हरे रंगका श्लेष्मा-स्राव होता है।

आँख।—चोटवाली जगहमें पीब पैदा हो जाना, नश्तर लगवाने बाद अश्रु-स्थलीसे श्लेष्मा-स्राव। आँखोंमें धूआँ प्रवेश कर जानेके कारण उत्तेजना।

कान।—बहरापन—कानके भीतरवाली चक्रनालीकी (Labyrinth) विकारकी वजहसे (पाइलो-कार्प),—जलीय वायु लगनेकी वजहसे बढ़ना। रेल गाड़ीमें या दूरसे आई हुई आवाज अच्छी तरह सुन पड़ती है (ग्रैफ, ऐसिड-नाई); श्रवण-शक्ति बहुत तेज,—सामान्य शब्दसे ही चौंक उठता है (आर्नि, बेल, काफि, कैमो, कोना, ऐसेरम, नक्स फेर, टेरेण्ट)। [डा० कूपर कहते हैं, कि चौदह बरसके बच्चेके बहरापनमें कैल्केरिया आस्ट्रियेरम, और पन्द्रहसे ४५ वर्षके मनुष्योंकी बधिरतामें केलेण्डुला उपकारी और लाभदायक है।]

मुँह और गलेके भीतर।—ओठसे आँख और कपाल तक ऐसा मालूम होता है, मानो फूल गया है और उसमें जलन तथा डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। निम्न हनुकी नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और उनमें इतना दर्द मालूम होता है, कि उन्हें छूना सहन नहीं होता और ऐसा मालूम होता है, कि उनमें पीब संचय हो गया है या होनेकी सम्भावना है।

पाकस्थली ।—बच्चेने स्तनका दूध पिया है पर तुरन्त ही उसे भूख मालूम होने लगती है ; राक्षसी भूख (वोवि, कैल्के, कार्बि, चिनिनम-सल्फ, सिना, आयोड, मार्क, फास, स्ट्रैमो) ; रोयें खड़े हो जानेके साथ ही साथ छातीमें जलन (आर्जेण्ट-नाई, कैल्के-कार्ब, नक्स,) । वक्षमें मिचली मालूम होती है, (मार्क, ओलि-ऐन) । वमन, पेट खाली मालूम होता है, (इग्ने, काकु, नेट्र-म्यू, टियुक्रि ; लैके) । ऊपरी पेट फूला हुआ (युजिनिया, नेट्र-म्यू, पैरिस, सिपि, ऐण्टि-टार्ट) । शरीर हिलानेके समय उदरके बाईं ओर खिंच खिंचकर दर्द मालूम होता है, स्थिर रहनेपर दर्द मालूम होता है ।

पेशाब ।—बार बार पेशाबका वेग और बार बार जलनके साथ, फीके रंगका, निर्मल पानीकी तरह पेशाब होना । बहुत शीत या कम्पनकी अवस्थामें मूत्रनालीके भीतर फटनेकी तरह दर्द ; मसाना या वृक्ककी क्रियामें विकार की वजहसे ज्वरका भाव या बेचैनी ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—योनिके बाहरकी ओर मसे निकलते हैं । (थूजा) । खांसीके साथ रजोलोप । जरायु-ग्रीवाके पुराने अन्तर्वेष्ट (Internal-lining) का प्रदाह, प्रतिश्याय या सर्दी Catarrah), प्रदर आदिके स्रावकी वजहसे जरायु ग्रीवामें जखम आदि पैदा हो जाते हैं (कैलेण्डुला लोशनका बाहरी प्रयोग और आर्स, मार्क-सोल, और मार्क-कोरका भीतरी प्रयोग ; जरूरत दिखाई देनेपर ऐसिड-नाई या लाइकोपोडियमका प्रयोग करना चाहिये । कोई कोई हाइड्रेस्टिस लोशनका भी बाहरी प्रयोग किया करते हैं) । स्तनकी ग्रन्थियाँ सबमें दर्द हो जाता है और वे फूल उठत हैं, (कोना, स्क्रौफ्युलरिया नोडोसा) ।

श्वास-यंत्र ।—खांसी,—हरे रंगका श्लेष्मामय लगम (आर्स, कैमो इग्ने, कार्बो-वेज, फेर, कैली-बाई, लाइको, पल्स, स्ट्र) ; स्वरभङ्ग (फास, कार्बोवेज, कार्बि) अ र इसके साथही वंक्षण प्रदेशीय या पुट्ठेकी छिद्रका फैलना ।

त्वचा ।—पीले रंगकी और रुखड़ी । जखम आदि जल्दी आराम हो जाते हैं और उनमें पीव आदि नहीं जमा ह पाता । चोटकी वजहसे फटी हुई त्वचा, नश्तर लगवानेका जखम वगैरहकी तन्तु ध्वंस हों तो यह बहुत जल्द स्वस्थ मांसाङ्कुर पैदाकर रोगवाली जगहको आरोग्य कर देता है ।

ज्वर।—शीतार्त्तता—जाड़ा लगना—जोरकी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती; पीठमें सिहरावन पैदा हो जाता है या कांप उठती है; पर हाथ रखनेपर त्वचा गर्म मालूम होती है, असन्तोष, क्रोध आ जाना और विचारके साथ औंघाई; रातमें रोगी छटपटाता रहता है; बार बार नींद खुल जाती है, बार बार पेशाब लगता है और पानी पीनेकी इच्छा होती है और किसी अवस्थामें भी उसे आराम नहीं मालूम होता। सन्ध्याके आरम्भमें उत्ताप पैदा हो जाता है, बार बार प्यास, जाड़ा लगना और कम्पन, विशेषकर पानी पीने बाद (कैप्सि), माथा और हाथ बरफकी तरह शीतलावस्थामें रहते हैं। सन्ध्याके समय उत्ताप पैदा हो जाना और बीच बीचमें कम्पन तथा पानी पीनेकी इच्छा, शीतके समय मूत्रनालीके भीतरकी त्वचामें रगड़की तरह तकलीफ।

वृद्धि।—मेघसे घिरे और अंधड़ पानीके दिनोंमें तथा अंधेरेमें।

सम्बन्ध—सदृश।—हैमा; आर्नि, हाइपर, सिम्फिट और हाइड्रैस्टिस के बाहरी प्रयोगके सम्बन्धमें सदृश है। बहरापनके सम्बन्धमें—मार्क, चिनिन-सल्फ, कैल्के-कार्ब, पाइलोकार्पाइन, फेरम, पाइक्रिकम, कैलि-आयोड, नेट्र-कार्ब ग्रैफ, और ऐसिड-नाइट्रिक इसके सदृश गुण-विशिष्ट हैं।

दोषघ्न।—आर्निका, कैम्फरके साथ इसका विसदृश सम्बन्ध है। हिपर अनुपूरक है।

शक्ति।—मूल अर्कसे तृतीय दशमिक क्रम तथा बाहरी प्रयोगके लिये मूल अरिष्ट गुनगुने हुए पानीमें मिलाकर और समयपर गर्म पानीमें प्रयोग किया जाता है।

कैलेट्रोपिस जाइगेण्टिया।

(*CALOTROPIS GIGANTEA*)

दूसरा नाम।—मैडर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकाके मतसे कन्द समेत छालसे मदर टिंचर तैयार किया जाता है। परन्तु डाक्टर क्लार्कका कथन है, कि कन्द समेत जड़की छालके रससे भी मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—इसकी जड़, छाल और रस के करनेवाला है, पसीना लाता है, धातुमें परिवर्त्तन कर देता है और विरेचक दवाके रूपमें बहुत दिनोंसे इस देशमें काममें लाया जाता है। इसके सीकड़की छालको चूरकर दूधकी चीनीके साथ आमाशय रोगमें इपिकाकुआन्हाके बदले यदि व्यवहार किया जाये और कुष्ट-व्याधि, फील-पाँव (गोद—Elephantitis) और उपदंशकी वजहसे पैदा हुई बीमारियोंमें विशेष लाभ हुआ करता है। उपदंशकी वजहसे यदि रक्तहीनता पैदा हो जाये तो ज्यादा फायदेमन्द है। या पाकाशयमें गर्म मालूम होना—इसका एक विशेष निर्णायक लक्षण है। नीचे लिखे हुए कई इसके क्रियाफल हैं—कमजोरी, थकन मालूम होना, माथा खाली मालूम होना, भों भों आवाज, सरमें दर्द और जड़ता, शीतार्त्तता (जाड़ा मालूम होना), मिचली और पित्तका वमन, बार बार पेशाव, उरुदेशमें दर्द, स्पर्शका सहन न होना और लाल हो जाना; दोनों पैरोंमें दर्द; दोनों जँघाएँ फूल जाती हैं। दोनों पैर अकड़ जाते हैं और चल नहीं सकता; हाथ और पैरमें दर्द, पहले बायें फिर दाहिने पैरमें दर्द होता है। दर्दका बढ़ना—रोगवाली जगह हिलाने या उसपर भार देनेसे; उपदंश (जब मार्क्युरियसका प्रयोग अनुचित नहीं होता); उपदंश रोग आराम हो जाने बाद शरीर खूनसे रहित हो जाना गौण (Secondary) उपदंश।

स्थूलकायत्व।—(Obesity=फाइटोलेका-बेरि) रोगमें इसके सेवनसे माँस घट जाता है, पर भारीपन नहीं घटता।

त्वक रोग।—(Lupus)-इस रोगमें भी इससे बहुत फायदा होता है। प्रथम दशमिक क्रमके व्यवहारसे एक युवकके गलेका त्वक या सफेद रंगका जखम आराम हो गया था। इस चिकित्साके चौदह दिन पहलेसे इस युवकका पैर मिट्टीसे न लगा था।

सम्बन्ध।—सदृश—मार्क-सोल, सार्सा, कैलि-आयोड, ऐसिड-नाई, इपिकाक, बार्बेरिस, ऐकुई, हिपर, बेसिलाइनम।

दोषघ्न।—कैम्फर और काफिया।

शक्ति।—मूल अर्क एकसे ५ बून्द नित्य ३ घण्टेके अन्तरसे।

कोल्था पैलस्ट्रिस।

(CALTHA PALUSTRIS OR ARCTICA)

दूसरा नाम।—एक तरहका गेंदा जातीय पुष्प।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्ते और फूलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—कैन्सर और जल भरे छाले या अकौत रोगमें यह लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—सरमें चक्कर आना और कानमें भों भों आवाज़। मुँह फूलकर सफेद आभा लिये कोमल हो जाता है। जीभ मोटी, मल भरी; सफेद लेप-चढ़ी। पेट फूला हुआ और ऐसा मालूम होना मानो पेटका ऊपरी अंश और आँतें मरोड़ खा रही हैं। वायु जोरसे निकलता है। इसके साथ ही बहुत ज्यादा पाखाना होता है। पेशाब थोड़ा, गाढ़ा, लाल रङ्गका और पेशाबके समय जलन होती है। हाथ पैरोंमें भार और सुन्नपन मालूम होता है। सन्धि समूहोंमें मानो अकड़न और खींचन मालूम होती है। चलता चलता ढुलक पड़ता है, समूची देह काँपती रहती है।

त्वचा।—उरुदेश और पैरोंमें लाल दाग। उरुदेशका भीतरी अंश सूखा, गुटिकावृत्त, बहुत खुजलानेवाला और चलनेके समय बहुत ज्यादा खींचन मालूम होती है। शरीरके कितने ही स्थानोंमें अकौता, लाल रङ्गसे घिरा हुआ और बहुत खुजलानेवाला। इसके अलावा रस भरे छालोंकी तरह रस भरे दाने निकलते हैं। (नया—रासटक्स ; बहुत दिनोंका=आर्स ; उपदंश=मार्क-कोर।)

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम।

कैम्फोरा आफिसिनेरम।
(CAMPHORA OFFICINARUM)

दूसरा नाम।—कपूर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कपूरके साथ सुरासार मिलाकर मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—हृद्शूल; शय्याक्षत, कालेरा या विसूचिका; सर्दी; आक्षेप; मृगी; उद्भेदका गायब हो जाना; विसर्प; प्रमेह; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ; सर्दी; स्मरणशक्तिकी कमजोरी; आमवात; इन्द्रिय-शक्तिकी प्रबलता; कम्पन; अनिद्रा; सांप काटना; मूत्र-कृच्छ्रता; सूर्याघात या सर्दी गर्मी; धनुष्टङ्कार; तम्बाकूका अभ्यास; मूत्रनालीका संकोचन; पेशाब रुकना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रोगके विषयमें सोचनेसे घटना; जिनका शरीर और मन कमजोर है, और जिन्हें सर्दी सहन नहीं होती, ऐसे मनुष्योंकी बीमारीमें उपयोगी है (डा॰ ऐलेन)। इसके लक्षण शारीरिक क्रियाका ह्रास या हिमाङ्ग अवस्था (Collapse) बताते हैं—और खासकर विसूचिका रोगमें। सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा अथवा रोगी शरीरका कपड़ा या ओढ़ना दूर उतार फेंकता है (मिडोराइन, सिकेल)। सर्दीकी पहली अवस्थामें रोगीको बहुत शीत मालूम होता है और उसे बार बार छींक आती है। इसका एक अनन्य साधारण लक्षण यह है, कि रोगी जब अपने रोगके विषयमें सोचता है, तो रोग घट जाते हैं (हेलिबोरस; सोचनेपर तकलीफ बढ़ती है=कैल्के-फास, हेलोन, ऐसिड-मार्क, कास्टि, वेराट्र, पेट्रोल, मिडोराइन; रोगके विषयमें सोचते ही तुरन्त रोग पैदा हो जाता है=ऐसिड-आक, आक्साइ ट्रोपिस अनमना रहनेपर अच्छा रहता है=हेलोन, पाइपर-मिथि)। सारी देहमें दर्द और स्पर्श सहन नहीं होता (एपिस, आर्नि, बेल, कैलि-का, लैके, नक्स, मस, टेलूरि) रोगी शीत बिलकुल ही सहन नहीं कर पाता (हिप, कैलमि, सोराइन)। आगे लिखे कई लक्षण कैम्फोराके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं—शरीरकी त्वचा बरफकी तरह ठण्डी हो जाती है और रोगी एकाएक

प्रत्यागत हो जाता है, हाथ पैरोंमें अकड़न। धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप रोगमें बार २ ओंठ हिलानेकी वजहसे दाँत निकल आना (नक्स-वोम, फाइटो)। भीतर तो ताप रहता है, पर बाहर जाड़ा मालूम होता है, जीभ बरफकी तरह ठण्ढी, स्वर बहुत तेज और ऊँचा, या विकृत और कर्कश, शरीर बरफकी तरह ठण्डा पर रोगी शरीरपर कपड़ा नहीं रखना चाहता। ऊपरी ओंठके संकोचनकी वजहसे दाँत निकलनेके साथ ही साथ मिचली, धामनिक आक्षेप, श्वास-कृच्छ्रता, और शरीरकी त्वचा शीतल और नीलिमा लिये, मूत्र-कृच्छ्रता, और बार बार लिङ्गोच्छ्वास, शरीरमें कोई तेज़ विष या शक्ति प्रवेश करनेकी वजहसे एकाएक हिमाङ्ग (Collapse); जीवनी शक्तिका क्रमशः क्षय, बार बार मूर्च्छा पैदा होकर रोगीकी अवस्था धीरे धीरे सङ्कटापन्न हो जाती है। शरीर बरफकी तरह ठण्डे पसीनेसे भरा तथा हिमवत शीतल, दोनों पैरोंमें बार बार अकड़न, अपनी अवस्थाकी चिन्तामें अन्यमनस्क हो जाना चाहता है; याददाश्त गायब हो जाती है। अकेले रहनेमें डरता है; शीत और ठण्डी हवाका स्पर्श सहन न होना; मस्तकका आक्षिप्त भाव,—दाहिना पार्श्व अकड़ जाता है या टेढ़ा हो जाता है और शरीरका बाकी अंश शिथिल हो पड़ता है; फैलनेवाला विसर्प क्रमशः अन्तरतम प्रदेशमें फैल जाता है; रुका हुआ उद्भेद (क्यूप्रम); शरीरकी त्वचा दर्द भरी और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता।

लक्षणावली।

मन।—बेचैनी; अत्यन्त अस्वाच्छन्द्य। मानसिक यंत्रणाओंसे छटपटाया करता है। अकेले अँधेरेमें रहने से डरता है। वर्तमान तकलीफके विषयमें सोचनेपर, तकलीफ घट जाती है (हेलिबोरस)। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह हवाकी अपेक्षा भी हलका और शून्यमें पड़ा है। (ऐसे, कैनाबिस, हाइपिर, युगलेन्स, रिजि, लैक-कैन, स्टिक्टा, वैलि)। अनुभव शक्ति, दर्शन, श्रवण और स्पर्श और घ्राण-शक्ति वगैरहका लोप=विलुप्त स्मृति, यहाँ तक कि किसीके छूनेपर भी समझ नहीं सकता।

मस्तक।—प्रतिश्याय या सर्दीकी वजहसे छींकके साथ सरमें दर्द (कैमो, कार्बो-वे, नक्स), पश्चात्-मस्तिष्क (Cerebellum) में टपककी तरह दर्द; सरमें चक्कर आनेके साथ माथेमें भार मालूम होना,—विशेषकर माथा झुकानेपर (बेल, ब्राई, लाई, नक्स, पेट्रोल, सल्फ)। सरमें चक्कर आनेके साथ

माथेमें भार मालूम होना, माथा पीछेकी ओर ढुलक पड़ता है। चलनेके समय मतवालोंकी तरह ढुलका करता है। मस्तकका आक्षिप्त भाव,—दाहिनी ओर खिंचा करता है।

आंख।—चीजें बहुत चमकीली और उज्वल दिखाई देती हैं। दृष्टि-पथ पर (आँखके सामने) आगकी चिनगारियाँ और आगके समान गोलाकार पदार्थ सब उड़े फिरते हैं और कभी कभी अन्धकार या तिमिरमय पदार्थ दिखाई देते हैं। दृष्टि स्थिर, एक ओर बँधी हुई, एक पुतली ऊपरकी ओर और दूसरी बाहरकी ओर खिंची रहती है।

नाक।—दोनों नासापुट बन्द और बार बार छींक। एकाएक शीत उत्तापके परिवर्त्तनसे पानीकी तरह श्लेष्मामय सर्दीका स्राव होने लगता है। नाक बरफकी तरह ठण्डी और संकुचित। निश्वास अत्यन्त शीतल। (वेरेट, जेट्रोफा)।

मुखमण्डल।—चेहरा रक्तशून्य ; गाल, आँख वगैरह गड्ढेमें धंसी ; बिगड़ी हुई चेहरेकी भङ्गी ; नीले रङ्गकी और बरफकी तरह ठण्डी, शिथिल, काँपती हुई।

पाकस्थली।—उदरके ऊपरी प्रदेशमें दबावकी तरह मालूम होना। एकाएक वमन, पाकाशयमें पहले ठण्ड और इसके बाद ही उसमें जलन मालूम होना। प्यास बहुत ज्यादा, पानी पीनेपर भी तृप्ति नहीं होती।

मल।—विसूचिका रोगाधिकारमें मिचली, वमन वगैरह स्रावका रुक जाना ; शरीर बरफकी तरह ठण्डा। सांघातिक विसूचिका,—पेटकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन, शरीर बहुत ठण्डा, मानसिक यन्त्रणा ; बहुत सुस्ती ; जीभ और मुख-विवर बरफकी तरह ठण्डे ; चावलके धोअनकी तरह मल, हठात दैहिक क्रियाकी हिमाङ्ग अवस्था, दस्त और कै तो नहीं आती पर एकाएक शारीरिक क्रियाका पतन हो जाता है, रोगी शय्यागत हो जाता है और शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है।

मूत्र।—पेशाबमें जलन और पेशाब रुक जाना, मूत्रस्थलीको ग्रीवामें संकोचन मालूम होना। मूत्रस्थली भरी रहती है। पर पेशाब नहीं होता। (ओपि) धीरे धीरे और खूब पतली धारसे पेशाब होता है। पेशाब पीली आभा लिये हरा, लाल इत्यादि।

पुं-जननेन्द्रिय।—प्रमेह रोगाधिकारमें बार बार मूत्रनालीका मुंह घिर जाता है। प्रबल रमणेच्छा। तकलीफ देनेवाला लिङ्गोच्छ्वास। अस्वाभाविक उपायोंसे रमणेच्छाकी तृप्ति करना। प्रति रात्रिमें रेतस्खलन हो जाता है। (डिजिटेलिन)

स्त्री-जननेन्द्रिय।—उत्तेजना ; प्रसवकी तरह दर्द, आर्त्तवकी अधिकता।

श्वास-यंत्र।—हृद्-प्रदेशमें दर्द मालूम होना ;—खासकर यदि कोई रोगीसे जोरसे बात करता है। छातीमें बहुत ठण्डक मालूम होना और लगातार औंघाई आते रहना। हृत्पिण्डसे दूरके अंशमें खूनके दौरानकी कमीकी वजहसे हाथ पैर पहले ठण्डे होने लगते हैं। श्वास-रोधक दबाव मालूम होना। दमा,—शारीरिक परिश्रमसे वृद्धि। भयानक यन्त्रणाजनक, शरीरको हिला देने वाली सूखी खांसी। सांस ठण्डी। श्वास-प्रश्वास रुकी हुई। कलेजा धड़कना ;—इसके साथ ही श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी। चेहरा, हाथ पैर और सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा ; चेहरा रक्तशून्य ;—इसके साथ ही भोजनके बाद और जागनेपर पेशियोंमें सङ्कोचन मालूम होना।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि।—चोटकी वजहसे शरीरमें आक्षेप, शरीरका बाहरी-भाग बरफकी तरह ठण्डा, मुँह रक्त-शून्य और नीला ; मदरंग ; गहरी सुस्ती। समूची देहमें स्पर्श सहन न होना। त्वचा सूखी, बिना पसीनेवाली। हाथ,—गोटियां अच्छी तरह नहीं निकलतीं ; पर चेहरा बरफकी तरह, नीली-आंखें और गाल गड्ढेमें धँसे ; नाक सिकुड़ी और उठी हुई। रोगी किसी तरह भी शरीर पर वस्त्र नहीं रखना चाहता (सिकेल)। खसड़ा-रोगकी वजहसे पैदा हुए उपसर्ग। पैरकी पोटलीकी पेशीमें बार बार ऐंठन। अँगुलियां सब अकड़ी हुईं, फैली और आकारमें टेढ़ी, अंगूठा तलहत्थीके भीतरकी तरफ अकड़ जाता है। वंक्षण या पुट्ठेके स्थानपर, जानु और गुल्फ-सन्धिमें कड़कड़ाहट, खड़े होने पर जानु देश अवश और सुन-सा हो जाता है।

ज्वराधिकारमें।—समूची-देह बरफकी तरह ठण्डी (लेकेसिस-ऐक्युटैड्रियुला) और चेहरा मुर्देकी तरह। शरीरका ऊपरी भाग बहुत ठण्डा अथच शरीरपर ओढ़ना सहन नहीं होता, दूर फेंक देता है (सिकेलि) शीतसे कष्ट : विष दूषित सविराम ज्वर (वेरेट) वगैरहमें इससे बहुत लाभ होता है। नाड़ी क्षीण, सूक्ष्म और प्रायः गतिशून्य।

निद्रा ।—हाथ-पैर ठण्डे हो जानेके साथ ही नींद न आना। पेशियों का फड़कना, संकोचन और अस्थिरता। स्नायवीय उत्तेजनाकी वजहसे नींद न आना। नींदमें नाक बोलना और बार बार करवट बदलना; नींदमें प्रेत आदि डरावनी चीजें देखना।

वायु ।—भीतरी यन्त्रोंका काँपना। जाग्रत अवस्थामें सहजमें ही चौंक उठता है और उसे छातीमें धड़कन मालूम होती है। मोहभावके साथ वक्षोंका आक्षेप,—भरपूर न निकलने या रुके हुए उद्भेदकी वजहसे (क्यूप्रम आदि) अनुभव शक्तिकी कमी हो जाना, उसे छूनेपर भी स्पर्श अनुभव नहीं कर पाता।

दोषघ्न ।—ओपियम, डालकेमा, फास्फोरस।

तुलनीय ।—ओपियम (मादकता), लाइकोपो (माथा खिंचा हुआ) इत्यादि।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—समूची देह बरफकी तरह ठण्डी, मानसिक, और शारीरिक अस्थिरता और जलन भरी प्यास—इस लक्षणके सम्बन्धमें लैकेफा ऐफ्यूटेङ्गियुला (कोषातकी या भीयाँ का अरिष्ट) ठीक कैम्फोराके सदृश या अनुरूप है। अधिककर कार्बो-वेज ; उद्भेद लोप और हिमाङ्ग—सिकेलि (शरीर पर वस्त्र रखनेसे अनिच्छा); ओपि, वेरेट्रम, वगैरह भी आंशिक रूपसे इसके अनुरूप हैं। यह ताम्रकूट (तम्बाकू) विषनाशक है। प्रायः समस्त उद्भिदसे बनी दवाओंका ही प्रतिषेधक है।

शक्ति ।—स्पिरिट केम्फर १ बूंदसे ५ बूंदतक विसूचिका रोग पैदा होते ही चीनीके साथ प्रयोग करना चाहिये। सर्दी और प्रतिश्याय रोगमें १म दशमिक क्रम और पैरकी पोटलीको पेशीमें अकड़न होनेपर ३० क्रम अव्यर्थ फलदायक है। डा० सैलजरके मतसे स्पिरिट आफ केम्फरकी अपेक्षा दूधकी चीनीके साथ मिलाया कपूरका विचर्ण अधिक लाभदायक है।

कैम्फोरा मोनोब्रोमेटा।

(CAMPHORA MONOBROMATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अर्क।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—बच्चोंकी विसूचिका; पाकाशयकी सर्दी; सर्दी; अकौता; स्नायविक उत्तेजना; नींदमें व्याघात; शुक्र-क्षरण, (धात जाना) या शुक्रका पतलापन। ध्वजभङ्ग।

उपयोगिता और आभास।—स्नायवीय उत्तेजना और पेशियोंका सिकुड़ना-फैलना इसका प्रधान क्रिया-फल है और इसी कारणसे बच्चोंकी अकड़न और कम्पन और पक्षाघात आदिमें उपयोगी है। यह रमणियोंकी स्तन ग्रन्थिपर आक्रमणकर स्तनका दूध सुखा देता है, और शुक्रस्रावी नाड़ीको उत्तेजित कर बार बार रातके समय रेत-स्खलन पैदा कर देता है। इन सभी लक्षणोंसे मालूम होता है कि इस दवाका स्नायुमण्डलपर आधिपत्य है और इसी क्षमताकी वजहसे यह स्नायु-मण्डलीके उत्पत्ति स्थान मस्तिष्कको विकृत कर देता है और इसीलिये, इसके क्रिया-धीन मनुष्य दिग्-भ्रम, और दूसरी दूसरी तरहके विकारोंमें ग्रस्त रहते हैं।

लक्षणावली।

मन।—चेहरा लाल होनेके साथ ही साथ घोर विकारयुक्त, यहाँतक कि धनुष्टंकार आदि होनेका उपक्रम; गुल्म-वायु या मूर्च्छा-वायु रोगमें कभी हँसता है, कभी रोता है; दिक्-भ्रम हो जाता है, उत्तर दिशाको दक्षिण दिशा समझता है, और पूर्व दिशा उसे पश्चिम मालूम होती है। मोह प्राप्त अवस्था।

मस्तक।—मस्तिष्कमें रक्त-संचयकी अधिकता,—इसके साथ ही बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजनाकी वजहसे सरमें दर्द,—मानसिक उत्तेजना—बहुत पढ़नेकी वजहसे (ऐसेट, आरस, लैके, नक्स; ओलि-ऐन, पल्स, सिलि, सलफर), अनिद्राके साथ रक्तहीनताकी वजहसे सरमें दर्द (सिङ्कोना, ऐसिड-फास),

जननेन्द्रिय।—कमजोरी और शीत मालूम होनेके साथ ही साथ जननेन्द्रियकी शिथिलता; रमणेच्छा या रमण शक्तिका न रहना (कैलेड, ऐग्न,

कैक्ट, काली-ब्रोम, सेलिन, व्यूफो सेहाइटियेन्सिस)। काम प्रवृत्तिका उद्दीपन और बार बार लिङ्गमें कड़ापन होनेके साथ ही रातमें रेत:पात हो जाना (काली-ब्रोम, डिजि-टेलिन सिङ्कोना, ऐसिड-मार्का,—रमणियोंको होनेपर—कोना); जननेन्द्रियमें खुजलाहटकी वजहसे कामोन्माद (ओरिगेनम ; काली-ब्रोम, प्लैटिना, ऐसिड-नाई, कैन्थरिस) और गुल्म-वायुकी वजहसे उन्मादकी तरह आक्षेप ।

पेशाब ।—रातमें अनजानमें पेशाब हो जाना या पेशाब (गाढ़ा, निद्रा वस्थामें = बेल ; पहली नींदमें = सिपि ; तेज गन्धवाला पेशाब = ऐसिड-बैन ; क्रमिकी खुजलाहटकी वजहसे = सिना ; जिन बच्चोंको जल्दी नींद नहीं खुलती = क्रियो : बहुत गहरी नींदकी वजहसे = कैलि-ब्रोम) ।

सार्वाङ्गिक ।—अपस्मार या मृगी, गुल्मवायु रोग या मूर्च्छावायु और ताण्डव (Chorea) रोग आदिकी तरह अङ्ग प्रत्यङ्गोंमें आक्षेप और विक्षेप । शरीरका बरफकी तरह ठण्डा हो जानेके साथ पेशियोंमें ऐंठन और जी घबराना ।

सम्बन्ध ।—कैली ब्रोमेटम ; व्यूफो, सेहाइटियेन्सिस ।

शक्ति ।—२ रा दशमिक विचूर्ण (डा० कूपर) । हमलोग उच्चक्रमके पक्षपाती हैं ।

काञ्चेलेगुया ।

(CANCHALAGUA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है । जब फूल लगें तब संग्रह कर लेना उचित है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा); सविराम ज्वर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—कैलिफोर्निया देशमें और ग्रीष्म-प्रधान देशके सविराम ज्वरमें विशेषकर और एक तरहकी बहुव्यापक सर्दी (Influenza) रोगमें यह विशेष लाभदायक है ।

लक्षणावली।

माथा।—ऐसा मालूम होता है, मानो माथा कड़ा और भरा हुआ हो रहा है (ऐको, बेल, ब्राई, डैफनी, रास-रैड ; खाली मालूम होना=कथु, कूमम, पल्स): आंखोंमें जलन और कानमें बहुत अधिक सों सों भीं भीं शब्द।

मल।—सवेरे कड़ा गांठ गांठ (ओपि, ब्रायो)।

ज्वर।—समूचो देहमें विशेष कर पीठमें (पोलिपो, युपेट,-पार्फ, नैट्र-म्यू, सल्फ,) शीत मालूम होता है,—रातमें सोनेके समय बढ़ना (शय्या त्यागने बाद बढ़ना=कैल्म, नक्स ; सिलिसिया) सारे शरीरमें दर्द मालूम होना (आर्नि, युपेट) और स्पर्शका सहन न होना ; मिचली (युपेट, नैट्र-म्यूर, सैबाड) और ओकाई, पसीना निकलनेके समय चेहरा (लैके, नक्स) और दोनों बाहु बरफकी तरह ठण्डे और अंगुलियां सब धोबियोंकी अंगुलियोंकी तरह सिकुड़ जाती हैं (मार्क, वेरेट)।

सम्बन्ध।—सदृश।—युपे-पर्फोलियेटम, युपेटोरियम-पर्पुरियम, आर्निका, नक्स-वो।

शक्ति।—१ ले से ६ ठे दशमिक क्रम तक।

कैनाबिस-इण्डिका।

(CANNABIS INDICA)

दूसरा नाम।—भांग इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कच्चे पल्लव और पत्तोंसे मूल अर्क तैयार होता है। उद्भिदके विचारसे सैटाइवा भी एक ही जातीय है, पर दूसरे स्थानमें पैदा होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निस्पन्द वायु ; मदात्यय ; भ्रम या न होने वाली चीजें देखना ; मृगी ; प्रमेह ; सरमें दर्द ; उन्माद ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; पक्षाघात ; कामोन्माद ; तोतलाना ; मूत्र-विकार।

उपयोगिता और आभास।—मस्तिष्क और जननेन्द्रिय पर इसकी प्रधान क्रिया है। इसमें बहुत अधिक नशा होता है। इसके सेवनके समय दूरी-

का ज्ञान गड़बड़ हो जाता है,—एक घण्टा समय एक युग और पासवाला मकान एक मील दूर मालूम होता है। मनके भीतर नये भाव, भाव पर भाव असंख्य भाव उदय होते हैं,—बोलना आरम्भ करनेपर बोलता ही जाता है, बात किसी तरह खतम ही नहीं होती ; उसमें अलङ्कार बहुत भरा रहता है बोलते बोलते वह भूल जाता है, कि वह क्या कह गया। कोई कहानी पांच मिनिट तक कहते कहते एकाएक रुक जाता है और ऐसा समझता है, मानो वह दिन रात बोलता ही रहता है। इसी तरहकी विकृत बुद्धि कितने ही भावों से प्रकट होती है। इसकी क्रियाधीन स्नायुमण्डली सातवें में बँधी रहती है,—उत्तेजना चरम सीमापर पहुंची रहती है; इसीलिये अपस्मार, उन्माद और उन्मत्तता वगैरह स्नायवीय विकारसे पैदा हुए रोगों में इससे बहुत फायदा हुआ करता है।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत बोलना ; चित्तका उच्छ्वास ; समय बहुत दीर्घ मालूम होता है,—एक सेकेण्ड एक युगकी तरह मालूम होता है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, अरस, कैसी, सिडोराइन, नक्स, ऐनहेल ; समय बहुत जल्दी जल्दी बीतता है = कक्कु, थिरिड) ; थोड़ी दूरी या अन्तर भी बहुत अधिक मालूम होता है। दश हाथ दूरकी जगह दस मील मालूम होती है। बहुत भूलनेवाला,—बात बोलता बोलता अन्तिम बात, चिन्ता-सूत्र भूल जाता है ; बोलना चाहता है और बोलना आरम्भ करता है,—पर क्या कहना चाहता था, यह भूल जाता है। भाव पर भाव इस ढंगसे पैदा होते हैं, कि कोई भी विषय स्मरण नहीं कर सकता (ऐनाक्, लैक-कैन)। अनवरत ऐसी ही बातें सोचा करता है, जो होनेकी नहीं है। सामान्य बातमें भी ठहाका मारकर हँसने लगता है, अभी खूब आनन्द मना रहा है पर क्षण भर बाद ही दुःख प्रकाश करने लगता है। मृत्युको निकट समझकर बहुत डरने लगता है। ऐसा समझता है, कि कोई उसे पुकार रहा है, मानो वह गाने बजानेकी आवाज सुन रहा है ; क्षणभर तक आँख बन्दकर कितने सुख-स्वप्न देखता है, कितनी स्वर्गीय सुखोंकी कल्पनाएँ किया करता है इसका कोई ठिकाना नहीं है। समझता है, कि वह क्रमशः फूलता जाता है और उसकी देह बड़ीसे और भी बड़ी होती चली जाती है। शरीर बहुत थोड़ा मालूम होता है, मानो वह भूमिको स्पर्श नहीं किये हुए है और अनायास ही उड़ जा सकता है। (ऐसे, कैम्फो, स्टिक्टा, सिपा)

मस्तक।—रोगीको ऐसा अनुमान होता है, मानो उसकी माथेकी हड्डी क्रमसे एक बार जुड़ती है और फिर खुलती है। एक बार जुड़ जाती है और फिर अलग हो जाती है (ऐक्टिया); मानो उसकी हड्डी ऊँचे उठ गयी है (बैप, कैमो, कोबाल्ट, नैट्र-क्लो, विक्का)। उसे कभी कभी माथेमें ऐसा मालूम होता है, कि एकाएक "धम" कर उठता है (ऐलो; कोका); ललाटकी त्वचा मानो खिंचकर फैल गयी है (ऐडोनिस-वा, ऐसे, बैप, ऐसिड-कार्ब्ब, काफि, कैथेलेगुया); मस्तिष्कके भीतरसे धीमा भार-जनक टपक जैसा दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो माथा और गर्दनके पिछले भागमें कोई ज़ोरसे आघात कर रहा है। पेशाब रुकनेकी वजहसे सरमें दर्द। पेट फूलनेके साथ सरमें दर्द। अनजानमें माथा कांप उठना। सरमें चक्कर आना—उठनेके समय, मानो माथेके पिछले भागमें बेहोश करनेवाली चोट लग गयी—ऐसे ही अनुभवके साथ गिर जाना।

आँख।—स्थिर दृष्टि, दोनों आँखोंकी कैशिक शिराएँ सब लाल हो जाती हैं। पढ़नेके समय एक अक्षर दूसरेसे सट जाता है। भविष्यत और अन्तर-दर्शन शक्ति। आँखके सामने चकाचौंधी और झिलमिलाहट मालूम होती है।

कान।—दोनों कानोंमें बराबर दर्द रहना; कानमें टपक (कोल्को, मैग-म्यूर, फास) और पूर्णता मालूम होना। कानमें इस तरहका शब्द होना, मानो पानी खौल रहा है। कानमें सों सों भों भों शब्द।

मुखमण्डल।—निद्रालु और जड़बुद्धिकी तरह मुखका भाव। दोनों ओंठ मानो गोंदसे जुड़ गये हैं।

मुख-विवर।—निद्रितावस्थामें दांत कड़कड़ाना और कटकट शब्द करना। मुंह और ओंठ सूखे। सफेद आभा लिये फेन-भरे, गाढ़ी और लस-दार लार। बोली अस्पष्ट और तोतलानेकी तरह। गला सूख जाता है और ठण्ढा पानी पीनेकी बहुत प्यास रहती है।

पाकस्थली।—अधिक भूख लगना। भोजनसे पेटपर इतना दबाव मालूम होता है और श्वास-कष्टता पैदा हो जाती है, कि रोगीको वाध्य होकर कमर ढीली कर देनी पड़ती है। अन्ननालीके निम्न-द्वारमें दर्द मालूम होता है,—दबाने या रगड़नेसे आराम मिलता है।

मलनाली ।—मूत्रनालीकी मुखआयिका ग्रन्थिका बढ़ना और कड़ापन (Prostatic Hypertrophy)—मलद्वार या विटप और उसका ऊपरी भाग (Perineum) में ऐसा मालूम होता है, मानो रोगी एक सामनेवाले गोलेपर बैठा हुआ है।

पेशाव ।—हँसने पर मूत्र-ग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है ; मसानेमें दर्दकी वजहसे रोगी रातमें सो नहीं सकता। लिङ्गमुण्डको दबानेपर लारकी तरह श्लेष्माकी भांति एक तरहका स्राव होता है। पेशाबके पहले, पेशाबके समय, और पेशाब करनेके बाद मूत्रनालीके भीतर भयानक जलन और दाहकी तरह तकलीफ। मूत्रनालीके भीतर भयानक जलन और दाहकी तरह तकलीफ। मूत्रनालीके भीतर सुई गड़नेकी तरह तेज दर्द। पेशाबके समय बहुत देरतक बैठे रहनेपर पेशाब होता है (आर्निका)। अन्तके पेशाबकी कई बूंदें अंगुलीसे लिङ्ग-मुख उठाकर निकालना पड़ता है। पेशाब लसदार और श्लेष्मामय ; बूंद बूंद निकलता है (कैन्थ, क्लिमैट, कोना, कोपे, डालका, युफोर्बि, नक्स, पल्स, स्टेफ, कास्टि)। पेशाबको धार मानो विभक्त होकर निकलती है (कैन्थ, रास)। जलन और यंत्रणाके साथ गड़बड़ी मालूम होना और बार बार पेशाबका वेग होना।

पुं-जननेन्द्रिय ।—रमणके बाद कमरमें दर्द। लसदार लार-भरा श्लेष्मा निकलना। कामोन्माद (ऐसिड-फाई, हाइड्रोफोब ; फास)। रमणके बाद बहुत देरतक लिङ्गके भीतर कनकनी हुआ करती है ; यन्त्रणाजनक लिङ्गोच्छ्वास (Chordee = कैलि-ब्रोम; थूजा)। विटप प्रदेशमें (Perineum) या मलद्वारके सामनेवाले ऊपरी भागमें सूजन मालूम होना ; ऐसा अनुभव होना, मानो एक गोलेपर बैठा हुआ है (पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें लसदार मूत्रमय श्लेष्मा-स्रावके साथ = सिङ्कोना)। बार बार लिङ्गोद्गमके साथ प्रबल रमणेच्छा।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रजःस्राव—गाढ़ा यन्त्रणा पैदा करनेवाला और बहुत ज्यादा होता है, पर खून जमा हुआ नहीं होता। जरायुशूल—इसके साथ ही अत्यन्त स्नायवीय अस्वाच्छन्द्य और अनिद्रा ; बन्ध्यात्व, (बोर, अरम-म्यूनेट)।

श्वासयंत्र ।—तरल श्लेष्माके साथ दमा रोग। छातीमें दबाव मालूम होनेके साथ श्वास प्रश्वासमें गड़बड़ी,—सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना। खांसी,—इसके

साथ ; ही ऐसा मालूम होना, मानो वक्षदेशकी मध्यकी हड्डीको नली खींची जा रही है। बहुत जोर लगाकर दीर्घ-निश्वास ग्रहण करना पड़ता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक रही है और पंखेसे हवा करनेको कहता है (कार्बो-वे, लेके)।

हृत्पिण्ड।—ऐसा मालूम होता है मानो बूंद बूंद पानी गिर रहा है, (माथेपर गिर रहा है, या मलद्वार या हृत्पिण्डसे गिर रहा है=कैन-सैट,) हृद्‌स्पन्दनकी वजहसे नींद खुल जाती है, हृत्पिण्डमें फाड़नेकी तरह तकलीफ और दबाव ; नाड़ी बहुत धीमी रहती है ; (डिजि ; कैलमिया ; एपिस)।

प्रत्यङ्गादि।—एक कन्धेसे दूसरे कन्धेतक और मेरुदण्डमें दर्द मालूम होता है और इसी वजहसे रोगीको बाध्य होकर माथा झुकाये रहना पड़ता है,—सीधा चल नहीं सकता। बाहुके ऊपरसे नीचेतक और जानु देशसे नीचेकी ओर बराबर चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है। निचले अंगका पूरा पूरा पक्षाघात। तलवे और टांगकी पोटली (Calves) में दर्द, कुछ दूर चलनेसे थक जाता है। दिनमें सोये रहनेकी प्रबल इच्छा।

त्वचा।—शीतसे तकलीफ मालूम होती है—शरीरके स्वाभाविक उत्तापका घट जाना। खाने बाद हाथ, चेहरा और नाक ठण्ढी मालूम होती है। बहुत:ज्यादा परिमाणमें ठण्ढा पसीना और वह ललाटके किनारे बूंद बूंदके आकारमें दिखाई देता है।

निद्रा।—बहुत औंघाई आती है,पर सो नहीं सकता। आकाशकी ओर हाथ उठाकर सोता है। दुरारोग्य अनिद्रा रोग। निद्रावस्थामें बात करता है और सोते सोते हाथ पैर पटकने लगता है और उससे नींद खुल जाती है। प्रत्येक बार:निद्रावस्थामें श्वासरोध होनेका उपक्रम (Nightimare—ऐको, नक्स, ओपि, फास, पल्स, सिङ्को-रियुटा, सिलिसिया ; सल्फ, वेलि)। कामोद्दीपक सपने (ओलियेन, ऐसिड-फास, थूजा, वायोला-ट्राई) ; लिङ्गमें उत्तेजना होना और बहुत ज्यादा वीर्य-क्षय होना। सपनेमें मुर्दा देखना (जखमी देहके सपने=आर्नि, कौना, नक्स,)।

सम्बन्ध।—सदृश।—शब्दसे चेतनाकी अधिकता—ऐसिड-नाइट्रिक ; काफिया (सब तरहके शब्दोंसे) ; बोरक्स (सामान्य शब्दसे) ; मानो स्वप्न राज्यमें

—ऐम्ब्रा, ऐनाकार्ड, काना, कूप्र, थेडा, स्ट्रैमो, जिङ्कम ; अँधेरेमें डर—बेराइटा, कार्बो-ऐनि, कौल्को, फास, स्ट्रैम इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम। डा० नैश, ऐलेन वगैरह विज्ञ चिकित्सकोंने २०० शततमिक क्रम तक व्यवहार कर विशेष लाभ उठाया है।

कैनाबिस सैटाइवहा।

(CANNABIS SATIVA)

दूसरा नाम।—गांजा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—युरोप या अमेरिकाका गांजा ; स्त्री और पुरुष दोनो जातियोंकी कलीसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—उदरी ; दमा ; मोतियाबिन्द ; मूलाधारका प्रदाह ; आँखमें सफेद दाग ; प्रमेह ; सरमें दर्द ; मूर्च्छावायु ; बालिकाओंका श्वेत प्रदर ; नाकसे खून गिरना ; हृद्कम्पन ; पार्श्वमें दर्द ; फुसफुस प्रदाह ; तोतलाना ; पेशाबके बाद रक्तस्राव ; धनुष्टंकार ; स्वरनलीकी सर्दी ; मूत्रनालीका दूषित जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मूत्रयंत्र, जननेन्द्रिय, फेफड़ा, हृत्पिण्ड और स्नायुमण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया होती है ; इन सब यन्त्रोंपर इसकी असीम क्षमता प्रकट हुआ करती हैं। इसलिये, प्रमेह, दमा, हृद्स्पन्दन वगैरह रोगोंमें इसका आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। भोजनके बाद, परिश्रम या बातचीत करने (स्टैन) या लिखनेपर रोगी बहुत सुस्त हो जाता है। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने उसपर गर्म पानी ढाल दिया है। मानो माथेके ऊपर और मलद्वार, पाकाशय और हृदपिण्डसे (कैनाबिस-इन) बूंद बूंद पानी गिर रहा है। भोजन आदिकी सामग्री निगलनेपर वह दूसरी राहसे चली जाती है (ऐनाक)। श्वासरोगाधिकारमें केवल खड़े होकर श्वास प्रश्वास की क्रिया सम्पादन करनी पड़ती है। मूत्रनलीसे मूत्राशय तक तेज जलन ; मूत्रनालीमें बेहद दर्द ; रोगी पैर फैलाकर चलता है ; मूत्रनालीसे पीवकी तरह स्राव और उद्दीपना।

लक्षणावली।

मन।—विषाद भरा। हमेशा चित्तमें उद्वेग और आशङ्का बनी रहती है। कहना कुछ चाहता है, मुँहसे कुछ दूसरा ही निकल जाता है। दोपहरको पहले तो उदास रहता है, पर तीसरे पहर आनन्दमें रहता है। (ओपि) लिखनेमें भूल करता है।

मस्तक।—खड़े होने पर सरमें चक्कर आना (क्रोटन, साइक्लैमि, ओलियैन, ऐसिड-फास, रियुम; स्क्रोफ्यू, साइलि)। इसके साथ ही चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, कि बगलमें गिर जायगा; (कैन, कोना, ड्रोसि, युफोर, मेजि, रियुम, ऐसेट, स्पिजी, जिङ्कम)। शराब पीनेकी तरह उत्तेजना, मालूम होना,—मानो ढुलक पड़ेगा (आर्जेण्ट-नाई, बेल, कैम्फो, केलि, चिनन-सल्फ, जेल्सि, नक्स, ओपि, पल्स, रास)। माथेके ऊपरी भागमें भार मालूम होना और ऐसा मालूम होना मानो माथे पर ठण्डे पानीकी बूंदें गिर रही हैं (मानो बरफ है=कैल्के, वेरैट), ऐसा मालूम होना, मानो माथेकी त्वचामें सुरसुरी हो रही है।

आँख।—आँखका सफेद रङ्ग अस्वच्छ रहना (Opacity)=मोतियाबिन्द (फास, कोमल मोतियाबिन्द=कोलचि, युफ्रेसिया; शेषावस्थामें=सिलिसिया; सक्कस सिनेरेरिया मेरिटाइमा; आँखोंमें बंद बूंद डालनेसे बहुत फायदा होता है)। अँधेरा देखना या अन्धकार दिखाई देना (बेल, साइक्लैमि, युयोनिमस, मार्क, प्लम्ब)। आँखके गोलेमें पीछेकी ओरसे सामनेकी ओर दबाव मालूम होना। ठण्ड लग जानेके कारण आँखकी बीमारियाँ आदि, (कैल्के-सल्फ), प्रमेह होना। विषकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (मार्क-कोर, ह्रिप)।

अंत्राशय।—तलपेटमें दर्द पैदा करनेवाला सङ्कोचन,—मानो रह रहकर पेटमें झटका दे देता है,—एक जगहसे दूसरी ओर हट जाता है,—मानो कोई सजीव पदार्थ पेटमें हिल रहा है (ऐराण्डो, कैल्के-फास, क्रोकस, सैबाइना, सल्फ, थूजा,—माथेमें सजीव पदार्थ मालूम होना=पेट्रोल, सिलिसिया; स्तनमें=क्रोकस, लिडम)। दुर्दमनीय कब्जियतकी वजहसे पेशाबमें रुकावट पैदा हो जाती है। मलद्वारमें सङ्कोचन।

मूत्र-यंत्र।—प्रमेह,—नयी प्रदाह अवस्था—गौणावस्था,—पेशाबके बाद जलन—स्राव गाढ़ा पीली आभा लिये और पीबकी तरह (क्यूबेब, मेड्-

सल्फ, आर्जेण्ट-नाई)। मूत्रनालीके मुँहसे जलन पैदा करनेवाला काटनेकी तरह दर्द—यह पीछेकी ओरसे फैल जाती होती है,—इसके बाद पीछेकी ओरके अंशमें पेशाब करनेके समय तेज सुई वेधनेकी तरह यन्त्रणा मालूम होती है। बीचमें फटनेकी तरह मालूम होना.—दर्द टेढ़ी-मेढ़ी गतिसे चलता है। मसानेकी जगहकी खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द मालूम होना (जलन पैदा करनेवाला और डंक मारनेकी तरह=कैन्थ; टपक जैसा दर्द,—रक्त और बहुत ज्यादा परिमाणमें लार मिला पेशाब—मार्को, ओसिम; शर्करा-मिला=युरेनियम-नाई)। मूत्रकृच्छ्रता,—तकलीफ देनेवाला पेशाबका वेग और सिर्फ कई बूंद खून मिला जलन-भरा पेशाब (कैन्थ, नक्स)। पेशाबके समय जलन,—खासकर पेशाबके अन्तमें (कैन्थ, कैप्सि, ऐसिड-नाई), प्रमेह,—पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव (मठाकी तरह सफेद आभा लिये स्राव—कैप्सि; पीले रङ्गके पीवकी तरह—ऐगनस; हरा-पीला रङ्ग मिला स्राव=मार्क, पतले हरे रङ्गका=थूजा)। मूत्रनली जखम भरी मालूम होना (खून मिला स्रावके साथ=कैन्थ)। लिङ्गमुण्ड और मेढ्रत्वक (Prepuce) का रङ्ग गहरा लाल दिखाई देता है। मेढ्रत्वक बहुत फूला हुआ; सुदा (उलटी चमड़ी होने का उपक्रम। (थूजा, मार्क)। शिश्न (Penis) ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें जखम हो गया है—मानो जल रहा है—चलनेमें बहुत दर्द मालूम होता है—इसीलिये रोगी पैर फैलाकर चलता है। अत्यन्त यन्त्रणाजनक लिङ्गोच्छ्वास (कैन्थर, ऐसिड-नाई, थूजा); रमणेच्छा बहुत प्रबल रहती है। मूत्राधारकी मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना और कड़ापन (Hypertrophy of prostate कैनाब-इन)। श्लेष्मा और पीव सञ्चय होनेके कारण मूत्रनालीका रोध हो जाना।

श्वासयंत्र ।—दमा या श्वास-रोग,—सीधे खड़ा होकर-सरल भावसे श्वास-प्रश्वास लिया करता है (केवल खड़े रहनेपर कलेजेमें कम्पन होता है=ऐगार; सोनेपर श्वास-प्रश्वासमें सुविधा होती है=सोराइन; खड़े होनेपर श्वास-प्रश्वासमें व्याघात या तकलीफ होती है=फेलैन, सिपि; बैठनेपर श्वास-कृच्छ्रता=ऐल्यु, युफ्रे, डिजि, ड्रोसे, लैके, फास, सैम्बियु, वेरेट); सोनेवाली अवस्थामें श्वासकृच्छ्रता अर्थात शयन किये रहनेपर श्वास-क्लेश (कैल्के, डिजि, लैके, नक्स, फेलैन, फास, सैम्बियु, सिपि); कोई चीज निगलनेके समय श्वास-नली रुकने या श्वास रोध होनेका उपक्रम हो जाता है; निगलनेपर चीज

दूसरी राहसे चली जाती है (ऐनाक) अर्थात नासिका या श्वासनलीके बीचमें घुस जानेकी सम्भावना पैदा हो जाती है (पानीय द्रव्य नाककी राहसे बाहर निकल आता है=आरम, वेल, लैकि, मार्क, पेट्रोल ; खाद्य आदि ऊपर चढ़कर नासा गह्वरमें प्रवेश कर जानेका उपक्रम हो जाता है=सिलिसिया)। खांसी—सूखी या लसदार हरे रङ्गके कफके साथ (कार्बो-वे, ड्रोसे, कैलि-बाइ, लाइ, मैग-कार्ब, नेट्र-कार्ब, पेरिस, फास, पल्स, सिपि, स्टैन) । बार बार सूखी और तेज खांसी,—खांसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षःस्थल टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है (ब्राइ. मार्क) । बहुत जोरका भयङ्कर हृत्सन्दन (कैक, डिजि, स्पाइजि, वेरट)। हृत्प्रदेशमें संघात या झटका मालूम होना (कास्टि; नक्स ; सुई बेधने की तरह मालूम होना=कैम्फि, कास्टि, क्रियो)। ऐसा मालूम होना, कि हृत्पिण्ड से बूंद बूंद पानी गिर रहा है (जलन मालूम होना=ओपि, पल्स, वेरेट)। सवेरे वायुनलीके निचले भागमें, ऐसा अनुभव हो मानो गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा अड़ा हुआ है और बहुत चेष्टा करनेपर वह सरल होकर निकलता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—मोच खा जाने बाद अंगुलियोंका सङ्कोचन। सीढ़ी चढ़नेके समय जानु फलकास्थि (Patella) अपनी जगहसे हट जाती है और दोनों पैर भारी हो जाते हैं। एँड़ीके नीचे और और पैरकी अंगुलियोंकी तलीमें दर्द होता है या जखम हो जाते हैं।

सार्वाङ्गिक।—रातमें रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो हजारों तेज सुइयां उसके शरीरमें सब जगह बिंध रही हैं,—असह्य कुटकुटाहट मालूम होना ; वृद्धि=गर्म ओढ़नेकी वजहसे पसीना निकलना ; घटना—ओढ़ना उतार देनेपर। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके शरीरपर किसीने गर्म पानी ढाल दिया।

वृद्धि।—सोने और सीढ़ी चढ़नेके समय।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—दमाके सम्बन्धमें कैलि-नाइट्रिकम=सीधा होकर सो नहीं सकता ; प्रमेहके सम्बन्धमें—एपिस, कैन्थरिस, कोपेवा, क्यूबेब, नेट्र-सल्फ, थूजा और हिडाइ-सेरम।

मात्रा।—मूल अर्क और १ म दशमिक क्रम। परन्तु इसके द्वारा प्रकृत होमियोपैथिक फल या लाभ प्राप्त करनेके लिये उच्च शततमिक क्रम व्यवहार करना चाहिये। २०० क्रमके व्यवहारसे भी खूब फायदा होता है।

क्रियाका स्थायित्व।—एकसे दस दिन।

केन्थरिस वेसिकेटोरिया।

(CANTHARIS VESICATORIA)

दूसरा नाम।—स्पेन देशकी एक तरहकी मक्खी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित कीड़ेसे मदर टिंचर और विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणकी अनुसार प्रयोग।—लक्षणके अनुसार व्यवहार करनेपर यह नीचे लिखी बीमारियोंमें फायदा करता है:—मूत्राधारकी बीमारी ; दाह या जले हुए घाव ; उपभिल्ली प्रदाह ; रक्तामाशय , अकौता रोग ; शुक्र-क्षय होना ; उन्माद या प्रचण्ड प्रलाप ; विसर्प ; आँखोंका प्रदाह ; पाकाशयका प्रदाह ; प्रमेह ; दादकी तरह उद्भेद या छाले ; जलातङ्क ; मसानेकी बहुत सी बीमारियाँ ; स्नायुशूल ; कामोन्माद ; डिम्बाधारका प्रदाह ; अन्त्रावर्तन प्रदाह ; फुसफुसावरण प्रदाह ; गर्भावस्थाकी बीमारियाँ ; फूल अटक जाना ; आरक्त-ज्वर ; धातुका पतलापन ; प्यास ; गलेका जखम ; जिह्वाका प्रदाह ; मूत्रमें विकार ; त्वचापर छाले पड़ जाना।

उपयोगिता और आभास।—जिनके किसी भी अङ्गमें स्पर्श सहन नहीं होता (चेतन्याधिक) ; जिनके नाक मुंह आँत या मूत्रयंत्र आदिसे हमेशा रक्त-स्राव हुआ करता है, जिनके खाने-पीनेकी इच्छा नहीं रहती, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। मस्तिष्क, मूत्रयन्त्र और जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। शरीरके गह्वरमें तेज जलन पैदा हो जाना,—यह सभी लक्षणों का भित्ति-स्थान है। मूत्रनली और जननेन्द्रियके भीतर भयानक असह्य प्रदाह, जलन पैदा कर उनकी क्रियामें यह विकार पैदा कर देता है और मस्तिष्कमें इतना प्रचण्ड प्रदाह पैदा कर देता है कि रोगी एकदम भयानक उन्मत्त और ज्ञानसे रहित हो जाता है। इसके साथ ही पानी या कोई चमकीली चीज देखनेपर उसकी उन्मत्तता बढ़ जाया करती है। तथा जलातङ्कके लक्षण आदि पैदा हो जाते हैं। पेशाबका वेग बार बार होता है पर पेशाब कई बूंद-भर होता है। और वे कई बूंदें भी खून मिली होती हैं कतरनेकी तरह दर्द और यन्त्रणा तथा तेज जलन इसका नि

इससे शरीरकी त्वचापर छोटी छोटी,छालेकी तरह रस-भरी गोटियाँ या दाने पैदा हो जाते हैं। और इसी गुणकी वजहसे इसे छाले पैदा करनेवाला कहते हैं। इसके द्वारा शरीरके दाहिने पार्श्व पर रोगका आक्रमण विशेष हुआ करता है (हैपुटि, वेल, आइरिस ; वाम पार्श्व में—लैके)। आँतोंके निचले अंशके ऊपर भी इसका प्रचण्ड प्रकोप दिखाई दिया करता है। समूची देहमें छूना सहन नहीं होता। मुँह, नाक, आँतोंका पथ, जननेन्द्रिय और मूत्रनलीसे रक्तस्राव होता है। आगे लिखे कई लक्षण भी इसके प्रधान निर्णायक लक्षणोंमें गिने जाते हैं:—(१) प्रचण्ड प्रलाप और उन्मत्तताकी वजहसे कभी रोगी चिल्ला उठता है और कभी कुत्तेकी तरह ऊँचे स्वरसे पुकारा करता है (२) किसी चीजके निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है। (३) कण्ठके भीतर खासकर उसके पिछले अंशमें इतनी जलन हुआ करती है मानो आग छू गयी है। (४) कण्ठद्वारके पिछले भागमें, विशेषकर दाहिनी गलग्रन्थिमें उपक्षत। यह सफेद रंगका और पपड़ीसे ढका रहता है (५) स्वरनालीमें आक्षेपिक सङ्कोचन—छूते ही सङ्कोचन पैदा हो जाता है। (६) ज्वालामयी तृष्णा—पर सभी जलीय पदार्थोंकी इच्छा न होना। (७) ज्वालामयी तृष्णा, तेज ओकाई और खून मिले श्लेष्मामय वमनके साथ पाकस्थली और अन्न-नालीके भीतर तेज जलन। (८) आमातिसार,—मल आँतके भीतरकी खरोंच की तरह आँव मिला, खून मिला; पाखाना हो जाने बाद सिहरावन और कम्पन मालूम होना, साथ ही काँखना पड़ता है, (९) मानो मूत्रकोषके गलेसे आरम्भ होता है, विटप या मलद्वारके पासवाले स्थानमें इसी तरहके दर्दके साथ आँतकी बीमारी। (१०) पेशाब खून मिला,—कभी माँड़की तरह या लसदार या सूत्र-मय। (११) सारे शरीरमें जलन (१२) बार बार पेशाबके वेगकी वजहसे नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है। (१३) भीतरी जलन और बाहरसे शरीर ठण्डा, तथा चेहरा खूनसे रहित, उतरा हुआ। बार बार पेशाबका वेग पर पेशाब बूंद बूंद निकलता है। या प्रत्येक बार बहुत थोड़े परिमाणमें पेशाब होता है,—इसके साथ ही मूत्रनालीमें कतरनेकी तरह या जलन पैदा करनेवाली तकलीफ; इसके साथ पेशाबके समय और पेशाब हो जाने बाद मूत्रनलीमें प्रबल सङ्कोचन की वजहसे वृथा वेग।

लक्षणावली।

मन।—बहुत बेचैनी, दाँत निकलनेके समय चेहरा लाल हो जानेके साथ एकाएक बेहोशी पैदा हो जाना; प्रचण्ड विकार और उन्मत्तता पैदा हो

जाती है और क्षण क्षणमें भयानक क्रोध प्रकट करता है, कुत्तेकी तरह शब्द किया करता है और शुश्रूषा करनेवालोंको मारना चाहता है; कोई चमकीली चीज देखने, कण्ठ-देशको छूने या पानी पीनेकी चेष्टा करनेपर उन्मत्तताका भाव फिरसे प्रकट हो जाता है। नाना प्रकारके कार्य्योंमें हस्तक्षेप करता है, पर पूरा किसीको भी नहीं करना चाहता। कामोन्माद; प्रेम विकार। (हायो, ऐसिड-नाई)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—इसके साथ ही अँधेरा देखना या अन्धःकार देखना (बेल, कैल्के, साइक्लोम, युयोनियस, मार्क, प्लम),—वायु-सेवनके लिये टहलनेके समय बढ़ जाना, सरके पिछले भागमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना (ललाटमें=डिजि, सिलिशीया, सल्फ; मूर्द्धादेशमें=इपिका; कनपटीमें=कैलि-कार्ब)। मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशमें तेज दर्द; मुंदी हुई आंखोंके साथ भ्रकुटी चढ़ी रहती है, मानो बहुत तकलीफ हो रही है। मूर्द्धादेशमें छेदनेकी तरह दर्द,—मानो कोई केशोंको लट पकड़कर ऊपरकी ओर खींच रहा है (ऐको, ऐल्यू, सिङ्को, इग्निशो, कैल्के-कार्ब, रास, सेलिन); केश झाड़नेके समय केश उड़ जाते हैं।

आंख।—आँख बाहर निकलने जैसी=मानो बाहर निकल पड़नेकी तैयारी हो रही है; मानो आंखसे आगकी चिनगारियाँ निकल रही हैं,—आँखोंमें बहुत ज्योति और टकटकी लगाकर देखना। सभी चीजें पीली मालूम होती हैं (सेण्टोनाइनम)। आँखोंमें जलन। हवा लगते ही आंखसे आँसू बहने लगना, इसलिये रोगी आँख बन्द किये रहता है और खोलनेपर पलकोंकी बगलके भागमें खाल उधड़ जानेकी भांति दर्द होता है और स्पर्श सहन नहीं होता।

नाक।—नाकके ऊपरी भागमें विसर्प हो जानेकी तरह सूजन और प्रदाह,—सूजन दोनों पार्श्वमें,—विशेषकर दाहिने गालमें फैल जाती है और अन्तमें खाल उधड़ने लगती है, नासारन्ध्रसे बहुत ज्यादा लसदार श्लेष्मा निकला करता है, छींक नहीं आती। स्वरभंगके साथ छातीसे यंत्रणादायक खांसी पैदा हो जाती है और उसके साथ ही लसदार कफ निकलता है (बोवि, कैलि-बाई) और रातमें वायुनालीके बाहरी भागमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

कान।—ऐसा मालूम होता है मानो कर्ण-विवरसे वायु या गर्म हवा निकल रही है (मानो कानकी पश्चान्नलीमें हवा घुसनेकी आवाज आ रही है—ग्रैफ)। कानके पीछेकी हड्डियोंमें दर्द (कैप्सि)।

मुखमण्डल।—चेहरा मलिन यंत्रणा प्रकट करनेवाला और मुर्देकी तरह रक्तहीन। मुंहके ऊपरके रसभरे दाने सब खुजलाया करते हैं और छू जानेपर उनमें जलन पैदा हो जाती है। विसर्प (Erysipelas), इसके साथ ही ज्वालामय विड़कारी उत्ताप और पेशाबमें विकार पैदा हो जानेके लक्षण सब प्रकट हो जाते हैं। चेहरा गर्म रहता है और लाल हो जाता है। जबड़े अटका जाते हैं या दाँती लग जाती है (Lock-jaw); इसके साथ ही दाँतपर दाँत रगड़ता है।

मुँह और गलेके भीतर।—मुख-विवर, तालुमूल, अन्न-नाली और और पाकस्थलीमें बहुत जलन मालूम होती है (आर्स, आइरिस, नक्स ; शीत मालूम होना=ऐसिड-हाई, वैरेट-ऐल)। मुँह और तालुमूलका दाह और पतले जलीय पदार्थ, निगलनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है (बेल, हायो ; जलीय पदार्थके सिवा और कुछ भी निगल नहीं सकता=बैप, वैराई, सिलिसिया —एक बूंद पानी भो नहीं निगल सकता=एपिस,—जलीय पदार्थ निगलनेमें तकलीफ होती है और कड़ो चीज निगलनेमें तकलीफ नहीं होती=इग्ने)। फेनभरी और खूनभरी लार बहना (खूनभरी=आर्जेण्ट, आर्स, क्लिमेट, हायो, इपिकाक, कैलि-हाई, मैग-कार्ब, नक्स, रास, स्टैफ, सल्फ, थूजा ; फेनभरा=बार्बा, ब्राई, इयुजि, फेलैन, प्लम्ब, रैनान-क्लि, सेबाई, स्याई, सल्फ, ; लसदार=आर्जेण्ट, बेल, बार्बा, कैफो, केनाब, लोबेल ; पानीकी तरह या रसकी तरह,=ऐसे, क्रियो लोबेल, मैग-म्यूर, पल्स, थीया ; सफेद रंग—ओलि-ऐन, रैनान-बाल्ब, सेबाई, स्पाइजि ; पोला रंग=रास,) मुंहके भीतर रस-भरे दाने निकल आना (Vesicles—ऐम्ब्रा, वैराई, कैल्के, कैप्सि, कार्बो-ऐन, कैमो, कैलि-कार्ब, मैग-कार्ब, मार्क, मेजेर, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यू, नक्स, रोडो, स्पञ्जि, स्टैफ, सल्फ)। गाढ़ा लसदार श्लेष्मा (बोवि, हाई, कैलि-बाई, वाक्सस-कैक)। तेज़ भकड़न (Spasm), कण्ठको छूनेसे दुबारा आक्रमण हो जाता है। गलेमें प्रदाह होनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो जल रहा है। गलनालीका संकोचन ; मुंहमें जखम (हाईड्रेस्टिस-म्यूर, ऐसिड-म्यू, ऐसिड-नाई)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—आहारसे अरुचि। जलनभरी प्यास अथच कोई भी जलीय पदार्थ खानेकी इच्छा नहीं रहती अर्थात सभी जलीय पदार्थोंसे विराग पैदा हो जाता है। खाने-पीने अथवा तम्बाकू खाने—किसी बात पर भी रुचि नहीं रहती। पाकस्थलीका प्रदाह, उसके साथ ही ज्वाला-जनक

असह्य यन्त्रणा (आर्स, नक्स, फास), पाकाशयमें बहुत दर्द और स्पर्श सहन होना (ब्राई, मार्क, नक्स)। बहुत मिचलीके साथ भयानक वमन। रक्त श्लेष्मा वमन (ऐको, हिप; फायो, लैके, नाइट्रम)। यकृत-प्रदाह (ब्राई, मार्क, सोल), पाकस्थलीके अन्तद्वारमें प्रचण्ड जलन अनुभव होना। पेटके दर्द रोगी छटपटाया करता है। अन्त्रावरक भिल्लीका प्रदाह—भयानक जलन इस साथ ही अन्त्राशयको छुआ नहीं जा सकता और मूत्रस्थलीका संकोचन।

मल।—कब्जियत, इसके साथ पेशाब रुक जाता है (कैन-सैट) बार बार जलन और कतरनेकी तरह दर्द, और दर्द होकर ही पेशाब होना परन्तु पेशाब थोड़ा निकलता है। आरक्त (लाल),—सफेद आभा लिये फीका लाल रंग, लसदार आम भरा मल, मानो आँतोंकी छाल या खरौं मिला हुआ और खून मिला (ऐसिड-कार्ब, कोलचि)। पाखाना होनेके समय आँतोंका शूल और मलद्वारमें जलन या कतरनेकी तरह तकलीफ, इसी वजह से रोगी चिल्ला उठता है, पाखाना होनेके बाद काटनेकी तरह आँतोंमें शूल और जलन, काटने या डंक-मारनेकी तरह यंत्रणा और शीतका आवेग होना—मानो उसके शरीरपर कोई ठण्डा पानी ढाल रहा है। मलद्वार और मूत्र नलीसे केवल खूनका स्राव होना।

पेशाब।—बार बार पेशाबका वेग, परन्तु प्रतिबार कई बूंद मात्र पेशाब होता है,—वह भी खून मिला। (कैनाब, कैपि ; एकाएक पेशाबका वेग और मूत्रनलीमें खुजली=पेट्रो, सेल)। पेशाबके पहले, पेशाबके समय और पेशाब हो जानेपर (कैपि, ऐसिड-नाई), असह्य वेग और मूत्रस्थलीमें तेज दर्द। पेशाबके समय मूत्रनलीमें भयानक संकोचन और मूत्रकृच्छ्रता मसाना या मूत्र-ग्रन्थिका प्रदाह,—इसके साथ ही मसानेमें जलन, डंक मारनेकी तरह और छेदनेकी तरह दर्द (टेरिब,—मूत्रवाहिनी शिराके भीतरसे पुट्ठे तक खींचनेवाला या तेजीसे फैलनेवाला तेज दर्द=कैनाब-इन,—मसानेवाले प्रदेशमें कतरने या छेदनेकी तरह और टपकका दर्द=झुकनेपर बढ़ना=बार्ब)। प्रमेह—मूत्रनलीमें स्पर्श सहन न हो और खूनका स्राव होता हो (मठेकी तरह स्राव—कैपि,—पीला, हरा या पीबकी तरह=मार्क, थूजा), पेशाब गदला और थोड़ा ; रातमें काली आभा लिये और चावल धोये पानीकी तरह और सफेद रंगकी तली जमना ; कभी कभी मूत्रनालीमें शल्क, श्लेष्मा वगैरह मिला और घण्टलालमय ; मलकी तरह ; मूत्रनालीके साथ रोगमें पेशाब बहुत ज्यादा

परिमाणमें पीब मिला रहा करता है। खड़े होनेपर पेशाबका वेग बढ़ जाता है—और चलनेके समय बहुत ही ज्यादा बढ़ जाता है, बैठ जानेपर घट जाता है (डिजि)। पेशाबकी धार दो भागोंमें विभक्त होकर और बहुत धीर वेगसे निकलती है। बहते हुए पानीकी आवाजसे पेशाबका वेग (कैरिका-पैपाया, सिसिन, सल्फ);

पुं-जननेन्द्रिय।—रातके समय खून मिला शुक्र या रेतःपात हो जाता है (लेडम, मार्क, पेट्रोल, कास्टि; जलकी तरह=सल्फ)। स्त्री-पुरुष दोनों में ही प्रबल रमणेच्छा रहती है और इसी वजहसे रातमें नींद नहीं आती है; बहुत दर्दके साथ लिङ्गोच्छ्वास (एसिड-पाई, क्रियो, फास, पल्स, सैबाई)। शिश्न मुण्डमें दर्द (प्रूनस, पैरिरा) प्रमेह,—बहुत ही तकलीफ देनेवाला लिङ्गोच्छ्वास और रमणेच्छाके साथ रेतोरज्जु में खींचनकी तरह दर्द। अण्डकोषका ऊपरकी ओर खिंच जाना या ऊपर उठना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधार प्रदेशमें श्वास-रोध करनेवाली सुई वेधनेकी तरह तकलीफ मालूम होना; डिम्बाधार प्रदाह,—कतरने या जलन को तरह मालूम होना। मूत्रकृच्छ्रताके साथ फूल पड़ जाना—(पल्स, सिकेल, सिपि); जरायुसे मरा हुआ भ्रूण; परिस्रवके टुकड़े वगैरह बाहर निकाल देता है। कामोन्माद (ओरिगैन, हायो, प्लैट, टेरेन, कैल्के, फास, ग्रेटि)। प्रसवके बाद का जरायु प्रदाह,—मूत्रस्थलीके प्रदाहके साथ (ब्राई, सिकेल, वेरेट-विराइड, हायो, सैबाई)। ऋतु बहुत जल्दी जल्दी प्रकट होता है, बहुत ज्यादा और काले रंगका स्राव होता है (ब्राई, कैम, इग्ने, नाइड्रम, प्लैट); योनिका बाहरी स्थान फूला रहता है और खुजलाया करता है। जरायुसे लगातार खूनका स्राव हुआ करता है,—ऊँचे नीचे पैर पड़नेपर बढ़ जाता है (ऐम्ब्रा); मेरुपुच्छ (पीठकी रीढ़के नीचे वाला स्थान) अस्त्रकी चोट या छेदनेकी तरह दर्द (साइक्यूटा; बैठनेके समय दर्द मालूम होता है और चलने या छूनेके समय दर्द बढ़ जाता है=कैलि-बाई)। प्रसवके बाद आक्षेप, मूत्र-कृच्छ्रता और जलातङ्ककी तरह लक्षण होना (हायो, साइक्यू-वाइरोसा, ऐसिड-हाइड्रो)।

श्वास-यंत्र।—वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना,—दाहिने पार्श्वमें (ऐमोन-कार्ब, आर्नि, बोर, कोली) बढ़ना; या पहले दाहिने या उसके बाद बाईं ओर (लाई; बाएँसे दाहिने पार्श्वमें=लैके) सञ्चारित होता

है,—दाहिने वक्षके नीचेसे वक्षोस्थिके मध्यस्थल और कुक्षिदेश (कोख) तक दर्द फैल जाता है। वक्षमें जलन (आर्स, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, इयुफोर्ब, ओलियेन, रास-रेड, सेनेगा; स्पिञ्जि, सल्फ)। फेफड़ेको ढकनेवाली झिल्लीके भीतर रसका क्षरण होना; श्वास-कष्टता या कलेजा धड़कना; पेशाब परिमाण में थोड़ा और मूर्च्छा आ जानेकी तरह हो जाना (कैमो, कॉम्फो, सिङ्को, कोना, डिजि, जेल्सि, लैके, मस्कस; नक्स-वोम, वेरेट)। हृत्पिण्डके भीतर चींटी चलनेकी तरह दर्दके बाद सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। रसक्षरण (Exudation) के साथ हृत्पिण्डकी वेष्टक झिल्लीका प्रदाह और जोर-जोरसे कलेजा धड़कना; सिरस (Serous) झिल्लीका ही प्रदाह। फेफड़ेका प्रदाह (Pleuritis) और उनमें रस क्षरण, (ऐकोनाइटम, ब्रायोनियाके प्रयोगके बाद) हृदय विदारक (कलेजा फाड़नेवाली) खांसी और खून मिला गाढ़ा लसदार श्लेष्मा भरा कफ (डा० गार्नसी कहते हैं:—वायुनलीके रोगमें गाढ़ा लसदार श्लेष्माका निकलना लक्षण रहनेपर कैन्थरिस निर्देशक है (बोविस्टा, काकास-कैक, हाइड्रेस, कैलि-बाई)।

त्वचा ।—जले हुए स्थानपर छाले उठनेके पहले लगा देना चाहिये। जखमोंका सड़ना (आर्स,—सिङ्को, एचिने, लैके, सिकेल, कार्बो-वेज)। जलन और खुजलीके साथ रसभरे दाने या छालेकी तरह उद्भेद (रास देखो); विसर्प —रसभरी फुन्सियाँ (Vesicular) जातीय। (एपिसके विसर्पमें सूजन ज्यादा रहती है और कैन्थरिसके विसर्पमें रसभरे दाने ज्यादा रहते हैं; मुँहका विसर्प आँख, कनपटी या मुंहसे आरम्भ होता है,—यदि छाला रहता है, तो वह बहुत छोटा होता है; एपिस; मुंहका विसर्प नाकसे आरम्भ होता है, आग छू जानेकी तरह जलन रहती है और बड़ी रस-भरी गोटियोंसे भरा रहता है=कैन्थरिस,) रातमें तलवेमें जलन होती है (ऐस्क्यु, ऐनाक, कैल्के, ऐसिड-फास; सल्फ— पैरकी अंगुलियोंमें जलन=ऐगार, ऐसिट-क्रू, आर्नि, बोर, कैलि-कार्ब, ऐसिड-म्यू, स्टैफ)

ज्वर ।—सविराम,—प्रत्येक बार प्रकोपके समय, मूत्रकष्टता मौजूद रहती है; दुर्दमनीय प्यास, हाथ और पैर बरफकी तरह ठण्डे; पर पैरके तलवेमें तेज जलन, पसीना ठण्डा। रातमें जलन करनेवाले उत्तापका प्रकोप, शीतावस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने शरीरपर पानी ढाल दिया है। बदन सिहर उठता है।

प्रत्यङ्गादि।—बार बार पेशाबका वेग, इसके साथ ही कमरमें दर्द हाथ पैरोंमें टूटनेकी तरह दर्द मालूम होना, पैरके तलवेकी त्वचाका क्षय हो जाना या ऐसा दर्द मानो जखम हो गया हो। पैर पसार नहीं सकता।

दोषघ्न।—कैम्फर ; एपिस ; कैलि-नाइट, एकोन, पल्स इत्यादि।

सम्बन्ध।—सदृश।—कक्कस कैक्टाई, एपिस, बेलाडो, ब्रायो, कैनाबिस, पेट्रो, (एकाएक वेग) ; कैप्स, पल्स, (फूल झटकना)। आर्स, थूजा, मार्क, सार्सा, घरम, आर्निका, रास इत्यादि।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे २०० शततमिक क्रम साधारणतः व्यवहृत होता है।

कैप्सिकम ऐनियुयम।
(CAPSICUM ANNIUUM)

दूसरा नाम।—मिर्चा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सूखे बीज और छालसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है। अम्लापन या दृष्टि हीनता ; दमा ; मस्तिष्कको उत्तेजना ; शराब पीनेकी वजहसे बीमारियां ; खांसी ; अतिसार ; उपझिल्ली प्रदाह; रक्तामाशय; कानकी बीमारी ; ग्रन्थियोंकी सूजन ; फेफड़ेकी बीमारी ; सर-दर्द ; छातीमें जलन ; अन्त्र-वृद्धि (आँत उतरना); विदेशमें जाना या रहना अच्छा न मालूम होना; सविराम ज्वर; खसड़ा; मुंहका जखम ; स्नायुशूल ; नाककी बीमारियाँ; मोटापन ; अन्ननालीका सङ्कोचन ; पक्षाघात ; फेफड़ा और फुसफुस-वेष्टका प्रदाह ; गर्भिणीकी बीमारियाँ ; मलान्त्रकी बीमारी ; आमवातिक रोग ; वात ; सन्धिवात ; गृध्रसी या पैरकी झुन-झुनीका वात ; गण्डमाला ; पाकाशयका प्रदाह ; गलेका जखम ; जिह्वाका पक्षाघात ; स्वरनालीमें सुरसुरी ; पेशाबमें विकार ; हूप-खाँसी

उपयोगिता और आभास।—भूरे केश, नीली आँखें, थोड़ेमें ही कातर हो जानेवाला, मोटे पर शिथिल मांस पेशीवाले मनुष्य, जिनके शरीरमें

रोगवाली अवस्थाओंमें दवाओंकी प्रतिक्रिया जल्द नहीं होती, जिनकी पाचन शक्ति बिगड़ी रहती है, उनका कैल्किकम परम बन्धु है। इन सब व्यक्तियोंकी पाचन शक्तिमें गड़बड़ी रहती है या पाकाशय कमजोर रहता है, इसी वजहसे समूची देहमें कमजोरी मालूम होती है। बहुत अधिक क्रोधी स्वभाव, बिना कारणके ही इसके रोगीको क्रोध आ जाता है। बहती हुई हवा, वह गर्म हो या ठण्डी, शरीरमें स्पर्श करते ही अस्वस्थता मालूम होने लगती है। बहुत आलसी, परिश्रम नहीं करना चाहता। रोज गृहस्थी चलानेके लिये जो कुछ किया करता है, उससे बाहर किसी तरह भी जाना नहीं चाहता। ये सब मनुष्य प्रायः ही शीत और उत्तापके वशवर्ती रहा करते हैं। प्यास बहुत रहती है, पर पानी पीनेसे ही शीत बढ़ जाता है। सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंमें जलन और उसके साथ ही संकोचन पैदा हो जाया करता है। गलेके भीतर, अन्नपथ, मूत्रयन्त्र और जननेन्द्रियपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। दूरदेशको जाना नहीं चाहता। आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक लक्षणके रूपमें गिने जाते हैं।—चिड़चिड़ा, दुःखित, विदेशमें रहनेसे कष्ट मालूम होता है। (२) कानके पीछेकी हड्डीमें स्पर्श असहिष्णुता मालूम होती है। (३) कण्ठके भीतर गर्मी और जलन रहती है—मानो किसीने मिर्चा पीसकर लगा दिया है। अलिजिह्वा शिथिल और कण्ठ सूखा हुआ। बड़े जोरोंकी खांसी,—खांसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा और वक्ष टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है। खांसनेपर जाँघ, नितम्ब, पैर, और कान वगैरह कण्ठसे बहुत दूरके अंशमें झटका मालूम हुआ करता है। (४) ज्वराधिकारमें तीसरे पहर ४ से ६ बजनेके भीतर पीठ या दोनों कन्धोंके बीचके स्थानमें ठण्ड पैदा हो जाना; शीतावस्थाके पहले प्यास अधिक रहा करती है और पीठमें गर्म प्रयोगसे शीत घट जाया करता है।

लक्षणावली।

मन।—दिल्लगीबाज, पर सहजमें ही क्रोधित हो जाता है। गृह छोड़नेमें अत्यन्त कातर (अरम, मिनियेन, ऐसिड-फास, सिलिसिया, ब्राई, कैल्के-फास, युपेट, ओपि), इसके साथही अनिद्रा और आत्महत्याकी इच्छा। बच्चा कहना एकदम नहीं सुनता और शासन नहीं मानता तथा न तो कोई काम किया चाहता है, न कुछ सोचना चाहता है। अकेला रहना चाहता है (मार्नि, कार्बो-ऐन, ऐक्टिया, कोका, साइक्लेमन, जेलस, हेलियो, इग्ने, लेडम,

मैग-म्यू, आवसाइटो, रास, थूजा) अकेले रहनेमें बहुत डरता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, विस, क्लिम, कोना ; कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लिलि-टाइग, लाई, सिपि, ष्ट्रेम, वेरेट, इग्नेस—अकेला शय्यापर सोना चाहता है=कास्टि) हमेशा सोया रहना चाहता है और नींदमें पड़ा रहना चाहता है (ऐसिस-वैन, आर्जेण्ट, वेलिस-पे, नैट्र-कार्ब)। मानो नशा खाया हुआ है, ऐसा मालूम होना (कैनाव, जेलसि)। देखने, सुनने, छूने वगैरहकी शक्तिकी प्रखरता (तेजी न रहना= हेलिवो)। बहुत क्रोधी स्वभाव (कैम, काफि, नक्स)। शराब आदि पीनेकी उन्मत्तता (Delirium Tremens=नक्स, वेल, हायो, ष्ट्रेमो)।

मस्तक ।—सरमें दर्द,—मानो माथा दो हो जायगा,—माथा हिलाने पर, घूमने या टहलनेके समय और खाँसनेपर वृद्धि। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है (आर्जेण्ट-नाइट्रिकम देखो)। सरमें तेज सलाई बेधनेकी तरह दर्द,—स्थिर रहनेपर बढ़ना और हिलाने डोलानेपर घटना। किसी तरहका मानसिक आवेग पैदा हो जानेपर चेहरा गर्म और लाल हो जाता है। खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा। (खाँसनेपर सरमें दर्द हो जाता है= नैट्र-म्यू, सरके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है=सल्फ, माथा हिलानेपर दर्द मालूम होता है=हिप)।

आँख ।—आँखोंपर दबाव पड़ना ; सब चीजें काली दिखाई देती हैं= वेल ; पीली दिखाई देती हैं=कोन्य, सैण्टो ; बहुत चमकीली और कितने ही रंगोंसे रंगी दिखाई देती हैं=ऐन-हेलो)। आँखोंमें जलन (आर्स, फास); आँख लाल और आँसुओंसे भरी, (सिपि, युफ्रे)। क्षीण दृष्टि।

कान ।—कानमें जलन (अरम, सल्फ) और डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ। कानकी पीछेवाली हड्डीका प्रदाह और उसमें दर्द। कर्ण विवरान्तर्गत (कानके छेदके भीतरवाली—Petrous bone) हड्डीमें दर्द और खाल उधड़ जानेकी तरह स्पर्श सहन न होना। सर्दीकी वजहसे बहरापन (आर्स, कैल्के, कार्बो-वे, लिड, मार्क, पल्स)।

नाक ।—सर्दी और बहुव्यापक सर्दी, इसके साथ ही बार बार छींक, और पतला श्लेष्माका स्राव (आर्स, सिपा, युफ्रे, साइलाम); नासारन्ध्र में जलन (आर्स, कैलि-कार्ब, मैग, ऐसिड-नाई, ष्ट्रेम, और खुजली (ऐमोन कार्ब, एराम-ट्राई, ग्रैनेट, सैबाड, स्पाइजि) और रूखड़ापन मालूम होना, नासारन्ध्र और बाएठमें गाढ़ा श्लेष्मा संचित होता है।

गलेके भीतर ।—जिह्वा मूलीय ग्रन्थिका प्रदाह,—जलन और कुट कुटाहट, बहुत दर्द ; जलनके साथ कण्ठनालीमें संकोचन ; गलेके भीतर प्रदाह, गाढ़ा लाल रंग और सूजन ; घूंट लेनेके पहले और बाद गलेके भीतर जलन और संकोचन मालूम होना बढ़ जाता है (इग्ने)। गलकोषमें उत्ताप मालूम होता है। गलेके भीतरसे कर्ण पथावाली तक सुखापन और दर्द। तम्बाकू पीनेवाले और शराबियोंके गलेका जखम। अलिजिह्वा शिथिल मालूम होती है।

मुखमण्डल और मुख-विवर ।—स्नायुके भीतरसे दर्द सूतकी तरह चारो ओर फैल जाता है, जीभका जखम,—जीभपर छोटी छोटी फुन्सियोंकी तरह उद्भेद,=छूनेपर उसमें डंक मारनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है (एपिस, कैल्के-फास, हेलिबो,—जलन-भरा=बेलाडो, कैलि-नाई, टेराक्स—दर्द भरा=कैलि-कार्ब, लाई, मैन्सि, नक्स,—बोलनेपर सन्ध्याके समय दर्दका बढ़ जाना=प्लम्ब) ; मुंहका जखम (नेट्र-म्यू)। मुंहमें असह्य बदबू ; सड़ी गन्ध (ऐनाक, आर्स, अरम, कार्बो-वे, ब्राई, कैम्फोरा, डालका, आयोड, लाई, मार्क, नक्स, ऐसिड-फास, सिपि, सल्फ) ; ज्वरके शीताविर्भावके समय मुंहके भीतर बहुत ज्यादा दुर्गन्ध और कड़वी लार बहना ; खांसनेपर फेफड़ेसे निकली हुई हवा मुंहका स्वाद एकदम कड़वा बना देती है।

पाकस्थली ।—पाकाशयमें श्लेष्मा और अम्लका संचय होना, पाकाशय बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है ; इसके बाद ही पाकाशयके भीतर कम्पन या जलन मालूम होती है और बीच बीचमें तेज गन्धवाली डकार आती है। ज्वराधिकारमें पाकाशयमें गड़बड़ी या विकार पैदा हो जाता है। बहुत अधिक आध्मान वायु (Flatus) संचय होता है, प्यास ज्यादा परन्तु पानी पीने बाद शीतकी वजहसे कम्पन पैदा हो जाता है (आर्स, सिङ्को, ऐण्टि-टार्ट, वेरेट) पाकाशयमें शिथिलता पैदा हो जाती है=ऐसिड-सल्फ ; मिचली पैदा हो जाती है=नेट्र-म्यू, नक्स, पल्स, रास, टियुक्रि ; वमन उत्पन्न हो जाता है=आर्स, आर्नि, ब्राई सिना, फेर, मेजेर, साइलिसिया, वेरेट ; उदरामय पैदा हो जाता है=आर्स, सिना, आर्जेण्ट-नाइट, ड्रासिड)

अन्त्राशय ।—नाभिके चारों ओर शूल वेदनाके साथ आम भरा मल, कभी कभी खून मिला ; प्रतिबार पाखाना हो[illegible]ने पर प्यास लग आती है और प्रत्येक बार पानी पीने बाद सिहरावन[illegible] प्रत्येक बार पानी पीने बाद पाखाना लग आता है[illegible] निक-

सती है,—आम-रक्त। बवासीर,—जलन-भरा—मानो मिर्चका चूर छिड़क दिया गया है ; मलान्त्र या मूत्रस्थलीमें तेज सं कोचन ; गाढ़ा जमा हुआ रक्त मिला आम ; पाखाना होनेके पहले काटनेकी तरह दर्द ; पाखाना फिरनेके समय काँखना और अन्त्रावर्त्तन (मरोड़,—पेचिश) ; पाखाना होने बाद काँखना, जलन, प्यास, और कमरमें खींचनेकी तरह दर्द ; बवासीर,—फूला, खुजली, और टपका जैसा दर्द-भरा ; मलद्वारमें मानो जखम हो गया-सा मालूम होता है ; मस्सेसे खून निकलता है या उसका रंग नीला होता है और उससे श्लेष्मा निकला करता है ; खून-भरा आम मिला मल ; कमरमें खींचनकी तरह और अन्त्राशयमें काटनेकी तरह तकलीफ।

पेशाब।—मूत्रकृच्छ्रता—मूत्रस्थलीका संकोचन। मूत्रस्थलीके मुंह का आक्षेपिक सङ्कोचन (कैंक)। पेशाबके समय जलन (कास्टि)। पेशाबके समय मूत्रनालीसे बहुत ही तकलीफके साथ खूनका स्राव होना (कैन्थरिस ; टेरिब ; किसी तरहका असाच्छन्द्य या यंत्रणा न रहनेपर= चिनिन-सल्फ ; मसानेके स्थानपर धीमे दर्दके साथ= हैमा ; चोटकी वजहसे होनेपर= आर्निका)।

पुं-जननेन्द्रिय।—ध्वजभंग रोगाधिकारमें शुष्क (Scrotum) बहुत ही ठण्डा मालूम होता है। अण्डकोषमें जखम (Atrophy = आयोड)। यंत्रणाजनक लिङ्गोच्छ्रास (Chordee) के साथ प्रमेह,—मूत्रस्थलीकी मुख-शायी-ग्रन्थि (Prostate gland) में बहुत जलन ; पीबकी तरह (ऐग) और खून-मिला, कभी कभी मठेकी तरह स्राव,—मूत्रनलीमें स्पर्श सहन न हो।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वयःसन्धिके समय (at Climaxis) जरायुसे रक्तस्राव और मिचली, बायें डिम्बाधार प्रदेशमें सुई वेधनेकी तरह दर्द।

श्वास-यंत्र।—हरेक बार तेज खांसीके समय मुंहसे थोड़ा तेज बदबूदार वायु निकल जाता है ; बलगम निकलता है, वह भी बहुत बदबूदार होता है। खांसनेपर शरीरके दूर दूर वाले अंशमें भी चोट पहुंचती है या दर्द होता है—अर्थात माथा, कान, मूत्रस्थली, जानु, पैर आदिमें दर्द होने लगता है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो सांस लेनेपर उसे तृप्ति नहीं होती—मानो फेफड़ेमें तृप्त करनेवाली हवा खींच नहीं सकता ; बाध्य होकर लम्बीसांस लेनी पड़ती है। क्योंकि रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि मानो उसमें उसकी तकलीफ घट जायगी। बच्चा खाँसने बाद रोने लगता है (बेल, खांसनेके

पहले होता है = आर्नि, ऐण्टि-टार्ट)। एकाएक खांसी पैदा हो जाती है औ
खाँसनेके समय देह हिलने लगती है और ऐसा मालूम होता है, मानो मा
फट जायगा। साथ हो ऐसा बोध होता है, मानो वक्षस्थल संकुचित होक
श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा कर रहा है। छातीमें टपककी तरह दर्द। सं
के समय, रातमें, सोनेके समय, गर्म पतली चीजें पीनेपर, सूखी पर ठण्
हवामें या तेज हवा लगनेपर खाँसी बढ़ जाती है। नाक रुकनेके साथ स्व
भङ्ग और गलेमें रुखड़ापन मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—ज्वरमें शीत आरम्भ होनेके समय कमरमें भयान
यन्त्रणाजनक छेदनेकी तरह दर्द,—इतनी तकलीफ होती है, कि रोगी रो
लगता है और सामनेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है। दाहिने उरुके शिखर देश
या पुट्ठेमें अस्थिक्षय रोग और बायाँ पैर पतला होता जाता है। उसमें द
मालूम होता है। चलनेके समय ढलमलाया करता है। लेटकर सो जानेक
बहुत इच्छा ; जरा भी परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं होती। उरुदेशसे जानु और
जानुसे पैर तक तेज चलनेवाला तथा तीक्ष्ण छेदनेकी तरह दर्द,—खांसने प
दर्द होता है। शरीरकी त्वचाके ऊपर कुटकुटी या जलन पैदा करनेवाली खुज
लाहट मालूम होना।

ज्वराधिकारमें ।—नाड़ीकी विषम गति और क्षण भरतक लोप हं
जानेवाली या सविराम—रुक रुककर। पीठमें जाड़ा और सिहरावन मालू
होना। सविराम ज्वर,—पीठमें पहले शीत पैदा होता है। इसके बाद चारों
ओर फैल जाता है। (युपेटो, मार्क)। शीतावस्थामें प्यासकी अधिकता औ
प्रत्येक बार पानी पीनेके बाद शीतका बढ़ जाना और सिहरावन—इसके बा
ही बोखार या उत्तापका आविर्भाव—प्यास रह भी सकती है और नहीं भी र
सकती है। पानी पी लेने बाद शीतका बढ़ जाना (आर्स, सिङ्को, नक्स, टेरेक्स
वेरेट)। शीतकी वजहसे सिहरावन या कम्पन (ऐको, आर्स, ब्राई, कैमो
सिङ्को, इग्ने, इपिक, क्रियो, नक्स ; रास ; सेबाड, वेरेट)। शरीर जगह जगह
पर मानो सुन्न हो पड़ता है। जाड़ा लगनेपर पीठमें गर्म प्रयोग करनेपर घट
जाता है।

निद्रा ।—स्वप्न-भरी नींद। आधी रातके बाद नींद नहीं आती है।
निद्रावस्थामें रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो वह किसी ऊँची जगहसे गिर
रहा है और इसी वजहसे चौंक उठता है।

वृद्धि ।—खाने पीने बाद, घरके बाहरकी हवामें और शरीर खोल रखने पर,—रातमें विश्रामके अन्तमें, पहली बार शरीर हिलाने पर।

उपशम ।—भोजनके साथ, गर्म प्रयोगसे और लगातार बहुत देरतक शरीरको हिलाते रहनेपर।

सम्बन्ध ।—क्विनाइनके अपथ्यवहारकी वजहसे या व्यवहारके बाद ज्वर आदिमें विशेष उपयोगी है। सविराम ज्वरमें इसके बाद सिना विशेष लाभदायक है। कैप्सिकमका **प्रतिविष**=सिना, कैलेडियम, सिङ्कोना, केम्फोरा, सल्फ-ऐसिड।

तुलनीय ।—एपिस, आर्निका ; बेलडोना (सर-दर्द); ब्रायोनिया (खांसी इत्यादि), कैलेडियम, चैन्य ; पलसेटिला। एपिस और बेलेडोनामें, पर कैप्सिकमकी तरह सङ्कोचन पैदा करनेवाली और जलन करनेवाली तथा कुट-कुटानेवाली तकलीफ नहीं होती। सोराइनम ; लेकेसिस ; नेट्रम, साइलिसिया, फास-ऐसिड, प्लैटिना, हेलिबी ; रास इत्यादि।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे ३० शततमिक शक्तितक। कोई कोई कहता है,—शराब पीनेके कारण उन्मत्ततामें (Delirium Tremens) दूधके साथ कई बूंद मूल अर्क मिलाकर पीना उचित है।

क्रियाका स्थायित्व ।—७ दिन।

कार्बो-ऐनिमेलिस।

(CARBO ANIMALIS)

दूसरा नाम ।—जान्तव अंगार।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ६ x और इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुंहासे ; रक्तार्बुद ; क्षुधामें विकार ; वक्ष या स्तनका कर्कटीया जखम ; मोतियाबिन्दु ; कब्जियत ; खांसी ; मुंहके फोड़े ; सड़नेवाले जखम ; ग्रन्थियोंका बढ़ना

पहले रोता है=आर्नि, ऐण्टि-टार्ट)। एकाएक खांसी पैदा हो जाती है और खाँसनेके समय देह हिलने लगती है और ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा। साथ ही ऐसा बोध होता है, मानो वक्षस्थल संकुचित होकर श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा कर रहा है। छातीमें टपककी तरह दर्द। संध्या के समय, रातमें, सोनेके समय, गर्म पतली चीजें पीनेपर, सूखी पर ठण्डी हवामें या तेज हवा लगनेपर खाँसी बढ़ जाती है। नाक रुकनेके साथ स्वर-भङ्ग और गलेमें रुखड़ापन मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—ज्वरमें शीत आरम्भ होनेके समय कमरमें भयानक यन्त्रणाजनक छेदनेकी तरह दर्द,—इतनी तकलीफ होती है, कि रोगी ... लगता है और सामनेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है। दाहिने उरुके शिखर ... या पुट्ठेमें अस्थिक्षय रोग और बायाँ पैर पतला होता जाता है। उस... मालूम होता है। चलनेके समय ढलमलाया करता है। लेटकर सो... बहुत इच्छा ; जरा भी परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं होती। उरुदेशसे ... जानुसे पैर तक तेज चलनेवाला तथा तीक्ष्ण छेदनेकी तरह दर्द,— ... दर्द होता है। शरीरकी त्वचाके ऊपर कुटकुटी या जलन पैदा करने... लाहट मालूम होना।

ज्वराधिकारमें ।—नाड़ीकी विषम गति और क्षण... जानेवाली या सविराम—रुक रुककर। पीठमें जाड़ा और ... होना। सविराम ज्वर,—पीठमें पहले शीत पैदा होता है। ... और फैल जाता है। (युपेटो, मार्क)। शीतावस्थामें प्या... प्रत्येक बार पानी पीनेके बाद शीतका बढ़ जाना और ... ही बोखार या उत्तापका आविर्भाव—प्यास रह भी सकती ... सकती है। पानी पी लेने बाद शीतका बढ़ जाना (आर्स वेरेट)। शीतकी वजहसे सिहरावन या कम्पन (... सिङ्को, इग्ने, इपिक, क्रियो, नक्स ; रास ; सेबाड, वेरेट ... पर मानो सुन्न हो पड़ता है। जाड़ा लगनेपर पीठमें ... जाता है।

निद्रा ।—स्वप्न-भरी नींद। आधी रातके ... निद्रावस्थामें रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो ... रहा है और इसी वजहसे चौंक उठता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना और मस्तिष्ककी जड़ता,—उठ बैठनेपर अर्द्ध-शायित लेटी हुई अवस्थामें आराम मालूम होना, इसके साथ ही मिचली सरमें दर्द,—मानो शिरमें बवण्डर जैसी हवा बह रही है, (शिरके भीतर मानो आँख घूम रही है=,चिनिन-सल्फ ;—मानो हवा बहती है=आरम ; कोरैल, पल्स)। मानो माथेमें कुछ हिल रहा है (ऐको, बेल, नक्स-मस, नक्स-वोम); मानो माथा फटकर टुकड़े टुकड़े हो गया है (ब्रायू)। रोगीको रातमें उठकर माथा पकड़कर बैठ जाना पड़ता है। ऐसा मालूम होता है, मानो भवोंकी जगहपर कुछ लगा हुआ है, इसी वजहसे ऊपरकी ओर देख नहीं सकता। सरमें चक्कर आने बाद नाकसे खूनका स्राव (सल्फ),—नित्य सवेरे दो चार दिन ऐसा ही होता है। नाकके अगले भागमें मसे (थूजा)। श्रवण-शक्तिमें गड़बड़ी —कह नहीं सकता, कि किस ओरसे आवाज आ रही है (बड़े कष्टसे मनुष्यकी आवाज सुन सकता है=आर्स, फास, साइलिसिया, सल्फ)।

पाकाशय ।—गलेमें जलन मालूम होना। ऐसा मालूम होना, कि समूचे गलेके भीतर और अन्ननालीसे उदरके ऊपरी प्रदेश तक खाल उधड़ गयी है ; निगलनेपर बढ़ता नहीं है। लगातार एकपर एक बहुत देर पहले खाई हुई चीजकी डकार आती रहती है, अम्लकी वजहसे छातीमें जलन,—पाकाशयसे ऊपरकी ओर उठती है, रोगी भोजन करता करता क्लान्त हो पड़ता है, पाकाशय खाली मालूम होता है। मेदमय या चर्बी मिली चीजें खानेकी रुचि नहीं रहती। मुंहसे खट्टी लारका स्राव ; मुंहमें पानी भर आना। पेट फूलना —उदरमें वायु-संचय होना और इसी वजहसे व्याकुलता मालूम होना।

सरलान्त्र और मल ।—बवासीर,—बहुत सूजन पैदा हो जाती है और चलनेके समय जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। मलद्वारमें जखम हो जाता है और उससे गन्धहीन लसदार स्राव निकलता है। स्पर्श सहन नहीं होता ; मलद्वारमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होता है,—ऐसा मालूम होता है मानो मलद्वारमें जखम हो गया है। मलद्वारका फटना (Fissure ani पियोनिया, एनाई, रैटेन)—इसीके कारण असह्य जलन।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु होने बाद रोगिनी इतनी कमजोर हो जाती है, कि बात नहीं कर पाती या बोलनेमें उसे बहुत तकलीफ मालूम होती है, (ऐलू, काक्यु) ; केवल सवेरेके समय ऋतु-स्राव होता है (बोवि, सिपि ; केवल रातमें या सिर्फ सवेरे=बोवि ; केवल दिनमें,—सोनेपर बन्द हो जाता

और कठिनता ; बवासीर ; सरका दर्द ; कड़ापन ; स्तन-पिलानेका दुष्परिणाम ; प्रदर ; कमरका दर्द ; नाककी बीमारियाँ ; कानका स्राव ; स्लीम-ग्रन्थि ; पैनृक्रियाकी बीमारी या कड़ापन ; पसीनेका परिवर्त्तन ; पार्श्व-वेदना या फेफड़े को ढकनेवाली झिल्लीका प्रदाह ; पालिपस या बहुपाद रोग ; आँखोंका स्नायुशूल ; जीभकी बीमारियाँ ; गलनालीकी बीमारी ; ज़खम ; जरायुका कैन्सर या कर्कटी-या क्षत ; दृष्टि-शक्तिमें विकार इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—वृद्ध और बहुत तरहका रोग भोगने की वजहसे जो जीर्ण शीर्ण हो गये हों, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। खासकर यदि उनकी शिरामें (Veins) ज्यादा खून सञ्चय होनेका लक्षण रहे, ऐसे रोगियोंकी त्वचा प्रायः नीला रङ्ग लिये हो जाती है ; सामान्य कारणसे भी उनके हाथ पैर नीले हो जाते हैं और त्वचाके भीतरसे नीले रङ्गकी फूली हुई शिराएं दिखाई दिया करती हैं। बहुत सामान्य कारण होनेपर भी वे बीमार पड़ जाया करते हैं। उनके दोनों गाल नीले हो जाते हैं। परिपाक यन्त्रके विकारमें और स्तनमें दूध सञ्चय होनेकी अवस्थामें जीवनी रसके क्षय हो जानेके कारण पैदा हुई बीमारियोंमें भी यह उपयोगी है। जिनकी गांठ फूल जाती हैं—ऐसे धातुओंमें भी यह विशेष लाभदायक है,—बगल और पुट्ठेकी गांठें सब फूल जाती हैं और लोहेकी तरह कड़ी हो जाती हैं,—खासकर जिनके शरीरमें प्रमेह या उपदंशका विष मौजूद हैं। फेफड़ेका अन्तर्वेष्ट-प्रदाह आराम हो जानेपर वक्षमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना—यह लक्षण मौजूद रहनेपर इससे बहुत फायदा दिखाई दिया करता है (कैलि-कार्ब)। सन्धियाँ सब बहुत कमजोर,—सामान्य परिश्रमसे ही उनमें दर्द पैदा हो जाता है। सखी ठण्डी हवा अच्छी न लगना भी इसका एक निर्देशक लक्षण है।

लक्षणावली।

मन।—सवेरे नींद खुलनेपर रोगी स्थिर नहीं कर सकता कि वह सोया है या जागा। उसमें पर्यायक्रमसे आनन्द और विषाद पैदा होता है, अकेले एकान्तमें रहनेकी इच्छा (आर्नि, कैम्फ, ऐक्टि, कोक, साइक्लोम, जेलसि, हेलिबो, इग्ने, लेडम, मैग-म्यू ; हायो, आक्साइ-ड्रोप, रास ; थूजा), हमेशा कुछ सोचा करना ; बोलनेमें चिढ़ ; रातमें मानसिक उद्वेग और रमणेच्छाकी प्रबलता,—इतनी अधिक रहती है कि रोगीको शय्यासे उठकर बैठ जाना पड़ता है।

ग्रन्थि-मण्डली ।—गला, बगल और पुट्ठे तथा स्तनकी ग्रन्थियां कड़ी, फूली और दर्द भरी हो जाती हैं—इसमें अस्त्रकी चोटकी तरह या जलन करनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है (कोना, मार्क-प्रोटो, आयोड, बेडियेगा), बिना विषका पीवभी विषैला या क्लेद भरा हो जाता है। व्रण या बाघी बहुत फूल जाती है और कड़ी हो जाती है (बेडि)। बाघी फूटकर जखमका मुंह खुल जाता है और थोड़ा-सा आराम होकर, बाकी अंश लोहेकी तरह कड़ा तथा नीली आभा लिये हो जाता है (लेके, टैरेण्ट, क्यूब)।

प्रत्यङ्गादि ।—हाथ पैरकी सन्धियां सब साधारण-सा भारी पदार्थ उठाने के समय भी दर्द करने लगती हैं या मोच खा जाती हैं (लेडम) ; जरासेमें ही गुल्फ सन्धिमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है या हड्डी खिसक जाती है (नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यू, फास, रियुटा)। गुल्फ-सन्धि बहुत चीण,—चलनेके समय घूम जाती है (ऐङ्गस, सिङ्को, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यू, ओलि-ऐन, साइलिसिया, रास-टेड)। ज्यादा परिश्रम करने या भारी चीज उठानेपर बहुत सुस्ती मालूम होने लगती है। मेरुदण्डका अन्तिम सिरा (मेरुपुच्छ) कमरके पिछले तलदेशसे छू जानेपर जलने लगता है, चलनेके समय पैरकी पोटली (Calves) में बहुत खींचन मालूम होती है। सवेरे ८ बजे तक दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं।

त्वचा ।—भूरे रङ्गका व्रण,—चेहरे पर लाल बिन्दुकी तरह उद्भेद (हाइड्रोकोट, आर्स, आयोड, रास)। रातके समय बहुत ज्यादा और बदबूदार पसीना (बेपट, सिङ्को); रक्त सञ्चालनकी क्रियामें बाधा पड़ती है और सञ्चालन चीण भावसे होता है ; जहांतक सम्भव होता है, शरीरका उत्ताप घट जाया करता है,—समूचे शरीरका रङ्ग नीला हो जाया करता है (ऐण्टि-टार्ट, कार्बो-वे)। जखमसे सहजमें ही खून निकलने लगता है तथा ताँबेके रङ्गके दाने निकल आते हैं। पसीना लगनेपर वस्त्र आदिमें पीला दाग पड़ जाता है (फेर, ग्रैफ, मार्क, थूजा, वेरेट ;—रक्तमय दाग पड़ जाता है=लेके, नक्स ; लाल दाग पड़ता है—आर्नि, डालका, नक्स ; कपड़ेमें पसीना सूख जानेपर कड़-कड़ाता है=मार्क, सेलिन)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक=(विशेषकर ग्रन्थि रोगके सम्बन्धमें) कैल्केरिया-फास।

सदृश ।—कड़ापन और पीव पैदा होनेमें=बेडि, ब्रोम ; रस रक्त क्षय—चायना, कार्बो-वे, कोना, मार्क-प्रोटो, आयोड, फास, सिपिया, सलफर।

है=कैक, कास्टि, लिलि-टाइग ; केवल रातमें या सो जानेपर—चलनेके समय बन्द हो जाता है ;=मैग-कार्ब ; रातमें बन्द रहता है, दिनमें स्राव होता है=कास्टि ; दिनमें अधिक स्राव=पल्स ; सिर्फ सोनेपर स्राव होता है, बैठने या चलनेपर बन्द हो जाता है=क्रियो ; केवल शरीर हिलानेके समय स्राव होता है=लिलि-टाइ)। बहुत सुस्त करनेवाला प्रदर, कपड़े में पीले रंगका दाग पड़ता है (नक्स, प्रूनस ; आर्त्तव स्राव,—पहले दिन थोड़ा ; दूसरे दिन बहुत ज्यादा,—रक्त गाढ़ा लाल=ब्राई कैप, फैर, ड्रग्ने, नाइड्रस ; प्लेट, पल्स)। गर्भावस्थामें मिचली,—रातमें बढ़ना (ऐपोमार्फिया ; क्रियो ; ऐसिड-कार्बो)। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव,—बहुत बदबूदार (बेल, क्रियो, रास, सिकेल)। स्तनमें कर्कट,—अर्बुद बहुत कड़ा असमतल ; आवरक त्वचा शिथिल ; जलन भरी ; उसपर मैल भरे नीले दाग सब दिखाई देते हैं। काँख या बगलकी ओर खींचन मालूम होना ; रातमें पसीना और विमर्ष भाव—दाहिने स्तनकी बीमारी। जरायुका कर्कट रोग ; उरु देशके पथसे जलन नीचेकी ओर फैलती है।

श्वास-यंत्र।—फेफड़ेका प्रदाह,—पीव संचय होना ; कफका रंग हरा, फुम्फुस-वेष्ट झिल्लीका प्रदाह (Pleurisy), बहुत दिनों तक रहनेवाला, शरीरकी त्वचा पीली, दुबलापन, मांस-क्षय, इसके साथ ही विलेपी ज्वर ; (साथ ही मोहका लक्षण मिला ; आराम हो जानेपर तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द ; बाकी रहनेपर कैलि-कार्ब, रैनान)। स्वरभंग और गलेके भीतर खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होना, सवेरे सोकर उठनेपर स्वरभङ्ग (बोविस्टा, कार्बो-वेज, नक्स) ; संध्याके समय बढ़ना (कार्बो-वे, फास) और रातमें एकदम गला बैठ जाना ; सूखी खाँसी,—केवल रातमें, दाहिनी करवट सोनेपर, छातीमें घड़ घड़ आवाज होती है ; जबतक खाँसकर थोड़ा श्लेष्मा न निकाल दिया जाये। सवेरे उठनेपर तेज खाँसी,—प्रायः समस्त दिवस रहती है ; खाँसनेपर पेट हिल उठता है और ऐसा मालूम होता है। मानो पेटके सब यन्त्र आदि बाहर निकल पड़ेंगे। इसीलिये रोगिनी खाँसनेके समय बैठकर दोनों हाथोंसे तलपेट पकड़कर दबा रखती है। फेफड़ेमें जखम पैदा हो जाता है और शीत मालूम होता है। हरे रङ्गका बलगम (कैनाब, कार्बो-वे, कैलि-आई, लाइ, पल्स, स्टैन)। खानेके बाद या सवेरे शय्यासे उठनेपर कलेजा धड़कना,—इसी कारणसे आँख बन्दकर चुपचाप बैठ जाना पड़ता है।

ग्रन्थि-मण्डली ।—गला, बगल और पुट्ठे तथा स्तनकी ग्रन्थियां कड़ी, फूली और दर्द भरी हो जाती हैं—इसमें अस्त्रकी चोटकी तरह या जलन करनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है (कोना, मार्क-प्रोटो, आयोड, बैडियेगा), बिना विषका पीवभी विषैला या क्लेद भरा हो जाता है। व्रध्न या बाघी बहुत फूल जाती है और कड़ी हो जाती है (बैडि)। बाघी फूटकर जखमका मुंह खुल जाता है और थोड़ा-सा आराम होकर, बाकी अंश लोहेकी तरह कड़ा तथा नीली आभा लिये हो जाता है (लेके, टैरेण्ट, क्यूब)।

प्रत्यङ्गादि ।—हाथ पैरकी सन्धियां सब साधारण-सा भारी पदार्थ उठाने के समय भी दर्द करने लगती हैं या मोच खा जाती हैं (लेडम); जरासेमें ही गुल्फ सन्धिमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है या हड्डी खिसक जाती है (नैट्र-कार्ब, नैट्र-म्यू, फास, रियुटा)। गुल्फ-सन्धि बहुत क्षीण,—चलनेके समय घूम जाती है (ऐङ्गस, सिङ्को, नैट्र-कार्ब, नेट्र-म्यू, ओलि-ऐन, साइलिसिया, रास-टैड)। ज्यादा परिश्रम करने या भारी चीज उठानेपर बहुत सुस्ती मालूम होने लगती है। मेरुदण्डका अन्तिम सिरा (मेरुपुच्छ) कमरके पिछले तलदेशसे छू जानेपर जलने लगता है, चलनेके समय पैरकी पोटली (Calves) में बहुत खींचन मालूम होती है। सबेरे ८ बजे तक दोनों पैर बरफकी तरह ठण्ढे रहते हैं।

त्वचा ।—भूरे रङ्गका व्रण,—चेहरे पर लाल बिन्दुकी तरह उद्भेद (हाइड्रोकोट, आर्स, आयोड, रास)। रातके समय बहुत ज्यादा और बदबूदार पसीना (कैप्ट, सिङ्को); रक्त सञ्चालनकी क्रियामें बाधा पड़ती है और सञ्चालन क्षीण भावसे होता है; जहांतक सम्भव होता है, शरीरका उत्ताप घट जाया करता है,—समूचे शरीरका रङ्ग नीला हो जाया करता है (ऐण्टि-टार्ट, कार्बो-वे)। जखमसे सहजमें ही खून निकलने लगता है तथा तांबेके रङ्गके दाने निकल आते हैं। पसीना लगनेपर वस्त्र आदिमें पीला दाग पड़ जाता है (फेर, ग्रैफ, मार्क, थूजा, वेरेट ;—रक्तमय दाग पड़ जाता है=लैके, नक्स ; लाल दाग पड़ता है—आर्नि, डालका, नक्स ; कपड़ेमें पसीना सूख जानेपर कड़-कड़ाता है=मार्क, सेलिन)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक=(विशेषकर ग्रन्थि रोगके सम्बन्धमें) कैल्केरिया-फास।

सदृश ।—कड़ापन और पीव पैदा होनेमें=बैडि, ब्रोम ; रस रक्त स्राव—चायना, कार्बो-वे, कोना, मार्क-प्रोटो, आयोड, फास, सिपिया, सलफर।

सड़ी मछली वगैरह खानेके कारण बीमारीमें — कार्बो-वेज, सिपा—इसके सदृश है। ककुलसकी तरह कमजोरी ; सरमें चक्कर आना—पल्स और साइलि ; नाकसे खून गिरना—सलफर ; जलनमें कैप्सिकम ; सवेरेके समय भूख—ऐशिड्-फ्लूओ, कैल्के ।

दोषघ्न ।—आर्स, कैम्फर, नक्स-वोम ।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे ६ ठीं, ३०, २०० शततमिक ।

क्रियाका स्थायित्व ।—६० दिन ।

कार्बो-वेजिटेबिलिस ।

(CARBO VEGETABILIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—उद्भिद अंगारसे विचूर्ण ६ x तक ; इसके बाद अर्क ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— अम्ल-रोग ; मुंहासा ; हृत्शूल ; स्वर-भङ्ग ; क्षीण-दृष्टि ; दमा ; स्तनमें कर्कटका जखम ; श्वासनाली-प्रदाह ; दाह ; दूषित-फोड़ा ; सर्दी ; हैजा या कालरा ; काब्जियत ; खांसी ; बहरापन ; कमजोरी ; अतिसार ; डकार ; आध्मान ; सड़नेवाले जखम ; रक्त-स्राव ; अर्श (बवासीर) ; केश झड़जाना ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बहुतसी बीमारियाँ ; बहुव्यापक सर्दी (इनफ्लुएञ्जा) ; सविराम-ज्वर ; स्वरनालीका प्रदाह ; फेफड़ेमें रक्तसञ्चय ; छोटी-माता ; कर्णमूल प्रदाह ; नाकसे रक्तस्राव ; अन्ननली और अण्डकोषका प्रदाह ; कर्ण-स्राव ; गर्भावस्थाकी बहुतसी बीमारियाँ ; कच्छु या खसड़ा ; शीताद (Scurvy) ; कम्प ; नींदमें गड़बड़ी ; पाकस्थलीकी बीमारी ; पाकाशयका प्रदाह ; मुंहका जखम ; गलनालीका सूखापन ; उदराध्मान (पेट फूलना) ; टाइफस या मोह-ज्वर ; पीतज्वर ; बहुत तरहके जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत दिनोंतक नाना प्रकारके रोग भोगनेके कारण जिनका शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया है (सिङ्कोना, कैल्के-फास, फास, सोराइन), जीवनी शक्तिका मानो ह्रास हो गया हो। जो पहले रोगसे

आरोग्य होने बाद एक दिनके लिये भी अच्छे नहीं रहते ; बचपनमें छोटी माता या हूप खांसी आदिके बादसे अबतक जो दमाकी बीमारी भोग रहे हैं; कभी किसी दिन शराब पीकर आनन्द मनाया था, पर आजतक उसके परिणाम स्वरूप मन्दाग्नि रोग भोग रहे हैं ; कभी बचपनमें शरीरके किसी अंशमें चोट लग गयी थी ; पर अबतक स्वास्थ्यमें विकार या गड़बड़ी भोगनेमें आती है और आंत्रिक ज्वर (Typhoid) ज्वर हुआ था ; पर आजतक पहले जैसा स्वास्थ्य न हुआ— ऐसे रोगियोंके लिये यह बहुत उपयोगी है। विसूचिका इत्यादि रोगोंकी सुस्ती वाली अवस्थामें जब दस्त कै आदि बन्द हो जाते हैं, और हाथ पैरोंमें ऐंठन शुरू हो जाती है और रोगी मुर्देकी तरह पड़ा रहता है,—प्रतिक्रियाका चिन्हतक नहीं दिखाई देता ; रोगीका चेहरा रक्त-हीन, दोनों ओंठ नीले, देह बरफकी तरह ठण्ढी, यहांतक कि श्वास भी ठण्ढी हो जाती है, परन्तु माथा गर्म, नाड़ी प्रायः नहीं मिलती, या सूतकी तरह चीण रहती है और रोगी बराबर पंखा झलनेके लिये कहता है और कमरेकी खिड़कियां आदि खोल देनेकी इच्छा प्रकट करता है, उस अवस्थामें यह संजीवनी सुधाकी तरह रोगीको फिरसे जिला देता है। इसके द्वारा सभी श्लैष्मिक झिल्लीमय द्वारोंसे रक्तस्राव होता है (सिंको, फास); क्विनाइनके अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारियोंमें और क्विनाइन से रुके हुए सविराम ज्वरमें, पारा, नमक, और नमकीन मछली-मांस आदि तथा सड़ी मछली मांस खाने तथा बहुत गर्मी लग जानेकी वजहसे जो बीमारियां पैदा हो जाती हैं (ऐसिड-क्रूड) उनमें यह बहुत ही उत्कृष्ट लाभ दिखाता है। लक्षणके अनुसार चुनी हुई दवाएं सब बार बार प्रयोग करनेपर भी यदि रोगीके शरीरमें प्रतिक्रियाकी कमी दिखाई दे तो यह एक उत्कृष्ट दवा है। इसके कुछ प्रधान निर्णायक लक्षण यहां संक्षेपमें लिखे जाते हैं—अग्निमान्द्य, पेट फूलना, श्वासकृच्छ्रता, वायु छूटनेपर आराम मिलना, पाकाशयमें जलन, पीठ और मेरुदण्ड तक यह जलन फैल जाती है। पेटसे पीठ तक मानो चिपक जाता है, इसके साथ ही पेट फूलना। सड़ी या बदबूदार डकार ; मुंहमें पानी भर आना। खाया हुआ पदार्थ पचनेके पहले ही सड़ने लगता है। पेटमें वायुके कारण आंतोंमें शूलका दर्द ; मलका पतलापन, अनजानमें ही पाखाना हो जाना ; मलमें सड़ी गन्ध ; पाखाना होने बाद मलान्त्रमें जलन और बहुत कमजोरीकी वजहसे देह कुछ कांपा करती है। सन्ध्याके समय स्वरभङ्ग ; छातीमें खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होता है ; इसके साथ ही छातीमें जलन। इस

मनुष्योंका दमा ; छोड़ी हुई सांस शीतल और रोगी पंखेसे हवा करनेके लिये कहता है। फेफड़ेके प्रदाहकी कुचिकित्साके बाद बहुत ही बदबूदार बलगम निकलना । आर्त्तव-स्रावके पहले गाढ़ा हरे रङ्गका प्रदर-स्राव । शरीरकी त्वचा की खुजली ; पुराने जखम सब आराम नहीं होना चाहते और उनमें जलन हुआ करती है, साथ ही उनसे रस बहा करता है ; पीठका फोड़ा ।

लक्षणावली ।

मन ।—स्मरण-शक्तिकी क्षीणता ; जड़-बुद्धि । रातमें भूतका भय । सभी विषयोंमें उदासीनता ; बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी स्वभाव, अन्धकारमें बहुत डर मालूम होता है ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—बिना कुछ पकड़े खड़ा नहीं हो सकता और न बैठ ही सकता है ; माथा झुकानेपर (बेल, नक्स, पलस, सल्फ, ब्राई, लाई, पेट्रोल) बढ़ना ; पेटमें वायु सञ्चय होनेकी वजहसे (कैलि-कार्ब) सरमें चक्कर आना ; सरमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे ; शराब पीनेके कारण (ऐगार) सरमें चक्कर आना ; माथेमें बहुत भार मालूम होना—मानो माथेमें सीसा भरा हुआ है। माथेकी ओर खूनका दौरान होना, नाक से खून गिरना । मूर्द्धदेशमें दबाव मालूम होना और केशोंके छूनेपर दर्द मालूम होता है, माथेके पिछले भागमें तेज दर्द । केश झड़ जाता है । माथेपर टोपी रहनेसे बहुत भार मालूम होता है, और टोपी उतार देनेपर भी ऐसा मालूम होता है, मानो माथा कपड़ेसे बँधा हुआ है (ऐसिड-नाई, कैल्के-फास, नैट्र-कार्ब) ।

नाक ।—दो सप्ताहतक रोज दो तीन बार रक्तस्राव होता है, रक्तस्राव के पहले और बाद चेहरा उतर जाता है, और बदरङ्ग हो जाता है (चेहरा लाल हो जाता है=मिलिलोट); नासारन्ध्रमें बार बार खुजली ; सुरसुरीके साथ लगातार छींकें आते रहना ।

मुखमण्डल ।—चेहरा एकदम उतरा हुआ या पीला ; आंख और गाल गड्ढेमें धँसे, नाक उठी और नुकीली ; ठण्डा पसीना ; मुँह ठण्डा, जीभ ठण्डी और संकुचित । मुँह और हनुकी अस्थियोंमें दर्द ।

मुख-विवर और गलेके भीतर ।—दाँतोंकी जड़ बहुत शिथिल रहती है, मसूड़े सब दाँतोंकी जड़से अलग हो जाते हैं, और कभी कभी मसूड़ेमें

खून निकला करता हैं। जीभ सफेद आभा लिये ; पीली-भूरी श्लेष्मा भरे लेपसे चढ़ी ; सीसेका रंग या नीला रंग, लसदार और तर ; इसकी अलावा कहीं सखी और फटी फटी, मुंह सूखा पर उसमें प्यास नहीं रहती (वेल, नक्स-मस)। गाढ़ी लसदार लेईकी तरह बहुत ज्यादा लार बहना, गलेमें संकोचन मालूम होता है, (वेल, हायो) ; गलेमें बहुत शीतलता मालूम होना (लोरो ; जलन मालूम होना = आर्स, केन्थ)। गलेमें कर्कशता और पानी लग जानेकी तरह मालूम होना।

पाकस्थली।—रोगी वही खाना चाहता है, जिससे बीमार हो जायेगा। बूढ़े शराबी शराब पीनेकी इच्छा प्रकट करते हैं, कमरका कपड़ा ढीला या अलग कर देते हैं (लाई, नक्स) ; अग्निमान्द्य ; बहुत हलकी चीजें भी नहीं पचतीं ; पाकस्थली और अन्त्राशयमें बहुत अधिक परिमाणमें वायु-संचय होता है:—सोनेसे बढ़ जाता है ; खाने पीने बाद ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थली फूल जायगी ; बहुत ज्यादा खाने पीनेपर ; देरसे खाने या पकी चीजें आदि खानेकी वजहसे बीमारियां : डकार आनेपर थोड़ी देरके लिये घट जाता है। भूख प्यासका ज्यादा रहना। मांस और चर्बी मिला या मेदमय पदार्थोंसे अनिच्छा (इच्छा बनी रहे = ऐसिड-नाई, नक्स)। मुँहका स्वाद तीता या नमकीन, खायी हुई चीजें बहुत नमक मिली मालूम होती हैं। (सिपिया)। सड़ी गन्ध मिली डकार, खाने बाद फ़िर भूख मालूम होना, (फास, स्टैफ) ; *यकृतमें चोट लगनेकी तरह दर्द, मानो किसीने* कसकर पकड़ लिया है (लाई) ; स्तन पिलानेवाली माताकी छातीमें जलन (Incarcerated flatus) ; ऊपर मुंह उठाकर सोनेके समय और चलनेके समय पाकाशयमें खटापन मालूम होता है। पाकाशयमें बहुत भार मालूम होता है,—मानो फूल गया है (ऐगार, इपिका, स्टैफ, टैब)। मुँहमें पानी भर आना। आध्मान वायु संचय होनेकी वजहसे दमाकी तरह श्वास प्रश्वास ; पाकाशयमें ऐंठनकी तरह दर्दके कारण रोगी सामनेकी ओर झुक पड़ता है, पाचन क्रिया बहुत देरसे होती है अतएव खाये हुए पदार्थ पच जानेके पहले ही सड़ जाते हैं।

अन्त्राशय।—पेट फूलनेकी वजहसे शूलका दर्द। ऐसा मालूम होना, कि अन्त्राशय फट जायगा। मूत्रस्थलीके स्थानपर या उदरके ऊपरी प्रदेशमें बाईं ओर ज्यादा दर्द मालूम होना ;—थोड़ा भी खानेसे दर्दका बढ़ जाना, वायु त्याग

होनेपर या कड़ा मल निकलनेपर आराम मालूम होता है। आध्मानकी वजह से पेटमें गड़गड़ाहट होती है, बदबूदार या बिना किसी गन्धकी डकार आती है। पेटमें दर्द रहता है,—मानो भारी चीज़ उठानेकी वजहसे दर्द हो गया हो ; बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार वायु निकलता है।

सरलान्त्र, मलान्त्र या मल ।—अनजानमें बार बार बहुत ज्यादा और बदबूदार पाखाना होता है और उसके बाद ही जलन होती है ; कोमल मल भी बड़ी कठिनतासे निकलता है (ऐल्यू, हिपर)। मलमें कड़ापन,—मल बहुत कड़ा, लसदार और परिमाणमें थोड़ा निकलता है। अर्श,—स्पर्श सहन नहीं होता, खुजलानेवाला और रस-स्रावी ; मसा बाहर निकल आता है, नीलापन लिये रहता है ; पीब पैदा होनेवाला और बदबूदार ; जलन, मलान्त्रमें सुई वेधनेकी तरह दर्द। पाखाना होनेके समयके अलावा और समय भी मलान्त्रमें दर्द हुआ करता है। यह दर्द चबाने जैसा दर्द मालूम होता है ; खुजलाहट, मानो क्रिमि हो गयी है, ऐसा उदरामय—कड़ी या बहुत दिनोंकी बीमारियोंके बाद ; शरीरकी बहुत ही उष्णावस्थामें कुलफी बरफ या बरफका पानी पीनेके कारण पाकाशयमें ठण्ड पैदा होकर पतले दस्त आने लगना ; या सड़ी मछली मांस आदि खानेकी वजहसे उदरामय ; मल भूरा, पानी जैसा और लसदार ; क्षयरोगके रोगी या वृद्ध मनुष्योंकी बीमारी।

पुं-जननेन्द्रिय ।—कर्णमूल संचालित होकर अण्डकोषमें सूजन (पल्स)। अनजानमें रेतस्खलन हो जाना,—कोई भी सुख नहीं मालूम होता। पाखाना होनेके समय प्रोस्टेटिक ग्रन्थिसे रस-स्राव (इस्कुई, ऐल्यू, कास्टि, ऐनाक, हिप, नेट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि, सिलिसिया, सल्फ, थूजा)। मुष्कके पार्श्वके उरुदेशमें स्वेदका स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु बहुत ज्यादा होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है ; खून गाढ़ा, कषाय गुण विशिष्ट, और उसमें तेज गन्ध होती है (ऐमोन-कार्ब, नेट्रम-सल्फ, सल्फ, बहुत देरसे, बहुत थोड़ा स्राव, उसका गुण कसैला, उरु देशकी त्वचाको क्षय करनेवाला=कैलि-कार्ब ; सार्सा ; सल्फ) प्रदर—स्राव सवेरेके समय होता है, स्राव बहुत कषाय, योनिपथकी त्वचा मानो क्षय हो जाती है (आर्स, कोना, क्रियो ; सवेरे स्राव होता है=बोवि, सिपि, कार्बो-ऐनिम)।

श्वासयंत्र।—स्वरभङ्ग, सन्ध्याके समय (कार्बो-ऐन, फास), वृद्धि=जलीय तर सन्ध्याकी हवामें, ऊँचे स्वरसे गाने या पढ़नेके समय स्वरलोप (Aphonia); (सवेरे वृद्धि=कास्टि, युपेट); बहुत देर तक स्थायी। हिचकीके साथ क्षुद्र आक्षेपिक खाँसी (खायी हुई चीज वमन करनेके साथ=डिजि, फेरम, रास)। केवल सवेरेके समय कफ निकलता है; निकलनेवाला श्लेष्मा हरा बदबूदार पीबकी तरह (साइलिसि, स्टैन); खून मिला कफ और वक्षमें आग छू जानेकी तरह जलन और उसके साथ ही खाँसी। खाने पीने बाद या बात करनेपर खाँसीका बढ़ना (एक घूंट ठण्ढा पानी पीनेपर घटना=कास्टि, क्यूप्रम; ठण्ढा पानी पीनेपर वृद्धि=ऐसिड-सल्फ, डिजि, वेरेट, एमोन-म्यूर, सिलिसिया, स्क्विला; किसी तरहका पानीय पीनेपर खाँसी=आर्स ब्राई, ड्रोसे, लैके, सिङ्को, सिफाई—वियुटो, भोजनके बाद खाँसी=ऐनाक, बेल, ब्राई, कैम, सिङ्को, डिजि, नक्सवोम, ओपि; बोलनेपर—ऐनाक, कास्टि, लैके, मेङ्ग, सिफाई, मार्क, फास, स्टैन, वेराई, ऐसिड-म्यूर, नेट्रमूर; वक्ष और वायु नलीभुजमें श्लेष्माका शब्द या घड़घड़ साँय साँय शब्द (इपिका, ऐण्टि-टार्ट, नेट्र-म्यूर)। दोनों पृष्ट फलकोंके बीचवाले प्रदेशमें सुई वेधनेकी तरह मालूम होना। रोगी निर्मल हवाके लिये हमेशा लालायित रहता है और जोरसे पंखा झलनेके लिये कहता है (धीरे और दूरसे हवा करनेके लिये कहता है=लैके): फेफड़ेके प्रदाहकी (Pneumonia) भी सांघातिक अवस्था, जब ऐण्टि-टार्टके प्रयोगसे भी रोगीके फेफड़ेमें जमा हुआ पतला श्लेष्मा निकल नहीं सकता और रोगीका शरीर नीला हो जाता है और फेफड़ेका पक्षाघात होनेकी सम्भावना हो जाती है, उस समय कार्बो-वेजिटेबिलसके प्रयोगसे आश्चर्यजनक फल दिखाई देता है।

प्रत्यङ्ग।—कमरके पीछेवाले स्थानमें बहुत तेज दर्द, इसी वजहसे रोगिनी बैठ नहीं सकती। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो कमरमें कोई खील ठोकी हुई है और कमरके नीचे तकिया रखे बिना सो नहीं सकती। कोहनी (Elbow) में बहुत दर्द—मानो मोच खा गयी है (मानो सन्धि-भ्रष्ट हो गयी है=ब्राई, रियुटा), निचली बाँह और कलाईमें संकोचन या उत्पाटन (उखाड़ने) की तरह दर्द। हाथ पैरोंमें ज्यादा शीत मालूम हो जानेकी वजह से रातमें नींद खुल जाती है और जानुदेश इतना ठण्ढा हो जाता है कि उसे अच्छा नहीं मालूम होता (एपिस, इफनी, मार्क, रैफेनस; उरु देशमें ठण्ढक

होनेपर या कड़ा मल निकालनेपर आराम मालूम होता है। आंआमकी वजह से पेटमें गड़गड़ाहट होती है, बदबूदार या बिना किसी गन्धकी डकार आती है। पेटमें दर्द रहता है,—मानो भारी बोझ उठानेकी वजहसे दर्द हो गया हो ; बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार वायु निकलता है।

सरलान्त्र, मलान्त्र या मल।—अनजानमें बार बार बहुत ज्यादा और बदबूदार पाखाना होता है और उसके बाद ही जलन होती है ; कोमल मल भी बड़ी कठिनतासे निकलता है (ऐल्यू, हिपर)। मलमें कड़ापन,—मल बहुत कड़ा, लसदार और परिमाणमें थोड़ा निकलता है। अर्श,—सर्श सहन नहीं होता, खुजलानेवाला और रस-स्रावी ; मसा बाहर निकल आता है, नीलापन लिये रहता है ; पीब पैदा होनेवाला और बदबूदार ; जलन, मलान्त्रमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। पाखाना होनेके समयके अलावा और समय भी मलान्त्रमें दर्द हुआ करता है। यह दर्द चबाने जैसा दर्द मालूम होता है ; खुजलाहट, मानो कृमि हो गयी है, ऐसा उदरामय—कड़ी या बहुत दिनोंकी बीमारियोंके बाद ; शरीरकी बहुत ही उष्णावस्थामें कुलफी बरफ या बरफका पानी पीनेके कारण पाकाशयमें ठण्ड पैदा होकर पतले दस्त आने लगना ; या सड़ी मछली मांस आदि खानेकी वजहसे उदरामय ; मल भूरा, पानी जैसा और लसदार ; क्षयरोगके रोगी या वृद्ध मनुष्योंकी बीमारी।

पुं-जननेन्द्रिय।—कर्णमूल संचालित होकर अण्डकोषमें सूजन (मम्स)। अनजानमें रेतस्खलन हो जाना,—कोई भी सुख नहीं मालूम होता। पाखाना होनेके समय प्रोस्टेटिक ग्रन्थिसे रस-स्राव (इस्कुई, ऐल्यू, कास्टि, ऐनाका, हिप, नेट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि, सिलिसिया, सल्फ, थूजा)। मुष्कके पार्श्वके उरुदेशमें स्वेदका स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत ज्यादा होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है ; खून गाढ़ा, कषाय गुण विशिष्ट, और उसमें तेज गन्ध होती है (ऐमोन-कार्ब, नेट्रम-सल्फ, सल्फ, बहुत देरसे, बहुत थोड़ा स्राव, उसका गुण कसैला, उरु देशकी त्वचाको क्षय करनेवाला=कैलि-कार्ब ; सार्सा ; सल्फ) प्रदर—स्राव सवेरेके समय होता है, स्राव बहुत कषाय, योनिपथकी त्वचा मानो क्षय हो जाती है (आर्स, कोना, क्रियो ; सवेरे स्राव होता है=बोवि, सिपि, कार्बो-ऐनिम)।

श्वासयंत्र।—स्वरभङ्ग, संध्याके समय (कार्बो-ऐन, फास), वृद्धि= जलीय तर सन्ध्याकी हवामें, ऊँचे स्वरसे गाने या पढ़नेके समय स्वरलोप (Aphonia); (सवेरे वृद्धि=कास्टि, युपेट); बहुत देर तक स्थायी। हिचकीके साथ क्षुद्र आक्षेपिक खाँसी (खायी हुई चीज वमन करनेके साथ =डिजि, फेरम, रास)। केवल सवेरेके समय कफ निकलता है; निकलनेवाला श्लेष्मा हरा बदबूदार पीबकी तरह (साइलिशि, स्टैन); खून मिला कफ और वक्षमें आग छू जानेकी तरह जलन और उसके साथ ही खाँसी। खाने पीने बाद या बात करनेपर खाँसीका बढ़ना (एक घूंट ठण्ढा पानी पीनेपर घटना =कास्टि, क्युप्रम; ठण्ढा पानी पीनेपर वृद्धि=ऐसिड-सल्फ, डिजि, वेरेट, एमोन-म्यूर, सिलिसिया, स्क्विला; किसी तरहका पानीय पीनेपर खाँसी=आर्स व्राई, ड्रोसे, लैके, सिङ्को, मिफाई—पियुटो, भोजनके बाद खाँसी=ऐनाक, बेल, व्राई, कैम, सिङ्को, डिजि, नक्सवोम, ओपि; बोलनेपर—ऐनाक, कास्टि, लैके, मैङ्ग, मिफाई, मार्क, फास, स्टैन, बैराई, ऐसिड-म्यूर, नैट्रम्यूर; वक्ष और वायु नलीभुजमें श्लेष्माका शब्द या घड़घड़ साँय साँय शब्द (इपिका, ऐण्टि-टार्ट, नैट्र-म्यूर)। दोनो पृष्ठ फलकोंके बीचवाले प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना। रोगी निर्मल हवाके लिये हमेशा लालायित रहता है और जोरसे पंखा झलनेके लिये कहता है (धीरे और दूरसे हवा करनेके लिये कहता है=लैके): फेफड़ेके प्रदाहकी (Pneumonia) भी सांघातिक अवस्था, जब ऐण्टि-टार्टके प्रयोगसे भी रोगीके फेफड़ेमें जमा हुआ पतला श्लेष्मा निकल नहीं सकता और रोगीका शरीर नीला हो जाता है और फेफड़ेका पक्षाघात होनेकी सम्भावना हो जाती है, उस समय कार्बो-वेजिटेबिलसके प्रयोगसे आश्चर्यजनक फल दिखाई देता है।

प्रत्यङ्ग।—कमरके पीछेवाले स्थानमें बहुत तेज दर्द, इसी वजहसे रोगिनी बैठ नहीं सकती। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो कमरमें कोई खील ठोकी हुई है और कमरके नीचे तकिया रखे बिना सो नहीं सकती। कोहनी (Elbow) में बहुत दर्द—मानो मोच खा गयी है (मानो सन्धि-भ्रष्ट हो गयी है=व्राई, रियुटा), निचली बाँह और कलाईमें संकोचन या उत्पाटन (उखाड़ने) की तरह दर्द। हाथ पैरोंमें ज्यादा शीत मालूम हो जानेकी वजह से रातमें नींद खुल जाती है और जानुदेश इतना ठण्ढा हो जाता है कि उसे अच्छा नहीं मालूम होता (एपिस, डैफनी, मार्क, रैफेनस; उरु देशमें ठण्ढक

मालूम होना = मार्क, नक्स ; पैरकी अँगुली ठण्डी = ऐको, सल्फ)। मलद्वारमें भार, अकड़न और सुन्नपन मालूम होता है । तलवा अकड़ जाता है (कैल्के फास्फ़ि, सिकेल, सल्फ)। पैरका सुन्न मालूम होना (आर्नि, लेके, नक्स, पल्स और बदबूदार = कैल्के, लाई, मार्क, एसिड-नाई, सल्फ)।

त्वचा ।—खुजली,—हृद्धि संध्याके वक्त शय्याके उत्तापसे शरीर गर्म होनेपर । वार्द्धक्य-सुलभ पूति जनन प्रवणता (Tendency to gangrene),—परकी अंगुलीसे आरम्भ होता है, शय्याक्षत (आर्नि, हाइपिर, पाइरोजेन)। सहजमें ही खून निकलने लगता है (फास)। शरीरकी क्षीणताकी वजहसे केश उड़ जाना। दुरारोग्य जलन-भरा जखम । बदबूदार और रस-भरा पीवका स्राव । शिराके फूलनेकी वजहसे जखम आदि । विषैले फोड़े (Carbuncles = आर्स, ऐन्थ्रेक्सिनम)

ज्वर ।—शीतावस्थामें प्रायः प्यास मौजूद रहती है,—साधारणतः संध्याके समय शीतका आविर्भाव होता है और कभी कभी शीत केवल बाएं पार्श्वमें मालूम होता है (कास्टि, लेके, रास, थूजा ; दाहिने पार्श्वमें = ब्राई, पैरिस)। शीतावस्थामें शरीर बरफकी तरह ठण्डा। उत्ताप ज्वालामय,— संध्याके समय और बिना प्यासका। क्षिलेपी ज्वर (Hectic) उत्ताप और पसीना मिला। रातमें पसीना या सवेरे पसीना।—बहुत सुस्त करनेवाला, थोड़े भी परिश्रमसे बहुत ज्यादा पसीना हो जाता है,—विशेषकर माथे और मुखमण्डलमें। पसीना बहुत ज्यादा, बदबूदार और खट्टी गन्ध-मिला।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक ।—कैलि-कार्ब, फास्फोरस, चायना, ड्रोसे।

दोषघ्न ।—आर्स, कैम्फ, काफिया, लैकेसिस, डालका, फेरम ।

तुलनीय ।—लाइकोपोडियम, कार्बो-ऐनिमेलिस, लैके, सिकेलि, नक्स-वो, सिपिया, रासटक्स, रियुमेक्स, ग्रैफाइटिस, और रैफेनस ।

सदृश ।—तुच्छीकृत और पुराने शराबियोंके फेफड़ेके प्रदाहमें— (सिङ्कोना, और ब्रूमम) पतला श्लेष्मा निकलनेके अभावमें और पक्षाघातका उपक्रम होनेपर ऐरिट-टार्टके बाद कार्बो-वेज, आश्चर्य-जनक लाभ दिखाता है। जिन फोड़ोंसे सामान्य कारणसे भी खून निकलने लगता है, वैसे जखमोंमें कार्बो-वेजके बाद फास्फोरसका व्यवहार करना चाहिये और तेज गन्धवाले

आर्त्तव-स्रावमें सलफर उपयोगी है। सड़ी मछली खानेकी वजहसे यदि बीमारी पैदा हो जाये तो सिङ्कोना, लैकेसिस, मार्क्युरियस, कार्बो-वेजटिविलिस सदृश दवाएँ हैं।

वृद्धि।—पनीर, मेदभरी मछली आदि और सड़ी मछली आदि खानेसे, क्विनाइन, सिङ्कोना और पारावे अपव्यवहारसे ; ऊँचे स्वरसे गानेपर, पढ़ने या वक्तृता देनेके समय ; गर्म अथच जलीय वायुमें।

उपशम।—डकारसे, तेजीसे पंखेसे हवा करनेपर और निर्मल वायु सेवन करनेपर।

शक्ति।—१२ वीं से २०० शक्ति पर्यन्त। पाकस्थलीको स्थानिक बीमारीमें निम्नतम क्रम व्यवहार करना चाहिये।

क्रियाका स्थायित्व।—६० दिन।

कार्बोनियम।

(CARBONEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लेमनको चिमनोसे संग्रह किये हुए झोलसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आक्षेप, गलेका जखम, कब्जियत, धनुष्टङ्कार, जोभमें खींचन वगैरहमें उपयोगी है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कार्बो-एनि, कार्बो-वेज, कार्बो-हाइड्रो, कार्बो-आक्सि, नक्स, इयूजा, और इग्नेशि।

शक्ति।—निम्न शक्ति विचूर्ण।

मालूम होना=मार्क; नक्स : पैरकी अँगुली ठण्डी=ऐकी, सल्फ)। प्रत्यङ्गोंमें भार, अकड़न और सुन्नपन मालूम होता है । तलवा अकड़ जाता है (वेल्के आस्ट्रि, सिकेल, सल्फ)। पैरका सुन्न मालूम होना (आर्नि, लैके, नक्स, पलस और बदबूदार=केल्को, लाई, मार्क, एसिड-नाई, सल्फ)।

त्वचा ।—खुजली,—वृद्धि संध्याके वक्त शय्याके उत्तापसे शरीर गर्म होनेपर । वार्द्धक्य-सुलभ पूति जनन प्रवणता (Tendency to gangrene),—परकी अंगुलीसे आरम्भ होता है, शय्याक्षत (आर्नि, हाइपिर, पाइरोजेन)। सहजमें ही खून निकलने लगता है (फास)। शरीरकी क्षीणताकी वजहसे केश उड़ जाना। दुरारोग्य जलन-भरा जखम । बदबूदार और रस-भरा पीवका स्राव । शिराके फूलनेकी वजहसे जखम आदि । विषैले फोड़े (Carbuncles =आर्स, ऐन्थ्रे क्सिनम)

ज्वर ।—शीतावस्थामें प्रायः प्यास मौजूद रहती है,—साधारणतः संध्याके समय शीतका आविर्भाव होता है और कभी कभी शीत केवल बाँए पार्श्वमें मालूम होता है (कास्टि, लेके, रास, थूजा ; दाहिने पार्श्वमें=ब्राई, पैरिस)। शीतावस्थामें शरीर बरफकी तरह ठण्डा। उत्ताप ज्वालामय,—संध्याके समय और बिना प्यासका। विलेपी ज्वर (Hectic) उत्ताप और पसीना मिला। रातमें पसीना या सवेरे पसीना।—बहुत सुस्त करनेवाला, थोड़े भी परिश्रमसे बहुत ज्यादा पसीना हो जाता है,—विशेषकर माथे और मुखमण्डलमें। पसीना बहुत ज्यादा, बदबूदार और खट्टी गन्ध-मिला।

सम्बन्ध ।—**अनुपूरक** ।—कैलि-कार्ब, फास्फोरस, चायना, ड्रोसे।

दोषघ्न ।—आर्स, कैम्फ, काफिया, लैकेसिस, डालका, फेरम।

तुलनीय ।—लाइकोपोडियम, कार्बो-एनिमेलिस, लैके, सिकेलि, नक्स-वो, सिपिया, रासटक्स, रियुमेक्स, ग्रेफाइटिस, और रैफेनस।

सदृश ।—तुच्छीकृत और पुराने शराबियोंके फेफड़ेके प्रदाहमें—(सिङ्कोना, और ब्रम्स) पतला श्लेष्मा निकलनेके अभावमें और पक्षाघातका उपक्रम होनेपर ऐण्टि-टार्टके बाद कार्बो-वेज, आश्चर्य-जनक लाभ दिखाता है। जिन फोड़ोंसे सामान्य कारणसे भी खून निकलने लगता है, वैसे जखमोंमें कार्बो-वेजके बाद फास्फोरसका व्यवहार करना चाहिये और तेज गन्धवाले

आस्त्र-स्रावमें सलफर उपयोगी है। सड़ी मछली खानेकी वजहसे यदि बीमारी पैदा हो जाये तो सिङ्कोना, लैकेसिस, मार्क्युरियस, कार्बो-वेजटिबिलिस सदृश दवाएँ हैं।

वृद्धि।—पनीर, मेदभरी मछली आदि और सड़ी मछली आदि खानेसे, क्विनाइन, सिङ्कोना और पाराके अपव्यवहारसे ; ऊँचे स्वरसे गानेपर, पढ़ने या वक्तृता देनेके समय ; गर्म अथच जलीय वायुमें।

उपशम।—डकारसे, तेजीसे पंखेसे हवा करनेपर और निर्मल वायु सेवन करनेपर।

शक्ति।—१२ वीं से २०० शक्ति पर्यन्त। पाकस्थलीकी स्थानिक बीमारीमें निम्नतम क्रम व्यवहार करना चाहिये।

क्रियाका स्थायित्व।—६० दिन।

कार्बोनियम।

(CARBONEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लेमनकी चिमनीसे संग्रह किये हुए झोलसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आक्षेप, गलेका जखम, कब्जियत, धनुष्टङ्कार, जीभमें खींचन वगैरहमें उपयोगी है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, कार्बो-हाइड्रो, कार्बो-आक्सि, नक्स, थ्यूजा, और इग्नेशि।

शक्ति।—निम्न शक्ति विचूर्ण।

कार्बोनियम हाइड्रोजेनिसेटम।

(CARBONEUM HYDROGENISATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सुरासारसे अर्क या तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— संन्यास ; आँखमें अकड़न ; धनुष्टङ्कार ; हूप-खांसी।

उपयोगिता और आभास।—सरमें चक्कर आनेके साथ कानमें नाना प्रकारकी भ्रम-भरी आवाज सुन पड़ना (Auditary Vertigo), अपस्मार या मृगी, धनुष्टङ्कार और विसूचिकाकी तरह पाखाना पेशाबके लक्षण पैदा करता है। यह मानव देहमें प्रवेश करनेपर बेहोशी और बहुत सुस्ती पैदा करता है और सारे अङ्ग प्रत्यङ्गोंमें अकड़न पैदा कर देता है।

लक्षणावली।

मन।—सभी विषयोंमें बहुत अधिक सन्तोषका भाव और अपने जीवन को बहुत सुखमय और उन्नत समझता है। सवाल करनेपर धीरे धीरे उपयुक्त भावसे उत्तर देता है (धीरे धीरे उत्तर देता है=हेलिबो, मार्क, फास, ऐसिड-फास),—सब ठीक ठीक उत्तर देता है=आर्नि, ऐसिड-फास ; जल्दीसे उत्तर देता है= ऐक्टिया ; सिना ; रास)। एकदम बेहोश ; प्रगाढ़ मोह।

मस्तक।—बहुत सरमें चक्कर आना। ललाट और दोनों आँखोंके भीतरी प्रदेशमें असह्य तकलीफ। सरमें चक्कर आना, घरके बाहरकी हवा लगनेसे आराम मिलता है।

आंख।—गड्ढेमें धँसी। अधमुंदी। एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्व तक आँखें घूमा करती हैं। आंखकी पुतली फैली हुई रहती है या सङ्कुचित रहती है और आँखसे दिखाई नहीं देता ; ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके सामने काली काली चीजें उड़ रही हैं। टकटकी लगाकर देखना।

मुखमण्डल।—कानमें भों भों सों सों शब्द। चेहरा या तो गहरा लाल या मैला हो जाता है, नीला रंग, रक्तहीन, आँखें गड्ढेमें धँसी और पलक तथा दोनों ओंठ नीले। मुंहकी भावभंगी बिगड़ी हुई। दोनों जबड़े कसकर सट

जाते हैं या दांतो लग जाती है (Trismus)। मुंहसे फेन निकलता है, कभी कभी खून मिला फेन निकलता है, (फेन = ऐग, बेल कैम्फो, साइक्यू, ब्यूफम, हायो, लोरो, स्ट्रैम, विरेट ; खून मिला फेन = सिकेल, स्ट्रैम)।

मल ।—पतला, चावल सिझाये पानीकी तरह। पाखाना और पेशाब अनजानमें निकल जाता है। बार बार पतला पाखाना होता है और गाढ़े रङ्ग का श्लेष्मा मिला बाहर निकलता है।

श्वास-यंत्र ।—फेफड़ेके नीचेवाले अंशमें श्लेष्माके बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज निकलती है। श्वास-प्रश्वास लेनेके समय छातीमें घड़ घड़ शब्द होता है। फेफड़ेमें अधिक रक्त-सञ्चय होना। छातीमें दबाव मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—हाथ पैरका सुन्न मालम होना। हाथ पैर एकाएक फैल (Stretched) जाते हैं और काँपा करते हैं। और एकाएक कोहनीके नीचेका हाथ मुड़कर पैरपर आ गिरता है और ताकत लगाये बिना फैलाया नहीं जा सकता। शरीरकी त्वचाका रंग सफेद हो जाता है और शिरा सब काली मालूम होती हैं। हाथ पैरोंके नीचे वाला अंश बरफकी तरह ठण्ढा मालूम होता है। शरीर लसदार और बहुत ज्यादा पसीनेसे भरा, बड़ी बड़ी पसीनेकी बूंदें शरीरके कितने ही स्थानोंमें विशेषकर माथेमें पैदा हो जाती हैं।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—क्लोरोफ, ईथर, ऐमिल-नाइट।

सदृश ।—साइक्यूटा, सिकेल, स्ट्रैम।

शक्ति ।—प्रथम दशमिकसे ३ रा दशमिक क्रम।

कार्बोनियम आक्सिजेनिसेटम।

[CARBONEUM OXYGENISATUM.]

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीमें गलाकर मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अकड़न ; सरमें दर्द ; दादकी तरह विसर्प ; पक्षाघात ; गृध्रसी ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना।

उपयोगिता और आभास।—धनुष्टङ्कार, अपस्मार, मृगी वगैरह आक्षेपिक रोगोंपर इसकी उत्कृष्ट क्रिया होती है। शीत लगना, निद्रालुता और बेहोशी वगैरह इसके प्रधान क्रियाफल हैं। शरीरकी त्वचापर भी इसकी क्रिया दिखाई देती है ; गोल आकारका विसर्प (Herpes Zoster) या (Shingles) और फोड़ा नारङ्गा [Pemphigus] इससे उत्पन्न हुआ करता है।

लक्षणावली।

मन।—रोगी एकदम अचेतन्य अवस्थामें रहता है और यंत्रणा सूचक शब्द [कराहना] किया करता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—चक्कर खानेकी तरह घूमनेकी इच्छा। सरमें चक्कर आना। हमेशा और लगातार सरका दर्द, बहुत दर्द, ललाट और कनपटीमें टपकका दर्द।

आँख।— दृष्टि स्थिर और चेतना रहित। अधखुली [कैमो, इपिक] और टकटकी लगी दृष्टि, सरमें चक्कर आनेके साथ धुंधली दृष्टि—दृष्टिके सामनेके पदार्थ सब मानो काँपा करते हैं।

कान।—ढं ढं और नाना प्रकारकी भ्रमपूर्ण आवाजें सुन पड़ना। कानमें अस्वाच्छन्द्यजनक भों भों सों सों आवाज।

मुख।—रक्तहीन और छूनेपर गर्म मालूम होता है। लाल और फूला हुआ। हनुस्तम्भ [जबड़े अटकाना], जीभ सुन्न। रातमें भोजनके बाद मुंहके भीतर इतना लसदार श्लेष्मा इकट्ठा होता है कि थूकनेके समय वह ओंठमें चिपक जाता है। सभी चीजें बेस्वाद मालूम होती हैं।

पाकाशय।—कण भर खानेपर भी कै हो जाती है (आर्स) ; पेशाबमें चीनी मौजूद रहती है।

श्वासयंत्र।—वायुनली भुजसे (Bronchi) खून भरा श्लेष्मा निकलता हैं। श्वास प्रश्वास आवाजके साथ—घड़ घड़ साँय साँय शब्द। किसी तरह का भी परिश्रम करनेपर भयानक हृत्स्पन्दन पैदा हो जाता है। हृत्पिण्डकी क्रिया बहुत धीरगति और क्षीण।

प्रत्यङ्गादि।—ऐसा मालूम होता है मानो हाथ पैर आदि [illegible] गये हैं और हिला डोला नहीं जाता। सभी सन्धियाँ अकड़ी-सी

और हाथ पैरोंमें अकड़न पैदा हो जाती है और वे खिंचते और फैलते हैं। हाथ पैरोंमें दर्द और इसके बादका पक्षाघात। दोनों पैर इतने क्षीण हो जाते हैं, कि शरीरका भार वहन नहीं कर सकते।

त्वचा।—शरीरकी त्वचामें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता परन्तु गर्म लौह-शलाका द्वारा कुछ भी स्पर्श करनेसे यह शक्ति फिरसे पैदा हो जाती है। समूची देहकी त्वचा नीलिमा लिये या नीले दाग रहते हैं, विशेषकर मुखमण्डल, गर्दन और हाथका पिछला अंश। गात्र-त्वचाकी स्थिति-स्थापकता घट जाती है (सिङ्को, आयोड, सिकेलि, वेरेट),—इसीलिये, शरीरके किसी भी अंशका मांस चुटकीसे उठाकर छोड़ देनेपर बहुत देरतक ऊँचा बना रहता है और फिर धीरे धीरे मिलकर पूर्वावस्थाको प्राप्त हो जाता है। शिराकी राहसे रस भरे दाने निकलते हैं (कैन्थरिस); कटिबन्ध या गोलाकार विशिष्ट विसर्पिका रोग, पोड़ा नारङ्गा (नयी अवस्थामें = रासटक्स; पुराना होनेपर = आर्स; उपदंश दोषकी वजहसे उत्पन्न होनेपर = मार्क-कोर)—छोटे बड़े सब तरहके छाले निकलते हैं, दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं।

निद्रा।—गम्भीर निद्रा।

सार्वाङ्गिक।—चेतनाके साथ ही आक्षेप (इपिका, कैलि-कार्ब, नैट्र-म्यू,—बेहोशीके साथ = बेल, साइक्यू, क्यूप्रम; हायो, इग्ने, इपिका; लैके, ओपि, स्ट्रैम, स्ट्रान, वेरेट)। प्रति पाँच मिनटका अन्तर देकर आक्षेप पैदा हो जाना, बेहोशी और बोल न सकना (क्यूप्र, प्लैट), इसके साथ ही माथा पीछेकी ओर खिंच जाता है अर्थात बहिरायाम आक्षेप (Opisthotonos = ऐङ्गस, बेल, हैम, साइकि, क्यूप्रम, इग्ने, इपिका, मस्क, स्टैन, ओपि, रास;) दोनों बाहु अकड़े और फैले (ऐङ्गस, ब्राई, कैम्फो, इपिका, मस्क, ओपि, प्लैट, सिकेल, स्ट्रैम); मृगीकी तरह आक्षेप = बेल, कास्टि, कैप, साइक्यू, इग्ने, नक्स, प्लैट); रोगीको छूनेपर (ऐङ्गस, बेल, कक्कु, स्ट्रैम) या उससे बोलनेपर आक्षेप फिर पैदा हो जाता है (एमोन-कार्ब, आर्स, वेरेट), यद्यपि रोगी उस समय स्थिर भावसे रहता है और बाहरसे बेहोशकी तरह मालूम होता है। सारे शरीरका अवसाद।

सम्बन्ध।—सदृश।—बेल, कैन्थ, साइक्यूटा; सिकेल, हायोस, स्ट्रैम, आर्स।

तुलनीय।—कार्बो, हाइड्रो।

शक्ति।—पहलेसे तीसरा दशमिक क्रम।

कार्बोनियम सल्फ्युरेटम।

(CARBONEUM SULPHURATUM)

दूसरा नाम।—ऐलकोहल सल्फ्युरिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अर्क, सुरासारमें गलाया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—मुँहासे; क्षीण-दृष्टि; रक्ताल्पता; संन्यास; दाह; ग्रन्थियोंका फूलना; गलगण्ड; वात; छातीमें जलन; अर्द्धाङ्ग पक्षाघात; आँतका बढ़ना या आँत उतरना; दादकी तरह उद्भेद; नाना प्रकारके चर्म रोग; कच्छु; यकृतकी बीमारी; स्मरण शक्तिका गायब हो जाना; कर्णनाद रोग; मस्तकके भीतर नाना प्रकारकी आवाज मालूम होना; बढ़नेवाली पेशियोंका सूखापन; आमवात; कटिवात; इसके बाद झुनझुनीवाला वात; धनुष्टंकार इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—स्नायु-प्रान्तका प्रदाह (Peripheral Neuritis—अर्थात स्नायु सबके अन्तिम भागमें प्रदाह रहनेपर) और आँखके लक्षण सब भी अतीव प्रयोजनीय हैं, श्रवण शक्ति पैदा करनेवाले स्नायु-प्रान्तके प्रदाहकी वजहसे सरमें चक्कर आना और उसके साथ ही कानमें नाना प्रकारकी भ्रम-भरी आवाजें सुन पड़ना और दर्शन स्नायुके प्रान्त भागके प्रदाहकी वजहसे नाना प्रकारकी भ्रमपूर्ण चीजें दिखाई दिया करती हैं। इसके अलावा भिन्न भिन्न इन्द्रियोंकी स्नायु क्रियाके विकारकी वजहसे ध्वजभङ्ग; हाथ पैरोंमें संवेद या स्पर्श शक्तिका घट जाना; ग्रध्रसी या कटि स्नायु-शूल वगैरह रोग भी इससे पैदा हो जाया करते हैं।

लक्षणावली।

मन।—स्मृतिका क्षीण हो जाना, यह स्थिर नहीं कर सकता कि क्या कहना होगा। बहुत बकवाद करना। बहुत अनमना, और पढ़े हुए विषय सहजमें ही समझ नहीं सकता। नाना प्रकारकी भ्रम-भरी चीजें देखना (कैम्फो, डिजि, हायो, स्ट्रैम, लग्यूलस ; और भ्रम-भरी बातें सुना करता है। और सुननेमें भी भ्रम हो जाया करता है। चित्त अत्यन्त परिवर्तनशील, जो सामने रखा है, उसे ही खोजा करता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके सामने एक गड्ढा है और उसमें गिर जायगा।

मस्तक।—बैठनेके समय बार बार सरमें चक्कर आना (ऐसी-कार्ब, क्रोटोन, गुरीन, हेरेक्ली ; लैके, मार्क, पल्स ; रियुटा, स्ट्रैन, ऐसिड सल्फ, वायोला-ओडो)। सरमें दर्द,—मानो माथेमें टोपी कसी हुई है। (मानो माथा कसकर बांधा हुआ है=इग्यूजा ; लीबे, मार्क, सल्फ)।

कान।—रातमें बाएँ कानमें तेज़ संकोचन और सुई बेधनेकी तरह यन्त्रणा (बेल, कैमो, नाइट्रम, ऐसिड-नाइ, नक्स, पल्स, स्टैफ)। बहुत दिनोंका कर्णनाद (कैलि-हाइड्रो)। खन खन ठन ठन शब्द, बहरापन और उसके साथ ही सरमें चक्कर आना ; ऐसा मालूम होता है, मानो श्रवण पथ (कानका छेद) बन्द हो गया हो (नैट, सेलि-साइ, सिङ्को, चिनिन-सल्फ, थिरिडियन)।

आंख।—गड्ढेमें धँसी और चारों ओर भूरा दाग। पलकोंका फड़कना (ऐगार, कैल्के, रैनान, ओलियन-ऐन, नैट्र-सल्फ)। सभी चीजें अंधेरेमें ढकी मालूम होती हैं (बेल, कैल्के, साइल्के, युयोम, मार्क, प्लम्ब ; आंखको अँगुलीसे रगड़नेपर यह भाव दूर हो जाता है=क्रोक, प्लम्ब, पल्स); दृष्टि-शक्तिका घटना। वर्ण-भ्रम (बेनजिन—डाइनाइट्रिक,—सब चीजें लाल दिखाई देती है—कोना, बेल ; पीली दिखाई देती है=कैन्थ, सेण्टो, डिजि ; हरी दिखाई देती हैं=डिजि ; नीली=स्ट्रैन ; पढ़नेके समय अक्षर लाल दिखाई देते हैं=फास)। रेटिना या आंखके चित्रपटकी कैशिका शिराएँ सब (Retinaj Veins) खूनसे भर जाती हैं और फूली मालूम होती हैं, सवेरे हजामत बनवाने बाद गाल और नाकके ऊपर लाल व्रणकी तरह उद्भेद निकलते हैं—बहुत शराब पीनेवालोंकी नाकपर पीले व्रण हुआ करते हैं (ऐण्टिम-क्रूड)।

उदर ।—ऊँची आवाजके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें डकारके रूपमें वायु निकलना और बहुत ही बदबूदार अधोवायु निकलना [ऐसिड-कार्ब; कार्बो-वेज)। वायु छूटनेपर उपशम (कार्बो-वेज, आर्जेण्टम, नक्स-मस)। तलपेटमें मरोड़की तरह दर्द और कलकल हड़हड़ शब्द,—मानो पतला मल निकलेगा। उदरमें भार और आध्मान।

मल ।—कांखनेके साथ मांड़की तरह थलथला मल ; पाखाना हो जाने बाद शरीर बहुत कमजोर और कांपता हुआ मालूम होता हैं ; थलथले मलके साथ कभी कभी खून मिला रहता है। पाखानेके वेगकी वजहसे सबेरे ५॥ बजे नींद खुल जाती है और बहुत ज्यादा परिमाणमें पीली आभा लिये मल निकलता है और मलद्वारमें खट्टी चीज लग जानेकी तरह जलन होती है।

मूत्र और जननेन्द्रिय ।—पेशाबके समय जलन होती है (आर्स, कैल्के, कैम्फो, कैनाब, कैन्थ, कैप्सि, कोलचि, डिजि, कैलि-कार्ब, लैके, मार्क, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, ऐसिड-नाई, नक्स, ओलियैन, फास, ऐसिड-फास, सेबाड, सार्सा, सेनेगा, स्टेफ, सल्फ, थूजा, वेरेट, जिङ्क), लिङ्गमें कड़ापन और रमणेच्छाका सम्पूर्ण अभाव ; सङ्गमकी शक्तिका न रहना (कैलेड, कोना, ग्रेफ, कैलि-कार्ब, लाई, ऐसिड-नाई, सेलिन)। इसके साथ पूर्ण क्लीवता—अण्डकोषमें सूखापन (ऐगिट-क्रूड, कैप्स, केलि-हाइड्रो)। बायाँ अण्डकोष और शुक्र उत्पन्न करनेवाली नाड़ी फूली हुई और नमनीय। रातमें अकसर लिङ्गमें कड़ापन होनेके साथ ही वीर्यपात हो जाता है (डिजिटेलिन)।

प्रत्यङ्ग ।—हमेशा धीमा धीमा दर्द (कार्बो-वेज, कास्टि, ग्रेफ, लाई मिनो, पल्स, रोडो, रास-टक्स, रास-रैड)। बाएं ऊरुमें मदाहके साथ गृध्रसी वात, या कटि-स्नायुशूल, (Sciatica)—यह सर्दीसे उत्पन्न हुआ हो, रोगी बिलकुल चल नहीं सकता, चिलक मारनेकी तरह दर्द, सुई बेधनेकी तरह या तोड़नेकी तरह और स्थान बदलनेवाला दर्द,—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होता है (दाहिने पार्श्वमें=कोलोसिन्थ, लाई, नैफेलियम ; बाएं पार्श्वमें=आर्स, सल्फ, आर्स-सल्फि-फ्लेवम)। बिजलीकी गतिकी तरह शूलका दर्द—यह दर्द एक स्थानसे दूसरे स्थानतक फैलता है (मैग-फास)। निम्नाङ्ग का और विशेषकर ऊरुमें और जानुमें बहुत सर्दी लग जानेसे वातका दर्द—रोगवाली जगह थोड़ी भी हिलानेसे तेज और असह्य जलन मालूम होती है,

रोगवाला पैर लाल हो जाता है और फूल जाता है। यकृतमें विकारकी वजहसे दोनों पैरोंमें शोथ (एपिस, कार्डियु-मेरी), कन्धेसे लेकर कोहनी तक सुई वेधनेकी तरह दर्द—बिचली रातके समय और तर तथा ठण्डी हवामें वृद्धि हो जाती है।

निद्रा।—दिनभर औंघाई और रातमें निद्रावस्थामें छटपटाता है। शय्यापर लोटता रहता है। असम्बद्ध या टूटे फूटे सपने देखता है; अनिद्रा; चौंक उठता है,—इस तरह मानों डर गया हो; दिनमें आलस्य और उद्यम रहित।

ज्वर।—सरमें तेज दर्द, इसके साथ ही शरीर गर्म हो उठता है। इसके बाद ही बहुत कमजोरी, इसके बाद ही नींद आना। जाड़ा मालूम होना और इसके बाद ही शरीरमें जलन। दोनों पैर ठण्डे और उर्द्धांग कुछ गर्म रहता है। मुखमण्डल और हाथ पैर आदि ठण्डे। चलनेमें ढुलक पड़ता है (कास्टि, लेक्टाउका, मैग-कार्ब, नेट्र-कार्ब, ओलियेन, फास, स्ट्रैम, सल्फ; बच्चा देरसे चलना सीखता है=कैल्के, कास्टि, सल्फ); अन्धकारमें अधिक।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐपिस, आर्स, कार्बो-वे, कास्टि, नेट-सैलि, साईलीसिया, बेञ्जिनम्।

तुलनीय।—कास्टिक, नेट्रम, चायना (कर्ण-रोग); कार्बो-वे (आध्मान); सलफर (उदरका स्पर्शानुभव); ऐनाकार्ड (शब्द सुनना); कैलि-बाई साइलि, सल्फ (गलेमें केश मालूम होना)।

शक्ति।—पहलीसे तीसरी दशमिक तक।

कार्डिउअस बेनिडिक्टस।

(CARDUUS BENEDICTUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—खिले हुए गाछसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—
अध्मापन; अतिसार; आंखकी बीमारियां; ज्वर; सरका दर्द; सन्धियोंमें आवाज; अन्ननालीका सङ्कोचन; शिराओंका फूलना; दृष्टि-दोष।

उपयोगिता और आभास।—आँखोंका सिकुड़ना और फैलना, दृष्टिमें विकार, दृष्टिके सामने अन्धकार पैदा हो जाना। इससे आंख सम्बन्धी बहुत तरहके लक्षण प्रकट होते हैं। पाकस्थलीमें जलन, हाथमें पसीना होनेके बाद जलन, और दोनों बांह हिलाने बाद उनमें जलन; जम्हाई आना, हिचकी, उदरमें कतरनेकी तरह दर्द, वमन और उदरामय; स्वरभङ्गके साथ वायुनलीमें दर्द और सिकुड़न मालूम होना; नाकमें साँसके साथ खींची हुई हवा शीतल मालूम होना; गलेके भीतर मानो सिकुड़न पैदा हो गयी है; कण्डरा या पेशीके अगले भागोंमें खींचन मालूम होना; सन्धियोंमें दर्द और कड़कड़ आवाज। शिराका फूलना; शरीरमें जगह जगह लाल पीले रंगके दाग इत्यादि कई परिचायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—उद्वेग, डर, कोई भी आवाज सुनते ही चौंक पड़ता है। (बेल, बोर, इग्ने, हियुरा; केलि-आयोड, मैग-मूर, नक्स; थिरिड, मिडोराइन, नक्स-मस, साइलि, जिङ्क)। रह रह कर मानो पसीनेमें नहा जाता है।

माथा।—सर उठानेपर सरमें चक्कर आता है (आर्नि, सिङ्को, कोलो, मार्क); झुकनेपर सरमें चक्कर आना बढ़ जाता है [बेल, ऐनाक, ब्राई, नक्स, लाई, पेट्रोल, पलस, सल्फ]। माथा और हाथ पैरमें भार मालूम होता है [मस्तक=ऐको, आर्नि, कार्बो-वे, डालका, हेलिबो, लैके, नेट्र-मूर, ओलियेन, स्ट्रैन, फेलैन; हाथ-पैर आदि=ऐगार, ऐम्ब्रा, मार्क, नेट्र-कार्ब, रास, स्ट्रैन, फेर, ऐसेट, सल्फ), मानो पक्षाघात रोग हो गया है; ज्वरके समय अधिक।

आंख।—पलकोंका फड़कना (ऐगार, कैल्के, कार्बोन-सल्फ, रैटान, ओलियेन, प्लैट, सल्फ)। भूरे रङ्गके बिन्दु सब आँखके आगे उड़ा करते हैं=सिंको, ऐसिड-नाई; बहुत इन्द्रिय सेवनकी वजहसे=फास; शराब पीनेके कारण =नक्स-वोम); दृष्टि अस्पष्ट (ऐम्ब्रा, आर्जेण्ट नाई, ऐसेर, बेल, चिन-सल्फ, -स्ट्रैमो, कोलि-हाइ, कैमो, कोचलिया, क्यूप्रम, डिजि, लैके, ओलि-ऐन, सिकेल, स्पिगा); विकृत। आँखके सामने क्षण स्थायी अंधेरा दिखाई देता है (कैक्ट, क्रोटन, सेक्टियुका, ओलि-ऐन, सेबाई, कैलमिया—एकाएक आँखके सामनेकी चीजें घोर अन्धकारमय हो जाती हैं=लैक-कैन, [illegible]

कान।—ऐसा मालूम होता है मानो कानकी जड़में कुछ है; कभी कभी बुलबुला फूटनेकी तरह आवाज होती है और कानमें भों भों सों सों शब्द होने लगता है।

मुंहकी भीतर।—लगातार ऐसा मालूम होता है, कि मुख-विवर संकुचित होता जाता है, कभी संकोचन क्रिया बढ़ती है और कभी घट जाती है। मुंहमें हमेशा लार सञ्चय रहती है।

पाकाशय।—असाधारण राक्षसी भूख। थोड़ा भी खानेसे डकार आया करती है। वमन, पाकस्थली भरी रहने पर भी ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत दिनोंतक कुछ खाया नहीं है।

श्वास-यंत्र।—कण्ठनाली या वायुनालीका मुंह रुखड़ा मालूम होता है। स्वर-भङ्ग; स्वर कर्कश। खाँसनेके समय वायुनालीमें साँय साँय शब्द। लगातार तकलीफ देनेवाली सूखी खाँसी।

प्रत्यङ्ग।—प्रत्यंग आदिका कोई भी अंग छूनेपर उसमें बहुत दर्द होता है। अंगुलीमें पहले लाल दाग पैदा होता है, कुछ दिन रहकर पीला हो जाता है, फिर कुछ दिनोंतक वैसा ही रहता है। मालूम होता है, कि पैरके तलवेमें जखम हो गया है। हाथ पैर फैलानेके बाद दर्द होता है। (ऐण्टि-क्रूड, बेराई, कैल्के, साइलिसि, थूजा)।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—कार्डि-मेरि, बेलाडो, ऐग्नोफि, (दृष्टि); चायना (कानमें शब्द), ऐगारिकस (पलकोंका संकोचन)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ ठें शततमिक क्रम तक।

कार्डिउअस मेरियेनस।

(CARDUUS MARIANUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बीजसे अर्क और विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—श्वासनाली प्रदाह; शोथ; नाकसे खून गिरना; ज्वर; पित्त पथरी; फेफड़ेसे रक्तस्राव; अर्श; कितने ही स्थानोंसे रक्तस्राव; बहुव्यापक सर्दी; सविराम ज्वर; कामला; यकृतकी बीमारी; बहुत ज्यादा रजःस्राव; स्नायुशूल; यक्ष्मा;

प्लुरिसि ; या फुसफुस आवरक झिल्ली प्रदाह ; वात ; प्लीहाकी बीमारी ; पैरका झुनझुनी वाला वात रोग (ग्टध्रसी) ; आँतोंका प्रदाह ; शिराओंका फूलना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसकी क्रियाका प्रधान क्षेत्र यकृत हैं ; यकृत प्रदेशमें बहुत दर्द और दाहिना कुक्षिदेश (कोख) भरा मालूम होना ; यकृतमें खून इकट्ठा होना या द्वादश अंगुली अंतमें (Deodenum) में सर्दीकी वजहसे ऐसा हुआ करता है। मल,—पित्तशून्य और बदरंग। पेशाबमें भी पित्तका रङ्ग भरा रहता है। पित्ताश्मरीकी वजहसे शूल वेदना भी इसका लक्षण है। इसके यकृत विकारमें शोथ हो जाया करता है। (कार्बोनियम-सल) ; शिराका फूलना (Varicosis) और इसी वजहसे जखम आदि भी इसके अन्यतम क्रियाफल हैं।

लक्षणावली।

मन।—हमेशा दुःखित ; विस्मृतिशील ; सभी विषयोंमें उदासीन और निस्पृह रहता है (एपिस, बेप, साइकि, सिङ्को, कोलि-बाई, मार्क, फास, ऐसिड-फास, सिपि, वेरेट ; बन्धुओंके प्रति भी श्रद्धाहीन = माइरिका ; विषय कार्यके सम्बन्धमें उदासीन = ऐसिड फास ; फाइटो, ष्ट्रेम ; अपनी सन्तानोंके प्रति भी उदासी = फास ; दूसरोंको क्या हुआ, और क्या न हुआ सम्बन्धमें उदासीन = सलफ ; पड़ोसियोंके प्रति उदासीन = फ्रास, सिपि)।

मस्तक।—सरमें गड़बड़ी —मालूम होना—इसके साथ ही जीभ बेस्वाद। दोनों भवोंके ऊपरी अंशमें सङ्कोचन मालूम होना। सरमें चक्कर आना, —सामने गिर जानेका उपक्रम हो जाता है (आर्नि, फेरम-ऐसेट, नेट्र-मूर, पोडो, रैनान, रास ; पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम = लीडम ; रास ; बगलमें गिरनेका = कैनाब, कोना, ड्रोसे, युफोर्ब, मेजे, रियुम, स्लिला, जिङ्क)। आँखोंमें जलन (ऐमोन-कार्ब, आर्स, बेराई, कैल्के-कार्ब ; कोलो, मैगी, मार्क, नक्स-वोम, फास, पलस, सलफ़, थूजा ; कैलके, क्राष्टि) और दबाव मालूम होना (ऐल्यू, ऐगस, बोर, कास्टि, ग्रेफ, लिड, लाइ, नेट्र-सलफ, फास, पलस, रैनान, रियुटा, स्पाइजी ; स्क्विया ; ऐसिड-टार्ट, थूजा ; वेरेट, ऐसिड-मूर, लोबे)।

मुख-विवर।—जीभका बिचला भाग सफेद लेपसे ढका हुआ, भाग और अगल बगलके दोनों किनारे लाल (बीचका भाग-लाल, दोनों सफेद=कैमो; जीभ सफेद या पीली और दोनो पार्श्व-स्थान लाल= जेलूसि; बीचका स्थान सफेद=ब्राई, फास; मोटी और मैलभरी सफेद या लेप चढ़ी=माइरिका; बीचका स्थान या जड़ सफेद और दोनों पार्श्व अत्यन्त लाल=रास; बीचका स्थान सफेद लेप चढ़ा और अगला भाग, तथा पार्श्व स्थान भी लाल=कैप्सिकम, जिजिया)। दूध या काफी पीने मुंहमें लार सञ्चय हो जाती है।

पाकस्थली।—मुँहका स्वाद बहुत तीता (ऐङ्गस, ऐगिट-म्यू, बै ब्राई, कैलके, कार्बो-ऐन, कार्बो-वे, कैमो, चेल, सिङ्को, डिजि, लाई, नेट्र-व पलस, सैबाई, साइलि, कैलेन, वेरेट)। वमनकी बहुत इच्छा पर वमन होता। नमकीन मांस मछलीसे अरुचि (कैलके, कार्बो-वेज, कोरैल, सि टिस) भोजनकी इच्छा या रुचि बहुत थोड़ी (पर भोजन करने बैठनेपर पैदा हो जाती है=सिङ्को; मांससे अरुचि=कैल्के; खाद्य पेय और तम्बाकू ही अरुचि=इग्ने; सभी तरहकी भोजन-सामग्रियोंसे अरुचि=रास; कई खाते ही पेट भर जाता है, मानो न जाने कितना खाया है=लाइको; साध भूख न लगना=जेल्टियाना-लुटिया)। हरे रङ्गका खट्टापन लिये व (हरे रङ्गका वमन=ऐको, आर्स, कैनाब, इपिक, क्रोटेल, प्लम, पल्स, वेरे अम्लाम्ल=बोर, कैलके, कास्टि; फेरम, नेट्र-सलफ, नक्स, फास, पल्स, कैस कास्टि, सलफ)। पाकस्थलीके बाएँ पार्श्वमें अर्थात प्लीहाके ... तरह दर्द (ऐमोन-म्यूर, आर्नि, सिङ्को, हिप, सियानोथस, लैके, सलफ, जिङ्क); श्वास लेने पर बढ़ना।

अन्त्राशय।—बाईं करवट सोनेपर यकृतमें तेज़ सुई तरह दर्द पैदा हो जाता है और इसी वजहसे स्पर्श सहन नहीं होता। (कार्बो-ऐन, डिजि, आयोड, मार्क, नेट्र-सलफ, नक्स, फास, साइलिसिया, पो रैनान, माइरिका) और पूर्णता (भरापन) मालूम होना (ऐकोन, चिनि सलफ, ह्युपेट, लोरो, पोडो, माइरिक)। पित्ताश्मरोकी वजहसे शूलका (Gall-stone-colic)—तेज और असहनीय यन्त्रणा (कैल्के, आर्स, चे बार्बा, डायस्को),—इसके साथ ही थोड़ा थोड़ा पसीना। मल पित्त-शून्य, ब

प्लुरिसि ; या फुसफुस आवरक झिल्ली प्रदाह ; वात ; प्लीहाकी बीमारी ; पैरका झुनझुनी वाला वात रोग (स्टप्रसी) ; आँतोंका प्रदाह ; शिराओंका फूलना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसकी क्रियाका प्रधान क्षेत्र यकृत हैं ; यकृत प्रदेशमें बहुत दर्द और दाहिना कुक्षिदेश (कोख) भरा मालूम होना ; यकृतमें खून इकट्ठा होना या द्वादश अंगुली अंतमें (Deodenum) में सर्दीकी वजहसे ऐसा हुआ करता है। मल,—पित्तशून्य और बदरंग। पेशाबमें भी पित्तका रङ्ग भरा रहता है। पित्ताश्मरीकी वजहसे शूल वेदना भी इसका लक्षण है। इसके यकृत विकारमें शोथ हो जाया करता है। (कार्बोनियम-सल) ; शिराका फूलना (Varicosis) और इसी वजहसे ज़खम आदि भी इसके अन्यतम क्रियाफल हैं।

लक्षणावली।

मन।—हमेशा दुःखित ; विस्मृतिशील ; सभी विषयोंमें उदासीन और निस्पृह रहता है (एपिस, वैप, साइकि, सिङ्को, कोलि-बाई, मार्क, फास, ऐसिड-फास, सिपि, वेरेट ; बन्धुओंके प्रति भी उदासीन=माइरिका ; विषय कार्यके सम्बन्धमें उदासीन=ऐसिड फास ; फाइटो, स्ट्रैम ; अपनी सन्तानोंके प्रति भी उदासी=फास ; दूसरोंको क्या हुआ, और क्या न हुआ सम्बन्धमें उदासीन=सलफ ; पड़ोसियोंके प्रति उदासीन=फास, सिपि)।

मस्तक।—सरमें गड़बड़ी—मालूम होना—इसके साथ ही जीभ बेस्वाद। दोनों भवोंके ऊपरी अंशमें सङ्कोचन मालूम होना। सरमें चक्कर आना,—सामने गिर जानेका उपक्रम हो जाता है (ग्रानि, फेरम-ऐसेट, नेट्र-म्यूर, पोडो, रैनान, रास ; पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम=लीडम ; रास ; बगलमें गिरनेका=कैनाब, कोना, ड्रोसे, युफोर्ब, मेजे, रियुम, स्लिला, जिङ्क)। आँखोंमें जलन (ऐमोन-कार्ब, आर्स, बेराई, कैल्के-कोस्ट ; कोलो, मैगे, मार्क, नक्स-वोम, फास, पलस, सलफ, थूजा ; कैल्के, कास्टि) और दबाव मालूम होना (ऐलू, ऐंगस, बोर, कास्टि, ग्रैफ, लिड, लाई, नेट्र-सल्फ, फास, पलस, रैनान, रियुटा, साइली ; सल्जिया ; ऐण्टि-टार्ट, थूजा ; वेरेट, ऐसिड-म्यूर, लीडे)।

मुख-विवर।—जीभका बिचला भाग सफेद लेपसे ढका हुआ, अगला भाग और अगल बगलके दोनों किनारे लाल (बीचका भाग लाल, दोनों पार्श्व सफेद=कैमो ; जीभ सफेद या पीली और दोनो पार्श्व-स्थान लाल=चेल, जेल्सि ; बीचका स्थान सफेद=ब्राई, फास ; मोटी और मैलभरी सफेद या पीली लेप चढ़ी=माइरिका ; बीचका स्थान या जड़ सफेद और दोनों पार्श्व स्थान अत्यन्त लाल=रास ; बीचका स्थान सफेद लेप चढ़ा और अगला भाग लाल तथा पार्श्व स्थान भी लाल=कैप्सिकम, जिजिया)। दूध या काफी पीने बाद मुंहमें लार सञ्चय हो जाती है।

पाकस्थली।—मुँहका स्वाद बहुत तीता (ऐङ्गस, ऐण्टि-क्रू, बैराई, ब्राई, कैल्के, कार्बो-ऐन, कार्बो-वे, कैमो, चेल, सिङ्को, डिजि, लाई, नैट्र-कार्ब, पलस, सैबाई, साइलि, कैलेन, वेरेट)। वमनकी बहुत इच्छा पर वमन नहीं होता। नमकीन मांस मछलीसे अरुचि (कैल्के, कार्बो-वेज, कोरैल, मिफाइटिस) भोजनकी इच्छा या रुचि बहुत थोड़ी (पर भोजन करने बैठनेपर रुचि पैदा हो जाती है=सिङ्को ; मांससे अरुचि=कैल्के ; खाद्य पेय और तम्बाकू सबसे ही अरुचि=इग्ने ; सभी तरहकी भोजन-सामग्रियोंसे अरुचि=रास ; कई ग्रास खाते ही पेट भर जाता है, मानो न जाने कितना खाया है=लाइको ; साधारण भूख न लगना=जेण्टियाना-लुटिया)। हरे रङ्गका खट्टापन लिये वमन (हरे रङ्गका वमन=ऐको, आर्स, कैनाब, इपिक, क्रोटेल, प्लम, पल्स, वेरेट ; अम्लाक्त=बोर, कैलके, कास्टि ; फेरम, नेट्र-सलफ, नक्स, फास, पल्स, कैल्के, कास्टि, सलफ)। पाकस्थलीके बाएं पार्श्वमें अर्थात प्लीहाके पास सुई बेधनेकी तरह दर्द (ऐमोन-म्यूर, आर्नि, सिङ्को, हिप, सियानोथस, लैके, नैट्र-म्यूर, रोडो, सलफ, जिङ्क) ; श्वास लेने पर बढ़ना।

अन्नाशय।—बाईं करवट सोनेपर यकृतमें तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है और इसी वजहसे स्पर्श सहन नहीं होता। (ब्राई, कार्बो-ऐन, डिजि, आयोड, मार्क, नैट्र-सल्फ, नक्स, फास, साइलिसिया, पोडो, रैनान, माइरिका) और पूर्णता (भरापन) मालूम होना (ऐकोन, चिनिन-सल्फ, इयुपेट, लोरो, पोडो, माइरिक)। पित्ताश्मरीकी वजहसे शूलका दर्द (Gall-stone-colic)—तेज और असहनीय यन्त्रणा (कैल्के, आर्स, चेलि, बार्बा, डायस्को),—इसके साथ ही थोड़ा थोड़ा पसीना। मल पित्त-शून्य, बद-

रंग, फीके रंगका (माइरिका, डिजि, केलि-कार्ब, मार्क-बाइ, नेट्र-म्यू, पोडो, बेल; ब्राइ, सिङ्को, नेट्र-म्यू) । पेशाब सुनहला (चेलि,चिनापोड) । कब्जियत,— मल कड़ा ; गांठ गांठ और निकलनेके समय कष्ट पैदा करनेवाला (बेल, ब्राइ, सैंग-म्यूर) कभी कभी पतला मल भी निकला करता है (ऐलोट, आयोड, लेके, नक्स, रास, ऐण्टि-टार्ट) ; यकृतमें रक्त अधिक सञ्चय होनेके साथ ही पिलाई या कामला रोग (नक्स, ब्राइ) । यकृतका संकोचन (अर्थात यकृतका कड़ा और छोटा हो जाना = Cirrhosis = फास, आर्स, आयोड, सिङ्को, अरम-म्यूर),—इसके साथ ही प्रत्यङ्गोंका शोथ (फास, अरम-म्यू, कार्बो-नियम-सल्फ्यु) ।

श्वास-यंत्र ।—दाहिने पार्श्वके निचले पंजरेके नीचे और सामने सुई बेधनेकी तरह मालूम होना ; शरीर हिलानेपर बढ़ना (बेल) । छातीका दर्द कन्धा पीठ कमर और तलपेटमें फैल जाता है,—इसके साथ ही पेशाबका वेग होता है । छातीके पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्दके साथ खांसी,—खून-भरा कफ ।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि ।—रातमें सोनेपर शरीरमें खुजली पैदा हो जाती है । फूली शिराएं फटकर जखम पैदा हो जाता है (Varicose ulcer = हैमा, ऐसिड-फ्लू) । पुट्ठेकी सन्धिके स्थानपर दर्द—नितम्ब देशतक फैल जाता है,—शरीर झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है । उठकर खड़े होनेमें तकलीफ होती है ।

ज्वर ।—बहुत दिनोंतक मध्यान्हसे संध्यातक ज्वर आता है । प्यास नहीं रहती ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ब्राइ (नाकसे रक्त-स्राव) ; चेलिडो, मार्क, पोडो, कार्बोनियम-सल्फ्युरेटम ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ ठा दशमिक क्रम ।

कारिका पेपेया।

(CARICA PAPAYA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कच्चे पपीतेके दूधके रससे तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—वक्षस्थल, फेफड़ा और मूत्रग्रन्थि प्रदेशपर इसका सबसे अधिक आक्रमण होता है। मूत्रग्रन्थि (किडनी)के प्रदाह को भी यह एक उत्कृष्ट दवा है और फेफड़ेकी बीमारीमें भी इसके लक्षण सब दिखाई देते हैं। शरीरके बायें पार्श्वपरही इसकी विशेष क्रिया होती है। अजीर्ण रोगी जो कुछ खाता है वही कै हो जाता है। ऐसे लक्षणमें यह बहुत ही अधिक फायदा करता है। रोगी धीरे धीरे दुबला होता जाता है; ऋतुके पहले और ऋतुके समय रोगिनी सामान्य कारणसे ही कातर हो पड़ती है: दर्द सन्ध्या के समय बढ़ जाता है और रगड़नेसे घट जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर जड़ता मालूम होती है।

लक्षणावली।

मन।—मनोवृत्तियाँ सब बहुत प्रखर हो जाती हैं, बहुत देरतक लिखना-पढ़ना करनेपर थकावट मालूम होती है। पढ़ना बहुत पसन्द करता है। अकेला रहना चाहता है। जड़ बुद्धि-सम्पन्न; सहजमें बुद्धिमें जड़ता पैदा हो *जाती है। जल्दी ही कोई विषय सोचकर निकाल नहीं सकता।* कोई उसके साथ बात करता है, तो वह चिढ़ उठता है, (ऐसिट-क्रू, कैमो, आर्स, नेट्र-म्यू, नेट्र-सल्फ, आयोड, साइलिसिया) पूछनेपर उत्तर नहीं देना चाहता (ऐगार, सैबाड, ऐसिड-सल्फ,)। आर्त्तव-स्रावके समय किसी कार्यमें रोगिनी हाथ नहीं लगाना चाहती, कहीं गलती न हो जाये।

मस्तक।—वमनेच्छाके साथ सरमें चक्कर आना (ऐको, ऐसिट-म्यूड, बैराइ, कक्यू, लैके, फास, साइलिसिया, सल्फ, थिरिड) और ललाटमें टपक पैदा करनेवाला दर्द (ऐको, कक्कु, ऐल्यू, ऐमोन-कार्ब, ब्राई, कोलो, युजि, इयुपेट, इपिक, कैलि-कार्ब, लैके, मस्क, नेट्र-म्यू, ऐसिड-नाई, नक्स, सेङ्गियु, सिपि, वैरेट) मस्तिष्ककी जड़ता। बाई और चोट लगनेकी तरह दर्द। सन्ध्याके समय मस्तक भरा मालूम होता है। मिठाइयाँ या लाई खाने बाद

यंत्रणादायक सर दर्द=सन्ध्याके समय बढ़ना ; ठण्ढी हवामें और नींदके बाद घटना ; सरमें दर्द ,—हाथसे मलनेपर घटना।

नाक ।—बायीं नाकका छेद रुका हुआ। सर्दी,—बहुत ज्यादा पानीकी तरह और बिना रंगका श्लेष्मा-स्राव होता है (इयुफ्रे)। नाकसे गाढ़े रङ्गका श्लेष्मा-स्राव।

मुख ।—मुँहका स्नायुशूल,—बाईं और बीमारीका अधिक हमला होता है। (स्पाइजि, कोलो, मेजे,,—दाहिने पार्श्वपर=केल्मिया ; मैग-फास), तीन चार दिनों तक यंत्रणा स्थायी बनी रहती है,—यंत्रणा बहुत ही तेज होती है। मुंह बेस्वाद, जीभ रातमें सूख जाती है। दाँतमें दर्द,— बाईं ओरके मसूढ़ेमें (कैमो, नक्स-मस, सल्फ,),—मुंहमें ठण्ढा पानी डालनेसे दर्द बहुत बढ़ जाता है (ब्राई, फास, लैके, नैट्र-म्यू, नक्स-वोम, पल्स, स्टैफ)।

पाकाशय आदि ।—सवेरे भूख बहुत कम रहती है, बिना स्वादकी डकार आया करती है। नहीं खाता है तो बहुत ही सुस्त हो जाता है—पर खाद्य पदार्थ पेटमें जानेपर बीमारी या क्लेद पैदाकर देता है, दाँतका दर्द बढ़ जानेके भयसे बहुत प्यास रहनेपर भी पानी नहीं पीना चाहता। मध्यान्ह भोजनके बाद मिचली या ओकाई आती है (एमोन-कार्ब, कैमो, कैलि-कार्ब, लैके, मार्क, नक्स-वोम, ओलि-एन, फास, पल्स, रास, सिपि, साइलि, स्टैफ); तल-पेटके चारों ओर दर्द। मल,—कोमल और रुखड़ा ; पहला अंश कड़ा और बड़ी गांठ जैसा—इसके बाद ही वायु निकलनेके साथ रुखा मल निकलता है। सरलान्त्रकी क्रिया अनियमित होती है।

पेशाब ।—पेशाब करनेके समय और बाद मूत्रनालीमें जलन,—लगातार पेशाबका वेग, सवेरे पहली बार पेशाब करनेके समय बहुत वेग देना पड़ता है,—मानो मूत्रनालीमें कुछ अटका हुआ है, उसके हट जानेपर खुलासा पेशाब होता है। मूत्र वेगके साथ मूत्रस्थलीके भीतर छेदनेवाला दर्द ; बहते हुए पानीकी आवाज सुनते ही इतने जोरसे पे[illegible] । है [illegible] नहीं जाता (कैन्थरिस, साइलि, सल्फ)। बाद [illegible] उस [illegible] तेज दर्द।

पुं-जनने [illegible]
जाता है (कामोद्दी[illegible] [illegible]

लिङ्गोद्गम होता है पर वीर्यपात नहीं होता, सवेरे लिङ्गोद्गम और रमणेच्छा बहुत प्रबल होती है, मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानसे लेकर लिङ्गेन्द्रियके मध्यस्थलतक भयानक तकलीफ,—मानो कोई टुकड़ा या खसखसा पदार्थ मूत्रनालीके भीतरसे बड़े वेगसे बाहर निकलता है। बाएँ अण्डकोषमें दर्द की वजहसे रातमें नींद खुल जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रोगिनी ऋतुके पहले और समय बहुत उत्तेजित रहती है और थोड़ेमें ही कातर हो पड़ती है। (क्रियो, नैट्र-म्यू.)। ऋतुके समय सामान्य कारणसे ही सर्दी लग जाती है। इन्द्रियाँ आदि बहुत शिथिल और उत्तेजनाहीन हो जाती हैं। ऋतुके समय किसी काममें हाथ नहीं लगाना चाहती। ऐसा न हो कि कहीं भूल हो जाये। जननेन्द्रिय और गुह्यदेशके बीचकी जगह पर खुजली।

श्वास-यंत्र।—स्वरभङ्ग,—संध्याके समय (कार्बो-वेज, फास), स्वरनलीमें दर्द मालूम होता है। बाएं फेफड़ेके ऊपरी अंशके गभीरतम प्रदेशमें दर्द (माइरिका, सल्फ, मार्टस-काम, पिक्स-लिक्विड, थिरिड,—दाहिने फेफड़ेके ऊपरी अंशमें—कैल्के, आर्स)। बाएँ फेफड़ेमें धीमा पीसनेकी तरह दर्द,—वक्षस्थलके बीचसे पीठतक दर्द फैल जाता है और धीरे धीरे तेज अस्त्राघातकी तरह दर्दमें परिणत होता है, कभी कभी समूचे बाएं फेफड़ेमें दर्द होता है। दोनों फेफड़ोंमें और हृत्पिण्ड प्रदेशमें वेधनेकी तरह दर्द; खाँसी,—खांसीकी वजहसे रातमें सो नहीं सकता (आर्स, ऐसिड-बेन, नाइट्रम, मैंगनेटिस-आर्कटस, पेलारिस), खांसनेपर सहजमें श्लेष्मा निकलता है और बाएं फेफड़ेमें दर्द होता है। एकाएक बहुत जोरकी शरीरको हिला देनेवाली खांसी का वेग पैदा हो जाता है।

पीठ।—बायाँ मसाना या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें बहुत तेज दर्द,—ऐसा मालूम होता है मानो दर्द कमरमें घूम जाता है (बेल, बार्बेरिस, कैनाब, कैन्थ, डायस्को, पैरीरा-ब्रेवा)। मूत्रग्रन्थि प्रदेशमें समभावसे बहुत देरतक रहनेवाला दर्द, बाएं पृष्ठफलकके नीचे जखम पैदा हो जानेकी तरह दर्द या स्पर्श सहन नहीं होना (मार्टस-काम, माइरिका, पिक्स-थिरिड, सलफर)।

प्रत्यङ्ग।—बायें कन्धेमें आमवातकी तरह दर्द (बोर, कैल्के-फास, ग्रैफ, आयोड, ओलियेन, सैबाइ, टियुक)। हाथ पैरोंमें जल्दी ही झुनझुनी पैदा हो जाती है, हाथ-पैर ठण्डे, बायाँ हाथ सुन्न और अकड़ जाता है। दाहिने

हाथकी मध्यमा अँगुली सुन्न हो जाती है। दोनों पैर दुर्बल और काँपते रहते हैं। लिखनेके समय दाहिने पैरमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। असहनीय वेधने की तरह दर्द। विद्युत गतिसे मस्तकके दाहिनी ओरसे पैरके दाहिने पार्श्व तक दौड़ जाता है या सञ्चारित होता है, पेशियोंकी अत्यन्त दुर्बलता,—आलस्य-युक्त, उद्यम और उत्साह-शून्य। वक्षस्थलकी बाईं ओरसे बाएँ उरु देशमें और जानु तक दर्द मालूम होता है; सवेरे शय्यासे उठनेपर शरीर बहुत ज्वर भावापन्न मालूम होता है। बाएँ पैरके अंगूठेके ऊपरी भागमें विसर्प हो जानेकी तरह लाल रंगकी सूजन हो जाती है और उसमें असह्य खुजलाहट होती है। दाहिने पैरकी कनिष्ठिकाकी जड़में दर्द और सूजन हो जाती है और उस में उत्ताप पैदा हो जाता है और यह पैरकी अन्यान्य अंगुलियोंमें फैल जाता है।

त्वचा ।—समूची देह बहुत खुजलाती है। उरु देशमें व्रणकी तरह ऊँचा, लाल और दर्द-भरा उद्भेद। मुखमण्डल और देहमें छोटे छोटे दाने निकलते हैं, वंक्षण या पुट्ठेमें; जानु या पुट्ठेके गांसेमें उद्भेद; दाहिने हाथ के अगले भागमें और पेटमें भी ऐसा ही होता है। अनगिनती लाल लाल उद्भेद जो बहुत ज्यादा खुजलाते हैं। संध्याके समय और शय्याके उत्तापसे खुजलाहटका बढ़ जाना; खूब खुजलानेपर घट जाता है। बाएं कानके पिछले अंशमें लगातार खुजलाहट, खुजलानेपर आमवातकी तरह उद्भेद पैदा हो जाते हैं (एपिस ; आर्टिका-इयु, नेट्र-म्यूर)।

निद्रा ।—बार बार नींद खुल जाती है। बहुत गाढ़ी निद्रा, जगाना कठिन होता है। जहाज डूबने, आग, पानीमें नहाने, बन्दूककी गोली लगने वगैरहके भयानक सपने—सब सच्ची घटनाकी तरह देखता है।

शीतोत्ताप ।—वायु-सेवनके समय जाड़ा मालूम होता है या ठण्डसे तकलीफ होती है। घुड़सवारीमें बाहर घूमनेके समय ठण्डी हवा लगते ही सर्दी हो जाती है। रोगीको इतना जाड़ा मालूम होता है, कि चूल्हा या आगके पास बैठनेके अलावा उसे आराम नहीं मिलता। रातमें भी जाड़ा लगा करता है, तेज़ प्यास पर पानी नहीं पी सकता, दाँतका दर्द बढ़ जाता है।

वृद्धि ।—ठण्डे पानीसे (दन्तशूल), भोजनसे (मिचली); शय्याके उत्तापसे (खुजली); और संध्याके समय (दर्द, सर्दी लगना आदि)।

उपशम ।—मलने या घर्षण करनेपर (दर्द), खुजलानेपर (खुजली), चलनेपर (दोनों पैर सुन्न हो जाना) और गर्म घरमें (शीतार्त्तता)।

सम्बन्ध—सदृश ।—माइरिका; मार्टस-कमूनिस ; थिरीडियन; बार्बेरिस ; कैन्थरिस ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे तीसरा दशमिक क्रम ।

कार्लसबाड ।
(CARLSBAD)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—किसी खास झरनेके पानीसे क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— खानेके बाद मुंहका लाल हो जाना; कब्जियत ; सारे शरीरकी कमजोरी ; बहुमूत्र ; वात; स्पर्शसे वात; मूत्र रोग ; यकृतकी बीमारियाँ ; अधिक कै होना ।

उपयोगिता और आभास ।—सारे शरीरका अवसाद, शरीरकी स्थूलताका बढ़ जाना, बहुमूत्र ; हृद्रोग ; मलका कड़ापन और शीतका आक्रमण मालूम होनेका लक्षण वगैरह इसकी प्रधान क्रिया है। रोगी मानो हमेशा थका सा रहता है—उसे ऐसी ही सुस्ती मालूम होती है ; उसका शरीर काँपा करता है, और वह कोई भी पदार्थ मुट्ठीमें कसकर पकड़ नहीं सकता। दृष्टि शक्तिपर भी इसके द्वारा आश्चर्य-जनक लक्षण पैदा हो जाते हैं। कभी कभी इसके द्वारा उदर और मलान्त्रपर भी आक्रमण हो जाया करता है। पीछे लिखे कई लक्षण भी इसके प्रधान परिचायक लक्षण हैं,—प्रबल स्पन्दनकी वजहसे रोगी बेचैन हो पड़ता है। वागिन्द्रिय, मूत्रस्थली, मलान्त्र वगैरह सभी इन्द्रियां दुर्बल रहती हैं—पेशाबकी धार बहुत क्षीण और धीमी होती है,—उदर प्रदेशकी पेशी की सहायताके बिना पेशाब नहीं निकलता ; मल दूरवर्ती अन्त्रकी सहायता बिना नहीं निकलता ; और वह भी बहुत धीरे धीरे निकलता है। बहिर्मुखी गतिके बदले, ऐसा ही मालूम होता है, कि मल पीछेकी ओर खिंच रहा है (साइलिसिया, थूजा)। मानो धमनीके भीतर खूनकी गति स्थिर हो जायगी ; ऐसे अनुमानकी वजहसे रोगी उद्विग्न हो पड़ता है (शोणितकी गति स्थिर हो जाने

की आशङ्का=कार्बो-ऐन,—मानो गति स्थिर हो गयी=जेलसि, लाई, सेबाड, बेराइटा-कार्ब); गड़बड़ी और जी अच्छा नहीं मालूम होता और रह रहकर उसके शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाता है। सन्धि-विश्लेषण या हड्डी खिसक जाना (Dislocation); मोच खाने, खिंचने, टूटने, सुई बेधने और ज्वालाजनक दर्द ; चिलक मारनेकी तरह दर्द ; सवेरे शय्यासे उठनेके समय कमर अकड़ी और सुन्न मालूम होती है, पर कुछ देरतक घूमने बाद और कुछ दिन चढ़नेपर फिर यह दर्द नहीं रहता (फेरम आयोड, डायस्को—उठकर घूमनेपर दर्द घट जाता है=नक्स-वोम,— बढ़े हुए यकृतके साथ सोनेके समय कमरमें दर्द बढ़ जाता है=फेरम,—सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना=कार्बो-ऐन)। शरीरकी त्वचापर जगह जगह आग छू जानेकी तरह जलन, लाल दाग या रेखा बाहर निकल पड़ती है ; छोटी छोटी पीब भरी फुन्सियां (Pustules) निकल आती हैं, शरीरमें जगह जगह सुर-सुरी और कुटकुटाहट होकर पसीना निकलना आरम्भ हो जाता है ; जननेन्द्रिय प्रदेशमें तेज खुजलाहट और बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है। शरीरकी त्वचामें स्पर्शज्ञानकी अधिकता और शीत या शीतल वायु सहन नहीं होती; थोड़ीभी सर्दी लगजानेकी वजहसे सर्दी हो जाती है। ज्वराधिकारमें कभी कभी सिहरावन, कभी सर्दी मालूम होना ; या कभी कभी गर्मी मालूम होना, ऐसा पर्यायक्रमसे बार बार हुआ करता है। विशेषकर मुखमण्डलमें, रह रहकर उत्ताप पैदा हो जाना और ललाटमें पसीना, माथा गर्म, चेहरा लाल और कभी कभी शरीरकी त्वचापर सिहरावन पैदा हो जाता है। सामान्य कारणसे पसीना हो जाता है और कपड़ेमें पसीनेका पीला दाग पड़ता है। अधिकांश लक्षण ही, यहांतक कि सरमें दर्द भी, शरीरको हिलानेपर बन्द हो जाता है।

लक्षणावली ।

मन ।—आत्म-सन्तोष-भरा चित्त, बोलना बहुत अच्छा मालूम होता है और बोलनेमें बहुत आनन्द मिलता है। कभी कभी अत्यन्त विषादयुक्त और स्वार्थ पूर्ण हो जाता है। अपने विषय और कामके सम्बन्धमें उद्यम-शून्य और चिन्तायुक्त हो जाता है। पढ़ने या किसी तरहका मानसिक परिश्रमसे कातर हो पड़ता है। हमेशा अन्यमनस्क रहता है।

मस्तक ।—ऐसा मालूम होता है, मानो सरके भीतर कुछ फट गया है; सन्ध्याके समय, सोनेके समय बढ़ना (ऐलो); भोजनके बाद मस्तिष्कमें जड़ता

भौर भार;मालूम होना; निर्मल वायुमें और शरीरहिलानेपर घटना। सरमें चक्कर आना, मानो वह वृत्ताकार घूम रहा है (कोना); निर्मल वायुके सेवनसे घटना। (ऐमोन-म्यू, मैग-सल्फ, फेलेन, ऐसिड-सल्फ)। माथेमें बहुत भार रहता है, भरा और ऐसा मालूम होता है मानो इसमें बोध शक्ति न हो या आच्छन्न-भाव रहता है (कार्बो-ऐन,लोरो, ओलि-ऐन, ओपि, प्लम्ब, कक्कुलस, सिकेल),—इसके साथ ही तेज रूसी होना; वृद्धि=माथा झुकानेपर, माथा घुमाकर हिलाने पर और माथा फिराने पर (ऐको, कार्बो-ऐन, मैग-सल्फ, नेट्र-म्यू, नक्स-मस, सल्फ)। माथेमें उत्ताप मालूम होना,—गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर बढ़ना। सरमें दर्द,—कटने जैसा दर्द,—कभी दाहिनी ओर और कभी बाईं ओर, शङ्ख-देश या कनपटीमें या कपालके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है; माथा हिलानेपर दर्द घटता है। आँखके गोलेके बीचमें भार मालूम होनेके साथ सरमें शराब पीनेकी वजहसे उन्मत्तताकी तरह मालूम होना,—विशेषकर ललाट देश में, ललाट और कनपटीमें बहुत दर्द मालूम होना,—इसके साथ ही शिराओंका फूलना (बेल, सैङ्गि्वु, थूजा)। *केश झाड़नेपर बहुत दर्द होता है* (ऐल्यू, ऐम्ब्रा, ऐसे, कैप्स, कैल्के-कास्टि, फेर, पैरिल, थूजा, वेरेट)।

आंख ।—आँखमें जलन और रगड़नेसे ऐसा मालूम होता है, मानो आँखसे आगकी लौ निकल रही है (कैल्य); आँखके सामने ऐसा मालूम होता है मानो काले बिन्दु-सब उड़ रहे हैं (ऐगार, ऐमोन-म्यूर, ऐनाक, अरम ,बेराईं, इयोनिमिन, कैलि-कार्ब, कार्बोनि-हाइड्रो, मैग-कार्ब, मार्क, ऐसिड-नाई, ऐसिड-फ्लु, फास, सिकेलि, साइलिसिया, टेरिब)। सन्ध्याके समय पलकोंका फूलना, शोथ जैसी हो जाना और सवेरे सट जाना (युफ्रे, बेल, कैलि-कार्ब, मैङ्गे); ऊपरी पलकका लगातार एक बार संकुचित होना और एक बार फैल जाना, इसलिये रोगी हमेशा आँख बन्द रखनेके लिये बाध्य होता है (क्रोक, प्लम्ब, पल्स),—मानों आँखमें कोई चीज गिर गयी है। (ऐगार, कोडाया, बेल, कैलो, इपिक, ओपि, फाइजस, रेटान, सलफर); सिलाई करनेके समय आँखोंमें पानी भर आता है (पढ़नेके समय आँखमें पानी भर आता है=क्रोक, क्रोटेल, ग्रैटो, ऐसिड-नाई, ऐसिड-सल्फ,); आँखके कोये मानो दोनों चक्षुगह्वरमें नहीं अटते (पेरिस); टकटकी लगाकर बहुत देरतक देखते रहनेपर ऐसा मालूम होता है मानो आँखका कोना किसी ढक्कनेसे ढक गया। (कैल्के, फेलेन; मानो किसी आवरणके भीतरसे देख रहा है=क्रोक, हिमेंटाक्स, लैके,

नेट्र-मूर, पेट्रोल, रास, साइलिसिया ; सल्फ, टेबाक, वार्बस)। मानो सब चीजें आँखके सामने उड़ रही हैं।

कान ।—कर्णपद्यावलीसे पटह तक सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना—अंगुली घुसाकर हिला देनेपर आराम हो जाना।

नाक ।—बार बार छींकके साथ रन्ध्रके भीतर सुई बेधनेकी तरह मालूम होना और रजोनिवृत्तिके समय (ब्राई, हैमा) नाक छिड़कनेपर खून निकलता है।

मुखमण्डल ।—पीला, उतरा हुआ, कभी लाल और कभी गर्म गण्डास्थि-प्रदेशमें दर्द और उसपर सूत या मकड़ेका जाल होनेकी तरह मालूम होना ; रोगी बार बार हाथसे उसे हटानेकी चेष्टा करता है (बैराई, बोर, ब्रोमि, ग्रैफ, रैनान, म्किरेटस)। जीभ सफेद लेप चढ़ी और मुंहमें बदबू, सभी चीजोंका स्वाद नमकीन मालूम होता है। (कार्बो-वेज)।

पाक और आमाशय ।—भूख प्यासका अधिक रहना, नाभिके ऊपरी प्रदेशमें क्षणभरके लिये संकोचन मालूम होना—झुकने या बैठनेपर घट जाता है। समूचे तलपेटमें हुड़ हुड़ शब्द। हिचकी और जम्हाई दोनों साथ ही साथ आती है। पेट फूला या वायुसे भरा हुआ है और खींचन मालूम होती है—लम्बी सांस लेनेपर ऐसा मालूम होता है मानो उदर दृढ़भावसे कसा हुआ है, अकसर छातीमें जलन होती है और मुंहमें पानी भर आया करता है (रोबिन, ऐ-सल्फ)। पाकस्थलीमें पहले खालीपन मालूम होता है, इसके बाद सर्वग्रासी भूख पैदा हो जाती है। प्लीहामें जलन, रक्तस्रावी अर्श (खूनी बवासीर), मलद्वारमें हमेशा दबाव मालूम होनेके साथ जलन ; कांखनेकी वजह से मलान्त्र या सरलान्त्र हमेशा बाहर निकल पड़ता है। सरलान्त्र और मलद्वारमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। यह दर्द लिङ्गमें भी फैल जाता है। बड़ी बड़ी गांठें सब मलद्वारमें अड़ जाती हैं,—पाखाना होनेके बाद जलन और चलनेके समय रुकावट पैदा हो जाती है। मलान्त्रसे आम निकलना और मलद्वारसे मलान्त्रतक फैलनेवाली जलन और खुजली। आमातिसार :—मल गाढ़ा और पीले रङ्गका (इपिक, पालिनसर)। मलका कड़ापन,—तीन चार दिनोंतक पाखाना नहीं होता ; कड़ी गांठें बड़ी तकलीफसे निकलती हैं। मल बहुत धीरे धीरे निकलता है।

पेशाब।—गुह्यद्वार और जननेन्द्रिय प्रदेशमें दबाव मालूम होना; पेशाबका स्राव बहुत पतली धारमें होता है और मूत्रनलीमें कुछ जलन होती है। बार बार पेशाबके वेगके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पाखाना होना। दिनभर बार बार पेशाबका वेग होता है। रातमें भी पेशाब लगनेके कारण बार बार नींद खुल जाती है; पेशाब साफ और निर्मल होता है (कोडेइन, स्किला)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु हो जानेके तीन दिन बाद गाढ़ा लसदार गोंदकी तरह जमा हुआ रक्त-स्राव होता है और उसके बाद ही भयानक प्रदर का स्राव होता है।

त्वचा।—लाल दाग और रेखा—बहुत जलन। जगह जगह बहुत खुजली और सुरसुरी पैदा हो जाती है। पसीना होनेके पहले शरीरकी त्वचा कुटकुटाने लगती है।

निद्रा।—निद्रावेगके साथ बार बार जम्हाई आना, भोजन आदिके बाद बहुत औंघाई, परन्तु आध घण्टे तक सोते ही चेहरा लाल और गर्म हो जाता है और सरमें दर्द पैदा हो जाता है। बहुत देरतक छटपटाते रहनेपर नींद आती है। भयङ्कर सपने।

सम्बन्ध।—सदृश।—कोडिइनम, नेट्र-सल्फ, (शीत लगजानेका भय), ब्राई, ओपि, कार्बो-वेन, लाई, बेराई-कार्ब, सिपा (अश्रुस्राव); नक्स (खानेपर बढ़ना); पल्स, कार्बो (बाहरी वायुसे घटना); बेलाडो, ग्लोन, (सरमें दर्द); एपिस, ऐनाक, फास-ऐसिड (अन्यमनस्क) इत्यादि।

शक्ति।—साधारणतः निम्न क्रमका ही व्यवहार होता है, कोई कोई उच्च क्रमका ही व्यवहार करते हैं।

केरिया-ऐल्वा
(CAREYA ALBA)

दूसरा नाम ।—सेलवार्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गुठलीसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—जुग्लेन्स रिजिया और जुग्लेन्स-सिनारेरियाकी तरह यह भी एक शीताङ्ग या स्कर्वीको प्रतिषेधक दवा है ।

सम्बन्ध—तुलनीय ।—आर्निका, कार्बो-वेज, फास्फोरस, मार्कुरियस, हैमा, ब्राइयो, रास-टक्स, साइट्रस-लिमोनम ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

केस्केरा सैगरेडा ।
(CASCARA SAGRADA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—त्वचाका सारांश या निर्यासवे मूल अर्क तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—कब्जियत ; वात ; वमन ; रक्तस्राव ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—एलोपैथगण इसे विरेचकके रूपमें व्यवहार करते हैं । वे इसका सत (Extract) १५ बूंद तक व्यवहार किया करते हैं । स्वस्थ शरीरमें सदृश विधानके अनुसार, जितनी परीक्षा हुई है, उससे मालूम होता है, कि मलान्त्रके सिवा शरीरके अन्यान्य अंशोंपर भी इसकी क्रिया होती है । पेशियोंके वातके दर्दमें कितनी ही जगह इससे बहुत आश्चर्यजनक लाभ दिखाई दिया है । डा० क्लार्कने लिखा है, कि दो स्थानोंमें उन्हें हैजाकी तरह लक्षण मिले हैं ।

अग्निमान्द्यकी वजहसे और पाकाशयके अन्य विकारोंके साथ सरमें दर्द (नकस) ; जीभ फैली हुई और शिथिल । मुंहमें बदबू । मलमें कड़ापनके साथ

अर्श ; पेट फूलता है। कब्जियतके साथ पेशियोंमें और सन्धि-स्थानोंमें वातका दर्द ; (ब्राई, हिपर, कैल्के, कास्टि)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—हाइड्रैस्टिस, नक्स-वोमिका, ब्राई, हिपर।

शक्ति ।—प्रथम दशमिक से तृतीय दशमिक।

कैस्कैरिला।

(CASCARILLA)

दूसरा नाम ।—क्रोटन इल्युटेरिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—युफोर्बिया जातीय गाछकी छालसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—खूनकी कमी ; गुह्यद्वारसे रक्तस्राव ; कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; शोथ ; खून-भरी खाँसी ; सविराम ज्वर।

उपयोगिता और आभास ।—उदराध्मान, कब्जियत, बार बार डकार आना, धूम्रपानसे अनिच्छा वगैरह पर इसकी प्रधान क्रिया है। गर्म पानी पीनेकी इच्छा और उससे पाकाशयके लक्षणोंका घटना, इसका एक सिद्धिप्रद लक्षण है। इसके प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—कण्ठनालीके बहुत-ही निम्न प्रदेशमें सूजन मालूम होना ; गलेमें श्लेष्मा सञ्चय। खानेबाद भूख और पाकाशयका खाली मालूम होना। तम्बाकूकी गन्धसे बहुत चिढ़ मालूम होती है। प्रत्येक कदम चलनेपर पाकस्थलीमें धक्का लगनेकी तरह मालूम होता है। (ऐकी)। सबेरे पाखाना होनेके पहले पेटमें मरोड़ हुआ करता है। अन्त्राशय का दर्द आदि गर्म पानी पीनेसे घट जाता है (क्रोट)। ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें गर्म पानीकी तरंगें उठ रही हैं। पुट्ठेमें फोड़ा (कार्बंकल)। कमरमें दर्द और आलस्य होनेके साथ पतले दस्त आना। हमेशा आलस्य और पेशियोंमें कमजोरी। मलान्त्रके ऊपरी अंशमें चबानेकी तरह दर्द। मलमें कड़ा-पन,—मल कड़ा और आमसे ढका, खण्ड खण्ड होकर निकलता है ; मलके साथ और दूसरे समय भी मलद्वारसे बहुत ज्यादा परिमाणमें चमकीला लाल

रंगका खून निकलता है और रोगी क्षीण हो जाता है। वायुनलीके भीतर खुजलानेवाली सूखी खांसी। रक्त कास ; वक्षके वाम पार्श्वमें ऊपरकी ओर चढ़नेवाला सुई बेधनेकी तरह दर्द। कमरमें दर्द और कमजोरी मालूम होना। हमेशा सोये रहनेकी इच्छा। सम्पूर्ण सज्ञान निद्रा। सविरामज्वरकी उत्तापावस्थामें गर्म पानी पीना चाहता है।

लक्षणावली।

उदर।—आध्मान वायु मानो पेटमें घूमा करता है,—ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें गर्म पानी खौल रहा है। बार बार खाली डकार आना। (एगार, आर्स-हाइड्रो, कैल्के-कास्टि, ग्रैनेट, मार्क, ओलि-ऐन, फास, सैबाई, ऐण्टि-टार्ट, वेरेट, ऐसिड-नक्स)। खाकर उठते ही भूख लग जाती है (बोवि, कैल्के, कैल्के-कास्टि, चिनिन-सल्फ, साइना, लेके, मार्क, फास, प्लम्ब, स्टान)। ज्वरकी उत्तापावस्थामें गर्म पानी पीनेकी बहुत आकांक्षा (कास्टीनिया-वेस्का) तम्बाकूकी गन्धसे भी चिढ़ मालूम होती है कैल्के, काक्यु, इग्ने, नक्स-युग, (नक्स-वोम)।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत,—मल कड़ा और गाँठ गाँठ तथा आँव मिला (ग्रैफ-हाईड्रस)। मलके साथ बहुत ज्यादा खून निकलता है (मिलिफो, मार्क, इपिका, कालो, ऐसिड-नाई, नक्स, रैटान, रास, ऐण्टि-टार्ट)। पर्याय-क्रमसे पतला मल और थक्का थक्का कड़ा मल निकलता है (ऐण्ट, ब्राई, आयोड, लेके, नक्स, रास, रियुटा, ऐब्रोट) ; इसके साथ ही कमरमें दर्द और सुस्ती ; रोज सवेरे पाखाना होनेके पहले ऐसा मालूम होता है मानो आँतें मरोड़ खा रही हैं। मलान्त्रके सबसे उच्च प्रदेशमें चिबानेकी तरह दर्द मालूम होनेके साथ हमेशा थोड़ा पाखाना होना।

शीत, उत्ताप।—अस्वाच्छन्द्यके साथ उत्ताप पैदा हो जाना और इसके बाद थोड़ा सा पसीना निकलकर औंघाई आने लगती है। हवा खानेके लिये टहलनेके समय पीठमें थोड़ा पसीना होता है और थोड़ा जाड़ा मालूम होता है, पर चुपचाप शान्त होकर खड़े हो जानेपर फिर पसीना नहीं होता। फिर चलनेके समय पसीना होता है।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—ग्रैफ, हाईड्रैस्ट, कोलोसिन्थ, चायना, क्रोटोन।

शक्ति।—पहले दशमिकसे तीसरे दशमिक क्रम।

कैस्टेनिया वेस्का।

(CASTANEA VESCA)

दूसरा नाम।—चेस्ट-नट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गर्मीके दिनोंमें संग्रह किये हुए पत्तेसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—हूप खाँसी, अतिसार।

उपयोगिता और आभास।—डा० हटनने स्वस्थ शरीरपर इसकी परीक्षाकी है। गलेमें सुरसुरी खाँसी इत्यादि इसके लक्षण हैं।

लक्षणावली।

गलेके भीतर।— गलेमें कसैला स्वाद मालूम होता है।

पाकाशय।—गर्म पानी पीनेकी आकाँक्षा। (केस्कोरिला, क्रोटोन-टिग)।

अन्त्राशय।—ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें फूल पड़ती हैं। (लैकिटयुका, फास, रास); चित्त सो जानेपर आराम मिलता है। पेटमें स्पर्श सहन नहीं होता।

मलान्त्र और मल।—एकाएक मलका दुर्दमनीय वेग; तलपेटमें बहुत दर्दके साथ हुड़ हुड़ गड़ गड़ शब्द, मल उजला हलका पीले रंगका, छोटे छोटे फीतेके टुकड़ेकी तरह निकलता है।

श्वास-यंत्र।—दिनके समय दाहिने फेफड़ेके बीचमें दर्द मालूम होता है। हूप-खाँसी,—सूखे कांसेकी आवाजकी तरह ठन ठन आवाज करनेवाली खाँसी;—तेज़ और यन्त्रणादायक खाँसी।

पसीना।—पानी पीने बाद लगातार पसीना होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, ड्रोसेरा, ऐमोन-ब्रोम, मिफाइटिस, नैपथैलिन।

शक्ति।—मूल अर्क और १ ला दशमिक क्रम।

———

कैस्टर एकुई।

(CASTOR EQUI)

दूसरा नाम। कैस्टर इक्यूरम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—घोड़ेके पैरका एक तरहका उपमांस या बतौड़ी सुखाकर विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगमें लाभ करता है:—मृगी ; पश्चात कटि-शूल ; स्तनमें जखम ; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० हेरिङ्गने इसकी परीक्षाकी थी। डा० बार्निटने इसके द्वारा कपालके मसे रोग आराम किया था।

लक्षणावली।

मस्तक।—सवेरे सरमें चक्कर आना, सरमें दर्द, मिचली, ललाटमें अर्बुद, मसे।

मल।—उदरामय,—प्रबल वेगसे, पहले अन्त्र-शूलकी तरह दर्द (कोलो, डायस्को, कैमो, रियुम, वेरेट) और पाखाना होनेके समय बड़े जोरसे वायु निकलना (ऐलो, आर्जेण्ट-नाई; इग्ने, नेट्र-सल्फ, कैल्के, फास, ऐसिड-फास) ; पतला पानीकी तरह और जलन करनेवाला पाखाना।

वक्ष।—स्तन पिलानेवाली बच्चोंवाली स्त्रीका स्तन-वृन्त फटकर जखम हो जाता है और उसमें बहुत दर्द होता है (आर्नि, कैल्के, कैमो, ग्रेफ, इग्ने, पल्स, सलफर), स्तनका फूलना (बेल, ब्राई, कोना, फास)। स्तन बहुत खुजलाते हैं और स्तनके चारों ओर लाल रेखा दिखाई देती है।

प्रत्यङ्ग।—दाहिने निचले पैरकी दाहिनी हड्डीमें बार बार दर्द मालूम होता है (ऐमोनियेक, चिनोपोड, ऐसिड-फास, सिपि, स्टेफ)। बाएँ पुट्ठेमें दर्द। तम्बाकूकी इच्छा।

सम्बन्ध—सदृश।—आर्जेण्ट नाई, ग्रेफ, लाइकोपो, सलफर।

तुलनीय।—हिपर (स्तनके दर्दका घटना) ; थूजा (मसे) ; कैल्के-आक्ज ; कैस्टोरियम ; मस्कस।

शक्ति।—६ ठीसे १२ वीं शततमिक शक्ति।

कैस्टोरियम।
(CASTOREUM)

दूसरा नाम।—दि बीवर। (Beaver)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बीवर नामक जन्तुकी मेढ़्-त्वचामें सञ्चित सूखे [र]ससे मदर टिंचर तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मस्क या मृगनाभिकी तरह स्नाय[वी]यता, उत्तेजना पैदा होना, पेशी और अङ्ग प्रत्यङ्गोंका सिकुड़ना और फैलना [औ]र आर्त्तवमें विकार पैदा हो जाया करता है; पर कस्तूरी जिस तरह पूर्ण-[वि]काश प्राप्त मूर्च्छागत वायु रोगमें विशेष उपयोगी है, यह वैसी नहीं है। गुल्म [व]ायु पूर्ण आकारमें पैदा होनेके आरम्भमें जो सब स्नायवीय लक्षण पैदा हो जाया [क]रते हैं, कैस्टोरियम उन सभी अवस्थाओंमें उपयोगी है। रजोरोध, दिर्नोंधी, [उ]दरामय वगैरह इसके निर्देशक लक्षण हैं। डाक्टर ट्रूसोने मानसिक आवेगमें [य]ा ठण्ढा पानी पैरमें लगनेकी वजहसे व्रणकी मलिनता, ठण्ढा पसीनाके कारण [ए]काएक दुर्बलतासे उत्पन्न स्नायविक-विकारकी वजहसे शूल वेदनामें व्यवहार [क]िया है।

लक्षणावली।

मन।—रोगिनी सामान्य कारणसे अत्यन्त कातरता प्रकट करती है, [ह]मेशा शंकामें भरी रहती है, विषादयुक्त रहती है और आर्त्तव स्रावके समय [अ]त्यन्त अव्यवस्थित चित्तता प्रकट करती है। वे रोगसे अच्छी तरह आरोग्य [न]हीं हो सकतीं और हमेशा ही चिड़चिड़े स्वभावकी बनी रहती हैं। इतना [प]सीना होता है, कि उस वजहसे वह बहुत कमजोर हो पड़ती है।

मस्तक।—सरमें दर्दके समय माथा ढलमलाया करता है, और उसे [ब]हुत सुस्ती मालूम होती है। सरका दर्द आराम हो जाने बाद माथा एकदम [छ]ोड़ा नहीं जाता। मूर्द्धादेश में दर्द और सरमें टपक—मानो माथेमें जखम हो [ग]या है; दूसरी चीज छू जाने और रगड़नेसे बढ़ना। माथा भरा और भारी [म]ालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा।

आँख ।—प्रायः रात-भर पलकें जुड़ी रहती हैं। दिनौंधी (Nyctalopia= ऐको; मार्क, साइलिसिया, सल्फ, कोना, नाइट्रम, फास, स्ट्रैम), सूर्यकी रोशनी सहन नहीं होती (आर्स, वेल, कोना, इयुफ्रे, हेलिमो, हायो, नाइट्रम, सल्फ); लगातार आँसुओंका स्राव होता है (ऐल्यू, युफोर्ब, इयुफ्रे, पल्स, साइलिसिया, सल्फ; दूरकी चीजें टकटकी लगाकर देखनेपर आँखमें दबाव मालूम होता है और दृष्टिके सामने अन्धकारकी तरह दिखाई देता है।

कान ।—कानमें मिटमिट भुटभुट शब्द होता है—मानो पानी खौल रहा है (कास्टि, ग्रेफ, पल्स); अंगुली प्रवेश कर हिलानेपर घटता है (कार्लस-बेड)।

नाक ।—छींक इतनी प्रबल रहती है, कि समूचा शरीर हिल जाता है (कार्बो-वे, सिना, साइक्लो, रास, रास-रेड, सेबाड), नासारन्ध्र से लगातार निर्मल त्वचाको क्षय करनेवाला पानी निकला करता है। इससे नाकको छेदके मुँहपरकी खाल उधड़ जाती है। (ऐमोन-म्यूर, आर्स, कैमो, लैके, सिपा, मार्क, ऐसिड-नाई, नक्स, साइलिसिया)।

गलेके भीतर ।—गलेमें पीले रङ्गका श्लेष्मा सञ्चित होनेके कारण खाँसकर निकाल देनेकी चेष्टा करता है (हाइड्रोस, ऐल्यू, आर्जेण्ट नाई, फास; लाइको, नेट्र-कार्ब)। घूंट लेनेके समय और घूंट लेनेके पहले और बाद गलेमें जलन होती है (वेल, कार्बो-वे, कास्टि, युफोर्बि, मार्क, ऐसिड-नाई, रास-रेड) कोई भी चीज निगलनेके समय गलेमें दर्द,—मानो जखम हो गया है (वेल, कार्बो-वेज, कास्टि, लैके, मार्क, फास, पल्स)।

पाकाशय ।—मुँहमें बदबू,—रोगी स्वयं भी मालूम कर सकता है। जीभ फूली हुई (मेनिस्पर्म बेप) और ऐसा मालूम होता है मानो रह रहकर पीछेकी ओर खींचन पड़ रही है; जीभके ऊपरी भागमें जलन; छाले भरा (ऐमोन-कार्ब, वेल, बार्या, कार्बो-वेज, ग्रेफ, हेलि, मार्क, नेट्र-म्यूर, स्क्विला, स्पाइजि, थूजा, जिङ्कम)। जीभके बीचमें एक मटरकी तरह गोलाकार सूजन पैदा हो जाती है और यह सूजन जीभको पीछेकी ओर खींचती है। (मार्क-प्रोटो-आयोड)। मध्याह्न भोजनके अन्तमें इतनी प्यास पैदा हो जाती है कि बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है तब भी प्यास शान्त नहीं होती है। प्रत्येक बार खाने बाद खाये हुए पदार्थकी डकार आती है। (ऐलो, ऐगार, ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-क्रूड, कार्बो-ऐन, कास्टि, चेलिडो, कौक, लैके, कार्बो-वे, नेट्र

पर्लैस, ऐसि-फास्फोल, सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा)। तीता स्वाद मिली डकार (ब्राई, सिङ्को, ग्रेटि, नक्स, पल्स, सिपि, स्टैन, आर्स आयोड, पुष्युलस, ऐसिड-सल्फ, थूजा) लगातार मिचली,—डकार आनेपर घटना (रोडोड, ऐण्टि-टार्ट)। पाकस्थलीमें ठण्डक मालूम होना ; ठण्डक (आर्स, बोर, कैम्फि, वेल्न, कोलचि ; इग्ने, केलफलो, लेक्टियु, लौरो, मैंग-सल्फ, [सवेरे] ओलियेन, फास, ऐसिड-सल्फ, टैबाक)।

अन्नाशय।—आध्मानयुक्त और सूजन,—पुट्ठेके प्रदेशमें संकोचन मालूम होना। बिलकुल ही वायु निकलना या वातकर्म नहीं होता (रैफेना-सेटाइवा), गर्म कपड़ेसे पेट ढक लेनेपर घटता है। उदरसे बहुत ज्यादा दर्द—गर्म प्रयोगसे (मैंगफास), रगड़नेपर या शरीर झुका लेनेपर (कोलो) घटता है ; नाभि-प्रदेशमें कतरनेकी तरह दर्द (इग्निङ्गी, इपिका, क्रियो, मैंगे, नक्स, पोलि-पैन, रियुम, साइलि)।

मल।—उदरामय, जाड़ा मालूम होना और इसके साथ ही बार बार जम्हाई आना,—संध्याके समय बढ़ जाना (बोवि, कास्टि, लिलि-टाइग्रि, मार्क-बाइ, ऐसिड-पाइ, टेरिब)। मलका पहला अंश सहज और कड़ा शेषका अंश-पतला (नक्स वोम) ; मल रक्तमिला आममय (कैम्फि, इग्ने, मार्क-सोल, मार्क-कोर, नक्स, पेट्रोल, कोलो, पल्स—काला अलकतरेकी तरह = इपिका, लैके, लेपटान, कैलि-ब्रोम, मार्क, नक्स) ; या सफेद पानीकी तरह (बेल, सिना, डिजि, डालका, हेलिबो, हिप, फास, ऐसिड-फास) ; इसके साथ ही मलद्वारमें जलन (ऐलो, लैके, मार्क, पल्स, गैम्बो)। हरे रंगका आममय मल,—निकलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो मलान्त्रको दग्ध कर रही है (आइरिस-वार्सि) ; कोमल प्रकृतिवाले स्नायु-प्रधान और रोगिग्रस्त धातुवाले और जो दांत निकलनेके समय या गर्मीके दिनोंमें बहुत चीण हो पड़ते हैं ऐसे बच्चोंको यदि पानीकी तरह पाखाना हो या अतिसार हो (जब साधारण दवाओंसे लाभ नहीं होता)। रोगिनीको सवेरे दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है, वस्त्र आदि सम्हालनेका भी अवसर नहीं मिलता। पाखाना होनेके पहले कतरनेकी तरह शूलका दर्द होता है, रगड़ने या सामनेकी ओर शरीर झुकानेपर यंत्रणा घट जाती है (कोलो, आर्जेण्ट-नाई, बेल, पोडो, ऐलो) ; गर्म कपड़ेसे पेट ढकने पर भी नहीं घटना (आर्स, सल्फ, मैंग-फास ; पर सोनेपर घटना = ऐलो, ऐल्यू,

कैल्के, कोलो, फास, रास, सोनेपर=मार्क वाई, स बाड ; चित सोनेपर=ब्राई; एक करवट सोनेपर=पोडो ; दाहिनी करवट सोनेपर=फास)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजोरोध: इसके साथ बहुत तकलीफ देनेवाला पेट फूलना—जरायु ग्रीवाके सङ्कोचनकी वजहसे बूंदबूंद खूनका स्राव होता है। ऋतुके समय वंक्षण सन्धिके स्थानपर या पुट्ठेमें दबाव मालूम होना। इसके साथ ही बार बार पाखानेका वेग। ऋतुके समय उदर और शरीरमें स्थान स्थानपर, फटनेकी तरह दर्द मालूम होता है—रगड़ने या घसनेसे तकलीफ घट जाती है ; बाधक—प्रदर—पानीकी तरह और बहुत ज्यादा स्राव (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-ऐन, सिङ्कोना, ग्रैफ, कैलि-आयोड, नाइट्रम ;—रक्ताक्त=कैल्य, सिङ्को, काक्यू, कोपैवा, क्रियो, ऐसिड-नाई ; दूधकी तरह=कैल्के, पलस, सिपि, साइलि)।

श्वासयंत्र।—सवेरे,—स्वरभङ्ग (कास्टि, बोवि, नक्स, युपेटो); दिन चढ़नेपर फिर नहीं रहता। रातमें खाँसी होती है और खाँसनेके समय वायु-नलीके मुंहपर जलन होने लगती है (ऐसिड-फास : युफोर्ब ; खाँसनेके समय स्वरनालीमें जलन=ऐको, मैग-सल्फ, फास, स्पंजिया ; छातीमें जलन= कास्टि, आयोड, फास, स्पंजिया)। श्वासका अभाव,—चलनेके समय (फास, पलस, स्टैन) विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय (आर्स, कैल्के, पलस, आयोड, मार्क, नक्स, स्टैन, सिपि)। बार बार जम्हाई आना या जृम्भण (इग्ने सल्फ),—संध्याके समय वृद्धि (इग्ने, प्लैट)।

प्रत्यङ्ग।—बाहु, पैर, तलवा, निम्न पैर वगैरह अंगोंमें जगह जगह पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना ;—मूर्च्छा वायु रोग हो जानेके पहले जैसे स्नायवीय लक्षण सब प्रकट होते हैं।

नींद और स्वप्न।—पिता माताकी मृत्युके सपने देखकर पुत्र कन्या आदि बहुत कातर हो पड़ते हैं। ऐसे सपने देखते हैं कि चोर और डाकुओंने उनकी मातापर आक्रमण किया है।

वृद्धि।—संध्याके समय, चलनेके समय सवेरे।

घटना।—पट सोनेपर, मलनेपर, सामनेकी ओर झुकनेपर और गर्म वस्त्रसे शरीर ढक लेनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐक्टि, मार्फि, पल्स, थैलिरियाना, सल्फर।

तुलनीय।—ऐक्टि, मस्कस, नक्स-वोमिका। प्रतिक्रियाका अभाव (ओपियम); थूजा (मसे)।

दोषघ्न।—कौलचिकम्।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम।

कालोफिलम थैलिक्ट्राइडिस।
(CAULOPHYLLUM THALICTROIDES)

दूसरा नाम।—ब्लू कोहस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मदर टिंचर या विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—गर्भस्रावकी आशंका; प्रसवके बादका दर्द; रज रुकना; यक्ष्मत्व; ताण्डव; बाधक; हैजा; नकली गर्भ; प्रमेह; स्तनके नीचे प्रदाह; प्रसव वेदनाका असीम कष्ट; नयाली दर्द; प्रदर; रजो विकार; डिम्बाधारका स्नायुशूल; गर्भिणीके नाना प्रकारके उपसर्ग; वात या सन्धिवात; जरायुका आक्षेप; जरायुकी संकोचन शक्तिकी दुर्बलता इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—यह स्त्रियोंके लिये विशेष उपयोगी है,—गर्भावस्थामें, प्रसवके समय और प्रसवके बाद जबतक शिशु स्तन पीता रहता है, प्रसूतिको इन सभी अवस्थाओंमें कोई न कोई बीमारी या स्वास्थ्यमें विकार पैदा हो जा सकता है, जिसमें इसकी जरूरत पड़ सकती है। औरतोंकी हाथ पैर की सन्धियोंके वातके दर्दमें यह बहुत फायदा करता है। बाधक रोगकी यह एक प्रधान दवा समझी जाती है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं:—जरायु विकारकी प्रतिक्षिप्त क्रियाकी वजहसे अन्यान्य अंगोंकी बीमारी, सरमें दर्द, वमन, स्वरभङ्ग, वातकी वेदना, ऐंठन और अकड़न। जरायु आदिका बाहरकी ओर खिंच आना अर्थात ऐसा मालूम होना मानो बाहर निकल पड़ेगा। जरायु विकारकी वजहसे निम्नाङ्गका (अर्धाङ्गका) पक्षाघात। बायें डिम्बाधारमें या

बायें स्तनके नीचेवाले स्थानमें दर्द (ऐक्टिया-रेस) ; कम उम्रकी बालिकाओंका प्रदर। दर्द, चत, विलोपी—रहरह कर प्रबल वेगसे पैदा हो जाता है और एक जगहसे दूसरी जगहपर घूमा करता है ; रातमें बहुत बढ़ जाता है, बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजना ; आन्तरिक कम्पनकी वजहसे कमजोरी, जैसा कि कमजोर होनेपर रोगीको मालूम होता है कि वह कांप रहा है। बोलनेकी शक्ति भी नहीं मालूम होती। निद्राहीनता, अस्थिरता और थोड़ेमें ही कातर हो पड़ना। छोटी सन्धियों और पेशियोंका वातका दर्द। प्रसव वेदना—अनियमित प्रकोप; रोगीके क्लान्त हो पड़नेपर दर्द बन्द हो जाता है ; बहुत तकलीफ देनेवाला दर्द।

लक्षणावली।

मस्तक।—वातकी वजहसे सरमें दर्द,—खासकर औरतोंका। सर दर्द—आँखके गोलेके पीछेकी ओर दबाव मालूम होता है और धुँधली दृष्टि, जरायुमें विकारकी वजहसे, शंखदेश या कनपटीमें रह रहकर भयानक पीसनेकी तरह दर्द,—मानो दोनों पार्श्व भयंकर रूपसे पिस जानेके कारण एक हो जायंगे। अक्षिगोलक (आँखका गोला) के पीछेकी ओर दबाव जैसे दर्दके साथ आँखसे आंसू गिरना।

मुखमण्डल और मुखविवर।—प्रदरके स्रावके साथ ललाट देशमें 'मातृचिन्ह' या पीले रङ्गका जन्मगत चिन्ह '(लहसन), सब दांतोंमें दर्द रहता है और वे लम्बे मालूम होते हैं। (ब्राई, कास्टि, सल्फ,—दर्द भरे मालूम होते हैं=इग्ने, पलस, रास) जीभ सफेद लेप चढ़ी। मुँह बहुत सूखा और गर्म। गलकोषके भीतर दर्दकी वजहसे बार बार निगलनेकी चेष्टा करना।

उदर।—सरमें चक्कर आनेके साथ बार बार खट्टा या तीता स्वाद युक्त मुंहमें पानी भर आना। रह रहकर वमन ; पाकाशयमें शूलका दर्द ; और बहुत अधिक मिचली ; जरायुमें खुजलानेकी वजहसे पाकाशयिक पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना। पाकाशयमें उत्ताप या भरापन मालूम होना। पाकस्थली और तलपेटमें गड़बड़ी मालूम होना और दाहिने कोखेमें बहुत संकोचनकी तरह दर्द मालूम होना। नाभि-प्रदेशमें बार बार शूलका दर्द,—वायु निकलनेपर घटना।

मल।—मलमें कड़ापन—और एक दिनका नागा देकर पाखाना हो जाना। दिनके १ बजनेके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें पाखाना हो जाना,—किसी तरहका दर्द नहीं रहता। मल कोमल और सफेद आभा लिये।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव-स्रावके पहले ताण्डव रोग, मूर्च्छागत वायु, मृगी वगैरह रोगका पैदा हो जाना (ऐक्टि)। प्रदर,—स्राव बहुत ज्यादा और श्लेष्मा भरा (ग्रैफ, डिक्टेम्नस, नाइट्रम, प्रोलि-ऐन), कषायगुणवाला और त्वचाका क्षय करनेवाला (ऐल्यू, आर्स, बोर, बोवि, कोना, मार्क, क्रियो, नेट्र-म्यू, ऐमो, पल्स, साइलि); अवसाद (कार्बो-ऐन, स्ट्रैन); ऊपरी पलक इतनी भारी मालूम होती है, कि अंगुलीसे उठाकर देखना पड़ता है (जेलसि, ग्रैफ, कौलफै-कास्टि); ललाटपर मात्हचिन्ह या पीले रंगका लहसन जैसा दाग दिखाई देता है (सिपि); छोटी उमरकी बालिकाओंको प्रदरका स्राव (कौलफै); वन्ध्यत्व पैदा कर देनेवाला प्रदर (बोर, कास्टि, ऐग, ग्रैफ, नेट्र-म्य, ऐरम-म्यू-नेट)। जरायुकी पेशियोंकी शिथिलताकी वजहसे प्रत्येक बार गर्भस्राव (वाइ-बर्नम-ओप्यु, वाइबर्नम-प्रुनिफो; रक्तहीनता और गहरे विषादके साथ=हेलोनि)। प्रसवके समय जरायुका मुंह चौड़ा नहीं हो जाता है; बहुत देरतक प्रसवका दर्द होता है, जरायु ग्रीवामें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। प्रसव के समय दर्द क्षणभर रहनेवाला, क्षणभर तक प्रकाशित होनेवाला रहता है और उसका वेग समान नहीं रहता,—कष्टदायक और प्रथम अवस्थामें निष्फल वेदना (ऐक्टिया)। प्रसवके बाद रक्तस्राव; जरायुकी पेशियोंका शिथिल भाव; गर्भ-स्रावके अन्तमें शिराओंसे गौण रक्तस्राव (सिकेल, थ्रैसि)। प्रसवके बादका दर्द या प्रसवान्तिक बेदना,—प्रसवके दर्दके बाद यह बहुत देरतक स्थायी रहता रहता है; रह रहकर तलपेटके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्त तक दर्द मालूम होता है,—दर्द वंक्षणप्रदेश या कूल्हा (Hip-joint) तक फैल जाता है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia),—बहुत दिनोंतक जरायुकी स्थिति-स्थापकताकी कमी की वजहसे शिथिल आधारसे लगातार क्लेदका स्राव हुआ करता है (सिकेलि, बहुत बदबूदार=बैल, कार्बो-ऐन, सिकेलि; बहुत लाल गन्ध मिला=क्रोक, हिप, पल्स, रास, सिकेल, वेरेट)। आक्षेपिक प्रकारका बाधक,—मूत्रस्थली, पाकस्थली, जरायुकी वृहत् बन्धनी, पुट्ठे या वंक्षण सन्धि, यहांतक कि वक्षस्थल और दोनों पैरों तक रह रहकर दर्द मालूम होता है,—जरायुमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे भी विकार पैदा हो जाता है और आर्त्तव स्राव बहुत थोड़ा हुआ करता है (जैल्स; सिक्लस; वाइबर्नम)। स्थान-च्युत जरायु पीछेकी ओर उलट जाता है (ऐरम-म्यू-नेट)।

बायें स्तनके नीचेवाले स्थानमें दर्द (ऐक्टिया-रेस); कम उम्रकी बालिकाओंका प्रदर। दर्द, चत, विलोपी—रहरह कर प्रवल वेगसे पैदा हो जाता है और एक जगहसे दूसरी जगहपर घूमा करता है; रातमें बहुत बढ़ जाता है, बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजना; आन्तरिक कम्पनकी वजहसे कमजोरी, जैसा कि कमजोर होनेपर रोगीको मालूम होता है कि वह काँप रहा है। बोलनेकी शक्ति भी नहीं मालूम होती। निद्राहीनता, अस्थिरता और थोड़ेमें ही कातर हो पड़ना। छोटी सन्धियों और पेशियोंका वातका दर्द। प्रसव वेदना—अनियमित प्रकोप; रोगीके क्लान्त हो पड़नेपर दर्द बन्द हो जाता है; बहुत तकलीफ देनेवाला दर्द।

लक्षणावली।

मस्तक।—वातकी वजहसे सरमें दर्द,—खासकर औरतोंका। सर दर्द—आँखके गोलेके पीछेकी ओर दबाव मालूम होता है और धुँधली दृष्टि, जरायुमें विकारकी वजहसे, शंखदेश या कनपटीमें रह रहकर भयानक पीसनेकी तरह दर्द,—मानो दोनों पार्श्व भयंकर रूपसे पिस जानेके कारण एक हो जायंगे। अक्षिगोलक (आँखका गोला) के पीछेकी ओर दबाव जैसे दर्दके साथ आँखसे आँसू गिरना।

मुखमण्डल और मुखविवर।—प्रदरके स्रावके साथ ललाट देशमें 'मातृचिन्ह' या पीले रङ्गका जन्मगत चिन्ह '(लहसन), सब दांतोंमें दर्द रहता है और वे लम्बे मालूम होते हैं। (ग्राई, कास्टि, सल्फ,—दर्द भरे मालूम होते हैं=इग्ने, पल्स, रास) जीभ सफेद लेप चढ़ी। मुँह बहुत सूखा और गर्म। गलकोषके भीतर दर्दकी वजहसे बार बार निगलनेकी चेष्टा करना।

उदर।—सरमें चक्कर आनेके साथ बार बार खट्टा या तीता स्वाद युक्त मुंहमें पानी भर आना। रह रहकर वमन; पाकाशयमें शूलका दर्द; और बहुत अधिक मिचली; जरायुमें खुजलानेकी वजहसे पाकाशयिक पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना। पाकाशयमें उत्ताप या भरापन मालूम होना। पाकस्थली और तलपेटमें गड़बड़ी मालूम होना और दाहिने कोखेमें बहुत संकोचनकी तरह दर्द मालूम होना। नाभि-प्रदेशमें बार बार शूलका दर्द,—वायु निकलनेपर घटना।

मल।—मलमें कड़ापन—और एक दिनका नागा देकर पाखाना हो जाना। दिनके १ बजनेके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें पाखाना हो जाना,—किसी तरहका दर्द नहीं रहता। मल कोमल और सफेद आभा लिये।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव-स्रावके पहले तारुण्य रोग, मूर्च्छागत वायु, मृगी वगैरह रोगका पैदा हो जाना (ऐक्टि)। प्रदर,—स्राव बहुत ज्यादा और श्लेष्मा भरा (ग्रेफ, डिक्टैम्नस, नाइड्रम, ओलि-ऐन), कषायगुणवाला और त्वचाका क्षय करनेवाला (ऐल्यू, आर्स, बोर, बोवि, कोना, मार्क, क्रियो, नेट्र-म्यू, कैमो, पल्स, सांइलि); अवसाद (कार्बो-ऐन, स्टैन); ऊपरी पलक इतनी भारी मालूम होती है, कि अंगुलीसे उठाकर देखना पड़ता है (जेलसि, ग्रेफ, कॉलफ-कास्टि); ललाटपर मातृचिन्ह या पीले रंगका लहसन जैसा दाग दिखाई देता है (सिपि); छोटी उमरकी बालिकाओंको प्रदरका स्राव (कॉलके); वन्ध्यत्व पैदा कर देनेवाला प्रदर (बोर, कास्टि, ऐग, ग्रेफ, नेट्र-म्य, अरम-म्यूनेट)। जरायुकी पेशियोंकी शिथिलताकी वजहसे प्रत्येक बार गर्भस्राव (वाइबर्नम-ओप्य, वाइबर्नम-प्रुनिफो ; रक्तहीनता और गहरे विषादके साथ—हेलोनि)। प्रसवके समय जरायुका मुंह चौड़ा नहीं हो जाता है ; बहुत देरतक प्रसवका दर्द होता है, जरायु ग्रीवामें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। प्रसवके समय दर्द क्षणभर रहनेवाला, क्षणभर तक प्रकाशित होनेवाला रहता है और उसका वेग समान नहीं रहता,—कष्टदायक और प्रथम अवस्थामें निष्फल वेदना (ऐक्टिया)। प्रसवके बाद रक्तस्राव ; जरायुकी पेशियोंका शिथिल भाव ; गर्भस्रावके अन्तमें शिराओंसे गौण रक्तस्राव (सिकेल, थ्रैस्पि)। प्रसवके बादका दर्द या प्रसवान्तिक वेदना,—प्रसवके दर्दके बाद यह बहुत देरतक स्थायी रहता रहता है ; रह रहकर तलपेटके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्त तक दर्द मालूम होता है,—दर्द वंक्षणप्रदेश या कूल्हा (Hip-joint) तक फैल जाता है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia),—बहुत दिनोंतक जरायुकी स्थितिस्थापकताकी कमी की वजहसे शिथिल आधारसे लगातार क्लेदका स्राव हुआ करता है (सिकेलि, बहुत बदबूदार=बेल, कार्बो-ऐन, सिकेलि ; बहुत भाल गन्ध मिला=क्रोक, हिप, पल्स, रास, सिकेल, वेरेट)। आक्षेपिक प्रकारका बाधक,—मूत्रस्थली, पाकस्थली, जरायुकी वृहत् बन्धनी, पुट्ठे या वंक्षण सन्धि, यहांतक कि वक्षस्थल और दोनों पैरों तक रह रहकर दर्द मालूम होता है,—जरायुमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे भी विकार पैदा हो जाता है और आर्त्तव स्राव बहुत थोड़ा हुआ करता है (सेन्यासियस ; वाइबर्नम)। स्थान-च्युत जरायु पीछेकी ओर उलट जाता है (अरम-म्यूनेट)।

प्रत्यङ्गादि ।—मणिबन्ध (कलाई) और अंगुलीमें तेज सङ्कोचन मालूम होना। वात वेदना, मणिबन्ध और अंगुलीकी संधियोंमें सूजन,—मुट्ठी बाँधनेपर इन सब संधियोंमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; दर्द गर्दनकी ओर फैलकर गर्दनमें अकड़न पैदा कर देता है (पल्स)। वातकी वजहसे गर्दन की अकड़न और इसी वजहसे माथा बाईं ओर घूम जाता है,—घुमाया नहीं जा सकता (ऐक्टिया ; डाल्का)। चलनेके समय या घूमते समय भी संधियोंमें मट-मट आवाज होती है और मानो कुछ टूटा करता है। (कमरमें फूटन=सल्फ ; गर्दनमें फूटन=काकु, निकोल, पलस, स्ट्रैन ; वायुसंधि मैली=चिनिन-सल्फ, मार्क, ऐसिड-टार्ट, थूजा ; चलनेके समय या शरीर सञ्चालन करनेपर जानु और निचले पैरकी संधियाँ कड़कड़ करती हैं=काकु, नक्स, लेडम, टैबाक)। हाथ-पैर आदिमें लगातार उड्डीयमान दर्द, एक जगहपर कई मुहूर्त तक रहता है (पल्स, कैलि-बाई, लैक्टियुका)। छोटी संधियों-पर रोगका हमला होता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐक्टिया ; बेलेडोना ; लिलियम-टाई, पलस, सिकेलि, लैसिस-वार्स, वाइबर्नम-ओप्युलस और वाइबर्नम-प्रुनिफोलियम।

तुलनीय ।—जेलस, (बाधक) ; पलस (प्रसव-वेदना) ; सिमिसि, बेलेडोना (रह रहकर दर्द) ; कैल्के (श्वेत-प्रदर) ; लैके, सल्फ, ओस्टिलेगो (डिम्बाधारमें दर्द) ; मैग्नेशिया (जरायुका आक्षेप) ; ब्रायो (वातमें) ; सिकेल।

शक्ति ।—१ म दशमिकसे ३ और उच्चतर क्रम।

कास्टिकम ।

(CAUSTICUM)

दूसरा नाम ।—पोटैसियम हाइड्रेड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—हनिमैनके मतसे ताजा तैयार किया हुआ चूना ; थोड़ी देरके लिये पानीमें भिगोकर उसे चुराकर बाइसलफेट आफ पोटासके साथ चुआये हुए पानीमें मिला लेना पड़ता है। इसके बाद स्पिरिट मिलानेपर मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुंहासा; स्तनका छोटापन; अन्धापन; संन्यास; सन्धिवात; मूत्राधारकी बीमारियाँ; श्वासनालीका प्रदाह; दाह; मोतियाबिन्दु; ताण्डव; कब्जियत; आक्षेप; कास; बहरापन; दाँत निकलना; उपझिल्लीकी बीमारियोंके बाद वाला पक्षाघात; कर्णस्राव (कानसे पीव बहना); दुबलापन; शय्यामें पेशाब हो जाना; मृगी; आँखकी बीमारियाँ; मुंहका पक्षाघात; नाली; दाँतका नासूर; गलगण्ड; अर्श (बवासीर); सरमें दर्द;—हृत्पिण्डकी बीमारी; दादकी तरह उद्भेद; वंक्षण-सन्धिकी बीमारी; रसवात धातु; ध्वजभङ्ग; बहुव्यापक सर्दी; सविराम ज्वर; स्वरनालीका प्रदाह; सीसेका विष फैलना; श्वेत-प्रदर; आर्त्तवमें विकार; पेशियोंका शूल; स्नायुशूल; नाककी बीमारियाँ; पक्षाघात; गर्भावस्थाकी बीमारी; मूत्रद्वारशायी ग्रन्थिकी बीमारी; वात; कच्छु; गण्ड-माला; चर्मरोग; चेचक; तोतलाना; उपदंश; पेशियोंके अगले भागका संकोचन; गलेमें नाना प्रकारके जखम; जीभकी बीमारियाँ; जीभका पक्षाघात; नाना प्रकारके जखम; मूत्रनालीका प्रदाह; मूत्रका विकार; शिराओं-का फूलना; स्वरभङ्ग; मसे; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—काले केश, दृढ़-तन्तु या क्षीणकाय, रोगी देह, कच्छु-विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंकी बीमारी और जिनका गाढ़ा पीला, या उतरा हुआ चेहरा रहता हो और जो प्रायः श्वासयंत्र और मूत्रयंत्र के रोगोंको भोगा करते हैं, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। जिन बच्चोंके केश गहरे काले रहते हैं और जिनकी आँखें गहरी काली होती हैं, जिन्हें थोड़ेसे कारणसे ही बीमारी पैदा हो जाती है, जिन्हें दाँत निकलनेके समय पुट्ठा, गर्दन वगैरह अंगोंकी खाल उधड़ जाती है या जिन्हें दाँत निकलनेके समय अकड़न आदिकी बीमारी हो जाती है, काष्टिकाम उनकी प्रधान दवा है। मूर्द्धाकी त्वचा, गलेके भीतरवाली श्वासनाली, मलान्त्र, मलद्वार, मूत्रनाली, अपत्य पथ, जरायु वगैरहमें जखम हो जाना या खाल उधड़ जाना। गहरे शोक और बहुत दिनोंतक रोग भोगनेकी वजहसे मस्तिष्क या मेरुमज्जाकी क्रियाके विकार में भी यह लाभदायक है। इसका एक और भी प्रधान लक्षण है।—ठण्ड लगनेकी वजहसे शरीरके किसी अंश विशेषमें पक्षाघात हो जाना, जिस अंग पर यह आक्रमण करता है, उसी अंशमें रुका रहता है।—पास या दूरके किसी अंशमें नहीं चला या फैल जाता है।—जैसे स्वरयन्त्र, जीभ, पलक, मुंह, मलाङ्ग, मूत्रस्थली

और शरीरके दाहिने पार्श्वपर ही इसका विशेष आक्रमण होता है। रोगी आरोग्य लाभ करता करता रुक जाता है, सब रोग एकदम दूर नहीं हो जाता; एकदम आरोग्य नहीं होता। (सोराइन, सल्फ)। नीचे इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं:—स्वरभंगके साथ नासा-रोग; सर्दी; ऐसा मालूम होना मानो नाकमें जखम पैदा हो गया है; स्वरतन्तुके पक्षाघातकी वजहसे एकाएक स्वरलोप हो जाना। मुंहमें मेदमय तेलकी तरह स्वाद। मल डोरीकी तरह कड़ा या लेईकी तरह गाढ़ा।—देखनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो तेल और चर्बीसे ढका हुआ है। खड़े होनेपर मल सहजमें ही निकल आता है। खांसी,—वक्षमें खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द, और स्पर्शका सहन न होना; थोड़ा-सा बलगम गलेमें पैदा हो कर फिर गलेमें ही विलीन हो जाता है। ठण्डा पानी पीनेपर घटना;—गर्म शय्यापर सोनेसे बढ़ना। खांसने छींकने या मन उत्तेजित होनेपर अनजानमें पेशाब हो जाता है। शरीरकी त्वचा, बृहत् असमष्टष्ट रहती है और थोड़ेमें ही खुन निकलनेकी सम्भावना रहती है तथा मसोंसे भरी रहती है।—खासकर अंगुलीका अगला भाग और नाकका ऊपरी भाग। मर्त्यगोंके गात्रमें त्वचा क्षय या खाल उधड़ना; वातके दर्दकी वजहसे रोगी अंगोंकी अकड़न; और आवर्त्तक पेशी (Flexers) का सङ्कोचन और संधियोंमें लचीलापन न रहना। बच्चा चलता चलता डगमगाया करता है और सामान्य कारणसे भी गिर जाता है। असमयमें ऋतु प्रकाश हो जाता है और स्राव थोड़ा होता है; केवल दिनमें ऋतुस्राव होता हैं, सोनेपर रुक जाता है। बहुत दिनों तक शोक या दुःख भोग करना (ऐसिड-फास, कोलचि, लैके, नेट्र-म्य, फास, स्टैट, स्टैफ), अनिद्रा या रातमें जागरण (एसिड-नाई, काकु, इग्ने); भय, डर आनन्द वगैरह एकाएक मानसिक आवेग (काफि, जेलसि, क्रियो, लैके, लाइको, सैम्ब, हाइड्रोफोब, हाइपिर); क्रोध, चिढ़ और रुके हुए उद्भेद (Suppressed eruptions = ब्राई, फास, ऐसिड-फास, सल्फ, ओपि, वेल) वगैरहसे उत्पन्न बीमारीमें उपयोगी है।

लक्षणावली।

मन।—दुःखित,—चिन्ता, शोक या दुःखकी वजहसे; विषाद और निराशासे भरा; इसके साथ ही रोना, सामान्य कारणसे ही बच्चा रोना आरम्भ कर देता है। दूसरोंकी तकलीफमें बहुत ही समवेदना प्रकाश करता है। (काक्यु, कोलो)। रोगके विषयमें सोचनेपर (खासकर अर्श) रोग बढ़ जाता

है (वेराई, केल्के-फास, हेलोन, मिडोराइन, ऐसिड-आक्स, पेट्रोल)। ऋतुके पहले अत्यन्त विमर्ष भाव (लाइको, नेट्र-म्यू, स्टेन ; ऋतुके समय = सिपि)। चित्त भय और उद्वेगसे भरा हुआ। रोगी हमेशा अपनी या दूसरेकी विपत्तिकी आशङ्का करता है,—(ऐमोन-कार्ब, ऐमिलेनन, चिनिन-सल्फ, सिमिफुग, क्लिमेट, क्यूप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लोरो, लिलि-टाइग्रि, मैग-कार्ब, स्कूटेलारिया, सिपि, वे लि, वेरेट-विरि)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—पार्श्व या सामनेकी ओर गिर जानेका उपक्रम होता है (सामनेकी ओर गिरनेका उपक्रम = आर्नि, फेर, फेरम-ऐसेट, नेट्र-म्यू, पोडो, रेनान, रास ; बाईं ओर गिरना चाहता है = कैनाब, कोना, ड्रोसे, युफोर्बि, फेरम-ऐसेट, मेजेर, रियुम, स्विला, जिङ्कम) ; रातमें शय्यापर शायितावस्थामें (कोना, मार्क, नक्स, सल्फ) ; शय्यासे उठनेके समय (वेल, ओक, ग्रेफ, ओलि-येन, पेट्रोल, पल्स, रास, साइलि) और फिर सोनेके समय (कैलेड, कोना, रेडोड, स्टेफ, थूजा) या दिनके ११ बजनेके समय और किसी चीजकी ओर बहुत देरतक टकटकी लगाकर देखते रहनेपर (सार्स) = मस्तिष्ककी दुर्बलता और उद्वेगके साथ निर्मल वायुमें घट जाता है (ऐमोन-म्यू, मैग-सल्फ फेलेन, ऐसिड-सल्फ)। मस्तिष्क और ललाटका मध्यवर्ती अंश शून्य मालूम होता है। ललाटके बाएं अंग-देशमें, बाईं ओरके उच्च देशमें दर्द मालूम होता है।

चक्षु।—ठण्ड लगनेकी वजहसे दाहिनी आँखकी पेशीका पक्षाघात। पलकें मुंदी रहती हैं,—खोलकर रखी नहीं जातीं, आपसे आप गिर जाती हैं। (कोलो-फाई, जेल्सि, ग्रेफ, कैल्के, कास्टि, दोनों पलकोंका = सिपि)। मोतियाबिन्दु रोगमें चीजोंका ऊपरी अंश या केवल निचला अंश दिखाई देता है (ऐसिड-म्यू ; केवल निचला अंश दिखाई देता है = अरम) ऐसा मालूम होता है, मानो आँखमें धूल या कण गिर गया है, दृष्टि-पथ या आँखके सामने मानो आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं (ऐगार, ऐमोन-म्यूर, वेल, सिक्वो, कक्कु, कोना, मार्क, ऐसिड-नाई, फास, सिपि, साइलिसिया)। आंखके सामने मानो एक पतला आवरण है (ऐल्यू, वेल, केल्के, ओके, फास, ऐसिड-फास, रियुटा, सल्फ) दो देखना,—सब चीजें दो दिखाई देती हैं (वेल, साइक्यूटा, डिजि, हायो, लाई, नेट्र-म्यूर ओलियेन, पल्स, सिकेल, वेरेट) ; रातमें आँख सट जाती हैं। आँसुओंका स्राव कसैला (ऐलग्र, युफोर्बि, इयुफ्रे, ग्रेफ, क्रियो, लेके, मार्क,

ऐसिड-नाई, पलस, साइलिसिया, सलफ)—इसके साथ ही माथेतक फैलनेवाला तेज दर्द। वातकी वजहसे आँखोंका प्रदाह।

कान।—कानमें ह्न ह्न ढं ढं शुन शुन शब्द, रोगीका अपना कण्ठ स्वर उसके भीतर प्रतिध्वनित होता है। कर्ण विवरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना (सिङ्को ; ऐसिड-नाई)।

नाक।—स्वरभङ्गके साथ सर्दी, नाकके ऊपरसे शल्क या खाल उधड़ना। नाकके छेदका मुँह जखम भरा। बार बार छींक। नाकके ऊपर दाने या छोटे छोटे मसे निकलते हैं। (थूजा)

मुखमण्डल।—पीला रङ्ग (कोलुकि, कोन्य, ग्रैफ, लाई, मैग-म्यू, मार्क नक्स-म्यू, नक्स, पलस)। मुँहकी दाहिनी ओरका स्नायुशूल—रातमें बढ़ना ; रोगी शीत कातर रहता है और प्यास नहीं रहती ; गलेसे कानतक फैलनेवाला संकोचनकी तरह दर्द मालूम होता है ; पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना इसके साथ ही थोड़ा आर्त्तव-स्राव। खाँसनेके समय पेशाब हो जाता है, इसके साथ ही पक्षाघात। दोनों हनु अकड़ जाते हैं, मुंह खोल नहीं सकता।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—चबानेके समय गाल काट डालता है (जीभ काट देता है=इग्ने)। जीभके पक्षाघातके साथ अस्पष्ट बात (हायोसा,—जीभमें भार, सुन्न जैसी=कैलि-कार्ब)। निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें अर्बुद या मांसपिण्ड पड़ा है। निगलनेके समय गलेमें कड़ाक आवाज होती है। मानो गलेमें कोई ठण्ढी चीज उठ रही है। वायुनलीके मुंहपर दर्दके साथ श्लेष्मा निकलना। सूखी खाँसीके साथ गलेकी भीतरकी खाल उधड़ जाना और खुजली मालूम होना। बहुत देरतक खाँसने के बाद कहीं थोड़ा-सा कफ निकलता है। गलेमें जलन मालूम होती है,—घूंट निगलनेपर भी नहीं घटती—दर्द ऐसा मालूम होता है, मानो छातीसे उठ रहा है।

पाकाशय आदि।—मुंहका स्वाद मेदमय (चर्बीकी तरह=ऐसेर, मैङ्ग, ऐसिड-मूर, ओलि-यैन ; सैबाई)। मिष्टान्नसे अरुचि (ग्रैफ, सलफर)। मानो पाकाशयमें चूना दग्ध हो रहा है (कोक)। माथेके भीतर उत्ताप मालूम होनेके साथ आंतोंका शूल,—समूची देह बहुत ठण्ढी मालूम होती है,—रोगी-पर घटना। प्यास रहती है, पर पानी पीना नहीं चाहता। (पेट्रस, ग्रैफ,

साइलिसिया देखो) पेट बहुत फूला मालूम होता है और उसमें हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द होता है।

मलान्त्र और मल।—मलमें कड़ापन,—बार बार वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता (ऐनाक, नक्स); खड़े होकर पाखाना फिरनेपर सहजमें ही पाखाना हो जाता है=अर्शकी बलि पाखाना होनेमें गड़बड़ी पैदा कर देती है, मल गांठ गांठ चर्बीसे ढका और चमकीला; जो बच्चे रातमें अनजानमें पाखाना पेशाब कर देते हैं, उनकी कब्जियत। मल कड़ा और आंवसे लिपटा हुआ (ग्रेफ, हाइड्रास) और बहुत छोटी छोटी गांठ-भरा जलनके साथ रक्त मिला पाखाना होता है। मलद्वारमें नासूर (Fistula) अर्श,—मसा बहुत कड़ा और छूनेपर, चलनेपर, खड़े होने या बैठनेपर बहुत तकलीफ होती है; पाखाना होने बाद घटना; खुजलानेवाला सुई बेधनेकी तरह यंत्रणादायक; रस-स्राव करनेवाला, शूल बेधनेकी तरह यंत्रणा और जलन,=यह विषय सोचनेपर और भी दर्द बढ़ जाता है। छूने या जोरसे बात करनेपर तकलीफ बढ़ जाती है। मलद्वारके चारों ओर बड़े बड़े दर्द-भरे मसेकी तरह उद्भेद निकलते हैं, उससे पीब खून और रसका स्राव होता है। (थूजा, ऐसिड-नाई, सिनेबार, युफ्रेशिया)।

पेशाब।—खांसने, छींकने या नाक साफ करनेके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (पल्स, स्क्विला, वेरेट; खांसनेपर अनजानमें मल निकल जाता है=फास, स्क्विला)। मूत्रनालीमें खुजली, बार बार और वृथा ही पेशाब का वेग होता है, प्रायः कई बूंद पेशाब ही निकलता है;—मलद्वारकी अवरोधक पेशीका फैलना और उसके साथ ही मलका कड़ापन। पेशाब रुकना; इसके साथ साथ प्रबल वेग, कभी कभी कई बूंद-भर निकलता है। पहली नींदके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (सिपि)। मूत्रद्वारकी सुखश्रायिका ग्रन्थिसे लगातार रस निकलकर स्मरण शक्ति घटा देता है। शिश्नमुण्डके चारों ओर अधिक परिमाणमें सफेद रंगका निकला हुआ रस जम जाता है। नश्तर लगवाने बाद पेशाब रुकना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु,—बहुत विलम्बसे होता है, (कोना, ग्रेफ, कैलि-कार्ब, पल्स, सल्फ)। पर स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है (बहुत जल्दी जल्दी और बहुत ज्यादा स्राव=बेल, कैल्के); रुककर, फिर कई दिनों तक थोड़ा थोड़ा स्राव हुआ करता है। बहुत बदबूदार, केवल दिनमें स्राव होता है

ऐसिड-नाई, पलस, साइलिसिया, सलफ)—इसके साथ ही माथेतक फैलनेवाला तेज दर्द। वातकी वजहसे आँखोंका प्रदाह।

कान ।—कानमें हू हू ढं ढं गुन गुन शब्द, रोगीका अपना कण्ठ स्वर उसके भीतर प्रतिध्वनित होता है। कर्ण विवरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना (सिङ्को ; ऐसिड-नाई)।

नाक ।—स्वरभङ्गके साथ सर्दी, नाकके ऊपरसे शल्क या खाल उधड़ना। नाकके छेदका मुँह जखम भरा। बार बार छींक। नाकके ऊपर दाने या छोटे छोटे मसे निकलते हैं। (थूजा)

मुखमण्डल ।—पीला रङ्ग (केलूके, कैम्प, ग्रेफ, लार्ड, मैग-म्यू, मार्क नङ्ग-म्यू, नक्स, पल्स)। मुँहकी दाहिनी ओरका स्नायुशूल—रातमें बढ़ना; रोगी शीत कातर रहता है और प्यास नहीं रहती ; गलेसे कानतक फैलनेवाला संकोचनकी तरह दर्द मालूम होता है ; पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना इसके साथ ही थोड़ा आर्त्तव-स्राव। खाँसनेके समय पेशाब हो जाता है, इसके साथ ही पक्षाघात। दोनों हनु अकड़ जाते हैं, मुँह खोल नहीं सकता।

मुख-विवर और गलेके भीतर ।—चबानेके समय गाल काट डालता है (जीभ काट देता है=इग्ने)। जीभके पक्षाघातके साथ अस्पष्ट बात (हायोसा,—जीभमें भार, सुन्न जैसी=कैलि-कार्ब)। निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें अर्बुद या मांसपिण्ड अड़ा है। निगलनेके समय गलेमें कड़ाक आवाज होती है। मानो गलेमें कोई ठण्डी चीज उठ रही है। वायुनलीके मुँहपर दर्दके साथ श्लेष्मा निकलना। सूखी खाँसीके साथ गलेकी भीतरकी खाल उधड़ जाना और खुजली मालूम होना। बहुत देरतक खाँसने के बाद कहीं थोड़ा-सा कफ निकलता है। गलेमें जलन मालूम होती है,—घूंट निगलनेपर भी नहीं घटती—दर्द ऐसा मालूम होता है, मानो छातीमें उठ रहा है।

पाकाशय आदि ।—मुँहका स्वाद मेदमय (चर्बीकी तरह=ऐसेर, मेङ्ग, ऐसिड-म्यूर, ओलि-ऐन ; सैबाई)। मिष्टान्नसे अरुचि (ग्रेफ, सलफर)। मानो पाकाशयमें चूना दग्ध हो रहा है (कोक)। माथेके भीतर उत्ताप मालूम होनेके साथ आँतोंका शूल,—समूची देह बहुत ठण्डी मालूम होती है,—सोने-पर घटना। प्यास रहती है, पर पानी पीना नहीं चाहता (ऐथुस, ग्रेफ,

साइलिसिया देखो) पेट बहुत फूला मालूम होता है और उसमें गुड़ गुड़ गुड़ गुड़ शब्द होता है।

मलान्त्र और मल।—मलमें कड़ापन,—बार बार वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता (ऐनाक, नक्स); खड़े होकर पाखाना फिरनेपर सहजमें ही पाखाना हो जाता है=अर्शकी बलि पाखाना होनेमें गड़बड़ी पैदा कर देती है, मल गांठ गांठ चर्बीसे ढका और चमकीला ; जो बच्चे रातमें अनजानमें पाखाना पेशाब कर देते हैं, उनकी कब्जियत। मल कड़ा और आंवसे लिपटा हुआ (ग्रेफ, हाइड्रास) और बहुत छोटी छोटी गांठ-भरा जलनके साथ रक्त मिला पाखाना होता है। मलद्वारमें नासूर (Fistula) अर्श,—मसा बहुत कड़ा और छूनेपर, चलनेपर, खड़े होने या बैठनेपर बहुत तकलीफ होती है ; पाखाना होने बाद घटना ; खुजलानेवाला सुई बेधनेकी तरह यंत्रणादायक ; रस-स्राव करनेवाला, शूल बेधनेकी तरह यंत्रणा और जलन,=यह विषय सोचनेपर और भी दर्द बढ़ जाता है। छूने या जोरसे बात करनेपर तकलीफ बढ़ जाती है। मलद्वारके चारों ओर बड़े बड़े दर्द-भरे मसेकी तरह उद्भेद निकलते हैं, उससे पीब खून और रसका स्राव होता है। (थूजा, ऐसिड-नाई, सिनेबार, ग्रुफि-सिया)।

पेशाब।—खांसने, छींकने या नाक साफ करनेके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (पलस, स्किला, वेरेट ; खांसनेपर अनजानमें मल निकल जाता है=फास, स्किला)। मूत्रनालीमें खुजली, बार बार और वृथा ही पेशाब का वेग होता है, प्रायः कई बूंद पेशाब ही निकलता है ;—मलद्वारकी अव-रोधक पेशीका फैलना और उसके साथ ही मलका कड़ापन। पेशाब रुकना ; इसके साथ साथ प्रबल वेग, कभी कभी कई बूंद-भर निकलता है। पहली नींदके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (सिपि)। मूत्रद्वारकी सुखशायिका ग्रन्थिसे लगातार रस निकलकर स्मरण शक्ति घटा देता है। शिश्नमुण्डके चारों ओर अधिक परिमाणमें सफेद रंगका निकला हुआ रस जम जाता है। नश्तर लगवाने बाद पेशाब रुकना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु,—बहुत विलम्बसे होता है, (कोना, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, पलस, सल्फ)। पर स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है (बहुत जल्दी जल्दी और बहुत ज्यादा स्राव=बेल, कैल्क) ; रुकावर, फिर कई दिनों तक थोड़ा थोड़ा स्राव हुआ करता है। बहुत बदबूदार, केवल दिनमें स्राव होता है

(कैक्टस, लिलियम ; केवल रातमें होता है = बोवि, मेग-कार्ब ; रातमें ज्यादा परिमाणमें = ऐमोन-मूर, ऐमोन-कार्ब ; सोनेपर रुक जाता है = कैक्ट, लिलियम ; सोनेपर निकलता है = मेग-कार्ब ; चलनेपर रुक जाता है = मेग-कार्ब ; बैठनेपर बहुत ज्यादा स्राव होता है = ऐमोन-कार्ब, जिङ्कम । सोनेके समय बहुत ज्यादा स्राव = क्रियो) ; कमर और तलपेटमें भयानक दर्द मालूम होता और कभी कभी थक्का थक्का रक्त निकलता है। पहला रजःस्राव बहुत तकलीफ देनेवाला। प्रदर,—स्राव सिर्फ रातमें (ऐम्ब्रा),—इसके साथ ही बहुत अवसन्नता (क्रियो, कार्बो-ऐन,—सवेरे प्रदर स्राव = नेट्र-मूर ; चलनेके समय स्राव = बोवि) बहुत ज्यादा परिश्रम, रात-जागरण वगैरह कारणोंसे स्तनका दूध प्रायः रुक जाता है। स्तन-वृन्तकी खाल उधड़ जाती है और फटा फटा हो जाता है तथा उसके चारों ओर फुन्सियाँ हो जाती हैं (कैस्टोर, ग्रैफ), यौवन आनेके समय और पूर्णिमाके दिन अपस्मार या मृगीका दौरा होता है।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभङ्ग और स्वरलोप (बेल, मार्क, फास), गलेके भीतरी स्थानकी खाल उधड़ जाना (डा० क्लार्क कहते हैं कि वायुनलीमें जखम भरा दर्द, वक्षमें नहीं) मालूम होनेके साथ सवेरे बढ़ना (युपेट; सन्ध्याके समय बढ़नेपर = कार्बो-वेज, फास) । खाँसी,—वक्षमें खाल उधड़ती है और जखमकी तरह दर्द ; कफ निकालनेकी शक्ति न रहनेकी वजहसे निगलना पड़ता है (आर्निका, कैलि-कार्ब) ; ठण्डा पानी पीनेसे घटता है (ठण्डा पानी पीनेसे बढ़ना = ऐमोन-मूर, कार्बो-वे, सिलि, स्क्विला ; ठण्डे पानीसे शरीर धोनेपर घटना = बोवि) ; साँस छोड़नेके समय (ऐको, लैके,—साँस लेनेके समय = सिना, मिनि, ओपि, स्क्विला ; लम्बी साँस लेनेके समय = ऐमोन-मूर, सिङ्को, साइना, कोना, क्यूप्रम, डलकेमा, ग्रेफ, लाइको, नेट्र-मूर, स्क्विला) ; कफ (Sputa) रातमें ही ज्यादा निकला करता है (कोल्के, ऐण्टि-टार्ट, स्टेफ = दिन रात समभावसे = बिस्मथ ; सोनेके समय = कोल्के, ग्रेफ, नाइट्रम ; सन्ध्याके समय = क्रोटन, कैलि-कार्ब, लाइ, ऐसिड-मूर, नेट्र-कार्ब, नाइट्रम, फास, रियुटा, सिपि, सल्फ,) ; खाँसनेके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (पलस, स्क्विला वेरेट) ; बोलनेपर खाँसी आती है (ऐनाक, बेराई, कैमो; सिङ्को, डिजि; हिप, मैङ्गो; सिफाइटः मार्क, ऐसिड-मूर, फास, साइलि, स्टेन, सलफ) । दमा—विशेषकर बैठने या सोनेके समय (सोनेपर घटना, = सोराइन; केवल खड़े होनेपर श्वास-प्रश्वास चला करता है = कैन-सेट) ; खाँसनेपर नितम्बमें दर्द मालूम होता

है (बेल)। मांस लेनेके समय वक्षस्थलके गभीरतम प्रदेशमें सुई या गलाका बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। हृत्पिण्ड प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्दके साथ हृदकम्पन,—रोगी सो नहीं सकता ; [सोनेसे बढ़ना= नैट्र-कार्ब, टैबेका ; चित्त होकर और दाहिनी करवट सोनेपर केलि-नाइ ; चित्त होकर सोनेपर= आर्स ; खड़े होनेपर=ऐगार; झुकनेपर=ऐङ्गस, कैनाब, स्पाइजि ; चलनेके समय=ऐल्यू, ऐम्ब्रा ; आरम, सिपि, स्टैफ] ; रातमें सोना आरम्भ करनेके समयसे शय्यासे उठनेके समयतक कई दिनों तक रातके पिछले प्रहरमें. और शरीर हिलानेपर कुछ घट जाता है ; परन्तु फिर सोते ही पैदा हो जाता है।

पीठ और कटि-देश ।—पृष्ठ-फलकके भीतरके अंशमें बहुत दर्द और अकड़न मालूम होती है। गर्दनके पीछे चोट लग जानेकी तरह दर्द (मोच खानेकी तरह दर्द—कोना) ; गलगण्डकी तरह कण्ठदेशमें सूजन (संकोचन मालूम होनेके साथ=आयोड)

प्रत्यङ्ग आदि ।—बच्चा बहुत देरसे चलना सीखता है (केलके-फास)। बच्चा चलनेके समय डगमगाया करता है और सहजमें ही गिर पड़ता है। रोगी रातभर छटपटाता है, जरा-सा सोकर उठ बैठता है और बहुत बेचैन हो पड़ता है, उसे किसी तरह भी आराम नहीं मिलता। बैठकर माथा हिलाया करता है और अन्तमें थककर सो जाता है (युपेट, रास)। लगातार शरीर हिलाया करता है, पर उससे भी आराम नहीं मिलता। बहुत सुस्ती मालूम होती है और शरीर कांपा करता है। हाथ या पैरका पक्षाघात,—सर्दी लगने या पानीमें नहानेकी वजहसे या आन्त्रिक ज्वर अथवा गलेके भीतरकी झिल्लीके प्रदाहके बादका पक्षाघात, यह क्रमशः पैदा होता है। आकुंचक पेशीके सङ्कोचन और सन्धियोंकी अकड़नके साथ वातका दर्द, सब पेशियां संकुचित हो जाती हैं (ऐमोन-मयू, साइमेक्स, गुयाइयाक, नैट्र-कार्ब ; सुन्न मालूम होनेके साथ बायें पार्श्वका कटि-स्नायु-शूल (दाहिने पार्श्वका=कोलो, मैग-फास)। बांह और हाथमें धीमा छेदनेकी तरह दर्द। दोनों पैरोंमें सुरसुरी,—मानो त्वचाके नीचे कोई कीड़ा रेंग रहा है। रातमें दोनों पैरोंमें स्पन्दन हुआ करता है (जिङ्कम, बेलि)। आक्षेप या धनुष्टङ्कार,—चिल्लाना, दाँत कड़कड़ाना, हाथ पैरोंका बहुत ही तेज सिकुड़ना और फैलना। ज्वरकी तरह उत्ताप और इसके साथ ही हाथ पैरोंमें शीतलता। रोगी हमेशा हिलता रहता है, परन्तु शरीर हिलानेपर तक-लीफ कुछ भी नहीं घटती।

त्वचा ।—जखमके चिन्ह सब खास कर जलने और झुलसनेकी वजहसे पड़े हुए चिन्ह सबपर फिर जखम पैदा हो जाता है। (ऐसिड-फ्लू, ग्रैफ); पुरानी चोटकी जगहपर दुबारा दर्द होने लगता है—रोगी कहा करता है कि बचपनमें अमुक अंग जल जानेके बादसे आजतक फिर किसी दिन भी स्वास्थ्य अच्छा न रहा अथवा यह अंग कभी एकदम आरोग्य न हुआ। मसे,—ऊँचे नीचे पीठवाले, बहुत बड़े (थूजा ; ऐसिड-नाई, कैल्के ; जखम पैदा होनेकी सम्भावना और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता = नेट्र-कार्ब, गुच्छेके गुच्छे पैदा होते हैं = फेरम-पाइक ; कड़े और टपककी तरह दर्दसे भरे = सलफ ; लिङ्गमुण्ड की पीठपर = ऐण्टि-टार्ट ; हाथमें = कैल-मूर ; तलहत्थीमें = नेट्र-मूर ; शिश्नावरक त्वचाके ऊपर और शिश्न गात्रपर = सिपि) ; सहजमें ही उनसे खून जाता है [ऐसिड-नाई, कैल्के ; ओंठमें = नाइट्रिक-ऐसिड ; और रसस्रावी = युफ्रे] ; तली कोमल और उसका ऊपरी भाग गट्टेकी तरह कड़ा ;—बाहुमें, हाथमें, पलकोंमें, चेहरेपर और नाकके ऊपर ; जिन बच्चोंका दाँत निकल रहा हो, उनके पुट्ठेमें, गलेमें, बगलमें वगैरह अंशों में खाल उधड़ जानेकी तरह हो जाता है (बच्चेके दोनों चूतड़ोंके बीचवाले अंशमें = कैमो ; बार बार होनेपर = लाई ; रोगवाली जगहमें बहुत दर्द होनेपर = मार्क-सोल ; राहमें घूमनेकी वजहसे दोनों ऊरुमें होनेपर = इथूजा)। जिस करवट सोता है, उसी ओर दर्द होता है ; इसलिये बार बार करवट बदलना पड़ता है (रास, वैप)।

ज्वराधिकारमें ।—शीतावस्था—बहुत शीत कातरता और जाड़ा मालूम होना ; रजाईपर रजाई ओढ़ता जाता है, पर गर्मी नहीं मालूम होती [लैके] परन्तु गर्मीसे आराम नहीं मिलता। समूचे वाम पार्श्वमें शीत मालूम होनेके साथ बहुत जाड़ा मालूम होता है ; भीतर शीतवाली अवस्थामें ही पसीना होने लगता है। गर्मी फिर नहीं मालूम होती है, आधी रातमें बहुत ही भीतरी जाड़ा मालूम होता है। मुँहसे कँपकपी आरम्भ हो जाती है। सोने [कैलि-कार्ब] और पानी पीनेपर घटता है [ग्रैफ, इपिक]। सन्ध्या ६ बजेसे ८ बजे-तक उत्ताप ऊपरकी ओरसे नीचेकी ओर फैलता है। उत्ताप पैदा होजाने के साथ ही साथ जाड़ा भी मालूम होता है। वायु सेवनके लिये चलनेके समय [ब्राई, सिङ्कोना] और शरीर सञ्चालनसे पसीना बढ़ जाना [कार्बो-ऐन, सिङ्को, काकु, हिप, कैलि-कार्ब, मार्क, नेट्र-मयू, फास, सोराइन, सिपि, साइलि, सल्फ, वेरेट)। खट्टी गन्ध लिये रातके समय होनेवाला पसीना (हिप, मैग-कार्ब,

ऐसिड नाई, सिपि, साइलि, सलफ)। सबेरेके समय पसीना—अन्तिम रातमें ४ बजनेके समय।

निद्रा।—रातमें निद्रितावस्थामें मृगी या अपस्मार रोग पैदा हो जाता है (कैलकेरि-कार्ब, कूप्रम, ब्यूफो, लैके, ओपि)।

वृद्धि।—आकाश निर्मल रहनेपर, बाहरसे गर्म घरमें प्रवेश करनेपर; ठण्डी हवा खासकर बहती हुई ठण्डी हवा लगने; शरीर ठण्डा होनेपर; भींज जाने या स्नान करनेपर (रास, ऐसिड-क्रुड)।

घटना।—जलीय ठण्डी हवामें; गर्म हवामें, आधी रातमें।

सम्बन्ध—सदृश।—अनुपूरक = कार्बो-वेज; पेट्रोसेलिन; फास्फोरस; इसके बाद या पहले व्यवहारमें नहीं लाया जाता।

तुलना।—आर्निका (बाध्य होकर श्लेष्मा निगल जाना पड़ता है); जेलसि मैफि और सिपिया (असम्पूर्ण पक्षाघात रोगमें); रियुमेक्स और कार्बो-वेज (स्वरभङ्ग—सन्ध्याके समय बढ़नेपर); सलफर (बहुत दिनोंतक स्वरलोप रोगमें]; सीसेके विषसे उत्पन्न रोग आदिमें [पक्षाघातमें] यह प्रतिविषके रूपमें कार्य करता है और कच्छु रोगमें मार्क्यूरियस और सलफर के अपव्यवहारमें भी विष-नाशक रूपमें काम करता है।

दोषघ्न।—ऐसाफि, काफिया, कोलोसि, नक्स-वो।

शक्ति।—तीसरे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व।—५० दिन।

सियानोथस अमेरिकानस।

(CEANOTHUS AMERICANUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकान न्यू-जर्सी देशीय चायसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—अतिसार; हृत्पिण्डकी बीमारी; कामला रोग; श्वेत प्रदर; प्लीहामें दर्द; प्लीहाका बढ़ना और कड़ापन; रजोबन्ध।

उपयोगिता और आभास ।—यदि एकमात्र प्लीहा रोगमें ही इसकी उपकारिता सीमाबद्ध रहती तो मलेरियासे पीड़ित वङ्गदेशका बहुत बड़ा उपकार होता और यह एक अमूल्य निधिकी तरह समझा जाता । जो हो, यह एक अमूल्य निधिकी तरह समझे जाने योग्य है । प्लीहा चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, इसे मन्त्रकी तरह सियानोथस स्वाभाविक अवस्थामें ला देता है । खासकर यदि प्लीहामें दर्द होता हो । वाम पार्श्व (जिसतरह चेलिडोनियम दाहिना पार्श्व) इसका सर्वश्रेष्ठ क्रियाक्षेत्र है ।

लक्षणावली ।

मन ।—अवसाद ; स्नायविक भावापन्न ।

मस्तक ।—सरमें दर्द, आँख बड़ी मालूम होना ।

मुख-विवर ।—ज्वरादिके बाद मुँहका जखम । आरक्त ज्वरान्तिक क्षत-युक्त गलेका दर्द ।

उदर ।—कम्पज्वर और क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे बहुत ज्यादा बढ़ी हुई आकारकी प्लीहा । प्लीहामें दर्द, इसके साथ ही प्रबल वमन । समूचे बाएँ पार्श्वमें दर्द पैदा हो जाता है ; बहुत अधिक श्वास-कष्टता ; बलगम निकलनेके साथ खाँसी, ज्वर और बहुत ज्यादा पसीना । प्लीहा प्रदेशमें तेज दर्द । कभी कभी यकृतमें भी दर्द मालूम होता है । प्लीहाके दर्दकी वजहसे रोगी बाईं करवट सो नहीं सकता ।

मलान्त्र ।—उदरामय, इसके साथही आमाशयके भीतर और मलान्त्रमें बहुत दबाव मालूम होना ।

मूत्र ।—हरी आभा लिये फेनभरा पेशाब होना, पेशाबके साथ पित्त शर्करा वगैरह, निकलता है ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—निर्दिष्ट समयके दस दिन पहले ऋतु स्राव हो जाता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है । प्रदर, स्राव पीले रंगका (थ्रैनेट), इसके साथही बायें कोषमें बहुत अधिक दर्द ; दर्द इतना अधिक होता है, कि रोगिनी बाईं करवट सो नहीं सकती ।

सार्वाङ्गिक ।—बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजनाके साथ जाड़ा मालूम होना और भूख न लगना । शीतसे काँपता रहता है ।

निद्रा।—समूची रात जागते रहना।

ज्वर।—दिनके चार बजनेके समय बोखार, कम्प, प्लीहाका बढ़ना।

वृद्धि।—देह हिलाने और बाईं करवट सोनेपर।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—नैट्रम। यह बार्बेरिस, कोनायम, वगैरहके बाद लाभदायक है।

तुलनीय।—सीड्रन, ऐगारि, चायना, नैट्रम ; कैम्फोरा (अतिसार)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ ठा दशमिक क्रम।

सीड्रन।

(CEDRON)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सुरासारमें बीज मिलाकर मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—सरमें दर्द ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह ; ताण्डव ; सङ्गमके बादके उपसर्ग ; मृगी ; अन्धापन ; जलातङ्क ; मूर्च्छावायु ; सविराम ज्वर ; स्नायुशूल ; वात ; सांप काटनेकी वजहसे विष ; दांतका दर्द।

उपयोगिता और आभास।—कोई भी बीमारी क्यों न हो, सीड्रन सदृश होनेपर ठीक एक ही समय (दिनके ३ बजे) रोगका आविर्भाव होगा। यह इस दवाका एक प्रधान और सिद्धिप्रद लक्षण है, मलेरियाकी वजहसे बोखारमें और स्नायुशूलमें, यदि रोज ठीक एक ही समय बीमारी पैदा हो जाती हो, खासकर दिनके ३ बजनेके समय, तो सीड्रन एक अव्यर्थ दवा है, कीड़े, सांप, बिच्छू आदि काटनेमें भी इससे विशेष लाभ होता है।

लक्षणावली।

मन।—सभी मनोवृत्तियोंकी जड़ता और गड़बड़ी मालूम होना। अपने रिश्तेदार तथा बन्धु बान्धवोंको भी पहचान नहीं सकता (एलेन, फ्यू म्स, कैलिफोर्ड क्रोम)

माथा, आंख और कान।—माथा फूला हुआ मालूम होता है (बेल, रैनान, रैना, म्निलरेटस; थिरिड) मूर्द्धादेशमें क्रमशः बढ़नेवाला भार मालूम होना। एक कनपटी या शंख देशसे आँखके भीतरवाली राहसे दूसरी कनपटी तक तेज़ दर्द। बायीं आँखके ऊपरी भागमें बहुत तेज दर्द मालूम होता है। चेहरेके समूचे दाहिने अंशमें स्नायु शूलकी तरह दर्द,—यह दर्द रोज सवेरे ८ बजनेके समय पैदा हो जाता है। आँखके गोलेमें तेज दर्द;—चारों ओर यहाँतक कि नाकके भीतर तक बहुत तेजीसे फैल जाता है। ललाटके एक प्रान्तसे अन्य प्रान्त तक दर्दकी वजहसे बुद्धि लोप हो जानेका उपक्रम हो जाता है। काले कपड़ेपर शिल्प-कार्य करनेसे बढ़ जाता है। आँखोंसे कड़वे (Acrid) आँसुओंका स्राव होता है और मानो गाल जला जाता है। सब चीजें घोर अन्धकारमें ढकी दिखाई देती हैं (बेल, कैल्के, साइक्लम, युनिमिन, मार्क, प्लम्ब); आँख रगड़नेपर दूर हो जाता है (क्रोक, प्लम्ब, पल्स)। सभी चीजें ही लाल दिखाई देती हैं (बेल, कोना, क्रोक, हायो, सार्स, स्ट्रैम.; हरा=डिजि, सिपि ; पीला रंग=कैल्थ, डिजि, सेण्टो ; कितने ही रंगोंसे रंगा हुआ=एनहैलो, साइक्यू, नाइट्रम, स्ट्रैम)। एक या दोनों गालोंमें छेदनेकी तरह दर्द,—कभी कभी आँखके बीचवाले प्रदेशमें तेजीसे फैल जाता है, मुँहका पुराना सविराम स्नायुशूल,—नित्य-ठीक ३ से ८ बजेतक (संध्यामें) के बीचमें पैदा होकर दो से चार घण्टे तक स्थायी रहता है। क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे कानमें लगातार भिन भिन शब्द हुआ करता है।

मुख-विवर।—जीभ,—अगले भागतक पीले रंगका लेप; सवेरे जीभ कुटकुटाती है और खानेबाद अच्छी हो जाती है,—ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ सुन्न हो गयी है (जीभ कुटकुटाती है पर कुल्ला करनेपर दूर हो जाता है=हेलिबो ; जीभ और ऊपर तालु देशमें कुटकुट करता है=सेङ्गिविन ; जीभका समूचा ऊपरी भाग पिट पिट करता है=टिलिया); मुँह सूखा और लसदार लेईकी तरह लारसे भरा। मुँहके भीतर, गलकोष अन्ननाली और पाकस्थलीमें जलन,—मानो इन सब अंशोंकी झिल्ली क्षय हो गयी है, मुँहका भीतरी भाग और जीभ बहुत सूखी ; बोलनेमें तकलीफ होती है ; रोगीको लगातार बहुत प्यास मालूम होती है। मुँहमें बहुत ज्यादा धातुके जंगकी तरहवाली स्वाद-भरी लार संचित होती है, मुँह बहुत कड़वा या खट्टे स्वादसे भरा रहता है। कण्ठनाली इतनी संकुचित हो जाती है कि रोगी लार तक निगल नहीं सकता।

पाकस्थली-अन्त्राशय।—क्षुधा और रुचिका न रहना। प्यासकी वजहसे मध्यान्हमें ठण्डा और रातमें गर्म पानी पीनेका आग्रह प्रकाश करता है; सवेरे शय्यासे उठनेपर जरा कड़वा स्वाद मिली डकार आती है और कानपटीमें तेज दर्द मालूम होता है। पाकस्थलीमें उत्ताप और पूर्णता मालूम होना। तलपेटमें सन्ध्याके समय वायुभर जाता है, शय्याके उत्तापसे शरीर गर्म हो जाने पर, बड़े दाँत, यकृत और प्लीहामें दर्द पैदा हो जाता है। इसी वजहसे रोगी प्रायः रातभर सो नहीं सकता।

मल।—बहुत कूथनके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पाखाना होना। थोड़ा-सा दर्द होनेके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें दही या जमे हुए दूधकी तरह मल निकलता है (गेम्बो)।

पेशाब।—मसाना या मूत्रग्रन्थि (Kidney) से मूत्र निकालनेवाली शिरा (Ureters) तक बहुत जलन और दर्द मालूम होताहै,—मानो उसमेंसे गर्मपानी प्रवाहित हो रहा है। शरीरमें झोल्कार या सुरसुरी मालूम होनेके साथ ही साथ ऐसा मालूम होना मानो चींटी रेंग रही है। मूत्रनालीसे दिन रात रस या लार बहा करती है। बार बार वृथा पेशाबका वेग। बहुत ज्यादा और फीके रंगका पेशाब होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रोगिनी उत्तेजना प्रवण और कामातुरा रहती है, संगमके बाद स्नायवीय सुस्ती और ताण्डव रोगके कारण हाथ पैरोंका अस्वाभाविक आक्षेप (पुरुषोंको सुस्ती मालूम होती है)। आर्त्तव-स्रावके समय मुंह और जीभ बहुत सूखी मालूम होती है और बहुत तेज प्यास मालूम होती है; मृगीका तरह आक्षेप; जिस दिवस रजःस्राव आरम्भ होता है ठीक उसी दिवस आर्त्तवके आविर्भावके लक्षण सब पैदा हो जाते हैं। प्रत्येक ऋतुके समय धनुष्टंकारकी तरह आक्षेप पैदा हो जाया करता है। प्रतिमास ऋतुके पाँच या छः दिन पहले नियमित भावसे प्रदरका स्राव हुआ करता है (काकुलस)। ऋतुके बाद मुंहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चय हुआ करती है।

प्रत्यङ्गादि।—रातके दस बजनेके समय प्रत्येक सन्धि-स्थानोंमें तेज वातका दर्द। कोहनी और दाहिनी बांहके निचले आधे अंगमें चोटकी तरह दर्द मालूम होना। दाहिनी बांह और हाथ सुन्न और निष्क्रिय मालूम होता है,—रोगी कलम नहीं पकड़ सकता। दाहिना पैर सुन्न मालूम होता है। जानु-

सन्धियोंका शोथ। निचला पैर फूलनेके साथ प्रत्येक सन्धिमें तेज दर्द मालूम होना। दाहिने हाथके बड़े अँगूठेकी पोरमें या अग्रभागमें सूजनके साथ प्रत्येक सन्धिमें तेज दर्द मालूम होना और उस दर्दका कन्धे तक फैल जाना। दाहिने तलवेके बगलमें (एँड़ीमें) दर्द पैदा होकर जानुतक फैल जाता है। चकत्तेकी तरह दादसे दर्द चारों ओर फैल जाता है।

ज्वर।—रोज रातमें २ बजे या तीन बजनेके समय (थूजा) शीत या कम्प, इसके पहले ही मानसिक अवसाद या उत्तेजना प्रकाशित हुआ करती है। शीतावस्थामें प्यास बिलकुल नहीं रहती; शीतावस्थाही इसका प्रधान लक्षण है। उत्तापावस्थामें गर्म पानी पीनेका आग्रह (कैस्केरिला,चेलिडो, युपेटो, पार्पि, सैबाडि); दोनों पैर सुन्न, निष्क्रिय और बड़े मालूम होते हैं (अँगुली सुन्न— सिपि)। बहुत ज्यादा पसीना इसके साथ ही प्यास और हाथ पैरमें छेदनेकी तरह दर्द। विरामावस्थामें सारे शरीरमें गड़बड़ी मालूम होना, और कमजोरी मालूम होना। उत्तापावस्थामें हाथ पैर आदि मानो बढ़ गये हैं, ऐसा मालूम होता है मानो समूचा शरीर सुन्न हो गया है।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐरेनिया-डायाडेमा—जिस तरह गीली भूमि और जलीय वायुकी वजहसे ज्वरमें उपयोगी है, सीड्रन उसी तरह गर्म देशके बोखारमें उपयोगी है।

दोषघ्न।—लैकेसि, वेलाडो।

तुलनीय।—चायना, आर्स, ऐरेलि, वेलाडो, सैबाडिला, आर्स, (यथा समय आक्रमण), ऐरेलि (सविराम ज्वर); ऐगारि, ऐकेसिस, स्ट्रैमो, रूटा, हायोसा इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ रे दशमिक तक साधारण व्यवहार होता है। परन्तु ३० दशमिक क्रम व्यवहार करने पर ही ज्वर आदिमें विशेष फायदा होता है।

सेन्क्रिस कण्टार्ट्रिक्स।

(CENCHRIS CONTORTRIX)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकाके एक तरहके साँपका विष।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अन्धापन; सर्दी; अतिसार; आँख फूली; सरका दर्द; हृत्पिण्डका दर्द; प्रदर; रजआधिक्य; डिम्बाधारका दर्द; गलेमें दर्द; योनिद्वारके उद्भेद।

उपयोगिता और आभास।—डा० क्लार्क कहते हैं, कि सब तरह के सर्प विष लक्षणोंका प्रधान गुण इसमें वर्त्तमान है। स्त्रियोंके जननेन्द्रियकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें श्वासयन्त्रके प्रदाह आदिमें और सवेरेके समयके उदरामयमें यह उपकारी है। वक्षस्थलको दाहिने और स्त्री-जननेन्द्रियके बाएँ पार्श्वमें सन्ध्या और रातके समय और शयनावस्थामें इसके अधिकांश लक्षण प्रकट हुआ करते हैं। इसके कई प्रधान लक्षण हैं—आच्छन्न भाव; अर्द्ध चैतन्य; आँखों के सफेद अंशमें चेतना न रहना; ऊपरी ओठकी सूजन; सारे अङ्गकी सूजन; पक्षाघात; शीतल लसदार पसीना; हर्ष और विषादका पर्यायक्रमसे पैदा होना; जाग्रत अवस्थामें सपनेकी अवस्थाकी तरह अनमना भाव; डरावने सच्चे की तरह सपने; जागनेपर भी जो देखता था "वह स्वप्न था" यह विश्वास लौटाया नहीं जा सकता। कामोद्दीपक सपने; भवों और आँखोंके बीचका स्थान फूल जाता है, ऐसा मालूम होता है, मानो आँखपर पानीकी एक थैली झूल रही है; उदरामय—मल रूखा, ठण्डा पाखाना होनेके पहले यन्त्रणा; पीले रङ्गके प्रदरका स्राव; दाहिने डिम्बाधारमें दर्द; योनि द्वारके ऊपर दादकी तरह उद्भेद निकलना; प्रचण्ड, सूखी और वायुनलीके भीतर खुजलीकी वजहसे खाँसी; दिनके ३ बजने के समय बढ़ जाती है; बेचैनी और श्वास-रोध होनेका उपक्रम होना; कलेजा धड़कना और ऐसा मालूम होना कि मृत्यु अति निकट है; इस तरह श्वासका अभाव कि रोगिनी पीछेकी ओर माथा झुकाकर सोती है; वस्त्र आदि कसकर पहन नहीं सकती; सहन नहीं होता और तीसरे पहरके समय शीत या ज्वरका आविर्भाव हो जाता है। समूची देह इतनी फूल उठती है, कि ऐसा मालूम कि फटकर दो हो जायगी। हृत्पिण्ड प्रदेशमें, योनिके बाहरी देशसे और मल-द्वारमें टपककी वजहसे रोगिनीकी नींद खुल जाती है और इसके बाद ही

त्रिकास्थि प्रदेशमें धीमा धीमा दर्द पैदा हो जाता है। घूमनेपर वह शान्त होता है।

लक्षणावली ।

मन ।—स्मरण शक्तिकी कमजोरी ; मानसिक उद्वेग और रोगिनी अपने मनमें सदा यही समझती है कि एकाएक उसकी मृत्यु हो जायेगी। (सोचती है, कि वह जल्दी ही मर जायगी=ऐको, ऐग, कोस्ट; एपिस, आर्स, लैक-डि; कैनाब, हाइड्रेस, पेट्रोल ; फाइटो ; पोडो, साइलिसिया), सभीका अविश्वास करती हैं (ऐनाक, ऐनजोला, साइक्लि, हायो, मार्क)। अकेला रहना अच्छा समझती है (आर्नि, कैम्प, ऐक्टिया, साइक्ला, हेलिबो, आक्साइट्रोप, थूजा)। उसके दैनिक कार्य आनन्द जनक होनेपर भी उसके सम्पादनसे विराग प्रकाश करती है (ऐनाक, ऐगार, गुयायेक, आक्साइट्रोप ; ऐसिड-नाई, सिपि, टैराक्स, जिङ्कम)। शय्यापर स्थिर होकर सो नहीं सकती ; मनको सन्तुष्ट करनेके लिये घरमें टहला करती है। लगातार रोती है और ठण्डी साँस लिया करती है=मानो न जाने कितने विषादमें वह भरी है ; उसे ऐसा मालूम होता हैं कि समय बहुत धीरे धीरे बीत रहा है ; मानो समय अब नहीं कटता (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, अरम, कैनाब, कैमो, मिडोराई, नक्स-वोम ; फिर ऐसा मालूम होता है, कि समय बहुत तेजीसे बीत रहा है=ककियु, थिरिड); चित्त परिवर्त्तनशील, कभी बहुत प्रसन्न रहता हैं फिर तुरन्त ही विपन्न हो जाता है (ऐल्यू, बैसिलाइन, कार्बो-ऐन, कार्बोनि-सल्फ, क्रोकस, हाइपिर, इग्ने, प्लैट, स्ट्रैम, टैरेण्ट, थूसियम, वैलेरि)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, तीसरे पहर ४ बजेसे सन्ध्याके ७ बजेतक ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरका सब रक्त सरकी ओर दौड़ता चला जाता है। दोपहरमें दोनों कनपटियोंमें भयानक दर्द मालूम होता है ; घरके भीतर थोड़ा भी उत्ताप सहन नहीं कर सकता। ओंठ सूखे और फटे फटे हो जाते हैं। शय्यासे उठनेपर (सवेरे) दोनो कनपटियोंमें तेज दर्द होता हैं, पहली बार भोजनके बाद दूर हो जाता है। सरका दर्द आराम होनेके बाद मूर्द्धाकी त्वचा बहुत दर्द भरी हो जाती है।

आंख ।—आँखोंमें दर्द और दृष्टि अस्पष्ट रहती है। बायीं पलक फड़का करती है। भवोंकी तली फूल जाती है, मानों आँख पर एक पानी— लटक रही है।

नाक ।—रन्ध्रके भीतर बहुत जलन मालूम होती है, मानो मिर्चका चूर लगा है (कैम्फि)। नासारन्ध्रमें कटे घाव। नासारन्ध्रके भीतर सूखा श्लेष्मा सञ्चय होनेकी वजहसे नाकसे साँस नहीं छोड़ सकता। (नक्स, मैस्त्रियु)।

मुख-मण्डल ।—मुँह और माथेमें कभी कभी उत्तापका आविर्भाव होता है। आँखोंके भवोंके नीचे थैलोंकी तरह सूजन (आँखके नीचे=एपिस, कैलि-कार्ब,)। आँखके कोनेमें नीलापन दिखाई देता है।

मुंहके भीतर और गलेके भीतर ।—दाँतका दर्द,—गर्म या ठण्डा पानी पीनेपर निद्रावस्थामें बहुत ज्यादा परिमाणमें लार बहा करती है और उससे तकिया भींज जाती है। बार बार गाढ़ा सफेद रङ्गका डोरीकी तरह श्लेष्मा भरा कफ, जो सहजमें नहीं निकलता।

उदर ।—मिचली ; बरफ खानेपर घटना और पानी पीनेपर बढ़ना और वमन या ओकाई पैदा हो जाना। सब तरहके खाद्योंसे अरुचि ; सभी खाद्य दोष बताते हैं। तलपेटमें चारों ओर मानो किसी तरहका दृढ़ बन्धन बँधा हुआ रहनेकी तरह मालूम होना (कोना, लाई); कमरका बन्धन असह्य।

मलान्त्र और मल ।—मलद्वारमें खुजलाहट और खाल उधड़ जाना, अर्श,—खुजली और जखम भरा। सवेरे ही बाध्य होकर शय्या त्याग कर पाखाना जाना पड़ता है (लाई, साल, ऐलो, सोराइन, रियुमेक्स)। मल काला, पानी की तरह और काली तली जमनेवाला (आर्स, सोराइन, लेप्टान, प्लम्ब)। मल बहुत देरतक थोड़ा थोड़ा निकला करता है, फिर रुक जाता है। मल पानीकी तरह और वेगसे निकलता है, पहले यन्त्रणा नहीं रहती, पर कई घण्टे बाद ही पाखाना होनेके पहले बहुत दर्द हुआ करता है।

पेशाब ।—खाँसते खाँसते पेशाब हो जाना (कास्टि, स्किला, स्टैन, वेरेट)। रातमें शय्यापर सोनेके थोड़ी ही देर बाद पेशाबका वेग होता है ; रोगी को उसी समय बाध्य होकर उठ बैठना पड़ता है और बहुत देरतक वेग होने बाद कई बूंद पेशाब होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रदर—पीले रङ्गका स्राव, (ग्रैफेट, सिपा, सिया-नोथस)। प्रबल रमणेच्छा। ऋतुके समय बैठे रहनेपर कमरमें बहुत दर्द होता है—रोगिनीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है (ऋतुके समय बैठनेपर कमरमें दर्द=ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, बेल- कास्टि, लाई, फास,)। हिलने-डोलनेपर

बाएँ डिम्बाधारमें तेज दर्द मालूम होता है (ग्रैफ, लैके); दाहिने डिम्बाधार में दर्द (ऐपिस, बेल)। पीले रंगका प्रदर स्राव। योनि द्वारपर दादकी तरह उद्भेद।

श्वास-यंत्र।—नींद आनेपर श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है (क्लोरम, जेलसि, ग्रटग्रिड़, लैके, कैन, लैके, ओपि)। सोते ही श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है (आर्स, ऐसेट, कैल्के, डिजि, हिपर, लैके, नक्स, फेलेन, फास, पल्स, सैम्बियु, सिपि, ऐण्टि-टार्ट सल्फ,—चित्त होकर सोनेपर=ओलि-ऐन, फास, साइलि; माथा झुकाकर सोनेपर=सिङ्को, कोलचि, हिपर, नाइट्रम, पल्स; करवट सोनेपर=कार्बो-ऐन, पल्स); सोनेकी बात मनमें आते ही एक विषम भावना पैदा हो जाती है। बोलनेके लिये उपयोगी ताकत नहीं मिलती (कास्टि, ड्रोसे, मेजे, स्पाइजि, सल्फ)। छातीको फाड़ देनेवाली सूखी खाँसी,—तीसरे पहर तीन बजनेके समय आरम्भ होकर संध्याके समय तलपेटमें दर्द होता है (आर्स, बेल, कोलो, कोना, फास, स्ट्राम, सल्फ, वेरेट)। तेजीसे चलनेके समय (फेर हिप, सिना, लैके, नेट्र-म्यू, स्ट्रैम); या ऊँचे चढ़नेके समय खाँसी आती है (नाइट्रम)। विषम लगनेकी तरह श्वास नालीमें दम रोक देनेवाली खाँसी; खाँसनेपर बाईं आँखमें पानी भर आता है (स्किला)। गाढ़ा खून भरा कफ, सफेद रंगका फेन फेन बलगम तथा सवेरे कुछ पीले रङ्गका कफ गहरा पीला होता हुआ निकलता है। सवेरे तर श्लेष्मा मिली घड़घड़ करनेवाली खाँसी (आर्स, लैके, ओपि, फास, पल्स, साइलि)।

वक्षस्थल।—कलेजेकी धड़कनके साथ छातीके भीतर छुँछूँ आवाज होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो समूचा वक्षस्थल फैल गया है। (मार्क, वाइपेरा) और हृत्पिण्डमें बहुत दर्द होता है। हृत्पिण्डमें रातभर गड़बड़ी मालूम होना। हृत्पिण्डके शिखर-देशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, सन्ध्याके समय इस दर्दका बढ़ जाना। वक्षके दाहिने पार्श्वमें तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द (आर्ड, ऐको, ऐण्टि-टार्ट, रेनान-बालबो, ऐमोन-कार्ब, कोना, क्रियो, कैलि-आयोड)

गर्दन और पीठ।—दिनमें ऐसा मालूम होता है मानो गला दब गया है; गलेपर कपड़ा रखनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है,—मानो श्वास रुकी आती है (लैके, ऐसिड-सल्फ)। सोनेपर गलेकी धमनीमें टपकका दर्द होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—संध्याके समय तलहत्थीमें जलन होती है या गर्मी मालूम होती है (लैके, सेङ्गियु, सिकेलि, स्टेन, युपेट, नक्स, सिपि)। बाहु कभी सूखे और उत्तापयुक्त, इसके क्षणभर बाद ही ठण्ढे हो जाते हैं; ठण्ढी हवा लगते ही हाथ लाल हो जाता है,—मानो फटकर बूंद बूंद रक्त निकला आयेगा।

नींद।—रातमें बहुत छटपटाता है। समस्त रात सपने देखता है,—मतवालोंका सपना,—मृत व्यक्तिका स्वप्न, नङ्गे मनुष्य, डाकू, और नर-नारीके अश्लील व्यवहार।

सार्वाङ्गिक।—समूची देह इतनी फूल गयी-सी मालूम होती है, कि फट जाना चाहती है।

ज्वर।—तीसरे पहर शीत या ज्वर।

वृद्धि।—रातमें सोनेके समय; सोने बाद; तीसरे पहर और नींद खुलनेपर।

उपशम।—सवेरे और चलनेके समय।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, लैके, हायो, ब्राई, सिपि, क्रोटेलस।

दोषघ्न।—कैमो, ऐमोन-कार्ब।

तुलनीय।—लैकेसिस बहुत कुछ सदृश है; पर बाएँ डिम्बाधारपर लैकेसिसकी क्रिया अधिक होती है। पतली चीजें खा नहीं सकता—यह लक्षण इसमें नहीं है (क्रोटेलस) क्रोकस, कैलि-फास, (पलके)

प्रतिविष।—कैमो, ऐमोन-कार्ब।

शक्ति।—६ ठे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

सेण्टोरिया टैगाना ।

(CENTAUREA TAGANA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० क्लार्कने लिखा है—सर्दी ; अतिसार ; आँखोंमें दाह ; ज्वर ; बहुव्यापक सर्दी ; सविराम ज्वर वगैरह रोगोंमें लाभदायक है ।

सदृश ।—बेलाडो, सिङ्कन, कार्डेमम ।

शक्ति ।—निम्न क्रम ।

सिरेसस वर्जिनियाना ।

(CERASUS VIRGINIANA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकन फार्मा-कोपियाके अनुसार ताजी छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत दिनोंतक रोग भोगनेके बाद कमजोरी दूर करनेके लिये खासकर हृत्पिण्डकी बीमारीके बाद इसका व्यवहार बहुत लाभदायक हुआ करता है । (कैल्के-फास, ऐसिड-फास, सोराइग, लोरोसिरेसस)। इसका एक और भी सिद्धप्रद लक्षण है, कि रोगी जो कुछ खाता है, वही अम्लमें परिणत हो जाता है । (कैल्के-कार्ब)

लक्षणावली ।

पाकस्थली ।—अजीर्ण रोगमें खाई हुई चीज अम्लमें परिणत हो जानेका लक्षण (कैल्के-सल्फ, रोबिनिया)। क्षीण और सविराम गतिवाली नाड़ीके साथ भूख न लगना ।

जननेन्द्रिय ।—शुक्रक्षय हो जानेकी वजहसे सुस्ती और कमजोरी ।

वक्षस्थल ।—हृत्पिण्डकी गति क्षीण और विषम और नाड़ी सविराम, द्रुत; क्षीण और विषम; ज्वर आदि बहुतसे सुस्त और कमजोर करनेवाले रोगोंमें; खासकर हृत्पिण्डके दर्द आदिमें आराम होनेके बाद, यह बहुत ताकत देता है (कॉल्के-फास, सोराइन, आर्स, आयोड)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३ रा दशमिक क्रम।

सिरियस बानप्ले ण्डियाई ।

(CEREUS BONPLANDII)

दूसरा नाम ।—कैक्टस जातिका एक वृक्ष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—डण्ठलके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक है :—खसड़ा; अजीर्ण; हृत्पिण्ड बीमारी; उन्माद; स्नायुशूल।

उपयोगिता और आभास ।—इसे हृत्पिण्ड और वक्षस्थलकी बीमारीवाले रोगियोंके लिये कैक्टसके सदृश कहा जा सकता है। सर्व साधारण का उपकार हो, ऐसी कोई कीर्त्ति स्थापित करनेकी इच्छा लगातार बनी रहना।

लक्षणावली ।

मन ।—लगातार काम करनेकी इच्छा बनी रहना। रोगी हमेशा वही काम करना चाहता है जिससे जगतका उपकार हो। लोगोंको गाली देनेकी इच्छा (ऐनाक)। समय बहुत धीरे धीरे बीतता है, (आर्जेण्ट-नाइ, कैनाब-इन, कैमो, मिडोराइन)। रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसने ईश्वरके आगे कोई अमार्जनीय अपराध किया है।

मस्तक और आँख ।—सरके पीछेकी ओर दर्द, माथेके पीछे कुछ बाएँ हटकर ऐसा मालूम हो, मानो एक टुकड़ा काष्ठ-फलक पड़ा हुआ है। सरके पिछले भागमें तेज दर्द, मस्तिष्कमें सञ्चालित होता है। चलने और सीढ़ी चढ़नेके समय बढ़ जाता है। अक्षि-गह्वर (आँखका गड्ढा) और आँखके गोले

के भीतरसे तेज दर्द मालूम होता है। मुँहमें बराबर लार सञ्चित होती रहती है और मुँहका स्वाद पानीकी तरह रहता है—सभी चीजें पानीकी तरह स्वाद-हीन मालूम होती हैं।

वक्ष-स्थल ।—बाएँ पार्श्वमें हृत्पिण्डके भीतरसे दर्द मालूम होता है। वक्षस्थलमें बाईं ओर वृहत पेशीमें तेज दर्द ; ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षपर एक भारी पदार्थ दबाया हुआ है; कभी कभी सुई बेधनेकी तरह मालूम होता है। वक्षस्थलसे लेकर हृत्पिण्डके भीतरसे दर्द प्लीहामें फैल जाता है; हृत्पिण्डमें तेज दर्द अनुभवमें आता है; ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्डमें अस्त्र बेधा जा रहा है। श्वास-प्रश्वास बहुत देरसे चलता है,—बहुत लम्बे समयकी तरह।

त्वचा ।—शरीरपर पीब-भरे दाने।

निद्रा ।—औंघाई ; जम्हाई आना इत्यादि।

सम्बन्ध—सदृश ।—सीरियस-सर्पेण्टिनस—पक्षाघात पैदा होनेकी तरह सुन्नपन मालूम होना। हृत्पिण्डमें दर्द। जननेन्द्रियकी शक्तिका घट जाना या शक्ति-हीनता (ऐग, कैलेडियम, बार्या, रोडो, थिरिडि, जिङ्क) ; रैसखेलनके बाद अण्डकोषमें दर्द मालूम होना, अधिककर, स्टाइजि, कैल्मिया, नेट्र, लिलि-टाइ, कैलि-कार्ब।

शक्ति ।—३री दशमिकसे ३० शततमिक शक्ति।

सिरियस सर्पेण्टिनस ।

(CEREUS SERPANTINUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह कैक्टस जातिकी दवा है। इसके डण्ठलसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— क्रोधावेश ; शय्यामें पेशाब ; नाकसे खून गिरना ; हृदयमें दर्द ; ध्वजभङ्ग।

सम्बन्ध ।—कैक्टस, कोनायम, सोराइनम और ऐनाकार्डके साथ तुलनीय।

शक्ति ।—निम्न क्रम।

सिरियम आक्जेलिकम ।
(CERIUM OXALICUM)

दूसरा नाम ।—आक्जेलेट आव लाइम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है:—खाँसी ; बाधक ; गर्भिणीका वमन इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्त्री-जननेन्द्रियके साथ इसका जितना निकट सम्बन्ध है, मानो शरीरके और किसी अंगके साथ इसका उतना सम्बन्ध नहीं है । जरायुमें खुजलीकी वजहसे प्रति-चिप्त वमन और क्षण भरके लिये आनेवाली तेज खाँसी, इसका निर्दिष्ट लक्षण है (ऐपोमार्फिया, क्रियोजोटम, सिम्फोरि-कार्पस, ऐसि-कार्बोलिक) । गर्भावस्थामें वमन (टैवेक, सिम्फोरि-कार्पस, ऐसिड कार्बोलिक, क्रियोजोट, इपिक, पल्स, नक्स) ; और आधी पची चीजोंका वमन हो जाना । (फेरम-म्यू, क्रियो ; पाकस्थलीकी झिल्लीपर दाने निकलकर तेज वमन पैदा हो जाता है । स्थूलकाया (मोटी ताजी) औरतोंकी बाधक या रजः कृच्छ्रता=स्थूलकाया स्त्रियोंके वयः सन्धिके समयकी बीमारी और कलेजा धड़कना—कैल्के, आर्स),—स्राव आरम्भ होनेपर यन्त्रणा घट जाती है, (लेके-सेंजिया) ।

श्वास-यंत्र ।—हूप खाँसी, वमन (तीता=सिपि ; खाये हुए पदार्थ=ब्राई, ड्रोसे, इपिक, मिफाइटिस, ऐसिड-फास, पल्स, ऐण्टि-टार्ट ; श्लेष्मा=साइलि ; श्वास-रोधक=बेल, सिड्रो, ड्रोसे, हिप, क्रियो, लाइको, मार्क, मेजे, नक्स, सिना, स्क्विला) और इसके साथ ही रक्तस्रावके साथ (मुँहकी राहसे=आर्नि, ड्रोसे, इपिक, मार्क, नक्स ; नाकके छेदसे=बेल, ड्रोसेरा, मार्क, नक्स) ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐसिड-कार्बोलिक, ऐसिड-लेक्टि, ऐमिग-डेलस, क्रियो, सिम्फोरि-कार्पस, ऐपोमार्फिया, आर्निका, मिफाइटिस, बेल, लैकेसिस ।

शक्ति ।—३ रा दशमिक विचूर्णसे ६ ठा शततमिक क्रम ।

सर्वस ।
(CERVUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके हरिनके चमड़ेसे इसका विचूर्ण तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात ; स्वाद और जीभमें विकार ।

सम्बन्ध ।—कार्बो-ऐनिमेलिसके साथ तुलनीय ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

सिट्रेरिया आइलेण्डिका ।
(CETRARIA ISLANDICA)

दूसरा नाम ।—आइसलेण्ड मस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके शैवालसे मदर टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—दुबलापन ; सर्दी ; अतिसार ; यक्ष्मा ; शोताद ; जख्म ।

सम्बन्ध ।—स्टिक्टा-पाल्मो सदृश ।

शक्ति ।—निम्न क्रम ।

कैमोमिला मैट्रिकेरिया।

(CHAMOMILLA MATRICARIA)

दूसरा नाम।—कार्न-फ़ीवर-फ्यू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे खिले हुए गाछसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगमें लाभदायक है:—अम्ल-रोग; क्रोधका दुष्परिणाम; दमा; सर्दी; काफी सेवनका दुष्परिणाम; शूल वेदना; आक्षेप; खांसी; अकड़न; घुंड़ी; दाँत निकलनेके समयकी बीमारी; अतिसार; वाधक; अजीर्ण; कर्णमूल; आँखकी बीमारी; डकार आना; विसर्प; खाल उधड़ जाना; मूर्च्छा; ज्वर; आध्मान; वात; सर-दर्द; आँव उतरना; बहुव्यापक सर्दी; कामला; प्रसवका दर्द; नकली दर्द; स्तन प्रदाह, या ठुनका; रजो-विकार; दुग्ध ज्वर; गर्भस्राव; कर्णमूल प्रदाह; स्नायुशूल; अन्त्रावर्तन प्रदाह; गर्भके समयके उपसर्ग; वात; लार बहना; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात; चिल्लाना; चेतनाकी अधिकता; आक्षेप; दाँतका दर्द; जखम; जरायुकी बीमारी; जागकर चिल्लाना और रोना; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जिन सब व्यक्तियोंके स्नायु बहुत ही अधिक उत्तेजना प्रवण रहते हैं, जिनकी चेतना शक्ति बहुत प्रखर और तीक्ष्ण रहती है, सामान्य यंत्रणासे भी या साधारण कारणसे भी जो उन्मत्त हो उठते हैं,—उनके लिये कैमोमिला मैट्रिकेरिया बहुतही उत्तम फल देनेवाली दवा है। इसका रोगी सामान्य मानसिक उद्वेगकी वजहसे बेचैन हो पड़ता है; दर्द सहन नहीं कर पाता,—फूलकी चोटसे मूर्च्छित हो जाता है (वेलि-डिप, वेरेट, काफि, इग्ने, ऐको)। बहुत दिनोंतक नशीले पदार्थ आदि व्यवहार करनेकी वजहसे स्वास्थ्य खराब हो जानेपर भी यह बहुत काम करता है। कैमोमिला जिन रोगोंमें प्रयोग किया जा सकता है, ऊपर बतायी हुई उत्तेजना प्रवणता उनमें मौजूद रहती है और यह स्पष्ट दिखाई दिया करती है। रोगी बच्चा हो या जवान युवक हो हो अथवा प्रसव वेदना वाली या दाँतमें दर्दवाली रोगिनी हो, सबमें ही

इसी ढंगका भाव और स्नायवीयता मौजूद रहती है। जहाँ ये लक्षण न हों, उस स्थानपर यदि दवासे लाभ न दिखाई दे तो निराशा मिलेगी ही। क्रोधकी वजहसे पाण्डु रोग, क्रोधके कारण शूलका दर्द (ब्राई, स्टैफि, कोलोसिन्थ) वगैरहमें इससे विशेष लाभ हुआ करता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—चित्तकी प्रसन्नता इसका विरुद्ध लक्षण है। निद्राका आवेश रहनेपर भी नींद नहीं आती। क्रोध पैदा करनेवाला आँतोंका शूल। दाँतमें दर्द,—गर्म चीज़ मुँहमें रखनेसे ही दर्द बढ़ जाता है। तीती और खट्टी कै के साथ पाकाशयका शूल; बच्चेको गोदमें लेकर घूमनेपर तब कहीं शान्त होता है। उदरामय,—मल हरे रंगका पानीकी तरह, गर्म, त्वचाको क्षय करनेवाला, सफेद रंगकी बालू मिला, सड़े अण्डेकी तरह गन्धवाला। वायुनलीके निचले अंशमें खुजली पैदा करनेवाला, सखापन; छाती फाड़नेवाली खाँसी; बहुत थोड़ा कफ निकलता है; एक गाल लाल और दूसरा गाल मलिन; रातमें खाँसी, कफ गाढ़ा लसदार और कड़वे-स्वादवाला; पशुका या पँजरेके नीचे नोकदार शलाका वेधनेकी तरह दर्द; ऋतु-स्राव बहुत ज्यादा, थक्का थक्का काला और खून मिला—आक्षेपिक और प्रसव वेदनाकी तरह दर्द पैदा करनेवाला,—बाधक।

लक्षणावली।

मन।—बच्चा जो चाहता है, वह न मिलनेपर भी रिरियाया (रोना) करता है; कुछ देनेपर लेना नहीं चाहता या फेंक देता है (ब्राई, स्टैफ; कोई बात करनेसे रोता है—साइलिसिया; शरीरपर हाथ लगानेसे रोता है—सिना; ऐण्टि-टार्ट, और उसकी ओर देखता है या घूरता है, तो जल उठता है—ऐण्टि-क्रूड), केवल गोदमें लेकर घूमनेपर चुप रहता है (ऐण्टिम-टार्ट, ऐसिड-बैन,—बच्चा गोदमें रहना चाहता है परन्तु उसमें उसकी तकलीफ नहीं घटती—सिना)। अधीर,—सभी विषयोंमें जल्दबाजी—सभी विषयोंमें घबराया-सा (ब्यूफो, क्रोटेल-होर, इग्ने, मिडोराइन, नक्स, फ्यूलेक्स, पल्स, रियुम, ऐसिड-सल्फ, सैफ,) बहुत खीखलाया या एक तरफा क्रोधित,—दर्द आदि असह्य मालूम करता है,—थोड़े-से दर्दमें भी पागल जैसा हो जाता है, (काफि, ऐको); एकाएक क्रोधित हो जाता है,—मीठी बात तो बोलना ही नहीं जानता। रातमें उसे ऐसा मालूम होता है मानो वह अनुपस्थित या मृत व्यक्तिकी आवाज़ सुन रहा है (ऐनाक, इलैप्स, स्ट्रान)। यदि कोई उसके पास आता है और बैठता है तो उसे असह्य मालूम होता है। बहुत चिड़चिड़ा,—

बात करता है तो चिढ़ उठता है। (ऐसिड-क्रूड, आयोड, नेट्र-सल्फ, साइलिसिया)। बोलना पसन्द नहीं करता (ऐमोन-म्यूर, ऐण्टि-क्रू, आर्जेण्ट-नाइट्र, सिड्रो, इग्ने, मैग-कार्ब, आस्थाफाइटोप, स्टैन, वेरेट); ऋतुके समय चिड़चिड़ा, जिद्दी और कलहप्रिय, दूसरा कोई जो कुछ कहता है, उसे वही बुरा मालूम होता है मानो कोई उसे सन्तुष्ट करनेकी चेष्टा न करे। सभी विषयोंमें उसे क्रोध रहता है (ब्राई, हिप, केलि-कार्ब, लाइकोपो)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—भोजनके बाद (कोराल, लैके, नक्स, पल्स), इसके साथ ही मूर्च्छा होनेका उपक्रम। (कोक, लैके, मस्कस, नक्स)। सवेरे शय्यासे उठनेपर मतवालोंकी तरह ढलमलाया करता है (आर्ज-नाइ, जैल्सि, पल्स, नक्स)। सोनेके बाद सरमें चक्कर आना (सोनेके समय=कैलेड, कोना)। टपक जैसा सर दर्द,—साधारणतः एक पार्श्वमें (ग्लोन)—ऐसा मालूम होता है, मानो रोगवाला अंश कोई अँगुलीसे दबा रहा है;—रोगी अकसर माथा पीछेकी ओर झुकाये रहता है (माथा पीछेकी ओर झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है=ग्लोन)। गर्म वस्त्र आदिसे माथा ढके रहनेपर और टहलते समय घटना। निद्रावस्थामें भी दर्द मालूम होता है। काफी या चाय पीनेकी वजहसे सरमें दर्द। माथेमें गर्म लसदार पसीना होता है (ललाटमें ठण्डा पसीना=ऐण्टि-टार्ट, वेरेट)। मूर्द्धादेशमें तेज दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो कोई भीतरसे ऊपरकी ओर धक्का दे रहा है। ऐसा मालूम होता है, मानो खोपड़ी उड़ जायगी (ऐक्टिया, बेप, कोबाल्ट, नेट्र-म्यू, इयुफ्रा),—पहले दर्द थोड़ा होता है, पर इस विषयको सोचनेसे ही दर्द बढ़ जाता है (बेराइ, कैल्के-फास, कास्टि, हेलोन, मिडोराइन, ऐसिड-आक्सेलिक, पेट्रोल); दर्दका विषय सोचनेपर घटना (साइक्लेम)। एकाएक माथा झुकानेपर, पर पढ़ने या अन्य मानसिक परिश्रम करनेपर भी बढ़ जाता है।

आंख।—आँखोंका प्रदाह,—सवेरे दोनो आँखें सट जाती हैं (पैक, युफ्रे), जलीय तर हवा लगनेकी वजहसे या एकाएक हवा ठण्डी हो जानेपर। आँखके भीतर पीला रङ्ग (चेलिडोन, कैल्के-कार्ब, कैन्थ)। आँखमें जलन करनेवाला उत्ताप मालूम होता है (करकराता है, मानो बालूके कण गिर गये हों= कास्टि, युफ्रे; मानो नमक गिर गया है=नक्स)। पलकोंका फड़कना (ओपि, ऐगार)। आँखसे खून जाना (कार्बो-वेज)।

कान ।—कानमें दर्द,—इसके साथ ही सुई बेधने और छेदनेकी तरह दर्द=मार्क, नेट्र-म्यूर; तीव्र दर्द=पल्स; कड़ाकसे आवाज होती है=कैलि-कार्ब; चबानेके समय कड़ाकसे आवाज होती है=ग्रैफ, नेट्र-म्यूर)। कर्णमूल ग्रन्थिकी सूजन और कानमें उत्ताप मालूम होना वगैरह; कानका दर्द:—दर्दसे रोगी पागल हो उठता है (कफि, ऐको)। कानका छेद रुका मालूम होता है, कानमें ठण्डी हवा सहन नहीं होती।

मुखमण्डल और मुखविवर ।—एक गाल लाल और गर्म और दूसरा गाल मलिन और ठण्डा। मुँहका स्नायु-शूल, हनुमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, यह उरु और दाँत तक फैल जाता है और यन्त्रणाके कारण माथेसे गर्म पसीना निकला करता है तथा तकलीफसे रोगी चिल्लाया करता है। दाँतमें दर्द,—कोई गर्म चीज मुँहमें लेते ही दन्तशूल या दाँत का दर्द बढ़ जाता है (बिस्मथ, ब्राई, काफि; गर्म घरमें प्रवेश करने पर=फास; शय्यापर सोनेके समय=ऐण्टि-क्रूड, मार्क, पल्स); काफी पीने पर (बेल, कक्यु, इग्ने, नक्स; चाय पीनेपर=सिङ्को, काफि, इग्ने, लैके); ऋतुके समय (कैल्के, कार्बो-वेज, नेट्र-म्यू, लैके, फास या गर्भावस्थामें=ऐपिस, ब्राई, बेल, कैल्के, हायो, मार्क, नक्स-मस,नक्स-वोम, पल्स, रास, स्टैफ)। बाईं ओरकी निचली दाँतोंकी पाटीमें दर्द अधिक मालूम होता है (आर्नि, कार्बो-वेज, कास्टि, सिङ्को, हायो, मार्क, रास, साइलि, सल्फ)। दर्दवाले दाँत बड़े मालूम होते हैं (ब्राई, कास्टि, सल्फ, लैके, नेट्र-म्यू)। मुँहसे बदबू निकलती है। प्यासके साथ मुँहका भीतरी भाग और जीभ सूखी (ऐसिड-नाई, रास; मुँह और जीभ सूखी पर प्यासकी कमी=बेल, नक्स-मस); जीभसफेद या पीला लेप या बीचका स्थान लाल, दोनों किनारे सफेद या लाल और कटे फटे (बेल, रास); या बीचमें लाल सीमाबद्ध दाग दाग जैसा सफेद रंगका लेप (लैके, नेट्र-म्यू, टैरेक्स, रेनान); कोमल तालु और दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियां गाढ़ी लाल रंगकी और प्रदाह-भरी (ऐको, बेल,)। कण्ठनालीमें मानो एक बतौड़ी निकल आयी है, ऐसा मालूम होना (इग्ने, नक्स,)। मानो एक गर्म लोहेका गोला गलेके भीतर है (फाइटो; गलेके भीतर मानो एक काठकी सलाई बिंध रही है=आर्जेण्ट-नाइ, डलिकस, हिप, ऐसिड-नाइट्रि); कानकी जड़की ओर हनुकी तलीकी ग्रन्थियोंका सूजना (ऐमोन-कार्ब, बैराइ कैमो, कालो-कार्ब, मार्क, ऐसिड-नाई, रास, साइलिसिया)। रातमें मुँहसे लार बहना (नक्स, रास)।

पाकस्थली और अन्त्राशय ।—आहारसे अरुचि (रास ; जेशिट-याना-लूटिया)। ठण्डा पानी पीनेका बहुत अधिक आग्रह। सवेरे मुंहका स्वाद तीता (पल्स)। तीता पित्तमय वमन (हरे रंगका माँड़की तरह श्लेष्मा के करना=इपिक ; काला पित्त और रक्त वमन=वेरेट)। बच्चोंका अंत्र-शूल—इसके साथ ही क्रोध ; इसके साथही गर्म गाल और माथेमें गर्म पसीना (स्टैफि, कोली)—उदर, वायुसे फूला, थोड़ा थोड़ा वायु निकलता है पर उससे आराम नहीं मिलता : पेटपर गर्म कपड़ा रखनेपर घटता है पर बच्चा तकलीफसे छट-पटाया करता है, पर कोलोसिन्थकी तरह सामनेकी ओर झुक नहीं जाता या टेढ़ा नहीं पड़ जाता ; यदि कैमो और कोलो दोनो ही से लाभ न हो तो मैग्नेशिया-फासका प्रयोग करना चाहिये। नाभीके कुछ ऊपर और उदरकी दाहिने पार्श्वसे लेकर बाएं पार्श्वतक दर्द फैल जाता है (लाइको ; बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलता है=लैके)। पाकस्थलीमें दबाव मालूम होता है,—मानो वहाँ पत्थरका एक टुकड़ा दबा है (ब्राई, आर्स, पल्स, नक्स ; मानो एक अधसिझा अण्डा वहां अड़ा हुआ है=ऐबोज-नाइग्रा)। पाकस्थलीमें ठण्डक मालूम होना (कोलचि, सल्फ)। पुट्ठेमें बहुत दबाव मालूम होना—मानो आंत उतर आयगी (लाइकोपो, नक्स देखो) गलेमें अम्ल चढ़ आता है और खायी हुई चीजें भी डकारके साथ चली आती हैं।

मलाम्ब ।—सर्दी लग जानेके कारण, क्रोध या चिड़चिड़ेपनकी कारण अथवा दांत निकलनेके समय पतले दस्त आना (कैल्के, कोलो, डालका, मार्क, पोडो, सलफर, एरण्डो) ; तम्बाकू खानेसे ; प्रसवके बाद और ऊँची जगहसे उतरनेके कारण उदरामय पैदा हो जाना (ब्रोकैक्स ; सैनिकुला)। मल हरे रंगका, पानीकी तरह, त्वचाको क्षय करनेवाला, तरकारीके चूर, अण्डेके रसकी तरह गर्म, बहुत बदबूदार, सड़े अण्डेकी तरह गन्ध=सोराइन ; पीले रङ्गका आलू-भरा और सड़ी गन्ध भरा=पोडो ; सड़ी तलैयाकी काईकी तरह=मैग-कार्ब) ; इसके साथ ही पेटमें दर्द (आर्स, मार्क, सल्फ)। अर्शके साथ मलद्वार फटना।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रदर,—स्राव पीले रंगका,जलन पैदा करनेवाला; योनिमें जलन और चारों ओरकी खाल उधड़ जाना (सलफर)। बाधक,—प्रसवके दर्दकी तरह दर्द ; काला थक्का थक्का खून मिला स्राव,—इसके साथ ही पैरमें छिदनेकी तरह दर्द (ऐक्टिया, ऐलो) ; जरायुसे खूनका स्राव—थक्का थक्का

बदबूदार खून निकला करता है। बहुत जोरका नकली दर्द; रोगिनीको यह दर्द असह्य मालूम होता है। स्तन फूले और कड़े हो जाते हैं, (स्तन-सूख जाते हैं = आयोड ; सेवाल-सेरूलेटा) बहुत दिनों तक स्थायी प्रसवका दर्द,—दर्द ऊपरकी ओर फैलता है (जैल्स)। प्रसवके बादका अन्त्रावरण प्रदाह (ऐको, बेल, ब्राई),—इसके साथ ही अत्यन्त उत्ताप, मानसिक अस्थिरता और मूर्च्छित हो जानेका उपक्रम हो जाता है, गाल लाल या एक गाल लाल और दूसरा मलिन और प्रदाह भरा ; झिल्लियोंमें पीव पैदा हो जानेका लक्षण (एकिनेशिया, मार्क-सोल, लैके, पाइरोजेन)। स्तन पिलानेवाली बच्चोंकी माताओंके स्तनमें दर्द हो जाता है (हेलोन, फाइटो) ; बच्चोंके स्तन प्रदेशमें दर्द। स्तनका दूध सोतेकी तरह निकलता है (बच्चेको स्तन छुड़ा देने बाद ही ऐसा होनेपर = कोना)। जननी या धात्री या किसीपर भी अत्यन्त क्रोध करनेके बाद दाँत निकलते हुए बच्चेको अकड़न हो जाती है (नक्स ; माताके डर जाने बाद बच्चेको स्तन पिलानेपर बच्चेको अकड़न होती है = ओपि)—बच्चा दोनो पैर ऊपर नीचे फेंका करता है, अपने छोटे हाथोंसे कुछ पकड़नेकी चेष्टा करता है, मुँह एक ओरसे दूसरी ओरतक खिंचा करता है और आँखोंमें टकटकी लगी रहती है।

श्वास-यंत्र ।—सर्दीकी वजहसे स्वरभङ्ग। वायुनलीमें श्लेष्मा घड़ घड़ शब्द किया करता है। इसके साथ ही खाँसी और स्वरभङ्ग (इपिका देखो)। बच्चों की सूखी और खुजलानेवाली खाँसी,—रातके समय—यहाँतक कि निद्रितावस्था में ही खाँसी आती है। छातीमें जलन (लैके ; सर्दी मालूम होना = आर्स, सल्फ) वक्षमें सुई या तेज शलाका बेधनेकी तरह तकलीफ,—रोगी तकलीफसे चिल्ला उठता है ; श्वास-कृच्छ्रता,—स्वर और श्वास-रोध होनेका उपक्रम। वक्षमें श्लेष्मा रहनेकी वजहसे घड़ घड़ शब्द (वायुनली भुजके भीतर = इपिक ; वक्षके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो श्लेष्मा भरा हुआ है = इपिक, ऐण्टि-टार्ट)। दिनमें स्वादमें तीता बलगम निकलता है, रातमें शायद ही कभी निकलता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—रातमें भयानक वात वेदनाकी वजहसे रोगी शय्यासे उठकर टहलने लगता है (रस)। दर्द असह्य हो जाता है, और ऐसा मालूम होता है, मानो पागल हो जायगा। गर्म प्रयोगसे और सन्ध्यासे आधीरातके पहले तक दर्द बढ़ता है। ज्वर, प्यास और उसके साथ ही साथ सुस्ती ; रोग वाला अंग सुन्न हो जाता है। डकार आनेपर बढ़ना। रातमें तलवेमें जलन

होती है, आराम मिलनेकी आशामें रोगी अपना पैर शय्यासे बाहर निकाल देता है। (मिडोराइन, पल्स, सल्फ)।

ज्वर।—बहुत शीत मालूम होना, मानो शरीरपर किसीने बरफका पानी ढाल दिया है और दाँत कड़कड़ाते हैं। उत्तापावस्था बहुत देरतक स्थायी रहती है; बहुत प्यास और निद्रित अवस्थामें बार बार चौंक उठता है। शीतकी वजहसे कम्पन और उत्ताप मिला हुआ भाव प्रकट करता है और ज्वरकी अवस्थामें एक गाल लाल और दूसरा म्लान या उतरा हुआ रंग दिखाई देता है। शरीर ठण्डा और चेहरेमें जलन और गर्मी रहती है (आर्नि)। माथा और मुखमण्डलपर गर्म पसीना हुआ करता है और शरीरके ढके हुए अंशमें बहुत पसीना होता है (चायना)।

निद्रा।—निद्राका आवेश होता है, पर नींद नहीं आती (बेल, कास्टि, ओपि)। निद्रित अवस्थामें लगातार कष्ट सूचक शब्द (कराहना) या रोया करता है। सोते समय आँखें अधमुंदी रहती हैं और डरावने सपने देखा करता है।

सम्बन्ध—सदृश।—बच्चोंकी बीमारीमें अफीम और उसके सतसे तैयारकी हुई दवाओंका अपव्यवहार होनेपर कैमोमिला विशेष रूपसे फायदा करता है। चोटकी वजहसे जखम हो जाये और उसमें पीव पैदा होनेका लक्षण दिखाई दे तो कैमोमिलाके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे बहुत लाभ होता है। *सदृश गुणवाली और अनुपूरक,—बेलेडोना। करोटीके अन्तर्गत स्नायुके रोगमें* जिस तरह बेलाडोना लाभदायक है, उदरमें स्नायु विकार हो जानेपर उसी तरह कैमोमिला उपयोगी है।

तुलनीय।—दाँत निकलनेके समय, बेलाडो, केल्के; चेतनाकी अधिकता,—ऐकोन, काफिया; दाँतके दर्दमें—मार्क; अम्लमें—नक्स; उदर आध्मानमें—चायना; लारके स्रावमें—नक्स, फास।

दोषघ्न।—ऐकोन, ऐलो, बोरेक्स, काकु, काफि, कोलो, कोनायम, इग्ने, नक्स, पल्स।

शक्ति।—३ रा दशमिक से १२ वाँ और ३० शततमिक क्रम। डा० सरकारके और मैडमके मतसे बच्चोंकी बीमारीमें १२ शततमिक क्रम विशेष उपयोगी है।

चैपारो ऐमार्गोजो ।

(CHAPARRO AMORGOSO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—डण्ठलसे टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार ; रक्तामाशय इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसकी क्रिया नैट्रम-सल्फ्यूरिकमकी तरह है । पुराने उदरामय और आमरक्त रोगमें, यकृत प्रदेशमें दर्द और स्पर्श सहन न हो सकना, मौजूद रहता है—इन लक्षणोंमें यह बहुत उपकारी है । पाखाना होनेके समय विशेष दर्द आदि नहीं रहता पर मलके साथ ज्यादा आम निकला करती है ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—बोलिटस ; नैट्रम-सल्फ ; चीड़न ; मार्क-कोर ; ऐसिड-नाई ; कैप्सि ; नक्स ।

शक्ति ।—मूल अर्क या १ ला दशमिक क्रम ।

चेईरैन्थस चेइरि ।

(CHEIRANTHUS CHAERI)

दूसरा नाम ।—कामन वाल-फ्लावर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया और आभास ।—अरिष्ट ।

उपयोगिता ।—बुद्धि-दन्त निकलनेके समय बहरापन, कानमें पीब प्रभृति उपसर्गकी एक उत्कृष्ट दवा है । बुद्धि-दन्त निकलनेके, समय यंत्रणा, नींदमें नाक बन्द हो जाना इसका निर्देशक लक्षण है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सैंग-कार्ब, ऐग्ना, सिनापिस, रैफेनस, ब्रैसिकी, फेरम-पिक्रि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

चेलिडोनियम मेजस।
(CHELIDONIUM MAJUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़के साथ समूचे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी बन सकता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—गण्डास्थि (गालकी हड्डी) के भीतरी प्रदेशमें प्रदाह; कर्कटका जखम; वक्षकी बीमारियां; ताण्डव; कब्जियत; खांसी; अतिसार; अजीर्ण; पित्ताश्मरी (पित्त-पथरी); प्रमेह; खून मिली खांसी (रक्तोत्कास); अर्श; सरमें चक्कर आना; बहुव्यापक सर्दी; कामला; आंखके किनारेका नासूर; यकृतकी बीमारियां; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह; स्नायुशूल; नाकसे रक्तस्राव; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह; वात; ग्रन्थिवात; गर्दनकी अकड़न; स्वादका विकार; अर्बुद; मसे; हुप-खांसी; जम्हाई आना इत्यादि।

उपयोगिता।—डा० ऐलेन कहते हैं—सफेद, पतले, क्रोधी मनुष्यकी बीमारीमें, यकृत और पाकाशयकी बीमारीमें उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास।—यकृत, फेफड़ा और मूत्रग्रन्थि पर इसकी सबसे अधिक क्रिया होती है और इन सब यन्त्रोंकी बीमारियोंमें लाभके लिये ही चेलिडोनियम एक अमूल्य पदार्थ है। यह यकृतमें असह्य दर्द पैदा करता है और दर्द सामनेकी ओर दाहिने कन्धे तक और पीछे पृष्टफलकके निचले कोनेतक फैल जाया करता है। (केलि-कार्ब,—और भी नीचे और मेरु-दण्डके पास=चिनोपोड; बायें पृष्ठ फलकके नीचे=चिनोपोड, ग्लोनाम, सैङ्ग्विु)। वायु-परिवर्त्तनकी वजहसे या फिरसे हो जानेवाली बीमारीमें यह विशेष लाभदायक है (मार्क); मध्यान्ह भोजनके बाद सभी लक्षण घट जाया करते हैं। रोगीकी समूची देह पीले रङ्गकी, आंखें पीली और जीभ तथा तल-हत्थीतक पीले रङ्गकी हो जाती है, (सिपि); दाहिनी आंख, दाहिना फेफड़ा, दाहिना कोष और दोनो ही पार्श्व; दाहिना उरु और दाहिना पैर—वगैरह शरीरके दाहिने अंशोंपर इसका प्रधान आक्रमण हुआ करता है। दाहिना पैर बरफकी तरह ठण्डा, पर बायें पैरका उत्ताप स्वाभाविक अवस्थामें रहता है।

(लाइकोपो) यहाँ इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण संक्षेपमें लिखे जाते हैं:— (१) जीभका रङ्ग पीला, जीभ बड़ी, भलती हुई और उसपर दाँतके दाग उठे रहते हैं; मुँहका स्वाद कड़वा; गर्म चीजें आदि खाना पीना अच्छा समझता है। (२) सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही सामनेकी ओर गिर जानेका लक्षण। (३) चेहरेके आँखके गोलेके ऊपरी भागमें स्नायुशूल, यह कभी कभी पैदा हो जाता है। आंखसे बहुत ज्यादा आंसू बहा करता है, दर्द काटनेकी तरह होता है। (४) शरीरकी त्वचा गहरे पीले रङ्गकी नहीं रहती, विशेषकर नाक और दोनो गाल। (५) दाहिने अंश फलक (Scapula) के नीचे आभ्यन्तरिक (अर्थात मेरुदण्डके पासके) कोनेमें बराबर दर्द बना रहता है। पाकस्थलीसे दाहिने अंश फलकतक दर्द, भोजनके बाद घटना। (६) कामला या पीत पाण्डुरोग अधिकारमें दाहिने कन्धेमें दर्द। (७) पित्ताश्मरी, इसके साथ ही दाहिने कन्धेके नीचे दर्द। (८) मलका पतलापन,—मल सोनेकी तरह पीला; लसदार पानीकी तरह, सफेद या भूरे रङ्गका। (९) मलमें कड़ापन, छोटे छोटे काले रङ्गके गांठ गांठ गोल मल भेड़के मलकी तरह या कब्जियत और अतिसार पर्यायक्रमसे पैदा हो जाते हैं। तेज और छोटा श्वास प्रश्वास, दीर्घ श्वास प्रश्वासमें वक्षमें दर्द होता है। वक्षके दाहिने पार्श्वमें दर्द मालूम होता है। (१०) खांसी तरल श्लेष्मा व्यञ्जक, घड़ घड़ शब्द करनेवाली और दीर्घ प्रकोपयुक्त। क्षुप-खाँसी। (११) शरीरकी त्वचा सिकुड़ी; बहुत दिनोंतक फैलनेवाले बदबूदार जखम आदि; छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलना; यकृतके विकारके साथ पुराने जखम। (१२) वायुके परिवर्त्तनसे पैदा हुई बीमारियाँ; सन्ध्याके भोजनके बाद सभी यन्त्रणाएँ घट जाती हैं।

लक्षणावली।

मन।—रोगी, विमर्ष; रोना (ऐक्टिया, साइक्लेम, इग्ने, लैके-कैन, लिल-टाइ, लाई, नेट्र-म्यू, पल्स, सिपि, स्टैन.); परन्तु वह क्यों इतना दुःखित है और रूलाई आ रही है, यह वह नहीं जानता। बहुत अनमना (ऐमोन-कार्ब, बोवि, कास्टि, कैलि-ब्रोम, लैके-कैन, नक्स-मस, साइलिसिया)। अब क्या करना होगा या इसके पहले क्या करता था, यह वह स्मरण नहीं कर सकता। डरता है कि कहीं उसकी बुद्धिमें विकार न पैदा हो जाये=ऐल्म्, क्रोल्क, ऐक्टिया, लैके-कैन, मिडोराइन; नक्स, सिफिलाइन]। शङ्कान्वित चित्त,

(सन्देही)—मानो उसने न जाने कितना अपराध किया है [भार्ज, सिना, नक्स, रियुटा, वेरेट, जिङ्कम]।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—इसके साथ ही पित्त वमन और यकृत में दर्द; मस्तिष्ककी आच्छन्नावस्था, शरीर ढलमलाया करता है, मानो सामनेकी ओर गिर जानेका उपक्रम [आर्निका, काडुअस, कार्बो, लाइको, फेरम ऐसेट, माई, नेड्ज-मूर, रैनान, राष, साइलिसिया]। ललाटमें और दाहिनी ओर पीसनेकी तरह दर्द; दोनों आखोंका ऊपरी अंश, ललाट या कनपटीमें मानो एक बन्धन है, ऐसा मालूम होना [ऐनाक, ऐण्टि-टार्ट, वार्बो, ऐकुई, बेप, कैक्ट, ऐसिड-कार्ब, इथ्यू, मार्क, सल्फ, थिरिडि] आँख बन्द करनेपर घट जाता है। माथेके पिछले भागमें इतना भार होता है, कि रातमें तकियेसे सर नहीं उठा सकता या उठानेमें कष्ट होता है [ऐगार, एपिस, कैनाब-सैट]। गर्दनके पीछेसे लेकर सरके पिछले भागतक बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना। सारा शरीर सुन्न मालूम होना, इसके साथ ही आलस्य और औंघाई। दाहिने पार्श्वमें सरमें दर्द,—दर्द कानके पीछेसे दाहिने पृष्ठ-फलक तक फैल जाता है। दाहिनी ओरके अक्षिगोलकके ऊपरी भागमें स्नायुशूल,—गण्डास्थि और कानतक यह दर्द फैला हुआ मालूम होता है और बहुत ज्यादा आंसू बहा करता है [राष]; दर्द आरम्भ होनेके पहले यकृत प्रदेशमें दर्द मालूम होता है [आँसू गिरनेके साथ बाएँ पार्श्वगत स्नायुशूल=स्पाइजि, ललाट पीले रंगका]।

आँख।—आँखके सफेद अंशका गाढ़ा पीला रंग। दृष्टिके सामनेकी सब चीजें मानो काँपती रहती हैं और कभी कभी आँखके सामने चमकीले उड़ते हुए बिन्दु सब दिखाई देते हैं। आँख हिलाने या ऊपरकी ओर देखनेसे आँखमें दर्द मालूम होता है। आँखके उपरी भागमें स्नायुशूलकी वजहसे आँख से बड़े वेगसे आँसू निकलता है [राष]; जाड़ा मालूम होनेके साथ ही साथ आँख या उसके ऊपरी भागके स्नायुशूलमें यदि वह शूल प्रत्येक बार एक ही समय पैदा होता है तो चिनिनम-म्यूरियेटिकमका प्रयोग करना चाहिये।

कान।—दाहिनी गण्डास्थिसे कानतक छिदनेकी तरह दर्द। ऐसा मालूम होता है मानो दोनों कानोंसे बड़े वेगसे वायु निकलता है [स्ट्रैमो]—रोगी अपनी बेचैनी मिटानेके लिये बार बार कानमें अंगुली डालकर पथ-रोध किया करता है। कानमें गरजकी ऊँची आवाज,—मानो कहीं दूरसे वज्रपात आदिकी आवाज आ रही है।

नाक ।—दोनों नासा-पुट लगातार सिकुड़ते और फैलते रहते हैं। [ऐण्टि-टार्ट]। नाक पीली आभा लिये [सिपि]।

मुख-मण्डल ।—चेहरा बहुत पीला, विशेषकर ललाट देश, दोनों गाल और नाक, चेहरेकी स्वाभाविक लाली गाढ़े पीले रंगकी मालूम होती है।

मुख-विवर ।—जीभका रङ्ग गाढ़ा पीला और उसपर दाँतके दाग रहते हैं [पोडो, ऐड्रोप, ग्लोन, हाइड्रैस, मार्क-प्रोटो-आयोड, रोडो, रास, सेङ्गियु, वाइवर्न]; मुंहका स्वाद तीता [आर्नि, ब्राई, कैलि-कार्ब,पल्स] और लसदार कभी अम्लाक्त (खट्टा) [कोल्को, सिङ्को, नक्स, सिपि)। मुंहसे बहुत बदबू निकलती है (आयोड, कैलि-नाइट्रि, मार्क-वाई, पल्स, सिपि ; पियाजकी गन्ध (पेट्रोल)।

पाकाशय ।—गर्म चीज पीने और खानेकी इच्छा (कैक्टरिला, क्यूप्रम); खूब गर्म हुए बिना पानी पेटमें नहीं रहता (आर्स, कोस्कारि) ; खट्टी चीजें खानेकी बहुत रुचि (ऐण्टि-क्रूड, आर्स, ब्राई, कैमो, हिप, फास, पल्स, स्किला, स्ट्राम, सल्फ, वेरेट)। मिचली और तीता वमन ; गर्म पानी पीनेपर बन्द हो जाता है। पेटके ऊपरी प्रदेशमें या पेटके ऊपरकी ओर तेज शलाका वेधनेकी तरह दर्द, शरीरको भेदकर पीठ और दाहिने कन्धे तक फैल जाता है, मुंहका स्वाद तीता रहता है परन्तु खाने पीनेके समय स्वाद स्वाभाविक मालूम होता है। यकृतके विकारके साथ शूलका दर्द,—भोजनके बाद कुछ घट जाना (ऐनाक, ग्राफ, पेट्रोल)।

अन्नाशय ।—नाभिके भीतरसे उदरके पार्श्व-भागसे दूसरे पार्श्व भागतक तेज दर्द,—ऐसा मालूम होना मानो पेट चिपक गया है। ऐसा मालूम होता है, मानो नाभी एकाएक भीतरकी ओर खिंच रही है (बेल, प्रम्बम, वार्बस्क), यकृतका आकार बढ़ा हुआ और उसमें थोड़ा या बहुत तेज दर्द, यकृतमें स्पर्श सहन नहीं होता ; यकृत प्रदेशमें दर्दके साथ दाहिने पार्श्वके पंजरे में और दाहिने पृष्ठ-फलकके भीतर नीचेकी ओरके कोनेमें लगातार दर्द मालूम होना। (कैलि-कार्ब, मार्क ; वाम पृष्ठ-फलकके नीचे = चिनपोडियाई-ग्लोकाई, सेङ्गियु); दाहिने मसाने—मूलग्रन्थि या यकृतमें तेज दर्द,—दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक बढ़ना। पित्ताश्मरीको वजहसे शूलका दर्द (कार्डुयस-मेरि, कोल्को-कार्ब, और हाइड्रैस देखो)। पेट फूला हुआ। मैबा या पाण्डुरोग (मार्क, केमो)।

मलान्त्र।—कब्जियत,—मल कड़ा गोल गांठ गांठ,—भेंडके मलकी तरह (ओपि, प्लम्ब); पर्यायक्रमसे पतला और कड़ा मल निकला करता है (ऐब्रोट, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, आयोड, लेके, लैक्टियुका कैलि-बाई, नक्स, रास, रियुटा, ऐण्टि-टार्ट)। उदरामय,—रातके समय, लेईकी तरह रंग फीका, कभी कभी कीचकी तरह (कैल्के-आयोड, हिप)। कभी गाढ़ा चमकीला पीले रङ्गका, (ऐपिस, ऐसिड-फ्लू, सिङ्को, क्रोटे, हिप, पोडो; भूरा या सफेद रङ्ग, पानीकी तरह और मांड़ जैसा लसदार; अनजानमें निकलता है; कभी कभी खूब सफेद रंगका पाखाना होता है।

पेशाब।—बहुत ज्यादा सफेद आभा लिये, फेन फेन निकलता है। पेशाब निकलनेके समय गदला और फीके रङ्गका होता है,—मूत्रके वर्त्तनके किनारे किनारे फेन (चिनोपोड) जमा रहता। मूत्रका रङ्ग सोनेकी तरह (डेफनी, चिनोपोड, हायो) और बिछावनकी चादरमें पीले रंगका दाग पड़ता है।

श्वास-यंत्र।—बार बार जम्हाई लेता है और प्रत्यङ्गोंको फैलाता है (अंगड़ाई लेता है), मानो कितनी ही रातें उसने जागकर बितायी हैं। वंक्षोस्थिके निचले भागके तलदेशमें क्षण भरके लिये दर्द पैदा हो जाता है और इसी कारणसे रोगी रातमें जाग पड़ता है। यह दर्द दोनों वायुनलीभुजतक फैल जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो वायु-नली सब संकुचित हो गयी हैं। बहुत तेजीसे अथच सावधानीसे श्वास लेता है,—लम्बी सांस खींचनेपर छातीके दाहिने पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। श्वास-कृच्छ्रता। क्षुप खांसी,—सूखी और रह रहकर शरीरको हिला देनेवाली खांसी,—खांसने पर मुंहके भीतरसे छोटे छोटे श्लेष्माके टुकड़े बड़े वेगसे बाहर निकलते हैं (बैडि, कैलि-कार्ब),—भोजनके बाद शय्यामें बैठे रहनेके समय बढ़ जाता है। वायुनलीमें श्लेष्मा घड़घड़ाता है, परन्तु सहजमें निकलता नहीं है। साधारण श्वास प्रश्वासके साथ दाहिने वक्ष और दाहिने कन्धेमें दर्दका बढ़ जाना। दाहिने फेफड़ेके प्रदाहके साथ यकृतकी बीमारी (मार्क),—चलनेके समय और ऊंचे पर चढ़नेके समय हांफने लगता है। यकृतका बढ़ना।

प्रत्यङ्ग आदि।—दाहिने हाथकी कलाई पकड़ी मालूम होती है। दाहिने कन्धेमें दर्द। अँगुलीके अगले भागमें छेदनेकी तरह दर्द। पुट्ठा, उरु और निचले पैरमें मानो खींचन मालूम होती है,—दाहिने अङ्गमें अधिक।

दाहिने जानुमें जलन और अकड़न,—हिलानेसे बढ़ना । गुल्फ-सन्धि अकड़ी मालूम होती है, । हाथ पैरोंमें भार, अकड़न और सुन्नपन मालूम होता है,—मानो पक्षाघात हो गया है ; बहुत सर्दी मालूम होती है । प्रत्यङ्गोंमें वातको दर्द होता है,—ज़रा छू देनेसे ही तेज़ दर्द मालूम होता है । पसीना होता है पर उससे घटता नहीं हैं । निचले प्रत्यङ्ग आदि प्राय: पक्षाघात ग्रस्त रहते हैं, इसके साथ ही पेशियोंकी अकड़न । गुल्फ-स्थानमें बहुत दर्द,—जैसा मानो बहुत संकीर्ण हो गया है और एंडीमें छेद हो रहा है ।

शरीरकी त्वचा ।—रङ्ग सफेद, हलकी पीले रङ्गको और सिकुड़ी हुई ; तलहत्थी पीली और त्वचा सिकुड़ी हुई (सिपि) । चेहरा ललाट-देश नाक और गाल पीले । यक्रतमें विकार या क्षय रोग प्रधान धातुकी वजहसे बहुत दिनोंके सड़नेवाले और फैलनेवाले जखम इत्यादि ।

निद्रा ।—औंघाई, हमेशा सोये रहनेकी इच्छा और सोया रहना पसन्द करता है, पर नींद नहीं आती । मृत देह (ऐनाक, आर्स, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, मैग-फास, ऐसिड-फास, थूजा) और मुर्दा फूँकनेका सपना देखता है ।

वृद्धि ।—दाहिने अङ्गमें ; सवेरे सीढ़ी चढ़नेके समय ।

उपशम ।—भोजन करनेके समय ; सन्ध्याके बाद ; गर्म पतली चीजें पीनेपर और रोगवाली जगह दबाने या मलने पर ।

दोषघ्न ।—ऐकोन, काफिया, कैम्फर, खट्टी चीजें और शराब ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐको, आर्स, ब्राई, लाइको, मार्क, नक्स, पोडो सैङ्गियु, सिपि, सलफर ।

तुलनीय ।—स्कन्ध-फलकके दर्दमें– जुगलेन्स, चिनोपो, रैनानकु, ब्रायो-निया, लाइकोपो ।

अनुपूरक ।—मार्कु, पित्त विकारयुक्त फेफड़ेका प्रदाह ; कैलि-कार्ब ; कार्बो-वेनि (प्रदर इत्यादि) **अनुपूरक**=ब्राई, लाई, सलफर । यक्रतके विकार के रोगमें ब्रायोनियाका अपव्यवहार या अतिव्यवहार होनेपर चेलिडोनियम उसका दोष नष्ट कर देता है । चेलिडोनियमसे उत्पन्न लक्षण आदिकी वृद्धि होने पर, वह एक्रोनाइटसे दूर हो जाता है । वात वेदनामें लीडमके व्यवहारके बाद चेलिडोनियमके व्यवहारसे बहुत फायदा होता है । यक्रतके विकारमें चेलिडो-

नियमके बाद प्रायः उपयोगी है। चेलिडोनियमसे फायदा होनेपर, पूरी तरह आरोग्य कर देनेके लिये प्रायः लाइकोपोडियम और सलफर, इन दोनोंमेंसे एक दूसरेकी जरूरत पड़ा करती है।

शक्ति।—मूल अर्क से ६ ठा दशमिक क्रम साधारणतः व्यवहृत हुआ करता है। १२ और ३० शततमिक क्रमसे भी अच्छा फायदा दिखाई देता है।

चिलोन ग्लेब्रा।

(CHELONE GLABRA)

दूसरा नाम।—स्नेक हेड।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— दुर्बलता ; धीमा बोखार ; कामला ; यकृतकी बीमारी ; कुईनाइनका अपव्यवहार ; कृमि।

उपयोगिता और आभास।—यह भी यकृत रोगकी एक नयी आविष्कार की हुई दवा है ; इसकी क्रिया बहुत कुछ चेलिडोनियमकी तरह है ; क्योंकि इसके द्वारा भी यकृतके बाएं पार्श्वमें दर्द उत्पन्न होकर नीचेकी ओर फैल जाता है। शरीरमें बहुत दर्द मालूम होता है,—मानो रोगवाली जगहकी छाल उधड़ गयी है। बहुत कमजोरी। कम्पहीन ज्वर।

सम्बन्ध—तुलनीय।—चायना ; सिना ; हाईड्रेस्टिस ; कार्डुयस इत्यादि। डा० बार्नेट इसके पक्षपाती हैं।

शक्ति।—मूल अर्क।

चिनोपोडियम ऐन्थेल्मिंटिकम।
(CHENOPODIUM ANTHELMINTICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—संन्यास ; दमा ; बहरापन ; आक्षेप ; शोथ ; मृगी ; सर-दर्द ; इसके साथ ही पक्षाघात ; प्रदर ; ऋतु रोध ; पक्षाघात ; कर्ण-पटहका प्रदाह ; कर्णमूल।

उपयोगिता और आभास।—"दाहिने पृष्ठ-फलकके निचले कोनेमें और मेरुदण्डके पास दर्द, यह दर्द शरीरको भेदकर वक्षमें पैदा हो जाता है"—यही चिनोपोडियमका प्रधान सिद्धिप्रद लक्षण है। मध्यकर्णकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें भी यह लाभदायक है। विशेषकर पुराने प्रदाहमें, संन्यास (Apoplexy), स्वरलोप और दाहिने पार्श्वका पक्षाघात—(घड़घड़ शब्द करनेवाले श्वास-प्रश्वासके साथ)—पर इसका विशेष अधिकार है।

मन इत्यादि।—रोना स्वभाव। स्मरण शक्तिकी कमजोरी, सरमें चक्कर आना।

कान।—कानकी भीतरवाली प्रणालीमें खूनके रक्ताम्बु (Serum), निकलना या जमा होना ; मध्यकर्णका पुराना प्रदाह ; धीरे धीरे बढ़नेवाला बहरापन—मानव-स्वरके सम्बन्धमें (फास, सल्फ) ; ऊंचे स्वरसे बोलनेपर अच्छी तरह सुन पाता है और चलती हुई गाड़ीकी आवाज बहुत कष्टकर मालूम होती है ; कानमें भिन्न भिन्न आवाज (कास्टि, ग्रैफ, कोना, नेट्र-म्यू, पलस) ; अपने कानका अस्तित्व स्पष्ट अनुभव हो (जरायुका अस्तित्व ज्ञान—हेलोनि ; हृत्पिण्डका अस्तित्व ज्ञान—पाइरोजेन)। श्रवण विधायक स्नायुकी निष्क्रियता ; जिह्वा-मूलीय ग्रन्थिके बढ़ जानेकी वजहसे बहरापन (आयोड ; कैल्के-फास, ऐसिड-नाइ)।

पीठ और वक्षस्थल।—दाहिने पृष्ठ-फलकके बिचले कोनेमें और मेरुदण्डके पास तेज दर्द ; शरीरको भेदकर वक्षस्थलतक फैल जाता है, बाएं पृष्ठ फलकके भीतरी कोनेसे वक्षस्थल तक दर्द=चिनो-ग्लौकाई। बाएँ वक्षके ऊपरी स्थानसे पृष्ठफलक तक जाता है=मार्टीस-कम, पिक्स-लिक, थिरिड-सल्फ,

दाहिने भिन्न-प्रदेशके भीतरकी राहसे दर्द=चेलिडो, मार्क-ग्राई, कैलि-कार्ब, दाहिने वक्षके ऊपरी अंशके भीतरकी राहसे दर्द—कैल्के आर्स; बाएं कक्षके निचले स्थानपर—मेड्र-सल्फ,बाएं स्तनके नीचे दर्द—ऐक्टिया, आस्ट्रिलेगो। बच्चा यदि स्तन पीता हो तो स्तन-वृन्तसे पीठतक दर्द=क्रोटोन, सिलिका); (रैनानकुलस बालबोसस में बाएं पृष्ट-फलकके भीतरी पार्श्व में दर्द कभी कभी उसके नीचेवाले कोनेतक फैल जाता है और शरीरको भेदकर बाएं वक्षमें आ जाता है। ऐङ्गस्टुरामें दाहिने पृष्ट-फलकके नीचसे दर्द दाहिने स्तनके निकट आ पहुँचता है)।

पेशाब।—पेशाब बहुत ज्यादा और पीला, उसमें फेन पैदा हो जाता है। ऐसा अनुभव होता है, कि भीतरकी त्वचा क्षय हो गयी है। पीले रंगकी तली जमती है (चेलिडो)।

सार्वाङ्गिक।—संन्यासकी वजहसे दाहिने अर्द्धाङ्गका पक्षाघात और बोलनेकी शक्तिका न रहना। (ऐबाक, ऐसिड-आक्सैलिक; श्रवण-शक्ति न रहनेकी वजहसे वाक्-शक्तिका लोप हो जाना=लाई)।

त्वचा।—कामला या नैबा।

सम्बन्ध।—सदृश।—चेलिडो, श्रोपि, ऐसिड आक्सैलिक।

तुलनीय।—एपिस, चेलिडो, (संन्यास) चायना, ओपियम; लाइ-कोपो; बहरापनमें चायना, सल्फ इत्यादि।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

ऐफिस चिनोपोडियाई ग्लौकाई।

(APHIS CHENOPODII GLAUCI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पौधेसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें फायदा करता है:—शूल, सर्दी, खांसी, अतिसार, सरमें दर्द; दांतमें दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान और उत्कृष्ट लक्षण है, बाएं पृष्ठ फलकके भीतरकी ओर निचले कोनेमें दर्द पैदा होकर वक्षःस्थलतक फैल जाना (सैङ्गियुनेरिया ; दाहिने पार्श्वमें=चेलिडो, कैलि-कार्ब, मार्क-बाई; दाहिने पृष्ठ फलक और मेरुदण्डके मध्यके स्थानमें दर्द=चिनो-ऐन्थेल)। आगे लिखे कई इसके निर्णायक लक्षण माने जाते हैं:—नाककी सर्दी, प्रान्त भागमें, विशेषकर उसकी बीचवाली भेदकास्थिके भीतर अत्यन्त जलन और कुटकुटी हुआ करती है ; शय्यापर सोनेसे दाँतका दर्द बहुत बढ़ जाता है ; उदरमें कतरनेकी तरह दर्द और आँतोंमें वायु संचालनकी वजहसे हड़ हड़ कल कल शब्द ; मूत्राशय और मलान्त्रमें सङ्कोचनकी वजहसे वृथा वेग ; सबेरे शय्यासे उठनेपर दो तीन बार ढीला पाखाना होता है और मलद्वारमें जलन और नख गड़नेकी तरह दर्द होता है। साथ ही कुन्थन (काँखना) मालूम पड़ता है। पाखाना होनेके समय जोरकी आवाजके साथ वायु निकलता है ; मल पतला; लसदार और खून मिला होता है।

लक्षणावली ।

मन और मस्तक ।—विमर्ष ; सरमें दर्द ;—शरीर हिलानेसे ही दर्दका बढ़ जाना (ब्राई, कैल्के, क्रोकस, नैट्र-मयू, नक्स-युग, सल्फ ; देह सञ्चालनसे घटना=ऐसिड-म्यूर); ऐसा मालूम होता है, मानो शिरके भीतर मस्तिष्क डोल रहा है। (ऐको, बेल, सिङ्को, साइक्यू, नक्स-मस, नक्स-वोम, रास, सिपि, ऐसिड-सल्फ)।

मुखमण्डल ।—पीला, (कैल्के, कैन्थ, कैमो, कास्टि, चेलिडो, ग्राफ, लाई, मैग-म्यू, मार्क, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, पल्स, सिकेलि, सिपि)। सर्दी,=नासारन्ध्र में जलन (कैन्थ, आर्स या कुटकुटाता है) कानके छेदमें तोप गरजनेकी तरह आवाज (कास्टि, ग्रैफ, लैके, मैंग, प्लेट)। दाहिनी आंखमें स्नायुशूल और बराबर आँसू निकलते रहना। (बेल, चेलिडो, रास)।

मुख-विवर ।—जीभके अगले भागमें पानी भरी फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं, उनमें बहुत दर्द होता है (आर्स, बैराइ, रास, ऐमोन-म्यू, मार्क-कोर, सिक्रेम, इग्नि, कैलि-आयोड, लाई, नैट्र-मयू, नाइट्रम)। मुंह और गलेमें सूखापन और मुंहमें लगातार श्लेष्मा संचय रहना। कण्ठका सूखापन और बहुत प्यास (ऐको, ब्राई, कैन्थ, चेलिडो, क्रियो, नैट्र-सल्फ, ओपि, रास, सल्फ ;

मुख और गलेका भीतरी भाग सूखा, पर प्यासका न रहना=वेल, कार्बो-वेज, ककयु, लाई, नक्स-मस, सेबाड)। दाँतमें दर्द ;—बिछावनपर सोनेसे बहुत बढ़ जाता है और गर्म पसीना निकलनेपर तकलीफ घट जाती है ; दर्द कान, कनपटी और गण्डास्थि तक फैल जाता है (प्लैण्टेगो ; बाईं ओर=कोलो)।

पाकस्थली ।—खायी हुई चीजकी डकार आती है (ऐलो, ऐम्ब्रा, ऐण्टि-क्रू, कार्बो-वे. कैमो, सिङ्को, फास, पल्स, ऐसिड-आक्जैल, थूजा) ; मांस और रोटीसे अरुचि (मांससे अरुचि=कैल्के, कार्बो-वे, लाई, मार्क, ओलि-ऐन, पेट्रोल, कैलि-बाई, रास, सेबाड, सिपि, सल्फ ; रोटीसे अरुचि=लैक्टियुका)।

मल ।—उदरामय,—सवेरे शय्यासे उठनेके कुछ ही देर बाद पाखाना लग आना (बोवि ; ब्राई, कैलि-बाई, इथ्यू, ऐगार, आर्स, ऐसिड-फ्लू, नेट्र-सल्फ, सोरिनम ; शय्यासे उठकर कुछ देरतक इधर उधर करनेपर वेग=ब्राई, लेप्टान, नेट्र-सल्फ ; शय्यासे उठते ही=लाई, सलफर ; शय्या त्यागनेके पहलेही = ऐलो, सोरिनम, रियुमेक्स, सल्फ ; सवेरे ६ बजे=आर्जेण्ट-नाई ; सवेरे ४ से ६ बजेके बीचमें=नूफर-लूटिया)। मल पतला माँड़की तरह (ऐलो, बैराई, ब्राई, चेलिडो, साइक्लाम, ग्रैफ, हिपर, क्रियो, लेप्टान, पोडो, वेलि); मलद्वारमें जलन होती है (मल निकलनेके समय=ऐलो, लैके, मार्क, पल्स, इग्ने, रैटान ; पाखाना हो जाने बाद=गैम्बो, इग्ने, ऐसिड-नाई) ; मलान्त्रमें और मूत्रस्थली में दबाव मालूम होना (मलांत्रके भीतर=ऐमोनियेका, आर्नि, सिङ्को, क्रोटन, नक्स-वोम, फास, ऐङ्गस, सेना ; मूत्रस्थलीमें=ऐङ्गस)। कब्जियत,—मल कड़ा और गांठ गांठ (कास्टि, चेलिडो, आयोड, मेग-मयू, पेट्रोल, प्लम्ब, प्रूनस, साइलि, स्टैन)।

पेशाब ।—मूत्रनलीमें जलन (कैनाब, कैन्थ, कोलचि, मार्क, सल्फ, थूजा)। बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है ; (बैराई, कास्टि. डैफनी ; कैलि-कार्ब, क्रियो, मार्क, नक्स, रास-रैड, स्किला, स्टैफ, सल्फ) ; पेशाब गाढ़ा पीले रङ्गका (ऐगार, कैमो, क्रोटोन, जिमसेङ्ग, चेलिडो, नेट्र-कार्ब, प्रूनस, रैफे, सैम्बियु, थायो, लैके-नाइट्रम) और कुछ परिमाणमें फेन मिला (चिनन-सल्फ, क्रोटोन, कैमो, लोरो, सेना, सार्सिया)। कभी कभी पेशाब फेन भरा हो जाता है, फीका लाल रङ्ग और उसमें पीली आभा लिये तली जमती है (कैमो, किनिन-सल्फ, ब्यूफ्रम, ऐसेट, लाई, नेट्र-सल्फ, साइलि, सार्सिया, टेरिब)।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभग्न और कर्कश । खासकर गला साफ करनेपर स्वर परिष्कार हो जाता है । स्वरनालीमें सुरसुरी होता है, खांसी आती हैं;—तीसरे पहर ४ बजे से ६ बजे तक बढ़ना ।

पीठ ।—बायें पृष्ठ-फलकके भीतरकी तरफके निचले कोनेमें तेज दर्द मालूम होता है (सेङ्गिग्यु ; दाहिने पार्श्वमें = चेलिडो, केलि-कार्ब ; मार्क-बाई, चिनोपोड-ऐन्थेल) और यह दर्द छाती तक फैल जाता है ।

ज्वर ।—जाड़ा पीठके ऊपरसे नीचे और नीचेसे ऊपरकी ओर तेजीसे संचारित होता है (जेलस) और इसी वजहसे शरीर कांपा करता है ; तलहथी में जलन होती है ; शय्यामें सोनेके समय गर्म पसीना निकलता है (कैमो, ओपि फास, स्टैन, स्ट्राम) ।

निद्रा और स्वप्न ।—कामोद्दीपक सपनोंके साथ रेतःस्खलन ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—किनिन-सल्फ, चेलिडो, नैट्र-सल्फ, ब्राई, केल्के, आस्ट्रि ।

तुलनीय ।—इथूजा (उठनेपर पाखाना होना) ; नैट्रम-सल्फ (उठकर घूमनेपर वात कर्म—वायू छूटना के साथ ही उदरामय) ; नक्स-वो (बार बार निष्फल मल वेग) ; जेलस (शीत, पीठपर बराबर) ।

शक्ति ।—६ ठे से २०० शततमिक क्रम ।

चिनापोडियम वलवेरिया ।

(CHENOPODIUM [illegible] PIA)

दूसरा नाम ।—स्टिङ्क वड़र—ग्रै [illegible]

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे संग्रह [illegible] अरिष्टके [illegible] तैयार होता है ।

उपयो[illegible] आभास

झीशमें दर्द, [illegible] हड्डीमें दर्द

बगैरह [illegible]

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐमोन कार्ब, ड्रिमिस्, चिनोपोडिया-ऐन्थेल, आफिस-चिनो।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

चिमाफिला-मेकुलेटा।

(CHIMAPHILLA MACULATA)

दूसरा नाम।—स्पाटेंड-वाटर-ग्रिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़ और पत्तेसे अथवा खिले हुए उद्भिदसे अरिष्ट के आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—अदम्य क्षुधा, भूखसे पेटमें काटनेकी तरह दर्द—इसका निर्देशक लक्षण है। ज्वर और ज्वरके साथ शरीरमें जलन; ऐसा मालूम हो कि खून गर्म हो गया है, गला और गल-ग्रन्थिमें दर्द, सोनेपर सर दर्द बढ़ना और सूखे घरमें सब लक्षणोंका घटना—इन लक्षणोंमें यह लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—परस, चिमाफिला-ऐम्ब्रा, चिमाफि-रीटफ्लि।

शक्ति।—३x—६x

चिमाफिला अम्बेलेटा।

(CHIMAPHILLA UMBELLATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछमें फूल होनेपर, उसकी जड़ और पत्तों से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—सुंहासे; स्तनकी शीर्णता; कर्कटीया जखम और अर्बुद; मूत्राधार-प्रदाह; बहुमूत्र; शोथ; ज्वर; ग्रन्थियोंका बढ़ना; मेह; प्रमेह; सविराम ज्वर; कामला; मसानेकी बीमारी; मूत्रग्रन्थि-प्रदाह; मूत्रनलीकी सुपुराणी ग्रन्थि-

श्वास-यंत्र।—स्वरभग्न और कर्कश। खासकर गला साफ करनेपर स्वर परिष्कार हो जाता है। स्वरनालीमें सुरसुरी होता है, खाँसी आती है;—तीसरे पहर ४ बजे से ६ बजे तक बढ़ना।

पीठ।—बायें पृष्ठ-फलकके भीतरकी तरफके निचले कोनेमें तेज दर्द मालूम होता है (सेङ्गिनु; दाहिने पाँखमें=चेलिडो, कैलि-कार्ब, मार्क-वाई, चिनोपोड-ऐन्थेल) और यह दर्द छाती तक फैल जाता है।

ज्वर।—जाड़ा पीठके ऊपरसे नीचे और नीचेसे ऊपरकी ओर तेजीसे संचारित होता है (जेल्स) और इसी वजहसे शरीर काँपा करता है; तलहथी में जलन होती है; शय्यामें सोनेके समय गर्म पसीना निकलता है (कैमो, ओपि फास, स्टैन, स्ट्राम)।

निद्रा और स्वप्न।—कामोद्दीपक सपनोंके साथ रेतःस्खलन।

सम्बन्ध।—सदृश।—किनिन-सल्फ, चेलिडो, नैट्र-सल्फ, ब्राई, कैल्के, आस्ट्रि।

तुलनीय।—इथूजा (उठनेपर पाखाना होना); नेट्रम-सल्फ (उठकर घूमनेपर वात कर्म—वायू छूटना के साथ ही उदरामय); नक्स-वो (बार बार निष्फल मल वेग); जेल्स (शीत, पीठपर बराबर)।

शक्ति।—६ ठे से २०० शततमिक क्रम।

चिनापोडियम वलवेरिया।

(CHENOPODIUM VULARIA)

दूसरा नाम।—स्टिङ्किङ्ग-ग्रेन्सिकम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये हुए उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—कब्जियत पृष्ठफलकके नीचे दर्द, प्लीहामें दर्द, पीठके मेरुदण्डकी हड्डीमें दर्द और कमजोरी, जननांगमें पीड़ा वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐमोन कार्ब, ड्रिमिन्थ, चिनोपोडिया ऐन्थेल, आफिस-विनो ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

चिमाफिला-मेकुलेटा ।
(CHIMAPHILLA MACULATA)

दूसरा नाम ।—स्पाटेंड-वाटर-ग्रिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़ और पत्तेसे अथवा खिले हुए उद्भिदसे अरिष्ट के आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अदम्य क्षुधा, भूखसे पेटमें काटनेकी तरह दर्द—इसका निर्देशक लक्षण है । ज्वर और ज्वरके साथ शरीरमें जलन; ऐसा मालूम हो कि खून गर्म हो गया है, गला और गल-ग्रन्थिमें दर्द, सोनेपर सर दर्द बढ़ना और सूखे घरमें सब लक्षणोंका घटना—इन लक्षणोंमें यह लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—पल्स, चिमाफिला-ऐम्ब्रा, चिमाफि-रोटफिड ।

शक्ति ।—३x—६x

चिमाफिला अम्बेलेटा ।
(CHIMAPHILLA UMBELLATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछमें फूल होनेपर, उसकी जड़ और पत्तोंसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मुंहासे ; स्तनकी शीर्णता ; कर्कटीया जखम और अर्बुद ; मूत्राधार-प्रदाह ; बहुमूत्र ; शोथ ; ज्वर ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; मेह ; प्रमेह ; सविराम ज्वर ; कामला ; मसानेकी बीमारी ; मूत्रग्रन्थि-प्रदाह ; मूत्रनलीकी मुखशायी ग्रन्थि-

प्रदाह ; टेरिजियम ; दद्रु ; गण्डमाला ; मूत्रद्वारका रुकना ; उपदंश ; दाँतका दर्द ; दूषित जखम ; मूत्रका विकार ; अँगुलहाड़ा इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मूत्रस्थलीके सर्दी-रोगमें विशेषकर यह पुराना हो जानेपर और किसी भी दवासे फायदा न दिखाई देनेपर, इससे आश्चर्य-जनक लाभ दिखाई देता है। इसकी कई प्रधान लक्षण यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं:—मूत्रस्थलीकी सर्दी, पेशाबके साथ श्लेष्मा मिश्रित पीब और खून मिला रहता है। सारे शरीरका उत्ताप और तेज नाड़ीके साथ कभी कभी दोनों गाल लाल हो जाते हैं। दाँतमें दर्द,—आहार और दैनिक परिश्रमसे बढ़ना, ठण्डा पानी पीनेपर घटना। रातमें रोगी मुंह बन्द नहीं कर सकता,—अकड़ जाया करता है। रोगी मुंह फाड़कर सोता है। तालुमें ऐसा मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी है,—मानो गर्म पानीय या भोजनके पदार्थके स्पर्शसे बहुत तकलीफ होती है। उदरी रोगाधिकारमें यकृतका प्रदाह ; उदर, मूत्रग्रन्थि या मसानेमें शोथ ; मध्यान्त्रिका (Mesenteric) ग्रन्थियाँ सब बढ़ जाती हैं। गहरी कब्जियत या दुरारोग्य अर्श रोग। मलद्वारके बाएं पार्श्व गभीरतम प्रदेशमें बेधनेवाला दर्द, बैठनेपर विटपके भीतर और गुह्यद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानमें मानो कुछ फूल गया है। मानो उसपर एक गोला दबाकर रखा हुआ है,—ऐसा मालूम होना (मूत्रनालीकी मुखशायिका ग्रन्थिके बढ़नेकी वजहसे ऐसा मालूम होता है)। उस ग्रन्थिसे रस-स्राव ; मसानेके स्थानपर लगातार दर्द मालूम होते रहना,—मानो पानीके बुलबुले उठ रहे हैं (बार्बा, मिडोराइन) मूत्रस्थलीमें दबाव मालूम होना। मूत्रनालीमें प्रबल आकुञ्चनकी वजहसे वृथा वेग और मूत्र कृच्छ्रता। लगातार पेशाबका वेग,—रातमें ५।७ बार जाना पड़ता है। मूत्राशयके मुंहपरसे समूचे मूत्रमार्गमें उत्तेजना। अण्डकोषमें तेज दर्द, प्रदर। स्तनका अर्बुद और स्तनका तेजीसे क्षय होते जाना। कन्धेका नया वात ; दाहिने बाहुकी सूजन। आन्तरिक कम्पन मालूम होना (ऐ-सल्फ)।

पेशाब।—बहुत ज्यादा परिमाणमें खूनकी तरह पीब निकलता है और पीब तथा श्लेष्मा मिला पेशाब होता है। पेशाबके वेगकी वजहसे बार बार नींद खुल जाती है (एसिड-फास, स्यूरेक्स, थूजा)। मूत्र गदला गाढ़ा बदबूदार, खूनकी तरह और ईंटके रंग जैसा और उसमें बहुत ज्यादा परिमाणमें रक्तमय तली जमती है—इसके साथ ही विलेपी ज्वर और रातमें पसीना होता

है। शिश्नके अगले भागसे लेकर मूत्रस्थली ग्रीवा तक मूत्रनालीमें असह्य उत्तेजना रहती है और सुरसुरी होती है (पेट्रोसेल)। मूलद्वार और सुखशायी ग्रन्थिका तरुण प्रदाह,—दबाकर बैठनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उक्त मलद्वारके ऊपरी भागमें और अण्डकोषके नीचे एक कड़ा गोलाकार पदार्थ का दबाव पड़ रहा है (कोनाय-इन)। सुखशायी ग्रन्थिसे लगातार लारकी तरह पदार्थ निकला करता है (इस्कुलस-हिप, ऐल्यु, ऐग, ऐनाक, हिप, नैट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, मैलिन-सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा)। पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें तेज जलन मालूम होना और पेशाब होनेपर मूत्रस्थलीके संकोचनकी वजहसे भयानक वृथा पेशाबका वेग होता है अथच पेशाब नहीं होता। मूत्रग्रन्थि प्रदेशमें चिड़ियेका पर फड़फड़ानेकी तरह या बुलबुले फूटने की तरह मालूम होना (वार्बा, मिउराइन)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्तन सूखकर जल्दी चीण हो जाते हैं (सैबाल-सेरूलेटा, कोना, आयोड, ऐसिड-नाई)। स्तनमें अर्बुद निकलना (कोना, फाइटो) और इसी वजहसे स्तनमें बहुत ज्यादा दुग्ध संचय हो जाता है। योनिका बाहरी भाग फूला और प्रदाह-युक्त और योनिमें दर्द।

गर्दन और पीठ।—मसाना या मूत्रग्रन्थिके पासके प्रदेशमें मानो कुछ फड़फड़ा रहा है, ऐसा मालूम होना,—परन्तु उसकी वजहसे किसी तरहका दर्द या गड़बड़ी नहीं मालूम होती।

ज्वर और शीतोत्ताप।—नाड़ी तेज रहनेके साथ सारे शरीरमें उत्तापका आविर्भाव और गण्डदेश (गाल) में चय प्राप्त लालीका भाव रहता है। चय ज्वर; रातमें पसीना और उत्ताप।

त्वचा।—लसिका ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं। वातकी वजहसे जखम आदि।

सम्बन्ध।—सदृश।—सैबाल सेरूलेटा; आयोड, युवा-उर्सार्इ, ऐग्नस-कैस्टस।

तुलनीय।—चिमा-मल; ऐपिस (शोथ); ऐग्नस (प्रमेह); क्राफिया (दाँतका दर्द); कैल्के; जिङ्कम (टिरिजियम); ईक्वीलम (मसाने का शूल)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

चायना बोलिवियाना।

(CHINA-BOLIVIANA)

दूसरा नाम।—सिनकोना-बोलिवियाना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सिनकोना आफिसिनेलिसके साथ यह प्रायः समलक्षण सम्पन्न है। चायना-आफि और चायना-बोलिवियाना—इन दोनों दवाओंमें ही उदरमें वायु सञ्चय, स्वप्न भरी नींद,—स्पर्शका सहन न होना—ये लक्षण दिखाई देते हैं। इन उल्लिखित लक्षणोंके साथ मुख-गह्वरका जखम, खांसनेके समय दाहिने फेफड़ेके निचले भागमें छुरी मारनेकी तरह दर्द, गर्दनका पिछला भाग अकड़ जाना, मलद्वारके पास लसदार पसीना वगैरह लक्षणोंमें चायना बोलिवियानासे अधिक लाभकी सम्भावना रहती है।

शक्ति।—३x—३०।

क्विनिनम आर्सेनिकोसम।

(CHININUM ARSENICOSUM)

दूसरा नाम।—आर्सेनेट आव क्विनाइन। (Arseniate of quinine)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—हृत्शूल; दमा; अतिसार; डिफ्थीरिया या उपझिल्ली प्रदाह; मृगी; पाकाशयका शूल; अधकपारीका दर्द; सविराम ज्वर; आँखोंका प्रदाह; गलेका जखम; उपदंश; क्षयकास; तम्बाकूका अपव्यवहार।

उपयोगिता और आभास।—सदृश-विधानकी चिकित्साके अनुसार यदि बलकारक दवाके रूपमें किसी दवाका व्यवहार करना सम्भव होता है

तो, उनमें किनिनम आर्सेनिकोसम अन्यतम है। स्नायुशूल, दमा, मलेरियाकी वजहसे रोग ; डिपथीरिया (या गलेके भीतरकी) झिल्लीका प्रदाह वगैरह सुस्त करनेवाली बीमारीमें, रोगी जब बहुत देरतक रोग भोग करता हुआ जीर्ण शीर्ण हो जाता है, हमेशा ही बहुत सुस्ती और दुर्बलता अनुभव करता है, उस अवस्थामें प्रायः किनिनम आर्सेनिकोसम द्वारा केवल रोगीकी प्राणरक्षा ही नहीं होती, बल्कि नियमित भावसे इसका सेवन करनेपर रोगी जल्द ही आरोग्य हो जाता है और दिनोदिन उसकी जीर्ण देहमें बलका संचार हो जाया करता है। रोगी नवीन जीवन प्राप्त कर फिर संसार-क्षेत्रमें अवतीर्ण होने योग्य हो जाता है। उदरके शूलके दर्दमें जब हृत्पिण्डसे निकली हुई वृहत्तम धमनी और पाकस्थलीके भीतरकी स्नायु-ग्रन्थिके प्रदेशमें पीसनेकी तरह मालूम होता है और उसके ठीक पीछे मेरुदण्डमें दर्द मालूम होता है, तो उस समय इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है।

लक्षणावली।

मन और मस्तक।—हमेशा ही मानो चिन्तित रहता है। उत्तेजना-प्रवण। सरमें टपकका दर्द (वेल, किनिन-सल्फ, सुपेट, क्रियो, पेट्रोल; सिपि, साइलि, सल्फ, वेरेट),—वृद्धि—मानसिक या शारीरिक परिश्रमसे, सरमें चक्कर आना,—ऊपरकी ओर दृष्टि करनेसे ही बढ़ जाता है (पल्स, साइलि ; आँख बन्द करनेपर=लैके, थिरिड, थूजा ; आँख खोलनेपर=टैबेकम)। माथेमें मानो बिलकुल ही स्थान नहीं है, भरापन मालूम होना (ऐको, वेल, ब्राइ, ग्लोनो, रास-टेड); मस्तिष्कका अवसाद या क्लान्ति (ऐसिड-फास, ऐसिड-पिक्रि, कैल्के फास, इग्र्यू जा)।

मुख-विवर।—जीभपर मोटा पीले रङ्गका लेप, छीलनेपर भी यह साफ नहीं होता (किनिन-सल्फ ; पतला पीले रंगका लेप=कार्वो-सार्सि)। मुँहका स्वाद बहुत कड़वा या तीता (कोलिन)। क्षुधा या रुचिका न रहना। (प्रूनस-स्पाई, जेल्सियाना-लुट)।

पाकस्थली।—शूल-वेदना हृत्पिण्डसे निकलनेवाली महाधमनी (Aorta) और पाकस्थलीकी बीचमें स्थित (Solar plexus) का स्नायुशूल, इसी अंशमें दबाव मालूम होना और इसके विपरीत और मेरुदण्डमें दर्द। जो कुछ खाता है, वही अम्लमें परिणत हो जाता है (आर्जेण्ट-नाइ, ऐसिड-सल्फ, कैल्के,

मास्ट, रोबिनिया) ; ठण्डे पानीकी बहुत प्यास रहती है, पर पानी पीनेपर पेटमें बीमारी पैदा हो जाती है। पुराना उदरामय। मिचली और वमनके बाद रोगी सो जाता है (इथजा)।

मलान्त्र और मल ।—उदरामय,—जोर का वेग देनेपर मल प्रवल वेगसे निकलकर तलपेटको खाली कर देता है (पोडो)। दर्द नहीं होता। सवेरे के वक्तका उदरामय, इतना वेग कि कपड़ा पहिननेका समय नहीं मिलता, मल भूरे रंगका, पानीकी तरह, आँव मिला ; बाएं कोखमें दर्द, चलनेके समय बहुत दर्द मालूम होता है। आमातिसार, मल आम और खून मिला ; पाखाना होनेके पहले और बाद काँखना। (मार्क-कोर)।

हृत्पिण्ड ।—शय्या या कुर्सीपर पीठ लटकाकर बैठनेपर कलेजेमें धड़कन मालूम होती है। कभी कभी ऐसा भी मालूम होता है, कि हृत्पिण्ड की गति स्थिर हो जाती है (आरम, सिपि)। नाड़ीकी गतिकी वजहसे टपक मालूम होती है। दमा, प्रतिवार एक ही समय आरम्भ होता है। रोगी निर्मल हवाके लिये बहुत ही आग्रह प्रकट करता है। (सिष्टस-कैन, इपिक, ओपि, ऐकी, सादलिसिया)। रोगके आक्रमणके बाद रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है। रोज़ सवेरेसे दो पहर तक दमाका जोर रहता है, रोगी खुली हुई खिड़कीके सामने मुंह फाड़कर खड़ा रहता है ; घुटने टेककर बैठ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—कन्धेमें, कोहनीमें और जानु, उरु वगैरहमें बहुत दर्द होता है और ये अङ्ग बलहीन मालूम होते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो स्कन्ध-सन्धि अपनी जगहसे हट गयी है (निकोल)।

ज्वर ।—बहुत दिनोंतक ज्वर भोगनेके कारण रोगी जीर्ण शीर्ण हो पड़ता है, शरीर मानो रक्त-शून्य हो जाता है। कम्प,—कम्पके समय खाँसी, सामान्य उत्ताप, पसीना।

सम्बन्ध—सदृश ।—किनिन-सल्फ, किनिन-म्यूर, आरम, आर्स।

तुलनीय ।—ऐपिस (डिफथीरिया), इथूजा, (कम्प ज्वरके बाद नींद)। कैक्टस (संकोचन)।

शक्ति ।—२ री और ३ री दशमिकसे २०० शततमिक क्रम तक। पुरानी बीमारीमें उच्च क्रमसे बहुत लाभ होता है।

किनिनम म्यूरियैटिकम।

(CHININUM MURIATICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण या तरल क्रम बना करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लक्षणके अनुसार लाभदायक प्रमाणित हुआ है,—मदात्यय; आँखोंका स्नायुशूल; पाकाशयका प्रदाह; सर दर्द; सविराम ज्वर; प्रदाह इत्यादि।

किनिनम सैलिसिलिकम।

(CHININUM SALICYLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पूर्व रूप।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—बहरापन, कर्ण-प्रदाह इत्यादि।

किनिनम सल्फ्युरिकम।

(CHININUM SULPHURICUM)

(QNINIA SULPHATE)

दूसरा नाम।—क्विनिया सलफेट या सलफेट आव क्विनाइन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अर्क हो सकता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक हुआ है:—छातीशूल; दमा; स्नायुशूल; कार्कटीया जखम; हैजा या कालरा। पित्ताश्मरी; प्रलाप; अतिसार; शोथ; बाधक; कानकी बीमारियाँ; सड़नेवाले जखम; खूनका पेशाब; रक्तस्राव; सिर दर्द; सविराम ज्वर; कर्ण-मूल, योनिद्वारमें खुजली; सूतिकाक्षेप; रक्तदोष या विषाक्तता; स्वल्प-विराम ज्वर;

वात ; कशेरुकाकी उत्तेजना ; प्लीहाका बढ़ना ; शीत-पित्त ; शिराओंका फूलना ; चेचक इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—नये बोखार आदिमें ऐलोपैथीके मतसे, चिकित्सा करते समय बहुत बड़ी मात्रामें क्विनाइन व्यवहार करनेपर जो नहीं होता, सदृश विधानके अनुसार नियमके इसका प्रयोग होने पर और इस दवाके उच्चतम क्रमकी एक दो मात्राका व्यवहार होनेपर उससे सौगुना अधिक फायदा होता है, और कुछ दिनोंतक रोगीको उसका दुष्परिणाम नहीं भोगना पड़ता । स्नायु-शूल, मेरुदण्डकी बीमारियाँ, सरका दर्द वगैरह रोगोंमें इससे बहुत अधिक लाभ हुआ करता है । नये होमियोपैथिक चिकित्सकोंको यह जान रखना चाहिये कि पुराने मलेरिया रोगमें यह पहले प्रयोग करनेपर, प्रायः धातुगत ज्वरका पूर्ण वेग और पूर्ण-विकास हो जाया करता है अर्थात भीतरका बोखार जोरसे बाहर निकल आता है और ऐसा होने पर इस दवाके उच्चतम क्रमकी दो मात्रा प्रयोग करनेपर रोगी एकदम आरोग्य हो जाता है । [काले केश, काली आँखें और पित्त-प्रधान धातुवाले मनुष्य और जो बहुत ज्यादा रक्त-क्षयकी वजहसे दुबले और जीर्ण शीर्ण हो गये हों तथा जिनका स्वास्थ्य भग्न हो गया हो, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है] । इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं, कि माथेके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो कलकी चक्की घूम रही है । कानमें शब्द, विशेषकर बाएं कानमें (दाहिने कानमें= चायना) ; थोड़ी देरके लिये होनेवाला स्नायुशूल, अवसाद ग्रस्त, जरा भी शारीरिक परिश्रम करनेपर हृत्स्पन्दन पैदा हो जाता है, मेरूदण्डमें बहुत स्पर्श कातरता खासकर गर्दन और पीठके बीचवाले अंशमें । बहुत कमजोरी मालूम होना, खासकर निचले अङ्गोंमें । माथेके पीछेसे ललाटतक फैला हुआ सर दर्द ; बाईं आँखका फड़कना,—विशेषकर सन्ध्याके समय, रोगसे जीर्ण मनुष्योंके मुंहमें जखम । दाँतके ऊपर फटा स्थान पैदा हो जाता है । रक्तस्राव, ज्वरकी शीतावस्थामें शिराए सब फूल जाती हैं और उनमें दर्द हुआ करता है । सुस्त करनेवाला स्राव ; स्थिर होकर बैठनेके समय माथेसे बहुत पसीना निकला करता है । रोगी इतना सुस्त हो पड़ता है, कि उसे ऐसा मालूम होता है कि वह शय्या भेदकर नीचे गिर जायगा । (ऑर्स, बेल, डालका, रास, लैके) ।

[मलेरिया ज्वरमें, प्लीहा बढ़ जानेपर और किनिनम सल्फके प्रयोगसे ज्वर मन्द होनेपर हिलियोनैन्थस नामक नयी आविष्कृत दवाका मूल अर्क या १ म

दशमिक क्रम ३ । ४ मात्रा प्रयोग करनेपर बोखार एकदम अच्छा हो जाता है और कुछ दिन और भी व्यवहार करने पर प्लीहा स्वाभाविक अवस्थामें आ जाती है]।

लक्षणावली ।

मन ।—स्फूर्त्ति-पूर्ण ; उत्तेजना पूर्ण चित्त ; इसके अलावा कभी कभी बिलकुल विषादग्रस्त दिखाई देता है। हमेशा आसन्न-विपत्तिकी आशंका (ऐमोन-कार्ब, ऐमिल-नाई, ऐक्टिया, क्लिमेट, क्यूप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लोरो, लिलियम-टाई, मैग-कार्ब, स्कुटेलारिया-लेटार, सिपि, वेलि, वेरेट, डिजि)। स्मरण शक्तिकी कमजोरी ।

मस्तक ।—सर दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो शिरके भीतर कलकी चक्की घूम रही है (ऐसा मालूम होता है, मानो शिरमें बवण्डर बह रहा है=कार्बो-ऐनिम ; अधिक कर=आर्नि, वेल, साइक्यूटा, नक्स ; वेलि देखो ।) अत्यन्त तीव्र और यन्त्रणादायक सर दर्द (पूति-वाष्पज),—दिनके दोपहरके समय धीरे धीरे बढ़कर सन्ध्याके समय बहुत तकलीफ भरा हो जाता है (स्टेनम),—माथेकी सब धमनियों में टपक हुआ करती है, मानो माथा खण्ड खण्ड हो जायगा (कार्बो-ऐन, नैट्र-सल्फ, फेरम-ऐसेट),—मुँहमें बहुत उत्ताप मालूम होता है, सरमें चक्कर आता है, और कभी कभी कर्ण-विवरमें सों सों शब्द हुआ करता है (ऐम्ब्रा, कैल्के, कोना, लिडम, मैग्नो, नैट्र-म्यू, पेट्रोल, साइलि) सरमें चक्कर आनेकी वजहसे चलता चलता गिर जाता है या गिर जानेका उपक्रम होता है (ऐकी, ऐगार, वेल, साइक्यू ; युफोर्ब, फेलेन, रास, साइलि, स्पिजिया) ; खड़ा नहीं रह सकता । (सलफर, कैनाब, क्रोटोन, ओलियेन, ऐसिड-फास, रियुम ; स्क्रोफूलारिया-नेडो, साइलि) ; सविराम मस्तिष्क मेरु-मज्जावरणी प्रदाह,—रोगी इतनी कमजोरी मालूम करता है, कि इसी वजहसे इच्छा न रहनेपर भी आँख बन्द कर लेता है ; माथेमें अधिक यन्त्रणा (साइलि)।

आँख ।—आँखके गोलेके ऊपर या भवोंका स्नायुशूल ; (आर्जेण्ट-नाई)। नित्य ठीक एक ही समय दर्द पैदा हो जाता है, इसके साथ ही बालू भरा पेशाव (सीड्रन) ; बाएँ पार्श्वमें दर्दका बढ़ना (कोलोसिन्थ, साइलि) ; दबाव डालने या टीपनेपर घटता है (साइलि, सिङ्कोना ; पाकस्थलीकी बीमारी आदिकी वजहसे आँखोंके ऊपरका स्नायुशूल=केलि-बाई)। आँखके नीचे स्नायुशूल

आरम्भ होकर आँखके भीतर और आँखके चारों ओर फैल जाता है। आँख एक-दम रक्तशून्य और उजली दिखाई देती है। अस्पष्ट दृष्टि,—मानो पतले जालके भीतरसे देख रहा है (कॉल्क, क्रोक, ड्रोसेरा, क्रियो, नेट्र-मयू, पेट्रोल, फास, सिपेल, सल्फ) ; केवल पार्श्वकी ओर या आड़े भावसे दृष्टि करनेपर द्रव्य आदि देख सकता है। आँखोंमें रौशनी सहन नहीं होती। रौशनीकी ओर देखनेसे आँखसे पानी गिरता है (डिजि, क्रियो, पल्स) आँखके सामने चमकीली रौशनी (बेल, हायो, कॉलि-कार्ब, नेट्र-मूर, पल्स, स्पाइजि) और आगकी तरह चिनगारियाँ दिखाई देती हैं (अरम, आर्स, बेल, कास्टि, आयोड, कैलि-कार्ब, लैके, लाइको, नेट्र-मूर, नक्स, ओपि, फास, क्यप्रम-आर्स, स्टैफ, वेलि)।

कान ।—कर्ण-विवरमें लगातार भिन भिन वगैरह आवाज हुआ करती है ("मस्तक" देखो)। चोट खा जानेके कारण बहरापन (आर्नि)।

मुख-मण्डल ।—उद्दीप्त और उत्तापयुक्त, उजला और उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि तकलीफ है। सन्ध्याके समय गाल आदि और हनुकी अस्थिमें दर्द।

पाकस्थली ।—भोजन कर लेनेपर पाकस्थलीमें भार मालूम होना, और उसके कुछ ही देर बाद उदरके बीचवाले स्थानमें ऊपरकी ओर अर्थात् अर्द्ध देशमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है। बहुत थोड़ा भोजन करनेपर भी पेटमें भार मालूम होता है और सब लक्षण फिरसे पैदा हो जाते हैं।

अन्त्राशय ।—सोनेके कुछ ही पहले यकृत प्रदेशमें थोड़ा थोड़ा दर्द आरम्भ होता है। प्लीहा प्रदेशमें दर्द (सियेनो)। दबाने या टीपनेसे घटना। छोटे छोटे पंजरके निचले स्थानमें शलाका बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना।

पेशाब ।—पेशाबके साथ बहुत ज्यादा खून निकलता है। पर उसमें दर्द नहीं रहता। गदला, लसदार कीचकी तरह तली जमती है।

पीठ ।—मेरुदण्डके बीचकी कशेरुका दबानेपर बहुत दर्द मालूम होता है, गलेके पिछले भागके मेरुदण्डकी अन्तिम कशेरुकामें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता (टेल्यू), दर्द माथा और गर्दन तक फैल जाता है। श्वासकृच्छ्रताकी वजहसे कुर्सीपर ठेस लगाकर बैठ नहीं सकता।

प्रत्यङ्ग आदि ।—वात रोगकी वजहसे सन्धियोंकी चीणता। हाथ पैर आदि कमजोर, कांपते हुए, हाथ पैर आदि इच्छाकी अधीनतामें नहीं रहते,

बोखार घटने या विच्छेद होनेपर नयी मादाफिक वात वेदना, सन्धि सब बहुत स्पर्श-असहनीय हो पड़ती हैं। बहुत जाड़ा मालूम होता है, पीव पैदा होता है, और बहुत ज्यादा पसीना होता है। मलेरियाकी वजहसे बीमारी, प्लीहा और यकृतका बढ़ना और हाथ पैरमें सूजन।

त्वचा।—आरक्त ज्वरकी उद्भेदकी तरह अरुणिका (Erythema), आपसमें मिल जानेवाली रस भरी गोटियां,—ये आपसमें मिलकर बहुत बड़ा जखम पैदा कर देती हैं और इस जखमसे रस निकल कर पपड़ी जमती है। पीड़ा-नारंगा—(Pomphigus = कैन्थ, कास्टि. रास, रैनान-ब्लिरेटस)।

ज्वर।—शीतावस्था,—दिनके १०। ११ बजेके बीचमें और तीसरे पहर ३ बजेसे १० बजेके बीचमें,—बँधे समयका अन्तर देकर पैदा हो जाता है, समय पीछे जानेवाला—पश्चाद्गामी—अर्थात पहले दिन ११ बजनेके समय शीत पैदा होनेपर, दूसरे दिन १०॥ बजनेके समय या १० बजनेके समय पैदा होता है। एक दिनका अन्तर। शीतके समय सब शिरायें फूल जाती हैं। हाथ पैर कांपा करते हैं, प्लीहा और मेरुदण्डमें दर्द होता है, चेहरा म्लान, उजला हो जाता है, प्यास, ओंठ दोनो नीले, कानमें भिन भिन आवाज। हाथ पैर नाक चिबुक आदि ठण्ढे। उत्ताप,—बहुत अधिक, माथा भरा और भारी मालूम होता है। चेहरा लाल, बहुत प्यास, शय्यामें शयन करनेपर उत्तापकी अधिकता, बार बार जम्हाई आती है, और रोगी छींका करता है; कभी कभी प्रलाप भी बकता है। हाथ पैरकी शिराएँ सब फूल उठती हैं। त्वचा गर्म और सूखी; दबानेपर मेरुदण्डमें बहुत दर्द मालूम होता है; दिनके ४ बजनेके समय बहुत गर्मी और प्यास मालूम होती है। पसीना,—इसके साथ ही प्यास; स्थिर होकर बैठने और उत्तापके बादसे धीरे धीरे बहुत ज्यादा पसीना निकलना शुरू होता है; शरीर हिलानेके साथ ही पसीना; सबेरे शय्यापर सोनेकी अवस्थामें रोगी पसीनेसे भर जाता है; इसके साथ ही सुस्ती लानेवाला रातके समयका उदरामय, नींदकी अवस्थामें बहुत अधिक पसीना होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—सिङ्कोना, सीड्रन; लैके; आर्निका; नक्स; पल्स इत्यादि।

दोषघ्न।—आर्निका, आर्स, कार्बो, फेरम, हिपर, लैके, नैट्रम, पल्स।

शक्ति।—१ म दशमिक विचूर्ण, परन्तु नवज्वर या नये पूतिबाष्पज स्नायुशूलमें २०० या १००० शततमिक क्रमकी १ मात्रा १ म दशमिक क्रमके सौ मात्राओंकी अपेक्षा भी अधिक लाभदायक होती है।

चियोनेन्थस वर्जिनिका।

(CHIONANTHUS VIRGINICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—छालसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— कब्जियत ; दुर्बलता ; यकृतकी बीमारी ; पित्ताश्मरी ; सर दर्द ; कामला ; यकृत का कड़ापन ; मलेरिया ; स्तन पिलानेवालियोंकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—यकृत पर इसकी असीम क्रिया प्रकट होती है। यकृतका बढ़ना, पित्त प्रवाह रुकना वगैरह यकृतके नाना प्रकारके रोगमें इसकी उपकारिता दिखाई देती है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं—(१) बहुत बढ़ा हुआ यकृत,कब्जियत, कीचड़की तरह मल। पाण्डुरोग या गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब। (२) यकृत प्रदेशको छूनेसे बहुत दर्द मालूम होता है। (३) समय समयपर होने वाला पाण्डु या कामला रोग ; प्रति वर्ष ग्रीष्म ऋतुमें पाण्डु रोग फिरसे पैदा हो जाता है। (४) पाकस्थली चिपक जाती,—ऐसा मालूम होता है,मानो उसमें कोई जीव हिल रहा है (मानो उदरमें कुछ हिल डोल रहा है=ऐरोण्डोमोरिट, कैल्के-फास, कैनाव-मैट, कानवेलेरिया, कुरारी, क्रिओ म, क्रोकस, सैबाइना, सल्फ, थूजा), इसके साथ ही प्लीहा और यकृतमें गड़बड़ी मालूम होना। (५) बायाँ गुल्फ और अँगुलीके जड़की ओर पैरकी हड्डीके भीतर वातकी वजहसे दर्द। (६) रजोरोधके साथ पीत पाण्डु रोग। स्तनका दूध गायब हो जाना

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें दर्द,—अवसादकी वजहसे स्नायविक वेदना ; नियमित समयपर पैदा हो जाती हैं, ऋतु विकार या पित्तकी अधिकताकी वजहसे कपालमें दर्द, बाएं भँवके ऊपरी भागमें दर्दका बढ़ जाना (आइरि)। पेट

में दर्द, मिचली और गाढ़े भूरे रङ्गका, पित्त-वमनके साथ (अँधेरे घरमें स्थिर होकर रहनेपर उपशम=सैङ्गि्यु); बहुत अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रमकी वजहसे=एपिजिया ; स्थिर होकर बैठे रहनेपर दर्द या बढ़ जाना, मलने, दबाने या रगड़नेपर या शरीरको हिलानेसे घटना, इग्निगो (Stot) माथेके पिछले भागसे आरम्भ होता है और सामनेकी ओर आगे बढ़कर, दाहिनी आँखके ऊपर ठहर जाता है=सैंगुइनेरिया ; वयः सन्धिके समय प्रति ७ दिनका अन्तर देकर=सेबाड, सैङ्गि्यु, माइलि, सल्फ ; प्रत्येक आठ दिनोंका अन्तर=आइरिस ; मिचली और वमनके साथ दाहिने पार्श्वमें=आइरिस ; बाम पार्श्वमें=नक्स ; दाहिने पार्श्वगत=पल्स, सैङ्गि्यु) आँखके गोलमें अत्यन्त दर्द होता है, और नाकको जड़में दबाव मालूम होता है, हिलने खाँसने या हँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा। माथा, पीठ और पेटमें दर्दकी वजहसे बार बार नींद खुल जाती है। सरमें दर्द, माथा हिलाने, खाँसने, हँसने टहलने और नींद खुलने पर बढ़ना (लैके); सोनेपर, स्थिर और बैठे रहनेपर और दबानेपर घटना। ललाट गर्म विशेषकर ज्वरकी उत्तापावस्थामें, ज्वराधिकारमें नींदवाली अवस्थामें माथेमें पसीना हुआ करता हैं। रमणके बाद या पाखाना फिरनेपर ललाटके ऊपर ठण्डे पसीनेकी बूंद सब मोतीकी तरह दिखाई देती है ।

पाकस्थली ।—पाकस्थली रह रहकर चिपक जाती है, उसमें ऐसा मालूम होता हैं, मानो कोई जीव हिल रहा है (उदरमें सजीव पदार्थ रहनेकी तरह मालूम होना=कैन-सैट, कैल्के-फास, एराण्डो, क्रोक, थूजा, सेबाई, सल्फ ; शिरामें=पेट्रोल, साइलि)। जीभके बीचका अंश नीले लेपसे ढका (लेपटैन, पल्स-नुटैलिना, वेरेट्र-विर)। रुचिका न रहना, कोई भी पदार्थ खानेकी इच्छा नहीं होती । पाखानेका वेग और मिचली तथा बार बार ओकाई, गाढ़ा हरा रङ्ग जमे गोंदकी तरह पदार्थ वेगसे वमन हो जाता है ।

अन्त्राशय ।—यकृतमें दर्द रहता है और वह बढ़ जाता हैं साथ ही कब्जियतके साथ पाण्डु या कामला रोग। सोनेके समय काला काला अलकतरेकी तरह पाखाना होता है। (आर्स, सिड्रो, मार्क, लेप्टैन)। कभी कभी कीचड़की तरह मलत्याग होता है (कैल्कि, हिप, आयोड); प्लीहा खूब बड़ा (सियानो) पित्त-पथरी (Gall stone कार्डुयस-मे, हाइड्रैस, कैल्कि)। ऋतु रोधके साथ रक्तपाण्डु रोग (कैमो, फेरम, कैलि-कार्ब, लाईकोप, नेट्र-मूर, पोडो, पल्स,

सल्फ़र) । पित्तशूल (कॉलो, डूविक, नक्स) । विरेचक दवा सेवन करनेपर जैसा पाखानेका वेग होता है, कभी कभी मिचलीके साथ ठीक उसी तरह वेग होता है—ऐसा मालूम होता है, मानो पाखाना जाते ही पाखाना होगा, परन्तु बिलकुल ही नहीं होता ।

पीठ ।—मेरुदण्डके मध्यभागमें बहुत दर्द ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ब्रायो, सिङ्कोना, सियानोथस ; मार्क्युरियस ; चेलिडोनियम ; कार्डुयस-मेरि ; लेप्ट्रैन ; पोडोफिलम ; नेट्रम-म्यू ; साइलि ।

तुलनीय ।—पित्त वमनमें—ब्रायो ; युपे, नक्स, आइरिस ; हरा फेन भरा मल,—ग्रैटि, कैलि-कार्ब, मैग-आर्स, मार्कु-वाइ ; चोट लगनेकी तरह दर्दमें —आर्निका, वेर्ट्र, जेल्स, नक्स ; कोई जीवित पदार्थ रहनेकी तरह मालूम होना,—क्रोक, थूजा ।

शक्ति ।—मूल अर्क और १ले दशमिक क्रम ही साधारणतः व्यवहार हुआ करते हैं ।

क्लोरैलम ।

(CHLORALUM)

दूसरा नाम ।—क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सुरासारके साथ मूल अरिष्ट ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—खूनकी कमी ; कलेजेका दर्द ; संन्यास ; दमा ; शय्याका जखम ; श्वासनली प्रदाह ; ताण्डव ; आँखोंका प्रदाह ; शोथ ; अनजानमें पेशाब होना ; बदरङ्ग ; रक्त-स्रावी धातु ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; जलातङ्क ; श्वेत प्रदर ; सूतिका रोग ; आक्षेप ; आमवात इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान क्रिया-स्थल मस्तिष्क और हृत्पिण्ड तथा शरीरकी त्वचा है । मस्तिष्कपर क्रिया करनेके कारण इससे निद्रालुता पैदा होती है । यह एक तेज नींद लानेवाली और हृत्पिण्डमें सुस्ती

लानेवाली दवा है। सरमें दर्द, नाना प्रकारके भ्रमपूर्ण पदार्थ देखना वगैरह भी इसका क्रिया फल है। चर्म रोगपर लाभ दिखानेके लिये यह बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके द्वारा लाल घेरेमें घिरे छोटे छोटे छाले पैदा हो जाया करते हैं, इसी लिये इसके द्वारा बच्चोंके जल चेचक (पनसाहा माता) में लाभ होता है।

लक्षणावली।

मन।—मोह-प्राप्त होकर कई दिनोंतक एक ही भावसे रहता है; होश नहीं आता, लगातार ऐसा मालूम होता है, मानो किसीका कण्ठ स्वर सुन रहा है। घरमें तेजीसे जल्दी जल्दी चलता है और न दिखाई देनेवाले अदृश्य मनुष्योंके साथ बातें किया करता है।

मस्तक।—माथेमें इतना भार मालूम होता है, कि रोगी माथा उठा नहीं सकता (माथा इतना भारी मालूम होता है, मानो रोगी तकियेसे सर नहीं उठा सकता=चेलिडोन)। सबेरे सरमें दर्द (कैल्के, कैमो, नेट्र-म्यू, फास, ऐसिड-फास, पल्स, सिपि, साइलि, स्क्विला, ब्रोम, कैलि-बाई, पोडो)। —ललाटमें दर्दकी अधिकता (ऐको, ऐमोन-कार्ब, नेट्र म्यू, नक्स, आलियेन, पल्स, रियुटा, सिपि, साइलि; वेलि),—सर हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है (कैप्सि, लैके, लाई, नेट्र-म्यू, पल्स, पोडो, सिपि) और निर्मल वायु लगनेपर घटता है (ऐको, ऐसिड-फ्लूओ, आर्स, कोलो, क्रोटन, डायडेमा, मैङ्ग, नाइड्रम, फैलेन, सिना, टेबाक, थूजा, वायोला-ट्राई, जिङ्कम) ऐसा मालूम होता है, मानो एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक, गर्म बन्धनसे बँधा हुआ है; बच्चोंको रातमें डर लगा करता है (ऐको, ऑरम, ब्रोमिटम, फास, ऐण्टि-टार्ट, जिङ्कम, ब्राई, साइक्यूटा); बच्चा सोया सोया चिल्ला उठता है।

आंख।—लगातार आँख पोंछते रहनेकी वजहसे आँखें लाल हो जाती हैं। अस्पष्ट दृष्टि, आँख और पलक दोनोंमें ही जलन (आर्स, ऐपिस, बेल, कैम्प, कैप्सि, क्रोक, युजि, क्रियो, मैग-म्यूर, मैङ्ग, मिफाइटिस, मार्क, निकोल, नाइड्रम, फास, पल्स, रोडो, सल्फ, थूजा)। आँखके भीतरी कोनमें और पलकों के पार्श्व भागमें बहुत खुजली होती है (ऐसिड-फ्लू गैम्बो, नक्स, ष्टैफ, सल्फ); पलकोंमें सूजन,—फूली हुई। आँखका गोला बहुत बड़ा मालूम होता है (लेक्टियुका-वाई)। भ्रम देखना,—ऐसा मालूम होता है मानो रोशनीका घेरा देख रहा है (पल्स); ऐसा मालूम होता है मानो दृष्टि-पथपर काले

बिन्दु सब उड़ रहे हैं (ऐगार, ऐमोन-म्यू, वेल, कोल्को, सिङ्कों, कक्यु, कोन मार्का, ऐसिड-नाई, फास, सल्फ,)।

पेशाब।—बच्चोंका रातमें शय्यामें पेशाब कर देना (गहरी निद्रावस्थामें=वेल ; पहली नींदके समय=सिपि ; उग्र गन्धको पेशाब=ऐसिड-वेञ्जयिक ; क्रमिकी वजहसे खुजली पैदा हो कर=सिना, जिन सभी बच्चोंकी सहजमें नींद नहीं खुल जाती है=क्रियो ; बहुत गहरी नींद वाली अवस्थामें=कैलि-ब्रोम)।

श्वास-यंत्र।—बहुत श्वास-कृच्छ्रता,=ऐसा मालूम होता है, मानो श्वास-रोध हुआ चाहता है ; छातीमें दबाव मालूम होना (आर्स, ब्राई, कैमो, क्रोटेलस, डालका, ग्रैफ, इग्ने, क्रियो, लैके, नक्स-मस, रास, ष्टैन) ; ऐसा श्वास-प्रश्वास मानो हाँफ रहा है (ऐसिड-हाइड्रो, मार्क ऐसिड-नाई, ऐसिड-फास, पल्स)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ पैरोंको स्थिर नहीं रख सकता, पेशियां सब बिलकुल सुस्त मालूम होती हैं। चोटकी वजहसे धनुष्टंकार (हाइपिर, एसिड-हाइड्रो)।

त्वचा।—त्वचाके नीचे खून जमा होनेके कारण शरीरमें जगह जगह लाल आभा दिखाई देती है (फास, रास-वेन, हैम, कैलि-आयोड, लैके, क्रोटेलस)। पनसाहा माताकी तरह गोटियाँ। आमवात,—शराब या गर्म चीज पीनेकी वजहसे। हृत्पिण्डके साथ लाल रंगके उद्भेद,—शराब पीनेसे बढ़ जाता है। शरीरकी त्वचापर जगह जगह खसड़ेकी तरह लाल आभा लिये चकत्ते निकलते हैं, (ऐको, पल्स) ; शरीर बहुत खुजलाता है। त्वचा पत्थरकी तरह ठण्डी। सर्दी लगनेसे शरीरमें जगह जगह गोल बिन्दु निकलते हैं, गर्म प्रयोगसे घटना।

द्रष्टव्य।—अन्यान्य दवाओंकी अपेक्षा इसके चर्म लक्षणमें एक विशेष प्रभेद है और वह यह है कि बहुत थोड़ा नशा होनेवाला पानीय पी लेनेपर भी शरीरकी त्वचापर ये लाल रङ्गके चकत्ते निकल आते हैं और बहुत बढ़ जाते हैं। इसके साथ ही यंत्रणादायक हृत्कम्प भी मौजूद रहता है।

दोषघ्न।—डिजिटेलिस, मस्कस, एमोनियम।

सम्बन्ध—सदृश ।—एसिड-हाइड्रो-साइनिक, टार्टरस, कैन्थ, थोपि, एपिस, एड्रोपिनम, बेलेडोना, घरम, म्रोमिटम ।

शक्ति ।—चर्मरोगमें ३ से दशमिक ; सरकी दर्द आदिमें ६ से ३० शतमिक क्रम ।

क्लोरम ।

(CHLORUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—क्लोरिनको भापको पानीमें मिलाना ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—मुँहमें जखम ; दमा ; सर्दी ; मृत्पाण्डु ; आक्षेप ; क्रुप खाँसी ; दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ ; डिफ्थीरिया ; पाकाशयका प्रदाह ; खून मिली खाँसी ; स्वजभङ्ग ; क्षय कास, सान्निपातिक ज्वर ; जखम ।

उपयोगिता और आभास ।—इससे आक्षेप, सर्दी वगैरह लक्षण उत्पन्न होते हैं ।

लक्षणावली ।

मन ।—उत्कण्ठा, उत्तेजना, बेहोशी ।

मस्तक ।—मस्तिष्कके बायें पार्श्वमें तकलीफ देनेवाली सुस्ती मालूम होती है ; रोगी लगातार पड़ा रहना चाहता है । खाँसनेके समय माथेमें गर्म पसीना होता है ।

श्वास-यंत्र ।—श्वासनालीके द्वार (Glottis) का आक्षेप,—श्वास कष्टताके साथ बच्चेके गलेके भीतर कौं कौं शब्द हुआ करता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, बेल, ब्रोमम, कैल्के, फास, क्यूप्रम, जेलसिमियम, इपिकाकुआन्हा, लेकेसिस, फासफोरस, सेम्बुकस) । स्वरतन्तु रह रहकर काँपा करते हैं, श्वासनलीमें संकोचन मालूम होना,—मानो कस गयी है और श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है (आर्स, कैन्थ, हेलि, इपिक, लैके, मस्कस, नक्स-वोम, ...जिया) । श्वास अनायास ही और स्वाभाविक रूपसे ले सकता है, पर किसी

तरह भी साँस छोड़ नहीं सकता। श्वास लेना कष्ट-जनक और श्वास छोड़ना एकदम असम्भव = मिफाइटिस ; श्वास लेना बहुत कष्टदायक — (आक्षेप) चेहरा नीला, हाथ पैरका आक्षेप, रोगी हमेशा मानो आच्छन्न-भावापन्न रहता है और उसका शरीर ठण्डे पसीनेसे भरा रहता है ; ऐमोनियम सूँघनेसे घटता है। एकाएक स्वरतन्तुका काँपना और इसी वजहसे श्वास रोध होनेका लक्षण। श्वास सरलता पूर्वक ले सकता है और किसी तरहकी आवाज नहीं होती। श्वास छोड़नेके समय साँय साँय और फड़ फड़ शब्द हुआ करता है। रोगीको बहुत तकलीफ मालूम होती है। रोगीके सोनेकी चेष्टा करते ही श्वास रुकनेकी तैयारी हो जाती है (जेलस, ग्रण्डेलिया, रोब, लैके, लैक-कैन, ओपि) सर्दी लगते ही स्वरलोप हो जाता है (डालका, ऐको) उपजिह्वा (Epiglottis), स्वरनली और दोनों वायुनलीमें बहुत खुजली मालूम होती है (ब्रोम, कैमो, आयोड, कैलि-बाई, स्पंजिया, स्टैन, सल्फ)। जीभ सूख जाती है।

ज्वर।—कम्प, दाह ; पसीना।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐण्टि-टार्ट, ब्रोमम ; आयोडम ; स्पंजिया ; ग्रण्डेलिया, लैके, लैक-कैन ; ओपि ; क्यूप्रम ; इपिकाकुआन्हा ; मेफिटिस ; मस्कस।

तुलनीय।—मिफाइटिस (वायु नहीं त्याग कर सकता) ; ब्रोमिन ; आयोडिन ; नेजम इत्यादि।

दोषघ्न।—ऐल्बूमैन, लाइकोप (ध्वजभङ्ग), ब्रम्मम।

शक्ति।—२रा दशमिक क्रमसे ६ठा दशमिक क्रम।

क्लोरोफार्मम्।

(CHLOROFORMUM.)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—द्रव या अर्क।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निम्न लिखित रोगोंमें लाभदायक है—आक्षेप; मदात्यय; पित्ताश्मरी; दर्द; पाकाशय प्रभृति की खाद्‌-नालिका मार्ग होना; धनुष्टंकार, सान्निपातिक ज्वर; सरमें चक्कर आना।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—क्लोरल।

दोषघ्न।—ऐमिल नाइट्राइट, इपिकाक, मॉर्फि।

शक्ति।—निम्न क्रम।

कोलेस्टेरिनम्।

(CHOLESTERINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण,

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—पित्ताश्मरी; कामला; यकृतमें कैंसर का रोग; आँखके रोग।

शक्ति।—डा० बार्नेट और क्लार्कको ३x विचूर्ण व्यवहार कर बहुत लाभ मालूम हुआ है।

क्रोमिकम-आक्सिडेटम ।

(CHROMICUM OXYDATUM)

दूसरा नाम ।—क्रोमिक-आक्साइड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—क्रोमिक-ऐसिड और क्रोमिकम-आक्सिडेटम प्रायः समलक्षण सम्पन्न दवाएँ हैं । इसलिये इनके लक्षण अलग अलग नहीं लिखे गये । "ऐसिड-आक्सिडेटम" देखिये ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

सिकोरियम ।

(CICHORIUM)

दूसरा नाम ।—चिकोरि—एनडिव ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी छालसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक प्रकारका साग है । रतौंधी, सर-दर्द, कब्जियत, मानसिक और शारीरिक सुस्ती, वगैरह लक्षणमें लाभदायक है । इसका काढ़ा हलके विरेचकका काम करता है ।

शक्ति ।—मूल अर्क, निम्न-शक्ति और क्वाथ ।

साइक्यूटा-मेकुलेटा ।

(CICUTA-MACULATA)

दूसरा नाम ।—वाटर हेमेलाक ; स्पाटेड-काउबेन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गर्मीके दिनोंमें संग्रह की हुई जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—साइक्यूटा विरोसा और साइक्यू मेकुलेटा प्रायः सम लक्षण सम्पन्न दवाएं हैं, परन्तु धनुष्टङ्कार, अकड़न, मूर्च्छा वगैरहमें इसका ही व्यवहार अधिक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—साइक्यूटा-विरोसा, कोनायम, नय स्ट्रिकनिया।

शक्ति ।—१२—६।

साइक्यूटा वाइरोसा।
(CICUTA VIROSA)

दूसरा नाम । —वाटर हेमलक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— मूत्राधारका पक्षाघात ; कैन्सर या कर्कटीया जखम ; निसन्द वायु ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाका संघात या प्रदाह ; आक्षेप ; मृगी ; आँखकी बीमारी ; मुहासा ; हिचकी ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; सुप्त जैसा भाव ; अन्ननालीका अवरोध ; सूतिकाक्षेप ; चिल्लाना ; धनुष्टङ्कार ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना ; कृमिके उपसर्ग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—अपस्मार या मृगी ; कृमि या दाँत निकलनेकी वजहसे धनुष्टङ्कार या अकड़न ; ताण्डव रोग या प्रसवके बादका धनुष्टङ्कार वगैरह इसके प्रधान क्रियाफल हैं। आक्षेपके समय रोगी पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है ; देह भयङ्कर रूपसे घूमा करती है, रोगीको छूते ही उसे अकड़न पैदा हो जाती है (कार्बोनि, आक्सि-जेनिसेटम) ; एकाएक बेहोश हो जाता है और एकाएक श्वास-प्रश्वासकी क्रिया बिलकुल बन्द हो जाती है और रोगी मुर्देकी तरह दिखाई देता है। पाकाशयिक लक्षणोंमें अनपचवाली चीजें (जैसे कोयला, टिकिया, खड़िया) खानेकी बहुत इच्छा होती है, और यही सबसे बढ़िया भोजन मालूम होता है। बच्चा बड़े आनन्दसे ये सब कुखाद्य खाया करता है। इससे पैदा हुआ विकार ही एक विचित्र लक्षणसे भरा रहता

क्रोमिकम-आक्सिडेटम ।

(CHROMICUM OXYDATUM)

दूसरा नाम ।—क्रोमिक-आक्साइड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—क्रोमिक-ऐसिड और क्रोमिकम-आक्सिडेटम प्रायः समलक्षण सम्पन्न दवाएँ हैं। इसलिये इनके लक्षण अलग अलग नहीं लिखे गये। "ऐसिड-आक्सिडेटम" देखिये।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

सिकोरियम ।

(CICHORIUM)

दूसरा नाम ।—चिकोरि—एनडिव ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी छालसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक प्रकारका साग है। रतौंधी, सर-दर्द, कब्जियत, मानसिक और शारीरिक सुस्ती, वगैरह लक्षणमें लाभदायक है। इसका काढ़ा हलके विरेचकका काम करता है।

शक्ति ।—मूल अर्क, निम्न-शक्ति और क्वाथ ।

साइक्यूटा-मेकुलेटा ।

(CICUTA-MACULATA)

दूसरा नाम ।—वाटर हेमेलाक ; स्पाटेड-काउबेन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गर्मीके दिनोंमें संग्रह की हुई जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—साइक्यूटा विरोसा और साइक्यूटा मैकुलेटा प्राय: सम लक्षण सम्पन्न दवाएं हैं, परन्तु धनुष्टङ्कार, अकड़न, मूर्च्छा वगैरहमें इसका ही व्यवहार अधिक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—साइक्यूटा-विरोसा, कोनायम, नक्स, स्ट्रिकनिया।

शक्ति।—१२—६।

साइक्यूटा वाइरोसा।
(CICUTA VIROSA)

दूसरा नाम।—वाटर हेमलक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मूलाधारका पक्षाघात; कैन्सर या कर्कटोया जखम; निसन्द वायु; मस्तिष्क और मेरुमज्जाका संघात या प्रदाह; आक्षेप; मृगी; आँखकी बीमारी; मुहासा; हिचकी; मस्तिष्कावरण प्रदाह; सुन्न जैसा भाव; अन्ननालीका अवरोध; सूतिकाक्षेप; चिल्लाना; धनुष्टङ्कार; हनुस्तम्भ या दाँती लगना; क्रमिके उपसर्ग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—अपस्मार या मृगी; कृमि या दाँत निकलनेकी वजहसे धनुष्टङ्कार या अकड़न; ताण्डव रोग या प्रसवके बादका धनुष्टङ्कार वगैरह इसकी प्रधान क्रियाफल हैं। आक्षेपके समय रोगी पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है; देह भयङ्कर रूपसे घूमा करती है, रोगीको छूते ही उसे अकड़न पैदा हो जाती है (कार्बोनि, आक्सि-जेनिसेटम); एकाएक बेहोश हो जाता है और एकाएक श्वास-प्रश्वासकी क्रिया बिलकुल बन्द हो जाती है और रोगी मुर्देकी तरह दिखाई देता है। पाकाशयिक लक्षणोंमें अनपचवाली चीजें (जैसे कोयला, टिकिया, खड़िया) खानेकी बहुत इच्छा होती है, और यही सबसे बढ़िया भोजन मालूम होता है। बच्चा बड़े आनन्दसे ये सब कुखाद्य खाया करता है। इससे पैदा हुआ विकार ही एक विचित्र लक्षणसे भरा रहता

है। रह रहकर रोगीका माथा, पाकाशय, बाहु, पैर वगैरह एकाएक हिल उठते हैं। मस्तिष्क और मेरुदण्डके आघातकी वजहसे आक्षेपिक रोग और उद्भेदोंका पूरी तरहसे न निकलना या एकाएक गायब हो जानेके कारण मस्तिष्कके विकारमें भी यह बहुत लाभदायक है। शरीरकी त्वचाके ऊपर भी इसकी शक्ति प्रकाशित हुआ करती है, दाढ़ी या चिबुककी चौर क्षत (दूषित छुरेकी वजहसे हजामत बनवानेके जखम आदि)—खसड़ा (Eczema) वगैरहमें भी यह विशेष लाभदायक है। यह रोगीको बहुत ही सुस्त कर डालता है (डा० फेरिङ्गटन कहते हैं, कि किनिनम आर्सेनिकोसमके दैहिक अवसादके साथ साइक्यूटासे पैदा हुई सुस्तीकी तुलना हो सकती है)। यह दृष्टि शक्तिमें भी विकार पैदा कर दिया करता है। पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो अक्षर सब कभी कभी घूमते हैं, कभी ऊर्द्धगामी और कभी निम्न-गामी होते हैं, कभी कभी आँखोंसे दिखाई नहीं देता।

लक्षणावली।

मन।—मानसिक विकारकी वजहसे रोगी कभी कभी अद्भुत हँसाने वाले काम किया करता है, कभी गाता है, कभी नाचता है और कभी भाव बताता है। चिल्लाकर घरमें आफत मचा देता है। इसके अलावा किसी समय बाल सुलभ आनन्दके साथ शय्यासे उछल पड़ता है। विकारके समय रोता है या अस्पष्ट भावसे यन्त्रणासूचक शब्द किया करता है। स्थिर, प्रशान्त चित्त,—अपनी अवस्थासे अत्यन्त असन्तोष प्रकट किया करता है और ऐसा भाव दिखाता है, मानो न जाने कितना सुख उपभोग कर रहा है। शङ्कान्वित चित्त, दुःखकी कहानी सुनकर बहुत कातर हो पड़ता है। घरकी रखी सभी चीजें उसे नवीन और डरावनी मालम होती हैं। उदासीनता और विमर्ष भाव। सभी आदमियों पर सन्देह या अविश्वास करता है, किसीके पास जाना नहीं चाहता। अतीत और वर्त्तमानके प्रभेदका ज्ञान उसे नहीं रहता। भाव लोप। ज्ञान राहित्य या बेहोश हो जाना। अज्ञान सा हो पड़ता है और हाथ पैर ऐंठा करते हैं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—सरमें चक्कर आया करता है (आर्नि, बेल, ब्राइ, लाई, नैट्र-म्यू, नक्स, फास, वेरि, वेरेट) और गिर पड़ता है (ऐको, बेल, फेलेन, रास, सल्फिया—ऐसा मालूम होता है, मानो गिर जायगा—अलस) रह रहकर माथा हिल उठता है। मलनेकी तरह यन्त्रणा, पेंदा करने

आना और मिरोग करनेवाला। ललाटमें सर दर्द; स्थिर होकर बैठनेपर बढ़ जाना; सरमें दर्द का विषय सोचनेपर घट जाता है (सरमें दर्दका विषय सोचनेपर दर्द बढ़ जाता है=फॉस्फो)। एकाएक गोटियाँ या उद्भेद बैठ जानेकी वजहसे मस्तिष्कमें विकार या रोग पैदा हो जाना (पद्मम; सलफर; जिङ्कम)। मस्तिष्क और मेरुमज्जावरक झिल्लीका प्रदाह (डा० नेग कहते हैं, कि न्यूयार्कके अन्तर्गत मोरेविया शहरके सुप्रसिद्ध चिकित्सक डा० बेकरके मतसे साइक्यूटा वाइरोसा इस रोगकी एक अमोघ अव्यर्थ दवा है) धनुष्टङ्कार आदि आक्षेपिक रोगमें मस्तक घूमकर एक ओर टेढ़ा हो जाता है। छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलकर आपसमें मिल जाती हैं और उससे रस निकलकर सखी पपड़ी जम जाती है (वायोला ट्राई, विङ्काभाइनर) वायु निकलनेपर सरका दर्द घट जाता है। मस्तिष्कमें चोट लग जानेके कारण धनुष्टङ्कार (आर्निका)

आँख।—रोगी टकटकी लगाकर एक चीजकी ओर देखा करता है—(बोथि, गुयाइकेक, हेलियो, क्रियो, मार्क-कोर, मस्कास मानो डर गया है),—किसी तरह भी अपनी नजर फेर नहीं सकता। पुतली फैली रहती है या चैतन्य लोप रहता है। यदि खड़े होनेकी इच्छा हो तो बिना किसी चीजका सहारा लिये रोगी खड़ा नहीं रह सकता। क्योंकि सभी चीजें ऐसी मालूम होती है, मानो एक बार उसके पास आती हैं और फिर दूर हट जाती हैं (ऐगार)। चीजें दूनी बड़ी। (उससे बड़ी दिखाई देती हैं=हायो, लोरो—छोटी मालूम होती है=मस्कस) और काली दिखाई देती हैं (सभी चीजें गाढ़े अँधकारमें ढकी मालम होती हैं=लैक-कैन, लाई, पल्स) पढ़नेके समय अक्षर सब कभी घूमते हैं, कभी नीचे उतरते हैं और कभी चढ़ते हैं, और कभी कभी ऐसा मालूम होता है, कि अदृश्य हो गये (ककियु); पुस्तकके अक्षर इन्द्रधनुषकी तरह कितनेही रङ्गोंमें रंगे दिखाई देते हैं।

कान।—जोरसे बोले बिना बात सुन नहीं सकता। वृद्ध व्यक्तियोंका बहरापन; कर्ण विवरमें नाना प्रकारके धमककी आवाज (चिनोपोड, ग्रैफाइट, मेगो, सेब्राड, साइलि, सल्फ),—विशेषकर निगलनेके समय कर्ण विवरसे खून का स्राव होना (क्रोटेलस होर)।

मुख-मण्डल।—चेहरा लाल (ऐकी, बेल, कक्यु, ब्रम, फेर. हायो. नक्स. प्लेट, ष्ट्रेम)। मस्तक (वायोला-ट्राई, विङ्का-माई, रास, विन

मुखमण्डलमें (आर्नि, कैल्के-फास, क्रियो, ऐसिड-नाइ, टैरेक्स); चिबुकके ऊपर (क्लिमेट, क्रियो, मार्क) और दोनों ओठोंके संयोग-स्थलपर छोटे छोटे दाने एकत्र होकर, पपड़ीसे ढके जखममें परिणत होते जा रहे हैं। (कर्क्यु, टैरेक्स)। दांत निकलनेके समय मसूढ़ेसे मसूढ़ा या दाँतपर दाँत रगड़ता है; खूब कसकर दाँती लग जाती है—दोनों हनु खूब कसकर सट जाते हैं। मुंह खोल नहीं सकता।

गलेके भीतर।—सूखा (आर्स, चिनोपोड, नक्स-मस, ओलि-येन)। मछली या माँस खानेके समय तेज अस्थि खण्ड निकलते ही, अन्नवहानाली रुक जाती है और श्वास रोधका उपक्रम हो जाता है। अन्ननाली हमेशा सिकुड़ती और फैला करती है। कोई चीज निगल नहीं सकता। (कास्टि, आर्नि, आर्स, बेल, कैन्थ, कार्बो-वेज, हायो, कय प्रम, लैके, लोरो, स्ट्रैमो)।

पाकस्थली।—कोयला, टिकिया, खड़िया, वगैरह खानेकी बहुत अधिक इच्छा (ऐल्यू, सोरिनम)। बहुत प्यास। हिचकी इसकी साथ ही पाकाशयमें सिकुड़न, फैलना और वायु निकलना (इथूजा, सिक्रेम, मस्कस, नैट्र-मयू, ऐसिड-हाइड्रो, ऐसिड-सल्फ)। पाकाशयके भीतर जलन (कैन्थ, कैप, कार्बो-वेज, मार्क, नाइक्रम, फास सिकेल, आर्स)। पेटके ऊपरी प्रदेशमें टपक का दर्द होता है और भीतरसे हाथकी मुट्ठीकी तरह कुछ ऊँचा हो जाता है। (ऐमोन, कास्टि, अरम, हिप, जैब्रस, इफरूसस, नैट्र-मयू, पेट्रोल) पाकाशयमें जलन और दबाव मालूम होना या भार मालूम होना। पेट फूल उठता है। अम्लशूलके बाद धनुष्टङ्कार, विसूचिका,—ऊँची आवाजके साथ सांघातिक हिचकी; पर्यायक्रमसे वमन, और वक्षके पार्श्ववाली पेशीका सिकुड़ना और फैलना और पीछेकी ओर माथा टेढ़ा हो जाता है या दस्त बन्द हो जाने बाद, जब मस्तिष्क और वक्षमें बहुत अधिक रक्त सञ्चय होता है, उस समय आँखें घूमा करती हैं और श्वासकष्ट तथा अन्यान्य आक्षेपिक लक्षण प्रकट हो जाते हैं। कृमिकी वजहसे धनुष्टङ्कार (सिनासे लाभ न होनेपर)। दुर्दमनीय पेशाबके वेगके साथ सवेरेके समय उदरामय। मलान्त्रके भीतर खुजली (सिना, सैण्टो, टियुक्रि, इग्ने, कैल्के, स्टैन, साइलि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—धनुष्टंकार, आक्षेप, आँख हाथ पैर आदि और समूची भयंकर रूपसे चक्कर खाया करती है; चैतन्य लोप हो जाता है; देह

पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ी हो जाती है (ऐङ्गस्टियुरा, बेल, कार्बोनि-आक्सि, क्यूप्रम, इग्ने, इपिका, नक्स, स्टैन, स्ट्रिकनिन, स्ट्रैम, ओपि, रास,) और रोगीका शरीर स्पर्श करते ही (कार्बोनि,-आक्सिजेन, स्ट्रिकनिनम) या थोड़ा भी शब्दसे, या हिलाने डुलानेपर फिरसे अकड़न पैदा हो जाती है। प्रसवके बादका धनुष्टंकार,—रह रहकर श्वास प्रश्वास लोप हो जाता है और रोगिनी मुर्देकी तरह मालूम होती है; शरीरका ऊपरी अंश अधिक मरोड़ खाता है। सन्तान पैदा होनेके पहलेसे बाद तक आक्षेप हुआ करता है। अपस्मार या मृगी,—श्वास-यंत्र आदिसे विभेद करनेवाली (उदर विभाजक झिल्ली) के संकोचन और प्रसारणकी वजहसे पाकस्थली फूल उठती है; रोगी चिल्लाया करता है; चेहरा लाल या नीला हो जाता है; दाँती लगना, बेहोशी और मत्यङ्गोंमें भयानक चक्कर खाया करते हैं। रातमें रोगका बार बार आक्रमण होता है और पहले जल्दी जल्दी होता है क्रमसे बहुत दिनोंका अन्तर देकर हुआ करता है, आक्षेप आदिके बाद रोगी एकादम मुर्दा पड़ता है (चिनिन-आर्स, कार्बोनि-आक्सिजेनिसेटम) मेरुपुच्छ या मेरुदण्डके अन्तिम अंशमें चिलक मारनेकी तरह और छेदनेकी तरह यन्त्रणा होती है,—विशेषकर ऋतुके समय (चोटसे पैदा हुएकी तरह दर्द = कास्टि ; मानो इसी अंशसे एक भारी चीज झूल रही है = ऐरिस्टि-टार्ट ; दबानेपर दर्द मालूम होता है = साइलि ; बैठनेमें दर्द होता है और चलनेके साथ या छूनेपर दर्द बढ़ जाता है = कैलि-बाई)।

त्वचा ।—समूचे चेहरेमें मटरकी तरह दाने निकलते हैं और अन्तमें आपसमें मिलकर पीले रङ्गकी पपड़ी जमा हुआ जख्म पैदा (मेजेर, वायोला-ट्राई, विङ्का-माई, रास-वेन)। दाहिने pula) के ऊपर लाल रसभरी फुन्सियाँ निकलती हैं और उनको दर्द मालूम होता है। चर्मोद्भेद (Eruption) बैठ जानेकी वजहसे प्रदाह पैदा हो जाता है। शरीरमें काठकी सींक या काँटा धनुष्टंकार और हनुस्तम्भ पैदा हो जाता है (हाइपरि, स्ट्रिकनिन)। कुरेदे खजासत बनानेकी वजहसे चिबुकमें दाद हो जाना (सेसिलिन, कैल्के-कार्ब) । कर्कट-रोग,—स्नायु-प्रवण, अस्थिरमति रोगियोंका,—अर्बुद दबानेपर दर्द अधिक मालूम नहीं होता परन्तु बाहुमें बहुत दर्द, अकड़न रहती है और शान्ति नहीं रहती।

मुखमण्डलमें (आर्नि, कैल्के-फास, क्रियो, ऐसिड-नाइ, टैरेक्स); चिबुकके ऊपर (क्लिमेट, क्रियो, मार्क) और दोनों ओठोंके संयोग-स्थलपर छोटे छोटे दाने एकत्र होकर, पपड़ीसे ढके जखममें परिणत होते जा रहे हैं। (कर्क्यु, टैरेक्स)। दांत निकलनेके समय मसूढ़ेसे मसूढ़ा या दाँतपर दाँत रगड़ता है; खूब कसकर दाँती लग जाती है—दोनों हनु खूब कसकर सट जाते हैं। मुंह खोल नहीं सकता।

गलेके भीतर।—सूखा (आर्स, चिनोपोड, नक्स-मस, ओलि-यैन)। मछली या माँस खानेके समय तेज अस्थि खण्ड निकलते ही, अन्नवहानाली रुक जाती है और श्वास रोधका उपक्रम हो जाता है। अन्ननाली हमेशा सिकुड़ती और फैला करती है। कोई चीज निगल नहीं सकता। (कास्टि, आर्नि, आर्स, बेल, कैन्थ, कार्बो-वेज, हायो, क्यूप्रम, लैके, लौरो, स्ट्रैमो)।

पाकस्थली।—कोयला, टिकिया, खड़िया, वगैरह खानेकी बहुत अधिक इच्छा (ऐल्यू, सोरिनम)। बहुत प्यास। हिचकी इसके साथ ही पाकाशयमें सिकुड़न, फैलना और वायु निकलना (इथूजा, सिक्लेम, मस्कस, नैट्र-मयू, ऐसिड-हाइड्रो, ऐसिड-सल्फ)। पाकाशयके भीतर जलन (कैन्थ, कैप्स, कार्बो वेज, मार्क, नाइड्रम, फास सिकेल, आर्स)। पेटके ऊपरी प्रदेशमें टपक का दर्द होता है और भीतरसे हाथकी मुट्ठीकी तरह कुछ ऊँचा हो जाता है। (ऐमोन, कास्टि, अरम, हिप, जैल्स, इफयूसस, नैट्र-मयू, प्रैड्रोल) पाकाशयमें जलन और दबाव मालूम होना या भार मालूम होना। पेट फूल उठता है। अन्त्रशूलके बाद धनुष्टङ्कार, विसूचिका,—ऊंची आवाजके साथ सांघातिक हिचकी; पर्यायक्रमसे वमन, और वक्षके पार्श्ववाली पेशीका सिकुड़ना और फैलना और पीछेकी ओर माथा टेढ़ा हो जाता है या दस्त बन्द हो जाने बाद, जब मस्तिष्क और वक्षमें बहुत अधिक रक्त सञ्चय होता है, उस समय आँखें घूमा करती हैं और श्वासकष्ट तथा अन्यान्य आक्षेपिक लक्षण प्रकट हो जाते हैं। कृमिकी वजहसे धनुष्टङ्कार (सिनासे लाभ न होनेपर)। दुर्गन्धनीय पेशाबके वेगके साथ सवेरेके समय उदरामय। मलान्त्रके भीतर खुजली (सिना, सैण्टो, टियुक्रि, इग्ने, कैल्के, स्टैन, साइलि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—धनुष्टंकार, आक्षेप, आँख हाथ पैर आदि और समूची

पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ी हो जाती है। (ऐङ्गस्टियुरा, बेल, कार्बोनि-आक्सि, क्यूप्रम, इग्ने, इथिक, नक्स, स्टेन, स्ट्रिकनिन, स्ट्रेम, ओपि, टाब,) और रोगीका शरीर स्पर्श करते ही (कार्बोनि-आक्सिजेन, स्ट्रिकनिनम) या थोड़ा भी शब्दसे या हिलाने डुलानेपर फिरसे अकड़न पैदा हो जाती है; शायद बादका धनुष्टंकार,—रह रहकर श्वास प्रश्वास लोप हो जाता है और रोगिणी मुर्देकी तरह मालूम होती है; शरीरका ऊपरी अंश अधिक मरोड़ खाता है। सन्तान पैदा होनेके पहलेसे बाद तक आक्षेप हुआ करता है। अपस्मार या मृगी,—श्वास-यंत्र आदिसे विभेद करनेवाली (उदर विभाजक झिल्ली) के संकोचन और प्रसारणकी वजहसे पाकस्थली फूल उठती है; रोगी चिल्लाया करता है; चेहरा लाल या नीला हो जाता है; दांती लगना, बेहोशी और प्रत्यङ्गोंमें भयानक चक्कर खाया करते हैं। रातमें रोगका बार बार आक्रमण होता है और पहले जल्दी जल्दी होता है क्रमसे बहुत दिनोंका अन्तर देकर हुआ करता है, आक्षेप आदिके बाद रोगी एकदम सुस्त पड़ता है (सिनिन-आर्स, कार्बोनि-आक्सिजेनिसेटम) मेरुपुच्छ या मेरुदण्डके अन्तिम अंशमें चिलक मारनेकी तरह और छेदनेकी तरह यन्त्रणा होती है,—विशेषकर ऋतुके समय (चोटसे पैदा हुएकी तरह दर्द=कास्टि; मानो इसी अंशसे एक भारी चीज झूल रही है=ऐण्टि-टार्ट; दबानेपर दर्द मालूम होता है=साइलि; बैठनेमें दर्द होता है और चलनेके साथ या छूनेपर दर्द बढ़ जाता है=कैलि-बाइ)।

त्वचा।—समूचे चेहरेमें मटरकी तरह दाने निकलते हैं और अन्तमें आपसमें मिलकर पीले रङ्गकी पपड़ी जमा हुआ जखम पैदा हो जाता है (मेजिर, वायोला-ट्राइ, विङ्का-माइ, रास-वेन)। दाहिने पृष्ठफलककी (Scapula) के ऊपर लाल रसभरी फुन्सियाँ निकलती हैं और इनको छूनेसे बहुत दर्द मालूम होता है। चर्मोद्भेद (Eruption) बैठ जानेकी वजहसे मस्तिष्कमें प्रदाह पैदा हो जाता है। शरीरमें काठकी सांक या कांटा गड़नेकी वजहसे धनुष्टंकार और हनुस्तम्भ पैदा हो जाता है (हाइपेरि, स्ट्रिकनिन)। दूषित छुरेसे हजामत बनवानेकी वजहसे चिबुकमें दाद हो जाना (सेसिलिन, कैल्के-कार्बो)। कर्कट-रोग,—स्नायु-प्रधान, अस्थिरमति रोगियोंका,—अर्बुद दबानेपर दर्द अधिक मालूम नहीं होता परन्तु बादमें बहुत दर्द, अकड़न रहती है और शक्ति नहीं रहती।

निद्रा ।—बच्चा रातमें नींदमें चिल्लाकर रो उठता है (ऐको, अरम, ब्रोमिटम, क्लोरैलम) ।

वृद्धि ।—छूनेपर (कार्बोनि- आक्सि, स्ट्रिकनिन) । बहुत सामान्य शब्द से (रोगीसे बोलनेपर=कार्बोनि-आक्सिजेन) । शरीर हिलाते ही (दूसरी जगह जानेकी चेष्टा करनेपर=स्ट्रिकनिन) और तम्बाकूके धुएंसे (इग्नेशिया) ।

सम्बन्ध —सदृश ।—ऐसिड-हाइड्रो, हाइपिरिक, कार्बोनियम आक्सि, स्ट्रिकनिनम, इग्ने, नक्स-वामिका । प्रतिविष या दोषघ्न=आर्नि, ओपि ।

तुलनीय ।—कोनायम, थूय़ुजा, हाइपि (मेरुदण्डीय संघात); हायोसा (संकोचन); हेलिबो (शरीरकी वक्रगति और आक्षेप); नक्स (धनुष्टंकार), इत्यादि ।

शक्ति ।—प्रथम दशमिक और ६ ठीसे ३०, २०० शततमिक क्रम तक ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३५ से ४० दिन ।

साइमेक्स लेक्टियुलारियस ।
(CIMEX LECTULARIUC)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित खटमलका विचूर्ण या तरल क्रम ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—कब्जियत, खांसी ; अर्श ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारियां ; रेतःक्षरण, चर्मरोग, खुजली ।

उपयोगिता और आभास ।—सविराम ज्वरमें लाभके लिये यह प्रसिद्ध है और इसका विशेष लक्षण यह है,कि जाड़ा लगनेके कुछ ही पहले रोगी का क्रोध बहुत बढ़ जाता है और हाथ पैर आदि लगातार फैलाया या हिलाया करता है। (हस्त=ऐमोन-कार्ब, ऐमिल, बेल, सेबाड, टेबाक, वार्बस ; पैर=ऐसिड-सल्फ,) और दोनों पैरोंकी कण्डरा और पेशियाँ सभी ऐसा मालूम होता है कि छोटी और संकुचित हो गयी हैं (डा० नैशने भी इसका उल्लेख किया है) (ऐमोन-म्यू ऐमोन-कार्ब, कास्टि, गुयाइक, नेट्र-कार्ब) इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं (१) दाहिनी ओर रोगका अधिक आक्रमण होता है (२)

बोखारकी शीतावस्थामें बहुत तेज सर दर्द होता है—तकलीफसे रोगीकी चिन्ता शक्ति एकदम गायब हो जाती है। पानी आदि पीनेसे तकलीफ बढ़ आया करती है (३) यकृत मानो मोच खा गया है, ऐसा मालूम होना, छूने और खांसनेपर बहुत दर्द होता है। (४) मलका कड़ापन,—मल सूखा, सुपारीकी गांठ जैसा और प्रत्येक वेगमें एक एक गांठ सी निकलती है (चेलिडो, ओपि, प्लम्ब, थूजा) (५) खांसी,—गलरोध, वायु निकलने और वमनके साथ (ड्राइं, ड्रोसेरा, केलि-कार्व) ; बलगम पीवकी तरह ; रोज बोखारकी प्रकोपावस्थामें खांसी पैदा हो जाती है (६) दुर्दमनीय निद्रालुता और तन्द्राका भाव—(ऐण्टि-टार्ट, नक्स-मस)

लक्षणावली।

मन।—ज्वराधिकारमें जाड़ा लगनेके पहले रोगी बहुत मानसिक बेचैनी और असन्तोष प्रकाट करता है और क्रोध आजानेकी वजहसे सभी चीजें तोड़-फोड़ करनेकी चेष्टा करता है।

मस्तक।—ललाटमें होनेवाला सर दर्द,—ऐसा मालूम होता है मानो भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है (बेल, ब्राइं, कैल्के, कैल्के-कार्ब, ऐसिड-फ्लू, नक्स-मोस, साइलि),—पानी और लेमोनेड आदि पीनेकी वजहसे =ऐको ; दूध आदि पीनेकी वजहसे=ब्रोमम, शराब पीनेकी वजहसे=ऐगार, कार्बो-वे, नक्स, धूम्रपानकी वजहसे=ऐको, ऐण्टि-क्रूड, इग्ने। सर दर्दकी तेजीकी वजहसे चिन्ता शक्ति गायब हो जाती हैं। ठण्डी चीज द्वारा दबानेसे आराम मालूम होता है।

नाक।—आधे घण्टेतक लगातार छींक आया करती है। लगातार पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है और ललाटके नीचे दबाव या भार मालूम होता है।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—जीभ मैली, सफेद लेप चढ़ी और ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ फूल गयी है और जल गयी है। स्वर-नालीमें पिट पिट करनेके कारण लगातार सूखी खांसी आया करती है, ज्वरको उत्तापावस्थाके अन्ततक खांसी आती है, और पानी पीनेपर बढ़ जाती है। (आर्स, ब्राइं, ड्रोसेरा, लैके, सिड्रो, सिफाइटिस, फास) गलेके भीतर बहुत ज्यादा

निद्रा ।—बच्चा रातमें नींदमें चिल्लाकर रो उठता है (ऐको, अरम, ब्रोमिटम, क्लोरैलम) ।

वृद्धि ।—छूनेपर (कार्बोनि- आक्सि, स्ट्रिकनिन) । बहुत सामान्य शब्द से (रोगीसे बोलनेपर=कार्बोनि-आक्सिजेन) । शरीर हिलाते ही (दूसरी जगह जानेकी चेष्टा करनेपर=स्ट्रिकनिन) और तम्बाकूके धुएसे (इग्नेशिया) ।

सम्बन्ध —सदृश ।—ऐसिड-हाइड्रो, हाइपिरिका, कार्बोनियम आक्सि, स्ट्रिकनिनम, इग्ने, नक्स-वामिका । प्रतिविष या दोषघ्न=आर्नि, ओपि ।

तुलनीय ।—कोनायम, इथूजा, हाइपि (मेरुदण्डीय संघात); हायोसा (संकोचन); हेलिबो (शरीरको वक्रगति और आक्षेप); नक्स (धनुष्टंकार), इत्यादि ।

शक्ति ।—प्रथम दशमिक और ६ ठीसे ३०, २०० शततमिक क्रम तक ।

क्रियाका स्थायित्व ।—२५ से ४० दिन ।

साइमेक्स लेक्टियुलारियस ।

(CIMEX LECTULARIUC)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित खटमलका विचूर्ण या तरल क्रम ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—कब्जियत, खाँसी ; अर्श ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारियाँ ; रेतःक्षरण, चर्मरोग, खुजली ।

उपयोगिता और आभास ।—सविराम ज्वरमें लाभके लिये यह प्रसिद्ध है और इसका विशेष लक्षण यह है,कि जाड़ा लगनेके कुछ ही पहले रोगी का क्रोध बहुत बढ़ जाता है और हाथ पैर आदि लगातार फैलाया या हिलाया करता है । (हस्त=ऐमोन-कार्ब, ऐमिल, बेल, सैबाड, टेबाक, वार्बस ; पैर= ऐसिड-सल्फ,) और दोनों पैरोंकी कण्डरा और पेशियाँ सभी ऐसा मालूम होता है कि छोटी और संकुचित हो गयी हैं (डा० नैशने भी इसका उल्लेख किया है) (ऐमोन-म्यू, ऐमोन-कार्ब, कास्टि, गुयाइक, नैट्र-कार्ब) इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं (१) दाहिनी ओर रोगका अधिक आक्रमण होता है (२)

बोखारकी शीतावस्थामें बहुत तेज सर दर्द होता है—तकलीफसे रोगीकी चि शक्ति एकदम गायब हो जाती है। पानी आदि पीनेसे तकलीफ बढ़ जा करती है (३) यकृत मानो मोच खा गया है, ऐसा मालूम होना, छूने खाँसनेपर बहुत दर्द होता है। (४) मलका कड़ापन,—मल सूखा, सुपारी गांठ जैसा और प्रत्येक वेगमें एक एक गांठ सी निकलती है (चेलिडो, श्री प्रम्ब, थूजा) (५) खाँसी,—गलरोध, वायु निकलने और वमनके साथ (ब्रा ड्रोसेरा, केलि-कार्ब); बलगम पीबकी तरह; रोज बोखारकी प्रकोपावस्थ खाँसी पैदा हो जाती है (६) दुर्दमनीय निद्रालुता और तन्द्राका भाव (ऐण्टि-टार्ट, नक्स-मस)

लक्षणावली।

मन।—ज्वराधिकारमें जाड़ा लगनेके पहले रोगी बहुत मानसिक धैर्य और असन्तोष प्रकट करता है और क्रोध आजानेकी वजहसे सभी चीजें तोड़ फोड़ करनेकी चेष्टा करता है।

मस्तक।—ललाटमें होनेवाला सर दर्द,—ऐसा मालूम होता है मानो भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है (बेल, ब्राई, कैल्के, कैल्के-कार्बि ऐसिड-फ्लू, नक्स-वोम, साइलि),—पानी और लेमोनेड आदि पीनेकी वजहसे =ऐको; दूध आदि पीनेकी वजहसे=ब्रोमम, शराब पीनेकी वजहसे=ऐगार कार्बो-वे, नक्स, धूम्रपानकी वजहसे=ऐको, ऐण्टि-क्रूड, इग्ने। सर दर्दकी तेजीकी वजहसे चिन्ता शक्ति गायब हो जाती हैं। ठण्डा चोज द्वारा दबानेसे आराम मालूम होता है।

नाक।—आधे घण्टे तक लगातार छींक आया करती है। लगातार पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है और ललाटके नीचे दबाव या भार मालूम होता है।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—जीभ मैली, सफेद लेप चढ़ी और ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ फूल गयी है और जल गयी है। स्वर-नालीमें पिट पिट करनेके कारण लगातार सूखी खाँसी आया करती है, ज्वरकी उत्तापावस्थाके अन्ततक खाँसी आती है, और पानी पीनेपर बढ़ जाती है। (आर्स, ब्राई, ड्रोसेरा, लेके, सिङ्को, सिफाइटिस, फास) गलेके भीतर बहुत ज्यादा

परिमाणमें खाद्य हीन श्लेष्मा संचित हुआ करता है और सवेरे अनायास ही निकलता है।

मलान्त्र ।—कब्जियत,—मल सुपारीकी तरह गांठ गांठ,—बहुत कष्टसे गांठ निकलती है और मलद्वार रुक जाता है।

श्वास-यंत्र ।—सवेरे खुस खुसी खाँसीके साथ वक्षोस्थिके नीचे ऐसा मालूम होना मानो कोई खरोच रहा है।

ज्वर ।—बोखारमें, जाड़ा लगनेके समय रोगी मुट्ठी बाँध लेता है, और बहुत क्रोध प्रकट किया करता है। समूची देहमें जाड़ा मालूम होता है और जानुदेश पर बहुत ठण्ढा मालूम होता है,—मानो जानुके ऊपर ठण्ढी हवा लगती है (ऐसिड-वेन) जानुमें अत्यन्त दर्द होता है (पोडो); सभी सन्धियोंमें बहुत दर्द,—मानो कण्डार (मांस-पेशीका अगला भाग) बहुत छोटा हो गया है (ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-मयू, कास्टि, गुइयाक, नेट्र-कार्ब),—विशेषकर जानुके नीचेकी दोनो कण्डरामें। सोनेपर जाड़ा बढ़ जाता है, (सोनेपर जाड़ा घटता है=कैलि-कार्ब)। उत्तापावस्थामें मस्तक स्वरनालीमें पिट पिट कर सूखी खांसी आया करती है (ऐको, इपिक; शीतावस्थामें खांसी=ब्राई, सोरि, रास, सेबाड, सैम्बिवु; पसीनेवाली अवस्थामें खांसी=ड्रोसेरा; निज्वरावस्थामें खांसी=सिना, ड्रोसेरा, युपेट, पल्स)। पानी पीनेपर खाँसी बढ़ जाती है (आर्स, ब्राई, ड्रोसे, लैके, सिक्वी, सिफाई)। प्यास अत्यन्त परन्तु तकलीफ बढ़ जानेके डरसे रोगी पानी पीनेके लिये शरीर हिलाना नहीं चाहता। निज्वरावस्थामें प्यास (डालका); शीतावस्थामें थोड़ी (एपिस आर्नि, कैप्स, इग्ने, वेरेट); उत्तापावस्थामें और भी कम प्यास रहती है (आर्स नेट्र-मयू) और पसीनेवाली अवस्थामें बिलकुल ही नहीं रहती (एपिस, कैल्के, कैप्स, सिना, इग्ने, नक्स, सैम्बिवु, वेरेट); पसीना बहुत बदबूदार (आर्नि, वेराई, कार्बो-ऐन, डालका, ग्रैफ, लैके, लाई, मार्कु, ऐसिड-नाई, नक्स, रास, सिपि, साइलि; प्याजकी गन्ध=बोवि, लैके, लाई, पूतिगन्धयुक्त=स्टैफ)। उत्तापके बाद ही रोगी बहुत भूखा हो जाता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐमोन-मयू, कास्टि, एपिस, डालका, युपेटो-पार्फोल।

तुलनीय।—नैट्रम (सरमें दर्द पसीनेवाली अवस्थामें घटता है); आर्सेनिक (पसीनेवाली अवस्थामें बढ़ जाता है); बेल; (टपक) आर्स और नायो।

शक्ति।—६ ठा से ५०० क्रम।

सिना।
(CINA)

दूसरा नाम।—इसको वर्म सीड (Worm seed) कहते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—आर्टिमिसिया जातिके वृक्षसे मदर टिंचर तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—गहरे काले केशवाला बालक, प्रकृति उग्र; बच्चा केवल गोदमें चढ़कर घूमना चाहता है, पर उसे आराम नहीं मिलता। उसको यह इच्छा नहीं होती; कि कोई उसे छुए; किसीको पास नहीं आने देता; राक्षसकी तरह भूख, पेशाब गदला इत्यादिमें उपयोगी है। आँतोंमें महीन कृमिके रोगकी यह एक अद्वितीय दवा है। रोग या तकलीफ बतानेवाला चेहरा, आँखके नीचे फैला हुआ नीला या काला दाग, दाँत कड़-मड़ाना और राक्षसी भूख—ये कृमि ग्रस्त रोगियोंके प्रधान लक्षण हैं। हाथ पैरों की जोरकी ऐंठन, चेहरा मलिन, नींदमें दाँत कड़मड़ाना इसका एक और भी लक्षण है। इसके सेवनसे रोगीकी आंतोंकी रोगी ग्रन्थियां और स्नायु सब स्वाभाविक अवस्थामें आ जाती हैं; इसलिये आंतोंकी श्लैष्मिक झिल्लीसे जो रस निकला करता है, वह कृमिके भोजनके उपयुक्त नहीं होता। इसी वजहसे कृमि सब भूखों मर जाती हैं, और कितनी ही बार मलके साथ निकल जाती हैं; परन्तु सब कृमिमें इससे कोई लाभ नहीं होता। उसमें स्पाइजिलिया, स्टैनम, इग्ने, इण्डिगो; कोआसिया प्रभृतिकी सहायता लेनी पड़ती है। नीचे लिखे कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं, (१) बच्चा बहुत क्रोधी और चिड़चिड़ा रहता है, (२) रातमें नींदमें इस तरह चौंक उठता है, मानो डर गया हो; फिर उसको सहजमें सुलाया नहीं जा सकता। (३) यदि कोई उसे छूता है, गोदमें उठाता

है या प्यार करता है; तो अत्यन्त असन्तोष प्रकट करता है। (४) मीठा अत्यन्त प्रिय मालूम होता है। (५) पेट गर्म रहता है; नाभीके ऊपरी अंशमें हाथ नहीं लगाने देता; शूलकी तरह दर्द मालूम होता है; हाथसे दबानेपर उसे आराम मिलता है। (६) मलद्वारमें असह्य सुरसुरी, ठंढे जलके प्रयोगसे आराम मालूम होना (७) पेशाब गदला, सफेद और रखनेपर दूधकी तरह मालूम होता है। (८) अनजानमें पेशाब हो जाना; शय्यामें पेशाब कर देना। (९) ज्वराधिकारमें चेहरा ठण्डा और हाथ गर्म मालूम होता है। (१०) मुंहकी पेशियां सब संकुचित रहा करती हैं।

लक्षणावली

मन ।—संध्याके समय और आधी रातके समय रोगी इस तरहसे शय्या से घबराकर उठ बैठता है, मानो डर गया हो, कल्पनाके कारण नाना-प्रकारकी भ्रम-भरी चीजें देखता है, चिल्लाता है और रोता है, तेजीसे बोलता है, और सदा शङ्कित चित्त रहता है। बच्चेको किसीका स्पर्श सहन नहीं होता (ऐण्टि-क्रुड, एपिस, आर्नि, बेल, लैके, नक्स-मस, नक्स-वोम, सैनिक, टिल्यूरियम थूजा); कोई उसके पास जाता है, तो नाराज हो जाता है; कितनी ही चीजोंकी प्रार्थना करता है, परन्तु देनेपर नहीं लेता (ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, कैमो, डालका, रियुम, स्टेफि); किसी तरह सन्तुष्ट नहीं रहता, हमेशा ही मानो दुखी रहता है। दुर्विनीत चित्त; गोदमें लेकर घूमने कहता है; परन्तु इससे उसे आराम नहीं मिलता; प्यार करनेपर चिढ़ उठता है। हमेशा चिन्ता युक्त मानो न जाने कितना अपराध किया है (आर्स, चेलिडो, नक्स, रियुटा, जिङ्कम)। बच्चा हमेशा रेंरियाया रोया करता है।

मस्तक ।—ऐसा सर दर्द मानो बेहोश हो जायगा,—विशेषकर ललाटमें,—इसके बाद सरके पीछेकी ओर भी दर्द मालूम होता है। सिलाई वगैरह कामोंमें बहुत देरतक टकटकी लगाकर देखते रहनेपर, वक्षस्थल और पीठमें दर्दके साथ सरमें दर्द (रियुटा देखो)। दबानेपर दर्द बढ़ जाता है। बच्चा हमेशा एक ओर माथा लटका दिया करता है। सरका दर्द बन्द होनेपर, पेटमें दर्द आरम्भ होता है। माथा झुकानेपर कुछ देरके लिये आराम मिलता है। (मेजर)। मूर्द्धदेशमें बहुत दबाव मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो किसीने जोरसे दबा रखा है—दबानेपर दर्द बढ़ जाता है।

आंख।—तिर्यक (टेढ़ा) देखना ;—अन्त्राशयमें क्रिमिकी वजहसे खुजली (स्पाइजि)। टकटकी लगाकर बहुत देरतक देखते रहनेपर दृष्टि धुंधली हो जाती है। पर आंख मलनेपर, यह अस्पष्टता दूर हो जाती है (कौष्टि, क्रोक, पलस, फास)। सभी चीजें पीली दिखाई देती हैं, (कोन्य, डिजि, सेन्टोनाइन)। आंखकी पुतली फैली रहती है, (संकुचित—साइक्यूटा)। अस्वाभाविक रूपसे इन्द्रिय परिस्थितिके कारण क्षीण दृष्टि।

नाक।—हूप खांसी, रोगमें बार बार छींक (बेल)। लगातार नाक खोंटा करता है और मला करता है (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वे, टियुक्रि, ग्रैनेट, सैबाड, स्पाइ); यहां तक कि कभी कभी खोंट खोंटकर खून निकाल देता है (अरम)।

मुखमण्डल।—मुख पीला; दोनों ओठोंके चारो ओर तकलीफ बताने वाली एक फैली हुई सफेद और नीले रङ्गकी रेखा दिखाई देती है (दृश्य देखो)। दोनों आंखोंके चारो ओर नीलापन या कालादाग; एक गाल लाल और दूसरा मलिन और सफेद (कैमो)। चेहरा मलिन और ठण्डा, और ठण्डे पसीनेसे भरा।

मुंहके भीतर।—दांत कड़मड़ाता है,—खासकर नींदवाली अवस्था में (आर्स, साइक्यूटा, पोडो, हायो, स्ट्रैमो) लगातार ऐसा मालूम होता है, कि गलेके भीतर कुछ है, बार बार घूंट लेता है और खांसा करता है। ऐसा अनुभव होता है, मानो गलेमें कुछ भरा हुआ है (बेराई, बेल, कैमो, ग्रैफ, हिप, इग्ने, लैके, लोबे, मार्क, नैट्र-म्यू, नक्स, प्लम्ब, सैबाड, सिपि, स्पाइजि, सल्फ)। जीभपर बहुत पतला सफेद लेप चढ़ा रहता है, जीभके कांटे सब उठे रहते हैं और दोनों पार्श्व लाल रहते हैं।

पाकस्थली।—बार बार भूख लगना; भोजनके कुछ ही देर बाद फिर भूख लग आती है (बोवि, कैल्के, कास्टि, किनिन-सल्फ, लैके, मार्क, फास, प्लम्ब, स्टैफ, स्ट्रैन); मिठाई (कैलि-कार्ब, लाइको) और बहुतसे अखाद्य पदार्थ खानेकी इच्छा, बच्चा स्तन नहीं पीना चाहता (मार्क, साइलि, स्टैन) उदरके उपरी प्रदेशमें दर्द,—सबेरे नींद खुलनेके कुछ ही देर बाद और भोजनके बाद बढ़ जाता है। खाने पीनेके कुछ ही देर बाद पाखाना लग आता है (पोडो, इग्यूर; भोजनके बाद=आर्स, सिङ्को; भोजन करना आरम्भ करनेपर =फेरम)। खाने पीने बाद वमन और उदरामय—क्रिमि, खाये हुए पदार्थ,

श्लेष्मा और पित्तकी के होती है। कृमिकी वजहसे नाभि-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है (स्पाइजि)। बच्चोंका पेट फूला और कड़ा रहता है। भूखके समय उदरमें बहुत ही अस्वाच्छन्द मालूम होता है, (खाली रहनेपर=पल्स)। ज्वरके समय बार बार वमन होता है; जीभ मैली नहीं रहती (इपिक)।

मल ।—सफेद रङ्गका और श्लेष्मा मिला ; आवाजके साथ एकाएक सब पदार्थ बाहर निकल जाते हैं ; कभी कभी लाल रङ्गका श्लेष्मा मय मल निकलता है ;—बच्चोंको दाँत निकलनेके समय कब्जियत और उदरामय पर्याय क्रमसे पैदा हो जाते हैं। मलके साथ मलिनता या केचुआ कृमि निकलता है। मलद्वारमें बहुत सुरसुरी होती है (साइक्यु, सैण्टोनिन, टियुक्रि, साइ, स्टैन, इग्ने, कैल्के, इंडिगो, कोयाश्रिया)। सफेद रंगका पानीकी तरह मल (सिङ्को, ऐसिड-फास, रास)।

पेशाब ।—रातमें निद्रितावस्थामें अनजानमें पेशाब हो जाता है। पेशाब पहले गदला और कुछ देर बाद दूधकी तरह गाढ़ा और सफेद हो जाता हैं ; कभी सफेद रङ्गका गाढ़ा पेशाब भी होता है,—सफेद रङ्गका लासकी तरह पेशाब । (मठाकी तरह=फास)

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु बहुत जल्दी जल्दी प्रकट होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है। यौवनोद्गमके पहले जरायुसे रक्त-स्राव।

श्वास-यंत्र ।—सूखी खाँसी और छींक (ऐसरेग, वेल, हेराक्लियम) रह रहकर खाँसी आती है और कण्ठ-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है ; प्रत्येक वसन्त और हेमन्त ऋतुमें नियमित रूपसे खाँसी आती है, बच्चा बोलना या हिलना नहीं चाहता,—कहीं खाँसी न आने लगे, (ब्राइ)। खाँसी आनेके पहले बच्चेका शरीर कड़ा हो जाता है और अकड़ जाता है। हूप खाँसी,—सवेरे उसका प्रकोप अधिक रहता है। पर काफ नहीं निकलता, सन्ध्याके समय बड़े कष्टसे सफेद आभा लिये, कभी कभी खून मिला काफ निकलता है ; सवेरे और सन्ध्याके समय खाँसी बढ़ जाती है, रातके समय घटती है। पानी आदि पीनेसे खाँसी बढ़ जाती है (आर्स, ड्रोसेरा, लैके, सिङ्को, मिफाइटिस ; ठण्डे पानीसे वृद्धि=एमोन-म्यू, कार्बो-वे, सिलि, स्क्विला), निर्मल वायुमें टहलनेपर (हिप कैल्-म्यू, स्टैन, लैके, एसिड-सल्फ, ऐल्यू, सल्फ, साइ) और कण्ठदेशमें छूनेपर खाँसी बढ़ जाया करती है (लैके)। ठण्डी हवा आदि लगनेकी वजहसे स्वर-

लोप (ऐको, फास, स्प्रिया) और ऐसा मालूम होना, मानो गलेमें पर झड़ा हुआ है (ऐमोन-कार्ब, केल्कि, हम्ने)। क्रुप खाँसीमें—खाँसनेके बाद गलेसे लेकर पाकस्थली तक गड़ गड़ शब्द, खड़े होने और बोलने (ऐनाक, कास्टि, कैमो, सिन्नो, डिजि, लेके, मैंङ्ग, मिफाइट, मार्क, फास, साइलि, स्टेन, बेराइटा, हिपर, ऐसिड-मूर, नेट्र-मूर, सल्फ); हँसने (सिङ्कोना, ड्रोसे, फास, स्टेनम) वगैरह कारणोंसे भी खाँसी बढ़ जाती है, खाँसीके बाद शिशु हाँफा करता है (ऐसिड-मूर, ऐसिड-सल्फ) और उसका चेहरा सफेद या रक्तहीन हो जाता है (नीला हो जाता है=क्लोरेल, ड्रोसे, इपिक, ओपि, वेरेट ; लाल हो जाता है=बेल, कोना)।

प्रत्यङ्ग आदि।—धनुष्टङ्कार—प्रसारक (Extensor) पेशियाँ सब सिकुड़ा और फला करती हैं ; बच्चा एकाएक अकड़ जाता है और इसके गलेके भीतरसे पेटके नीचेतक कलकल शब्द हुआ करता है ; मानो किसीने बोतलसे पानी ढाल दिया है। मृगीकी तरह आक्षेप, अधिकांश स्थानोंमें रातमें रोगी चिल्ला उठता हैं (साइक्यूटा) और हाथ पैर आदि जोर से और बड़े वेगसे सिकोड़ा और फैलाया करता है। सभी प्रत्यङ्गोंमें बिजलीकी तरह दर्द एकाएक फैल जाता है और उस अङ्गको सुन्न कर देता है, रोगी एकाएक उछल पड़ता है,—मानो भयानक दर्द हुआ है।

निद्रा।—कृमि-ग्रस्त बच्चा पट सोना पसन्द करता है। बच्चा सोया सोया जोरसे रो उठता है, मानो बहुत डर गया है (ऐको, असम-ब्रोम, ब्राई, कैमो, साइक्यू, ऐण्टि-टार्ट, फास, जिङ्कम, क्लोरेलम)। निद्रितावस्थामें दाँत कड़मड़ाता है (साइक्यूटा,साइजि, पोडो, हायो, स्ट्रैम, सैण्टो)।

ज्वर।—शीतावस्था,—शीतल रक्तहीन मुखमण्डल और गर्म हाथोंके साथ शीतका पैदा हो जाना,—अधिकांश स्थानोंमें सन्ध्याके समय होता है;—बाहरी उत्ताप (सेंकना आदि) से जाड़ा नहीं घटता (बाहरी उत्तापसे घटता है=इग्ने ; बढ़ता है=इपिक)। उत्तापावस्था,—मुखमण्डलमें और माथेमें ज्यादा गर्मी मालूम होना। पसीनेवाली अवस्था,—साधारणतः पसीना बहुत ठण्ढा होता है,—ललाटमें, नाकके चारों ओर और हाथमें पसीना होता है। ज्वरके समय कै होती है और भूख ज्यादा रहती है। प्यास,—केवल शीतावस्था में (इग्ने) या उत्तापावस्थामें। हृत्पिण्डकी कांपने जैसी गति।

वृद्धि ।—रातमें, पानी पीनेपर, एक दृष्टिसे सुईके काम करनेपर (रियुटा) बोलने या हँसनेपर ।

सम्बन्ध—हूप-खांसीमें ड्रोसेराके प्रयोगसे रोगका प्रकोप घट जाने पर सिनाका प्रयोग करना चाहिये । सर्दी लग जानेके कारण यदि स्वरलोप हो जाये = ऐकोनाइटम ; फास्फोरस और स्त्रिजयासे विशेष लाभ न होनेपर सिनासे फायदा होता है । क्रमि रोगमें सिनासे लाभ न होनेपर प्रायः देखा जाता है, कि सैण्टोनिनम, टियु-क्रियम, मेरम-विरम और स्पाइजिलियासे और कभी कभी स्टैनमसे भी विशेष लाभ हुआ करता है । पर छोटी क्रिमिमें इग्निगो, कोयाशिया वगैरहका प्रयोग करना चाहिये ।

सदृश ।—ऐसिट-क्रूड, ऐसिट-टार्ट, कैमो, क्रियो, साइलि, स्टैफ, इग्ने, स्पाइजि, स्टैन ।

दोषघ्न ।— कैप्सि ; चायना ; कैम्फर ।

शक्ति ।—निम्न क्रमसे २०० क्रम (शततमिक) । परन्तु सैण्टोनिनम १ म से ३ रा दशमिक विचूर्ण ।

क्रियाका स्थायित्व ।—१४ से २० दिन ।

सिनकोना आफिसिनेलिस या चायना ।

(CINCHONA OFFICINALIS or CHINA)

दूसरा नाम ।—पेरुवियन बार्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी छालसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— फोड़ा ; मदात्यय ; क्षीण-दृष्टि ; खूनकी कमी ; मुंहका जखम ; सन्यास ; क्षुधामें गड़बड़ी ; दमा ; पित्त-विकार ; सर्दीकी बीमारी ; बेहोशी ; कब्जियत ; खांसी ; कमजोरी ; प्रलाप ; अतिसार ; शोथ ; अजीर्णता ; कानकी बीमारी ; बहरापन ; स्वप्नदोष ; विसर्प ; चेहरेका स्नायुशूल ; पित्तशिला (पित्त-पथरी) का शूलका दर्द ; खूनी बवासीर ; सर दर्द ; क्षय ज्वर ; वंक्षण-सन्धिकी

बीमारी; ध्वजभङ्ग; बहुव्यापक सर्दी; सविराम ज्वर; कामला; प्रसव-वेदना; स्तनके दूधकी बीमारी; प्रदर; यक्कतकी बीमारी; रजोविकार; पारेका दोष; आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ; स्नायुशूल; श्रंसावर्तन प्रदाह; बहुत पसीना; फुसफुस-वेष्ट-प्रदाह; मुंहका स्नायविक दर्द; विस-चिका; वात; नकली मैथुनका दुष्परिणाम; नींदमें गड़बड़ी; चाय पीनेका दुष्परिणाम; प्यास; कर्ण-पटहका प्रदाह; आभिघातिक ज्वर; उदराध्मान (पेटमें वायु); शिराओंका फूलना; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बलिष्ठ काले मनुष्य या जो किसी समय तो बलिष्ठ थे, इस समय नाना प्रकारके दुर्बल करने वाले स्रावकी वजहसे जीर्ण शीर्ण हो पड़े हैं, उनके लिये सिनकोना बहुत लाभदायक है। सभी विषयोंमें उदासी, बातचीतमें बहुत चिढ़ उठता है, विषाद युक्त बना रहता है, जीवनमें कोई मजा नहीं आता पर आत्महत्याकर अपनी तकलीफोंका अन्त नहीं कर डालना चाहता, साहस ही नहीं होता; मनुष्य शरीरके सार-भूत रस सबकी स्रावकी अधिकता, विशेषकर खूनका स्राव, बहुत दिनोंतक स्तनका दूध क्षय होना, बहुत दिनोंतक रहनेवाला उदरामय, शरीरके कितने ही स्थानोंसे बहुत ज्यादा पीब क्षय हो जानेकी वजह से होनेवाले रोगमें और पूतिबाष्पज (मलेरियासे उत्पन्न) रोज आनेवाला बोखार, आदिमें यह बहुत उपयोगी है। रमणियोंके वयःसन्धिके समय बहुत ज्यादा शोणित स्रावमें और जिन सब नये रोगोंमें शोथ अर्थात् सूजन आ जाती है,—उनपर भी इसकी अद्भुत और अतुलनीय शक्ति दिखाई देती है। इससे पैदा हुआ दर्द संकोचन और छेदन (सिकुड़ने और छेदने) की तरह होता है। प्रत्येक सन्धिमें और हरेक हड्डीमें ऐसा ही दर्द मालूम होता है। समस्त अस्थि वेष्ठनियोंमें बहुत दर्द होता है, मानो उनमें गहरी चोट लग गयी हो, रोगी बीमारीवाली जगह हमेशा हिलाया करता है; क्योंकि उससे तकलीफ बहुत कुछ घट जाती है; छूते ही यह सब दर्द फिरसे पैदा हो जाता है और धीरे धीरे बढ़ जाता है; परन्तु जोरसे दबानेपर आराम मिलता है, (आर्म, और कैप्सिकममें भी इसी ढङ्गकी स्पर्श असहनीयता मौजूद रहती है)। रोगी छुरेका स्पर्श सहन नहीं कर सकता। बहुत सुस्ती; कपकपी, शारीरिक परि-श्रम करनेकी इच्छा न होना; बहुत ज्यादा स्पर्श-ज्ञान बना रहता है। जोरकी हवा, दर्द आदि असह्य मालूम होते हैं। मुख, नासारन्ध्र, (नाकका छेद)

अन्त्र मण्डली (आँतें) और जरायु (गर्भाशय) वगैरहसे रक्तस्राव प्रभृति सिनकोनाके कई प्रकृतिगत लक्षण हैं। आगे लिखे कई लक्षण इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं;—रोगी किसी तरह भी सन्तोष नहीं प्रकट करता; दुःखित; उसे सन्तुष्ट करनेके लिये कोई चाहे जो कुछ करे; उसे अच्छा नहीं लगता। उसकी चिन्ता शक्ति प्रायः गायब रहती है; मनमें उदय हुए भावोंका सामञ्जस्य नहीं रह सकता। चेहरा पीला या भूरा हो जाता है। हमेशा निद्राका आवेश बना रहता है। पर सो जाने या सो लेने पर भी उसे आराम नहीं मिलता। रात तीन बजनेके समय उसकी तकलीफें बढ़ जाती हैं; बहुत तड़के शय्यासे उठ बैठता है। स्तन पिलानेवाली माताके दाँतका दर्द। कानमें लगातार आवाज आया करती है। सर दर्द,—मानो माथा फट जायगा; मस्तिष्क मानो खोपड़ीमें एक ओरसे दूसरी ओर जाकर टक्कर खाता है ऐसा मालूम होना; घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेसे बीमारी बढ़ जाती है। गर्म कमरेमें घट जाती है। नाकसे सर्दीका स्राव,—तरल श्लेष्माका स्राव होता है और नाकके दोनों छेद रुक जाते हैं। श्वास-रोध करनेवाला वायुनली गत सर्दीका स्राव,—छातीमें घड़ घड़ शब्द होता है; भोजनके बाद बार बार खाँस कर कफ निकालना पड़ता है। यंत्रणाजनक आँतोंमें आबद्ध आध्मानवायु—डकार आनेपर घटता नहीं है। (घट जाता है = कार्बो-वेज)। अंत्र-शूल,—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होता है; वृद्धि = रातमें और भोजनके बाद; शरीरको सामनेकी ओर टेढ़ा करनेपर, घटता है; पित्ताश्मरीका शूल; उदरामय,—मल पानीकी तरह,—कोमल, बड़े कष्टसे निकलता है; या बिना तकलीफका अजीर्ण, पतला मल निकलता है; मलमें सड़ी गन्ध; बहुत वायुके साथ और सुस्त करनेवाला उदरामय।

लक्षणावली।

मन।—उदास भाव (मार्क, ओपि, ऐसिड-फास, वैप, लिल-टाई, माइरि, कैलि-बाइ); स्पृहा-शून्य; बोलना अच्छा नहीं लगता (आर्जेण्ट-नाई वेल, बार्ब, कैस्ट, हेलिबो, इग्ने, कैलि-फास, मेन्सिनेला; मैंङ्ग-ऐसेट, स्टैन, आक्साइ-ड्रोप, नेजा; वेरेट ऐल्ब; जिङ्क); दुःखित चित्त (ऐग-कैस्ट, कैस्टो, कास्टि, हिप, इग्ने, लेके, मैंग-कार्ब, माइ-रील, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, प्लेटि-ऐम, सोरिन, सिपि, स्टैन,—ऋतुके पहले = कास्टि, ऐसिड-नाई)। जीवनसे स्पृहा-शून्य, जीवनकी इच्छा न रहना, पर आत्म-हत्या करनेका साहस नहीं होता। उसे यह

दृढ़ विश्वास रहता है, कि वह अत्यन्त दुःखी है (हेलिबो, दुर्भाग्य—वेरेट-ऐल्ब ; उसके परिवारवाले उसे नहीं मानते—आर्जेण्ट-नाई ; मानो एकाएक उसकी बहुत कीर्ति हो गयी है—वेलि, वेरेट-ऐल ; मानो एकाएक दौड़ रहा रहा है—बेल, पाइरोज, सल्फ ; मानो उसके जीवन धारण करनेको सङ्गति नहीं है—मार्क) ; उसे यह भी स्थिर विश्वास रहता है, कि उसके शत्रुगण बराबर उसे तंग करते हैं (कैलि-ब्रोम, लैके) कल्पनाशक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण, मनमें विचार पर विचार उदय होकर उसे सोने नहीं देते (एपिस, कोरैल, काफिया)। दूसरेके मनपर कष्ट पहुंचानेमें अत्यन्त पटु। एकाएक रो उठता है और छटपटाता है। मानसिक परिश्रम करनेमें अत्यन्त अनिच्छुक (ऐलो, ऐसिड कार्बोलिक, कोरैल, कोना, युपस, टियेन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—सर उठानेपर (आर्नि, कोलो, मार्क, ऊपर देखनेपर=पल्स, साइलि)। सरमें दर्द,—मानो माथा दो हो जायगा। (ऐमोन-कार्ब, बेल, नेट्रम्यू, नक्स, साइलि, किनिन-सल्फ)। सरके भीतर मस्तिष्क तरंगकी तरह हिलता रहता है (सल्फ, ऐ-सल्फ), सरके भीतर और गर्दनके दोनों ओरकी धमनीमें टपक हुआ करती है (आर्स, बेल, कैनाब, कैमो, लैके, लाई) ; सरके भीतर पिछले भागसे लेकर दर्द समूचे माथेमें फैल जाता है ; बैठने या सोनेपर दर्द बढ़ जाता है (बैठनेसे बढ़ना=ऐगार, रियुटा ; बैठनेसे घटना=पोथस-फिटिड) ; रोगी टहला करता है (कैल्क) या खड़ा रहता है। रक्तस्राव या अधिक इन्द्रिय सेवनके कारण (ऐसिड-फास) कमजोरी माथेमें बहुत भार मालूम होता है और ढलमलाया करता है। माथेमें बहुत दर्द,—मानो चोट लग गयी है ; छूने या मानसिक परिश्रमसे दर्द बढ़ जाता है। प्रबल वायुमें और थोड़ा भी छूनेपर सर दर्द बढ़ जाता है, पर जोरसे दबानेपर घट जाता है। मूर्धाकी त्वचामें स्पर्श बिलकुल सहन नहीं होता,—कंघीका छू जाना भी सहन नहीं होता।

आंख।—दोनों आँखें लाल, गर्म और जलन भरी हो जाती हैं, आँखोंमें मानो बालूके कण पड़ गये हैं, ऐसा मालूम होना (कास्टि, सुफ्रे) ; दृष्टिपथमें ऐसा मालूम होता है, मानो आगकी चिनगारियाँ या काले काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं (अरम, बेल, क्रोक, ऐगार, काक्यु) ; आँखका सफेद अंश पीला हो जाता है (आर्स, बेल, कैल्क, कैमो, आयोड, लैके, मार्क, सिपि) ; पढ़नेके समय अक्षर सब आपसमें सट जाते हैं। आँखोंके चारों ओर नीला घेरा

अन्त्र, मछली (आँतें) और जरायु (गर्भाशय) वगैरहसे रक्तस्राव प्रभृति सिनकोनाके कई प्रकृतिगत लक्षण हैं। आगे लिखे कई लक्षण इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं;—रोगी किसी तरह भी सन्तोष नहीं प्रकट करता; दुःखित; उसे सन्तुष्ट करनेके लिये कोई चाहे जो कुछ करे; उसे अच्छा नहीं लगता। उसकी चिन्ता शक्ति प्रायः गायब रहती है; मनमें उदय हुए भावोंका सामञ्जस्य नहीं रह सकता। चेहरा पीला या भूरा हो जाता है। हमेशा निद्राका आवेश बना रहता है। पर सो जाने या सो लेने पर भी उसे आराम नहीं मिलता। रात तीन बजनेके समय उसकी तकलीफें बढ़ जाती हैं; बहुत तड़के शय्यासे उठ बैठता है। स्तन पिलानेवाली माताके दाँतका दर्द। कानमें लगातार आवाज आया करती है। सर दर्द,—मानो माथा फट जायगा; मस्तिष्क मानो खोपड़ीमें एक ओरसे दूसरी ओर जाकर टक्कर खाता है ऐसा मालूम होना; घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेसे बीमारी बढ़ जाती है। गर्म कमरेमें घट जाती है। नाकसे सर्दीका स्राव,—तरल श्लेष्माका स्राव होता है और नाकके दोनों छेद रुक जाते हैं। श्वास-रोध करनेवाला वायुनली गत सर्दीका स्राव,—छातीमें घड़ घड़ शब्द होता है; भोजनके बाद बार बार खाँस कर कफ़ निकालना पड़ता है। यंत्रणाजनक आँतोंमें आबद्ध आध्मानवायु—डकार आनेपर घटता नहीं है। (घट जाता है=कार्बो-वेज)। अंत्र-शूल,—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होता है; वृद्धि=रातमें और भोजनके बाद; शरीरको सामनेकी ओर टेढ़ा करनेपर, घटता है; पित्ताश्मरीका शूल; उदरामय,—मल पानीकी तरह,—कोमल, बड़े कष्टसे निकलता है; या बिना तकलीफका अजीर्ण, पतला मल निकलता है; मलमें सड़ी गन्ध; बहुत वायुके साथ और सुस्त करनेवाला उदरामय।

लक्षणावली।

मन।—उदास भाव (मार्क, ओपि, ऐसिड-फास, ब्रैप, लिल-टाई, माइरि, कैलि-बाई); स्पृहा-शून्य; बोलना अच्छा नहीं लगता (आर्जे एट-नाई ब्रेल, बार्व, कैस्ट, हेलिबो, इग्ने, कैलि-फास, मेन्सिनेला; मैंङ्ग-ऐसेट, स्टै न, आक्साइ-ड्रोप, नेजा; वेरेट ऐल्ब; जिङ्क); दुःखित चित्त (ऐग-कैस्ट, कैस्टी, कास्टि, हिप, इग्ने, लैके, मैग-कार्ब, माइ-गेल, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, ओलि-ऐन, सोरिन, सिपि, स्टै न,—ऋतुके पहले=कास्टि, ऐसिड-नाई)। जीवनसे स्पृहा-शून्य, जीवनकी इच्छा न रहना, पर आत्म-हत्या करनेका साहस नहीं होता। उसे यह

दृढ़ विश्वास रहता है, कि वह अत्यन्त दुःखी है (हेलिबो, दुर्भाग्य—वेरेट-ऐल्ब ; उसके परिवारवाले उसे नहीं मानते—आर्जेण्ट-नाई ; मानो एकाएक उसकी बहुत कीर्ति हो गयी है=वेलि, वेरेट-ऐल ; मानो एकाएक दौड़ रहा रहा है=बेल, पाइरोज, सल्फ ; मानो उसके जीवन धारण करनेकी सङ्गति नहीं है=आई) ; उसे यह भी स्थिर विश्वास रहता है, कि उसके शत्रुगण बराबर उसे तंग करते हैं (कैलि-ब्रोम, लैके) कल्पनाशक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण, मनमें विचार पर विचार उदय होकर उसे सोने नहीं देते (एपिस, कोरैल, काफिया)। दूसरेके मनपर कष्ट पहुंचानेमें अत्यन्त पटु। एकाएक रो उठता है और छटपटाता है। मानसिक परिश्रम करनेमें अत्यन्त अनिच्छुक (ऐलो, ऐसिड कार्बोलिक, कोरैल, कोना, युपस, टिचेन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—सर उठानेपर (आर्नि, कोलो, मार्क, ऊपर देखनेपर=पल्स, साइलि)। सरमें दर्द,—मानो माथा दो हो जायगा। (ऐमोन-कार्ब, बेल, नैट्रम्यू, नक्स, साइलि, किनिन-सल्फ)। सरके भीतर मस्तिष्क तरंगकी तरह हिलता रहता है (सल्फ, ऐ-सल्फ), सरके भीतर और गर्दनके दोनों ओरकी धमनीमें टपक हुआ करती है (आर्स, बेल, कैनाब, कैमो, लैके, लाई) ; सरके भीतर पिछले भागसे लेकर दर्द समूचे माथेमें फैल जाता है ; बैठने या सोनेपर दर्द बढ़ जाता है (बैठनेसे बढ़ना=ऐगार, रियुटा ; बैठनेसे घटना=पोथस-फिटिड) ; रोगी टहला करता है (कैल्य) या खड़ा रहता है। रक्तस्राव या अधिक इन्द्रिय सेवनके कारण (ऐसिड-फास) कमजोरी माथेमें बहुत भार मालूम होता है और ढलमलाया करता है। माथेमें बहुत दर्द,—मानो चोट लग गयी है ; छूने या मानसिक परिश्रमसे दर्द बढ़ जाता है। प्रबल वायुमें और थोड़ा भी छूनेपर सर दर्द बढ़ जाता है, पर जोरसे दबानेपर घट जाता है। मूर्धाकी त्वचामें स्पर्श बिलकुल सहन नहीं होता,—कंघीका छू जाना भी सहन नहीं होता।

आंख।—दोनों आँखें लाल, गर्म और जलन भरी हो जाती है, आँखोंमें मानो बालूके कण पड़ गये हैं, ऐसा मालूम होना (कास्टि, सुफ्रे) ; दृष्टि पथमें ऐसा मालूम होता है, मानो आगकी चिनगारियाँ या काले काले विन्दु सब उड़ रहे हैं (अरम, बेल, क्रोक, ऐगार, काक्यु) ; आँखका सफेद अंश पीला हो जाता है (आर्स, बेल, कैल्य, कैमो, आयोड, लैके, मार्क, सिपि) ; पढ़नेके समय अक्षर सब आपसमें सट जाते हैं। आँखोंके चारों ओर नीला घेरा

रहता है और वे गड़हेमें धसी-सी रहती हैं। पलकोंका सविराम (रह रहकर) स्नायु-शूल।

कान।—कानमें भों भों सों सों शब्द (कैल्के, ग्रैफ, नक्स; हुंकार शब्द= बैल, लाइ, ऐ-नाइ; संगीत शब्द =कैल्के ; कानमें रह रहकर कड़ाकसे आवाज हो उठती है या बुलबुला फूटने जैसा शब्द होता है= बैराइ, कैलि-कार्ब, मैङ्ग, ऐ-नाइ); कानमें पतली सलाई गड़नेकी तरह मालूम होना (कैलि-कार्ब पल्स, ऐसिड-नाइ; कानमें टपक =कैल्के, फास, रास, झुनझुन शब्द= फास, सल्फ)। बहरापन पर ऊँची आवाजसे तकलीफ होती है। कानका बाहरी अंश लाल।

नाक।—अकसर रक्तस्राव हुआ करता है, खासकर शय्यासे उठने बाद और ऋतुके परिवर्त्तनसे (ब्राइ, हैमा)। सर्दी,—नासारन्ध्रसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है (कड़्वा या त्वचाको क्षय करनेवाला पानीका स्राव= आर्स, अरम, सिपि,) और इसके साथ ही बार बार छींक आती है, ऐसा मालूम होता है, कि दोनों रन्ध्र मानो रुक गये हैं।

मुख मण्डल।—चेहरा उतरा हुआ, रक्त शून्य, गाल और दोनों आँखें गड़हेमें धसी और नाक नुकीली और उठी हुई (आर्स, कैम्फ, वेरेट); आँखके कोनेमें कालापन; सफेद, सूखा और रोगियल चेहरा,—बहुत इन्द्रिय सेवाके कारण और रातमें जागरणकी वजहसे; बच्चेको स्तनसे दूध पिलानेके समय माताके दाँतोंमें दर्द। चेहरेका (Facial) स्नायुशूल,—आँखके नीचेके और दोनो हनुके स्नायुपर ही अधिकांश स्थानोंमें अधिक आक्रमण होता है। जरा भी छूनेसे या रातके समय सोनेवाली अवस्थामें दर्द बढ़ जाता है; रोगवाली जगह थोड़ा भी हिलाने और तकलीफ घटने बाद छूनेसे ही तुरन्त फिर दर्द पैदा हो जाता है और थोड़ी ही देरमें असह्य हो जाता है, जोरसे दबानेपर घटता है। खून आदिका स्राव होनेकी वजहसे सुस्त हो जानेवाले रोगियोंके मुँहका स्नायु-शूल।

मुख-विवर।—जीभ सफेद और पीली; गाढ़ा लेप चढ़ी। काली या क्षय हुई त्वचाकी तरह लाल, मानो जल गयी है; जीभका अगला भाग जलन-भरा और उसमेंसे लार बहती है; दोनों ओठ सूखे और फटे फटे (ब्राइ); ओंठ काले, टपक जैसा दाँतका दर्द,—दाँतमें दाँत लगनेसे असह्य यंत्रणा, परन्तु

जोरसे दाँतपर दाँत रगड़नेसे आराम मालूम होता है। बहुत ज्यादा लार बहना ; पारेके दोषकी वजहसे लार बहना, (बेल, बेराई, हिप, केलि-कार्ब, तैके, मार्क, फास, पल्स)।

पाकाशय ।—स्पर्श सहन नहीं होता और ठण्डा। अजीर्ण अवस्थामें खाये हुए पदार्थ आदि वमन हो जाते हैं (ऐण्टीमोनियम, फेरम, ओलियेन) ; पाचन क्रिया बहुत देरसे होती है। दूध पीनेपर प्रायः पेटकी बीमारी हो जाया करती है। (सल्फ, कैल्के, नैट-कार्ब, निकोलम—आगसे जला दूध पीनेकी वजहसे उदरामय=मिपि)। चाय पीनेकी वजहसे बीमारियाँ (फेरम, थूजा, काफि, नक्स) ; भूख रहती है, पर रुचि नहीं रहती (ऐगार, ऐलू, ब्राई, फेर, लाई, मैग-म्यू, नेट्र-म्यू, ओलियेन, पल्स, रास, साइलि, ऐ-सल्फ)। अजीर्ण खाये हुए पदार्थ आदिकी गन्ध मिली डकार आती है (कैल्के, कोना, पल्स) ; भोजनके बाद तीता स्वाद मिली डकार (खट्टी डकार=कैलि-कार्ब, नक्स)।

अन्त्राशय ।—बार बार डकार आनेकी इच्छाके साथ बहुत ही असा-क्रन्द पैदा करनेवाला उदराध्मान या रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका पेट बहुत भरा हुआ है, पर डकार या वायु नहीं निकलनेपर कुछ घटता नहीं है। (वायु निकलनेसे घटना=कार्बो-वेज) ; पेटमें मानो पानी खौल रहा है। (ऐक्स, थैनेट, रास, सेना, स्ट्राम, आर्नि, लाइकोपोड), ऐसा मालूम होता है और हमेशा पेटमें भुटभाट, कल कल हुआ करता है (नैट्र-सल्फ, पल्स, रियुमेक्स क्रसस, जैट्रोफा, सिना)। अन्त्रशूल—रोज एक ही समय पैदा होता है, पित्त पथरीकी वजहसे बँधे समयपर पैदा होनेवाला शूलका दर्द (कैल्के, बार्बारिस, हाइड्रेस्ट, कार्डुयस-मेरि) ; वृद्धि रातके समय और भोजनके बाद सामनेकी ओर झुक पड़नेपर घटता है (कार्बो;—पीछेकी ओर झुक पड़ने पर घटता है=डायस्कोरिया)। पुराना यकृत रोग,—दाहिने कोखेमें दर्द, पंजरे के नीचे प्रायः अँगुलीसे स्पर्श करनेपर मालूम होता है कि वह बहुत बड़ा और कड़ा हो रहा है और हाथ लगानेसे दर्द होता है। शरीरकी त्वचा और आँखका सफेद अंश पीला ; पेशाब गाढ़ा और मल उजला,—स्वाभाविक पित्ते परि-माणके ह्रासकी वजहसे क्विनाइनके अपव्यवहारसे बढ़ी हुई प्लीहा, बहुत ज्यादा मात्रामें चाय पीनेकी वजहसे पेट फूलना।

मलान्त्र और मल ।—उदरामय—पतले दस्त आना ; मल पतला होता होता क्रमसे पानीकी तरह हो जाता है। उजला ; कुछ लाल रंग, रोगी

जल्दी जल्दी चीण हो पड़ता है। बार बार पानीकी तरह मल निकलता है और पेट मानो चिपक जाता है; अजीर्ण रोगाधिकारमें अनपची खायी हुई चीजें मिला, फेन भरा पीला मल निकलता है। यंत्रणा नहीं रहती; रातके समय दस्त होता है (आर्स, नक्स-मस, पोडो, सोराइन, पल्स); भोजनके बाद (ऐलो, आर्स, कोलो, ट्राम्बि); गर्मीके दिनोंमें (ब्राई-पोडो); फल खाने (कार्बो-वेज सिस्टस, कोलो, पल्स); दूध पीने (कैल्के, आस्थि, नेट्र-कार्ब, निकोलम, सल्फ) और देहको हिलानेपर (ब्राई, कोलचि; शरीरमें नीचेकी ओर—गतिके समय—बोर, जीलोनि), बढ़ जाता है। कोमल पाखाना होनेके समय रोगीको कष्ट होता है (ऐनाक, कार्बो-वेज, डायडेमा, हिप, नक्स-मस, रोडोड)। कभी कभी काला मल निकलता है।

पेशाब।—गाढ़ा, गदला, परिमाणमें थोड़ा (भूरा या काली आभा लिये=कोलचि, नैट्र-मयू, टेरिब,—दूधकी तरह एसिड-फास; कुछ देरतक स्थिर रहनेपर दूधकी तरह हो जाता है=सिना)। मूत्रनालीके भीतर सुई बेधनेकी तरह मालूम होना, कभी कभी खून मिला पेशाब भी होता है (आर्नि, कैल्के, कैनाब, कोना, हिप, इपिक, लाई, मार्क, मेजीर, मिलिफो, सल्फ)।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामोद्दीपक चिन्ता बहुत प्रबल रहती है। अस्वाभाविक रूपसे इन्द्रिय सेवनके कारण इन्द्रियमें शिथिलता आ जाती है और इसी वजहसे प्रायः रेतस्खलन हो जाया करता है और इसी वजहसे रोगी बहुत चीण हो जाता है। (जेल्स, फास, ऐसिड-फास—लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता, और अनजानमें वीर्यस्खलन हो जाया करता है=कैन्थ, जेल्स)। चलनेके समय जननेन्द्रिय बहुत भारी मालूम होती है। (खड़े रहनेपर=सल्फ)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतुके समय बहुत अधिक स्राव होता है, स्राव—काला और जमा हुआ (प्रसवके दर्दकी तरह दर्दके साथ=ऐक्टिया और कैमो)। गर्भ-स्रावके बाद खून जाना—रक्तस्रावके समय कानके भीतर सों सों शब्द हुआ करता है और बेहोशी आ जाना चाहती है। देखनेकी शक्ति गायब हो जाती है और काला जमा हुआ खूनका थक्का या टुकड़े सब निकला करते हैं; जरायु सिकुड़ता और फैलता है; पेशियां और अङ्ग प्रत्यंग मरोड़ खाया करते हैं और रोगिनी बार बार हवा करनेके लिये कहती है (तेजीसे हवा करने कहती है=कार्बो-वेज; दूरसे धीरे धीरे हवा करने कहती है=लैके), प्रदर,—ऋतुके पहले प्रदरका स्राव होता है, ... ही पुट्ठेमें दबाव मालूम होता है;

शोणितमय स्राव (कक्यु, कोपेवा, म्यूरेक्स, ऐसिड-सल्फ, नक्स-मस, जिङ्कम)। प्रसवके बादका क्लेद स्राव (Lochia),—दीर्घकाल स्थायी (सिकेल); इसके साथ ही डिम्बाधार प्रदेशमें खींचन मालूम होना, या सड़ी गन्ध भरा, पनीरकी तरह या पोवकी तरह स्राव, (बेल, कार्बो-ऐन, सिकेल, सल्फ; खून भरा होनेपर=रास, सिकेल; स्राव रुक जानेपर या बहुत थोड़ा होनेपर= कोलोसिन्थ, हायो, नक्स, सिकेल, सल्फ; खून भरा होनेपर=रास, सिकेल, वेरेट)। रक्तस्रावके समय रोगिनी खट्टी चीजें खानेका आग्रह प्रकट करती है। बहुत ज्यादा शोणित स्राव होनेकी वजहसे कभी कभी धनुष्टङ्कार रोगतक पैदा हो जाता है (फेर, फास)। वयः सन्धिकाल बीत जानेपर मौढ़ा स्त्रियोंका रक्त-स्राव।

श्वास-यंत्र ।—खांसी,—हसने बोलने या गानेपर खांसी आ जाती है (ड्रोसे, रास, स्टेन)। कफ निर्मल साफ श्लेष्मामय, या खून मिला रहता है। फेफड़ेसे खूनका स्राव (मिलिफो, फेर-फास; अधिक परिमाणमें खूनके क्षयके बाद चायना व्यवहृत होता है)। रातमें सोनेके समय छातीमें दबाव मालूम होना (सोनेपर घटता है=सोरिन) बार बार दीर्घ श्वास लेनेकी इच्छा (ऐगार, ऐमोन, कास्टि, ऐण्टि-क्रूड, आर्नि, ब्राई, कैप्स, कार्बो-वेज, कैमो, डिजि, ऐ-ग्नाइड्री, लेके, लोबेलिया, नक्स, रास, सेंजिया, थिरिडि, थूजा)। हृत्पिण्डके कुछ ऊँचेपर और कभी कभी वक्षोस्थिके नीचे सुई वेधनेकी तरह दर्द; सर्दीकी ज्वरकी वजहसे कमजोरी। नीची तकियापर सर रखनेपर साँस लेने तथा छोड़नेमें तकलीफ होती है (कोलचि, हिप, नाइट्रम, पल्स; चित्त सोनेपर श्वास प्रश्वासमें कष्ट होता है=ऐण्टिम-ऐन, फास, साइलि,—करवट सोनेपर —कार्बो-ऐन, पल्स)। श्वास रोधक सर्दी, वक्षके भीतर घड़घड़ आवाज होती है (बेल, ब्राई, कैमो, हिप, इपिका, ऐण्टि-टार्ट, पल्स, सल्फि, स्टेन)। भोजनके बाद जोरसे खाँसी (ऐमोन-म्यूर, ऐनाक, ब्राई, नक्स-वोम, ऐण्टि-टार्ट,— भोजनके बाद खाँसीका घटना=फेरम)

प्रत्यङ्ग आदि ।—एक हाथ बरफकी तरह ठण्ढा और दूसरा हाथ गर्म (डिजि, इपिका, पल्स, एक पैर ठण्ढा और दूसरा पैर गर्म=चेलिडो, लाइको; छेदनेकी तरह दर्दके साथ दाहिना जानु गर्म); सूजन (जानुके ऊपरी स्थानमें दर्द भरी सूजन; रास)। हाथ-पैरोंमें और सन्धियोंमें दर्द, मानो मोच खा गया है; धीरे धीरे छूनेपर असहन दर्द होता है लेकिन जोरसे दबाने

पर आराम मालूम होता है। (कैप्स, स्क्व,) बहुत शारीरिक अवसाद और कम्पन ; रोगी शारीरिक परिश्रम नहीं करना चाहता ; स्पर्श सहन नहीं होता ; ठण्डी हवा सहन नहीं होती। सभी सन्धियां क्लान्त मालूम होती हैं,—सवेरे और बैठे रहनेपर बढ़ जाती हैं।

निद्रा।—नींदके बाद आराम नहीं मालूम होता ; हमेशा निद्रालु भाव बना रहता है ; बहुत तड़के नींद खुल जाती है। सोया सोया चौंक उठता है।

ज्वर।—सविराम ज्वर,—पहली बारके आक्रमणके दो से तीन घण्टा पहले बोखार आता है (किनिन-सल्फ, आर्स, ब्राई, नक्स, नेट्र-मूर, प्रत्येक ७ दिन या १४ दिनके बाद फिर बोखार आ जाता है ; सिनकोनाका बोखार रातमें कभी नहीं आता। शरीर ढकनेपर या निद्रितावस्थामें बहुत ज्यादा पसीना निकलता है (ढके हुए अंशमें बहुत ज्यादा पसीना=कैमो ; निद्रितावस्थामें=कोना ; निद्रितावस्थामें पसीना बन्द हो जाता है=सैङ्गियु) एक दिन या दो दिनोंका अन्तर देकर बोखार आता है (एक दिनका अन्तर=मेजेर, नेट्र-मूर, नक्स ; दो दिनका अन्तर=आर्स, हायो, आयोड, मिनियेन, पल्स, सेबाड, वेरेट) ; शीतावस्थामें पहले या बाद प्यास नहीं रहती ; रोगी गर्मी चाहता है, पर गर्म प्रयोगसे शीत घटता नहीं है। पसीना बहुत ज्यादा और सुस्ती लानेवाला ; साधारणतः सवेरे ५ बजे या दिनके ५ बजेके समय बोखारका आवेश या प्रकोप होता है ; बोखार आनेके पहलेवाली रातमें रोगी बेचैन रहता है ; ज्वराधिकारमें हाथ पैरकी सन्धियोंमें तेज छेदनेवाला दर्द मालूम होता है।

वृद्धि।—धीरे धीरे छूनेपर, तेज ठण्डी हवा लगनेपर, एक दिनके अन्तरसे, मानसिक आवेगकी वजहसे और शरीरका सार रस आदिका क्षय हो जानेके कारण ; विश्रामसे, आँखे हिलानेपर, पाखाना होते समय और बाद, धूपमें तथा पानी और धूम्रपान करने पर।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—आर्स (काले रङ्गका मल, सुस्ती) ; कार्बो वेज, (आध्मान और अतिसार), स्ट्रेमो, कैम्फि, क्यूप्रम ऐसेट (काले रंगका मल) ; सोरिन (आरोग्यसे हताश) ; पल्स (मुँहका स्वाद तीता) ; फास-ऐसिड (रेतःक्षरणकी वजहसे कमजोरी)। मार्क (लार बहना) ; यकृतमें दर्द (ऐको, डिपर) ; किसीका भी स्पर्श सहन नहीं कर सकता (ऐगिट-क्रूड, कैमो) ; भोजनके बाद दस्त (आर्स, ऐलो) ; भोजनके बाद भूख (कैल्के)।

अनुपूरक।—फेरम ; बहुत दिनोंतक रोग भोगने बाद बच्चोंको पतले दस्त आनेके साथ ही साथ मस्तिष्कादिक रोगके लक्षण आदि = अर्थात आच्छन्ना वस्था प्रकाश पानेपर कैल्केरिया फास्फोरिका, सिनकोनाके अनुपूरकके रूपमें काम करता है। सविराम ज्वर जब हर बार पहली बार आनेके समयसे कुछ पहले आ जाता है, उस समय किनिनम सफल्युरिकम सिनकोनाके सदृश हुआ करता है।

प्रतिविष या दोषघ्न।—आर्निका, आर्स, कार्बो-वेज, फेरम, पुये, नक्स, इपिकाकुआन्हा, नेट्रम, म्यूर, मार्क, पल्स, सिपिया, सलफर। डिजिटेलिस और सेलिनिअमके पहले या बाद लाभ नहीं करता।

सदृश।—आर्स, कैप्स, सीड्रन, कार्बो-वेज, क्यूप्रम-ऐसेट, सोरिन, पलस, ऐ-सेलिसि, कास्टि, ऐ-फास।

घटना।—जोरसे दबानेपर और सामनेकी ओर जहाँतक सम्भव हो टेढ़े होनेपर, शरीर हिलानेपर, घरके भीतर, गर्म प्रयोगसे और शामको भोजन के समय और बाद।

शक्ति।—मूल अरिष्ट, ६ ठीं; ३० से २०० शततमिक क्रम।

सिङ्कोनियम-सल्फ्युरिकम।

(CINCHONIUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम।—सल्फेट आव सिङ्कोनिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—यद्यपि सिङ्कोनियम सल्फकी यथेष्ट प्रूविङ्ग हो गयी है परन्तु इसका चार चिनिनम सल्फकी तरह कभी प्रचलित नहीं हुआ। दोनों दवाओंकी लक्षणावलीमें भी कोई विशेष प्रभेद नहीं है। नींदसे जागने बाद असह्य सर दर्द, ऐसा मालूम होता है कि माथा फट जायगा; माथेके सामनेवाले भागमें सर दर्द ; धुंधला देखना, गलनालीमें जलन पाकाशयमें ठण्डक मालूम होना, भोजनके बाद और हिलने डोलनेपर रोग लक्षणोंका बढ़ना वगैरह लक्षणोंसे, चिनिनम सल्फसे इसका प्रभेद मालूम होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सिनाबेरिस ।

(CINNABARIS)

(MERCURIUS SULPHURATUS RUBER)

दूसरा नाम ।—इसे रेड सल्फाइड आफ मर्करी कहते हैं ।

प्रसुत-प्रक्रिया ।—नीचे लिखे रोगमें लाभदायक है :—पेशाबमें अण्ड लाल ; बाघी ; सर्दी ; उपदंश ; आमाशय ; आँखोंका प्रदाह ; प्रमेह ; वात ; गठियासे ; या पैरका झुनझुनीवाला वात ; गण्डमाला ; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—पलकोंका स्नायुशूल, उपदंश विषसे दूषित धातु प्रधान व्यक्तियोंका जखम आदि, उपदंश और प्रमेह विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंके मसे, सर्दी वगैरहमें इसकी उपयोगिता प्रसिद्ध हो रही है । आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक लक्षण हैं— (१) आलस्य ; मानसिक परिश्रम नहीं करना चाहता ; भूल जानेवाला ; क्रोधी स्वभाव,—सहजमें ही इसके रोगीको क्रोध आ जाता है (२) नाकसे खूनका स्राव इसके साथ ही सरमें दर्द (मैग-सल्फ, मिलिलोटस) । (३) माथेकी सन्धियाँ सब, माथेको ढकनेवाली त्वचा, केशकी जड़, नासा दण्ड और मसे वगैरहमें इतना दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता, मसेको छूनेपर खून निकल आता हैं । (४) नासा दण्डके ऊपर ऐसा मालूम होता है मानो कोई धातुमय पदार्थ छू रहा है या मानो उसपर चश्मा रखा हुआ है ऐसा भार मालूम होता है । (५) मेढ़-त्वचाके ऊपर पंखेकी आकृतिका मसा (नींदवाली अवस्थामें लिङ्गमें चिलक मारनेकी तरह दर्द) लिङ्गमणि (सुपारी) में फाड़ने जैसा सुई वेधनेकी तरह दर्द और सुरसुरी होना । (७) प्रदर स्रावके समय योनिमें दबाव मालूम होना (८) खूनी बवासीर । (९) खूनी आँव ; दुरारोग्य कब्जियत ; मल बहुत बड़ा और कड़ा ; पाखाना होनेके समय मलद्वार बाहर निकल पड़ता हैं (काँच निकलना) ; मलद्वारमें इस ढंगकी सुरसुरी होना मानो एक बड़ा केंचुआ रेंग रहा है । चारों ओर छोटे छोटे दाने निकल आते हैं और उनमें जलन तथा कुटकुटी होती है (१०) शरीरकी त्वचापर जगह जगह लाल दाग सब दिखाई देते हैं ; लाल रंगके जखम ; उपदंश । (११) मुखमण्डल गर्म, लाल और फला, विशेषकर दोनों आँखोंके चारों ओर ।

लक्षणावली।

मस्तक।—सन्ध्याके समय, सोनेके पहले और रातमें भोजनके कुछ बाद सरमें इस तरह भिन्न भिन्न किया करता है, कि रोगीके बेहोश हो जानेका उपक्रम हो जाता है। सरमें दर्द और उसके साथ ही उठनेपर या झुकनेपर मिचली। सरमें प्रचण्ड दर्द, रोगी तकियेसे सर नहीं उठा सकता। यदि कोई पैर दबा देता है, तो आराम मिलता है। ललाट ठण्डा रहता है और उसमें मीठा मीठा दर्द होता है। गर्म प्रयोगसे घट जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर ललाटमें, और मूर्द्धादेशमें दर्द, बायीं करवट या चित्त होकर सोनेपर बढ़ना; दाहिनी करवट फिरनेपर घटना। उठनेपर करोटी और केश सब छूनेपर दर्द मालूम होता है।

आंख।—पलकोंका स्नायुशूल,—आँखके एक कोनेसे तेज दर्द पैदा होकर भवोंके ऊपरसे घूमता हुआ, दूसरे कोनेमें जा पहुँचता है। अश्रुनाली (Lachrymal duct) से दर्द आरम्भ होकर, आँखको घेरता हुआ कनपटीमें जा पहुँचता है। समूची आँख लाल हो जाती है। दोनों आँखोंके चारों ओर सूजन आ जाती है और लाल हो उठता है।

नाक।—सर्दी,—नासादण्डके मूलदेशमें (नाककी जड़में) बहुत दबाव मालूम होता है, मानो एक भारी चश्मा लगा हुआ है-और यह दर्द, उसको बगलवाली हड्डीमें फैल जाता है; नाकमें सुरसुरी हो जाती है और नाक छिड़कने पर उससे खूनका स्राव होता है।

गलेके भीतर।—नाकके पिछले छेदसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा गलेमें आ पड़ता है। कण्ठ बहुत सूखा और रातमें यह सूखापन इतना बढ़ जाता है, कि रोगीको बहुत तकलीफ मालूम होने लगती है, उसकी नींद बार बार खुल जाती है और जितनी ही बार वह जागता है, उतनी ही बार वह ठण्डे पानी से कुल्ला करता है। कण्ठ फूला हुआ और दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियां फूल जाती हैं और लाल हो उठती हैं। मुंह और कण्ठके भीतर आगकी चिनगारियोंकी तरह लाल रङ्गके जख्म सब पैदा हो जाते हैं।

जननेन्द्रिय।—लिङ्गके अगले भागका चमड़ा या सुपारीको ढकनेवाली त्वचा फूल जाती है। उसके ऊपर मुर्गेकी पूंछकी तरह मसे पैदा हो जाते हैं। और सामान्य कारणसे ही, उसमेंसे खूनका स्राव होने लगता है। (थोजकी तरह मसे=ऐसिड-नाई)। बढ़ा हुआ अण्डकोष (क्रिमे); बाघी (मार्क-

सिनाबेरिस ।

(CINNABARIS)

(MERCURIUS SULPHURATUS RUBER)

दूसरा नाम ।—इसे रेड सलफाइड आफ मर्करी कहते हैं ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नीचे लिखे रोगमें लाभदायक है :—पेशाबमें अण्ड लाल ; बाघी ; सर्दी ; उपदंश ; आमाशय ; आँखोंका प्रदाह ; प्रमेह ; वात ; गृध्रसी ; या पैरका भुनभुनीवाला वात ; गण्डमाला ; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—पलकोंका स्नायुशूल, उपदंश विषसे दूषित धातु प्रधान व्यक्तियोंका जखम आदि, उपदंश और प्रमेह विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंके मसे, सर्दी वगैरहमें इसकी उपयोगिता प्रसिद्ध हो रही है। आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक लक्षण हैं— (१) आलस्य ; मानसिक परिश्रम नहीं करना चाहता ; भूल जानेवाला ; क्रोधी स्वभाव,—सहजमें ही इसके रोगीको क्रोध आ जाता है (२) नाकसे खूनका स्राव इसके साथ ही सरमें दर्द (मैग-सल्फ, मिलिलोटस)। (३) माथेकी सन्धियाँ सब, माथेको ढकनेवाली त्वचा, केशकी जड़, नासा दण्ड और मसे वगैरहमें इतना दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता, मसेको छूनेपर खून निकल आता है। (४) नासा दण्डके ऊपर ऐसा मालूम होता है मानो कोई धातुमय पदार्थ छू रहा है या मानो उसपर चश्मा रखा हुआ है ऐसा भार मालूम होता है। (५) मेढ़-त्वचाके ऊपर पंखेकी आकृतिका मसा (नींदवाली अवस्थामें लिङ्गमें चिलक मारनेकी तरह दर्द) लिङ्गमणि (सुपारी) में फाड़ने जैसा सुई वेधनेकी तरह दर्द और सुरसुरी होना। (७) प्रदर स्रावके समय योनिमें दबाव मालूम होना (८) खूनी बवासीर। (९) खूनी आँव ; दुरारोग्य कब्जियत ; मल बहुत बड़ा और कड़ा ; पाखाना होनेके समय मलद्वार बाहर निकल पड़ता है (काँच निकलना) ; मलद्वारमें इस ढंगकी सुरसुरी होना मानो एक बड़ा केचुआ रेंग रहा है। चारों ओर छोटे छोटे दाने निकल आते हैं और उनमें जलन तथा कुटकुटी होती है (१०) शरीरकी त्वचापर जगह जगह लाल दाग सब दिखाई देते हैं ; लाल रंगके जखम ; उपदंश । (११) मुखमण्डल गर्म, लाल और फला, विशेषकर दोनों आँखोंके चारों ओर ।

सिनैमोमम जिलेनिकम।

(CINAMOMUM ZELYANICUM)

दूसरा नाम।—दारू चीनी। दाल चीनी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—स्पिरिटके साथ इसका मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— उदरी; अस्थि-क्षय (हड्डियोंका क्षय हो जाना); कब्जियत; अतिसार; रक्त-स्राव; सर-दर्द; मूर्च्छा-वायु; श्वेत प्रदर; रजःस्रावमें विकार; बहुत ज्यादा रजःस्राव।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान विषय है रक्तस्राव और रक्तस्रावमें इसकी शक्ति अतुलनीय है। मनुष्यके चाहे किसी द्वारसे चमकीला लाल रंगके रक्तका स्राव होता हो, या निकलता हो, सिनैमोमम उसपर मन्त्र या दैवी शक्तिकी तरह काम करेगा। नाकसे खूनका स्राव, यक्ष्मा रोगमें कफके साथ खूनका स्राव, मलाशयसे मलके साथ खून जाना, नितम्बमें चोट लगनेकी वजहसे या पैर फिसल जानेके कारण खूनका स्राव वगैरहमें इससे आश्चर्य जनक लाभ दिखाई देता हैं। प्रसवके बादके शोणित-स्रावमें एलोपैथिक मतसे आर्गट दिया जाता है, पर आर्गटकी अपेक्षा यह सौ गुणा श्रेष्ठ और लाभदायक है। मूर्च्छावायुके प्रकोपमें—डकार या वमनके बाद घटना।

लक्षणावली।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तलपेटमें बहुत दबाव मालूम होना। ऋतु,—असमयमें ही हो जाता है। बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है,—स्राव चमकीले लाल रंगका होता है। प्रसव वेदनाके समय इसकी कई मात्राएँ प्रयोग करने पर प्रसवका दर्द बढ़ जाता है और बहुत ज्यादा या जीवन नाश करनेवाले अनर्गल स्रावकी आशङ्का दूर हो जाती है।

पाकस्थली।—घुड़-सवारीके समय मिचली और वमन।

मलान्त्र और मल।—अतिसार; रक्तस्राव इत्यादि।

सोल, वेडियेगा), लाल और खाल उधड़ा हुआ तथा मांसांकुरमय गर्मीका घाव—गौण उपदंश (थूजा) पेशाबके समय मूत्रनालीमें दर्द मालूम होना, लिङ्गमुण्डमें लाल विन्दुके साथ जलन, सुरसुरी और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा। लिङ्गमुण्डमें दर्द बतानेवाली सुरसुरी और बदबूदार पीपका स्राव। चलनेके समय उरुके बिचले अंशमें बदबूदार पसीना।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रदर,—स्रावके समय योनिमें बहुत दबाव मालूम होना।

त्वचा ।—सहजमें ही खूनका स्राव होनेवाले मुर्गेकी पूंछकी तरह छोटे अर्बुद पैदा हो जाते हैं, इसके साथ ही खुजलानेवाली सन्धि। आगकी तरह लाल। पैरके नीचेकी सामनेवाली बड़ी हड्डीके ऊपर गुटिका। बाहुका अगला भाग,—कोहनीसे अंगुली तक दर्द।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—मार्क-सोल, हिप, वेडियेगा, ऐसिड-नाई, थूजा, मार्क, प्रोटो-आयोड।

तुलनीय ।—कैम्फ (लाल दाग); थूजा, सिपिया (लिङ्गके अगले भाग की त्वचापर मसे)। सर-दर्द, (सेनेगा, क्लिमैटिस)।

दोषघ्न ।—हिपर, नाइट्रिक-ऐसिड, ओपियम, सलफर।

शक्ति ।—२ री दशमिक विचूर्ण से ३० शततमिक क्रम तक।

सिनेरेरिया मेरिटिमा।

(CINERARIA MARITIMA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पौधेसे अर्क या सार (Succus) तैयार होता है।

प्रयोग ।—मोतिया-बिन्द और आंखके सफेद अंशकी अस्वच्छता रोगमें लाभदायक है।

शक्ति ।—मूल अर्क एक एक बून्द रोगी आंखमें नित्य तीन चार बार देना चाहिये। यह दवा कई महीने लगातार व्यवहार करने पर लाभकी सम्भावना है।

सिनैमोमम जिलैनिकम।

(CINAMOMUM ZELYANICUM)

दूसरा नाम।—दारू चीनी। दाल चीनी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—स्पिरिटके साथ इसका मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— उदरी; अस्थि-क्षय (हड्डियोंका क्षय हो जाना); कब्जियत; अतिसार; रक्त-स्राव; सर-दर्द; मूर्च्छा-वायु; श्वेत प्रदर; रजःस्रावमें विकार; बहुत ज्यादा रजःस्राव।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान विषय है रक्तस्राव और रक्तस्रावमें इसकी शक्ति अतुलनीय है। मनुष्यके चाहे किसी द्वारसे चमकीला लाल रंगके रक्तका स्राव होता हो, या निकलता हो, सिनैमोमम उसपर मन्त्र या दैवी शक्तिकी तरह काम करेगा। नाकसे खूनका स्राव, यक्ष्मा रोगमें कफके साथ खूनका स्राव, मलांत्रसे मलके साथ खून जाना, नितम्बमें चोट लगनेकी वजहसे या पैर फिसल जानेके कारण खूनका स्राव वगैरहमें इससे आश्चर्य जनक लाभ दिखाई देता हैं। प्रसवके बादके शोणित-स्रावमें ऐलोपैथिक मतसे आर्गट दिया जाता है, पर आर्गटकी अपेक्षा यह सौ गुणा श्रेष्ठ और लाभदायक है। मूर्च्छावायुके प्रकोपमें—डकार या वमनके बाद घटना।

लक्षणावली।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तलपेटमें बहुत दबाव मालूम होना। ऋतु,— असमयमें हो हो जाता है। बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है,—स्राव चम-कीले लाल रंगका होता है। प्रसव वेदनाके समय इसको कई मात्राएँ प्रयोग करने पर प्रसवका दर्द बढ़ जाता है और बहुत ज्यादा या जीवन नाश करनेवाले अनर्गल स्रावकी आशङ्का दूर हो जाती है।

पाकस्थली।—घुड़-सवारीके समय मिचली और वमन।

मलान्त्र और मल।—अतिसार; रक्तस्राव इत्यादि।

त्वचा ।—कर्कट रोगमें,—जब जखम नहीं उत्पन्न हो जाता या जहां दर्द और सड़ी गन्ध मौजूद रहती है। जरायुके कर्कट रोगकी वजहसे चमकीले लाल रंगका खूनका स्राव होता है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—बेलेडोना, चमकीले लाल रंगका खून, जल्द जम जाता है और जिस अंगके ऊपरसे निकलता है, वह स्थान गर्म मालूम होता है। ट्रिलियम, पेण्डोयुलम,—चमकीला या गाढ़ा लाल रंगका खून,—जिन स्त्रियोंको प्रतिबार प्रसवके बाद बहुत ज्यादा रक्तस्राव हुआ करता है। मिलिफो-लियम,—चमकीला लाल रक्त;—बिना तकलीफका स्राव चोट लगनेकी वजहसे लगातार खूनका स्राव हुआ करता है। सैबाइना-चमकीला लाल रंग और जमा हुआ रक्त, शरीरको हिलानेसे ही बढ़ जाता है, और इसके साथ ही विटप देशसे नितम्बास्थि या त्रिकास्थितक दर्द। सिकेलि दुबली या आस्थिसार स्त्रियोंको काली आभा लिये रक्तस्राव—हाथ पैरोंमें कनकनी पैदा हो जाती है, शरीर ठण्डा होनेपर रोगिनी लगातार ओढ़ना उतार डालना चाहती है (हवा करने कहती है=कार्बो-वेज, सिङ्कोना, लेकेसिस)। इरिजिरन कैनाडेन्सि, सेवाइनाकी तरह शोणित स्रावमें प्रयुक्त होता है,—फर्क इतना ही है, कि मूत्रस्थली और मलांत के भीतर तकलीफ और खुजली मौजूद रहती है। हैमामिलिस—काला शोणित स्राव—जिस अंशसे खूनका स्राव होता है उसी जगह ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो घाव हो गया है। ऐकालिफा इण्डि—सूखी खांसीके साथ खून मिला कफ निकलता है। सिलोमेम—सरमें चक्कर और टेढ़ा देखनेके साथ बहुत ज्यादा खूनका स्राव। विङ्का माइनर—ऋतुके बाद भी खूनका स्राव हुआ करता है। बहुत ज्यादा दुर्दमनीय शोणितस्राव=थ्लैस्पि, वार्सा, पैस्टोरिस।

दोषघ्न ।—ऐकोनाइट।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३ री दशमिक शक्ति।

सिस्टस केनाडेन्सिस ।

(CISTUS CANADENSIS)

दूसरा नाम ।—रक-रोज, फ्रास्ट प्लैण्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे पौधेसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—हड्डीकी बीमारी; कैन्सर या कर्कट रोग; अतिसार; विसर्प; श्वासनाली प्रदाह; ग्रन्थिका बढ़ना; सड़नेवाले जखम; अँगुल हाड़ा; कर्ण मूल; गण्ड माला; गलक्षत; जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—ललाट देश, नाकका छेद, उदर और दोनों पैरमें बहुत ठण्डक मालूम होना। लसिका ग्रन्थि और त्वचाके ऊपर इसकी प्रगाढ़ शक्ति प्रकट हुआ करती है। ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं, उनमें प्रदाह हो जाता है, तथा वे कड़ी और जखम-भरी हो जाती हैं। गण्डमाला, पुराना जखम, निचले हनुका जखम वगैरह इसके विषयी-भूत हैं। हाथ पैरकी पेशियोंमें खींचन और कम्पन मालूम होता है। कलाई, अँगुलि, और जानु सन्धिमें दर्द पैदा कर देता है। स्वरनाली और उदरके भीतर ठण्ढक मालूम होना और गलेके भीतर सब्जकी तरह किसी कोमल चोजका रहना मालूम होता है। यही इसका निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली ।

मन ।—विरक्तिका दुष्परिणाम।

मस्तक ।—सरमें दर्द।

आंख ।—आंखमें सुई वेधनेकी तरह दर्द।

कान ।—रन्ध्रमें सूजनके साथ कानके छेदसे बदबूदार पानीकी तरह पीव निकला करता है। कानके ऊपर और चारों ओर दादकी तरह उद्भेद निकलते हैं और कर्ण विवरके बाहरकी ओर तक फैल जाते हैं (कैल्के, पाइ-रोटो)। कानके पाससे आरम्भ होकर, गालके ऊपरी अंशतक मूल उठता है, कर्ण मूल ग्रन्थिका फूलना।

नाक।—छेदमें बहुत ठण्डक मालूम होना, पुराना पीनस रोग,—जब बहुत ज्यादा छींक, विशेषकर सवेरे और सन्ध्याके समय आती है। बायां रन्ध्र फैला और फूला। नासारन्ध्रमें दर्द। खसड़ा—कच्छू, (Eczema)।

मुख-मण्डल।—रह रहकर मुखमण्डल लाल और गर्म हो उठता है। रस-भरी फुन्सियोंके साथ (Vesicular) विसर्प,—मुंहकी हड्डीमें जलन और गर्मी मालूम होना। दाहिनी गण्डास्थिपर मोटे फटे घाव पैदा हो जाते हैं और उसमें बहुत दर्द होता है। बहुत खुजलाता है और जलन मालूम होती है।

मुंहके भीतर।—निचले हनुकी हड्डीमें जखम,—इसके साथ ही गलेकी गांठ पक जाती है। निचले ओंठसे खून गिरता है, ऐसा कर्कटका अर्बुद पैदा हो जाता है (Fungus Hematodes=फास ; थूजा ; काण्डुरेङ्गो)। मुख-विवरके भीतर और नाकके ऊपर फैलने वाला जखम, ऊपरी पांटीके क्षयप्राप्त एक दांतमें चिडिक मारनेकी तरह और सुई गड़नेकी तरह दर्द ; मसूढ़ेसे सहज में ही रक्तस्राव हो जाता है और वह फूल उठता है। मसूढ़ा दांतसे अलग हो जाता है और फूल जाता है। बहुत ही बदबूदार खून निकलता है। मुंहमें हवा खींचनेपर बहुत ठण्डी मालूम होती है। मसूढ़ा दबानेपर उससे पीब निकलता है (मार्क, क्रियो, साइलि)।

गलेके भीतर।—जिह्वा-मूलके पार्श्ववाले गह्वरमें प्रदाह हो जाता है और वह नीरस हो पड़ता है, परन्तु रोगीको सूखापन नहीं मालूम होता। प्राय: सवेरे गलेसे स्वाद हीन, गोंदकी तरह और गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है। कण्ठ में ठण्डी हवा थोड़ी भी जानेपर गलेका जखम पैदा हो जाता है। कण्ठनालीका असह्य सूखापन दूर करनेकी आशामें रोगी बार बार मुंहके भीतर लार संचितकर निगला करता है। खासकर रातमें। सोने बाद मुंहका सूखापन बढ़ जाता है। गलनालीके भीतर एक सीमाबद्ध अंश बहुत सूखा मालूम होता है (ड्राई, रास ; स्टैन) ;—नींदके बाद बढ़ना, इसे दूर करनेके लिये बार बार पानी पीता है (सिनेबेरिस) ; भोजनके बाद घटना ; गलेका भीतरी भाग चमकीला मालूम होता है (फास)। तालुमूलके पीछेवाले अंशमें कड़ा लेईकी तरह श्लेष्मा सूत की तरह लगा हुआ दिखाई देता है (फाइटो)। किसी तरहका मानसिक उद्वेग होनेपर, गलेके भीतर सुई बेधनेकी तरह दर्दकी वजहसे खांसी पैदा हो जाती है

अलिजिह्वा और गलकोषका फूलना। कण्ठके भीतरकी गांठें सब फूलती और पक जाती हैं। गलगण्ड (Goitre) (थाइरायड) और बार बार उदरामय।

मल।—उदरामय,—मल पतला, सफेद, पीला रङ्ग, कोमल, छिटककर निकलता है ; (सवेरे) दुर्दमनीय वेग ; वृद्धि = रातके अन्तिम भागसे दिनके दोपहर तक, भोजनके बाद (थूजा, पोडो), फल खानेपर (कार्बो-वेज, सिनकोना, कोलो,पल्स) और काफी पीनेपर (साइक्ले, कैम्म, ऐसिड-फास्फ) ; अस्थिसार, ग्रन्थियां जिनकी फूला करती हैं ऐसे धातुवाले (Scrofulous) बच्चोंकी बीमारी।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्तन प्रदाह युक्त और कड़े (बेल, फाइटो) और छातीमें भार मालूम होना। ठण्ढी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती। श्लेष्मा प्रधान धातु। बदबूदार प्रदरका स्राव। फैलनेवाला विसर्प (Erysipelas) के बाद ऋतु बन्द हो जाया करता है।

श्वास-यंत्र।—छातीके भीतर ठण्ढक मालूम होती है (आर्स, बार्बे, लेके, रास, रियुटा, जिङ्कम)। ग्रीवामें असंख्य कड़े और छोटे छोटे अर्बुद मालूम होते हैं। सन्ध्याके समय सोनेपर और रातमें श्वास-प्रश्वास दमाकी तरह हो जाता हैं ; गलेमें सांय सांय शब्द हुआ करता है। रोगी को ऐसा मालूम होता है, मानो वायुनली बहुत ही संकीर्ण हो गयी हो। थोड़ी और भी प्रशस्त होती तो मजेमें श्वास प्रश्वास ले सकता। दमा आरम्भ होनेके पहले समूचे शरीरमें इस ढंगकी सुरसुरी मालूम होती है, मानो चींटी रेंग रही हो।

प्रत्यङ्गादि।—पीठमें गण्डमाला दोषकी वजहसे जखम। मेरुदण्डके नीचे ज्वरयुक्त वेदना,—बैठनेपर दर्द मालूम होता है (कास्टि, कैलि-बाई)। सोनेसे ही दर्द बढ़ जाता है (कैलि-बाई) ; बांयां कन्धा और वक्षस्थलमें तेज दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो डकार आनेपर आराम हो जायगा। ठण्ढी हवा लगनेसे अँगुलीका अगला भाग बहुत ठण्ढा मालूम होता है। मणिबन्ध या कलाईमें बहुत दर्द,—मानो मोच खा गया है। पैरका तलवा बहुत ठण्ढा मालूम होता है, पैरमें पारा या उपदंश विषसे पैदा हुआ जखम,—अनमनीय सूजन। निम्नाङ्गकी सफेद रङ्गकी सूजन (आर्स, कैल्के, आयोड, लाई, मार्क, सलफर ; लाल रङ्गकी सूजन = ऐसिड-फ्लूड, आर्नि, ब्राई, कार्बो-वे, सिङ्को, सैबाइना ; ऊपरकी गहरी नीले रङ्गकी सूजन = लेके ; गहरे लाल रङ्गकी = बेल)।

हाथमें छोटे छोटे छालेकी तरह उद्भेद,— खुजलानेपर रस निकलता है और वह जगह फूल उठती है और गर्म मालूम होती है।

त्वचा ।—किसी तरहकी खुजली नहीं रहती अथच सारा शरीर बहुत खुजलाता है (डलिकस)। विकार प्राप्त हो जानेवाला सफेद रङ्गका चर्म रोग (Lupus)। पारा और उपदंश-विष जनित अनमनीय स्फीति-युक्त क्षत, सारी ग्रन्थियाँ प्रदाहित हो उठती हैं, फूल जाती हैं और लचीली नहीं रह जाती हैं (आर्जेण्ट-नाइ, कोना)।

वृद्धि ।—ठण्डी हवा लगते ही, सन्ध्याके बाद सोनेपर, रातमें और सवेरे (उदरामय)।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न-प्रतिविष ।—रास; सिपि; बार बार सिष्टस प्रयोगके बीच बीचमें वेल, कार्बो-वेज, फास; प्रभृतिके प्रयोगसे उत्तम फल पाया जाता है।

सदृश ।—आर्जेण्ट-नाइ, आर्जेण्ट-मेट, कार्बो-वेज, कोनायम, थाइ-रायडिन, वेसिलिनम।

शक्ति ।—पहले दशमिकसे ६ ठी और ३० से २०० शततमिक क्रम।

साइट्रस लिमोनम ।
(CITRUS LIMONUM)

दूसरा नाम ।—लेमन, नीबू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नीबूके रससे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—नीबूके रसमें साइट्रिक एसिड यथेष्ट परिमाणमें रहता है। नीबूका अर्क और साइट्रिक एसिड बहुत दिनोंतक समुद्र-यात्रा करनेके कारण स्कर्वि या शीताङ्ग रोगकी दवा और प्रतिषेधक रूपमें व्यवहृत हुआ करता है। एक भाग साइट्रिक एसिड आठ भाग पानीके साथ बाहरी प्रयोग करनेपर कैन्सरका दर्द घट जाता है। इसके अलावा कब्जियत, आक्षेप, उदरामय, शोथ, आमाशय, सर्द-गर्मी, श्वास-कष्ट, रक्तस्राव, वात, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह वगैरह रोगमें इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—ऐसेटिक-ऐसिड, रूटा, बेल, लैके।

दोषघ्न।—ऐकोन, ऐसाराम, इयुफोर्बिया, हिपर, सिपिया। यह ऐकोन, इयुफोर्बि, ब्रूमो, बेलका विष-दोष नष्ट करता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

क्लिमेटिस इरेक्टा।
(CLEMATIS ERECTA)

दूसरा नाम।—वार्जिनस वायर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्ते और डण्ठलसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—कैन्सर या कर्कटीया जखम ; आँखकी बीमारी ; मुखमें फोड़ा ; प्रमेह; सर दर्द ; वात ; अण्डकोषका प्रदाह ; दाँतका दर्द ; पेशाब रुकना।

उपयोगिता और आभास।—रुके हुए प्रमेहकी वजहसे जितनी तरहकी बीमारियाँ हो सकती हैं ; उन सबपर क्लिमेटिसकी आश्चर्य-जनक क्षमता होती है ; पलसेटिलाके प्रयोगसे रुका हुआ स्राव फिरसे जारी हो जाता है और यन्त्रणा आदि घट जानेपर क्लिमेटिसका प्रयोग करनेसे रोगके बाकी लक्षण एकदम दूर हो जाते हैं। श्लेष्मा प्रधान, वात प्रधान और उपदंश विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह बहुत लाभदायक है। दिनमें, यहां तक कि सवेरेतक रोगीकी निद्राका आवेश बहुत ही अधिक बना रहता है। इसका प्रधान स्नायविक लक्षण यह है, कि रोगीको सोने बाद उसके सारे शरीरमें कपकपी मालूम होती है। पेशियाँ सब फड़कती हैं और रोगीको शरीरमें बहुत ही गड़बड़ी मालूम होती है। इसके अलावा स्नायुशूल, अण्डकोष आदि ग्रन्थियोंका प्रदाह और कड़ापन, खसड़ा या कच्छु और चर्म रोग पैदा होनेवाले व्यक्तिके वातरोगमें यह बहुत लाभदायक है। नीचे लिखे कई लक्षण इसके अत्यन्त सहायक लक्षण हैं:—(१) ऐसा सर दर्द जिससे बुद्धि विलुप्त हो जाती है, मस्तिष्कमें फटनेकी तरह और माथेके अस्थि-फलकमें छेदने की तरह दर्द। (२) दोनों आंखें सूखी, लाल और गर्म ; कर कर झन झन

करती हैं—ऐसा दर्द और जलन, अक्षिगोलकके बीचवाले स्थानमें दर्द ; आंखसे पानी गिरता है, आंखमें ठण्डी हवा लगना अच्छा नहीं मालूम होता, उपदंश दोषकी वजहसे आंखोंका तारकामण्डल प्रदाह (Syphilitis)। खोपड़ी या माथेके आवरण (Scalp) में बहुत खुजली होती है ; माथेके ऊपर खासकर माथेके पिछले भागमें, और हाथमें खसड़ा (Eczema) निकल आता है। शय्याके उत्तापसे बढ़ जाता है, (४) पुट्ठे प्रदेशमेंकी ग्रन्थियां सब फूल जाती हैं और छूनेपर उनमें बहुत दर्द होता है। रेतोरज्जुमें खींचन और टान मालूम पड़ती है। (५) मूत्राशयमें उत्तेजना प्रवणता अर्थात बार बार पेशाबका वेग होता है, पेशाब बड़े वेगसे हुआ करता है, विशेषकर पेशाबके प्रारम्भके समय बहुत तकलीफ होती है। मूत्रनाली रुक जानेकी वजहसे हर बार पेशाब करनेमें बहुत जोर लगाना पड़ता है और देर लगती है। (६) अण्डकोषमें चोटकी तरह दर्द ; रातमें शय्याके उत्तापसे बढ़ना। प्रमेहका स्राव रुक जानेकी वजहसे एक शिरा रोग। (अर्थात एक ओरका अण्डका बढ़ना।)

लक्षणावली।

मन।—प्रायः सोचनेकी शक्ति नहीं रहती (इथ्यू, ऐपिस, वैप, कैलि-नाईं, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, नक्स-मस, अनसमोड, सिपि)। अकेला रहनेसे डरता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, विस्मथ, कोना, हायो, कैलि-कार्ब, लिलि-टाईं, लेक-कैन, लाई, सिपि, स्ट्रैम, इलेप्स कोरेल, वेरेट) ; पर अपने प्रियतम बन्धुसे भी मिलना नहीं चाहता। (आर्स, कैलि-फास, सिपि, स्टैन, थूजा)। चित्त विषाद युक्त और हमेशा सोचा करता है कि विपत्ति आना ही चाहती है (ऐमोनका, किनिन-सल्फ, ऐक्टि, क्यूप्रम, ऐसिड हाइड्रो, लोरो, लिलि-टाईं, मैंग-कार्ब, स्कुटेलेरिया, सिपि, वैलि, वेरेट)।

मस्तक।—बायीं कनपटीमें बहुत दर्द,—ऐसा मालूम होता है मानो गढ़ा हो रहा है, मानो सामनेवाला अंश चिपक गया है ; बैठनेवाली अवस्थाकी अपेक्षा सोनेवाली अवस्थामें और माथेको पीछेकी ओर झुका देनेपर दर्द अधिक होता है और माथेमें भार मालूम होता है। सरके पीछेकी ओरसे गर्दनके पिछले भागतक रस-भरे दाने निकल आते हैं,—रस स्रावी, बहुत दर्द करने बाद उनमें सड़सड़ाहट होती है और डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। माथा खुजलाता है। रस सूखकर प्रायः पपड़ी जम जाती है ; शय्याके

उत्तापसे खुजलाहट बढ़ जाती है; और खुजलानेपर बहुत कम और थोड़ी देरके लिये आराम मिलता है।

आँख।—आंख करकराती है (लैक्टियुका, लाई, मार्क, नक्स, पो—आंख बन्द करनेपर बढ़ जाती है (क्रोकस); फिर आंख खोलनेपर रोशनी सहन नहीं होती (ऐको, आर्स, बेल, युफ्रे, सल्फ)। पलकोंकी बग बहुत दिनोंतक स्थायी लाली और उनमें तकलीफ मालूम होती है। तार मण्डल प्रदाहमें आंखसे पानी गिरनेके कारण अचिमुकुरके साथ तार (पुतली) लग जानेकी आशंका पैदा हो जाती है (Plastic Iritis=म सोल, मार्क-कोर, रास (नश्तर लगवाने बाद); टेरिब, थूजा)। आँखें ऐसा मालूम होता है मानो खाल उधड़ गयी है,—कैशिक (Capillary शिराएँ सब मोटी हो गयी सी मालूम होती हैं और आंखसे बराबर पा गिरा करता है; बन्द करनेपर दर्द बढ़ जाता है; परन्तु निर्मल ठण्डी ह असह्य मालूम होनेके कारण आंख खोलनेका साहस नहीं होता। सभी चीं काली दिखाई देती हैं (बेल, केलि-कार्ब, मैग-कार्ब, फास, सिपि, साइलि स्ट्राम) एकाएक गहरे अन्धकारका आविर्भाव हो जाता है (लैक-कैन, लाई पाल्स)।

नाक।—भयानक सर्दीके साथ बार बार छींक। नासारन्ध्रसे खु मिला श्लेष्मा निकलता है। नाकके ऊपर छोटे छोटे छाले निकल आते हैं,—मानो धूपमें जल गये हैं।

मुख-मण्डल।—चेहरा रक्तहीन और दर्द प्रकट करनेवाला, मुँहके दाहिने पार्श्वमें हमेशा दर्द हुआ करता है और इस पार्श्वके छूनेपर दर्द होता है, धूम्रपान करनेसे घटता है,—पर रोगवाले पार्श्वमें हाथ लगाने या सोनेपर दर्द बढ़ जाता है। मुखमण्डलके दाहिनी ओरसे तेज दर्द ऊपरकी ओर उठकर आँख, कान और कनपटी तक फैल जाता है। हनुके नीचेकी हड्डियां सब फूल जाया करती हैं और उनपर कड़े दाने निकलते हैं।

मुख-विवर।—दांतमें दर्द,—सूक्ष्म शलाका वेधनेकी तरह और खींचन की तरह दर्द,—रातमें शय्याके उत्तापसे और धूम्रपान करनेपर दर्द बढ़ जाता है। मुँहमें ठण्डा पानी लेनेपर, कुछ देरके लिये ठण्डी हवा मुंहमें खींचनेपर और निर्मल हवा लगनेपर घटना। यदि टुखानेकी चीजका एक कड़ा भी दांतमें

भड़ जाये तो फिरसे दर्द पैदा हो जाता है ; उपदंश रोगकी बीमारियोंमें पाराका प्रयोग करनेके कारण दांतमें दर्द, मुंहकी गन्ध दूसरोंके लिये घृणाप्रद मालूम होती है । क्षय हुआ दांत बहुत लम्बा मालूम होता है ।

पेशाब ।—मूत्रस्थलीका स्नायुशूल । पेशाबका वेग बार बार परन्तु परिमाणमें बहु थोड़ा होता है । पेशाब निकलना आरम्भ होनेके समय या निकलते निकलते जब बन्द हो जाता है, तब बहुत जलन होती है । पीबकी तरह तली जमती है । प्रसवके बाद बूंद बूंद पेशाब निकला करता है । बहुत दिनोंका मूत्रस्थलीका अवरोध (Stricture),—बड़े कष्टसे बूंद बूंद पेशाब होता है ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—अण्डकोषमें सूजन और कड़ापन (स्थिया, रोडो, आरम) और उनमें बहुत दर्द । मुष्कका दाहिना भाग फूला,—अण्डकोष शिथिल झूल पड़ता है (पल्स, कैल्क) । रुके हुए प्रमेहकी वजहसे जलन और पेशाब करनेवाली इन्द्रियकी बीमारी (पल्स; मिडोरि), दाहिने पार्श्वके रेतोरज्जुमें इतना दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता और दोनों अण्डकोष ऊपरकी ओर खिंच जाते हैं (आरम, आर्जेण्ट-नाई, स्थिया) ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बाएँ स्तनमें कर्कटकी तरह अर्बुद (Scirrhus =कोना, फाइटो),—इस पार्श्वकी ग्रन्थि या कन्धेमें या बाहुमें सलाई बेधनेकी तरह दर्द, ठण्डी हवामें और रातके समय और शुक्ल पक्षके अन्तिम भागमें यंत्रणा बढ़ जाती है । जखमके बगलमें कांटा गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है ।

श्वास-यंत्र ।—श्वास प्रश्वासके समय छातीमें दबाव मालूम होना, बाएँ पार्श्वमें अधिक दर्द ; तेज शलाका बेधनेकी तरह, हृत्पिण्डके पास तेज दर्द होता है, और सलाई गड़नेकी तरह मालूम होता है ; दर्दकी गति भीतरकी ओरसे बाहरकी ओर मालूम होती है ।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि ।—पैरकी अँगुलियोंमें खुजलाहट होती है; सन्ध्याके समय सोनेपर ; पैरकी अँगुलियोंमें बहुत पसीना होता है । चर्मोद्भेद (Eruption),—शुक्ल पक्षमें इनमें बहुत प्रदाह पैदा हो जाता है । रक्तमिला खसड़ा (Eczema), बहुत खुजलाता है । ठण्डे पानीसे धोनेपर शय्याके उत्तापसे और गीली पट्टी लगानेपर बढ़ता है । हनुस्थल और वंक्षण-देशीय पुट्ठेकी (Inguinal) ग्रन्थियां सब फूल जाती हैं और प्रदा[illegible] जाती हैं ।

वृद्धि।—शय्याके उत्तापसे, उज्वल रोशनीसे, रोगवाली करवट सोनेपर; धूम्रपानसे (दन्तशूल) और ठण्डे पानीसे धोनेपर (चर्मरोग)।

घटना।—धूम्रपान (मुंहका दर्द); निर्मल हवामें और ठण्डे पानी का प्रयोग करनेपर (दांतमें दर्द)।

सम्बन्ध।—सदृश।—पल्स, मिडोरिन, अरम, स्टैफ, साइलि, कैल्क, ऐ-फास। साइलिसियाके बाद क्लिमेटिस विशेष उपयोगी है। सरके पिछले भागके और गर्दनके पिछले भागके चर्माङ्कुरके सम्बन्धमें यह पेट्रोलियमके सदृश है। दन्तशूलके सम्बन्धमें ब्रायोनिया क्लिमेटिसका प्रतिविष या दोषघ्न है।

तुलनीय।—आर्स (चर्म); पल्स (प्रमेहकी वजहसे अण्डकोष प्रदाह); बेल, ब्रायो, कैल्क, डलकाम (उपदंशका जखम); प्रदाह, मार्कु इत्यादि।

शक्ति।—३ री दशमिकसे २०० शततमिक।

कोवाल्टम।

(COBALTUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—धातुका विचूर्ण और अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— कब्जियत; आंखकी बीमारी; प्रमेह; रक्तस्राव; सर-दर्द; यकृतका विकार; कटिशूल; नकली मैथुनका दुष्परिणाम।

उपयोगिता और आभास।—इन्द्रिय परायणताकी वजहसे सम्पूर्ण स्नायविक अवसाद, कमरमें बहुत ज्यादा दर्द, मेरुमज्जाका क्षय, वगैरहमें इसका लाभ प्रसिद्ध है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं,—कमरमें दर्द बैठनेपर बढ़ना; बैठे बैठे उठनेपर, चलने या सोनेपर घटना। रेतःस्खलन होनेपर कमरमें दर्द। बार बार रातको समय रेतःस्खलन; इसके साथ ही कामोद्दीपक सपने देखना; लिङ्गमें कड़ापन या तो थोड़ा होता है या बिलकुल ही नहीं होता; पुरुषत्वहीनता। सरमें दर्द, सामनेकी ओर झुकानेपर बढ़ना (पीछेकी ओर माथा हिलानेपर बढ़ना,—क्लिमेट)। माथा और गालमें छोटे छोटे दाने

निकलते हैं ; शय्याको त्यागनेसे ही शरीरकी खुजली बढ़ जाती है। आँखोंमें दाह और बहुत आँसू बहना ; क्षय हुए दाँतमें दर्द और यह दाँत बड़ा मालूम होता है और स्पर्श सहन नहीं होता। जीभ गाढ़े और सफेद लेपसे ढकी रहती है ; बीचका स्थान फटा फटा। रातमें भोजनसे अरुचि। पेशाबमें उग्र गन्ध भौंवाई ; नींदमें आराम नहीं मिलता।

लक्षणावली।

मन।—मानसिक उत्तेजनासे तकलीफ बढ़ जाती है। चित्त बड़ा फुर्तीला रहता है ; कल्पना-शक्ति अत्यन्त प्रबल,—मनमें बड़ी तेजीसे भावपर भाव पैदा होते हैं। हमेशा विद्या-चर्चाकी स्पृहा (कैरिका-पेपाया, पेडिक्यूलस) मानसिक या शारीरिक परिश्रम नहीं करना चाहता (लैक कैन)। अपने स्वास्थ्यकी बहुत चिन्ता किया करता है। (पलुस, सिपि)।

मस्तक।—पाखानेके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो माथा बड़ा होता जाता है। सरमें दर्द,—माथा झुकाते ही बढ़ जाता है, (ब्राई, कैल्क-फास, कोली, क्रियो, इग्ने, लेके, पेट्रोल, पलुस, सिपि, साइलि, स्पाई, स्टेफि)। प्रतिबार एकाएक शरीर हिल जानेपर ऐसा मालूम होता है मानो ब्रह्म तालु उड़ जायगा। (बैप, ऐक्टा, नेट-म्यू, इयुका, कैमो)। मूर्द्धादेश, दाढ़ी और चिबुकमें बहुत खुजली होती है,— खुजलानेपर जलन होती है।

चक्षु।—लिखनेके समय आँखोंमें शूलकी तरह दर्द होता है। और आँख खोलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो दोनों पलकें सूतके सहारे खिंची हुई हैं और वह सूत टूटता जा रहा है। पढ़नेके समय दृष्टि काँपा करती है और सारे अक्षर अँधेरेमें छिपसे दिखते हैं। दृष्टि शक्तिके परिचालनके समय आँखोंमें कर्कराहट होती है और जलन हो जाती है। ठण्डी हवा लगनेपर आँखोंमें दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो आँखमें धूलके कण गिर गये हैं।

मुख-विवर।—ओठकी छाल उधड़ जाती है और उसमें जख्म हो जाता है, तथा खून निकलता है, मुँहको जोरसे दबा रखनेकी इच्छा। कोई खोये दाँतमें बहुत दर्द (बेल, कैल्क, कार्बो-वेज, कैमो, हायो, लेके, क्रियो, मार्क, पलुस, रास, स्टेफ) और ये दाँत और भी लम्बे मालूम होते हैं, (आर्स, कास्टि, क्लिमेट, सल्फ)। मसूढ़ा फूला, और दर्द-भरा मालूम होता है ; ठण्डी हवासे बढ़ जाता है।

पाकस्थली और अन्नाशय।—भोजनके बाद हिचकी (मिलो-मेन, हायो, इग्ने, मार्क, नक्स-युग, जिङ्कम)। इसके साथ ही ऊपरी पेटमें दर्द (ट्रियुक्ति)। सवेरे पाखाना हो जाने बाद वायु छूटना। पेटमें दर्द होता है; डकारके साथ खट्टा या तीता पानी गलेमें चढ़ आता है (ऐमोन-कार्ब, कैस्टोर, केलके-कास्टि, ऐ-सल्फ) पाकस्थली ऐसी मालूम होती है, मानो अजीर्ण खाये हुए पदार्थसे भरी हुई हो, यकृत प्रदेशसे लेकर उर देशतक तेज दर्द मालूम होता है। थोड़ा सा भी खानेसे पेट भर जाता है (ऐसिड-फ्लु ड, कार्बो-वेज, केस्टर, सिङ्को, क्रोक—लाई, नक्स-वोम, ओलि-ऐन, सल्फ)। भोजनके बाद पेटमें बहुत दर्द और गड़बड़ी मालूम होती हैं,—रोगीको बाध्य होकर टहलना या चलना फिरना पड़ता है।

मल।—चलनेके समय प्रबल वेग,—खड़े होनेपर रोग बढ़ जाता है; मल—अधिक परिमाणमें, पानीकी तरह और ऐसे वेगसे निकलता है जैसे कलसे पानी निकलता है। (नेट्र, पोडो, थूजा), कभी कभी कोमल और बड़ा गांठ गांठ निकला करता है; उसके साथ ही मलद्वारावरोधक पेशीमें दर्द; मल निकलनेके समय सिरमें चक्कर आना और मल त्यागने बाद कांखना, मल कभी कड़ा कभी पतला इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है। (ऐन्टिट, ऐसिड-फ्ल ड, ऐसिड-टार्ट, आयोड, लैके, नक्स, रास, रियुटा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—रातके समय बार बार वीर्य स्खलन, इसके साथ ही अश्लील कामोत्तेजक सपने, लिङ्गमें कड़ापन थोड़ा आता है या बिलकुल नहीं आता। क्लीवता, दाहिने अण्डकोषमें तेज दर्द,—पेशाबके बाद दर्द घट जाता है। जननेन्द्रिय और तलपेटमें हलके पीले विन्दु सब निकलते हैं। मूत्रनालीके अगले भागमें दर्द और हरे रंगके पीवका स्राव।

श्वासयंत्र।—खुस खुसी खांसी; कफ खून मिला गाढ़ा, लसदार श्लेष्मामय, स्वरनालीमें पूर्णता और दबाव मालूम होना; गलेमें छीलने और खाल उधड़नेकी तरह जलन मालूम होती हैं; जोरसे दांतपर दांत रखकर दबा रखनेकी इच्छा; दबाने; खाली घूंट लेने और ठण्डा पानी पीनेपर बढ़ जाता है।।

गर्दन और पीठ।—दोनो पृष्ठ-फलकोंके बीचमें, हृदयके पीछेकी ओर पीठमें और कमरमें दर्द मालूम होना, रेतःस्खलनको वजहसे कमरमें दर्द।

कटिदेश या मेरुदण्डमें लगातार दर्द, बैठनेपर दर्द बढ़ जाता है ; खड़े होनेपर चलनेके समय या सोनेपर दर्द घट जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—यकृत-प्रदेशसे मेरुदण्डतक तेज दर्द, तेजीसे फैल जाता है। वीर्यस्खलनकी वजहसे मानो जानु बहुत दुर्बल हो जाते हैं, दोनों जानु बहुत कमजोर मालूम होते है। दोनों पैर कांपते हैं और बैठनेपर दर्द होता है। नींद आनेके समय हाथ पैरोंमें चमक उठती है। पैरमें पसीना खट्टा या बदबूदार,—जूतेके सूपतलेकी तरह गन्ध आती है (ग्रेफ, बेराई, मिडोरिन, सेलिन)। दोनों पैरके तलवेमें सुई वेधनेको तरह दर्द, (ऐगार)।

निद्रा।—कामोद्दीपक अश्लील सपनोंकी वजहसे नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है। थोड़ा या बिना लिङ्गोद्रेक हुए ही निद्रावस्थामें वीर्य-स्खलन।

वृद्धि।—माथा झुकानेपर (सरमें दर्द)। चलनेके समय और खड़े होनेपर (मलवेग)। बैठनेपर (पीठ और मेरुदण्डका दर्द), ठण्डी हवामें (आंख और दांतमें दर्द) और ठण्डा पानी पीनेपर (खांसी)।

उपशम।—चलनेपर (उदरमें दर्द); खड़े होनेपर, चलनेपर और सोनेपर (कमर और मेरुदण्डमें दर्द)।

सम्बन्ध।—सदृश।—मिडोरिनम ; जिङ्कम ; सेलिनियम ; स्टैफ ; ऐग्नस कैस्ट ; सिपिया।

तुलनीय।—जिङ्कम (पीठमें दर्द); ऐगनस (ध्वजभङ्ग); नक्स-वी (कृत्रिम मैथुनका परिणाम); सिलिनियम इत्यादि।

शक्ति।—६ ठी से २०० शततमिक।

कोका।
(COCA)

दूसरा नाम।—एरिथ्राक्सिलन कोका (Erythroxylon Coca)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह दक्षिण अमेरिका और बोलिवियामें मिलता है। इसके पत्तेसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— शूल ; दमा ; कब्जियत ; खाँसी ; बहरापन ; कमजोरी ; ज्वर ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; बवासीर ; वात ; गण्डमाला ; शीताद ; स्वरकी क्षीणता इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जो मनुष्य बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक परिश्रमकी वजहसे दिनोंदिन क्षीण होते जा रहे हैं और जिनका स्नायु और मस्तिष्क बहुत ज्यादा काम करनेकी वजहसे सुस्त हो पड़ता है, नियमित रूपसे कोका सेवन करनेपर उनकी वह क्लान्ति और सुस्ती एकदम घट जाती है और वे नवीन बलसे बलवान होकर, कर्मक्षेत्रमें विचरण करनेमें समर्थ रहते हैं ; कुश्ती लड़ते लड़ते हाँफ उठते हैं, वृद्ध मनुष्य सामान्य परिश्रमसे ही बेदम हो पड़ते हैं, धूम्रपान और शराब आदि पीनेकी वजहसे बीमारी ; बहुत ज्यादा परिश्रमकी वजहसे कलेजा धड़कना, पहाड़पर चढ़नेकी वजहसे थकावट वगैरह अवस्थामें इसकी आश्चर्य जनक शक्ति दिखाई देती है।

लक्षणावली।

मन।—स्नायविक अवसादके कारण हमेशा विमर्ष चित्त रहना, लज्जाशील, डरपोक और दस आदमियोंके सामने रहनेपर बहुत अस्वाच्छन्द्य मालूम होना। विषाद-भरा और उत्तेजना-प्रवण, निर्जनता और अन्धकार पसन्द करता है (आलोक और बन्धु-बान्धवोंका मिलना पसन्द करता है—स्ट्रैमो)। हिताहित (भलाई और बुराई) की बुद्धिका नष्ट होना।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ ही सरमें दर्द (ऐनाक, कास्टि, किनिन-सल्फ, लाइ, ऐण्टि-टार्ट ; सरमें दर्दके साथ सरमें चक्कर आना—आर्जेण्ट-नाइ, बैराइ-कार्ब, लेके, ऐ-नाइट्रिक) ; सरमें चक्कर आता है और कभी कभी ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके पीछे आघात या चोट लग गयी है (बेल, कास्टि, नक्स, सेङ्गियुइ, सिपि, स्पाइ, स्टैनम, क्रोक, ऐसिड-सल्फ)। कानमें आवाज,—कानमें नाना प्रकारकी आवाज आती है। दो देखना (बेल, साइक्ल, डिजि, हायो, नैट्र-म्यू, ओलियैन, पल्स, सिकेलि, वेरेट)। जीभ कोमल लेप चढ़ी ; सवेरे मुंहमें कोई भी स्वाद नहीं रहता ; नींद खुलनेपर भीतर मुंह बहुत सूख जाता है। मुंहमें मानो मिर्चा लग गया है, ऐसा मालूम होना।

पाकस्थली और अन्नाशय।—शराब आदि पीने (आर्स, लेके, नक्स, व्यूफो, पल्स, स्टेफ, सलफ, ऐ-सलफ) और धूम्रपानकी (डेफनो, युजि, स्टेफ, थिरिड) बहुत इच्छा; बहुत दिनोंकी अरुचि (क्लिमैंट, प्रूनस-स्पाई, जीरिह्याना-लुटिया)। पेट फूलकर वह वायु जोरसे और प्रबल वेगसे अन्ननाली (OEsophagus) में चढ़ती है, मानो उसके फट जानेका उपक्रम हो जाता है। पेटमें वायु रुकी रहनेके कारण भयंकर हृत्स्पन्दन (आर्जेंएट-नाई, नक्स); बहुत अधिक रसीले पदार्थ पीनेकी वजहसे बीमारी आदि, पेट बहुत फूल उठता है। मिष्टान्न (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, इपिक, कैलि-कार्ब, लाई, सेवाड, सल्फ, कैल्के) के अलावा और किसी भी पदार्थ पर रुचि नहीं रहती, दाँतका दर्द,—अर्थात दाँतमें कीड़े लग जानेके कारण पपड़ी उजड़ना। भूख प्यास नहीं रहती।

श्वास-यंत्र।—श्वासका छोटापन या दमा, विशेषकर पुराने बुड्ढे पहलवान (ऐसिड-फ्लू, रास) और बहुत अधिक शराब पीनेवाले और तम्बाकू सेवन करनेवालोंको खून मिला बलगमके साथ कफ निकलता है और उसके साथ ही वक्षस्थलमें दबाव मालूम होता है और श्वासकष्ट (फेरम ऐसेट; खुसखुसी खाँसीके साथ बार बार रक्त निकलता है=ऐकी; बार बार थोड़े परिमाणमें रक्त निकलता है=फास; सूखी खाँसीके साथ खून मिला कफ निकलता है=ऐकालिफाइन; सामान्य खाँसीके बाद सफेद फेन-भरा खून= मिलिफो; वक्षोस्थिके पीछे सुरसुरी और खाँसीके साथ फेनभरा चमकीला खून =फेरम ऐसेट; काली आभा लिये या जमा हुआ रक्त=हैमा; वक्षोस्थिके पीछे पिट-पिट करता है और खाँसी आती है और मिचलीके साथ काली आभा लिये या जमा खून निकलता है=इपिक)। भयंकर रूपसे कलेजा धड़कना; —पेटमें वायु (Flatus) रुके रहनेकी वजहसे (आर्जेंएट-नाई, नक्स); बहुत ज्यादा शारीरिक परिश्रम करनेकी वजहसे (ऐमोन-कार्ब, आयोड, पोडो, ऐसारेगस, सेल, सलफ नाइट्रस, थूजा,—बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम करने की वजहसे=इग्ने, ए-फ्लू, रास, सिफाइटिस, स्टेफ); हृत्पिण्डकी क्रियाकी अधिकताके कारण (आर्निका, बोर, कास्टि)। फुसफुस (फेफड़ा) के भीतर की और बाहरी हवाके घनत्वके प्रभेदसे पैदा हुई श्वास-यंत्रकी बीमारियाँ,—पहाड़ चढ़ने हवाई जहाजपर सफर करने वगैरहके कारण उत्पन्न होजाती है (आर्स, ऐसारेगस)। स्वर तन्तुकी कमजोरी,—स्वर फूँभा

चढ़नेसे ही कटा जाता है (आर्जेण्ट-नाइ)। स्वरभङ्ग,—बोलनेसे ही बढ़ जाता है।

पेशाब।—क्षीणताके साथ बहु मूत्र रोग, शय्यामूत्र।

वृद्धि।—मानसिक और शारीरिक परिश्रमकी अधिकतासे; बोलनेपर; दाँत निकलनेके समय।

निद्रा।—औंघाई बनी ही रहती है परन्तु किसी तरह भी आराम नहीं मिलता या कहीं भी स्थिर होकर रह नहीं सकता। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय नींद न आना और बेचैनी रहना।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—आर्स, ऐसारेगस, एसिड-फ्लू, रास, मिफाइटिस, पिक्र (निम्न क्रम)

तुलनीय।—आर्स (ऊँचे चढ़नेका दुष्परिणाम); इग्नेशियममें भंग और रोशनीकी स्पृहा है पर इसमें निर्ममता और अन्धकारकी स्पृहा है।

दोषघ्न।—जेलसिमियम।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे १२ शततमिक क्रम

कोकेइन।
(*COCAINE*)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कोकासे उत्पन्न उपक्षार विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—डा० क्लार्कने लिखा है:—कोकेइन (कोकाका उपक्षार या खारभाग) किसी स्थानको सुन्न कर देता है; इसका प्रधान लक्षण है, त्वचाके नीचे बालूके कण रहनेकी तरह मालूम होना। कभी कभी ऐसा मालूम होता मानो कीड़ा रेंग रहा है।

लक्षणावली

मन।—उसके मनमें हमेशा यही चिन्ता रहती है कि कोई महत् कार्य करे (सबका उपकार हो, ऐसे काम-सिरियस येन) या कोई असीम बल बताने

वाली कीर्ति स्थापित करें। बहादुरी दिखानेकी इच्छा अत्यन्त प्रबल होती है: लगातार बका करता है (आयोड, कैनाव-इण्डि, ऐक्टि, जेलसि, ग्लोन, हायो केलि-आयोड, लैकि, लैचनेन, ओपि, पेरिस, पोडो, पाइरोज, सेलिन, स्टिक ष्ट्रैम, टियुक्कि, थिरिडि) हमेशा वह यही सोचता है, कि लोग उसपर अत्याचार करते हैं (बैराइ, सिङ्को, कैलि-ब्रोम, लैके)। भ्रम देखना :—मानो उसके चारो ओर खटमल, कीड़े इत्यादि रेंग रहे हैं। उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसकी शरीरकी त्वचाके नीचे कोई बाहरी पदार्थ या कीड़ा चल रहा है (बैराइ, लैकिटयु, सेवाड,—जीव हिल रहा है,=क्रोक, थूजा ; सेवाइ, सल्फ, कैल्क-फास ; एराण्डो ; कैनाव-सैट,—माथेके भीतर=पेट्रोल, साइलि ; पाकाशयके भीतर=कियोनेन)। हिताहित बुद्धिका लोप हो जाना (कोका)। अपने शरीरकी सफाई और सौन्दर्यके सम्बन्धमें सम्पूर्ण उदासीनता। उसको विश्वास बना रहता है, कि लोग उसको निन्दा करते हैं (बैराइटा-कार्ब)। मस्तिष्ककी कियाकी अधिकता। उन्मत्तकी तरह घरमें दौड़ता फिरता है। बहुत उत्तेजित, किसी विषयपर क्षण भरके लिये भी मनोयोग नहीं लगा सकता। कोई उसकी ओर देखता है या उसे छूता है तो उसे भयङ्कर क्रोध पैदा हो जाता है। सभी चीजें जला डालना चाहता है। कोई बाधा देता है तो मार पीट और शोरगुल किया करता है।

मस्तक।—माथेमें टपकका दर्द (वेल, युपेट, क्रियो, पेट्रोल, रास-टॉक्सि, सिपि, साइलि, टोङ्गा-वेरेट) ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा (ऐमोन-कार्ब, वेल, कैम्फि, सिङ्को, डैफनो ; इग्ने, क्रियो, मार्क, नैट्र-म्यू, नक्स, रैटान, साइलि, स्पिञ्जिया) ; श्रवण-शक्तिको प्रखरता (आर्स, वेल, ब्राई, काफि, कोना, लैके, लाई, सिपि, साइलि, थिरिड, वायोला-ओडो)। कानमें आवाज,—कानके भीतर नाना प्रकारकी आवाज (ऐको, वेल, कास्टि, सिङ्को, काफि, किनिन-सल्फ, लैके, लाई, नैट्र-मुर, नक्स, सिपि, कैल्क-कास्टि)।

मुखमण्डल।—हमेशा दोनों आँखे ढकी रखता है ; आँख बन्द करनेके लिये घरमें रखी किसी चीजके पीछे जाकर छिप जाता है ; किसी तरहकी रोशनी भी उसे सहन नहीं हुआ करती है और आँखमें दर्द पैदा कर देती है, दोनों हाथोंसे आँखे ढक कर घरमें मतवालेकी तरह टलमलाया करता है। दोनों पलकें कांपा करती हैं। लगातार आँख मिटमिटाया करता है। दोनों

आँखें बहुत सखी और पुतली फैल जाती है। नाक, दोनों कान और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे, ललाटसे लेकर ओंठके ऊपरी भागतक सफेद या रक्तहीन परन्तु निचला अंश चमका करता है।

पाकस्थली।—केवल तरल पदार्थों में रुचि,—कड़ी चीज मुंहमें बिलकुल ही नहीं लेना चाहता। मिठाई खानेकी बहुत इच्छा (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, केल्के-आस्ट्र, इपिकं, सिना, लाइ, सेबाड, सल्फ)। अन्नाशय, फेफड़ा, पाकस्थली वगैरहसे खूनका स्राव (ऐकी, क्रोकस ; क्रोटेलस ; कार्बो-वेज ; फेरम, इपिकं, लेके, क्रियो, मिलि-फो, फास ; थ्लेस्पाई-वास, विष्ठा)।

श्वास-यंत्र।—श्वास-कष्ट,—पेट फुला कर गहरी सांस लिया और छोड़ा करता है। पीछेकी ओर माथा लटकाकर दीर्घ निश्वासकी तरह श्वास प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन किया करता है। कलेजा धड़कना,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो जरा हिलानेसे ही हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी (डिजि-टेलिस,—हिले बिना हृत्पिण्डकी गति बन्द हो जायगी=जेल्स)।

प्रत्यङ्ग आदि।—ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियाँ नाचती हैं। पेशीमें जब खींचन पड़ती है, उस समय जो सामने मिलता है, उसीको रोगिनी पकड़ लेती है, और जबतक भरपूर ताकत नहीं लगायी जाती तबतक उसके हाथसे वह वस्तु छुड़ायी नहीं जा सकती। ताण्डव रोग (Chorea) अधिकारमें ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियां नाचा करती है, (Twitch—ऐक्टिया-रैसि, आर्स, क्यूप्रम-ऐस, ऐगरिकस, वेरेट, इग्ने)। बहुत दिनोंतक ज्यादा मात्रामें शराब आदि पीने और वार्द्धक्यकी वजहसे अङ्ग-प्रत्यङ्ग कांपा करते हैं (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, ऐक्टिया ; हायड्राइडिन) सकम्प पक्षाघात (Paralysis-agitans)—पहले पेशीका प्रकम्प आरम्भ होकर लगातार पक्षाघात पैदा हो जाता है। (टैरण्टियुला—मस्तक और बाहुका पुराना कम्पन=ऐण्टिम-टार्ट ; बाएं पार्श्व पर अधिक आक्रमण होनेपर=हैलोडर्मा ; अधिकतर मार्क-वाई, ब्रायो)। देखने, सुनने वगैरहकी शक्ति-विधायक स्नायुका पक्षाघात। गात्र-त्वचाके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानों कीड़े आदि रेंग रहे हैं। दोनों बाहुओं का अगला भाग और तलहथी सुन्न मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, कि उसके भीतर चींटी आदि रेंग रही हैं।

वाली कीर्ति स्थापित करें । बहादुरी दिखानेकी इच्छा अत्यन्त प्रबल होती है। लगातार बका करता है (आयोड, कैनाब-इण्डि, ऐक्टि, जेलसि, ग्लोन, हायो, केलि-आयोड, लैके, लैचनेन, ओपि, पेरिस, पोडो, पाइरोज, सेलिन, स्ट्रिक्टा स्ट्रैम, टियुक्रि, थिरिडि) हमेशा वह यही सोचता है, कि लोग उसपर अत्याचार करते हैं (बेराई, सिङ्को, केलि-ब्रोम, लैके)। भ्रम देखना :—मानो उसके चारो ओर खटमल, कीड़े इत्यादि रेंग रहे हैं। उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसकी शरीरकी त्वचाके नीचे कोई बाहरी पदार्थ या कीड़ा चल रहा है (बेराई, लैक्टियु, सेवाड,—जीव हिल रहा है,=क्रोक, थूजा ; सेबाई, सल्फ, केल्के-फास ; एराण्डो ; कैनाब-सेट,—माथेके भीतर=पेट्रोल, साइलि ; पाकाशयके भीतर=कियोनेन)। हिताहित बुद्धिका लोप हो जाना (कोका)। अपने शरीरकी सफाई और सौन्दर्यके सम्बन्धमें सम्पूर्ण उदासीनता। उसको विश्वास बना रहता है, कि लोग उसको निन्दा करते हैं (बेराइटा-कार्ब)। मस्तिष्ककी क्रियाकी अधिकता। उन्मत्तकी तरह घरमें दौड़ता फिरता है। बहुत उत्तेजित, किसी विषयपर क्षण भरके लिये भी मनोयोग नहीं लगा सकता। कोई उसकी ओर देखता है या उसे छूता है तो उसे भयङ्कर क्रोध पैदा हो जाता है। सभी चीजें जला डालना चाहता है। कोई बाधा देता है तो मार पीट और शोरगुल किया करता है।

मस्तक ।—माथेमें टपकका दर्द (बेल, युपेट, क्रियो, पेट्रोल, रासरेडिक, सिपि, साइलि, टोङ्गा-वेरेट) ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा (ऐमोन-कार्ब, बेल, कैप्सि, सिङ्को, डेफनी ; इग्ने, क्रियो, मार्का, नेट्र-म्यू, नक्स, रैटान, साइलि, स्पिञ्जिया) ; श्रवण-शक्तिकी प्रखरता (आर्स, बेल, ब्राई, काफि, कोना, लैके, लाई, सिपि, साइलि, थिरिड, वायोला-ओडो)। कानमें आवाज,—कानके भीतर नाना प्रकारकी आवाज (ऐको, बेल, कास्टि, सिङ्को, काफि, किनिन-सल्फ, लैके, लाई, नेट्र-म्यूर, नक्स, सिपि, कैल्के-कास्टि)।

मुखमण्डल ।—हमेशा दोनों आंखे ढकी रखता है ; आंख बन्द करने के लिये घरमें रखी किसी चीजके पीछे जाकर छिप जाता है ; किसी तरहकी रोशनी भी उसे सहन नहीं हुआ करती है और आंखमें दर्द पैदा कर देती है, दोनों हाथोंसे आंखे ढक कर घरमें मतवालेकी तरह टलमलाया करता है। दोनों पलकें कांपा करती हैं। लगातार आंख मिटमिटाया करता है। दोनों

आंखें बहुत सूखी और पुतली फैल जाती है। नाक, दोनों कान और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे, ललाटसे लेकर ओंठके ऊपरी भागतक सफेद या रक्तहीन परन्तु निचला अंश चमका करता है।

पाकस्थली।—केवल तरल पदार्थों से रुचि,—कड़ी चीज मुंहमें बिलकुल ही नहीं लेना चाहता। मिठाई खानेकी बहुत इच्छा (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, केल्के-आस्ट्र, इपिका, सिना, लाईक, सैबाड, सल्फ)। अन्त्राशय, फेफड़ा, पाकस्थली वगैरहसे खूनका स्राव (ऐकी, क्रोकस ; क्रोटेलस ; कार्बो-वेज ; फेरम, इपिका, लेके,क्रियो, मिलि-फो, फास ; थ्लेस्पाई-वार्स, विष्ठा)।

श्वास-यंत्र।—श्वास-कष्ट,—पेट फुला कर गहरी सांस लिया और छोड़ा करता है। पीछेकी ओर माथा लटकाकर दीर्घ निश्वासकी तरह श्वास प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन किया करता है। कलेजा धड़कना,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो जरा हिलानेसे ही हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी (डिजिटेलिस,—हिले बिना हृत्पिण्डकी गति बन्द हो जायगी = जेल्स)।

प्रत्यङ्ग आदि।—ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियाँ नाचती हैं। पेशीमें जब खींचन पड़ती है, उस समय जो सामने मिलता है, उसीको रोगिनी पकड़ लेती है, और जबतक भरपूर ताकत नहीं लगायी जाती तबतक उसके हाथसे वह वस्तु छुड़ायी नहीं जा सकती। ताण्डव रोग (Chorea) अधिकारमें ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियां नाचा करती है, (Twitoh—ऐक्टिया-रेसि, आर्स, क्यूप्रम-ऐस, ऐगरिकस, वेरेट, इग्ने)। बहुत दिनोंतक ज्यादा मात्रामें शराब आदि पीने और वार्धक्यकी वजहसे अङ्ग-प्रत्यङ्ग कांपा करते हैं (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, ऐक्टिया ; थाइराइडिन) सकम्प पक्षाघात (Paralysis-agitans)—पहले पेशीका प्रकम्प आरम्भ होकर लगातार पक्षाघात पैदा हो जाता है। (टैरण्टियुला—मस्तक और बाहुका पुराना कम्पन = ऐण्टिम-टार्ट ; बाएँ पार्श्वपर अधिक आक्रमण होनेपर = हैलोडर्मा ; अधिककर मार्क-वाई, बेरायो)। देखने, सुनने वगैरहके शक्ति-विधायक स्नायुका पक्षाघात। गात्र-त्वचाके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानों कीड़े आदि रेंग रहे हैं। दोनों बाहुओं का अगला भाग और तलहथी सुन्न मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, कि उसके भीतर चींटी आदि रेंग रही है।

वाली कीर्ति स्थापित करें। बहादुरी दिखानेकी इच्छा अत्यन्त प्रबल होती है। लगातार बका करता है (आयोड, कैनाब-इण्डि, ऐक्टि, जेलसि, ग्लोन, हायो, कैलि-आयोड, लैके, लेचनेन, ओपि, पेरिस, पोडो, पाइरोज, सेलिन, स्टिक्टा स्ट्रैम, टियुकि, थिरिडि) हमेशा वह यही सोचता है, कि लोग उसपर अत्याचार करते हैं (बैराई, सिङ्को, कैलि-ब्रोम, लैके)। भ्रम देखना :—मानो उसके चारो ओर खटमल, कीड़े इत्यादि रेंग रहे हैं। उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसकी शरीरकी त्वचाके नीचे कोई बाहरी पदार्थ या कीड़ा चल रहा है (बेराई, लैक्टियु, सेबाड,—जीव हिल रहा है,=कोक, थूजा ; सेबाई, सल्फ, कैल्के-फास ; एराण्डो ; कैनाब-सैट,—माथेके भीतर=पेट्रोल, साइलि ; पाकाशयके भीतर=कियोनेन)। हिताहित बुद्धिका लोप हो जाना (कोका)। अपने शरीरकी सफाई और सौन्दर्यके सम्बन्धमें सम्पूर्ण उदासीनता। उसको विश्वास बना रहता है, कि लोग उसकी निन्दा करते हैं (बैराइटा-कार्ब)। मस्तिष्ककी क्रियाकी अधिकता। उन्मत्तकी तरह घरमें दौड़ता फिरता है। बहुत उत्तेजित, किसी विषयपर क्षण भरके लिये भी मनोयोग नहीं लगा सकता। कोई उसकी ओर देखता है या उसे छूता है तो उसे भयङ्कर क्रोध पैदा हो जाता है। सभी चीजें जला डालना चाहता है। कोई बाधा देता है तो मार पीट और शोरगुल किया करता है।

मस्तक।—माथेमें टपकका दर्द (बेल, युपेट, क्रियो, पेट्रोल, रास-टेक्सिक, सिपि, साइलि, टोङ्गा-वेरेट) ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा (ऐमोन-कार्ब, बेल, कैफि, सिङ्को, डेफनी ; इग्ने, क्रियो, मार्क, नैट्र-म्यू, नक्स, रैटान, साइलि, स्क्विया); श्रवण-शक्तिकी प्रखरता (आर्स, बेल, ब्राई, काफि, कोना, लैके, लाईके, सिपि, साइलि, थिरिड, वायोला-ओडो)। कानमें आवाज,—कानके भीतर नाना प्रकारकी आवाज (ऐको, बेल, कास्टि, सिङ्को, काफि, किनिन-सल्फ, लैके, लाईके, नैट्र-म्यूर, नक्स, सिपि, कैल्के-कास्टि)।

मुखमण्डल।—हमेशा दोनों आँखे ढकी रखता है ; आँख बन्द करनेके लिये घरमें रखी किसी चीजके पीछे जाकर छिप जाता है ; किसी तरहकी रोशनी भी उसे सहन नहीं हुआ करती है और आंखमें दर्द पैदा कर देती है, दोनों हाथोंसे आँखे ढक कर घरमें मतवालेकी तरह ढलमलाया करता है। दोनों पलकें कांपा करती हैं। लगातार आँख मिटमिटाया करता है। दोनों

आँखें बहुत सूखी और पुतली फैल जाती है। नाक, दोनों कान और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे, ललाटसे लेकर ओंठके ऊपरी भागतक सफेद या रक्तहीन परन्तु निचला अंश चमका करता है।

पाकस्थली।—केवल तरल पदार्थोंमें रुचि,—कड़ी चीज मुंहमें बिलकुल ही नहीं लेना चाहता। मिठाई खानेकी बहुत इच्छा (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, कैल्के-आस्ट्र, इपिकं, सिना, लाई, सैबाड, सल्फ)। अन्नाशय, फेफड़ा, पाकस्थली वगैरहसे खूनका स्राव (ऐको, क्रोकस ; क्रोटेलस ; कार्बो-वेज ; फेरम, इपिकं, लैके,क्रियो, मिलि-फो, फास ; थ्लेस्पाई-बार्स, विक्का)।

श्वास-यंत्र।—श्वास-कष्ट,—पेट फुला कर गहरी सांस लिया और छोड़ा करता है। पीछेकी ओर माथा लटकाकर दीर्घ निश्वासकी तरह श्वास प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन किया करता है। कलेजा धड़कना,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो जरा हिलानेसे ही हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी (डिजि-टेलिस,—हिले बिना हृत्पिण्डकी गति बन्द हो जायगी=जेल्स)।

प्रत्यङ्ग आदि।—ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियां नाचती हैं। पेशीमें जब खींचन पड़ती है, उस समय जो सामने मिलता है, उसीको रोगिनी पकड़ लेती है, और जबतक भरपूर ताकत नहीं लगायी जाती तबतक उसके हाथसे वह वस्तु छुड़ायी नहीं जा सकती। ताण्डव रोग (Chorea) अधिकारमें ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियां नाचा करती है, (Twitch—ऐक्टिया-रेसि, आर्स, कुप्रम-ऐस, ऐगरिकस, वेरेट, इग्ने)। बहुत दिनोंतक ज्यादा मात्रामें शराब आदि पीने और वार्द्धक्यकी वजहसे अङ्ग-प्रत्यङ्ग कांपा करते हैं (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, ऐक्टिया ; थाइराइडिन) सकम्प पक्षाघात (Paralysis-agitans)—पहले पेशीका प्रकम्प आरम्भ होकर लगातार पक्षाघात पैदा हो जाता है। (टेरण्टियुला—मस्तक और बाहुका पुराना कम्पन=ऐण्टिम-टार्ट ; बाएँ पार्श्वपर अधिक आक्रमण होनेपर=हेलोडर्मा ; अधिककर मार्क-साई, ब्रायो)। देखने, सुनने वगैरहकी शक्ति-विधायक स्नायुका पक्षाघात। गात्र-त्वचाके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानों कीड़े आदि रेंग रहे हैं। दोनों बाहुओं का अगला भाग और तलहत्थी सुन्न मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, कि उसके भीतर चींटी आदि रेंग रही है।

वाली कीर्ति स्थापित करें। बहादुरी दिखानेकी इच्छा अत्यन्त प्रबल होती है। लगातार बका करता है (आयोड, कैनाब-इण्डि, ऐक्टि, जेलसि, ग्लोन, हायो, केलि-आयोड, लैके, लैचनेन, ओपि, पेरिस, पोडो, पाइरोज, सेलिन, स्टिक्टा स्ट्रैम, टियुक्रि, थिरिडि) हमेशा वह यही सोचता है, कि लोग उसपर अत्याचार करते हैं (बैराइ, सिङ्को, केलि-ब्रोम, लैके)। भ्रम देखना :—मानो उसके चारो ओर खटमल, कीड़े इत्यादि रेंग रहे हैं। उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसकी शरीरकी त्वचाके नीचे कोई बाहरी पदार्थ या कीड़ा चल रहा है (बैराइ, लैक्टियु, सेबाड,—जीव हिल रहा है,=क्रोक, थूजा ; सेबाई, सल्फ, केल्के-फास ; एराण्डो ; कैनाब-सैट,—माथेके भीतर=पेट्रोल, साइलि ; पाकाशयके भीतर=क्रियोजेन)। हिताहित बुद्धिका लोप हो जाना (कोका)। अपने शरीरकी सफाई और सौन्दर्यके सम्बन्धमें सम्पूर्ण उदासीनता। उसको विश्वास बना रहता है, कि लोग उसकी निन्दा करते हैं (बैराइटा-कार्ब)। मस्तिष्ककी क्रियाकी अधिकता। उन्मत्तकी तरह घरमें दौड़ता फिरता है। बहुत उत्तेजित, किसी विषयपर क्षण भरके लिये भी मनोयोग नहीं लगा सकता। कोई उसकी ओर देखता है या उसे छूता है तो उसे भयङ्कर क्रोध पैदा हो जाता है। सभी चीजें जला डालना चाहता है। कोई बाधा देता है तो मार पीट और शोरगुल किया करता है।

मस्तक।—माथेमें टपकका दर्द (बेल, युपेट, क्रियो, पेट्रोल, रास-रेडिक, सिपि, साइलि, टोङ्गा-वेरेट) ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा (ऐमोन-कार्ब, बेल, कैप्सि, सिङ्को, डेफनी ; इग्ने, क्रियो, मार्क, नेट्र-म्यू, नक्स, रैटान, साइलि, स्पिजिया) ; श्रवण-शक्तिकी प्रखरता (आर्स, बेल, ब्राई, काफि, कोना, लैके, लाई, सिपि, साइलि, थिरिड, वायोला-ओडो)। कानमें आवाज,—कानके भीतर नाना प्रकारकी आवाज (ऐको, बेल, कास्टि, सिङ्को, काफि, किनिन-सल्फ, लैके, लाई, नेट्र-म्युर, नक्स, सिपि, केल्के-कास्टि)।

मुखमण्डल।—हमेशा दोनों आँखे ढकी रखता है ; आँख बन्द करनेके लिये घरमें रखी किसी चीजके पीछे जाकर छिप जाता है ; किसी तरहकी रोशनी भी उसे सहन नहीं हुआ करती है और आंखमें दर्द पैदा कर देती है, दोनों हाथोंसे आँखे ढक कर घरमें मतवालेकी तरह डगमगाया करता है। दोनों पलकें कांपा करती हैं। लगातार आँख मिटमिटाया करता है। दोनों

आंखें बहुत लाली और पुतली फैल जाती है। नाक, दोनों कान और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे, ललाटसे लेकर ओंठके ऊपरी भागतक सफेद या रक्तहीन परन्तु निचला अंश चमका करता है।

पाकस्थली।—केवल तरल पदार्थों से रुचि,—कड़ी चीज मुंहमें बिलकुल ही नहीं लेना चाहता। मिठाई खानेकी बहुत इच्छा (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, कोक्के-आस्ट्र, इपिक, सिना, लाई, सेवाड, सल्फ)। अन्नाशय, फेफड़ा, पाकस्थली वगैरहसे खूनका स्राव (ऐकी, फौकाम ; क्रोटेलस ; कार्बो-वेज ; फेरम, इपिक, लेके,क्रियो, मिलि-फो, फास ; थ्ल्लैसाई-वार्स, विष्ठा)।

श्वास-यंत्र।—श्वास-कष्ट,—पेट फुला कर गहरी सांस लिया और छोड़ा करता है। पीछेकी ओर माथा लटकाकर दीर्घ निश्वासकी तरह श्वास प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन किया करता है। कलेजा धड़कना,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो जरा हिलानेसे ही हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी (डिजि-टेलिस,—हिले बिना हृत्पिण्डकी गति बन्द हो जायगी=जैलस)।

प्रत्यङ्ग आदि।—ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियां नाचती हैं। पेशीमें जब खींचन पड़ती है, उस समय जो सामने मिलता है, उसीको रोगिनी पकड़ लेती है, और जबतक भरपूर ताकत नहीं लगायी जाती तबतक उसके हाथसे वह वस्तु छुड़ायी नहीं जा सकती। ताण्डव रोग (Chorea) अधिकारमें ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियां नाचा करती है, (Twitch—ऐक्टिया-रेसि, आर्स, क्यूप्रम-ऐस, ऐगरिकस, वेरेट, इग्ने)। बहुत दिनोंतक ज्यादा मात्रामें शराब आदि पीने और वार्द्धक्यकी वजहसे अङ्ग-प्रत्यङ्ग कांपा करते हैं (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, ऐक्टिया ; थाइराइडिन) सकम्प पक्षाघात (Paralysis-agitans)—पहले पेशीका प्रकम्प आरम्भ होकर लगातार पक्षाघात पैदा हो जाता है। (टैरण्टियुला—मस्तक और बाहुका पुराना कम्पन=ऐण्टिम-टार्ट ; बायें पार्श्व पर अधिक आक्रमण होनेपर=हेलोडर्मा ; अधिककर मार्क-साई, ब्रायो)। देखने, सुनने वगैरहके शक्ति-विधायक स्नायुका पक्षाघात। गात्र-त्वचाके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानों कीड़े आदि रेंग रहे हैं। दोनों बाहुओं का अगला भाग और तलहत्थी सुन्न मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, कि उसके भीतर चींटी आदि रेंग रही है।

सम्बन्ध —सदृश ।—ऐगरिकस, टेरेण्टियुला ; ऐक्टिया-रेसि, लैकेसिस डिजिटेलिस, जेल्स ।

शक्ति ।—१ म दशमिकसे ६ ठा दशमिक क्रम ।

काक्सिओनेला सेपटेमपङ्कटेटा ।

(COCCIONELLA SEPTEMPUNCTATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—स्त्री-विचिङ्गड़ाको पीसकर मदर टिञ्चर तैयार किया जाता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मुंहका स्नायुशूल ; जलातङ्क ; दांतका दर्द इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० क्लार्कका कथन है, कि दांत और मुंहके स्नायुपर इसकी क्रिया विशेष होती है और जलातङ्क रोगमें यह कैन्थरिसके सदृश है ।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—स्नायविक सर दर्द, ललाटका स्नायुशूल, बंधे समयपर बार बार पैदा होनेवाला (किनिनम-सल्फ, सिड्रन, कैलि-बाई, जिङ्कम-फास); दाहिनी भौंमें दर्द (बेल, चेल, रैनान, कैल्मिया, मैंग-फास); स्पर्श सहन नहीं होता (सिङ्को, कैप्स, प्लम्ब)। कनपटी और सरके पिछले भागमें बहुत दर्द लगातार मालूम होते रहना। सर दर्दके प्रकोपके समय आंख खोलकर देख नहीं सकता (ऐगार ; बेल, नैट्र-म्यूर, ओलियम-ऐन, सिपि, सैङ्ग्वि, सल्फ)। उज्वल चमकीली चीजकी ओर देखनेपर दर्द बढ़ जाता है (बेल, कैन्थरिस, हाइड्रोफोबिनम, स्ट्रैम) नींदसे घट जाता है (हेलिबो, सैङ्ग्युई)।

मुखमण्डल और मुख-विवर ।—दांतमें दर्द,—मसूड़े, दांत और मुंहके भीतर (सिस्टस); टपक जैसा दर्द (बेल, ऐको, कैमो, स्टैफ, पल्स)। रातमें मुंहके भीतर बहुत ज्यादा परिमाणमें लार सञ्चय होनेकी वजहसे नींद खुल जाती है। अलिजिह्वा बहुत बड़ी मालूम होती है। (भास, इग्ने, सेके,

मार्क-कोर, नक्स-वोम, पल्स, सल्फ)। हिचकी और पाकस्थलीके भीतर बहुत जलन।

जलातङ्क।—उज्वल चमकीली चीजकी ओर देखनेपर बढ़ जाता है (बेल, कैन्थ, हाइड्रोफोबिन, स्ट्रैम)।

पीठ।—मूत्र-ग्रन्थि (किडनी) प्रदेश और कमरमें बहुत दर्द होता है (बार्बे, केनाब-इन, क्लिमेट, नक्स, ओसिमम-कैनम; डायस्को, पेरिइरा-ब्रेवा, टेवाक, सिडोरिन, चिमैफिला, लाइ)।

हाथ-पैर आदि।—बरफकी तरह ठण्डे।

वृद्धि।—उज्वल चमकीली चीज देखने पर।

उपशम।—नींदके बाद।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—स्याइजि, थूजा। बेल, सिक्स, कैन्थ, सेग-फास, हाइड्रो-फोब, स्ट्रैमोन।

शक्ति।—३ रे दशमिकसे ६ ठा दशमिक क्रम।

काकुलस इण्डिकस।

(COCCULUS INDICUS)

दूसरा नाम।—काकमारी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका फल काला और बड़बटीकी तरह होता है। इसका बीज विषैला होता है, इसके चूर्णसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—
क्रोधका दुष्परिणाम; अस्थिकी बीमारी; मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह; ताण्डव; शूल; आक्षेप; दुर्बलता; मूर्च्छाभाव; भयका दुष्परिणाम; अर्श; सर-दर्द; आंव उतरना; सविराम ज्वर; घुटनेमें कमजोरी; स्मरण-शक्तिकी क्षीणता; रजो-विकारकी वजहसे सर-दर्द; बाधक या कष्टरज; बहुत ज्यादा शारीरिक या मानसिक परिश्रमका दुष्परिणाम; कलेजा कांपना; पक्षाघात;

कण मूल ; वात ; सवारीपर चढ़नेका दुष्परिणाम ; जल-यान (नाव-जहाज आदि) में भ्रमण करनेकी वजहसे वमन ; अनिद्राका दुष्परिणाम ; ओंघाई ; आक्षेप ; उदराध्मान ; सरमें चक्कर आना ; वमन इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जो स्त्रियां अविवाहिता या वन्ध्या हैं, जो शिक्षिताएं हैं, जो रात दिन पुस्तकें पढ़ा करती हैं, और जो ऋतु और गर्भाधानके समय नाना प्रकारके रोग भोगा करती हैं, उनके लिये ककुलस बहुत लाभदायक है। मिचली,—गाड़ी नाव या रेलगाड़ीमें चढ़कर कहीं जाते समय जिन्हें मिचली पैदा हो जाती है,—यहांतक कि चलती हुई नाव देखनेपर भी जिन्हें ओकाई आती है, शरीर बहुत क्षीण, रोगिनी खड़े होने, यहांतक कि बोलनेमें भी तकलीफ अनुभव करती है ; मानसिक उत्तेजना और रातमें जागरण इत्यादिके कारण शरीरको अस्वस्थता, रज-प्रकाश होनेके बदले, रक्तमय प्रदरका स्राव और ऋतुके आरम्भमें निम्नाङ्गमें (कमर और दोनों पैर) बहुत कमजोरी मालूम होना और माथा, पाकस्थली तथा अन्त्राशयका खाली मालूम होना, इत्यादि काकुलसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। इसके सभी लक्षण खाने और पीनेके बाद बढ़ जाते हैं—खासकर सर-दर्द। गर्भावस्थामें मिचली,—झूलेमें झूलनेपर या सवारीपर चढ़नेसे बढ़ जाती है। ऋतुकालमें और गर्भावस्थामें सभी निम्नाङ्ग क्षीण हो पड़ते हैं। तलपेटमें ऐसा मालम होता है, मानो पत्थर घसा जा रहा है। वाधक।

लक्षणावली।

मन।—प्रतिवाद सहन नहीं कर सकता (ऐनाक, ऐस्टोरि, अरम, अरम-म्यूर-नेट, कैमो, सिना, कोना, फेरम, हेलोनि, लाइ); सामान्य कारणसे ही क्रोध पैदा हो जाता है (ऐनाक, ऐसिट-क्रूड, ब्राई, कैप्स, सिना, हेलिबो, हिपर, लिडम, लाइकोपो, मिफाइटिस, मेजेर, नक्स, रियुम)। बहुत तेजीसे बातें करता है (सिना, हायो, लैके, स्ट्रैमो, थूजा, वेलि, वेरेट्र-ऐल्व); रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो समय बहुत जल्दी जल्दी बीतता जाता है (थिरिड,—समय नहीं कटता है = ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाइ, अरम, क्रैनाब-इन, कैमो, मिडोरिन, नक्स, ऐनहेल)। दूसरेके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें यत्नवान (कास्टि ; अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें यत्नवान = पल्स, सिपा ; अपनी देहको सजावटके सम्बन्धमें यत्न न करना = कोकेइन)। हमेशा चिन्ता-निमग्न (कैनाब-इन, सिलेमेन)।

खानेकी दुर्दमनीय इच्छा (क्रोया-चैट, सल्फि,टियुक्रि)। किसी विषयकी सहज में ही हृदयङ्गम नहीं कर सकता (ऐगार-कैष्ट, ऐम्ब्रा, नेट्र-कार्ब, ओलियेन, नक्स, ऐसिड-फास, ग्रस्ब)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—शय्यामें उठ बैठनेपर सरमें इतना चक्कर आता है, कि रोगी फिर सो जाता है, (शय्या त्यागकर उठना चाहनेपर=बेल, ग्रैफ, पेट्रोल, पल्स, रास) या सवारीपर चढ़नेपर सरमें चक्कर आता है, मस्तिष्क की जड़ता या सुन्नपन,—खाने पीनेसे बढ़ना, सरमें चक्कर—ऐसा मालूम होता है, मानो शराब पी है। माथा टनमनाया करता है। सरमें दर्दके साथ मिचली और ओकाई—सर और गर्दनके पिछले भागमें दर्दकी अधिकता,—दर्द मेरु-दण्डतक फैल जाता है,—माथेके चारों ओर ऐसा मालूम होता है, मानो एक डोरी कसकर बाँधी हुई है (इग्न, लोबेलिया, मार्क, सल्फ, थेरिडि); प्रत्येक ऋतुके समय, चित्त होकर सोनेपर और रोशनीमें दर्द बढ़ जाता है, आवाज सुननेसे ही मिचली आने लगती है। सरमें खालीपन मालूम होता है (इग्ने, ऐसिड-आक्सैल, सिपि, पल्स),—हवा खानेके समय और भोजनके बाद बढ़ना ; शय्याकी गर्मीसे शरीर गर्म होनेपर आराम मालूम होता है। सरके पिछले भागमें और गर्दनके पिछले भागमें दर्द ;—ऐसा मालूम होता है, मानो माथेका पिछला भाग एक बार फटता है, फिर छुटता है, किवाड़की तरह खुलता है, फिर बन्द होता है, (मूर्द्धदेशमें इसी तरह मालूम होना=ऐक्टिया, कैनाब-इन)। गर्दनके पिछले भागकी पेशियोंकी चीणताकी वजहसे माथा रह रहकर काँप उठता है,—निर्मल वायुमें, नींदके बाद (लैके) और काफिया या धूम्रपानसे (इग्ने) बढ़ जाता है। गर्म घरमें आराम मिलता है। आँख बन्द रहनेकी अवस्थामें अक्षिगोलक बराबर मा करता है। कानमें पानी बहनेकी तरह सों सों शब्द।

मुखमण्डल और मुखविवर ।—चेहरा रक्तहीन, दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं ; चेहरेपर ठण्ढा पसीना। कीड़े खाये या क्षय-प्राप्त दाँतमें बहुत दर्द (बेल, ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, कार्बो-वेज, कैमो, सिङ्को, हायो, लैके, मार्क, नक्स-मस, पल्स, रास, साइलि, स्टैफि, कोबाल्ट); किसी खानेकी चीजको खाने के समय ही केवल दर्द होता है—यहांतक कि कोमल पदार्थ चबानेपर भी दर्द होता है (सिङ्को, हायो, इग्ने, मार्क, नेट्र-म्यू, नक्स, ऐ-फास), मुँह जब खाली रहता है, तब दाँतसे दाँत घसनेसे भी दर्द नहीं मालूम होता। जीभपर

पीला लेप चढ़ा रहता है, भोजनसे अरुचि । खानेकी पदार्थमें नमक बहुत कम मालूम होता है । तम्बाकू सीठा मालूम होता है, मुख, जीभ और तालुमूलका पक्षाघात,—सुन्न मालूम होना और उसके साथ ही कनकनी जैसा दर्द । चर्वन पेशीमें अकड़न पैदा हो जाती है, मुँह खोलनेपर बहुत दर्द मालूम होता है, दो पहरके पहले मुँहका स्नायुशूल (स्टेन, वार्बेरिस),—दर्द बहुत दूरतक फैल जाया करता है ।

पाकस्थली ।—तांबेके जंगकी तरह स्वाद और अरुचि पर भूख रहती है,—(नेट्र-म्यू, श्रोपि, रास, साइलि) । खानेके समय बहुत प्यास । मिचलीकी वजहसे बेहोश हो जानेका उपक्रम । मिचली और वमन,—गाड़ी नाव या भाफ की गाड़ीपर चढ़कर भ्रमण करनेके समय (आर्नि, नक्स-मस, बोर, लार्क, पेट्रोल, सिपि) मिचली पैदा हो जाना ; यहांतक कि चलती हुई नावकी ओर देखनेसे भी मिचली और ओकाई आने लगती है (गाड़ी पर चढ़कर घूमनेसे मिचली घटती है=ऐ-नाइट्रि) । श्वास कष्टके साथ भोजनके समय और भोजन के बाद पाकस्थलीमें एकाएक अकड़न पैदा हो जाती है । पाकस्थलीका खाली मालूम होना (इग्ने, पेट्रोल, सिपि,—भरा मालूम होना=सिङ्को, लाई, नक्स-मस) । एकाएक सर्दी लगने या सर्दी हो जानेपर बहुत ज्यादा लारका स्राव होना और इसके साथ ही मिचली आने लगती है, हिचकी आने लगती है और जोर जोरसे जम्हाई आती है (रास, इग्ने), प्यास है, पर पानी अच्छा नहीं लगता (प्यास बहुत पर पानी पीनेसे डरता है=बेल, कैन्थ, हायो, नक्स, स्ट्राम) ठण्डा पानी पीनेकी बहुत अधिक इच्छा (ऐङ्गस, बोवि, कैमो, मार्क, ओलियैन, ऐसिड-फास, सेबाड, वेरेट) । खानेके पदार्थोंकी गन्धसे अरुचि पैदा हो जाती है (कोलचि) । धूम्रपानसे अरुचि (कैलेड, कैल्का, इग्ने, नक्स-युग, नक्स-मोम) ।

अन्नाशय ।—उदर खाली मालूम होना, ऐसा मानो उसमें कुछ भी नहीं है । पेट फूल उठता है और ऐसा मालूम होता है, मानो वह बदलकर पत्थर हो गया है ; हिलने डोलनेसे ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें पत्थर गड़ रहा है । करवट सोनेपर आराम मिलता है । यकृत प्रदेशमें दबावकी तरह मालूम होना, खांसने और झुकनेपर दर्द बढ़ जाता है । तलपेटके नीचे आंतके आवरणके छेदके मुंहपर (Abdominal ring) ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ ठेलकर बाहर निकल आना चाहता है,—मानो आंत उतरने की (Hernia) सम्भावना हो गयी है (नक्स, लाइको) ; नाभिकी आंतका

अपनी जगहसे हट जाना (Umbilical Hernia),—यदि नक्स-वोमिकासे कोई फायदा न हो, तो कर्कुलस देनेसे लाभ होता है। उदरामय,—केवल दिनमें (पेट्रोल ; केवल सवेरे=ऐपिस),—मानो पेटमें पत्थर रगड़ खा रहा है इस ढंगका या कतरनेकी तरह दर्द ; आधी रातके समय पेटमें वायुकी वजहसे शूलका दर्द, डकार आनेपर भी नहीं घटना। पर वायु खुलनेसे आराम मिलता है ; ऊपरी पेटमें नाभि प्रदेशमें और कोखके नीचे सबसे अधिक दर्द होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—मासिक ऋतुस्राव होनेके समय रोगिनीके निम्नाङ्ग सब इतने कमजोर हो पड़ते हैं कि उसे खड़े होनेमें बहुत तकलीफ होती है (ऐलू, कार्बो-ऐन) ; प्रतिबार दर्द-भरे ऋतुके बाद अर्श रोग पैदा हो जाता है। ऋतु स्राव बहुत अधिक परिमाणमें होता है और बार बार होता है। खड़े होने पर सोतेकी तरह पैरतक टपक पड़ता है। बहुत ज्यादा गाढ़ा खूनका स्राव साथ ही तबियत बहुत खराब मालूम होना और सिरमें चक्कर। प्रदर-ऋतुके बदले प्रदर स्राव (नक्स, मस्कोटा) या ऋतुके बाद, और पहले, अर्थात दो ऋतुओंके समयमें, प्रदरका स्राव होता है (आयोड, जैन्थक्सा) ; स्राव कच्चे मांस धोए पानी की तरह। कभी कभी रक्तकी तरह (सिङ्कोना, म्यूरेक्स ; रसकी तरह=ऐण्टि-टार्ट)। गर्भावस्थामें जरायुसे खून मिला श्लेष्मा निकला करता है (कैलि-कार्ब, फास, रास)। प्रदर या ऋतुके बाद, रोगिनी इतनी क्षीण हो जाती है, कि उसे बोलनेमें तकलीफ मालूम होने लगती है (आयोड, फास, प्लेट, कार्बो-ऐन; ऋतुके पहले अवशता=आयोड, नक्स-मस, ऋतुके समय—ग्रैफ, आयोड, मैग-कार्ब, मैग-म्यूर, ओलि-ऐन, फास)। कमरमें असह्य दर्द जरायुका डमरू की तरह संकोचन अर्थात मध्यस्थल संकुचित होकर डमरूका आकार धारण करता है।

श्वास-यंत्र ।—श्वासकृच्छ्रता, मानो गलेमें धुआँ प्रवेशकर गया है, ऐसा मालूम होकर खांसी आती है (मानो गलेमें गन्धकका धुआँ प्रवेश कर गया है, ऐसे अनुभवके साथ=आर्स, सिङ्को, इग्ने, कैलि-क्लो, लैके, पैरिस) मानो वक्षके दाहिने पार्श्वमें बहुत अधिक कसावट और अकड़न पैदा हो गयी है (ऐमोन-म्यूर; प्लेट, सल्फ, जिङ्क ; बाएँ पार्श्वमें=लाई, ऐसिड-सल्फ, जिङ्क ; स्तनिवड प्रदेशमें दृढ़ बद्धता और अकड़नका भाव=लैके, कैक्ट, आयोड,

लिलि-टाइग्ट)। वक्षके भीतरसे कण्ठतक जलन, मानो जला जाता है (कैम्फ, कार्बो-वेज, युफोर्ब, ओलि-ऐन, रास, रेड, स'जिया, सल्फ; सर्दी मालूम होना= आर्स, लैके, नेट्र-कार्ब, बार्ब)। वक्षगह्वरका शून्य मालूम होना,—मानो छातीके भीतर और कुछ भी नहीं है (क्रोटन-टिग, जिङ्क, मानो भरा हुआ है=कैल्के-कार्ब, फेर, नक्स-मस)।

गर्दन और पीठ।—माथा हिलानेपर गर्दनके पीछेवाली कशेरुका (Vertebral) या मेरुदण्डके अस्थि-खण्ड सब मट मट शब्द करते हैं (निकोलम)। कन्धेमें और बाँहमें मानो चोट लग गयी है, इस तरहका दर्द। कमर बहुत क्षीण,—मानो सुन्न हो गयी है। चलनेके समय कमर अवश हो जाती है। गर्दनके पिछले भागकी पेशियाँ सब बहुत क्षीण और भार मालम होता है मानो गला माथेका भार सहन करनेमें असमर्थ है (कैल्के-फास, वेरेट-ऐल्ब)।

प्रत्यङ्ग आदि।—चलनेके समय दोनों घूटने अवश हो जाते हैं। रोगी चलनेके समय ढलमलाया करता है और बगलमें गिर जानेका उपक्रम हो जाता है। कभी दोनों हाथ और कभी दोनो पैर सुन्न हो जाते हैं। भोजनके समय हाथ काँपा करता है, और हाथ जितना ही ऊँचा उठाता है, उतना ही ज्यादा काँपता है। बैठनेके समय दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं और उनमें झुन-झुनी भर जाती है। पीठमें दर्द, और सारे शरीरमें पक्षाघातजनक अवसाद मालूम होता है। दाहिना पैर, और दाहिना हाथ रोगीके अनजानमें हिला करता है, और सोनेपर स्थिर रहता है बायाँ हाथ और बायाँ पैर= ब्राई, हेलिबो, एक हाथ और एक पैर=ऐपोसाइनम-कैनाब)। सबेरे शय्यासे उठनेपर अपस्मार या मृगी-रोग पैदा हो जाता है:—प्रकोपके बाद बोखार आता है चलनेके समय घुटने दोनों मट मट किया करते हैं (ऐमोन-कार्ब, ब्राई, कैम्फो, लिडम, पेट्रोल, पल्स, रैनान, सल्फ)। अर्द्धाङ्गिक पक्षाघात,—नींदके बाद बढ़ना (ऐ-पिक्रिक, लैथइरस-सेट, सिकेलि, हाइ-पिरिक, कैलि-आयोड, रास) दोनो बाहु पर्यायक्रमसे गर्म और ठण्डे होते हैं (एक हाथ गर्म और दूसरा ठण्डा=डिजि, सिङ्को, पल्स; दाहिना पैर बरफकी तरह ठण्डा, बाएँ पैरमें स्वाभाविक उत्ताप रहता है=चेलिडो, लाई); मानसिक उत्तेजना, अधिक परिश्रम या शोथकी वजहसे हाथ पैरका काँपना। (इग्ने)।

निद्रा ।—अनिद्रा, मानसिक उत्तेजना, रातमें जागरण वगैरहसे पैदा हुई बीमारी आदि (कास्टि क्युप्रम, इग्ने, ऐ-नाइट्रिक) ; थोड़े समयके लिये निद्राका अभाव होनेपर बहुत कमजोरी मालूम होती है ; नींद न आनेकी वजहसे देहकी अकड़न आदिकी बीमारी ।

ज्वरादि ।—शीत और उत्ताप पर्यायक्रमसे पैदा हो जाते हैं । (ऐमोन-म्यूर, आर्स, बेल, इलैप्स, हायो, फास, वेरेट) । तीसरे पहर और सन्ध्याके समय शीतका आविर्भाव,—विशेषकर दोनों पैर और पीठमें उत्तापके प्रयोगसे आराम मालूम होता है (ऐरेनिया, लैके, नक्स, पोडो, उत्तापसे घटना=इग्ने) गर्म गाल और बरफकी तरह ठण्डे दोनो पैर, रह रहकर उत्तापकी अधिकता । सान्निपातिक या आन्त्रिक ज्वर (Typhoid fever) अधिकारमें,—बुद्धि मोटी हो जाती है, सहजमें ही कोई विषय समझमें नहीं आता । रोगी अपना मनो-भाव प्रकट करनेके लिये उपयुक्त वाक्य नहीं प्राप्त कर सकता ; बीती हुई घटना सब याद नहीं कर सकता और बुदबुदाकर कुछ बका करता है, सन्ध्यासे सबेरे तक पसीना हुआ करता है और चेहरेपर ठण्डा पसीना होता है । ज्वरके समय क्रोध बढ़ जाता है ।

वृद्धि ।—खाने पीने या नींदके बाद ; बात करनेपर, धूम्रपानसे, (सवारी पर घटना=ऐसिड-नाइट्रिकम) और गर्भावस्थामें उठकर खड़े होनेपर या शरीरकी अवस्थाका किसी तरह परिवर्तन करनेपर ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ताण्डव रोगके सम्बन्धमें इग्नेशिया या नक्स-वोमिका और रोगवाली जगहपर पसीना निकलनेके सम्बन्धमें ऐण्टिमोनियम, टार्टारिकम, कक्युलसके सदृश है ।

प्रतिविष या दोषघ्न ।—(Antidotes)—क्युप्रम, इग्ने, कैमो, स्टैफि, काफि, नक्स, ।

तुलनीय ।—ऐण्टिम-क्रूड (पाकाशयका शूल) ; ऐगार, नक्स-मस, (तन्द्रा), इग्ने, पलस, (सर दर्द) शब्दसे अचैतन्य=नक्स ; हलका मालूम होना=कैनाबिस, कैल्के, पल्स ; भूतका भय=आर्स, ऐकोन, हार्निया=नक्स ; वमनेच्छा=इपिकाक ; जरायुमें दर्द=इग्ने ; बात करनेमें कमजोरी मालूम होना=सल्फ, कैल्के, गर्दनकी कमजोरी=ऐण्टिम-टार्ट इत्यादि ।

शक्ति ।—३री दशमिकसे २०० शततमिक, गर्भावस्थामें मिचली रोगमें २०० शक्तिकी एक मात्रासे जितना लाभ होता है, निम्न क्रमकी तीन चार मात्रा के प्रयोगसे भी वैसा लाभ नहीं दिखाई देता है ।

ककस कैक्टाई ।

(COCCUS CACTI)

दूसरा नाम ।—काकसिनेला इण्डिका ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कोचिनियल नामक स्त्री-कीटका चूर्ण या अर्क ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा ; पीठमें दर्द ; सर्दी ; प्रमेह ; पथरी ; रक्तस्राव ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; ध्वजभंग या क्लीवता ; बहुत तरहकी उत्तेजना ; भगोष्ठका प्रदाह ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह ; यक्ष्मा ; आक्षेप ; कर्णपटहका प्रदाह ; हूप-खांसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लैष्मिक झिल्लीपर इसकी विशेष क्रिया होती है । आक्षेपिक और हूप शब्दवाली खांसीमें और मूत्रस्थलीकी सर्दीमें यह विशेष लाभदायक है ; शेषोक्त रोगमें भी इसका आक्षेप या पेशियोंका सिकुड़ना फैलना स्पष्ट मालूम हुआ करता है। रह रहकर एकाएक मूत्राशय संकुचित होकर रोगीको तकलीफसे अस्थिर कर डालता है । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं,—वक्षमें सुई वेधनेकी तरह दर्द और हृत्पिण्डकी क्रियामें विकार (कैक्टस की तरह) शरीरके कितने स्थानोंमें खुजली पैदा हो जाया करती है और कुट कुट किया करता है, लाल खुजलानेवाले दाने बाहर निकल आते हैं। कण्ठ, वायुनाली, और फेफड़ेके भीतर तथा आंख और जननेन्द्रियमें प्रदाह अनुभव होता है। कानमें ऐसा मालूम होता है, मानो केशका एक टुकड़ा, या खाद्य पदार्थका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है ; मानो तालुमूलके पिछले अंशसे एक टुकड़ा केश निकलकर खांसी पैदा कर रहा है । मसाना और जरायुसे काले रङ्ग के जमे हुए खूनका स्राव होता है । लिङ्ग मणिमें सुरसुरी मालूम होती है तथा तेज अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द होता है, मानो उसके भीतरसे पथरी निकली है, हूप-खांसी,—सबेरे नींद खुलनेपर बढ़ना ; नींद खुलते ही बच्चेको प्रबल खांसी

पैदा हो जाती है और अन्तमें स्वच्छ गाढ़ा, लसदार गोंदकी तरह श्लेष्माका वमन होता है। वमन हो जाने बाद खांसी बन्द हो जाती है। के हुआ बलगम मुँहसे सूतकी तरह झूलता रहता है, स्वरभङ्ग,—स्वरयन्त्रका अवसाद; स्वरनालीमें असह्य सुरसुरी और प्रदाह, कण्ठास्थिके नीचे सुई बेधनेकी तरह या उसके भीतर ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो जखम पैदा हो गया है,—विशेष कर बायीं कण्ठास्थिके नीचे पाकस्थलीमें मानो एक गुल्म या पत्थरका टुकड़ा पड़ा है, ऐसा मालूम होता है, मानो कोई छोटी शिराके भीतर कोई तरल पदार्थ पिच-कारीसे दिया जा रहा है; मानो पाकस्थलीकी ओर न जाने क्या एक चीज उठ रही है, मानो वायुनालीमें श्लेष्मा चढ़ता और उतरता है। मानो वक्षमें एक श्लेष्मा-पिण्ड हिल रहा है। बायें कोखसे पुट्ठेमें, बाएं पुट्ठेसे बाएं उदरमें, सध्यांश तक भयानक यंत्रणा,—मानो इन सब अङ्गोंके भीतरसे एक तरल पदार्थ बड़ी तेजीसे प्रवाहित हो रहा है। कुल्ला करने या दतवन करनेके समय खांसी और ओकाई आती है। सामान्य दैहिक परिश्रम करनेपर बहुत सुस्ती मालूम होती है और पसीना या खांसी हुआ करती है।

लक्षणावली।

मन और मस्तक।—सवेरे शय्यासे उठनेपर या सन्ध्याके समय रोगी बहुत विमर्ष चित्त हो जाता है। सरमें दर्द; सरके पिछले भागके निचले अंश में (हेलिबो) अत्यन्त दर्द,—यहांतक कि छूनेपर दर्द मालूम होता है; नींदके बाद और शारीरिक परिश्रम करनेपर दर्द बढ़ जाता है। सवेरे दाहिनी आंखके ऊपरी अंशमें थोड़ा दर्द (कैलि-बाई, ब्राइ,चेलिडो, सरके पिछले भागसे आरम्भ होकर दाहिनी आंखमें आकर ठहर जाता है=सेङ्गिनु)। दाहिनी आंखसे दाहिनी कनपटीमें, और वहांसे सरके पिछले भागतकके अंशके भीतर तेज बिजलीके प्रवाहकी तरह दर्द,—मानो रह रहकर उस अंशकी एक छोटी शिरा के भीतर कोई तरल पदार्थ बड़े वेगसे प्रवाहित हो रहा है। मानो एक कानके नीचेसे शिरके पश्चात भागको छेदकर दूसरे कानतक एक गर्म बन्धन बँधा हुआ है।

श्वास-यन्त्र।—उपजिह्वा बढ़ जानेके कारण गलेमें खुसखुसी खांसी हुआ करती है। दोनों जिह्वामूलीय गह्वर (Faucos) में जलन और दर्दके साथ सर्दी; कण्ठके भीतर गाढ़ा लेईकी तरह और रबरकी तरह श्लेष्मा संचित हुआ करता है (कैलि-बाई, हाइड्रास, बोवि, कैन्थ, सेनेगा, सेम्बु, स्टैन) और

बड़े कष्टसे निकलता है। (चार्स, कैमो, सिड्रो, इग्ने, नक्स, पैरिस, पल्स, सिपि, स्टेन) पहली नींदके खुलनेके बाद ही श्वासरोध करनेवाली खांसी पैदा होजाती है, और सफेद रंगका कड़ा श्लेष्मा निकलता है। क्रूप-खांसी,—सवेरे ११ बजेके भीतर नींद खुलनेके बाद यह खांसी आरम्भ होती है और जबतक बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा लेईकी तरह स्वच्छ श्लेष्मा अण्डे लालकी तरह नहीं निकल जाता है, तबतक या कै नहीं हो जाती है तबतक, बराबर खांसी आया करती है (इसके बाद खांसीके आक्रमणके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें नाकसे खून निकलता है—इण्डिगो ; दिनमें घन्टा घन्टा भरपर ऊपरके ऊपर आती है और रातमें "क्रूप" शब्दवाली खांसी आती है—कोरैल-रूब्रम ; एकके बाद दूसरी बहुत तेजीसे खांसी आया करती है। यहांतक कि रोगीको श्वास लेनेका समय नहीं मिलता—ड्रोसेरा)। निकला हुआ श्लेष्मा सूतेकी तरह मुंहसे लटका करता है। फेफड़ेके निचले हिस्सेमें बहुत दर्द होता है। सर्दी, मूलक यक्ष्मा ; कण्ठास्थि के (Clavicles) सन्धिस्थानमें (विशेषकर बाईं कण्ठास्थिका) तेज नश्तर चुभनेकी तरह दर्द,—इसके साथ ही स्वच्छ पर गाढ़ा लेईकी तरह या चमड़ेकी तरह कफ निकलता है (काष, स्ट्रेन)। ऐसा मालूम होता है, मानो फेफड़ा वगैरह छातीकी ओर सटे आते हैं।

पेशाब ।—यह स्वच्छ मूत्रनलीके संकोचनके साथ मूत्रपथ और मलांतके प्रदेशमें चमचापनकी तरह दर्द मालूम होता है ; बार बार पेशाबके लिए होता है। पेशाबमें ईंटके चूरकी तरह तली जमती है (बेल. लाई. लाय. सिपि. आदि)। मूत्रकृच्छ या दमी (लर्फ्यू, पैरिस, ब्रोमा, आदि ; क्षीण-स्तम्भन ; स्वप्नदोष—सार्स, बेन्ज, ईरिथ, फिलिक्स-मास, ईक्वि आदि) और मूत्राम्ल (Uric Acid—कार्बोनेट, आइओडो) या अन्य पदार्थके साथ मिला मूत्रमल निकलता है ; मलद्वार प्रदेशमें मूत्रनलीतक करनेकी तरह होना। [illegible] ... कोनियम, थूजिन [illegible] ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—[illegible]
बहुत ज्यादा [illegible] और कामी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

करता है (बोवि, मैग-कार्ब, काफिया ; सोनेपर निकलता है, पर चलनेके समय रुक जाता है = क्रियो, मैग-कार्ब ; केवल दिनमें निकलता है,सोनेपर रुक जाता है = कैक्ट, कास्टि, लिलिटाइग्रि ; दिनमें अधिक स्राव हुआ करता है = पल्स ; केवल चलनेके समय स्राव होता है, स्थिर होनेपर रुक जाता है = कास्टि, लिलि-टाइग्रि)। पेशाबके साथ बड़े बड़े जमे रक्तखण्ड निकलते हैं ; ऋतुके समय मलद्वारसे भी रक्त निकलता है (ऐमोन-म्यूर, ग्रेफ)। योनि-मुखका (Labia) प्रदाह (एपिस)।

वृद्धि ।—नींद खुलनेपर परिश्रमके बाद ; गर्म घरमें प्रवेश करनेपर, शय्याके उत्तापसे ; घरके बाहरकी आबोहवा लगने पर, रातमें और सवेरे।

सम्बन्ध— सदृश ।—खांसी, और कफके सम्बन्धमें केलि नाइट्रम और और सेनेगा, ये दोनो काक्कस- कैक्टाईके पहले और बाद दोनों ही अवस्थामें व्यवहार किये जा सकते हैं ; अधिकतर ड्रोसेरा, हपिक, कोरैल-रुब ; पेशाबके सम्बन्धमें कैक्टस, कैन्थरिस ; सार्सा ; पेरिइरा ; आर्टिकाइयु और स्त्री-जननेन्द्रियकी बीमारीके सम्बन्धमें क्रोकस, मैग-कार्ब, प्लैट, वगैरहके साथ यह तुलनीय है।

शक्ति ।—निम्न-क्रमसे २०० शततमिक क्रम।

कोडेइनम।

(CODEINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अफीमके उपचारसे तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—पलकोंका आक्षेप या स्पन्दन ; ताण्डव ; खाँसी ; बहुमूत्र ; खसड़ा ; पाकाशयका शूल ; असाड़ता ; बेचैनी ; गर्भावस्थामें वमन।

लक्षणावली।

मन ।—आनन्द, फुर्ती ; नींद खुलनेपर उसे गड़बड़ मालूम होता है।

मस्तक ।—सरके पिछले भागसे लेकर गलेके पिछले भागतक दर्द मालूम होता है। स्नायुशूलके प्रकोपके बाद मुखमण्डल और माथेकी त्वचामें

दर्दका भाव मालूम होना। सवेरे माथेमें बहुत थोड़ा दर्द होता है, फिर धीरे धीरे घटकर दो पहरमें छूट जाता है। सरमें दर्द, दोनों ओठोंमें सुखापन,—बार बार ओठोंको जीभसे तर करता है।

आंख।—बाईं आंखकी पलक फड़का करती है (ऐगार, फाइजस-टिग),—आँख मलनेपर घटता है। लिखने पढ़नेकी चेष्टा करनेपर दोनों आँखोंकी पलकें फड़कने लगती हैं। नाक छिड़कनेपर आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं।

पाकस्थली।—ऊपरी पेटमें रह रहकर बहुत दर्द होता है। बार बार डकार आती है (आर्जेण्ट-नाई)।

पेशाब।—असली बहुमूत्र रोग,—पेशाबका परिमाण बहुत ज्यादा और उसके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें चीनी निकलती है। साथ ही बेचैनी, मानसिक और शारीरिक अवसाद और शरीरकी त्वचामें खुजलाहट और जलन बनी रहती है। (यूरेन-नाइट, सिजिजियम-जैम्बो)।

श्वास-यंत्र।—कण्ठमें पिट पिटकर खुसखुसी खाँसी आती है, रातमें बढ़ जाती है; बहुत ज्यादा परिमाणमें पीवकी तरह कफ निकलता है (कैल्के, कार्बो-वेज, सिङ्को, कोना, हिप, कैलि-कार्ब, फास, क्रियो, लाई, कैलि-नाई, सिपि, साइलि, स्टैन, स्टेफ)। यक्ष्मा रोगियोंकी रातमें खाँसी आती है (आर्स, सिङ्को, कैलि-कार्ब, लाई, ऐसिड-नाई, ओलियम, जेकोरिस, फास, पल्स, साइलि, सल्फ) अङ्ग प्रत्यङ्गका सुन्नभाव। शरीर बहुत खुजलाता है। तन्द्रा।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐगार, फाइजसटिग, कार्बो-वेज, कैल्के, साइलि, ऐसिड-नाइ, सिङ्कोना इत्यादि।

तुलनीय।—वमन और पेटके दर्दमें ओपियम; आँखोंके फड़कनेमें —हायोस, और ऐगरिकस; पैरके दर्दमें—आर्स; लेकेसिस (चैतन्यकी अधिकता); रास, सल्फ, (कम्पन)

शक्ति।—३ रे दशमिक विचूर्ण से ६ ठा शततमिक क्रम तक।

काफिया क्रूडा।

(COFFEA CRUDA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे बीजसे मूल अर्क तैयार होता है। *

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—संन्यास ; दमा ; कर्णमूल ; शूल वेदना ; आक्षेप ; अतिसार ; मीठा खानेके कारण बीमारियाँ ; सरमें दर्द ; स्नायविक प्रकृति ; सहजमें ही क्रोध या हँसी आ जाना ; हृत्पिण्डकी उत्तेजना ; आँत उतरना ; मूर्च्छावायु ; सविराम ज्वर ; प्रसव-वेदना ; रजसाधिक्य या स्नायुशूल ; उत्तेजनाकी अधिकता ; स्टम्भसे या पैरमें झुनझुनी वाला वात ; अनिद्रा (नींद न आना) ; दाँतमें दर्द ; इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बहुत दिनोंसे दुबले,कुबड़े, काले रंग के मनुष्य, स्नायु और रक्त प्रधान धातु और शारीरिक तथा मानसिक कार्यमें तत्पर मनुष्यकी बीमारी, स्वाद, स्पर्श, घ्राण, और दर्शन, श्रवण, वगैरहकी शक्ति बहुत ही प्रखर, हमेशा अपने काममें लगा रहता है, रातमें सोता नहीं, रोगीके लिये आँखें बन्द करना ही एक तरहसे असम्भव हो जाता है ; वयःसन्धिके समय स्नायविक विकारकी वजहसे बीमारियाँ ; सरमें दर्द,—मानो मस्तिष्कमें लोहे की खीलें घुस रही हैं या माथा छिन्नभिन्न करता है या खींचकर तोड़ता है:—आनन्दोन्माद,—भविष्यके सम्बन्धमें विचारोंसे पूर्ण ; मनोभावोंको कार्यमें परिणत करनेमें बहुत पटु और इसी वजहसे नींद न आना और मनोवृत्तियोंके बहुत परिचालन करनेके कारण सरमें दर्द, इत्यादि काफियाके सर्वश्रेष्ठ प्रकृतिगत लक्षण प्रसिद्ध हैं। इसका एक और भी प्रधान निर्णायक लक्षण है, कि थोड़ी भी तकलीफ रोगीको असह्य मालूम होती है,—रोगी तकलीफसे बेचैन और उन्मत्त हो पड़ता है—"इस यन्त्रणासे अब छुटकारा न मिलेगा" ऐसा ही मनमें सोचता है। एकाएक मानसिक उद्वेग, आनन्द समाचार वगैरहसे उत्पन्न बीमारियाँ—ये सब इसीके विषयीभूत हैं।

---

* धूपकी तरह भूने हुए फलसे जो अर्क तैयार होता है उसे काफिया टोस्टा कहते हैं, यह अनेक विषोंका औषध है। मदरका दर्द, स्नायुशूल और सरके भारीपनमें लाभदायक है। काफियाके उपक्षारको—कैफिनम (caffeinum) कहते हैं।

लक्षणावली।

मन।—हर्षोन्माद (ऐगार, ऐसिड-फ्लूड, ओपि, फास, प्लैट, स्ट्रैम)। मनमें मानों कल्पनाका सोता बहा करता है,—खासकर रातमें (सिङ्को, कफ, लाई, नक्स, पल्स, स्टैफ); मनोभावोंको कार्यमें परिणत करनेमें विलम्ब असह्य हो जाता है।—यहाँतक कि इसी वजहसे रातमें सो नहीं पाता। मादकोन्माद,—मतवालेकी तरह ढलमलाता ढलमलाता दौड़ता है; रोगी मनमें समझता है कि यह उसका मकान नहीं है। (अरम, इग्ने, सिनो, ऐसिड-फास, साइलि), इसी लिये उसका हाथ काँपता है (ऐसिड-टार्ट, नक्स, बेल, हायो, स्ट्रैम)। सामान्य कारणमें भी बहुत दुःख प्रकट करता है और रोता है; बच्चा कभी हँसता है, कभी रोता है,—रोते रोते बड़े आनन्दमें भर-कर हँस पड़ता है और अन्तमें फिर रोता है; किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर काँपता काँपता रोता है। बहुत सामान्य दर्द भी सहन नहीं होता;—रोगी तकलीफसे उन्मत्त हो उठता है और छटपटाया करता है (ऐको, कैमो)। अनिद्रा,सतर्क अवस्था;—आंख बन्द करना रोगीके लिये महान कठिन हो जाता है,— रोगीकी मानसिक उत्तेजनामें देह (अर्थात प्रत्यङ्ग आदि) भी साथ देते हैं। मानसिक उत्तेजना या अप्रत्याशित आनन्द सम्वादकी वजहसे स्वास्थ्य भङ्ग हो जाता है (कास्टि, कोना, हाइपिर, इग्ने, क्रियो, लैके, लाई, सेब्रिवु,—डर या मानसिक उत्तेजना पैदा करनेवाले संवादकी वजहसे= जेल्स, ओपि, हाइड्रो- फोब, ऐसिड-फास); आनन्दसे आंसू बहाता है।

मस्तक।—सरमें दर्द,—अत्यन्त मानसिक परिश्रम, चिन्ता या बातचीत करनेकी वजहसे एक पार्श्वकी ओर दर्द,—मानो मस्तिष्कके भीतर लोहे की मेक घुसी जा रही है (एगार, आर्नि, इयोनिम, हिप, इग्ने, लाई, मस्कस, नक्स, पलस, थूजा) या मानो मस्तिष्क छिन्न विच्छिन्न हुआ जाता है या पीस डालता है (एगार, कार्बो-एन, ग्रुफोर्व, युफ्रे, हेलिवो, बेरेट); निर्मल वायुमें यन्त्रणा बढ़ जाती है (एल्यु, बेल, कैलके, कैलके- फास, सिङ्को, सिना; कैलि-कार्ब, लैके, मक्स,स्पाई, सल्फ,—निर्मल वायुमें घटना= एको, एसिड-फ्लूड, आर्स, कोलो, डायाडेमा, मेङ्गों, केलि-वाई, फैलेन, टैवाक, थूजा, वायोला, जिङ्क)।

कान।—श्रवण-शक्ति बहुत तेज; संगीतकी ध्वनि असह्य चिल्लारकी मालूम होती है।— नाड़ीकी गतिकेतालमें माथेके एक पार्श्वमें कड़ कड़ शब्द होता है,—विशेषकर सवेरे और निर्मल वायुमें; घरमें वह घट जाता है।

मुख-विवर ।—बहुत जल्दी जल्दी खाने पीनेका काम करता है। (वेल, हिप)। दांतमें दर्द,—रह रहकर चिलक मारनेकी तरह दर्द; बरफका पानी मुंहमें लेनेपर थोड़ी देरके लिये घट जाता है, पर वही जब मुंहके भीतर गर्म हो जाता है, तब फिर दर्द होने लगता है (बिस्मथ, ब्राई, कास्टि, नेट्र-सल्फ, पल्स, सिपि),—दर्दका आविर्भाव अधिकांश स्थानोंमें रातमें और भोजनके बाद होता है ; वृद्धि=गर्म पतली चीजें पीनेपर, चबानेपर और रातके समय। मुंहका स्नायुशूल (Prosopalgia),—मुंह और माथेके दाहिनी ओर और दाहिने आंखके गोले तक रोग फैल जाया करता है ; प्रायः दिनके १ बजेके समय पैदा हो जाता है। (कैल्मिया, मैग-फास)। कीड़े लगे दांतकी वजहसे मुंहमें असहनीय यन्त्रणा जनक स्नायुशूल (काफिया-टोस्टा)

उदर ।—पेटमें दर्द,—पाकाशय मानो बहुत भरा हुआ है, मानों पेट फट जायगा। वस्त्र कसकर पहन नहीं सकता ; यंत्रणा बहुत असहनीय होती है,—रोगी-यंत्रणासे उन्मत्त हो उठता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत अधिक और बहुत देरतक स्थायी रजःस्राव, केवल संध्याके समय स्राव हुआ करता हैं (केवल रातके समय=बोवि, काकस-कैक्ट, मैग-कार्ब) ; जरायुसे रक्तस्राव,—कभी कभी बहुत काले रंगका जमा हुआ खून निकला करता है (काफियासे उपकार न होनेपर कैमोमिला देना चाहिये)। प्रसवका दर्द या नकली प्रसव वेदना इतनी भयानक होती है, कि सहन नहीं होती। *प्रदर,—श्लेष्मामय स्राव, पेशाबके समय बढ़ जाता है।*

निद्रा ।—छोटी मात्राके बाद खांसी और नींद न आना। मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे नींद न आना ; रातके समय मनमें कल्पनोंका सोता बहा करता है, वह सोता किसी तरह रुकना ही नहीं चाहता है। सोता सोता चौंक कर जाग उठता है ; अनवरत सपने देखा करता है। मलद्वारमें सुरसुरीके कारण नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है।

प्रत्यङ्गादि ।—कटिस्नायुशूल या जंघास्नायु-शूल (Sciatica),—तेज छेदनेवाला दर्द ; चलनेके समय, तीसरे पहर और रातमें दर्द बढ़ जाता है ; दबाने या टीपनेपर दर्द घट जाता है ; रातमें रोगी छटपटाता है और सो नहीं सकता।

वृद्धि ।—एकाएक मानसिक आवेग ; हर्षकी अधिकता ; ठण्डी निर्मल हवामें ; नींद आनेवाली दवा पीनेसे, तेज गन्धसे और ऊँचो आवाजसे ।

घटना ।—गर्म घरमें ; दवानेपर ; सोने और मुंहके भीतर ठण्डा पानी रखनेपर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—प्रतिविष या दोषघ्न=ऐको, कैमो, इग्ने, नक्स, पल्स, मार्कं, सल्फ, टैबाक । कैन्थ, कास्टि, काकु और इग्ने शियाके साथ काफियाका शत्रुता सम्बन्ध है अर्थात उक्त चारों, औषधियाँ काफियाके पहले या बाद व्यवहारमें नहीं आतीं ।

तुलनीय ।—साइप्रिपिड (बहुत प्रसन्नता) ; ग्नायो, कैमो, (दाँतक दर्द) ; ऐको, (मृत्युका दिन बताता है) इत्यादि ।

शक्ति ।—३x दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—१० दिन ।

काफिया टोस्टा ।

(COFFEA TOSTA)

दूसरा नाम ।—काफी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—काफीके फलको अच्छी तरह आगमें झुलसकर क्वाथके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—काफी पीनेपर बहुत अधिक मात्रामें अफीम खानेका विष दोष नष्ट हो जाता है ।—यह सभी जानते हैं । यह अफीम और अफीमसे पैदा हुई चीजोंका विष दोष नष्ट करता है, साथ ही बेलेडोना, नक्स, विषैला कुत्ता, तम्बाकू, कोलोसिन्थ, वैलि, साइक्यूटा, कैमो, ऐण्टि-मोनी मिली दवाएँ, सीसा, फास्फोरस, फास्फोरिक-ऐसिड, वगैरह का भी विष-दोष नष्ट कर देता है ।

होमियोपैथिक चिकित्सक समाज इसे सभी दवाओंका दोष-नाशक न समझ कर भी काफियाका बहुत सावधानीसे प्रयोग किया करते हैं ; परन्तु वे

कि काफिया टोष्टा उल्लिखित कई दवाएँ विशेषकर नक्स, लाइको, इग्ने, कोलो-सिन्थ, और बेलेडोना—इनके अलावा और किसी दवाका विषदोष नहीं नष्ट करता।

ठण्डे पानीके प्रयोगसे काफिया क्रूडाकी तरह काफिया टोष्टाका अंतशूल भी घट जाता है। बहुत देरतक ठहरनेवाला और तकलीफ देनेवाला प्रसवका दर्द, और हृत्‌शूलमें मंतशक्तिकी तरह यह काम करता है। यह शीत और उत्ताप दोनों कारणोंसे पैदा हुई बीमारीमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—काफिया-क्रूडा, काफिन।

दोषघ्न।—कैम्फि।

शक्ति।—२ दशमिकसे १२ शततमिक तक।

काफेइनम।

(COFFEINUM)

दूसरा नाम।—काफिन या केफिन।

परिचय।—काफिया ऐराबिकाका उपचार।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—माथा और कनपटीकी शिराओंमें टपक; आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देना, कानमें गरजकी आवाज वमन होनेपर सब लक्षणोंके घट जानेकी लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

कोलचिसिनम ।

(COLCHICINUM)

परिचय ।—कोलचिकम आटमनेलका एक तरहका उपचार।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, पतला पर्दा मिला मल, दाहिने हाथकी अकड़न, वात ज्वर ; गठिया-वात, हृद्‌पिण्डके आवरणका प्रदाह फेफड़ेके आवरणका प्रदाह और वातका तेज दर्दकी लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति ।—३य दशमिक विचूर्ण ।

कोलचिकम आटमनेल ।

(COLCHICUM AUTUMNALE)

दूसरा नाम ।—मेडो सेफ्रान ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— वसन्त ऋतुमें उत्पन्न गोल आकारकी जड़ (Bulb) से मदर टिंचर तैयार किया जाता है, इसके उपचार या सारांशको "कोलचिसिनम्" कहते हैं ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— उपाङ्ग प्रदाह या एपिण्डसाइटिस : दमा ; मोतियाबिन्दु ; शूल ; खाँसी ; अकड़न ; दुर्बलता ; बहुमूत्र ; अतिसार ; आमाशय ; सन्धिवात ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; सविराम ज्वर ; कटिशूल ; पेशियोंका स्नायुशूल ; मसानेका प्रदाह ; हृत्पिण्डके आवरणका प्रदाह ; मूत्रद्वार मुखशायी ग्रन्थिका प्रदाह ; ताण्डव ; गुह्यद्वारका निकल पड़ना ; गर्दनका कड़ापन ; अवसाद ; शक्तिका लोप होना ; सान्निपातिक ज्वर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—सन्धिवात और वात-ग्रस्त, बलिष्ट देहवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह उपयोगी है। कोलचिकमके कई प्रधान

निर्णायक लक्षण ये हैं,—खानेकी चीजें पकानेकी गन्ध—यहाँ तक कि उनकी याद आ जानेपर भी जो मिचलाने लगता है और घृणा पैदा हो जाती है। अजीर्ण रोग,—पेटमें वायु भरकर वह इतना फूल जाता है कि उसके फटने का उपक्रम हो जाता है। शरद्कालके आमरक्त रोगमें मोड़की तरह आँवका दस्त होता है। जगह बदलनेवाला सन्धिवात,—सन्ध्याके समय और शरीरको थोड़ा भी हिलानेपर बढ़ जाता है, सन्धिवातका हृत्पिण्डपर आक्रमण होनेकी वजहसे श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है और इसके साथ ही कलेजेमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है। खासकर मानसिक अवसाद, पेशियोंकी अवसन्नता, और मानसिक परिश्रमसे, यहांतक कि कुछ देरतक सोचते रहनेपर और शरीर हिलानेपर तकलीफोंका बढ़ जाना कोलचिकामका प्रकृतिगत लक्षण है। इससे पैदा हुआ दर्द आदि सिकुड़नी, छेदनी (इग्ने, पलुस, इग्छिं) या पीसनेकी तरह होता है; गर्म हवामें दर्द बहुत थोड़ा मालूम होता है, पर जब हवा तर और ठण्डी रहती है, उस समय इसका दर्द हड्डी और उसकी अपेक्षा भी अधिक गभीर प्रदेशमें हुआ करता है और बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैल जाता है (लैके; दाहिनी ओरसे बाईं ओर = लाई; प्रायः बायें पार्श्व पर आक्रमण करता है= जङ्गस-एफयु,—प्रायः दाहिने पार्श्व पर आक्रमण करता है = साइलेक्स, क्रोटन, जिनसेङ्ग, फाइटो) और सूर्यास्तसे सूर्योदयतक दर्द बहुत ही तकलीफ देनेवाला हो जाता है (सिफिलिन)। रातमें जागरणके कारण स्वास्थ्यभङ्ग (कास्थि, काकु, क्यूप्रम; इग्ने, ऐसिड-नाइट्रिक)। वमन,—श्लेष्मा, पित्त और अजीर्ण पदार्थ आदि मिला हुआ; पाकाशयमें ठण्डक मालूम होती है और शरीर बहुत दुर्बल हो पड़ता है। आमातिसार,—मल थोड़ा और मोड़की तरह, बहुत काँखना पड़ता है और इसके साथ ही पेट ढोलकी तरह फूल जाता है; कितने ही स्थानोंमें इतना वेग होता है कि ऐसा मालूम होता है, कि मलद्वार फट जायगा; मलके साथ सूतकी तरह सफेद पदार्थ और आंतके भीतरवाली झिल्लीकी छाल मिली रहती है। सन्धि-स्थान और पैरकी उँगलीका वातका दर्द—रोगवाली जगह लाल, गर्म और फूल उठती है और उसमें इतना दर्द होता है कि छूना या हिलाना असह्य हो पड़ता है। रातमें और गर्म हवा लगनेपर बढ़ जाता है। हृत्पिण्ड प्रदेशमें आशंका जनक बेचैनी मालूम होती है, रोगी अपने हृत्पिण्डकी गति अनुभव नहीं कर सकता और श्वास-कष्टता अनुभव करता है। पेशाबका परिमाण

बहुत थोड़ा होता है, खून मिला और बहुत गदला रहता है। शरीरकी त्वचा स्पर्श करनेपर सूखापन मालूम होता है; किसी तरहका रस या पसीना अनुभव नहीं किया जा सकता।

लक्षणावली।

मन।—वाह्य-जगतके इन्द्रिय-ग्राह्य विषय, जैसे रोशनी, शब्द, तेज गन्ध, स्पर्श, अभद्र व्यवहार वगैरहसे रोगी पागलकी तरह हो जाता है (नक्स)। यन्त्रणा रोगीको असह्य मालूम होती है (ऐको, कैमो, काफिया)। शोकसे या दूसरेके खराब काम देखकर अधीर हो पड़ता है (स्टैफ)। बुद्धि जड़ता पूर्ण रहती है,—पर कोई बात पूछनेपर ठीक ठीक या सम्बद्ध उत्तर देता है। अनुभव बिलकुल ही नहीं रहता,—मानो होशमें न हो। मानसिक परिश्रम या आवेगसे तकलीफ बढ़ जाती है। भुलक्कड़,—कोई भी बात भूल जाता है, (ऐनाक, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, कैन्थ)। रोगी सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट करता है (ऐण्टि-क्रूड, एपिस, बिसमथ, सिना, लिथु, रियुटा, टैब, थिरिड)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—चलते चलते या उठने पर सरमें चक्कर आ जाता है (ब्राई, पल्स)। माथेके पीछेकी ओर बहुत दबाव मालूम होता है,—मानसिक परिश्रमसे बीमारियाँ आदि—खासकर सर हिलाने या झुकानेपर दबाव मालूम होता है, रोगीको उठाकर बैठानेपर माथा पीछेकी ओर ढुलक पड़ता है, और वह मुंह फाड़ देता है। छोटी माताके बाद कानमें पीब पैदा हो जाता है और उसमें छेदनेकी तरह दर्द होता है।

नाक।—घ्राणशक्ति बहुत ही तीक्ष्ण हो जाती है,—भोजन आदिके पदार्थ पकानेकी गन्धसे रोगीका जी मिचलाने लगता है और ऐसा मालूम होता है, कि बेहोश हो जायगा,—खासकर मछली, अण्डे और मेदमय मांस आदिकी गन्ध (आर्स, सिपि)।

मुखमण्डल।—रोगीके चेहरेपर शोक या विषादका भाव भरा रहता है; आंख और दोनों गाल गड़हेमें धँसे; प्रेतकी तरह हंसना (Risus Sardonicus) अर्थात चेहरेपर एक तरहकी डरावनी हंसी पैदा हो आया करती है; मुर्देकी तरह रक्तहीन और सफेद; कभी कभी दोनों गाल लाल और गर्म हो उठते हैं तथा उनमें पसीना हो जाता है। चेहरेपर शोथकी तरह सूजन

आ जाती है । कीड़े खाये दांतमें दर्द, मुंह फूला और जीभपर कोमल लेप चढ़ा, मुंहकी पेशियोंमें सङ्कोचन और छेदनेकी तरह दर्द,—दर्द कान और माथे-तक फैल जाता है।

मुख और गलेके भीतर ।—दांतपर दांत पीसनेपर (आर्यो, बाई, पोडो, सिना छूमो, वेरेट)। कण्ठ सूखा पर मुंहसे बहुत ज्यादा परिमाणमें लार बहा करती है। कण्ठमें कुटकुटाहट होती है—मानो सर्दी हो जायगी।

पाकाशय और अन्त्राशय ।—मुंहका स्वाद तीता (सभी चीजें तीती मालूम होती हैं=ब्राई, सिह्वो, पल्स)। खाद्य आदि विशेषकर मछली अण्डे और मेदमय मांस—पकानेकी गन्धसे रोगीमें मिचली पैदा हो जाती है और उसे सुस्त बना देती है (आर्स,सिपि); सभी पदार्थोंसे अरुचि। खानेकी चीजें आदि देखनेसे ही घृणा पैदा हो जाती है । अंत्राशय वायुसे भरकर बहुत बेतरह फूल उठता है—मानो फट जायगा, और रोगी को इतनी खींचन मालूम होती है, कि रोगी पैर नहीं फैला सकता। ऊपरी और निचले पेटमें जलन या बरफकी तरह ठण्डक मालूम होती है (आर्स,वीर, कैम्फ, चेलिडो, कोडो, कोना, ऐ-फाइट-ड्रोसाया, इग्ने, कैलि-क्लो, लैक्टिसु, लोरी, मैग-सल्फ, नाइट्रम, ओलि-येन, ऐ-फास, रास, ऐ-सल्फ, टेबाका, फास,—बहुत जलन मालूम होना,—आर्स, नक्स, सिकेल)। कण्ठ सूखा अथच मुंहमें बहुत ज्यादा लार भरी रहना। वमन,—इसके साथ ही श्लेष्मा पित्त और खाये हुए पदार्थ आदि बाहर निकल पड़ते हैं, हिलने डोलनेसे ही ओकाई आने लगती है (छूमो, टेबाका, थिरिड, वेरेट, जिङ्कम)। पाकस्थलीमें तेज शलाका बेधनेकी तरह यंत्रणा मालूम होती है (ब्राई, कार्बो-ऐन, कास्टि, नाइट्रम, सिपि)। नाना प्रकारके पदार्थ खानेकी इच्छा प्रकट करता है, पर उसकी गन्ध नाकमें जाते ही या उसको देखते ही अरुचि पैदा हो जाती है (भोजनकी बात सोचनेपर भी अरुचि पैदा होती है—सिह्वो)। जो भोजन करता है,उसका कोई स्वाद उसे नहीं मिलता (कैलि-बाई, छूमो)।

मलान्त्र ।—शरतऋतुका आमरक्त रोग छोटे छोटे सूत्रमय पदार्थ मिला या आंत आदिकी छाल या शल्ककी तरह सफेद आम मिला पाखाना होता है (ब्रोमस, कैन्थ, ऐसिड-कार्बोलिका, कोलो)। बहुत दर्द और थोड़े परिणाममें मल पाखानेके साथ निकलता है। उदरामय— अण्ड लालकी तरह

आम मिला मल (ऐलो, हेलिबो, कौलि-बाई ; पाखाना फ़िरते समय ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार फट जायगा । कांच निकलना (Prolapsus ani—प्रत्येक बार पाखाना फिरते समय = पोडो)। अनजानमें पानीकी तरह मल निकलना (वेरेट) । भातके फेनकी तरह आम मिला पाखाना होता है।

पेशाब ।—पेशाब,—रंग गहरा (ऐकों, बेल, डिजि, ऐण्टि-टार्ट, मार्क, सिपि) । परिमाणमें बहुत थोड़ा। बून्द बून्द पेशाब होता है और सफेद रंगकी तली जमती है ; (लाल रंगकी तली = लाई,सिपि,, पल्स, नेट्र-म्यू) ; पेशाब खून-भरा (कैन्थ, कोनाब, इपिक, टेरिब, मार्क, मिलिफो, पल्स, स्किला)। भूरे रंगका (Brown = कार्ब्, ऐसि-नाई, पेट्रोल, पल्स, ऐण्टि-टार्ट,) या काला ; कभी कभी पेशाबके साथ विकार प्राप्त जमा हुआ लाल खून या चीनी निकलती है (एसिड-फास, इयुरेन-नाई, आर्जेण्ट-मेट, कोडेइनम, नेट्र-सल्फ, सिजिजी)।

हृत्पिण्ड ।—छातीमें धड़कन, यह बिलकुल ही मालूम नहीं होता, कि हृत्पिण्डमें धड़कन हो रही है। हृत्पिण्डकी वहिर्वेष्टनी, (Pericarditis) का प्रदाह,—तेज दर्द, और बहुत दबाव मालूम होना और श्वास-कष्ट, नाड़ी सूतकी तरह और क्षीण या सन्धि-वातमें एक जगहसे दूसरी जगह फैल जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि—सन्धिवात,—रोगवाले अंगमें बहुत दर्द मालूम होता है,—छूते ही रोगी चिल्ला उठता है। छोटी सन्धियोंमें वातका दर्द,—कोई भी सन्धि छूनेपर या पैरकी अंगुलीमें थोड़ी भी चोट लगनेपर रोगी तकलीफसे चिल्ला उठता है ; रोगवाली जगह लाल या सफेद फूली हुई और अकड़ी जैसी हो जाती है और दर्द तथा सूजन एक सन्धिसे दूसरी सन्धि तक घूमा करती हैं,—जरा हिलानेसे ही दर्द बढ़ जाता है, शोथ,—गहरे रङ्गका पेशाब ; पेशाबका रंग गहरा लाल, लार, भरा और प्यास नहीं रहती (टेरिब, मूत्र-रोध = स्किला, गहरा लाल रंग और थोड़ी मात्रामें पेशाब = हेलिबो), विशेषकर यदि सन्धिवात रोग उसके साथ ही मिला हो । वात रोग कभी कभी एकाएक बढ़ जाता है।

सम्बन्ध ।—वात या सन्धिवात रोगमें "कोलचिकम" का ऐलोपैथिक व्यवहार या अपव्यवहार हुआ हो तो "लीडम" का प्रयोग करना चाहिये। वात रोगमें स्पर्श असहनीयता के सम्बन्धमें "आर्निका" कोलचिकमके सदृश है, त्वचा में रस सञ्चित होता हो, ऐसे सन्धिवात रोगमें ब्रायोनिया इसका समधर्मी है ; ब्रायोनियामें "भी" उष्णवायुमें वृद्धि निर्णायक लक्षण है। शोथ रोगमें एपिस

और आर्सेनिकके प्रयोगसे यदि लाभ न हो तो कोलचिकमके व्यवहारसे विशेष लाभ दिखाई देता है। डा० फेरिङ्गटनके मतसे—"कोलचिकमका अपव्यवहार होनेपर "स्पाइजिलिया" प्रतिषेधक रूपमें व्यवहार करना चाहिये।"

वृद्धि।—मानसिक आवेग और सुस्ती, बहुत पढ़ना, पदार्थोंके रांधनेकी गन्धसे, सन्ध्याके समय, रातमें और गर्म हवामें तथा सूर्यास्तसे सूर्योदयतकके समयके भीतर वृद्धि। दर्द आदि बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलता है (लीडम का दर्द नीचेसे ऊपरकी ओर फैलता है)।

सदृश।—एपिस; आर्सेनिकम; लीडम; आर्निका; गुयाइयेकास, ऐमोन-फास; ऐण्टिमोनियम-क्रूडम, लाइको-पोडियम, ऐसिड-बेञ्जोयिक, रोडोडेण्ड्रन।

प्रतिविष या दोषघ्न।—बेलाडोना; कैम्फ; काकुलस; लीडम; नक्स; पल्स; स्पाइजि।

शक्ति।—३ रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व।—१४ से २० दिन।

कोलिन्सोनिया-कैनाडेन्सिस।

(COLLINSONIA-CANADENSIS)

दूसरा नाम।—हार्स बाम; स्टोन रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है। इसका विचूर्ण बना करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—कब्जियत; अतिसार; शोथ; रक्तामाशय; अजीर्ण; बाधक; ऋतुस्राव; अर्श; हृत्पिण्डकी बीमारी; उत्तेजना; प्रसवका दर्द, गर्भिणी रोग; वात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—वस्तिगह्वर (Pelvis) और यकृतके भीतरकी शिरा (Portal vein) के भीतर ज्यादा रक्तसञ्चय हो जाना और अर्श रोगका पैदा हो जाना; गर्भावस्थाके अन्तिम भागमें गर्भके यन्त्रोंमें खूनका ज्यादा

सञ्चय होना और बवासीरका पैदा हो जाना ; हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथ रोग ; अजीर्ण और शोथ रोग ग्रस्त व्यक्तियोंके कलेजेमें धड़कन ; हृत्पिण्ड की बीमारीके कुछ घटते ही पुराना अर्श या रुके हुए ऋतुका आविर्भाव हो जाता है ; पुराना दर्द पैदा करनेवाला अर्श,—ऐसा मालूम होता है, मानो मलान्त्र में कांकड़ या पतली काठियाँ विध रही हैं ; अर्श और कुन्थनके साथ आमरक्त (खूनी आँव, पेचिश) रोग ; पर्यायक्रमसे कब्जियत होना और पतले दस्त आना और गर्भावस्थामें गुह्यदेशमें खसड़े की तरहका एक तरहका चर्म्म रोग पैदा हो जाता है (Pruritus ani) और इसी वजहसे गर्भिणीका मलद्वार खुजलाता है और फिर बवासीर पैदा हो जाता है । यहांतक कि रोगिनी सो नहीं सकती,— ये कई कोलिन्सोनियाके विख्यात प्रकृतिगत लक्षण हैं। अर्श रोगमें इस्कुलस, हिपो-कैस्टेनम, अनेक अंशोंमें कोलिन-सोनियाके सदृश है; पार्थक्य यह है (१) इस्कुलसके बवासीरमें मलद्वारमें पूर्णताकी अनुभूति मौजूद रहती है, पर कोलिन्सोनियामें ऐसा नहीं है (२) इस्कुलसके अर्शमें साधारणतः खूनका स्राव नहीं होता ; पर कोलिन्सोनियाके अर्शमें लगातार खूनका स्राव होता देखा जाता है ; (३) इस्कुलसमें कमरमें बहुत दर्द और तेज दर्दकी अनुभूति मौजूद रहती है ; कोलिनसोनियामें प्रायः उतना नहीं होता ; (४) इस्कुलसमें कभी कब्जियत मौजूद रहती है, कभी नहीं भी रहता ; पर कोलिन-सोनियामें आंतोंमें शूल के दर्दके साथ बहुत गहरी कब्जियत मौजूद रहती है (डा० नैश) । बच्चे और गर्भवतियोंके निम्नान्त्रकी क्रिया न होनेकी वजहसे कब्जियत रोगमें इससे बहुत फायदा हुआ करता है । अर्श-रोगाश्रित हृद्रोग (कैक्टस, डिजिट) ।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत ही उदास भाव (Gloomy) ।

मस्तक ।—कपालमें दर्द और उसके साथ ही दोनों पैरोंमें स्थान परिवर्त्तन करनेवाला और जानुदेशमें छेदनेकी तरह दर्द,—अर्शसे एकाएक स्राव रोध होनेकी वजहसे (चेके) । पुरानी सर्दी ।

मुंह ।—जीभकी जड़ और मध्यस्थल (बीचका स्थान) सफेद लेप चढ़ा और मुंहमें बहुत ही कड़वा स्वाद (ग्राई, कोलो) ।

(५. आमाशय प्रभृति।—मिचली, पेटमें ऐंठन, वमन और आध्मानके साथ पेटमें दर्द।

मलान्त्र।—दाहिने कोखमें दर्द और बेचैनी मालूम होना और सुस्तीके साथ तलपेटमें कतरनेकी तरह दर्द। बच्चे और गर्भवती स्त्रियोंकी कब्जियत,—मलका रङ्ग फीका, पतला पानीकी तरह या पीला पतला मल,—तलपेटमें तेज कूथन या काटनेकी तरह दर्द। अर्श,—बादी या खूनी बवासीर। मलान्त्रमें बहुत भार मालूम होता है, खुजलाता है (टियु, रैट) और मानो तेज धार वाली काठकी खोलें चुभ रही हैं, ऐसा मालूम होता है (इस्कु, ऐसिड-नाई)। निम्नाङ्गमें रक्त अधिक सञ्चय होनेकी वजहसे निष्क्रियताके कारण ;—पुराना दुरारोग्य अर्श रोग। प्रसवके बादकी कब्जियत (नक्स)। गर्भावस्थामें मलद्वारमें खुजली होती है,—रोगिनी सो नहीं सकती (अन्त्रशूलमें नक्स और कोलोसिन्थसे यदि फायदा न हो तो कोलिन्सोनियाका प्रयोग करना चाहिये)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत दिनोंका जरायु-प्रदाह ; जरायु कुछ पीछे की ओर या एकदम झूल पड़ता है (Retroflexion or Retroversion = अरम-मूर, नैट, सिपिया, बोरैक्स, सैबाल-सेरुलेटा) ; जरायु-भ्रंश या जरायुका बाहर निकलना (Prolapsus = सिपि, लिलियम-टाइ, बेल, फ्रैक्सिनस-ऐमे) वाधक,—अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द, दाहिने कोखेमें दर्द ज्यादा हुआ करता है, गर्भावस्थामें जरायु-भ्रंश या योनिके बाहरी भागमें खुजली,—योनिमुख गाढ़ा लाल रङ्गका हो जाता है ; बैठनेमें दर्द होता है। झिल्ली निकलनेवाला वाधक का दर्द (Membranous Dysmenorrhoea = बोरैक्स ; ऐस्क्लिपि-सिरो, बैलेडो, कैमो, जेल्स, कोलो, ऐक्टि, मैग-फास, बाइबर्नम)।

श्वास-यंत्र।—बवासीरका स्राव रुक जानेकी वजहसे काले रङ्गका गाढ़ा, लेईकी तरह और खून मिली श्लेष्मा भरी कफ मिली खांसी। हृत्पिण्डमें विकार हो जानेका भय,—गति अनियमित और तेज (कानवेले), सामान्य मानसिक उत्तेजना या शरीर हिलानेपर बढ़ जाता है,—कलेजा धड़कना। हृत्पिण्डका दर्द और बवासीरका स्राव पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। वक्षःस्थलमें दबाव मालूम होना, श्वासकष्ट और बिलकुल सुस्ती या मूर्च्छाका उपक्रम हो जाता है। (ऐकोनाइट-फेराक्स) ; अर्श मिले हृत्पिण्डके रोगमें कैक्टस, डिजिटेलिस वगैरहसे फायदा न होनेपर कालिन्सोनियाका प्रयोग करना चाहिये।

सञ्चय होना और बवासीरका पैदा हो जाना ; हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथ रोग ; अजीर्ण और शोथ रोग ग्रस्त व्यक्तियोंके कलेजेमें धड़कन ; हृत्पिण्ड की बीमारीके कुछ घटते ही पुराना अर्श या रुके हुए ऋतुका आविर्भाव हो जाता है ; पुराना दर्द पैदा करनेवाला अर्श,—ऐसा मालूम होता है, मानो मलान्त्र में कंकड़ या पतली काठियाँ बिध रही हैं ; अर्श और कुन्थनके साथ आमरक्त (खूनी आँव, पेचिश) रोग ; पर्यायक्रमसे कब्जियत होना और पतले दस्त आना और गर्भावस्थामें गुह्यदेशमें खसड़े की तरहका एक तरहका चर्म रोग पैदा हो जाता है (Pruritus ani) और इसी वजहसे गर्भिणीका मलद्वार खुजलाता है और फिर बवासीर पैदा हो जाता है। यहांतक कि रोगिनी सो नहीं सकती,— ये कई कोलिन्सोनियाके विख्यात प्रकृतिगत लक्षण हैं। अर्श रोगमें इस्कुलस, हिपो-कैस्टेनम, अनेक अंशोंमें कोलिन-सोनियाके सदृश है ; पार्थक्य यह है (१) इस्कुलसके बवासीरमें मलद्वारमें पूर्णताकी अनुभूति मौजूद रहती है, पर कोलिन्सोनियामें ऐसा नहीं है (२) इस्कुलसके अर्शमें साधारणतः खूनका स्राव नहीं होता ; पर कोलिन्सोनियाके अर्शमें लगातार खूनका स्राव होता देखा जाता है ; (३) इस्कुलसमें कमरमें बहुत दर्द और तेज दर्दकी अनुभूति मौजूद रहती है ; कोलिनसोनियामें प्रायः उतना नहीं होता ; (४) इस्कुलसमें कभी कब्जियत मौजूद रहती है, कभी नहीं भी रहता ; पर कोलिन-सोनियामें आँतोंमें शूल के दर्दके साथ बहुत गहरी कब्जियत मौजूद रहती है (डा० नैश)। बच्चे और गर्भवतियोंके निम्नान्त्रकी क्रिया न होनेकी वजहसे कब्जियत रोगमें इससे बहुत फायदा हुआ करता है। अर्श-रोगाश्रित हृद्रोग (कैक्टस, डिजिट)।

लक्षणावली।

मन ।—बहुत ही उदास भाव (Gloomy)।

मस्तक ।—कपालमें दर्द और उसके साथ ही दोनों पैरोंमें स्थान परिवर्त्तन करनेवाला और जानुदेशमें छेदनेकी तरह दर्द,—अर्शसे एकाएक स्राव रोध होनेकी वजहसे (लेके)। पुरानी सर्दी।

मुंह ।—जीभकी जड़ और मध्यस्थल (बीचका स्थान) सफेद लेप चढ़ा और मुंहमें बहुत ही कड़वा स्वाद (ब्राईं, कोली)।

तरह, पेटमें दर्द, रोगी टेढ़ा होकर दोहरा-सा जाता है। (४) रजोरोध,—डिम्बाधारमें तेज और असह्य कष्टकी वजहसे रोगिनी सामनेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती है। शूलका दर्द इतना तेज पैदा हो जाता है, कि रोगी या रोगिनी खाटके पावेके माथे पर या टेबिलपर पेट दबाकर आराम मिलनेकी आशासे झुकी रहती है। इन कई अवस्थाओंकी कोलोसिन्थिस अव्यर्थ दवा है। इसके अलावा घृणाके साथ क्रोधसे पैदा हुई बीमारियाँ, अर्थात क्रोधित हो जानेके बाद दस्त आने लगना ; शूलका दर्द ; रजोरोध ; (कैमो, स्टैफ) वगैरहमें कोलोसिन्थ बहुत फायदा दिखाया करता है। ज्वराधिकारमें इसका एक प्रधान और अनन्य साधारण लक्षण यह है, कि ज्वरके अन्तमें रोगीकी देहमें जो पसीना निकलता है उसकी गन्ध पेशाबकी तरह आती है (बार्य, कैन्थ, ऐसिड-नाई) आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं,—(१) एकाएक बायीं ओर माथा घुमानेपर सरमें चक्कर आता है, और गिर जानेका लक्षण पैदा हो जाता है। (२) स्नायु शूल,—हिलने डोलनेपर घटता है और जाड़ा मालूम होता है। (३) बायीं कानपटीमें, बाईं गण्डास्थिके भीतर, बायें गाल और बायें कन्धेमें तेज दर्द होता है,—दर्द खोदने या टपककी तरह होता है (४) पुट्ठेमें अकड़नकी तरह दर्द, मानो यंत्र व चिमटेसे कसकर पकड़ा हुआ है। रोगी रोगवाला अंश दबाकर सोता है, (५) डिम्बाधारमें ऐसा दर्द मानो खोंचा मार रहा है,—दबानेपर आराम मालूम होता है, (६) मूत्र पतला लसदार गोंदकी तरह (७) समूचे पेटमें दर्द, मानो आँतें आदि दो पत्थरोंके बीचमें दबायी जा रही हैं ; मानो पेटमें पत्थरसे पत्थर रगड़ खा रहा है,—कोमल अंशपर रोगका आक्रमण अधिक हुआ करता है। अंत्र आदिमें स्पर्श सहन नहीं होता और इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो उनपर प्रहार हो रहा है।

लक्षणावली।

मन।—रोगीका स्वभाव बहुत क्रोधी और अधीर रहा करता है,—कोई यदि उससे कोई बात पूछता है, तो क्रोधित हो जाता है, हाथसे चीजें दूर फेंक देता है। अपनी किये हुए अपराधकी वजहसे मनः कष्ट। अपनी या किसी दूसरेकी ही घटनाको लेकर बहुत कातर हो पड़ता है। (दूसरेके स्वास्थ्यकी चिन्ता=कास्टि, कक्कु)। ताच्छिल्यभाव मिले क्रोधकी वजहसे अन्त्र-शूल, मुखका स्नायुशूल, वमन, उदरामय, रजोरोध वगैरह (कैमो, स्टैफ, नाई,

वृद्धि।—थोड़े भी मानसिक आवेग या उत्तेजनासे (आर्जेण्ट-नाई) और शरीर हिलानेसे।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—इक्स लस, हिप, ऐलो, नक्स।

दोषघ्न।—नक्सवोमिका।

तुलनीय।—लाइकोपस (हृत्पिण्ड); इस्कियु, हैमा, नक्स, सल्फ, (अर्श); पोंडो (गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटना); मानसिक उद्वेगसे क्लान्ति के कारण पक्षाघातमें स्टेनम; काकुलस, फास्फोरस, नैट्रम।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे ६ ठा दशमिक क्रम। हृत्पिण्डकी रोगमें उच्चतर क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

कोलोसिन्थिस वल्गेरिस।

(COLOCYNTHIS CUCUMIS OR VULGARIS).

दूसरा नाम।—विटर ऐपेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फलके गूदेसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मोतियाबिन्द; आँखोंका स्नायुशूल; कशेरुकाके अन्तिम भागमें स्नायुशूल; बहुमूत्र; अतिसार; रक्तामाशय; वाधक आँखकी रोग; सरमें दर्द; ध्वजभङ्ग; डिम्बाधारका स्नायुशूल; चमड़ी; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह; वात; कटि-स्नायुशूल; दन्तशूल; जखम; अर्बुद इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान मानसिक लक्षण है, क्रोध और अधीरता। गृध्रसी या कटि-स्नायुशूल (Sciatica—साधारणतः दाहिनी ओरका): दोनों पैरोंमें सिकुड़ने या छेदनेकी तरह दर्द,—वंक्षण सन्धि या कुल्हे (Hip joint) और वंक्षण सन्धिके गह्वरकी स्नायु सबमें बहुत ज्यादा दर्द मालूम हुआ करता है। (२) बहुत तेज अन्त्रशूल,—रोगी यंत्रणा से सामनेकी ओर झुककर दोहरा हो जाता है छटपटाता है, कराहता और रोया करता है (३) आमरक्त रोग—मल पानीकी तरह,खून मिला और आँदकी

है (एपिस, नैट्र-सल्फ; नक्स, रियुटा; बायें कोखमें=रैनान; दाहिने कोखमें =लाई, रैन)। पेरमें ऐसा मालूम होता है, मानो आंतें आदि पत्थरसे रगड़ खा रही हैं (पेट ऐसा मालूम होता है मानो पत्थरके टुकड़ोंसे भरा हुआ है और चलनेके समय मनमें आता है मानो पत्थरसे पत्थर रगड़ खा रहा है= कक्कुलस)। प्रचण्ड अन्त्रशूल,—रोगी असह्य यंत्रणासे सामनेकी ओर टेढ़ा होकर दोहरा जाता है, छटपटाता है या रोया करता है; कभी दौड़कर खाटके पायेके माथेपर या टेबिलकी कोनेसे पेट दबा रखता है,—क्योंकि पेट जोरसे दबा रखने या सामनेकी ओर टेढ़े पड़ जानेपर तकलीफ घट जाती है (उदरमें मानो कोई चिकोटी काट रहा है ऐसी अनुभूति और सामनेकी ओर टेढ़े होकर दोहरा जानेपर आराम मालूम होना=सिङ्कोना) उदरमें ऐसा मालूम होता है मानो कोई किसी शस्त्रसे आघात कर रहा है (कोना, वेरेट)। दर्द-भाव खाने पीनेसे बढ़ जाता है। पेटमें वायु-भरकर बहुत फूल उठता है और उसमें कलकल गुड़ गुड़ आवाज होती है।

मलान्त्र और मल।—उदरामय और आम-रक्त रोग,—असन्तोष और क्रोधकी अधिकताकी वजहसे मल लाल और पीले रंगका, फेन-भरा और पानीकी तरह; पहले पानीकी तरह और आम-मय इसके बाद पित्तमिला और अन्तमें खून भरा; कभी कभी बहुत पतला, हरा लसदार और पानीकी तरह पतला, खट्टी या सड़ी गन्ध; खाने या पीने बाद (ट्राम्बिड); फल भोजन करनेपर और दाँत निकलनेके समय बढ़ना। रक्त आमाशय रोगमें मलके साथ आंत आदिके शल्ककी तरह सूत्रमय पदार्थ निकला करता है (कैन्थ, कोलचि, एसिड-कार्बोलिक)।

पेशाब।—बहुत थोड़े परिमाणमें और बदबूदार और गाढ़ा लसदार या गाढ़ी लारकी तरह पेशाब निकला है। पेशाबके समय मूत्रस्थली बहुत संकुचित रहती है और तलपेटमें दर्द मालूम होता है, पेशाब करनेके अन्तमें कुछ देर बाद देखा जाता है कि बर्त्तनकी सतहमें कुछ कड़ी लाल रङ्गकी बालू सम जमी हुई है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाधक—डिम्बाधारके भीतर मानो कोई खोद रहा है या खोंचा मारता है ऐसा दर्द मालूम होता है। बाएँ पार्श्वमें दर्द अधिक होता है; तलपेटमें अकड़नकी तरह दर्दके कारण रोगिनी तकलीफसे

नेट्र-म्यू,)। विकार और प्रलाप—खुली हुई आंख और भागनेकी इच्छा मौजूद रहती है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—एकाएक सर घुमानेपर (कोनी, कैल्के, कैलि-कार्ब)—विशेषकर बाईं ओर; रोगीके गिर जानेका उपक्रम हो जाता है (ऐको, आर्नि, बेल, कोना, माइक्यूटा, फिलेन, पल्स, रास, सल्फि, मल्लास)—शराब आदि पीनेकी वजहसे; गिर जानेको भयसे बाईं ओर माथा घुमा नहीं सकता। ललाटमें पीसनेकी तरह सर दर्द हुआ करता है,—माथा झुकाने या चित्त होकर सोनेपर बढ़ जाता है (मूर्द्धा-देशका सर दर्द,—माथा झुकाने या चित्त होकर सोनेपर बढ़ जाता है=लाई)। बाईं कनपटीमें टपककी तरह दर्द,—यह दर्द क्रमशः बढ़कर तेज कतरनेकी तरह दर्द हो जाता है, इसके साथ ही मिचली और वमन,—दबाने या गर्म प्रयोग करनेपर घट जाता है, सरमें दर्दके बाद माथा अकड़ जाता है।

मुखमण्डल ।—मुंहका स्नायुशूल,—बाएं पार्श्वमें अधिक (स्पाइजि) मुंहके समस्त बाएँ आधे भागमें और बाईं आँखमें और बाएँ कानतक बहुत तेज फाड़ने या छेदनेकी तरह दर्द हो जाता है और यह दर्द दिन रात सम भावसे हुआ करता है। रोगी यंत्रणासे मानो पागल या उन्मत्त जैसा हो पड़ता है;—दोनों हाथोंसे जोरसे दबा लेनेपर उसे आराम मालूम होता है। बाएं पार्श्वका दांतका दर्द,—दर्द मुंहके समूचे बाएँ आधे भागमें फैल जाता है और यह दांत बहुत लम्बा मालूम होता है। कानमें आवाज आदि-प्रतिध्वनित-हुआ करती है (कास्टि, मार्क, फास, ऐसिड-फास)।

पाकाशय और अन्त्राशय ।—जीभ—ऐसा मालूम होता है मानो झुलस गयी है (इस्क्यू, सिपा, आर्स, वैप, लाई, मार्क-बिन-आयोड, पल्स, रास-विन, सैङ्गियु, वेरेट-विरिडि) और सफेद और पीले रङ्गकी और रुखड़ी; पतली पीनेकी चीजें और खाये हुए पदार्थ आदिका स्वाद तीता मालूम होता है (ब्राई, पल्स,)। भोजनके बाद मुंहका स्वाद तीता मालूम होता है (एमोन-कार्ब, लाइको, ऐसिड-नाइ)। मिचली पैदा हुए बिना ही वमन हो जाता है (वमन रहित मिचली=इप्रे),—जब तक रोगी सो नहीं जाता तबतक लगातार मिचली हुआ करती है, और नींद खुलते ही फिर जी मिचलाने लगता है। तलपेटमें मानो चोट लग गयी है, इस ढंगका दर्द होता

घटना ।—सामनेकी ओर झुककर दोहरा जानेपर, जोरसे दबानेप और सामनेकी ओर सर झुकाकर सोनेपर ; उत्तापके प्रयोगसे और दबानेसे

सम्बन्ध ।—सदृश ।—आमाशय रोगमें मर्क्युरियस इसका अनु पूरक है ; खासकर यदि मरोड़ और ऐंठन मौजूद रहे। स्नायु-शूल रोगमें नेफ़े लियम, लाइकोपोडियम, कैप्सिकम, केलि-कार्बोनिकम, मैग्नेशिया-फास, प्रभृति इसके सदृश हैं। क्रोधकी वजहसे बीमारियोंके सम्बन्धमें लाइकोपोडियम इग्नेशिया, ब्रायोनिया, कैमोमिला और स्टैफिसेग्रिया इसकी सदृश दवाएँ हैं

तुलनीय ।—ब्रायो ; डायस्को, (पीठमें) ; स्टैफि, (क्रोध) इत्यादि

दोषघ्न ।—कैम्फ़, कष्टिकम, कैमो, काफि, ओपियम, स्टैफि ।

शक्ति ।—२रे दशमिकसे उच्चतम क्रम तक इसका व्यवहार हुआ करता है ।

कोलोस्ट्रम ।

(COLOSTRUM)

परिचय ।—प्रसवके बाद पहली बारका माताका दूध ।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाकी स्वस्थ शरीरपर अबतक परीक्षा नहीं हुई। कोलोष्ट्रम मिला, पहले पहल माताका दूध पीकर साधारणतः बच्चोंको उदरामय होता देखा जाता है और पतले दस्त आने लगते हैं। इसी लक्षण पर निर्भर कर उदरामयमें इससे फायदा होनेका आभास मिलता है।

डा॰ बेलके मतसे—**हरा पानीकी तरह, या पीले पानीकी तरह** आंव मिला, अथवा पित्त-मिला, परिमाणमें बहुत और खट्टी गन्धसे भरा मल, शरीरकी गन्ध खट्टी, स्तन पीनेके साथ या दांत निकलनेके समय बीमारीका बढ़ना इसका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

बेचैन हो पड़ती है और सामनेकी ओर टेढ़ी होकर द्वि-भाज (दोहराना) सी हो जाती है; कभी कभी खाने पीनेके बाद तकलीफ बढ़ जाती है। डिम्बाधार-भागमें जरायुकी स्थूल बन्धनी (Broad ligament) के ऊपर कोषावृत्त अर्बुद या बतौड़ी पैदा हो जाती है। डिम्बाधार प्रदेशमें अकड़नकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो किसी बड़े चिमटेसे कसकर पकड़े हुए हैं, या दबा रहा है। अजीर्ण रोगकी वजहसे जरायु प्रदाह,—शूलकी तरह दर्दकी वजह से रोगिनीकी देह सामनेकी ओर टेढ़ी होकर दोहरा जानेकी तरह हो जाती है; तलपेटमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई किसी शस्त्रसे काट रहा है; पेट फूल उठता है, और उसमें बहुत दर्द मालूम होता है, कभी कभी ऐसा मालूम होता है मानो आंतें आदि दो पत्थरके टुकड़ोंके भीतर दब रही हैं। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia = हायो, नक्स, सिकेलि, वेरेट—क्रोध या घृणाकी वजहसे; क्रोधसे पैदा हुआ,—प्रचण्ड शूलका दर्द, बहुत पेट फूलना, और उदरामय या इसके साथ ही आंतमें दर्द रहनेपर,—कैमो,—यदि स्राव रुक जानेकी वजहसे विकार या मानसिक दुर्बलता पैदा हो जाये तो= बेल, हायो, स्ट्रैमो)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गृध्रसी या कटिस्नायुशूल (Sciatica)—पुट्ठेमें अकड़नकी तरह दर्द,—मानो किसी बड़े चिमटेमें दब रहा है; रोगी पैर मोड़कर रोगवाला अंग दबाकर सोया करता है; तेज दर्द बिजलीकी गतिकी तरह समूचे बाएँ पार्श्वमें तेजीसे फैल जाता है,—बायां वंक्षण, या कूल्हेमें, बायें ऊरु, बाईं जांघ, वगैरहपर रोगका आक्रमण होता है। ठण्ड लग जानेकी तरुण अवस्था,—छूते ही दर्द बढ़ जाता है; दबाने या गर्म प्रयोगसे घट जाता है, केवल चलनेके समय दाहिने ऊरुमें दर्द और मानो उसके पीछेकी पेशियां छोटी हो गयी हैं ऐसी खींचन मालूम होती है। दर्दकी वजहसे रोगवाली जगह सुन्न हो जाती है (नेफेलियम) दाहिने ऊरुके पिछले भागवाले वृहत् स्नायुमें बहुत तेज कतरनेकी तरह दर्द,—दाहिनी वंक्षण-सन्धिसे नीचेके पैरतक बिजलीकी तरह दौड़ जाता है,—सोना या रोगवाली जगह हिलाने या चलने पर दर्द बढ़ जाता है; बैठनेपर आराम मालूम होता है।

वृद्धि।—क्रोध और घृणाकी अधिकता; अपने किये हुए अपराधकी वजहसे मनःकष्ट (स्टैफ, लाइकोपोडियम)। पनीर खाने (शूल वेदना) और हिलने डोलनेपर।

आँख ।—आँखोंका स्नायुशूल,—दाहिनी आँखमें बहुत दर्द, आँखके गोलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह अपेक्षाकृत बड़ा हो गया है (ऐक्टिया, स्पाइजि) और मानो बाहर निकल पड़नेका उपक्रम करता है। गर्म जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेपर तकलीफ और भी बढ़ जाती है (ऐपिस, घटती है= रासटक्स)। बायीं आँखसे बहुत थोड़ी रोशनी दिखाई देती है। चेहरा फूला और दाहिनी आँख बाई आँखकी अपेक्षा बाहर निकली हुई मालूम होती है। दियेकी लौके चारों ओर एक लाल आलोकमय गोल घेरा दिखाई देता है (रियुटा, नीला घेरा=लैके ; हरा घेरा=फास, सिपि ; बहुतसे रंगोंका= नाइट्रम, स्ट्रेम)

वक्ष ।—बायीं स्तन-ग्रन्थिमें तेज दर्द मालूम होता है। वक्षस्थलके दाहिने पार्श्वसे लेकर दाहिने बाहु और अँगुलीतक दर्द फैल जाता है। खाँसी,—खाँसनेपर बाएँ वक्षके निचले स्थानपरसे पृष्ठ-फलक तक दर्द चलता है और मालूम होता है (नेट्र-सल्फ, बायें वक्षके ऊपरी अंशसे पृष्ठ फलकातक दर्द चलता है=मार्टस-काम, पिक्स-लिक्विडा, थिरिडि, सलफर)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बाएँ कुक्षिदेशके पीछे अस्थि-संयोगस्थलपर बाहरकी ओर दबावकी तरह रह रहकर दर्द होता है,—छूनेपर दर्द और चलनेपर आराम मिलता है। दोनों जानुसे गुल्फतक तेज दर्द फैलता रहता है। प्रबल ज्वरके साथ पैर और पैरके तलवेमें प्रदाह, दर्द जितना ही घटता जाता है,सूजन उतनी ही बढ़ती जाती है; त्वचाका रंग सफेद होता जाता है और पपड़ोंकी तरह होकर फट जाती है और इस फटे हुए स्थानसे रस निकला करता है।

त्वचा ।—फैलनेवाला विसर्प,—जलन और खुजलीके साथ रोगवाली जगह लाल हो उठती है और उससे लाल रेखा चारों ओर फैल जाती है (युफोर्बि-आफिसि)। पामा (Eczema),—फुन्सियाँ या पीब भरी फुन्सियाँ; कड़े किनारेवाले जखमसे भरी; (ग्रेफ, थाइरायड, हाइड्रोकोट, वेसिलिन वेक्सिनिन, मैलेन्ड्रिन, ऐनाकार्ड)। पैरमें विसर्प।

वृद्धि ।—विश्रामसे, गर्म प्रयोगसे और रातके समय।

घटना ।—शरीर या रोगवाला अंश हिलानेपर, दबानेपर और निर्मल वायु लगनेपर।

कामोक्लेडिया डेण्टाटा।
(COMOCLADIA DENTATA)

दूसरा नाम।—गुयाउ (*Guao*)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्ते और छालसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है।—स्तनकी बीमारी; कानकी बीमारी; खसड़ा; विसर्प; आँखकी बीमारियाँ; कुष्ट रोग; स्नायुशूल; दाँतकी जड़की बीमारियाँ; जखम; चर्म्म रोग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—यह बहुत कुछ अंशमें रास-टॉक्सिकोडेण्डनके सदृश क्रियावाली दवा है।—शरीर हिलानेपर कम मालूम होना इस तरहका दर्द दोनोंमें ही मौजूद रहता है। फैलनेवाले विसर्प रोग (Erysipelas) में दोनोंकी ही आवश्यकता पड़ती है; दोनोंमें जलन और खुजलीके साथ रोगवाली जगह लाल हो उठती है और दोनोंमें ही शारीरिक दुर्बलता, सुन्न हो जाना, बेचैनी, वगैरह देखी जाती है। परन्तु आँखपर क्रियाके सम्बन्धमें दोनों ही दवाओंमें पार्थक्य दिखाई दिया करता है। कामोक्लेडिया सेवन करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो अक्षि गोलक गड़हेकी अपेक्षा बड़ा है और गड़हेसे बहुत बाहर निकल जाना चाहता है, इसके अलावा जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेसे सब लक्षण बढ़ जाते हैं पर रास्टक्स इसके विपरीत है—अर्थात जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेसे घट जाते हैं। (एपिसमें आँखके लक्षण सब जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेसे बढ़ जाते हैं)। कामोक्लेडियाके चर्म्मके लक्षण सब बहुत कुछ युफोर्बियमके सदृश हैं,—दोनोंमें ही विसर्प आक्रान्त अंशसे लाल रेखा चारो फैल जाती है। वक्षस्थलके विशेष दर्दमें भी यह लाभदायक है।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, उठनेपर आँखके चारों ओर अँधेरा दिखाई देता है।

आँख ।—आँखोंका स्नायुशूल,—दाहिनी आँखमें बहुत दर्द, आँखके गोलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह अपेक्षाकृत बड़ा हो गया है (ऐक्टिया, साइजि) और मानो बाहर निकल पड़नेका उपक्रम करता है। गर्म जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेपर तकलीफ और भी बढ़ जाती है (ऐपिस, घटती है= रासटक्स)। बायीं आँखसे बहुत थोड़ी रोशनी दिखाई देती है। चेहरा फूला और दाहिनी आँख बाईं आँखकी अपेक्षा बाहर निकली हुई मालूम होती है। दियेकी लौके चारों ओर एक लाल आलोकमय गोल घेरा दिखाई देता है (रियुटा, नीला घेरा=लैके ; हरा घेरा=फास, सिपि ; बहुतसे रंगोंका= नाइट्रम, क्रूम)

वक्ष ।—बायीं स्तन-ग्रन्थिमें तेज दर्द मालूम होता है। वक्षस्थलके दाहिने पार्श्वसे लेकर दाहिने बाहु और अँगुलीतक दर्द फैल जाता है। खाँसी,—खाँसनेपर बाएँ वक्षके निचले स्थानपरसे पृष्ठ-फलक तक दर्द चलता है और मालूम होता है (नैट्र-सल्फ, बायें वक्षके ऊपरी अंशसे पृष्ठ फलकतक दर्द चलता है=मार्टस-कम, पिक्स-लिक्विडा, थिरिडि, सलफर)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बाएँ कुक्षिदेशके पीछे अस्थि-संयोगस्थलपर बाहरकी ओर दबावकी तरह रह रहकर दर्द होता है,—छूनेपर दर्द और चलनेपर आराम मिलता है। दोनों जानुसे गुल्फतक तेज दर्द फैलता रहता है। प्रबल ज्वरके साथ पैर और पैरके तलवेमें प्रदाह, दर्द जितना ही घटता जाता है,सूजन उतनी ही बढ़ती जाती है; त्वचाका रंग सफेद होता जाता है और पपड़ीकी तरह होकर फट जाती है और इस फटे हुए स्थानसे रस निकला करता है।

त्वचा ।—फैलनेवाला विसर्प,—जलन और खुजलीके साथ रोगवाली जगह लाल हो उठती है और उससे लाल रेखा चारों ओर फैल जाती है (युफोर्बि-आफिसि)। पामा (Eczema),—फुन्सियाँ या पीब भरी फुन्सियाँ; कड़े किनारेवाले जख्मसे भरी; (ग्रैफ, थाइरायड, हाइड्रोकोट, वैसिलिन वैक्सिनिन, मैलेन्ड्रिन, ऐनाकार्ड)। पैरमें विसर्प।

वृद्धि ।—विश्रामसे, गर्म प्रयोगसे और रातके समय।

घटना ।—शरीर या रोगवाला अंश हिलानेपर, दबानेपर और निर्मल वायु लगनेपर।

सम्बन्ध—सदृश ।—ऐनाकार्ड, रास-टक्स, रास-वेन, इयुफोर्बियम, एपिस (चक्षु-नष्ट) ।

शक्ति ।—१म से ३० शततमिक क्रम ।

कानचियोलिनम ।
(CONCHIOLINUM)

दूसरा नाम ।—मदर आव पर्ल, सीप ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता ।—सर्दी और हड्डियोंके छोरकी ओरके प्रदाहके लक्षणमें यह दवा बहुत लाभ करती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कैल्के-फास ; कैलके-कार्ब ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

काण्डुरैङ्गो ।
(CONDURANGO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस लता या गाछकी छालसे मदर टिंचर तैयार होता है । इसकी सूखी छालका विचूर्ण भी बना करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—बहुत तरहके कैन्सर रोगमें यह लाभदायक सिद्ध हुआ है ।

लक्षणावली ।

पाकस्थली ।—दोनों ओठोंका संयोग-स्थल फट जाता है और वहाँ जखम हो जाता है । ऊपरी पेटकी श्लैष्मिक झिल्लीका बहुत दिनोंतक स्थायी प्रदाह और सर्दी ; पाकाशयिक झिल्लीका जखम और कर्कट रोग,—स्थायी

बीज के हो जाती है। दबानेपर कोई कोई जगह बहुत कड़ी और फूली मालूम होती है। पाकाशयमें लगातार ऐसा मालूम होता है मानो आग जल रही है; लगातार और बहुत ज्यादा दर्द हुआ करता है। (आर्स, हाइ-ड्रेस्टिस; इयुरेनियम, नाइट्रिकम, बिसथ)। अन्ननालीका संकोचन—वचो-स्थिके पीछे लगातार जला करता है और ऐसा मालूम होता है, मानो खाये हुए पदार्थ आदि उसी स्थानपर अड़े हुए हैं (मार्क-कोर, फास, इग्ने)।

प्रत्यङ्गादि ।—डा० ई० एम० हेलके मतमे काण्डियुरेङ्गो द्वारा मानव-शरीरमें कशेरुक मज्जाके क्षयकी वजहसे प्रत्यङ्ग आदिकी सञ्चालक पेशीमें एकदम निष्क्रियता आ जाती है (कैलि-आयोड, फास, नक्स, ऐसिड-पिक्रि, हेलोडर्मा, सिफिलिन, आर्जेण्ट-नाई, ऐल्यूमिन, आर्स, अरम)। डा० हेलने और भी कहा है कि जब हमारी दवाइयोंमें ऐसी और कोई भी दवा नहीं रहती जिसके द्वारा मेरुमज्जाके क्षयकी वजहसे चलच्छक्ति राहित्यके सब लक्षण दूर हो सकें, और जब यह दिखाई देता है कि कोण्डियुरेङ्गोमें उक्त रोगका सबसे अधिक सादृश्य है, उस समय चिकित्सकोंको इस रोगको अन्तिम दवाकी परीक्षा कर देखना उचित है।

त्वचा और उपत्वक ।—दुरारोग्य दुर्गन्ध रस निकलनेवाला जखम, ओंठ और स्तनका कर्कटीया अर्बुद या स्तनका कर्कट (कोना, फाइटो, क्रियो, हाइड्रेस्टिस-फोल-प्रेट); ओंठका संयोग-स्थल फट जाता है और त्वचामें जखम हो जाता है। दर्द—कतरने या डंक मारनेकी तरह और जलन पैदा करनेवाला, कट कट भन भन और संकोचनकारी। जीभपर असम टेढ़े मेढ़े किनारेवाले जखम पैदा हो जाते हैं।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—आर्स, हाइड्रेस्टिस; युरेनियम-नाइट; बिसम; ऐ-पिक्रिक; हेलोडर्मा; नक्स।

शक्ति । १म दशमिक विचूर्ण या क्रम।

कोनायम-ब्रोमेटम।

(CONIUM BROMATUM)

दूसरा नाम।—ब्रोमो-हाइड्रेट-आव-कोनिसिन।

उपयोगिता और आभास।—माथेमें खालीपन मालूम होना; मानसिक अवसाद; अकर्मण्यता प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

कोनायम मैक्युलेटम।

(CONIUM MACULATUM)

दूसरा नाम—हेमलक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल होना बन्द होना चाहता है, ऐसे ही समय जड़को छोड़कर, समूचा गाछ पीस डाला जाता है और अरिष्ट तैयार होता है। इसके उपचार या सारांशको कोनायम (Conium) कहते हैं।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—मूत्राधारका प्रदाह; दमा; स्तनकी बीमारी; श्वासनलीका प्रदाह; आघात; कर्कटोया जखम; मोतियाबिन्दु; ताण्डव; खाँसी; उपझिल्लीका प्रदाह; या डिप्थीरियाके बादका पक्षाघात; बाधक; विसर्प; आँखकी बीमारी; स्तनमें दूधकी अधिकता; व्याधिशंका; कामला; यकृतका बढ़ना; मनोविकार; सुन्न हो जाना; डिम्बाधारकी बीमारी; पक्षाघात; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह; यक्ष्मा; गर्भावस्थामें स्तनका दर्द; पलकोंका पक्षाघात; गण्डमाला; शुक्रक्षय; बन्ध्यत्व; पाकाशयकी बीमारी; अण्डकोषकी बीमारी; हनुस्तम्भ या जबड़े अटकना; अर्बुद; जखम; दृष्टि-विकार; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता।—स्त्री या पुरुष दोनोंकी ही बुढ़ापेकी बीमारीमें और और दृढ़ पेशीवाले या निष्क्रिय भावसे दिन बितानेवाले बलिष्ठ शरीरके मनुष्योंकी बीमारीमें यह लाभदायक है। वृद्ध-मनुष्योंकी दुर्बलता; चोट या

गिर जानेकी वजहसे बीमारियों और बहुत अधिक इन्द्रिय सेवा या इन्द्रिय परितृप्तिकी कमीकी वजहसे पैदा होनेवाली बीमारियोंमें यह उपयोगी है।

आभास।—इसका रस सेवन करनेपर क्रमशः बढ़नेवाले पक्षाघात का संचार होता है और इसका यह गुण जाननेके कारण ही जगद्विख्यात दार्शनिक सोक्रेटीसने इसे पीकर अपनेको कैद करनेवाले अत्याचारियोंके हाथसे छुड़ाया था। (१) सरमें चक्कर आता है,—सोने या शय्यापर करवट बदलने के समय; (२) स्मरणशक्तिका घटना,— विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका; निष्क्रियताकी वजहसे सब ग्रन्थियोंका छोटी होते जाना (३) खांसी,—ऐसा मालूम होता है मानो कण्ठमें एक छोटा अंश बहुत सूख गया है। रह रहकर बहुत खांसी आती है—खासकर रातके समय (४) ऋतुके समय दोनों स्तनोंमें बहुत दर्द होता है और वे फूल उठते हैं (५) पेशाब करनेमें बहुत तकलीफ होती है; पेशाब होते होते रुक जाता है, फिर निकलने लगता है (६) स्तन और अण्डकोषमें कड़ापन—खासकर कर्कट रोगवाले धातुवालोंके लिये (७) आँखोंमें प्रदाह या किसी तरहकी आँखकी बीमारी न हो, पर रोशनी अच्छी न मालूम होती हो और आँखसे गरम जलका स्राव, ये सात कोनायम मैक्युलेटमके प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—स्मरण-शक्ति बहुत क्षीण,—थोड़ा भी मानसिक परिश्रम असह्य मालूम होता है, विमर्ष चित्त, सामान्य कारणसे ही असन्तुष्ट हो जाता है। सभी विषयोंमें प्रधानता प्राप्त करनेका इच्छुक, कलह प्रिय, हमेशा चिड़चिड़ाया करता है, कोई यदि किसी बातका प्रतिवाद करता है तो उसको बहुत क्रोध पैदा हो जाता है (ऐनाका, आस्टिर, अरम, अरम-म्यूर-नेट्र, कैमो, सिना, काक्यु, फेर, हेली, लार्क)। सब तरहकी, मानसिक उत्तेजना मात्रसे सुस्ती आ जाती है। अकेला रहनेमें डरता है (ऐष्टि-टार्ट, आर्स, बिस्मथ, क्लिमेट, हायो, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लिलि-टाइग्रिन,लाइ, सिपि, स्ट्रैमो, स्ट्रैम, वेरेट) अथच दस आदमियोंमें जाना या सङ्ग रहना अच्छा नहीं मालूम होता (आर्जेण्ट-नाइ, आर्नि, कोका, जेलसि, कैलि-कार्ब, लाइ)। मध्याह्नमें नींद खुलनेपर, जड़ बुद्धिकी तरह भाव प्रकट करता है। बातचीत करनेके समय अपने मनोभाव प्रकट नहीं कर सकता। पढ़नेमें या कामकाजमें

बिलकुल ही इच्छा नहीं रहती ; महा आलसी और उदासीन,—किसी विषय में भी उसे आनन्द नहीं मिलता। परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं रहती (ऐनाक, लाई, ऐसिड-नाई, ऐसिड-पाई, सिपि, फास, बोलनेमें अनिच्छ,क= डिजि, फास, आर्जेण्ट-नाई, सिङ्को, इग्ने, नेजा, स्ट्रेन)। रह रहकर चौंक उठता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है और सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो शय्या शून्यमें उड़ी जा रही है। शय्यामें करवट बदलनेके समय (बायीं, ओर=साइलीसिया), थोड़ा भी माथा घुमानेपर (कैल्के, कैलि-कार्ब) या आँख हिलानेपर (ब्राई) या सर हिलानेपर (ब्राई, कैल्के) और बाईं ओर माथा टेढ़ा करनेपर सरमें चक्कर आता है (कोलो); रोगीको बाध्य होकर अपना माथा एकदम स्थिर रखना पड़ता है, हड्डोंका और जरायु या डिम्बाधार रोगकी वजहसे सरमें चक्कर आना (ऐक्टिया; ऊपरकी ओर देखनेपर माथा घूमा करता है=पल्स, सिलिसिया; नीचेकी ओर देखनेपर=फास, साइजि, सल्फ; चलनेके समय=नेट्र-म्यू, नक्स, फास, पल्स; मानों समूची देह घूम रही हैं=ब्राई, कोना, सिक्लेमेन, पल्स, बेलि; मानो शय्या घूम रही है=कोना; आँख बन्द करनेपर या अन्धकारमें=आर्जेण्ट-नाई, स्ट्रैमो, थिरिडि, बैठे बैठे उठनेपर=ब्राई, फास, सेबाड, सल्फ; माथा झुकानेपर=बेल; शय्यासे उठनेपर=ब्राई, चेलिडो, काक्यु; सीढ़ी चढ़नेके समय =कैल्के; उतरनेके समय=बोरेक्स, फेरम,; सोये रहनेके लिये बाध्य होता है=ब्राई, काक्यु, फास,)। सरमें दर्द,—बेहोश करने वाला, मालूम होता है, मानो ब्रह्मतालुके नीचे कुछ चीज है। सरमें दर्द होनेपर जी मिचलाता है और श्लेष्मामय वमन होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो ब्रह्मतालु आगमें अथवा धूपमें जल रही है। ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों कनपटियाँ आपसमें कसकर बँध गयी हैं। भोजनके बाद यह भाव बढ़ जाता है (ऐट्रोप, जेल्सि, ग्लोन)। माथेके एक पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है, मानो चोट लग गयी है। मस्तिष्कोदक या मस्तिष्कमें जल-सञ्चय (एपिस, ऐपोसिन, कैल्के-फास, हेलिबो, आयोड, साइलीशिया, सल्फ, जिङ्कम) नींद खुलनेपर, भोजनके बाद और निर्मल हवा लगनेसे बढ़ जाता है; दबानेपर सोनेपर और आँख बन्द करनेपर घटता है (सोने पर घटना=कैल्के-फास, हेलिबो)।

आंख ।—आंखमें किसी तरहका प्रदाह न रहनेपर भी रौशनीमें तकलीफ होती है, तेज या बत्तीकी रौशनीमें पढ़ने लिखनेसे बढ़ जाता है ; बहुत अधिक आलोक असहनीय (सोरिन) ; रस-ग्रटीकी वजहसे आंखोंका प्रदाह ; और आंखके सफेद क्षेत्रके प्रदाह रूपमें बाहरके जखम आदि ; सामान्य जखममें भी या खाल उधड़ जानेपर, आंखोंमें रौशनी बिलकुल ही सहन नहीं होती ; दर्द आदि रातमें बढ़ जाता है और सामान्य रौशनीकी एक रेखा भी आंखपर पड़ जानेसे बहुत तकलीफ होने लगती है ; अन्धेरे कमरेमें रहने या दबादेने पर घट जाता है। पेशियोंके पक्षाघातकी वजहसे पलकें आप ही आप बन्द हो जाती हैं (जेल्सि, कास्टि, सिपि,)। सोनेके लिये आंख बन्द करनेपर रोगीको पसीना होना आरम्भ हो जाता है (सिङ्को, आंख बन्द करते ही पसीना सूख जाता है और उत्ताप पैदा हो जाता है=सेम्बु) आंखका सफेद अंश पीला हो जाता है (कैमो, सिङ्को, चेलिडो)। सभी चीजोंका रङ्ग लाल दिखाई देता है (बेल, क्रोकस, हायो, सार्सा, ष्ट्रैम, पीला दिखाई देता है=कैन्थ, डिजि, सैण्टो विविध रङ्गोंका दिखाई देता है=साइक्यू, कैलि-कार्ब, नाइट्रम, ष्ट्रैमो ; हरे रङ्गका दिखाई देता है=डिजि, सिपि, ष्ट्रान ; काला दिखाई देता है=कैम्फ)।

कान ।—तेज सलाई बेधनेकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब, ऐसिड-नाई ; कर्ण-विवरमें टपक=हिप, फास, रास),—खासकर निर्मल हवामें घूमनेपर। कानके छेदसे सड़े कागजकी तरह पीब मिला कानका मैल निकलता है ; कभी कभी खून मिला मैल भी निकलता है (काले रङ्गका=पल्स ; कड़ा=लेके, पल्स सेलिन ; रसदार=साइलिसिया ; फीके सफेद रङ्गका=लेके ; रसकी तरह=जिङ्क-आक्स), बहरापन,—कानका मैल निकाल देनेपर घट जाता है ; फिर मैल जम जानेपर सुननेकी ताकत घट जाती है। दोनो कानोंमें भों-भों सों सों शब्द (बेल, कास्टि, सिङ्को, किनिन-सल्फ, ग्रैफ, लेके, लाई, मार्क, नेट्र-म्यू, नक्स, सिपि, सल्फ) ; शब्द-कातर,—थोड़ी भी आवाज बहुत बड़ी मालूम होती है (ऐको, बेल, ऐसिड-फास ; प्राय; बहरापन—आर्स, कैल्के, हिप, फास)।

नासिका ।—नाकसे पीबका स्राव होता है (हिप, मार्क, आर्जेण्ट-नाई, पेट्रोल, कैलि-आयोड)। बार बार छींक, छींकनेपर अकसर छेदसे खून निकल पड़ता है। (बोवि ; नाक साफ करते समय या जोरसे सांस छोड़ते समय खून का स्राव होता है=आर्जेण्ट, बेराई, सल्फ्यूरिया ; पाखाना जानेके समय=कार्बो-वेज, फास ; गानेके बाद=हिप, निद्राके समय=ब्राई, मार्क)।

मुखमण्डल ।—मुंहका स्नायुशूल,—रातमें होता है ; मुंहके दाहिने पार्श्वमें छेदनेकी तरह दर्द (मुखके बायें पार्श्वमें ऐसा हो दर्द—आंख, कान और माथेतक फैल जाता है=कोलो)। ओंठके कर्कट रोगके साथ (आर्स); ज्वालामय, डंक मारनेकी तरह और मानो तीर विध रहा है, इस तरहका दर्द। दांतके निचले भागमें खींचनकी तरह दर्द—गण्डास्थितक फैल जाता है, वायु सेवनके लिये चलनेके समय और क्षय हुए दांतमें ठण्डी चीजें लगनेपर तकलीफ होती है। कण्ठनालीका संकोचन। गलेका जखम,—ऐसा मालूम होता है मानो एक गुल्मकी तरह पदार्थ पेटसे कण्ठतक उतर रहा है (Globus-Hystericus=गुल्म वायु=इग्ने, ऐसाफिटिडा)।

पाकस्थली ।—खट्टी डकार और पेट या छातीमें जलन होती है (आर्जेण्ट-नाई)। खायी हुई या न पची हुई चीजोंके स्वादकी डकार (ऐसिट-क्रूड, कैल्के, सिङ्को, पल्स, कार्बो-वेज); खट्टी या नमकीन चीजें आदि खानेकी ओर काफी पीनेकी बहुत अधिक स्पृहा। मिचली—प्रतिबार भोजनके बाद (ऐमोन-कार्ब, लैके, मार्क, नक्स, ओलि-ऐन, फास, पल्स, रास, सिपि, साइलि, स्टैन, सल्फ) या सन्ध्याके समय (ऐसेर, कैल्के, साइक्लामिन, केलि-बाई, पल्स, रेनान) श्लेष्मामय वमन (आर्स, बेल, बोरै, कोना, सिङ्को, डिजि, डाल्का, इपिक, मार्क, नक्स, पलस, सेङ्गिरयु, सल्फ, वेरेट)। रह रहकर चिकोटी काटनेकी तरह दर्द (आर्नि, ऐसेट, कैल्के, कैनाब, ग्रैफ, केलि-कार्ब, प्लैट, पल्स, कोलो, नक्स)।

अन्त्राशय ।—उदरमें कतरनेकी तरह दर्द (कोलो, वेरेट)। सुई वेधनेकी तरह दर्द,—उदरसे वक्षके दाहिने पार्श्वतक दर्द फैल जाता और मालूम होता है। दूध पीनेपर उदर फूल उठता है (कार्बो-वेज)। यकृत और यकृतके चारों ओर लगातार दर्द बना रहता है (बेराई, केलिबाई, लाई, सिपि)। पुराने पाण्डु रोगमें लीवरमें दर्द। कोख देश मानो कस जाता है,—मानो जोरसे कसा हुआ है ऐसी खींचन मालूम होती है (ऐको, कैल्के, कैमो, लाई, ऐसिड-म्यू, नक्स, रास-रेड)। पेटमें हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द या आंतोंकी गड़गड़ाहट (ऐको, ऐलो, आर्स, ऐसा ; कार्बो-वेज, कोलो, जेणिट-लुटिया, प्लेटि, लाई, नेट्र-सल्फ); उदरसे ठण्ढी हवा निकलना,—वायु निकलनेके समय मलद्वारमें ठण्डक मालूम होती है।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत,—बार बार वेग होता है,पर पाखाना नहीं होता (ऐनाक, लाईं, नक्स)। एक दिनका नागा देकर कड़ा पाखाना हुआ करता है। सुस्त करनेवाला उदरामय,—मल पतला और गांठ गांठ (लाईं, नक्स); पानीकी तरह अजीर्ण मल (ऐनोट, सिङ्को, फेरम, आइरिस, पोडो)। पाखाना होनेके समय मलद्वारमें गर्मी और जलन मालूम होती है और ठण्ड़ा वायु निकलता है। पाखाना हो चुकनेपर कमजोरी मालूम होती है (नक्स ; फास); कलेजा धड़कता है और शरीर कांपा करता है (सुस्ती= इाम्बिड, वेरैट ; हृद्स्पन्दन=आर्स)।

पेशाब।—पेशाब करनेके समय तकलीफ मालूम होती है; पेशाब होते होते रुक जाता है, कुछ देर बाद फिर निकलना आरम्भ होता है (कास्टि, क्लिमेट, डाल्का, लिडम, थोसी, ऐसिड-फास, सल्फ, थूजा)। वृद्ध मनुष्योंकी सुख शायिक ग्रन्थिके बढ़ जानेकी वजहसे पेशाब करनेके समय बून्द बून्द पेशाब निकला करता है (Dribbling of urine due to hypertrophy of the Prostate in old men.—Dr. Nash कोपेवा); कभी कभी रक्तमिला पेशाब निकला करता है (कैन्थ, नक्स)। पेशाबके समय मूत्रनालीके भीतर कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है। (कैनाब, कैन्थ, कैप्स, डिजि, ऐसिड-फास)।

पुं-जननेन्द्रिय।—आघात या दब जानेके कारण अण्डकोषका फूलना (आर्नि),—कोष लोहेकी तरह कड़ा मालूम होता है। रमणीच्छा बहुत ज्यादा, पर शक्ति बहुत कम रहती है, इन्द्रिय-सेवन या इन्द्रिय सेवनसे परितृप्ति न होनेकी वजहसे बीमारियां। बहुत जल्दी वीर्यस्खलन हो जाता है, यहांतक कि स्त्रीको देखने या स्त्रीके पास जानेसे ही वीर्यपात हो जाता है। पाखाना फिरनेके समय सामान्य उत्तेजनासे ही सुखशायिका ग्रन्थिसे रस निकलने लगता है (इस्कू, ऐल्यू, ऐनाक, इरिजियम ; सेलिन, साइलि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु,—स्राव बहुत थोड़ा या होता ही नहीं; बहुत देरसे आरम्भ होता है, बहुत थोड़ा स्राव होकर दो एक दिनमें बन्द हो जाता है ; ऋतुके समय शरीरपर एक तरहके लाल दाने निकलते हैं और ऋतु समाप्त होते ही वे भी गायब हो जाते हैं (डालका); सर्दी लगने या ठण्डे पानीमें हाथ डुबोनेपर रज होना रुक जाता है (लैक-डिफ्लो, ठण्डे पानीमें पैर डुबोनेपर=नेट्र-म्यूर)। प्रसवके बादका स्राव रुक जाना (सिकेलि)। ऋतुके समय जरायुके भीतर डंक मारनेकी तरह दर्द होता है और सोनेके

समय सरमें चक्कर आता है। जरायु-प्रदेशमें लगातार दर्द और जलन बनी रहती है—मानो उसमें फोड़ा हो गया है। ऋतुके समय आँतें आदि मानो नीचेकी ओर धक्का देती हैं (ऐमोन कार्ब, बेल, बोर, मस्कस, ऐसिड-नाई, कैलि-आई, नक्स-मस, प्लेट, सिपि) और उरु देशमें बहुत खींचन मालूम होती है या तलपेटमें अकड़न होती है (ग्रैफ); दोनों स्तन फूले और दर्द-भरे रहते हैं (कैल्के, कैलि-कार्ब, लैक-कैन)। प्रदर—ऋतुका स्राव ठीक दस दिनके बाद आरम्भ हो जाता है (बोर, वैवि)—स्राव कषाय (Acrid) और जखम पैदा करनेवाला होता है। कभी रक्ताक्त या लाल और कभी कभी सफेद रंगका होता है। स्राव बहुत ज्यादा, गाढ़ा और बीच बीचमें रुक जाता है, स्राव लगनेकी वजहसे अपत्य-पथमें जलन हुआ करती है (क्रियो, पलस)। जरायु-भ्रंश। बन्ध्यत्वके साथ ऋतुस्तम्भ। स्तनमें कर्कट (Mammary Cancer)—स्तनके स्थान सब बहुत कड़े मालूम होते हैं और उनमें फाड़नेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है और उसकी भीतरकी ग्रन्थि सबमें बहुत दर्द होता है, उनको छुआ नहीं जा सकता (ऐस्टि-रियुब) जरायुका कर्कटार्बुद (Scirrhous Tumor—स्तनका कर्कटार्बुद हो या जरायुका ही हो वह यदि दब जाने या चोटकी वजहसे हो तो और विशेषकर यदि यह लोहेकी तरह कड़ा हो, तो कोनायमसे अवश्य ही फायदा होगा,—स्तन लोहेकी तरह कड़ा—कोना, साइलि, ऐस्टि-रियूब, कैल्के,—कार्बो-ऐनिम; फाइटो,—स्तनमें तेज अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द = ऐस्टि-रियुब—डाक्टर नैश)।

श्वास-यंत्र।—रातमें सूखी और शरीरको हिला देनेवाली खाँसी; गर्भावस्थामें खाँसी (कास्टिकम, कैलि-ब्रोम),—वृद्धि = रातमें सोनेपर (आर्स, हायो, पेट्रोल, ड्रुपि, कैलि-बाई, ऐसिड-नाई; पेरिस, फास, पलस, सिपि, सिलि, सैबाड, टेरिब; चित्त होकर सोनेपर = नक्स, फास; माथा नीचा कर सोनेपर = ऐमोन-म्यूर, बाईं करवट सोनेपर = ड्रुपिक, पेरिस; दाहिनी करवट सोनेपर = ऐमोन-म्यूर, स्टैन); बोलने (ऐनाक, कास्टि, लैके, मार्क स्टैन, बेराई, हिप, ऐसिड-म्यूर, नेट्र-म्यूर) या हँसनेपर (सिङ्को, ड्रोस, फास, स्टैन,—गर्भावस्थामें वायु नलीमें पिट् पिट् कर खाँसी = नक्स-मस, सेबाई; खाँसीकी वजह से गर्भस्रावकी आशंका = लैके)। दौड़ते दौड़ते हाँफ उठता है (ऐगार, आर्स, बेल, कार्बो-वेज, लिड, लाई, नेट्र-सल्फ, नक्स, फिसेन, पलस, रास, सेलिन, सिपि,

स्ट्रेन, स्ट्रेन, तेज चलनेपर हाँफ उठता है—ऐङ्गस, अरम, कार्ब्रि, प्लस) खाँसी,—रह रहकर खाँसीका प्रकोप पैदा हो जाता है,—वायुनलीके भीतर एक छोटेसे स्थानमें शुष्कताकी वजहसे (कण्ठनलीमें सूखेपनकी वजहसे= ऐक्ट),—छाती और कण्ठमें पिट पिट करता है (आयोड) और बहुत-बार खाँसने बाद तब कहीं श्लेष्मा निकलता है (ब्राई, सिङ्को, किनिन-सल्फ, युफ्रे केलि-कार्ब, लैके, बोर, सोबि, सिना, ड्रस्रे, मैग-कार्ब, सिपि, सेनेगा, स्ट्रेन, जिङ्कम)। पानी आदि पीने और मलत्यागके बाद हृत्स्पन्दन (आर्स)।

प्रत्यङ्ग आदि।— कलाईमें कड़कड़ाहट होती है (कोहनी=केल्मिया; —हिलानेपर कलाईमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह सन्धि-भ्रष्ट हो गयी है=ब्राई, रियुटा) चलनेके समय जानु-सन्धि मटमट करती है (काक्यु, वाईं ओरकी वंक्षण-सन्धि मटमट करती है=काक्यू)। पैरका तलवा ठण्ढा मालूम होता है, जानुदेशमें बातसे पैदा हुआ दर्द—मानो कुछ छेद रहा है या ऐसा दर्द मानो कुछ सट गया है—कुछ देरतक बैठनेके बाद पहले पहल चलने पर दर्द बढ़ा हुआ मालूम होता है, और मनमें ऐसा अनुभव होता है मानो पेशियोंके अगले भाग सब बहुत छोटे हो गये हैं (ऐमोन-म्यू, ऐमोन-कार्ब, कार्ब्रि, साइमिक्स)।

त्वचा।—चोट लगने या दब जानेके बाद अण्डमें खींचन होती है और उनमें कनकनी पैदा हो जाती है। उनमें तेज शलाका बेधनेकी तरह तकलीफ होती है। कैन्सर हो जाता है, ऐसे धातुवाले व्यक्तियोंको गाँठे सब फूल जाती हैं और लोहेकी तरह कड़ी हो जाती हैं। स्तन ग्रन्थि और अण्डकोष दोनों ही लोहेकी तरह कड़े हो जाते हैं (ऐस्टि-रियुब)। बगलको ग्रन्थियों में दर्द हो जाता है और रोगवाले पार्श्वका बाहु सुन्न हो जाता है, समूचे देहकी त्वचाकी आभा नीली हो जाती है (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कैम्फो, डिजि, ऐसिड-हाइड्रो सायनिक; लैके, नक्स, ओपि, प्लम्ब) काले रङ्गका जखम,—रक्तभरा, सड़ी गन्ध भरा रस स्राव हुआ करता है (आर्स, नीला रङ्ग =आर्स, ऐसाफि, अरम, लैके, मार्क)। रस भरे दादकी तरह उद्भेद (कैल्के डाल्का, थैफ)। अर्बुदमें शूल बेधनेकी तरह दर्द,—रातमें तकलीफ बढ़ जाती है। क्या दिन और क्या रात—सोते ही पसीना हो जाता है—शरीर तर हो जाता है (चिंकौ, जागनेवाली अवस्थामें लगातार पसीना बहा करता है

और सोते ही पसीना सूख जाता है)। सेम्बुकस = बहुत ज्यादा व्यायाम करनेके कारण उत्पन्न आमवात।

ज्वर ।—शीत—बहुत जाड़ा मालूम होता है और शीतसे कातर रहता है,—सवेरे और तीसरे पहर ३ और ५ बजेके भीतर; रोगी हमेशा उत्तापकी आकांक्षा किया करता है—खासकर धूपकी गर्मीकी (ऐनाक); सवेरे भीतरी जाड़ा और तीसरे पहर कम्पन, उत्ताप,—रोगीके अन्तरमें और बाहर बहुत उत्ताप मालूम होता है। पसीना—लगातार—दिन रात,—रोगी सोते ही या आँख बन्द करते ही पसीनेमें नहा जाता है,—पसीना बदबूदार (बैराइ, कार्बो-ऐन, डालका, ग्रेफ लैके, नाइ, माकु रियलिस, मार्क, ऐसिड-नाइ, नक्स, रास, सिपि, साइलि, प्याजकी गन्ध पसीनेमें = बोवि, लैके, लाइ, गन्धककी गन्ध-मिला = फास; पेशाबकी गन्ध = बार्वा, कैन्थ, कोलो, ऐसिड-नाइ; घोड़ेके पेशाबकी तरह = ऐसिड-नाइ)।

वृद्धि ।—रातमें सोनेके समय, शय्यामें करवट बदलने या शय्यासे उठनेके समय; अधिक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे; इन्द्रिय परितृप्तिके अभावसे; विवाह न करनेके कारण और आर्त्तव-स्रावके पहले और समय।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—स्तन फूलनेके सम्बन्धमें = ऐस्टि रियुव, साइलिसिया; कैल्के-आर्सेलेट; ऋतु-स्रावकी कमी = ग्रेफ; चोट आदिकी वजहसे सूजनके सम्बन्धमें = आर्नि, रास; गांठोंका फूलना = लैक, सोरिन; प्रसवके बाद का स्राव रोध होना = नक्स, हायो, पल्स, सिकेलि; उर्द्धगामी या क्रमशः बढ़नेवाला पक्षाघात = ऐसिड-हाइड्रो, मेंगे; निम्न-गामी = मार्क; पाखाना होनेके बाद सुस्ती = नक्स, फास।

प्रतिविष या दोषघ्न ।—(Antidotes) कांफिया, डालका, ऐसिड नाइ, इत्यादि।

शक्ति ।—मूल अर्कसे सहस्र शततमिक क्रम। इसके उच्च क्रमसे जितना फायदा होता है, निम्नसे उतना नहीं होता।

कानवेलेरिया मेजेलिस।

(CONVALLARIA MAJALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहके पहाड़ी कमलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है; अतिसार; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ; गर्भिणीका वमन; अपत्य पथमें खुजली इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रूस देशके चिकित्सक बहुत दिनोंसे हृत्पिण्डकी बीमारीमें इस दवाका व्यवहार करते आये हैं। डा० नैशने जरायु प्रदेशमें अत्यन्त दर्द और सहानुभूतिक हृत्स्पन्दनमें इसके प्रयोगसे विशेष फल पाया है। हृत्पिण्डके शोथ-रोगमें और जरायु-प्रदेशमें दर्द अधिक रहनेपर वे कानवेलेरियाका व्यवहार कर सफल हुए हैं। उदरमें मानो बच्चेकी बँधी हुई मुट्ठीकी तरह कोई चीज धक्का दे रही है। (एरण्डा-मरिटेनिका, कैल्के-फास, केनाबिस सेटाइवा, क्रोकस, सेबाइना, सलफर और थूजाकी तरह)। कानवेलेरिया का एक प्रकृतिगत लक्षण यह है कि "चित्त होकर सोनेपर" ये लक्षण प्रकाशित होते हैं—यह कानवेलेरियाका एक विशेषत्व है। हृत्पिण्डके गह्वरमें जब अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे उसकी प्राचीर फैल जाती है पर उसके उपयोगी घनत्व नहीं प्राप्त होता और शिरामण्डलीमें शोणित फैलनेकी तैयारी हो जाती है, उस समय कानवेलेरियासे बहुत अधिक लाभ होता है।

लक्षणावली।

मन।—विपन्न चित्त। पढ़नेके समय मन दूसरी ओर खिंच जाता है। चिन्ताशक्ति बहुत थोड़ी रहती है (एसिड-नाइ, इथ्यू, ऐपिस, क्लिमेट, कैलि-नाइ, मेग-फास, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, नक्स-मस, ओली-ऐन, ओन्समोड, साइलि, सल्फ, आक्साइड्रीप, व्यूबर) सामान्य कारणसे ही दुःख प्रकट करता है। कोई बात पूछनेपर रंज होता है (फीलो)

मस्तक ।—सरमें धीमा धीमा दर्द,—माथेके ब्रह्मतालुमें भार मालूम होता है ; सीढ़ीपर चढ़ने या खांसकर कफ निकाल देते समय दर्द बढ़ जाता है, और वायु सेवनसे घटता है । ज्वर मिला रहनेपर सरमें दर्द,—एकाएक किसी तरह देह हिल जानेपर बढ़ जाता है और विश्रामसे घटता है। चलनेके बाद घरमें प्रवेश करनेपर घरके चारों ओर धूसर वर्णके बिन्दु सब उड़ते हुए दिखाई देते हैं।

मुखमण्डल ।—मुखमण्डल और ओंठमें दर्द ; ओंठ और नाकमें घमौरीकी तरह जल भरी गुटिकाएं निकल आती हैं और जीभके अगले भागमें लाल बिन्दु सब दिखाई देते हैं, । जीभ बहुत लाल और दर्द भरी मालूम होती है,—मानो कच्चे मांसकी तरह दिखाई देती है। मुंहका स्वाद तांबेके जङ्गकी तरह होता है (ऐगार, ऐसार, काक्यु, क्यूप्रम-मेट्र-स्यू, रास)। पानी बहुत कड़वा मालूम होता है (सिङ्को, पल्स)। सवेरे दांतपर दांत कड़मड़ाता है। सांस लेनेके समय कण्ठनालीका पिछला अंश सूखा मालूम होता है।

पाकाशय और अन्त्राशय ।—सवेरेके समय मिचली और वमन। आंतोंमें बहुत तेज शूलका दर्द,—यन्त्रणा एकाएक पैदा हो जाती है और धीरे धीरे घटती है (पल्स, एकाएक पैदा हो जाती है और गायब हो जाती है= बेल, धीरे धीरे आती है और धीरे धीरे जाती है=स्टेन)। तलपेटमें लगातार धीमा दर्द बना रहता है और दर्द मालूम होता है ;—खांसनेपर अधिक दर्द मालूम होता है। कमरका कपड़ा बहुत ही कसा मालूम होता है (ऐमोन-म्यूर आर्स, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, हिप, क्रियो, लैके, लाई, नक्स, स्पञ्जि, सल्फ), प्रसव वेदनाकी तरह दर्द मालूम होता है। उदरके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो बच्चेकी मुट्ठीकी तरह कुछ घूमता फिरता है (एरण्डी, मेरि, कैल्कि-फास, कैनाब-सैट, क्रोकस, सैबा, सल्फ, थूजा)। उदरमें कुल कुल शब्द और दीर्घ-निश्वास ग्रहण करनेपर दर्द मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—दाहिनी कोखमें प्रसव वेदना की तरह दर्द, मानो जरायु नीचे लटककर पीठेको झुक रहा है और मलान्त्र तथा मलद्वारपर दबाव डाल रहा है। असह्य वेदना और हृदयका धड़कना। कटि अस्थि और मेरुदण्डके नीचे सन्धि स्थलके अन्तिम भागमें बहुत दर्द, उरुमें होकर दर्द पैर तक फैल जाता है। पेशाबके द्वार और अपत्य पथमें खुजलाहट।

हृत्पिण्ड ।—व्यायाम करनेके समय छातीके भीतर धड़फड़ाहट होती है और उसके बाद मुंह लाल हो उठता है,—ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डकी गति रुक गयी है; कुछ देर बाद फिर उसकी गति आरम्भ हो जाती है (भ्रम);—रोगीको उसी समय बहुत सुस्ती मालूम होती है हृत्पिण्डका अन्तर्वेष्टनी प्रदाह और शायितावस्थामें बहुत श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है। नाड़ी पुष्ट नमनीय रहती है और उसकी गति सविराम रहती है। ये सभी लक्षण सोनेपर घट जाते हैं।

पीठ और प्रत्यङ्गादि ।—पीठमें ऐसा दर्द लगातार बना रहता है, मानो चोट लगी है, हाथका कांपना, कलाई और गुल्फ-सन्धिमें लगातार दर्द।

ज्वर ।—शीत, उत्ताप और पसीना—एक दिन पूर्वाह्नमें और दूसरे दिन अपराह्नमें पैदा होता है। इससे पैदा हुए सविराम ज्वरमें उत्तापकी अधिकता पैदा हो जाया करती है, कारण शीतावस्था और पसीनेकी अवस्था प्रायः अस्पष्ट रहती है। बीमार के समय सरमें दर्द और पीठ तथा दोनों पैरोंमें लगातार दर्द बना रहता है।

निद्रा ।—अधिकांश लक्षणोंके साथ औंघाई मिली रहती है (नक्स-मस)।

वृद्धि ।—गर्म घरमें।

घटना ।—घरके बाहरकी हवा लगने पर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐडोनिस, कैटिगस, डिजि, लिलियम-टाइग्रीनम।

शक्ति ।—२ रा दशमिक क्रम। हृत्पिण्डकी अवसन्नता होनेकी सम्भावनामें मूल अर्क ५। ७ बून्द तक व्यवहार किया जाता है।

कानवलवूलस आर्वेन्सिस।

(CONVALVULUS ARVENSIS)

दूसरा नाम।—कानवलवूलस ; ब्राइड-वीड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता।—भोजनके बाद डकार, शूल, उदरामय वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कानवलवूलस डुआर्टिनस।

(CONVALVULUS DUARTINUS)

दूसरा नाम।—मार्निङ्ग ग्लोरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूलसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बात; सामनेकी ओर झुकनेपर कमर के बाएँ पार्श्वकी पेशियोंमें दर्द ; पेटमें बहुत वायु होना ; मूलग्रन्थिका शूल ; बाहु मूलमें दर्द ; कमरमें दर्द ; आँखोंका प्रदाह ; सर दर्द ; सरमें चक्कर आना और सवेरेके वक्त सब लक्षणोंका बढ़ना और ठण्डे पानीसे नहानेपर घटना लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—६ और ३० शततमिक।

कोपेवा।

(COPAIVA OFFICINALIS)

दूसरा नाम।—कबाब चीनी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सुरासारमें इसके बिना पके सूखे फलका सारांश या धूनाकी तरह पदार्थसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहासे ; मलद्वारमें खुजली ; मूत्रस्थलीकी उग्रता ; श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दी ; खांसी ; मूत्राधारका प्रदाह ; रक्तामाशय ; नासूर ; पाकाशयका प्रदाह ; प्रमेह ; अर्श ; शाम ; नाकसे खून गिरना ; मूत्रनालीका प्रदाह ; आमवात ; योनिद्वारका प्रदाह।

उपयोगिता और आभास।—प्रमेह,(सूजाक) रोगकी यह एक बहुत ही प्राचीन दवा है। जननेन्द्रिय, मूत्रनाली और वायुनली-भुजकी श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर ही इसकी क्रिया विशेष रूपसे प्रकट होती है। बड़ोंको होनेवाली मूत्रस्थलीकी बीमारीमें इससे ज्यादा फायदा होता है। मूत्रस्थलीके ग्रीवा मुखमें और मूत्रनालीमें जलन, कबेले गुणके दूधकी तरह स्राव और मूत्रनालीके मुखका प्रदाह और सूजन वगैरह, कोपेवाकी मूत्र यंत्रपर क्रियाके फल हैं। पुराने वायुनली भुज प्रदाहसे पैदा हुई खांसीमें बहुत ज्यादा, कुछ हरे रङ्गका और बहुत बदबूदार कफ निकलनेपर कोपेवासे बहुत फायदा होता दिखाई देता है। चमड़ेके ऊपर भी इसकी क्रिया प्रकट होती है। और इसके द्वारा एक तरहका आमवात उत्पन्न हो जाया करता है। मलद्वारकी खुजली ;—विशेषकर उसके साथ ही अर्श, इसका अन्यतम लक्षण है। आगे लिखे, कई इसके निर्णायक लक्षण हैं:—(१) वायुनलीकी ज्वाला पैदा करने वाली खांसी और ज्यादा परिमाणमें पीबकी तरह कफ निकलना (२) खांसी और स्वरनालीमें सूखापन और त्वचा चय होनेकी तरह मालूम होना ; रोगीका स्वर कर्कश हो जाता है और स्वरभङ्ग पैदा हो जाता है। सवेरे बढ़ना। (३) मूत्रनली और मूत्रस्थलीके ग्रीवादेशमें जलन मालूम होती है ; बार बार पेशाब का वेग होता है, यहांतक कि अभी एक बार पेशाब कर आया है, पर फिर

पेशाब लग आता है : पेशाब करनेमें तकलीफ होती है और बूंद बूंद कर पेशाब होता है ; पेशाब गदला और कड़वा होता है। (४) मूत्रनलीका प्रदाह ; मूत्रमार्गके द्वारपर मानो चोट लग गयी है—इस तरहका दर्द होता है ; यह दर्द पेशाब करनेके पहले और बाद होता है ; पेशाबके समय जलन होती है ; पेशाब पीला और पीबकी तरह होता है। पेशाबमें एक तरहके फूलकी गन्ध हो जाती है। (५) आमवात—गर्मी मालूम होना और कुटकुटी पैदा हो जाना।

लक्षणावली।

मस्तक।—माथेके पश्चात भागमें दर्द—पीछेकी ओर माथा लटका कर कलर द्वारा रोगवाली जगह दबा रखनेसे और धीरे धीरे दबाने पर आराम मालूम होता है ; वृद्धि—सन्ध्यामें और रातके समय ; तकियेपर माथा रहनेसे दर्द असह्य मालूम होता है ; सवेरे ठण्डे पानीसे माथा धोनेपर एकाएक कनपटीमें सलाई वेधनेकी तरह दर्द होता है। केश झड़ जाते हैं। (ऐसिड-फ्लू, बैराइ, कैल्के, कोना, फेर, ग्रैफ, हिप, इग्ने, क्रियो, लैके, लाई, मार्क, नेट्र-मयू, ऐ-नाइ, फास, प्लम्ब, सिकेलि, सिपि)। मूर्द्धादेशके केशोंसे ढके अंशको एकदम छुआ नहीं जाता (कैल्के-कास्टि, चायना, ऐल्यू, मार्क, फाइटो) तेज आवाज बहुत कष्टदायक मालूम होती है। रातमें नासारन्ध्रसे, बहुत ज्यादा परिमाणमें सड़ी गन्धभरा गाढ़ा श्लेष्मा गलेमें प्रवेश कर जाता है।

पाकस्थली।—सन्ध्याके बाद, सोने पर भूख लग आती है। सभी खानेकी चीजें नमकीन मालूम होती हैं (आर्स, कार्बो-वेज, क्यूप्रम, आयोड, कैलि-कार्ब, मार्क, मार्क-कोर, ब्रोमम, नक्स-मस, ऐसिट-टार्ट, जिङ्कम)। श्लेष्माके साथ खाये हुए पदार्थ अनपची अवस्थामें मुंहसे निकल जाते हैं। भोजनके बाद ऊपरी पेटमें भार मालूम होता है और वह फूलता है (बोर, कार्बो-वेज, केमो, सिङ्को, डाल्का, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, लैके, लाई, मार्क, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, फास, ऐसिड-फास, रास, सिपि, साइलि)। ऋतुके बाद या आमवात अच्छा हो जानेपर पेटकी बीमारी पैदा हो जाती है।

अन्त्राशय आदि।—प्लीहा प्रदेशमें दबावकी तरह दर्द, यह दर्द कभी कभी टपक जैसे दर्दमें परिणत हो जाता है। उदरमें जलन मालूम होना, तलपेटमें आवाज या गड़गड़ाहट या कलकल गड़गड़ शब्द। कब्जियत,—बकरीकी मेंगनीकी तरह छोटा छोटा गांठमय मल,

हाइड्रस), अन्वशूल और शीत या जाड़ा अच्छा न मालूम होना। मलद्वारमें असहनीय जलन मालूम होना : अर्शको वजहसे मलद्वारकी खुजलाहट। (ऐसिड-म्यूर)।

पेशाब।—बार बार पेशाबका वेग होता है, पर पेशाब नहीं होता; मूत्रनालीके संकोचनकी वजहसे पेशाब बूंद बूंद निकलता है (केनाब, कैन्थ, क्लिमेट, कोना, डालका, युफोर्ब, नक्स, पल्स, स्टेफ, कैप्स, कास्टि, केलि-कार्ब, टेरिब)। पेशाबके पहले और बाद मूत्रनालोमें सुरसुरी पैदा हो जाती है। दर्द होता है और इस ढङ्गकी जलन मालूम होती है, मानो आग छू गयी है, (कैनाब, केप्स, कैन्थ)। खूनका पेशाब (टेरिब, किनिन-सल्फ, हैमा); पेशाब फेन-भरा, मलिन, पीली आभा लिये और उसमें वायोलेट फूलकी तरह गन्ध आती है (लेक्टियुका, नक्स-मस, टेरिब)। प्रमेह,—पीले रङ्गका पीवकी तरह स्राव—नेट्र-सल्फ)। मूत्राशय, मलान्त्र और मलद्वारमें दर्दके साथ पेशाब रुक जाना।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोष फूलता और कड़ा हो जाता है। मूत्राधारकी सुखशायिका ग्रन्थि बहुत कड़ी हो जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मूत्रनालीका मुंह, योनिका वहिर्देश और मलद्वारमें खुजली हो जाती है। दर्दके साथ रजःस्राव और दूधकी तरह, कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव होता है। कभी कभी योनिसे खून मिला पीवकी तरह भी स्राव हुआ करता है।

श्वास-यंत्र।—वायुनलीमें सूखापनके साथ सूखी और तकलीफ देनेवाली खांसी ; बहुत ज्यादा परिमाणमें धुएँके रंगका पीवकी तरह और बदबूदार कफ निकलता है ; (लाइ, फास, स्टेन, सल्फ)। खून मिला कफ, वायुनली मूत्रकी सर्दी,—बहुत ज्यादा परिमाणमें हरे रङ्गका श्लेष्मा निकलता है।

त्वचा।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें बड़े लाल लाल दाग, इसके साथ ही मलका कड़ापन और सामान्य बोखार। विसर्पकी तरह प्रदाह,—विशेषकर उदरके चारों ओर। गाढ़ा या चमकीले लाल रङ्गका मसूरकी दालके आकारका ऊंचा, परस्पर मिल जानेवाला गुच्छेकी तरह उद्भेद, उसमें असह्य खुजली होती है। बच्चोंका पुराना आमवात रोग।

ज्वर ।—ऐकाहिक ज्वर ;—पैरके तलवेके ऊपर दर्दके साथ दो पहरके पहले जाड़ा लगना ; तीसरे पहर सारे शरीरमें उत्ताप और प्यास, रोगी ठण्डा पानी पीना चाहता है ; ज्वरकी शीतावस्थामें पैरके तलवेके मध्य भागमें चलनेके समय बहुत दर्द होता है ; पसीनेमें बहुत तेज गन्ध रहती है ; रातमें खट्टी गन्ध मिला और सवेरे बिना गन्धवाला पसीना निकलता है ।

सम्बन्ध —सदृश ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—बेल, मार्क सल्फ, कैम्फो, केल्केरिया । सदृश गुणवाली दवाएं—कैनाब, कैन्थ, क्यूबेन, इरिजि, वारोस्मा, कैलि-आयोड, सिपि, सेनेसियो । कैन्थरिसकी अपेक्षा इसकी क्रिया हलकी होती हैं । सिपियासे इसका पार्थक्य नहीं है ।

शक्ति ।—प्रथम दशमिकसे ६ ठा दशमिक क्रम । उच्चतर क्रम भी विशेष फलदायक होता है ।

कोरालियम रूब्रम ।
(CORALLIUM RUBRUM)

दूसरा नाम ।—लाल प्रवाल ; मूंगा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इससे पहले विचूर्ण, इसके बाद तरलक्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं । दमा ; सर्दी ; उपदंश, खांसी ; उद्भेद ; ग्रन्थियोंका प्रदाह ; मूर्च्छा-वायु ; छोटी माता ; विचर्चिका ; बैंगनी रङ्गकी खुजली ; हूप खांसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—कच्छु-विष (Psora) और उपदंश विष जिनके शरीरमें मिले हुए हैं, उनके लिये उपरोक्त औषध बहुत ही उपयोगी है । स्नायु प्रधानता और स्नायुके विकारकी वजहसे खांसीपर इसकी प्रधान क्रिया है । इसके द्वारा नाना प्रकारके चर्म रोग पैदा होते हैं और जितने दाने निकलते हैं, वे प्रायः लाल मूंगेके रंगवाले निकलते हैं । उपदंश विषके कारण तलहथीमें जो सब दाने या

पहले लाल, इसके बाद गहरे लाल और अन्तमें तांबेके रंगके हो जाते हैं। इस लिये यह उन सब उपदंशसे पैदा हुए जखमोंमें भी उपयोगी हैं जिनका रङ्ग तांबेकी तरह लाल होता है। इसकी खांसी हूप खांसीका आकार धारण कर लेती है। खांसी होनेके पहले श्वास कष्ट और इसके बाद बहुत सुस्ती पैदा हो जाती हैं,—रोगी निर्जीव सा हो पड़ता है। इसके लिये उपयोगी खांसीका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह भी है कि मिनिट मिनिटपर खांसी आती है, अर्थात दिनभर खुक खुक कर खांसी लगातार आया करती है। कभी कभी इस खांसीका प्रकोप इस तरह लगातार पैदा होता है, कि बच्चेको सांस लेने या छोड़नेका अवसर नहीं मिलता—उसका चेहरा बैंगनी या काला हो जाता है। भिषक प्रवर गार्नसीने उससे पैदा हुए जखमोंका लक्षण इस ढंगसे वर्णन किया है:—"लिङ्गमुण्डमें, उसको ढकनेवाली त्वचाके नीचे लाल चिपटे जखम पैदा हो जाते हैं और उससे लगातार पीले रङ्गका स्राव पैदा हो जाता है" माथेमें शून्य भाव, माथा बहुत बड़ा, ललाट देशमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह समतल हो गया है, इत्यादि कोरेलियम रुब्रमके कतिपय सर्वश्रेष्ठ निर्णायक लक्षण हैं। माथा और वायुपथ आदिमें मानो ठण्ढी हवा प्रवाहित हो रही है। शरीर खुला रहनेपर बहुत जाड़ा मालूम होना और इसकी विपरीत अवस्थामें अर्थात ढके रहनेपर, बहुत गर्मी मालम होना वगेरह लक्षण भी इसके प्रकृतिगत लक्षणमें गिने जाते हैं।

लक्षणावली।

मस्तक।—माथा बहुत बड़ा मालूम होता है, मानो माथेमें ठण्ढी हवा प्रवाहित हो रही है। सरमें दर्द—भयानक दर्द—मानो पार्श्ववाले अस्थि-फलक सब अलग हो जायँगे। मानो मस्तिष्क और समस्त ललाट बेधकर बाहर निकल जायगा ; माथा झुकानेपर यन्त्रणा बढ़ जाती है। (ब्राई, कैम्फो, कोलो, साइक्यूटा, इग्ने, लेके, नक्स, प्लैट, पल्स, रास, फाइटो, रियूम, साइलिशिया स्पाई, स्टेफ)। सिर्फ शरीर खोल देनेपर ही कुछ देरतक घटा रहता है, इसी समय शरीर आगकी तरह गर्म हो जाता है)। ललाट देशमें दबावकी तरह दर्द,—रोगिनी आंख नहीं खोल सकती (ब्राई, चायना, जेलिस्यिना), निर्मल हवा लगने पर घटता है,ऐसा मालूम होता है, मानो ललाट समतल या चिपटा होता जा रहा है

ज्वर ।—ऐकाहिक ज्वर ;—पैरके तलवेके ऊपर दर्दके साथ दो पहरके पहले जाड़ा लगना ; तीसरे पहर सारे शरीरमें उत्ताप और प्यास, रोगी ठण्ढा पानी पीना चाहता है ; ज्वरकी शीतावस्थामें पैरके तलवेके मध्य भागमें चलनेके समय बहुत दर्द होता है ; पसीनेमें बहुत तेज गन्ध रहती है ; रातमें खट्टी गन्ध मिला और सवेरे बिना गन्धवाला पसीना निकलता है ।

सम्बन्ध —सदृश ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—वेल, मार्क सल्फ, कैम्फो, कैल्केरिया । सदृश गुणवाली दवाएं—कैनाब, कैन्थ, क्यूबेन, इरिजि, वारोस्मा, कैलि-आयोड, सिपि, सेनेसियो । कैन्थरिसकी अपेक्षा इसकी क्रिया हलकी होती हैं । सिपियासे इसका पार्थक्य नहीं है ।

शक्ति ।—प्रथम दशमिकसे ६ ठा दशमिक क्रम । उच्चतर क्रम भी विशेष फलदायक होता है ।

कोरालियम रूब्रम ।

(CORALLIUM RUBRUM)

दूसरा नाम ।—लाल प्रवाल ; मूंगा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इससे पहले विचूर्ण, इसके बाद तरलक्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं । दमा ; सर्दी ; उपदंश, खांसी ; उद्भेद ; ग्रन्थियोंका प्रदाह ; मूर्च्छा-वायु ; छोटी माता ; विचर्चिका ; बैंगनी रङ्गकी खुजली ; हूप खांसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—कच्छु-विष (Psora) और उपदंश विष जिनके शरीरमें मिले हुए हैं, उनके लिये उपरोक्त औषध बहुत ही उपयोगी है । स्नायु प्रधानता और स्नायुके विकारकी वजहसे खांसीपर इसकी प्रधान क्रिया है । इसके द्वारा नाना प्रकारके चर्म रोग पैदा होते हैं और जितने दाने निकलते हैं, वे प्रायः लाल मूंगेके रंगवाले निकलते हैं । उपदंश विषके कारण तलहथीमें जो सब दाने या चकत्ते निकलते हैं, वे

पु' जननेन्द्रिय ।—जननेन्द्रिय आदिके स्थानपर बहुत ज्यादा पसी निकलता है (कैलेड, मार्क, फैगोपाईं, सिपि, सल्फ, थूजा)। अप्रकृत नकली प्रमेह,—हरे पीले रङ्गका बदबूदार स्राव। उपदंशकी वजहसे जखम लिङ्गमुण्डपर और मेढ़ त्वचाके नीचे लाल (लाल मूंगेके रङ्गका) चिपटा जख पैदा हो जाता है और इस जखमसे बराबर पीले रङ्गका रस निकला करता जखमके छूनेपर दर्द मालूम होता है, निद्रावस्थामें वीर्यस्खलन और कामेन्द्रि की शिथिलता।

त्वचा ।—तलहत्थी और अँगुलीमें (उपदंश विषकी वजहसे) जो चिपटे जखम पैदा हो जाते हैं, उनका रङ्ग पहले लाल प्रवालकी तरह, इस बाद गहरा लाल और अन्तमें तांबेका रङ्ग हो जाता है, शरीरके ऊपर भी ला और चिपटे दाने निकल आते हैं।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक (Complementary)=सल्फर। यह मर्क का प्रतिविष है।

सदृश या तुलनीय ।—बेल, कार्लि, ककास-कौक, सिष्टस-कै हाइड्रोफोब, मिफाइट, डाइफोलियम, प्रैंट, ड्रोसेरा, इपिक।

शक्ति ।—२ रे दशमिक क्रमसे २०० शततमिक क्रमतक साधारणत व्यवहृत हुआ करता है।

कोरियारिया रस्किफोलिया ।

(CORIARIA RUSCIFOLIA)

दूसरा नाम ।—टूटू ; टूटू बेरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फलसे विचूर्ण या अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—अलकोहलकी भांति इसमें भी नशा लानेकी शक्ति है। कम्प, प्रलाप ; ऐकोन्माद ; स्मरणशक्तिका लोप हो जाना और वमनके लक्षणमें इससे लाभ होता है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

आंख।—आंख लाल और उसमें धूलके कण गिर गये हैं, इस तरहकी करकराहट होती है (ऐल्यू, आर्स, ब्राई, कोस, कास्टि, सिना, सुफ्रे, इग्ने, लेके), वृद्धि—सन्ध्याके समय। आंख बन्द करनेपर उनमें गर्मी मालूम होती है,—ऐसा मालूम होता है मानो आंखें पानीमें तैर रही हैं, बत्तीकी रोशनीमें आंखोंमें जलन होती है।

नाक।—सूखी सर्दी ; नाक रुकी और जखम भरी। नाकसे खूनका स्राव, एक बार एक नाकसे स्राव होता है,—रातमें स्राव (बेल, कोल्का, कार्बो-वेज, ग्रेफ, केलि-क्लो, मैग-सल्फ, रास, वेरेट,—निद्रितावस्थामें-ब्राई, मार्क) नाकके पिछले छेदसे गलेमें लगातार श्लेष्मा गिर कर रोगीमें बार बार खांसी पैदा कर देता है या कफ निकाला करता है।

मुखमण्डल और मुखविवर।—मुंहमें उत्ताप मालूम होना,—माथा झुकानेपर बढ़ जाता है (भोजनके बाद=पेट्रोल, ; मानसिक परिश्रम करने पर=ऐमोन कार्ब ; शराब पीनेपर=सेनाड)। हनुके नीचेकी ग्रन्थियाँ सब दर्द-भरी और फूली रहती हैं,—कोई पदार्थ निगलनेके समय या सामनेको ओर माथा झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है। खानेके पदार्थ स्वादहीन मालूम होते हैं (कोलचि, केलि-बाई, स्ट्रैमोन),—करातके चूरकी तरह स्वाद मालम होता है। बियर नामका शराब या तीती शराब मीठी लगती है (ऐसिड-म्यूर पल्स ; खाद्य पदार्थ मीठे मालूम होते हैं,=ऐसिड-म्यूर, पल्स, स्क्विला ; रोटी मीठी मालूम होती है=मार्क,पल्स; मक्खन मीठा=पल्स, स्क्विला; दूध मीठा=पल्स ; खानेके पदार्थ पानीकी तरह=क्यूप्रम)। रोटी सूखी घासकी तरह मालूम होती है। प्यास बहुत तेज (ऐको, ऐनाक, आर्स, आरम, बेल, ब्राई, कोल्का, कार्बो-वेज, कैस्टो, कैमो, डालका, लोरो, लाई, मार्क, प्लम्ब, स्ट्रैमो, वेरेट) भोजनके बाद कितना ही पानी क्यों न पीता हो उसकी तृप्ति नहीं होती=केक्टोरियम)।

श्वास यन्त्र।—सांस लेनेके समय वायुनलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो ठण्डी हवा प्रवेश कर रही है (सिस्टस-कैम, हाइड्रोफोब)। प्रचण्ड आक्षेपिक खांसी ;—दिन रात खुस खुस आया करती है, प्रतिबार एक बार खांककर खाँसता है। क्रुप-खांसी ;—खांसीका प्रकोप एकके ऊपर एक इतना होता है, कि बीचमें अन्तर कुछ नहीं रहता, रोगी खांसनेके बाद सुस्त और निर्जीव-सा हो पड़ता है ; और उसका चेहरा नीला या स्याह रङ्गका हो जाता है ; सबेरे खाँसी बढ़ जाती है ; खाँसनेके पहले रोगीको श्वास-रुक जाना चाहती है।

कमजोरी मालूम होती है और पेट फूलता है और ऊपरी पेटमें दर्द मालूम होता है—इत्यादि इसके प्रकृतिगत लक्षण है।

लक्षणावली।

मस्तक।—माथेमें विशेषकर कनपटीमें, धीमा धीमा दर्द और भार मालूम होता है, काफी पीनेसे छूटता है (*काफी पीनेसे बढ़ना=कैमो, इग्ने, नाइट्रम, नक्स*)। सरमें दर्द, (चलनेके समय=ऐलो, आर्नि, चायना, आयोड, पल्स, स्टान, वायो-ट्राई), माथा झुकानेपर (ब्राई, साइक्ल, पल्स) और सर हिलानेपर (कैप्स, कोरैल, लाई, नेट्र-म्यूर, पोडो, पल्स, सिपि, साइलि) दर्दका बढ़ना और काफी पीनेपर घटना।

पक्वाशय।—पुराना यकृत प्रदाह और पित्तमय विकार। पेटमें लगातार भुटभाट कलकल वगैरह आवाज हुआ करती है। पेट फूलता है,—पतला पाखाना होनेपर घट जाता है। नाभि प्रदेशमें मोच खानेकी तरह दर्द, पाखाने के समय दर्द बढ़ जाता है।

मलान्त्र और मल।—मल वेग—सवेरे शय्यासे उठनेके पहले ही (*ऐलो, सोरिन, रियुमेक्स, सल्फ*)। उदरामय,—*वायु निकलनेके साथ, पतला काली आभा लिये मल—दोपहरको भोजन करनेके बाद ही मलका वेग पैदा हो जाता है* (*ऐल्यू, ऐमोन-म्यूर, चायना, ऐसिड-नाई, नक्स, ट्राम्बिड*); कभी कभी काली आभा लिये पानीकी तरह भी होता है, अथवा पित्तमय और आममय होता है। पेट कस जाता है और मलद्वारमें जलन और कांखना; माथेमें गड़बड़ी मालूम होना और सारे शरीरमें पसीना होना; चेहरा पीला, या उजला, उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि कुछ तकलीफ है तथा दोनों आंखें और गाल गड्ढेमें धंस जाते हैं।

त्वचा।—*पाण्डु रोग या पिलई, शरीरकी त्वचा पीली और मिट्टीके रङ्ग की*। सम्पूर्ण देहमें उत्ताप मालूम होता है, बदनमें खुजली और जलन होती है, तथा कुटकुटाता है, खुजलानेपर बढ़ जाता है।

ज्वर।—जाड़ा पैदा होनेके बहुत पहलेसे ही निद्रालुता रहती है, सर कुछ भारी मालूम होता है और दर्द होता है तथा चिन्ता शक्ति दुर्बल हो पड़ती है; सामान्य परिश्रमसे ही पसीना हो जाता है और थकन बढ़ जाती है। पिच्छ-

कार्नस-ऐल्टर्नि फोलिया।

(CORNUS ALTERNIFOLIA)

दूसरा नाम—स्वैम्प-वालनट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी पत्तोंसे क्वाथ या अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—कमजोरी; सुस्ती; हलकी नींद; ज्वर अस्थिरता (बेचैनी); एक्जिमा; त्वचापर फटे फटे दाग; वक्षमें बरफ की तरह ठण्डक मालूम होना; खुली हवामें घूमने और रातमें भोजनके बाद रोग लक्षणोंका बढ़ना इसका निर्देशक लक्षण है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कार्नस सार्सिनेटा।

(CORNUS SIRCINATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी छालसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मुंहका जखम; पित्तके कारण सर-दर्द; अतिसार; रक्तामाशय; पामा; सविराम ज्वर; यकृतकी बीमारियां; कामला; श्लैष्मिक झिल्लीका जखम; शीत-पित्त।

उपयोगिता और आभास।—श्लैष्मिक झिल्लीके उपक्षत और जखमोंमें इसका बहुत दिनोंसे व्यवहार होता चला आता है। पुराना मलेरिया या पूतिवाष्पज (मलेरियासे उत्पन्न) ज्वर आदिमें यकृत प्रदाह और पाण्डुरोग में यह विशेष लाभदायक है। आगे लिखे कार्नस फ्लोरिडाके बोखारके लक्षण आदि इससे पैदा हुए बोखारके बिलकुल ही समान हैं। शीत (जाड़ा) मालूम होनेके बहुत पहलेसे ही औंघाई मालूम होती है, बदन सब गर्म रहता है, पर रोगीको जाड़ा मालूम होता रहता है। उत्तापावस्थामें निद्रालुता और इसके बाद पसीना निकलना इत्यादि इससे पैदा हुए ज्वरके निर्णायक लक्षण हैं। सवेरे

कमजोरी मालूम होती है और पेट फूलता है और ऊपरी पेटमें दर्द मालूम होता है—इत्यादि इसके प्रकृतिगत लक्षण है।

लक्षणावली।

मस्तक।—माथेमें विशेषकर कनपटीमें, धीमा धीमा दर्द और भार मालूम होता है, काफी पीनेसे छूटता है (*काफी पीनेसे बढ़ना=कैमो, इग्ने, नाइट्रम, नक्स*)। सरमें दर्द, (चलनेके समय=ऐलो, आर्नि, चायना, आयोड, पल्स, स्टान, वायो-डाई), माथा झुकानेपर (ब्राई, साइक्ल, पल्स) और सर हिलानेपर (कैप्स, कोरैल, लाई, नेट्र-म्यूर, पोडो, पल्स, सिपि, साइजि) दर्दका बढ़ना और काफी पीनेपर घटना।

अपचामय।—पुराना यकृत प्रदाह और पित्तमय विकार। पेटमें लगातार भुटभाट कलकल वगैरह आवाज हुआ करती है। पेट फूलता है,—पतला पाखाना होनेपर घट जाता है। नाभि प्रदेशमें मोच खानेकी तरह दर्द, पाखाने के समय दर्द बढ़ जाता है।

मलान्त्र और मल।—मल वेग—सवेरे शय्यासे उठनेके पहले ही (ऐलो, सोरिन, रियुमेक्स, सल्फ)। उदरामय,—वायु निकलनेके साथ, पतला काली आभा लिये मल—दोपहरको भोजन करनेके बाद ही मलका वेग पैदा हो जाता है (ऐल्यू, ऐमोन-म्यूर, चायना, ऐसिड-नाई, नक्स, ट्राम्बिड); कभी कभी काली आभा लिये पानीकी तरह भी होता है, अथवा पित्तमय और आमशय होता है। पेट कस जाता है और मलद्वारमें जलन और कांखना; माथेमें गड़बड़ी मालूम होना और सारे शरीरमें पसीना होना; चेहरा पीला, या उजला, उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि कुछ तकलीफ है तथा दोनों आंखें और गाल गड्ढेमें धंस जाते हैं।

त्वचा।—पाण्डुरोग या पिलई, शरीरकी त्वचा पीली और मिट्टीके रङ्ग की। समूची देहमें उत्ताप मालूम होता है, बदनमें खुजली और जलन होती है, तथा कुटकुटाता है, खुजलानेपर बढ़ जाता है।

ज्वर।—जाड़ा पैदा होनेके बहुत पहलेसे ही निद्रालुता रहती है, सर कुछ भारी मालूम होता है और दर्द होता है तथा चिन्ता शक्ति दुर्बल हो पड़ती है; सामान्य परिश्रमसे ही पसीना हो जाता है और थकन बढ़ जाती है। विज्ञ-

रावस्थामें कमजोरी और पेटमें दर्द होता है, दस्त पतले आते हैं। गर्मी है, पर रोगीको जाड़ा मालूम होता है (नक्स) ; उत्तापावस्थामें बहुत औंघाई आती है (कार्नस-फ्लोरिडा)।

वृद्धि ।—रातके समय, नींद खुलनेपर (लैके), शरीर हिलानेसे (ब्राई), ठण्ढा लगनेपर और ग्रीष्मके उत्तापसे।

घटना ।—काफी पीनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—आर्स,—सिनियेन, चेलिडो, मार्क, हाईड्रैस, चायना, युपेटोर, पार्फो, नक्स।

शक्ति ।—मूल अर्कसे प्रथम दशमिक क्रम तक।

कार्नस फ्लोरिडा।
(CORNUS FLORIDA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछकी जड़से मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—अजीर्ण ; सविराम ज्वर ; फेफड़ेका प्रदाह इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—अँगरेजी "नव-भैषज्य-संग्रह" के प्रणेता स्वनाम ख्यात डा० हेलके मतसे क्विनिनके अपव्यवहारसे पैदा हुए दुरारोग्य सविराम ज्वर आदिमें "कार्नास फ्लोरिडा" बहुत लाभदायक है ; भिषग-श्रेष्ठ डा० फेरिङ्गटनने इसके ज्वरका इस तरह उल्लेख किया है:—"जाड़ा पैदा होनेके बहुत दिन पहलेसे ही रोगीमें बहुत निद्रालुता पैदा हो जाती है (आर्स, पल्स, थिरिड ; ज्वर आनेसे पहली रातमें बहुत औंघाई = आर्स), रोगीका शरीर गर्म और उसको शीत मालूम होतो हैं (आर्स, बेल, काक्यु, ड्रोसे, नेट्र-म्यूर, थूजा ; उत्तापावस्थामें निद्रालुता (जेल्स, नक्स-मस) और इसके बाद ही पसीना निकल आना।" बोखारको प्रकोपावस्थामें मिचली, वमन और इसके साथ कभी कभी पानीकी तरह पतला मल या उदरामय, शीतावस्थामें त्वचा ठण्ढी और लसदार रहती है ; ज्वर या उत्तापावस्थामें तेज सर दर्द रहता है, टपक, आच्छन्न

भाव, बुद्धिकी जड़ता और वमन मौजूद रहती हैं, अजीर्ण रोगमें, मुंहमें ठण्डा पानी भर आता है। बाहुमें, वक्षस्थलमें और शरीरमें स्नायुशूल और ऐसा दर्द मानो कमर टूटकर दो टुकड़े हो गयी है, इस दवाके प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं। इन्होंकी सवेरेके समयकी मूत्र-कृच्छ्रता।

लक्षणावली।

वक्ष।—बाएं कण्ठास्थि-प्रदेशमें सुई वेधनेकी तरह दर्द और यह दर्द दाहिने—पार्श्वमें फैल जाता है; ठण्डी साँस लेनेपर या श्वास खींचनेपर दर्द बढ़ जाता है; छाती में बराबर पिट पिट कर खाँसी पैदा हो जाती है और बड़ी कठिनतासे कफ निकलता है (आर्स, ब्रोर, बोवि, किनिन-सल्फ, युफ्रे, कैलि-कार्ब, लैके, इग्ने, सिपि, स्टैन, सेनेगा, जिङ्कम); बराबर सरमें चक्कर आना, जाड़ा मालूम होना; इसके बाद ही प्यासके साथ उत्ताप; और अन्तमें पसीना निकलना; बार बार थोड़ा थोड़ाकर पानी पीता है, (आर्स); फेफड़ेके प्रदाहमें भोजन करनेके कुछ ही बाद, फिर भूख लग जाती है, दाहिने वक्षमें इतना दर्द मानो छुरी विध रही है (ऐको, ऐमोन-कार्ब, ऐसा, ब्राई, चायना; कोना, ग्रैफ, कैलि-आयोड, क्रियो, लैकिट्यु, कैलि-कार्ब, ऐसिड-नाई, रैनान-स्क्लिरेटस, रास, साइलि, सिपि, जिङ्कम) और सरमें चक्कर आता है।

प्रत्यङ्ग आदि।— गर्दनके पीछे ऐसा मालूम होता है, मानो एकाएक धक्का लग गया है (नैजा)। कमरमें इतना दर्द, मानो टूटकर दो टुकड़े हो गयी है। स्नायुशूलकी वजहसे दर्द, बाईं कोहनीसे आरम्भ होकर कन्धे तक फैल जाता है और नीचेकी ओर उतरने वाला होता है और फिर दाहिने पार्श्वसे होकर फिर ऊपर चढ़ता है। हृत्प्रदेशमें दर्द रहनेपर बहुत दबाव मालूम होता है और कलेजेमें धड़कन हुआ करती है; रोगी दर्द और सुन्न हो जानेकी वजहसे हाथ नहीं उठा सकता; शूलका धक्का या सुई वेधनेकी तरह दर्द। बुढ़ मनुष्योंको सवेरे पेशाब करनेमें तकलीफ होती है।

ज्वर।—शीतावस्थामें शरीरकी त्वचा लसदार पसीनेसे भरी रहती है, इसके बाद उत्ताप,प्यास और अन्तमें पसीना होता है। जाड़ा पैदा होनेके कुछ दिन पहलेसे ही औंघाई पैदा हो जाती है; चिन्ता शक्तिमें जड़ता पैदा हो जाती है और माथेमें धीमा धीमा दर्द मौजूद रहता है। उत्ताप अवस्थामें मिचली, वमन और कभी कभी पानीकी तरह या पित्तमय उदरामय मौजूद

रहता है। प्रचण्ड टपकका दर्द, आच्छन्नावस्था, बुद्धिकी जड़ता और वमन। रोगीको देह गर्म, पर शीत मालूम होती है। (कार्नस-सर्सिनेटा देखो)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐविस-केन, ऐल्सटोनिया; आर्सेनिकम; नक्स-वोमिका, युपेट-पर्फोल, चायना, कैलि-कार्ब।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ ठा शततमिक क्रम।

कोरिडेलिस फार्मोसा ।

(CORYDALIS FORMOSA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसमें जब फूल पैदा हो जाता है तब कन्द या सीकड़ निकालकर मदर टिंचर तैयार किया जाता है। सूखी जड़से विचूर्ण बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—पाकाशयकी सर्दी, गण्डमाला; उपदंशका जखम इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—उपदंश, विषकी वजहसे कितने ही प्रकारसे स्वास्थ्यमें गड़बड़ी पैदा हो जाना और चर्म-रोगके साथ इसका बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है; लिङ्गमणिपर पैदा हुआ कड़ा उपदंश, इसी वजहसे अस्थि-वेष्टमें अर्बुद, केश झड़ जाना, उपदंशसे पैदा हुए या श्लेष्माके कारण माथेके जखम आदि, जिह्वामूलके पार्श्वमें स्थित, दोनों गह्वरोंमें उपदंश या सामान्य जखम वगैरहमें इससे आश्चर्य-जनक लाभ दिखाई दिया करता है। श्लेष्माकी वजहसे स्वास्थ्यभङ्ग, दुरारोग्य चर्मरोग, यकृत और प्लीहा बढ़ जानेके साथ सविराम-ज्वरके अन्तका स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ—इसमें भी इससे विशेष लाभ हुआ करता है। पाकाशयकी सर्दी रोगमें भी लाभदायक है। पुरानी सुस्तीकी बीमारीमें भी इसके व्यवहारसे लाभ होता है। जीभ साफ-सुथरी; प्रशस्त और पुष्ट; देहकी तन्तुओंमें दृढ़ता नहीं रहती। वे शिथिल और उत्तापहीन रहते हैं।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एसिड-फ्लु, एसिड-नाई, कैलि-आयोड, मार्कीर, मार्क, प्रोटो-आयोड, स्टिलिञ्जिया।

शक्ति ।—मूल अर्कके कई बूंद।

कोटो-बार्क ।

(COTO-BARK)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

उपयोगिता और आभास ।—पुराना उदरामय; बहुत ज्यादा पाखाना होना,—आमाशय; गुटिका दोष-युक्त उदरामय वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्नशक्ति ।

कोटाइलिडन ।

(COTYLEDON UMBILICUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसी शाकसे मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—हृत्पिण्डकी बीमारी; मूर्च्छावायु; नासूर; प्लीहा; आमवात; सन्धिवात वगैरह रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि रोगी समझता है, कि उसके शरीरका कोई एक अंश वर्जित हो रहा है, शरीरके कितने ही स्थानोंमें वातका दर्द खासकर वक्षस्थलमें शलाका या सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। इसका दर्द सबेरे और शामके वक्त बढ़ जाता है ।

लक्षणावली

मन ।—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी देह, माथा या पैर वर्जित है (स्ट्रैम; मानो उसका निचला पैर फटा है=बेराइ)। माथा बहुत हलका मालूम होता है, मानो उसके माथेका भीतरी भाग शून्य हो गया है। चेष्टा करनेपर भी मुंहसे बोली नहीं निकलती ।

श्वास-यंत्र।—बाएँ स्तनके नीचे (ऐञ्जिया) और दाहिने वक्षमें लगातार दर्द, बाएँ स्तनके निकटसे शरीरको भेदकर दर्द पृष्ठ-फलक तक फैल जाता है (माटस-कम, पिक्स-लिक, थिरिड, सल्फ, ऐमिगडेला)। हृद्प्रदेशमें उत्ताप मालूम होना, घोड़ेपर सवारी करनेपर खोंचन या नख लग जानेकी तरह दर्द होता है; रोगवाली जगह दबा रखनेपर आराम मिलता है।

सार्वाङ्गिक।—दिनमें कभी कभी बहुत सुस्ती मालूम होती है और आँखके सामने पीले रङ्गकी छाया सब दिखाई देती है। निम्न अङ्गमें चींटी चलनेकी तरह मालूम होता है और सर्दी या वात होनेकी सूचना की तरह लक्षण प्रकट होते हैं।

वृद्धि।—दर्द आदि सवेरे और सन्ध्यामें बढ़ता है।

शक्ति।—मूल अर्क और १म दशमिक क्रम।

क्रेटिगस आक्सियेकान्था।

(CRATAEGUS OXYACANTHA.)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पके फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—हृत्शूल; हृत्पिण्डकी बहुत सी बीमारियाँ; हृत्पिण्डकी क्रियाका एकाएक लोप हो जाना; हृत्पिण्डके कड़े पड़ जानेमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—यह हृत्पिण्डकी सुस्ती दूर करने वाली एक बहुत बढ़िया दवा है। अत्यन्त सुस्ती मिला बहुत दिनोंका पुराना हृत्पिण्डका रोग, हृत्पिण्ड बहुत क्षीण हो जाता है, उसकी क्रिया विषम हो पड़ती है; हृत्शूल और हृत्पिण्डकी क्रिया एकाएक लोप हो जानेका उपक्रम वगैरहमें क्रेटिगसको यदि एक अद्वितीय दवा कहा जाय तो भी अत्युक्ति नहीं होगी। हृत्पिण्डके अवसादकी सम्भावना होनेपर बार बार डिजिटेलिसके प्रयोगसे उपकार हो सकता है और अपकार भी परन्तु क्रेटिगसका प्रयोग करनेपर उपकारके सिवा अपकार होनेकी सम्भावना ही नहीं है, क्योंकि डिजिटेलिसमें जो विषाक्त गुण है, क्रेटिगसमें उसका लेश भी नहीं है।

विकारकी वजहसे सारे शरीरके शोथ रोगमेंभी इससे बहुत उपकार हुआ करता है (आर्स, आयोड, ष्ट्रोफेन्टस)। खूनकी वजहसे हो या हृत्पिण्ड की झिल्लीके विकारके कारण ही हो, हृत्पिण्डकी सब तरहकी क्षीण क्रियामें कैटिगसका प्रयोग करनेपर लाभ ही हुआ करता है।

लक्षणावली।

मन।—क्रोधी स्वभाव, चिड़चिड़ा और विमर्ष-चित्त। हमेशा व्यस्त भाव और हृत्पिण्डकी गति बहुत तेज। माथा और गर्दनके पीछे दर्द।

हृत्पिण्ड।—अग्निमांद्य और स्नायविक अवसाद—इसके साथ ही हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होनेका उपक्रम। सुस्ती और एकाएक हृत्पिण्डकी क्रिया रुकनेकी वजहसे हिमाङ्ग (Collapse) हृत्पिण्डकी आकृतिका बढ़ना या द्वारावरोधक झिल्ली विकृति (Valvular disease) की वजहसे हृत्पिण्डकी क्रिया निरोध हो जानेका उपक्रम (Failure) हृत्स्पन्दन (कलेजा धड़कना)। हृत्शूल,—पाकस्थलीके ऊर्द्ध-देश और बाईं ओर दर्द,—नाड़ी प्रबल वेगवती, हृत्पिण्डका बढ़ना (Hypertrophy) का लक्षण मौजूद रहता है। मेरुदण्ड का बढ़ना या शराब पीने अथवा बहुत अधिक इन्द्रिय सेवनके कारण हृत्पिण्ड की बीमारी। आन्त्रिक ज्वरमें हृत्पिण्डके सुस्त पड़ जानेका उपक्रम। हृत्पिण्ड के विकारकी वजहसे सारे शरीरका शोथ (Anasarca = आर्स-आयोड, ष्ट्रोफेन्थस)

वृद्धि।—गर्म घरमें।

उपशम।—निर्मल वायु लगनेपर, निश्चिन्त भावसे रहनेपर या विश्राम करनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-हाइड्रो, आर्स-आयोड, कैम्फो, आइविरिस, डिजिटेलिस, फेजियोलस।

शक्ति।—मूल अर्क एकसे दस बूंद तक।

क्रोकस सेटाइवस ।

(CROCUS SATIVAS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी केसरसे इसका मूल अर्क तैयार होता है। डा० कूपर (Dr. Cooper) नये पत्तासे मूल अर्क तैयार करते हैं।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— गर्भ स्रावकी आशंका ; नकली प्रसवका दर्द ; क्षीण-दृष्टि ; मस्तिष्कमें रक्त-संचय ; ताण्डव ; बाधक ; मूर्च्छा ; रक्तस्राव ; पाकाशयमें विकार ; खूनमिली खाँसी ; सर दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; मूर्च्छा-वायु ; आँखसे पानी गिरना ; हँसना ; क्रोध ; श्वेत-प्रदर ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; नाकसे खून गिरना ; आँखोंका प्रदाह ; गर्भिणीकी बहुत सी बीमारियाँ ; अर्बुद ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—(१) मानसिक अवस्थाका बहुत तेजीसे बदलते रहना, महान आनन्द या स्फूर्तिसे एकदम घोर निरानन्द ; अभी अभी एकदम आनन्दमें भरकर सबको चुम्बन या प्यार करता हुआ घूमता था—पर क्षणभर बाद ही प्रचण्ड क्रोध करने लगता है (२) रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसका उदर, जरायु, बाहु या देहके अन्यान्य अंशोंमें सजीव पदार्थ लगातार हिल रहा है ; (३) शोणित-स्राव,—शरीरके चाहे किसी द्वारसे क्यों न हो,—खून काले रङ्गका गोंदकी तरह और जमा हुआ,—निकलनेकी राहपर लम्बे सूतकी तरह झूलता रहता है ; (४) ताण्डव (Chorea) और मूर्च्छा-वायु रोग, आनन्द, गाना, नाचना, महा विषाद और क्रोधके साथ पर्यायक्रमसे प्रकट होता है (५) रजोनिवृत्तिके बाद सर दर्द,—स्वभावतः पूर्वमें जो कई दिन ऋतुस्राव होता था, उन कई दिनोंमें सरका दर्द बढ़ा करता है ; ऋतुके समय सर दर्द ; रजःस्रावके पहले, समयपर या इसके बाद पैदा हो जाता है (६) आँख ऐसी मालूम होती है, मानो घरमें धुंआ भरा हुआ है, या रोगिनी रो रही है अथवा उसकी आँखमें ठण्डी हवा घुस रही हो ; जोरसे आँख बन्द करनेपर आराम मिलता है (७) कभी कभी देहका कोई अंश या पेशियोंका फड़क उठना—ये कई क्रोकस-सेटाइवसके सर्व-श्रेष्ट प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली।

मन।—चित्तका जल्दी जल्दी बदलते रहना—महान आनन्दमें रहकर सबका आदर और चुम्बन करता है, क्षणभर बाद ही महा क्रोध प्रकट करता है, किसीको गाना गाते सुननेपर फिर जी नहीं मानता—तुरन्त गाना आरम्भ कर देता है और क्षण भर बाद ही अपनी प्रगल्भतापर हँसने लगता है; विपरीत इच्छा रहनेपर भी गाये बिना रह नहीं सकता। सबको चुम्बन करनेकी दुर्दमनीय इच्छा, अभी महान क्रोध प्रकट कर रहा था, पर थोड़ी ही देर बाद उसके लिये अनुत्ताप करने लगता है। एकाएक हँस उठता है (बेल, स्ट्रैमोन, देखो)।

मस्तक।—वयःसन्धिके समयका सर दर्द (Climacteric Headache),—माथेमें धमक या टपक हुआ करती है— पहले स्वभावतः जो कई दिन ऋतु-स्राव होता था ऋतु निवृत्तिके बाद भी ठीक कई दिवस तक तकलीफ बहुत बढ़ जाती है; स्नायवीय या आर्त्तवके समय सरमें दर्द—आर्त्तव स्रावके पहले और समयपर और इसके बाद दर्द मालूम होना, विशेषकर सन्ध्याके समय बत्तीकी रोशनीमें, सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही मूर्च्छाका उपक्रम (लेके, मस्कस, नक्स; सैवाड)।

आँख।—घर धुएंसे भरा मालूम होता है (सभी चीजें कुहरेसे ढकी मालूम होती हैं=बेल, सिलेम, इग्रोन, मार्क) रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो रोते रोते उसकी आँखें फूल गयी हैं, मानो उसकी आँखके ऊपरसे ठण्डी हवा बह रही है; कसकर आँख बन्द करनेपर आराम मालूम होता है। पढ़ना आरम्भ करनेपर आँखसे पानी गिरा करता है (ग्रैटि, क्रोटल, ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-सल्फ)। सन्ध्याके समय दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है मानो घूंघटके भीतरसे देख रहा है (मार्म, कास्टि, क्रियो, पेट्रोल, रास, सल्फ)। आंखके सामने चमक दिखाई देती है (ऐल्यु, कास्टि साइक्यू, सिना, आयोड, ऐसिड-फ्लू, ग्रैट, स्ट्रान)। एकाएक बिजली चमक जानेकी तरह या मानो आगकी चिनगारियां उड़ रही हैं, इस तरह दिखाई देता है (आरम, बेल, कास्टि, आयोड, कैलि-कार्ब, लेके, नैट्र-म्यूर, ओपि, क्यूप्रम, आर्स, वैलि)।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव—रक्त काला, गाढ़ा लेईकी तरह नासारन्ध्रमें झूला करता है (मार्क-सोल),—खींचनेपर रबड़के सूतकी तरह

बढ़ जाता है (काला रक्त=ऐसिड-नाई, क्रियो, मैंके),—स्रावके समय कप में बड़ी बड़ी ठण्डी पसीनेकी बूंदें सब निकल पड़ती हैं (ठण्डा पसीना, पर रो हमेशा पंखेसे हवा करनेको कहता है और खूनका रंग चमकीला लाल कार्बो-वेज) ; तेजीसे बढ़नेवाले बच्चोंकी नाकसे खूनका स्राव (कैल्के-फाव फास) ।

पाकाशय और अन्त्राशय ।—भोजनके बाद छातीमें जलन (ऐमो कार्ब, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, सिङ्को, कोना, लाई, कैप्स, मार्क; नक्स साइलिसिया, ऐसिड-सल्फ) । सवेरे कुछ खानेके पहले, ऐसा मालूम होता है मानो कोई जीव पाकस्थली, उदर, जरायु या शरीरके अन्यान्य अंशमें घूमत फिरता है (ऐराण्डो-मेरि, कैल्वी-फास, कैनाब-सैट, कान्थेल, सैबाई, सल्फ थूजा, थियोनैन—मानो सरमें कुछ हिल रहा है=पेट्रोल, साइलिसिया) ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जननेन्द्रियकी तरफ रक्त उतरता है, मानो ऋतु प्रकाशित होगा । कभी कभी आर्त्तव-स्राव हो जाता है और गाढ़ा लसदार बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव हुआ करता है, बाधक—स्रावका रङ्ग काला, गाढ़ा गोंदकी तरह और जमा हुआ (ऐस्त्रिगो) ; अमावस्या और पूर्णिमाके दिन रक्त-स्राव । जरायुसे रक्तस्राव (Metrorrhagia) ; देहको जरा भी हिलानेपर स्राव आरम्भ हो जाता है—खूनका रङ्ग काला (ब्राई, कैमो, फेरम, इग्ने, क्रियो, नाइट्रम, प्लैट, पल्स) । गाढ़ा गोंदकी तरह (मैग-म्यूर), जमा हुआ और बहुत बदबूदार, इसी लिये तीसरे महीने गर्भ-स्रावका उपक्रम हो पड़ता है । बाएँ स्तनके भीतर पिलक मारनेकी तरह दर्द होना मानो इस अंशको किसीने डोरीसे खींचकर पीठके साथ कसकर बाँध दिया है (क्रोटन) । ऐसा मालूम होता है, मानो छातीकी दाहिनी ओर कोई जीव उछलता हुआ घूमता है ।

श्वास-यन्त्र ।—प्रबल और सुस्ती लानेवाली सखी खाँसी, उदरके ऊपरी प्रदेशमें हाथ रखने या रगड़नेपर घटता है । खाँसनेपर खून मिला कफ निकलता है । वक्षस्थलमें दबाव मालूम होनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है और लम्बी साँस लेनेकी इच्छा रहती है, जम्हाई लेनेपर आराम मालूम होता है, (स्टैफ) साँय साँय शब्द करनेवाली खांसी और फेनके साथ सूत्रमय बल-गम के रूपमें निकलती है । श्वास प्रश्वासमें बहुत बदबू ।

प्रत्यङ्ग आदि।—ताण्डव और मूर्च्छावायु रोग; रोगी कभी बहुत आनन्दमय रहता है, गाने गाता है, नाचता है, पर दूसरे ही क्षण बहुत दुःखित या महा क्रोधी हो पड़ता है और इसके बाद, जोरसे ताली बजा बजाकर अट्टहास्य करने लगता है। एक एक अंशकी पेशी मण्डली फड़कती है (ऐगार, कोडिइन, इग्ने, जिङ्कम)। रातमें निद्रावस्थामें बाहु और हाथ सुन्न हो पड़ते हैं और हिलानेकी शक्ति नहीं रहती, खड़े होनेवाली अवस्थामें, झुककर जमीनसे कोई चीज उठानेपर, पुट्ठे (Hip) और जानु-सन्धिमें कड़कड़ाहट होती है।

वृद्धि।—उपवास करनेपर, सन्ध्या और रात्रिके समय, अमावस्या और पूर्णिमामें, एक ओर बहुत देरतक देखते रहनेपर, पढ़नेपर, गर्भावस्थामें, गर्म घरमें, गर्म हवामें।

घटना।—जम्हाई आनेपर, निर्मल वायु सेवन करनेपर और पहली बार भोजनके अन्तमें या उपवास-भङ्गके बाद।

सम्बन्ध।—सदृश।—(काले रङ्गके रक्तके सम्बन्धमें)—प्लेट, नाइट्रम; क्रियो; लेके; (बाईं छातीके दर्दके सम्बन्धमें)—क्रोटन; ऐक्टिया; नार्टास-कम, थिरिड; अधिककर कोडिनम; टैरेण्टियुला, लेके, ड्रैल, आस्टिलेगो, सेबाइना। प्रायः सभी रोगोंमें नक्स-वोम, पलस, सलफर और क्रोकसके बाद उपयोगी है। डा० ह्यूके मतसे "रियुटा" के साथ क्रोकसका सबसे अधिक सादृश्य है।

दोषघ्न।—ऐकोन, बेल, ओपियम।

शक्ति।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—८ दिन।

क्रोटेलस कैस्केविला।

(CROTALUS CASCAVELLA)

परिचय।—ब्रेजिल देशका एक तरहका साँप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस साँपके विषमें दूधकी चीनी मिलाकर विचूर्ण तैयार किया जाता है।

उपयोगिता और आभास ।—और और साँपके विषोंकी तरह कैस्कैविला एक प्रकारका तेज विष है। इसके लक्षण अन्यान्य सर्प-विषोंकी भाँति ही हैं ; परन्तु इसकी मानसिक लक्षणावली विशेष उल्लेख योग्य है।

नींदके बाद सर दर्द (लेके), लगातार मृत्युकी चिन्ता बनी रहना और नींद लगनेपर मृत्युके सपने देखना, नाना प्रकारके काल्पनिक भ्रान्ति-पूर्ण जन्तु देखना और उनसे डरना, अर्द्ध-चेतन अवस्था वगैरह लक्षणोंमें यह लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सर्प-विषसे तैयार की हुई दवाएँ सब।

शक्ति ।—३०—२००।

क्रोटेलस होरिडस ।

(CROTALUS HORIDUS)

दूसरा नाम ।—अमेरिकामें पैदा होनेवाले एक तरहका खड़ खड़ शब्द करनेवाले पूँछदार साँपका विष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूध चीनीके साथ विचूर्ण (अमेरिकन मतसे) ग्लिसरिनके साथ टिंचर (ब्रिटिश मतसे)।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— पासकी चीजें देखना (निकट दृष्टि); तिमिर दृष्टि (डेरा देखना) और संन्यास ; उपाङ्ग-प्रदाह; और ऐपेण्डिसाइटिस ; पैत्तिक ज्वर ; फोड़ा ; दूषित फोड़ा ; उपदंश ; आक्षेप ; आँखका स्नायुशूल ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह; बुद्धिभ्रंश; मादात्यय ; झिल्लीका प्रदाह ; बाधक ; अजीर्ण ; काली लकीर पड़ना ; मृगी ; चक्षु-रोग ; विसर्प ; मुंहमें उद्भेद; रक्त-मूत्र (खून मिला पेशाब); रक्त-स्राव प्रवण धातु ; सर दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; जलातङ्क रोग ; आँतोंसे रक्तस्राव ; कामला ; यकृत और फेफड़ेकी बहुत सी बीमारियाँ। स्तन प्रदाह ; खसड़ा ; गर्भिणियोंका पैर फूलना ; डिम्बाशय-प्रदाह ; पूतिनस्य ; हृद्कम्पन ; अन्त्रावर्तन प्रदाह ; शिरा-प्रदाह ; धूम्र-वेश ; खून विषाक्त हो जाना; स्वल्प विरामज्वर ; आमवात ; आरक्त ज्वर ; अनिद्रा ;

चचक ; लू लगना ; उपदंश ; आमवात ; शिराओंका फूलना और शिरा प्रदाह ; धनुष्टंकार ; जिह्वा प्रदाह ; और कर्कटका जख्म ; शीत्त-पित्त ; वमन ; हूप-खाँसी ; पीत-ज्वर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जिन रोग जीर्ण मनुष्योंको गांठें फूल जाया करती हैं, खूनका स्राव हुआ करता है और जिनका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है, ऐसे व्यक्ति और बहुव्यापक संक्रामक रोगमें, शराब पीनेका आदी और जिनकी पीठमें फोड़े या खूनी फोड़े अक्सर हुआ करते हैं, ऐसे व्यक्तियोंमें और ऐसी अवस्थामें यह विशेष उपयोगी है। जो बीमारी शरीरकी निस्तेज अवस्थामें फैलती है, उसमें तथा सड़नेवाली चीजोंके संस्रवसे जो उत्पन्न होती है (Septic) ऐसे ज्वरमें, अन्त्रमें विष क्रियाकी वजहसे अर्थात आन्त्रिक (Typhoid) ज्वरमें या पूतिवाष्पजनित (Malarious) ज्वरमें बहुत दिनोंका शराब पीनेका अभ्यास (Alcoholism) की वजहसे रोग आदिमें जीवनी शक्तिके अवसाद इत्यादि रोगमें और अवस्थामें भी क्रोटैलस संजीवनी सुधाकी तरह कार्य करता है। संन्यास, शराबियोंका संन्यासकी तरह आक्षेप, पीत ज्वर, शरीर पीला हो जाता है, सांघातिक उपझिल्ली प्रदाह, आरक्त ज्वर, यकृतकी सांघातिक बीमारियाँ, काला वमन और काले मलके साथ उदरामय, चीण स्त्रियोंको ऋतुके बदले दूसरे स्थानसे रक्त स्राव और वय: सन्धिके समय उत्ताप मालूम होना, जरायुसे बहुत दिनोंतक रक्त स्राव होते रहना, वगैरह रोगोंकी क्रोटैलस एक प्रधान औषधि है और उपयोगी होनेपर यह मन्त्रकी तरह काम किया करती है। लेकेसिसकी क्रिया जिस तरह शरीरके बायें अंशपर होती है क्रोटैलस और इलेप्स कोरैलिनस (सर्प विषका विष) की क्रिया उसी तरह शरीरके दाहिने अंशपर होती है और दाहिने पार्श्वके यन्त्र आदिके साथ बहुत निकट सम्बन्ध प्रकट करती है। यकृतपर इसकी क्रिया सबसे अधिक प्रकट हुआ करती है।

लक्षणावली ।

मन ।—रोना स्वभाव (ऐमोन-म्यूर, आरम, डिजि, हिपर, हाइपेरि, इग, लाई, नेट्र-म्यूर, प्लैट, पल्स, सिपि, स्टैन)। अनुभव शक्तिकी चीणता ; स्मरण शक्तिमें गड़बड़ी ; बहुत बकता है (ऐगार, कैनाब, ऐक्टि, कोकेइन, जेल्स, ग्लोन, हायो, कैलि-आयोड, लैके, लेच नैन, ओपि, पेरिस, पोडो, पाइरोजेन, सेलिन, ष्टिक्टा, स्ट्राम, टियुक्रि, थिरिड)। घरसे भाग जानेकी इच्छा (बेल, ब्राई, ग्लोन, हायो,

उपयोगिता और आभास।—और और साँपके विषोंकी तरह कैलो विला एक प्रकारका तेज विष है। इसके लक्षण अन्यान्य सर्प-विषोंकी भाँति ही हैं; परन्तु इसकी मानसिक लक्षणावली विशेष उल्लेख योग्य है।

नींदके बाद सर दर्द (लैके), लगातार मृत्युकी चिन्ता बनी रहना और नींद लगनेपर मृत्युके सपने देखना, नाना प्रकारके काल्पनिक भ्रान्तिपूर्ण जन्तु देखना और उनसे डरना, अर्द्ध-चेतन अवस्था वगैरह लक्षणोंमें यह लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—सर्प-विषसे तैयार की हुई दवाएँ सब।

शक्ति।—३०—२००।

क्रोटेलस होरिडस।

(CROTALUS HORIDUS)

दूसरा नाम।—अमेरिकामें पैदा होनेवाले एक तरहका खड़ खड़ शब्द करनेवाले पूँछदार साँपका विष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—दूध चीनीके साथ विचूर्ण (अमेरिकन मतसे) ग्लिसरिनके साथ टिंचर (ब्रिटिश मतसे)।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पासकी चीजें देखना (निकट दृष्टि); तिमिर दृष्टि (डेरा देखना) और संन्यास; उपाङ्ग-प्रदाह; और ऐपेण्डिसाइटिस; पैत्तिक ज्वर; फोड़ा; दूषित फोड़ा; उपदंश; आक्षेप; आँखका स्नायुशूल; मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह; बुद्धिभ्रंश; मादात्यय; झिल्लीका प्रदाह; वाधक; अजीर्ण; काली लकीर पड़ना; मृगी; चक्षु-रोग; विसर्प; मुंहमें उद्भेद; रक्त-मूत्र (खून मिला पेशाब); रक्त-स्राव प्रवण धातु; सर दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; जलातङ्क रोग; आँतोंसे रक्तस्राव; कामला; यकृत और फेफड़ेकी बहुत सी बीमारियाँ। स्तन प्रदाह; खसड़ा; गर्भिणियोंका पैर फूलना; डिम्बाशय-प्रदाह; पूतिनस्य; हृद्कम्पन; अन्त्रावर्तन प्रदाह; शिरा-प्रदाह; धूम्र-वैश; खून विषाक्त हो जाना; स्वल्प विरामज्वर; आमवात; आरक्त ज्वर; अनिद्रा;

चर्चक ; लू लगना ; उपदंश ; आमवात ; शिराओंका फूलना और शिरा प्रदाह ; धनुष्टंकार ; जिह्वा-प्रदाह ; और कार्कटका जखम ; शीत्त-पित्त ; वमन ; हूप-खाँसी ; पीत-ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जिन रोग जीर्ण मनुष्योंको गाँठें फूल जाया करती हैं, खूनका स्राव हुआ करता है और जिनका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है, ऐसे व्यक्ति और बहुव्यापक संक्रामक रोगमें, शराब पीनेका आदी और जिनकी पीठमें फोड़े या खूनी फोड़े अक्सर हुआ करते हैं, ऐसे व्यक्तियोंमें और ऐसी अवस्थामें यह विशेष उपयोगी है। जो बीमारी शरीरकी निस्तेज अवस्थामें फैलती है, उसमें तथा सड़नेवाली चीजोंके संस्रवसे जो उत्पन्न होती है (Septic) ऐसे ज्वरमें, अन्त्रमें विष क्रियाकी वजहसे अर्थात आन्त्रिक (Typhoid) ज्वरमें या पूतिवाष्पजनित (Malarious) ज्वरमें बहुत दिनोंका शराब पीनेका अभ्यास (Alcoholism) की वजहसे रोग आदिमें जीवनी शक्तिके अवसाद इत्यादि रोगमें और अवस्थामें भी क्रोटेलस संजीवनी सुधाकी तरह कार्य करता है। संन्यास, शराबियोंका संन्यासकी तरह आक्षेप, पीत्त ज्वर, शरीर पीला हो जाता है, सांघातिक उपझिल्ली प्रदाह, आरक्त ज्वर, यकृतकी सांघातिक बीमारियाँ, काला वमन और काले मलके साथ उदरामय, क्षीण स्त्रियोंको ऋतुके बदले दूसरे स्थानसे रक्त स्राव और वयः सन्धिके समय उत्ताप मालूम होना, जरायुसे बहुत दिनोंतक रक्त स्राव होते रहना, वगैरह रोगोंकी क्रोटेलस एक प्रधान औषधि है और उपयोगी होनेपर यह मन्त्रकी तरह काम किया करती है। लेकेसिसकी क्रिया जिस तरह शरीरके बायें अंशपर होती है क्रोटेलस और इलेप्स कोरेलिनस (सर्प विषका विष) की क्रिया उसी तरह शरीरके दाहिने अंशपर होती है और दाहिने पार्श्वके यन्त्र आदिके साथ बहुत निकट सम्बन्ध प्रकट करती है। यकृतपर इसकी क्रिया सबसे अधिक प्रकट हुआ करती है।

लक्षणावली।

मन।—रोना स्वभाव (ऐमोन-म्यूर, अरम, डिजि, हिपर, हाइपेर, इग, लाई, नेट्र-म्यूर, प्लेट, पल्स, सिपि, स्टेन)। अनुभव शक्तिकी क्षीणता ; स्मरण शक्तिमें गड़बड़ी ; बहुत बकता है (ऐगार, कैनाब, ऐक्टि, कोकेइन, जेल्स, ल्गोन, हायो, कैलि-आयोड, —लैके, लैच नैन, ओपि, वेरिस, पोडो, पाइरोजेन, सेलिन, स्टिक्टा, स्ट्राम, टियुक्रि, थिरिड)। घरसे भाग जानेकी इच्छा (बेल, ब्राई, ग्लोन, हायो,

उपयोगिता और आभास।—और और साँपके विषोंकी तरह कैसो विला एक प्रकारका तेज विष है। इसके लक्षण अन्यान्य सर्प-विषोंकी भाँति ही हैं ; परन्तु इसकी मानसिक लक्षणावली विशेष उल्लेख योग्य है।

नींदके बाद सर दर्द (लेके), लगातार मृत्युकी चिन्ता बनी रहना और नींद लगनेपर मृत्युके सपने देखना, नाना प्रकारके काल्पनिक भ्रान्ति-पूर्ण जन्तु देखना और उनसे डरना, अर्द्ध-चेतन अवस्था वगैरह लक्षणोंमें यह लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—सर्प-विषसे तैयार की हुई दवाएँ सब।

शक्ति।—३०—२००।

क्रोटेलस होरिडस।

(CROTALUS HORIDUS)

दूसरा नाम।—अमेरिकामें पैदा होनेवाले एक तरहका खड़ खड़ शब्द करनेवाले पूँछदार साँपका विष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—दूध चीनीके साथ विचूर्ण (अमेरिकन मतसे) ग्लिसरिनके साथ टिंचर (ब्रिटिश मतसे)।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पासकी चीजें देखना (निकट दृष्टि); तिमिर दृष्टि (डेरा देखना) और संन्यास ; उपाङ्ग-प्रदाह; और ऐपेण्डिसाइटिस ; पैत्तिक ज्वर ; फोड़ा ; दूषित फोड़ा ; उपदंश ; आक्षेप ; आँखका स्नायुशूल ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह; बुद्धिभ्रंश; मादात्यय ; झिल्लीका प्रदाह ; बाधक ; अजीर्ण ; काली लकीर पड़ना ; मृगी ; चक्षु-रोग ; विसर्प ; मुंहमें उद्भेद ; रक्त-मूत्र (खून मिला पेशाब); रक्त-स्राव प्रवण धातु ; सर दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; जलातङ्क रोग ; आँतोंसे रक्तस्राव ; कामला ; यकृत और फेफड़ेकी बहुत सी बीमारियाँ। स्तन प्रदाह ; खसड़ा ; गर्भिणियोंका पैर फूलना ; डिम्बाशय-प्रदाह ; पूतिनस्य ; हृद्कम्पन ; अन्त्रावर्तन प्रदाह ; शिरा-प्रदाह ; धूम्र-वेश ; खून विषाक्त हो जाना; स्वल्प विरामज्वर ; आमवात ; आरक्त ज्वर ; अनिद्रा ;

संयुक्त प्रदाह आराम होनेपर क्रोटेलस फिरसे स्वाभाविक दृष्टि पैदा कर देता है)। पलकोंका स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia),—फाड़ने वाला या छेदनेकी तरह दर्द—मानो आँख चारों ओर अस्त्रसे कट रही है; कभी कभी उसमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है; वृद्धि संध्यामें।

कान।—कानकी बीमारीकी वजहसे सरमें चक्कर आता है और श्रवण शक्ति घट जाती है; कानमें कितनी ही तरहकी आवाजें आती हैं और सरमें चक्कर आता है (नेट-सैलिसाई, किनिन-सल्फ)। कानके छेदसे खूनका स्राव होना। (साइक्यूटा, लैके, ऐ-नाई)।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव,—बहुव्यापक-संक्रामक रोगाधिकारमें खून पतला, काले रंगका जमता नहीं है, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना या सुस्ती मालूम होना। खसड़ा, चेचक आदिकी तरहके चर्मरोगके बाद पीनस रोग Ozoena=अरम, ऐसिड-नाई, कैंड-सल्फ, सोरिनम।)

मुखमण्डल और मुख-विवर।—मुखमण्डल फूला, पीला या लाल होता है। मुर्देकी तरह रक्तहीन; सीसेके रंगका; दोनों ओंठ फूले, कड़े और सुन्न। देरसे रजःस्राव होनेकी वजहसे शरीरमें बहुतसी लाल फुन्सियां निकल आती हैं, खासकर चिबुकके ऊपर। निद्रितावस्थामें दाँत कड़मड़ाता है, मसूढ़ेसे खून निकलता है और मसूढ़ा सफेद रङ्गका दिखाई देता है। जीभ आगके रंगकी, चिकनी और चमकती है (पाइरोजेन); जीभसे खून निकला करता है—कार्बंट रोगमें। खून मिली या फेन भरी लार बहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ मुंहके साथ कसकर बँधी हुई है—बोल नहीं सकती।

गलेके भीतर।—कण्ठनालीका बहुत ही दृढ़ संकोचन; कड़ी चीज निगलना असम्भव हो जाता है (कड़ी चीजें निगलनेपर कण्ठनालीका दर्द घट जाता है=इग्ने)। रोहिनी रोगमें (*Dephtheria*) या आरक्त ज्वरादिमें जिह्वामूलीय गह्वर (Fauces) या तालुग्रन्थि (Tonsils) का फूलना या सड़ना (Gangrene); खाली घूंट लेनेपर बहुत दर्द मालूम होता है, वमन या पतले दस्त होनेका उपक्रम हो जाता है और कण्ठमें दर्दकी वजहसे माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है। प्रदाहयुक्त झिल्ली फूली रहती है, और गहरी लाल रंगकी दिखाई देती है। कण्ठके भीतर मानो एक कील या खूंटी रुकी

रास, स्ट्रैम)। अस्पष्ट प्रलाप युक्त विकार, (ऐगार; ऐसिड-टार्ट, वैप, वेल, ऐ फास, आर्नि, आर्स, एपिस, ऐ-मूर, फास, रास, टेरेण्टियु, टेरिब, पैसि फ्लो, टेरैक्स), इसके साथ ही आन्त्रिक ज्वराधिकारमें या पीतज्वरमें उन्मीलित आँखें, बहुत बेचैनी, पेशियोंका संकोचन और फैलना (Twitching—ऐगार, इग्ने, जिङ्कम, क्रोकस) और विकारके समय लगातार बुदबुदाया करता है और यन्त्रणा प्रकट किया करता है, पानात्यय (Delirium Tremens-ऐसिड-टार्ट वेल, ऐगार, नक्स, हायो, स्ट्रैम)। अकसर हमेशा ही औंघाई आया करती है, पर ठीक ठीक सच्ची नींद नहीं आती (वेल. कैमो); रोग जीर्ण व्यक्तिका विकार। हमेशा दुःखित और भीत,—बहुत विस्मित ; रोना और बहुत चिड़-चिड़ा स्वभाव। दुःखभाराक्रान्त भाव,—हमेशा ही मृत्युके विषयमें सोचा करता है (क्रोटेलस कैस्काविला)। अपना मनोभाव प्रकट नहीं कर सकता। किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता। (इथ्यू, लैक-कैन, ऐसिड-फास)।

मस्तक |—सरमें चक्कर आना,—देह बहुत सुस्त (क्रोकस, लैके, मस्क, नक्स), कमजोर (वेल, लैके) और काँपती है ; चेहरा म्लान ; बहरापन और कानमें आवाजके साथ सरमें चक्कर आना (Auditory vertigo=चायना, क्विनिन-सल्फ, लैके, नैट-सैलिसाई, पाइलोकार्प, थिरिड), माथा स्थिर रखनेपर आराम मालूम होता है, सरमें दर्द—माथेमें बहुत भार मालूम होता है और दर्द होता है और आँखके ऊपरी अंशमें और नाकके पार्श्वमें उत्ताप मालूम होना। दाहिनी आंख और ब्रह्मतालुके दाहिने पार्श्वमें तेज दर्द,—यह दर्द गलेके पिछले भाग तक फैल जाता है। सरके पिछले भागमें बोझा भार मालूम होनेकी तरह दर्द और इसी वजहसे रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है। ऐसा दर्द मानो माथेके पिछले भागपर एकाएक किसीने चोट मार दी (नैजा) ललाटके बीचवाले स्थानमें तेज दर्द, इसके साथ ही बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव होता है।

आंख |—भ्रम देखना,—चारों ओर नीला दिखाई देता है (वेल, लाई, स्ट्रान); पढ़ते पढ़ते दृष्टि लोप हो जाना (कैल्के, ड्रोसे, हिप, मिनि, नेट्र-मूर, रास-विनि, सल्फ, थूजा)। दीयेकी रोशनीमें आँखोंको तकलीफ होती है। आँखसे खूनका स्राव (वेल, कार्बो-वेज)। आँखें पीली हो जाती हैं (समूची देह पीली हो जाती है); डा० ऐलेन कहते हैं—शाङ्गलक या आंखके सफेद अंश (Cornea मदाह या शाङ्गलक और उपतारा (Iris) का

संयुक्त प्रदाह आराम होनेपर क्रोटेलस फिरसे स्वाभाविक दृष्टि पैदा कर देता है)। पलकोंका स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia),—फाड़ने वाला या छेदनेकी तरह दर्द—मानो आँख चारों ओर अस्त्रसे कट रही है; कभी कभी उसमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है; वृद्धि संध्यामें।

कान।—कानकी बीमारीकी वजहसे सरमें चक्कर आता है और श्रवण शक्ति घट जाती है; कानमें कितनी ही तरहकी आवाजें आती हैं और सरमें चक्कर आता है (नेट-सेलिसाई, किनिन-सल्फ)। कानके छेदसे खूनका स्राव होना। (साइक्यूटा, लेके, ऐ-नाई)।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव,—बहुव्यापक-संक्रामक रोगाधिकारमें खून पतला, काले रंगका जमता नहीं है, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना या सुस्ती मालूम होना। खसड़ा, चेचक आदिकी तरहके चर्मरोगके बाद पीनस रोग Ozoena=अरम, ऐसिड-नाई, कोड-सल्फ, सोरिनम।)

मुखमण्डल और मुख-विवर।—मुखमण्डल फूला, पीला या लाल होता है। मुर्देकी तरह रक्तहीन; सीसेके रंगका; दोनों ओंठ फूले, कड़े और सुन्न। देरसे रजःस्राव होनेकी वजहसे शरीरमें बहुतसी लाल फुन्सियाँ निकल आती हैं, खासकर चिबुकके ऊपर। निद्रितावस्थामें दाँत कड़मड़ाता है, मसूढ़ेसे खून निकलता है और मसूढ़ा सफेद रङ्गका दिखाई देता है। जीभ आगके रंगकी, चिकनी और चमकती है (पाइरोजेन); जीभसे खून निकला करता है—कर्कट रोगमें। खून मिली या फेन भरी लार बहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ मुंहके साथ कसकर बँधी हुई है—बोल नहीं सकती।

गलेके भीतर।—कण्ठनालीका बहुत ही दृढ़ संकोचन; कड़ी चीज निगलना असम्भव हो जाता है (कड़ी चीजें निगलनेपर कण्ठनालीका दर्द घट जाता है=इग्ने)। रोहिनी रोगमें (Dephthoria) या आरक्त ज्वरादिमें जिह्वामूलीय गह्वर (Fauces) या तालुग्रन्थि (Tonsils) का फूलना या सड़ना (Gangrene); खाली घूंट लेनेपर बहुत दर्द मालूम होता है, वमन या पतले दस्त होनेका उपक्रम हो जाता है और कण्ठमें दर्दकी वजहसे माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है। प्रदाहयुक्त झिल्ली फूली रहती है, और गहरी लाल रंगकी दिखाई देती है। कण्ठके भीतर मानो एक कील या खूंटी रखी

हुई है और ऐसा मालूम होता है, मानो उसीको निगलना पड़ेगा। ऐसा मालूम होता है मानो गला बन्द होता जाता है।

पाकस्थली ।—पाकाशयके ऊपर वस्त्र आदि कसे रहना असह्य मालूम होता है (ऐमोन-म्यूर, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, हिप, क्रियो, लैके, लाई, नक्स, नेट्र-म्यूर, ओलि-ऐन, स्पञ्जि, साइलि, सल्फ)। पित्तमय वमन और इसके साथ ही उद्वेग और क्षीण नाड़ी ; प्रत्येक महीने रजःस्रावके अन्तमें (पल्स, रजःस्रावके आरम्भमें=फास, रजःस्रावके समय=कार्बो-वेज, कैलि-फास, ऐमोन-म्यूर), पर दाहिनी ओर या चित्त होकर सोनेके साथ ही कालो-हरी के आरम्भ हो जाती है (दाहिनी करवट सोनेपर वमन घट जाता है= ऐण्टि-टार्ट), पीत ज्वराधिकारमें काले रङ्गकी या काफीकी तलीकी तरहकी रंग का वमन होता है (काला वमन=आर्स, चायना, हेलिबो, नक्स, वेरेट) दुर्दमनीय ज्वालामयी तृष्णा (ऐको, ऐनाक, वेल, कार्बो-वेज, कैस्टो, लैके, स्ट्रैमो) रक्त मिला वमन, कै हुआ रक्त पानीकी तरह होता है और जमता नहीं है।

अन्त्राशय ।—लम्बी साँस लेनेपर, यकृत प्रदेशमें तेज शलाका बेधनेकी तरह दर्द होता है—दबानेपर दर्द बढ़ जाता है। यकृतमें दर्द और उसकी वजहसे वमन और जाड़ा मालूम होता है। मारात्मक पाण्डुरोग या नेबा— समूची देह और नाक पीले रङ्गकी हो जाती है। इसके साथ ही खूनका स्राव। समूची देह फूल उठतीहै ।

मल ।—उदरामय,—मल काले रंगका (आर्स, कैम्फो, चायना, कूप्रम-ऐसेट, इपिका, मार्क, लेप्टन, अरम-म्यूर-नेट्र, ऐसिड-सल्फ)। या बहुत तरल, काफीकी तलीकी तरह, बहुत बदबूदार मल ; अस्वास्थ्यजनक वाष्प या सड़नेवाले पदार्थ मिले पदार्थ खाने या पीनेके कारण ; सड़ा हुआ मांस आदि खानेकी वजहसे (पाइरोजेन) ; पीतज्वर, विसूचिका, आंत्रिक (Typhoid) ज्वर या मोहज्वरके साथ उदरामय,—मल पीले रंगका और पानीकी तरह, पेटमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द तथा मन दुःखित और उदासीसे भरा रहता है। आम रक्त रोगमें,—सड़े हुए पदार्थके संस्रवसे उत्पन्न, गदला पानी पीने या बिगड़ी हुई चीज खानेसे उत्पन्न ; गाढ़ा काले रंगका बहुत ज्यादा पानीकी तरह खूनका स्राव होता है या अनजानमें पाखाना हो जाया करता है। आंतोंसे खूनका स्राव,—खून गाढ़ा काले रंगका और पतला। वमन, पेशाब और मल

निकलना,—एक साथ ही होता है।—इसके साथ ही शूथन और अन्त्राशयका संकोचन वर्त्तमान रहता है।

पेशाब।—खूनका पेशाब (टेरिब, क्विनिन-सल्फ, प्लम्बिटेट, यौलि-क्लो, मिलिफो, ऐसिड-नाई, टियुवार्क, इयुवा)। लालामूत्र (Albuminuria),—पेशाब बहुत थोड़े परिमाणमें, गाढ़ा और खून मिला रहनेकी वजहसे लाल और गाढ़ा होता है, कभी कभी पित्त मिला रहनेके कारण हरी पीली आभा लिये रंग का भी होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—निर्दिष्ट समयके एक सप्ताह पहलेसेही ऋतु आरम्भ हो जाता है,—स्राव आरम्भ होनेके पहले माथा और कानमें भार मालूम होता है, तलपेट और पीठमें दर्द होता है और दोनों पैर ठण्डे हो जाते हैं। यह दर्द दो दिन बाद गायब हो जाता है। ऋतुके पाँच दिवस पहलेसे तलपेटमें और उरु देशमें बहुत दर्द पैदा हो जाता है; कभी हृदय, कभी बाईं बाँह, और पृष्ट-फलकमें दर्द पैदा हो जाता है। प्रसवान्तिक (Puerperal) ज्वर या आक्षेप (Eclampsia) (एक्लिनेसिया; बेल, हायो, ऐको)। इसके साथ ही लाल-मूत्र और पूति-जनित (Septic) लक्षण आदि रहते हैं। बदबूदार प्रसवके बादका क्लेद स्राव। प्रसवके बादवाला जंघा शिरा आदिका प्रदाह या सफेद रङ्गकी सूजन,—छूनेसे ही दर्द बढ़ जाता है, (बेल-ब्राई)। विकल्प (Vicarious) रजः,—बहुत तरहके रोग भोगनेके कारण जिनका शरीर क्षीण हो गया है (डिजि; फास)। वयःसन्धिके समय रह रहकर शरीरमें उत्तापका आविर्भाव हो जाता है, और इतना ज्यादा पसीना होता है, (ऐमिल-नाई, लैके, कैलि-बाई, सैङ्गिव, मैङ्ग), कि रोगिनी सुस्त हो पड़ती है (ऐक्टि, इग्ने, सल्फ); जरायुसे बहुत दिनोंका स्राव,—खूनका रङ्ग काला, पतला और बदबूदार: इसके साथ ही शरीरमें खूनकी कमी। पीब सोख जानेकी वजहसे पैदा हुआ जरायुके (Septic) रोगमें प्रायः ही खूनका स्राव हुआ करता है; रक्त गाढ़ा लाल, पानीकी तरह, बदबूदार।

श्वास-यंत्र।—खाँसी,—खाँसनेपर आए वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना, और खून मिला कफ निकलता है। स्नायविक खाँसी,—सूखी, वायुनलीके भीतर, उत्तेजनाकी वजहसे—मानो गलेमें मिर्चेका तेज धुआँ घुस गया है या वायुनलीके भीतर एक छोटा अंश बहुत कुछ सूख जाता है; खासकर सूखी हवा लगने, लम्बी साँस लेने, बोलने या कण्ठनालीपर दबाव

हुई है और ऐसा मालूम होता है, मानो उसीको निगलना पड़ेगा। ऐसा मालूम होता है मानो गला बन्द होता जाता है।

पाकस्थली।—पाकाशयके ऊपर वस्त्र आदि कसे रहना असह्य मालूम होता है (ऐमोन-म्यूर, ब्राई, कैल्के,कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, हिप,क्रियो, लैके, लाई, नक्स, नेट्र-म्यूर, ओलि-ऐन,स्प्जि, साइलि, सल्फ)। पित्तमय वमन और इसके साथ ही उद्वेग और चीण नाड़ी ; प्रत्येक महीने रजःस्रावके अन्तमें (पल्स, रजःस्रावके आरम्भमें=फास, रजःस्रावके समय=कार्बो-वेज, कैलि-फास, ऐमोन-म्यूर), पर दाहिनी ओर या चित्त होकर सोनेके साथ ही कालीहरी कै आरम्भ हो जाती है (दाहिनी करवट सोनेपर वमन घट जाता है=ऐण्टि-टार्ट), पीत ज्वराधिकारमें काले रङ्गकी या काफीकी तलीकी तरहके रंग का वमन होता है (काला वमन=आर्स, चायना, हेलिबो, नक्स, वैरेट) दुर्दमनीय ज्वालामयी तृष्णा (ऐको, ऐनाक, वेल, कार्बो-वेज, केस्टी, लैके, स्ट्रैमो) रक्त मिला वमन, कै हुआ रक्त पानीकी तरह होता है और जमता नहीं है।

अन्त्राशय।—लम्बी सांस लेनेपर, यकृत प्रदेशमें तेज शलाका बेधनेकी तरह दर्द होता है—दबानेपर दर्द बढ़ जाता है। यकृतमें दर्द और उसकी वजहसे वमन और जाड़ा मालूम होता है। मारात्मक पाण्डुरोग या नैबा—समूची देह और नाक पीले रङ्गकी हो जाती है। इसके साथ ही खूनका स्राव। समूची देह फूल उठतीहै।

मल।—उदरामय,—मल काले रंगका (आर्स, कैम्फो, चायना, क्रूप्रम-ऐसेट, इपिक, मार्क, लेप्टन, अरम-म्यूर-नेट्र, ऐसिड-सल्फ)। या बहुत तरल, काफीकी तलीकी तरह, बहुत बदबूदार मल ; अस्वास्थ्यजनक वाष्प या सड़नेवाले पदार्थ मिले पदार्थ खाने या पीनेके कारण ; सड़ा हुआ मांस आदि खानेकी वजहसे (पाइरोजेन) ; पीतज्वर, विसूचिका, आंत्रिक (Typhoid) ज्वर या मोहज्वरके साथ उदरामय,—मल पीले रंगका और पानीकी तरह, पेटमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द तथा मन दुःखित और उदासीसे भरा रहता है। आम रक्त रोगमें,—सड़े हुए पदार्थके संस्रवसे उत्पन्न, गदला पानी पीने या बिगड़ी हुई चीज खानेसे उत्पन्न ; गाढ़ा काले रंगका बहुत ज्यादा पानीकी तरह खूनका स्राव होता है या अनजानमें पाखाना हो जाया करता है। आंतोंसे खूनका स्राव,—खून गाढ़ा काले रंगका और पतला। वमन, पेशाब और मल

पीब सोख जानेकी वजहसे ज्वर (Septicaemia=सेप्टिसिमिया)। जगह जगह काले दाग पड़ना; त्वचाके नीचे रक्तस्राव होनेके कारण लाल दाग, फैलनेवालाया सूजनका भाव मिला विसर्प,—त्वचा नीली आभा लिये लाल,—इसके साथही सुस्ती ला देनेवाला बोखार; बहुव्यापक (फैलेमवाले) रोगाधिकारमें या जीर्ण-देहवाले मनुष्यकी बीमारी। अंगुलीका फोड़ा,—पोड़ा नारंगा, रसभरी फुन्सियाँ, फोड़े, गले हुए जखम आदि,—इसके साथ ही धीमा बोखार रोगवाली जगह नीली आभा लिये मालूम होती है और स्राव बहुत थोड़ा होता है, काले रङ्गका, पतला और दूषित हुआ करता है; उदरामयके साथ सड़नेवाले जखम आदि। पुराने घावके चिन्होंपर फिरसे घाव हो जाता है (ऐसिड-फ्लू)। कीट पतङ्ग आदिका काटना (ऐन्थ्राक्सिन)। मुर्दा चीरनेके समय उसी अस्त्रके द्वारा अंगुली वगैरहके कट जानेपर (लैके) या गो-वीजका टीका लगवानेकी वजहसे बीमारियाँ (वैक्सिन, मैलेण्ड्रिन)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—हाथ पैर आदि ठण्डे, समूची देहमें रह रहकर गर्मी पैदा हो जाती है। पसीना ठण्डा और लाल रंगका। पीत-ज्वरमें हरेक लोमकूपसे खूनका स्राव होता है और पित्त-मिला व खून मिला दस्त तथा कै होती है। मेरुमज्जा और मस्तिष्कके आवरणका प्रदाह। सड़ी हुई चीजोंके संस्रव (Septic) या त्वचाके नीचे खूनका संचार हो जानेकी वजहसे (Purpuric) ज्वर।

वृद्धि।—सवेरे नींद खुलनेपर (लैके), सन्ध्याके समय (आँखोंमें दर्द आदि)। शरीर हिलाने और परिश्रमसे, ठण्डी हवामें (कण्ठनाली और श्वास-यंत्रके लक्षणमें)। सूखी हवामें (खाँसी), दाहिने पार्श्वमें और वसन्त ऋतुमें जब हवाका गर्म होना आरम्भ हो जाता है।

घटना।—विश्रामसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—डा० हेरिङ्गने लैकेसिस, नेजा, इलैप्स, और क्रोटेलसमें सादृश्य और प्रभेदका इस तरह वर्णन किया है:—"क्रोटेलस,—पतले खूनका स्राव, शरीरकी त्वचा (पित्त-ज्वरमें काले वमन आदिके साथ), डिफ्थिरिया रोगाधिकारमें नाकसे खूनका स्राव इत्यादि अवस्था क्रोटेलसका निर्णायक लक्षण है। पाण्डु-रोगमें स्नायविक लक्षण आदि मौजूद रहते हैं। लैकेसिसमें शरीरकी त्वचा ठण्डी और सूखी रहनेके बदले ठण्डी और पसीना

पड़नेसे ही खांसी पैदा हो जाती है।—कण्ठनालीपर किसी तरहका दबाव बिलकुल ही सहन नहीं होता, नींद खुलनेपर खांसी बढ़ जाती है (लैके)। हूप खांसी,—प्रकोपके समय चेहरा फूल जाता है, कभी कभी नीला हो जाता है, आंख लाल हो जाती है, नाकसे खूनका स्राव और फेन-भरा गाढ़ा गोंदकी तरह और खूनके साथ कफ निकला करता है, इसके साथ ही फेफड़ेकी सूजन और पक्षाघात हो जानेका उपक्रम हो जाता है।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डमें बहुत दर्द और कलेजा धड़कना; ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्ड कलाबाजी खानेकी तरह उलट पुलट गया है।

प्रत्यङ्गादि।—कलेजा कांपना। बाएँ हाथसे थोड़ा भी परिश्रम करने पर वह अवश हो जाता है। बाईं तलहथीमें मधुमक्खीके काटनेकी तरह या डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। नखके नीचेसे खूनका स्राव। दोनों पैर सामान्य कारणसे ही सुन्न हो जाते हैं। दाहिने अङ्गका पक्षाघात। थोड़े ही परिश्रमसे थकावट आ जाती है। रोगीकी सब पेशियाँ इच्छानुसार काम नहीं करती। आक्षेप,—हाथ पैर आदिका कम्पना और मुंहसे मानो फेन निकला करता है। रोगी जोरसे चिल्ला उठता है और प्रलाप किया करता है। भीतरी कम्पन—मानो आसन्न विपत्तिकी आशंकाकी वजहसे; बैठनेके समय या पैरपर पैर रखनेपर, दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं।

निद्रा।—बहुत अधिक स्वाभाविक उत्तेजनाकी वजहसे नींद न आना (काफि)। औंघाई या निद्राका आवेश रहनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो)। मोह-प्राप्त या आच्छन्न अवस्था; लक्षण आदि प्रायः नींदके बाद बढ़ जाते हैं (लैके, बेल, ऐसिड-नाई, जिञ्जिबार)। भ्रमणके सपने (ब्रोम, नेट्र-कार्ब, साइलि); कलहके सपने (ऐलू, ऐण्टि-क्रू ड, कास्टि, कोना, लैके, नेट्र-म्यूर, पल्स) और मृत-व्यक्तिके सपने (ऐनाक, ब्रोम, कोना, ऐसिड-हाइड्रो-सियानिक, ऐसिड-फास फ्लेट, क्रोटेलस-कैस्कोवेला)।

त्वचा।—समूची देहकी त्वचा पीले रङ्गकी [रक्त-शोधनकी कमीकी वजहसे (Hæmatic) पित्त-मिल जानेकी वजहसे नहीं, डा० हेरिङ्ग—कास्टि, कैमो, चेलिडो, चायना, डिजि, आयोड, लैके, मार्क, प्रम,]; नैश,—

ऐलोपैथगण इसका जीभ, दाँत, और मुखमण्डलके स्नायुशूलमें व्यवहार किया करते हैं।

शक्ति।—मूल विचूर्ण और निम्नशक्ति।

क्रोटन टिग्लियम।

(CROTON TIGLIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जमालगोटेके बीज या तेलसे सुराके साथ मदर टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— हैजा या उसी तरहका उदरामय; सर्दी; खाँसी; अतिसार; कर्णरोग; खसड़ा; आँखकी बहुत सी बीमारियाँ; स्नायुशूल; स्तनकी घुण्डीमें दर्द; आँखोंका प्रदाह; सन्निवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—समूचा अन्त्रमण्डल (आँतें) ही इसका प्रधान आक्रमण स्थान है। अन्त्रपथके भीतरवाली श्लैष्मिक झिल्लीके प्रत्येक कूपसे देहमें रहनेवाले खूनका जलीय अंश निकाल-कर बहुत ज्यादा पानी की तरह मल और उसके साथ ही उदरामय (वैरेट्रम) पैदाकर देता है, और खुजलीकी तरह त्वचापर बहुत खुजलानेवाला खसड़ा वाक्क, निकल (रास) पड़ता है। क्रोटन टिग्लियमके नीचे लिखे कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं:— (१) स्तनकी घुंडीमें घाव,—बच्चा जितनी बार स्तन खींचता है, उतनी ही बार उस स्तनसे उसी ओरके पृष्ट फलक तक तेज दर्द मालूम होता है (साइलिशिया)। (२) समूचे शरीरमें ऐसी फुन्सियाँ निकल आती हैं, जो बहुत खुजलाती हैं, जोरसे खुजलानेपर जलन होती है, पर बहुत सावधानी से धीरे धीरे खुजलानेपर आराम मिलता है। (३) बार बार मलवेगके साथ बड़े वेगसे पानीकी तरह पीले रंगका मल निकलता है,—प्रति बार स्तन पिलानेके बाद पाखाना होता है और उसके पहले पेटमें बहुत दर्द होता है, (४) पाखाना होनेके पहले उदरमें ऐसा मालूम होता है, मानो पानी हिल रहा है (कल-कल होता है = ऐलो) (५) स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही जननेन्द्रियमें रस भरी

होनेके कारण) लसदार हुआ करती है, जले घासकी तरह रस्सी-वाला खूनका स्राव और शरीरके वाम पार्श्वकी बीमारीके साथ इसका बहुत ही निकट सम्बन्ध दिखाई देता है। इलैप्स कार्ण-विवरसे पीवका स्राव और दाहिने फेफड़ेकी बीमारीमें अधिक लाभदायक हुआ करता है। काले सांपके विष-द्वारा (नेजा या कोब्रा) निकला हुआ खून जमकर सूतकी तरह परिणत हो जाता है।" क्रोटेलस देहके दाहिने पार्श्व स्थित यंत्रादिके (जैसे यकृत) ऊपर क्रिया प्रकाश किया करता है। काला रक्तमय कफ इलैप्सका एक और भी लक्षण है। टैरेण्टियुला-क्यवेन्सिस, आर्सेनिकम, पाइरोजन, लैकेसिस, इत्यादि भी इसके सदृश हैं।

तुलनीय।—कैसाकाविला (मृत-व्यक्तिकी चिन्ता या सपने); लीरोसि, (धनुष्टंकार)। साइलि (टीकाका परिणाम); कैम्फर (कम्पन और शीत अनुभव); बेलेडोना (औंधाईपर नींद नहीं आती) इत्यादि।

दोषघ्न।—लैकेसिस।

शक्ति।—२ रे शततमिकसे २०० शततमिक क्रमतक साधारणतः व्यवहृत होता है। बहुत-से चिकित्सकोंने उच्चतर और उच्चतम क्रम व्यवहार कर उत्तम फल प्राप्त किया है।

क्रोटन-क्लोरेल।
(CROTON CHLORAL)

दूसरा नाम।—क्रोटन-क्लोरेल—हाइड्रेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण; यह सुरासार और ग्लिसरिनमें गल जाता है।

उपयोगिता और आभास।—डा० हेलका कथन है, कि क्रोटन-क्लोरेलके प्रयोगसे केवल मस्तिष्क और मस्तिष्कके स्नायु-समूहका पक्षाघात पैदा हो जाता है, पर शरीरके बाकी सभी स्नायुओंमें अपना काम करनेकी शक्ति रहती है।

दर्द (युफ्रे, हिप, लाई, मार्क, ऐसिड-नाई, ओलि-ऐन)। पीव बहनेवाला आंखोंका प्रदाह, पलकोंका फड़कना (बेल, कैमो, हिप, हायो, कोडिइन, लाई, स्ट्रैम) अस्पष्ट दृष्टि—मानो बादल या अंधेरेके भीतरसे देख रहा है (ऐल्यू, बेल, कैल्के, कास्टि, क्रोक, फास, ऐसिड-फास, रियुटा, सल्फ)। बाई आंखकी योजक त्वचा (Conjunctiva) लाल हो जाती है (सैबाड, बैलि)।

पाकस्थली।—बहुत मिचली—दृष्टि-लोप, ललाटमें पसीना और पेट फूल उठता है, ओकाई आती है और सरमें चक्कर आता है; पानी आदि पीने पर बढ़ना (नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, पल्स, रास, टियुक्र)। मिचली और वमन—श्लेष्मा, वमनके बाद मुंहका स्वाद कड़वा हो जाता है। तेलकी गन्ध-मिला पीले रंगका जलीय (पानीकी तरह) वमन—वमनके पहले मिचली; पाकस्थली में भार मालूम होना और चेहरेपर पसीना हो जाना, रातके समय खट्टी कै; एकाएक पीली आभा लिये सफेद रङ्गकी फेन-भरी कै; पित्त वमन। पाकस्थलीमें ऐसा दर्द मानो खरोंच रहा है। पेटमें ऐसी जलन मानो जलता हुआ अंगारा छू गया है; उदरके ऊपरी प्रदेशमें जलन और उत्ताप; पेट गड़गड़ाता है, और वक्षके ऊपरी भागमें दबाव मालूम होता है।

अन्त्राशय।—पेट भरा हुआ मालूम होता है और फूल उठता है, नाभि प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो मोच खा रहा है। बेचैनी पैदा करनेवाला खालीपन, शून्यता और प्यास मालूम होना; उदरमें कलकल गड़गड़ शब्द। आंतों में हुड़ हुड़ गुड़गुड़ शब्द—मानो वह पानीसे भरी हुई है—विशेषकर उदरके बाएं पार्श्वमें। अन्त्रशूल,—गर्म दूध पीनेपर घट जाता है। पाखाना होनेके पहले ऐसा मालूम होना मानो अन्त्राशय में पानी हिल रहा है (गैम्बो, ग्रैटि, कैलि-कार्ब, पोडो, थूजा)।

मल।—पेट फूलनेके कुछ ही बाद जोरसे पाखाना लग जाता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें वायु निकलते निकलते एकाएक मल निकल पड़ता है। मल पीला पानीकी तरह; बार बार वेगके साथ आम मिला, कुछ भूरे रंगका पाखाना हो जाता है; या सफेद रङ्गका टुकड़े टुकड़े आम मिला पानी की तरह पतला पाखाना होता है; मलद्वारसे बन्दूककी गोलीकी तरह बड़े वेगसे निकलता है (ऐलो, कैल्के-फास, फास, गैम्बोज, ग्रैटि, जैट्रोफा, पोडो, सल्फ,,—छिटकाकर निकलता है=नेट्र-सल्फ, ; पतली धारकी तरह निकलता

फुन्सियाँ या छोटे छालेकी तरह उद्भेद निकलते हैं और उनमें बहुत खुजलाहट होती है,—उनमें इतना दर्द रहता है, कि खुजलानेपर बहुत तकलीफ होती है। (६) खाँसी,—तकियेसे माथा छूते ही तेज खांसी पैदा हो जाती है,—रोगी को रात भर कमरेमें टहलकर या रातभर कुर्सी पर बैठकर सोनेको बाध्य होना पड़ता है। (७) कर्ण-विवरसे पीब निकलता है और बहुत खुजलाता है (८) पाखाना होने बाद मलद्वार में बहुत दर्द मालूम होता है। (९) पीब बहनेवाली हड्डीमें जखम इत्यादि।

लक्षणावली।

मन।—शंकान्वित चित्त, मानो स्वयं उसपर कोई विपत्ति आना ही चाहती है (ऐमोन-कार्ब, ऐक्टि, क्लिमेट, क्यूप्रम ; लिलियम ; सिपि, वेलि, वेरेट)। किसी तरहका काम करनेकी इच्छा नहीं रहती। रोगीको ऐसा मालूम होता है कि उसकी चिन्ता-शक्ति उसके निजी स्वार्थमें ही आवद्ध हो रही है—अपना विषय छोड़कर और किसी बाहरी विषयमें उसकी सोचनेकी शक्ति नहीं है।

मस्तक।—ऐसा मालूम होता है, मानो माथा मेघाच्छन्न हो रहा है। (ऐक्टि, आर्जेण्ट-नाई), मानो सब गड़बड़ हो रहा है, कुछ भी स्थिर नहीं कर सकता, सरमें चक्कर आना,—मानो तेज शराब आदि पिया है ; मस्तिष्कमें दुर्बलता, मुखमण्डल म्लान, देह बहुत कमजोर और मिचली ; निर्मल वायुमें वृद्धि। सरमें दर्द होता है और चक्कर आता है (आर्जेण्ट-नाई, वेराइ, लैके, पलस), माथा—भार मालूम होता है, सीधे खड़े होनेपर गिर जानेका उपक्रम होता है ; बैठा भी नहीं रह सकता,—विशेषकर ऊपरकी ओर नजर करनेपर (पलस, साइलि)। सरमें दर्द,—सवेरे बढ़ना (ब्रोम, कैल्के, कैलि-बाई, नक्स-वोम, फास, पोडो, पलस, सिपि, स्ट्रिला)। कनपटीमें जलन होती है—मानो जलता हुआ अंगारा छू गया है ; टोपी पहननेपर तकलीफ मालूम होती है।

आँख।—मानो किसी शस्त्रसे काट रहा है—ऐसा दर्द,—विशेषकर बाईं आंखमें ; बाईं आंखके कोनेमें चिलक मारनेकी तरह दर्द या शूल वेदना की तरह दर्द। ऐसा मालूम होता है मानो आंखें सूतेमें बंधकर पीछेकी ओर खिंच रही हैं (हिप, ओलियेन, पेरिस)। आंखमें डंक मारनेकी तरह

निकलता ; सवेरे या सन्ध्याके समय थोड़े परिमाणमें श्लेष्मा निकला करता है और छातीमें दबाव तथा श्वास-लेनेमें तकलीफ होती है। सीढ़ीपर चढ़नेके समय बढ़ जाता है (ऐमोन-कार्ब, आर्स, ऐंगस, बोर, हायो, मार्क, ऐसिड-नाई, रेटान, रियुटा)। बाएं बगलसे पीठतक मानो जकड़ा हुआ है—इस ढंगका दर्द (मार्टस-काम, पिक्स-लिक, थिरिड ; सल्फ देखो)। हृदस्पन्दन इतना अधिक कि ऊपरसे दिखाई देता है,—स्त्री सम्भोगके समय और भोजनके बाद सोनेके समय। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें शस्त्राघातकी तरह दर्द,—खासकर सांस लेनेके समय।

त्वचा।—शरीरकी त्वचामें बहुत खोंचन मालूम होती है। तलहत्थी बहुत गर्म और शिराएं फूली हुईं, शरीर बहुत खुजलाता है पर जोरसे खुजलानेपर जलन होती है और दर्द मालूम होता है, धीरे धीरे खुजलानेपर आराम मिलता है। विसर्पमें बहुत खुजली होती है। समूची देहमें छोटी छोटी लाल लाल रस-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं, जो बहुत खुजलाती हैं। पीव-भरी (Pustules) निकलती हैं। रोगवाली जगह लाल और गर्म मालूम होती है और उसमें डंक मारनेकी तरह यंत्रणा होती है।

वृद्धि।— उदरामय होनेपर, शरीरको हिलानेसे, जलीय पदार्थ पीनेसे (इलाब्विड, पोडो); *भोजन या स्तन पीनेके समय (आर्जेण्ट-नाई, आर्स); गर्मीके दिनोंमें मिष्टान्न या फल खानेपर (चायना, कार्बो-वेज, गैम्बो, आर्जेण्ट-*नाई, मार्क-वाई, इलाब्विड, पल्स, सिस्स-कैन) और बहुत थोड़ी मात्रामें खाने-पीनेपर। साधारणतः स्पर्शसे, मलनेपर या शरीरको हिलानेपर, बैठने या हाथ पैर सिकोड़कर सोनेपर, निर्मल वायुमें (सरमें चक्कर आना और सुस्ती), शरीरकी गर्म अवस्थामें ठण्डा पानी पीनेपर (सम्पूर्ण स्वरलोप); गर्म दूध पीनेपर (अन्त्र-शूल) और रातमें।

उपशम।—नींद आनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—प्रति-विष या दोषघ्न—ऐण्टिम-टार्ट, यह स्वयं "रास" का प्रतिविष है, क्योंकि पुराने उदरामयमें=कैलि-ब्रोम और फास, इसके सदृश गुणवाली दवाएं हैं ; स्तनके दर्दमें=ब्रायो, बोरैक्स, फेलैन और साइलिसिया। पाखाना होनेके बाद मूर्च्छा-भाव=नक्स।

है=इलैट); वृद्धि—खाने पीने या स्तनका दूध पीनेपर और गर्मीके दिनोंमें (पीनेपर बढ़ना=आर्जेण्ट-नाइ, आर्स, ब्रायोनिया; स्तनका दूध पीनेपर=ऐण्टि-क्रूड ; स्तनका दूध पीनेके समय=कोलोसिन्थ)। नाभि-प्रदेशपर दबाव डालने से मलद्वारतक दर्द फैल जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार बाहर निकल पड़ेगा। मलद्वारमें जलन होती है (ऐलो, आर्स, केन्थ, कैलि-कार्ब, सल्फ)। मलद्वारसे मानो एक कील या खूंटी बाहर निकलना चाहती हैं—इस ढंगका दर्द होता है।

पेशाब ।—मूत्र,—बहुत ज्यादा पीला और धुमैला ; कभी कभी गदला दिखाई देता है ; सफेद रङ्गके परमाणु सब उसपर तैरा करते हैं। सबेरे सफेद फेन-भरा पेशाब ; दिन चढ़नेपर पेशाब सफेद होता है और उसमें सफेद तली जमती है ; रातमें—कमला नीबूके रंगका पेशाब, उसकी तली गदली और रूईकी तरह दिखाई देती है। रातमें और सवेरे आगकी तरह गहरे लाल रङ्गका और रूईकी तरह पदार्थ-भरा पेशाब ; कभी कभी लाल रंगका पेशाब और तलीमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा इकट्ठा रहता है—लकड़ीसे हिलानेपर वह लम्बे लम्बे सूतके आकारमें बदल जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—मुष्क (Scrotum) बहुत खुजलाता है, और इसीलिये रातमें अच्छी तरह नींद नहीं आती। खुजलानेपर बहुत आराम मालूम होता है। मुष्ककी त्वचापर रस-भरी फुन्सियाँ और खसड़ा जैसा निकल आता है और वह बहुत खुजलाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जननेन्द्रियमें बहुत खुजली होती है,—धीरे धीरे खुजलानेपर दोनों स्तन फूले और कड़े हो जाते हैं। स्तनवृन्तसे पृष्ठ-फलकतक दर्द मालूम होता है। स्तनकी घुंडीमें स्पर्श सहन नहीं होता,—बच्चेके स्तन पीनेके समय माताके स्तनवृन्तसे लेकर पृष्ठ-फलकतक तेज और असह्य दर्द होता है। (साइलिसिया)।

श्वास-यंत्र ।—वायुनलीमें घड़घड़ शब्द करनेवाला श्लेष्मा एकत्र होता है, श्वासके समय विशेष बढ़ जाता है। खांसी,—तकिया छूते ही तेज और प्रबल खाँसी आने लगती है। श्वास-रोधक खाँसी,—रोगीको बाध्य होकर घरमें टहलना पड़ता है या कुर्सीपर बैठकर सोना पड़ता है। बार बार श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा करता है ; वायुनलीभुजके भीतरका श्लेष्मा सहजमें नहीं

पाखानाका वेग और आंतोंमें शूल, रातमें सोई हुई अवस्थामें बढ़ जाता और शय्या छोड़कर चलनेपर घटा हुआ मालूम होता है। पेशाब फेन होता है, तथा लार मिला और खून-भरा होता है। छोटी बालिकाओंका यह बहुत आश्चर्यरूपसे आराम कर देता है।

लक्षणावली।

मन।—एकदम उन्माद,—जो सामने आता है, उसे तोड़ फेंकता आदमियोंको गाली देता है, मारने और उनपर थूक देनेको इच्छा; कभी व उन्हें काटने दौड़ता है। बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना, सहजमें ही जाता है। बहुत मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे नींद खुलनेपर उठ बैठ है और दो चार न समझमें आनेवाली बातें बाहकर फिर सो जाता है औ मोह प्राप्त अवस्थाकी भाँति पड़ा रहता है।

आंख।—ऊपरकी ओर घूमा करती है; पुतली छोटी हो जाती है।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल और फूला हुआ; मुंहमें छाले।

पाकस्थली।—वमन,—पित्त और श्लेष्मा या भूरा बदबूदार पदार्थ वमन होता है, पाकस्थलीमें अधिक परिमाणमें पित्त इकट्ठा हो जानेकी वजह से बार बार ओकाई आती है। मानो कोई जीव पाकाशयकी आवरण त्वचामें दाँतसे काटता है या नखसे आघात करता है। पाकाशयमें जलन मालूम होना।

मलान्त्र।—मलकी आँतमें सूजनकी वजहसे पाखाना होनेमें बाधा पड़ती है। मलद्वार अधिक परिमाणमें बाहर निकल पड़ता है और उसका रंग गहरा लाल दिखाई देता है। मलद्वारमें बड़ा अर्बुद। बवासीर जिससे स्राव होता है, काला खून या पीबकी तरह पीले रङ्गके रसका स्राव होता है। मलद्वारमें जलन और खुजली होती है, मलद्वारके बाहर मसा पैदा हो जाता है (सुफ्र, कास्टि, थूजा)। आम-रक्त रोगमें (Dysentry),—खून मिली आंव अनजानमें निकल पड़ती है; आँतोंमें बहुत अधिक मरोड़ होता है,—रातमें सोनेके समय बढ़ जाता है; शय्या छोड़कर टहलते रहनेपर आराम मालूम होता है।

शक्ति ।—इसका निम्न क्रम प्रयोग करनेपर यदि
मिटाना न होना चाहिये । कितनी ही बार ६ ठा शततमिक
३० क्रमसे लाभ न होनेपर ५०० शततमिक एक मात्रा सेव
दिनके भीतर सम्पूर्ण आरोग्य हो जाता है ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन ।

क्यूवेबा ।

(CUBEBA OR PIPER CUBEBA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बिना पकी, कच्ची कबाबचीनीको सु
सार्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदा
पेशाबमें अण्डलाल ; मुँहमें जखम ; घुंड़ी खाँसी ; अतिसार ;
शय्यामें पेशाब हो जाना ; पुराना मेह-रोग ; प्रमेह ; आँतोंका
अण्डकोषका प्रदाह ; वात ; शीत-पित्त या आमवात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत प्राचीन कालसे प्रमेह
और पुरानी दोनों ही अवस्थाओंमें इसका व्यवहार होता आया है । डा
इसका लक्षण इस तरह बताया है,—यदि पहली अवस्थामें उपयोगी
प्रयोग करनेपर नया प्रदाह घट जाये और यदि प्रसवके बाद मू
के भीतर जलन और स्राव गाढ़ा हो, पीले रंगका या पीबकी तरह हो
तो क्यूबेबा उपयोगी है (पल्सेटिलाका स्राव इसी तरहका होता है
हलका होता है ; मार्क्यूरियसका स्राव भी ऐसा होता है, पर सब लक्षण
बढ़ जाते हैं) ; परन्तु पुराने प्रमेहका पतला सफेद स्राव इन तीन दवा
किसीका भी लक्षण नहीं है,यह केवल मूत्रनालीकी श्लैष्मिक झिल्लीपर ही
क्रिया नहीं दिखाता, बल्कि आँतें और वायुनलीकी झिल्लीके ऊपर भी
वैसा ही प्रभाव है,इसके अलावा स्वस्थ शरीरमें इसका सेवन करनेपर
में जलन और सूखापन पैदा करता है ; बार बार लार निगल जानेकी
होती है पाकाशय, अन्नाशय और मलान्त्र वगैरहमें जलन मालूम

मालूम होता है, मानो कोई आल्पीन गड़ा रहा है। मुखमण्डलपर अनगिनती ऐसे व्रण निकल आते हैं, जिनकी नोक काले रङ्गकी रहती है। दबानेपर उसके भीतरसे खील निकलती है। शिश्नके ऊपर पीव-भरी फुन्सियां निकल आती हैं, खाल उधड़ जाती है और उसमें पीव पैदा हो जाता है। शिश्नके ऊपर गड़हेकी तरह गन्दा जखम पैदा हो जाता है।

वृद्धि।–(अम्ल-शूल) रातमें सोनेवाली अवस्थामें।

घटना।—शय्या छोड़कर घूमने या टहलनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कोपेवा, पाइपर, मिथिस, केनाब-सेट, टेरिब, कैन्थ, केप्सि, सैण्टेलम।

तुलनीय।—कैन्थरिस (मूत्रस्थलीकी उत्तेजना), आयोड (काली-खाँसी)।

शक्ति।—२री दशमिकसे ३री शततमिक।

क्युकर्बिटा पेपो।

(CUCURBITA PEPO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—देशी कोंहड़ेके ताजे डण्ठलके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—फीता या पट्ट क्रिमि, गर्भावस्थामें वमन, भोजन करते ही, भयंकर मिचली वगैरह अवस्थाओंमें यह बहुत लाभ दायक है। फीता जैसी क्रिमिमें दो आउन्सके अन्दाज बीज संग्रह कर, आगपर सेंककर ऊपरवाला छिलका फेंक देना चाहिये, इसके बाद भीतर-का गूदा खाना चाहिये—इसके खानेके १४।१५ घण्टा पहले कुछ न खाना चाहिये। खाली पेट सेवन करना चाहिये। इसके दो घण्टे बाद ही कैस्टर आयलका जुलाब लेना चाहिये।

शक्ति।—अन्यान्य रोगोंमें मूल अर्क या प्रथम दशमिक क्रम।

श्वास-यंत्र ।—नासारन्ध्र और कण्ठनालीमें सर्दी अर्थात उसमें श्लेष्मा सञ्चय हो जाता है और नाक तथा कण्ठनालीसे बदबू निकलती है और बदबूदार कफ निकलता है ; नाकके पिछले छेदसे गलेमें श्लेष्मा गिरता है कण्ठमें जलन, सूखापन मालूम होना और स्वरभङ्ग हो जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय और पेशाव ।—मूत्रनालीसे बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव होता है। पुराना प्रमेह (Gleet),—लिङ्गेन्द्रिय फूली और कड़ी हो जाती है ; अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय परितृप्तिकी बहुत ज्यादा लालसा पैदा हो जाती है ; मूत्रनालीमें कतरनेकी तरह या जलन पैदा करनेवाली तकलीफ पैदा हो जाती है,—विशेषकर प्रसवके बाद (कैल्के, कैनाब, कैन्थ, कैप्स, कोलचिकम ; डिजि, लैके, मार्क, नैट्र-कार्ब, फास, ओलियेन) ; स्राव—हरा पीले रंगका, गाढ़ा पीब (कोपैवा ; मार्क, सेलिन, जैसे),—कपड़ेमें दाग पड़ता है। बार बार पेशाबका वेग, पर पेशाबकी धार सूक्ष्म रहती है—थोड़े परिमाणमें (कैन्थ, कोलचि, डिजि, हेलिबो, स्टैफ)। विशेषकर सन्ध्याके समय। स्त्री-सम्भोगके बाद खून मिला पेशाव होता है, मुष्ककी त्वचाके ऊपर खुजली और जलन-भरे जखम या फटे घाव पैदा हो जाते हैं। (क्रोटोन-टिग)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—मूत्रनाली और योनिका प्रदाह,—तेज दर्द और बहुत ज्यादा स्रावके साथ बहुत दिनोंकी पुरानी बीमारीमें। प्रदर,—स्राव बहुत ज्यादा पीला या हलके हरे रङ्गका, बहुत जखम करनेवाला और बदबूदार ; योनिके बाहरी भागमें बहुत ज्यादा सुरसुरीकी वजहसे ऋतु समयके पहले ही हो जाता है और ऋतुके पहले और बाद प्रदरका स्राव हुआ करता है। छोटी बालिकाओंको कड़वा प्रदरका स्राव (कैनाब-सैट, कैल्के-कार्ब, मार्क-प्रोटो, मिलिफो, सिफिलिन, हाइपिर)।

त्वचा ।—आमवातकी तरहके उद्भेद ; शरीर बहुत खुजलाता है ; छोटी लाल लाल कुछ ऊँची फुन्सियां—इनमें ऐसा दर्द होता है, मानो कोई कीड़ा डङ्क मार रहा है और कुटकुटाहट पैदा हो जाती है। दोनों उरुके भीतरकी ओर आमवातकी तरह उद्भेद निकलना ; स्त्री-योनिके बाहरी भागमें बहुत सुरसुरी होनेकी वजहसे रोगिनीमें आलिङ्गनकी इच्छा पैदा हो जाती है। चेहरेपर खसड़ेकी तरह उद्भेद निकलते हैं और उनमें ऐसा

मालूम होता है, मानो कोई आल्पीन गड़ा रहा है। मुखमण्डलपर अनगिनती ऐसे व्रण निकल आते हैं, जिनकी नोक काले रङ्गकी रहती है। दबानेपर उसके भीतरसे खोल निकलती है। शिश्नके ऊपर पीव-भरी फुन्सियां निकल आती हैं, खाल उधड़ जाती है और उसमें पीव पैदा हो जाता है। शिश्नके ऊपर गड्ढेकी तरह गन्दा जखम पैदा हो जाता है।

वृद्धि।–(अम्ल-शूल) रातमें सोनेवाली अवस्थामें।

घटना।—शय्या छोड़कर घूमने या टहलनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कोपेवा, पाइपर, मिथिस, कैनाब-सैट, टेरिब, कैन्थ, कैप्सि, सैण्टेलम।

तुलनीय।—कैन्थरिस (मूत्रस्थलीकी उत्तेजना); आयोड (काली-खांसी)।

शक्ति।—२री दशमिकसे ३री शततमिक।

क्युकर्विटा पेपो।

(CUCURBITA PEPO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—देशी कोंहड़ेके ताजे डण्ठलके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—फीता या पट्ट क्रिमि, गर्भावस्थामें वमन, भोजन करते ही, भयंकर मिचली वगैरह अवस्थाओंमें यह बहुत लाभ दायक है। फीता जैसी क्रिमिमें दो आउन्सके अन्दाज बीज संग्रह कर, आगपर सेंककर ऊपरवाला छिलका फेंक देना चाहिये, इसके बाद भीतर-का गूदा खाना चाहिये—इसके खानेके १४।१५ घण्टा पहले कुछ न खाना चाहिये। खाली पेट सेवन करना चाहिये। इसके दो घण्टे बाद ही कैष्टर आयलका जुलाब लेना चाहिये।

शक्ति।—अन्यान्य रोगोंमें मूल अर्क या प्रथम दशमिक क्रम।

क्युलेक्स मस्का।

(CULEX-MUSCA)

परिचय।—एक तरहका मच्छड़।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

उपयोगिता और आभास।—नाक छिड़कते ही सरमें चक्कर आ जाना—इसका निर्देशक लक्षण है।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

कूफिया विस्कोसिसिमा।

(CUPHEA VISCOSISSIMA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जुलाई या अगस्त महीनेमें संग्रह कर ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—निम्नलिखित लक्षणोंमें लाभदायक हैं;—बच्चोंका हैजा या रक्तामाशय।

उपयोगिता और आभास।—बच्चोंकी विसूचिका, रक्तामाशय और अम्ल रोगमें दहीकी तरह के और जवानोंका अजीर्ण पदार्थ आदि वमन वगैरहमें इसका लाभ प्रधान रूपसे दिखाई देता है। दूध या खाये हुए पदार्थ का अम्लमें परिणत हो जानेकी वजहसे बीमारियाँ; खाये हुए पदार्थ बिना पची अवस्थामें या दूध दही के आकारमें के हो जाते हैं और बार बार हरे रङ्गका पानीकी तरह खट्टा पाखाना होता है; बच्चा बहुत बेचैन रहता है और उसे बोखार रहता है। पेटमें कुछ भी नहीं रहता; ऐसा मालूम होता है, मानो खाये हुए पदार्थ आदि बच्चेके मुंहमें जानेके साथ ही ज्यों के त्यों, बिना बदली हुई अवस्था के ही मलद्वारसे बाहर निकल जाते हैं (आर्जेण्ट-नाई)। रक्तामा-

शय रोगमें—थोड़े परिमाणमें खून मिला मल,—काँखना और बहुत तकलीफ; इसके ऊपर प्रबल ज्वर, बेचैनी और अनिद्रा मौजूद रहती है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—इथ्यूजा, युफोर्ब-कोरो, सिकेलि, आर्स।

शक्ति ।—मूल अर्क।

क्यूप्रेसस-आस्ट्रैलिस।
(CUPRESUS AUSTRALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फल और पत्तोंसे अरिष्टके आकारमें यह दवा तैयार होती है।

उपयोगिता और आभास ।—छेदने या धक्का देनेकी तरह तेज दर्द; सारे शरीरमें उत्ताप मालूम होना, वगैरह लक्षणवाले वात और सूजाक रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—एबीज, सेबाइना, थूजा।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

क्यूप्रेसस-लौसोनियाना।
(CUPRESUS LAUSONIANA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फल और पत्तोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—डा० बार्नेटने इसकी परीक्षा की थी। **पाकाशयमें तेज दर्द** इसका निर्देशक लक्षण है।

डा० बार्नेट इसे अर्बुद रोगमें सेबाइना और थूजाके सम-लक्षणमें व्यवहार करते थे।

शक्ति ।—निम्न शक्ति।

क्यूप्रम ऐसेटिकम।
(CUPRUM ACETICUM)

दूसरा नाम।—ऐसिटेट आव कापर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीमें मूल अर्क और निम्न क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है:—कलेजेमें दर्द ; संन्यास ; मस्तिष्ककी बीमारी ; भवोंका स्नायुशूल ; मस्तिष्क मेरु-मज्जाके आवरणका प्रदाह ; हैजा ; ताण्डव ; घुंडी यानी काली खाँसी ; अतिसार ; कितने ही तरहके उद्भेद ; विसर्प ; विभ्रम या भ्रम भरी चीजें देखना ; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय ; मानसिक विकार ; खसड़ा ; पक्षाघात ; चेचक या लाल ज्वर ; फीतेकी तरह कृमि ; मूत्रघातकी वजहसे विषाक्तता ; क्रूप-खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—क्यूप्रम मेटालिकम देखिये। क्यूप्रम मेटालिकमकी तरह क्यूप्रम ऐसेटिकमकी अकड़न (Cramps) या मरोड़की तरह दर्द, पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना, अपस्मार या मृगी, वगैरहमें यह उपयोगी है। शरीरके उद्भेद एकाएक बैठ जाने या लोप हो जानेके कारण पैदा हुए रोगमें भी यह क्यूप्रम मेटालिकमकी तरह काम करता है। बाईं ओरके रह रहकर होनेवाले अधकपारीके सर दर्दमें इससे ज्यादा फायदा हुआ करता है। मृगी या अपस्मार-रोगमें इसका प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि "सरा-सरानुभूति" (सुरसुरी-Aura) जानुसे आरम्भ होकर तलपेटतक उठती है और इसके बाद रोगी बेहोश हो पड़ता है। शरीरमें दाह और गलेके भीतर मानो पानी उठ रहा है, ऐसा मालूम होना, श्वास रोध करनेवाली खाँसीका प्रकोप, गाढ़े गोंदकी तरह या रबरकी तरह श्लेष्माका स्राव और बहुत दिनोंकी प्रसव वेदना वगैरहमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली।

मन।—अन्यमनस्क (ऐगार, ऐमोन-कार्ब, बोवि, काम्फि, बेलिडो, केलि-ब्रोम, लैक-कैन, नक्स-मस, साइलिसिया)। उसे यह स्थिर धारणा रहती

है कि पुलिसके आदमी उसे पकड़ने आ रहे हैं। सन्ध्याके समय सोनेके बाद आँखें बन्द करनेपर नाना प्रकारकी अद्भुत भ्रम भरी चीजें (अलीक वस्तु) देखता है, मानो वह नाना प्रकारकी मूर्त्तियाँ और भाव भङ्गी देख रहा है, ऐसा मालूम होता है (ऐव्सिन्थ, बेल, कैनाबि-इन, कार्बोन-सल्फ, क्लोरेड्रन, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन=मानो घरके भीतर अनगिनती साँप घुस रहे हैं=ओपि, स्ट्राम, सैलि)। चिल्लाया या गाली देता हुआ जाग उठता है (गाता गाता जाग उठता है=सल्फ)। वमन, आँतोंका शूल, प्यास, अङ्ग प्रत्यङ्ग ठण्डे इत्यादिके साथ मानसिक उद्वेग (आर्स, कैम्फो)।

मस्तक ।—चैतन्य दूर करनेवाला सरमें चक्कर आना,—पाखाना हो जाने बाद आराम मालूम होना (नक्स-वोम, व्राई,—बहुत ज्यादा मल निकलनेपर सरमें दर्द=कोना); बहुत यंत्रणादायक सर दर्द,—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होता हैं—छुरीकी चोटकी तरह यंत्रणा, कभी ललाटमें कभी मूर्द्धादेशमें, कभी कनपटीमें या सरके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है—कुछ भी दबाव पड़नेसे दर्द बहुत बढ़ जाता है। बाईं ओरका अधकपारीका दर्द—सविराम ज्वर (साइलि, कोलो)। एकाएक शरीरका स्वेद लोप होनेकी वजहसे मस्तिष्कका प्रदाह (जिङ्क); बहुत सुस्ती और तेज श्वास प्रश्वास; मुखमण्डल फूला हुआ और उजला ; पानी पीनेके समय बच्चा पानीका चम्मच या पानीका बर्त्तन पकड़ रखता है। मस्तिष्क शून्य मालूम होता है। ऊँची छतवाले मकानमें प्रवेश करने पर रोगीके सरमें चक्कर आता है और मूर्च्छा आनेका उपक्रम हो जाता है। (ऊपरकी ओर देखनेपर सरमें चक्कर आता है=पल्स, साइलि)।

मुखमण्डल ।—चेहरा मुर्देकी तरह सफेद, गाल रक्त-शून्य, और आँखें गड्ढेमें धंसी तथा नाक उठी और नुकीली। चेहरेका स्नायु-शूल,—दाहिने कानके पीछेसे गण्डास्थि और ऊपरी हनुतक हो जाता है ; शरीर सञ्चालनसे, रातके समय और मानसिक परिश्रमसे बढ़ जाता है ; दबाने या माथा कसकर बाँधनेसे घट जाता है, मुखमण्डलका भाव बहुत यंत्रणा-व्यञ्जक मालूम होता है। हनुस्तम्भ—दाँती लग जाती है, और तालुके सिकुड़नेकी वजहसे बोलनेकी शक्ति गायब हो जाती है ; रह रहकर चौंक उठता है, और इस तरह मुँह चलाता है मानो कोई चीज खा रहा है, या निगल रहा है। (मानो चबा रहा है, इस तरह मुंह हिलाता है=व्राई, कैमो, ऐको, लैके, मस्कास, सोलेनम-नाई, वेरेट)।

पाकाशय आदि ।—मुंहका स्वाद तांबेके जङ्गकी तरह और जीभपर धुमैला पतला लेप चढ़ा रहता है, लगातार मिचली होकर खांसी आती है और इसके साथ ही आक्षेपिक श्वास-प्रश्वास होता है या बार बार पेशाब हुआ करता है, आँतोंमें शूल और प्रत्यङ्गोंकी अकड़नके भावके साथ वमन,—कै हुआ पदार्थ थोड़ा हरे रंगका सफेद आभा लिये और फेन भरा रहता है। बार बार नीली आभा लिये वमन और उसके बाद ओकाई आती है और श्वासमें तकलीफ होती है। नाड़ी अनियमित और तेज। उदर भीतरकी ओर खिंचा करता है (प्लम्बम) और उसमें थोड़ा दर्द होता है। वमन और उदरामयके साथ आँतोंमें तेज दर्द,—रातके समय आँतोंमें शूल। अंत्राशय वायुसे भरा, फूला और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। मल,—कृमि-भरा, काले रंगका और लाल श्लेष्मा मिला और उसके साथ ही कांखना और सारे शरीरकी सुस्ती।

श्वास-यंत्र ।—छाती एकाएक जकड़ जाती है, श्वासमें तकलीफ होने लगती है और रोगी बहुत उद्विग्न हो पड़ता है, बार बार प्रचण्ड सूखी खांसी आती है,—खाँसनेपर ऐसा मालूम होता हैं, मानो माथा फट जायगा (इथ्यूजा ; खांसनेपर ऐसा मालूम होता हैं, मानो वक्ष फट जायगा=सल्फ) ; खांसीके बाद बहुत देरतक कलेजा कांपा करता हैं, वक्षस्थलमें दबाव मालूम होता है और रोगी डरता है ; बैठनेपर यह भाव बढ़ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—अपस्मार या मृगी—जानुसे सुरसुरी मालूम होना आरम्भ होता है और वह तलपेटतक फैल जाता है।—इसके बाद रोगी बेहोश होकर गिर जाता है। मुंहसे फेन निकला करता है और अङ्ग प्रत्यङ्ग पटकता रहता है।

त्वचा ।—खसड़ा, विसर्प या चेचक। खुजलानेवाला खसड़ा या चेचककी गोटियां या कोई दूसरा उद्भेद एकाएक बैठजानेकी वजहसे विकार या किसी दूसरी तरहकी बीमारी (उद्भेद दब जाना=ब्राई, सोरिन, सल्फ, कैम्फो, जिङ्क,—कच्छू या उक्षौताका गायब हो जाना=सेनिक्यूला)।

सम्बन्ध ।—**सदृश ।**—अनुपूरक -कैल्के, जैल्स (मानसिक लक्षण आदिके सम्बन्धमें सदृश) साइक्यूटा, सोलेनम-नाइग्रम और (मस्तिष्कोदक या शरीरके उद्भेद विलोप हो जानेकी वजहसे मस्तिष्क प्रकुपित सदृश) जिङ्कम।

दोषघ्न ।—बेलाडो, चायना, साइक्युटा, हिपर, मार्क, इपिक, नक्स-वोम ।

शक्ति ।—२रा दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रम ।

क्यूप्रम आर्सेनिकोसम ।

(CUPRUM ARSENICOSUM)

दूसरा नाम ।—ऐर्सिनाइट आफ कापर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हैजा, विसूचिकाकी तरह उदरामय ; ताण्डव ; उदरामय ; आँतोंका शूल ; पक्षाघात ; जरायुका स्नायु-शूल ; वमन ।

उपयोगिता और आभास ।—मारात्मक विसूचिका रोगमें इसका फायदा करना प्रसिद्ध है । डा० हेरिङ्गके मतसे पेटमें तेज जलन और अकड़नकी तरह दर्दमें यह बहुत फायदेमन्द है । डा० क्लार्क कहते हैं, कि उदरमें भयानक स्नायुशूलकी तरह दर्द, ऊपरी पेटमें बहुत यन्त्रणा, अन्ननाली और मूत्रनालीमें जलन, चीटीं रेंगनेकी तरह सुरसुरी और जाड़ा मालूम होना, वगेरह इसके प्रधान लक्षण हैं । डा० सालजर और डा० भादुड़ीके मतसे विसूचिकामें सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा, हाथ-पैरोंमें ऐंठन और बेहद हिचकी, रहरहकर लसदार ठण्डा पसीना इत्यादि क्यूप्रम आर्सेनिकोसमके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं । विसूचिकाकी हिमाङ्ग अवस्थामें (शीत आ जानेपर) जब रोगीके शरीरमें रह रहकर ठण्डा पसीना हुआ करता है, और फिर सूख जाता है, उस समय क्यूप्रम-आर्सेनिकोसमसे बहुत फायदा होता है । पेशाब रुकनेकी वजहसे विकार (Uromia) और अकड़न आदिमें भी यह बहुत उपकारी है ।

लक्षणावली

मस्तक आदि ।—सरमें चक्कर आना और जड़ भाव। ऐसा मालूम होता है कि आंखके सामने मानो काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं।

पाकस्थली ।—उदरमें भयानक जलन और अकड़न; मिचली और ऊपरी पेटमें बहुत तकलीफ। तकलीफसे रोगी चिलाया करता है; हाथ पैरकी अँगुलियोंमें अकड़न होती है; प्रत्येक दो तीन सप्ताहका अन्तर देकर आँतोंमें असह्य दर्द पैदा हो जाता है। दुर्दमनीय हिचकी।

मल ।—वमन, पानीकी तरह दस्त, रह रहकर ठण्ढा और लसदार पसीना होना और अन्ननाली तथा उदरमें असह्य जलन होना। पेटमें बहुत ऐंठन होती है और हिमाङ्ग (Collapse) अवस्था पैदा हो जाती है; बहुत कूथनके साथ लगातार आम निकला करती है।

वक्ष और हृतपिण्ड ।—हाथ पैर कांपनेके साथ ही साथ कलेजा धड़कना; कलेजेकी धड़कनके कारण वक्षस्थल तरंगकी तरह अर्थात ऊँचा उठता है और फिर नीचा होता है। बाएँ पृष्ठ-फलकके भीतरका एक छोटा अंश बहुत दर्द करता है और यह दर्द बाएँ फेफड़ेमें फैलकर बांएँ वक्षमें शलाका वेधनेकी तरह दर्द पैदा कर देता है; ठण्ढी या लम्बी सांस लेनेपर यह दर्द बढ़ जाता है; पीठका बायाँ पार्श्व, बायाँ कन्धा और बांह सुन्न हो जाता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—समूची देह ठण्ढी और पसीनेसे तर, शरीरकी त्वचा मुर्देकी तरह सफेद और रक्तहीन; शरीर बरफकी तरह ठण्ढा, हाथ पैरोंमें ऐंठन और हिचकी आया करती है। विसूचिकाकी हिमाङ्ग अवस्थामें कभी कभी ठण्ढा लसदार पसीना निकलता है और वह फिर गायब हो जाता है—रुकरुक कर पसीना होना। (डा० सैलजर)

वृद्धि ।—दबानेपर; ठण्ढी हवामें और शरीर-सञ्चालनसे, लम्बी सांस लेनेपर और भोजनके बाद (मिचली)

घटना ।—स्थिर रहनेपर; पीठमें अकड़न और कम्पन; पर शरीर हिलाने पर घट जाता है।

सम्बन्ध—सदृश ।—बाएं वक्षके दर्दके सम्बन्धमें=ऐक्टिया-रेसि, ऐकों वगैरह और कूथनके साथ आम-रक्त तथा उदरामय रोगमें मार्क-कौर और विसूचिकामें आइरिस-वार्सि, कैम्फो, वेरेट, आर्स वगैरह ।

शक्ति ।—२रा दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रम तक ।

क्यूप्रम मेटालिकम ।

(CUPRUM METALLICUM)

दूसरा नाम ।—तांबा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,— प्रसवके बाद प्रसूतिका दर्द अर्थात प्रसवके बादका दर्द ; कलेजेका दर्द ; दमा ; सर्दी ; मूत्राण्ड ; विसूचिका ; ताण्डव ; अकड़न-भरी खांसी ; ऐंठन ; विसर्प, मूर्च्छा ; पाकाशयकी गड़बड़ी ; वात-रक्त ; रक्त-वमन ; मूर्च्छावायु ; प्रदाह ; स्वरनालीका आक्षेप ; खसड़ा ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; स्नायुशूल ; हृदयमें दर्द; पक्षाघात ; फेफड़ेका प्रदाह ; दादकी तरह उद्भेद ; अनिद्रा ; अकड़न ; सेरुमज्जाकी उत्तेजना ; जखम ; हूप-खांसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना और ऐंठन—क्यूप्रमके प्रधान क्रिया-फल हैं ; और यह पेशियोंका सङ्कोचन हाथ-पैरोंकी अंगुलीसे आरम्भ होकर धीरे धीरे समूची देहमें फैल जाता है। गर्भावस्थामें ऐंठन, प्रसवके बाद अकड़न, डर या चिढ़ पड़नेके कारण आक्षेप, या किसी रोगका अपना पहला स्थान छोड़कर मस्तिष्कपर आक्रमण कर देना और इसी वजहसे अकड़न आदि, इस पैशिक-सङ्कोचनके मुख्य फल हैं, और क्यूप्रमका एक सबसे प्रधान निर्णायक लक्षण है। नीचे डा० ऐलेनके लिखे कई सिद्धिप्रद लक्षण लिखे जाते हैं। जैसे,—(१) बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम और रात्रि-जागरणकी वजहसे शारीरिक और मानसिक अवसाद, दुर्दमनीय मानसिक उद्वेग। (२) मुंहमें तांबेका स्वाद और लार बहना ।

लक्षणावली

मस्तक आदि ।—सरमें चक्कर आना और जड़ भाव । ऐसा मालूम होता है कि आंखके सामने मानो काले विन्दु सब उड़ रहे हैं ।

पाकस्थली ।—उदरमें भयानक जलन और अकड़न; मिचली और ऊपरी पेटमें बहुत तकलीफ । तकलीफसे रोगी चिल्लाया करता है; हाथ पैरकी अँगुलियोंमें अकड़न होती है; प्रत्येक दो तीन सप्ताहका अन्तर देकर आँतोंमें असह्य दर्द पैदा हो जाता है । दुर्दमनीय हिचकी ।

मल ।—वमन, पानीकी तरह दस्त, रह रहकर ठण्ढा और लसदार पसीना होना और अन्ननाली तथा उदरमें असह्य जलन होना । पेटमें बहुत ऐंठन होती है और हिमाङ्ग (Collapse) अवस्था पैदा हो जाती है; बहुत कूथनके साथ लगातार आम निकला करती है ।

वक्ष और हृतपिण्ड ।—हाथ पैर कांपनेके साथ ही साथ कलेजा धड़कना; कलेजेकी धड़कनके कारण वक्षस्थल तरंगकी तरह अर्थात ऊँचा उठता है और फिर नीचा होता है । बाएँ पृष्ठ-फलकके भीतरका एक छोटा अंश बहुत दर्द करता है और यह दर्द बाएँ फेफड़ेमें फैलकर बाएँ वक्षमें शलाका बेधनेकी तरह दर्द पैदा कर देता है; ठण्ढी या लम्बी सांस लेनेपर यह दर्द बढ़ जाता है; पीठका बायाँ पार्श्व, बायाँ कन्धा और बांह सुन्न हो जाता है ।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—समूची देह ठण्ढी और पसीनेसे तर, शरीरकी त्वचा मुर्देकी तरह सफेद और रक्तहीन; शरीर बरफकी तरह ठण्ढा, हाथ पैरोंमें ऐंठन और हिचकी आया करती है । विसूचिकाकी हिमाङ्ग अवस्थामें कभी कभी ठण्ढा लसदार पसीना निकलता है और वह फिर गायब हो जाता है—रुकरुक कर पसीना होना । (डा० सेलजर)

वृद्धि ।—दबानेपर; ठण्ढी हवामें और शरीर-सञ्चालनसे, लम्बी सांस लेनेपर और भोजनके बाद (मिचली)

घटना ।—स्थिर रहनेपर; पीठमें अकड़न और कम्पन; पर शरीर हिलाने पर घट जाता है ।

सम्बन्ध —सदृश।—बाएं बगलके दर्दमें सम्यग्धर्म=ऐक्टिया-रेसि, ऐको वगैरह और कूयनके साथ आम-रक्त तथा उदरामय रोगमें मार्क-कोर और विसूचिकामें आइरिस-वासि, कैम्फो, वेरेट, आर्स वगैरह।

शक्ति।—२रा दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रम तक।

क्यूप्रम मेटालिकम।
(CUPRUM METALLICUM)

दूसरा नाम।—तांबा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—प्रसवके बाद प्रसूतिका दर्द अर्थात प्रसवके बादका दर्द; कलेजेका दर्द; दमा; सर्दी; मृत्पाण्डु; विसूचिका; ताण्डव; अकड़न-भरी खांसी; ऐंठन; विसर्प, मूर्च्छा; पाकाशयकी गड़बड़ी; वात-रक्त; रक्त-वमन; मूर्च्छावायु; प्रदाह; स्वरनालीका आक्षेप; खसड़ा; मस्तिष्कावरण प्रदाह; स्नायुशूल; हृदयमें दर्द; पक्षाघात; फेफड़ेका प्रदाह; दादकी तरह उद्भेद; अनिद्रा; अकड़न; मेरुमज्जाकी उत्तेजना; जखम; हूप-खांसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना और ऐंठन—क्यूप्रमके प्रधान क्रिया-फल हैं; और यह पेशियोंका सङ्कोचन हाथ-पैरोंकी अंगुलीसे आरम्भ होकर धीरे धीरे समूची देहमें फैल जाता है। गर्भावस्थामें ऐंठन, प्रसवके बाद अकड़न, डर या चिढ़ पड़नेके कारण आक्षेप, या किसी रोगका अपना पहला स्थान छोड़कर मस्तिष्कपर आक्रमण कर देना और इसी वजहसे अकड़न आदि, इस पैशिक-सङ्कोचनके मुख्य फल हैं, और क्यूप्रमका एक सबसे प्रधान निर्णायक लक्षण है। नीचे डा० ऐलेनके लिखे कुछ सिद्धिप्रद लक्षण लिखे जाते हैं। जैसे,—(१) बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम और रात्रि-जागरणकी वजहसे शारीरिक और मानसिक अवसाद, दुर्दमनीय मानसिक उद्वेग। (२) मुंहमें तांबेका स्वाद और लार बहना।

(३) सांपकी तरह बार बार जीभ बाहर निकालना और फिर भीतर खींच लेना। (४) पानी आदि पीने पर पाकस्थलीमें गड़गड़ शब्द होता है। (५) विसुचिका—इसके साथ ही उदरमें और पैरकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन होती है। (६) शरीरके उद्भेद आदि एकाएक बैठ जानेके कारण बीमारियां, जैसे, विकार, पेशियोंका सिकुड़ना-फैलना, सारे शरीरका आक्षेप और वमन। (७) पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे बीमारियां आदि। (८) सारे शरीरके आक्षेपके समय चेहरा नीला हो जाता है और हाथका अंगूठा मुड़कर दूसरी दूसरी अँगुलियोंकी जड़में आ पहुँचता है। (९) प्रत्यंग आदिके अन्तिम भागमें—तलहत्थीमें, पैरके तलवेमें और जँघाकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन होती है; हाथ-पैर बहुत कमजोर मालूम होते हैं। (१०) जीभका पक्षाघात, वाक्शक्तिका घटना—उच्चारण साफ साफ और पूरा पूरा नहीं होता। (११) अपस्मार या मृगी; जानुसे सुरसुरी चढ़कर ऊपरकी ओर जाती है; रातमें नींदवाली अवस्थामें बढ़ जाती है; अमावस्याके समय, निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर, और प्रत्येक ऋतुके समय; माथेके बल गिरने या माथेमें और किसी तरहकी चोट पहुंचनेकी वजहसे बीमारियाँ; (१२) खाँसी,—खाँसनेपर ऐसी आवाज होती है, मानो बोतलसे पानी ढाल रहा है; पानी पीनेपर घट जाती हैं। (१३) हूप खांसी,—बहुत दिनोंसे प्रकोप, श्वास-रोध करनेवाली आक्षेपिक खाँसी; प्रकोपके समय बोल नहीं सकता।—हाँफ उठता है, चेहरा नीला हो जाता है, देह काड़ी हो जाती है और अकड़ जाती है। लगातार तीन बार खाक खाक कर खाँसी आती है, फिर होशमें आ जाने बाद अर्थात कुछ सम्हल जानेपर काड़ी खायी हुई चीज कै हो जाती है,, प्रत्येक प्रकोपके समय मानो रोगी बेहोश सा हो जाता है। (१४) बहुत सी सन्तान प्रसव करनेवालियोंका प्रसवके बादका दर्द बहुत ही तकलीफ देनेवाला हुआ करता है। (१५) शरीरके बाएं पार्श्वपर ही इसका विशेष आक्रमण होता है।

लक्षणावली।

मन।—प्रचण्ड विकार—भयङ्कर क्रोध, किसीको भी पहचान नहीं सकता; छिप रहनेकी चेष्टा करता है (स्ट्रेमो, विरेट, विर)। नया उन्माद (Mania),—रोगी सबको काटने दौड़ता है (बेल, ब्यूफो, कैन्थ; सिकेलि, स्ट्रैम); और सामने जो कुछ पाता है, वही टुकड़े टुकड़े कर डालता है (टैरान,

वेरेट्र-ऐल्ब)। मूर्ख निर्बोधोंकी तरह आचरण करता है (हायो), निर्बोधकी तरह हँसा करता है (ऐनाक, कैनाब-इण्डि; क्रोकस-सेट); निर्बोधकी तरह भाव भङ्गी बनाता है; जवान आदमी भी बच्चेकी तरह काम करते हैं। ऊपरी पेट में गड़बड़ी मालूम होती है (केलि-कार्ब, प्लेट)। हमेशा सशङ्कित रहता है। कोई भी उसके पास क्यों न जाये, रोगी उससे डरता है (आर्नि, आयोड, वेरेट-विर)। गिर जानेका भय,—बच्चा धायको जकड़ रखता है (बोरैक्स, जेल्सि)। साँपकी तरह बार बार जीभ बाहर निकालता है और भीतर खींचता है—विकारावस्थामें गायके बछड़ेकी तरह आवाज करता है; रह रहकर लोमहर्षक चिल्लार कर उठता है (एपिस, हेलिबो, हाइपिर); रात भर बहुत बेचैन रहता है, छटपटाता है और उसमें चेतना नहीं रहती; पूर्ण मोह,—इसके साथ ही पेशियोंका सङ्कोचन (एपिस, प्लम्ब), बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम और रात में जागरणकी वजहसे मानसिक और शारीरिक अवसाद (काफ्यु, इग्ने, ऐसिड-नाई, नक्स)। बहुत बकता है, (हायो, लैके, ओपि, स्ट्रैम, वेरेट)।

मस्तक।—सरमें प्रचण्ड दर्द,—बाईं आँखके ऊपर दर्द बढ़ जाता है और इसी आँखके ऊपरके स्थानपर और नाककी जड़में बहुत दबाव मालूम होता है। शरीरका सञ्चालन करनेपर बढ़ता है और स्थिर होकर सोये रहने पर घटता है। मस्तिष्कमें ऐसा असह्य दर्द मालूम होता है, मानो एक फोड़ा निकल आया है। मस्तिष्क सुन्न जैसा मालूम होता है। भयंकर और लगातार बना रहनेवाला सर दर्द—बँधे समयका अन्तर देकर तरङ्गकी तरह पैदा होता है, ऐसा मालूम होता है मानो माथेमें कोई पानी ढाल रहा है। सरमें चक्कर आना,—पढ़ने (ऐमोन-कार्ब, आर्स, ग्रैटि, हेरैक्लि; ऊँचे स्वरसे पढ़नेके समय—पैरिस) और शून्यकी ओर देखनेपर (पल्स, साइलि); मानो सभी चीजें घूम रही हैं,या ऐसा मालूम होता है कि रोगीकी समूची देह घूम रही है (आर्नि, ऐसा, बेल, लाई, कैलि-बाई, फेर-ऐसेट; नक्स, ओलि-ऐन, फास, रोडो, स्ट्रैफ, वैलि, वेरेट, वायोला-ओडो); माथा सामनेकी ओर ढुलक पड़नेका उपक्रम होता है (आर्स, फेरम-ऐसेट, नेट्र-म्यूर, रैनान, पोडो, रास),—शरीर हिलानेपर बढ़ना और स्थिर होकर सोये रहनेपर आराम मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो माथा शून्य है (आर्जे-एट, काकु, पल्स)। नीला या लाल चेहरा और माथेमें नीले रङ्गकी सूजन, कपड़े से माथा कसकर बाँध रखनेपर सर दर्द घटता है (साइलिसिया)।

आंख।—आंख लाल, प्रदाह-भरी, दृष्टि चंचल और हमेशा एक चीजसे दूसरी चीजपर चली जाती है, या आंखें स्थिर, टकटकी लगाकर देखना चमकीली और उसकी पुतली ऊपरकी ओर खिंची रहती है, दोनों आंखें गड्ढेमें धँसी।

मुखमण्डल।—मुंह और ओंठ नीले। मुखमण्डल देखते ही बहुत तकलीफ मालूम होती है। अपस्मार रोगमें दोनों हनु आपसमें खूब जुड़ जाते हैं—कसकर दाँती लग जाती है और मुंहसे फेन निकलता है। मुंहमें तांबेका स्वाद रहता है और मुंहसे लार बहा करती है (रास)। बच्चोंकी बीमारीमें जीभ बार बार बाहर निकलती है और भीतर घुसती है (सल्फ) जीभका अगला भाग बहुत ठण्डा। जीभ लसदार और उसपर सफेद लेप चढ़ा हुआ (लसदार=ऐसिड-फास, प्लम्ब)। जीभमें पक्षाघात (ऐब-सिन्थ, ऐको, इस्कू-ग्लेब, ऐरान, बेराई, कार्बो-सल्फ, कास्टि, डाल्का, जेल्सि, हायो, ऐसिड-हाइड्रो, लेके, ऐसिड-म्यूर, नक्स-मस, ओपि, प्लम्ब, स्ट्रैम)। बात अस्पष्ट, पूरी पूरी मुंहसे नहीं निकलती। (कास्टि, बेराई, प्लम्ब, ओपि, डालका)।

गलेके भीतर।—निगलनेके समय कण्ठनाली संकोच मालूम होती है; कण्ठनालीमें सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे बोलनेमें गड़बड़ी होती है, हिचकी और अन्ननालीकी अकड़न; जलीय पदार्थ निगलनेमें पानी गड़गड़ाकर नीचे उतरता है (ऐसिड-हाई, आर्स, लोरो, थूजा; सुस्ती लानेवाले बोखारमें ऐसा ही होता है।)

पाकस्थली।—बार बार ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा प्रकट करता है,—क्योंकि उससे उसे आराम मिलता है। दूध हजम नहीं होता; दूध पीनेपर मुंहसे लारकी तरह पानी निकला करता है। ठण्डा पानी पीनेपर वमन होना घट जाता है (फास,)। उदरमें ऐंठन हो जाती है और जी मिचला कर वमन होता है। चावलके धोअनकी तरह मल; पेटके दर्दसे रोगी सामने की ओर झुक जाता है (कोलो)। छातीकी हड्डीके नीचे सङ्कोचन और अग्र भागके पीछे दर्द होता है। उदरके ऊपरी भागमें दबाव मालूम होना,—छूने या दबानेपर दर्द बहुत बढ़ जाता है। ऐसा मालूम होता है कि गोलेकी तरह एक पदार्थ पंजरेके नीचे घूमता फिरता है। पैरको कसकर बांधनेसे

घटता है। अन्त्र-मण्डल और उदर-वेष्टका सिकुड़ना फैलना,—पेट; दाबा रखनेपर आराम मिलता है। पेट कड़ा, गर्म और उसमें दर्द ; आध्मान वायुकी वजहसे पेट फूलना—नाभि-प्रदेशमें भयानक यंत्रणा,—मानो नाभीसे पेटतक छुरीसे काट रहा है। आँतमें काटने या छुरी मारनेकी तरह तकलीफ और उदर भीतरकी ओर खिंचा रहता है (ह्यम्प)।

विसूचिका।—तेज उदरामय; पेटमें बहुत मरोड़ होता है,—इसके साथ ही अन्ननालीमें *गड़गड़ शब्द*। पाकस्थली और अन्त्राशयमें लगातार दर्द होकर बार बार वमन और मठेकी तरह दस्त होता है, पेटमें लगातार अकड़न होती है और हाथ पैरोंमें ऐंठन होती है, दोनों आंखें गड्ढेमें धँसी, मुंह सूखकर छोटा हो जाता है, उठी हुई और नोकीली नाक, गहरा नीलापन लिये चेहरा; समूची देहका रंग नीला; जीभ ठण्डी; स्वरलोप; हृत्पिण्डकी गति बहुत क्षीण और नाड़ी प्रायः नहीं मिलती। पेशियाँ सब फड़का करती हैं, दाँती लग जाती है। वक्षमें तकलीफ देनेवाली सिकुड़न और फैलाव मालूम होता है; पैरकी पीटलीमें खींचन और ऐंठन होती है और हाथ पैरकी अंगुलियाँ ऐंठा करती हैं, भयानक प्यास और हिचकी और समूचे पेटमें विशेषकर ऊपरी पेटमें मिचली मालूम होना; लगातार वमन,—ठण्डा पानी पीनेपर घट जाता है (फास)। अन्त्रमण्डलीमें इतना दर्द होता है कि हाथसे छूनातक सहन नहीं होता। पेशाब बिलकुल नहीं होता या बहुत थोड़े परिमाणमें हुआ करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रसवके बादका धनुष्टङ्कार; प्रसवके दर्दके समय हाथ और पैरकी अंगुलियोंमें भयानक खींचन आरम्भ होकर समूची देहमें फैल जाती है; तलपेटमें बहुत ही यन्त्रणादायक अकड़नकी वजहसे प्रसव-वेदनामें बाधापड़ती है; रोगिनीको चारो ओर अन्धेरा मालूम होता है,(लैक-कैन) और इसके कुछ ही देर बाद अकड़न आरम्भ हो जाती है; चेहरा नीला हो जाता है, और दोनों बड़ी अँगुलियाँ कसकर तलहत्थीकी ओर मुड़ जाती हैं। बहुत श्वास कष्ट और छातीमें तकलीफ मालूम होना। रोगिनी तकलीफसे चिल्ला उठती है। बहुत सी सन्तान प्रसव करनेवालियोंका प्रसवके बादका दर्द। रजः प्रकट होनेके पहले धमनी आदिमें खून प्रवेश कर जाना (Ebullition = मार्क), हृत्स्पन्दन (आयोड—सल्फि ; रजःस्रावके समय कलेजा धड़कना = ऐल्यू, इग्ने, आयोड,

फास ; रजःस्रावके बाद = आयोड) और सरमें दर्द (ऐल्यू, कैल्के, कार्बो-वे, नेट्र-म्यू, लैकि, पलस, सल्फ)। ऋतु बहुत देरसे होता है, और बहुत दिनोंतक होता रहता है ; कई महीनेतक ऋतु-रोध (नेट्र-मूर, कौलि-कार्ब)। आर्त्तव स्रावके पहले और समय बहुत जोरसे ऐंठन होती है (कोना, ग्रैफ, लैके, चायना) ; धनुष्टंकार हो जाता है (सिकेलि) और रोगिनी हृदय-भेदी चित्कार किया करती है। उसे श्वास-कष्ट होता है। शरीरका पसीना बन्द होनेके कारण ऋतु होना बन्द हो जाता है (साइलि)।

श्वास-यंत्र।—हूप-खाँसी,—बहुत दिनोंका श्वास-रोधक प्रकोप, रह रहकर खाँसी पैदा हो जाती है ; रोगी बोल नहीं सकता। हाँफ उठता है (स्टैन) और देह कड़ी होकर अकड़ जाती है और चैतन्य नहीं रहता। ऊपरके ऊपर तीन बार खाँसी आती है (स्टैन, दो बार आती है = मार्क ; रातमें बढ़ना ; होश आनेपर खायी हुई चीजोंकी कै होती है (कैनाब) ; प्रत्येक प्रकोपके समय रोगी एकदम निसन्द (सुस्त) हो जाता है ; इसके साथ ही माथा हिलनेवाले आक्षेपिक दमा रोगके प्रकोपके समय खाँसीके साथ सफेद आभा लिये श्लेष्मा निकला करता है, दमा,—रात तीन बजनेके समय आरम्भ होता है—शरीर पीछेकी ओर झुकाने, खाँसने या हँसनेपर (आर्स) बढ़ जाता है, ठण्डा पानी पीनेपर खाँसी घट जाती है (काक्कस, कोक, कास्टि)। खाँसनेके समय गलेके भीतर गड़गड़ शब्द होता है मानो बोतलसे पानी ढाला जा रहा है। खाँसीके समय श्वास-प्रश्वासमें साँय साँय शब्द होता है। सीढ़ी चढ़नेपर (ऐमोन कार्ब, आर्स, ऐङ्गस, बोर, लोड, हायो, मार्क, ऐसिड-नाई, रैटान, रियुटा, सेनेगा) या तेजीसे चलनेपर रोगीको तकलीफ होती है [ऐङ्गस, भरम, कास्टि, पलस], कलेजेका दर्द,—छाती में अकड़नके साथ साँसमें तकलीफ। ऋतु होनेके पहले कलेजा धड़कना [आयोड, सल्फि]।

प्रत्यङ्ग आदि। — कोहुनीमें विसर्प निकलना [Herpes] और उससे रस निकलकर पीले रङ्गकी पपड़ी जमनेवाला घाव हो जाता है। इसमें संध्या के समय बहुत खुजलाहट होती है। कन्धे तक फैली हुई लसिका शिराके (Lymphatic Vessel) के प्रदाहके साथ हाथ सूजना। बाहु और हाथ जगह जगहपर नीले हो जाते हैं। धनुष्टंकार,—हाथ और पैरकी अंगुलीसे आरम्भ होकर समूची देहमें फैल जाता है।—रह रहकर अकड़न पैदा होना। विश्राम के समय पैरकी पाटलीकी पेशीमें ऐंठन (ऐमोन-कार्ब, कैम्फो)। निम्नाङ्गकी

पेशियोंका संकोचन और प्रसारण (सिकुड़ना और फैलना) (ऐगार, इग्ने, जिङ्क); तलवेमें जलन होती है। पैरका तलवा बरफकी तरह ठण्डा (कौलचि, कार्बो-वे, कास्टि, काक्यु, कोना, डिजि, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, नेट्र-कार्ब, ऐसिड-नाई, रोडो, सिपि, साइलि)। पैरका पसीना रुकाना (ऐसिड-सैलि-साई, सिलि; जिङ्क)। जानु-सन्धि बहुत ही कमजोर मानो टूट गयी है।

त्वचा।—विसूचिका और धनुष्टंकार रोगमें समूची देह नीली, (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कैम्फो, कोना, ऐसिड-हाइड्रोसा, लेके, ओपि, प्लम्ब) और बरफ की तरह ठण्डी (कैम्फो ; बाहरसे ठण्डी पर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका शरीर जला जाता है=नक्स-मस, सिकेलि, वेरेट)। छूनेपर दर्द बढ़ जाता है।

सार्वाङ्गिक।—अपस्मार या मृगी,—आक्रमण रातमें होता है (ब्युफो, लेके);—जानुसे सुरसुरी आरम्भ होकर तलपेटमें फैल जाती है; अमावस्याके दिन और बँधे समयका अन्तर देकर बढ़ती है। प्रत्येक मासिक ऋतुस्रावके समय मृगी आती है; निचले मस्तकके बल पर गिरना या किसी दूसरी तरहसे मस्तिष्कमें चोट पहुंचनेके कारण मृगी; मुँहसे फेन निकला करता है; आक्रमणके कुछ ही पहले रोगी लोमहर्षक चीत्कार कर उठता है (ब्यूफो) और दाँतपर दाँत घसा करता है। लाल ज्वरके उद्भेद, खसड़ा या फैलनेवाले विसर्प वगैरह उद्भेदके रुक जानेके कारण आक्षेप आदि रोग (एपिस, ब्राई, कैम्फो, सोरिन, सल्फ)। दुरारोग्य कमजोरी और सुस्ती, अङ्ग-प्रत्यङ्ग और शरीर दुबला हो जाता है। (प्लम्ब)।

निद्रा।—गहरी नींद,—नींदवाली अवस्थामें हाथ-पैर फेंकना; निद्रितावस्थामें पेट गड़गड़ाया करता है।

वृद्धि।—ठण्डी हवामें, रातमें, अमावस्याके दिन; उद्भेद या पैरका पसीना रुक जानेपर, छूनेपर, या दबानेपर ऋतुके पहले और वमनके बाद।

घटना।—कसकर बांधनेसे (सर दर्द, आँतोंका शूल आदि), ठण्डा पानी पीनेसे (मिचली, वमन और खांसी) और स्थिर होकर रहनेपर और पसीना निकलनेपर।

सम्बन्ध।—अनुपूरक=कैल्केरिया-फास्फ़ि।

दोषघ्न ।—बेलाडो, कैमो, चायना, साइकूटा, डालका, हिपर, अपि काक, मार्क, नक्स ।

सदृश ।—जेलस, साइलि, फास, नक्स, प्लम्ब, एपिस, जिङ्क, कैम्फो, वेरेट, सिकेलि, पार्नि, लेके, स्ट्रैम, हूप,-खांसी और विसूचिका रोगमें कूप्रम के बाद वेरेट्रमका प्रयोग करनेपर बहुत लाभ होता है। रुके हुए उद्भेदकी वजहसे धनुष्टंकार आदिमें एपिस और जिङ्कमका व्यवहार होता है।

तुलनीय ।—जेल्स, (बहुत परिश्रमकी वजहसे मस्तिष्कका दोष), साइलिसि, (माथेमें दर्द), वाचालता (लैके, हायोसा इत्यादि) । प्रतिक्रिया के अभावमें सलफर, कार्बोवेज, इत्यादि ।

शक्ति ।—६ठा दशमिक, १२, ३०, २०० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—४० से ५० दिन ।

क्यूप्रम सल्फ्युरिकम ।
(CUPRUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—सल्फेट आव कापर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—कूप्रम सल्फ एक दाह पैदा करने वाली और वमन करानेवाली दवा है। **तालुमें जलन,** विराम हीन आक्षेपिक खाँसी, रातके समय बढ़ना ; जीभ और ओंठ नीले और मिचली, तथा वमनके लक्षणमें लाभदायक है।

सरकोमाके जखममें यदि नश्तर लगवानेका भय होता हो तो कूप्रम-सल्फ १-३ भाग १०० भाग पानीके साथ मिलाकर धावनके रूपमें बाहरी प्रयोगसे विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय— कैलि-बाई, मार्क ।

दोषघ्न ।—दूध, अण्डा, इयेलो-प्रूसियेट-आव पोटास ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कुरारि।

(CURARE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकाके आदिम अधिवासीगण पशुपक्षियोंका नाश करनेके लिये एक तरहका विष व्यवहार करते हैं—कुरारि-अर्क उसी विष से तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—कर्कटीया जखम; निस्पन्द वायु; कमजोरी; खांसी; बहुमूत्र; वाधक; श्वास-कष्ट; कानकी बीमारियां, उन्मत्तता; मृगी; मुंहका पक्षाघात; मूर्च्छा; सर दर्द; जलातंक रोग; गति-शक्तिकी बीमारी; स्नायुओंकी कमजोरी; स्नायुशूल; कानका प्रदाह; नकसीर; यक्ष्मा; कण्ठमाला; पलकोंका पक्षाघात; धनुष्टङ्कार; बहुत तरहके जखम; जरायुकी बीमारी; अपत्यपथकी बीमारी; हूप खांसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इस तेज विषके द्वारा गति शक्तिका एकदम विनाश हो जाता है पर अनुभव शक्ति भरपूर मौजूद रहती है। इसीलिये निचले हनुग्रहके साथ निस्पन्द वायु रोगमें (Catalepsy) यह लाभदायक है। रोगी नींद खुलनेपर एक ओर टकटकी लगाकर देखा करता है। स्नायविक सुस्ती,—विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका; हनुस्तम्भ या दांती लगना, धनुष्टंकार, क्योंकि मुंहमें और कानके पीछे खसड़ा (Eczema) और देहमें जगह जगह पीले भूरे दाग (Liver spots) वगैरहमें बहुत उपकारी है। प्रायः पक्षाघातकी तरह सुस्ती; मस्तिष्कमें मानो तरल पदार्थ भरा है और उनमें फाड़ने या अस्त्राघातकी चोटकी तरह दर्द, टपक, सुन्न हो जाना वगैरह इसके प्रधान क्रिया-फल हैं और मस्तिष्कका विकार, उन्मत्तता इत्यादि इसके मानसिक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—चिन्ता या अध्ययन शक्तिका न रहना (चिन्ता शक्ति न रहना ऐसिड-नाइट्र, इग्न, ऐंप, मार्वेरिस, क्लिमेट; डालका, कैलि-नाई, मैग-फास.

नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, नक्स-मस, ओलि-कोजू, साइलि, सल्फ, आक्साई-ड्रोप, टियुबर्क)। उत्तेजित, घबड़ाया हुआ (आर्जेण्ट-नाई, अरम, ब्यूफो, लिलियम ; लिडोरिन ; नेट्र-मूर, टिलिया, ऐसिड-सल्फ, थूजा)। अकेला रहना पसन्द करता है।। (कार्बो-ऐन, ऐक्टि, कोका, जेलसि, हेलिबो, इग्ने, हायो, आक्साई-ड्रोप, थूजा)। उन्माद रोगकी वृद्धि हो जानेपर रोगी अपने शरीरपर आघात करता है, खखोड़ता है, और बड़े आनन्दसे उसे क्षत-विक्षत करता रहता है, पर उसे किसी तरहकी तकलीफ नहीं मालूम होती। रातमें इस तरह आनन्दमें मतवाला हो उठता है मानो उसने बहुत ही मधुर संगीत ध्वनि सुनी है। बहुत ज्यादा मृत्युभय (ऐको, ऐक्टि, जीरम, लैक-कैन, लैके, लोबेल, माइगेल, नक्स)। सभी बातोंमें उदासीनता प्रकट करता है (ऐपिस बेप, साइक्यू-वाई ; कैलि-बाई, ओपि, ऐसिड-फास, फास, स्टैफ, सिफिलिन)।

मस्तक ।—खड़े होनेके समय या चलनेके समय एकाएक मूर्च्छा आ जाना और पतन। पासकी चीज और पानीकी ओर देखते रहनेपर सरमें चक्कर आता है। (सार्सा)। स्नायविक बीमारियाँ,—समूचे माथेमें अस्त्राघात या फाड़नेकी तरह दर्द,—रोगीको बाध्य होकर सोये रहना पड़ता है; गर्दनकी अकड़नकी वजहसे माथा पीछेकी ओर टेढ़ा हो जाता है; ऐसा मालूम होता है मानो माथेके पीछे कोई तरल पदार्थ ढलमला रहा है; ऐसा मालूम होता है मानो सरके पिछले भागमें किसीने घमसे मार दिया (क्रोटेलस)। दाहिनी कनपटीमें या कपालमें शूल मारनेकी तरह दर्द। जोरसे माथा हिलाने या खाँसनेपर वृद्धि। खाँसनेपर-ऐसा मालूम होता है, मानो चूर्ण-विचूर्ण हो गया,—रोगी खाँसनेके समय दोनों हाथोंसे माथेका दोनों पार्श्व कसकर पकड़ रखता है (व्राई, कैप्स, नेट्र-मूर, कैल्के, क्रिम, फेरम, फेरम-ऐसेट, लैके, मेजे, नेट्र-मूर, ऐसि-फास),-इसके साथ ही पित्त-वमन (कोली, ग्रैफ, इपिक, लैके, नक्स-वोम, क्रोटेलस, पल्स, सिपि बिरेट)।

आँख ।—दाहिने भौंके ऊपर सलाई गड़नेकी तरह दर्द। दृष्टिके सामने काले काले बिन्दु उड़ते फिरते हैं (ऐगार, ऐमोन-मूर, बेल, कैल्के, सिक्वो, काकु, कोना, मार्क, ऐसिड-नाई, फास, सिपि, साइलि),—पढ़नेपर दर्द बढ़ जाता है। पलकें बहुत भारी मालूम होती हैं, देख नहीं सकता (कोलो, जेलसि, कास्टि, ग्रैफ ; दोनों पलकें झपी जाती हैं—सिपि); आँखमें ऐसा मालूम होता है मानो असंख्य छोटी छोटी शलाकाएं गड़ रही हैं

(आर्जेण्ट-नाइ, डलिकास, हिपर, ऐसिड-नाइ देखो)। सन्ध्याके समय दृष्टि लोप हो जाती है। हमेशा ऐसा मालूम होता है, मानो दृष्टिपथ अंधकारमें ढका हुआ है।

कान।—कानमें कितनी ही तरहकी आवाजें आया करती हैं। कभी सांय सांय शब्द कभी पशुओंकी चिल्लार ध्वनि, इसके अलावा कभी ठन ठन शब्द (केल्के, मेंङ्गी, कोना, लिड, नेट्र-म्यूर ; कानमें अस्त्रके आघातकी तरहका दर्द पैदा होकर पैरके तलवे तक पहुँच जाता है, रोगीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है। मध्य-कर्णका प्रदाह, यंत्रणासे रोगी पागल सा हो जाता है और कानसे पीवका स्राव हुआ करता है (बेल, बोर, कैमो, हिप, मार्क, नक्स, पल्स)।

नाक और मुखमण्डल।—पीनस-रोग,—सड़ो गन्ध-भरा जमा हुआ पीव निकलता है (अरम, कैडमि-सल्फ, हाइड्रो, सोरिन)। मुंह और गालका पक्षाघात,—कभी कभी खानेका पदार्थ निगलनेमें तकलीफ होती है। मुंह और जोभके दाहिने पार्श्वमें मानो खिंचाव-सा है।

पाकस्थली।—पेट-भरकर खाते ही भूख लग आती है। (बोवि, केल्के, क्विनिन-सल्फ, सिना ; लेके, केल्के-कास्टि, मार्क, फास, प्रम्ब, स्ट्रान)। रोटी और उद्भिज आदि पदार्थोंसे अरुचि (रोटीसे अरुचि = लैकिपु ; उद्भिद द्रव्य आदिसे = हेलिबो, मैग-कार्ब)। पानी और शरबत आदि पीनेकी आकांक्षा (आर्स, ओलियैन, राम. सैबाई), लेमोनेड (केलि-कार्ब, लाई) ; शराब (लेके-सल्फ, थिरिड; और दूध पीनेकी इच्छा = ब्राई, लेके, फिलेन, एपिस, चेलिडो, मार्क-वाई) पर ये सब चीजें खानेपर बीमारी पैदा होती है। तेज शराब आदिसे अरुचि। बार बार तीती और जलन पैदा करनेवाली डकार आती है (तीते स्वादकी डकार = ब्राई, चायना ; ग्रेंटि, मार्क, लुपिपु, नक्स, सल्फ, एसिड-सल्फ, थूजा ;—जलन पैदा करनेवाली डकार = बेल, कैम्ब, हिप, आयोड, लाई, ओलि-ऐन, एसिड-फास, सल्फ, टैबाक, वेलि)। खून, पित्त-मिले सड़े-पचे द्रव्य आदिका वमन। पाकस्थली हमेशा खाली और भूख मालूम होती है (ऊगिट्याना, नेट्र-कार्ब, ओलि-ऐन, पेट्रोल, फेलेन, ब्रोम, गैम्बो, सैना, सिपि, वेरेट, सल्फ), मिचली और यंत्रणादायक हिचकीके साथ पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है मानो एक बड़ा गुल्लकी तरह पदार्थ पड़ा हुआ है

(पंजरेके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानो एक गुल्मकी तरह पदार्थ इधर उधर घूम रहा है=क्यूप्रम)।

अन्नाशय ।—सारे शरीरके शोथ रोगमें यकृतकी बहुत अधिक सूजन (आर्स, ऐको, चायना, किनिन-सल्फ, लैकि, नक्स-मस, सल्फ, कार्डियस)। यकृतमें फोड़ा और पथरी पैदा हो जानेका लक्षण; शरीर हिलानेपर यकृतमें शस्त्रके आघातकी तरह दर्द होता है। (कार्बो-ऐन, लैके, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, रेनान,)। पेट इस तरह फूल उठता है, मानो उदरी हो गयी हो। ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें एक सजीव पदार्थ घूमता फिरता है (ऐराण्ड-मरि, कौक्को-फास, कैनाब-सैट, क्रोकस, कानवेल, सैबाई, सल्फ, थूजा)। तलपेटमें जलन, भयंकर असह्य आँतोंका शूल,—रोगी सामनेकी ओर टेढ़ा होकर पेट मला करता है (कोलो, क्यूप्रम)। जलन पैदा करनेवाला आँतोंका शूल,—मानो पेटमें एक जलता हुआ लोहा घुस रहा है—इसके साथ ही बहुत अधिक पित्त-मिला और बदबूदार मल।

पेशाब ।—मसाना या मूत्रग्रन्थि (Kidney) में ऐसा दर्द मानो कुछ कोंचा जा रहा है या खींचता है। बार बार चुआये हुए पानीकी तरह पेशाब; पाकस्थलीमें तेज दर्द; मुंह बहुत सूखा और सन्ध्या तथा रातमें बहुत अधिक प्यास। चीनी मिला पेशाब (सिजिजियम-जैम्बो, नेट्र-सल्फ, युरेन-नाइट)। नवीन बहुमूत्र रोगाधिकारमें दुबलापन, प्रत्येक बार बहुत ज्यादा पेशाब होता है, बहुत वेग और मूत्रस्थली फूली हुई मालूम होती है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—जननेन्द्रिय प्रदेशमें तेज गन्ध (नैट्र-म्यूर, सार्सा) शिश्न लाल और फूला। शिश्न-मुण्डके पीछे बहुत अधिक श्वेत रेणुका सञ्चय होना। रमणेच्छा प्रबल पर लिङ्गमें कड़ापन नहीं आना। शृंगार या आलिङ्गनके समय बहुत विलम्बसे वीर्य-पात हुआ करता है और उसमें सुख नहीं मालूम होता।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु निर्दिष्ट समयके सात दिन पहले ही हो जाता है; दाहिने डिम्बाधारमें मरोड़की तरह दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु वगैरह नीचेकी ओर धक्का दे रहे हैं, कमरमें दर्द होता है और कमजोरी मालूम होती है, स्राव बहुत थोड़ा होता है और पाँच दिनोंके बदले कुल तीन दिन रहता है। जरायु प्रदाह-भरा और फूला; मानो बिकोटी

काटता है या जलता है या आलपीन गड़ती है—इस ढंगका दर्द होता है। जरायु-मुखके जखमसे कषाय स्राव (Acrid) रस निकला करता है। प्रदरका स्राव बहुत थोड़ा, गाढ़ा, पीबकी तरह और बहुत बदबूदार होता।

श्वास-यंत्र ।—दाहिने फेफड़ेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और श्वास-कच्छ्रता। सञ्चालन शक्ति—पैदा करनेवाले स्नायुकी सुस्तीकी वजहसे श्वास-कच्छ्रता। सीढ़ी चढ़नेके समय श्वासकी तकलीफ बढ़ जाती है; (आर्स, मार्क, वोर)। हमेशा थोड़ी देरतक रहनेवाली सूखी खांसी और छातीमें दर्द; जलीय हवा लगनेसे वा हँसनेपर बढ़ जाती है; खांसी रह रहकर पैदा होती है और समूची देहको हिला देती है। खांसीके बाद के होती है, सर दर्द करता है, और चेहरा लाल हो उठता है। छातीमें बहुत दर्द यहाँ तक कि वक्ष परीक्षा यन्त्रका दबाव या भार भी नहीं सहन होता। श्वास-प्रश्वास शक्तिके सुस्त पड़ जानेका उपक्रम।

प्रत्यङ्ग आदि ।—छातीका बायां पार्श्व और बायां हाथ सुन्न। दोनों पैर बहुत कमजोर,—चलनेमें अपने वसमें नहीं मालूम होने। निस्पन्द वायु रोग—नींद खुलनेपर रोगी टकटकी लगाकर एक ओर देखा करता है। इसके साथ ही निचले-हनुमें अकड़न। गट्ठे निकलना बन्द करनेमें सहायता करता है।

त्वचा ।—कुष्ट व्याधि (वैसिलिन, आर्स-आयोड, वैक्सिन, मैलाण्ड्रिन, हाइड्रो-कोट, हियुरा; ऐनाक, कोलोट्रोप)। नाकके ऊपर दाने (गुटिका) निकलना (कैलोट्रोप-जाई)। पित्त-बिन्दु या यकृत (Liver-spot),—पीले भूरे रङ्गका।

वृद्धि ।—शरीर-सञ्चालनसे, चलनेके समय; सीढ़ी चढ़नेपर; शीत लगनेसे, ठण्डी हवामें और जलवायुके परिवर्तनसे; रातके २ बजेसे तीसरे पहर ३ बजेतक शरीरके दाहिने भागमें।

घटना ।—स्थिर होकर सोये रहनेपर।

सम्बन्ध ।—**सदृश ।**—नक्स-वोम, ऐरेनिया—डाया, (ज्वर), फेरम (माथेमें दर्द), क्रोटेलस; (पित्त बिन्दुके सम्बन्धमें) गुयारिया, लाइको, सिपि, नक्स, सल्फ।

दोषघ्न ।—ब्रोमिन और क्लोरिन।

शक्ति ।—६ ठे से ५०० शततमिक क्रम।

(पंजरेके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानो एक गुल्मकी तरह पदार्थ इधर-उधर घूम रहा है=कूप्रम)।

अन्त्राशय।—सारे शरीरके शोथ रोगमें यकृतकी बहुत अधिक सूजन (मार्क, ऐको, चायना, किनिन-सल्फ, लैकि, नक्स-मस, सल्फ, कार्डियस)। यकृतमें फोड़ा और पथरी पैदा हो जानेका लक्षण; शरीर हिलानेपर यकृतमें शस्त्रके आघातकी तरह दर्द होता है। (कार्बो-ऐन, लैके, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, रैनान,)। पेट इस तरह फूल उठता है, मानो उदरी हो गयी हो। ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें एक सजीव पदार्थ घूमता फिरता है (ऐराण्ड-मरि, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, क्रोकस, कानवेल, सैबाडि, सल्फ, थूजा)। तलपेटमें जलन, भयंकर असह्य आँतोंका शूल,—रोगी सामनेकी ओर टेढ़ा होकर पेट मला करता है (कोलो, कूप्रम)। जलन पैदा करनेवाला आँतोंका शूल,—मानो पेटमें एक जलता हुआ लोहा घुस रहा है—इसके साथ ही बहुत अधिक पित्त-मिला और बदबूदार मल।

पेशाब।—मसाना या मूत्रग्रन्थि (Kidney) में ऐसा दर्द मानो कुछ कोंचा जा रहा है या खींचता है। बार बार चुआये हुए पानीकी तरह पेशाब; पाकस्थलीमें तेज दर्द; मुंह बहुत सूखा और सन्ध्या तथा रातमें बहुत अधिक प्यास। चीनी मिला पेशाब (सिजिजियम-जैम्बो, नेट्र-सल्फ, युरेन-नाइट)। नवीन बहुमूत्र रोगाधिकारमें दुबलापन, प्रत्येक बार बहुत ज्यादा पेशाब होता है, बहुत वेग और मूत्रस्थली फूली हुई मालूम होती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रिय प्रदेशमें तेज गन्ध (नैट्र-म्यूर, सार्सा) शिश्न लाल और फूला। शिश्न-मुण्डके पीछे बहुत अधिक श्वेत रेणुका सञ्चय होना। रमणेच्छा प्रबल पर लिङ्गमें कड़ापन नहीं आना। शृंगार या आलिङ्गनके समय बहुत विलम्बसे वीर्य-पात हुआ करता है और उसमें सुख नहीं मालूम होता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु निर्दिष्ट समयके सात दिन पहले ही हो जाता है; दाहिने डिम्बाधारमें मरोड़की तरह दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु वगैरह नीचेकी ओर धक्का दे रहे हैं, कमरमें दर्द होता है और कमजोरी मालूम होती है, स्राव बहुत थोड़ा होता है और पाँच दिनोंके बदले कुल तीन दिन रहता है। जरायु प्रदाह-भरा और फूला; मानो विकोटी

जाता है, और रोगीको बाध्य होकर शय्या त्यागकर तबतक टहलना पड़ता है, जबतक कुछ वायु निकलकर आराम न मालूम हो। आगे लिखे गये इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ;—चुपचाप छिपाया हुआ शोक या अपने किये हुए अपराधके दण्डका भय और अपना कर्त्तव्य प्रतिपालित नहीं हुआ—इस ज्ञानकी वजहसे मानसिक बीमारियां। रोगी बहुत दुःखित और चिड़चिड़ा बना रहता है ; क्रोधी-स्वभाव, मुर्झाया हुआ और सभी विषयोंमें विरक्ति मालूम होती है। रोनेवाला, एकान्त-प्रिय, घरके बाहरको हवा लगना अच्छा नहीं मालूम होता—सर्दी हो जानेका भय होता है। जिनमें खूनकी कमी है—उनका सर दर्द,—आँखके सामने चमक दिखाई देना और इसके साथ ही तिमिर दृष्टि,—खासकर सवेरे सोकर उठनेपर। रोगी देखता है कि उसकी आँखके सामने कुछ चमक रहा है, या आगकी चिनगारियां उड़ रही हैं या कितने ही रङ्गोंकी चमकीली सुई इत्यादि है। अथवा मानो चारों ओर कुहरा छाया हुआ है, उसके भीतरसे सब चीजें धुंधली दिखाई देती हैं। कई ग्रास खाते ही भूख गायब हो जाती है ; उस समय खानेकी चीज देखनेपर घृणा या मिचली पैदा हो जाती है। मुंहकी लार इतनी नमकीन होती है कि जो कुछ खाता है वही नमक-भरा मालूम होता है। ऋतु-स्राव बहुत अधिक काले रङ्गका और गाढ़ी मलाईकी तरह छाल मिला हुआ। रजःस्राव के समय रोगिनी अच्छी रहती है। गुलके नीचे जलन और बहुत दर्द मालूम होता है,—बैठने, चलने या खड़े होने—सभी अवस्थाओं दर्द होता है (ऐगार, कार्ष्टि, फाइटो, बेलि)

लक्षणावली।

मन ।—निर्जन और एकान्तमें बैठकर अपने भविष्यके सम्बन्धमें सोचना पसन्द करता है। क्रोधी स्वभाव, दुःखित चित्त और चिड़चिड़ा। सभी तरहके परिश्रमोंसे अनासक्ति प्रकट करता है ; रोना। खुली हवामें घूमना नहीं चाहता, (पल्सेटिलाके विपरीत)। रुके हुए शोक या हिताहित बुद्धिकी ताड़ना या अधूरे अथवा न किये हुए कर्त्तव्य कार्य या कुकार्य आदि करनेकी वजहसे बीमारियां। भ्रमज्ञान या भ्रम कल्पना,—मानो वे दो आदमी शय्यापर सोये हुए हैं और दूसरे मनुष्यकी देह उसके शरीरपर पड़ी है (रोगिनी समझती है, कि तीन आदमी उसकी शय्यापर सोये हुए हैं और ओढ़नेके भीतर नहीं अटते—बैप ; रोगिनी

सिक्लेमेन युरोपियम।

(CYCLAMEN EUROPAEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—वसन्त ऋतुमें संग्रहकी हुई जड़से मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— खूनकी कमी; रक्ताल्पता; सर्दी; दो देखना; अजीर्ण; आँखकी बीमारियाँ; सर दर्द; हिचकी; आर्त्तवमें विकार; गर्भिणी रोग; वात; मूत्रनाली प्रदाह; सरमें चक्कर आना; लिखनेवालोंका हाथ काँपना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जो मनुष्य श्लेष्मा और रस-प्रधान धातुवाले हैं और जिनके शरीरका रक्त शून्य या नील-पाण्डु रोग ग्रस्त हो रहा है (Chlorotic); बहुत ही आलस्य-प्रिय, जो सामान्य परिश्रमसे ही कातर हो पड़ते हैं या जिन स्त्रियोंका रङ्ग सफेद हो गया है और जो हरित-पाण्डु रोगसे ग्रसित हो रही हैं, जिन्हें ऋतु अनियमित समयपर होता है (फेरम, पल्स, सिपि) और ऋतुके समय, सरमें चक्कर आना, सरमें दर्द, दृष्टि हीनता प्रभृति रोग दिखाई देते हैं—उनके लिये सिक्लेमेन विशेष उपयोगी है। डा० फेरिङ्गटनका कथन है कि रोगीको नींद खुलनेपर यदि उसे परिश्रम करना पड़ता है, तो उसका जी बहुत खराब मालूम होता है; सवेरे सोकर उठनेपर उसका शरीर इतना भारी मालूम होता है और इतना आलस्य मालूम होता है कि वह किसी तरह दिन भरके काम काज कर सकेगा, इसका वह निर्णय नहीं कर सकता पर एक बार परिश्रम करना आरम्भ करनेपर, फिर उसे तकलीफ नहीं होती; राततक खूब मजेमें काम किया करता है, उसे कभी कभी आँखके सामने चमक दिखाई देती है। कभी कभी उसे सभी चीजोंका आधा भाग दिखाई देता है (चीजोंका केवल बायाँ आधा भाग देखता है,=लिथिया-कार्ब; केवल दाहिना आधा या नीचेवाला आधा भाग देखता है=नेट्र-म्यूर, ऐसिड-म्यूर; केवल निचला आधा भाग देख पाता है=अरम)। इन सब रोगियोंको जो अजीर्ण रोग होता है, उसकी विशेषता यह है कि पेटमें वायु सञ्चित होकर रातमें शूलका दर्द पैदा हो

(लाई, मूनस, रोडो) और भी खा लेनेपर जो मिचलाने लगता है, लेमोनेड पोनेकी बहुत अधिक इच्छा (सेबाई) ; रोटी (कुरारि ; लेक्टियु) मांस, मक्खन वगैरहसे अरुचि (कोलचि ; मक्खनसे अरुचि = आर्म, चायो-वे, चायना, मिनि-येन, पल्स) ; न खाने योग्य चोजोंपर रुचि (ब्राई, ऐल्यू, ऐसिड-नाई, नक्स)। भोजनके बाद सोनेकी बहुत इच्छा। पेटमें ऐसा मालूम होता है मानो एक सजीव पदार्थ घूमता फिरता है (ऐराण्डो-मेरि, कैल्के-फास, कैनाबिस-सेट, कोकस, कुरारि, कानमेल, सल्फ, थूजा)। श्लेष्मामय वमनके बाद औंघाई (इथ्यूजा, देखो)। खूनका वमन।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु स्राव बहुत ज्यादा और असमयमें ही हो जाता है; रङ्ग काला (ब्राई, कैन्थ, कैमो, क्रोकास, फेर, इग्ने, नाइट्रम, प्लैट, पल्स,) और जमा हुआ। (कैमो, काक्यु, फेर, इग्ने, नेइ-सल्फ, प्लैट, पल्स, रास-वेन, सैबाई, मलाईको तरह पदार्थ मिला ; स्रावके समय रोगिनीको आराम मालूम होता है, (सिरियम-आक्साल, लेके,—अस्वस्थता मालूम होती है ऐक्टा, पल्स)। ऋतु होनेके पहले रातमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता है, इसके पहले दिनमें पेट वायुसे भर जाता है और फूल जाता है (क्रियो)। रजोरोध—बैठनेपर ऋतुका स्राव बढ़ जाता है और चलनेपर घटता है ('ककस-कैक ; चलनेके समय आर्त्तवका स्राव होता है और चलना बन्द करते ही रुक जाता है = लिलि-टाइग्र ; सोनेपर स्राव होता है, बैठने या चलनेपर बन्द हो जाता है = क्रियो, मैग-फास ; सोनेपर स्राव बन्द होता हैं = कौक्ट, कास्टि लिलियम)। आगकी चिनगारियाँ देखना या धुंधला देखना और अधकपारीके दर्दके साथ अनियमित ऋतु ; गर्भस्रावमें हिचकी (ओपि), प्रसवके बादका खूनका स्राव,—प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, सरमें चक्कर आना और धुंधली दृष्टि—मानो पृथ्वी कुहरेसे ढकी हुई है।

श्वास-यंत्र ।—रातमें वायुनलीमें सुरसुरी होकर भयानक श्वास रोधक खांसी—स्वरनालीमें ऐसा अनुभव होता है, मानो खुरच रहा है। जिह्वामूलीय गह्वरके भीतर दर्द और खांसी आती है और गाढ़ा श्लेष्मा इकट्ठा होता है। रात में निद्रितावस्थामें बहुत तेज खांसी पैदा हो जाती है, पर बच्चेकी नींद नहीं खुलती। फेफड़ेमें बहुत सुस्ती,—वह मानो श्वास-प्रश्वासकी क्रिया नहीं कर सकता। (बोलनेका परिश्रम भी सहन नहीं कर सकता = स्टैन)।

समझती कि दो आदमी बीमार हुए थे, एक आदमी मर गया और एक अच्छा हो गया = सिकेलि ;—मानो उसकी शय्यापर एक पुरुष सोया हुआ है,—पलुस

मस्तक ।—चक्कर आना—किसी अवलम्बनपर भार देकर खड़े होने या स्थिर रहनेपर मालूम होता है कि मस्तिष्क गतिशील हो रहा है। सरमें चक्कर आना—चीजें ऐसी मालूम होती हैं, मानो वृत्ताकारमें या उसके चारों ओर घूम रही हैं या मानो एक ओर उठती हैं और दूसरी ओर गिरती हैं ; वायु सेवनके लिये टहलते समय बढ़ जाता है और घरमें बैठे रहनेपर घटता है। सर दर्द,—सवेरे उठनेके समय—दृष्टिके सामने चमकीली चीजें देखना या असम्पूर्ण दृष्टि। ललाटके बायें पार्श्वमें बहुत तेज सर दर्द ; ठण्ढे पानीका प्रयोग करनेपर दर्द घट जाता है। बेहोशी पैदा करनेवाला सर दर्द और दृष्टि लोप। अधकपारी का दर्द,—उसके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं। ऐसा दिखाई देता है ; दृष्टि जितनी ही साफ होती जाती है, सरका दर्द भी उतना ही बढ़ता जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा।

आँख ।—आँख गड्ढेमें धंसी और उसके चारों ओर नीला घेरा,—दृष्टि गदली, दो देखना (Diplopia) या आधा देखना (Hemiopia) ; तिर्यक दृष्टि या डेरा देखना। आँखके सामने चमक, कितने ही रङ्गोंकी आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं या जलती हुई सुई दिखाई देती है ; चारों ओर कुहरा या धूएँसे ढका मालूम होता है;—विशेष कर सवेरे बिछावनसे उठनेपर, पढ़नेके समय आंखोंमें जलन मालूम होना।

नाक ।—सर्दीकी वजहसे स्वाद और घ्राण शक्तिका गायब हो जाना (पलुस)। नासारन्ध्रसे गाढ़े श्लेष्माका स्राव (पलुस) और बार बार तेज छींक आती है।

मुंहके भीतर ।—जीभपर सफेद लेप चढ़ा। दोनों ओंठ सूखे ; पर प्यास नहीं रहती (नक्स-मस)। संध्याके समय जीभके अगले भागमें जलन होती है। मुख-विवर और कण्ठके भीतर अपेक्षाकृत लाल दिखाई देता है।

पाकस्थली ।—लार नमकीन और इसी वजहसे खानेकी सभी चीजें नमकीन मालूम होती हैं (आर्स, कार्बो-वे, चायना, पलुस, सल्फ)। कई ग्रास खानेपर ही पेट भर जाता है और फिर खानेकी रुचि नहीं रह जाती

स्राव हो: स्राव वीर्य-पतन हो जाना, या मूत्रस्थलीकी सुखशायिका ग्रन्थि (Prostate) से स्राव हो स्राव लारको तरह रस बहना वगैरह लक्षणोंकी यह एक लाभदायक दवा है। भयंकर तकलीफ देनेवाला अधकपारीका दर्द भी इससे बहुत कुछ आराम हो जाता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्नि (क्लान्ति)। वेलिस, सैबाल-सेरुलेटा, कास्टि (ध्वजभंग, प्रोस्टेटकी बीमारी)। ऐपिफिगस (अधकपारीका दर्द)।

शक्ति।—मूल अर्क १० से ३० बूंद तक।

डेफनी-इण्डिका।

(DAPHNE INDICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— अन्धापन; क्षीण दृष्टि; कब्जियत; खांसी; ज्वर; पाकाशयका शूल; प्रमेहकी वजहसे वात; कुष्ठ; पारा और उपदंश धातु; शुक्रक्षरण; प्लीहा; अनिद्रा; दांतका दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पेशी, हड्डी और त्वचापर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है, इसलिये, उपदंश रोगमें यह विशेष लाभदायक हुआ है। इसका दर्द स्थान बदला करता है, और बिजलीकी तरह तेजीसे फैलता है। इसमें तम्बाकू सेवनकी बहुत इच्छा हुआ करती है। शरीरपर कुछ लसदार पसीना होता है; सन्ध्याके समय पैरपर लाल रंगके चकत्ते; जीभका एक पार्श्व लेप चढ़ा और बहुत बदबूदार; मुंहसे गर्म लारका स्राव, नितम्ब-देशमें जाड़ा मालूम होना; प्लीहामें एकाएक सूक्ष्म शलाका वेधनेकी तरह दर्द; सभी दर्द एकाएक प्रकट होते हैं; सांस, पेशाब पसीना वगैरह देहसे निकले हुए सभी पदार्थोंमें बदबू रहती है; हाथ-पैरके अन्तिम भागसे दर्द आदिका एकाएक दूसरे स्थानपर चला जाना—पैरके अंगूठे के नीचेसे दर्दका एकाएक हृत्पिण्डपर पहुंच जाना—इत्यादि यहीं डेफनीके

सोचने या वक्तृता आदिमें ध्यान लगाना उसके लिये मुश्किल हो जाता है, क्रोधी ; चिड़चिड़ा और सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट करता है।

निद्रा ।—नींद न आना ; लगातार बोलते रहनेकी इच्छा ; शय्यापर सोकर छटपटाया करता है ; हाथ नख आदि नाचते या कांपते हैं ; गर्भस्राव होनेपर बराबर कई रात यही अवस्था रहती है। दांत निकलनेवाले बच्चे रात में नींद खुलनेपर अस्वाभाविक आनन्द और खेलमें मस्त रहते हैं, फिर सो जानेका कोई लक्षण नहीं दिखाई देता (यह मस्तिष्क विकारका पूर्व लक्षण है)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।— ऐप्युा ; काफिया ; केलि-ब्रोम, स्कुटेलारिया ; वेलि।

शक्ति ।—मूल अर्क से ६ ठा शततमिक क्रम तक।

डेमियाना।

(DAMIANA)

or

(TURNERA APHRODISIACA)

दूसरा नाम ।—टर्नेरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— ऋतु बन्द हो जाना ; बाधक ; क्लान्ति ; ध्वजभङ्ग ; श्वेत प्रदर ; सर-दर्द ; शुक्र-क्षय ; बन्ध्यत्व ; पेशाबका वेग रोक नहीं सकता।

उपयोगिता और आभास ।—डा० हेलके मतसे यह स्त्री और पुरुष दोनोंकी ही जननेन्द्रियमें उत्तेजना पहुँचाता है। गिर जानेके कारण मेरुदण्डमें चोट पहुंचना ; बहुत अधिक इन्द्रिय सेवन, उपदंश या प्रमेह, रजोरोध, बाधक और प्रदर वगैरहसे पैदा हुई जननेन्द्रियकी शिथिलतामें यह बहुत लाभदायक है। वृद्ध मनुष्योंमें पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना, दिन रात अपने ही आप बूंद बूंद पेशाब निकला करता है। स्वप्नदोष या

आप ही आप वीर्य-पतन हो जाना, या मूत्रस्थलीकी मुखशायिका ग्रन्थि (Prostate) से आप ही आप लारकी तरह रस बहना वगैरह लक्षणोंकी यह एक लाभदायक दवा है। भयंकर तकलीफ देनेवाला अधकपारीका दर्द भी इससे बहुत कुछ आराम हो जाता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्निं (क्लान्ति)। बेलिस, सैवाल-सेरुलेटा, कास्टि (ध्वजभंग, प्रोस्टेटकी बीमारी)। ऐपिफिगस (अधकपारीका दर्द)।

शक्ति।—मूल अर्क १० से २० बूंद तक।

डेफनी-इण्डिका।

(DAPHNE INDICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— अन्धापन; क्षीण दृष्टि; कब्जियत; खाँसी; ज्वर; पाकाशयका शूल; प्रमेहकी वजहसे वात; कुष्ठ; पारा और उपदंश धातु; शुक्रक्षरण; प्लीहा; अनिद्रा; दाँतका दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पेशी, हड्डी और त्वचापर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है, इसलिये, उपदंश रोगमें यह विशेष लाभदायक हुआ है। इसका दर्द स्थान बदला करता है, और बिजलीकी तरह तेजीसे फैलता है। इसमें तम्बाकू सेवनकी बहुत इच्छा हुआ करती है। शरीरपर कुछ लसदार पसीना होता है; सन्ध्याके समय पैरपर लाल रंगके चकत्ते; जीभका एक पार्श्व लेप चढ़ा और बहुत बदबूदार; मुंहसे गर्म लारका स्राव, नितम्ब-देशमें जाड़ा मालूम होना; प्लीहामें एकाएक सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द; सभी दर्द एकाएक प्रकट होते हैं; सांस, पेशाब पसीना वगैरह देहसे निकले हुए सभी पदार्थोंमें बदबू रहती है; हाथ-पैरके अन्तिम भागसे दर्द आदिका एकाएक दूसरे स्थानपर चला जाना—पैरके अंगूठे के नीचेसे दर्दका एकाएक हृत्पिण्डपर पहुंच जाना—इत्यादि कई डेफनीके

प्रधान निर्णायक लक्षण हैं । इसका एक और भी असाधारण लक्षण यह है, कि रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा, बाहु वगैरह प्रत्यङ्गका कोई एक अंश देहसे अलग हो गया है ।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें दर्द,—मानसिक परिश्रमसे उसका बढ़ना ; ऐसा मालूम होता है मानो माथा भरा हुआ है । मानो खोपड़ी फट जायगी ; खास कर शय्यासे उठनेपर ऐसा ही मालूम होता है । मूर्द्धा-देशकी हड्डीका फूलना ; यह फूलन इतनी कोमल होती है कि वह जल-भरी मालूम होती है और इसमें रातमें बहुत दर्द मालूम होता है,—यहाँतक कि इस दर्दके कारण नींदमें गड़बड़ी हो जाती हैं और छूनेपर दर्द बढ़ जाता है । माथेके बायें पार्श्वमें कड़ी सूजन,—मानो हड्डीके भीतरकी ओर हो रही है । रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा शरीरसे अलग है ।

आँख ।—आंखमें ऐसा मालूम होता है, मानो छील रहा है । आँखमें दर्द ; मानो धक्का देकर सरमें घुसा जाता है । आँखें प्रदाहयुक्त और ज्योतिहीन,—मानो पानीमें तैर रही हैं (क्रोकस) । ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके सामने एक पतली झिल्ली झूल रही है । (कास्टि, पल्स, रेटान) ।

मुखमण्डल ।—गालमें, कानके चारों ओर और मूर्द्धादेशमें जलन और उत्ताप मालूम होना—इसके साथ ही जम्हाई लेनेकी इच्छा । जीभका केवल एक पार्श्व लेप चढ़ा (रास, लोबेलिया) और जीभसे बहुत बदबू निकलती है (जेलसि, कैलि-ब्रोम, प्लम्ब), नींदके बाद जीभ बहुत सूखी मालूम होती है,—मानो जल गयी है (स्ट्रान) । मुंहसे गर्म लारका स्राव । धूम्रपान करनेकी बहुत इच्छा (युजिनिया-येम्बस, स्टैफि, थिरिड)

पाकस्थली ।—मुंहमें पानी भर आना और खट्टी कै होना (बोर, कैल्के, कास्टि, फेरम, नक्स, फास, कैलके, ब्रोम, पलस, सल्फ) ; पहली बारके भोजनके बाद मिचली [illegible] (बोर) ; [illegible] बाद पेटमें दर्द होता है । प्रत्येक बार भोज[illegible] ऐसा मालूम होना मानो खाल उधड़ [illegible] साथ [illegible] आना (निट्र-कार्ब, सार्सा) ; प्लीहा [illegible]

कास, आर्स, कैप्स, सिङ्को, इग्ने, नक्स, सल्फ, सिपेमोवेय)। वातकी वजहसे दर्द बिजलीकी तेजीकी तरह हाथ-पैरकी छोड़कर उदरमें पैदा हो जाता है।

पेशाव।—बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होना। अकसर रात में शय्यामें अनजानमें पेशाव हो जाता है। (सिपि, ऐमोन-कार्ब, साइलि, फायो थे, सिना)। पेशाव—गदला गाढ़ा, पीली आभा लिये और उसमें सड़े अण्डे की तरह गन्ध। तली कुछ लाल रङ्गकी जमती है,—पेशावके बर्त्तनमें मिट्टी रहती है (लाई, नेट्र-मूर, पलस, सिपि, वैलि); पेशावके समय मूत्रनालीमें ऐसा अनुभव होता है, मानो खाल उधड़ गयी है (बोवि, सिनाबे, नक्स-मोस)।

हृत्पिण्ड।—कलेजा धड़कना और हृत्पिण्ड एकाएक धड़फड़ कर उठता है; रोगी बाईं करवट सो नहीं सकता (ऐड्रस, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, नक्स; पलस, टैबाक, वायोला-ट्राई); हृत्प्रदेशमें छेदने या फाड़नेकी तरह तकलीफ मालूम होना,—रोगी काँपा करता है और यंत्रणासे पागल हो पड़ता है। रातमें श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है (ऐकी, आर्स, कार्बो-वेज, कैमो, डिजि, कैलि-कार्ब, कैलि-क्लो, लैके, नक्स, पलस, सैम्बि, सेनेगा, स्ट्रैन),—और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी गर्दनकी ग्रन्थियाँ सब फूल गयी हैं और धमनियाँ सब खूनसे भर गयी हैं (नींदका आवेश आते ही श्वास रोध होने का उपक्रम=जेल्सि, ग्रफाइ, लैके, लैक-कैन, ओपि, क्लोराज)।

प्रत्यङ्ग आदि।—रातमें साँस रुक जाना चाहती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो माथा शरीरसे अलग है (मानो उसकी देह और आत्मा अलग है। ऐनाक, थूजा)। पैरके अंगूठेके नीचे दर्द भरी सूजन,—दर्द अंगूठेसे उदरमें और हृदपिण्डमें चला जाता है (एसाफि, लैक्टि, मैंगे, सिफाइटिस, नक्स-मस; अम्ब; कोलचि, कैलि-बाई, पलस, रोडो)। शरीरमें जगह जगह तेज और जल्दीसे फैल जानेवाला दर्द—एक स्थानसे तेजीसे दूसरे स्थानपर चला जाता है,—ठण्डी हवामें बढ़ जाता है। प्रमेहका स्राव रुक जाने की वजहसे पेशी और हड्डियोंमें वातका दर्द। हड्डियोंका बढ़ना और उनमें लगातार तेज दर्द। रोगीको बाध्य होकर सोना पड़ता है या सोना पसन्द करता है (आर्स, बेराई, कैलेड, कैमो, क्रिसे, सिक्लेमेन, वेरे, ऐसिड-नाई, नक्स, पलस, स्टैफाई, रास-रेड, ऐण्टि-टार्ट)। उरुदेशमें दर्द,—चलनेके समय बढ़ जाता है (ग्राई, पलस)।

वृद्धि ।—निर्मल वायुमें, कृष्ण पक्षमें, सवेरे, सन्ध्याके समय, शय्यापर सोनेके समय, धूम्रपानसे (मूत्रस्थलीकी मुख-गायिका ग्रन्थिसे रसस्राव), आँखके उत्तापसे, ठण्डी हवामें, छूनेपर और दबाने पर, सोने पर सन्धिवात बढ़ जाता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—(प्रमेहके प्रतिक्षेपकी वजहसे बीमारियाँ)—थूजा; मिडोरिन। (मानो उसका माथा चारों ओर छिटका हुआ है)—ब्रेफ स्ट्रैम; (स्थान परिवर्त्तन करनेवाला दर्द) लैकिटयुका, मैङ्ग, कैलि-आर्द्र, पल्स। (रातमें श्वास रुकनेका उपक्रम (ऐकौ, आर्स, कैमो, डिज़ि, कैलि-क्लो, लैके, सैम्बि, जेलसि, ग्रटिण्ड, क्लोरम, लैके, लैक-कैन, ओपि)

शक्ति ।—१ म शततमिक से ३० शततमिक क्रम।

डेटूरा-आर्बोरिया ।

(DATURA ARBOREA)

दूसरा नाम ।—ब्रुगमेन्सिया-सूवियोलेन्स, एक-तरहका धतूरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके फूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—संबद्ध-भावसे कोई बात सोच नहीं सकता। मस्तिष्कमें कितनी ही तरहकी समस्याएँ और भाव उदय होते हैं, मानो चिन्ताएँ सब मस्तिष्कके बाहर घूमती फिरती हैं मानो चिन्ता-शक्तिमें मस्तिष्कका कोई प्रभाव नहीं होता, मानो चलनेके समय मिट्टीमें पैर नहीं लगते, सर दर्द वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—स्ट्रैमोनियम।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

डैटूरा-फेराक्स।

(DATURA FEROX)

दूसरा नाम।—चीन देशका धतूरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बीजसे विचूर्ण या फलसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—तन्द्रा, सरमें चक्कर आना, आँख बन्द किये बिना ही नींद पासमें कोई गाता हो तो उसकी लयपर नाचने लगना, लक्षण तथा प्रलाप, एकोन्माद वगैरह मस्तिष्ककी बीमारीमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

डैटूरा मेटेल।

(DATURA METEL)

दूसरा नाम।—भारतीय धतूरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बीजसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आत्महत्या करनेके लिये धतूराका सेवन करनेपर पहले बेहोशी आती है, इसके बाद क्रमसे आँखकी पुतलीका फैलना, प्रलाप और अन्तमें अकड़न पैदा होकर मृत्यु हो जाती है। इन लक्षणवाले आक्षेप, संन्यास, प्रलाप, एकोन्माद वगैरह बीमारियोंमें उपयोगी है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

डेरिस पाइनेटा।

(DERIS PINATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कोटिन चायनामें उत्पन्न एक तरहके उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—इस भावसे चलना मानो सीढ़ीसे उतर रहा है; कोई छातीमें मुक्का मार देगा यह भय; पेशियोंका दर्द-भरा और आक्षेपिक संकोचन; घ्राणशक्तिकी तेजीके कारण साधारण सुगन्धकी स्वर्गीय सुवास और साधारण दुर्गन्धकी नारकीय दुर्गन्धकी तरह अनुभव करना। वातकी वजहसे माथेका स्नायुशूल वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—ऐनाकार्ड (घ्राण-शक्तिकी तेजी); स्टिक्टा, इग्ने (*हिस्टीरिया रोगमें गलेमें एक गोलाकार पदार्थ रहनेकी तरह मालूम होना*)।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

डिक्टैमनस।

(DICTAMNUS)

दूसरा नाम।—फ्रैक्सिनेला।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—डिक्टैमनसके सेवनसे तेज प्रसव-वेदना घट जाती है। कब्जियत, उदरमें वायु-संचय, अतिरज:, श्वेत प्रदर, सपनेमें घूमना वगैरह उपसर्गोंमें भी यह बढ़िया काम करता है।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

डिजिटैलिनम।

(DIGITALINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—डिजिटेलिस औषधका सार भाग।—विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—दमा; अतिसार; शुक्रक्षरण; हृत्-पिण्डका स्पन्दन; स्वप्न-दोष; सरमें चक्कर आना; दृष्टि विभ्रम इत्यादि रोगमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—डिजिटिलिसकी तरह इसकी भी क्रिया प्रधानतः हृत्पिण्डपर होती है। हृद्‌रोगमें इसका निर्णायक लक्षण है—ऐसा अनुभव होना मानो हृत्पिण्ड स्थिर हो गया है। डा० हेल कहते हैं, कि जहाँ हृत्पिण्डकी क्रियाकी अधिकताकी वजहसे सुस्त पड़ जानेकी सम्भावना है, उसी रोगमें अधिक उपयोगी और लाभदायक है। पक्षाघातकी वजहसे शारीरिक अवसन्नता, सुन्न हो जाना और प्रत्यंगोंके कुछ फड़कनेका भाव—ये इसके कई प्रकृतिगत लक्षण हैं। रोगी इतना क्षीण हो पड़ता है, कि उसमें अपनी देह की एक भी पेशीको हिलानेकी शक्ति नहीं रह जाती। इसके द्वारा हृत्पिण्डकी गति विलम्बसे या तेज अथवा क्षीण हुआ करती है। मिचली, पतले दस्त आना, अण्डेके भीतरवाले पीले अंशकी तरह पदार्थका कै करना, कम्प, ऊपरी पेटमें शून्यता मालूम होना, रोएं खड़े हो जाना, कुछ पसीनेसे भरी और लसदार शरीरकी त्वचा, आँखमें रोशनी और नाकमें गन्ध सहन नहीं होती, ललाटमें होनेवाला सर-दर्द,अरुचि पेट फूलना, पेटमें गड़गड़ाहट, बार बार डकार आना, बहुत ज्यादा पेशाब, बहुत थकावट मालूम होना, सन्ध्याके समय उत्तापका पैदा हो जाना और प्यासका न रहना, चलनेके समय ऐसा मालूम होना मानो जमीन हटती जाती है या उतरती जाती है और नींदवाली अवस्थामें बार बार वीर्यपात वगैरह डिजिटेलिनके निर्णायक लक्षण गिने जाते हैं (डा० क्लार्क)।

लक्षणावली।

मन।—किसी भी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथुजा, ऐवेना-सेट, लेक-कैन, ऐसिड-फास, स्कूटेल) या जो पढ़ता है, उसका मर्म समझ नहीं सकता (ऐग-कैस, लार्ड, ऐसिड-फास, सिपि)

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—अस्थिर दृष्टि,—दूरकी चीजपर नजर नहीं डाल सकता (दूरकी चीज पास मालूम होती है=ऐनाक, निकोल स्टैन, सल्फ); सभी चीजें ऐसी मालूम होती हैं, मानो बाईं ओरसे दाहिनी ओर घूम रही हैं,—आँख बन्द करनेपर घट जाती है। सर दर्द,—सवेरे आरम्भ होता है तीसरे पहर बढ़ता है, और सन्ध्याके समय प्रचण्ड अधकपारी के दर्दमें परिणत हो जाता है (सेङ्गियुनेरिया, साइलीसिया, स्पाइजिलिया देखो), मूर्द्धादेश या सरके पिछले भागमें ऐसा मालूम होता है मानो ऊँचा उठ रहा है।

आँख।—ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँख धीरे धीरे बढ़ीसे बहुत बड़ी होकर आंखके गड्ढे बाहर निकलना चाहती हैं (लैकिसु, कोमोक्लेडिया, ऐमिल, लाइकोपो, पैसिफ्लो, फास, स्पञ्जि)। नाना प्रकारकी भ्रम-पूर्ण चीजें देखना। नजरके सामने ऐसा मालूम होना मानो धूलके कण या काले काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं। (सिङ्को, कुरारि, लैकिसु; ऐसिड-नाई, नक्स, फास, थूजा)। सन्ध्याके समय नजरके सामनेका कुछ भाग मेघसे ढका मालूम होता है। आँखके सामने चमककी झिलमिलाहट मालूम होती है। नजरके सामने ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत से चक्कर उड़ रहे हैं (नाइट्रम, स्ट्रैन:—आगके चक्कर=पल्स)। घरके भीतरकी सभी चीजें, ऐसा मालूम होता है, कि एकसे दूसरी मिल गयी हैं। दीपशिखा (दीयेकी लौ) के चारो ओर ऐसा मालूम होता है, मानो एक तरहका मण्डल या शोभा (Halo) दिखाई देती है (ऐल्यू; ऐनाक, बेल, लैके, मैग-म्यूर, नाइट्रम, फास, रियुटा; सिपि, स्टैन, स्टैफाई; नीला रङ्ग=लैके; पीला रंग=फास, सिपि; लाल रंग=रियुटा; नाना प्रकारके रङ्गोंका=नाइट्रम; सभी चीजें पीली दिखाई देती हैं=कैन्थ, सैण्टोनिन, डिजि)।

पाकस्थली।—नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत भूख लगी है। पानी पीनेसे मिचली और वमन बढ़ जाता है (आर्स, बिसमथ, ब्राई); प्रबल वमन,—अण्डेके भीतरवाले पीले अंशकी तरह,—इसके साथ ही आंखमें चमकीली रोशनीसे और नाकमें सुगन्धसे तकलीफ मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो पेट एकदम खाली हो गया है। (क्रोटोन, डायाडेमा, लैकि, मैग-कार्ब, लाई, सैबाड, सल्फ, ऐसिड-टार्ट, टियुक्रि, वैरेट,—भोजनके पहले=सल्फ; भोजनके बाद=डिजि)। पाकस्थली भरी मालूम

होती है। जो मिचलाता है और खाए हुए पदार्थ बार बार गलेमें चढ़ आते हैं।

अन्त्राशय।—सवेरे शय्यासे उठनेपर बार बार बहुत अधिक परिमाणमें वायु निकलनेपर पेटमें तेज मरोड़ेके साथ गाढ़ा लेईकी तरह पाखाना होता है। बिजलीकी गतिकी तरह तेज शलाका बेधने जैसा दर्द। कमरसे तलपेट तक प्रसवके दर्दकी तरह दर्द,—मानो ऋतुस्राव होगा (ऐसाफि, कैमो, साइना; आयोड, केलि-कार्ब, क्रियो, नेट्र-मूर, पल्स, ऐसिड-सल्फ)। उदरामय या पतला पाखाना होना या उदरामय न रहनेपर भी कोमल और थसथसा पाखाना।

प्रश्वास-यन्त्र और हृत्पिण्ड।—वक्षमें वातकी वजहसे दर्द,—सुई बेधनेकी तरह दर्द या छाती मानो कस गयी है, इस तरहका दर्द (आर्स, कोना, आयोड, केक्ट, इपिक, लैकि, लोरो, लोबेल, मस्क, नक्स, ओलि-ऐन, ओपि, फास, रास, स्पाई, स्टैन, टैबाक, वेरेट)। छातीके बाएँ पार्श्वमें और बगलके नीचे वातका दर्द,—केवल शरीर हिलानेपर यह दर्द मालूम होता है। बायें पृष्ठफलकसे सामनेकी ओर यकृतके पासतक ऐसा दर्द मानो खोंचा मार रहा है—लम्बी सांस लेने या छोड़नेपर बढ़ना। बाएँ वक्ष और स्तन तथा बगलके बीचवाले स्थानमें महीन सलाई घुसनेकी तरह दर्द,—संध्याके समय सोनेवाली अवस्थामें या बाईं करवट सोनेपर यह दर्द मालूम होता है। कभी कभी ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड स्थिर हो गया है। (मानो हिलनेपर हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा=जेल्सि)। बाईं करवट सोनेपर, बहुत तेज धड़कन कलेजेमें पैदा हो जाती है (ऐङ्गस, बैराई, ब्रोम, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, पल्स, टैबाक)। हृत्पिण्डकी क्रिया उच्छृङ्खल और विषम। नाड़ी—विलम्बित, विषम, सविराम या बीच बीचमें लोप हो जानेवाली; कभी कभी बहुत त्रस्त गति, हृत्पिण्डकी गतिके अनुसार नहीं,—क्षीण, सूतकी तरह,—प्रायः छूनेपर अनुभव में नहीं आती परन्तु हृत्पिण्डकी गति प्रबल और ऐसा मालूम होता है मानो ताड़नीकी तरह जोरसे आघात करता है (डा० जार कहते हैं, कि "डिजिटिलिसकी मुख्य क्रियामें तेज हृद्वेगके साथ नाड़ीकी गति बहुत धीमी और देरसे होती है"—डिजिटेलिनमसे भी ऐसा ही रहता है)

प्रत्यङ्ग आदि ।—हाथ पैरोंका धीरे धीरे काँपना,—इच्छानुसार काम नहीं कर सकना। भारयुक्त—मानो पक्षाघात हो गया है; विश्रामके समय दर्दका बढ़ना। ऊरुदेशकी जंघाकी पोटलीकी हड्डीमें ऐंठन होती है। नींद खुलने पर ऐसा मालूम होता है, मानो पैरके नीचेकी जमीन उतरती जा रही है।

वृद्धि ।— बाईं करवट सोनेपर, विश्रामके समय पानी आदि पीनेपर और नींद खुलनेपर।

घटना ।—भोजनके बाद और निर्मल वायुमें टहलनेपर।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—डिजिटेलिस; कोनायम ; कोडेइन, जेलसिमियम, टैबेकम, क्रेटिगस, ग्रैटियाला।

शक्ति ।—दूसरे दशमिकसे ६ ठा दशमिक विचूर्ण ।

डिजिटेलिस परप्युरिया ।
(DIGITALIS PURPUREA)

दूसरा नाम ।— फाक्स-ग्लोव ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— दो वर्षके गाछके पत्तोंसे मूल अर्क बनाया जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें फायदा करता है:— अन्धापन ; कलेजेका शूल ; दमा ; मूत्रग्रन्थिकी बीमारी ; नीलिमारोग ; मदात्यय ; शोथ ; ज्वर ; प्रमेह ; सर दर्द ; हृत्पिण्डकी बहुत सी बीमारियाँ ; कोरण्ड ; मस्तिष्कावरणकी बीमारियाँ ; ध्वजभङ्ग ; कामला ; फेफड़ेका प्रदाह ; स्मरण शक्तिका गायब हो जाना ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; उलटी चमड़ी रोग ; मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना ; लारका स्राव ; शुक्रका जाना ; दाँतका दर्द ; दृष्टिलोप या दिखाई न देना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—वयःसन्धि कालमें उत्तापका पैदा हो जाना और इसके बाद बहुत अधिक स्नायविक अवसाद और शिथिलता तथा अवि-

धीमी नाड़ी ; शरीर हिलानेसे ही नाड़ीकी चाल बढ़ जाती है (२) रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि अगर वह हिलेगा तो उसकी नाड़ीकी गति बन्द हो जायगी (जेल्सिमियम ; न हिलनेपर उसके हृदयकी गति बन्द हो जायगी = जेल्सि), हृद्रोग हो जानेका उपक्रम। धड़कनोंका एकदम थमती मालूम होना,—बहुत अधिक सुस्ती, रोगी समझता है, कि उसकी मृत्यु एकदम पास है, (३) मूत्राशय या मूत्रकोषकी क्रियाका रुक जाना, पेशाबके साथ लाल रंगकी बालू निकलना,—पेशाबके समय बहुत तकलीफ और जलन मालूम होना। रातमें अक्सर अनजानमें वीर्यपात हो जाता है और इसके बाद जननेन्द्रिय शिथिल पड़ जाती है, (४) हृत्पिण्डकी बहुत अधिक कमजोरी,—बोलनेमें कष्ट होता है (स्ट्रेन); श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ होती है, और दीर्घ श्वासकी तरह (५) सोनेके समय या विश्रामके समय नाड़ीकी गति क्षीण और विषम हो जाती है। सामान्य कारणसे प्रायः हाथकी अंगुली सुन्न हो जाती है, यहां तक कि पुस्तक पकड़नेपर भी (६) शून्य खांसी;—गर्दनकी धमनीमें टपकका दर्द पैदा कर देता है। (७) आरक्त ज्वरके बाद या माला मेह के बाद शोथ, इसके साथ ही पेशाबका रुक जाना और हृत्पिण्डकी बीमारी तथा मूर्च्छा, (जरायुमें दर्द बना रहनेपर = कानवेलेरिया) रोगीको उठाकर बैठाने के समय या उठानेके समय चक्कर आ कर मृत्यु हो जानेकी सम्भावना पैदा हो जाती है। (८) चेहरा रक्तहीन,—मृत मनुष्यकी तरह ; शरीरकी त्वचा, पलकें, ओंठ, जीभ वगैरह सब नीले। (९) यकृतके बहुत बढ़ जानेकी वजहसे पाण्डु रोग या कामला पैदा हो जाना। (१०) उदरामय (यकृतके विकारके साथ),—मल सफेद या भूरे रङ्गका (हिप, आयोड); बहुत देर से निकलता है और खड़ियाकी तरह (बेल, पोडो); प्रायः सफेद रङ्गका (कैल्के ; सिली); पतला गोल और लम्बा; अनजानमें पाखाना हो जाता है। (१२) आंख, कान, ओंठ और जीभकी शिराएं सब फूल जाती हैं और स्पष्ट दिखाई देती हैं, यही कई डिजिटेलिसके प्रधान निर्णायक और सिद्धिप्रद लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली।

मन ।—दुःखित चित्त, रोना और हमेशा भविष्यकी चिन्ता किया करता है, ज्यादा बोलना नहीं चाहता और बहुत आलसी। चैतन्य या अनुभव शक्ति का घटना। मानसिक आवेग होते ही उदरके ऊपरी प्रदेशमें तेज दर्द मालूम

होता है और यह दर्द नाककी अगले भागतक फैल जाता है। माथा झुकाने पर ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क सामनेकी ओर सरकता आता है। सरमें मानो तरङ्गे उठ रही हैं—ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क पानीसे भरा है [हिप, सिक्लमेन]। मस्तिष्कोदक रोगाधिकारमें मालूम होता है, मानो मस्तिष्कमें पानीकी तरङ्गे, माथेके अस्थि-फलकमें आकर टक्कर देती हैं;—खड़े होनेपर, बोलनेपर, सर हिलानेपर या पीछेकी ओर माथा झुकानेपर बढ़ जाता है और सोनेपर या सामनेकी ओर माथा झुका रखनेपर आराम मिलता है। दिनमें सोनेके समय माथेमें फड़फड़ाहट होती है, माथा बहुत भारी मालूम होता है और पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम हो जाता है।

आंख।—आँख और पलक लाल तथा फूली हुई; ऐसा मालूम होता है, मानो आंखमें धूलके कण गिर गये हैं। आँखसे जलन करनेवाले आंसू गिरते रहते हैं और चमकीली रोशनी या ठण्डी हवा लगनेपर वृद्धि हो जाती है [बोर, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कैमो, साइक्लुटा, क्रोक, युफ्रे, ऐलियम-सिपा, कैलि-कार्ब, मार्क; पल्स, रास, स्टेफाई, सल्फ]। दृष्टिकी अस्पष्टता,—मानो कुहरेके भीतरसे देख रहा है [बेल, कैल्के, सिक्ले, इग्ने, मार्क, प्लम्ब]। चीजें सब कभी हरी, कभी पीली दिखाई देती हैं, [हरी=सिपी, स्ट्रान,—पीली=कैन्थ, सैण्टोनिन, कुरारि; डिजिटेलिन]।

मुखमण्डल।—चेहरा मुर्देकी तरह नीला और रक्तहीन, ओंठ जीभ और पलक सभी नीले, नीलपाण्डु रोग [*Cyanosis*]।

पाकस्थली।—मुंहका स्वाद मीठा, विशेषकर धूम्रपानके बाद, रोटी तीती मालूम होती है, जीभ साफ रहनेपर भी अरुचि बनी रहती है, दोनों ओंठ सूखे और लगातार प्यास बनी रहती है, खट्टा पानीय पीनेकी इच्छा (बोर, ब्राई फेर, पल्स); डकारके साथ खाये हुये पदार्थ गलेमें चढ़ आते हैं (फेरम-फास)। पेट ऐसा मालूम होता है, मानो खाली हो गया है; इसीलिये रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती और उसे ऐसा मालम होता है, मानो मृत्यु निकट है, मिचली और वमन,—सवेरे अजीर्ण पदार्थ और हरे पानी आदिकी कै होती है; कभी कभी श्लेष्मा खाया हुआ पदार्थ या पित्त वमन होता है। पेटसे कण्ठ-तक जलन होती है, लगातार मिचली बनी रहती है,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो मर जायगा, कै होनेपर भी मिचली नहीं घटती। खानेकी चीजों

की ओर देखने या सूंघने तक से मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि), हिलने डोलनेपर भी मिचलाता है और सुस्ती मालूम होती है।

अन्त्राशय।—यकृतका बहुत अधिक बढ़ जाना विशेषकर पिलई या पाण्डु रोग (चेलिडो, चायना, मार्क); यकृत प्रदेशमें स्पर्श सहन नहीं होता और ऐसा दर्द होता है मानो दबा रखा गया है। उदरी और शोथ।

मल।—मल बहुत सफेद या भूरा; मल निकलनेमें विलम्ब होता है,—खड़ियाके रङ्गका (चेलिडो, पोडो, हिप, आयोड), मलका रंग प्रायः सफेद (चायना, कैल्के), अनजानमें पाखाना हो जाता है। पानीकी तरह उदरामय और बहुत प्यास।

पेशाब।—मसानेकी क्रियाका रुकना; पेशाबके साथ लाल रंगकी बालू निकलती है। मूत्रनालीमें खींचन और दबावकी तरह दर्द, पेशाब हो जाने पर भी नहीं घटता। मूत्रस्थलीकी ग्रीवामें प्रदाह हो जानेपर बहुत ज्यादा अदम्य पेशाबका वेग होता है,—कई बूंद पेशाब निकलते ही घटनेके बदले वेग और भी बढ़ जाता है; रोगीको चलनेमें बहुत तकलीफ होती है। चित्त होकर सोनेपर तकलीफ कुछ घट जाती है। पेशाब गर्म, जलन पैदा करनेवाला और परिमाणमें बहुत थोड़ा। सोनेवाली अवस्थामें पेशाबका वेग बहुत देर तक रोक सकता है, पेशाबके पहले औरबाद मूत्रनालीमें छेदनेकी तरह दर्द।

जननेन्द्रिय।—कोष वृद्धि—बाई ओरका; मुष्क पानी भरी थैलीकी तरह मालूम होता है। अण्डकोषमें ऐसा दर्द और सूजन मानो चोट लग गयी है;—प्रमेह,—लिङ्ग-मुण्डकी आवरक त्वचा फूली हुई और सिकुड़ नहीं सकती, रससे भरी; चमड़ी; रमणेच्छा अत्यन्त प्रबल,—बार बार लिङ्गमें कड़ापन होता है। लिङ्ग आदिमें शोथ और सूजन। जरायुसे खूनका स्राव। ऋतुके पहले तलपेट और कमरमें दर्द होता है।

श्वासयन्त्र।—कण्ठमें खखड़ापन मालूम होनेकी वजहसे घड़ घड़ खांसी (कास्टि, कोना, ग्रैफ, केलि-आयोड, लोरो, कोलिया, मेङ्गा, नक्स; स्प्रान, पल्स,),—केवल मात्र सन्ध्याके समय पीले रङ्गका माड़की तरह और मीठे स्वादवाला बलगम निकलता है (पीले रङ्गका—कैल्के, लैके, लाई, ऐसिड-नाई, फास, पल्स, सिपि, स्पञ्जि, स्टैन, स्टैफाई, ऐसिड-सल्फ, थूजा —मांड़की तरह=आर्जेण्ट, बोवि, कैनाब, कैमो, वैराट्र, सिङ्को, किनिन-सल्फ,

होता है और यह दर्द नाकके अगले भागतक फैल जाता है। माथा झुकाने पर ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क सामनेकी ओर सरकता आता है। सरमें मानो तरङ्गें उठ रही हैं—ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क पानीसे भरा है [हिप, सिक्लेमेन]। मस्तिष्कोदक रोगाधिकारमें मालूम होता है, मानो मस्तिष्कमें पानीकी तरङ्गें, माथेके अस्थि-फलकमें आकर टक्कर देती हैं;—खड़े होनेपर, बोलनेपर, सर हिलानेपर या पीछेकी ओर माथा झुकानेपर बढ़ जाता है और सोनेपर या सामनेकी ओर माथा झुका रखनेपर आराम मिलता है। दिनमें सोनेके समय माथेमें फड़फड़ाहट होती है, माथा बहुत भारी मालूम होता है और पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम हो जाता है।

आंख।—आंख और पलक लाल तथा फूली हुई; ऐसा मालूम होता है, मानो आंखमें धूलके कण गिर गये हैं। आंखसे जलन करनेवाले आंसू गिरते रहते हैं और चमकीली रोशनी या ठण्डी हवा लगनेपर वृद्धि हो जाती है [बोर, ब्राई, कोल्चि, कार्बो-वेज, कैमो, साइक्लामटा, क्रोक, युफ्रे, ऐलियम-सिपा, कैलि-कार्ब, मार्क; पल्स, रास, स्टैफाई, सल्फ]। दृष्टिकी अस्पष्टता,—मानो कुहरेके भीतरसे देख रहा है [बेल, कोल्चि, सिक्लि, इग्ने, मार्क, प्लम्ब]। चीजें सब कभी हरी, कभी पीली दिखाई देती हैं, [हरी=सिपी, स्ट्रान,—पीली=कैन्थ, सैण्टोनिन, कुरारि; डिजिटेलिन]।

मुखमण्डल।—चेहरा मुर्देकी तरह नीला और रक्तहीन, ओंठ जीभ और पलक सभी नीले, नीलपाण्डु रोग [Cyanosis]।

पाकस्थली।—मुंहका स्वाद मीठा, विशेषकर धूम्रपानके बाद, रोटी तीती मालूम होती है, जीभ साफ रहनेपर भी अरुचि बनी रहती है, दोनों ओंठ सूखे और लगातार प्यास बनी रहती है, खट्टा पानीय पीनेकी इच्छा (बोर, ब्राई फेर, पल्स); डकारके साथ खाये हुये पदार्थ गलेमें चढ़ आते हैं (फेरम-फास)। पेट ऐसा मालूम होता है, मानो खाली हो गया है; इसीलिये रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती और उसे ऐसा मालम होता है, मानो मृत्यु निकट है, मिचली और वमन,—सवेरे अजीर्ण पदार्थ और हरे पानी आदिकी कै होती है; कभी कभी श्लेष्मा खाया हुआ पदार्थ या पित्त वमन होता है। पेटसे कण्ठ-तक जलन होती है, लगातार मिचली बनी रहती है,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो मर जायगा, कै होनेपर भी मिचली नहीं घटती। खानेकी चीजों

की ओर देखने या सूंघने तक से मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि), हिलने डोलनेपर जी मिचलाता है और सुस्ती मालूम होती है।

अन्त्राशय ।—यकृतका बहुत अधिक बढ़ जाना विशेषकर पिलई या पाण्डु रोग (चेलिडो, चायना, मार्क) ; यकृत प्रदेशमें स्पर्श सहन नहीं होता और ऐसा दर्द होता है मानो दबा रखा गया है। उदरी और शोथ।

मल ।—मल बहुत सफेद या भूरा ; मल निकलनेमें विलम्ब होता है,—खड़ियाके रङ्गका (चेलिडो, पोडो, हिप, आयोड), मलका रंग प्रायः सफेद (चायना, कैल्क), अनजानमें पाखाना हो जाता है। पानीकी तरह उदरामय और बहुत प्यास।

पेशाव ।—मसानेकी क्रियाका रुकना ; पेशावके साथ लाल रंगकी बालू निकलती है। मूत्रनालीमें खींचन और दबावकी तरह दर्द, पेशाव हो जाने पर भी नहीं घटता। मूत्रस्थलीकी ग्रीवामें प्रदाह हो जानेपर बहुत ज्यादा अदम्य पेशावका वेग होता है,—कई बूंद पेशाव निकलते ही घटनेके बदले वेग और भी बढ़ जाता है ; रोगीको चलनेमें बहुत तकलीफ होती है। चित्त होकर सोनेपर तकलीफ कुछ घट जाती है। पेशाव गर्म, जलन पैदा करनेवाला और परिणाममें बहुत थोड़ा। सोनेवाली अवस्थामें पेशावका वेग बहुत देर तक रोक सकता है, पेशावके पहले औरबाद मूत्रनालीमें छेदनेकी तरह दर्द।

जननेन्द्रिय ।—कोष वृद्धि—बाईं ओरका ; मुष्क पानी भरी थैलीकी तरह मालूम होता है। अण्डकोषमें ऐसा दर्द और सूजन मानो चोट लग गयी है ;—प्रमेह,—लिङ्ग-मुण्डकी आवरक त्वचा फूली हुई और सिकुड़ नहीं सकती, रससे भरी ; चमड़ी ; रमणेच्छा अत्यन्त प्रबल,—बार बार लिङ्गमें कड़ापन होता है। लिङ्ग आदिमें शोथ और सूजन। जरायुसे खूनका स्राव। ऋतुके पहले तलपेट और कमरमें दर्द होता है।...

श्वासयन्त्र ।—कण्ठमें रुखड़ापन मालूम होनेकी वजहसे घड़ घड़ खांसी (कास्टि, कोना, ग्रैफ, केलि-आयोड, लोरो, कोलिमया, मेङ्ग, नक्स ; स्टान, पल्स,),—केवल मात्र सन्ध्याके समय पीले रङ्गका माड़की तरह और मीठे स्वादवाला श्लेष्मा निकलता है (पीले रङ्गका—कैल्क, लैके, लाई, एसिड-नाई, फास, पल्स, सिपि, सल्फि, स्टैन, स्टैफाई, ऐसिड-सल्फ, थूजा —माड़की तरह=आर्जेण्ट, बोवि, कैनाब, कैसी, वैराई, सिङ्को, किनिन-सल्फ,

फेर, लोरो ; मीठा स्वाद वाला—फेर, फास, प्लम्ब, पलस, रास, सिपि, स्किला, स्टैन) कण्ठनालीमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा लगा रहता है और थोड़ा भी खाँसनेसे निकल आता है। बोलने (ऐनाक, बेराई, लेके, मैंङ्ग, ऐसिड-मूर, मिफाई, मार्क, नेट्र-मूर, स्टैन), चलने (फेर, हिप, लेके, नेट्र-मूर, स्टैन) और कभी ठण्डी चीज पीनेपर (ऐमोन-मूर, कार्बो-वेज, सिलि, स्किला) खाँसी आ जाती है। सामनेकी ओर शरीर झुकानेपर भी खाँसी आ जाती है (रास, सिनेगा)। खाँसनेपर काली आभा लिये खून मिला कफ निकलता है (आर्स, आई, कार्बो-वेज, सिङ्को, फेर, हिप, लेके)। रातमें सोनेपर और दिनमें चलने या बैठनेके समय श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ होती है (सोनेमें व्याघात= आर्स, लेके, फेलेन, रास, सैम्बि ; चलनेके समय=ऐगार,, कार्बो-वेज, कोना, ग्रैनेट, नक्स ; फेलैन, रास, स्टैन, स्ट्रान ; बैठनेवाली अवस्थामें=ऐल्यु, युफ्रे ड्रोसे, लेके, फास; सैम्बि, वेरेट,—चित होकर सोनेपर=ओलि-ऐन, फास, सिपि; माथा नीचाकर सोनेपर=चायना कोलचि, हिप, नाइट्रम, पलस—करवट बदलकर सोनेपर=कार्बो-वेज, पलस—सोनेपर श्वासकष्ट घटता है=आयोड, सोरिन)। झुकाकर बैठनेपर वक्षस्थलमें सङ्कोचनकी तरह दर्द (रास)। वक्षमें कमजोरी मालम होना ;— बोलनेमें तकलीफ होती है (स्टैन),

हृत्पिण्ड।—एकाएक ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डकी गति स्थिर हो गयी और इसीलिये, बहुत अधिक मानसिक उद्वेग और तबीयत अच्छी नहीं मालूम होती है और भोजनके बाद रोगीको बाध्य होकर सांस रोक लेनी पड़ती है ; रोगी स्थिर होकर पड़ा रहता है, क्योंकि उसे ऐसा बोध होता है मानो यदि वह जरा भी हिला तो हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी (कोकेइन,—नहीं हिलनेपर स्थिर हो जायगी—ऐसा मालूम होना=जेलसि)। थोड़ा भी शरीर हिलानेपर कलेजेमें भयंकर धड़कन पैदा हो जाती है (आयोड —भयंकर धड़कन—विशेषकर रातमें और सोनेके समय=आर्स,—ऊपरकी ओर मुँहकर चुपचाप पड़े रहनेपर घटना=आयोड,—बाईं करवट सोनेपर बढ़ना=कैक्ट, लाई,)। हृत्पिण्डमें बार बार सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होना (कालि, इग्ने, स्पाइजि,—हृत्पिण्डमें बार बार धक्का मालूम होना= कोना, नक्स ; हृत्प्रदेशमें ठण्ड मालम होना=नेट्र-मूर)। दो एक सीढ़ी चढ़ने पर भी कलेजा धड़कना शुरू हो जाता है (ऐसारेग, वेल,)। धड़कनेके साथ ही साथ लगातार दर्द और गड़बड़ी

परिश्रम या मानसिक आवेगसे बढ़ जाता है, कलेजेकी धड़कनके समय बहुत कष्ट मालूम होती है, चेहरा नीला हो जाता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसके सरमें चक्कर आ रहा है और कानमें नाना प्रकारके शब्द हो रहे हैं। बाएँ कन्धे और बाहुमें तेज दर्द होता है और हाथ तथा हाथकी अँगुलियोंमें झुनझुनी होती है। हृत्पिण्ड इतना कमजोर हो जाता है, कि शय्यापर उठकर बैठनेसे ही रोगीकी मृत्यु हो जाती है। बहुत क्षीण और धीमी नाड़ी हो जाती है; बीच बीचमें गायब हो जाती है या रुक रुक कर चलती है। प्रत्येक तीसरे पांचवें या सातवें आघातपर विलुप्त हो जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—एक हाथ गर्म और दूसरा ठण्डा (सिड्रो, इपिक, पल्स; एक हाथ आगकी तरह गर्म और सफेद; दूसरा हाथ ठण्डा और लाल—मस्कस;—एक पैर ठण्डा दूसरा गर्म=चेलिडो, लाइ,)। बाएँ हाथमें भार मालूम होता है,—मानो पक्षाघात होकर सुन्न हो गया है (दाहिना हाथ=कास्टि,—दोनो हाथ=डालका, नेट्र-म्यूर); निम्नाङ्ग बहुत कमजोर; जानुमें शोथ, दिनमें निचला पैर फूल जाता है और रातमें घट जाता है, सारे शरीरका शोथ, अण्डलाल मिला पेशाब (Albuminuria) या आरक्त ज्वरके बाद आरम्भ हो जाता है, और पेशाब बन्द हो जाता है; शरीरके भीतर और बाहरके सभी यंत्र आदिमें शोथ हो जाया करता है। हृत्पिण्डके यांत्रिक रोग (Organic Lesions) मिली हुई मूर्च्छा पैदा हो जाया करती है (जरायु-प्रदेशमें दर्द मालूम होनेके साथ=कौनवै)। सामान्य कारणसे और प्रायः हाथकी अँगुलियां सब सुन्न हो जाती हैं।

त्वचा।—चेहरा नीला,—नीली आभाके साथ लाल—मुर्देकी तरह। पलक, ओंठ, जीभ और समूची देह नीली या नील-पाण्डु, रोग,—ओंठ, कान, पलक और जीभके ऊपरवाली नीली शिराएँ सब फूल जाती हैं और दिखाई दिया करती हैं। यकृत बहुत बढ़ जानेके कारण पिलई—कामला रोग,—इसके साथ ही सामान्य कारणसे वमन।

ज्वर।—नाड़ीकी गति धीर और विषम (पुष्ट और तेज गति—ऐकोनेल); थोड़ा भी शरीर हिलानेसे ही नाड़ीकी यह धीरता, तेजीमें बदल जाती है। भीतर शीत और बाहर उत्ताप मालूम होना (केल्के-कार्ब, बाहरकी

और शीत और भीतर उत्ताप या उसकी विपरीत अवस्था,—इसमें) एकाएक बदन गर्म हो जाता है और बहुत सुस्ती मालूम होती है। रातमें बहुत पसीना होता है ; पसीना ठण्डा और लसदार । शीतावस्थाके बाद ही पसीना होता है,—उत्तापावस्था प्रकट ही नहीं होती ।

वृद्धि ।—रातमें या सवेरे, नींद खुलनेपर, भोजनके बाद ; शरीर हिलानेपर ; शय्यापर उठकर बैठनेके समय ; ठण्डी पतली चीजें पीने, ठण्डी चीजें खानेके लक्षणमें तथा सङ्गीतसे बढ़ना ।

घटना ।—जब पेट खाली रहता है और निर्मल हवामें।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—प्रतिविष कैम्फोरा, सर्पेण्टेरिया ; उद्भिदकी खटाई । सिङ्कोनाके पहले या बाद इसका प्रयोग नहीं हो सकता। क्योंकि सिनकोना डिजिटेलिसके मानसिक उद्वेगको बढ़ा देता है ।

तुलनीय ।—ऐकी, (उत्कण्ठा); ऐपोसाइनम, कैल्मिया ; लैकेसिस (निद्रा), लोबेलिया ; लाइकोपस, क्रेटिगस (हृत्पिण्ड) ; नेङ्ग-सूर (नाड़ी), स्पाइजि (भयङ्कर मिचली), सल्फ (प्रमेह) ; ऐण्टि-टार्ट, (मिचली) टैबेकम वेरेट (ठण्डा पसीना और वमन) ; सल्फ (जननेन्द्रिय) ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० से ५० दिन ।

डिजिटाक्सिनम ।

(DIGITOXINUM)

दूसरा नाम ।—डिजिटाक्सिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—यह डिजिटेलिसका एक उपसार मात्र है। यह डिजिटेलिससे भी अधिक शक्तिशाली है । सभी चीजें गहरी पीली दिखाई देती हैं और शैम्पेन शराब, सोडा वाटर, लेमोनेड और पानी पीनेसे

बढ़ना, ऐसा मालूम होना कि बेहोश होकर गिर जायगा, मिचली, वमनसे घटना लक्षणमें इससे विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—डिजिटेलिस (पीनेपर बढ़ना), डिजिटेलिनम, सिना, सेण्टोनाइन (पीला दिखाई देना)।

शक्ति।—६–३०।

डायस्कोरिया-विलोसा।

(DIOSCOREA VILLOSA)

दूसरा नाम।—कालिक रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।–ताजी जड़से मूल अर्क तैयार हो जाता है। इसका सारांश "डायस्कोरिन" विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—तलपेट फूला ; कलेजेमें शूल ; विसूचिकाकी तरह उदरामय ; ताण्डव ; सर्दी ; कब्जियत ; शूल ; कास ; भकाड़न ; रक्तामाशय ; बाधक ; अजीर्ण ; आध्मान ; अर्श ; सर दर्द ; पेटमें दर्द ; यकृतकी बीमारी ; कमरका दर्द ; स्नायुशूल ; कर्ण मूल रोग ; पेशाबमें बालू (पथरी) की वजहसे दर्द ; वात ; गृध्रसी ; शुक्रक्षरण ; अंगुलहाड़ा।

उपयोगिता और आभास।—जो वृद्ध तथा युवक मनुष्य मन्दाग्निके कारण नाना प्रकारके रोग भोगा करते हैं और भोजनके बाद जिनका पेट फूलता है खासकर चाय पीनेके कारण जिनकी आँतोंमें शूलका दर्द हुआ करता है, उनके लिये डायस्कोरिया बहुत ही लाभदायक है। इसकी आँतोंके शूलकी प्रकृति इस ढङ्गकी होती है—तलपेट और नाभी प्रदेशमें मोच खानेकी तरह दर्द, बराबर समयका अन्तर देकर पैदा होता है,—ऐसा मालूम होता है, मानो कोई बलवान पुरुष रोगीकी आँतोंको अपनी मुट्ठीमें कसकर पकड़कर बड़े जोरसे मरोड़ रहा है। यह दर्द सामनेकी ओर झुकने या सोनेपर बढ़ जाता है और सीधे होकर खड़े होनेपर या शरीर पीछेकी ओर झुकानेपर घट जाता है,

ओर शीत और भीतर उत्ताप या उसकी विपरीत अवस्था,—इसमें) एकाएक बदन गर्म हो जाता है और बहुत सुस्ती मालूम होती है। रातमें बहुत पसीना होता है ; पसीना ठण्डा और लसदार। शीतावस्थाके बाद ही पसीना होता है,—उत्तापावस्था प्रकट ही नहीं होती।

वृद्धि।—रातमें या सवेरे, नींद खुलनेपर, भोजनके बाद ; शरीर हिलानेपर ; शय्यापर उठकर बैठनेके समय ; ठण्डी पतली चीजें पीने, ठण्डी चीजें खानेके लक्षणमें तथा सङ्गीतसे बढ़ना।

घटना।—जब पेट खाली रहता है और निर्मल हवामें।

सम्बन्ध।—सदृश।—प्रतिविष कैम्फोरा, सर्पेण्टेरिया ; उद्भिदकी खटाई। सिङ्कोनाके पहले या बाद इसका प्रयोग नहीं हो सकता। क्योंकि सिनकोना डिजिटेलिसके मानसिक उद्वेगको बढ़ा देता है।

तुलनीय।—ऐको, (उत्कण्ठा); ऐपोसाइनम, केल्मिया ; लैकेसिस (निद्रा), लोबेलिया ; लाइकोपस, क्रेटिगस (हृत्पिण्ड) ; नेइ-मूर (नाड़ी), स्पाइजि (भयङ्कर मिचली), सल्फ (प्रमेह) ; ऐण्टि-टार्ट, (मिचली) टैबेकम वेरेट (ठण्डा पसीना और वमन) ; सल्फ (जननेन्द्रिय)।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—३० से ५० दिन।

डिजिटाक्सिनम।

(DIGITOXINUM)

दूसरा नाम।—डिजिटाक्सिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—यह डिजिटेलिसका एक उपक्षार मात्र है। यह डिजिटेलिससे भी अधिक शक्तिशाली है। सभी चीजें गहरी पीली दिखाई देती हैं और शेम्पेन शराब, सोडा वाटर, लेमोनेड और पानी पीनेसे

लिखते लिखते बाईं नाकसे चमकीले लाल रंगका और इसके बाद काला जमा रक्तस्राव होता है। नाकमें हमेशा बदबू मालूम होती हैं। नाकमें बदबू लगातार बहुत दिनोंतक स्थायी रहती है।

मुख-विवर।—सवेरे जीभ सूखी और अकड़ी हुई। जीभ मोटी भूरी लेप चढ़ी रहती है [बेल, हायो, फास, सेबाई, साइलि, सलफ, वार्वेस] और उसके दोनों किनारोंपर जखम हो जाते हैं ; भोजनके समय जीभके अगले भागमें जखम मालूम होता है, दोनों पार्श्व ऐसे मालूम होते हैं मानो दग्ध हो गये हैं। जीभको दाँतसे काटता है [इग्ने ; चबानेके समय गालके भीतर काट लेता है=कास्टि]। निद्रावस्थामें मुंहसे लार बहा करती है [कैमो]। मुख सूखा और लसदार श्लेष्मासे भरा ; प्यासका न रहना (नक्स-मस)। कण्ठके भीतर कुटकुटी और जलन होती है, कण्ठमें सङ्कोचन मालूम होना,—मानो गर्दनके चारों ओर कसकर बँधा हुआ है। बार बार घूंट निगलनेकी इच्छा [आर्स, बेल, कास्टि, हिमैटक्स, लेके, मार्क, सेबाड, स्टेफाई], दोनों ही कानको जड़की गाँठोंमें तेज दर्द ; दर्द बराबर बना रहता है।

पाकस्थली।—खट्टी या तीती डकार। बहुत ज्यादा परिमाणमें वायु निकलनेपर पेटमें दर्द कुछ देरके लिये घट जाता है। भोजनके बाद जी मिचलाता है, सुस्ती—[ऐसिड-फास, सलफ, नक्स] और बेचैनी मालूम होना, पाकस्थलीमें जोरकी अकड़न होती है; और इसके बाद बराबर डकार आया करती है। बहुत सा वायु बाहर निकल जाता है; हिचकी आती है और निम्न द्वारसे भी वायु निकलता है; बार बार तेज दर्दके साथ पाकाशयमें यंत्रणा ; रोगीको बाध्य होकर कमरका कपड़ा ढीला कर देना पड़ता है। [ऐमोन-म्यूर कार्बो-वे, कास्टि, काफि, लेके, लाई, नक्स, स्पञ्जि]।

अन्त्राशय।—आंतोंमें भयंकर शूल,—मानो कोई बलवान जीव बड़ी ताकतके साथ आंतोंको मरोड़ रहा है ; ठीक बराबर समयका अन्तर देकर दर्द पैदा होता है; यकृत प्रदेशमें तीव्र वेदना, ऊपरकी ओरकी दाहिनी स्तनग्रन्थितक बड़ी तेजीसे दर्द फैल जाता है, दर्द पित्तकोषसे वक्ष, पीठ और बाहुतक बड़े वेग और असह्य यंत्रणाजनक भावसे फैलता है। पथरी या मसानेका शूल, ऐंठनकी तरह दर्द—(भयानक यंत्रणा देनेवाला दर्द, रोगीकी देह अकड़ा करती है और रोगी तकलीफसे गों गों करता है और चिल्लाया करता है ; पेशाबके साथ ईंटके चूरकी तरह बालू मिली रहती है=ओसिमम कैनम ; मसानेमें छोटे

(कोलोसिन्थके ठीक विपरीत लक्षणमें) निद्रित अवस्थामें वीर्यपात हो जाना ; सारी रात स्त्रियोंके सम्बन्धके सपने देखना ; इन्द्रिय आदि बहुत शिथिल, चित्त हमेशा विमर्ष रहता है और दोनों जांघें बहुत क्षीण हो जाती हैं। अंगुलहाड़ा की पहली अवस्थामें जब दर्द बहुत तेज और यंत्रणादायक हो जाता है तथा पहले सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; नख सहजमें ही टूट जाते हैं, जिन्हें अकसर अंगुलहाड़ा हो जाया करता है, उनके लिये यह अत्यन्त उपकारी है (हिप, नेट्र-सल्फ)।

लक्षणावली।

मन।—किसी चीजको देखनेके समय या किसी व्यक्तिको पुकारनेके समय उसका जो नाम है वह न पुकार कर दूसरा नाम पुकार बैठता है ; पथरी मांगनेके बदले वक्स मांगता है। अपने बन्धु-बान्धवोंसे मिलनेकी इच्छा नहीं करता—अकेला रहना पसन्द करता है (अरम ; आर्जेण्ट-नाई, आर्नि, कोका, कोना, जेलसि, साइक्यू, कैलि-वाई, कैलि-नाई, सिपि, स्टेन)। वीर्य-पतन हो जानेबाद विषन्न चित्त। (स्टैफाई)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—चलनेके समय दाहिने पार्श्वमें लुढ़क पड़ता है ; पीछेकी ओर गिर जाना चाहता है (लिडम, रास)। सुस्ती,—शय्या पर उठकर बैठनेपर बढ़ जाती है (डिजि); अस्वाभाविक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे सरमें चक्कर आना। ऐसा मालूम होता हैं मानो ब्रह्मतालु उठता जा रहा है—मानो खोपड़ी उड़ जायगी [वेप, ऐक्टि, कोवाल्ट, नैट्र-म्यूर, कैमो]; मानो दोनों कनपटियां चिमटेसे कसकर पकड़ी हुई हैं [साइक्यू, सिकेलिन, मैग-सल्फ, प्लेट, पल्स, स्टेन, सल्फ)। कनपटीमें धीमा धीमा दर्द होता है, दबाने पर कुछ देरके लिये घट जाता है, परन्तु फिर बढ़ जाता है ; भोजनके बाद बढ़ता है।

आंख।—सन्ध्याके समय ऐसा मालूम होता है मानो आंखोंसे गर्म हवा या गर्म भाफ निकल रही है। (वेल, डायाडेमा ; लैके, मिफाइटिस, मार्क, टैबाक, साई, वेरेट]। आंखमें ऐसा मालूम होता है, मानो छोटी छोटी खीलों से भरी हैं, सवेरे आंखें सट जाती हैं [युफ्रे, पलस]।

नाक।—नासा-रन्ध्रमें बहुत सुरसुरी होती है और बार बार छींक आती है ; नासारन्ध्र सूख जाता है या उससे पानी गिरा करता है। बैठकर

दर्द मानो भयङ्कर मरोड़ हो रहा है—यह दर्द ऊपर नीचे दोनों ओर फैलदार धीरे धीरे समूची देह यहाँ तक कि हाथ-पैरकी अंगुली तकमें अकड़नकी तरह दर्द पैदा कर देता है और दर्द इतना असह्य हो जाता है कि रोगीको बाध्य होकर चिल्लाना पड़ता है। सवेरे बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला और पीले रङ्गका दस्त होनेके बाद रोगी सुस्त हो पड़ता है। पर दर्द कुछ भी नहीं घटता। गर्भावस्थामें पर्यायक्रमसे कब्जियत और पतला पाखाना होता रहता है।

पेशाब।—दाहिनी मूत्रवाहिनी शिराके (Ureter) के भीतरसे मूत्र-पथरी निकलनेके समय रोगीको पसीना नहीं होता और खींचनकी तरह दर्दके कारण वह पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है। मूत्रनालीका आक्षेपिक संकोचन,—इसके साथ ही नाभि-प्रदेशमें दर्द, दबा देनेपर आराम होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रिय शिथिल और ठण्डी। मसानेमेंसे दर्द बड़े वेगसे अण्डकोषमें फैल जाता है। बार बार, कामकी उत्तेजना और लिङ्गोच्छ्वास होता है। निद्रित अवस्थामें युवतीसे सहवासके सपने देखता है और अनजानमें वीर्यस्खलन हो जाता है (स्टेफि); मानो जानु क्षीण, लिङ्ग आदि शीतल और मानसिक सुस्ती (स्टेफाई)। मुष्कके ऊपर और विटप-देशमें तेज गन्ध पैदा हो जाती है (फैगो-पाई, कैलेड, डैफनी; थूजा, साइलि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाधक या कष्टरजः—जरायुमें रह रहकर तेज दर्द मालूम होता है और दर्द एकाएक शरीरके दूरवर्ती अंशमें दौड़ पड़ता है।

श्वास-यंत्र।—कण्ठनालीके निम्नतम प्रदेशमें सुरसुरी होकर तकलीफ देनेवाली खाँसी आती है (लैके, फास; ऊँचे प्रदेशमें=हिप)। नाभि और कपालमें दर्द पैदा करनेवाली खाँसी :—इसके साथ ही भूरे रंगकी जीभ और जानु क्षीण। हृत्शूल—वक्षोऽस्थिके पीछेसे बाहुतक दर्द, श्वास-कष्टता और इसके साथ ही हृत्पिण्डकी गतिकी क्षीणता।

प्रत्यङ्ग आदि।—सवेरे कमरमें दर्द होता है और रोगी सुन्न हो जाता है। यकृत-प्रदेशके पीछे इतना दर्द होता है, कि रोगी शय्यापर करवट नहीं बदल सकता; शरीरको हिलानेपर घटना। कमरमें दर्द। बाएँ

मलाइयाँ गहनेकी तरह दर्द, यह दर्द मूत्रनाली तक फैल जाता है और बार बार पेशाबका वेग होता है=बार्बेरिस ; रोगी जबतक टेहुनियाँ टेकर नहीं बैठता तबतक पेशाब नहीं होता ; पेशाबके साथ गोंदकी तरह श्लेष्मा मिला रहता है और दर्द नीचेकी ओर आकर उरुतक फैल जाता है=पेराइरा-ब्रेवा)। सामनेकी ओर टेढ़े होने या सोनेपर दर्द बढ़ जाता है ; सीधे होकर खड़े होने या पीछेकी ओर टेढ़े होनेपर या चलनेके समय घटता है (कोलो-सिन्यके विपरीत)। नाभी-प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो मोच खा गया है। पित्त-पथरी शूलके साथ ऊपर बताये ढंगका दर्द (हाइड्रेस, बार्बा, कार्डुयस-मेरी, पायमा, कैल्के)। पेटमें कुल कुल हुड़ हुड़ शब्द होता है (ऐलो, ऐण्टि-टार्ट, ऐपिस, कार्बो-वे, ग्रेटो, कार्व, लैप्टैन, नेट्र-सल्फ, कैलि, पल्स, सिकेलि, वेरेट) और बहुत अधिक परिमाणमें वायु निकलता है (ऐसिड-कार्ब, कार्बो-वे, लाई, लैके, आर्जेण्ट-नाई, नक्स-मस, कैल्के-आयोड, केमो) ; तलपेट दबानेपर दर्द होता है (ऐपिस, बेल, केमो, कूप्रम, हिमैटेक्स, हायो, मार्क, नक्स, पल्स, स्किला, सल्फ)।

मलान्त्र और मल।—बवासीर—देखनेमें लाल अंगूरके गुच्छेकी तरह (ऐलो) ; यकृतमें शूल वेधनेकी तरह तेज दर्द। पाखाना होनेके बाद मसा बाहर निकल आता है और मलद्वारमें बहुत तकलीफ होती है। पाखाना हो जाने बाद कांच निकलना (Prolapsus ani—बच्चोंको=फेरम, फास, उदरा-मय, उसके साथ ही खूनका स्राव और कूथन=ऐलो,—पाखाना फिरनेके समय थोड़ा भी वेग देनेपर मलद्वार बाहर निकल पड़ता है=इग्ने ; सवेरेके समयके उदरामयके साथ प्रत्येक बार पाखानेका वेग ; जराभी शरीर हिलाने या छींकनेपर मलद्वार बाहर निकल आता है=पोडो,—पेशाबके समय=ऐसिड-म्यू.—जलन करनेवाला हरे या पीले रङ्गका पतला मल या थोड़ा कड़ा मल और उसके साथ ही बहुत वेग=गेम्बोज)। पाखाना हो जानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो पेट खाली हो गया है और उसमें शूलका दर्द। बहुत बदबूदार वायु निकलना। उदरामय,—सवेरे शय्या त्यागकर दौड़ जाना पड़ता है (ऐलो, पोडो, सल्फ)। मलान्त्रमें सुरसुरी होती है (इस्क्यु, कोलिन)। निकली हुई हवा और वायु गर्म मालूम होती है (कैल्के-फास केमो, सिस्टस, मार्क-वाई, फास, पोडो, स्टैफाई, सल्फ, ऐलो, काकु)। पाखाना होनेके पहले और पाखाना होने समय तलपेट और पूतड़में ऐसा

दर्द मानो भयङ्कर मरोड़ हो रहा है—यह दर्द ऊपर नीचे दोनों ओर फैलकर धीरे धीरे समूची देह यहाँ तक कि हाथ पैरकी अंगुली तकमें अकड़नकी तरह दर्द पैदा कर देता है और दर्द इतना असह्य हो जाता है कि रोगीको बाध्य होकर चिल्लाना पड़ता है। सवेरे बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला और पीले रङ्गका दस्त होनेके बाद रोगी सुस्त हो पड़ता है। पर दर्द कुछ भी नहीं घटता। गर्भावस्थामें पर्यायक्रमसे कब्जियत और पतला पाखाना होता रहता है।

पेशाब।—दाहिनी मूत्रवाहिनी शिराके (Ureter) के भीतरसे मूत्र-पथरी निकलनेके समय रोगीको पसीना नहीं होता और खींचनकी तरह दर्दके कारण वह पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है। मूत्रनालीका आक्षेपिक संकोचन,—इसके साथ ही नाभि-प्रदेशमें दर्द, दबा देनेपर आराम होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रिय शिथिल और ठण्डी। मसानेमेंसे दर्द बड़े वेगसे अण्डकोषमें फैल जाता है। बार बार, कामकी उत्तेजना और लिङ्गोच्छ्‌वास होता है। निद्रित अवस्थामें युवतीसे सहवासके सपने देखता है और अनजानमें वीर्यस्खलन हो जाता है (स्टैफि); मानो जानु क्षीण, लिङ्ग आदि शीतल और मानसिक सुस्ती (स्टैफाई)। मुष्कके ऊपर और विटप-देशमें तेज गन्ध पैदा हो जाती है (फैगो-पाई, कैलेड, डेफनी; थूजा, आइलि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाधक या कष्टरजः—जरायुमें रह रहकर तेज दर्द मालूम होता है और दर्द एकाएक शरीरके दूरवर्ती अंशमें दौड़ पड़ता है।

श्वास-यंत्र।—कण्ठनालीके निम्नतम प्रदेशमें सुरसुरी होकर तकलीफ देनेवाली खाँसी आती है (लैके, फास; ऊँचे प्रदेशमें=हिप)। नाभि और कपालमें दर्द पैदा करनेवाली खाँसी:—इसके साथ ही भूरे रंगकी जीभ और जानु क्षीण। हृत्शूल—वक्षोस्थिके पीछेसे बाहुतक दद, श्वास-क्षच्छ्रता और इसके साथ ही हृत्पिण्डकी गतिकी क्षीणता।

प्रत्यङ्ग आदि।—सवेरे कमरमें दर्द होता है और रोगी सुस्त हो जाता है। यकृत-प्रदेशके पीछे इतना दर्द होता है, कि रोगी शय्यापर करवट नहीं बदल सकता; शरीरको हिलानेपर घटना। कमरमें दर्द।

पृष्ठ-फलकके नीचे और दाहिने फेफड़ेके बीचमें दर्द। अंगुलहाड़ा,—पहली अवस्थामें दर्द सुई बेधनेकी तरह और असह्य तकलीफ रहती है; नख सब टूट जाते हैं। अकसर अँगुलहाड़ा हो जाता है (हिप, नैट्र-सल्फ)। टखनी या पैरके झुनझुनीवाले वातमें (Sciatica)—अर्थात कटिस्नायुके बाहर निकलनेके स्थानसे लेकर समूचे दाहिने पैरमें तेज दर्द (कोलोसिन्थ; मैग-फास, नैफेल); केवल यही पैर फैलानेके समय या उठ बैठनेके समय दर्द मालूम होता है।

वृद्धि।—सामनेकी ओर टेढ़े पड़नेपर, सोनेपर, बैठनेके समय।

उपशम।—शरीर या रोगवाला अङ्ग हिलाने; पीछेकी ओर टेढ़ा करने; सीधे होकर खड़े होने या चलनेपर; बहुत थका रहनेपर भी दर्दको दूर करनेके लिये उसे बाध्य होकर चलना पड़ता है।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कोलो, मैग-फास, ओसिमम-केनम; पैरियेरा-ब्रे वा; बार्बारिस, फास, पोडो, रास; साइलि, स्टैफाई।

तुलनीय।—नक्स (पाकस्थली); सलफर (तलपेट और मल); सार्सा (पेशाबका लक्षण); नक्स, सलफर (जननेन्द्रियके); साइलिसि (अँगुलहाड़ा) इत्यादि।

दोषघ्न।—कैम्फो, कैमोमिला।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठों दशमिक क्रमतक।

डर्का-पैलास्ट्रस।

(DIRCA PALUSTRIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—शाखाके भीतरकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—शूलका दर्द; कलियत; खांसी; सुस्ती; अतिसार; आध्मान; सर-दर्द; हृत्-शूल; स्नायुशूल; वात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—शारीरिक अवसाद, मस्तिष्कमें, देहमें और हाथ पैरमें स्नायविक दर्द पैदा कर देता है। महात्मा हनिमैनने कच्छु विष नाश करनेवाली (Antipsoric) जितनी दवाएं गिनायी हैं, उनका अन्यान्य दवाओंसे यही प्रभेद है, कि उनकी क्रिया शरीरके भीतरसे बाहरकी ओर प्रकट होती है; पर डर्कामें इसके विपरीत होता है अर्थात इसकी क्रिया बाहरसे भीतरकी ओर होती है। अग्निमान्द्य,पाकाशयमें भार मालूम होना, जीभ पर सफेद लेप चढ़ा, वह चिकनी और रससे तर रहती है—वगैरह इसके क्रिया-फल हैं। उदरमें आध्मान वायुके हिलनेकी वजहसे हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द होना, सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर शूलका दर्द घटना; उदरामय, कूथन और अन्तमें कब्जियत। छातीमें दबाव मालूम होनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी और दर्द, मीठा स्वाद मिला कफ और हिलने डोलनेपर हृत्पिण्डमें उत्तेजना मालूम होना। रोगीको रातमें उत्ताप मालम होना, नींद न आनेके कारण छट-पटाना और लगातार मुर्देके सपने देखना, (क्रोटेलस-कैम्प और क्रोटेलस-होरिड),—इत्यादि अवस्थायें इस दवाके निर्णायक लक्षण हैं (डा॰ क्लार्क)।

लक्षणावली।

मन और मस्तक ।— रोगी बहुत अन्यमनस्क रहता है (ऐग-कैस्ट, ऐमोन-कार्ब, बोवि, कास्टि, चेलिडो, केलि-ब्रोम, लैक-कैन, नक्स-मस, साइलि); बहुत व्यस्त भाव; उसे ऐसा मालूम होता है, मानो समय बहुत धीरे धीरे बीत रहा है; किसी तरह समय नहीं कटता (ऐल्यु, आर्जेण्ट-नाई, अरम; कैन-इन, कैमो, मिडोरिन, नक्स-वोम; ऐनहैलो,—समय बहुत धीरे धीरे बीतता है= कक्यु, थिरिड) सरमें चक्कर आना,—चलनेके समय (ऐनाक; आर्नि, ऐसेर, कैनाब-इन, साइक्यू, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-फास, स्पाई, वायोला-ड्राई) रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह बाईं करवट गिर जायगा (बगलमें कतरनेकी सम्भा-वना=कैनाब-इन, कोना, ड्रोसे, युफोर्बि, मिजेर; रियूम; स्क्लिा; जिङ्क)। कनपटीमें दर्द होता है, मानो दर्द भीतरकी ओर जा रहा है, जोरसे दबानेपर आराम मालूम होता है (जिङ्क)। बाईं ओरका सर दर्द या गिराई शूल—खांसने या सर हिलानेपर बढ़ जाता है, ब्रह्मतालु सूखा और उसमें खींचन मालूम होती है (ऐगनस, ऐङ्गस, आर्नि, कास्टि, ऐसेर, लैके, मार्क, ओलि-येन, रियुटा, स्पाई, क्रोटेलस);

पाकाशय और अन्त्राशय ।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसी भारी चीजसे दबा हुआ है (ऐबीज-नाइग्रा, नक्स, ब्राई, पल्स); पेट फूल उठता है और बाएं कोखेमें तेज अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द मालूम होता है पेटमें वायु चलनेकी वजहसे हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द होता है, आंतोंमें दर्द सामनेकी ओर झुकनेपर (कोलोसिन्थ, कैस्टर, पोडो, रियुम, कूरमम) पाखाना होनेके बाद दर्द घट जाता है (कोलो, गैम्बो, नक्स, रास) पर रातमें मलद्वारमें जलन, होती है (कैन्थ, लिलियम-टाइग्रि, न्यूफर ; साइलि)। तलपेटके नीचे हमेशा गड़बड़ी मालूम होनेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होता है, बैठने या सोनेपर घटता नहीं है, सरके दर्दके शान्त होनेपर तलपेटका दर्द भी घट जाता है। मलद्वारमें टपक (लैके) या सुई वेधनेकी तरह दर्द । ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारकी खाल उधड़ गयी है और वहां करकराहट होती है। पाखाना हो जाने बाद बढ़ जाता है (कैन्थ, मार्क-बाई, ऐसिड-म्यूर)। उदरामय कूथन और वेग पैदा करनेवाला। एकाएक [फेरम] पानीकी तरह या पतला पीली आभा लिये पाखाना बड़े वेगसे निकलता है।

श्वास-यंत्र ।—कण्ठनालीमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है (एपिस); दर्द बाहरसे भीतरकी ओर फैलता है। खांसी,—सवेरे वृद्धि (ऐल्यु, कैल्के, युफ्रे, लैके, पल्स, ऐमोन-कार्ब, क्रोटन ; सेनेगा); कफका स्वाद मीठा (फास, प्लम्ब, पलस, रास ; सिपि, स्क्विला, स्टैन) और बदबूदार श्लेष्मामय (कैल्के, कार्बो-वेज, कोना, ड्रोसे, गुयाई, लाई, नइम-कार्ब, सिपि, स्टैन, सल्फ)। परिश्रम करनेपर बहुत ही अधिक श्वास-कष्ट होता है। दो एक कदम ऊपर चढ़नेपर हाँफने लगता है (आर्स, कैल्के-आयोड, मार्क, नक्स, सिपि, स्टैन) थोड़ा भी शरीर हिलाने पर हृत्पिण्डकी गति बढ़ जाती है (ग्रैफ, नैट्र-म्यूर, स्टैफाई); थोड़ा भी ऊपर चढ़नेपर कलेजा धड़कना आरम्भ हो जाता है (नैट्र-कार्ब, बेल, सल्फ, थूजा)।

निद्रा ।—औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो)। लगातार मुर्देके सपने देखा करता है।

वृद्धि ।—शरीर हिलाने पर, चलनेपर ।

घटना ।—दबानेसे, पाखाना होनेके बाद और सामनेकी ओर झुक पड़ने पर।

सम्बन्ध—सदृश।—कैनाबिस इण्डिका (समय नहीं कटता); ऐण्टिम-क्रूड (जीभ); लाइकोपो (कब्जियत); स्टेनम (मोठा कफ)। आर्जेण्ट-नाई, केनाब-इन, ऐण्टि-क्रूड, लाई, ऐबियेज-नाइग्रा, कोलोसिन्थ, केस्टोरियम, रियुम, फास, सिपि, स्टैन।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ ठीं दशमिक क्रम

डालिकस प्रूरियेन्स।

(DOLICHOS PRURIENS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकामें पैदा हुआ एक तरहका आलकुसो; इसके समूचे बीजके बाहरी भागसे टिंचर या विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— खाँसी; खुजली; दाँत निकलना; दाँतका दर्द; कामला; दादको तरह उद्भेद; स्नायुशूल; गलेका जखम; योनिदेशमें खुजली इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—शरीरके दाहिने पार्श्वके साथ इसका बहुत अधिक सम्बन्ध है (चेलिडो, लाई, ब्राई, क्रोटेलस), इसलिये यकृतपर इसकी बहुत अधिक क्रिया होती है। इससे पाण्डु-रोग हुआ करता है, पित्त-सञ्चयकी क्रियाके ऊपर इसका अधिकार अधिक रहनेकी वजहसे शरीरकी त्वचापर पित्तविकारके कारण असह्य खुजली पैदा हो जाया करती है, इसपर किसी तरहके दाने या फुन्सियाँ नहीं दिखाई देतीं;—डलिकसका यह एक प्रधान निर्णायक लक्षण है। हनुमें दर्द या कण्ठके स्नायुशूल रोगोंपर इसका एक और भी उत्कृष्ट और अव्यर्थ लक्षण यह है कि कण्ठनालीके मुंहके दाहिनी ओर ऐसा मालूम होता है, मानो एक सीधा कांटा या छोटी खील गड़ रही है। दांत निकलनेके समय स्नायविक उत्तेजना पैदा हो जाना, थोड़ेमें ही कातर, मसूढ़ा बहुत दर्द भरा और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता तथा पेटमें भी वायु भरा रहता है।

मुंहके भीतर।—ऊपरका मसूढ़ा फूला हुआ और उसमें इतना दर्द होता है कि मुंहमें कोई चबाने और पीनेका पदार्थ रख नहीं सकता। दर्दकी वजहसे रातमें नींद नहीं आती। दांत निकलनेके समय बच्चेका मसूढ़ा फूल

उठता है और उसमें शूलकी तरह दर्द होता है, रातमें वृद्धि । गलेके भीतर निचले हनुके दाहिने पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है मानो एक कांटा या सूक्ष्म शलाका सीधे भावसे गड़ रही है (आर्जेण्ट-नाई, हिप, ऐसिड-नाई)— कोई पदार्थ निगलनेके समय यह दर्द बढ़ जाता है ।

अन्त्राशय ।—मलमें कड़ापनके साथ पेट वायुसे भरा और फूला ; वायु-सञ्चालनकी वजहसे पेटमें गड़गड़ाहटकी आवाज होती है । दाँत निकलने वाले बच्चे या गर्भवाली स्त्रीका मलका कड़ापन (कोलिन्सोनिया) । पाण्डु रोगमें मलका रङ्ग सफेद (ऐसिड-बेञ्जो, चेलिडो, सिना, डिजि, डालका, हेलिबो, हिप, आयोड, मार्क, फास, ऐसिड-फास) । यकृतका फूलना (सिङ्को, लौरो, नक्स-मस, कार्डियु-मेरी) ।

श्वासयंत्र ।—रातमें सोनेपर खाँसी,—गलेमें साँय-साँय आवाज और श्वास प्रश्वासमें तकलीफ होती है ।

त्वचा ।—समूची त्वचामें भयानक खुजली होती है,—रातमें बढ़ जाती है और नींदमें व्याघात होता है ; जितना ही खुजलाता है खुजली भी उतनी ही बढ़ती जाती है (ऐनाक्र, मेजेर, पलुस,—खुजलानेके बाद जलन ; डूयोनिसिन, ग्रैफि, क्रियो, लिड, नेट्र-सल्फ) ; परन्तु किसी तरहकी फुन्सी नहीं दिखाई देती । पित्त पाण्डु रोगमें शरीर बहुत अधिक खुजलाता है और आँखें पीले रङ्गकी दिखाई देती हैं (आर्स, कैल्क, कैमो, जिङ्क, मेग-म्यू, फास, मार्क, क्रोटेल, कैलि-बाई) । दद्रु पेटिका या वृत्त (चक्कर) के आकार विसर्प—चकत्ते (Herpes zoster)—कमरबन्दकी तरह विसर्प, अंग प्रत्यङ्गको घेरकर निकलता है,—विशेषकर हाथ और पैरमें (रासके बाद व्यवहार करना चाहिये),—रातमें खुजली असह्य हो उठती है ।

सार्वाङ्गिक ।—विसर्प आराम हो जानेबाद स्नायुशूल पैदा हो जाता है (जिङ्क, सलफर, मैगष्टेगी, [illegible]) ; [illegible] सिकुड़ना और फैलना (ऐगार, इग्ने, जिङ्क, क[illegible] रहका [illegible] जैसे विक्षिप्त हो रहे हों, बेहोशी आँख खुल[illegible] (साइट्स) [illegible] निकलनेवाले बच्चोंका ([illegible]

[illegible]ता ।—

[illegible] रहने [illegible]

ऐकोनाइट देना, न भूलना चाहिये। पूर्वमें यह सतर्कता न रहनेपर, यह देखा जाता है कि इसका उच्चतम क्रम प्रयोग करनेपर धनुष्टङ्कार आदि हो जाता है।

वृद्धि। — रातमें सोनेपर, खुजलाने और उत्तापसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—सिना, चेलिडोन, रास ; आर्जेण्ट-नाई, हिप, ऐसिड-नाई, कैन्थ, मैग-म्यूर।

दोषघ्न।—ऐकोनाइट।

तुलनीय।—बेलेडोना (दन्तोद्गम); हिपर, ऐसिड-नाइट्रि, (गलेमें दर्द)।

शक्ति।—६ ठे दशमिक से २०० शततमिक तक।

डोरिफोरा।
(DORYPHORA)

दूसरा नाम।—पोटाटो बग।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।- एक तरहका कीड़ा ; इससे मूल अर्क और विचूर्ण तैयार हुआ करता है।

लक्षणानुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार ; डिफ्थीरिया या उपझिल्लीका प्रदाह ; रक्तामाशय ; विसर्प ; ज्वर ; पाकाशयका विकार ; प्रमेह ; कर्णमूल प्रदाह ; सान्निपातिक ज्वर ; जखम ; मूत्रनालीका प्रदाह ; ग्रीवामें दर्द।

उपयोगिता और आभास।—कैन्थरिसकी भांति मूत्रनाली पर ही इसका खास आक्रमण होता है। बच्चोंका मूत्रनाली प्रदाह (Urothritis) और नये तथा पुराने प्रमेह आदि रोगोंमें इसके द्वारा विशेष लाभ दिखाई देता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम, कमजोरी ; उठनेकी शक्तिका न रहना, हिमाङ्ग अवस्था (शीत आ जाना), मानसिक क्रियासे अच्छी तरह सुस्ती ; और हाथ पैर आदिका कांपना ; बोलने

पर रोगीकी कमजोरी बढ़ जाती हैं ; रक्तकणिकाका बिगड़ना, देहसे निकला हुआरक्त जमता नहीं है अर्थात घनीभूत नहीं होता ; समूची देह बहुत फूल जाती है, और जलनके साथ पैरोंमें सूजन वगैरह । इसके साथ मुंह और गलेके भीतर, अन्न-नाली, पाकाशय, उदर, मलान्त्र और मूत्रनालीमें जलन पैदा हो जाया करती है ।

लक्षणावली ।

मन ।—तन्द्रालुता और प्रलाप ।

आँख ।—लाल ; कनीनिका फैली ।

मुंह और कण्ठ ।—जीभ सूखी और भूरा मैल चढ़ी ; मुंहका स्वाद बहुत कड़वा ; मुंहमें बहुत उत्ताप मालूम होना ; चेहरा लाल और फूला ; मसानेसे मसानेके अन्दर तक तेज दर्द, पेशाब रुकने और मलमें कड़ापनके साथ कर्णमूल ग्रन्थिका प्रदाह । कण्ठ सूखा मालूम होता है और बार बार निगलनेकी इच्छा होती है । कण्ठनालीसे लेकर अन्ननलीतक जलन होती है, पेटमें दर्द होता है और खाँसी आती है ।

पाकस्थली ।— अरुचि और प्यासकी अधिकता ; खट्टी चीज खानेकी इच्छा ; धूम्रपानसे सब लक्षणोंकी वृद्धि होती है । मिचली और वमन,—काली आभा लिये, गाढ़ा, जमे हुए गोंदकी तरह कसैले स्वाद मिले पदार्थकी कै होती है । प्लीहामें दर्द मालूम होता है, (सियैनो) । तलपेटमें दर्द होता है,—खाने पीने और दीर्घ निश्वास लेनेपर दर्द बढ़ जाता है । तलपेटमें बहुत भार मालूम होता है और दर्द होता है । तलपेटमें दर्द और इसके साथ ही मलान्त्रमें जलन । सवेरेके समय उदरामय । मल खून मिला और गोंदकी तरह । पेशाब रुकना । मूत्रकृच्छ्रता और मूत्रनालीमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—लिङ्गमुण्ड फूला, नीली आभा लिये लाल और उसमें सुरसुरी और जलन होती है ; असह्य दर्दके साथ मूत्रनालीका प्रदाह,—विशेषकर पेशाबके समय ।

वृद्धि ।—शरीर [illegible] घरमें ।

उपशम ।—निम [illegible]

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐगार, ऐपिस, कैल्प, लैके इत्यादि।

दोषघ्न।—छूँमो-उद्भिदकी खटाई।

शक्ति।—*६ ठे शततमिक से ३० शततमिक तक।*

ड्रोसेरा-रोटण्डिफोलिया।
(DROSERA ROTUNDIFOLIA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—क्षीणदृष्टि ; दमा ; श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दी ; क्षय कास ; मृगी ; रक्तस्राव ; सर दर्द ; स्वरनाली प्रदाह ; खसड़ा ; मिचली ; श्टधसी ; वमन ; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैंः—(१) हूप खाँसी,—आधी रातके बाद बढ़ना ; वायुनलीके भीतर वक्षमें और कोखमें सङ्कोचन मालूम होना, इसके साथ ही पानी आदि पीनेपर खाँसीका बढ़ जाना ; खाँसते खाँसते पहले खाई हुई चीज, इसके बाद श्लेष्माकी कै हो जाती है। (२) वक्ताओंके गलेका जखम, इसके साथ ही वायुनलीमें सङ्कोचन और चींटी रेङ्गनेकी तरह सुरसुरी मालूम होती है ; उत्तापसे और सोनेके बाद खाँसी बढ़ जाती है। (३) प्रायः प्रति चार घण्टेके बाद खाँसीका भयङ्कर प्रकोप पैदा हो जाता है। गहरी टूटी हुई आवाज और धड़ धड़ शब्द करनेवाली श्वास-रोधक खाँसी। (४) बच्चोंकी वायुनलीमें बराबर सुरसुरी होकर खाँसी आती है—रातमें बच्चेका माथा तकियेसे छू जाते ही खाँसी आरम्भ हो जाती है (बेल, क्रोटन. हायो, रियुमेक्स)। (५) यक्ष्मा-रोग-ग्रस्त रोगियोंको रातमें आनेवाली खाँसी। इसके साथ ही खून या पीब मिला कफ निकलना। (६) सेंकने, पानी आदि पीने, गाने, रोने तथा सोनेपर और आधी रातके बाद खाँसी बढ़ जाती है। (७) वायुनलीमें मानो पर फसा है, ऐसा अनुभव होनेके साथ खाँसी। (८) हूप खाँसीके बाद वायुनली-गत क्षय-कास [Laryngeal

Phthisis—बहुव्यापी खांसीके बाद वायुनली भुजके भीतर प्रवेशकी हुई सर्दी =कक्कस, कँक)। (६) खांसते खांसते पानीकी तरह या श्लेष्मामय वमन और कभी कभी नाक या मुंहसे चमकीला खून या खून मिला स्राव होता है (क्यूप्रम)। (१०) श्रोणीसे या उरुके पीछेका स्नायुशूल (Sciatica)—दबाने या शरीरको सामनेकी ओर झुकानेपर या दर्द-वाला अंश दबा कर सोनेपर दर्द बढ़ जाता है और शय्यासे उठनेपर घट जाता है। [११] बहुव्यापी रूप खांसीके समय खसड़ा निकलता है—कुटकुटी होती है, जलन होती है, सुरसुरी होती है और शरीरका वस्त्र उतारनेपर खुजली बढ़ जाती है, खुजलानेपर घटती है।

लक्षणावली ।

मन ।—मानसिक अस्थिरता, इसीलिये किसी एक विषयपर अधिक देरतक मनोयोग नहीं लगा सकता (रास)। उत्ताप पैदा हो जानेके साथ ही मानसिक उद्वेग, विशेषकर सन्ध्याके समय अकेले रहनेपर या रातमें नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो उसका मन उसे पानीमें डूबकर आत्महत्या करनेके लिये उकसा रहा है (ऐसिड-क्रूड, बेल, रास, सिकेलि, साइलि)। अपना संकल्प पूर्ण करनेके लिये दृढ़ प्रतिज्ञा, सामान्य कारणसे ही रोगी बहुत विचलित हो पड़ता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—वायु-सेवनके लिये चलनेके समय (ऐम्ब्रा, ऐङ्गस, आर्स, कोल्कि, मार्क, नक्स, रियुटा, पल्स, सिपि, सल्फ, सिक्के-मेन), और बाईं ओर गिर जानेकी सम्भावना हो जाती है (बेल, डार्का)। ललाटमें मानो भीतरसे बाहरकी ओर कोई छोटी हथौड़ीसे आघात कर रहा है।

आंख ।—दूर-दृष्टि (Presbyopia = साइलि, सल्फ); दूरकी चीज देखता है पर किताब नहीं पढ़ सकता या पासकी चीज धुंधली दिखाई देती है। क्षीण दृष्टि:—छोटी चीजें नहीं देख सकता। आंखके सामने मानो पतला पर्दा पड़ा है—रोगीको ऐसा ही मालूम होता (क्रोकस, हिमेटक्स, पेट्रोल, फास, सल्फ); पढ़नेके समय अक्षरसे अक्षर मिल जाते हैं (डेफनी, जिमसेङ्ग। लिके ; लाई, सिफाटिस ; नेट्र-मूर ; साइलि)।

कान।—निगलनेके समय कानमें तेज दर्द (ऐगाक, चोवि, मैङ्गे)। कानमें भों भों सों सों शब्द और श्रवण-शक्तिमें गड़बड़ी (बेल, कास्टि, फैरो, डैफनी, ऐसिड-नाई, ग्रैफ, कैल्के, कास्टि, फास, सिङ्को)।

मुखमण्डल।—चेहरा फूला और नीला (फेरम-ऐसेट, रैफेनस) गाल और दोनों आंखें गड़हेमें धँसी (सिङ्को, किनिन-सल्फ, रैफेनस, श्रोपि स्ट्रेन)। दाहिने आधे स्थानमें गर्मी और डंक मारनेकी तरह दर्द और बाएं आधे भागमें शीत मालूम होना (एक गाल गर्म और लाल, दूसरा मलिन और ठण्डा=कैमो)। मुंह गर्म पर दोनों हाथ ठण्डे। सुई बेधनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाली पीव भरी फुन्सियां (Pustules=आर्नि, बेल, कैल्के-फास, क्रियो, ऐसिड-नाई, क्रोटेल)। जीभके अगले भागमें सफेद आभा लिये जखम (ऐपिस, ऐमोन-कास्टि, ऐमोन-म्यूर, केलि-आयोड, लाई, चायना, ड्रपिह)। खाँसते खांसते मुंहसे खून-भरी लार या केवल खून ही निकल पड़ता है (आर्नि, बेल, कार्बो-वे, फेरम, ड्रपिका, लैके, मार्क, नक्स, श्रोपि, रास)।

गलेके भीतर।—वक्ताओंके कण्ठका जखम—जिह्वामूलके दोनों ओरके गह्वरके गभीरतम प्रदेशमें रुखड़ापन, सूखापन और त्वचा खरोंच लेनेकी तरह मालूम होना (Scraping) (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कार्बो-वेज, हिप, नक्स, श्रोलि-यैन, फास, पल्स, स्टेन); स्वर-भङ्ग, बात मानो किसी हाँड़ीके भीतरसे निकल रही है। स्वर-रहित, बोलनेमें परिश्रम मालूम होता है (आरम, स्टेन)। चबानेके पदार्थ निगलनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है मानो गलनाली पतली हो गयी है, मानो गलेमें रोटीका टुकड़ा अटक गया है। खाँसनेपर पीला या कुछ हरी आभा लिये कफ निकलता है।

पाकस्थली आदि।—डकारका स्वाद तीता (नाई)। मुंहमें पानी आना (ऐस्ब्रा, ऐमोन-कार्ब, कैप्स, क्रीक, डैफनी, आयोड, लाई, नैट्र-म्यूर, नक्स-वोम, सेबाड, सल्फ); खांसते २ गोंदकी तरह पदार्थ या खाये हुए पदार्थ आदिका वमन हो जाता है। खाँसनेके समय कोखमें दर्द होता है; रोगी दर्द न हो इस लिये दोनों कोखोंको दोनों हाथोंसे दबा रखता है।

श्वास-यंत्र।—हूप खांसी,—बहुत प्रचण्ड प्रकोप या वेग, ऊपरके ऊपर इतनी जल्दी जल्दी प्रकोपका आविर्भाव होता है कि रोगिनीको श्वास-

लेने या छोड़नेका समय नहीं मिलता (खाँसते खाँसते सवेरे ६ से ७ बजेके भीतर जाग उठता है और जबतक बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा नहीं निकल जाता तबतक लगातार खाँसा ही करता है = कक्कस-कैक,—प्रत्येक प्रकोपके समय नाकसे खून निकलता है = ड्रसिड्रगी,—दिनमें थोड़े समयका अन्तर देकर ऊपरके ऊपर खुसखुसी खाँसी आया करती है और रातमें ऋप शब्द करनेवाली खाँसी होती है = कोरेल-रूब्र)। भग्न-स्वरवाली घड़घड़ाहट मिली खाँसी (वार्ब्बेस),—आधी रातके बाद या खसड़ा निकलनेके समय या पहले बढ़ जाती है—रह रहकर उसका प्रकोप पैदा हो जाता है। खाँसते खाँसते मानो गला रुक जाता है, हिचकी आती है और फिर कै हो जाती है (ब्राई, केलि-कार्ब)। बच्चोंके गलेमें या वायुनालीमें सुरसुरी होकर लगातार खाँसी आया करती है—बच्चेका माथा तकियेसे लगते ही खाँसी आने लगती है (बेल, क्रोटन, हायो, रियुमेक्स)। क्षयकास रोग ग्रस्त युवकोंको रातमें खाँसी आती है—खून मिली रहती है (ऐको, आर्नि, बेल, ब्राई, कार्बो-वेज, चायना, डालका, फेर, हृपिक, लैके, नक्स, ओपि, रास, पल्स, ऐकालिफा, साइलि, सल्फ) या पीबकी तरह (कार्बो-ऐन, कार्बो-वेज, चायना, केलि-कार्ब, लाई, ऐसिड-नाई, फास, प्लम्ब, साइलि, सिपि)। कफ निकलता है। खाँसीका बढ़ना,—उत्तापसे, पानी आदि पीनेपर (आर्नि, ब्राई, हिप, मिफाइट, लैके, लाई, फास, चायना)। गानेपर (स्टैन); हंसनेपर (चायना, फास, स्टैन), रोनेपर, सोनेपर (आर्स, केलि-बाई, ऐ-नाई पैरिस, फास, सिपि, साइलि, टैरिब) आधी रातके बाद (ऐको, बेल, ब्राई, कैमो, हायो, ऐण्टि-टार्ट, रास-टेड)। खाँसीके प्रकोपके समय पानी, श्लेष्मा या खाया हुआ पदार्थ आदिका वमन और कभी नाक या मुँहसे खून निकला करता है (आर्नि, क्यूप्रम)। कण्ठके भीतर कोमल परका एक टुकड़ा अड़ा रहनेकी तरह मालूम होना और इसी वजहसे खाँसी आना (ऐमोन-कार्ब, केल्के, इग्ने)। ऋप खाँसी अच्छी होनेपर स्वरनालीमें क्षय कास (वायुनली-भुज-गत सर्दी = कक्क-कैक)।

प्रत्यङ्ग आदि।—रातमें दोनों बाहुओंकी हड्डीमें दर्द होता है और दिनमें हाथ हिलानेपर दर्द घटता है। पुट्ठेमें दर्द और गठिया या कटि-स्नायुशूल,—दर्द दबावकी तरह; दबाने, झुकने या रोगवाली जगह दबाकर सोनेपर बढ़ जाता है और शय्यासे उठनेके बाद घट जाता है।

सम्बन्ध—अनुपूरक—नक्स-वोमिका। सैम्बुकास, सलफर और वेरेट के बाद व्यवहार करनेपर खासा फायदा होता है। ड्रोसेराके बाद कल्केरिया, पलसेटिला और सलफर बहुत लाभदायक हैं।

सदृश।—कोरैल-रूब, सिना, क्युप्रम, कक्कस-कैक्टा, मिफाइटिस, ड्राइफोलियम, प्लेट, इपिका, सैम्बियु।

दोषघ्न।—कैम्फर।

सतर्कता।—ड्रोसेराका ऊंचा क्रम बार बार प्रयोग करनेपर फायदा होनेके बदले नुकसान होता है। डा० हेरिङ्ग कहते हैं कि ड्रोसेरा प्रयोग के अन्तरके समयमें सलफर और विरेट्रमका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है। यक्ष्मा-कास रोगमें रातमें आनेवाली खाँसीमें ड्रोसेराके बाद कोनायमका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है।

शक्ति।—१ ले दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—२० से ३० दिन।

ड्यूबोइसिनम।

(DUBOISINUM)

दूसरा नाम।—कार्क-उड-ट्री।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके पत्ते के रसके सारांशसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—प्रलाप; औंघाई; आँखकी पुतलीका फैलना; गति-शक्तिका पक्षाघात; दूर-दृष्टि; गलेमें सूखापन; सरमें चक्कर आना; दृष्टि-विभ्रम।

उपयोगिता और आभास।—आँखोंपर इसकी प्रधान क्रिया है। यह आँखकी पुतलीको फैला देता है, मुंहमें सूखापन उत्पन्न करता है और पसीना रुकना, सर-दर्द और निद्रालुता उत्पन्न कर दिया करता है। ऐट्रोपाइन

की अपेक्षा आँखोंपर इसकी क्रिया अधिक दिखाई देती है। आँखकी पुतली फैलनेके सम्बन्धमें ऐट्रोपाइनकी अपेक्षा इसकी शक्ति अधिक है। गाढ़े गोंदकी तरह काली आभा लिये श्लेष्मा निकलनेके साथ ही साथ शुष्क गलकोष प्रदाह (Pharyngitis) में यह बहुत लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं—"नजरोंके सामने मानो एक लाल बिन्दु उड़ रहा है" "आँखोंमें शीतलता मालूम होना" "मानो शून्यमें पैर रख रहा है"—दोनों आँखें और जीभ बड़ी हो गयी है ऐसा ही मालूम होता है और आँखें बन्दकर खड़ा नहीं रह सकता।

लक्षणावली।

मन।—शय्यासे उठकर चले जानेकी चेष्टा करता है (ऐगार, रास, वेरेट-विर)। मोहाच्छन्न भाव, प्रश्न करनेपर जवाब तो देता है, पर बड़े कष्टसे (प्रश्नका उत्तर पूरा करता न करता सो जाता है=बैप,—बुद्धि जड़ता-भरी परन्तु प्रश्न करनेपर सम्बद्ध उत्तर देता है=कोलचि,कानवे, कक्यु, आइरिस-वार्स, प्लम्ब, टिलिया-ट्रिफोल,—अचैतन्य अवस्था, प्रश्न करनेपर पूरा पूरा जवाब देनेके बाद फिर बेहोश सा हो जाता है=ऐसिड-फास, आर्नि)। रोगी अपने चारों ओरके पदार्थ पकड़नेकी चेष्टा करता है; शय्या नोचा करता है (आर्नि, बेल, हेलिबो, हायो, जिङ्कम-मूर),—पीछेकी ओर और शय्याके नीचे सन्दिग्ध भावसे देखता है, अकेला रहनेपर क्षण भरमें घरकी सारी चीजें इधर उधर फेंककर विशृंखल बना देता है। अदृश्य व्यक्तिकी ओर हाथ बढ़ा देता है। किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता। (इथ्यू, ऐवेना-सैट, लेक-कैन, मिलिलोट, ऐसिड-फास, स्कूटेल)। अपने मनोभाव प्रकट नहीं कर सकता। (कोना)।

मस्तक।—माथा बहुत छोटा मालूम होता है (स्ट्रैमो)। सरमें चक्कर आना,—उठकर खड़े होनेपर (ऐको, ऐसेर, ब्राई, लोरो, पेट्रोल, पल्स, सैबाड, कैलि-बाई, थूजा) या चलनेके समय (ऐनाक, ऐसेर, कैनाब, कार्बो-वेज, साइक्लू, नेट्र-मूर, ऐसिड-फास, स्पाई); पीछेकी ओर गिर जानेकी अत्यन्त सम्भावना पैदा हो जाती है। (लिडम, रास),—विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय (कैल्के, सल्फ); आँख बन्दकर बिलकुल ही खड़ा नहीं रह सकता—आँख बन्द कर एक कदम भी चल नहीं सकता (ऐलूमिना, आर्जेण्ट-नाई, फाइजस)।

आंख ।—आंखकी पुतली बहुत फैली। आंखमें ठण्डक मालूम होना (एमोन-कार्ब, ऐसाफ, कैल्के, कोना, लाई, प्लेट) पढ़नेके समय जितनी ही बार पुस्तकसे आंख हटाता है उतनी ही बार आंखके ऊपरी अंशसे ललाटतक सर दर्दकी तरह दर्द पैदा हो जाता है; ऐसा मालूम होता है कि आंखका आयतन बढ़ गया है और आंख बाहर निकली पड़ती है। अपने चारों ओरके मनुष्योंका गाल गड्ढेमें धँसा मालूम होता है। भ्रम देखना,—यह समझता है, कि कुर्सीपर बैठ रहे हैं, पर जमीनमें बैठ जाता है। यह समझ कर कि टेबिलपर गिलास रख रहा हूं, शून्यमें छोड़ देता है, दिनमें चारों आरों अँधेरा समझता है। दो फीट दूरके छपे अक्षर पढ़ नहीं सकता और वे अक्षर कितने ही रङ्गके दिखाई देते हैं। ऐसा मालूम होता है, कि नजरके सामने एक लाल बिन्दु दृष्टि-सञ्चालनके साथ ही उड़ा फिरता है। पुस्तक आदि चाहे कितनी ही पास और दूर क्यों न हो, रोगी उसे पढ़ नहीं सकता या खानेकी चीजकी ओर देख नहीं सकता, क्योंकि इससे आंख में दर्द होता है। आंखोंका मुकुर या चित्र-पत्र (Retina) में रक्त अधिक एकत्र हो जानेकी वजहसे आंखोंका प्रदाह—यह नया हो या पुराना—अक्षिगोलकके नीचेका भाग लाल, शिराएं खून भरीं और टेढ़ी मेढ़ी, आंखकी पुतली फैली और दृष्टि अस्पष्ट। आंखके ऊपर अर्थात चक्षु-गोलक और भवोंके बीचमें बहुत दर्द होता है।

मुंह और गलेके भीतर ।—जीभ इतनी फूली रहती है, कि ऐसा मालूम होता है मानो वह मुंहमें नहीं अटती। (क्रोटेल, होरिड) और बोलने में गड़बड़ी पैदा कर देती है (डालका)। मुंह और कण्ठ इतना सूख जाता है, कि रोगीको बोलनेमें तकलीफ होती है। गलकोष प्रदाह,—कण्ठ, सूखा, लाल और शिराएं सब खूनसे भरीं; बहुत अधिक सूखेपनकी वजहसे कोषाणु (Follicles) सब उठ जाते हैं और स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं; उपजिह्वा भी रक्तसे भरी रहती है, स्वरनालीका मुंह सूखा और जगह जगह गाढ़े गोंदकी तरह या काले रङ्गका आधा साफ श्लेष्मा लगा रहता है। बार बार गला साफ करनेकी इच्छा; निगलनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है। दोनों वायुनली-भुजके सङ्गम-स्थानपर सुरसुरी होकर तर खाँसी आती है।

श्वास-यंत्र ।—श्वास-कृच्छ्रताकी वजहसे भयानक यंत्रणा और ऐसा मालूम होता है, कि मृत्यु पास आ गयी (ऐकी, लैके, कैक्ट)। उठ बैठनेपर नाड़ीकी गति धीर हो जाती है और सोनेपर तेज।

बोलता बोलता भूल जाता है, कि वह क्या कर रहा था=बैराइ-कार्ब ; राम लिखना होता है, तो श्याम लिखता है=कैल्के-कार्ब), किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यू, ऐनाक, ऐसिड-फास)। रोगका कारण न होनेपर भी तिरस्कार करता या गाली देना पसन्द करता है (ऐनाक)। कितनी ही चीजें मांगता है, परन्तु देनेपर लेना नहीं चाहता, फेंक देता है (ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, कैमो, सिना, रियूम)।

मस्तक ।— सरमें चक्कर आना,— सवेरे नींद खुलनेपर (कोना, ग्रैफ, लैके) या शय्यासे उठनेके समय (वेल, कैमो, ग्रैनेट, ग्राफ, मैग-मूर, निकोल फास, कैलि-बाई, पल्स, रास, रियुटा, सिपि) और इसीलिये रोगी अपने चारों ओर अन्धकार देखता है (ऐको, आर्जेण्ट, कार्बो-वे, कैमो, हायो, लोरो, मार्क, नक्स-वोम, फाइटो, स्ट्रैमोन, जिङ्कम)। माथेमें हलका दबाव मालूम होता है,—मानो ललाटपर एक मोटा काठका टुकड़ा कसा हुआ है=कक्कु-इन, रास, नक्स)। सरमें दर्द मानो ललाट और कनपटीमें कोई छेद या खोद रहा है—इस ढंगका दर्द (दाहिने पार्श्वमें=वेल),—आधी रातके पहले और स्थिर होकर सोये रहनेपर यह दर्द बढ़ जाता है और बात करनेपर घटता है। ललाटमें मानो भीतरसे गड़हा खोदा जा रहा है—इस तरहका दर्द और ऐसा मालूम होता है मानो मस्तिष्क बहुत बड़ा हो गया है (मानो माथा बहुत बहुत बड़ा=आर्जेण्ट-नाई, ग्लोन, लैकिट्यु, नक्स) ; सन्ध्यासे लेकर दो पहर तक और शरीर ठण्डा होनेपर बढ़ जाता है और सोनेके समय घट जाता है, सरके पिछले भागमें बेहोश कर देनेवाला दर्द,—दर्द गर्दनके पीछेवाले भागसे आरम्भ होता है। सरके पिछले भागमें असाच्छन्द्य पैदा करने वाली ठण्डक मालूम होती है और इस स्थानके केश सब सिहरावनके कारण उठ खड़े होते हैं; ऐसा मालूम होना। बच्चोंके माथेमें दूधिया फोड़े पैदा हो जाते हैं, खोपड़ी ललाट, मुख, कनपटी और चिबुकके ऊपर मोटा पीले रङ्गका पीला भूरा फटा घाव और उसके चारो ओर लाली पैदा हो जाती है। खुजलानेपर खून निकलता है।

आंख ।—पढ़नेके समय आंखमें दर्द होता है (ऐसेट, बार्या, कैल्के, सिना, सैण्टोनिन, कोना, क्रोकस, कैलि-कार्ब, नैट्र-सल्फ, ऐसिड-नाई, सेनेगा, ऐसिड-सल्फ, रियुटा), घरमें रहने या धूपमें चलनेके साथ ऐसा मालूम होता है, मानो आंखसे आग निकलरही है। सर्दी लगजानेकी वजहसे आंखोंका प्रदाह ;

दृष्टिके सामने उड़ती हुई आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं (अरम, वेल, कास्टि, डिजि, कैलि-क्लो, लेके, मार्क, कूप्रम, आर्स, नेट्र-मूर, नक्स, ओपि, फास, स्टैफि, वैलि, वेरेट)। तिमिर दृष्टि,—मानो सभी चीजें अंधकारमें ढकी हुई हैं ऐसा दिखाई देता है (वेल, कैल्के, डिजि, हायोस, इग्ने, मार्क, फेलैन, प्लम्ब, रियुटा, सिकेलि)।

मुख और गलेके भीतर।—मुंहका स्नायुशूल,—गालमें छेदनेकी तरह दर्द (कास्टि); अक्षिगह्वर और हनुतक यह दर्द फैल जाता है, दर्दके पहले रोगवाली जगह ठण्डी मालूम होती है। लार बहना (वेल, कैल्के, कैन्थ, सिनाबेरिस, कोलचि, युफोर्ब, लेके, मार्क-कोर, ऐसिड-नाई, पल्स, पोडो, सल्फ, ऐसिड-सल्फ, वेरेट); लार गोंद या साबुनके फेनकी तरह (ब्राई)। जीभ सूखी और खुरदरी, बहुत लार गिरती है और प्यास बहुत अधिक रहती है। जीभ गाढ़ी श्लेष्मासे ढकी। जीभ बहुत फूली,—बोलने और श्वास प्रश्वासमें व्याघात पैदा करनेवाली (ब्यूबोसिन)। मसूढ़े सब दांतसे अलग हो जाते हैं और उनपर सफेद लेप चढ़ा रहता है। जीभ सुन्न (बेराई, हायो),—खासकर सर्दी लग जानेपर (कास्टि, जेल्स देखो)। निचले हनुकी नीचेवाली ग्रन्थियोंका फूलना। मुख-भङ्गी बिगड़ी हुई, एक ओर खिंची रहती है। सर्दी लगनेकी वजहसे गलेका जखम (कैमो, मार्क),—ऐसा मालूम होता है मानो अलिजिह्वा फूल गयी है। मुखका जखम और पारेका अपव्यवहार तथा श्लेष्मासे पैदा हुई लारका स्राव और गलेकी ग्रन्थिका फूलना। मुंहका स्नायुशूल,—ठण्ड लगनेसे ही पैदा हो जाता है।

पाकाशय।—मुंहका स्वाद तीता; ज्वरकी उत्तापावस्थामें भूख लगना (चायना, सिना, फास)। क्षुधा बहुत अधिक, परन्तु अरुचि (नेट्र-मूर, ओपि, रास, साइलि, ऐसिड-सल्फ)। मिचली और गाढ़े गोंदकी तरह सफेद रङ्गका श्लेष्मा वमन होता है। थोड़ा खानेपर भी पेट फूलने लगता है (लाई)। छातीमें जलन होती है (आर्जेण्ट-नाई, नक्स); मुंहके स्नायु-शूलके बाद भयंकर भूख पैदा हो जाती है। ठण्डा पानी पीनेके लिये ज्वाला-मयी तृष्णा। ऊपरी पेटका संकोचन और उसमें तेज जलन मालूम होना। वमनके समय जाड़ा लगना, ऊपरी पेटमें भार और निचला पेट खाली मालूम होना। पाखानेका वेग होनेपर जी मिचलाने लगता है।

निकलता है और स्वरनालीमें सुरसुरी होती है ; कभी कभी चमकीला खून भरा कफ निकलता है (फेरम, हृपिक, फास, पल्स), हूप-खाँसीकी तरह खाँसी,, दीर्घ निश्वास लेनेपर खाँसी आने लगती है और वायु तथा स्वरनालीके भीतर बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा इकट्ठा रहता है, प्रत्येक बार खाँसी आनेपर स्वादहीन सरल श्लेष्मा निकला करता है। (ब्राई, चायना ; इग्ने, लाई, पेरिस ; स्टैन ; स्टैफाई),—कफमें अधिकांश समय खून मिला रहता है (आर्स, ब्राई, चायना ; डिजि, ड्रोसे, फेरम-ऐसेट, हृपिक, लेके, लाई, फास, ऐकालिफा ; सेनेगा ; सिपि)। श्वास प्रश्वासके समय वक्षपर बहुत दबाव मालूम होता है। छातीके भीतर और बाहर इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो कोई ठोंक रहा है। बाएँ वक्षमें तरंगके प्रभावकी तरह दर्द, फेफड़ेका आसन्न पक्षाघात।

गर्दन और पीठ।—कमरमें दर्द,—मानो बहुत देरतक झुके रहनेके कारण यह दर्द पैदा हो गया है। सर्दी लग जानेके कारण पीठमें दर्द। पानीमें भींजने या सर्दी लग जानेकी वजहसे गर्दन और कन्धेमें दर्द, अकड़न या सुन्न हो जाना। रातमें विश्रामके समय नितम्ब और पुट्ठेकी सन्धिके ऊपर तेज शलाका वेधनेकी तरह या खींचनकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—मुंह, हाथकी पीठ (करभ) और अँगुलीके मांसमें मसे हो जाते हैं (केल्के, ऐसिड-नाइ, रास, थूजा)—मसे कड़े और चिकने। संन्यास रोगकी तरह दोनों बाहु सुन्न और बरफकी तरह ठण्डे,—विशेषकर विश्रामके समय, तलहत्थीमें पसीना (ऐकी, ऐनाक, कोना, लिड, मार्क, नक्स) सर्दीकी वजहसे वातका दर्द,—ठण्डी तर हवा ; वृष्टि या उत्ताप लगकर या वायुके हठात परिवर्तनकी वजहसे बढ़ जाता है (ब्राई)। सारे शरीरमें शोथ और वातका दर्द—सविराम ज्वर या आरक्त ज्वरके बाद पसीना रुकने, धर्म्मेद लोप होने, सर्दी लगने या तर नीची जमीनमें, मकानके निचले अंशमें या गोशालामें रहनेकी वजहसे उपसर्ग (ऐरेनिया, आर्स, नेट्र-सल्फ)

त्वचा।—शरीरकी त्वचा बहुत ही रोग प्रवण, सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती,—अकसर आम वातकी तरह फुन्सियाँ निकला करती हैं,—खासकर जभी सर्दी लगती है, या तर हवामें रहना पड़ता है, तभी पित्ती निकल आती है। सर्दी लगकर पसीना रुकने या आमवात आदि लोप हो जानेकी वजहसे बीमारियाँ। किसनी ही ग्रन्थियोंका प्रदाह (Adenitis—बैराई, बेल, मार्क, ऐसिड-नाई, फास, रास, सार्सा ; सिपि, सल्फ)। रजःस्राव आरम्भ होनेके पहले

शरीरपर आमवातकी तरह खुजली निकल आती है (कोना)। शरीरपर नाना प्रकारकी फुन्सियाँ निकलती हैं। खून बहनेवाले जखम आदिमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। आमवात,—समूची देहमें उद्भेद, —पर ज्वर नहीं रहता। बहुत खुजलाता है—खुजलाने बाद जलन होती है; उत्तापसे बढ़ता है और सर्दी से घटता है,—सर्दी लगनेसे ही अदृश्य हो जाता है। मूर्द्धादेश, मुंह, ललाट, कानपटी और चिबुकपर गाढ़ी पीली भूरी पपड़ी जमा घाव निकलता है; उसके किनारे लाल रहते हैं—खुजलानेपर खून निकल आता है—बच्चोंका घाव (ग्रैफ, वायोला-ट्राइ, जिङ्क, मार्क, सिपि)। शरीरपर मच्छड़ काटनेकी तरह लाल लाल चकत्ते या दाग दिखाई देते हैं। मुंहपर, हाथकी पीठपर और अंगुली आदिके ऊपर बड़े, माँस भरे और चिकने मसे निकलते हैं (कैल्के, कोलूबी-कास्टि, ऐसिड-नाइ, रास, केलि-मूर, कास्टि ; सारे शरीरका शोथ=एपोसिन)

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीत, पीठसे आरम्भ होता है या पीठके चारों ओर फैल जाता है—उत्तापसे शीत नहीं घटता (एरेनिया, कैम्फो, लैके, मिनी, नक्स ; पोडो—शीत प्रायः सन्ध्याके समय पैदा हो जाता है=एरे-निया, आर्नि, बोवि, कैलेड, सिना, इग्ने, कैलि-कार्ब, लैके; जेल्सि, पल्स, रास, सिपी) दर्द और तेज प्यासके साथ जाड़ा मालूम होना। उत्ताप,—सारे शरीरमें जलन पैदा करने वाला उत्ताप। पसीना—बदबूदार पसीना निकलता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें साफ पेशाब होता है (ऐको, एण्टि-टार्ट, फास,—गाढ़ा लाल पेशाब=सीड्रन ; दूधकी तरह=फास ; थोड़ा=सीड्रन ; गदला=ड्रपिक) रातमें और सवेरे बदबूदार पसीना होता है,—दिनमें, पीठमें, बगलमें, और तल-हत्थोंमें पसीना होता है। अक्सर पसीना नहीं होता (ऐरेनिया, आर्स, युपेट, लाई) उत्ताप पैदा होनेके बाद भूख लग आती है (साइमेक्स ; युपेट-पर्प्यु)

वृद्धि।—चित्त होकर सोने पर, झुकनेपर, रोगवाला अंश पीछेकी ओर झुकानेपर, विश्रामके समय, ठण्डी हवामें, गर्म वायु एकाएक ठण्डी हो जानेपर, जलीय तर हवामें, पानीमें भींजने या पानीका व्यवहार करनेपर, ठण्डा पानी पीनेपर, और ऋतुस्राव होनेपर, शरीरके दाने या पसीना रुकने या उद्भेद बैठ जानेपर।

घटना।—घूमते फिरते रहनेपर (फेरम, रास) उत्तापसे ;(पर खांसी और आमवात, उत्तापमें बढ़ जाती है,) सीधे होकर बैठने या खड़े होनेपर करवट दबाकर सोनेपर और दबा देनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—अनुपूरक = बैराइटा-कार्ब, कैलि-सल्फ। एसेटिक-एसिड, बेलेडोना और लेकेसिसके पहले या बाद इसका व्यवहार निषिद्ध है। कैल्केरिया-कार्ब, ब्राई, लाइ-कोपोड, रास और सिपियाके बाद डलकामारा बहुत फायदा करता है। पारेके अपव्यवहारकी वजहसे पैदा हुए रोगोंमें यह बहुत लाभदायक है। लार बहना, गांठोंका फूलना, वायुनाली भुज प्रदाह और उदरामयमें यह मार्क्युरियसके सदृश है,—विशेषकर वायु परिवर्त्तनके कारण रोग होना और रातमें वृद्धिके सम्बन्धमें।

दोषघ्न ।—क्यूप्रम और मार्क्युरियस।

शक्ति ।—३ रे दशमिक क्रमसे २०० शततमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन।

एकिनेशिया-ऐङ्गस्टिफोलिया।
(ECHINACEA ANGUSTIFOLIA)

मन्तव्य ।—एकिनेशिया पर्प्युरिया दवा ज्वर और डिप्थीरियामें *व्यवहृत होती है।*

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक हैं:—उपाङ्ग-प्रदाह; खूनका विषैलापन; दूषित फोड़ा; उपझिल्लीका प्रदाह; सड़े घाव; सान्निपातिक ज्वर; दूषित जखम; रास्पूतकी विषाक्तता; सांप काटना; उपदंश; जखम; गो-बीजका टीका लगानेका दुष्परिणाम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—मानव शरीरके रक्तके साथ पीव मिलना या कोई दूसरा विषैला पदार्थ मिल जानेकी वजहसे रोग आदि होनेपर बहुत लाभदायक प्रमाणित हुआ है। इसलिये प्रसवके बादका बोखार, सड़जाने वाले जखम आदि, गले हुए घाव, उपाङ्ग (Appendix) प्रदाहमें, विषैले फोड़े और मस्तिष्क तथा मेरुमज्जाके आवरणके प्रदाहमें (Cerebro-

spinal Meningitis) इसका व्यवहार करनेपर बहुत फायदा होता है। प्रसवके बादका क्लेद स्राव, मल, सांस वगैरह—इसके सभी स्रावोंमें बदबू रहती है (बैप्टि, सोरिन, पाइरोजेन, कार्बोलिक-एसिड, ऐन्थ्राक्सिन)।

लक्षणावली ।

मन ।—उत्तेजना प्रवण चित्त। मानसिक अवसाद। तीसरे पहर, बार बार जम्हाई आकर औंघाई आती है, (चेलिडोन) ; दुर्बलता और सारे शरीरकी अवसन्नता ; बहुत आलस्य मालूम होना और नींद आना,—किसी विषयमें भी मन नहीं लगा सकता, सोचने या जी लगाकर पढ़नेसे अनिच्छुक। नींद खुल जाती है। निद्रित अवस्थामें लगातार सपने देखा करता है। मरे सम्बन्धियोंको सपनेमें देखता है (ऐनाक)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—सर घुमानेपर (कोना, कैल्के, कैलि-कार्ब,—माथा हिलानेपर=ब्राई, कैल्के, कोना) माथा बहुत बड़ा मालूम होता है। माथेमें धीमा धीमा दर्द होता है। ललाट देशका सर दर्द—विशेषकर बायीं आँखके ऊपर ; निर्मल वायुके सेवनसे घट जाता है। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है (आर्जेंण्ट-नाई, ऐपियोल ; बेल ; डेफनी ; इग्ने नक्स, फिलेन, साइलि, स्पाइजि)। कनपटीमें लगातार तेज दर्द,—विश्रामके समय और दबा देनेपर आराम मालूम होता है।

आंख ।—अध्ययनके समय आँखमें दर्द होता है (सैण्टोनिन, कैलि-बाई, कोना) हाथमें किताब लेकर पढ़नेपर बहुत थकन मालूम होती है। किसी चीजको ओर देखनेपर आँखमें दर्द होता है और आँखसे पानी गिरने लगता है (दर्द=कार्बो-वे, सैबाड,,—पानी गिरता है=सिनाबेरिस), आँख बन्द करनेपर घटता है। आँख बन्द करनेपर उसमें उत्ताप मालूम होता है (कोरैल-रूब) ऐसा मालूम होता है कि नींदसे आँखें बन्द हुई जाती हैं पर नींद नहीं आती।

नाक ।—नाक-भरी मालूम होती है, और नाक झाड़कर साफ कर डालनेकी इच्छा होती है, पर उससे आराम नहीं मिलता। सांसमें बहुत बदबू और नाकसे बदबूदार श्लेष्मा निकलता है (ऐन्थ्राक्सिन, कार्बोलिक-एसिड, सोरिन,) ; नासारन्ध्रसे श्लैष्मिक झिल्ली भरा अर्बुद बाहर निकल पड़ता है।

मुख-विवर।—सड़नेवाला मुंहका जखम,—मसूढ़े सब दांतसे अलग हो जाते हैं और सामान्य कारणसे ही उनसे खून निकलता है (मार्क-ऑर); दोनों ओठोंका संयोगस्थल और दोनों ओंठ फट जाते हैं (काण्डियुरेङ्गो)। जीभ सूखी और फूली; दांतोंपर मैल चढ़ी। जीभ, ओंठ और जिह्वामूलीय दोनों गह्वरोंमें कुटकुटाहट और चुनचुनी हुआ करती है और हृदपिण्डमें दर्द होता है; तमतमाया हुआ चेहरा, जीभके दोनों किनारे लाल और उसके बीचमें सफेद लेव चढ़ा, कभी कभी जीभ कच्चे मांसकी तरह दिखाई देती है। मुंहमें गोंदकी तरह श्लेष्मा जमा होना।

गलेके भीतर।—कण्ठ गहरी लाल और काली आभा लिये (ऐकिनेशिया पर्प्यूरिया)। कण्ठसे लेकर वायुनाली और नाकके पिछले छेद तकका स्थान धुमैले रङ्गके लेपसे ढका रहता है। खट्टा श्लेष्मा वमन करनेके बाद गलेमें जलन मालूम होती है।

पाकस्थली।—सोनेके पहले मिचली,—सोने बाद घट जाती है,भोजनके बाद पाकाशय और अन्त्राशय वायुसे भर जाता है। खानेके बाद, खाये हुए पदार्थोंका स्वाद मिली डकार। ऊपरी पेट फूल उठता है और वायु निकलनेपर भी नहीं घटता। खट्टी डकार आने बाद गलेमें जलन होती है। डकार अधोवायु दोनों ही हुआ करता है। अम्ल हो जाता है। छातीमें जलन होता है और डकार आया करती है। ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थलीमें कोई एक पदार्थ है (ऐबीज-नाई, ब्राई, पल्स)।

अन्त्राशय।—दाहिने कोखमें दर्द होता है। तलपेट भरा मालूम होता है और उसमें हड़हड़ गड़गड़ शब्द हुआ करता है। नाभि-प्रदेशमें दर्द,—सामनेको ओर झुक पड़नेपर आराम होता है (कोलो, क्यूप्रम)। पेटमें मरोड़ होकर बदबूदार वायु निकलता है; या पतला पीली आभा लिये पाखाना होता है और उससे रोगी सुस्त हो पड़ता है।

पेशाब।—रोगी कितना भी सावधान क्यों न रहे उसे अनजानमें पेशाब हो जाता है। पेशाबके समय जलन और दर्द होता है। तलपेटके नीचे (Pubes) में दर्द और इस स्थानकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है। दाहिने शुक्र-रज्जुमें दर्द (रोडो)। अण्डकोष ऊपरकी ओर खिंचा और उसमें दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रसवके बाद खूनके साथ पीब मिल जानेके कारण बोखार; स्राव आदि रुक जाता है; अन्त्राशयमें बहुत दर्द होता है। स्पर्श सहन नहीं होता, और वायुसे फूल उठता है (कोलो, हायो, बेल,) सन्ध्याके समय योनिसे श्लेष्माका स्राव ।

त्वचा ।—बार बार फोड़े निकलना। दुष्ट-व्रण (ऐन्थाक्सिन)। कीड़े आदि काटना (ऐन्थाक्सिन)। लसिका नाड़ियाँ सब फूल उठती हैं।

ज्वर ।—मिचलीके साथ जाड़ा मालूम होना। आन्त्रिक ज्वर, मसूड़े और दोनों ओंठ जखमसे भरे और उनसे खून निकलता है; गलेमें गाढ़ा लाल या काला रंग; जीभ कच्चे मांसकी तरह; श्वास-प्रश्वास और मल मूत्र आदिमें बहुत बदबू; उठनेकी शक्तिका न रहना ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—और तुलनीय ।—ऐन्थ्राक्सिन (फोड़े); पाइरोजेन, कार्बो-ऐसिड, लैकेसिस, बैप्टीशिया; सांप काटनेपर = लोबेलिया; कैलेण्डुला और बेलिस ।

शक्ति ।—मूल अर्क १ से १० बूंद तक ।

एकिनेशिया पर्पुरिया ।

(ECHINACEA PURPUREA)

दूसरा नाम ।—ब्लैक सैमसन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी संग्रह की हुई जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाकी अभी उपयुक्त प्रूविङ्ग नहीं हुई। ऐकिनेशिया ऐङ्गाके लक्षणसे इसका कोई विशेष प्रभेद नहीं है। डिप्थीरिया और विषाक्त ज्वरमें विशेषकर जीभमें काला दाग रहनेपर यह आशातीत फायदा करती है।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न शक्ति ।

इलिईस।

(ELAEIS GUINEENSIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फलका विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—अतिसार; गोद; पाकाशयका विकार; कुष्ट व्याधि; चर्म रोग इत्यादिमें लाभदायक हैं।

उपयोगिता और आभास।—कुष्ट व्याधि;—स्थूल त्वचा, श्लीपद या फीलपाया वगैरह चर्म रोगमें इससे विशेष लाभ दिखाई देता है। काले रंगका मल मिला उदरामय भी इसके विषयके अन्तर्गत है।

लक्षणावली।

मन।—बहुत ही फुर्ती-भरा चित्त, अकेला रहनेपर भी आनन्दसे हँसा करता है। कभी कभी विमर्ष भाव भी प्रकट करता है।

आँख।—आँख फूली (ऐको, आर्स, कैलि-कार्ब, रास, स्ट्रेम)। दीये की रोशनीमें धुँधला देखता है (क्रोक, हिप)। किसी चीजकी ओर टकटकी लगाकर देख नहीं सकता (कैल्के, फिलेन, कार्बो-वेज, सैबाड)।

मुँह और गलेके भीतर।—निगलनेके समय कण्ठमें छुरी मारने की तरह दर्द। मुँहसे बदबू निकला करती है। जीभमें इतनी जलन होती है कि खाना बन्द कर देना पड़ता है।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि।—सीढ़ी चढ़नेके समय शरीरके नाना स्थानोंपर अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द मालूम होता है। बदनका चमड़ा मोटा हो जाता है, उदरके ऊपरी प्रदेशमें दोनों ओर ऐसा मालूम होता है, मानो चमड़ा मोटा हो गया है, और निचले पंजरेमें मानो खील गड़ गयी है—त्वचा फूली और लचीली नहीं रहा करती है। बाएँ पैरकी त्वचा फूली, रुखड़ी और खुजलाती है; समूचे शरीरमें खुजली होती है; खुजलानेके कारण नींदमें व्याघात होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—वैसिलिनम, हाइड्रोकोटाइल,-ऐनाकार्डियम, रासटक्स, प्रभृति।

शक्ति।—मूल अर्क से २ रा और ३ रा क्रम।

इलैप्स कोरैलिनस।

(ELAPS CORALLINUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ब्रेजिल देशके विषैले सांपके दाँतसे विष लेकर, दुग्ध शर्कराके साथ विचूर्ण तैयार किया जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है= अन्धापन; केन्सर या कर्कटीया जखम; बहरापन; नाकसे खून गिरना; रक्तस्राव; सरमें दर्द; अर्द्धाङ्गका पक्षाघात; बहुत ज्यादा रजःस्राव; जरायुसे रक्त स्राव; फेफड़ेका प्रदाह; नकसीर; यक्ष्मा; गलेका जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—क्रोटेलस, लैकेसिस और इलेप्स—इन तीनों सर्प विषोंका आपसमें बहुत सादृश्य है, पर इलेप्सका एक विशेष लक्षण यह है, कि इसके सभी स्राव काले होते हैं—यहाँतक कि कानका मैल भी काला निकलता है। इसका एक और भी प्रकृतिगत लक्षण यह है, कि,—(१) फल या ठण्ढ़ी पीनेकी चीजें, पेटमें जानेपर ऐसा मालूम होता है, कि बरफके टुकड़ेकी तरह पड़ी हैं और इसी वजहसे छातीमें ठण्ढक मालूम होती है (२) खाई हुई चीजें ऐसी मालूम होती हैं कि स्क्रूके चक्करकी तरह घूम घूमकर प्रवेश कर रही है। (३) मानो शरीरका सब खून माथेमें इकट्ठा हो गया है। (४) पानी आदि पीनेके बाद बहुत अधिक जाड़ा मालूम होता है, और ऐसा मालूम होता है, मानो बाएं फेफड़ेके बीचमें एक गोल छेदकी राहसे पानी चढ़ रहा है और गिर रहा है (डा० शेनन)। (५) अंतमण्डली मानो डोरीसे बाँध कर एक गोलेकी तरह बन गयी है। मिचली और वमन; सुस्तीके साथ पाकस्थलीमें अम्ल पैदा हो जाना, सिकुड़ना और फैलना, तालुमूलका सङ्कोचन, इत्यादि अवस्थाओंमें भी इलेप्ससे फायदा हुआ करता है। शरीरके दाहिने पार्श्वके साथ इस दवाका घनिष्ट सम्बन्ध है (लैकेसिस—बाम पार्श्वके साथ)।

लक्षणावली।

मन।—विपन्न चित्त; ऐसा मालूम होता है, मानो वह किसीकी बातें सुन रहा है। दृष्टिसे भय (अन्धड़का भय=रोडी)। इस भयसे हमेशा सशंकित रहता है, कि उसे कोई सांघातिक रोग हो जायगा (रोगी सोचता है, कि

उसकी बीमारी अब आराम न होगी = आर्स, कोका, इग्ने, लैक-कैन, लिल-टाइग, मिडोराइन, नेट्र-म्यू, सोराइन, — रोगी मनमें समझता है कि उसके गलेमें सांघातिक रोग हो गया है = सैबाड)। अकेला नहीं रहना चाहता डरता है, कि कोई भयङ्कर घटना न घट जाय (अकेला नहीं रहना चाहता, कहीं उसकी मृत्यु न हो जाय या कोई शायद उसको जान मार देनेकी चेष्टा करे = आर्स)। संन्यास रोग हो जानेका भय (आर्जेण्ट, एपिस, — चेचक रोग होनेका भय = वैरियोलिन ; विसूचिका होनेका भय = आर्स, ऐसिड-नाई)। अपने ऊपर भयंकर क्रोध ; कोई उससे बात करता है, तो चिढ़ उठता है। सामान्य प्रतिवाद भी उसके शरीरको कँपा देता है और वह एकदम गर्म हो उठता है (अरम, काक्यु, कोना, फेर)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, — सामनेकी ओर गिर जानेकी सम्भावना होती है (आर्नि, फेरम-ऐसेट, नेट्र-म्यू, रैनान, पोडो, रास ; पीछेकी ओर = लिड, रास)। सरमें दर्द — भूख लगते ही यदि खानेको न मिल जाय (लाई); भोजनके बाद घट जाता है (भोजनके समय घटना = ऐनाक)। कभी बाईं ओर कभी दाहिनी ओर अस्त्रके आघातकी तरह दर्द ; मानसिक परिश्रमके बाद सरके पिछले भागमें दर्द ; नींद न आना, माथा भरा और भारी मालूम होना — मानो शरीरका सब खून माथेमें एकत्र हो गया है। दोनों हाथ ठण्डे, और संन्यास-रोगके आक्रमणका भय (आर्जेण्ट, एपिस), ललाटमें भार मालूम होना और सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होना, — कानमें वज्रकी तरह आवाज। सुननेकी ताकतका गायब हो जाना [डालका कूपमर्म] और आँसू बहना (युजिनी, इग्ने, पनस, सल्फि)। ब्रह्मतालुमें तेज दर्द, — सन्ध्याके समय ऐसा मालूम होता है मानो मस्तिष्क हिल रहा है ; मिचली वर्तमान रहनेकी वजहसे रोगी माथा स्थिर नहीं रख सकता।

आँख।—बायीं आँखके ऊपर गुहौरी और उसमें छुरी मारनेकी तरह दर्द। दृष्टिके सामने लाल जलते हुए बिन्दु सब दिखाई देते हैं [वृथोइ-सिस]। नींद खुलनेपर आँखमें सूखापनका भाव और जलन मालूम होती है ; सवेरे आँखके चारों ओर सूजन दिखाई देती है [बेराई-कार्ब] ; रातमें भी सब चीजें सफेद दीख पड़ती हैं, आँखके सामने ऐसा मालूम होता है मानो एक धुमैला आवरण फैला हुआ है। तिमिर-दृष्टि, — उजेला है या अँधेरा, यह सहजमें स्थिर नहीं कर पाता।

कान।—कानमें काला मैल इकट्ठा होता है और रोगीको सुन नहीं पड़ता। [पलस, सेलिन ; लाल रङ्ग=कोना ; सफेद=लैके], या सवेरे बायें कानसे रसकी तरह हरे रंगका और बदबूदार स्राव और कानमें भों भों आवाज आती है। कानमें नाना प्रकारके आवाजें आती हैं। एकाएक रातके समय कान बहरे हो जाते हैं और कानमें सों सों आवाज होती है और कुटकुटाया करता है। खाने या निगलनेके समय कानमें कड़ाकसी आवाज हो उठती हैं (कैलके, ग्रेफ, ऐल्यू, कार्बो-वे, बेराइ-कार्ब, प्युपेट-पर्प, कैलि-आयोड, मैङ्ग] रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो वह किसीकी बात सुन रहा है [ऐसा मालूम हो कि दूर देशमें रहनेवाले व्यक्तिकी आवाज सुनता है= ऐनाक, कैमो, स्टैन], कानमें असह्य सुरसुरी।

नाक।—घ्राण-शक्तिका गायब हो जाना। नाक साफ करनेके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें एक अविच्छिन्न सोतेकी तरह लाल रङ्गका खून निकलता है (क्रोटन, हैमा, ऐसिड-नाई, सिकेल, ऐसिड-सल्फ)। पीनस—इसके साथ ही नाकसे नमक लगी मछलीके रसकी तरह बदबूदार रसका स्राव होता है (ऐसा, एरम, ग्रेफ, लाई, मार्क, आर्स,—इसके साथ तुलनीय है)। जरा भी ठण्डी हवा लगनेपर सर्दी हो जाती है (डालका) और सफेद रंगका पानीकी तरह श्लेष्मा निकला करता है।

मुंह।—चेहरा घोर लाल और गहरा आरक्तिम, जीभ काली (ऐन्था-क्सिन, व्यूफो ; एकिनेशि, लैके, रास) या गाढ़ा लाल रंग ; सवेरे सफेदी लिये और फूला हुआ रहता है ; जीभके अगले भागमें ऐसा दर्द होता है मानो सुई बेधी जा रही है।

गलेके भीतर।—कण्ठमें जखम भरा,—बाएँ पार्श्वमें अधिक ; कोई खानेकी चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है ; इसी तरह वर्षमें पाँच छः बार हुआ करता है और प्रत्येक बार दो तीन सप्ताह तक स्थायी रहता है ; हवा या पानी लगकर ऐसा बार बार हुआ करता है (डालका) ; रोगीके गलेमें जखम हो या न हो, वह तर जलीय हवामें बाहर नहीं निकलना चाहता। क्या तरल, क्या कड़े पदार्थ—रोगीको दोनों ही निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है। उसके कण्ठके भीतर बहुत अधिक स्पर्श असहनीयता रहती है ; दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियां इतनी फूली रहती हैं, कि ऐसा नहीं

मालूम होता है, कि गलेमें छेद है, कोई पदार्थ निगलनेके समय नासारन्ध्रसे लेकर यान तक दर्द मालूम होता है। जिह्वामूलके गह्वरके ऊपरी भागमें अनगिनत गहरे लाल रंगके बिन्दु दिखाई देते हैं और वे बिन्दु सब रस-भरी फुन्सियोंकी पूर्वावस्थाकी तरह मालूम होते हैं। अन्नलीके संकोचनकी वजहसे यह जो कुछ खाता है वह उसमें पहले अटका जाता है,इसके बाद भारी चीजकी तरह पाकस्थलीमें गिर पड़ता है; अन्ननालीमें ऐसा मालूम होता है कि स्पञ्जका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—भोजनके बाद पाकाशयमें भार मालूम होना। बहुत ज्यादा भूख रहनेपर भी खा नहीं सकता। भूरे रङ्गका पित्त वमन होनेके बाद पतले दस्त आया करते हैं। अम्ल रोग,—इसके साथ ही मिचली और शारीरिक अवसन्नता; खट्टी डकार, भयानक प्यास, पर पानी आदि पीनेसे ही छातीमें ठण्डक मालूम होती हैं। भूखकी वजहसे सर दर्द (लाई),—खासकर खानेमें देर होनेपर (भोजनके समय सर दर्द आराम हो जाना=ऐनाक)। श्लेष्मा वमन करनेके बाद मूर्च्छा या वैसा ही कुछ और हो जाता है (आर्स, ग्रेन-इपिक, लेसियम, वेरेट); एकाएक पेटमें ऐसा दर्द पैदा हो जाता है, मानो रोगी बैठ जाना चाहता है। पर बैठनेसे बढ़ता है और चलते रहनेपर घटता है (बैठनेसे बढ़ना=हिप, पल्स, सल्फ); अन्त्र-मण्डलीमें ऐसा मालूम होता है मानो आँतें डोरीसे बँधकर एक गोला जैसी हो गयी हैं (स्पञ्जि देखो)। निगली हुई चीजें आदि मालूम होती हैं कि मानो चक्करकी तरह घूम घूमकर पेटमें घुसती हैं।

मल।—उदरामय,—पेटमें गड़ गड़ शब्द कर कुछ काला या कुछ पीला पानीकी तरह आम मिला मल निकलता हैं; और कभी पित्तमय मल या कभी केवल खून मिली आंव निकला करती है। आंतोंका शूल,—मानो आंतें मरोड़ खा रही हैं, इस तरह मालूम होनेके साथ ही साथ मलांतसे पानीकी तरह काले रंगका खून (ऐग्नि-ऐसे, मार्क-कोर) निकलता है। मलद्वारमें कृमि चलनेकी तरह सुरसुरी अनुभूत होती है (कोलचि, ग्रेनेट, इग्ने, स्पाइजि, टेरिब, टियुक्रि, जिङ्क)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बन्द होनेके समय काला रक्तस्राव हुआ करता है (ऐसिर, कैमो, क्रोक, इग्ने, नाइड्रम,प्लैट)। जरायुसे खूनका स्राव,—

कान ।—कानमें काला मैल इकट्ठा होता है और रोगीको सुन नहीं पड़ता। [पलस, सेलिन ; लाल रङ्ग=कोना ; सफेद=लैके], या सवेरे बायें कानसे रसकी तरह हरे रंगका और बदबूदार स्राव और कानमें भों भों आवाज आती है। कानमें नाना प्रकारके आवाजें आती हैं। एकाएक रातके समय कान बहरे हो जाते हैं और कानमें सों सों आवाज होती है और कुटकुटाया करता है। खाने या निगलनेके समय कानमें कड़ाकसी आवाज हो उठती हैं (कैलके, ग्रेफ, ऐल्यू, कार्बो-वे, बेराइ-कार्ब, युपेट-पर्षु, केलि-आयोड, मैङ्ग] रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो वह किसीको बात सुन रहा है [ऐसा मालूम हो कि दूर देशमें रहनेवाले व्यक्तिकी आवाज सुनता है= ऐनाक, कैमो, स्टैन], कानमें असह्य सुरसुरी।

नाक ।—घ्राण-शक्तिका गायब हो जाना। नाक साफ करनेके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें एक अविच्छिन्न सोतेकी तरह लाल रङ्गका खून निकलता है (क्रोटन, हैमा, ऐसिड-नाइ, मिक्रोल, ऐसिड-सल्फ)। पीनस—इसके साथ ही नाकसे नमक लगी मछलीके रसकी तरह बदबूदार रसका स्राव होता है (ऐसा, एरम, ग्रेफ, लाइ, मार्क, आर्स,—इसके साथ तुलनीय है)। जरा भी ठण्डी हवा लगनेपर सर्दी हो जाती है (डालका) और सफेद रंगका पानीकी तरह श्लेष्मा निकला करता है।

मुंह ।—चेहरा घोर लाल और गहरा आरक्तिम, जीभ काली (ऐन्थ्रा-क्सिन, ब्यूफो ; एकिनेशि, लैके, रास) या गाढ़ा लाल रंग ; सवेरे सफेदी लिये और फूला हुआ रहता है ; जीभके अगले भागमें ऐसा दर्द होता है मानो सुई बेधी जा रही है।

गलेके भीतर ।—कण्ठमें जखम भरा,—बाएँ पार्श्वमें अधिक ; कोई खानेकी चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है ; इसी तरह वर्षमें पांच छः बार हुआ करता है और प्रत्येक बार दो तीन सप्ताह तक स्थायी रहता है ; हवा या पानी लगकर ऐसा बार बार हुआ करता है (डालका) ; रोगीके गलेमें जखम हो या न हो, वह तर जलीय हवामें बाहर नहीं निकलना चाहता। क्या तरल, क्या कड़े पदार्थ—रोगीको दोनों ही निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है। उसके कण्ठके भीतर बहुत अधिक स्पर्श असहनीयता रहती है ; दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियां इतनी फूली रहती हैं, कि ऐसा नहीं

नक्स-वोम, फास, रास, कैप्सि) और मृत व्यक्तिके सम्बन्धमें (क्रोटल-होरिड, क्रोटल-कैस्का, एकिने) सपने देखा करता है।

ज्वर।—शीतावस्था—प्यास न रहना ; चेहरा लाल। रात आठ बजनेके समय शीत और उत्ताप पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। रोगी शीतसे कांपा करता है—मानो हड्डी छेदकर शीत भीतर घुस रहा है। ठण्डा पानी पीनेसे जाड़ा और भी बढ़ जाता है (कैप्सि)। दाहिने घुटने तक बरफकी तरह ठण्डे, पानीमें हाथ डुबोनेपर शीतसे हाथ कांपा करता है। उत्तापावस्था—प्यास मिली,—सन्ध्यामें ७ बजेसे ८ बजे तक सूखा और बिना पसीनेका उत्ताप पर इसके बाद रातमें १० बजेतक जाड़ा मालूम होता है। रह रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है, और इसके बाद रातके १० बजेतक जाड़ा लगता है। रह रहकर उत्तापका आविर्भाव होता है और चेहरा तथा कान लाल हो उठते हैं—समूचे शरीरमें पसीना होता है—पसीना परिमाणमें बहुत ज्यादा और ठण्डा।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स, कार्बो-वेज, क्रोटेलस ; लैके, ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-नाई, रास, डालका।

तुलनीय।—डिग्रुबोइसिनम (दृष्टिके सामने लाल बिन्दु), डालकामारा (सर्दी लगना)।

दोषघ्न।—शराब या आर्सेनिक।

शक्ति।—६ ठे शततमिकसे २० शततमिक क्रम।

इलैटिरियम।

(ELATERIUM)

दूसरा नाम।—जंगली कद्दू या कोहड़ा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके बिना पके फलसे मूल अर्क तैयार होता है। सार भागके विचूर्णको इलैटेरिनम कहते हैं।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— फोड़ा ; पैत्तिक ज्वर ; हैजा ; शूल उठना ; अतिसार ; शोथ ; रक्तामाशय ;

खूनका रङ्ग काला, पानीकी तरह या जमा हुआ [Clotted] अधिकांश स्थानों में पतला ; दिन रातमें एक पावसे डेढ़ पाव तक खून निकल जाता है। रोगिनी मुर्देकी तरह सफेद दिखाई देती है।—इसके समूचे तलपेटमें बहुत दर्द रहता है, दोनों कनपटियोंमें खींचनकी तरह दर्द और कभी कभी बाएँ फुसफुसावरणी (Pleura) में भी कुछ दर्द मालूम हुआ करता है ; एक छोटासा कपूरका टुकड़ा खाते ही आराम हो जाता है। जरायुमें कर्कटीया जखम ऐसा मालूम होता है। मानो जरायुमें कुछ टूट गया—इसके बाद पेशाब करनेकी चेष्टा करते ही धार बांधकर गाढ़ा लाल या काले रङ्गके खूनका स्राव हुआ करता है,—स्राव बहुत ज्यादा और उसमें दो एक जमे हुए टुकड़े भी रहते हैं। पन्द्रह दिन बाद ही ऋतु-स्राव होने लगता है।

श्वास-यन्त्र।—पानी पीनेके बाद वक्षमें ठण्डक मालूम होना और ऐसा बोध होता है,मानो बाएँ फेफड़ेके भीतर वाले एक नलकी तरहके छिद्रके भीतरसे बर्फकी तरह ठण्डा पानी ऊपर चढ़ता है और नीचे उतरता है (डा० ग्रैनन)। प्रबल खांसीके बाद खून मिला कफ निकलता है। फेफड़ेसे खून निकलनेके पहले मुंहमें रक्तका स्वाद आ जाता है। (विस्मथ ; साइलिसिया)। माथा या देह झुकानेपर मूर्च्छाका उपक्रम हो जाता है। लगातार खांसी और समूचे फेफड़ेमें फाड़नेकी तरह तेज दर्द,—दाहिने फेफड़ेके शिखर देशमें दर्द ज्यादा होता है। दोनों फेफड़ोंके ऊपरी अंशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द,—टहलनेपर दर्द घट जाता है। सन्ध्याके समय श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है,— सीढ़ी चढ़नेके समय बढ़ना (ऐमोन-कार्ब, आर्स, ऐङ्गस, बोर, लिड, हायो, मार्क, ऐसिड-नाई, रैटान, रियुटा, सेनेगा)।

प्रत्यङ्ग।—बगलमें फुन्सी हो जाती है और बहुत खुजलाती है (कार्बो-ऐन, कार्बो-वेज, लाई, पेट्रोल, फास)। बगलकी गांठें सब प्रदाह भरी होती हैं और उनके पक जानेकी सम्भावना होती है (बैराई, हिप)। अंगुली वगैरहके अग्र भागकी खाल उधड़ जाती है। कोहनीसे लेकर हाथ तक सूजन होकर चर-चराता है,—मानो बहुत भारी चीज उठाये हुए है। पैरकी पोटलीमें ऐंठन होती है (कैम्फो, वेरेट)। दाहिना पैर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है। हाथ और अंगुलीमें पीले रङ्गके विन्दु दिखाई देते हैं।

निद्रा।—छुरी मारनेकी तरह यंत्रणा देनेवाला सर दर्द और इसी वजहसे नींद न आना। लगातार काम काज (ब्राई, साइक्ल, लाई, ऐसिड-नाई,

भयानक रूपसे फूल उठता है और दर्द होता है। मुंहका स्वाद तीता औ खार बना करता है; मिचली, खाई हुई चीज मिला गाढ़े भूरे रंगके पानीकी तरह वमन, इसके साथ ही बहुत सुस्ती।

मल।—मल पानीकी तरह बहुत ज्यादा और उसके साथ ही वेग रहता है। कुछ हरे रङ्गका और फेन-भरा मल चारों ओर छिटक कर निकलता है (आर्जेण्ट-नाई); बार बार ज्यादा पानीकी तरह दस्त होता है।

प्रत्यङ्गादि।—दृष्टसी कटिस्नायुशूल (Sciatica)—बाएँ कटिस्नायुकी गतिके अनुसार तलवेके बीचके स्थान तक तेज और जल्दीसे फैलने वाला दर्द मालूम हुआ करता है। (ब्राई, कोलो)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—जाड़ा लगनेके साथ कपकपी होती है और बार बार जम्हाई आती है—मानो बोखार आनेकी सूचना हो। जाड़ा आनेके पहले जम्हाई आने लगती है। शीतावस्थामें माथा और हाथ पैर दर्द करते हैं। उत्तापावस्थामें समूचे माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द तथा तलपेट और हाथ पैरमें बहुत अधिक दर्द होता है, दर्द तेजीसे पैरकी नखतक फैल जाता है और फिर ऊपरकी ओर दौड़ पड़ता है। पसीनेवाली अवस्था, पसीनेके बाद सभी तकलीफें घट जाती हैं (ब्राई, जेलस, लेके, नेट्र-म्यूर, सोरिन, रास)। कभी कभी सविराम ज्वर रुका कि शरीरपर पित्ती निकल आयी [ज्वरके समय पित्ती निकलना—एपिस, हिप, इग्ने, रास)।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—कोलो, क्रोटन टिग, वेरेट्रम, सिकेलि, एपिस, हिपर, इग्ने, रास।

तुलनीय।—ब्रायो, कोलोसिन्थ (कटिस्नायु शूल); वेरेट्रम, कोलचिकम, क्रोटोन, (विसूचिका); कैन्थ (मूत्रकष्ट और दस्त); एपिस, रासटक्स (आमवात और शीतज्वर)।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

उबकाई ; पाला ज्वर ; कामला ; खसड़ा ; आमवात ; स्नायुशूल ; वात ; कटि-स्नायुशूल ; वमन ; जम्हाई।

उपयोगिता और आभास।—बहुत ज्यादा पानीकी तरह दस्त और वमन मिली विसूचिका, बच्चोंका उदरामय, वगैरह रोगमें यह विशेष लाभदायक है। सूक्ष्म मात्रामें इसका प्रयोग करनेपर श्लैष्मिक झिल्लीका जलीय भाग सूख जाता है, इसीलिये शोथ, उदरी, वगैरह रोगमें भी इससे लाभ दिखाई देता है, इससे पैदा हुआ ज्वर, विसूचिका आदि बीमारियोंमें बार बार जम्हाई लेना, हाथ पैर फैलाना—इलैटेरियमका सबसे बढ़िया निर्णायक लक्षण है। नये पैदा हुए बच्चों का कामला रोग, और पित्त मिला दस्त, इससे अच्छा हो जानेकी बहुत अधिक सम्भावना है और कितने ही स्थानोंमें केवल इसीके सहारे वे आरोग्य हुए हैं। कुछ हरा दस्त और के और फेनभरा मल इसका अन्यतम निर्णायक लक्षण है, मलेरिया या पूतिवाष्पज ज्वर आदिके एकाएक गायब हो जानेकी वजहसे मानसिक विकार और आमवात रोगमें भी यह आश्चर्यजनक फायदा दिखाता है। बाई' आँखमें मानो काँटा या पतली सलाई गड़ गयी है—और मानो नाकके पिछली छेद और अन्ननालीका ऊपरी मुंह बड़ा हो गया है—ऐसा मालूम होना इसका प्रकृतिगत लक्षण है।

लक्षणावली।

मन।—(रातके समय) घर छोड़कर दूर या जङ्गलमें घूमनेका दुर्दमनीय आग्रह (ऐक्टिया और वेरेट्रम-ऐल्बम देखो)। हमेशा ऐसी आशङ्का किया करता है कि विपत्ति पासमें है (ऐक्टिया, किनिन-सल्फ, क्यूप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लोरो, सिपि, लिलि-टाइग्रि)।

गलेके भीतर।—रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसकी नाक का पिछला छेद (Posterior Nares) और अन्ननालीका ऊपरी अंश बड़ा हो गया है।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—बहुत सुस्तीके साथ मिचली और वमन ; तलपेटको खूब कसकर पकड़ रखता है। भार मालूम होना, अन्ननालीका संकोचन, उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और श्वास कष्ट, अन्त्र-शूल—छिदनेकी तरह दर्द। दुरारोग्य उदरामयमें—पतला पाखाना होनेके बाद पेट

तथा वेग वगैरह इसकी क्रियाके लक्षण हैं, पेशाबके साथ श्लेष्मा और पीव, भूरे रङ्गकी पेशाबमें बालू और मूत्र-पथरी और मूत्राम्ल (Uric acid) मिला रहता है और इसीकी तली जमती है।

थकावटकी वजहसे सर दर्द।— बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक परिश्रमकी वजहसे—मिचली, वमन, दिखाई न देना और इसके साथही दुर्दमनीय कब्जियत (लैक-डिफ्लोरेटम ; सैङ्गियुनेरिया ; आइरिस)।— (डा० एच० सी० ऐलेन]।

सदृश। —युवा-उर्साई, चिमाफिला, पैरिरा-ब्रेवा, मिचेला—रिपेन्स ; आर्टिका-युरेन्स ; सर दर्द = सैङ्गियुई, लैक-डिफ्लो।

शक्ति।—मूल अरिष्ट १० से २० बूंद।

एफिड्रा-वल्गेरिस।

(EPHIDRA VULGARIS)

परिचय।—टिमस्टकस-टी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—शाखा और फूलसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आँखका गोला अकड़कर बाहर निकल पड़ेगा, ऐसा मालूम होना, तेजीसे कलेजा धड़कना लक्षणकी एक लाभदायक दवा (लाइको, वार्जि) है।

सम्बन्ध —तुलनीय।—फेरम, आयोड, लाइकोपो—वार्जि, स्पिञ्जि, थाइरायडिन (ऐसा मालूम होना कि चक्षुगोलक बाहर निकल पड़ेगा)।

शक्ति।—मूल अर्क स्थूलतर मात्रामें।

इलेक्ट्रिसिटस ।

(ELECTRICITAS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी चीनीमें वायुमण्डलका विद्युत्-प्रवाह सञ्चालनकर विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अन्धड़ पानी और व्रजपात होनेकी सम्भावना होनेपर डर लगता हैं, अङ्ग-प्रत्यङ्ग भारी मालूम होते हैं, उद्वेग, स्नायविक कम्पन, अस्थिरता, कलेजा धड़कना, कलेजा काँपना वगैरह लक्षणोंमें उपयोगी है ।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—मार्फि-ऐन्सि, यह माक्यूरियसका दोष नष्ट करता है ।

तुलनीय ।—गेलवेनिसमम, मैगनेरिसमम ; फास्फोरस (अंधड़-पानी होनेकी सम्भावना होनेपर सभी-लक्षणोंका बढ़ना) ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

एपिजिया रेपेन्स ।

(EPIGEA REPENS)

दूसरा नाम ।—ग्राउण्ड लारेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस फूलके वृक्षके ताजे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मूत्रकृच्छ्रता, पथरी इत्यादिमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—थकावटकी वजहसे सर दर्दके अलावा एपिजियाकी प्रधान क्रिया मूत्रयन्त्रके ऊपर पैदा हो जाया करती है । मूत्राशय प्रदाह, मूत्रकृच्छ्रता, पेशाबके बाद यंत्रणादायक संकोचनकी वजहसे

परिश्रम करनेपर, दूकानमें चीज आदि खरीदनेके समय घूमनेपर या शय्यासे उठकर बैठनेपर दर्द बढ़ जाता है और अच्छी तरह नींद आनेपर आराम हो जाता है।

इसके लक्षण कोना कोनी भावसे दाहिनी ओरसे बाईं ओर फैलते हैं। ऊर्द्धाङ्गके दाहिने पार्श्वसे अथवा निम्नाङ्गके बाएं पार्श्वमें लक्षण आदि पैदा हुआ करते हैं (ऐम्ब्रा, ब्रोम, मिडोरिन, फास, ऐ-सल्फ ; बाएं पार्श्वमें और निचले अङ्गके दाहिने पार्श्वमें = ऐगार, ऐग्नि-टार्ट, स्टैन)।

इसके द्वारा बहुत हृत्स्पन्दन हुआ करता है ; कलेजा धड़कनेके समय रोगिनीको बहुत कमजोरी मालूम होती है और वह बराबर यही समझती है, कि इसी कलेजेकी धड़कनेके कारण उसकी मृत्यु होगी।—(डा० क्लार्क)।

शक्ति।— डा० क्लार्क कहते हैं—इसका ३ रा दशमिक क्रम ही साधारणतः व्यवहारमें लाया जाता है।

एक्विसिटम हायमेल।
(EQUISETUM HYEMALE)

दूसरा नाम।—हार्स टेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मूत्रस्थलीका प्रदाह ; शोथ ; अनजानमें पेशाब होना ; पक्षाघात ; प्रमेह ; पथरी ; रक्त मिला पेशाब ; पेशाब रुकना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इपिजियाकी तरह एक्विसिटमकी अधिकांश क्रिया मूत्र-यंत्रपर प्रकट हुआ करती है। [१] क्या दिन, क्या रात, सभी समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (अभ्यास दोषके अलावा दूसरा कोई कारण प्रत्यक्ष न होनेपर) ; बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी की तरह पेशाब होता है ; [२] इस ढङ्गका दर्द मानो मसाना फूल गया है—पेशाब हो जानेपर भी नहीं घटता। [३] पेशाब रुकना और मूत्रकृच्छ्रता,—विशेषकर स्त्रियोंको गर्भावस्थामें और प्रसवके बाद। [४] बार बार दुर्दमनीय पेशाब और पेशाबके

एपिलोबियम-पेलस्टर।

(EPILOBEUM PALUSTRE)

दूसरा नाम।—एपिलोबियम-लाइनियर ; विलो-हार्ब।

उपयोगिता और आभास।—अन्त्रशूल और श्लेष्मा मिले मलके लक्षणवाले पुराने उदरामय रोगमें यह मर्क्युरियसके साथ तुलनीय है। ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ निगलनेमें तकलीफ, मुंहसे लार बहना, गलेका जखम, ज्वर वगैरह लक्षणोंको यह एक विशेष उपकारक दवा मानी जाती है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

एपिफिगस वर्जिनियाना।

(EPIPHEGUS VERGINIANA)

दूसरा नाम।—कैन्सर रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल होनेके बाद इस लतासे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार ; कैन्सर या कर्कट रोग ; प्रमेह ; सर दर्द ; हृद्‌कम्पन ; बहुत ज्यादा लारका स्राव।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक अवसाद (Neurasthenia) की वजहसे सर दर्दमें इससे बहुत फायदा हुआ करता है। मानसिक या शारीरिक किसी तरहका परिश्रम करनेपर सर दर्द बढ़ जाता है, या सर दर्द पैदा हो जाता है। सर दर्दके प्रकोपके समय मुंहमें गोंदकी तरह लार संचित होती है और रोगीको बार बार थूकनेकी इच्छा होती है। दाहिनी कनपटीमें अधिक दर्द होता है ; बाहरसे भीतरकी ओर पीसनेकी तरह दर्द ; दर्द एका-एक पैदा होता है। सर दर्दके समय माथेकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको यह दर्द ज्यादा हुआ करता है। घरके बाहर

वक्षस्थल।—बाएँ स्तन वृन्तके कुछ ऊपर और बाएं, तेज दर्द मालूम होता है। हृदयके स्थानपर तीव्र दर्द, सांस लेनेके समय दर्द बढ़ जाता है।

पीठ और प्रत्यङ्ग आदि।—कमरमें दर्द, खासकर बैठनेके समय; चित्त होकर सोने या चलनेके समय आराम मालूम होता है। नींद खुलनेपर बाएं जानुके पीछेकी ओर तेज दर्द मालूम होता है और कुछ देरतक चलते रहनेपर यह दर्द घट जाता है। सामान्य परिश्रमसे घुटने क्षीण या बेकार सुन्न से हो पड़ते हैं।

वृद्धि।—दबाने या छूनेपर, बैठने और परिश्रमसे।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—एपिस, कैनाबिस, फेरम-फास, पल्स, स्लिला, डिजि, डालका, कास्टि. इसमें कैन्थरिसकी अपेक्षा श्लेष्माकी तरह पदार्थ अधिक निकलता है।

शक्ति।—२ रे दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रम तक।

इरेक्थाइस्टिस।

(ERECHTHISTES)

दूसरा नाम।—फायर वीड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये हुए समूचे उद्भिदसे अरिष्टकी आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—रक्त और रक्त संचालन यंत्रपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। नाकसे चमकीले लाल रक्तका स्राव, शरीरके किसी भी स्थान, विशेषकर फेफड़ेसे रक्तस्राव, चेहरेमें उत्तापकी झलक, अतिरजः, थोड़ा पेशाब और हाथ पैरोंमें शोथ वगैरह लक्षणोंमें विशेष लाभदायक दवा है।

डा० हेलको सूजाक और अण्ड-प्रदाहमें इससे विशेष लाभ दिखाई दिया है।

त्वचापर भी इसकी क्रिया होती है। छालेकी तरह उद्भेदके लक्षणमें इसका बहुत फायदा दिखाई देता है।

बाद बहुत तकलीफ। [५] बार बार पेशाबके वेगके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें निर्मल स्वच्छ पानीकी तरह पेशाब निकलता है, परन्तु उससे भी तकलीफ नहीं घटती। [६] पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें तेज जलन और काटनेकी तरह दर्द ; [७] वृद्ध मनुष्योंका पक्षाघात वगैरह एकिसिटमके उत्कृष्ट निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें दर्द—आँखके ऊपरी अंशमें या अक्षिगह्वरकी जड़में तेज दर्द। चेहरा गर्म हो उठता है। (पर लाल नहीं होता); जगह बदलने वाला शूलकी चोटकी तरह दर्द ; माथेकी समूची त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है और ललाटकी त्वचाको हमेशा संकुचित करनेकी इच्छा होती है। कनपटीमें दर्द, भोजनके बाद घटना (इग्नेस देखो)।

मूत्रयंत्र।—मूत्रस्थलीमें बहुत दर्द—मानो बहुत फूल गयी है—पेशाब हो जानेपर भी यह भाव घट नहीं जाता। बार बार दुर्दमनीय पेशाबका वेग,—पेशाबके बाद भयंकर यंत्रणा (वार्बा, सार्सा, थूजा)। लगातार पेशाब का वेग होता है और प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें निर्मल पानीकी तरह पेशाब निकलता है, पर उससे भी तकलीफ नहीं घटती (प्रतिबार कई बूंद पेशाब होता है=एपिस, कैन्थ, कैप्स, डिजि, रियुटा, स्टेफाई)। पेशाबके समय तेज जलन जैसी (कैनाब, कैप्स, लेके, नेट्र-कार्ब) और छेदनेकी तरह यन्त्रणा (कैन्थ, कोना, डिजि, ऐ-फास)। दिन और रात सभी समय अनजान में बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पेशाब होता है (जहाँ बुरे अभ्यासके सिवा और कोई कारण नहीं मालूम होता=कास्टि, नेट्र-म्यू, पल्स, रास, सल्फ)। वृद्धाओंकी मूत्रस्थलीका पक्षाघात (आर्स, साइक्यू, डेलका, हायो, लेके, लोरो, फास)। मूत्रस्थलीके मुंहके कुछ पीछे ऐसा मालूम होना मानो सुई बेधी जा रही है। रातमें पेशाब करनेके लिये बार बार शय्यासे उठना पड़ता है (ऐ-फास, स्किला)। मूत्रनालीके मुंहपर सुई बेधनेकी तरह दर्द और इस दर्दके साथ पेशाबका प्रबल वेग ; छूने या दबानेपर दर्द बढ़ जाता है। पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा मिला रहता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—तीसरे पहर प्रबल लिङ्गोद्रेक होता है, अण्डकोष और कोषरज्जुमें बहुत दर्द होता है।—विशेषकर बायें पार्श्वमें।

इरिजिरन कैनाडेन्सि ।

(ERIGERON CANADENSE)

दूसरा नाम ।—क्लिरेन ; हार्स-वीड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—निम्न लिखित रोगोंमें लाभदायक है:—चोटकी वजहसे काला दाग पड़ना ; खाँसी और पेशाबमें तकलीफ ; प्रमेह ; अण्डकोषका प्रदाह ; रक्त-स्राव ; अर्श ; शुक्रक्षरण ; जखम ; गर्भावस्था में रक्त स्राव इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरके प्राय: सभी अंगोंमें खूनकी अधिकता और प्राय: सभी द्वारों से शोणित स्राव—यह इरिजिरनका प्रधान क्रियाफल है। मूत्रस्थलीसे लगातार खून बहना, मूत्रकृच्छ्रताके साथ जरायु से खूनका स्राव ; बाएँ पुट्ठेमें दर्द, पुराना प्रमेह और जलन करनेवाला पेशाब, बार बार बूंद बूंद पेशाब होना और भयानक तकलीफ देनेवाले आमरक्त रोगोंमें यह मंत्रकी तरह काम करता है। डा० मैसि कहते हैं कि "मलके साथ जितना ही अधिक खून मिला रहेगा और मूत्रयंत्रमें जितनी ही ज्यादा तकलीफ मौजूद रहेगी, इरिजिरन उतना ही ज्यादा फायदा करेगा" आर्निका और कैलेण्डियुलाकी तरह "इरिजिरन" एक चोटका जखम आराम करने वाली और भी दवा है।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत सुस्ती या विमर्ष भाव ।

मस्तक ।—माथेमें खूनकी अधिकताकी वजहसे चेहरा लाल हो जाता है और नाकसे चमकीला लाल रङ्गका खून निकला करता है (मिलिलोट) और कुछ थोड़ा बोखार भी रहता है। ललाटमें बहुत तकलीफ देनेवाला सर दर्द और आँखमें जलन रहती है।

गलेके भीतर ।—दो पहरके पहलेके सब समय नासारन्ध्रमें श्लेष्मा संचित रहता है, तालुमूलमें रुखड़ापन मालूम होता है और ऐसा मालूम

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सेनिपियों, इरिजिरन, हैमामेलिस, मिलिफोलियम, कैल्क, कोन्थरिस, पल्स, क्लिमेटिस ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न शक्ति ।

अर्गोटिनम ।

(ERGOTINUM)

दूसरा नाम ।—अर्गोटिना, सिकेलि कर्णुटमका एक तरहका क्षार है ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—यह भी सिकेलिकी तरह जरायु और फेफड़ेका स्राव रोकनेकी एक आवश्यक दवा है । पर सिकेलिका लक्षण जहां मौजूद हो वहां सिकेलिका ही प्रयोग करना चाहिये, सिकेलिसे जब फायदा न हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये ।

इसके अलावा तेजीसे बढ़नेवाली शिराओंकी भंगुरता, खूनका दबाव बढ़ना, शोथ, सड़नेवाले जखम, मलद्वारकी क्रिया-लोपकी वजहसे वेग रोकनेकी सामर्थ्य न रहना (फास्फोरस, ऐलोज) वगैरह लक्षणोंमें भी इससे बहुत लाभ होता है ।

शक्ति ।—निम्न शक्ति ।

रहनेपर स्राव होना बढ़ता है। कभी कभी ऋतुके बदले नाकसे खून निकला करता है—विकल्प रजः (Vicarious Menses—ब्राई)।

खांसी।—क्षय कासकी पहली अवस्थामें खून मिला बलगम निकलता है।

वृद्धि।—विश्रामसे, थोड़ा भी शरीर हिलानेपर, बर्साती हवामें और बाएं पार्श्वमें।

सम्बन्ध।—सदृश।—इपिक, ऐकालिफा, टेरिबि, कैन्थ, ऐकै, (प्रसवके बादका स्राव फिरसे पैदा हो जाना); आर्नि, हैमा इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ शततमिक क्रम।

इरियोडिक्टियोन केलिफार्निकम।

(ERIODICTYON CALIFORNICUM)

दूसरा नाम।—यर्बा सैण्टा (Yerba santa)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा ; श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दी ; बहुव्यापक सर्दी ; यक्ष्मा इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—हाँफनी-खाँसी वगैरह वायुनलीके रोगमें यह विशेष उपयोगी है। वायुनाली भुजगत यक्ष्मा-रोग (Bronchial-Phthisis) इसके साथ ही दुबलापन और रातमें पसीना ; दमा रोग,—बहुत श्लेष्मा निकलनेपर घटना और बहुव्यापक सर्दी (Influenza) या खाँसी वगैरह रोगमें इसका फायदा प्रमाणित हुआ है।

लक्षणावली।

मस्तक।—रोगीको सरमें चक्कर आना और ऐसा मालूम होना मानो वह मतवाला हो गया है। माथेमें सब जगह भीतरसे बाहरकी ओर पीसनेकी तरह अनुभव होना—माथेके पिछले भागमें दर्द अधिक मालूम होता है। माथेके पिछले भागमें और आँखके ऊपर बहुत भारकी तरह दर्द। सरके पिछले

होता है मानो अन्ननालीके ऊपरी भागमें कुछ अटका हुआ है और उसीको हटानेके लिये बार बार घूंट लेनेकी इच्छा होती है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—बहुत जी मिचलाता है, पेटमें जलन होती है और चमकीले लाल रङ्गके खूनकी कै हुआ करती है। खाली डकार। ऊपरी पेटमें प्रत्येक कई मिनिटोंका अन्तर देकर तेज कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है। बार बार नाभी-प्रदेशमें थोड़ा दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार फट गया है। उदरकी पेशीमें वायुसे पैदा हुआ दर्द। एकाएक तलपेटमें दर्द होकर थसथसा पाखाना होता है।

मलान्त्र और मल।—मल थोड़ा और रक्त-मिला, पेटमें बहुत ऐंठन या मरोड़ होती है ऐसा दर्द होता है मानो आँतें मरोड़ खा रही हैं तथा तलपेट और मलान्त्रमें बहुत जलन होकर रक्तके साथ कड़ा जमा हुआ मल मिलकर निकलता है, मलान्त्रसे खूनका स्राव, खून गर्म और लाल रंग का। खूनी बवासीर—खूनके साथ कड़ा मल निकलता है, मलद्वारके चारों ओर जलन होती है और ऐसा मालूम होता मानो मलद्वार फट गया है।

पेशाब।—पेशाब करनेमें तकलीफ होती है; मूत्र-रोध। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय मूत्र-कृच्छ्र,—बार बार पेशाबका वेग; पेशाब करनेके समय बच्चा रोया करता है (लाई; पेशाब करने बाद रोता है=सार्सा; पेशाब बहुत ज्यादा और उसमें झालदार गन्ध)। स्त्रियोंकी योनिका बाहरी भाग प्रदाह-भरा और जलन मिला हो जाया करता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव हुआ करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुसे खूनका स्राव और मलान्त्र तथा मूत्राशयके भीतर भयानक यंत्रणा, गर्भ-स्रावके बाद मूत्र-कृच्छ्र और इसके साथ ही कभी कभी जरायु-भ्रंश रोग भी मौजूद रहता है। झोंक झोंकसे खून निकला करता है। प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर स्राव बढ़ जाता है; रोगिनीकी देह रक्त शून्य और उजली तथा रोगिनी कमजोर हो पड़ती है। प्रदरका स्राव बहुत होता है; रह रहकर दर्द पैदा हो जाता है और मूत्राशय और मलान्त्रमें दर्द और तकलीफ हुआ करती है। प्रसवके बादका स्राव,—थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर खून मिला स्राव आराम हो जाता है। स्थिर

इरोडियम ।

(ERODIUM)

दूसरा नाम ।—इरोडियम साइकोटेरियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे संग्रह किये हुए उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—रूसके जनसाधारण इसे एक रक्तशोधक औषधिके रूपमें व्यवहार करते हैं । पर जरायुके ऊपर ही इसकी क्रिया विशेष दिखाई देती है । सिकेलि और आर्गोटिनमकी तरह इसकी भी बहुत ज्यादा ऋतुस्राव रोकनेकी शक्ति है । जरायुका पोलिपस अर्बुद भी इससे आराम होता देखा गया है (हाइड्रेस्टिस) ।

शक्ति ।—मूल अर्क, निम्न-शक्ति और क्वाथ ।

इरिञ्जियम एक्वेटिकम ।

(ERYNGIUM AQUATICUM)

दूसरा नाम ।—बटन स्नेक-रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़ी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हट जाना; आंखोंका प्रदाह; कब्जियत; खाँसी; अतिसार; शोथ; प्रमेह; अर्श; श्वेत-प्रदर; शुक्र-क्षरण; जख्म; मूत्र-पथरी का दर्द ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरकी सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंपर इसकी क्रिया है । इसके द्वारा आँख, कान, नाक, मुख-विवर, अन्त्राशय, मूत्र-नाली और स्त्री-योनिके भीतरकी झिल्लीकी उत्तेजनाकी वजहसे इन सभी द्वारोंसे गाढ़े पीले रङ्गके श्लेष्माका स्राव होता है और [illegible] तथा अन्त्राशयमें खूनका

भागमें जलन ; भार ऐसा मालूम होना मानो पिछला माथा धक्का देकर बाहर निकल आना चाहता है।

कान।—बीच बीचमें दाहिने कानमें तेज दर्द या एकाएक दाहिनी ओरसे बाईं ओर माथा घुमानेपर दर्द।

नाक।—बार बार छींक (सिक्के)। सर्दी,—जो श्लेष्मा निकलता है वह हरा और पीला मिला रहता है, जिह्वा-मूलकी बगलवाले दोनों गह्वर (Fauces) और कण्ठमें जलन मालूम होती है।

पाकस्थली।—बहुत भूख और सभी पदार्थोंसे रुचि। भयानक मिचली—दौड़नेपर बढ़ जाती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषमें बहुत दर्द और खींचन मालूम होना,—विशेषकर बाएं अण्डकोषमें ; किसी तरहका दबाव सहन नहीं होता ; रोगी हिलना नहीं चाहता कि कहीं दर्द न हो ; किसी तरहकी कोमल चीज पर रखनेसे आराम मिलता है।

श्वास-यंत्र।—गला सांय सांय करता है (बेल, काष्टि, फास)। दमा—इसके साथ ही नाकसे पतली सर्दी निकलती है और वायुनलीके भीतर बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा इकट्ठा हो जाता है। यह जमा हुआ श्लेष्मा निकलनेपर दमामें आराम मिलता है। दाहिने फेफड़ेमें थोड़ा थोड़ा दर्द और गल कोषमें जलन मालूम होना।

सम्बन्ध—सदृश।—काष्टि, ड्रोसेरा, ऐरेलिया-रेसि, सल्फि, पिक्र-लिक, बालसम-पेरु, लाइकोपस, स्टिक्टि, फास, स्टेन।

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम और द्वितीय दशमिक क्रम।



Inflammation)—लसदार पीव भरा श्लेष्मा निकलकर पलकें सट जाती हैं और योजक त्वचा मांसांकुर-भरी और रुखड़ी मालम होती है (आर्जेण्ट-नाई, ऐकों, रास, मार्क-कोर, पल्स, ह्विप,)। पेशियां सब अकड़ी मालूम होती हैं और आंख हिलानेसे दर्द मालूम हुआ करता है।

कान।—छेदनेकी तरह दर्द,—मानो कोई कानके भीतर खींचकर फाड़ रहा है। कर्णपथ्यान्नालीका (Eustachian Tube) प्रदाह,—बाएं कानके भीतर और बाहर सूजन, स्पर्श सहन न होना, लगातार दर्द बना रहना और उसमेंसे सामान्य कारणसे रक्तस्राव होना; रोगी कानसे गाढ़ा सफेद रंगका, खून मिला बदबूदार पीवका स्राव होता है (ऐसाफिट, बोर, बोवि, कैल्के, कास्टि, सिस्टस-कैन, केलि-कार्ब, हेके, हिप, मार्क, ऐसिड-नाई पेट्रोल, पल्स, साइलि) बाएं कानमें लगातार सों सों भों भों और कभी कभी कट कट शब्द होता हैं (बैराई, मस्कस, ऐसिड-नाई)।

नाक।—नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा निकला करता है (कोल्के, क्रियो, लाई, नेट्र-कार्ब, फास, पल्स, सिपि, स्टैन, थूजा)।

पाकस्थली।—पाकाशयमें खालीपन मा म होना—मानो उसमें कुछ भी नहीं है (कैमो, इग्ने, इपिक, कक्यु, मेग-कार्ब, नेट्र-म्यूर, पेट्रोल रयुटा, टियुक्रि) अथच पेटमें भार और ऐसा मालूम होता है कि नीचेकी ओर ठेल रहा है। पाकाशयके ऊपर चोट लगनेकी वजहसे ऊपरी पेटमें जलन होती है और थक्केके साथ गाढ़ा खून मिला चमकीले लाल रङ्गका खून निकला करता है (आर्नि, इरिजिरन, चायना, फेरम; लिडम)।

मलान्त्र और मल।—छोटी आंतोंमें शूलकी तरह या ऐंठनकी भांति दर्द। बच्चोंके आमातिसारमें (पोडो, मार्क-सोल, ऐलो)। कब्जियत,—सूखा कड़ा और सीसेके रंगका मल, पाखाना फिरनेके समय बहुत कांखना और ऐसा मालूम होता है मानो मलद्वार फट गया (ऐसिड-नाई)।

पेशाब।—बार बार पेशाबका वेग और पेशाबके समय लिङ्गमुण्डके कुछ पीछे मूत्रनालीके भीतर जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द हुआ करता है (कैन्थ, कैनाब, कैप्स)। प्रत्येक पांच मिनटके अन्तरसे बाध्य होकर पेशाब करना पड़ता है; लगातार बूंद बूंद पेशाब हुआ करता है (पेट्रोल) और

स्राव हुआ करता है। आर्निका, कैलेण्डुला, हैमामिलिस, इरिजिरन वगैरह की तरह यह भी एक चोटकी वजहसे पैदा हुए जखमको आराम करनेवाली दवा है। ऐसे अनुभवके साथ सरमें दर्द कि माथा मानो फैल रहा है किन्तु पेशाबके यन्त्रोंकी बीमारीमें ही सबसे अधिक फायदा दिखाई दिया करता है, स्नायविक उत्तेजनाके साथ साथ पेशाब रुकना, मूत्र-पथरीकी वजहसे शूलका दर्द, सामान्य कारणसे ही वीर्य-पात हो जाना या मूत्राशय मुखगामी (Prostate) ग्रन्थिसे रस स्राव वगैरह रोगोंमें इससे विशेष लाभ होता है, बहुव्यापक सर्दी रोगमें गले और स्वरनालीके मुंहपर जलन, वायुनलीमें बराबर सुरसुराहट होकर खांसी आया करती है और गाढ़ा श्लेष्मा निकला करता है— इस लक्षणमें भी यह लाभदायक है। शरीरके बायें पार्श्वके साथ इसकी बहुत अधिक घनिष्टता प्रकट हुआ करती है और इसके लक्षण शरीरके एक अंशसे दूसरे अंशमें फैल जाया करते हैं।

लक्षणावली।

मन और मस्तक।—किसी विषयमें भी मन नहीं लगा सकता, (इथ्यू, ऐइलेन-ग्लेन, ऐवेना-सैट, लैक-कैन, ऐसिड-फास, सार्सा, जेरोफिल)। मन लगानेकी चेष्टा करनेपर सरमें भार पैदा हो जाता है। ऐसा मालूम होना कि भौं धीरे धीरे फैल रही है—माथा झुकानेपर यह अनुभूति बढ़ जाती है। बाईं आँखके ऊपर तेज दर्द, माथा झुका रखनेपर यह अनुभूति बढ़ जाती है। बाईं आँखके ऊपर तीव्र वेदना, माथा झुकानेपर यह दर्द आँख छोड़कर गर्दन और कन्धेकी पेशीमें चला जाता है और पृष्ठ-फलकके नीचे मालूम होने लगता है। मूर्द्धादेश और मुखमण्डलके बाँयी ओरकी आँखसे दाँत तक वेधने जैसा तेज दर्द मालूम होता है। माथेकी त्वचामें बहुत दर्द,—केश झाड़नेपर बहुत दर्द मालूम होता है (ऐल्यू, ऐम्ब्रा, ऐसैर, बेराई, बोवि, कैप्स, कार्बो-वे, चायना, लैके, मार्क, नाइट्रा, मेलिन, साइलिसिया, सल्फि, थूजा, केल्के, कास्टि, फाइटो)।

आँख।—आँखोंमें जलन, रोशनी सहन न होना; आँखकी बाहरी त्वचा का प्रदाह (Sclerotitis)—इससे पानीकी तरह या पीबकी तरह श्लेष्मा निकलता है (कैल्को-सैट, आर्स, मार्क-प्रोटो-आयोड, अरम-म्यू, थूजा, नक्स-मस; साइलि)। बाईं आँखका पीब पैदा करनेवाला प्रदाह (Purulent

इरिञ्जियम मेरिटिमम ।

(ERYNGIUM MARITIMUM)

दूसरा नाम ।—सी-होलि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलके साथ समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास । आंख, पुट्ठा, कण्ठदेश और गलेके पिछले भागमें दर्द, पाकाशय-प्रदेशमें खाली मालूम होना, खांसी, ज्वर, त्वचापर छालेकी तरह उद्भेद, प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है। स्नायविक दुर्बलता और पुं-जननेन्द्रियकी दुर्बलतामें यह कोनायमसे तुलनीय है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

एरिथ्रिनस ।

(ERYTHRINUS)

दूसरा नाम ।—रेड-मूलेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दक्षिण अमेरिकाकी एक तरहकी मछलीसे अरिष्ट के आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—उपदंश रोगमें लाल रङ्गके उद्भेदके लक्षणमें लाभदायक है। अरम म्यूरियेटिकमका यह अनुपूरक है।

शक्ति ।—निम्न शक्ति ।

मूत्रनालीके भीतर ऐसी जलन होती है मानो जला जाता है (ऐको, कैनाबिइन, कैन्थ, नक्स-वोम, टेरिब)। मूत्र-पथरीकी वजहसे शूलका दर्द (Renal-colic = ओसिमम-कैन, पैरिइरा, वार्बा, डायस्को, लाइको, सार्सा)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—अश्लील सपने देखना और वीर्यपातके साथ रमणेच्छाकी प्रबलता। मूत्राधारके मुखशायिकसे सामान्य कारणसे ही रस बहना (ऐग्नस, ऐल्यु, इस्कु, ऐनाक, कोल्चि, हिप, नेट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि, सल्फ, थूजा)। शुक्रमेह या स्वप्नदोष—अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय परितृप्ति (सिङ्को, नक्स, डिजिटेलिन, ऐसिड-फास, स्टैफाई, सल्फ) या बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवनका दुष्परिणाम, रातमें लिङ्गमें कड़ापन होनेके साथ शुक्रक्षय होनेके बाद आलस्य और सुस्ती मालूम होना। अण्डकोषमें चोटकी वजहसे (या किसी दूसरे कारणसे) लिङ्गमें कड़ापन होनेपर दिनरात शुक्रक्षरण हुआ करता है और आलस्य मालूम होता है (बैराई, कैलेड, आर्टि, चायना, कोना, क्लिमेट, कैलि-कार्ब, लाई, फास, ऐ-फास, सेलिन, सिपि, स्टैफाई सल्फ)। दर्दभरा लिङ्गका कड़ापन इसके साथही नया या पुराना प्रमेह।

श्वासयंत्र ।—बहुव्यापक सर्दीके बाद वायुनलीमें बार बार सुरसुरी होकर खांसी आती है और गाढ़ा पीले रंगका श्लेष्मा-भरा कफ निकलता है और गलेमें तथा स्वरनालीमें लगातार जलन और कुटकुटी होती है (डा० हेल)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—मनः संयोगमें समर्थ न रहना (इग्थूजा); सामान्य कारणसे ही प्रोस्टेट ग्रन्थिसे रस बहना (कोनायम); स्वप्नदोषमें (चायना, जेल्स), मूत्रयंत्रमें (कैन्थ, कैनाबिस); कब्जियत (नाइट्रिक, ऐसिड); सर्दीमें (जेल्स)।

सदृश ।—इग्थूजा ; ऐवेना-सैट, कोना, जेल्सि, चायना ; ऐसिड-फास ; कैन्थ, कैनाब-सैट, पैरिरा ; ओसिमम, डायस्को, ऐसिड-नाई, स्टिग्मा-पाल ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ ठा दशमिक क्रम ।

इथिलम नाइट्रिकम ।
(ETHYLUM NITRICUM)

दूसरा नाम ।—नाईट्रेट-ईथर ।

उपयोगिता और आभास ।—यह भी एक बेहोश करनेवाली दवा है । हृत्पिण्डका बढ़ना और सरमें चक्कर आना लक्षणमें इसका व्यवहार होता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुकेलिप्टस ग्लोब्यूलस ।
(EUCALYPTUS GLOBULUS)

दूसरा नाम ।—फीवर ट्री ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—धमनीका अर्बुद ; दमा ; मूत्राधार की बीमारियाँ ; श्वासनालीका प्रदाह ; अतिसार ; आमाशय ; अजीर्ण ; पेशाबमें तकलीफ ; नासूर ; प्रमेह ; वात ; प्लीहा ; उपदंश ; सान्निपातिक ज्वर ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत लार बहना ; बहुत स्फूर्तिमय चित्त, इधर उधर घूमनेकी बहुत इच्छा ; बहुत उल्लास और ताकत मालूम होना ; रक्तहीन मनुष्योंके माथेमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे पैदा हुए सर दर्दको, युकैलिप्टस कम कर देता है और नींद लाता है । स्त्री-मूत्रनालीका शिरा-मय अर्बुद और बहुत ज्यादा परिमाणमें मूत्रचार निकलनेके साथ पेशाब अधिक होना—इत्यादि कई युकैलिप्टसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत प्रसन्न चित्त ; शरीरमें बहुत फुर्ती और ताकत मालूम होना ; हमेशा इधर उधर घूमते रहनेकी इच्छा ; शारीरिक व्यायाम करनेका बहुत आग्रह (रास देखो) ।

एसिरिनम ।

(ESERINUM)

दूसरा नाम ।—एसिरिन ; फाइसोष्टिग्मिन । फाइसोष्टिग्माका सार विशेष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—चक्षुचिकित्सकगण ग्लोकोमा रोगमें आँखकी पुतलीके संकोचनके लिये इसको स्थानिक व्यवस्था किया करते हैं। आँखकी पुतलीका सङ्कोचन, पलकोंका पत्ता हिलना, आँखके गोलेमें जखमकी तरह मालूम होना, किसी तरह आँखसे काम लेनेपर अस्पष्ट दृष्टि, आँखके चारों ओर और माथेमें दर्द, ताण्डव, हृत्पिण्डकी कमजोरी वगैरह होमियोपैथीके मतसे इसका निर्देशक लक्षण है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—फाइसोष्टिग्मा ; जेल्स, ऐट्रोपिस ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इथिरम ।

(ETHYRUM)

दूसरा नाम ।—इथिल आक्साइड, इथिलिक ईथर ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक वेहोश करनेवाली दवा है। मिचली, वमन, ब्राङ्काइटिस, खाँसी, प्रलाप, हिचकी, सन्धि-आवरणका प्रदाह वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इथिलम नाइट्रिकम ।

(ETHYLUM NITRICUM)

दूसरा नाम ।—नाइट्रेट-ईथर।

उपयोगिता और आभास ।—यह भी एक बेहोश करनेवाली दवा है। हृत्पिण्डका बढ़ना और सरमें चक्कर आना लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

इयुकेलिप्टस ग्लोब्यूलस ।

(EUCALYPTUS GLOBULUS)

दूसरा नाम ।—फीवर ट्री।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—धमनीका अर्बुद; दमा; मूत्राधार की बीमारियाँ; श्वासनालीका प्रदाह; अतिसार; आमाशय; अजीर्ण; पेशाबमें तकलीफ; नासूर; प्रमेह; वात; प्लीहा; उपदंश; सान्निपातिक ज्वर; कृमि इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत लार बहना; बहुत स्फूर्तिमय चित्त, इधर उधर घूमनेकी बहुत इच्छा; बहुत उल्लास और ताकत मालूम होना; रक्तहीन मनुष्योंके माथेमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे पैदा हुए सर दर्दको, युकेलिप्टस कम कर देता है और नींद लाता है। स्त्री-मूत्रनालीका शिरा-मय अर्बुद और बहुत ज्यादा परिमाणमें मूत्रक्षार निकलनेके साथ पेशाब अधिक होना—इत्यादि कई युकेलिप्टसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत प्रसन्न चित्त; शरीरमें बहुत फुर्ती और ताकत मालूम होना; हमेशा इधर उधर घूमते रहनेकी इच्छा; शारीरिक व्यायाम करनेका बहुत आग्रह (रास देखो)।

एसिरिनम ।

(ESERINUM)

दूसरा नाम ।—एसिरिन ; फाइसोस्टिग्मिन । फाइसोस्टिग्माका क्षार विशेष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—चक्षुचिकित्सकगण ग्लोकोमा रोगमें आँखकी पुतलीके संकोचनके लिये इसकी स्थानिक व्यवस्था किया करते हैं। आँखकी पुतलीका सङ्कोचन, पलकोंका पत्ता हिलना, आँखके गोलेमें जखमकी तरह मालूम होना, किसी तरह आँखसे काम लेनेपर अस्पष्ट दृष्टि, आँखके चारों ओर और माथेमें दर्द, ताण्डव, हृत्पिण्डकी कमजोरी वगैरह होमियोपैथीके मतसे इसका निर्देशक लक्षण है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—फाइसोस्टिग्मा ; जेल्स, ऐट्रोपिन ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इथिरम ।

(ETHYRUM)

दूसरा नाम ।—इथिल आक्साइड, इथिलिक ईथर ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक वेहोश करनेवाली दवा है। मिचली, वमन, ब्राङ्काइटिस, खाँसी, प्रलाप, हिचकी, सन्धि-आवरणका प्रदाह वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इथिलम नाइट्रिकम ।

(ETHYLUM NITRICUM)

दूसरा नाम ।—नाइट्रेट-ईथर ।

उपयोगिता और आभास ।—यह भी एक बेहोश करनेवाली दवा है । हृत्पिण्डका बढ़ना और सरमें चक्कर आना लक्षणमें इसका व्यवहार होता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुकेलिप्टस ग्लोब्यूलस ।

(EUCALYPTUS GLOBULUS)

दूसरा नाम ।—फीवर ट्री ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—धमनीका अर्बुद ; दमा ; मूत्राधार की बीमारियाँ ; श्वासनालीका प्रदाह ; अतिसार ; आमाशय ; अजीर्ण ; पेशाबमें तकलीफ ; नासूर ; प्रमेह ; वात ; प्लीहा ; उपदंश ; सान्निपातिक ज्वर ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत लार बहना ; बहुत स्फूर्तिमय चित्त, इधर उधर घूमनेकी बहुत इच्छा ; बहुत उल्लास और ताकत मालूम होना ; रक्तहीन मनुष्योंके माथेमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे पैदा हुए सर दर्दको, युकेलिप्टस कम कर देता है और नींद लाता है । स्त्री-मूत्रनालीका शिरा-मय अर्बुद और बहुत ज्यादा परिमाणमें मूत्रचार निकलनेके साथ पेशाब अधिक होना—इत्यादि कई युकेलिप्टसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत प्रसन्न चित्त ; शरीरमें बहुत फुर्ती और ताकत मालूम होना ; हमेशा इधर उधर घूमते रहनेकी इच्छा ; शारीरिक व्यायाम करनेका बहुत आग्रह (रास देखो) ।

माथा ।—जिन व्यक्तियोंमें खून कम रहता है, उनके माथेमें खून ज्यादा सञ्चय होनेकी वजहसे सर दर्द—यह दर्द घटाकर नींद लाता है। आँखोंमें जलन और करकराहट होती है। सर्दी और प्रमेहकी वजहसे आँखोंका प्रदाह ।

नाक ।—नासा-दण्डके बीचका अंश चिपक जाता है, मानो नाकसे खून जानेका यह पूर्व लक्षण है। ऐसा मालूम हो, मानो नाकका छेद रुक गया है। नयी सर्दी, पतला पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता है। पुरानी सर्दी,—बदबूदार पीबकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है (ग्रैफ, कैलि-कार्ब)।

चेहरा ।—मुखमण्डल प्रदीप्त और लाल। मुंहमें बहुत ज्यादा परमाण में लार जमा हो जाया करती है। प्यासके साथ मुंहके भीतरसे कण्ठ और अन्न-नाली तक कुछ जलन, निगलनेके समय गलेमें भरापन और दर्द मालूम होता है। मानो गलेमें बराबर श्लेष्मा जमा रहता है और थोड़ा-सा गाढ़ा सफेद फेन-भरा श्लेष्मा निकलता है।

पाकस्थली ।—भूख और रुचि बहुत ज्यादा ; बहुत अधिक प्यासके कारण रोगी बेचैन हो पड़ता है। जलन करनेवाली तेज डकार ; पाकस्थली भरी और भारी मालूम होती है,—मानो न जाने कितना खा लिया है। नाड़ी की गति थिरकती हुई, पाकाशयमें टपक (नक्स, आर्स, कर्वास, कैल्क, कैलि-कार्ब)। अग्निमान्द्य,—पाचन कार्य बहुत विलम्बसे होता है (टैराण्ट, नूफर-लूट)। बार बार डकार आती है और पेट फूला रहता है।

अन्त्राशय ।—नाभि और ऊपरी पेटमें जलन। नाभि प्रदेश और समूचे अंत्राशयमें गड़बड़ी मालूम होना ; रह रहकर दर्द होता है,—मानो उसे पतले दस्त आना चाहते हैं, (रेनान-सिलिरेट, ऐपिस, ऐङ्गस, ऐसिट-क्रूड)। संध्याके बाद भोजन करनेपर तलपेटमें तेज दर्द। पेट फूलता है।

मल ।—तलपेटमें तेज दर्द और सोकर उठनेपर पानीकी तरह पतला और पीला पाखाना होता है (ड्रय्यू, ऐगार, ऐसिड-फ्लू, आर्स, नेट्र-सल्फ, सोरिन,—सवेरे शय्यासे उठनेपर, जरा इधर उधर करनेसे ही पाखाना लग जाता है=ब्राई, लेप्टन, नेट्र-सल्फ,—शय्यासे उठते ही=लाई, सल्फ,—उठनेके पहले =ऐलो, बेल, बोवि, चायना, नूफर, सोरि, रियुमेक्स, सल्फ)। पुराना आम भरा और खून मिला उदरामय। रक्तामाशय—मलांतके भीतर उत्ताप

ालूम होना, कूथन, आम भरा दस्त और सुस्ती ; मलांतसे खूनका स्राव, ज्वर-विकार (Typhoid) में उदरामय ; मल तथा निकली हुई भाफ बहुत ही बदबूदार।

पेशाब ।—पुराना शल्क-मोचक वृक्क प्रदाह (Chronic Desquamative Nephritis) अर्थात एक प्रकारका मूत्र-ग्रन्थिका प्रदाह, नया—क्षत, भ्रम,) ; मसानेमें मांसाङ्कुर पैदा होनेका लक्षण, पीव पैदा होनेवाला सानेका प्रदाह, मसानेमें पानी अधिक जमा हो जानेकी वजहसे उसका फूलना और प्रदाह (Hydronephritis),—वगैरह मसानेकी बीमारीमें भी यह काम करता है (डा॰क्लार्क)। मूत्राशयका प्रतिश्याय या सर्दी (Catarrh of the bladder),—ऐसा मालम होता है,मानो मूत्राशयसे पेशाब निकालनेकी शक्ति गायब हो गयी है (हिपर, सार्स, कैमो)। पेशाबके समय वृथा वेग और जलन। पेशाबकी अधिकता ; पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना (लाइकास, सिपि, स्टैफ) ; बहुत ज्यादा परिमाणमें मूत्रक्षार (Urea) पैदा होना

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—मूत्रनालीका शिरामय (Vascular) अर्बुद (घूजा)। प्रदर,—स्राव जखम पैदा करनेवाला और सड़ी गन्ध भरा ; मूत्रनाली द्वारके चारों ओर जखम भरा रहना। दाहिने स्तन वृन्तके नीचे कुछ मारनेकी तरह यंत्रणाजनक अर्बुद। (फाइटो)।

श्वास-यन्त्र ।—बुड्ढे या रोग जीर्ण मनुष्योंका वायुनाली भुज-प्रदाह (Bronchitis) ; वायुनलीसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है। रोगसे दुबला, खूनसे रहित मनुष्यका,—भयंकर तकलीफ देनेवाला इसके साथ ही हृत्पिण्डकी सहानुभूतिक यंत्रणा। कफ सफेद रंगका, फेन-भरा (फास, कैलि-आयोड)।

प्रत्यङ्गादि ।—वातका दर्द,—रातमें (पल्स, सिफिलिन, म. कैलि-आयोड, कोलचि)। चलनेसे (ब्राइ, कैल्के, स्टेलारिया-मिड) या चीज उठानेपर दर्द बढ़ जाता है ; रोगवाला अङ्ग अकड़ा और क्लान्त होता है ; ऐसी अनुभूति मानो सुई बिंधी जा रही है। इसके बाद ही हुआ करता है। हाथकी कलाई (Metacarpal) और पैरकी अंगुल पोरोंकी हड्डोकी सन्धिमें, अर्थात तलहथी और पैरके पोछे तलवाकी ...

। —जिन व्यक्तियोंमें खून कम रहता है, उनके माथेमें खून ज्यादा
ो वजहसे सर दर्द—यह दर्द घटाकर नींद लाता है। आँखोंमें
करकराहट होती है। सर्दी और प्रमेहको वजहसे आँखोंका

। —नासा-दण्डके बीचका अंश चिपक जाता है, मानो नाकसे
यह पूर्व लक्षण है। ऐसा मालूम हो, मानो नाकका छेद रुक गया
ीं, पतला पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता है। पुरानी सर्दी,—बदबू-
तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है (ग्रेफ, कैलि-कार्ब)।

रा ।—मुखमण्डल प्रदीप्त और लाल। मुंहमें बहुत ज्यादा परमाण
ा हो जाया करती है। प्यासके साथ मुंहके भीतरसे कण्ठ और अन्न-
ुछ जलन, निगलनेके समय गलेमें भरापन और दर्द मालूम होता
गलेमें बराबर श्लेष्मा जमा रहता है और थोड़ा-सा गाढ़ा सफेद फेन-
निकलता है।

ास्थली ।—भूख और रुचि बहुत ज्यादा ; बहुत अधिक प्यासके
ो बेचैन हो पड़ता है। जलन करनेवाली तेज डकार ; पाकस्थली
ारी मालूम होती है,—मानो न जाने कितना खा लिया है। नाड़ी
धरकती हुई, पाकाशयमें टपक (नक्स, आर्स, कर्पास, कैल्के, कैलि-
अग्निमान्द्य,—पाचन कार्य बहुत विलम्बसे होता है (टैराण्ट, नूफर-
ार बार डकार आती है और पेट फूला रहता है।

न्त्राशय ।—नाभि और ऊपरी पेटमें जलन। नाभि प्रदेश और समूचे
गड़बड़ी मालूम होना ; रह रहकर दर्द होता है,—मानो उसे
र आना चाहते हैं (रेनान-सिलिरेट, ऐपिस, ऐड्रम, ऐग्रिट-क्रूड)।
ाद भोजन करनेपर तलपेटमें तेज दर्द। पेट फूलता है।

ल ।—तलपेटमें तेज दर्द और सोकर उठनेपर पानीकी तरह पतला
ला पाखाना होता है (ब्रायो, ऐगार, ऐसिड-फ्लू, आर्स, नेट्र-सल्फ,
—सवेरे शय्यासे उठनेपर, जरा इधर उधर करनेसे ही पाखाना लग जाता
ोफटन, नेट्र-सल्फ,—शय्यासे उठते ही = लाइ, सल्फ,—उठनेके पहले
...बोवि, चायना, नूफर, सोरि, रियुमेक्स, सल्फ)। पुराना आम
... खून मिला उदरामय। रक्तामाशय—मलांतके भीतर उत्ताप

मालूम होना, कूथन, आम भरा दस्त और सुस्ती; मलांतसे खूनका स्राव, ज्वर-विकार (Typhoid) में उदरामय ; मल तथा निकली हुई भाफ बहुत ही बदबूदार।

पेशाब।—पुराना शल्क-मोचक वृक्क प्रदाह (Chronic Desquamative Nephritis) अर्थात एक प्रकारका मूत्र-ग्रन्थिका प्रदाह, नया— वाक्स, ब्रम,); मसानेमें मांसाङ्कुर पैदा होनेका लक्षण, पीब पैदा होनेवाला मसानेका प्रदाह, मसानेमें पानी अधिक जमा हो जानेकी वजहसे उसका फूलना और प्रदाह (Hydronephritis),—वगैरह मसानेकी बीमारीमें भी यह काम करता है (डा॰ क्लार्क)। मूत्राशयका प्रतिश्याय या सर्दी (Catarrh of the bladder),—ऐसा मालूम होता है,मानो मूत्राशयसे पेशाब निकालनेकी शक्ति गायब हो गयी है (हिपर, सार्सा, कैमो)। पेशाबके समय वृथा वेग और जलन। पेशाबकी अधिकता ; पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना (लाई, रास, सिपि, स्टैफ) ; बहुत ज्यादा परिमाणमें मूत्रक्षार (Urea) पैदा होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मूत्रनालीका शिरामय (Vascular) अर्बुद (थूजा)। प्रदर,—स्राव जखम पैदा करनेवाला और सड़ी गन्ध भरा ; मूत्र-नाली द्वारके चारों ओर जखम भरा रहना। दाहिने स्तन वृन्तके नीचे छुरी मारनेकी तरह यंत्रणाजनक अर्बुद। (फाइटो)।

श्वास-यन्त्र।—बुड्ढे या रोग जीर्ण मनुष्योंका वायुनाली भुज-प्रदाह (Bronchitis) ; वायुनलीसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है। श्वासरोग,—रोगसे दुबला, खूनसे रहित मनुष्यका,—भयंकर तकलीफ देनेवाला श्वास कष्ट, इसके साथ ही हृत्पिण्डकी सहानुभूतिक यंत्रणा। कफ सफेद रंगका, गाढ़ा और फेन-भरा (फास, कैलि-आयोड)।

प्रत्यङ्गादि।—वातका दर्द,—रातमें (पल्स, सिफिलिन, मार्क-सोल, कैलि-आयोड, कोलचि)। चलनेसे (ब्राई, कैल्के, स्टेलारिया-मिड) या कोई चीज उठानेपर दर्द बढ़ जाता है ; रोगवाला अङ्ग अकड़ा और क्लान्त मालूम होता है ; ऐसी अनुभूति मानो सुई बेधी जा रही है। इसके बाद ही दर्द हुआ करता है। हाथकी कलाई (Metacarpal) और पैरकी अंगुलीके पोरोंकी हड्डीकी सन्धिमें, अर्थात तलहत्थी और पैरके पीछे तलवाकी पीठपर

गुल्मकी तरह (Nodular) अर्बुद निकल आते हैं। (हेला; कैलि-बाई, कैलि-आयोड, कैल्कि-फ्लू, साइलि)।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—बार बार आक्रमण करनेवाला दुरारोग्य मलेरिया (Malarial Fever) ज्वर; इसके साथ ही बढ़ी हुई प्लीहा फूली हुई और स्पर्श सहन नहीं होता और अन्तमें उसका ऊपरी भाग सिकुड़ा (Cirrhotic) और कड़ा हो जाता है। शीत, उत्ताप और पसीना—सभी अवस्थाओंमें सरमें चक्कर आता रहता है, माथेमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे सर दर्द, अच्छा न मालूम होना और अङ्ग-प्रत्यङ्गमें थोड़ी देरके लिये पैदा होनेवाला, फाड़ने या सूक्ष्म शलाका वेधनेकी तरह वातका दर्द मालूम होता है—रातमें वृद्धि। पसीना बहुत ज्यादा बदबूदार और कमजोर करनेवाला, [मलेरिया या पूतिवाष्पज ज्वर आदि या बहुत अधिक क्विनाइन सेवनकी वजहसे शारीरिक अस्वस्थताको दूर कर अच्छी तरह स्वास्थ्य प्राप्त करनेमें सहायता नहीं करता है]।

त्वचा ।—दादकी तरह खुजली निकलना; ग्रन्थियोंका बढ़ना; दुरारोग्य सड़नेवाला जखम आदि या शोथ (साइलि)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—तुलनीय,—ऐण्टि-क्रूड (श्लैष्मिक त्वचा); ऐण्टि-टार्ट (दमा और श्वासनालीका प्रदाह); आर्स, चायना (सविराम ज्वरमें); साइलि, (नासूर); टेरिब (मूत्र-यंत्रमें); फाइटो, हाइड्रेस, सल्फ (अर्बुदमें)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ ठी शततमिक शक्ति; ज्वर आदिमें २०० शततमिक क्रम तक व्यवहृत हुआ करता है।

इयुजिनिया-जेम्बस ।

(*EUGENIA JAMBOS*)

दूसरा नाम ।—रोज ऐपेल। (मालव देशकी बेर)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मुँहासे; सर्दी या बोखार; कब्जियत; खाँसी; अतिसार; दो देखना हिचकी; आँत उतरना; ध्वज-भङ्ग; कर्ण प्रदाह; गलेका जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—चेहरेपर मुंहासे निकलते हैं और उसके चारों ओर दर्द मालूम होता है; धूम्रपानके बाद मिचली घट जाती है; रातमें पैरके तलवेमें ऐंठन होती है; पैरकी अँगुलीकी नीचेवाली त्वचा फट जाती है। मतवालापन,—क्षणभर पहले एक चीज आनन्ददायक और चमकीली मालूम देती थी पर क्षणभर बाद ही वह सब अन्धकारमय और दुःखका आगार मालूम होने लगती है, माथेमें सब चक्कर खाया करता है। पासके मकान ऐसे मालूम होते हैं मानो उलट गये हों; दो देखना,—सभी चीजें दो दिखाई देती हैं,—और कुछ ध्यान देकर देखनेसे भ्रम दूर हो जाता है; आँखोंसे ऐसा मालूम होता है मानो आगकी लपट निकल रही है; सन्ध्या तथा रातके समय धार बाँधकर आँसू बहा करते हैं; धूपकी ओर देखनेपर आँखमें पानी भर आता है; आँख बन्द करनेपर जलन होने लगती है, उसी वजहसे रातमें नींद नहीं आती; कमर और पैरकी पोटली स्थित पेशीमें और नितम्बास्थि तथा जानु-प्रदेशमें दर्द होता है; मेरुदण्डके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ गड़ रहा है और पीछेकी ओर टेढ़ी करनेपर वह घट जाया करता है; माथेके दाहिने पार्श्वमें मानो भारी काठका टुकड़ा रखा हुआ है; जगह बदलनेवाला वातका दर्द वगैरह लक्षण सब युजिनियाके प्रधान क्रियाफल और निर्णायक हैं। पेशाबके बाद एकाएक मानसिक लक्षणोंका परिवर्तन—युजिनियाका एक और अनन्य साधारणतः लक्षण है।

लक्षणावली।

मन।—हमेशा एकान्तमें रहकर सोचनेकी इच्छा (इग्ने, वेरेट)। शराब आदि पीनेकी वजहसे मतवालापन,—बहुत आलस्य प्रकट करता है और बकता है; सभी अवस्थाओंमें उसका जी अच्छा नहीं मालूम होता,—बैठे रहनेपर सोनेकी इच्छा करता है (विस्मथ; लेमियम)। प्रसवके बाद एकाएक अद्भुत मानसिक परिवर्तन हो जाया करता है,—सभी चीजें बहुत

गुल्मकी तरह (Nodular) अर्बुद निकल आते हैं। (हेला ; कैलि-बाई, कैलि-आयोड, कैल्के-फ्लू, साइलि)।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—बार बार आक्रमण करनेवाला दुरारोग्य मलेरिया (Malarial Fever) ज्वर ; इसके साथ ही बढ़ी हुई प्लीहा फूली हुई और स्पर्श सहन नहीं होता और अन्तमें उसका ऊपरी भाग सिकुड़ा (Cirrhotic) और कड़ा हो जाता है। शीत, उत्ताप और पसीना—सभी अवस्थाओंमें सरमें चक्कर आता रहता है, माथेमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे सर दर्द, अच्छा न मालूम होना और अङ्ग-प्रत्यङ्गमें थोड़ी देरके लिये पैदा होनेवाला, फाड़ने या सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह वातका दर्द मालूम होता है—रातमें वृद्धि। पसीना बहुत ज्याद बदबूदार और कमजोर करनेवाला, [मलेरिया या पूतिवाष्पज ज्वर आदि या बहुत अधिक क्विनाइन सेवनकी वजहसे शारीरिक अस्वस्थताको दूर कर अच्छी तरह स्वास्थ्य प्राप्त करनेमें सहायता नहीं करता है]।

त्वचा ।—दादकी तरह खुजली निकलना ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; दुरारोग्य सड़नेवाला जख्म आदि या शोथ (साइलि)।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—तुलनीय,—ऐण्टि-क्रूड (श्लैष्मिक त्वचा); ऐण्टि-टार्ट (दमा और श्वासनालीका प्रदाह); आर्स, चायना (सविराम ज्वरमें); साइलि, (नासूर) ; टेरिब (मूत्र-यंत्रमें) ; फाइटो, हाइड्रेस, सल्फ (अर्बुदमें)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ ठी शततमिक शक्ति ; ज्वर आदिमें २०० शततमिक क्रम तक व्यवहृत हुआ करता है।

इयुजिनिया-जेम्बस ।

(EUGENIA JAMBOS)

दूसरा नाम ।—रोज ऐपेल । (मालव देशकी बेर)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

पाकाशय ।—धूम्रपानकी बहुत इच्छा (डैफनी ; स्टैफ, थिरिड) पाकस्थलीके द्वार देशमें अकड़नकी तरह दर्द और इसी वजहसे मिचली,—धूम्रपानसे घटती है। (धूम्रपानके कारण मिचली=कार्बो-ऐन, क्लिम, युफ्रे इग्ने, फास)। गिर पड़नेके कारण पुट्ठेकी आँतोंका उतरना (Inguinal)

पेशाब ।—गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब। प्रसवके बाद शरीरमें सिहरावन होना (प्लैट) या आँखके सामने एकाएक चमकीली रोशनी झलक उठती है और उसी रौशनीमें सब चीजें साफ दिखाई देती हैं।

पुं-जननेन्द्रिय ।—नपुंसकता, रमणके बाद वीर्यपात मृदु-भावसे हुआ करता है या बिलकुल ही नहीं होता (कैलेड,ग्रैफ; लेके, लाई)। रमणके बाद पसीना होता है (नेट्र-कार्ब) और प्यास बढ़ जाती है, (रमणके बाद उत्ताप मालूम होना=नक्स ;—क्रोधी चित्त=साइलि ; मुंह सूख जाता है=नक्स ; दाँतमें दर्द=डैफनी ; स्वप्नदोष=नेट्र-म्यूर ; अस्पष्ट दृष्टि=केलि-कार्ब ; मूत्रनालीमें यंत्रणा=कैन्थ ; सरमें चक्कर आना=बोवि ; वमन=मस्कस ; सुस्ती=ऐगार, कैल्के, कोना, केलि-कार्ब, लाई, पेट्रोल, सेलिन, सिपि)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—हरेक रातमें तलवेमें ऐंठन होती है (कैल्के, चेलिडो, काफि, फेर, हिप, पेट्रोल, प्लम्ब, सिकेलि, साइलि, स्टैफाई, सल्फ)। अंगूठेके चारों ओरकी खाल उधड़ जाती है और पककर उसमें पीब हो जाता है (मार्क)। सर्दीकी वजहसे (Catarrhal) बातका दर्द—दर्द जगह बदला करता है (पल्स, कैलि-बाई)। कमर, जङ्घाकी पोटलीकी पेशीमें (Calves), त्रिकास्थि-प्रदेशमें और जानुमें दर्द मालूम होता है। पीठमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ मालूम होती है,—मानो मेरुदण्डमें कुछ गड़ रहा है,—पीछेकी ओर शरीर झुकानेपर आराम मालूम होता है।

सम्बन्ध—तुलनीय ।—पल्स (बदलनेवाला आम बातका दर्द); कैलि-बाई, युकैलिप्टस, लोरसिरेसस (सर्दीमें)।

शक्ति ।—२ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

अधिक सुन्दर और चमकीली दिखाई देती हैं, पर फिर कुछ देर बाद ही सब अन्धकारमय और दुःखित करनेवाली मालूम होती हैं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, सब चीजें उलटी दिखाई देती हैं। सन्ध्याके समय अधकपारीका दर्द आरम्भ होता है,—माथेके भीतर मानो मस्तिष्क हिलोरें ले रहा है और जलन होती है तथा ऐसा मालूम होता है मानो आंखकी ओर मस्तक धक्का दे रहा है, आंखसे पानी गिरा करता है, जी मिचलाता है और वमन होता है, उस समय सब यन्त्रणाएँ बढ़ जाती हैं। मानो एक भारी काठका टुकड़ा माथेके दाहिने पार्श्वमें बँधा हुआ-सा मालूम होता है (मानो ललाटमें काठका टुकड़ा बंधा हुआ है= कक्युराइन, रास-टक्स) ; रातमें माथेमें दर्द होता है, आंखोंमें बहुत जलन होती है, भयानक प्यास रहती हैं और बहुत ज्यादा पेशाब होता है।

आंख।—आंखमें जलन होती है, ऐसा दर्द होता है मानो उसके भीतर चबा रहा है और आंसू बहा करता है। पासके मकान ऐसे मालूम होते हैं मानो उलट गये हैं, चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है और द्विल दर्शन—अर्थात प्रत्येक पदार्थ दो मालूम होते हैं, पर ध्यानसे देखनेपर यह द्विल दर्शन दूर हो जाता है ; दाहिनी आंखके सामनेकी सब चीजें मानो घूमती-सी मालूम होती हैं—मानो तुरन्त ही सब अंधेरेमें ढक जायगा। ऐसा मालूम होता है मानो आंखसे आगकी चिनगारियाँ निकल रही हैं (आंखमें गर्मी मालूम होती है=बेल, डायाडेमा ; क्रियो, लैके, लाई, मिफाइट, मार्क, रास-रैड, स्पाई, टैवाक, वेरेट)। आंखमें जलन, आंख बन्द करनेपर जलन बढ़ जाती है और इसीलिये रातमें सो नहीं सकता=(आंख बन्द करनेपर दर्दका बढ़ना=क्लिमेट, क्रोक,—आंख बन्द करनेपर उत्तापका बढ़ना=कोरैल)। सूर्यकी ओर देखनेपर और आंखमें धूप लगनेपर आंसू निकलने लगना। (ग्राई, इग्ने)।

मुखमण्डल।—मुँहासे,—व्रणके चारों ओर दर्द (डा० एच० सि० ऐलेनके मतसे मुहासा रोगमें युजिनियाके बाद कैलि-ब्रोम प्रयोग करनेपर वह एकदम अच्छा हो जाता है) मुंहमें बहुत ज्यादा लार पैदा होती है (इयुकेल, ब्रोम, किनिन-सल्फ, नक्स-युग, नक्स-मस, ग्रम, रास, सैबाड) ;— विशेषकर भोजनके पहले और बोलनेके समय।

पाकाशय।—धूम्रपानकी बहुत इच्छा (डेफनी ; स्टैफ, थिरिड)। पाकस्थलीके द्वार देशमें अकड़नकी तरह दर्द और इसी वजहसे मिचली,—धूम्रपानसे घटती है। (धूम्रपानके कारण मिचली=कार्बो-ऐन, क्लिम, युफ्रे, इग्ने, फास)। गिर पड़नेके कारण पुट्ठेकी आंतोंका उतरना (Inguinal)।

पेशाब।—गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब। प्रसवके बाद शरीरमें सिहरावन होना (प्लैट) या आंखके सामने एकाएक चमकीली रोशनी झलक उठती है और उसी रौशनीमें सब चीजें साफ दिखाई देती हैं।

पुं-जननेन्द्रिय।—नपुंसकता, रमणके बाद वीर्यपात मृदु-भावसे हुआ करता है या बिलकुल ही नहीं होता (कैलेड,ग्रैफ; लैके, लाई)। रमणके बाद पसीना होता है (नेट्र-कार्ब) और प्यास बढ़ जाती है, (रमणके बाद उत्ताप मालूम होना=नक्स ;—क्रोधी चित्त=साइलि ; मुंह सूख जाता है=नक्स ; दांतमें दर्द=डेफनी ; स्वप्नदोष=नेट्र-म्यूर ; अस्पष्ट दृष्टि=केलि-कार्ब ; मूत्रनालीमें यंत्रणा=कैल्क ; सरमें चक्कर आना=बोवि ; वमन=मस्कस ; सुस्ती=ऐगार, कैल्के, कोना, केलि-कार्ब, लाई, पेट्रोल, सेलिन, सिपि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हरेक रातमें तलवेमें ऐंठन होती है (कैल्के, चेलिडो, काफि, फेर, हिप, पेट्रोल, प्लम्ब, सिकेलि, साइलि, स्टैफाई, सल्फ)। अंगूठेके चारों ओरकी खाल उधड़ जाती है और पककर उसमें पीब हो जाता है (मार्क)। सर्दीकी वजहसे (Catarrhal) बातका दर्द—दर्द जगह बदला करता है (पल्स, केलि-बाई)। कमर, जङ्घाकी पोटलीकी पेशीमें (Calves), त्रिकास्थि-प्रदेशमें और जानुमें दर्द मालूम होता है। पीठमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ मालूम होती है,—मानो मेरुदण्डमें कुछ गड़ रहा है,—पीछेकी ओर शरीर झुकानेपर आराम मालूम होता है।

सम्बन्ध—तुलनीय।—पल्स (बदलनेवाला आम बातका दर्द); केलि-बाई, युकेलिप्टस, लोरसिरेसस (सर्दीमें)।

शक्ति।—३ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

इयोनिमिनम।

(EUONYMINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इयोनिमनस वृचका सत।

उपयोगिता और आभास।—एकलेक्टिक चिकित्सकगण टाइ-फायड ज्वर; कब्जियत और अग्निमांद्य रोगमें इसका व्यवहार किया करते हैं। होमियोपैथीके मतसे यह कालेरा, उदरामय, शोथ, यकृत दोष, आमाशय, अण्डलाल मिला पेशाब, वगैरह बीमारियोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इयोनिमस एट्रोपर्पुरिया।

(EUONYMUS ATROPURPURIA)

दूसरा नाम।—वाहो, टार्निङ्ग बुष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी छाल और जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—एकलेक्टिकगण इनिमिन और इयोनियम युरोपियाकी तरह इसे भी एक यकृत-रोगकी विशेष औषधिके रूपमें व्यवहार करते हैं। होमियोपैथीके मतसे पित्त ज्वर, यकृतके बहुतसे उपसर्ग हैजा और मिचलीके लक्षणमें इसका व्यवहार प्रचलित है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इयोनिमस युरोपिया।

(EUONYMUS EUROPOEA)

प्रस्तुत प्रक्रिया।—सूखे बीजसे विचूर्ण और तर बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निम्न लिखित रोगोंमें लाभदायक है:—ताण्डव; आक्षेप; अतिसार; पथरी; सर दर्द; यकृतका विकार।

उपयोगिता और आभास।—इससे तैयार किये हुए उपचारका नाम "इयोनिमिनम" है। लाला मूत्रसे पैदा हुए सार्वाङ्गिक शोथ-रोगमें यह विशेष लाभदायक है, यहां तक कि गर्भावस्थामें लाल मूत्र (Albuminuria) भी इससे आराम हो जाता है। यकृतमें खूनकी अधिकताकी वजहसे यकृतका फूलना। पैत्तिकता (Biliousness); पित्तज सर दर्द, लेप चढ़ी जीभ, मुँहका कड़वा स्वाद, कब्जियत, बवासीर, कटिवातकी तरह कमरमें भयानक दर्द, इसके साथही कितनेहो रंगोंका बहुत ज्यादा पतला दस्त; लालामूत्रके साथ पाकाशयकी बीमारी; सरमें दर्द, कमजोरी, सरमें चक्कर आना, तिमिर दृष्टि वगैरह इयोनिमसके द्वारा आराम होता है। इसके द्वारा शरीरके बाएँ पार्श्वपर ही अधिक आक्रमण हुआ करता है। इसका दर्द कतरनेकी तरह, सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह या खींचनकी तरह होता है। गण्डास्थि और जीभमें कतरनेकी तरह दर्द; मूत्रनालीसे मूत्राशय तक यह दर्द फैल जाता है। दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है और सोनेबाद दर्द घट जाता है या दूसरी जगह पैदा हो जाता है। माथा, वक्ष और उदरमें दर्द—भोजनके बाद बढ़ना, ज्वराधिकारमें शीतकी वजहसे समूची देह काँपा करती है। शरीरके कितने ही स्थानोंमें सूखी फुन्सियाँ निकलती हैं और वह खुजलाया करती हैं।

लक्षणावली।

मन।—चिड़चिड़ा, असन्तुष्ट चित्त, परिश्रम करनेकी इच्छा न होना (पेनाक, ऐगार, ग्रैफ, गुयाई, लाई, आक्साई, पि-पाई, सैबाई सिपि, सल्फ, टैराक्स, जिङ्क)। किसी विषयमें भी मन लगाकर सोच नहीं सकता,

सोचनेपर सब भाव गायब हो जाते हैं (क्रियो, मैग्नि, नक्स-मस, रैनान-बाल्ब)। हमेशा अमनोयोगी (ऐग-कैस्ट, ऐमोन-कार्ब, बोवि, कास्टि, चेलिडो, कैलि-ब्रोम, लैका-कैन, नक्स-मस, साइलि)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,— मानो सब चीजें चक्कर खा रही हैं (आर्नि, बेल, ब्राई, साइक्यू, कोना, सिक्लेम, नेट्र-म्यूर, नक्स, फास, पल्स, वैलि, वेरेट) और इसके साथ धुंधली दृष्टि (ऐको, कार्बो-वे, कैमो, हायो, लोरो, मार्क, नक्स, पल्स)। ब्रह्मतालुके पार्श्वमें मानो एक खील घुस रही है ऐसा मालूम होना (काफि, हिप, इग्ने, नक्स, स्टेफ, थूजा, मैंग-कार्ब)। कँपानेवाली सरकी वेदना (बार्मा, हेलिबो, लैके, मेग-सल्फ, मैजेर, नक्स, साइलि, थूजा)। भोजनके बाद सरमें दर्द (कैलि-कार्ब, लैके, नक्स-मस, नक्स-वोम, पियो, फास, कैलेण्डियु, सल्फ)

आंख ।—तिमिर दृष्टि,—सब चीजें मानो बादलमें ढँकी हुई हैं ऐसा मालूम होना (ऐल्यू, बेल, कैल्के, कास्टि, क्रोक, सिक्लेम, हिमैट, इग्ने, मार्क, प्लम, रियुटा); मानो नजरके सामने काले बिन्दु उड़ते फिरते हैं (ऐसिड-फ्लू, ऐगार, ऐमोन-म्यूर, बेल, कैल्के, चायना, काकु, कोना, मार्क, ऐ-नाई, फास, सिपि, साइलि)।

अन्नाशय ।—उदरमें सङ्कोचन (बेल, कोलो, हिप, हायो, ऐसिड-म्यू, नक्स, पोडो, प्रूनस-स्पाई) और छेदनेकी तरह यंत्रणा (आर्स, कोलो, कोना, ऐसिड-नाई),—ऐसा मालूम होता है मानो पंजरके नीचे किसी अस्त्रके द्वारा पेट चीरा जा रहा है। तलपेटकी यंत्रणा आदिका भोजनके बाद बढ़ जाना (आर्स, ब्राई, कार्बो-वे, कैस्टोर, चेलिडो, चायना, साइक्यू, कोलो, इग्ने, आयोड, कैलि-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स, क्रोटल, क्यूप्रम-आर्स, सल्फ)। अर्श और तेज कमरके दर्दके साथ कब्जियत। उदरामय, मल पित्त-रहित। यकृतकी निष्क्रियताकी वजहसे हृदपिण्डकी बीमारियाँ। नाभि-प्रदेशमें दर्द।

श्वास-यंत्र ।—छातीमें पूर्णता मालूम होना और श्वास-कष्टकी वजह से लम्बी साँस लेनेकी इच्छा (ऐमोन-कास्टि, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, कार्बो-वेज; डिजि, ऐसिड-हाइड्रो, नक्स, रैनान-बाल्बो, रास, स्क्वि, थिरिडि)। स्तनवृन्तमें रह रहकर चिलक मारनेकी तरह दर्द (ऐको, ऐङ्गस, आर्नि, ऐसेट, कैम्फ,

डाल्का, गुयाई, लाई, नेट्र-मूर, पियो, फास, रास, स्पाई, स्क्विला, थूजा, वैलि, इथ्यू, कैलि-बाई, कैलो)। समूचा वक्षस्थल मानो जोरसे कसा हुआ है। (केक्ट, ऐगार, कोलो, जेल्टिया, कैलि-कार्ब, ओपि, प्लैट, ओलि-ऐन, स्टैन) छातीमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना (Excoriation=कार्बो-वेज, कोलचि, मार्क, स्टैन) और ऐसा मालूम होना मानो चोट लग गयी है (आर्नि, कास्टि, क्रियो, रेनान-सिलिरेट, रोडो, स्टैन, ऐसिड-सल्फ, थूजा, टोङ्ग)। वक्षस्थलका दर्द आदि भोजनकेबाद बढ़ जाता है (आर्नि, चायना, लैके, फास, थूजा, वेरेट)। हृत्प्रदेशमें गड़बड़ी मालूम होती है—प्राण मानो अकुलाता है (आर्स, कास्टि, काफि, डिजि, मस्कस, नक्स, पल्स, वेरेट)

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठमें बाई ओर और मेरुदण्डके मध्य भागके पास तेज दर्द। बाएँ कन्धे और बाहुके सन्धि-स्थलपर तेज छेदनेकी तरह दर्द। बैठे रहनेपर पैर सुन्न हो जाते हैं, इसलिये रोगीका उठकर खड़े होना या घूमना मुश्किल हो जाता है। हाथ पैरमें दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है, सोनेपर या तो दर्द आराम हो जाता है, या हट कर दूसरी जगह चला जाता है और वहां फिर पैदा हो जाता है। (पल्स, कैलि-बाई, देखो)।

वृद्धि।—वक्षस्थल, मस्तक और अन्त्राशयका दर्द आदि भोजनके बाद बढ़ जाता है।

उपशम।—सोनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—पोडो (अतिसार); रेनान-बल्बो, क्रियो, आइरिस; ऐलू, कास्टि, चेलिडो, ऐमोन-पिक इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम तक। गर्भवती रमणियोंके लालामूत्र और उदरी रोगमें

ड्रयोनिमिन १ म से ३ य दशमिक विचूर्ण व्यवहार करना चाहिये।

इयुपेटोरियम ऐरोमैटिकम।

(EUPATORIUM AROMATICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—शीत ज्वर ; मुंहका जखम ; पथरी ; स्नायविक उत्तेजना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक उत्तेजना, (बेचैनी) मालूम होना ; बेचैनी और स्वास्थ्यको नष्ट करनेवाली अनिद्रा, मुँहका जखम, बच्चोंके मुँहका जखम वगेरहमें इसकी उपकारिता प्रसिद्ध है। स्त्रियोंके प्रसवके पहले और बादवाले मुँहके जखम रोगमें यह बहुत शीघ्र जलन दूर कर देता है। गुल्मवायु, ताण्डव रोग और हाथ पैर आदिका कष्ट देनेवाला कम्पन, मुँहमें थूक भर आना वगैरहमें इसका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ दिखाई दिया करता है। ज्वराधिकारमें, पित्त, वमन, पेटमें और माथेमें दर्द रहनेपर इसके द्वारा लाभ हुआ करता है, मुखक्षत (मुँहके छाले) रोगमें इसका बाहरी और भीतरी दोनों ही तरहसे प्रयोग होता है। यह एक उत्कृष्ट बलकारक दवा मानी जाती हैं। फुस्फुस-वेष्ट प्रदाह (Pleurisy) और बहुत बेचैनीके साथ सुस्त करने वाला(Adynamic) ज्वरादिमें भी इसका प्रयोग होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—साइप्रिपिड, स्कुटेलेरिया, हायो, बैसिफ्लो, हाइड्रैस्टिन-म्यू।

शक्ति।—मूल अर्कका बाहरी प्रयोग। सेवनके लिये मूल अर्कसे ६ ठा दशमिक क्रम तक।

इयुपेटोरियम पार्फोलियेटम।
(EUPATORIUM PERFOLIATUM)

दूसरा नाम।— वोन-सेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समुचे ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पीठमें दर्द ; पैत्तिक ज्वर ; दर्द ; खांसी ; डेंगू, अतिसार ; वात ; ध्वजभङ्ग ; अजीर्ण ; सर्दी ; सविराम ज्वर ; कामला ; यकृतमें दर्द ; खसड़ा ; आँखोंका प्रदाह ; स्वल्प विराम ज्वर ; दाद ; उपदंशसे पैदा हुआ दर्द ; जखम ; इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बुड्ढे मनुष्योंकी बीमारीमें यह अधिक उपयोगी है। (१) सारे शरीरमें तेज दर्द,—मानो समूची देह चूर्ण विचूर्ण हो गयी है (आर्नि, रैक-कैन, पाइरोज, रास)। (२) हड्डीमें दर्द,—पीठ, माथा, वक्ष, हाथ-पैर आदि और कलाईकी सन्धि मानो खुल गयी है ; आँखके गोलेमें बहुत दर्द ; सर्दीकी वजहसे हरेक हड्डीमें दर्द ; बहुव्यापक सर्दी रोगमें उठनेकी शक्तिका न रहना (लैक-कैन) ; (३) दर्दका बहुत तेजीसे पैदा होना और गायब हो जाना (बेल, मैग-फास, युपि-पर्प्यु) ; (४) सरमें चक्कर आकर बायीं ओर गिर जानेका उपक्रम ; (५) तरल श्लेष्मा मिली पुरानी खाँसी ; विलेपी ज्वरके साथ वक्षस्थलमें दर्द, खाँसनेके समय हाथसे छाती दबा रखनी पड़ती है, रातमें बढ़ना ; छोटी माता या सविराम ज्वर एकाएक बन्द हो जाने-पर—इसी कारणसे खाँसी। (६) ज्वराधिकारमें पहले दिन सवेरे ७ से ८ बजे के भीतर और इसके दूसरे दिन मध्यान्हमें पैदा हो जाना ; शीतावस्थाके अन्तमें पित्तवमन—पानी पीने बाद जाड़ा लगकर कपकपी होती है और वमन होना बढ़ जाता है ; जाड़ेके पहले और जाड़ेके समय हड्डियोंमें तेज दर्द—जाड़ा लगनेके पहले, समय और उत्तापावस्थामें दुर्दमनीय प्यास, पानी पीनेपर तृप्ति न होनेसे ही रोगी समझा जाता है कि बोखार आना चाहता है। ज्वरके समय सरका दर्द बढ़ जाता है और रोगी 'आह आह'कर अपनी यन्त्रणा प्रकट करता है ; विज्वरावस्थामें शरीर पीला हो जाता है और बहुत सुस्ती आ जाती है;

थोड़ा सा भी जाड़ा आ जानेबाद बहुत ज्यादा पसीना होता है या कपानेवाले शीतके बाद बहुत थोड़ा पसीना होता है अथवा बिलकुल ही नहीं होता।

लक्षणावली।

मन।—रातमें रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका ज्ञान और बुद्धि लोप हो जाना चाहती है (ऐलू; ऐन्था ; कैनाब-इन, सिपि ; ऐक्टि, हाइड्रोफोब, आयोड, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, लिलि-टाइग्ट, मैन्सि, मिडोरिन)। दर्द की वजहसे उह उहकर अपनी तकलीफ प्रकट करता है (कैलि-बोम, मैङ्गो-ऐसेट, ऐसिड-म्यू) ; तकलीफ प्रकट करनेवाला चेहरा ; ज्वरके समय निराशा और विषाद।

मस्तक।—ऐसी आशङ्का होती है, कि सरमें चक्कर आकर बाईं ओर गिर जायगा (बाईं ओर माथा फिरा नहीं सकता, कहीं गिर न जाये=कोली, कोनी)। माथेके भीतर दर्द मालूम होता है। घरमें रहनेके समय और बातचीतमें लगे रहनेपर दर्द घट जाता है और घरसे बाहर निकलनेपर ही बढ़ जाता है। कुछ देरतक सोनेपर माथेके पीछे भार मालूम होता है और दर्द होता है,—हाथसे पकड़े बिना सर उठा नहीं सकता। सरके पिछले भागमें दर्द और और टपक ; ब्रह्मतालुमें गर्मी मालूम होती है। सरमें दर्द—जाड़ा लगनेके पहले ही प्रकट हो जाता है और उत्ताप तथा पसीना सभी अवस्थाओंमें बना रहता है—पसीना होनेके समय सभी लक्षण बढ़ जाते हैं (ऐण्टि-क्रूड, आर्नि, फेरम, नेट्र-मयू, रास ; थूजा) ; आँखके गोलेमें बहुत दर्द होता है, बार बार छींक और सर्दी होती है—इसके साथ ही सभी हड्डियोंमें दर्द होता है।

मुख-विवर।—मुंहके भीतर और श्लैष्मिक झिल्ली रक्तहीन सी मालूम होती है, जीभ सफेद लेप चढ़ी और दोनों ओंठोंके जोड़की जगहपर जखम हो जाता है (नेट्र-मयू, ऐसिड-नाईं।)

पाकाशय।—खानेकी चीजोंकी गन्ध या रसोईकी गन्धसे मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि, आर्स, सिपि)। ज्वराधिकारमें शीतावस्थाके पहले और ज्वरके समय दुर्दमनीय प्यास रहती है ; पानी पीते ही वमन हो जाता है (आर्स, आर्नि, नक्स) और वमनके पहले प्यास रहती है। मिचली और भुक्त द्रव्य (ब्राई, आर्स, काक्य, कोलचि,

ग्रैफ, हायो, इपिका, कोलि-कार्ब, लेकी, नेट्र-म्यू, पल्स, रास, वेरेट; पोडो, नक्स)। कम्प और मिचलीके साथ पित्त-वमन (कोलचि, इपिक)। बहुत *कमजोरी और सुस्ती मालूम होना* (ऐसिड-नाई, ऐसिड-सल्फ)।

अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें बहुत दर्द मालूम होता है—हिलने या खाँसनेपर दर्द होता है। (खाँसनेपर दर्द मालूम होना=ब्राई, आर्स, काक्यू; हिलनेपर दर्द मालूम होना=ऐङ्गस, मार्क, नक्स)। कपड़ा कसकर नहीं पहन सकता (ऐमोन-म्यू, अरम, कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, लेकी, नक्स, सर्जि, सल्फ)। अन्त्राशयको सर्दीके साथ कब्जियत और यकृतमें दर्द।

पेशाब।—पेशाब गाढ़ा, लाल रङ्गका और स्वच्छ। गाढ़ा भूरे रङ्गका, थोड़ी मात्रामें पेशाब,—उसमें सफेद आभा लिये कीचड़की तरह तली-जमती है (ऐनाक, सार्सा, जिङ्क, ओलि-ऐन)। कामाद्रि (योनि या जननेन्द्रियसे ऊपरका रोएँ भरा ऊँचा स्थान) खुजलाता है।

श्वास-यंत्र।—पुरानी खाँसीके साथ पतला श्लेष्मा निकला करना; विलेपी या क्षय ज्वर (Hectic) (बोर, नक्स, फास, पल्स, साइलि, स्टेन); वक्षस्थलमें बहुत दर्द मालूम होता है,—खाँसीके समय दोनों हाथों से वक्षस्थलको दबा रखता है (ब्राई, नेट्र-कार्ब, स्क्विला, फास), रातमें वृद्धि हो जाती है (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कौस्ट, कैमो, हायो, लेकी, नक्स, पल्स) छोटी मात्राके बाद या एकाएक सविराम ज्वर बन्द होनेके कारण खाँसी। स्वरभङ्ग—स्वरनाली, वायुनली और वायुनलीभुजके भीतर दर्द और इसके साथ ही समूची देहमें दर्द होता है, सवेरे बढ़ता है (कास्टि, सन्ध्याके समय वृद्धि=कार्बो-वेज, फास)। सर्दी लगनेकी वजहसे खाँसी (*Cold*)—रातमें २ से ४ बजेतक बढ़ना, वक्षमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है; ऐसा अनुभव होता है, *मानो वक्ष कसकर बँधा हुआ है। चित्त होकर सोनेपर* (नक्स-वोम), खाँसनेसे बढ़ना और जाँघ और हाथपर भार देकर, तथा तकियेपर माथा रखकर सोनेपर घटता है (चित्त सोनेपर खाँसीका बढ़ना—नक्स, फास; —माथा नीचाकर सोनेपर बढ़ना=ऐमोन-म्यू; बाएँ पार्श्वमें सोनेपर=इपिका, वेरिस; दाहिने पार्श्वमें सोनेपर=ऐमोन-म्यू, स्टेन)। पसीना निकलनेके साथ श्वासकृच्छ्रता (आर्स, लेक, नक्स-वोम)—चिन्ता भरा चेहरा और अनिद्रा। बाईं करवट सो नहीं सकता (बाईं करवट सोनेसे ही खाँसी

बढ़ जाती है=इपिक, पेरिस)। दीर्घ निश्वास लेनेपर दाहिनी छातीमें तेज दर्द,—रातमें रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो उसकी बुद्धि-भ्रष्ट हो गयी है, श्वास-प्रश्वासमें तकलीफकी वजहसे उसे चिन्ता हो जाती है। बहुव्यापक सर्दी,—प्रत्येक हड्डीमें दर्द और सारे शरीरमें दर्द,—उठनेकी शक्ति न रहना या सारे शरीरका अवसाद। (लेक-कैन, पाइरोज)।

प्रत्यङ्ग आदि।—दर्द बहुत तेजीसे पैदा होता है और तेजीसे ही गायब हो जाता है (बेल, मेग-फास, इयुपेट-पर्फ—क्रमसे वृद्धि हो जाती है और क्रमसे बन्द हो जाता है=स्टैन)। सारे शरीरमें मानो कोई हथौड़ेसे आघात करता है, ऐसा दर्द (आर्नि, रास, बेलिस, लेक-कैन, पाइरोजेन) ज्वरके समय पीठ काँपा करती है (जेल्स)। कलाईमें बहुत दर्द, मानो कलाई की सन्धि खिसक गयी है (ऐमोनियेक, ड्रोसे, रियुटा)। तलहत्थी और तलवा गर्म और उसमें कभी कभी पसीना होता है (ऐग्री, कार्बु, फेर, लिड, लाई स्यूरेक्स, नक्स, फास, रोडो, स्टैन, स्टेफाई)। पैरका तलवा और गुल्फ सन्धि (एँड़ी) में मानो शोथ हो गया है, इस ढंगकी सूजन हो जाती है (आर्नि, ऐसाफि, कैल्के, एपिस, फेर, ऐसिड-बेन, लाई, सल्फ)। सवेरे तलवा बहुत गर्म मालूम होता है (क्रोटेल, लिड, सेनिक, पेट्रोल, फास, पल्स, स्टैन, स्टेफाई)। पाण्डु रोग,—शरीरकी त्वचा पीली या हल्दीके रङ्गकी (चेलिडो, मार्क, कैमो)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—उत्ताप और पसीना। शीतका आविर्भाव। एक दिन सवेरे ७ से ८ बजेके भीतर और दूसरे दिन १२ बजने के समय। शीतावस्था;—सर्दीके साथ बहुत प्यास; शीत पीठसे आरम्भ होता है और रोगी बार बार जम्हाई और अँगड़ाई लेता है; उसकी हरेक हड्डीमें दर्द होता है और वह गर्म ओढ़ना ओढ़ लेना चाहता है (नक्स-वोम); शीतावस्थाके अन्तमें बहुत ज्यादा पित्त वमन होता है; शीतकी अपेक्षा कम्प अधिक रहता है। उत्तापावस्था=बहुत कमजोरी मालूम होती है; जब तक उत्ताप होता रहता है, तबतक सर नहीं उठा सकता। प्रायः प्यास नहीं रहती है (आर्स=उत्तापावस्थामें अदम्य प्यास); टपकने जैसा सर दर्द; थोड़ा सा भी पानी पीते ही जाड़ा और कम्पन पैदा हो जाता है। माथेसे पैर तक दर्द रहता है। पसीनेवाली अवस्था,—पसीना बहुत थोड़ा या बिलकुल नहीं होता। यदि पसीना होता है तो रातमें बहुत ज्यादा हुआ

करता है और पसीना होते ही जाड़ा मालूम होता है; पसीना होते ही सब तकलीफें घट जाती हैं, पर सरका दर्द बढ़ जाता है। विराम काल,—एकदम बिलकुल ही नहीं छूटता; शरीरकी त्वचा और आँखका सफेद अंश पीला हो जाता है,—कामला रोगीकी तरह; तरल श्लेष्मा मिली खाँसी मौजूद रहती है। गर्दनके पीछेवाले भागमें और माथेके पीछे टपककी तरह दर्द—उठनेके बाद घटना।

वृद्धि।—चित्त होकर सोनेपर (खाँसी), घरसे बाहर जानेपर; शरीर संचालनसे; पानी पीने और कपड़े उतारनेपर।

घटना।—तकियेपर पट होकर सोनेपर (खाँसी); घरके भीतर और उठनेपर (सर दर्द)।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—चायनि, ब्रायो, (ज्वर और दर्द); वेलिस; कैप्सिकम; लेक-कैन; पाइरोजेन; चेलिडो, पोडो, लाई, कोलचि, (खाद्यकी गन्धसे मिचली)। इसके बाद नेट्र-म्यूर और सिपियाका व्यवहार करनेपर विशेष लाभ होता है।

शक्ति।—मूल अर्क से २०० शततमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व।—एकसे सात दिन।

इयुपेटोरियम पर्प्युरियम।

(EUPATORIUM PURPUREUM)

दूसरा नाम।—ग्रेवेल रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सोकड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अण्ड लाल मिला पेशाब; पथरी; मूत्रस्थलीका प्रदाह; बहुमूत्र; शोथ; शय्या-पर पेशाब; सरमें दर्द; मूर्च्छा-वायु; ध्वजभङ्ग; अजीर्ण; सविराम-ज्वर; मूत्र-पथरीका शूल; वात; पैरमें झनझनी वाला वात; पेशाबमें तकलीफ; गलेमें जखम; पेशाब रुकना; वमन।

उपयोगिता और आभास।—इसके सभी लक्षण बाएँ अङ्गमें अधिक परिमाणमें प्रकट होते हैं। बराबर ऐसा मालूम हुआ करता है कि बाईं ओर गिर जायगा; किसी तरह भी वह अपना यह विश्वास छोड़ नहीं सकता। देहके सभी अंशोंमें कमजोरी और सुस्ती मालूम होती है—बहुत चेष्टा किये बिना हिल नहीं सकता। वात वेदना—निचले अंगसे ऊपरी अंगमें फैल जाती है (लिडम—नीचेकी ओर फैलता है=कैल्मिया)—और बार बार जगह बदला करती है (कैलि-बाई, लैके-कैन, पल्स)। नींदमें बहुत व्याघात होता है,—भयानक सपने देखा करता है। चोट या दबावकी वजहसे मूत्र-कृच्छ्रता,—जरायुका अपने स्थानसे हट जाना या गर्भावस्थामें ऊँचा नीचा रास्ता, गाड़ी या घुड़सवारी करनेपर बार बार पेशाबका वेग होता है,—जितनी ही बार पेशाब हो जाता है उतनी ही बार मूत्रस्थली परिपूर्ण हो जाती है, बच्चोंको पेशाबका वेग रोकनेकी शक्ति नहीं रहती,—अनजानमें पेशाब हो जाता है। मूत्रस्थलीकी पुरानी सर्दी; गभीर प्रदेशमें बराबर दर्द; मूत्रस्थलीमें जलन और त्वचाको क्षय करनेकी तरह दर्द।

लक्षणावली।

मन।—बुद्धिकी जड़ता; बार बार दीर्घ श्वास (इग्ने) छोड़ना; चित्त विषादयुक्त; औंघाई। मनमें नाना प्रकारकी भ्रान्त कल्पना। निर्वासन कातरता अर्थात् पीड़ितावस्थामें अपने घरमें रहनेपर भी रोगिनी समझती है कि वह किसी दूसरी जगह है और अपने घरमें जानेके लिये लालायित रहती है (अरम, ब्राई, कैप्स, इग्ने, सिनियेन, ऐसिड-फास, साइलि)। रोगी इस भयसे हमेशा कातर रहता है कि उसे कोई बीमारी न हो जाय।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना और माथा बहुत हलका मालूम होना, ऐसा मालूम होता है मानो माथा घूमता हुआ उड़ता है; रोगीको ऐसा मालूम होता है कि वह बाईं ओर गिर जायगा,—सवेरे बढ़ता है और मध्यान्हमें घट जाता है। सर दर्द—सुई बेधनेकी तरह या माथा मानो हथौड़ी से ठोंका जा रहा है, ऐसा दर्द मालूम होता है—बाईं ओर ज्यादा दर्द होता है। माथेके दाहिने पार्श्वसे बाएँ पार्श्वमें चला जाने वाला पीसनेकी तरह दर्द, सवेरे आरम्भ होता है, तीसरे पहर और सन्ध्याके समय बहुत बढ़ जाता है। (सवेरे आरम्भ होता है, दिनमें बढ़ता है, और

रहता है=सेङ्ग,इनेरिया)—ठण्डी हवामें दर्द बढ़ता है; निर्मल हवामें धीरे धीरे टहलनेपर घटता है। ज्वराधिकारमें जाड़ा आराम होनेके पहलेसर में प्रचण्ड दर्द होता है,—माथा विशेषकर ललाटमें पसीना होता है। आँख—मानो टकटकी लगी; लाल और फूली, इसके साथ ही सर-दर्द। कुछ निगलने के समय कानमें कड़ाक जैसीआवाज हो जाती है (मेंगे)। जाड़ा मालूम होनेके साथ आँखका सफ़ेद अंश पीला हो जाता है। बोखारके समय चेहरा गर्म मालूम होता है।

गलेके भीतर।—गला मानो बन्द हुआ जाता है और श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है,—बार बार निगलने या घूंट लेनेकी इच्छा, गलेमें इस तरहकी जलन होती है मानो कोई गर्म चीज निगल ली है, निगलनेके समय दर्द बढ़ जाता है। गलेके भीतरके बाईं ओर दर्द अधिक रहता है,—जाड़ा आरम्भ होनेके पहले और निगलनेके समय दर्द होता है।

पाकाशय।—ज्वराधिकारमें या शोथ रोगाधिकारमें जाड़ा आरम्भ होनेके पहले प्यास; शीतावस्थामें प्यास बिल्कुल ही नहीं रह जाती। गर्म पतली चीजें पीनेकी इच्छा (ज्वरके समय गर्म पानीय पीनेकी इच्छा=केस्के-रिला;—ज्वरके पहले=सेबाडिला)। पाकस्थलीमें (अधिक परिमाणमें) वायु (Flatus) इकट्ठा होता है और बार बार डकार आती है (कोना, क्युप्रम); खानेकी चीजोंकी गन्धसे या रसोईकी तरफ देखते ही मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि, इयुपेट-पार्फोलि, आर्स, सिपिया); बहुत मिचली रहनेपर भी शीतावस्थामें वमन नहीं होता; उत्तापावस्थामें वमन होता है। (ऐको, ऐनाक, आर्स, बैराई, कार्बो-वेज, नक्स, पल्स)। इसके साथ ही सर दर्द; अन्त्राशयमें हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द होता है और मरोड़की तरह दर्द मालूम होता है। पेशाबके बाद तेज अन्त्रशूल, अन्त्राशयमें दर्द और स्पर्श नहीं सहन किया जाता, बाईं ओर बहुत अधिक। तलपेट फूला और गर्म।

पेशाब।—बार बार पेशाबका वेग; रोगीके पेशाबकर आते ही तुरन्त उसकी मूत्रस्थली फिर पेशाबसे भर जाती है। बच्चोंको अनजानमें पेशाब होना, पुराना मूत्राशय प्रदाह या मूत्राशयकी सर्दी,—रोगीको हमेशा गड़बड़ी मालूम हुआ करती है। गभीरतम प्रदेशमें दर्द होता है; मूत्राशयमें दर्द और स्पर्श सहन न होना; पेशाबकर आने बाद मूत्राशय और मूत्रनालीमें जलन,

पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा और मूत्ररेणु (Lithates) निकलता है। मूत्रकृच्छ्र, जरायुका अपने स्थानसे हटना या गर्भावस्थामें ऊँची नीची राहसे गाड़ीमें घूमनेकी वजहसे मसाना (Kidney) का प्रदाह। मूत्रमेह ; सविराम ज्वरमें बार बार पेशाबका वेग इसके साथ ही मूत्रकृच्छ्र और मूत्राशय और मसानेमें दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाएँ डिम्बाधारमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। दिनमें बाएँ डिम्बाधारके ऊपरी अंशमें दबाव मालूम होना। डिम्बाधारकी निष्क्रियताकी वजहसे बन्ध्यत्व (हेलोनि,, सिमिसि,, अरम-म्यूर-नेट)। जरायु-से प्रदरका स्राव,—जरायुकी सुस्ती और बहुत दिनोंके जरायु प्रदाहकी वजहसे बहुत ज्यादा स्राव होना पर वस्त्रमें दाग न लगना। योनिका बाहरी स्थान हमेशा तर रहता है (खासकर वैसा नहीं होता)। गर्भावस्थामें तीसरे या चौथे महीने प्रायः गर्भ-स्राव हो जाया करता है। (सेबाइ)। गर्भ-स्राव होने का उपक्रम हो जाता है, (सेबाइ, सिकेलि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठ और कमरमें बहुत भार मालूम होता है। दोनों पृष्ठ फलकोंके बीचमें शीत मालूम होता है। कमरमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता है। दर्द,—ऊपरकी ओर चढ़ता है,—दर्द त्रिकास्थिसे मसाना या मूत्र-स्थलीमें फैल जाता है। बाईं ओर दर्द अधिक रहता है। देहके सभी अङ्गोंमें सुस्ती और थकान मालूम होती है,—बहुत चेष्टा करनेपर कहीं थोड़ा हिल सकता है। वातका दर्द,—निम्नाङ्गसे ऊर्ध्वाङ्गकी ओर फैल जाता है (लिड,—निम्न ओर चलता है=कैलमिया); दर्द बार बार जगह बदलता है (कैलि-बाइ, लैक-कैन, पल्स)। दाहिने कन्धे और घुटनेका स्नायुशूल,—बाईं ओर चलता है। हड्डोमें बहुत दर्द मालूम होता है—दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही गायब हो जाता है, रोगी बहुत छटपटाता है पर शरीरको हिलानेपर भी दर्द घटता नहीं है। बाएँ नितम्बके स्नायुमें तेज बिजलीकी गति की तरह दर्दकी वजहसे यह अंश सुन्न हो जाता है,—हिलानेपर बढ़ता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था—एक दिनका अन्तर देकर, भिन्न भिन्न समयपर जाड़ा पैदा होता है। जाड़ा लगनेके पहले हाथ, पैर की हड्डियोंमें बहुत दर्द होता है। शीतावस्थामें प्यास न रहना या लेमोनेडकी तरह खट्टा पानीय पीनेकी इच्छा ; पीठके निम्नांगसे शीत आरम्भ होकर ऊर्द्धगामी

हो जाया करता है; शीतावस्थाके घटनेपर पैदा होता है। उत्तापावस्था—दीर्घ काल स्थायी—बहुत प्यास और हड्डियोंमें दर्द; ज्वर घटनेके समय बहुत भूख मालूम होती है (सिना, सिड्रो, फास)। पसीनेवाली अवस्थामें जरा-सा हिमनेपर भी जाड़ा मालूम होने लगता है; विज्वरावस्थामें सरमें चक्कर आता है;—ऐसा मालूम होता है मानो बाईं ओर गिर जायगा (कोलो, युपेट-पार्फोल)। कपालमें ही अधिक पसीना हुआ करता है। शीतावस्थामें नख सब नीले हो जाते हैं (किनिन-सल्फ; नेट्र-म्यू, नक्स), रातमें पसीना, विलेपो या क्षय ज्वर (Hectic Fever)।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर; करवट बदलनेपर; जोरकी हवामें।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐपोसिनम (शोथ); एपिस, कैनाब-सेट, कैन्थ, शेनेगियो, वेस्पा; कोप (पेशाबका लक्षण); ऐसिड-फास; गृह विरह कातरता (हेलोनिअस; कोलचि,) खानेके पदार्थ देखने या गन्धसे मिचली; (युपेटोर-पार्फोल; आरम-म्यूर-नेट्र)।

शक्ति।—१ ले दशमिकसे ६ ठे शततमिक क्रम। डा० एच० सी० ऐलेन वगैरह प्रमुख चिकित्सकगण उच्चक्रम व्यवहार करनेके पक्षपाती हैं। खासकर ज्वरकी चिकित्सामें।

इयुफोर्बिया ऐमिगडेलोइडिस।
(EUPHORBIA AMYGDALOIDES)

दूसरा नाम।—एक तरहका मनसा वृक्ष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—नाकके बगलके हड्डीवाले गह्वरमें दर्द; मलान्त्रका आक्षेप; गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हट जाना; कमजोरी; अतिसार; पेचिश; बवासीर; चर्म रोग; गन्धमें गड़बड़ी; प्लीहाकी बीमारी; गलेका जखम;

उपयोगिता और आभास।—नाकके पार्श्वके अस्थिमय गह्वरमें दर्द, कितनी ही तरहकी काल्पनिक गन्ध आना; छछुन्दरकी तरह गन्ध आना;

उदरामय,—पाखानेमें तकलीफ और मलद्वारका तकलीफ देनेवाला सिकुड़ना और फैलना, वगैरहपर प्रधानतः इसकी क्रिया है। आंतोंमें जलन और वमनके साथ उदरामय,—माथे और उदरमें ऐसा मालूम होना मानो खून खौल रहा है। शरीरकी उत्तापावस्थामें वातका दर्द पैदा हो जाना ; तालुके पीछे जलन, ठण्डा पानी पीनेपर घटना ; (पानीसे बढ़ना = केप्सि), ठंड आदि लक्षण दाहिनी ओरसे बाईं ओर जाते हैं (लाई) ; शरीर गड़बड़ मालूम होना, चलने फिरने पर रोगीको बहुत थकावट मालूम होती है ; रातमें रोगी बहुत बेचैन हो जाता है, अधजगी और अर्द्ध-निद्रित अवस्थामें करवट बदला करता है, पर किसी तरह भी आराम नहीं मिलता है।

लक्षणावली।

मस्तक।—माथेमें बहुत अधिक उत्ताप मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो यह उत्ताप पीठसे नीचे उतर रहा है ; निद्रित अवस्थामें नहीं रहता।

नाक।—नाकमें छछून्दरकी तेज गन्ध आती है।

मुखमण्डल।—बाईं ओर जलन ; अक्षिगह्वर तक दर्द फैल जाता है।

पाकाशय आदि।—तालुके पीछे और कण्ठमें जलन मालूम होती है, ठण्डा पानी पीनेपर और पहली बार उपवास भंग करनेपर घट जाता है। मिचली,—घरमें टहलनेपर बढ़ता है और स्थिर होकर बैठे रहनेपर या रातमें भोजनके बाद घट जाता है। सीढ़ी चढ़नेके समय यकृतमें तेज दर्द। प्लीहा-प्रदेश में कसावटका भाव (ऐको, क्विनिन-सल्फ, लाई, नेट्र-म्यू) और सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना (मैग-म्यू, कार्बो-वेज, नेट्र-कार्ब, सिपि, साइलि)। ऐसा मालूम होता है मानो दाहिनी ओरसे बाईं ओरतक सम रेखा भावसे फैले हुए वृहदन्त्रमें एक बड़ी लम्बी कृमि तकलीफसे लोट रही है। वंक्षण प्रदेश में या पुट्ठेमें टपका दर्द (सल्फ)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय,—मलद्वारके तकलीफ देनेवाले सिकुड़ने और फैलनेके कारण पाखाना होनेमें बहुत बाधा पहुंचती है, पाखाना हो जानेबाद भी मलद्वारका सिकुड़ना-फैलना बन्द नहीं होता ; मल परिमाणमें थोड़ा, रुखड़ा और गोंदकी तरह लसदार ; गुह्यभ्रंश,—दिनके ४ बजेसे रातके

१० बज तक बढ़ना, सार मल मिश्रित, कभी कभी गाढ़ा भूरे रङ्गका पानीकी तरह पतला और आंव मिला मल निकलता है।

मूत्र-यन्त्र ।—पेशाबके समय पेशाब गर्म मालूम होता है।

श्वास-यन्त्र ।—स्वर भङ्ग ; छातीमें गर्मी मालूम होती है।

प्रत्यङ्गादि ।—शरीर गर्म और पसीना होनेपर दाहिने बाहुकी स्कन्धास्थिके ठीक ऊपरी स्थानपर वातका दर्द। दाहिने पैरकी लसिका शिरामें उत्त्वेचन या खौलते हुए जल प्रवाहकी तरह मालूम होता है, कभी कभी पुट्ठे तक इसी तरहका दर्द मालूम हुआ करता है, विशेषकर बैठनेके समय पैरसे जानुतक। सन्ध्याके समय बढ़ता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—रात ग्यारह बजनेके समय शीत पैदा हो जाना (कैक्टस) ; सोनेके लिये कपड़े लत्ते उतारनेके समय यह शीत बदलकर कम्प हो जाता है और दूसरे दिन सवेरे तक कम्प हुआ करता है। परन्तु उत्ताप या पसीना नहीं होता (ऐरेन-डाया, बोवि, लाई, मैग-कार्ब, ऐसिड-फास, रास, स्टैफाई, सल्फ)।

वृद्धि ।—संध्याके समय ; चलनेपर।

घटना ।—ठण्डा पानी पीनेपर और भोजनके बाद।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—इलैट, लाइकोपोड, ऐरेनिया-डायो, कैक्टस।

शक्ति ।—२ रा दशमिकसे ६ ठा शततमिक क्रम।

इयुफोर्बिया कोरोलेटा ।

(EUPHORBIA COROLLATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसकी जड़से विचूर्ण और तरल आकारमें मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ; हैजा या बच्चोंकी विसूचिका ; विसूचिकाकी तरह पतले दस्त आना ; पाकाशयका प्रदाह ; समुद्रमें जहाजपर चढ़नेपर वमन।

उपयोगिता और आभास ।—प्राणान्तक मिचली या ओकाई, खाये हुए पदार्थ, पानी या श्लेष्माका वमन और बहुत ज्यादा पतला पाखाना होना वगैरह पाकाशय और आँतोंकी बीमारियोंमें यह विशेष उपयोगी है और मूल्य वान दवा है। विसूचिका रोगकी अवस्था विशेषमें इसकी अकसर ही जरूरत पड़ा करती है। दस्त के का वेग कुछ समयका अन्तर देकर पैदा हुआ करता है। डा० मैसिने अपने संक्षिप्त नवौषधि तत्वमें उल्लेख किया है, कि बच्चेके जो लक्षण देखकर यह मालूम होता है कि क्रमि है; इससे वे सभी लक्षण आराम हो जाते हैं।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत अधिक मानसिक उद्वेग। केवल मृत्युकी कामना करता है (ऐसिड-क्रूड, अरम-म्यू-नेट, वेज, वार्बा, हाइड्रेस, नेट्र-सल्फ, ऐसिड-नाई, फास; स्पिज़ि, सिफिलिन)।

पाकाशय आदि ।—प्राणान्तक मिचली; पहले एकाएक खाई हुई चीज़ आदिका प्रबल वमन होता है; इसके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा-मिला पानीकी तरह वमन; अन्तमें चावलके धोवनकी तरह वमन (कैम्फो, कोलचि, वेरेट, आर्स); मलान्त्रसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पतला दस्त होता है,पेट गड़गड़ाकर दस्त लग आता है (ऐलो; ऐपिस; आर्स; कोलचि; आइरिस; लेके, ऐसिड-म्यू, नेट्र-सल्फ, पडस) मलद्वारमें असह्य सुरसुरी,—मानो असंख्य क्रमियाँ रेंग रही हैं (टियुक्रि, कैल्के, इग्ने, इण्डिगो, कोयाशीया)।

ज्वर ।—त्वचा शीतल; माथेमें पसीना और नाक तथा हाथ-पैर ठण्डे ।

त्वचा ।—शरीरकी त्वचा शीतल और तलहत्थी, नाक आदि बरफकी तरह ठण्डे (कैम्फो)।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—आर्स, कैम्फो, कोलचि, वैरेट्रम; जेट्रोफा; गेम्बोजिया; कैल्के कार्ब; टियुक्रियम।

शक्ति ।—३ रा दशमिकसे ६ ठा दशमिक क्रम।

इयुफार्बिया-साइपेरिसियस।

(EUPHORBIA CYPARISSIAS)

दूसरा नाम ।—साइप्रेस-स्पार्ज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे संग्रह किये हुए उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—विसर्प, अमौरी, छालेकी तरह उद्भेद वगैरह चर्मरोगमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुफोर्बिया-हिटरोडोक्सा ।

(EUPHORBIA HETERODOXA)

दूसरा नाम ।—एल् वेलोज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—यह कैन्सर रोगकी एक बढ़िया दवा है। कैन्सर रोगमें असह्य जलन करनेवाला दर्द इसका निर्देशक है।

शक्ति ।—६ ठे शततमिकसे ३० शततमिक तक।

इयुफोर्बिया-हाइपेरिसिफोलिया।

(EUPHORBIA HYPERICEFOLIA)

दूसरा नाम ।—लार्ज स्पाईड-स्पार्ज । गार्डेन-स्पार्ज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—कब्जियत और सर दर्दके लक्षणमें लाभदायक है । श्वासयन्त्र, पाकस्थली और आँतोंकी बहुत सी बीमारियोंमें इपिकाकके साथ इसका विशेष सादृश्य है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुफोर्बिया इपिकाकुआन्हा ।

(EUPHORBIA IPECACUANHÆ)

दूसरा नाम ।—इपिकाकुअन स्पार्ज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया । – मूलसे विचूर्ण तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह इपिकाककी अपेक्षा अधिकतर शक्तिशाली औषधि है । बहुत देरतक स्थायी वमन और उसके साथ ही सरमें चक्कर आना, अस्पष्ट दृष्टि, सुस्ती, उत्ताप मालूम होना वगैरह इसके निर्वाचक लक्षण है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुफोर्बिया लेथिरिस ।

(EUPHORBIA LATHYRIS)

दूसरा नाम ।—केपर-स्पार्ज ; गोफर प्लैण्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह हैजा, उदरामय और आमाशय की बीमारीकी एक उत्कृष्ट दवा है ।

मिचली और वमन, रक्तमिला पाखाना, पेट चिपक जाना, बेचैनी, सारा शरीर कड़ा और बरफकी तरह ठण्ढा, पर चेहरा और आँखें चमकीली इसका निर्देशक लक्षण है ।

इसके अलावा विसर्प, सड़नेवाला जखम, ग्रन्थियोंके सुन्न हो जानेकी तरह कमजोरीके लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध।—रासटक्स इसका दोषघ्न है।

तुलनीय।—विरेट्रम ऐल्ब [दस्त, कै, खांसी और गहरी तन्द्रा Coma]।

शक्ति।— ६ ठे शततमिकसे ३० शततमिक तक।

इयुफोर्बियम आफिसिनेरम।
(EUPHORBIUM OFFICINARUM)

दूसरा नाम।—इयुफोर्बियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—युफोर्बियमके सार भाग या गोंदसे यह तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— हड्डियोंमें नाना प्रकारके विकार; कर्कटीया रोग; मोतियाबिन्दु; खांसी; माथेमें पपड़ी जमे जखम; विसर्प; आँखोंका प्रदाह; सड़नेवाले जखम; सरमें दर्द; छातीमें जलन; सर्दी; अन्त्रावर्तन प्रदाह; यक्ष्मा; उपदंश; दाँतकी बीमारियाँ; जखम; देखने या सुननेमें गड़बड़ी; मसे।

उपयोगिता और आभास।—कर्कट रोग, विषाक्त या दुष्ट-व्रण और विसर्प रोगमें भयानक असह्य जलन;—मानो रोगवाली जगहपर जलता हुआ अंगारा रखा हुआ है (जब आर्स या ऐन्थ्राक्सिनमसे लाभ नहीं होता), अस्थिक्षय (Caries) या हड्डीका सड़ना (Necrosis)। रोगकी जलन भी इससे आराम हो जाती है। छाले भरा विसर्प,—छाले मटरकी तरह और पीले रससे भरे; बूढ़ोंके गले हुए जखम आदि और खून भरे फोड़े; बहुत दिनोंके धीर गतिवाले दुरारोग्य जखम आदि,—दाँतसे काटने, अस्त्र लग जाने या फाड़नेकी तरह दर्द; सवेरे आगके पास बैठनेके कारण शरीर गर्म होनेपर, सोनेके बाद करवट बदलनेपर, पहिली बार हिलना आरम्भ करते समय और छूनेपर दर्द बढ़ जाता है और इधर-उधर हिलते डोलते रहनेपर घटता

है, इन सभी अवस्थाओंमें युफोर्बियमके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है; अधिककर मेरुपुच्छ (पीठकी रीढ़का नीचेवाला अन्तिम भाग) में दर्द,—यह बैठे बैठे उठनेपर बढ़ जाता है। मानो सब चीजें आपसमें स्क्रू से कस दी गयी हैं; दांतमें चिलक मारनेकी तरह दर्द—मानो दाँत उखाड़ा जा रहा है, मुँहमें लपदार भाव, मानो मुख और मुख-विवरसे आगकी लपट निकल रही है, मानो बहुत गर्म भोजन निगल गया है—वक्षस्थलमें ऐसा ही मालूम होता है; शय्याका स्पर्श होते ही खाँसी आने लगती है, जबतक सोया रहता है बराबर खाँसी आया करती है; मानो बिजली छू जानेके कारण एकाएक शय्यासे उठ बैठता है और ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरकी त्वचाके नीचे एक लम्बी डोरी लटकी हुई है, इत्यादि कई युफोर्बियमके प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं। कभी अंगड़ाई लेना या बदन तोड़ना; लेखकोंकी उँगलियोंका अकड़ना (Writer's Cramp) और चेतना गायब हो जानेके साथ धनुष्टंकार वगैरहके आक्षेपमें भी इससे लाभ हुआ करता है।

लक्षणावली।

मन।—हमेशा सशंकित भाव। गम्भीर स्वभाव; बातचीत करनेकी इच्छा न रहना; धीर, चिन्ताशील, निर्जनता-प्रिय पर परिश्रम करनेसे नहीं हटना चाहता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आकर बगलमें गिर जानेका उपक्रम होता है (केनाब, कोना, ड्रोसे, मेजि, रियुम ; फेरम, एसेट, स्क्विला ; जिङ्क) ; खड़े होनेवाली अवस्थामें (केनाब, क्रोटन, सिक्ली, ओलि-ऐन, ऐसिड-फास, रियुम ; स्क्रोफ्युलेरिया ; स्पाई) या वायु सेवनके लिये चलनेके समय (ऐगार, ऐब्रा, ऐङ्गस, केल्के, ड्रोसे, रेनान, रियुटा, पोडो, सिपि, सल्फ), सरमें तेजबेचैनी पैदा करनेवाला दर्द, सरके पिछले भागमें चोटकी वजहसे पैदा हुए दर्दकी तरह दर्द ; वृद्धि=सबेरे सोनेके समय (बेल, कैम्फो, कोलो, इयुफ्रे, लाई, मैग-कार्ब) और उत्तापसे (ऐकी, ब्राई, कार्बो-बेज, कैप्स, इग्ने, इपिक) ; घटता है शरीर हिलानेपर(ऐसिड-म्यू) और माथा ठण्डा करने या माथेमें ठण्डी हवा लगनेपर (ठण्डे प्रयोगसे सर-दर्दका बढ़ना=आरम)। समूचा मस्तिष्क मानो स्क्रूसे कसकर बाँधा हुआ है (कोलो, इग्ने, प्लेट)।

आँख।—आँखोंका प्रदाह, पलकोंके कोने सूखे और खुजलाते हैं (आर्जेण्ट, बेल, ऐसिड-बेन, ऐ-फ्लू, गैम्बो)। आँखकी बहुत दिनोंतक ठहरने वाली लाली (बेल, ब्राई, ब्यूप्रम, इयुफ्रे, इग्ने, मार्क, लैके, रास, थूजा)। जखम करनेवाले आँसू आँखसे गिर पड़ते हैं (युफ्रे, क्लिमेट, ड्रिजि) और रातमें आँख सट जाती हैं (बैराई, कैलके, कार्बो-वेज, इयुफ्रे, कैमो, साइक्ल्, क्रोक, इग्ने, कैलि-कार्ब, पल्स, मार्क, रास; स्टेफाई)। आँखके कोनेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पपड़ी जमती है (बैराई-म्यू, कैलके, कैमो, ड्रिजि, इयुफे, ग्रैफ, लैकेसि, पल्स, सल्फ)। आँखके सफेद अंशका मैलापन या अस्वच्छता (Opacity=कैनाब, इयुफे, कैड-सल्फ, कैलके-फ्लू, सिनारेरि-मेरि, हिप, कैलि-म्यूर, मैग-कार्ब, सेनेगा, टैरेण्ट-हिस, जिङ्क-सल्फ)। तिमिर दृष्टि (बेल, हिप, कास्टि, डैफनी, फास, प्लम्ब, टैबाक)। दूरकी चीज देखनेकी शक्तिका गायब हो जाना (Myopia=ऐगार, ऐसिड-नाई, फाइजस; पाइलो, ऐसिड-सल्फ, सिफलिन, थूजा)। दो देखना,—सामनेका मनुष्य मानो पीछे है, ऐसा मालूम होना।

मुखमण्डल।—गालमें विसर्प,—प्रदाहके साथ सूजन और उसके ऊपर रस भरे पीले रङ्गके मटरकी तरह छाले निकल आते हैं (टेरिब, आर्निका, रास; कैन्थ),—बेधने और खोदनेकी तरह दर्द। मुखमण्डल ज्वाला से भरा।

मुख-विवर।—मुँह सूखा पर प्यास नहीं रहती (ऐड्रस, बेल, कैनाब, काक्यु, लाई, नक्स-मस, नक्स-वोम, ऐसिड-फास, सेबाड)। सिहरावन, मिचली और पाकस्थलीमें नख गड़ जानेकी तरह दर्द, इसके साथ ही मुंहसे लार जाना (आर्जेण्ट)। लार नमकीन मालूम होती है (हायो, मार्क-सल्फ, फास, सिपि, वेरेट, वार्बेस्क)। दाँतमें दर्द,—पीसने और तेज बेधनेकी तरह दर्द,—दाँतमें कोई चीज लगने या चबानेपर तकलीफ बढ़ जाती है,—या भोजनके बाद कम्पन और इसके साथ ही माथा और गण्डास्थिमें दर्द, दाँत टूट जानेवाले (क्रियो, मेजेर, प्लम, सेबाड, सिपि, सल्फ)। ऐसा मालूम होता है मानो पाकस्थलीसे आगकी लपट निकल रही है और गलेसे लेकर पाकाशय तक जलन होती है—मानो जलता हुआ अंगारा लग गया है, मानसिक उद्वेग, कम्पन और मुँहमें पानी भर आता है (Waterbrase)।

हैं, इन सभी अवस्थाओंमें युफोर्बियमके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है; अधिककर मेरुपुच्छ (पीठकी रीढ़का नीचेवाला अन्तिम भाग) में दर्द,—यह बैठे बैठे उठनेपर बढ़ जाता है। मानो सब चीजें आपसमें रस्सीसे कस दी गयी हैं; दांतमें चिलक मारनेकी तरह दर्द—मानो दाँत उखाड़ा जा रहा है, मुँहमें लसदार भाव, मानो मुख और मुख-विवरसे आगकी लपट निकल रही है, मानो बहुत गर्म भोजन निगल गया है—वक्षस्थलमें ऐसा ही मालूम होता है; शय्याका स्पर्श होते ही खाँसी आने लगती है, जबतक सोया रहता है बराबर खाँसी आया करती है; मानो बिजली छू जानेके कारण एकाएक शय्यासे उठ बैठता है और ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरकी त्वचाके नीचे एक लम्बी डोरी लटकी हुई है, इत्यादि कई इयुफोर्बियमके प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं। कभी अंगड़ाई लेना या बदन तोड़ना; लेखकोंकी उँगलियोंका अकड़ना (Writer's Cramp) और चेतना गायब हो जानेके साथ धनुष्टंकार वगैरहके आक्षेपमें भी इससे लाभ हुआ करता है।

लक्षणावली।

मन।—हमेशा सशंकित भाव। गम्भीर स्वभाव; बातचीत करनेकी इच्छा न रहना; धीर, चिन्ताशील, निर्जनता-प्रिय पर परिश्रम करनेसे नहीं हटना चाहता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आकर बगलमें गिर जानेका उपक्रम होता है (कैनाब, कोना, ड्रोसे, मेजे, रियुम; फेरम, एसेट, स्किला; जिङ्क); खड़े होनेवाली अवस्थामें (कैनाब, क्रोटन, सिक्लि, ओलि-ऐन, ऐसिड-फास, रियुम; स्क्रोफ्युलेरिया; स्पाई) या वायु सेवनके लिये चलनेके समय (ऐगार, ऐम्ब्रा, ऐङ्गस, कैल्कि, ड्रोसे, रैनान, रियुटा, पोडो, सिपि, सल्फ), सरमें तेजबेचैनी पैदा करनेवाला दर्द, सरके पिछले भागमें चोटकी वजहसे पैदा हुए दर्दकी तरह दर्द; वृद्धि=सवेरे सोनेके समय (बेल, कैम्फो, कोलो, इयुफ्रे, लाई, मैग-कार्ब) और उत्तापसे (ऐको, व्राई, कार्बो-वेज, कैप्स, इग्ने, इपिका); घटता है शरीर हिलानेपर (ऐसिड-म्यू) और माथा ठण्ढा करने या माथेमें ठण्ढी हवा लगनेपर (ठण्ढे प्रयोगसे सर-दर्दका बढ़ना=आरम)। समूचा मस्तिष्क मानो रस्सीसे कसकर बाँधा हुआ है (कोलो, इग्ने, प्लैट)।

मलद्वारमें जलन होती है, कभी कभी बहुत ज्यादा परिमाणमें फेन-भरा कीचड़ की तरह दस्त हुआ करता है। (कैल्के, आयोड, हिप, पेट्रोसेलिन, चेलिडो)।

श्वास-यन्त्र ।—वायुनली और छातीके भीतर जलन और सुरसुरी होकर बार बार सूखी खांसी होती है। वक्ष स्थानमें दबावकी वजहसे दिन रात खुसखुसी खांसी आया करती है, और सवेरे बार बार श्लेष्मा निकलता है। तकियेमें माथा लगते ही बहुत जोरकी खांसी आरम्भ हो जाती है और जब तक रोगी सोया रहता है, तबतक खांसी नहीं जाती। श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी—मानो वक्षस्थल पूरी तरह नहीं फैलता,—दम घुटनेवाली सांस लेनेके समय बाईं ओरकी पेशीमें खींचन मालूम होती है,—खासकर दाहिनी करवट लेटनेपर। ऐसा मालूम है, मानो रह रहकर एकाएक वक्षस्थल फैल जाता है (थूजा)। ऐसा मालूम होता है, मानो यकृतका कोई ग्वास अंश वक्षके भीतरी भागसे मिल गया है, विश्रामके समय वक्षस्थलके बाएं पार्श्वमें छुरी मारनेकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब, स्क्विलि); इधर उधर करवट बदलनेपर आराम मिलता है। वक्षके बीचके स्थानमें उत्ताप मालूम होता है, मानो कोई गर्म पदार्थ निगला जा रहा है। छातीमें जलन मालूम होती है (आर्स, कार्बो-वेज, सल्फ, कोना, कैन्थ)।

प्रत्यङ्गादि ।—सवेरे शय्यामें सोनेके समय मेरुदण्डके मध्य भागमें अकड़नकी तरह दर्द होता है। कन्धेकी सन्धिके स्थानपर पक्षाघातसे पैदा हुई अकड़न मालूम होना, स्थिर रहनेपर बढ़ना और घूमनेपर घटना। बहुत देरतक लिखनेके बाद बाहुके अगले भागमें अकड़नकी तरह मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो वंक्षण-सन्धि अपने स्थानसे हट गयी है। रातमें उरुमें जलन मालूम होती है। सवेरे दोनों पैरोंमें ठण्डा पसीना होता है (कार्बो-ऐन), निम्न बाहुमें लाल रेखा निकल आती है और उस रेखाको छूनेपर खुजली आरम्भ हो जाती है। वायु सेवनके लिये चलनेके समय दाहिनी एँड़ीमें बहुत दर्द होता है। बैठनेके समय प्रायः पैरका निचला अंश सुन्न हो जाता है। हाथ पैरोंमें दर्द या वातका दर्द, विश्रामके समय बढ़ जाता है और शरीर हिलानेपर घटता है।

त्वचा ।—छाले भरे विसर्प—पीले रससे भरा मटरकी तरह छाला निकलता है और उसमें बहुत जलन होती है और ऐसा दर्द होता है मानो कुछ गड़ गया है। हड्डीके गले हुए जखम आदि—उनमें दांतसे काटने, कतरने या फाड़नेकी तरह दर्द होता है; वृद्धि=सवेरे, आगके पास बैठने;

पाकस्थली ।— मुँहका स्वाद कड़वा, झालदार (ऐम्ब्रा, ऐसाफिट, कलि-आयोड, ऐसिड-म्यू) और तीता। ठण्ढो पानीय पीनेकी बहुत अधिक स्पृहा (ऐङ्गस, बोवि, कैमो, मार्क, ओलि-ऐन, ऐसिड-फास, सेबाड, वेरेट)। शून्य उद्गार (ऐगार, कास्टि, ग्रेनेट, मार्क, ओलि-ऐन, सेबाई, कैल्के-कार्ब, गैम्बो, ह्वाइपिर, कैलि-बाई, ऐसिड-आक्स, पोडो)। दस्त और कै, पाकाशयमें चोट लगनेकी तरह दर्द, ऊपरी पेट मानो झूल पड़ता है (इपिक, मार्क, स्ट्रिं, टैबाक, थीया और निचले पेटमें ऐसा दर्द होता है मानो भीतरकी ओर खिंच रहा है=क्यूप्रम, प्लम्बम, पल्स)। पाकस्थलीमें सङ्कोचनको वजहसे अकड़नकी तरह (बेल, कार्बो-ऐन, नाइट्रम, नक्स-बोम, फास, प्लैट, ब्रोम, कलि-बाई, फाइटो)। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ मरोड़ खा रहा है (कार्बो-ऐन, ककिंयु, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, ऐसिड-सल्फ, साइलि)। पाकाशय और उदरोर्द्ध प्रदेशमें भारी जलन मालूम होती है (आर्स, कैन्थ, कैप्स, कार्बो-वेज, लोरो, मार्क, नाइट्रम ; ब्रोम, ऐसिड-म्यू, ऐसिड-आक्स, नक्स-युग, फास, सेबाड)।

अंत्राशय ।—पेट मानो चपक जाता है (बेल, कोलो, प्लम, सेबाड)। पेट फूल उठता है और रह रहकर पेटमें भयानक दर्द होता है,—मानो उसके तन्तु सब छिन्न विच्छिन्न हो रहे हैं या इस ढङ्गका दर्द मानो ऊपरकी ओर धक्का दे रहा है,—जानु और कोहनी एकत्रकर उसपर माथा रखनेसे (अधिकांश स्थानोंमें) लाभ मालूम होना। सवेरे ऐसा मालूम होता है, मानो जुलाब देकर पेट खाली कर दिया गया है (लैके, सिपि, आर्नि, सिना ; ऐसिड-फ्लू, ह्विप, मेजेर, पल्स, स्क्विला,)। पेटमें जलन होती है (लैके, लोरो, सेबाड, सिकेल, सिपि, आर्नि)।

मल ।—कड़ा मल भी बड़ी तकलीफसे निकलता है। कूथनके साथ बार बार पानीकी तरह पाखाना। मल पहले पतला फिर गांठ गांठ पैदा हो जाता है (रियूम ; सेबाई ;—पहला अंश काला और कड़ा इसके बाद दूधकी तरह सफेद रंगका—इस्क्यू—पहला अंश कोमल मलमय, इसके बाद बाकी अंश पतला पानीकी तरह=बोवि)। पाखानेका बहुत अधिक वेग और गोंदकी तरह दस्त होता है और मलान्त्रमें सुरसुरी होती है (ऐसिड-कार्बोलिक, इस्क्यु)। ऐसा मालूम होता है, मानो तलपेटमें जखम हो गया है, और

मलद्वारमें जलन होती है, कभी कभी बहुत ज्यादा परिमाणमें फेन-भरा कीचड़ की तरह दस्त हुआ करता है। (कैल्के, आयोड, हिप, पेट्रोसेलिन, चेलिडो)।

श्वास-यन्त्र ।—वायुनली और छातीके भीतर जलन और सुरसुरी होकर बार बार सूखी खांसी होती है। वक्ष स्थानमें दबावकी वजहसे दिन रात खुसखुसी खांसी आया करती है, और सवेरेबार बार श्लेष्मा निकलता है। तकियेमें माथा लगते ही बहुत जोरकी खांसी आरम्भ हो जाती है और जब तक रोगी सोया रहता है, तबतक खांसी नहीं जाती। श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी—मानो वक्षस्थल पूरी तरह नहीं फैलता,—दम करनेवाली सांस लेनेके समय बाईं ओरकी पेशीमें खींचन मालूम होती है,—खासकर दाहिनी करवट लेटनेपर। ऐसा मालूम है, मानो रह रहकर एकाएक वक्षस्थल फैल जाता है (थूजा)। ऐसा मालूम होता है, मानो यकृतका कोई खास अंश वक्षके भीतरी भागसे मिल गया है, विश्रामके समय वक्षस्थलके बाएं पार्श्वमें छुरी मारनेकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब, स्पाइजि); इधर उधर करवट बदलनेपर आराम मिलता है। वक्षके बीचके स्थानमें उत्ताप मालूम होता है, मानो कोई गर्म पदार्थ निगला जा रहा है। छातीमें जलन मालूम होती है (आर्स, कार्बो-वेज, सल्फ, कोना, कैम्फ)।

प्रत्यङ्गादि ।—सवेरे शय्यामें सोनेके समय मेरुदण्डके मध्य भागमें अकड़नकी तरह दर्द होता है। कन्धेकी सन्धिके स्थानपर पक्षाघातसे पैदा हुई अकड़न मालूम होना, स्थिर रहनेपर बढ़ना और घूमनेपर घटना। बहुत देरतक लिखनेके बाद बाहुके अगले भागमें अकड़नकी तरह मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो वंक्षण-सन्धि अपने स्थानसे हट गयी है। रातमें उसमें जलन मालूम होती है। सवेरे दोनों पैरोंमें ठण्डा पसीना होता है (कार्बो-एन), निम्न बाहुमें लाल रेखा निकल आती है और उस रेखाको छूनेपर खुजली आरम्भ हो जाती है। वायु सेवनके लिये चलनेके समय दाहिनी एँड़ीमें बहुत दर्द होता है। बैठनेके समय प्रायः पैरका निचला अंश सुन्न हो जाता है। हाथ पैरोंमें दर्द या वातकी दर्द, विश्रामके समय बढ़ जाता है और शरीर हिलानेपर घटता है।

त्वचा ।—छाले भरे विसर्प—पीले रससे भरा मटरकी तरह छाला निकलता है और उसमें बहुत जलन होती है और ऐसा दर्द होता है मानो कुछ गड़ गया है। हड्डीके गले हुए जखम आदि—उनमें दांतसे काटने, कतरने या फाड़नेकी तरह दर्द होता है; वृद्धि = सवेरे, आगके पास बैठनेपर शरीर गर्म

होनेपर ; सोनेपर, करवट बदलनेपर, पहली बार हिलना आरम्भ करनेपर और छूनेपर ; घटना—शरीरको हिलाने और चलने फिरनेपर । कर्कट, विषैला फोड़ा या दूषित फोड़ा और विसर्प आदि रोगमें तेज जलन, मानो रोगवाली जगह पर जलता हुआ अङ्गारा रखा हुआ है (आर्स और ऐन्थ्राक्सिन के प्रयोगसे यदि जलन न घटती हो तो युफोर्बिया—हेटोरोडाक्स)। मेरुदण्डकी अन्तिम हड्डी या पिक-चंचु-अस्थि प्रदेशमें दर्द,—बैठनेवाली अवस्था त्यागकर उठनेपर दर्द बढ़ जाता है (बैठनेवाली-अवस्थामें दर्द, चलने या छूनेपर दर्दका बढ़ना = कैलि-बाई)।

वृद्धि ।—शरीर गर्म होनेपर ; सोनेके बाद हिलना आरम्भ करनेपर, करवट बदलनेपर, छूनेपर और विश्राम करनेके समय ।

घटना ।—शरीर हिलाने और ठण्डा प्रयोग करने पर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐकालिफा, क्रोटन-टिग, मैन्सि, कोलचि, ऐण्टि-टार्ट, वेरेट, यैफाई, लैके, पल्स, सिपिया और सलफरके बाद उपयोगी है ।

दोषघ्न या प्रतिविष ।—कैम्फो ; ओपि ।

शक्ति ।—३ रे दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रम तक ।

क्रियोका स्थायित्व ।—५० दिन ।

ड्युफोर्बिया पेप्लस ।

(EUPHORBIA PEPLUS)

दूसरा नाम ।—पेटि-स्पार्ज ।

उपयोगिता और आभास ।—गलेका जखम, विसर्प आदि लक्षणमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—उद्भिद रस और निम्न शक्ति ३x—६x ।

इयुफोर्बिया पिल्यूलिफेरा ।
(EUPHORBIA PILULIFERA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

उपयोगिता और आभास ।—दमा, ब्राङ्काइटिस, जखम करने बाद दरका स्राव, प्रमेह ; सर्दी-गर्मी ; श्वास-कष्टता ; मूत्रनाली प्रदाह ; पेशाब रनेके समय काँखना और असह्य यन्त्रणा ; चोटकी वजहसे रक्तस्राव वगैरह चणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुफ्रेशिया आफिसिनेलिस ।
(EUPHRASIA OFFICINALIS)

दूसरा नाम ।— आइ ब्राइट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— कोंका प्रदाह ; मोतियाबिन्दु ; सर्दी ; शूल ; आँखोंका प्रदाह ; चक्षुरोग ; न्थियोंका बढ़ना ; आँसू-बहना ; खसड़ा ; कर्णशूल ; व्रण ; पलकका गिरना ; तान्वका अपने स्थानसे हटना ; गण्डमाला ; मापक-धातु ; तारका प्रदाह र बहुत-सी आँखकी बीमारियोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—*गिरने, चोट खाने या रगड़ खा* नेके कारण बीमारियाँ या किसी बाहरी अंगकी क्षति ; श्लैष्मिक झिल्लियोंका प्रतिश्याय या सर्दी, विशेषकर आँख और नाककी ; आँखसे त ज्यादा जखम कर देनेवाला आँसू बहना और नाकसे पानीकी तरह स्राका स्राव, आँखसे लगातार पानी बहा करता है और सवेरे आँखें जुड़ी : दिखाई देती हैं ; *पलकोंका फूलना, लाल होना और उनमें जलन* ; सवेरे रसे खाँसी आया करती है और बहुत ज्यादा मात्रामें कफ निकलता है ।

इसके साथ ही नाकसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह सर्दीका स्राव हुआ करता है। गर्म दक्खिनी हवा लगनेसे स्राव होना बढ़ जाता है, सवेरे पहली बार भोजन कर लेनेपर गलेसे बदबूदार श्लेष्मा साफ़ करनेकी चेष्टा करनेपर गला रुक जाना है और अन्तमें सब खायी हुई चीजें कै हो जाती हैं; इच्छा पूर्वक खाँसनेपर भी बहुत ज्यादा मात्रामें बलगम निकलता है, सवेरे शय्यासे उठनेपर बढ़ जाता हैं; आँख, नाकके सर्दीके साथ ही रजोलोप, आँखसे बहुत ज्यादा परिमाणमें त्वचाको क्षय करनेवाला आँसूओंका स्राव होना; ऋतु नियमित समयपर होता है पर बहुत तकलीफ हुआ करती है और स्राव केवल एक घण्टेके लिये होता रहता है या कई दिनोंके विलम्बसे होता है; स्राव बहुत थोड़ा और केवल एक दिन ही होता है; हूप खाँसी,—खाँसनेके समय बहुत ज्यादा आँसू निकलते हैं (स्क्विला); सिर्फ दिनके समय खाँसी आया करती है; नाकके दाहिने पार्श्वमें चिपटा कर्कटका अर्बुद; बवासीर,—मलद्वार के चारों ओर एक तरहकी गोटी या खोल बाहर निकलती है; मानो आंखमें धूलके कण गिर गये हैं, या आँखपर मानो एक केशका टुकड़ा लम्बा लटक रहा है, ऐसा मालूम होता है मानो ऊपरी ओंठ काठका बना हुआ है; निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय बार बार जम्हाई इत्यादि आया करती है इत्यादि इयुफ्रेशियाके कई प्रकृतिगत निर्णायक लक्षण प्रसिद्ध हैं।

लक्षणावली।

मन।—स्मरण-शक्तिका बिगड़ना; मस्तिष्कमें मैलापन; चारों ओर क्या हो रहा है, यह उसकी समझमें कुछ भी नहीं आता। आलसी, जड़ भावापन्न और अवसाद-वायु-ग्रस्त चित्त; सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता है (बैप, कैलि-बाई, लिलियम-टाई, नक्स-मस, ओपि, फास, ऐ-फास, सिपि, स्टेफाई)। बातचीतसे अनासक्ति (ऐमोन-म्यू, आर्जेण्ट-नाई, सिङ्को, इग्ने, मैग-कार्ब, मेन्सि, आफसाई, फास, स्टेन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—माथेमें भार मालूम होता है और गिरना ही चाहता है। सर्दीके साथ सन्ध्याके समय मस्तिष्कको जड़ता (सिपि, फास) और माथेमें चोटकी तरह जैसा दर्द (इयुफोर्ब, वेरेट, हेलिबो)—सोनेपर बढ़ना (बेल, कैम्फो, कोलो, लाई, मैग-कार्ब, ; सोनेपर घटना=ऐथा-मेण्टा, कैल्के-फास,कूरमस,हेलिबो, इग्ने, ओलियेन)। पीसनेकी तरह सर दर्द, आलोकातङ्क

(Photophobia = केलि-कार्ब, पल्स) और ललाटमें उत्ताप मालूम होना ; ऐसा मालूम होता है मानो माथा फट जायगा (कोस, नेट्र-म्यू, नक्स)। सरका काँपना देखकर माथेकी टपक बाहरसे ही स्पष्ट दिखाई देती हैं (आर्नि, बेल, कोम्फो, कैल्के, कर्कियु, लैके, कैल्के-कास्टि, डिजि, कोणि, टैरे, थेरेट, जिङ्क)।

आँख।—आँखका प्रदाह,—बहुत ज्यादा त्वचाको चय करनेवाला आँसू निकलता है और नासा रन्ध्रसे थोड़ा पानी गिरता है (सिपाके विपरीत); आँखोंमें लगातार आँसू सञ्चित हुआ करते हैं और सवेरे ऐसा दिखाई देता है मानो आँखें जुड़ गयी हैं। (आर्जेण्ट-नाई, पल्स, कैलि-कार्ब कैल्के, क्लिमेट, सल्फ, रास); आँखकी पलकें फूली, लाल और जलन-भरी (कैल्के, इग्ने, क्रियो, लैके, मार्क, नक्स, सल्फ, थूजा)। चोट लगनेकी वजहसे आंखोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है और वह लाल हो जाती है। सर-दर्दके साथ पलकोंके किनारे जखम-भरे और प्रदाह-युक्त हो जाते हैं। हवा लगनेपर आँसुओंका स्राव बढ़ जाता (क्लिमेट, क्लोरम)। आँखमें करकराहट होती है,—मानो उसमें बालूके कण प्रवेशकर गये हैं (ऐल्यू, आर्स, कास्टि, डिजि, इग्ने, क्रियो, लैके, मार्क, ओलियेन, फास, फाइटो, सल्फ)। ऐसा दर्द मानो आँखोंमें छूरी गड़ा रहा है। बहुत चमकीली रोशनीकी ओर देखनेपर यह दर्द बढ़ जाता है (ऐग-नस, आर्स, केलि-कार्ब, नेट्र-सल्फ, पल्स, रोडो, सिकुटा, सल्फ, टैरे)। आँख और पलकोंसे बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा निकलता है,—कभी कभी खून-मिला श्लेष्मा भी निकला करता हैं (सफेद आभा लिये श्लेष्मा इकट्ठा होता है और बाहर निकलता है = बेराइ-म्यू, कैल्के, कैमो, डिजि, इयुफोर्ब, ग्रैफ, लैप्पियु, पल्स, सल्फ,)। आलोकातङ्क अर्थात रोशनीका सहन न होना—खासकर दिनकी रोशनी और धूपमें (दिनकी रोशनी = ऐमोनियेक, ऐण्टि-क्रूड, ग्रैफ; हेलिबो, हिप, नक्स, फास, ऐ-फास, सिपि, साइलि ; धूपमें = बार्या, कैस्टोर,—दीयेकी रोशनीमें = बोर, कैस्टोर, हिप,)। ऐसा मालूम होता है मानो केशका एक टुकड़ा आँखपर भूल रहा है और उसे हाथसे हटाना होगा।

कान।—कानमें दर्द,—कर्ण-पटहमें वेधनेकी तरह दर्द, (ऐमोन-म्यू, बेल; हेलिबो, ऐ-हाइड्रो, लैक्टो, मैग-म्यू, ओलि-ऐन, फैलेन, प्रूम, रेनान, रोडो, साइलि)।

नाक ।—सर्दी (Coryza),—जोरसे खांसी और बहुत ज्यादा परिमाणमें कफ निकला करता है और सवेरे लगातार पानीकी तरह श्लेष्मा निकला करता है। (बेराई-आयोड, डिजि, प्लम, फास, रेनान-स्क्लि, तेडो, सैबाड, ब्रोम, मार्क-कोर, स्पाइजि); गर्म दक्खिनी हवा लगनेपर बढ़ना। दिनमें लगातार पानीकी तरह श्लेष्मा बहा करता है और रातमें श्लेष्मा सूखकर नाकका छेद बन्द हो जाता है (नक्स-वोम)। नासापुटके ऊपर पीब-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं (ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-क्रूड, बोर; क्लिमैट, केलि-कार्ब लैके, नेट्र-कार्ब, रास)। आंशिक पक्षाघात (जेलसि, कास्टि)।

मुखमण्डल ।—उत्ताप और जलनके साथ बोलने या चबानेके समय ऐसा मालूम होता है मानो गाल अकड़े हुए हैं (सर्दीमें)। चेहरा लाल, चेहरे पर खसड़ेकी तरह (Miliary) दाने निकल आते हैं और उनमें पानी लगने पर वे लाल हो उठते हैं और उनमें जलन होती है (जिन्सेङ्ग) तथा गर्म प्रयोग करनेपर उनमें खुजली होती है। ऊपरी ओंठ ऐसा मालूम होता है, मानो काठका बना हो। तोतलाना (ऐको, वेल, बोवि, स्ट्रैमो, वेरेट) और बोलते बोलते बार बार अटक जाता है (कैनाब, कास्टि, मेजेर, ओपि, रियुटा)। जीभ अकड़ी हुई, (निकोल, सिपि, लाई, लोरो) और गाल अकड़ा रहनेकी वजहसे बोलनेमें तकलीफ होती है। पानी आदि पीनेके समय गलेमें "कोंक कोंक" शब्द होता है। सवेरेके भोजनके बाद कण्ठसे कड़वा श्लेष्मा निकलनेके समय गला रुक जाता है और खायी हुई चीजें सब कै हो जाती हैं (ब्राई); धूम्रपानके बाद मुँहका स्वाद कड़वा हो जाता है और मिचली पैदा हो जाती है।

मलद्वार और मल ।—बैठनेके समय मलद्वारमें बहुत दबाव मालूम होता है। बवासीर,—मलद्वारके चारों ओर बहुत दिनोंकी समतल पीठवाली गुटिकाएँ—रातमें इन दानोंमें तेज जलन होती है (ऐसिड-नाई, थूजा)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—संध्याके बाद, शय्यापर सोनेपर एकाएक जननेन्द्रिय आदि भीतरकी ओर जो [illegible] मा [illegible] नार्बो, म्यूनस) और तलपेटकी हड्डीपर बहुत [illegible] । है [illegible] मेढ़ त्वचाके आवरणमें दुर्दमनीय खुज[illegible] चोट [illegible] । मेह रोगकी

वजहसे मसे, खुजली और उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द,—छूनेपर जलन होती है, और ऐसा मालूम होता है, मानो खाल उजड़ गयी हैं। (ऐण्टि-टार्ट, अरम-म्यूर-नेट, कैलि-आयोड, थूजा; स्टैन-कार्ब); अण्डकोषके ऊपर खींचन (बेल, मार्बा, क्रोटन, नक्स; ओलि-ऐन, प्लम्ब, रोडो, थूजा, जिङ्क)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु,—नियमित समयपर होता है, पर इस समय दर्द बहुत तेज होता है,—प्राय: एक घण्टा रहता है या कई दिन बाद विलम्बसे फिर होने लगता है; स्राव बहुत थोड़ा और कुल एक दिन होता है (बेराई); ऋतुरोधके साथ आंख और नाकसे सर्दी बहा करती है; बहुत ज्यादा त्वचाको चय करनेवाला आँसूका स्राव होता है। चलनेके समय जननेन्द्रिय प्रदेशमें सुई वेधनेकी तरह दर्द और खुजली पैदा हो जाती है।

श्वास-यंत्र।—गला साफ करनेके लिये खांसते समय बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकला करता है—सवेरे शय्यासे उठनेपर बढ़ता है (ऐल्यू, कैल्के, लेके, पल्स, ऐमोन-कार्ब, हिप, इपिका, मार्क, नेट्र-कार्ब, सेनेगा, साइलि,—रातमें सोनेके समय=ऐमोन-कार्ब, अरम, मार्क, नाइट्रम, रास)। क्रुप खांसी,—खांसनेके समय बहुत ज्यादा आंसू बहते हैं (स्क्विला; नेट्र-म्यू): केवल दिनमें खांसी आती है (ऐमोन-कार्ब, आर्जेण्ट; कैल्के, नाइट्रम, फेरम, नेट्र-म्यू, फास, स्टैन॰)। खांसी,—सवेरे सोकर उठनेके समयसे आरम्भ होकर जबतक फिर नहीं सो जाता, तबतक खांसी आया करती है; दिनमें श्लेष्मा निकलता है, रातमें सूखी खांसी आती है; रोगी बहुत हांफ उठता, है, वायुनालीमें सुरसुरी होती है, धूम्रपानसे बढ़ती है; भोजन करनेके समय या श्लेष्मा या पानीकी तरह वमन होनेपर घटता है; एकाएक बवासीर रुक जानेपर खांसी पैदा हो जाती है, इसके साथ ही बहुत सर्दी रहती है; दिनमें बड़ी तकलीफसे श्लेष्मा निकलता है और आंखसे पानी निकला करता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गिरने, दबने या किसी दूसरी तरहसे चोटके कारण वाह्य वहिरंगमें जखम आदि (आर्नि, केलेन, हाइपिर, सिम्फिट)। चलनेके समय ऊरुके पीछे और एँड़ीकी कण्डरा या पेशीमें बहुत खींचन होती है (ऐमोन-म्यू, कास्टि)। किसी एक अङ्ग या प्रत्यङ्गके नीचेसे ऊपरकी ओर ऐसी सुरसुरी मालूम होती है, मानो चींटी रेंग रही है और वह अङ्ग सुन्न हो जाता है (आर्नि, साइक्यु, कोलचि, इग, ओलि-ऐन, ऐ-फास, प्लेट, प्लम्ब, रास, सिकेलि; मोलेनम-नाई, स्टैफाई, स्ट्रैम, टैबाक)।

निद्रा ।—वायु सेवनके लिये टहलनेके समय बार बार जम्हाई आती है (इयुफोर्ब, रात्रि २ बजेके बादसे ६ बजे तक) और मानो डरकर बार बार नींद खुल जाती है। डरावने सपने देखता है और बार बार चौंक उठता है और नींद खुल जाती है।

वृद्धि ।—संध्याके समय, सोनेके समय, घरमें रहनेके समय, उत्तापसे, सर्दी लगनेपर और दक्खिनी हवा लगनेपर, छूनेपर। सोनेपर सर्दी बढ़ती है और खांसी कम हो जाती है। सोने बाद सभी लक्षण बढ़ जाते हैं (लैके) और शय्यासे उठनेपर बहुतसे लक्षण घटते हैं।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—प्रतिविष या दोषघ्न=कैम्फो, पल्स, आँखकी बीमारीके सम्बन्धमें—युफ्रेशिया पलसेटिलाके सदृश गुणवाली है। आँखकी बीमारीके सम्बन्धमें ऐलियम-सिपा ठीक इसके विपरीत है,—अर्थात आँखसे तो अनुग्र जलका स्राव होता है और नाकसे जखम पैदा कर देनेवाला कषाय गुण विशिष्ट श्लेष्माका स्राव होता है, पर हाइड्रोफिलम सम्पूर्ण रूपमें सदृश गुण-युक्त है, अधिक कर इथ्यू, आर्जिण्ट-नाई, आर्स, हिप, कैलि-आयोड, मार्क-कोर, पल्स, डिजि, टेबाक वगैरह इसके साथ तुलनीय हैं।

शक्ति ।—२ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—२० से ३० दिन।

इयुपियोनम ।
(EUPIONUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—काठसे तैयार हुए अलकतरेको चुआनेपर, दो तरहका तेल तैयार होता है—एक भारी और दूसरा बहुत हलका ; इस भारी तेलसे क्रियोजोटम और हलके तेलसे इयुपियोनम तैयार हुआ करता है।—क्लार्क।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—रजःस्वल्पता ; दमा ; ऐंठन ; स्वप्न ; नाकसे रक्त स्राव, ग्रन्थियोंका फूलना ;

रक्तस्राव ; श्वेत प्रदर ; रजसाधिक्य या जरायुसे रक्तस्राव ; सर दर्द ; स्नायुशूल, रातमें पसीना ; क्षय-कास ; दन्तशूल ; अर्बुद ; अनुकल्परज्ञ: ।

उपयोगिता और आभास ।—स्त्री-जननेन्द्रिय ही इसकी क्रियाका केन्द्रस्थल है, और जरायु भ्रंश, पीली आभा लिये प्रदरके स्रावके साथ कमर में दर्द : दोनों योनि द्वारोंमें दर्दके साथ बार बार पेशाब होना ; किसी अवलम्बनपर झुककर बैठनेपर कमरका दर्द घट जाता है ; ऋतु बहुत जल्दी जल्दी प्रकट होता है और स्राव बहुत ज्यादा या पतला हो जाता है ; थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बहुत ज्यादा पसीना होता है। अश्लील सपने देखना, ऐसा मालूम होता है मानो समूची देह मांड़ जैसे पदार्थसे बनी है, वगैरह-कई इयुपियोनमके प्रकृतिगत निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—शरीरका ऊपरी अंश दाहिनी ओरसे बाईं ओर घुमानेपर सब अन्धकारमय (लैक-कैन, लाई, पल्स) हो जाता है। शय्यापर उठकर बैठ जानेसे ऐसा मालूम होता है मानो समूचा सर चक्कर खा रहा है (बेल, ग्रैफ़, पेट्रोल, रास)। ललाटमें टपककी तरह दर्द,— सोनेपर दर्द घट जाता है (ऐथेमेन, कैल्के-फास, कूप्रम, हेलिबो, इग्ने, ओलि-ऐन)। ब्रह्मतालुमें उत्ताप मालूम होता है। सर दर्दके समय ऐसा मालूम होता है मानो कोई सरके केश खींच रहा है (ऐको, ऐलू, कैल्, चायना, कैल्के-कास्टि, इण्डिगो, रास, सेलिन) ; ऐसा मालूम होता है, मानो गर्दनके पीछे वाले भागकी पेशी कोई खींच रहा है (आर्जेण्ट, ग्रैफ, लैके, मैग-कार्ब, नाइट्रम, सार्ड, वेरेट) और आँसू बहने लगते हैं (इयुजि, इग्ने, पल्स, स्पिञ्जि,) ; ब्रह्मतालुसे प्रत्यङ्गोंके भीतर होकर उदर और जननेन्द्रिय तक सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। माथेमें जगह जगह दर्द मालूम होता है,—मानो इन सभी अंशोंमें फोड़े हो रहे हैं।

आँख ।—ऐसा मालूम होता है मानो आँखके ऊपर कुछ लगा हुआ है और इसीलिये बार बार हाथसे आँख रगड़नी पड़ती है, आँसू बहना,—निर्मल हवामें बढ़ जाता है, और घरके भीतर घट जाता है (कैल्के-फैल्-न, फास, पल्स, रियुम, रियुटा, सेबाड, सेनेगा, सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा)। सभी चीजें मलिन मालूम होती हैं। ऐसा मालूम होता है

मानो घूंघटके भीतरसे देख रहा है (बार्बा, कोस्टि, क्रोक, क्रियो, मार्क-कोर, पेट्रोल, फास, रास, सल्फ)।

नाक।—बार बार छींक,—जितनी ही बार नाक छिड़कता है उतनी ही बार छींक आती है। सवेरे पतली सर्दी निकलती है और बार बार छींक आती है (सिक्लमेन, आर्स, कैलेड, ड्रोसे, क्रियो, स्विला, स्टैफि)। नाक छिड़कनेपर नाकसे पतला तरल खून निकलता है (आर्जेण्ट, बैराई, स्क्वि)। ऋतुबंद हो जानेपर नाकसे खून गिरता है (ब्राई)

मुँहके भीतर।—दोनों हनु संयुक्त करनेपर दाँतपर दाँत जुड़ जाते हैं। सवेरे ऐसा मालूम होता है मानो दाँत सब किसी कोमल पदार्थमें सन्निविष्ट हैं—भोजन कर लेने बाद यह अनुभव घट जाता है। दाँत सब उठे और मसूढ़े फूले मालूम होते हैं। समूची जीभ लाल और ऊँचे काँटोंसे भरी,—मानो जीभपर मछलीके अण्डे छिड़के हैं। सवेरे गलेमें कड़वा स्वाद भरा श्लेष्मा संचित रहता है और कितनी ही बार खाँसनेपर निकलता है।

पाकाशय।—डकार,—खायी हुई चीजका स्वाद-मिला (ऐलो, ऐमोन-कार्ब, ब्राई, कैल्के, कास्टि, कैमो, इयुफ्रे, लैके, लोरो, फास, पल्स, ऐसिड-आक्साल, रास, सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा,)। मिचली,—सीधे होकर बैठने; प्यास, बहुत ज्यादा ऋतुस्राव और इसके साथ ही हाथ पैर काँपते हैं; दाहिने स्तनके नीचे छुरी मारनेकी तरह तकलीफ मालूम होती है (लैक-कैन, हाइड्रास्ट)। भीतरी शीत या कम्पनके साथ पाकस्थली आध्मान (फूलना) और भारयुक्त मालूम होती है।

अन्त्राशय।—बार बार आँतोंमें गड़गड़ आवाज—हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द (ऐनाक, ऐङ्गस, ऐसिट-क्रूड, ब्राई, कार्बो-ऐन; कार्बो-वेज; सिक्लम; हिमेटक्स; लाई; नेट्र-म्यू; नक्स-वोम, ओलियेन, प्लम्ब, पलस, सिपि; साइलि सिड-सल्फ, कास्टि; साइक्यू, ऐल्यू, ऐलो; इयुफोर्ब, इयुफ्रे, ग्रेटी, नक्स-वोम, स्टैन)। वायु निकलनेपर दर्द घट जाता है (नेट्र-कार्ब, नाइट्रम) अन्त्राशयमें दर्द,—खाँसनेपर (आर्स, ऐनाक, बेल, कैल्के, कैन्थ, कक्यु, नक्स वोम); छींक आनेपर (बेल, कैन्थ, कैमो) और नाक झाड़नेपर (कैन्थ) बढ़ जाता है। ऋतु होनेके एक दिन पहले अन्त्राशयमें संकोचन और मोच खानेकी तरह दर्द—सामनेकी ओर झुकनेपर दर्द घट जाता है (कैस्टोर,

ह्युफोर्ब, सल्फ)। ऋतुके समय अन्त्राशयमें काटनेकी तरह दर्द ; दर्द घटनेपर बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव आरम्भ हो जाता है (सिरियन-आक्वेल, लैके) खूनका रंग लाल और वह बहुत पतला रहता है। चलनेके समय, बाहु उठानेपर या खाँसनेपर एकाएक अन्त्राशयके बाएँ पार्श्वमें दर्द होकर सांस रुक जानेका उपक्रम हो जाता है ; विश्रामके समय दर्द नहीं रहता ; कुछ देर बाद अन्त्राशयकी वेदना और कुछ निम्न-गामी होकर गायब हो जाती है।

मलान्त्र और मल।—मलद्वारके कई अंगुल ऊपरसे एक तेज दर्द चारों ओर फैल कर योनिद्वार तक भी पहुँच जाता है, दर्द इतना अधिक होता है, कि रोगिनी बैठ नहीं सकती। नींद आने बाद दर्द घट जाता है पर सर दर्द और मिचली पैदा हो जाती है। कूथन—खून निकलने बाद यह दर्द घटता है, पर रोगिनी कमजोर हो पड़ती है। दिनमें तीन चार बार खून मिला पाखाना होता है। कब्जियत,—तीन चार दिनोंके अन्तरसे पाखाना होता है और जरायु अपने स्थानसे हट जाता है।

पेशाब।—बार बार पेशाबका वेग होता है पर पेशाब थोड़ा निकलता है (ऐमो-कार्ब, क्यूप्रम, डिजि, ह्युफोर्ब)—बैठनेकी अपेक्षा खड़े होनेकी अवस्थामें बढ़ जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु,—नियमित समयके बहुत पहले ऋतु-प्रकट होता है। स्राव बहुत ज्यादा और पतला होता है, बहुत जल्दी अपर्याप्त स्राव होता है—बेल, बोर, बोवि, केल्के, कार्बो-वेज, क्रोक, मार्क, नेट्र-म्यूर, फास, सिपि); ऋतुके समय अत्यन्त सर दर्द, शीतार्तता और क्रोधका स्वभाव मौजूद रहता है (क्रोध-प्रवणता=कियोजोट, नेट्र-म्यूर,—सर दर्द=कार्बो-वेज, लाई, नक्स ; हायो, मैग-कार्ब, सल्फ,—जाड़ा लगना=कैस्टोर, क्रियो, मैग-कार्ब, पल्स)। शरीरका ऊपरी अंश ढलमलाया करता है और चारों ओर अन्धकार दिखाई देता है (लैके-कैन, लाई, पल्स, देखो), ऋतुस्राव रुकते ही नाकसे खूनका स्राव होने लगता है (ब्राई; लैके)। ऋतुके ८ दिन बाद प्रदर आरम्भ हो जाता है (क्रियो, फास, पल्स, रियुटा),—स्राव पीले रंगका ; कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है (आर्स, ग्रेनेट, केलि-बाइ, केलि-कार्ब, क्रियो, ऐसिड-फास, सिपि, म्यूरेक्स, स्टैन, नक्स),—इसके साथ ही कमरमें प्रचण्ड दर्द (केलि-कार्ब, मैग-सल्फ, नाइ-

इम),—पीछेवाले किसी अवलम्बनपर कमर कसकर झूल पड़नेपर घटता है। कमरमें दर्द घटते ही बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव हुआ करता है (सिरियम-आक्स, लेके, देखो) स्राव संध्याके समय बन्द हो जाता है और सबेरे फिर प्रदरका स्राव आरम्भ हो जाता है। ऋतुस्राव बन्द होते ही पेटमें मरोड़की तरह दर्द पैदा हो जाता है और यह दर्द बन्द होनेपर फिर बहुत ज्यादा परिमाणमें ऋतुस्राव आरम्भ हो जाता है। प्रदर-स्रावके कारण रोगिनी परिश्रम नहीं कर पाती और दुबली हो पड़ती है ; प्रदरके समय चलनेपर तलवेमें तेज दर्द होता है और बैठनेके समय देह इस तरह थर थर कांपा करती है मानो पतले मांड़ जैसे पदार्थसे बनी हो। दाहिने डिम्बाधारमें जलन (एपिस, पैलेड)।

श्वासयंत्र ।—क्षण-स्थायी हलकी खाँसीके साथ ऐसा मालूम होता है मानो स्वरनालीके सबसे नीचेवाले प्रदेशमें कुछ गड़ा हुआ है। वायुनलीके दाहिनी ओर पिट पिट होकर बार बार खाँसी आती है और रोगी हाफने लगता है ; जब स्वाद रहित सफेद श्लेष्मा निकल जाता है, तब श्वास-कष्ट कुछ घटता है। बहुत तेज सूखी और श्वास-रोध करनेवाली खाँसी,—प्रतिवर्ष जाड़ेके दिनोंमें यह खांसी आने लगती है (सोरिनम)। गर्म पानीय पीनेपर, शय्यापर उठ बैठनेपर और पसीना होना आरम्भ होनेपर यह खांसी घट जाती है। गाढ़ा, पीला, हरा या धुमैले रङ्गका और कभी कभी कड़वा-स्वाद मिला बलगम निकलता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—ऋतु होनेके एक दिन पहले कमरमें दर्द आरम्भ हो जाता है और ऋतुके समस्त पहले दिन दिनभर ऐसा ही रहता है; पीछेकी ओर झुकने या किसी चीज पर पीठ अड़ाकर बैठनेपर कमरका दर्द घट जाता है। कमरका दर्द और प्रदरका स्राव पर्यायक्रमसे प्रकट होता है। यह दर्द कमरसे आरम्भ होकर वस्तिगह्वरतक फैल जाता है, रोगिनीको झुककर उठनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है ; त्रिकास्थि (Sacrum) प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानो वह स्थान टूट गया है। उरुके पीछेका मांस आदि, ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डीसे काटा जाता है,या उखाड़ लिया जाता है। (खरोंचता है=रास, ऐसिड-फास, ऐसा ; सेबाड, स्पाइजि),—सीढ़ी चढ़ने, माथा झुकाने, बैठने और छूनेसे दर्द बढ़ता है। जङ्घाकी पोटलीकी पेशीमें अकड़न हो जाती है (कैम्फो, ऐनाक, हायो, लाई, ऐसिड-नाई, नक्स, सिपि सोलेन-

ताईं)। दाहिना गाल, जीभका अगला भाग, शरीरका समूचा दाहिना अंश
तरफकी तरह ठण्ढा हो जाता है।

निद्रा ।—अश्लील सपने देखना, मानो नङ्गे आदमियोंको देख रहा है।
ऐसे शङ्काजनक सपने मानो उसकी सन्तान पानीमें गिर गयी है मानो एक
सांड़ उसे खदेड़ रहा है, पसीनेमें तर होकर नींद खुल जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—सरमें दर्द और माथेमें सुई वेधने
की तरह तकलीफ मालूम होती है; जाड़ा, गर्म पानी पीनेपर घटता है
(पानी पीनेपर घटना=कास्टि, ग्रेफ, इपिक)। मध्याह्नके समय सूखा
और स्वेद-रहित उत्ताप। थोड़ा-सा परिश्रम करनेपर भी बदबूदार पसीना
निकलने लगता है; सामान्य परिश्रमसे भोजनके समय या रातभर सुस्त
करनेवाला पसीना होता है, रातके अन्तिम प्रहरमें बहुत ज्यादा पसीना।

वृद्धि ।—सवेरे, सन्ध्याके समय और रातमें, नाक छिड़कनेपर, खांसने
छींकने और विश्रामके समय (सरमें दर्द और अन्त्राशयमें दर्दके अलावा);
गर्म पानीय पीनेपर दांतका दर्द बढ़ जाता है (ब्राई, कैमो, लैके, रास,
साइलि) परन्तु जाड़ा लगना बन्द हो जाया करता है।

घटना ।—विश्रामसे (सर दर्द और आँतोंका शूल)। सामनेकी ओर
देह झुकाने और पीछेकी ओर टेबुलके किनारे कमर अड़ाकर झुक पड़नेपर
(कमरमें दर्द)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—क्रियोजोट, केलि-कार्ब, ग्रेफ, लैके (स्राव
आरम्भ होनेपर दर्द घटता है) सिरियम-आक्स, कैलि-बाई, नाइट्रम।

शक्ति ।—३ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

फैगोपाइरम इस्क्यूलेण्टम ।

(FAGOPYRUM ESCULENTUM)

दूसरा नाम ।—वाक ह्वीट ।

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—परिपुष्ट गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखी बीमारियोंमें फायदेमन्द है:—धमनीका स्पन्दन; अतिसार ; उकौत ; आँखकी बीमारियाँ; हाथमें पसीना; माथेमें दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; छातीमें जलन ; नाना प्रकारके चर्मरोग ; खुजली ; यकृतकी बीमारी ; कर्णमूल ; मिचली ; नाकका जखम ; कलेजा धड़कना ; वात ; मसे ; गलेका जखम ; स्वाद बिगड़ा हुआ ।

उपयोगिता और आभास ।—'नीला या गर्दनकी दोनों ओरकी धमनियों (Carotids) का स्पन्दन बाहरसे दिखाई देता है—यही फैगोपाइरमका एक प्रधान निर्णायक और सिद्धि-प्रद लक्षण है । चर्मरोगोंमें यह विशेष उपयोगी है,—उकौत (Eczema), अरुणिका (मच्छड़ोंके काटनेके कारण दाने—Erythema) और प्रत्यङ्गोंके गाखोंके भीतर त्वचाका क्षय (Intertrigo = कैमो,लाइ, मार्क-सोल, हृष्य) इससे आराम हो जाया करता है । सरमें दर्दके समय आँख नाककी जड़ और गलेके पिछले भागतक दर्द फैल जाया करता है, सामनेकी ओर माथा झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है, और पीछेकी ओर झुकानेपर घटता है और गर्दन सुन्न जैसी मालूम होती है । माथेकी त्वचा, आँख, पलकोंका किनारा ; कान और नाक वगैरहमें भयानक खुजली होती है । नाकमें जखम हो जाता है और वह सूखे श्लेष्मासे भरा रहता है ; दोनों ओंठ सूखे और फटे फटे ; गलेमें जखम ; शरीर हिलानेपर वातका दर्द घट जाता है; विश्रामके समय उत्ताप और बेचैनी मालूम होती है, बदबूदार पसीना निकलता है, वगैरह कई फैगोपाइरमके प्रकृतिगत लक्षण हैं ।

लक्षणावली ।

मन ।—न तो किसीसे कुछ बोलता है और न उसको यही इच्छा होती है कि किसीसे कुछ बात करे । सन्ध्याके समय बहुत दुःखित हो

जाता है और ऐसा मालूम होता है मानो मनके ऊपर कोई भार दब रहा है (मानो चित्त मेघाच्छन्न हो रहा हो=आर्जेण्ट-नाई, ऐक्टि), किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता। (इथ्यू, ऐवेना, लैक-कैन, ऐसिड-आक्जाल, ऐसिड-फास, सार्सा, वाइवर्नम—ओप्यु, जेरोफिल)।

माथा।—सरमें दर्द,—माथा, गर्म और गर्दन थकी या अवश, सन्ध्याके समय समूचे माथेमें अस्पष्ट दर्द। ऐसा सर दर्द मानो माथा दो हो जायगा। भीतरसे बाहरकी ओर कुचलनेकी तरह (वेल, ब्राई, कैल्के कार्ब्ब, इग्ने, नक्स, ऐसिड-फ्लू, साइमेक्स, साइलि); पीछेकी ओरसे दबाव के कारण मानो आँखका गोला बाहर निकल पड़ेगा, ऐसा मालूम होता है, नींद खुलनेपर सरमें दर्द और खा लेनेपर घट जाना; सन्ध्याके समय विश्राम करनेपर और सामनेकी ओर सर झुकानेपर सर-दर्द बढ़ जाता है (ऐको, ऐसेर, ब्राई, साइक्ल्यू, क्रोटेल, लैके, फाइटो, रास, साई) और पीछेकी ओर सर झुकानेपर घट जाता है (वेल; म्यूरेक्स, सेनेगा, थूजा); घरके बाहरी भागमें चलनेपर घट जाता है (ऐक्टि-र्क्रूड, कोलो, थूजा)। माथेकी त्वचा खुजलाती है—गर्म कमरेमें स्थिर भावसे बैठ रहनेपर बढ़ता है (रास)। ब्रह्मतालुमें तेज सूतकी तरह दर्द (सीसा)।

आंख।—आंख फूली और लाल और उसमें बहुत खुजलाहट होती है; मानो आँखमें धूलके कण गिर गये हैं (ऐल्यू, आर्स, कैप्स, कास्टि, इयुफ्रे, क्रियो, फाइटो)। आँखसे पानी गिरता है, पढ़नेके समय बढ़ जाता है (क्रोक, क्रोटेल, ग्रैफा, ऐसिड-सल्फ)।

मुखमण्डल।—चेहरेके बाएँ पार्श्वमें स्नायुशूल। दाँतपर दाँत लगे रहनेपर दर्द होता है (इग्ने), दोनों ओठ सूखे और फटे (ब्राई, चायना, वेरेट, मार्क-कोर)। नाक जखमसे भरी और सूखे श्लेष्माके टुकड़ोंसे भरी (ब्रोम, इयुफ्रे, केलि-बाई)। सब मसूढ़ोंमें जखम हो जाता है और सामान्य कारणसे उनसे खून बहता है। मध्यान्ह भोजनके बाद डकारके साथ अजीर्ण, खाद्यपदार्थोंका स्वाद भरी डकार आती है (ऐसिड-अक्जाल, पल्स, सल्फ, थूजा)। सवेरे उठनेपर गलेमें गाढ़ा श्लेष्मा संचित रहा करता है (ऐल्यू, सेलियम-मान, मैंग-कार्ब, मार्क, निकोलम, सल्फ, नक्स-मस, स्क्रोफ्यूला)। गलेका भीतरी भाग जखम भरा सूखा, प्रदाहान्वित और उसमें बराबर दर्द हुआ करता है।

ऐसा मालूम होता है मानो अन्ननालीके भीतर गोलेकी तरह कोई एक चीज अड़ी हुई है (ऐल्यु, बैराइ, बेल, कैमो, कार्बो-वेज, ग्रैफ, हिप, इग्ने, लैके, लोबे, मार्क, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, प्लम्ब, सैबाड, सल्फ, सिपि) ; लार निगलने के समय गलेमें दर्द होता है (आर्स, बेल, लैके, मार्क, नक्स, पल्स, रास, बैराइ) । जिह्वा-मूलीय दोनों ग्रन्थियाँ फूलीं (बैराइ, बेल, कैल्के, कैमो, कैन्थ, हिप, इग्ने, लैके, मार्क, ऐसिड-नाइ, नक्स ; स्टेफाइ, सिपि, सल्फ, थूजा) ; खाँसनेपर बदबूदार बलगम निकलता है (कार्स्टि, मैग-म्यूर, पल्स, फास) । गलेकी दोनो धमनियाँ फूली, बहुत दर्दभरी रहती हैं और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता (एरम-ट्राइ, आयोड, कैलि-आयोड, कैल्के-आयोड, बैसिलिन, मार्क-सल्फ) ।

पाकस्थली ।—दिनमें कभी कभी जलन करनेवाला, खट्टे पानीकी तरह डकार, डकारके साथ आया हुआ पानी इतना गर्म रहता है कि गला रुक जानेका उपक्रम हो जाता है ; काफी पीनेपर घटता है (कार्बो-ऐन, ऐसिड-कार्ब) । मिचली ; भोजनके बाद घटना (लोबेल) ।

अन्त्राशय ।—सामनेकी ओर झुकनेपर यकृत प्रदेशमें दर्द होता है और दिनके दस बजनेके समय ऐसा दर्द होता है मानो चोट लग गयी है और स्पर्श सहन नहीं होता—दाहिनी करवट सोनेपर अधिक दर्द होता है (मार्क, बेल) । यकृतमें सामनेसे पीछेकी ओर तेज शलाका बेधनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है । पेट फूल उठता है, और बहुत कड़ा हो जाता है,—पहननेके कपड़ोंके दबावसे दर्दकी वृद्धि होती है (कार्बो-वेज, कैल्के) ।

पेशाब ।—मूत्रनालीमें छेदनेकी तरह दर्द । अन्तवाली कई बून्द निकलनेमें बहुत तकलीफ होती है (क्लिमैट, आर्जेण्ट-नाइ) ; यह समझनेके बाद भी कि पेशाब होना खतम हो गया है फिर कई बून्दें निकल पड़ती हैं । जननेन्द्रिय प्रदेशमें बदबूदार पसीना (कैलेड, कोराल, मार्क, सिपि, सल्फ, थूजा) मुष्कत्वक्के ऊपर पसीना होता है=डैफनी, इग्ने, नेट्र-सल्फ, सिपि थूजा ; दोनो उरुके बीचवाले प्रदेशमें पसीना होता है=सिना, बैरिस) ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—दाहिने डिम्बाधारमें दर्द होता है (इयुपियोन, एपिस ; पैलेड)—सन्ध्याके पहले घूमनेके समय । योनिमें खुजली होती है,—ठण्डे पानीका प्रयोग करनेपर घटती है (ऐम्ब्रा, क्रियो, ग्रैट) । प्रदर—स्राव

का दाग वस्त्रमें पीला पड़ता है (इग्नुपियोन, कार्बो-ऐन, नक्स, प्रूणस),—विश्रामसे बढ़ना।

श्वास-यंत्र।—शय्यामें सोनेपर स्तन-वृन्तसे सुई बेधनेकी तरह तेज दर्द पोछेकी ओर सञ्चारित हो जाता है,—दबानेपर घटता है। सांस लेनेके समय छातीमें तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। हृत्पिण्डके चारों ओर तेज दर्द और यह दर्द बाएँ कन्धे तक और बाहुतक फैल जाता है, चित होकर सोनेपर घटता है (बोर)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गला कमजोर—मानो माथेका भार नहीं सहन कर सकता। गर्दनका पिछला भाग और सरके पिछले भागके नीचेके स्थानमें तेज दर्द; पोछेकी ओर सर झुकानेपर घटता है। दाहिने मूत्रग्रन्थि प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (लाई; बाएँ मसानेके स्थानपर=कार्ब, टैबाक)। दिनके ५ बजेसे ६ बजेतक, दर्द बगलसे बाहुके ऊपरवाली द्विमूल पेशी और वक्षके बगलवाली पेशीमें फैलता है। बाहुमें दर्द, मानो हाड़के भीतरसे दर्द उठता है; ठण्डे टेबुलपर हाथ रखनेसे यह दर्द बढ़ जाता है; बीचमें टपक होती है, ऊपरसे ही दिखाई देता है। केशसे ढके अंश सब बहुत खुजलाते हैं,—तीसरे पहर बढ़ना। तलवा, मस्तक और तलहत्थोमें तीसरे पहर बहुत जलन होती है।

ज्वर।—तीसरे पहर पीठकी ओरसे कम्प होता है; ताप और बेचैनी पैदा होती है; हाथ पैरमें पसीना होता है; बगलमें बदबूदार गन्ध आती है।

निद्रा।—हमेशा जम्हाई आती है, नींद आती है।

वृद्धि।—सामनेकी ओर माथा झुकानेपर, तीसरे पहर ३ बजेसे ६ बजे के बीचमें (कोलो, हेलिबो, मैग-फास, लाई); रात्रिके ११ बजनेके समय (कैक्टस); विश्रामके समय (रास), उत्तापके प्रयोग और शरीर हिलानेपर (शरीर हिलानेपर वातका दर्द घटता है)।

घटना।—शरीर हिलाने (वात वेदना), पीछेकी ओर सर झुकानेपर, ठण्डे प्रयोगसे और दवा देनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—रास, सेनेगा; कार्बो-ऐन, नक्स।

शक्ति।— ३ से ६ ठा शततमिक क्रम।

फेगस सिल्वेटिका।

(FAGUS SYLVATICA)

प्रस्तुति ।—पके बीजसे मूल अर्क और विचूर्ण प्रस्तुत होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है।—मृगी ; सर-दर्द ; जलातङ्क ; सरमें चक्कर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—इसके द्वारा जलातङ्क (Hydrophobia) के अधिकांश लक्षण प्रकट हुआ करते हैं, जैसे बहुत ज्यादा लार का स्राव, पानी देखनेसे ही डर पैदा हो जाता है ; धनुष्टंकार आदि आक्षेपिक रोग, शरीरका अकड़ना और ठण्डापन, मुख फूल उठता है और सरमें दर्द पैदा हो जाया करता है।

लक्षणावली।

मन, मस्तक इत्यादि ।—पानी देखनेसे ही डरसे बेचैन हो जाता है (हाइड्रोफोब, स्ट्रेम, कैन्थ, बेल, हायो)। भीत और चकित भाव ; हमेशा मृत्युका भय (ऐको, आर्स, लैक-कैन, लोबेल)। सरमें चक्कर आना, सारी रात बेहोशीका भाव ; मतवालेकी तरह ढलमलाया करता है। ललाट देशीय (Frontal) सर दर्द,—बहुत देरतक स्थायी रहा करता है ; सरमें दर्दके साथ मुख-विवरका फूलना। मुंहसे लगातार फेन-भरी लार बहा करती है।

पाकस्थली ।—मुंहसे बहुत ज्यादा परिमाणमें फेनभरी लार बहा करती है (लिसिन या हाइड्रोफोबिन) ; दुर्दमनीय प्यास ; पान देने लिये आरजू मिन्नत करता है ; पर पानी देखते ही कांप उठता है, पेशाबका रंग आगकी तरह और गदली सफेद रङ्गकी बालू तलीमें बैठती है।

ज्वर ।—शरीरकी त्वचा आग छू जानेकी तरह जला करती है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—बेल, कैन्थ, हायोसा, हाइड्रोफोब, या लिसिन ; स्ट्रेमोन, एपिफिगस (सर-दर्द और लार बहना)।

शक्ति ।—१ म दशमिकसे ६ ठा दशमिक विचूर्ण।

फेल टारि।

(FEL TAURI)

दूसरा नाम।—आक्स-गाल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सांड़के पित्तसे पहले विचर्ण और पीछे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— दमा ; कब्जियत ; अतिसार ; पित्ताश्मरी ; सर-दर्द ; अजीर्ण ; वात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बुकनरकी परीक्षासे मालूम हुआ है कि परिपाक शक्तिका विकार, उदरामय, सरमें दर्द, गर्दनके पिछले भागकी अकड़न, सन्धि प्रदेशमें दर्द और अकड़न या ऐंठन (Cramps) इसके कई एक प्रधान क्रियाफल हैं।

लक्षणावली।

मस्तक।—चिड़चिड़ा, क्रोधी स्वभाव। नाना प्रकारके काम काज करनेकी इच्छा, मस्तिष्ककी जड़ता ; सवेरे सरमें प्रचण्ड दर्द,—दाहिनी कनपटीको दबा रखनेपर दर्द बढ़ता है। दर्द सरके पिछले भागमें और गर्दनके पीछे फैल जाता है।

पाकाशय आदि।—प्यासकी अधिकता। गन्ध और स्वादहीन डकार आती है। पाकस्थली और उदरके ऊपरी प्रदेशमें कलकल शब्द होता है (कार्बो-ऐन, क्रोटोन ; ओलि-ऐन, टियुक्रि, मैग-म्यूर)। पेटमें गुड़गुड़ शब्द होता है और ऐसा मालूम होता है मानो कुछ हिल रहा है। आँत आदिकी उद्वेचन क्रियाकी अधिकता। भोजनके बाद औंघाई आना।

सम्बन्ध।—सदृश।—ओलियम-ऐनिमेलिस ; कोलेस्टेरिनम ; मार्कशलसिस।

शक्ति।—२ रे दशमिकसे ६ ठा दशमिक विचूर्ण।

फेरम ।
(FERRUM)

दूसरा नाम ।—आयरन ; लोहा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—"मेटालिकम"—लोहेका विचूर्ण । पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम या अर्क तैयार होता है । "ऐसिटिक" लोहेके साथ ऐसिटिक ऐसिड, पहले जलीय द्रव, इसके बाद सुरासारमें ; "कार्बो-नेट" पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है । डा० क्लार्कने एक साथ ही तीनोंका ही लक्षण सन्निवेशित किया है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— खूनकी कमी ; स्वरभङ्ग ; दमा ; निस्पन्द वायु (Catalepsy); मृत्पाण्डु ; ताण्डव ; खाँसी ; दुर्बलता ; ऐंठन ; क्षय-कास ; अतिसार ; अनजानमें पेशाब हो जाना ; सविराम ज्वर ; गलगण्ड ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; हृत्पिण्डकी बहुत सी बीमारियाँ ; हृदकम्पन ; विलेपी या क्षयज्वर ; मस्तिष्कमें जल-संचय ; मूत्रनाली या मसानेकी बीमारी ; आर्त्तव या रजो-विकार ; स्नायुशूल ; बहुत से भीतरी यन्त्रोंका पक्षाघात ; गर्भिणीके बहुतसे उपसर्ग ; मलांत्र या गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हट जाना ; सन्धिवात ; स्कन्धसन्धि-सम्बन्धी बीमारी ; आक्षेप ; उपदंश ; दाँतका दर्द ; कब्जियत या अतिसार ; मूत्र-धारणकी अक्षमता ; सरमें चक्कर आना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—फेरमके नीचे लिखे कई प्रकृतिगत लक्षण हैं:—(१) ऋतुस्राव बहुत जल्दी जल्दी होता है ; स्राव बहुत ज्यादा, ऋतुके समय कितनी ही तरहकी आवाजें कानमें आती हैं ; चेहरा आगके रङ्गका ; स्राव रह रहकर बन्द हो जाता है और उसका रङ्ग फीका रहता है । (२) अतिशय उत्तेजना—प्रवणता, रोगिनी सामान्य कारणसे ही कातर हो पड़ती है ; यहांतक कि कागजका खड़ खड़ शब्द या किसी तरहका सामान्य शब्दसे भी उन्मत्त हो उठती है (ऐसेरम) । (३) उदरामय, सवेरे बढ़ना ; आधी रातके पहले नींद अच्छी तरह नहीं आती ; (४) चेहरा भूरा या हरी आभा लिये, थोड़ा परिश्रम या किसी तरहका भी दर्द मालूम होनेपर चेहरा

लाल हो उठता है। लज्जा या अभिमानका कोई कारण पैदा हो जानेपर गाल लाल हो उठते हैं। (५) खूनका स्राव होनेवाली धातुवाले मनुष्योंके सभी द्वारोंसे चमकीले लाल खूनका स्राव होता है। (६) सरमें चक्कर आना,— रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह पानीमें तैर रहा है। जल प्रवाहकी ओर देखने और सीढ़ीसे उतरनेके समय सरमें चक्कर आ जाता है। (७) प्रति दो या तीन सप्ताहका अन्तर देकर दो, तीन या चार दिनोंतक स्थायी सरका दर्द, ऐसा अनुभव होता है, मानो माथेमें कोई हथौड़ीसे मार रहा है। (८) बहुत कमजोरीकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है, पर धीरे धीरे टहलनेपर अच्छा रहता है, (९) खाँसी,—केवल दिनमें और घूमने फिरने पर, सोनेपर बढ़ जाती है और भोजनके बाद घटती है। (१०) वमन, आधी रातके कुछबाद ही और भोजन करते ही खाये हुए पदार्थका वमन, भोजन करते करते एकाएक उठकर खाये हुए पदार्थ सब कै कर देता है और फिर तुरन्त खानेके लिये बैठ जाता है।

लक्षणावली।

मन।—चिड़चिड़ा स्वभाव, कलह-प्रिय, बहुत तर्क वितर्क करता है, सामान्य कारणसे ही उत्तेजित हो जाता है, जरा-सा भी प्रतिवाद करनेपर चिढ़ उठता है (ऐनाक, अरम, कैमो, काक्यु, इग्ने, लाई); मानसिक परि-श्रमसे थक जाता है। उत्तेजना प्रवणता,—कागजकी खड़ खड़ आवाजसे उन्मत्त हो उठता है (ऐसेर, बेल, काफी, टैरेण्ट)। मानो न जाने कितना अपराध किया है—ऐसी चिन्ता (आर्स, चेलिडो, सिना; नक्स, रियुटा; वेरेट, जिङ्क)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—ऐसा मालूम होता है मानो मस्तिष्क पानीमें उतरा रहा है (लेक्रियु),—पानीके प्रवाहकी ओर देखने और पुलके ऊपरसे जाते समय (लिसिन) और सीढ़ीसे उतरनेके समय सरमें चक्कर आता है (बोर, सैनिक); ऐसी सम्भावना हो जाती है, मानो सामनेकी ओर गिर जायगा। (आर्नि, बेल, चायना, नेट-म्यूर, ग्लोन, रैनान, पोडो, रास)। सरमें दर्द, टपक जैसा या हथौड़ीसे मारनेकी तरह दर्द (ऐमोन-म्यूर, कैल्के, लेके, नेट्र-म्यूर); रोगी सोनेके लिये बाध्य होता है (सोनेसे घटना—ऐग्या-मैन, कैल्के फास, क्यूप्रम, हेलिबो, इग्ने, ओनि-यैन; सोया नहीं रह सकता=फोलो);

इसके साथ ही खाने पीनेसे अरुचि=कक्यु, सेलिन; प्यासके साथ=कयूप्रम-ऐसेट); प्रति दो तीन सप्ताहका अन्तर देकर सर दर्द होता है और वह दो तीन या चार दिनोंतक स्थायी रहता है। दर्द दांत तक फैल जाता है और हाथ पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं, सरमें अधिक रक्तका संचय होना; शिराएँ सब फूल उठती हैं और माथेमें स्पर्श सहन नहीं होता; आधी रातके बाद और अन्तिम रातमें दर्द बढ़ जाता है। खाँसनेपर सरके पिछले भागमें दर्द होता है। केशमें स्पर्श सहन नहीं होता और वे गुच्छेके गुच्छे उड़ जाते हैं (चायना; ऐसिड-सल्फ; कड़ी बीमारीके बाद केश झड़ जाना=कैल्की, कार्बो-वेज, लाई, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-फास, प्रसवके बाद=कैल्की, लाई, नेट्र-म्यूर, सल्फ, मार्क; बहुत दिनोंतक रहनेवाले शोकके बाद=ऐसिड-फास, स्टैफाई, कास्टि, इग्ने; लेके)। संध्याके समय एक नाकके छेदसे खूनका स्राव होता है; इसी छेदमें प्रायः खून जमा रहता है।

कान ।—कानमें भों भों शब्द, टेबिलपर सर रख देनेपर घटता है। ऋतुके समय कानके भीतर दूरसे आती हुई घण्टेकी आवाजकी तरह ध्वनि निकलती हुई सुन पड़ती है।

मुखमण्डल ।—चेहरा, दोनों ओठ, मुँह और नाकके मध्यभागकी श्लैष्मिक झिल्लीका रंग सफेद और रक्तहीन-सा हो जाता है; पर सामान्य दर्द मानसिक आवेग, या परिश्रमसे लाल और प्रदीप्त हो उठती है। लज्जा या अभिमानकी वजहसे गाल लाल हो जाना (Blushing=ऐमिल, कोका)। लाल अंश सब; माथा, मुखमण्डल, ओंठ, जीभ और मुँहके भीतरवाली श्लैष्मिक झिल्ली ये सब सफेद हो जाते हैं। ऋतुके समय चेहरेका रंग आगकी तरह हो जाता है। दोनों आँखोंके चारो ओर सूजन मालूम होती है; दाँतका दर्द बरफकी तरह ठण्डा पानी मुँहमें लेनेपर घटता है,—चेहरेपर जगह २ पीले बिन्दु सब निकलते हैं (घोड़ेकी जीनकी तरह नासा दण्डपर दोनों ओर फैले हुए पीले रङ्गके दाग=सिपि, सल्फ)

पाकाशय ।—आधी रातके बाद ही वमन आरम्भ हो जाता है; बिना पची हुई चीजोंकी कै, खाते ही कै हो जाती है, खाते खाते एक दम उठ जाता है; जो खाया था वह कै कर फिर आकर खानेके लिये बैठ जाता है; कै हुआ पदार्थ खट्टा (लाई, ऐ-सल्फ)। मांस (नेट-म्यूर, इसके

विपरीत है)। अम्ल वगैरहसे अरुचि या यह सब खानेकी वजहसे बीमारियाँ आदि (खट्टी चीजोंकी इच्छा=चायना, वेरेट ; मद्य या चाय पीनेकी इच्छा=ऐसिड-नाई, नक्स ; नमकीन पदार्थोंकी=कैल्के-कार्ब)। गर्म चीज खा या पी नहीं सकता (ठण्डी चीजें खानेपर पीनेपर बीमारीका बढ़ना=आर्स)। सभी खाद्य पदार्थ तीते मालूम होते हैं (ब्राई, चायना, पल्स)। मेदमय पदार्थ खाने-बाद तीती डकार। खाते ही खाये हुए पदार्थ कै हो जाते हैं (आर्स, ब्राई); खाये हुए पदार्थ अजीर्ण अवस्थामें दस्त और कैकी राहसे निकल जाते हैं (ऐमोट, चायना, ओलियेन); वमन किये हुए पदार्थ खट्टे मालूम होते हैं। थोड़ा भी खाने पीने बाद पेटमें बहुत भार मालूम होता है (ऐको, ऐगार, ऐनाक, कैल्के, कार्बो-वे, चायना, ग्रैफ, आयोड, फास, सिपि); दो चार ग्रास खाते ही कण्ठ भरा मालूम होता है (लाई, मानो पाकस्थली भर गयी है, अब जगह नहीं है=चायना)। मिचली न रहनेपर भी डकारके साथ मुँहभर खाये हुए पदार्थ उठ आते हैं (फेरम-फास, इपिक)। बहुत ज्यादा भूख मालूम होती है या भूख बिलकुल ही नहीं रहती। सभी पदार्थोंसे अरुचि।

अन्त्राशय।—पेट फूल उठता है और कड़ा हो जाता है। प्लीहा और यकृत बढ़ जाते हैं और उनमें दर्द होता है। झुकनेपर या किसी तरह का शारीरिक परिश्रम करनेके समय पेटमें ऐंठनकी तरह दर्द होता है,—झुकनेपर फिर जल्दी सीधा नहीं हो सकता। टहलनेके समय पेटमें बहुत भार मालूम होता है,—ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फूल पड़ेगा (इग्ने, इपिक, स्टैफाई)। छूने या खाँसनेपर, तलपेटमें मानो चोट लग गयी है, इसी ढंगका दर्द होता है (बेल, कैमो, क्यूप्रम, सिक्लेम, हायो, मार्क, नक्स, प्लम, पल्स, वेरेट)। चाय पीनेपर बीमार हो जाता है। (सेलिन, थूजा)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय,—मल पानीकी तरह, जलन करने वाला और कषायगुण विशिष्ट अर्थात त्वचाको क्षय करनेवाला (आइरिस-वार्स)। बिना दर्दवाला उदरामय,—न पची हुई चीजें मलद्वारसे बाहर निकल पड़ती हैं (Lintoria—ऐमोट, चायना, ओलियेन, फास, ऐसिड-फास, पोडो)। बार बार पतले दस्त आते हैं और इस मलके साथ लसदार आम और सूतकी तरह कृमि निकलती (ऐमोट, ऐसेर, ऐस-लिप, कैल्के, आर्द्रि, सिना, इग्ने, इण्डिगो,

इयुफोर्ब, कोरोल, लाइ, सल्फ, स्टेन, टियुक्रि); कभी कभी खून और आम मिला दस्त भी होता है। उदरामय,—रातमें या खाने पीनेके समय (क्रोटन टिग); अजीर्ण पदार्थके दस्त होते हैं, उदरामयमें कोई दर्द नहीं होता और भूख और रुचि भरपूर बनी रहती है। यक्ष्मावाले रोगियोंका उदरामय। कब्जियत—अन्त्रमण्डलीकी क्रिया न होनेकी वजहसे कब्जियत (ऐलू); तथा वेग; मल कड़ा और तकलीफ देनेवाला और पाखाना हो जाने बाद कमरमें दर्द या मलान्त्रमें ऐंठनकी तरह दर्द; बच्चोंकी कांच निकलना (ऐसिड-क्रूड, साइक्ल, कक्यु, क्रोटन-टिग, इग्ने, आइरिस, मार्क-वाई, मेजेर) और रातमें मलद्वारमें खुजली होती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—क्लीवता (अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय परिचालनके कारण हो तो—फास, प्रमेह रोगके बाद होनेपर=थूजा)। रातमें वीर्य-स्खलन (बहुत सुस्ती लाने वाला—ऐसिड-फास, चायना)। मूलनालीसे श्लेष्मा-स्राव (ऐसिट-क्रूड, कैल्के, मार्क, नक्स; पल्स)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—नियमित समयके बहुत पहले ही ऋतु हो जाता है, यह बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है (बेल, कैल्के, इग्ने,),—इसके साथ ही चेहरा आगके रङ्गका हो जाता है; कानमें दूरसे आई हुए घण्टेकी आवाजकी तरह सुन पड़ता है; स्राव होते होते एकाएक दो तीन दिनोंके लिये बन्द हो जाता है; इसके बाद फिर आरम्भ होता है; खूनका रङ्गका फीका पानीकी तरह; रोगिनी बहुत कमजोर हो जाती है। ऋतु होनेके कुछ पहले ही डंक मारनेकी तरह सरमें दर्द होता है (कार्बो-वे, लैके, सिपियम, आक्सेल, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, सल्फ)। और जरायुसे बड़े बड़े श्लेष्मा खण्ड सब निकलते हैं; चौथा स्त्रियोंके जरायुसे खूनका स्राव—खून चमकीला लाल होता है और तुरन्त जम जाता है (फेरम—फास; इपिक; फास; सेबाइ)। प्रदर,—पानी मिले दूधकी तरह और जलन तथा त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव (कोना, लाइ, पल्स, सिपि, सिलि; ऐसिड-सल्फ)। रमणके समय योनिमें जलन, ऐसा मालूम होता है, कि त्वचा क्षय हो रही है और सुख नहीं मालूम होता (कार्बो; क्रियो)। योनि-भ्रंश (Prolapsus Vaginae); सोनेपर जरायुमें दर्द होता है। चेहरा आगकी तरह; बहुत खूनका स्राव होता है;

कभी पतला और कभी जमा ;—इसके साथ ही प्रसवके दर्दकी तरह कमरमें दर्द (ऐलेट्रिस-फेरि ; बेल ; कैमो ; केलि-कार्ब ; प्लेट)।

श्वास-यंत्र।—मासेपिक खाँसी,—बलगम गाढ़ा और गोंदकी तरह साफ (चायना ; सिलि)। सवेरे खाँसी आती है, भोजनके बाद आराम (पीनेपर बन्द होना = कास्टि, स्पञ्जि ; ठण्डी चीज आदि पीने या भोजनके बाद खाँसीका प्रकोप होता है = हिप)। खाँसनेके समय वक्षमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होना और उसमें स्पर्श सहन न होना। भोजनके बाद खाँसी पैदा हो जाती है और अजीर्ण पदार्थ आदि कै हो जाते हैं (डिजि, रास))। दोनों पृष्ठ फलकोंके बीचमें दर्दके साथ रक्त-कास,—धीरे धीरे टहलनेपर अच्छा रहता है (थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बढ़ना = इपिका)। छातीमें भरापन और कसावट मालूम होना (कैल्के-फा, पल्स, स्टैफाई,—खाली मालूम होना = काकुर, ग्रेफ) ; केवल दिनमें खाँसी आती है (इयुफ्रे) ; सोनेपर या भोजनके बाद (स्पञ्जि), घटती है। सन्ध्या या रातके समय श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ होती है—ऐसा मालूम होता है, मानो ऊपरी पेटमें बाधा प्राप्त रही है—स्थिर रहनेपर बढ़ता है, मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे घटता है। श्वास-रोग—आधी रातके बाद बढ़ता है—रोगीको बाध्य होकर उठकर बैठ जाना पड़ता है ; लेटे रहनेकी अवस्थामें या कोई काम न कर स्थिर होकर बैठे रहनेपर बहुत तकलीफ हुआ करती है ; टहलने या बातचीत करते समय अच्छा रहता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—बाईं स्कन्ध-सन्धिमें सुन्न कर देनेवाले दर्दकी वजहसे हाथ हिला नहीं सकता (दाहिनी स्कन्ध-सन्धिमें दर्द = सैङ्गियु) ; स्कन्ध-सन्धिमें पतली सलाई घुसने और छेदनेकी तरह दर्द ; पुट्ठेसे उरूतक रातमें डङ्क मारने और छेदनेकी तरह दर्द होता है। धीरे धीरे टहलनेपर यह दर्द घट जाता है (रास-टक्स)। विश्रामके समय जंघाकी पोटलीकी पेशीमें (Calves) ऐंठन होती है। दोनों पैरोंमें शोथ हो जाता है (एपिस, कार्बो-ऐन, कास्टि, चायना, कक्यु, डिजि, लेके, लाई, फास)। धीरे धीरे टहलनेपर सभी लक्षण घटते हैं। तथापि रोगी इतना कमजोर रहता है कि उसे बाध्य होकर सोये रहना पड़ता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—विलेपी या क्षय ज्वर—प्रत्येक दिन सन्ध्याके समय शीत मालूम होता है ; बीच बीचमें क्षण-स्थायी जाड़ा मालूम होता

है और शरीरमें कपकपी होती है। शीतावस्थामें चेहरा गर्म और लाल हो जाता है; प्यास बहुत ज्यादा लगती है। जाड़ा लगते रहना—शारीरिक उत्तापकी कमी। शीतावस्थामें प्यास। बिना पसीनेका और सूखा उत्ताप, संध्याके समय बढ़ना, शरीरपर ओढ़ना नहीं रखना चाहता; चेहरा लाल; शरीरको हिलाने या बोलते रहनेपर अच्छा रहता है; भोजनके बाद भी आराम मालूम होता है। दिनमें, शरीर हिलानेपर और रातमें तथा ऊषा कालके समय सोये रहनेपर बहुत देर तक और बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है। पसीना लसदार और सुस्त करनेवाला होता है। प्रत्येक तीसरे दिवस सवेरेसे मध्यान्ह तक पसीना होता है। तेज गन्धवाला रातका पसीना। कपड़ेमें पसीना लगनेपर पीला दाग पड़ता है और निद्रित अवस्थामें बदबूदार पसीना होता है; पसीना होनेके समय तक-लीफें बढ़ जाती हैं। क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे सविराम ज्वर, माथेमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे शिराएँ सब फूल जाती हैं, अजीर्ण पदार्थोंका वमन होता है, और इसके साथ ही सूजन तथा बढ़े हुए आकारमें प्लीहा मौजूद रहती है।

शोथ ।—रक्त आदिका क्षय, क्विनाइनका अपव्यवहार या सविराम ज्वर आदिके एकाएक गायब हो जाने या रुक जानेकी वजहसे शोथ रोग (कार्बो-वि, चायना)।

वृद्धि ।—एकाएक शरीर सञ्चालन करनेपर या तेजीसे चलनेपर अथवा सोये रहनेपर (दमा); एकाएक खड़े हो जानेपर; जल प्रवाहकी ओर देखने पर पुलके ऊपरसे जाने आनेके समय, सीढ़ीसे उतरनेके समय और ठण्डी हवामें।

घटना ।—धीरे धीरे चलनेके समय, सोनेपर (खाँसी); गर्म हवामें वक्षस्थल खोल देनेपर (दमा), निर्मल वायुके सेवनसे।

सम्बन्ध ।—**अनुपूरक** ।—(Complementary)—ऐल्यूमिना और चायना। क्या नये क्या पुराने सभी रोगोंमें फेरमके बाद सिङ्कोनाके व्यवहारसे बहुत फायदा होता है। उपदंश रोगमें इसका प्रयोग मना है।

प्रतिविष-दोषघ्न ।—आर्सेनिकम, सिङ्कोना, हिपर, इपिकाकुआन्हा और पल्सेटिला।

सदृश।—मैंगे, सल्फि, (खांसी); आर्स, चायना; (सविराम ज्वर); रास; ऐब्रोट; श्रोलियैण्डर इत्यादि। कैम्फर (विसूचिका), ग्रैफाईट, (उत्ता-पावेश); रासटक्स (हिलानेसे घटना); कास्टिकम (पक्षाघात)।

तुलनीय।—(बोरैक्स—सरमें चक्कर)।

शक्ति।—१ म दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—५० दिन।

फेरम आर्सेनिसिकम।

(FERRUM ARSENICICUM)

दूसरा नाम।—आर्सेनियेट आव आयरन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण, तरल क्रम या अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—खून गिरना; मृत्याण्ड; प्लीहा और यकृतकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—माननीय स्वर्गीय डाक्टर प्रतापचन्द्र मजुमदारने बढ़ी हुई प्लीहा और यकृत मिले सविराम ज्वरमें इसका व्यवहार कर बहुत ही अधिक फायदा देखा है। उन्होंने आगे लिखे, इसके कई निर्णायक लक्षण बताये हैं,—प्रबल सविराम ज्वरके साथ बढ़ी प्लीहा, ज्वराधिकारमें चेहरा तमतमाया हुआ और उसपर थोड़ा थोड़ा पसीना; ज्वरके छूटे रहनेके समय चेहरा रक्तहीन और उतरा हुआ; काम-काजकी इच्छा न रहना, किसी तरहका परिश्रम नहीं करना चाहता, यहाँतक कि शय्यासे उठना नहीं चाहता; शीत, उत्ताप और पसीना, किसी भी अवस्थामें प्यास नहीं रहती, ज्वराधिकारमें प्रायः कब्जियत मौजूद रहती है, या कभी कभी क्षय करनेवाले और सुस्ती लानेवाले पतले दस्त आया करते हैं। मल अजीर्ण, खाया हुआ पदार्थ तथा आम मिला; उत्ताप बहुत तेज, बहुत दिनोंतक स्थायी और गात्र-दाह (शरीरमें जलन) बहुत थोड़ा रहता है; रोगी बहुत कमजोर और

दुबला हो जाता है । प्लीहा आदि बढ़नेके साथ ज्वर न रहनेपर फेरम आयोडेटम बहुत लाभ करता है । (डा० क्लार्क) ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—आर्स, कैल्के-आर्स, चायना ।

शक्ति ।—१ म दशमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

फेरम ब्रोमेटम ।

(FERRUM BROMATUM)

दूसरा नाम ।—ब्रोमाइड आफ आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम या अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—सर-दर्द ; श्वेत-प्रदर ; शुक्रक्षरण ; जरायुका अपने स्थानसे हट जाना ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके कई प्रधान लक्षण संक्षेपमें लिखे जाते हैं :—मूर्द्धा-देश मानो सुन्न और चैतन्य-रहित सा मालूम होता है । माथेके पिछले भागसे ब्रह्मतालुतक ऐसा ही सुन्नपन मालूम होता है । रोगीकी रातके दो बजनेके समय नींद खुल जाती है और उसे ऐसा मालूम होता मानो मृत्यु बहुत ही पास है, माथा मानो चारों ओर फैल गया है (ऐपियोल ; आर्जेण्ट-नाई) और दोनों कान मानो ऊँचे हो रहे हैं । ऊपरी पलकमें इतना भार मालूम होता है; कि वह आँख खोलकर देख नहीं सकता (कोलोफिल, कास्टि, जेल्सि, ग्रेफ—दोनो पलकें बहुत भारी = सिपो) । ऐसा अनुभव होनेके साथ पतले दस्त आना, कि मानो निचली आँतें सब बाहर निकल पड़ेंगी—मल खून-भरा, आँम-भरा और कूथनके साथ ; मल त्वचाको क्षय करनेवाला और बार बार दस्त आते हैं । पाखाना होने बाद रोगीके कण्ठसे अनजानमें गों गों शब्द निकल पड़ता है । पेशाबके समय मूत्रनालीमें जलन और त्वचामें रगड़ खा जानेकी तरह तकलीफ मालूम होती है (कैनाब—सेट, कैन्थ, कैप्स, कोल्चि, लैके, मार्क, नेट्र-सल्फ, ऐसिड नाई, नक्स-वोम) ; खून न रहना, कमजोरी और मानसिक अवसादके साथ शुक्रमेह या शुक्रक्षरण (ऐ-फास) ।

उदरामयके कुछ घटनेके बाद कषाय-गुण-विशिष्ट त्वचाको क्षय करनेव और गोंदकी तरह लसदार प्रदरका स्राव आरम्भ हो जाता है; जरायुमें व भार मालूम होता है, और वह नीचेकी ओर खिंचता हुआ जैसा मालूम हो है, (ऐसिड-नाई, डिक्टैम्नस, क्रियो, ऐसिड-फास)।

सम्बन्ध।—सदृश।—आँखें खोलकर नहीं रह सकता=कोलं फिल, कास्टि, जेल्सि, ग्रैफ ;—ष्युकसैद, ऐसिड-फास ; मृत्यु-आसन्न=ऐन्न कैस, कैप्स, कोबाल्टम, सिफिलिन, पेशाबके समय जलन—कैनाब-सैट, कै नेड्स-सल्फ ; त्वचाको क्षय करनेवाले मलके साथ उदरामय=आर्स, ग्रैफ मार्क-बाई, सल्फ। त्वचाको क्षय करनेवाले प्रदरका स्राव=क्रियोजोटम ऐसिड-नाई।

शक्ति।—१ म दशमिकसे ६ ठी शततमिक क्रम तक।

फेरम आयोडेटम।

(FERRUM IODATUM)

दूसरा नाम।—फेरि-आयोडाइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पेशाबमें अण्डलाल ; खूनकी कमी ; स्तनमें अर्बुद या कर्कट रोग ; सर्दी बहुमूत्र ; छातीमें जलन ; मसानेकी बीमारी ; श्वेत-प्रदर ; यकृतकी बीमारी ; गण्डमाला दोष ; जरायु या डिम्बकोष और फेफड़ेका प्रदाह ; प्लीहा ; गुटिका रोग ; जरायु-भ्रंश।

उपयोगिता और आभास।—मलेरिया ज्वरके बाद बढ़ी-हुई प्लीहा और यकृतवाले रोगियोंको इससे बहुत फायदा हुआ करता है (ज्वर रहनेपर 'फेरम आर्स')। इसके कई निर्णायक लक्षणये हैं :—भोजनके बाद ऐसा मालूम होता है, कि इतना खा लिया है कि वह ऊपरकी ओर ठेल रहा है, मानो कण्ठतक ठूंस ठूंसकर खा लिया है। पेट इतना भरा मालूम होता है, कि

रोगी सामनेकी ओर झुक नहीं सकता। इसके और भी कई प्रकृतिगत सिद्धि-प्रद लक्षण ये हैं—मलद्वारमें पीसनेकी तरह मालूम होना ; मलद्वारमें कृमि चलनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना ; मानो मलद्वारमें कोई गोलाकार पदार्थ अड़ा हुआ है ; मानो मलद्वार और नाभि आपसमें एक सूतसे बँधे हुए हैं ; मानो मलद्वारमें रूक्रू घुस रहा है। आँख, कान, और नासा-मूलसे सरके पिछले भागतक छेदनेकी तरह तकलीफ मालूम होती है। पेशाबकी गन्ध मीठी (खट्टी गन्ध = ऐम्ब्रा, ग्रेफ, मार्क, नेट्र-कार्ब) ; श्लेष्माकी अधिकताके कारण नाककी ग्रन्थि फूली और अर्बुद आदिमें विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें दर्द,—माथेमें भारके साथ बुद्धिकी जड़ता ; गर्म घरमें (आर्नि, लेकिस, सेनेगा ; स्पञ्जि) ; धूम्रपान करनेपर (ऐको; ऐण्टि-क्रूड, इग्ने, नेट्र-सल्फ)। पढ़ने या लिखनेके समय (बोर, कैल्के, जेल्सियाना, नेट-म्यू, थिरिडि) बढ़ जाता है। निर्मल वायुमें (एको, एण्टि-क्रूड, आर्स, डायाडेमा, मेङ्गो, फेलैन, टैवेक) और जलीय वायुमें बैठने या खड़े होनेपर घटना। नासामूलसे माथेके भीतर होकर सरके पिछले भागतक छेदनेकी तरह दर्द। चक्षु बन्द रहनेपर आँखके गोलेका बाहर निकलना (Exophthalmos—थाइराइड) ; आँख और कानमें छेदनेकी तरह यंत्रणा। कानमें भीं भीं शब्द।

नाक ।—सर्दी,—नाक, स्वरनाली और वायुनालीसे बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव। नाक बन्द हो जाती है ; मध्यान्हमें यह रुद्धभाव कुछ बढ़ जाता है। नासा-रन्ध्रमें जखम और सूखे श्लेष्मा-खण्डकी अधिकताकी वजहसे नाक फूल उठती है। पुरानी सर्दी पहली अवस्थामें साधारणतः सवेरे, इसके बाद दिन-भर श्लेष्मा निकला करता है। श्लेष्मा गाढ़ा, पीला या हरा होता है ; नाक झाड़नेपर भी नहीं घटता।

पाकाशय आदि ।—थोड़ा भी खानेसे उदर कण्ठतक भर जाता है। मानो खायी हुई चीजें ऊपर चढ़ रही हैं। पेट इतना भर जाता है कि रोगी झुक नहीं सकता। प्लीहा और यकृत बढ़े हो जाते हैं। (विज्वर अवस्थामें)।

मलान्त्र और मल ।—एक हफ्तेतक कब्जियत रहनेके बाद पतला पाखाना होता है। पाखाना होनेके पहले पेटमें ऐसा दर्द होता है, मानो पेट

अकड़ गया है। मलान्त्र और मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है मानो दबा रखा है; मानो मलद्वारमें क्रमि है; मलद्वारमें मानो कुछ अड़कर चक्राकार घूम रहा है। मानो बून्द बून्द पानी टपक रहा है; मानो एक स्क्रू प मलद्वारमें घूम घूमकर घुस रहा है—ऐसा ही अनुभव होता है।

पेशाव।—मूत्रनालीकी जड़में ऐसा मालूम होता है, मानो पेशाब अड़ा हुआ है और वेग देनेपर भी आगे नहीं बढ़ता—खासकर सवेरे। पेशाब गहरे लाल रङ्गका; मोटी और सफेद रङ्गकी तली जमा करती है; पेशाब करनेके समय मूत्रनाली मानो जल जाती है। बार बार फीके रङ्गका और मीठी गन्धवाला पेशाब निकलता है; कुछ दूधकी तरह रङ्गवाली तली जमती है। लाला मूत्ररोगमें हाथ पैरोंमें शोथ। मूत्रनाली और मलान्त्रमें चींटीं रेंगनेकी तरह अनुभव होता है। सहजमें ही पेशाबका वेग रोक नहीं सकता।

पुं-जननेन्द्रिय।—मूत्रनालीमें भयानक यन्त्रणा और जलनके साथ रातमें लिङ्गमें कड़ापन होना (Chordee = कैनाब-सैट, कैन्थ, मार्क, नैट-कार्ब, पल्स, थूजा)। मूत्रस्थलीकी ग्रीवाके स्थानपर तकलीफ देनेवाला वृथा वेग (Tenesmus = कैन्थ, कोपेवा, क्लिमेट)। मूत्रनाली और मलान्त्रमें सुरसुरी होती है, मानों चींटी रेंग रही है, ऐसा मालूम होना (जैङ्गस-ऐफूर, पैट्रो-सेलिन)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु आरम्भ होनेके पहले दाहिने वक्षमें और स्तनमें बहुत दर्द होता है (कैल्के, कोना)। जरायु लगातार नीचे झुक जाना चाहता है, परन्तु बैठनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो ऊपरकी ओर धक्का दे रहा है (नैट्र-क्लोर); जरायु इतना उतर जाता है, कि रोगिनी स्वयं जरायु ग्रीवाको छू सकती है, जरायुका पश्चादावर्त्तन (Retroversion)। प्रदर,—सिझाये हुए अरारोटकी तरह स्राव (कोलोफिल, हाइड्रेस, कैलिबाई); मल सरल होनेपर भी स्राव गाढ़े गोंदकी तरह लसदार हुआ करता है,—योनि और योनिका बाहरी भाग जखम भरा और उसमें खुजलाहट होती है (लैके-सीन) और ये सब अंश बहुत फूल जाते हैं।

श्वासयंत्र।—सामान्य कष्ट देनेवाली खसखुसी खाँसी,—कभी कभी वक्षमें दर्द मालूम होता है और फीके रङ्गका पीला गाढ़ा श्लेष्मा निकला करता है। कभी कभी कुछ धुमेला या धुमेला सफेद गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता

ऋतु-रोध, यौवन आनेके समय शुक्रका पतलापन और बहुत पेशाब होना, काला और पानीकी तरह रक्तस्राव, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, संगमके समय दर्द, दाहिने बाहु और कोहनोमें दर्द, क्रिमि, पेशाबमें चमकीला दानाकी तरह पदार्थ वगैरह इसके निर्णायक लक्षण हैं।

सम्बन्ध।—ह्रास-वृद्धि।—भोजनके बाद, विशेषकर अण्डा खानेपर हिलने-डोलने, रातमें और सवेरे **बढ़ना**; भोजनके समय खाँसीका **घटना।**

तुलनीय।—चायना, नेट्रम-म्यू, सेङ्गुइनेरिया, फेरम-पिक्रि, और लौह घटित अन्यान्य दवाएँ।

शक्ति।—साधारणतः निम्न-शक्ति, खूनकी कमीमें भोजनके बाद ३x और मूत्रग्रन्थि प्रदाहमें मूल अर्क १ से ५ बूंदकी मात्रामें दिनमें तीन बार सेवन करना चाहिये।

फेरम परनाइट्रिकम।

(FERRUM PERNITRICUM)

दूसरा नाम।—परनाइट्रेट आव आयरन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल आकारमें क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बदहजमीकी वजहसे उदरामय, यक्ष्मारोगीका उदरामय। दुर्बलता और स्नायु प्रधान स्त्रियोंका उदरामय, गण्ड-माला धातुवाले बच्चोंकी गाँठ फूलना और आँखोंमें प्रदाह होनेपर लाभदायक है।

जहाँ फेरम और नाइट्रिक एसिडका सम्मिलित लक्षण दिखाई देता है, उन सब जगहोंमें इससे आशातीत लाभ दिखाई देता है।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

फेरम फास्फोरिकाम।
(FERRUM PHOSPHORICUM)

दूसरा नाम।—फेरम फास्फेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना ; मूत्रस्थलीका पक्षाघात ; श्वासनलीका प्रदाह ; शूल ; खाँसी ; घुंडी खाँसी ; मूलाधारका प्रदाह ; मदात्यय ; बहुमूत्र ; अतिसार ; अजीर्ण ; आमाशय ; कानकी बीमारी ; विसर्प ; ज्वर ; शीत कालके फोड़े ; पाकाशयका प्रदाह ; प्रमेह ; रक्त-वमन ; रक्तोल्लास ; शरीरके किसी भी द्वारसे रक्तस्राव ; हाथका फूलना ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; कलेजा धड़कना ; प्रदाह ; चोट ; सविराम ज्वर ; मसानेकी बीमारी ; खसड़ा ; कर्णमूल ; स्नायुशूल ; नाक से रक्तस्राव ; यक्ष्मा ; फेफड़ेका प्रदाह ; वात ; गुहौरी ; पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना ; शिराओंका फूलना ; वमन ; हूप-खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० सुस्लरके तन्तुजायु (Biochemistry) शास्त्रके चिकित्साके अनुसार फेरम-फास हमारे ऐकोनाइटम और जेलसीमियमके मध्यवर्त्ती भेषजके रूपमें व्यवहृत और प्रयुक्त हुआ करता है। डा० फेरिङ्गटन कहते हैं:—"हैमामिलिसकी तरह यह जीव देहकी रक्त संचालनकी क्रियाके ऊपर आधिपत्य प्रकट करता है। प्रदाहकी जिस अवस्थामें "धमनी आदिका प्रसारण" हुआ करता है, फेरम फास उसी अवस्थाकी दवा है। ऐसे अवसरपर इसका प्रयोग होनेपर रोग (प्रदाह) फिर आगे बढ़ नहीं सकता ; जिस तरह फेफड़ेमें रक्त संचयकी अधिकता होनेपर, यदि इसका प्रयोग किया जाये तो फिर फेफड़ेका प्रदाह नहीं हो सकता (Pneumonia) ; वक्षःस्थलमें बहुत दर्द और इस ढंगका दर्द मानो चोट लग गयी है,—नाड़ी पुष्ट और घूमती हुई, पर ऐकोनाइटकी तरह डोरीकी तरह अनमनीय नहीं रहती। बलगम परिमाणमें बहुत थोड़ा निकलता है और खून मिला रहता है ; स्राव आदि खून मिले रहते हैं, और ऐकोनाइटकी तरह

कान ।—कानमें बहुत प्रदाह ; रोगवाली जगह कच्चे मांसकी तरह दिखाई देती है ; रक्तस्राव प्रवणताके साथ पोव भरा श्लेष्मा बहता है ; पीव बहना आरम्भ होते ही प्रदाह शान्त हो जाता है। कानमें आवाज आती है। कर्णमूल ग्रन्थि (Parotids) में दर्द पैदा करनेवाली लाल रंगकी सूजन। नया कर्ण प्रदाह,—कर्ण-पटह लाल और बाहरकी ओरसे फूला रहता है (बेलके प्रयोगसे लाभ न होनेपर,—फेरम-फास, पीव पैदा होनेमें बाधा डालता है)।

नाक ।—सर्दीकी पहली अवस्था, सर्दी-प्रवण धातु। बच्चोंकी नाकसे चमकीले लाल रङ्गके खूनका स्राव होता है। नाकसे खूनका स्राव हो जाने बाद सरका दर्द घट जाता है (ब्य फो ; मिलिलोट, मेग-सल्फ, रैफेनस)। नासाग्रकी तलीकी खाल उघड़ जाती है और इसीलिये विसर्प हो जाता है (Erysipelas)।

मुखमण्डल आदि ।—चेहरा मिट्टीके रङ्गका, उजला और मलिन ; चेहरा तमतमाया हुआ और दोनों गालोंमें दर्द। वे गर्म तथा लाल रहते हैं। चेहरेके दाहिनी ओरका स्नायुशूल, सर झुकाने या हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है। चिबुक और ललाटमें व्रण पैदा हो जाता है। दन्तशूल,—प्रत्येक बार भोजनके बाद (ब्राई, कैमो),—गर्म पानीय पीनेसे बढ़ जाता है (ब्राई, पल्स, कैमो, काफि, नक्स)। बच्चोंके दाँत निकलनेके समय बोखारके साथ नाना प्रकारके उपसर्ग।

गलेके भीतर ।—मुंहके भीतर गर्मी ; जिह्वामूलकी बगलके दोनों गह्वर प्रदाह-भरे और लाल। जखम भरा कण्ठका दर्द (Ulecerated sore throat),—दोनों गलकोष (Tonsils) लाल और फूले। नया उपझिल्लीका प्रदाह या रोहिनी (Diphtheria)। गवैयोंके गलेका जखम, नींद खुलनेपर कण्ठ अकड़ जाता है, फूल जाता है और दर्द-भरा मालूम होता है ; खाली घूंट लेनेपर दर्द बढ़ता है। निगलनेके समय गलेमें (दाहिनी ओर) ऐसा मालूम होता है मानो कुछ अड़ गया है ([illegible] ड, एरम, ; बेल, लैके, रास, रेड, सल्फि)। [illegible] पर्दा पड़ता है और यह पर्दा बाईं और फैल [illegible]

पाकस्थली ।—मांस और दूधसे अरुचि (मांससे अरुचि=कैल्के, कार्बो-वेज, इग्ने, लाई, मार्क, ओलियेन, केलि-बाई, पेट्रोल, रास, सेवाड, सिपि,—दूधसे अरुचि=ऐमोन-कार्ब, सिना ; गुयाई, इग्ने, नेट-कार्ब, नक्स, पल्स, सिपि,) ; खट्टी डकार (ब्राई, कैल्के, पलस, कैलि-बाई) पाकस्थली में दर्द,—भोजनके बाद बढ़ना (आर्स, नक्स, प्लैट, पल्स, सिपि)। अजीर्ण पदार्थोंकी कै ।

अंत्राशय ।—उदरके अन्तर्वेष्टका नया प्रदाहमें (Acute peritonitis वेल, ऐको) ; पाकाशय और छाती वायुसे भरकर फूल उठती है (कैमो, इग्ने)। छातीके ऊपर और उदरकी आँतोंका भार असह्य मालूम होता है, रातमें कपड़े आदि दूर फेंक देता है (अरम, कार्बो-वेज, कास्टि, वेरेट)। अन्त्र-वृद्धि (आँत उतरना—Hernia),—प्रदाहान्वित और कड़े गोलेके आकार में हो जाती है (नक्स, ऐको, लाई)।

मल ।—बच्चोंका गर्मीके दिनोंका अतिसार,— मल हरा, पानीकी तरह, आम-भरा और खून मिला ; पाखानेके समय वेग देना पड़ता है (कूथन नहीं रहती—"आभास" देखिये),—ओकाई (retching) के साथ मोहयुक्त अतिसार,—बहुत दिनोंतक अतिसार भोगता भोगता बच्चा निद्रालु और उसके सारे अङ्ग शिथिल हो जाते हैं। माथा हिलाया करता है कराहा करता है और अधमुंदी आँखोंसे पड़ा रहता है (ऐसिड-हाइड्रो, कैल्के-फास, हेलिबो, पोडो, लाई, सल्फ) ; केवल खूनभरा मल,—खून मिली आँव और रस-मिली ; आधीरातसे सवेरेतक बढ़ना। अर्श,—प्रायः कड़ा पाखाना होता है। गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटना ।

पेशाब ।—मूत्राशयकी ग्रीवा और मूत्रनालीके अगले भागमें दर्दके साथ बार बार पेशाबका वेग होता है,—वेग आते ही तुरन्त बाध्य होकर पेशाब करना पड़ता है ; यदि वेग आते ही बच्चा पेशाब नहीं कर पाता तो उछलने कूदने लगता है (पेट्रो-सेलिन),—प्रसव हो जानेके बाद तकलीफ घट जाती है ; दिनमें और खड़े होनेवाली अवस्थामें बढ़ जाती है। प्रत्येक बार खाँसी आनेके साथ पेशाब निकल पड़ता है (कास्टि, वेरेट, स्किला, डालका)। मूत्रस्थली ग्रीवा वेष्टक-पेशीकी शिथिलताकी वजहसे रातमें अनजानमें पेशाब होता है। मूत्राशय या मूत्रस्थलीसे खूनका स्राव (टेरिब, कैन्थ)। प्रमेह,—प्रदाहिक या प्रथम अवस्था (ऐको, जेल्स, कैनाब-सैट), रमणेच्छाका अभाव ।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधारमें लगातार डंक मारनेकी तरह दर्द और जरायुका नीचेकी ओर आकर्षण। योनिका काँपना। रमणके समय योनिमें दर्द; योनि-परीक्षा असहनीय; अपत्य-पथ सूखा हुआ। प्रत्येक तीन सप्ताहके अन्तरसे ऋतुस्राव होता है,—स्राव बहुत ज्यादा होता है और उदर तथा कमरमें दर्द होता है; ऋतुके समय ब्रह्मतालुमें दर्द होना, गर्भावस्थामें खाँसी आती है और खाँसनेपर पेशाब होता है (स्किला; कास्टि देखो); गर्भिणीको तीसरे महीने सरमें दर्द होता है।

श्वास-प्रश्न।—गवैयोंके स्वरनाली-मुखका प्रदाह (Laryngitis) गला रुखड़ा हो जाता है,—ऊँचे स्वरसे गाने या वक्तृता देनेके कारण स्वरभङ्ग,—इसके साथ ही बड़ा-सा हरे रङ्गका जमा हुआ श्लेष्मा संचय होता है, और वक्षमें फुसफुस वेष्टका प्रदाहमें जैसा होता है, उसी तरह सुई वेधने की भाँति दर्द मालूम होता है। (कैलि-कार्ब, ब्राई, रेनन-बालबो, सेनेगा, रियुमेक्स, ऐक्टि)। क्षुद्र आक्षेपिक और यंत्रणादायक खाँसी। सामनेकी ओर झुकनेपर या कण्ठ छूनेपर शरीरको हिला देनेवाली और यंत्रणादायक खाँसी आया करती है; हूप-खाँसी,—इसके साथ ही ओकाई आ जाती है और कै होने लगती है। चोट लगने या गिरनेपर बलगमके साथ खून निकलता है (ड्रपिक, आर्निका)।

प्रत्यङ्गादि।—गर्दन और पीठमें धीमा धीमा दर्द। वातका दर्द या वात व्याधि,—शरीरकी एक सन्धिके बाद दूसरी पर आक्रमण होता है; रोगवाली सन्धि शोथ मिली और फूली रहती है और प्रायः लाल नहीं रहती; इसके साथ ही प्रबल ज्वर; जरा भी हिलने डोलनेपर दर्द बढ़ जाता है (ब्राई, आर्नि, गुयाइ, मार्क, केलमिया, नैट्र-म्यू,—शरीर संचालनसे घटना (ऐसा, डालका, कैलि-आयोड, पल्स, रास, रियुटा)। मणिबन्ध (केल्के, कास्टि, ऐक्टि-स्पाइ, केलि-ब्राई लैके)। और जानु-सन्धिका वात (ऐक्टि-स्पाइ, केलिकार्ब) दाहिने कन्धे और बाहुके ऊपरी अंगमें भयङ्कर खींचने और छेदनेकी तरह दर्द—जोरसे हाथ हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है (निकोलम); धीरे धीरे हिलानेपर घटता है, इसी लिये यह बाहु प्रायः स्थिर नहीं रखता, दाहिना हाथ अवशकी तरह। दाहिनी सन्धिके (त्रिको [illegible] loid) पेशीका नया वात,—चपकन पहन नहीं [illegible] कला [illegible] हाथसे कोई चीज पकड़

नहीं सकता। पैर तथा गुल्फ सन्धिमें इतना दर्द होता है, कि रोगी चि
करता है। ऊर्ध्व-शिखर या कूल्हा (Hip) प्रदेशमें दर्द और वहां स्पर्श स
नहीं होता (कौल्कै-मल्फ)। गुल्फ-सन्धिका बाहरी भाग भूरे रंगका ; नि
पैर बहुत फूला और दर्द भरा।

वृद्धि।—हवा खाने, गर्म पानीय पीने, भोजनके बाद, माँस खाने
चाय पीनेपर, जोरसे शरीर हिलानेपर, रातके समय और रातके अन्तिम भा
(४ से ६ बजेके बीचमें)।

घटना।—शीत लगने, ठण्डा पानी पीने, विश्रामसे और धीरे धीरे
या अङ्गको हिलानेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐको, जेल्स, कास्टि, स्किला ; कैल्को-सल
ऐसिड-टार्ट।

तुलनीय।—ऐकोन (अधिक पूर्ण नाड़ी) ; जेल्स (नाड़ी तरंगक
तरह) ; कास्टिकम ; पल्स (खाँसी) इत्यादि।

शक्ति।—२ रे दशमिकसे ३० शतवमिक क्रमतक व्यवहार हुँ
करता है।

फेरम-फास्फोरिकम-हाइड्रिकम।

(FERRUM PHOSPHORICUM HYDRICUM)

दूसरा नाम।—फेरम-हाइड्रोफास्फेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—उपतारा-प्रदाह, और बहुत ज्यादा
लिखनेकी वजहसे लिखनेवालोंका हाथ फड़कना लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

फेरम-पिक्रिकम ।

(FERRUM PICRICUM)

दूसरा नाम ।—पाइक्रेट आव आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अण्डलाल मिला पेशाब ; गट्ठे ; कानकी बीमारियां ; बहरापन ; कामला ; यकृतकी बीमारी ; नाकसे रक्तस्राव ; सन्धिवात या वात ; कर्ण प्रदाह ; स्वरभङ्ग ; मसे ।

उपयोगिता और आभास ।—काले केश, काली आँखें, खूनकी अधिकतावाले और पीले रङ्गके मनुष्योंकी बीमारीमें यह अत्यन्त उपयोगी है,—खासकर यदि उनमें यकृतकी बीमारी मौजूद हो । इसका एक उत्कृष्ट निर्णायक लक्षण यह है,—पित्तके रङ्गकी अधिकताके कारण सभी सन्धियां बहुत मलिन मालूम होती हैं (ऐसिड-पिक्र=अंगुलीकी गाँठें सब मलिन) । यकृतका बढ़ना और उसमें स्पर्श सहन न होना, यकृतकी बीमारीके साथ बहरापन ; खोल भरे मसे, विशेषकर यदि वे बहुतसे एकत्र ही निकलते हों । वक्तृता देने बाद स्वर-लोप हो जाना या किसी दूसरे यन्त्रकी क्रियाकी अधिकताकी वजहसे सुस्ती ; बुद्धि-दन्त (अक्ल-दांत) निकलनेके समय श्रवण-शक्तिका घट जाना और कानमें कितनी ही तरहकी आवाजें आना ; अग्नि-मान्द्य ; सरमें दर्द या शारीरिक और मानसिक श्रमके बाद बहुत थकावट मालूम होना इत्यादि लक्षणवाले पूतिवाष्पज (मलेरिया) ज्वर आदिमें यह आश्चर्य-जनक कार्य करता है । चर्मके लक्षणोंमें एक असाधारण उल्लेख योग्य लक्षण है,—"हाथके अँगूठेके पास ऐसा अनुभव होता है, कि मसा निकल रहा है ।" बूढ़ोंकी मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि (Pros tate gland) का बढ़ना । नाकसे रक्तस्राव ।

लक्षणावली ।

कान ।—ऋतुके पहले श्रवण-शक्तिका घट जाना । कानमें फुट-फाट शब्द । कानके भीतरकी कैशिक (Capillary) धमनी आदिकी विस्तृत प्रदाह

को वजहसे बहरापन (Vascular deafness)। दांतका (Dental) स्नायु-शूल,—दर्द आंख और कानतक फैल जाता है। बुद्धि दन्त निकलनेके समय श्रवण शक्तिका लोप हो जाना।

पाकाशय आदि।—अग्निमान्द्य, इसके साथ ही जीभपर मैल। भोजन कर लेने बाद सरमें दर्द,—विशेषकर काले केश और पित्त प्रधान मनुष्यों की बीमारी। यकृतमें इतना दर्द रहता है, कि हाथ नहीं लगाया जा सकता।

मूत्रयन्त्र।—रातमें मानो मूत्राशय पेशाबसे भरा रहता है—ऐसा मालूम होता है और मलान्त्रमें दबाव मालूम होनेके साथ बार बार पेशाब होता है; मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि (Prostate gland) का बढ़ना (सैबाल-सेरु, थूजा; चिमैफि; सोलिडेगो; आयोड)—विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका (आर्जेण्ट-नाई;—बढ़नेवाली अवस्थामें ऐसा मालूम होता है मानो गोलेपर बैठा हुआ है—कैनाब-एण्डि, चिमैफि)। मूत्राशय ग्रीवा और मूत्रनालीके मुंहपर जलन और दर्द (फेर-फास, बेरोस्मा; पप्युलस-ट्रि,—मूत्ररोध)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके दाहिने पार्श्वसे समूचे बाहुमें दर्द होता है। कशेरुका मज्जाके क्षयकी वजहसे इन्द्रिय आदिकी क्रियाका न होना,—जब रोग दर्शनेन्द्रियमें अड़ा रहता है और दूसरे अङ्ग या इन्द्रिय आदिपर बीमारीका हमला नहीं होता (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, जेलस)।

त्वचा।—चेहरेपर मसे। खीलवाले या एक साथ ही बहुतसे निकल आते हैं। हाथके अँगूठेमें ऐसा मालूम होता है, मानो मसा निकल रहा है।

वृद्धि।—किसी इन्द्रिय या अङ्गकी क्रियाकी अधिकता और शारीरिक या मानसिक क्लान्तिकी वजहसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-पाई, ऐसिड-नाई, थूजा; आर्जेण्ट-नाई, ऐल्यू, जेलस, कैल्के, पिक्, सैबाल-सेरु, चिमैफि।

शक्ति।—डा० क्लार्क (जे०एच) कहते हैं—अत्यन्त निम्नक्रमके प्रयोग से लक्षण आदि बढ़ जाते हैं। इसलिये तृतीय दशमिक क्रम (विचूर्ण) से द्वादश (१२ वां) शततमिक क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

फेरम पाइरोफास्फोरिकम ।

(FERRUM PYROPHOSPHORICUM)

दूसरा नाम ।— पाइरो फास्फेट आव आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

उपयोगिता और आभास ।—माथेमें रक्त सञ्चय और उसी वजहसे सर-दर्दमें इसकी निम्नशक्ति विशेष लाभदायक है। किसी किसीके मतसे पलकोंमें खोल-भरे अर्बुद (Cystes) में यदि फेरमफाससे फायदा न हो तो फेरम पाइरो-फास लाभदायक होता है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फेरम सल्फ्युरिकम ।

(FERRUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—सलफेट आव आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—यद्यपि अन्यान्य लौह घटित औषधियोंकी तरह रक्तकी बीमारियोंमें ही इसका व्यवहार होता है परन्तु सलफर का चरित्रगत लक्षण ही इसका निरूपण करता है। फेरम सल्फ्युरिकमका रोग लक्षण उत्तापसे और गर्म कमरेमें बढ़ जाता है और ठण्डी हवा और बरफ़के प्रयोगसे घट जाता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—फास्फोरस, सिना, वैपुटि, अन्यान्य लौह घटित दवाएँ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फेरम टार्टारिकम ।

(FERRUM TARTARICUM)

दूसरा नाम ।—टार्टर आव आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—हृत्‌शूल, पाकाशय और गलनालीके संयोग स्थलपर उत्ताप और दर्द और सर-दर्दके लक्षणमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फेरुला ग्लौका ।

(FERULA GLAUCA)

दूसरा नाम ।—बोनाफा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—औरतोंकी बहुत अधिक संगमेच्छा, योनिमें खुजली, शरीरके किसी किसी अंशमें उत्ताप और जलन और किसी किसी अंशमें शीत मालूम होना लक्षणमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—औरिगेनम, प्लेटि, कैन्थरिस ।

शक्ति ।—३x—६ ।

फिलिक्स-मास ।

(FILIX MAS)

दूसरा नाम ।—मेल फार्न ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—तलपेटका फूलना ; गर्भ-स्राव ; अन्धापन ; बन्ध्यात्व ; फीतेकी तरह क्रिमि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह क्रिमि रोगमें व्यवहारके लिये प्रसिद्ध है:—पर इसके और भी कई उत्कृष्ट व्यवहार हैं:—पेट फूलना, वमन, उदरामय योनिभ्रंश, बन्ध्यात्व, गर्भ-स्राव, मिठाई आदि खानेबाद पेटमें दर्द वगैरहमें भी यह लाभदायक है। खाँसी न रहनेपर यदि हृत्पिण्ड प्रदेशमें सुई वेधनेकी तरह दर्दके साथ श्वासकृच्छ्र मौजूद हो तो इससे आराम हो जाता है।

लक्षणावली ।

मन ।—उत्तेजनाशील ; चिड़चिड़ा । जड़ता, तन्द्रा, बेहोशी ।

मस्तक ।— सरमें चक्कर आना ।

नाक ।— खुजलाती है ; चेहरा पीला ।

आंख ।—पुतली फैली और अस्पष्ट या डेरा देखना—टेढ़ी दृष्टि होकर धीरे धीरे दर्शन स्नायुका क्षय हो जाता है और अन्धापन आ जाता है।

उदर ।—पेट फूलता है। तलपेटमें ऐसा दर्द होता है, मानो काटता या खोंचा मारता है, मिठाई खानेपर बढ़ जाता है। उदरामय और बार बार वमनके साथ पेटमें बहुत दर्द । क्रमि-शूल—नाक खुजलाती है, चेहरा उतरा रहता है और आँखके चारों ओर नीला घेरा रहता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु एक सप्ताह तक बन्द रहकर फिर होने लगता है और तीन सप्ताहतक रहता है। योनि-भ्रंश; मूत्रस्थलीमें दर्द और यन्त्रणादायक तथा वेग तथा भीतरी दर्दके साथ बार बार पेशाब होना (चिमेफि)। गर्भ-स्राव, बन्ध्यात्व (बोर, अरम-म्यू-नैट, प्लेट)।

निद्रा ।—बहुत औंघाई।

ज्वर ।—प्रबल ज्वर, कम्प, पेटमें दर्द, अतिसार इत्यादि।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ग्रैनेट, कूसो ; क्यूकार्बिट (पट्ट-क्रमि); जेलसि, कार्बोन-सल्फ (जाल दृष्टि); ऐपिट-क्रूड, इपिक, ऐपोसिनम।

शक्ति ।—१ म से ३ य दशमिक। पट्ट क्रिमिके लिये आधेसे १ ड्राम तक मूल अर्कका प्रयोग होता है।

फार्मिका रियुफा।

(FORMICA RUFA)

दूसरा नाम।—दि-ऐण्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित लाल दीमकसे तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—संन्यास; मस्तिष्कका विकार; चोट आदि; काला दाग पड़ना; ताण्डव; खाँसी; अतिसार; अस्थि खिसकना; शोथ; आँखकी बहुत सी बीमारियाँ; मुँहका पक्षाघात; पैरका पसीना बन्द होकर बहुतसे उपसर्ग; छोटी सन्धिकी बहुत-सी बीमारियाँ; छोटी सन्धियोंका वात; केश झड़ना या टाक पड़ जाना; सर दर्द; जोरसे कोई चीज उठानेके कारण किसी स्थानमें दर्द; पक्षाघात; वात; दृष्टिमें विकार; मेरुदण्डकी बहुत सी बीमारियाँ; ग्रीवामें दर्द; गलेमें जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—छोटी सन्धियोंका वात (Gout) और सन्धिवात रोगकी यह उत्कृष्ट दवा है। इसके दर्दका ह्रास और वृद्धि ठीक ब्रायोनियाकी तरह होती है अर्थात रोगवाला अंग हिलानेपर रोग बढ़ जाता है और रगड़ने और दबानेपर रोग घटता है। शरीरके दाहिने अङ्गमें ही इसके लक्षण आदि अधिक प्रकट होते हैं और दर्दकी अधिकता मालूम होती है। दर्द आदि एकाएक पैदा हो जाता है और तेजीसे एक जगहसे दूसरी जगह हट जाता है; पहले दाहिने अङ्गमें और फिर बाएँ अंगमें प्रकट होता है। मेरुदण्डके ऊपर क्रियाकी वजहसे इसके द्वारा पक्षाघात और पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना आरम्भ हो जाता है। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं, "माथा बहुत भारी और बढ़ा हुआ मालूम होता है" "ललाटमें बुलबुले फटनेकी तरह मालूम होता है" "पसीना निकलने बाद तकलीफ घट जाती है"; "कितनेही स्थानोंमें जलन मालूम होती है,—ठण्डे पानीसे धोनेपर जलन बढ़ती है" और "केश झाड़नेपर सर दर्द घट जाता है।"

लक्षणावली।

मन।—बहुत प्रसन्न चित्त और मानसिक उत्तेजना, स्मरणशक्तिका अभाव।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—मालूम होता है मानो सभी चीजें काँप रही हैं (ऐगार) और शरीर मानो चक्कर खा रहा है; (सलफ); शय्यामें सोनेके समय सरमें चक्कर आनेके साथ साथ बाईं आँखके ऊपर दर्द होता है; आँखके सामने अँधेरा दिखाई देता है (ऐगार, जेलस, कैलि-कार्ब)। बैठनेपर घटना। मस्तिष्क भारी और बड़ा मालूम होता है। ललाटमें बुलबुले टूटनेकी तरह मालूम होना; सरमें दर्द,—शय्यापर उठ बैठनेसे बढ़ जाता है और केश झाड़नेसे घटता है (केश झाड़नेपर घटना=नाइट्रम)। केश झाड़ना बन्द हो जाता है। कानके भीतरी गम्भीरतम प्रदेशमें सुरसुरी मालम होती है। कानमें नाना प्रकारकी आवाज (घण्टा बजनेकी तरह आवाज=ऐम्ब्रा, कैल्के, चोना, मैङ्ग, नेट्र-म्यूर)।

आँख।—आँख खुलनेपर आँखमें दर्द होता है,—धोनेपर घटता है (ऐसेरम)। आँखपर ऐसी ठण्डक मालूम होती है, मानो आँखपर बरफ रखी हो। आँखमें बहुत अधिक सुरसुरी होती है। तिमिर दृष्टि,—सभी चीजें मानो अन्धकारमें ढकी मालूम होती हैं (ऐल्यू, बेल, कैल्के, ड्रयोन, हिमेट, मार्क, प्लम्ब); ऐसा मालूम होता है मानो दृष्टिके सामने सब अँधेरा हो गया और सरमें चक्कर आना। कुछ देरतक बैठे बिना चला नहीं जाता (चारों ओर अँधेरा दिखाई देता है=ऐगार, कैलि-कार्ब जेलस लैक-कैन)। आमवातकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (बेल, ब्राई, ऐकी, स्पाइजि, नक्स)।

मुखमण्डल।—चेहरेका समूचा बायाँ भाग और बायाँ गाल ऐसा मालूम होता है मानो अवश हो गया है और फूल पड़ा है। चर्बी भरे पदार्थ खाने बाद ऐसा स्वाद मुँहमें आता है मानो मुँह सड़ गया है (ऐसा मालूम होता है, कि मुँह खट्टा हो गया है=ऐम्ब्रा; कार्बो-वे, लाइ, सल्फ)। बराबर समयका अन्तर देकर अर्थात रह रहकर दाँतमें दर्द होता है। पिपरमिण्ट खानेपर जैसा अनुभव होता है, उसी तरह मानो गलेमें ठण्डक मालूम होती है। सवेरे गलेमें श्लेष्मा भर जाता है और मुँह जखमसे भरा मालूम होता है।

पाकस्थली।—पाकाशयमें जलन या उत्तापकी अधिकता मालूम होती है (आर्स, ब्राई, कैन्थ, लोरो, मार्क-कोर)। अन्ननाली और पाकस्थलीके संयोग स्थानपर हमेशा एक तरहका दबाव मालूम होता है और जलन होती है मानो एक आधा सिझाया हुआ अण्डा अन्ननाली और पाकस्थलीके संयोग स्थलपर अड़ा हुआ है (एबियेज-नाइग्रा)। सरमें चक्कर आता है और जी मिचलाता

है, (ऐसेर, क्रियो, नेट-सल्फ, कोलो, फाइटो, मार्क, ऐण्टि-टार्ट) और पीली आभा लिये वीता खेष्मा के हो जाता है (आर्स-थायोड, ओलियैन, इग्न)। खासकर गला साफ करते समय या कुल्ला करते समय, खाने पीनेके समय, विशेषकर दोनों हनु मिलानेपर गलेमें दर्द मालूम होता है। श्रोहामें धीरा धीरा दर्द होता है, तलपेटमें बहुत दर्द मालूम होता है। पेट फूलता है, सवेरे थोड़ा थोड़ा वायु निकलता है (कोल्चि फास, हिप) और इसके बाद पतला पाखाना लग आता है। जाड़ा मालूम होनेकी वजहसे सिहरावन, इसके साथ ही तलपेट में बहुत दर्द (कोलो)।

मलान्त्र और मल।—मलद्वारमें संकोचन (नेट-सूर, नक्स-वोम, थूजा)। उदरामय—मल पतला, तलपेटमें कमजोरी, मलद्वारमें जलन और सरसुरी, भोजन आदिके बाद या केवल दिनमें या आधी रातके बाद पतले दस्त आते हैं और पेट गड़गड़ाता है। पाखाना होनेके पहले तलपेटमें दर्द होता है। मलान्त्र (Rectum) में दबाव मालूम होता है, संध्याके समय और सोनेपर बढ़ता है। दर्द भरा वेग होनेपर भी पाखाना नहीं होता।

पेशाब।—मूत्रस्थलीका पक्षाघात (ऐको, आर्स, वेल, कोन्य, ओपी, सिकेलि, साइक्यू, डालका, हायो, लैके, लोरो),—बूंद बूंद पेशाब निकलता है (कोन्य, क्लिमैट, कोना, कोपेवा; डालका; सुफोर्स, ऐगार, कास्टि, फास, टेरिव)। दूनी परिमाणमें पेशाब होता है, यहांतक कि रातमें भी होता है (स्किला, ऐसिड-फास) बल्कि रातमें बढ़ जाता है, (म्यूरैक्स-प, युरेन-नाई)। पेशाबका रङ्ग केसरकी तरह होता है या गहरा पीला; बार बार पेशाब होता है। पेशाब लार-भरा और खून मिला तथा पेशाबका वेग भी खूब ज्यादा होता है (एपिस, कोन्य, आर्स, फेर-फास)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रबल उत्तेजना। सीढ़ी चढ़नेके समय जननेन्द्रिय आदि अवश मालूम होती है। ऋतुस्राव,—परिमाणमें थोड़ा और फीका; तीसरे दिन जरायुका नीचेकी ओर खिंचाव; कुचकी (Hip-joint) और अस्थि-गह्वरमें ऐंठनकी तरह दर्द। नियमित समयके आठ दिन पहले ही ऋतु आरम्भ हो जाता है (सात दिन पहले=कुरारि; दो दिन=डिजिटेलिन; डाका)। प्रसूताओंके स्तनमें दूधका अभाव (आर्टिका, ऐग्नाफि, रिसिनस, ऐग्नस-कैस्ट)।

श्वास-यंत्र ।—कण्ठमें छोटे छोटे श्लेष्मा खण्ड श्रड़े रहते हैं, खाँसनेप नहीं निकलते । बहुत दिनोंकी सुस्त करनेवाली और क्लान्तिजनक खाँसी,—रातमें और हिलने-डोलनेपर बढ़ती है । ललाटमें दर्द और छातीमें ऐसी कसा वटका भाव मानो जकड़ गया है। खाँसीका प्रचण्ड प्रकोप और दिन रात वमन बाएँ फेफड़ेमें एकाएक तेज दर्द पैदा हो जाता है और ऐसा हो जाता है, माने रोगी गिर जायगा । वक्षमें ऐसा अनुभव होनेके साथ स्पन्दन होता है, कि किसे चिड़ियेका पर हिल रहा है । दाहिने स्तन-वृन्तमें बेधनेकी तरह तेज दर्द ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—पीठसे बाहु और उरुतक बेधनेकी तरह तेज दर्द रोगवाली जगहपर सुरसुरी होती है । गाड़ीपर चढ़कर भ्रमण करनेके समय बाहु और हाथ सुन्न जैसे मालूम होते हैं । हाथकी अँगुलीके नखके नीचे पीब इकट्ठा होता है और नख उड़ जाते हैं । निचले अङ्ग आदिमें वातका दर्द : दर्द एक जगहसे दूसरी जगह सरक जाता है (पल्स, कैलि-बाई) और रोगी बेचैनी प्रकट करता है । रातमें तलवे और पैरकी अँगुलीमें ऐंठन होती है। विसर्पकी तरह समतल सूजन, उसमें खुजली होती है । बहुत आलस्य मालूम होनेकी वजहसे रोगी हमेशा जम्हाई लिया करता है और हाथ-पैर आदि फैलाता है (ऐमिल-नाई) । शरीरके कितने ही स्थानोंपर कुटकुटी होती है,—मानो बिछुआ लग गया है । कितने ही स्थानोंमें जलन पैदा करनेवाली खुजली, खुजलानेपर घटना, ठण्डे पानीसे धोनेपर बढ़ना (कैम) । इससे पैदा हुआ दर्द धीरे धीरे मलनेपर घटता है । पर चबानेपर गर्दनका बायाँ भाग बहुत दर्द करता है । गर्दनके बायें पार्श्वसे बायें बाहुतक अकड़ जाता है, थोड़ा हिलाने या घुमानेपर दर्द बढ़ जाता है और गर्म लोहेसे सेंकनेपर घटता है ।

निद्रालुता ।—औंघाई या पर्यायक्रमसे जागरण और निद्रालुता ; अश्लील सपने देखना । पसीना होनेपर भी तकलीफ घटती नहीं है । इच्छानुसार भावसे सोनेपर मानो खूब सो सकता ।

वृद्धि ।—शरीर हिलानेपर · पानीके प्रयो[illegible]

घटना ।—धीरे धीरे [illegible] सेंकनेपर और आधी रातके बाद ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।

(५ [illegible] दूध, पेशाब [illegible]

पेशाव)। पाइनस सिल, वायुनालीमें श्लेष्मा संचय होना और पेशाव); फ्रागे वेस्का (स्तनमें दूधका घटना); (कैम्फ; ठण्ड़े पानीके प्रयोगसे जलनका बढ़ना); (शीतार्त्तता) पाइनस-सिल, आर्टिका इयु, (उत्ताप मालूम होना)=एपिस; वेस्का; क्लोरैल, (पर पसीना होनेपर घटना)। (तलपेटमें स्पर्श असहनीयता)=एपिस; आर्टिका युरेन्स। (वातकी वजहसे दर्द)=ब्राई, डालका; (आमवात)=आर्टिका-युरेन्स।

शक्ति ।—६ ठे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

फ्रागेरिया वेस्का ।

(FRAGARIA VESCA)

दूसरा नाम ।—स्ट्रा बेरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पके हुए स्ट्रा-वेरी नामक फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—शोथ; पैत्तिक भाव; जाड़े के दिनोंके फोड़े; आक्षेप; विसर्प; प्रमेह; पट्ट-कृमि; जीभ कांटोंसे भरा; सूजन; आमवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—"जीभ फूली, लाल और उठे हुए कांटोंसे भरी—ये इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। प्रसूताओंके स्तनके आकारका बिगड़ जाना, और दूधका परिमाण घटना या सूख जाना, बहुत ज्यादा गाढ़े गोंदकी तरह पसीना निकलना, जाड़े के दिनोंके फोड़े या बिवाई—गर्मीके दिनोंमें बढ़ना वगैरह कई इसके प्रधान क्रियाफल हैं। संन्यासकी तरह श्वास-रोध-होनेका उपक्रम, सुस्ती, प्रमेहका फिरसे पैदा हो जाना, सारी देहमें सूजन, आमवात वगैरह इससे आराम हो जाते हैं।

लक्षणावली ।

मुखमण्डल ।—चेहरा नीला, जीभ फूली,—इतनी बड़ी हो जाती है, मानो बाहर निकल पड़ेगी (क्रोमो, बेसिलि, इनैन्थि-क्रोकेटा), और लाल तथा

उठे हुए काँटोंसे भरी (वेल, मार्क-क्रोर; स्तन—ऐण्टि-टार्ट, एपिस, रासटक्स)।

पाकाशय आदि ।—वमन, पाकाशय और उदर तथा पेटमें भयानक दर्द; पेट फूल उठता है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—प्रमेह,—बहुत दिनोंतक बन्द रहनेपर एकाएक पैदा हो जाना, (ऐग्नस-कैस्ट, क्लिमेट)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—स्तन छोटे और उनका दूध सूख जाता है (फार्मिका)। (जिनके बच्चे मर गये हों, उनका दूध सोख लेनेके लिये यह बहुत उपयोगी है)।

श्वास-यंत्र, हृत्पिण्ड इत्यादि ।—संन्यासकी आक्रमणके पहले जैसा हो जाता है, उसी तरह एकाएक श्वास-रोध हो जानेका उपक्रम। एकाएक हृत्पिण्डकी क्रिया रुक जानेकी वजहसे रोगी बहुत चीण और सुस्त हो पड़ता है, नाड़ी सूक्ष्म और सविराम।

सार्वाङ्गिक ।—समूची देह फूल उठती है (आर्स, वायना, हेलिबो) और बहुत सुस्त हो पड़ता है, यहांतक कि उठनेकी शक्ति नहीं रहती। आमवात। विसर्प या सान्निपातिक ज्वरमें पैदा हुई बैंगनी रङ्गकी छोटी छोटी छोटी फुन्सियोंकी तरह उद्भेद।

ज्वर ।—बहुत ज्यादा गाढ़ा गोंदकी तरल लसदार पसीना होता है (ऐन्थ्रा, डैफनी, कैलि-ब्रोम, प्लम्ब)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एपिस, आर्टिका-इयु, ऐसिड-हाइड्रो।

शक्ति ।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम।

फ्रान्सिसिया-इयुनिफ्लोरा ।

(FRANCISCEA UNIFLORA)

दूसरा नाम ।—ब्रैजेलियन मनाक्का रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— सरमें दर्द ; उपदंश ; वात ; सन्धिवात ; हृत्पिण्डके आवरणका प्रदाह ।

उपयोगिता और आभास ।—वात व्याधि,—नया या पुराना— तेज या धीमा,—हृद्वेष्ट-प्रदाह और सर दर्द वगैरह रोगमें लाभदायक है ।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—बहुत यन्त्रणादायक, मानो माथा एक बन्धनीसे कसकर बँधा हुआ है (इग्न्यू, मार्क, सल्फ, ऐनाक, ऐण्टि-टार्ट, वार्या, ऐक्यू, वेस्टि, कैक्ट, ऐसिड-कार्बोलिक, चेलिडो); सरके पिछले भागमें, गर्दनके पीछे और मेरुदण्डमें अस्त्रकी चोटकी तरह या पतली सलाई गड़ने की तरह दर्द, सारे शरीरमें बहुत उत्ताप मालूम होना और अन्तमें बहुत ज्यादा पसीना होकर सब तकलीफें घट जाती हैं ।

शक्ति ।—नयी अवस्थामें १ ड्राम मूल अर्क १० आउन्स पानी मिलाकर जवान रोगियोंको प्रति एक या दो घण्टेका अन्तर देकर एक चमचकी मात्रासे सेवन कराना चाहिये । पुरानी अवस्थामें, रोगवाले अङ्गमें बहुत अकड़न रहनेसे, और एकाएक या लगातार शरीरको हिलाते रहनेपर बढ़ना लक्षण रहनेपर प्रति तीन घण्टेका अन्तर देकर मूल अर्क या १ म दशमिक क्रमका ५ बिन्दु सेवन कराना चाहिये ।

फ्रेञ्जेन्स वेड ।
(FRANZENS BED)

परिचय ।—वोहिमियाका फ्रेञ्जेन्स वेड प्रपातका जल ।

उपयोगिता और आभास ।—कब्जियत; उदरामय; अनपच; स्नायविक दुर्बलता वगैरह बीमारियोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नेट्रम-सल्फ, कैलि-आयोड ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फ्रैक्सिनस अमेरिकानस ।
(FRAXINUS AMERICANUS)

दूसरा नाम ।—ह्वाइट ऐश ।

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—जरायुकी बीमारी, जरायुका अपने स्थानसे हटना; जरायुका अर्बुद इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० बार्नेटके मतसे जरायुका बढ़ना, सामनेकी ओर घूम जाना (Retroversion or Antiversion); जरायुका अपने स्थानसे हटना; जरायुका बाहर निकल पड़ना (Prolapse) और जरायुका बहुत भारी हो जाना वगैरहकी यह अव्यर्थ महौषधि है । इसके सेवनसे जरायुकी बन्धनियोंमें बहुत ताकत आ जाती है, (Ligaments) और वह अपने स्थानसे हटे हुए जरायुको अपनी जगह पर खींच लेती है । नीचेकी ओर आकर्षणके साथ यदि जरायुमें सूतकी तरह तन्तुमय अर्बुद हो जायें तो उसमें भी लाभ होता है । ज्वरके बादवाला आँठका अवसम, फैलनेवाला या इधर उधर हटनेवाला शीत और कभी कभी उत्ताप पैदा हो जाना वगैरह भी इससे दूर हो जाता है ।

लक्षणावली ।

मन ।—स्नायविक अस्थिरता और विषन्नता तथा उद्वेग।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आता है और दर्द होता है। इसके बाद बोखार आ जाता है। सरके पीछे और गलेमें टपकका दर्द होता है, ज्वरके बाद वाला ओंठोंका जखम।

अन्नाशय ।—बाएँ पुट्ठेमें इतना दर्द कि हाथ नहीं लगाने देता; आँत आदिकी नीचेकी ओर खींचन जरुरमें मालूम होती है। कब्जियत (ऐलेट्रिस)। पेशाब परिमाणमें थोड़ा और उसका रङ्ग धुमैला।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायुका आयतन बढ़ जाना, अपनी जगहसे हटना, सामने या पीछेकी ओर झूल पड़ना, बाहर निकल पड़ना और बहुत भारी मालूम होना (मैक्रोटिन, ऐलेट्रिस-फेरि)। जरायुका सूतकी तरह तन्तुमय अर्बुद।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—हेलोनियस; ऐलेट्रिस-फेरि, मैक्रोटिन, लिलियम-टाईं, श्लैस्पाई-वार्सा, सिपिया।

शक्ति ।—मूल अर्क ५ से २० बूंदतक (रोज तीन चार बार सेवन करना चाहिये)।

फ्यूकस वेसिक्युलोसस ।
(FUCUS VESICULOSUS)

दूसरा नाम ।—सि-कैल्प।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे पौधेसे विचूर्ण या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— स्थूलता; अजीर्ण; गलगण्ड इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—यह मोटेपनकी एक उत्कृष्ट दवा है, क्योंकि यह शरीरके बहुत ज्यादा मेदकी शोषणकी क्रियामें सहायता पहुंचाता है; पाचन क्रियामें सहायता करता है, और पेटमें वायु पैदा होना रोकता और

घटाता है। अक्षिगोलकके बाहर निकल आनेके (Exophthalmos) साथ गलगण्ड रोग इसके द्वारा आराम हो जाया करता है (थाइराइडिन, स्पंजि, आयोड)। इसके कई निर्णायक लक्षण ये हैं:—सरमें असह्य दर्द; ललाटमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक लोहेके बँधनसे कसकर बँधा हुआ है, मानो ललाट दो हो जायगा। (ऐमोनकार्ब, वेल, ग्लोन, सिङ्को; मानो एक कनपटीसे दूसरे शङ्खदेश या कनपटी तक एक गर्म धमनीसे बँधा हुआ है=क्लोरल; मानो ललाटके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक एक काष्ठफलक पड़ा हुआ है=कक्यु, रास)। भूख और पाचन-शक्तिका घटना। वायु पैदा होना, या लक्षण घटना। गहरी और दुरारोग्य कब्जियत। ऐसा अनुभव होना मानो ऋतुके समय श्वास-रोध होनेकी तैयारी हो रही है।

सम्बन्ध।—सदृश।—वैसिलिन, वैडियेगा; आयोडम, फाइटो, थाइरायड।

शक्ति।—मूल अर्क १० बून्दके हिसाबसे दो तीन बार सेवन करना चाहिये।

गेडस मार्‌ुआ।

(GADUS MORRHUA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—काड मछलीकी सबसे ऊपरवाली कशेरुकाका (VERTEBRA)—चूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— दमा; मूलाधारकी बीमारी; अस्थि-सम्बन्धी बीमारी; खाँसी; क्षयकास इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—"ओलियम, जेकोरिस-ऐसेलाई"—की तरह यह भी श्वास, क्षय-कास, वगैरह फेफड़ेकी बीमारियोंमें विशेष लाभदायक हुआ करता है। लाइकोपोडियम और ऐण्टिम-टार्टारिकमकी तरह इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण "पंखा हिलानेकी तरह दोनों नासापुटोंका सिकुड़ना और फैलना।"—आरोग्यके सम्बन्धमें निराशा और मृत्यु कामना प्रई.

लक्षण बहुत ही प्रत्यक्ष दिखाई देता है। तलहत्थीमें जलन और हड्डीमें दर्द आदिमें भी इससे लाभ होता है।

लक्षणावली ।

मन ।—गहरा विषाद, आरोग्यके सम्बन्धमें निराशा (आर्स, कैक्ट, लेक-कैन, लिल्-टाई, मिडोरिन, पल्स); मृत्युकी कामना किये बिना रह नहीं सकता (ऐगि्-क्रूड, अरम : अरम-मूर-नेट, वेल, हाइड्रेस, नैट-सल्फ, ऐसिड-नाई, फास, प्लेट, रुस्टि, सिफिलिन, क्रोटेल-होरिडो, क्रोटेल-क्रेस्का : ग्रैफ)।

नाक ।—नींद खुलनेके बादसे समस्त दिन इस तरह तेजीसे श्वास-प्रश्वास चलने लगता है मानो न जाने कितना परिश्रम किया है और पंखा हिलनेकी तरह दोनों नासापुट सिकड़ते और फैला करते हैं।

अन्नाशय ।—पेटमें वायु इकट्ठा होकर बहुत फूल उठता है। समूचे तलपेटमें जलन करनेवाला उत्ताप मालूम होता है (ऐसिड-फास, कैम्फो)। वक्षस्थलमें दर्दके साथ उदरके दाहिने पार्श्वमें, पुट्ठे और मसानेमें तेज दर्द मालूम हुआ करता है। पतले दस्त या उदरामय।

पेशाब ।—मूत्राशय मानो फूल और भर गया है—इस तरह अनुभव होना (कैलेड, पल्स); मूत्रस्थलीमें सुई गड़नेकी तरह मालूम होता है (बार्बा, कैन्थ, लाई); पेशाब करना प्रायः असम्भव हो जाता है (कैन्थ, कोना, युफोर्ब)।

श्वास-यंत्र ।—स्वर इतना चीण मानो बहुत चेष्टा करनेपर कहीं मुंह से बात निकलती है (ऐमोन-कास्टि, कास्टि, चिनोपोड, इग्ने, फास, पल्स,—ऊँचे स्वरसे बात नहीं कर सकता = ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, ग्रैफ, हिप, नैट-कार्ब, ऐसिड-नाई, पेरिस, फास, पल्स, सिपि)। खांसी सरल और बलगम फेन-भरा (आर्स, डैफ, ओपि)। वक्षगह्वरके अन्तरतम प्रदेशमें दर्द और सांय सांय शब्द करनेवाली खांसीका प्रकोप (ब्राई, इपिक, ऐण्टि-टार्ट, पल्स, सैम्बियु, स्क्विया, स्क्विला)। श्वास-प्रश्वास बहुत ही कष्टकर—मानो सभी वायुनलियां रुकी हुई हैं (आर्स, कार्बो-वेज, इपिक, ऐण्टि-टार्ट, सैम्बु)। छातीमें तेजीसे चलनेवाला तेज दर्द—पहली बार हिलनेसे ही दर्द बढ़ जाता है, पर टहलनेपर समभावसे रहता है। सन्ध्याके समय दोनों फेफड़ोंमें तेज

दर्द। खाँसने, लम्बी साँस लेने और शरीरको हिलानेपर वक्ष-वेष्टमें रगड़ खाने की तरह दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—पीठके मध्य भागकी कशेरुकामें (Dorsal Vertebræ) तेज अस्त्राघातकी तरह चोट मालूम होती है। बाएँ जानुमें कुछ छेदने की तरह दर्द मालूम होता है; खड़े होनेवाली अवस्थामें जानु आप ही आप मुड़ जाता है। उरुकी अस्थिके (Femur) शिरोदेशसे जानुसन्धितक ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है।

ज्वर (शीत, उत्ताप और पसीना) ।—कमरसे पैरतक बहुत ठण्डा (मिनियन, सिकेलि, स्ट्रैम)। दोनों बाहु बहुत सूखे और गर्म (लिडम, मैग-कार्ब, ऐसिड-नाई, नक्स, पलस, सल्फ,—एक हाथ गर्म और दूसरा हाथ ठण्डा = डिजि,—पर्यायक्रमसे एक बार बायाँ हाथ ठण्डा, और एक बार दाहिना हाथ ठण्डा, = कक्यु)। तलहत्थी बहुत सूखी, गर्म (फेर, पोलिपो, सल्फ); संध्याके समय असह्य मालूम होता है (फेर); शीतावस्था रहित ज्वर (ऐनाक, आर्स, ऐङ्गस, नैट-म्यू)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ओलियम-जेकोरिस-ऐसेलाई; काम्बियोलिन, लेके-कार्ब, ग्रैफ, स्पञ्जि, ओलियम-रैन, मिनियन, फेर, पोलिपो।

शक्ति ।—१ ले से ३ रा दशमिक विचूर्ण।

गेलेगा ।

(GALEGA)

दूसरा नाम ।—गोट्स राय।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे पौधेके रससे अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—पीठमें दर्द; सुस्ती; खूनकी कमी; परिपोषणकी कमी; मूत्रग्रन्थिमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

इसकी निम्न-शक्तिके सेवनसे स्तन पिलानेवालियोंकी भूख और स्तनका दूध बढ़ जाया करता है।

तुलनीय ।—ऐग्न [illegible] -का [illegible] -टेल।

शक्ति ।—निम्न-

गैलियम।

(GALIUM)

दूसरा नाम।—क्लिवर्स, गुज-ग्रास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे उद्भिदसे अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह एक प्रकारकी पेशाब लानेवाली दवा है। शोथ-रोगमें इसका मूल अर्क आधा ड्राम मात्रामें सेवन करनेपर शोथ घटता है। इसके सेवनसे मूत्र-पथरी गल जाती है इसीलिये, मूत्र-पथरी रोग में भी इसका व्यवहार हुआ करता है।

यह कैन्सर और इसी तरहके दूषित जखमकी भी उत्कृष्ट दवा है। कैन्सर के जखममें इसके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे तुरन्त नया तन्तु पैदा हो जाता है और क्रमसे रोग आरोग्य पथपर आ जाता है।

शक्ति।—मूल अर्क आध ड्राम मात्रामें, एक प्याला दूध या पानीके साथ, दिनमें तीन बार सेवन करना चाहिये।

गैम्बोजिया।

(GAMBOGIA)

दूसरा नाम।—गमि गुटी। (Gummi Gutti)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चीन देशके एक तरहके गोंद या लेईकी तरह पदार्थसे मूल अर्क तैयार किया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मलद्वारकी बीमारियाँ; पीठमें दर्द; शूल, कमरके पीछेका दर्द; अतिसार; आँख का उठना; गलेका जखम; आँतोंका प्रदाह।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय या किसी दूसरी तरहके दस्त के आदिमें लाभके लिये गमि गुटि या गैम्बोजिया बहुत प्रसिद्ध है।

मल बहुत पतला और पीला या बहुत बदबूदार; गाढ़ा आम-भरा,—
दिनोंकी बीमारीके बाद एक बार समस्त मल बड़े वेगसे बाहर नि
है ; पाखाना हो जाने बाद ऐसा मालूम होता है मानो उदरमें भीतरसे
महान बीमार करनेवाला पदार्थ निकल गया ; मलद्वारमें इतनी जलन
है मानो मलद्वारमें घाव हो गया है। मानसिक अवसाद, विमर्ष
तीता-स्वाद, जीभमें जलन ; भूखकी कमी, खाँसी, भूख रहनेपर भी थो
खाते ही वह बन्द हो जाती है ; पलक और आँखका कोना
खुजलाता है,—बच्चा लगातार यह सब अंश खुजलाया करता है। उ
(Aphthæ), मुंहके भीतर और ओंठ और गालके भीतरी प्रदेशमें
जखम पैदा हो जाता है। खाने पीने बाद जी मिचलाता है और वमन
है। पेशाबमें प्याजकी गन्ध आती है,—समूचा घर इस गन्धसे भरा
है। सारे शरीरमें दर्द और दुबलापन, बहुत आलस्य और कमजोरी
काई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—क्या विश्राम और क्या शरी
हिलाने-डुलानेके समय और सवेरे उठनेपर सरमें चक्कर आया करत
(सवेरे सोकर उठनेपर सरमें चक्कर=नैट्र-म्यू)। दोपहरके पहले ब्रह्मत
चोटकी तरह दर्द,—निर्मल वायुके सेवनसे यह दर्द घट जाता है। श्री
और पीठमें दर्दके साथ सरमें बहुत भार मालूम होना। सरमें गर्मी च
पसीना हुआ करता है।

आँख ।—आँखका भीतरी कोना बहुत खुजलाता है (ऐल्यू, ए
थरम),—मलनेपर त्वचाको क्षय करनेवाला पानी गिरा करता है; नि
वायुमें आराम मिलता है। रातमें आँखें सट जाती हैं; सवेरे बहुत ज
होती है। शामको आँखमें बहुत खुजली होती है (सलफर)। ती
पहर और सन्ध्याके समय आँखमें भयंकर जलन और रोशनी सहन नहीं ह
निर्मल हवामें टहलनेके समय घट जाती है और सवेरे फिर पैदा हो ज
है। पलक और आँखके भीतरी कोनेमें बहुत खुजली रहती है—बच्चा हर
यह सब अंश रगड़ा करता है।

गलेके भीतर।—कण्ठके दाहिने पार्श्वमें डंक मारनेकी तरह भय दर्द होता है,—निगलनेके समय, पहले और बाद (ऐपिस, ऐल्यू, प केलि-भायोड)। कंठ छूनेपर भी उसमें बहुत दर्द मालूम होता है (लेके कण्ठके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो फूल गया है (बेल, हिपर, फाइ लेके)।

पाकस्थली।—मुंहका स्वाद बहुत तीता (ब्राई, चायना, मार्क, नै सल्फ, नक्स-वोम, पलस। जी मिचलाता है, डकारके साथ मुंहमें खट्टा पा भर आता है (कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, चायना, लाई, नेट-म्यू, नक्स-वोम फास, पलस, रोबिन, सल्फ)। बार बार दस्त और कै होता है और इस वजहसे सुस्ती आ जाती है। सन्ध्याके समय भयंकर प्यास (नेट-म्यू सिपिया)। भूख खूब रहनेपर भी जहाँ थोड़ा सा खाया कि पेट भरा हुआ मालूम होने लगा (ऐमोन-कार्ब, बेराई, ब्राई, साइक्ल, कोलचि, सिङ्कोम लाई, प्रूनस-स्पाइ, रियुम, रोडो)।

अन्त्राशय।—पाकाशय और अन्त्राशय खाली मालूम होता है (इग्ने, फास, जिङ्कम)। नाभि-प्रदेशमें सुई वेधनेकी तरह दर्द और पेट फूलकर कड़ा हो जाता है। यकृत-प्रदेशमें बहुत जलन (ऐको, ऐगार, केलि-कार्ब)। उदरमें गुड़ गुड़ शब्द होता है (ऐलो, एपिस, नेट-सल्फ, पलस) और पाखाना होनेके पहले नाभिके चारों ओर काटनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

मलान्त्र और मल।—उदरामय,—मल बहुत पतला और पीले रङ्गका, या गाढ़ा, हरा आम-मय, बदबूदार और जखम पैदा कर देनेवाला; प्रबल और बहुत देरतक रहनेवाले वेगके बाद एक साथही सब मल बड़े वेगसे बाहर निकला जाता है—वृद्ध मनुष्योंको अधिक होता है, सन्ध्याके समय, रातमें या ठण्ड लगनेपर बढ़ जाता है। पाखाना होनेके पहले एकाएक वेग और समूचे उदरमें उत्ताप तथा नखके आघातकी तरह और नाभि-प्रदेशमें तेज छेदनेकी तरह दर्द मालूम होता है; भयानक यन्त्रणाकी वजहसे रोगी हाथ-पैर सिकोड़कर चिल्लाया करता है। पाखाना हो जाने बाद बहुत आराम मालूम होता है (नक्स); मानो एक अत्यन्त सुखकर पदार्थ उदरसे बाहर निकल रहा है; मलद्वारमें बहुत जलन होती है और ऐसा मालूम होता है, कि वहाँ जखम हो गया है। कभी कभी पाखाना होने बाद तलपेटमें भया-

नक दर्द होता है। कब्जियत—मल कड़ा और थोड़ा, पर वेग अधिक होता है, मलान्त्रमें पीसने जैसा दर्द और जलन, मलान्त्र बाहर निकल पड़ता है (कैल्के, ग्रैनेट, इग्ने, लैके; मेजेर, रियुटा)।

पेशाब ।—बहुत देरका अन्तर देकर पेशाब होता है; पेशाबमें प्याज की गन्ध,—सारा घर उस गन्धसे भर जाता है। पहले कई बूंद निकलकर फिर पेशाब होना रुक जाता है और फिर मूत्रनालीके मुंहपर बहुत जलन होनेके साथ पेशाब होना आरम्भ होता है।

श्वासयंत्र ।—खाँसी,—उठ बैठनेपर आराम मालूम होता है (ह्यायोसा)। वक्षोस्थि (Sternum) प्रदेशमें बार बार असह्य सुई वेधनेकी तरह दर्द होता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—कमरके अन्तिम भागमें बहुत दर्द—मानो चोट लग गयी है। कमर के पीछेके अन्तिम भाग—पिकचंचु अस्थि (Coccyx) में ऐसा दर्द मानो चबा रहा है (युफोर्ब)। दाहिने कन्धेके शिखर देशतक सुई वेधनेकी तरह दर्द। दाहिने हाथके अँगूठेमें डंक मारनेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होना मानो सुन्न हो गया है। शरीरके कितने ही स्थानोंमें खुजली होती है और चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी हुआ करती है।

वृद्धि ।—वृद्ध व्यक्तियोंको; बच्चोंको, सर्दी लग जानेपर और सन्ध्या और रातके समय।

घटना ।—उठ बैठनेपर; निर्मल वायुके सेवन और शरीरको हिलानेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।— कैम्फो, केलि-कार्ब, क्रोटन-टिग, ऐलो, पोडो, पल्स, वेरेट, ऐपोसिन-कैन।

दोषघ्न ।—कैम्फर, काफिया, कोलोसि, केलि-कार्ब, ओपियम।

तुलनीय ।—पल्स (खाँसी); ऐपोसिन (अतिसार); क्रोटोन (अतिसार)।

शक्ति ।—३ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम तक।

गैस्टेन ।
(GASTEIN)

परिचय ।—आष्ट्रियाके गैस्टेन प्रपातका पानी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरके बाहरी स्रावका घट जाना; रक्त-सञ्चालनकी अधिकता; अवसाद, कमजोरी । सोनेकी इच्छा और आंधी-पानीमें सब लक्षणोंका बढ़ना इसका निर्देशक लक्षण है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लेपिस-ऐलबा, ऐसिड फ्लोरिक, फास्फोरस, साइलि, कैल्करिस ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

गालथीरिया प्रोकुबेन्स ।
(GAULTHERIA PROCUBENS)

दूसरा नाम ।—विंटर ग्रीन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़ी गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पाकाशयका प्रदाह, स्नायुशूल; पार्श्वशूल; वात; गृध्रसी या पैरोंमें झुनझुनी वाला वात ।

उपयोगिता और आभास ।—नया और प्रबल पाकाशयका प्रदाह (Gastritis) पर इसकी प्रधान क्रिया है,—कै होना आरम्भ होनेपर जल्दी रुकता नहीं है,—कोई भी चीज क्यों न हो, यहांतक कि पानीतक, पाकस्थलीमें प्रवेश करते ही कै आरम्भ हो जाती है । इसके साथ ही प्रादाहिक वातका दर्द, छातीकी बगलमें दर्द (Pleurodynia), कटिस्नायुशूल (Sciatica) वगैरह बहुत तरहके स्नायुशूलकी अवस्था विशेषमें यह बहुत फायदा करता है ।

लक्षणावली ।

पाकस्थली ।—पेट खराब और अकसर पेटकी बीमारी लगी रहनेपर भी दुर्दमनीय भूख, बहुत देर तक वमन हुआ करता है,—जो कुछ खाता है, यहाँतक कि ठण्डा पानीतक पीनेपर उसी समय कै हो जाती है; ऊपरी पेटमें तेज दर्द, अँगुलीसे दबानेपर दर्द बढ़ जाता है; श्वास-कष्ट,—श्वास-प्रश्वास धीरे धीरे चला करता है, रोगी बेहोश हो जाता है, और उसका शरीर गर्म मालूम होता है। जीभ सूखी, चिकनी, और कुछ कुछ फूली इसीलिये मुंहसे साफ साफ बात नहीं निकलती (डालका, लाई)।

श्वास-यंत्र ।—पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और श्वास-प्रश्वास क्रियामें बाधा, तथा धीरे धीरे होती है। छातीके बगलमें दर्द होता है और दोनों फेफड़ों के बीचकी झिल्लीके सामनेवाले अंशमें तेज दर्द हुआ करता है (डा० फेरिंगटन)।

स्नायु-मण्डली ।—पलक, मुंह, पाकाशय, डिम्बाधार, जरायु और ऋतु सम्बन्धी स्नायुशूल, कटि-स्नायुशूल और नवीन प्रादाहिक वातकी बीमारियाँ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐसिड-सैलिसाइलिक, ब्राई, आर्स, रास, सेलल, कैल्मीया ; लिडम।

शक्ति ।—मूल अर्क और १ म दशमिक क्रम।

गैलवेनिस्मस ।

(G ... NISMUS)

दूसरा नाम ।—गै...

प्रस्तुत-प्रक्रिया । ... विचर्ण तैयार करना ... है।

... ना और ...

ऐसा अनुभ

अथवा इसके बदले जलन, दृष्टि, स्मरण और बोधशक्तिमें गड़बड़ी, सर दर्द वगैरह लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कौलि-ब्रोम, जेबस ; इलेक्टि-सिटस, मैग्ने-फौ-आदि।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

जेलसिमियम।

(GELSIMIUM SEMPERVIRENS)

दूसरा नाम।—इयोला जेस-मिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़की छालसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अन्धापन ; स्वरभङ्ग ; पैत्तिक ज्वर ; स्नायुशूल ; मस्तिष्कका विकार; मस्तिष्क-मेरुमज्जाकी-झिल्लीका प्रदाह ; आंखकी बीमारी ; सर्दी ; कब्जियत ; आक्षेप ; बहरापन ; डेंगूज्वर ; अतिसार ; उपझिल्ली-प्रदाह ; रक्तामाशय ; बाधक ; मानसिक उद्वेगकी वजहसे उपसर्ग; मृगी ; ज्वर ; भय ; प्रमेह ; दमा ; सर-दर्द ; उत्तापकी वजहसे उपसर्ग ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; मूर्च्छा-वायु ; सविराम-ज्वर ; कामला ; प्रसवका दर्द ; यकृतकी बीमारी ; गति-शक्ति देनेवाली पेशी और स्नायुकी बीमारी ; उन्माद ; खसड़ा ; मस्तिष्कावरक झिल्ली-प्रदाह ; रजकी कमी या रजोबन्ध ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; पेशियोंका शूल ; आंखकी पलकोंका फड़कना ; अन्ननालीका सङ्कोचन या पक्षाघात ; पक्षाघात ; सर्वाङ्गका पक्षाघात या एकाङ्गका पक्षाघात ; गर्भिणीका अण्डलाल मिला मूत्र-रोग ; पलकोंका गिरना ; सूतिकाक्षेप ; स्वल्प-विराम ज्वर; पलकोंकी विच्छिन्नता ; आमवात ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय परायणताका दुष्परिणाम; नींदमें गड़बड़ी ; आक्षेप ; सूर्योदयके साथ सर दर्द ; सूर्याघात (लू लगना) ; दांत निकलनेके समयकी बीमारी ; चेहरेका स्नायुशूल, तम्बाकूका अपव्यवहार ; जीभकी बीमारी ; दांतका दर्द ; कम्पन ; जरायुका माथा घूम जाना ; स्वर-लोप ; लिखनेवालोंका हाथ कांपना या अकड़न आदि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—यह बच्चे, युवा और स्नायु-प्रधान तथा जल्दी जल्दी बदलनेवाले स्वभावकी स्त्रियोंके लिये विशेष उपयोगी है (१) स्थिर होकर रहनेकी इच्छा, उसे यह इच्छा होती है, कि कोई उ विरक्त न करे ; बोलना नहीं चाहता या ऐसी भी इच्छा नहीं करता कि को उसके पास रहे ; हमेशा मृत्यु-भय और हमेशा साहसहीन बना रहता है, गि जानेके भयसे धात्रीको या खाटकी पाटीको पकड़ रखता है ; क्रोध या उत्तेजन प्रवण और अभिमानी और जो स्त्री या पुरुष अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय-प त्प्त करते हैं ; डर, आशंका या उत्तेजक समाचार आदिकी वजहसे बीमारियाँ नित्यके कामके अलावा जब कभी कोई नया काम करना पड़ता है,—जैसे, किसि दोस्तसे मिलना, स्त्रियोंको यह मालूम होते ही कि ससुराल जाना होगा य दस आदमियोंके सामने जाना होगा—बार बार पाखाना लगने लगता है (२) धूप या गर्मीके उत्तापसे मानसिक या शारीरिक अवसाद। (३) मस्तिष्क मेरुमज्जावरणका प्रदाह (Cerebro-spinal meningitis),—माथा एक ओर झूल पड़ता है। सरमें चक्कर आना,—अस्पष्ट दृष्टि, दो देखना या दृष्टि हीनताके साथ जीभ मोटी और अपने वशमें न रहनेवाली मालूम होती है; चलता चलता मतवालेकी तरह ढुलक पड़ा करता है। दाहिने पार्श्वका सरका दर्द, इसके साथ ही दाहिनी आँखके गोलेके ऊपरी अंशमें दर्द, तमतमाया हुआ चेहरा और दोनों आँखें लाल ; बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होने बाद सरदर्द शान्त हो जाता है और मानसिक परिश्रम, धूम्रपान, धूप या लू लगने और सर नीचाकर सोनेपर बढ़ जाता है, ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँखोंके ऊपरसे माथेको छेदकर एक बन्धन बँधा हुआ है। (४) पेशियोंकी क्रियाके पारस्पर्यकी कमी (Wanted co-ordination of the muscles);—अर्थात रोगीकी पेशियाँ सब उसकी इच्छाके अनुसार काम नहीं करतीं। सभी पेशी-मण्डली शिथिल हो जाती है और गति शक्ति विधायक स्नायुमण्डलका सम्पूर्ण पक्षाघात हो जाता है। जीभ, बाहु, पैर और समूची देह क्षीण हो जाती है और काँपती रहती है। (५) आँखकी ऊपरी पलक बहुत भारी मालूम होती है—और खोलकर देखता हुआ रह नहीं सकता। (६) रोगीको ऐसा मालूम होता है कि यदि वह हिलता डोलता न रहेगा तो हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा (हिलने डोलनेपर हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा=कोकेइन, डिजिटेलिस)। बिना प्यासका बोखार,—स्थिर होकर सोया रहना चाहता

है,—शीतावस्थामें भयानक कम्प होता है—दबा रखनेके लिये कहता है। जाड़ेकी वजहसे सारे शरीरमें सिहरावन हो जाता है।

लक्षणावली।

मन।—मृत्युभय (आर्स, लैक-कैन, ऐको, ऐक्टी, नक्स)। स्थिर भावसे सोया रहना चाहता है; ऐसी इच्छा रहती है कि कोई उसे तंग न करे; किसीसे बोलना नहीं चाहता, या ऐसी भी इच्छा नहीं करता कि कोई उसके पास रहे। बच्चा गिर जानेके भयसे धात्री या खाटकी पाटीको पकड़ रखता है (बोरैक्स; सैनिक)। उत्तेजना या क्रोधी स्वभाव या बहुत अभिमानी स्वभाव; अस्वाभाविक उपायसे अपनी इन्द्रिय परितृप्ति करता है (कैलि-फास)। डर, आशंका, या एकाएक उत्तेजना जनक समाचार आदि प्राप्त करनेकी वजहसे बीमारी (इग्ने,—अप्रत्याशित आनन्द 'संवादकी वजहसे =काफिया)। सोते ही विकारग्रस्त हो जाता है,—अर्द्ध-जाग्रत अवस्थामें असम्बद्ध बातें बका करता है; बहुत बकता है, चमकीली आँखें, एक कनपटीसे दूसरी कनपटी तक तेज दर्द। बिलकुल ही साहस नहीं रहता। रोजके कामके अलावा अन्य कोई असाधारण काम करना पड़ता है या उसमें शामिल होना पड़ता है, जैसे बालिकाओंको ससुराल जाना होगा इत्यादि मालूम होनेसे ही पाखाना होने लगता है; दस आदमियोंके सामने निकलनेसे ही लज्जा और भय मालूम होना (आर्जेण्ट-नाई)। ऊँचे स्थानसे गिरकर आत्महत्या करनेकी दुर्दमनीय इच्छा (आर्जेण्ट-नाई; ग्लोन)। अपनी बीमारीके विषयमें सोचनेपर तकलीफ बढ़ जाती है (बैराई, कैल्के-फास, कास्टि, हेलोन, मिडोराइन, ऐसिड-आक्सैल; पेट्रोल)। रोगीको किसी आत्मीयके विरहकी बात याद दिला देनेपर उसकी बीमारी बढ़ जाती है, तूफान आनेके पहले बहुत तकलीफ मालूम होती है (रोडो)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—यह दर्द सरके पिछले भागसे पैदा होता है (साइलि) इसके साथ ही—दो देखना या धुँधली दृष्टि और अन्धापन, चलनेके समय मतवालेकी तरह डगमगाया करता है। सरमें दर्द—दर्द पैदा होनेके पहले आँखसे दिखाई नहीं देता (कैलि-बाई),—बहुत ज्यादा पेशाब होनेपर घटना, गर्दनके पीछेवाले मेरुदण्डसे दर्द चलता है और माथेके ऊपरसे सामने या ललाटमें जाकर ठहर जाता है और ऐसा मालूम

होता है, मानो ललाट या अक्षिगोलक फट जायगा (सेङ्गुई, साइलि) वृद्धि—मानसिक परिश्रमसे (ऐसेर, अरम, लैक, नक्स, पलस, साइलि, सल्फ); धूम्रपानसे घटना,—डायाडेमा),—धूपकी गर्मीसे (लैके, नेट-कार्ब, नक्स, ग्लोन) और नीची तकियेपर माथा रखकर सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके ऊपरसे माथेके चारों ओर एक बन्धन बँधा हुआ है (ऐनाक, ऐण्टि-टार्ट, वार्बा, ऐक्यू, बैप, कैक्ट, ऐसिड-कार्बोलिक, चेलिडो, सल्फ); माथेकी त्वचा छूनेपर दर्द मालूम होता है (ऐम्ब्रा, कार्बो-ऐन, सिङ्को, फेर, क्रियो) । (लैक-डिफलोरेटममें भी सरमें दर्दके समय बहुत ज्यादा पेशाब होता है पर उससे दर्दमें कुछ ज्यादा फायदा नहीं होता—डा० नेश) । सर दर्द,—दाहिनी कनपटीमें अधिक दर्द होता है, सवेरे आरम्भ होकर मध्याह्नमें चरम वृद्धि हो जाती है और हिलने डोलनेपर तथा रोशनीमें वह दर्द बढ़ता है (लैक डिफ्लो, मैग-म्यू, साइलि),—घटना,—सोनेबाद (ब्राई, ओलियेन) और निद्रा तथा वमन होनेपर=सेङ्गिविन) ; चेहरा तमतमाया और आँखें लाल हो जाती हैं। मस्तिष्क-मेरुमज्जावरणका प्रदाह,—माथा बगलकी ओर घूम जाता है । उठनेकी शक्तिका न रहना, सुन्न हो जाना, कम्पन, और इसके साथ ही भयंकर जाड़ा मालूम होना तथा पुतली फैली रहती है ।

आँख ।—पीली ; हलदी जैसे रङ्गकी । पलकोंमें बहुत भार मालूम होता है (रास, सिपि,—आँख खुली और टकटकी लगी=लोरो, स्ट्रैमो); देखता रह नहीं सकता (कास्टि, कोलोफिल, ग्रैफ, सिपि), दोनों पलकोंका पक्षाघात । दो देखना,—अर्थात एक चीज दो दिखाई देती है ; केवल बगलकी ओर देखनेपर ऐसा दिखाई देता है ; सामनेकी ओर समरेखा भावसे देखनेपर ऐसा नहीं होता ; यह नहीं बता सकता कि राहमें किस ओर खड़ा है । आँखका कृष्णावरक प्रदाह, उससे रस बहता है ; सरके पिछले भागमें दर्द,—गर्म प्रयोगसे दर्द घट जाता है । आँखसे तिरछा देखना (ऐल्यू, केवल दाहिनी आँखकी=ऐल्यू-सेन),—आँखकी पुतली नाककी जड़के पास सरक आती है, रोहिनी या डिफ्थीरिया रोगके बाद दोनों आँखोंकी पेशियोंका पक्षाघात (सैण्टोनिन, कास्टि, डिफ्थिरिन) । गर्भावस्थामें दो देखना या अन्धभाव, हस्तमैथुनके कारण तिमिर दृष्टि (फास,टैब) । आँखके ऊपरी-अंशमें दर्द और चारों ओर धूआँ धूआँ दिखाई देना (कैस्टोर, क्रोटीन ; लैको, ग्रोलियेन, कौक्मो, सैबाइ, सिक्लेम, फास)

कान ।—एकाएक कान बन्द हो जाता है, मानो ताला लग गया और और कुछ देरतक सुन नहीं पड़ता (ऐसेर, मैङ्ग, साइलि, साई, फाइटो, क्रोटोन,—कानमें "धम" से आवाज होने बाद बहरापन अच्छा हो जाता है= साइलि,—नाक साफ़ करनेके समय ऐसी आवाज होकर बहरापन दूर हो जाता है=मैङ्ग, मार्क, साइलि,—निगलनेके समय ऐसी आवाज होकर बहरापन छट जाता है=मार्क); कानमें सों सों आवाज़ हुआ करती है (बेल, बैराई, चायना, कैमो, काफि, लैके, नेट्र-म्यू, नक्स, फास)। गलेके भीतरसे कानके मध्यभाग तक दर्दके साथ सर्दीसे पैदा हुआ बहरापन (आर्स, कैल्के, कार्बो-वेज, लिड, मार्क, पल्स)। क्विनिनके अपव्यवहार या ज्यादा व्यवहारके कारण बहरापन (आर्स, कैल्के कार्बो-वेज, ऐसिड-फास, पल्स) और वाक्-शक्तिका लोप हो जाना। सर्दीकी वजहसे कानमें दर्द (कैल्के-मार्क)।

नाक ।—नाकमें सड़ सड़ और पूर्णता मालूम होना (लोरो, पेरिस) और बार बार छींक आती है (सिलोम, केलि-बाई, पल्केटि, टियुक्रि)। सवेरे बार बार छींक आती है (कास्टि, क्रियो, पल्स); नाकसे पानी गिरता है (आर्स, सिपा, युफ्र, डालका, लैके, पल्स, मार्क, मेजेर)। पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है और बार बार छींक आती है (साइक्लेम, ऐलियम-सिपा, इयुफ्रे, आर्स); श्लेष्मा त्वचा क्षय करनेवाला और नासारन्ध्रमें जखम हो जाता है (सिपा, आर्स, आर्स-आयोड, मार्क); नासामूलसे ग्रीवा और कण्ठास्थि तक दर्द होता है और भारीपन मालूम होता है (ऐग्नस, हायो, मिनियेन, पेट्रोल, पल्स, रियुटा)।

मुखमण्डल ।—रोगीका चेहरा गर्म, फूला फूला और मतवालेकी तरह (बैप्टीशियाकी भाँति इतना नशा बतानेवाला नहीं; ओपि); दोनों ओठ सूखे; गर्म और पपड़ी जमे; बहुत देरतक बातें करने बाद ऊपरी ओंठ सुन्न हो जाते हैं। चेहरा पीला। चक्षु-गह्वरका स्नायुशूल (Orbital Neuralgia),—रोगवाले पार्श्वकी पेशियाँ संकुचित हो जाती हैं और फड़का करती हैं। दोनों हनु और जबड़ा अटक जाता है और आपसमें जुड़ जाता है (रास-टक्स, लैके, मार्क-कोर) निचला जबड़ा झूल पड़ता है (ओपि, लैके, लाई)।

मुख-विवर ।—जीभ,—काँपती हुई और रोगी बहुत कष्टसे बाहर निकाल सकता है (लैके, परन्तु जेलसिमियमकी जीभ लैकेसिसकी तरह मुंगी

नहीं रहती डा० नेश कहते हैं—"जीभका काँपना बहुत सुस्तीका ल
है; रोगकी पहली अवस्थामें ऐसा होनेपर जैलसिमियम ; अन्तिम भा
लैकेसिस)।" जीभ बाहर निकालनेपर काँपा करती है (हायो, लैके, म
सिकेलि,—काँपती हुई जीभ=आर्स, जेल्स, लैके, लाई, सिकेलि,—ब
निकालनेके समय कांपा करती है=लैके, स्ट्रेमो)। बदबूदार श्वास और व
पर पीला सफेद लेप चढ़ा (आर्स; हाइड्रैस, कैलि-बाई)। जीभ,—ह
सुथरी पर पतला मैल चढ़ी (पर उसमें बैपटीशियाकी तरह काली रेखा न
रहती)। ज्वरकी शीतावस्थामें जीभपर मोटा लेप चढ़ा रहता है। जीभ
और इतनी मोटी या फूली मालूम होती है कि रोगी स्पष्ट बोल नहीं सकता
जीभका आंशिक पक्षाघात (कास्टि, कोना, हायो)। मस्तिष्ककी जड़में
अधिक सञ्चय होनेकी वजहसे जीभ और श्वासनालीकी आवरक भि
(Glottis)में आंशिक पक्षाघात हो जाता है और मतवालेकी तरह लटपट
बोली निकलती है (कास्टि, सिकेलि,) ; मुखकी लार पीली,—मानो
मिल जानेकी वजहसे ऐसा हुआ है। मुँहका स्वाद बहुत सड़ा जैसा
वायु बदबूदार निकलता है (कार्बो-वेज, मार्क)। मुखविवर लसदार
इसके साथ ही प्यास और भूख न रहना। दोनों ओंठ सूखे और क
स्लेष्मासे ढके।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर ऐसा मालूम होता है मानो बा
भरा हुआ है (सिलिका); जिह्वामूलकी दोनों ग्रन्थियां (Tonsils)
प्रदाह हो जाता है और वे फूल जाती हैं,—अधिककर दाहिनी ओरकी गाँठ
ही रोगका विशेष हमला होता है या प्रदाह दाहिनी ओरसे आरम्भ हो जा
है (लाई,—दाईं ओरसे आरम्भ होता=लैके,—पार्श्व बदला करता है
लैक-कैन)। गलेमें सूखापन (लैके, मार्क-सल्फ, नक्स-मस, फास, स्टिक्टा
और जलन (कैप्स, कास्टि, मेजेर, आर्स, कैल्म, लैके, रैनान)। ऐसा माल
होता है मानो गलेमें कुछ अड़ा हुआ है (ग्रेफ, हिप, इग्ने, लैके, मा
नेट-म्यूर, नक्स),—निगलनेकी चेष्टा करनेपर वह अपनी जगहसे हटता नहीं है
कोई पदार्थ सहज ही निगलनेके समय कानमें तेज दर्द मालूम होता
मेङ्ग, हिप, नक्स)। कोई चीज सहज ही निगल नहीं सकता,—निगलने
सहायता करनेवाली पेशियोंका पक्षाघात, ऐसा मालूम
नासारन्ध्रके भीतर तक बहुत गर्म पानी प्रवेश कर रहा,

पाकस्थली ।—प्यास,—केवल पसीना निकलनेके समय। भूख भरपूर पर थोड़ा भी भोजन करनेपर तृप्ति हो जाती है। खट्टी डकार (कार्बो-वेज, सिङ्को, इग्ने, सल्फ, नक्स, फास)। मिचलीके साथ माथेमें दर्द और सरमें चक्कर आना (सरमें दर्दके साथ मिचली=ऐसिट-एसिड, कास्टि, कक्यु, इपिक, सेङ्ग्वि; सरमें चक्करके साथ मिचली,—कैलेड, कक्यु, कोलिडाई, पल्स)। पाकस्थली भरी और भारी मालूम होती है। कपड़े आदिके दबावसे ही बढ़ जाती है (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, ब्राई, लेके)। पाकस्थली खाली मालूम होती है (सिपा, गेम्बो, इग्ने, फास, जिङ्क; भोजनके बाद—लाई, सेङ्ग्वि, सार्सा,—भोजनके बाद पाकाशय एकदम भरा मालूम होता है—चायना, लाई, नक्स ब्राई, पल्स)।

अंत्राशय ।—एकाएक उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्दकी वजहसे रोगी चिल्ला उठता है और इसके बाद ऐसा मालूम होता है कि पेट चपक गया है। उदरकी आवरक झिल्लीमें (In peritoneum) बहुत दर्द मालूम होता है (एपिस, ब्राई)। दाहिने कोखमें इतना दर्द रहता है कि हाथ नहीं लगाया जाता। उदरमें हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द होता है और ऊपर तथा नीचे—दोनो ही पथोंसे वायु निकलता है। नियमित समयका अन्तर देकर अन्त्रशूल होता है और सन्ध्याके समय पीला पतला दस्त होता है।

मलान्त्र और मल ।—सविराम ज्वरके साथ उदरामय (सिना, रास)। एकाएक शोक डर, या दुःसम्वादके कारण पतले दस्त आने लगते हैं। बहुत मल भी सहजमें ही नहीं निकलता,—मानो मलद्वारावरोधक पेशीके संकोचन की वजहसे गड़बड़ी पैदा हो रही है (हिप, ऐनाक, कार्बो-वेज, चायना, डायाडिमा, नक्स-मस, रोडो)। मलद्वारावरोधक पेशीका पक्षाघात (बेल, हायो); और मलद्वार बाहर निकल पड़ता है (कौल्के, पोडो, रियुटा, इग्ने, थिरिड)। मल पीला और पतला और पित्तमय; कभी जमा हुआ दूधकी तरह या कीचकी तरह, या कभी कभी हरा आमरक्त रोग,—खून मिला और लसदार मल।

पेशाब —बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होने बाद सर दर्दका आराम होना (केलमिया, लैक-डिफ्लोरेटम)। मूत्र-स्थलीके द्वारावरोधिनी पेशीके पक्षाघातके कारण अनजानमें पेशाब होता है—विशेषकर स्नायु-प्रधान अर्थोंका (आर्स, कास्टि, रास, डालका, नक्स-वोम)। मूत्रस्थलीके संकोचन

नहीं रहती डा० नेश कहते हैं—"जीभका काँपना बहुत सुस्तीका लक्ष है; रोगकी पहली अवस्थामें ऐसा होनेपर जेलसिमियम; अन्तिम अवस्था लेकेसिस)।" जीभ बाहर निकालनेपर काँपा करती है (हायो, लेके, मा सिकेलि,—काँपती हुई जीभ=आर्स, जेल्स, लेके, लाई, सिकेलि,—बा निकालनेके समय काँपा करती है=लेके, स्ट्रैमो)। बदबूदार श्वास और जी पर पीला सफेद लेप चढ़ा (आर्स; हाइड्रैस, केलि-बाई)। जीभ,—सा सुथरी पर पतला मैल चढ़ी (पर उसमें बैपटीशियाकी तरह काली रेखा न रहती)। ज्वरकी शीतावस्थामें जीभपर मोटा लेप चढ़ा रहता है। जीभ स और इतनी मोटी या फूली मालूम होती है कि रोगी स्पष्ट बोल नहीं सकता, जीभका आंशिक पक्षाघात (कास्टि, कोना, हायो)। मस्तिष्ककी जड़में र अधिक सञ्चय होनेकी वजहसे जीभ और श्वासनालीको आवरक भि (Glottis)में आंशिक पक्षाघात हो जाता है और मतवालेकी तरह लटपटा बोली निकलती है (कास्टि, सिकेलि,): मुखकी लार पीली,—मानो खु मिल जानेकी वजहसे ऐसा हुआ है। मुँहका स्वाद बहुत सड़ा जैसा औ वायु बदबूदार निकलता है (कार्बो-वेज, मार्क)। मुखविवर लसदार- इसके साथ ही प्यास और भूख न रहना। दोनो ओंठ सूखे और का स्लेष्मासे ढके।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर ऐसा मालूम होता है मानो वायु भरा हुआ है (सिलिका); जिह्वामूलकी दोनों ग्रन्थियां (Tonsils) प्रदाह हो जाता है और वे फूल जाती हैं,—अधिककर दाहिनी ओरकी गाँठप ही रोगका विशेष हमला होता है या प्रदाह दाहिनी ओरसे आरम्भ हो जात है (लाई,—दाईं ओरसे आरम्भ होता=लेके,—पार्श्व बदला करता है= लैक-कैन)। गलेमें सूखापन (लेके, मार्क-सल्फ, नक्स-मस, फास, स्टिक्टा और जलन (कैप्स, कास्टि, मेजेर, आर्स, कैन्थ, लेके, रैनान)। ऐसा मालूम होता है मानो गलेमें कुछ अड़ा हुआ है (ग्रैफ, हिप, इग्ने, लेके, मार्क नेट-म्यूर, नक्स),—निगलनेकी चेष्टा करनेपर वह अपनी जगहसे हटता नहीं है कोई पदार्थ सहज ही निगलनेके समय कानमें तेज दर्द मालूम होता है मेझे, हिप, नक्स)। कोई चीज सहज ही निगल नहीं सकता,—निगलनेमें सहायता करनेवाली पेशियोंका पक्षाघात, ऐसा मालूम होता है कि कण्ठसे नासारन्ध्रके भीतर तक बहुत गर्म पानी प्रवेश कर रहा है।

(कक्यु, नक्स-मस—अधकपारीके साथ=पल्स)। अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय-परितृप्तिके कारण बीमारियाँ (केलि-फास)।

श्वास-यंत्र।—श्वासनालीकी द्वारावरोधक झिल्ली या जिह्वा-मूलके सुन्न हो जानेकी वजहसे निगलनेमें तकलीफ होती है। श्वासनाली-द्वारको रोकनेवाली झिल्लीके सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे भयानक श्वास-रोध होनेकी सम्भावना हो जाती है और कण्ठमें कों कों शब्द होता है तथा बहुत ज्यादा पसीना होकर चेहरा तमतमा उठता है (सेम्बियु, ब्रोम, इपिका, लैके,—डा० एम० ए० कास्टिस कहते हैं कि आक्रमणावस्थामें पर्यायक्रमसे स्वरनालीके ऊपर ठण्डा और गर्म प्रयोग करना चाहिये; मस्कस, क्लोरोफार्म या ऐमिल-नाइट्राइट सुँघाना चाहिये और शरीरका नीलापन यदि बढ़ जाये तो अम्लजान वाष्प (Oxygen gas) का प्रयोग करना चाहिये)। गलेमें रुखड़ापन और घाव हुई त्वचाकी तरह मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो कण्ठनालीमें जखम हो गया है। वायुनली-भुज-प्रदाह (Bronchitis),—वक्षमें दर्द, पतली सर्दी और सूखी खाँसी (बेल, इयुप्रो, कास्टि, इस्ने, नैट-कार्ब, रास)। हृत्पिण्डकी गति अनियमित; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो यदि वह इधर उधर घूमेगा तो उसका हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा (शरीर हिलाते ही हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा ऐसा भय=कोकेइन, डिजि)। बैठे बैठे उठनेपर हृत्पिण्डमें दर्द होता है, हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है (ब्राई, केलि-कार्ब, स्पाई)। छातीका निचला भाग मानो जकड़ गया है ऐसा मालूम होता है (कैक्ट, पल्स, वेरेट)।

गर्दन और पीठ।—गर्भावस्थामें गलेके बगलवाली दोनों धमनियाँ (Carotids) में टपक सी होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेका दाहिना पार्श्व लकड़ गया है—कभी कभी गर्दन दाहिनी ओर टेढ़ी हो जाती है, और उसके साथ ही मस्तिष्क मेरुमज्जाका प्रदाह पैदा हो जाता है। ग्रीवामें पेशिक शूलकी तरह दर्द होता है—विशेषकर वक्षोस्थि (Sternum) से कण्ठास्थि और कण्ठास्थिसे सरके नीचेवाले भागतक फैली हुई पेशीके (Sterno-cleido mastoideus) ऊपरी अंशमें और कर्णमूल-ग्रन्थि (Parotids) के पीछे बहुत दर्द मालूम होता है। मेरुदण्डसे मस्तक और कन्धेमें दर्द होता है। मेरुदण्डके भीतर ज्यादा खून इकट्ठा हो जाना; सुस्ती

की वजहसे तथा वेग। स्त्रियोंकी मूत्रस्थलीका मुँह खुजलाता है—इसीलिये बार बार पेशाब होता है। मूत्रकृच्छ्रता; अनजानमें पेशाब हो जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—इन्द्रिय आदि उत्ताप रहित और शिथिल (डायस्को, आइरिस, स्टैफ) शिश्नकी शिथिल अवस्थामें और पाखाना होनेके समय अनजानमें वीर्य निकल जाना या शुक्रक्षरण (Spermatorrhea—डिजिटेलिन, डायस्को, कोबाल्ट, नेट-कार्ब, ओपि); सामान्य उत्तेजनासे ही वीर्यपात हो जाता है (सार्सा, कोना) प्रमेह,—प्रथमावस्था—स्राव थोड़ा और त्वचाको क्षय करनेवाला, यन्त्रणा बहुत थोड़ी परन्तु उत्ताप बहुत। मूत्रनालीके मुखपर जलन, गौण (Secondary) प्रमेह अर्थात् एक बार अदृश्य होनेके बाद फिरसे पैदा होनेवाला प्रमेह।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बाधक (Dysmenorrhœa),—पहले सरमें दर्द, वमन, मस्तकमें खून अधिक सञ्चय होना, चेहरा गहरा लाल, इसके साथ ही आँतोंका नीचेकी ओर खींचन; ऐसा मालूम होता है मानो जरायु एक कड़े बन्धनसे कसकर बँधा हुआ है;—प्रसवके दर्दकी तरह तेज दर्द —यह दर्द कमर और पुट्ठे तक फैल जाता है। प्रसव वेदना—जरायु द्वारका न फैलना (Rigidity) या लचीलापन न रहनेकी वजहसे दर्द बहुत देर तक स्थायी रहता है (ऐको,-कोलोफिल, ऐक्टि), या सामनेकी ओरसे पीछेकी ओर दर्द फैल जाता है और ऐसा मालूम होनेके साथ प्रसवका दर्द होता है कि जरायु ऊपरकी ओर उठ रहा है। यह दर्द बहुत देरतक स्थायी रहता है; दर्द जरायु छोड़कर चारों ओर फैल जाता है। प्रदर—स्राव सफेद रङ्गका और रह रहकर होता है और एक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें वेगसे स्राव होता है—इसके साथ ही कमरमें दर्द। डर जानेकी वजहसे अकालमें प्रसवके समान दर्द पैदा हो जाता है, जरायुमें प्रचण्ड दर्द होता है। सरमें दर्द होता है, नींद आती है, एक चीज दो दिखाई देती है। धुंधला देखता है, शरीर ढलमलाया करता है। गलेकी दोनों धमनियोंमें टपक होती है और नाड़ीकी गति सूक्ष्म और धीर होती है। जरायुसे स्राव—लगातार खूनका स्राव हुआ करता है, पर किसी तरहका दर्द नहीं होता; क्विनाइनके कारण सविराम ज्वर बंद होनेपर ही ऐसा होता है। जरायु बहुत भारी मालूम होता है (नक्स-योम,—पूर्णता मालूम होती है—चायना)। रजोरोधकी वजहसे धनुष्टंकार

(कक्यु, नक्स-मम—प्रधकपारीके साय=पल्स)। अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय-परितृप्तिके कारण बीमारियाँ (केलि-फास)।

श्वास-यंत्र।—श्वासनालीकी द्वारावरोधक झिल्ली या जिह्वा-मूलके सुन्न हो जानेकी वजहसे निगलनेमें तकलीफ होती है। श्वासनाली-द्वारको रोकनेवाली झिल्लीके सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे भयानक श्वास-रोध होनेकी सम्भावना हो जाती है और कण्ठमें काँ काँ शब्द होता है तथा बहुत ज्यादा पसीना होकर चेहरा तमतमा उठता है (सेम्ब्रिय, ग्लोन, इपिका, लेके,—डा० एम० ए० कास्ट्रिस कहते हैं कि आक्रमणावस्थामें पर्यायक्रमसे स्वरनालीके ऊपर ठण्डा और गर्म प्रयोग करना चाहिये; मस्तक, क्लोरोफार्म या ऐमिल-नाइट्राइट सुँघाना चाहिये और शरीरका नीलापन यदि बढ़ जाये तो अम्लजान वाष्प (Oxygen gas) का प्रयोग करना चाहिये)। गलेमें खुरदरापन और चय हुई त्वचाकी तरह मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो कण्ठनालीमें जखम हो गया है। वायुनली-भुज-प्रदाह (Bronchitis),—वक्षमें दर्द, पतली सर्दी और सूखी खाँसी (बेल, इयुप्रे, कास्टि, इग्ने, नेट-कार्ब, रास)। हृत्पिण्डकी गति अनियमित; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो यदि वह इधर उधर घूमेगा तो उसका हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा (शरीर हिलाते ही हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा ऐसा भय=कोकेइन, डिजि)। बैठे बैठे उठनेपर हृत्पिण्डमें दर्द होता है, हृत्पिण्डमें सुई गड़ने की तरह दर्द होता है (ब्राइ, केलि-कार्ब, स्पाई)। छातीका निचला भाग मानो जकड़ गया है ऐसा मालूम होता है (कैक्ट, पल्स, वेरेट)।

गर्दन और पीठ।—गर्भावस्थामें गलेके बगलवाली दोनों धमनियों (Carotids) में टपक सी होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेका दाहिना पार्श्व जकड़ गया है—कभी कभी गर्दन दाहिनी ओर टेढ़ी हो जाती है, और उसके साथ ही मस्तिष्क मेरुमज्जाका प्रदाह पैदा हो जाता है। ग्रीवामें पेशिक शूलकी तरह दर्द होता है—विशेषकर वक्षोस्थि (Sternum) से कण्ठास्थि और कण्ठास्थिसे सरकी नीचेवाले भागतक फैली हुई पेशीके (Sterno-cleido mastoideus) ऊपरी अंशमें और कर्णमूल-ग्रन्थि (Parotids) के पीछे बहुत दर्द मालूम होता है। मेरुदण्डसे मस्तक और कन्धेमें दर्द होता है। मेरुदण्डके भीतर ज्यादा खून इकट्ठा हो जाना; सुस्ती

या आलस्य; पेशियोंमें दर्द मालूम होता है और वे अपनी इच्छाके अनुसार कार्य नहीं करतीं; कमर तथा उसके ऊपरी प्रदेशमें धीमा धीमा दर्द होता है। टहल नहीं सकता, क्योंकि रोगीको पेशियां सब उसके मन मुताबिक काम नहीं करतीं। समस्त पेशीमण्डल शिथिल और सुस्त हो जाता है। गति विधायक स्नायुमण्डलका पूरा पूरा पक्षाघात।

प्रत्यङ्ग-आदि।—पेशियोंमें परस्परताका (सामंजस्यका) अभाव अर्थात् जिस पेशीके बाद जिस पेशीका काम होनेपर, अङ्ग प्रत्यङ्ग संचालित होते हैं उनका अभाव,—पेशियां सब रोगीकी इच्छाके अनुसार काम नहीं करतीं (कुरारी देखो)। जीभ, बाहु, पैर, यहांतक कि समूची देहतक सुस्त और कांपनेवाली (कुरारी, इग्ने, ऐण्टि-टार्ट, मार्क-सोल, ऐक्टि, ऐगार, थाइरायड)। कशेरुका मज्जाका क्षय या अंग प्रत्यंग आदिमें संचालन शक्तिका न रहना (Locomotor Ataxia = सिकेल, फास, ऐसिड-पिक, आर्जेण्ट-नाई, ऐल्यू, इग्ने)। कटिस्नायुशूल—(Sciatica)—वेदना बढ़ना, घटनेके समय और पहली बार हिलने डोलनेके समय; दर्द जलन पैदा करनेवाला, रातमें बढ़ता है और नींद में गड़बड़ी पैदा हो जाती है, किरानियोंका अंगग्रह या हाथ अकड़ जाता है,—लिखनेकी चेष्टा करनेपर बाहुके अगले भागमें ऐंठन पैदा हो जाती है। दाहिनी कलाईमें ऐसा मालूम होता है, मानो मोच खा गयी है। बाहु ऊँचा करनेपर कांपता है। चलनेके समय डगमगाया करता है (ऐगार, कास्टि, आयोड, कैनाब-सेट, नेट-म्यू, ऐसिड-फास, रियुटा, स्ट्रैमो, सल्फ, टियुक्रि)। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर थकावट आ जाती है। उसमें अस्त्रकी चोटकी तरह भयङ्कर दर्द होता है। दोनों पैरोंकी पेशियोंके गभीर प्रदेशमें दर्द मालूम होता है, हिलने डोलनेपर घटता है। उस देशमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो फोड़ा हो गया है; पसीनेके समय सब तकलीफें घट जाती हैं। सवेरे भोजनके समय एकाएक जानु-फलक (Kneepan or patella) स्थान भ्रष्ट हो पड़ता है। जंघाडिम्बास्थिकी—पैरकी पोटली (Calves) में दर्द और रातमें उसमें दर्द मालूम होता है। रातमें हड्डी और सन्धियोंमें स्थान बदलनेवाला दर्द।

शीत, उत्ताप और पसीना।—नाड़ीकी गति धीर,—शरीर हिलाते ही गति बढ़ जाती है (केवल संध्याके समय नाड़ीकी गति बढ़ती है = कास्टि, सवेरे तेज और संध्याके समय धीर गति = आर्स)। रोज तीसरे पहर ४ से ५

बजेके भीतर शीत या कम्प आरम्भ होता है। कमर, हाथ-पैरोंमें आलस्यजनक दर्द और सुस्ती मालूम होती है; रोगी अपना बहुत अधिक काँपना दूर करनेके लिये सेवा करनेवालोंसे दबा रखनेको कहता है (लैके); शीत पीठमें एका एक ऊपर से नीचे फिर नीचेसे ऊपर दौड़ जाता है; हाथ पैर ठण्डे। पैरका तलवा इतना ठण्डा रहता है, मानो पानीमें डुबाया हुआ था (मानो पैरमें भीगा हुआ मोजा था = कैल्के)। स्नायविक शीत,—अर्थात शरीर खूब गर्म होनेपर भी भीतर बहुत शीत मालूम होता है और दाँतपर दाँत लगनेसे वे कटकटाने लगते हैं। माथा और चेहरा बहुत गर्म हो जाता है। बहुत ज्यादा पसीना होता है और सब सब तकलीफें घट जाती हैं (आर्स, वैलेड, ड्रस्यु, साइनेका; इलेट, नैट म्यू, मोरिम सेम्बि, सिकेलि; पसीना होनेपर तकलीफ बढ़ती है-फेर, इपिका, मैकु, ओपि) उत्ताप अवस्थामें रोगी सो जाया करता है; केवल पसीनेवाली अवस्थामें प्यास रहती है अर्द्ध-जाग्रत अवस्थामें बुदबुदाया करता है। शीत, उत्ताप और पसीना, सभी अवस्थाओंमें शरीरपर कपड़ा रखना चाहता है ("ऐसा मालूम होता मानो गिर जायगा"—यह बच्चोंके बोखारका जेलसेमियमका एक प्रधान लक्षण है) जब सविराम-ज्वर अविराममें परिणत होता है या अविराम ज्वर सविराममें बदल जाता है, सभी बोखारोंका आंत्रिक ज्वर या सान्निपातिक ज्वरमें परिणत होनेका लक्षण। क्विनिन द्वारा रुका हुआ सविराम ज्वरका दूसरा आकार धारण कर लेना (Masked Intermittents)।

वृद्धि।—अधिकांश लक्षण शरीर हिलानेपर; धूप या गर्मीका उत्ताप; ठण्डी जलीय वायुमें; कुहरे-भरे दिनोंमें; अन्धड़ पानी मिले जल-वायुके आरम्भमें; मानसिक आवेगकी वजहसे; बुरी खबरसे; धूम्रपानसे; अपनी बीमारीके विषयमें सोचनेपर (बैराइ, कैल्के-फास; कास्टि, हैलोनि, मिडोरिन, ऐसिड-आक्सेल, पेट्रोल; घटता है = कैम्फो-हैलिबो); अपने आदमियोंके विरुद्धकी बात कह देनेपर।

घटना।—शरीर सञ्चालनसे (दर्द आदि); गर्म-प्रयोगसे; निर्मल ठण्डी हवा सेवन करनेपर; उत्तेजक दवाओंके सेवनसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—बैप्टीशिया (सविराम या अविराम ज्वरके आंत्रिक ज्वरमें परिणत हो जानेकी आशंका होनेपर; इपिकाक, क्विनिन द्वारा एकाएक गायब हो जानेके कारण सविराम ज्वरका दूसरा

आकार धारण कर लेनेपर); बेल, कोलोफिल ; प्रसवकी दर्दके समय जरा का न फैलना—कड़ापन rigidity of os = कुरारी (पक्षाघात) कक्य, कोनि कास्टि, आर्जेण्ट-नाइ ; बोरैक्स (गिरनेका भय) ; आर्स, लैकै, लाई, सिकेलि (जीभका काँपना) ; सिफिलिन (प्रदर) ; वेरेट्रम (सरमें चक्कर) ।

दोषघ्न या प्रतिविष ।—ऐट्रोप, सिङ्को, काफि, डिजि, नक्स-मस ।

शक्ति ।—मूल अर्क १म दशमिक और ३० से १००० शततमिक शक्ति तक । क्योंकि अविराम ज्वरमें एक स्थानपर ऐसा देखा गया है कि ३० शततमिक पर्यन्त प्रयोग करनेसे दो तीन सप्ताह तक बोखार नहीं आता । इस अवस्थामें २०० क्रमकी एक मात्राका प्रयोग करने पर २४ घण्टेमें वही ज्वर चला गया है । (डा० केण्ट और एच० सी० ऐलेन वगैरह चिकित्सकगणोंने साधारणतः हजार आदि क्रम व्यवहार कर आश्चर्य-जनक लाभ दिखाया है ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन ।

जेनिस्टा ।

(GENISTA)

दूसरा नाम ।—जेनिस्टा टिङ्कटोरिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मस्तिष्क और कानमें इधर उधर तेज दर्द ; सर दर्द और माथेमें चक्कर आना ; हिलने-डोलनेसे बढ़ना और खा लेने तथा खुली हवामें घटना इसका निर्देशक लक्षण है ।

एकाएक पाखाना लगना और होना, हाथ-पैर और घुटनेमें खुजलानेवाले उद्भेद और शोथके लक्षणमें इससे फायदा होनेकी आशाकी जाती है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—साइक्यूटा-विरोजा, नेट्रम-सल्फ, बैराइटा-कार्ब, रास ।

शक्ति ।—३x—३० ।

जेण्टियाना क्रूसियेटा।
(GENTIANA CRUCIATA)

दूसरा नाम।—जेनसियाना माइनोरा (Gentiana Minora)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया। — जड़से मदर-टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार; अजीर्ण; निगलनेमें तकलीफ; आँत उतरना; स्वरभङ्ग; गर्दनका कड़ापन; गलेका जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—वायुनली और पाकाशय आदिके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया प्रकट हुआ करती है। गलेमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा संचित हुआ करता है, निगलनेमें तकलीफ; दाहिनी ओरकी आँत उतरना (Right Inguinal Hernia); शरीरकी त्वचापर कीड़े रेंगनेकी तरह और पाकाशय तथा अन्त्राशयमें कोई जीव चलनेकी तरह मालूम होना इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—रोना स्वभाव (ऐक्टी, सिक्लेम, इग्ने, लैक-कैन, नैट-मूर, पैलेड, पल्स, सिपि, स्ट्रैन); बोलनेकी इच्छा न होना (एमोन-मूर, आर्जेण्ट-नाइ, केलि-फास, मेङ्ग, ऐसेट, आक्साई-ड्राप, फास, स्ट्रैन)। पढ़नेके समय अक्षर सब धुँधले दिखाई देते हैं—मानो पतले कपड़ेसे ढके हो (पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है मानो सब अक्षर घूम फिर रहे हैं, कभी ऊपर कभी नीचे जाते हैं और अन्तमें अदृश्य हो जाते हैं=साइक्यू,—कुछ देर पढ़ने बाद ऐसा मालूम होता है मानो अक्षर सब धुआँ भरे हो गये=काक्यु; पढ़ते पढ़ते मालूम होता है मानो अक्षर सब आपसमें मिलकर अस्पष्ट हो गये=ब्राई; डिफनी; जिनसेङ्ग; लाई, नेट-मूर, साइलि, स्ट्रैम)।

मुंहके भीतर।—गलेके भीतर कुछ लाली और उसमें सङ्कोचनकी वजहसे कोई चीज निगलना बहुत कष्टकर (ऐल्यु, बेल, क्विनिन-सल्फ, क्रोटोन, इग्ने, कैल्के-कास्टि, ऐसिड-फ्लू, फेरम-ऐसेट)। गलेके भीतरसे बार बार गाढ़ा

आकार धारण कर लेनेपर) ; बेल, कोलोफिल ; प्रसवके दर्दके समय जरायु का न फैलना—कड़ापन rigidity of os = कुरारी (पक्षाघात) कक्यु, कोना, कास्टि, आर्जेण्ट-नाइ ; बोरैक्स (गिरनेका भय) ; आर्स, लैके, लाइ, सिकेलि, (जीभका काँपना) ; सिफिलिन (प्रदर) ; वेरेट्रम (सरमें चक्कर) ।

दोषघ्न या प्रतिविष ।—ऐट्रोप, सिङ्को, काफि, डिजि, नक्स-मस ।

शक्ति ।—मूल अर्क १म दशमिक और ३० से १००० शततमिक शक्ति तक । बच्चोंके अविराम ज्वरमें एक स्थानपर ऐसा देखा गया है कि ३० शततमिक पर्यन्त प्रयोग करनेसे दो तीन सप्ताह तक बोखार नहीं आता । इस अवस्था में २०० क्रमकी एक मात्राका प्रयोग करने पर २४ घण्टेमें वही ज्वर आ गया है । (डा० केण्ट और एच० सी० ऐलेन वगैरह चिकित्सकगणोंने साधारणतः हजार आदि क्रम व्यवहार कर आश्चर्य-जनक लाभ दिखाया है ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन ।

जेनिस्टा ।

(GENISTA)

दूसरा नाम ।—जेनिस्टा टिङ्कटोरिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मस्तिष्क और कानमें इधर उधर तेज दर्द ; सर दर्द और माथेमें चक्कर आना ; हिलने-डोलनेसे बढ़ना और खा लेने तथा खुली हवामें घटना इसका निर्देशक लक्षण है ।

एकाएक पाखाना लगना और होना, हाथ-पैर और घुटनेमें खुजलानेवाले उद्भेद और शोथके लक्षणमें इससे फायदा होनेकी आशाकी जाती है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय ।**—साइक्यूटा-विरोजा, नेट्रम-सल्फ, बैराइटा-कार्ब, रास ।

शक्ति ।—३x—३० ।

जेष्टियाना क्रूसियेटा।
(GENTIANA CRUCIATA)

दूसरा नाम।—जेनसियाना माइनोरा (Gentiana Minora)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया। — जड़से मदर-टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार; अजीर्ण; निगलनेमें तकलीफ; आँत उतरना; स्वरभङ्ग; गर्दनका कड़ापन; गलेका जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—वायुनली और पाकाशय आदिके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया प्रकट हुआ करती है। गलेमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा संचित हुआ करता है, निगलनेमें तकलीफ; दाहिनी ओरकी आँत उतरना (Right Inguinal Hernia); शरीरकी त्वचापर कोड़े रेंगनेकी तरह और पाकाशय तथा अन्त्राशयमें कोई जीव चलनेकी तरह मालूम होना इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—रोना स्वभाव (ऐक्टी, सिक्लेम, इग्ने, लैक-कैन, नेट-म्यूर, पैलेड, पल्स, सिपि, स्टै न); बोलनेकी इच्छा न होना (एमोन-म्यूर, आर्जेण्ट-नाइ, केलि-फास, मेङ्ग, ऐसेट, आक्साई-ड्राप, फास, स्टै न)। पढ़नेके समय अक्षर सब धुँधले दिखाई देते हैं—मानो पतले कपड़ेसे ढके हों (पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है मानो सब अक्षर घूम फिर रहे हैं, कभी ऊपर कभी नीचे जाते हैं और अन्तमें अदृश्य हो जाते हैं=साइक्यू,—कुछ देर पढ़ने बाद ऐसा मालूम होता है मानो अक्षर सब धुआँ भरे हो गये=कोक्यु; पढ़ते पढ़ते मालूम होता है मानो अक्षर सब आपसमें मिलकर अस्पष्ट हो गये=ब्राई; डैफनी; लिनुसेङ्ग; लाई, नेट-म्यूर, साइलि, स्टै म)।

मुंहके भीतर।—गलेके भीतर कुछ लाली और उसमें सङ्कोचनकी वजहसे कोई चीज निगलना बहुत कष्टकर (ऐल्यु, बेल, क्विनिन-सल्फ, क्रोटोन, इग्ने, कैल्के-कास्टि, ऐसिड-फ्लू, फेरम-ऐसेट)। गलेके भीतरसे बार बार गाढ़ा

लेईकी तरह श्लेष्मा खाँसकर निकालना पड़ता है (कैलि-बाई, हाइड्रेस्ट, ऐलू, आर्जेण्ट-नाई, (सवेरे) ; नैट-कार्ब, लेके (दिनकी नींदके बाद)।

पाकाशय।—भूख बढ़ना या भूख न रहना (जैल्फि-लूटि) ; खट्टी डकार (ऐल्यू, आई, कैल्के, कार्बो-वेज, सिल्लोम, जिनसेङ्ग, नक्स-वोम, पेट्रोल, फास, ऐसिड-सल्फ, बोरिन) ; बहुत मिचलीके साथ सोनेकी इच्छा (कोना, नैट्र-सल्फ, प्लेट, सल्फ,—बाध्य होकर सो जाना पड़ता है=आर्स, ऐसेट, काक्यु, मस्कस, ऐसिड-फास) ; पानीकी तरह वमन (आर्स, कैम्फो, कार्ल्डि, क्यूप्रम ; क्रियो, स्ट्रैन, ऐसिड-सल्फ, टेबेक)। बड़े कष्टसे थोड़ा खट्टा और बहुत तीता स्वादका श्लेष्मा वमन होनेबाद, गलेमें रुखड़ापन और खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होता है—मानो गला फट गया है। पहले पाकस्थलीमें और इसके बाद उदरमें ऐसा मालूम होता है कि कुछ हिल रहा है (कैल्के-फास, क्रोकस ; एरण्डी-मेरि, कुरारि, सिल्लेन, कानवेले, थूजा ; सेबाड़ी),—भलनेपर यह अनुभूति दूर हो जाती है। पाकाशयमें कोई ऐसी भारी चीज मालूम होती है, जो पत्थरकी तरह पड़ी है (ऐको, एबियेज-नाई, आर्नि, आर्स, आई, कैमो, परस, सिपि, स्पाई)। पाकाशय और अन्ननालीमें मालूम होता है, मानो बहुत गर्म चीज खाकर ठण्डा पानी पी लिया है ; भोजनके बाद इस भावका बढ़ जाना और निर्मल पानी पीनेपर घटना। पाकाशयके लक्षण आदि गर्म मांसका शोरवा पीनेपर घट जाते हैं। (लाई)।

अन्त्राशय।—नाभि-स्थलमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो ऐंठन हो रही है ; मध्याह्न भोजनके बाद खड़े होनेवाली अवस्थामें, चलने और धूम्रपान करनेपर (बोर, इग्ने) बढ़ना ; रोगीको बाध्य होकर सामनेकी ओर झुक जाना पड़ता है (सल्फ) ; बैठने और सोनेपर घटता है (बाईं करवट सोनेपर घटना=नैट-सल्फ)। दाहिने पुट्ठे (Right Inguina) में मालूम होता है, मानो नीचेकी ओर धक्का दे रहा है और मानो आँतें आदि छिद्रकी राहसे नीचेकी ओर जा रही हैं (इस्कु-हिप, म्यूनस-स्पाई, लाई, काक्यु, बैठने या सोनेपर घटता है ; जोरकी छींक आनेपर पुट्ठेके पासके छिद्रकी राहसे आँतें आदि बाहर निकल पड़ती हैं और इस स्थानपर इतना दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता।

मल।—हमेशा वेगके साथ पानीकी तरह मल।

वृद्धि।—भोजनके बाद, शरीर हिलानेपर, धूम्रपानसे और खड़े होनेपर।

घटना।—मांसका गर्म शोरवा पीनेपर, बैठने और सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐल्यूमिना; लैका-कैन, एबीज-नाई, नाई, जेण्टियाना-लूटिया, मूनसं-साई, लाई (गर्म पानी पीनेपर घटना) काक्यु, सिक्लेम, केलि-बाई। (गलेमें लसदार श्लेष्मा) हाइड्रेस्ट।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे तृतीय दशमिक क्रम।

जेण्टियाना लूटिया।

(GENTIANA LUTEA)

दूसरा नाम।—जेण्टियाना मेजोरा (Gentiana Majora)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—भूख न लगना; पैत्तिक लक्षण; शूल; कमजोरी; अतिसार; अजीर्ण; ज्वर; क्षुद्र-सन्धिवात; सर-दर्द; पाकस्थलीका विकार; गलेमें संकोचन इत्यादिमें लाभदायक हैं।

उपयोगिता और आभास।—परिपाक-यंत्रपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। खट्टी डकार; राक्षसी भूख, मिचली, पाकस्थलीमें भार मालूम होना और परिपाक और अन्त्राशयका फूल उठना तथा कड़ापन, पीले मलके साथ उदरामय, वगैरह कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। "पूर्ण स्वास्थ्य रहनेपर भी मन्दाग्नि" ऐसी अवस्थामें दोनों समय भोजनके पहले सेवन करनेपर भूख अच्छी तरह बढ़ जाया करती है। इसके अलावा वात-मिला दर्द, सुस्ती, अस्वाच्छन्द्य और आलस्य मालूम होनेके साथ विषन्न चित्त, ज्वर-युक्त अवस्था इत्यादि भी इसके क्रियाफल हैं।

लक्षणावली।

मस्तक।—लिखनेके समय मस्तिष्ककी जड़ता और धुंधलापन, या देखाव और कसावटका भाव। प्रभेदका ज्ञान न रहना (Confusion = ऐको.

आर्जेण्ट-नाई, बेल, नक्स ; ओपि, साइक्यु)। और माथेमें और गालमें गर्मी मालूम होना (ऐको, ऐम्ब्रा, बेल, कैन्थ, हायो, लोरो; सिपि, सल्फ)। मस्तिष्कका धुंधलापन,—शराब आदि पीनेपर जैसा हो जाता है (ऐको, ऐथामान, बेल, आर्जेण्ट-नाई, फिलैन, साइक्यु नक्स, ओपि, पल्स)। माथेके भीतर शून्यता मालूम होना (कक्यु, क्यूप्रम ; ग्रेनेट पल्सेटिला) और ललाटके भीतरसे बाहरकी ओर दबाव मालूम होता है। ऐसा भ्रम होता है मानो माथा बड़ा हो गया है (ऐपियोल, आर्जेण्ट-नाई, कोल्को, कास्टि; साइमेक्स ; ऐसिड-फ्लू)। आंख खोलकर देखने पर सर-दर्द बढ़ जाता है (ब्राई, चायना)

आँख ।—आँखके गोलेमें दबाव मालूम होना। आँख लाल (केलि-बाई, हिमैटक्स, मार्क, मिफाइट, नक्स, सल्फ)। कभी कभी कुछ देरतक सब अँधेरा दिखाई देता है ; (आर्जेण्ट-नाई; ऐसेर, कैम्फोर, ग्रेनेट, लैक्टो, ओलियैन, ओपि) और सामनेकी चीजें भी स्पष्ट नहीं दिखाई देतीं,—यहाँ तक कि जिसके साथ बोलता है, कुछ देरतक वह भी दिखाई नहीं देता।

मुख-विवर ।—मुँह और कण्ठ सूखा ; लार बहुत गाढ़ी (बेल, बिस्मथ, एपिफिगस, नक्स-मस)। कण्ठनालीके गालमें सटा हुआ श्लेष्मा बार बार खाँसकर निकाल देनेकी चेष्टा करता है। गलेमें रुखड़ापन (ऐमोन-कार्ब, आर्स, ऐल्यू, इयुप्रे, ग्रेफ्यो, हायो, केलि-बाई, लेमियम, पोडो) और खाल उधड़नेकी तरह मालूम होना (ऐल्यू, कैस्टोर, फाइटो) मुंहमें मिट्टी जैसा स्वाद मालूम होता है (ऐलो, किनिन-सल्फ, हिप, नक्स-मस, पल्स, स्ट्रान)।

पाकस्थली ।—पेट गड़गड़ाता है और डकार आती है ; हिचकी आती है और खट्टी डकार आती है। जी मिचलाता हैं; कै होनेका उपक्रम होता है; डकार ; मिचलीकी वजहसे कै होनेकी सम्भावना और आंखमें पानी भर आता है। पाकाशय शून्य मालूम होता है (फास, जिङ्क, सेङ्गियु, सार्सा)। सन्ध्याके समय भयङ्कर भूख (ऐसिड-फ्लू) पैदा हो जाती है ; अरुचि। मानसिक अस्थिरता, जी मिचलाता है, कै होती है, और पाकस्थलीमें दर्द और भारकी वजहसे श्वास प्रश्वासमें तकलीफ होती है, ऊपर और निचले पेटमें वायु जमकर फूल उठता है और कड़ा हो जाता है।

अन्त्राशय ।—नाभिके स्थानमें इतना दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता और ऐसा मालूम होता है, कि जोरसे दबा रखा है और

नाभि भीतरकी ओर खिंच रही है (प्रूनस); तेजीसे चलनेपर तलपेटमें दर्द होता है और मलद्वारमें दबाव मालूम होता है। श्वासकष्ट और तलपेटका न फैलना;—सन्ध्याके समय बढ़ता है। ऊर्ध्व और अधोमुखसे लगातार वायु निकला करता है पर उससे आराम नहीं मालूम होता है।

मलान्त्र और मल।—कूथन और आंतें आदि सभी मलद्वारकी ओर धक्का दे रही हैं, ऐसा मालूम होता है। तीसरे पहर पित्तमय दस्त। मल कोमल और पीला, पाखाना होनेके पहले शूलकी तरह दर्द; पाखाना होनेपर यह दर्द इतना बढ़ जाता है कि रोगी सामनेकी ओर झुककर दोहरा जाता है (कोलो, क्यूप्रम)। एकाएक दर्द होनेपर बहुत कुछ पसीना निकलता है, और शय्यासे उठते ही पतले दस्त आते हैं।

निद्रा।—बार बार जम्हाई आती है। औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती, अन्त्रशूलकी वजहसे रोगी सो नहीं सकता; और दर्दकी वजहसे वह करवट बदला करता है—रातके दो बजेतक स्थिर नहीं रह सकता।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर, भोजनके बाद, तीसरे पहर।

सम्बन्ध।—सदृश।—जेण्टियाना-क्रू, हाइड्रैस्ट, बिस्मथ; नक्स-वोम, ऐलू।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ रा दशमिक क्रम (स्वस्थ देहमें क्षुधावर्द्धक रूपमें सेवन करनेपर ३ रा दशमिक क्रम भोजनके आध घण्टा पहले सेवन करना चाहिये)।

जेण्टियाना-क्विनक्विफोलिया।

(GENTIANA QUINQUIFOLIA)

दूसरा नाम।—गाल आव ही अर्थ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूले हुए उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—पुराना सविराम ज्वर, अग्निमान्द्य, बच्चोंका हैजा और कमजोरीमें इसका मूल अर्क या निम्न-शक्ति कई बूंदकी मात्रामें व्यवहार करनेपर कभी कभी विशेष लाभ हुआ करता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

गेटिस्वर्ग ।

(GETTISBURG)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गेटिस-वर्ग प्रपातके पानीसे तैयार किये हुए नमकसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—साइलिसियाके साथ बहुतसे लक्षणोंमें इसका सादृश्य है । मेरुदण्ड या वस्ति-देशकी अस्थिका चय या भङ्ग रोग, सन्धि-समूहमें जखम, और इस जखमसे जलन करनेवाला पीब स्राव, लक्षणमें गण्डमाला धातुवाले बच्चोंकी बीमारीकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

जिरेनियम मैकुलेटम ।

(GERANIUM MACULATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़का टिंचर और विचूर्ण तैयार होता है । समूचे पौधेका काढ़ा तैयार हुआ करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार; दो देखना; रक्तामाशय; रक्तस्राव; श्वेत प्रदर; मलत्यागकी वृथा चेष्टा; गलेमें जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—नाक, पाकस्थली, फेफड़ा वगैरहसे खूनका स्राव इसका प्रधान क्रियाफल है । सर-दर्द, पाकस्थलीमें जखम पैदा होनजाा। खूनकी कै वगैरहमें इससे विशेष लाभ हुआ करता है ।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आनेके साथ दो देखना (जेल्स),—आँख बन्दकर सोनेपर आराम मालूम होता है । आँख बन्दकर चल सकता है (आँख बन्दकर एक कदम भी नहीं चल सकता=ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई) ।

मुंहके भीतर।—जीभका अगला भाग सूखा और उसमें जलन होती है (आर्जेण्ट-नाई, कार्बो-वेज, नेट-म्यूर)।

पाकस्थली।—रक्तकी के होती है (हैमा, इपिक, आर्नि) ; पाकस्थली में जखम पैदा कर देता है (आर्जेण्ट-नाई, आर्स, कैलि-बाई)।

मलान्त्र और मल।—बार बार पाखानेका वेग होता है पर कुछ देरतक मल बिलकुल ही नहीं निकलता ; कुछ देर बाद अनायास ही मल निकल जाता है। पुराना उदरामय—बदबूदार आँव निकलती है। बच्चोंका उदरामय।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव। प्रसवके बाद खूनका स्राव (केनाब-सैट, सिकेलि ; ट्रिल-पेण्डियु)। स्तनवृन्तमें जखम (इयुपेट-ऐरोमैट)।

फेफड़ा।—फेफड़ेसे खूनका स्राव (ऐकालिफा, फेरम-फास, मिलि-फोल)।

सम्बन्ध।—सदृश।—हैमामिलिस ; मिलिफो, ट्रीलियम-पेण्डियु हिमैटाक्स (इरीडियम-साइक्लु टेरियम=जरायुसे स्राव और बहुत ज्यादा ऋतु-स्रावकी एक बहुत बढ़िया दवा है ; रूसमें इसीलिये इसका बहुत आदर है। जरायुके अर्बुद रोगमें भी इसका व्यवहार हुआ करता है) ; हाइड्रैस्टि-निनम, कैलि-बाई, आर्जेण्ट-नाई।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ रा दशमिक (पाकस्थलीके जखम वाले रोगमें मदर टिंचर आधा ड्राम—प्रयोग करना चाहिये।—डा० विलियम बोरिक)।

जियम राइवेल।

(GIUM RIVALE)

दूसरा नाम।—वाटर एडेन्स।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—फूल खिले हुए उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।— एकाएक उदरसे तेज जलन आरम्भ होकर मूत्रद्वार तक फैल जाती है, भोजनसे बढ़ना, बिजलीके प्रवाहकी तरह दर्द और एकके बाद दूसरी बार—इस तरह लगातार दो बार दर्द होनेके लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

जिनसेङ्ग ।

(GINSENG)

दूसरा नाम ।—ऐरेलिया क्विनक्विफोलिया (Aralia Quinquefolia) ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,— कमजोरी ; सर-दर्द ; कटिवात ; पैरका झुनझुनीवाला वात ; इन्द्रियकी उत्तेजना ; ऐपेण्डिसाइटिस या उपाङ्ग प्रदाह ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान क्रिया-क्षेत्र मेरु-मज्जाका निचला अंश है। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं,—शय्यासे उठनेके समय कमर और उरु देशमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो चोट लग गयी है। शरीरकी शिथिलता ; निम्नाङ्गमें वाताश्रित और सुन्न पैदाकर देनेवाला दर्द ; वातके कारण निचला पैर फूलता है और पैरके अँगूठेमें बेहद दर्द होता है। दाहिने पुट्ठेकी जगहसे लेकर दाहिने पैरके अँगूठे तक रोज रातमें बेधने और अकड़नेकी तरह दर्द होता है। गुल्फ सन्धिमें छेदनेकी तरह तेज दर्द। इसके अलावा बार,बार पेशाब होनेके साथ कमरमें वात, गृध्रसी या कटि-स्नायु शूल और पुरानी वात- व्याधि वगैरहका लक्षण मिलने पर बहुतोंके मतसे यह एक अव्यर्थ दवा है। एक ओर जिस तरह इससे शरीरमें फुर्ती ,बल और तेजीसे चलनेकी शक्ति आती है , दूसरी ओर उसी तरह गड़बड़ी मालूम होना, बार बार जम्हाई आना, सरमें दर्दके साथ नींद आना, कभी बहुत उत्ताप, कभी बहुत जाड़ा, शरीरमें ठण्डी हवा लगानेकी बहुत

इच्छा और तलपेटमें दाहिनी ओरसे बाएं पुट्ठे तक दर्द हुआ करता है। दाहिने अङ्गपर ही इसकी विशेष क्रिया होती है। बैठे रहनेकी अवस्थामें रोगीको ऐसा मालूम होता है, "मानो पीछेकी ओर गिर जायगा।"—यही लक्षण इसका प्रकृतिगत और सिद्धिमद है।

लक्षणावली।

मन।—शान्त; सन्तुष्ट चित्त। दुर्घटनाकी आशङ्का (कार्बो-वेज)। सोचनेकी शक्ति (बैप, नेट्र-कार्ब)। स्मरण-शक्तिकी खर्वता (ऐनाक, बेराई-कार्ब, लेके, कोलचि,—नाम याद नहीं रहता=सिडोरिन, सल्फ)। रोना स्वभाव (ऐक्टि, एपिस, कास्टि, साइक्लू, ग्रेफ, लिलियम-टाइग्रि, नेट-म्यूर, पल्स, सिपि)। यही सोचकर व्याकुल रहता है कि भविष्यमें न जाने क्या होगा (ऐसिड-म्यूर, साइक्लू, फास)।

मस्तक।—चक्करदार सीढ़ीसे उतरनेपर उसमें चक्कर आ जाता है; अस्पष्ट दृष्टि और शरीर ढलमलाया करता है। खड़े होनेवाली अवस्थामें ऐसा मालूम होता है मानो पैरके नीचेकी जमीन खिसकी जाती है=(कैलि-ब्रोम) माथेका पिछला भाग मानो ढलमलाया करता है और दृष्टिके सामने मानो धुमैले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं (काले बिन्दु दिखाई देते हैं=ग्लोन, नेट-म्यूर, सिपि, सिलि)। कभी कभी ऐसा मालूम होता है, कि सर खूब बड़ा हो गया है और एक ओर झूल रहा है। बैठनेवाली अवस्थामें रोगीके अनजानमें उसका माथा पीछेकी ओर खिंच जाता है और उसे ऐसा मालूम होता है कि वह पीछेकी ओर गिर जायगा। अधकपारीका दर्द,—ललाटके दाहिने पार्श्वसे अक्षि-गह्वरतक ऐसी तकलीफ होती है, मानो अस्त्रसे काट रहा है। पलक भारी मालूम होती है (ग्रैफ); बहुत ही ज्यादा औंघाई, इसके साथ ही माथेमें उत्ताप और कपालमें भार मालूम होना।

आंख।—दोनों आँखोंके ऊपर दबाव मालूम होना,—मानो ये आँखें बाहरसे भीतरकी ओर धक्का दे रही हैं; पलक आपसे आप गिर जाती है (कास्टि,—विशेषकर दाहिनी ओरकी पलक) देखना बहुत कठिन हो जाता है (कोलो-फिल, कास्टि, जेल्स, ग्रैफ, नैट-म्यूर, जिङ्कम)। ऊपरी पलक खुजलाती है। (क्रोटोन-टिग; हिप; केलि-बाई, पेट्रोल, रास)। आँखके गोलेके ऊपरी भागमें तकलीफ देनेवाली ठपड़क मालम होना। किसी चीजकी ओर नजर

गड़ाकर देखते रहनेपर वह दो मालूम होती है, पढ़नेके समय अक्षर सब धुँधले दिखाई देते हैं (अरम, डेफ, लैके ; लाइ, नेट्र-म्यूर) ।

मुखमण्डल ।—चेहरा पर्यायक्रमसे लाल और रक्त-शून्य तथा उतरा हुआ दिखाई देता है (ऐको, ऐमिल ; क्रोकस ; इग्ने, लिडम ; पल्स, प्राय) । दाहिना गाल, नासापुट और चिबुक फट जाने बाद लाल हो जाता है,—इसके बाद ही इसके स्थानपर घमौरीकी तरह फुन्सियाँ निकलती हैं और वे बहुत पिटपिट करती हैं। इसके बाद घमौरीकी तरहका यह उद्भेद दादकी भाँतिके चर्मरोगमें परिणत हो जाता है और इस रोगवाले अंशसे कई दिवस बाद सूखी रूसी या छाल निकला करती है। दोनों ओंठ सूखे, लाल और फटे फटे हो जाते हैं—बाहरी हवामें या बोलनेपर उससे खून निकला करता है (अरम-ट्रि, कैलि-कार्ब, नैट-म्यू) । मुँहकी हड्डियाँ सब और दोनों हनु ऐसा मालूम होता है, मानो अकड़ गये हैं ।

मुख-विवर ।—जीभ सफेद आभा लिये और एकदम सूखी तथा बड़े बड़े चमकीले काँटोंसे भरी। भीतरी भागमें ओंठ और दाँत सब बहुत सूखे। सूखेपनकी वजहसे सहजमें ही लार निगल नहीं सकता। पानी पीनेपर सिर्फ कुछ मिनिटोंके लिये मुख-विवर तर रहता है, और फिर जैसा था वैसा ही हो जाता है। प्यासके साथ जीभ लाल और उसमें खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द, अन्तमें दोनों ही पार्श्व लाल हो जाते हैं और बीचमें सादी रेखा निकल आती है (ऐण्टि-टार्ट, एपिस) ।

पाकस्थली ।—असमयमें बहुत भूख लगना। पेटमें वायु इकट्ठा होता है और फूल उठता है, कड़ा हो जाता है, इसके बाद यह वायु निकला करता है तथा बहुत ही तकलीफ मालूम होती है, बार बार जम्हाई आती है। पाकाशयमें अधिक भार मालूम होता है तथा उसपर वस्त्र आदिका दबाव सहन नहीं होता (ऐमोन-म्यू, कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, हिप, क्रियो, लैके, लाइ, नक्स) । पाकस्थलीमें भूखसे उत्पन्न हुआ हृदयके अगले प्रदेशमें छुरी मारनेकी तरह दर्द। सम्पूर्ण पेटमें शूल जैसा दर्द मालूम होता है। पेट अकड़ जाता है और श्वासमें तकलीफ होने लगती है।

अन्त्राशय ।—तलपेटके दाहिनी ओरसे बायीं ओरतक (लाइ) शूलका दर्द कर्दमुखी होकर हृत्प्रदेशमें (Precc[illegible] फैल

जाता है,—और उदरमें वायु इकट्ठा होकर वह फूल जाता है—वायु निकलनेपर घटता है (आर्नि, सिपा, जिङ्गस-ऐफ्यु, कार्बो-वेज, नेट्र-म्यू)। दाहिने कोखके पीछेकी ओर तेज दर्द होनेके कारण रोगीको देह तकलीफासे मोच खाया करती है (नाइट्रम, नक्स-युग)। शूल वेदना ऊपरी पेटतक फैल जाती है; ऊपरी भागमें दबानेपर बहुत दर्द मालूम होता है; उदरके दाहिने पार्श्वमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है (फाइटो); यह दर्द पुट्ठा और पाकस्थलीतक फैल जाता है और तलपेटमें इस तरहका दर्द होता है मानो काट रहा है; दाहिने पार्श्वके पंजरेके नीचेतक पेट फूलना—हृद्-प्रदेशमें दर्द होता है और बार बार आराम देनेवाली डकार आती है; पेट फूला, कड़ा और दर्द भरा (जेल्सि, जिङ्क)—हवा छूटनेपर घटना। उपाङ्ग प्रदाह (Appendicites)—ऐसा दर्द मानो बड़ी और छोटी आँतके संयोगस्थलपर चोट लग गयी है और दबानेपर दर्द बढ़ जाता है; जोरका कलकल गड़ गड़ शब्द सुन पड़ता है (लैके, आइरिस, टेनाक्स, ऐमोनियैकम, एकिनेशिया, लक-डिफ्लो)। अन्यान्य वहिरावरण प्रदाह (Peri-typhlitis=आर्स, क्रोटल-होरिड, आइरिस-टेन, लैके)।

मलान्त्र और मल।—मल कड़ा न होनेपर भी सहजमें नहीं निकलता (ऐलाक्, डायाडेमा, हिप, नक्स-मस, रोडो); कठिन मल बड़े कष्टसे निकलता है और मलद्वारमें जलन पैदा हो जाती है। मलान्त्रमें तेज कूथन और शस्त्रकी चोटकी तरह दर्द।

पुं-जननेन्द्रिय।—बार बार वीर्यपातकी वजहसे शरीरके स्थान स्थानपर वातका दर्द (रेतःस्खलनकी वजहसे कमरमें दर्द=कोबाल्ट)। रातमें लिङ्गमें कड़ापन होता है परन्तु रेतःस्खलन नहीं होता। खूब जी लगाकर कोई काम करनेके समय तकलीफ देनेवाला लिङ्गका कड़ापन। मूत्रनालीके अन्तिम भागमें बहुत सुख-जनक सुरसुरी। अण्डकोषमें ऐसा दर्द मानो किसीने दबा रखा है।

श्वासयन्त्र।—स्वर-भङ्ग और रुखड़ापन। रह रहकर सूखी खाँसी आया करती है। श्वास-प्रश्वासमें कष्ट और उद्वेग; सामान्य परिश्रमसे भी दमा की तरह बड़े कष्टसे श्वास-प्रश्वासकी क्रिया करता है। छाती ऐसी मालूम होती है मानो कस गयी है और रोगी बार बार लम्बी साँसे लेता है मानो छातीमें यथेष्ट वायु नहीं घुस रही है (मूषस-साई)। चलनेपर घट जाता है। हृत्पिण्ड

प्रदेशमें भयङ्कर दर्द और ऊपरी पेटमें ऐसा मालूम होता है, मानो छुरी बिंध रही है (कैलि-कार्ब, ऐग्नस)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—सर हिलानेपर गर्दनके पीछेकी कशेरुका कड़-कड़ाती है (नेट-कार्ब, निकोल)। गर्दन अकड़ी-सी मालूम होती है। कमरके चारों ओर अस्त्रकी चोटीकी तरह दर्द,—कटिवात (Lumbago)। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचवाले अंशमें अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द,—यह दर्द दाहिने कन्धेमें फैल जाता है और खड़े होनेपर यह दर्द मेरुदण्डके बिचले भागमें त्रिकास्थि प्रदेश (Sacrum) तक मालूम होता है, इस दर्दकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें बहुत कष्ट हो जाया करता है। हाथ-पैर हिलानेपर सन्धियोंमें कड़कड़ाहट होती है (कैप्स, कार्बो-ऐन, काक्यु, पेट्रोल, रास)। हाथसे सहजमें ही चीजें गिर जाती हैं,—सभी विषयोंमें व्यस्त (एपिस, बोवि)। मुट्ठी बांधनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो हाथ फूल गया है और उसके ऊपरवाली त्वचा चरचराती है। गुल्फ-सन्धि (Ankle-joint) में मानो छुरी मारी जा रही है, ऐसा दर्द होता है। पैरका तलवा भारी मालूम होता है और बाएँ पैरकी पेशीमें बहुत खोंचन होती है और पुट्ठेके पीछे बहुत दर्द मालूम होता है। उरुसे पैरके तलवे तक अकड़न मालम होती है और उसमें कन-कनी होती है। इसीलिये सहज ही चल नहीं सकता।

वृद्धि ।—निर्मल वायु लगने, बोलने, रातके समय, माथा झुकाने या घुमाने, चक्करदार सीढ़ीसे उतरने और बैठनेपर।

घटना ।—मध्यान्ह भोजनके बाद।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐङ्गस, ऐरेलिया ; एपिस, जेल्स ; ब्राई, नक्स-मस, हैराक्लि, कोका।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम तक।

ग्लोनोइनम।

(GLONOINUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रो ग्लिसिरिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ग्लिसरिनके साथ नाइट्रिक-एसिड और सल्फ्युरिक एसिड मिलाकर यह तैयार होता है। इसके बाद अलकोहलमें क्रम तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है:—हृत्शूल; स्वरभङ्ग; संन्यास; मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता; मूत्रस्थली की बीमारी; आक्षेप; मृगी; नाकसे खून गिरना; डर जानेका दुष्परिणाम; गलगण्ड; सर दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी और कम्पन; रोगी यह निर्णय नहीं कर सकता या उसे मालूम नहीं होता कि वह किस जगहपर है; उन्माद; मस्तिष्कावरण प्रदाह; रजोलोप; स्नायुशूल; पक्षाघात; वात; कटिवात; पैरको झुनझुनीवाला वात; सर्दी लग जाने बाद सर-दर्द; लू लगना; दाँतका दर्द; चोट आदिका दुष्परिणाम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मस्तक, मस्तिष्क और हृत्पिण्डपर इसका प्रधान आक्रमण होता है। इसके द्वारा संन्यासके अधिकांश लक्षण पैदा हो जाया करते हैं—एकाएक मूर्च्छा और बेहोशी आ जाना; मस्तिष्ककी उत्तेजनाकी वजहसे जी मिचलाना और वमन होना। ऐसे शूलके दर्दकी वजहसे रोगी पागल जैसा हो जाता है मानो कोई छुरी मार रहा है और वह भागनेकी चेष्टा करता है या खिड़कीसे कूद पड़ना चाहता है। डर की वजहसे बीमारियाँ; बहुत ज्यादा आशङ्का; ऐसा डर मालूम होता है, कि कोई उसे विष खिला देगा (हायो, कैलि-ब्राई, रास-टक्स)। गैसकी रोशनीमें काम करनेकी वजहसे बीमारियाँ। माथेमें किसी तरहका उत्ताप सहन नहीं कर सकता; छातेके बिना धूपमें जा नहीं सकता। मानसिक उत्तेजना, मस्तिष्कमें आघात या केश कटवानेकी वजहसे बीमारियाँ; (बेल, फास)। माथेका आकार बड़ा मालूम होता है; मानो माथेमें मस्तिष्कके ठहरनेकी जगह नहीं है; लू लग जाना या सर्दी-गर्मी (Sunstroke) और धूप लग जानेके कारण सर-दर्द; सूर्यके उदय अस्तके अनुसार सर दर्द घटा

बढ़ा करता है। नाड़ीकी धमकके अनुसार ही ठीक तालमें सरमें भी धमधम होता है। सरमें टपकका दर्द। रोगी-दोनों हाथोंसे मस्तक पकड़ लेता है; सो नहीं सकता, शायद तकियेमें उसका सर न लग जाये। मस्तिष्क बहुत बड़ा मालूम होता है,—ऐसा मालूम होता है कि मानो माथेकी खोल फटकर मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा; रक्त झोंक देकर माथेकी ओर जाता है। समय पर ऋतु न होना या रजोरोधको वजहसे मस्तिष्कमें अधिक रक्त-संचय होना; ऋतुके बदले सरमें दर्द; जरायुसे बहुत ज्यादा स्राव (Metorrhagia) होनेपर सरमें दर्द; गर्भवती रमणियोंका माथेकी ओर खूनका दौड़ना; गर्भावस्थामें धनुष्टंकार आदि अकड़नवाली बीमारियाँ। गर्दनकी दोनों धमनियोंमें टपक और जोर जोरसे कलेजा धड़कना,—मानो हृत्पिण्डकी क्रिया बड़े कष्टसे हो रही है,—ऐसा मालूम होता है मानो खून हृत्पिण्ड और मस्तककी ओर तेजीसे दौड़ रहा है, हृत्पिण्ड प्रदेशमें फड़फड़ शब्द (सोयी हुई बिल्लीकी कण्ठ-ध्वनिकी तरह); सन्ध्याके समय आगके पास रहने या सो जानेसे कारण बच्चा बीमार हो जाता है (दाँत निकलनेके समय)। मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय अधिक होनेकी वजहसे बच्चोंको धनुष्टंकार रोग, मस्तिष्कावरण प्रदाह (Inflammation of, to the meninges), वयःसन्धिके समय (at climaxis) रह रहकर उत्ताप पैदा हो जाना; ऋतुस्रावके समय उत्तापका पैदा होना।

लक्षणावली ।

मन ।—एकाएक चैतन्य लोप, मूर्च्छा और गिरना। पर्यायक्रमसे मस्तक और हृत्पिण्डमें अधिक रक्तसञ्चय हुआ करता है। जाने बूझे रास्ते सब अपरिचित मालूम होते हैं; वह यह नहीं बता सकता, कि रास्तेके किस पार्श्वमें उसका मकान है। बुद्धि-विकार,—भाग जानेकी चेष्टा करता है; खिड़कीसे कूद पड़ना चाहता है (आर्जेण्ट-नाइ, जेल्स); मस्तिष्कमें तेज दर्दकी वजहसे रह रहकर लोमहर्षक चीत्कार कर उठता है (एपिस, हेलिबो, क्युप्रम, हाइ-पिर); गलेमें ऐसा मालम होता है, मानो फूल गया है; चिबुक बड़ा हुआ मालूम होता है। हृत्पिण्डमें ऐसा मालूम होता है मानो स्क्रू से कसकर कसा हुआ है। मृत्यु निकट मालूम होती है (एपिस, ग्रैफ, लैक-डिफलो; नक्स)। ऐसी आशंका होती है, कि किसीने उसे विष खिला दिया है (हायो, एपिस, कैलि-ब्रोम; लैके, रास)। बहुत बकता है और उसके मनपर एकके बाद दूसरे भाव आया करते हैं (चायना, काफि, लैके, ओपि, नक्स, फास)

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—सीधे होकर बैठने, शय्यापर उठ बैठने या आसनसे उठ जानेपर ; माथा झुकानेपर (ऐनाक, लाइ, नक्स, कैल्मी, केलि-बाई, पल्स ; ऊपरकी ओर देखनेपर=पल्स, साइलि) या माथाझु काने पर (ब्राई, कोना, हिपर, फास)। सरमें दर्द—गैसकी रोशनीमें बहुत देर तक शारीरिक या मानसिक परिश्रम करनेपर माथेमें उत्ताप बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता—क्या चूल्हेकी गर्मी क्या धूपमें घूमना—सभी सहन नहीं होते (ब्रूसिया, लेके, ऐसिड-क्रूड, ब्राई, नैट-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स)। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है ; मानो सरमें मस्तिष्कका स्थान नहीं है, मानो मस्तिष्क खोपड़ी फाड़कर बाहर निकलना चाहता है, पेटसे थक्केका थक्का खून माथेकी ओर दौड़ता है ; प्रत्येक कदम चलनेपर या थोड़ा भी शरीर हिलानेपर, माथेमें धक्केकी तरह मालूम होता है और टपक आरम्भ हो जाती है। रोगी दोनों हाथोंसे माथा पकड़ कर चुप बैठ जाता है। लू लगना (Sun-stroke या heat apoplexy) और धूप लगनेकी वजहसे सर दर्द—सूर्यके उदय अस्तके अनुसार सर-दर्दका घटना बढ़ना (साइलि ; विलम्बसे=ग्रैफ, लैक-डिफ्लो,—रुकनेपर=ग्रैफ, लैके, सेङ्गियु)। ऋतुस्रावके आरम्भ होनेमें विलम्ब या ऋतुरोध होनेकी वजह सरमें बहुत ज्यादा रक्तका संचय हो जाना (विलम्बसे=ग्रैफ, लैक-डिफ्लो,—रुकना=ग्रैफ, लैके) ; ऋतुके बदले सरमें दर्द ; जरायुसे अधिक स्राव होनेके बाद भयानक सर दर्द हो जाता है। गर्भवती स्त्रियोंके माथेमें रक्त चढ़ा करता है ; नाड़ीकी गतिके लयके अनुसार माथेमें भयानक आघात पहुँचता है ; सर-दर्द होनेपर उसमें टपक होती है ; प्रत्येक आघातके बाद रोगी दोनों हाथोंसे माथा पकड़ लेता है कहीं माथा फट न जाये) ; बिलकुल ही सो नहीं सकता, तकियेसे माथा लगते ही मानो झटका लग जाता है, माथेमें रक्त चढ़ जानेके कारण बच्चोंको धनुष्टङ्कार रोग पैदा हो जाता है ; दाँत निकलनेके समय मस्तिष्कावरण प्रदाह (Meningitis) ; बच्चे सन्ध्याके समय बहुत देरतक चूल्हा या अग्निकुण्डके पास अधिक समय तक रहनेके कारण बीमार हो जाते हैं। सर दर्दका बढ़ना=सर हिलाने या हिलने-डोलनेपर सरमें जो झटका लगता है उससे माथा झुकाने या पीछेकी ओर सर लटकानेपर (पीछेकी ओर झुकादेनेपर घटना=बेल, मूरेक्स, थूजा) ; सोनेपर (बेल, कार्बो-वेज, कोलो, लाई ; घटना=कैक्टस, कैल्के-कार्ब, चायना, हेलिबो, नेट्र-मूर ; नक्स) ; सीढ़ी चढ़नेके समय (बेल

ग्राइ, केल्के, सल्जि)। जलीय वायुमें (कार्बो-ऐन, फेर, नेट-म्यू); धूपमें (ब्रु सि, लैके, नेट-कार्ब, नक्स); गैसकी रोशनीमें परिश्रम करनेपर और शरीर बहुत गर्म और पसीना-भरा रहनेपर टोपीका स्पर्श असह्य मालूम होता है ; ठण्डे पानीमें सर दर्द बहुत बढ़ जाता है—यहाँतक कि धनुष्टंकारतक पैदा हो जाता है ; पढ़ने, लिखने, और शराब पीनेपर बढ़ता है (ग्लोनोयनसे ; माथा खोलनेपर घटता है और पीछेकी ओर झुकानेपर आराम मालूम होता है । सर दर्दके समय दोनों कनपटियोंकी शिराएं डोरोंकी तरह मोटी और ऊँची हो जाती हैं और उनमें टपक हुआ करती है । ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्कमें तरङ्गें उठ रही हैं । अधकपारीका दर्द होनेपर सब चीजें आधी उजली और आधी अन्धकारमय दिखाई देती हैं।

आँख ।—आँख ज्योतिहीन, टकटकी लगी (बेल, हायो, आयोड, लाइ, लोरो, ओपि, स्ट्रेम)। और आँखका सफेद अंश लाल; आँखका गोला मानो बाहर निकल पड़ता है और नजर पागलोंकी तरह दिखाई देती है। चक्षु-गोलकमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; सङ्कोचन या प्रसारण (सिकुड़ने या फैलने) से बहुत दर्द होता है और उसमें दबाव मालूम होता है। पुतली फैली और आँख ऊपरकी ओर चढ़ी। आँखके सामने ऐसा मालूम होता है, कि आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं (बेल, कास्टि, चायना ; सिक्लेम, केलि-कार्ब, लैके, ओपि, सोरिन)। सब चीजें आधी रोशनीमें और आधी अँधेरेमें ढकी मालूम होती हैं। मूर्च्छा हो जानेपर आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं (बेराइ-कार्ब, केलि कार्ब; नेट्र-म्यू, सोरिन, सिपि) और चारों ओर अँधेरेसे ढँका मालूम होता है। अक्षर सब छोटे मालूम होते हैं, (सिपा, केलि-म्यू)।

कान ।—कानमें घण्टेकी आवाजकी तरह आवाज आती है ; नाड़ीकी चालकी आवाज कानमें सुन पड़ती है। कानमें टपक और ऐसी तकलीफ होती है मानो भीतरसे बाहरकी ओर कुछ गड़ रहा है—विशेषकर दाहिने कानमें अधिक होता है।

नाक ।—नासा-मूलमें दर्द । धूपमें घूमनेपर चेहरा लाल और गर्म हो उठता है और नाकमें खून गिरा करता है (यूना)।

मुखमण्डल ।—माथा और छातीके भीतर खून जमकर चेहरा गर्म और उजला हो जाता है (चेहरा लाल—बेल)। सरमें दर्दके कारण रोगीका चेहरा

तमतमाया और गर्म हो उठता है—खासकर आँखके चारों ओर और ललाटमें। या एकबार तमतमाया लाल और फिर सफेद उतरा हुआ चेहरा। सर्द गर्मी हो जानेपर जबतक शरीर गर्म रहता है तबतक चेहरा सफेद रहता है। मुँहपर पसीना होता है। कीड़े लगे दाँतकी वजहसे एकाएक समूचे मुँहमें बहुत दर्द पैदा हो जाता है—और सब दर्द कनपटीमें आकर रुक जाता है। माथेमें भार मालूम होता है, पर तकियेपर सर रख नहीं सकता; रोगी को ऐसा मालूम होता है, मानो उसका निचला ओंठ फूल गया है (निम्नोष्ठकी असली सूजन=ऐल्यू, बोर, ऐसिड-म्यू, पल्स); चिबुक बहुत बड़ा मालूम होता है।

मुखके भीतर।—दाँतमें टपक जैसा दर्द—दाँत सब बहुत लम्बे मालूम होते हैं; सभी दाँतोंमें मानो कीड़े लग गये। मसूढ़ेमें ऐसा दर्द मानो उसमें छुरी मारी जा रही है;—सेंकने या गर्म प्रयोगसे बढ़ना और ठण्डे प्रयोगसे घटना (सिपा; काफि, पल्स)। जीभका ऊपरी भाग साफ और दूधकी तरह सफेद (दूधकी तरह सफेद लेप चढ़ी=एण्टि- क्रूड, ब्राई, आर्निका; आर्स, नक्स; सिपिया) और जीभकी तलीकी जगह लेप चढ़ी हुई (कैलि-बाई, नक्स, फाइटो) जीभ सुन्न, मानो जल गयी है; मानो जीभमें काँटा गड़ रहा है (ऐको, एपिस), जीभ फूल जाती है और ऐसा मालूम होता है, मानो सुई गड़ गयी है। धनुष्टंकार आदि आक्षेपके समय मुँहसे फेन निकलता है (इथ्यू, ऐगार, बेल, केम्फ, कैन्थ, साइक्यू, हायो, लोरो, स्ट्रैम)। कण्ठमें सुरसुरी होती है। ऐसा मालूम होता है मानो वह गरम है और मानो घाव हो गया है; ऐसा मालूम होता है मानो कण्ठनली फूल गयी है (बेल, सिफ्लस, हिपर, नक्स, फाइटो)। ऐसा मालूम होता है मानो गला रुक गया है (बेल, लाइको, फास)। इतना दबाव मालूम होता है कि कपड़ेका कालर बाध्य होकर खोल देना पड़ता है (एपिस, बेल, लैके, निकोलम)।

पाकस्थली।—ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा,—कण्ठ बहुत सूखा मालूम होता है या सूख जाता है (ब्राई, कैन्थ, कास्टि, कैलि-बाई, लाई, मार्क, नेट-म्यू, सेबाड, रास, वेरेट)। धूम्रपान करनेकी बहुत इच्छा (डेफ, इग्नेशि, स्टेफाई, थिरिडि)। शराब पीनेपर लक्षण बढ़ जाते हैं, जी मिचला कर पसीना होता है; (लोबेल); सरमें दर्द और जी मिचलाता है (ऐण्टि-क्रूड, कफ्यू, ग्रैफ, सेङ्गिवु)। माथेके भीतर खून जमकर या सर्द गर्मी होकर जी खूब मिचलाता

है और पसीना होता है। ऊपरी-पेट मानो शून्य और खाली मालूम होता है (क्रोकस; इग्ने, केलि-कार्ब, सिपि, सल्फ)। उदरके ऊपरी भागमें खालीपन मालूम होना और सामनेकी ओर देह झुकानेपर दर्द मालूम होता है। पसीना होनेबाद मिचलीका घट जाना।

अन्त्राशय आदि।—पतले दस्त आनेके पहले और बाद नाभीके नीचे छेदनेकी तरह दर्दकी वजहसे सवेरे नींद खुल जाती है। पित्त-पथरीका शूल (Gall-stone colic=बार्बा, डायस्को, कोलो, कोल्के, कार्डियुअस-मेरी, हाइड्रेस्ट)। कड़ा दस्त होनेपर बवासीरमें दर्द होता है और उसमें खुजली पैदा हो जाती है। उदरामय,—बहुत ज्यादा, कुछ काला, धँसधसा मल; पेट गड़गड़ाता है और वायु निकलता है। बाईं करवट सोनेपर पेटका गड़गड़ाना बढ़ जाता है; सवेरे पतला पाखाना आरम्भ होकर दिन भर हुआ करता है।

पेशाव।—अधिक परिमाणमें सफेद और लार-भरा पेशाब होता है; रातमें बार बार उठकर ज्यादा परिमाणमें लारमय पेशाब करता है (फेरम-फास, एपिस)। मसानेका प्रदाह (Nephritis=ऐपेन, ऐपिस, टेब, मार्क-सायो, रास, कैन्थ)। रोगमें धूपमें घूमनेपर सरमें चक्कर आता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—देरसे ऋतु-स्राव होने या ऋतु-रोध होनेकी वजहसे सर दर्द; ऋतु न होनेपर भी सरमें दर्द होता है। जरायुसे ज्यादा स्राव होनेपर सरमें दर्द होता है। गर्भवती स्त्रियोंके सरमें रक्त एकत्र होता है। वय: सन्धिके समय (at climaxis) देह रह रहकर गर्म हो उठती है, माथेमें दबाव मालूम होता है, जो मिचलाता है, बेहोशी आ जाती है, सरमें चक्कर आता है और पैर फूल जाते हैं। गर्भावस्थामें धनुष्टंकार आदि आक्षेपिक रोग होकर बेहोशी आ जाती है, चेहरा और मुँह लाल और फूल उठता है; नाड़ी पुष्ट और कड़ी तथा पेशाब बहुत ज्यादा तथा लारमय होता है।

श्वास-यंत्र।—पर्यायक्रमसे मस्तक और हृत्पिण्डमें रक्तका अधिक एकत्र होना। बहुत भयंकर रूपमें [illegible] धड़कना और गर्दनकी दोनों ओरकी धमनियोंमें [illegible] है [illegible] क्रिया बड़े कष्टसे होना। रक्त हृत्पिण्डके भीतरसे [illegible] नाड़ीकी गति धीमी और रुक-२ कर चलनेवाली, [illegible] मालूम होती है

ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्डसे दर्द तेजीसे कपालमें चढ़ जाता है कलेजेमें दर्द और जोर जोरसे कलेजा धड़कना। ऐसा मालूम होता है, मान वक्षस्थल फटकर हृत्पिण्ड बाहर निकल पड़ेगा; श्वास प्रश्वासमें बहुत तक लीफ हुआ करती है,—दर्द चारों और फैलकर बाएँ बाहुमें चला जाता है और वह बहुत कमजोर मालूम होने लगता है (स्पाइजि)। हृत्पिण्डके भीतरसे बेधनेकी तरह दर्द, देह भेदकर पीठतक फैल जाता है। शरीरमें सब जगह नाड़ीकी टपक मालूम होती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनमें बहुत कसावटका भाव। गर्दन बहुत कम-जोर और क्लान्त मालूम होती है,—ऐसा मालूम होता है मानो माथेका भार वहन नहीं कर सकती (ऐल्लोट, इथ्यू, आयोड; प्रबल दुर्बलताकी वजहसे) अकड़न—गुलूबन्द, कालर आदिका दबाव सहन नहीं होता (एपिस, बेल, लैके, निकोल)। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचका स्थान बहुत जलन पैदा करने वाला और गर्म मालूम होता है (लाई, फास,—दोनों पृष्ठ-फलकोंमें बहुत शीत मालूम होता है=ऐमोन-मूर, लैकनेन)। समूचे मेरुदण्डमें बहुत दर्द—मस्तिष्क-मेरुमज्जा-वरण प्रदाह रोगमें (Meningitis) बायाँ हाथ बहुत चीण और सुन्न। समूची देहमें यहाँतक कि अंगुलीकी नोकतक नाड़ीकी धमक मालूम होती है। सरमें दर्दके समय पैर, जानु और दोनों गुल्फ बहुत कमजोर हो जाते हैं। सर्द-गर्मी (Sun-stroke) रोगमें हाथ पैर वगैरह शिथिल हो जाते हैं और उनमें हिलनेकी शक्ति नहीं रहती। हिलानेपर बाएँ घुटनेमें तेज दर्द मालूम होता है पर वह गर्म नहीं होता और फूलता भी नहीं है; स्थिर रहनेपर, रह रहकर चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है। इसी वजहसे रोगी इस पैरको लम्बा फैलाकर ही रखना चाहता है; गृध्रसी या-कटि-स्नायुशूल; रोगी एकाएक बेहोश होकर गिर जाता है। मस्तिष्कमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेके कारण धनुष्टंकार आदि अकड़नवाली बीमारियोंमें हाथकी अँगुलियाँ सब आपसमें अलग अलग होकर सीधी हो जाती हैं (सिकेलि)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—जाड़ा मालूम होना, देह गर्म होनेके पहले ऐसा मालूम होता है, मानो माथा रूमालसे कसा हुआ है। शीत उत्ताप या वमन पर्यायक्रमसे प्रकट होता है। मुखमण्डलमें उत्तापकी अधिकता,—उत्ताप ऊपरी पेटसे सरमें चढ़ता है; तरंगकी तरह धक्का देता

हुआ ऊपर चढ़ता है। नींदके बाद पसीना होता है—विशेषकर मुंह और कपालमें पसीना होनेपर मिचली पैदा हो जाती है। (इयुपेट)।

वृद्धि।—धूप लगनेपर, गैसकी रोशनीमें परिश्रम करनेपर, शरीर अत्यन्त गर्म होने और धक्का लगनेपर, सर झुकानेपर, सीढ़ीसे ऊपर चढ़नेके समय, टोपीके दबावसे; केश छँटवानेपर, पीठकी ओर सर झुका लेनेपर (बेल = उपशम), स्थिर रहनेपर (जानुमें दर्द)। शराब पीने और माथा ढक लेनेपर।

घटना।—स्थिर भावसे बैठने या सोनेपर, ठण्डे प्रयोगसे और ठण्डी हवाके सेवनसे (पर माथेपर ठण्डा पानी ढालनेसे सरका दर्द तो बढ़ ही जाता है। इसके अलावा धनुष्टंकार आदि अकड़नकी बीमारियाँ भी पैदा हो जाती हैं,) और दबा देनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐमिल-नाई, बेल, एपिस, हायो, जेलस, आर्जेण्ट-नाई, कैलि-कार्ब, सेङ्गियु, मिलिलोट, डिजि, डायस्को, सिकेल, इयुपेट —पार्फोलि।

दोषघ्न।—ऐकोन, कैम्फो, काफिया ; नक्स-वोम।

तुलनीय।—ऐक्टिया (मस्तिष्क हिलना) ; क्रोटेलस (स्थान-भ्रम)। बेलाडो (चिल्लाना) ; एपिस, हायोस (विष-पान करनेका भय) ; जेल्स (खिड़कीसे कूदनेको तैयार) ; लाइको और फास (दोनों कन्धोंके बीचमें जलन) ; सिकेल (अँगुली सब अलग कर फैला रखता है)।

शक्ति।—२ रे दशमिकसे ६ ठे, ३० से २००-शततमिक क्रम तक हमेशा व्यवहारमें आता है।

नैफेलियम पोलिसिफेलम।

(GNAPHALIUM POLYCEPHALUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पौधेसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—पैरका स्नायुशूल; दस्त-कै; अतिसार; बाधक; सन्धिवात; कटिवात; गृध्रसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसके पोंछके स्नायुशूल (Sciatica) रोगमें जब रोगवाली जगहमें या अङ्गमें पर्यायक्रमसे एक बार दर्द और एक बार सुन्न होना मौजूद रहता है उस समय नैफेलियम असमर्थ लाभ दिखाता है। इसके अलावा आँतोंमें गड़गड़ाहटके साथ पानीकी तरह पतले दस्त, बहुत थोड़ा स्राव होनेवाला बाधकका दर्द, वात वेदना, मसानेमें दर्द और मूलाधारकी मुखशायी ग्रन्थिमें उत्तेजना वगैरह भी इसके विषयी-भूत हैं।

लक्षणावली।

मस्तक।—शय्या त्यागकर उठ बैठते ही सरमें चक्कर आरम्भ हो जाता है (ब्राई, चेलिडो, कूमम, सिङ्कोना)। सरके पिछले भागमें लगातार थोड़ा थोड़ा दर्द होता है और आँखके गोलेमें तेज दर्द मालूम होता है। तीसरे पहर ४।५ बजनेके समय या नींद खुलनेपर सरमें भार मालूम होता है और दर्द होता है—ठण्डा पानी डालनेपर आराम मालूम होता है (लेकेसिस)।

मुखमण्डल।— ऊपरी जबड़ेकी दोनों हड्डियोंमें शूलका दर्द, बीच बीचमें पसीना होता है, फिर दर्द होता है मुँहका स्वाद मीठा मीठा और वमन पैदा करनेवाला, जीभपर गाढ़ा सफेद लेप—ठण्डे पानीसे अच्छी तरह धोनेपर यह मैल उठ जाता। मुँहके भीतर बहुत सूखापन मालूम होता है।

पाकाशय आदि।—पेट गड़गड़ाकर (Borborygmus) बहुत वायु निकल जाता है। मलका पतलापन,—पानीकी तरह मल, बहुत बदबूदार,—सवेरे आरम्भ होकर दिनभर दस्त आया करते हैं; पेटमें कलकल

गड़गड़ शब्द होता है, पेटमें दर्द होता है, रोगी चिड़चिड़ा हो जाता है और सामान्य कारणसे ही चिढ़ उठता है। पेशाब बहुत थोड़ा होता है और भूखकी रुचि या मुंहका स्वाद आदि कुछ भी नहीं रहता। बच्चोंके ग्रीष्मातिसारकी पहली अवस्था; दस्त और के,—रातमें आरम्भ होकर दिनभर दस्त आया करते हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—स्राव,—ऋतुके पहले दिन दिखाई देता है; पेटमें बहुत दर्द होता है और स्राव बहुत थोड़ा होता है (कोलोफिल, सल्फ)। तलपेटमें बहुत भार मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—उरुके पिछले भागका स्नायुशूल,—दाहिने पुट्ठेसे (Hip joint) उरुके पिछले भाग होकर (प्लम्ब) ऐसा तेज दर्द होता है, मानो काट रहा है और यह दर्द नीचे पैरतक उतर आता है (कोलो); कभी कभी दर्द दाहिने अण्डकोष तक फैल जाता है और तकलीफकी वजहसे रोगी यह पैर मोड़कर पेटपर रख लेता है; रोगवाली जगहमें कभी दर्द होता है और कभी कभी वह सुन्न हो जाती है; यह दर्द रातमें बढ़ता है और बार बार दर्द पैदा होता है; तकलीफकी वजहसे रोगी शय्यापर लोटता है (पल्स) और चिलाया करता है; सोनेपर देह या रोगवाला पैर मोड़ रखनेपर घटता है (केलि-बाइ)। रातमें सोनेके समय पैरकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन होती है (Cramp; केम्फो, नक्स, क्यूप्रम)। उरुके सामनेवाले भागका स्नायुशूल (Crural neuralgia=स्टैफाई, जैन्थक्स)।

वृद्धि ।—रातमें सोनेके समय, रोगी अङ्गको हिलानेपर और पैर फैलानेपर।

उपशम ।—ठण्डे पानीके प्रयोगसे या ठण्डे पानीसे धोनेपर, कुर्सी पर बैठे रहनेपर और रोगवाला पैर मोड़कर पेटके ऊपर रख देनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कोलोसिन्थिस; जेलिस; प्लम्ब, इपिक, कोलोफिल, जैन्थक्स, स्टैफि, लाइकोपोड।

शक्ति ।—१ म

गासिपियम ।

(GOSSYPIUM HERBACEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलके बीचकी छालसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—गर्भ-स्राव ; रजःस्वल्पता ; बाधक ; योनि-कपाटमें फोड़ा ; डिम्बाधारमें दर्द ; गर्भावस्थामें वमन ; अर्बुद ; जरायुमें एक तरहका दर्द ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका सबसे प्रधान आक्रमण-स्थान स्त्री-जननेन्द्रिय है। पहले इसका व्यवहार एक तीव्र रजःआकर्षक और गर्भ-स्राव उत्पादक औषधके रूपमें होता था ; इस समय भी ऐलोपैथिक मतसे इसका इसी भावसे प्रयोग हुआ करता है। डिम्बाधारमें क्षण भरके लिये होनेवाला दर्द ; योनिके बाहरी भागमें सूजन ; प्रसवके बाद फूल न गिरना ; बगलकी ग्रन्थि फूलकर स्तनमें अर्बुद या आब पैदा हो जाता है (Mammary Tumor) ; जरायुमें स्पर्श सहन नहीं होता। गर्भवतियोंको रोज सवेरे मिचली होती है और वमन होता है ; ऋतु-रोध ; पानीकी तरह ऋतु-स्राव वगैरह जरायुके लक्षण और उसके प्रतिक्षेपसे उत्पन्न हुए पाकाशय आदिके लक्षण इसके प्रधान क्रिया-स्थल हैं। इसका दर्द डंक मारने, छेदने और खोंचनेकी तरह होता है और कभी कभी जलन पैदा करनेवाला—रह रहकर एक स्थानसे दूसरी जगहपर आक्रमण करता है।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—माथेमें जलन होती है ; नाक फूल उठती है ।

पाकाशय ।—जी मिचलाना और मुंहमें लगातार लार इकट्ठा होना ; सवेरेके भोजनके पहले कै होनेकी तरह हो जाता है (नक्स ; ऐनाक, सिरियम-आक, सिम्फोरि, नेट-फास, ऐसिड-कार्ब, ऐक्टि-रेस)। अच्छी तरह हजम नहीं होता ; ऋतुके समय ऊपरी पेटमें तकलीफ और कमजोरी मालूम होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—योनिके भीतरसे पानीकी तरह स्राव होता है; यह स्राव लगकर योनि-मुख और उरुदेशका विचला अंश खाल उधड़ जानेकी तरह हो जाता है; उसके बीचमें क्रमशः बढ़नेवाला कोमल अर्बुद पैदा हो जाता है और उससे पानीकी तरह रस बहता है साथ ही उसके भीतर तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है—रातमें यह दर्द बहुत बढ़ता है। बायाँ या दाहिना योनिद्वार फूल जाता है और उसमें भयानक खुजली होती है। ऋतु बहुत देरसे होता है। स्राव एकदम पानीकी तरह और परिमाणमें बहुत थोड़ा हुआ करता है। दोनों डिम्बाधारमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और दोनों ही डिम्बाधार मानो जोरसे जरायुकी ओर खिंच रहे हैं—ऐसा मालूम होता है। ऋतुरोध—प्रसवके अन्तमें जरायुमें फूल अटक जाया करता है (बेल, कालोफिल, कैन्थ, पलस, सिकेल)। जरायुकी निष्क्रियताके कारण बाँझपन (एलेट्रिस-फे)। गर्भावस्थामें सवेरेके वक्त वमन (नक्स, ऐनाक, इपिक, सिरियम-आक्स, ऐसिड-कार्बोलिक, सिम्फोरि; वमनके बाद पेट सुन्न हो पड़ता है, उठनेकी शक्ति नहीं रहती। बगलकी गांठ फूलती है, स्तनमें अर्बुद या आब पैदा हो जाता है; वस्तिगह्वरमें बहुत भार मालूम होता है और नीचेकी ओर आकर्षणके साथ कमरमें दर्द हुआ करता है (बहुत ज्यादा खूनके स्रावके साथ=ऐलेट्रिस-फेरि,—कैलि-कार्ब)। दोनों बाहुओंमें बहुत भार मालूम होता है,—और लटका रखनेपर यह भार घट जाता है और शय्याके उत्तापसे वृद्धि मालूम होती है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—जेबोरेण्डि; ऐक्टिया-रेसि, कोलोफिल, पलस, लिलियम-टाई, एपिस; ऐसेरम; सिकेलि; आस्टिलेगो; सिम्फोरि; सिरियम-आक्सल, ऐसिड-कार्बोल, ऐनाक, नक्स-वोम।

शक्ति ।—दूसरे दशमिकसे ६ ठा शततमिक क्रम।

ग्रेनेटम ।

(GRANATUM)

दूसरा नाम ।—अनारकी जड़ (Punica Granatum)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़की छालसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—छोटी सूतकी तरह क्रमि; पाकाशयका शूल; आँतोंका बढ़ना; श्वेत-प्रदर; पट्ट-क्रमि; दाँतका दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—अनारकी छालको सिझाकर उसका पानी पट्ट क्रमिके लिये बहुत लाभदायक है। सदृश विधानके अनुसार स्वस्थ-शरीरपर इसकी परीक्षा करनेपर पट्ट-क्रिमिके अनेकों लक्षण पाये गये हैं जैसे आँखके कोनेमें कालापन, नाककी नोकमें खुजलाहट, सर्वग्रासी भूख, खूब खानेकी इच्छा होती है, जी मिचलाता है, मुंहमें लगातार पानी भर आता है और रोगी हड्डी ही हड्डी रह जाता है; अरुचि; खट्टी और रसीली चीजें खानेकी इच्छा, मिचली, मुंहमें लार संचय होना और दुबलापन। इसके अलावा पुट्ठेमें बहुत दबाव मालूम होना,—मानो आँत उतरना चाहती है; नाभीका फूलना या बढ़ना; तलहथी खुजलाती है; शरीरके कितने ही स्थानोंमें दाने या खुजली निकल पड़ेगी—ऐसी सुरसुराहट होती है; अङ्ग आदिका काँपना, वगैरह अनारकी जड़के काढ़ाके कई प्रधान निर्णायक लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली ।

मन ।—अभिमानी, आत्मश्लाघी; बहुत कृपण (आर्स, लाई, सिपि) और कलह-प्रिय (अरम-म्यूर-नैट, कोना, चायना, लाई)। कहीं बीमारी न हो जाये इसीलिये बहुत सतर्क रहता है (पल्स, सिपि)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आता है,—मानसिक परिश्रमकी वजहसे (नेट्र-कार्ब, नक्स-वोम, पिक्रिक-ए)। सवेरे सोकर उठनेपर (कैलि-मैगम्य, नैट-म्यूर)। चारों ओर अँधेरा दिखाई देता है (ओपियम) या जी मिचलाता है (नक्स, फेरम, पेट्रोल) और पेटमें दर्द होकर कै होनेकी तरह हो जाता

है (ऐको) ; माथा खाली मालूम होता है (कार्बो-वेज, कोरैल-रूब्र)। ललाटके भीतर बेहोश कर देनेवाला दर्द और भार मालूम होना (ऐमोन-मूर, बेल, हिमैटक्स, लैके, ओलियैन, फेलैन)।

आँख।—आँख गड्ढेमें धँसी और उसके कोनेमें कालापन ; आँख सूखी, उसमें जलन और खुजली होती है। आँखका सफेद अंश पीला पड़ जाता है (चेलिडो, मार्क, कैमो, लैके, प्लम, सिपि, कैलि-बाइ)। चारों ओर अन्धकारमय दिखाई देता है (कॉक्टस, सिलिसेन, रास-टक्स)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल, रोगीकी तरह, पीला या मिट्टीकी तरह रङ्गका। रह रहकर चेहरा बहुत गर्म हो जाता है और उसमें जलन होती है ; दोनों ओंठ सूखे और जलन-भरे। जबड़े अकड़ेसे और खींचनकी तरह दर्द, चबानेके समय कड़ाकसे आवाज होती है। दाँतमें तेज दर्द,—रातमें सोनेके समयतक दर्द बहुत ही भीषण मालूम होता है ; दाँत खूब लम्बे मालूम होते हैं। बहुत ज्यादा लार पैदा होती है और कभी कभी मीठी हो जाती है (ऐल्यू, डालका, फास, प्लम, परस, स्प्जि, स्टैनम, सल्फ)। जीभ रसभरी और सफेद रङ्गकी।

पाकस्थली।—राक्षसी भूख (सिना, मार्क, सिङ्को, ग्रैफ, आयोड) —यहाँतक कि भोजन करते ही फिर भूख लग आती है (फास, लाइ स्टैफि, सिना)। बहुत अधिक आलस्य मालूम होता है और मुंहमें अत्यधिक लार भर जाती है और जी मिचलाता है (इपिक, कैम्फो, सिङ्को, लैके, जेबोरैण्डी) ; ऊपरी और निचले पेटमें दर्द। बार बार पाखाना पेशाबका वेग होता है पर होता कुछ भी नहीं है और शरीरमें सिहरावन हुआ करता है। रातमें भी वमन होता है, आलस्य मालूम होता है, शरीर काँपता है, पसीना होता है और सरमें चक्कर आता है। सवेरे जब अच्छा रहता है तब पेटमें ऐंठन होती है (ऐसिट-क्रूड, बिस्मथ, कार्बो-वेज, ग्रैफ, लाइ, नैट्र-मूर, नक्स)। बराबर भूख, पर खाई हुई चीज अच्छी तरह हजम नहीं होती और रोगी दिनों दिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, सिना, नैट्र-मूर, सार्सा, आयोड)। खट्टी या रस भरी चीजें खाना चाहता है।

अन्त्राशय।—उदरमें दर्द,—सवेरे उपवासवाली अवस्थामें या प्रत्येक बार भोजनके बाद—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे (आर्स,

मस, नक्सवोम साइलि); सोनेपर (बाईं करवट=पैलेड) और ठण्डा पानी पीनेपर घट जाता है। नाभीके पास बहुत दर्द होता है। नाभी फूलकर ऊँची हो जाती है (Umbilical Hernia—आँतें उतरना)। वंक्षणमें (Groins) दर्द पैदा करनेवाला दबाव मालूम होना—मानो आँत उतरेगी (नक्स ; लाइ जेरिट-क)। पाखानेका वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता।

मलान्त्र और मल।—उदरामय,—बार बार कोमल गाढ़ा पीले रङ्गका और आम-भरा दस्त होता है; पाखाना होनेके समय मलान्त्रसे बाहर निकल पड़ता है और मलान्त्रमें भयानक खुजली और सुरसुरी होती है (टियुक्रि, फेरम, सिना, कैल्के-कार्ब, इग्निइगो, क्यूकर्बिटा।)

पुं-जननेन्द्रिय।—पुं-मूत्रनालीका प्रदाह और सूजन; प्रमेहके स्रावकी तरह पुं०मूत्रनालीसे लगातार रस निकला करता है और उससे जलन करनेवाली खोंचन मालूम होती है। प्रदर,—पीला स्राव (आर्स, सिपि, कैलि-बाई, क्रियो, स्टैन)।

श्वास-यंत्र।—श्वास-प्रश्वासमें बाधा और रोगी बार बार कष्ट-जनक दीर्घ निश्वास त्यागा करता है; चलनेके समय छातीमें भयानक दर्द होता है। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें इतना दर्द होता है कि वस्त्र आदिका भारतक कष्ट-जनक मालूम होता है। जरा भी हिलने-डोलनेसे कलेजा धड़कने लगता है।

त्वचा।—हाथकी तलहथी खुजलाती है (ऐनाक, आर्स, लैके, ऐसिड-नाई, प्लैट, रेनान, सेलिन ; शरीरके कितने ही स्थानोंमें और मुख-मण्डलमें बहुत खुजली होती है—मानो फुन्सियाँ निकलना चाहती हैं; ऐसी शकल हो जाना मानो कामला हो गया है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कन्धेके चारों ओर बहुत दर्द, मानो कन्धेपर बहुत भारी चीज रखी हुई है। अंगुलीकी हरेक सन्धिमें दर्द। जानु-सन्धिमें छेदनेकी तरह दर्द। हाथ पैर एकाएक फैल और सिकुड़ जाते हैं। बहुत थकाड़ा मालूम होता है। तलवेमें दर्द भरे गड्ढे (ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-क्रू, बैराइ, लाइ, नेट-म्यू, पेट्रोल, फास, ऐसिड-फास)। शरीरमें बहुत शिथिलता और आलस्य, विशेषकर दोनो पैरोंमें—खड़े होनेमें रोगीको तकलीफ मालूम होती है और रोगी सोया रहना चाहता है। दुबलापन।

वृद्धि ।—सवेरे उपवासकी अवस्थामें ; प्रत्येक बार भोजनके बाद ।

घटना ।—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे ; सोने बाद और ठण्डा पोनेपर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—सिना ; फिलिक्स ; मेस्क्यूलिनस ; कु आस ; एब्रोट ; नेट-म्यूर, आयोड, फास, सार्सा, टियुक्रि, चायना ।

शक्ति—प्रथम दशमिकसे १२ दशमिक क्रम तक। क्रमि लक्ष १ म दशमिकसे ३ रा दशमिक प्रयोग करना चाहिये ।

ग्रैफाइटिस ।

(GRAPHITES)

दूसरा नाम ।—ब्लैक लेड (काला सीसा) ; प्लम्बेगो ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चित्रकारकी पेन्सिलसे सीसा लेकर उसका वि तैयार किया जाता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है मुंहासे ; खल्वरजः ; गुह्यद्वारकी बीमारियाँ ; आँखकी बीमारी ; स्तनका क टीका जखम ; सर्दी ; मृत्पाण्डु शूलका दर्द ; कब्जियत ; बहरापन ; शो बाधक ; कानकी बीमारी ; फकौता ; नाकसे खून गिरना ; विसर्प ; फट पाकाशयका शूल ; ग्रन्थियोंका फूलना ; प्रमेह ; मूत्राश्मरी (पथरी) ; आ सरमें दर्द ; कोरण्ड ; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा) ; श्वेत प्रदर ; यकृत कड़ापन ; आर्त्तवमें विकार ; माथेमें आवाज ; स्थूलता ; डिम्बाधारकी बीमा कर्णमूल ; योनिमें खुजली ; विचर्चिका ; जखमके बादवाले चिन्हका प्रदाह ; गण माला ; रेतःस्खलन ; त्वचाका फटना और बहुत सी बीमारियाँ ; आघ्राण शक्ति गड़बड़ी ; पाकस्थलीमें ऐंठन ; उपदंश या प्रमेह दोष ; जखम ; अर्बुद ; पेश की बहुत सी बीम[illegible] ; कैन्सर ; गो-बीजका टीका दिलवाने इत्यादि ।

[illegible]-ताजी और कब्जियत धातुवा बीमारीमें यह विशेष उप

योगी है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं;—रोगी सभी विषयोंमें विशेष सतर्क, डरपोक, सभी कामोंमें आनाकानी करने वाला, और उसे गुरुतर विषयों में कर्त्तव्य स्थिर करना कठिन मालूम होता है; किसी काममें लगे रहनेपर बहुत बेचैनी दिखाता है; विमर्ष और सुस्त-चित्त; संगीतकी आवाज सुनकर रो देता है। हमेशा ही मृत्युकी इच्छा किया करता है; बच्चा बहुत निर्लज्ज, हमेशा बहुत ही विरक्ति-जनक आचरण करता है, तिरस्कार करनेपर हँसकर उड़ा देता है। ब्रह्मतालुके एक गोलाकार अंशमें बहुत जलन होती है। निस्पन्द वायु रोग हो जानेकी तरह अवस्था, पूरा पूरा ज्ञान रहनेपर भी बोल या हिल डोल नहीं सकता। उसे सहजमें ही सर्दी लग जाती है,—ठण्डी हवा लगते ही रोगीको बीमारी हो जाती है। सुननेकी ताकतका घटना,—गड़बड़ी में अच्छी तरह सुन सकता है; ऐसा मालूम होता है, मानो कपालमें मकड़ेका जाल लगा हुआ है; रोगी हाथसे बार बार उसे हटानेकी चेष्टा करता है। मुंह पर विसर्प रोग (Erysipelas) वह जल्दीसे चारों ओर फैल जाता है और उसमें पीब हो जाता है; उसमें कभी जलन होती है और कभी ऐसा दर्द होता है, कि डंक मार रहा है। यह विसर्प दाहिनी ओरसे आरम्भ होकर बाईं ओर फैलता है। आँखकी पलकपर मरोहिका (एकजिमा),—इस घावसे रस गिरता है और वह फटाफटा दिखाई देता है, पलकें लाल और कड़ी छाल (Scales) से ढकी रहती हैं। रोगीका शरीर खराब,—थोड़ी सी खरोंच लगनेपर भी उसमें पीब और घाव हो जाता है। पुराने जखमके चिन्हपर फिरसे घाव हो जाता है; देहमें जगह जगह और हाथ तथा पैरके अंगूठेमें फुन्सियां हो जाती हैं और उससे गाढ़ा गोंदकी तरह रस बहता है, या स्वच्छ मधुकी तरह रस बहता है। नख टूट जाते हैं, टेढ़े पड़ जाते हैं और थोड़ा थोड़ाकर निकल जाते हैं। स्तनपर जखमके चिन्ह बन जाते हैं और इस वजहसे दूधके निकलनेमें गड़बड़ी होती है। बार बार स्तनमें फोड़ा होकर वह कर्कटमें परिणत हो जाता है। उदरामय, मल पतला, धुमैला, अजीर्ण खाये हुए पदार्थ मिला और बदबूदार। मरहम आदि लगाकर चर्म-रोग अच्छा करनेकी वजहसे प्रायः कब्जियत रहती है,—मल बहुत कड़ा, गाँठ गांठ; ये गांठें सब सूत-मय आमसे लिपटी रहती हैं; गांठें सब बहुत बड़ी और कष्टसे निकलती हैं। पाखाना होनेपर ऐसा मालूम होता है, कि मलद्वार फट गया है। स्त्री पुरुष दोनों को ही रमण और आलिङ्गनकी इच्छा न रहना। इन्द्रियके बहुत

व्यवहारके कारण जननेन्द्रियमें सुस्ती और शिथिलता। ऋतुस्राव बहुत थोड़ा और काला होता है ; बहुत दर्दके साथ देरसे होता है ; अनियमित होता है ; ठण्डा पानी या सर्दी लग जानेके कारण ऋतु देरसे होना, ऋतुके समय सवेरे मिचली और वमन होता है ; रोगिनी बहुत कमजोर और सुस्त हो पड़ती है। प्रदरका स्राव जखम पैदा करनेवाला (Acrid) ; दिनरात प्रबल वेगसे स्राव होता है। ऋतुके पहले और बाद प्रदर हो जाया करता है।

लक्षणावली ।

मन ।—बच्चा बहुत निर्लज्ज और विरक्तिकर स्वभाव वाला,—तिरस्कार करनेपर हंसकर उड़ा देना चाहता है (बच्चोंको जो कहा जाता है, वही दोहराता है = जिङ्कम,—अवाध्य = बेल, सिङ्को)। सभी विषयोंमें बहुत सतर्कता दिखाता है (थूजा, कास्टि) ; भीरु स्वभाव ; सभी कामोंमें आनाकानी करता है (आर्जेण्ट-नाई ; आर्णि) ; किसी विषयमें भी कर्त्तव्य स्थिर नहीं कर सकता (पल्स)। किसी काममें लगे रहनेपर हमेशा हाथ पैर हिलाया करता है (जिङ्क, जिङ्क-वेलि) विमर्ष चित्त ; संगीत ध्वनि सुनकर रोया करता है (क्रियो,—संगीत ध्वनि असह्य = ऐकी, बेल, सेबाडी, नैट-कार्ब, थूजा, नेट्र-सल्फ, नक्स,—संगीत ध्वनि सुननेपर उत्तेजित हो उठता है = टेरेण्ट-क्यूब) बराबर मृत्यु चिन्तामें लगा रहता है (क्रोटेलस, कोना, लैके, सोरिन, पल्स)। परिश्रमसे बहुत डरना, रह रहकर चौंक उठता है।

मस्तक ।—सरमें दर्द होता है,—सवेरे नींद खुलनेपर,—साधारणतः माथेके एक पार्श्वपर रोगका हमला होता है, जो मिचलाता है और खट्टी कै होती है। माथेमें ऐसा मालूम होता है, मानो नशा हो गया है (नक्स, पल्स)। ऋतुके समय सरमें दर्द होता है, डकार आती है और जी मिचलाता है। ऋतु बन्द होने और पाखाना न होनेपर कभी कभी अधकपारीका दर्द हो जाता है। माथेमें ऐसा मालूम होता है, मानो सुन्न और पतला हो गया है। सरका जो अंश तकियेमें लगा रहता है उसीमें दर्द होता है। गाड़ीके झटकेसे अथवा भोजनके बाद सरमें दर्द होता है। वा[illegible] बजहसे अध-कपारीका दर्द,—दर्द गर्दन और दांत तक (गर्म [illegible]) होता है। ब्रह्मतालुके एक छोटेसे गोलाकार स्थ[illegible] बहुत

-मूर, सल्फ—बहुत ठण्डा मालूम होता है=कैल्क, सिपि, वैरेट)। कि कैपड़े ढँके अंगमें फुन्सियां हो जाती हैं, उनसे रस निकलता है और खुजलाता है और बदबू या सड़ी गन्ध निकला करती है (लाइ, रास, पि, सोरिन, सिङ्का-माइ, वायोला-ट्राइ, रास-विनि)। माथेमें बहुत ज्यादा रूसी पैदा हो जाती है (ऐमोन-मूर, आर्स, कैन्थ, मिडोराइन, नैट्र-म्यू, रास, सल्फ, थूजा)। सरमें चक्कर आता है और चारों ओरसे मेघसे घिरा मालूम होता है (ऐक्टि-साइ, डाल्का, ओपि)। माथेमें पसीना होता है—पसीनेमें खट्टी गन्ध और बहुत बदबू और कपड़े वगैरहमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है (कार्बो-ऐन, फेर, मार्क, थूजा, वैरेट); थोड़े भी परिश्रमसे, यहाँ तक कि बोलनेपर भी ज्यादा पसीना होता है। खुली हवामें घूमनेपर घटना। केश धुमैले हो जाते हैं (लाइ, ऐसिड-फास, ऐसिड-सल्फ)। कपाल और मुंहपर मानो मकड़ेका जाल लगा है ऐसा मालूम होता है।

आँख।—पलकोंमें भार और सुन्नता तथा पक्षाघात हो जानेकी तरह, आँख आपसे आप बन्द हो जाती हैं (कास्टि, कोलोफिल, जेलस, सिपि)। प्रदाह,—दीये आदिकी रोशनी बिलकुल सहन नहीं होती (बेल, कैल्के फ्लुओ, हिप, इग्ने, मार्क, नक्स, कैलि-आइ, फाइटो, फास, पल्स, रास, वैरेट)। पलकोंपर लाल फुन्सियां, देखनेमें फटी-फटी और उससे रस निकलता है, पलकें लाल हो जाती हैं, फूलती हैं और उससे कड़ी छाल निकलती हैं, सवेरे आँखें सट जाती हैं (आइ, कैल्के, इयुफोर्ब, इयुफ्रे, साइक्ल, क्रोकस, इग्ने, माई, पल्स, रास, सिपि)। माथा झुकाते ही दृष्टि धुंधली हो जाती है (नैट-मूर)। आँखके सामने चकचकाहट (Sparkling=ऐसिड-फ्लू, ऐलू, कास्टि, सिकेल, स्टेफिस, टैबाक)। अञ्जनी,—पलक फूलती है अँखौरी निकलती है (पल्स, रास, स्टैन, स्टेफिस, मार्क)। लिखनेके प्रत्येक अक्षर दो मालूम होते हैं; और पढ़नेके समय ऐसा मालूम कि अक्षरसे अक्षर सट जाते हैं।

कान।—कानके भीतर बहुत सूखापन (कार्बो-वेज, लैके जमता है—कोना, माइन्नि)। कानके पीछे पपड़ी जमे घाव होने उससे रस निकलता है (बैराइ, कैल्के, हिप)। श्रवण-शक्तिका ह्रास (बन्द हो जाने ऐसा मालूम ...

(नेट-मूर, सल्फ—बहुत ठण्डा मालूम होता है=कैल्क, सिपि, वेरेट)। माथेके केशसे ढके अंगमें फुन्सियां हो जाती हैं, उससे रस निकलता है और खुजलाता है और बदबू या सड़ी गन्ध निकला करती है (लाइ, रास, सिपि, मोरिन, विङ्का-माइ, वायोला-ट्राई, रास-विनि)। माथेमें बहुत ज्यादा रूसी पैदा हो जाती है (ऐमोन-मूर, आर्स, वैल्य, मिडोराइन, नेट्र-म्यू, फास, सल्फ, थूजा)। सरमें चक्कर आता है और चारों ओरसे मेघसे घिरा मालूम होता है (ऐक्टि-स्पाई, डालका, ओपि)। माथेमें पसीना होता है—पसीनेमें खट्टी गन्ध और बहुत बदबू और कपड़े वगैरहमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है (कार्बो-ऐन, फेर, मार्क, थूजा, वेरेट); थोड़े भी परिश्रमसे, यहाँ तक कि बोलनेपर भी ज्यादा पसीना होता है। खुली हवामें घूमनेपर घटना। केश धुमैले हो जाते हैं (लाइ, ऐसिड-फास, ऐसिड-सल्फ)। कपाल और मुंहपर मानो मकड़ेका जाल लगा है ऐसा मालूम होता है।

आँख।—पलकोंमें भार और सुन्नता तथा पक्षाघात हो जानेकी तरह, आँख आपसे आप बन्द हो जाती हैं (कास्टि, कोलोफिल, जेलस, सिपि)। प्रदाह,—दीये आदिकी रोशनी बिलकुल सहन नहीं होती (बेल, कैल्क, इयुफ्रे, हिप, इग्ने, मार्क, नक्स, केलि-बाई फाइटो, फास, पलस, रास, वेरेट)। पलकोंपर लाल फुन्सियाँ, देखनेमें फटी-फटी और उससे रस निकलता है, पलकें लाल हो जाती हैं, फूलती हैं और उससे कड़ी छाल निकलती है, सवेरे आँखें सट जाती हैं (ब्राइ, कैल्क, इयुफोर्व, इयुफ्रे, साइक्लु, ओकास, इग्ने, लाइ, पलस, रास, सिपि)। माथा झुकाते ही दृष्टि धुंधली हो जाती है (नैट-सूर)। आँखके सामने चकचकाहट (Sparkling=ऐसिड-फ्लू, ऐल्यू, कास्टि, सिकेल, स्टेफिस, टैबाक)। अञ्जनी,—पलक फूलती है और गुहौरी निकलती है (पलस, रास, स्टैन, स्टेफिस, मार्क)। लिखनेके समय प्रत्येक अक्षर दो मालूम होते हैं; और पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, कि अक्षरसे अक्षर सट जाते हैं।

कान।—कानके भीतर बहुत सूखापन (कार्बो-वेज, लैके,—बहुत मैल जमता है—कोना, साइलि)। कानके पीछे पपड़ी जमे घाव होते हैं और उससे रस निकलता है (बैराइ, कैल्क, हिप)। श्रवण-शक्तिका ह्रास (कर्ण-रन्ध्र बन्द हो जाने जैसा मालूम होनेके साथ बहरापन=कैल्क, पलस, सल्फ), गड़बड़ीमें अच्छी तरह सुनता है; गाड़ी या ट्रेनमें जानेके समय बहुत

अच्छी तरह सुन पाता है (ऐसिड-नाई, पल्स)। ऐसा मालूम होता है, मानो कानके छेदका मुंह एक पतली सफेद छालसे ढका रहता है। कर्ण पथनाली (Eustachean tube) में वायु अटका हुआ है ऐसा मालूम होता है। कानमें सांय सांय शब्द (कास्टि, पेट्रोलेम, पल्स)। कानमें कभी कभी दम-दम शब्द होता है (मैङ्ग, मस्कस; साइलि)—विशेषकर सन्ध्याके बाद; चबानेके समय; प्रत्येक बार डकार आनेपर कानमें कड़ाकसे आवाज होती है।

नाक ।—नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह बदबूदार श्लेष्मा निकलता और नाक बन्द हो जाती है। सर्दी होनेपर नासारन्ध्रमें संचित श्लेष्मा सूख कर अपड़ी (Crusts) के रूपमें परिवर्तित हो जाता है (कैलि-बाई)। नाकके भीतर सूखा-पन, नासापुट फटा-फटा और किनारोंकी खाल उधड़ जाती है। माथेमें खून जमता है, मुंह गर्म हो उठता है और इसके बाद, सन्ध्याके बाद और रातमें (रात १० बजे—हनिमेन)—नाकसे खून गिरता है (फेर, मिलिलोट)।

मुखमण्डल ।—मुखमण्डलमें ऐसा मालूम होता है, मानो मकड़ेका जाल लगा हुआ है। (बैराइ-कार्ब, बोर, ब्रोम, रैनान-सिलिरेटस)। चेहरा मलिन और पीला और आँखके कोनेमें नीलिमा लिये कालापन। मुंहके ऊपर विसर्प रोग,—शीघ्र चारों ओर फैल जाता है। भीतर पीब पैदा हो जाता है और उसमें जलन पैदा हो जाती है तथा उसमें डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है; जर्णा दाहिने पार्श्वसे आरम्भ होकर बाईं ओर फैल जाता है (एपिस; बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैल जाता है—रास-टक्स)। मुंहके एक पार्श्वके पक्षाघातकी वजहसे मुखमण्डलकी पेशी टेढ़ी पड़ जाती है और मुंहसे साफ साफ बात नहीं निकलती। मूंछें उड़ जाती हैं (कैप्स, कास्टि, नेट्र-म्यू, सेलिन,—और हजामतके कारण पैदा हुए घावकी वजहसे—नेट्र-म्यू,—शोकके बाद=ऐसिड फास)। दोनों ओंठ फटे और ओठके संयोग स्थान-पर जखम हो जाता है (कार्बिउ-रे[illegible])।

मुख-विवर ।—दांतमें [illegible] या [illegible] सोनेके समय, कभी कभी मुखमण्डल [illegible] है और गाल फूल [illegible] हैं; उत्तापसे [illegible] दांतमें दर्द हुआ [illegible] मुंह, मसूढ़ा [illegible] है। [illegible] ह सड़ जाता

और तालु तथा गलेके भीतर श्लेष्मा भरा रहता है। मुंहकी पेशियोंके पक्षाघातकी वजहसे बोलनेमें व्याघात होता है।

पाकाशय।—सवेरे और भोजनके बाद बहुत प्यास। पेटमें केवल अम्ल होता है और भूख खूब लगती है। गर्म पदार्थ पेटमें सहन नहीं होते (साइलि)। मुंह तीता और खट्टी डकार आती है। जो खाता है वही अम्लमें परिणत होता है और गलेमें चढ़ता है (कौल्चि, कार्बो-वेज, कार्बे, लाई, मैंगे, ऐण्टिम-टार्ट); प्रत्येक बार भोजनके बाद जी मिचलाता है और वमन होता है (सोने या कुछ खाने बाद = आर्स, वेरेट, लाई)। ऋतुके समय सवेरे का वमन, रोगिनी बहुत कमजोर और सुस्त हो पड़ती है (ऐल्यू, कार्बो-ऐन, ककू)। डकार खट्टी, या खाये हुए पदार्थके स्वादसे भरी; डकार आनेपर पेटका भार कम हो जाता है; मध्यान्ह भोजनके बाद बदबूदार सड़ी डकार आया करती है और कलेजेमें जलन होती है। बराबर समयका अन्तर देकर कभी कभी पाकाशयमें शूलकी भांति दर्द होता है। पाकस्थलीमें शूलका दर्द। पाकस्थलीमें शूलका दर्द होता है और बहुत दबाव मालूम होता है और कभी कभी दर्दके समय वमन होता है। अधलेटी अवस्थामें और शय्याके उत्तापसे शूलका दर्द घट जाता है। पेटमें ऐसा मालूम होता है, कि गुल्म की तरह एक पदार्थ अड़ा हुआ है (कार्बो-ऐन, कोस्टोर, डिजि, कोलि-कार्ब, लैके, लोबेल)। ऊपरी पेटके तेज दर्दको दबानेके लिये रोगी कुछ खानेके लिये घबड़ा उठता है—विशेषकर मध्यान्ह और रातमें। पाकस्थलीमें जलनकी वजहसे रोगी कुछ खाये बिना रह नहीं सकता। पाकाशयमें ऐंठन होती है—फिर खा लेनेपर अच्छा हो जाता है।

अंत्राशय।—सवेरेके भोजनके बाद ही यकृतमें दर्द आरम्भ हो जाता है और इसी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है—तलपेटमें ऐसा मालूम होता है, मानो अब कै हो जायगी। पेट बहुत फूला और कड़ा रहता है—मानो उसमें वायु भरा हुआ है—(लाई, रैफेनस)। उदरमें बेंगकी बोलीकी तरह कर कर शब्द होता है (आर्जेण्ट, कोलो)। माथेका खून जमकर भार मालूम होता है, सरमें चक्कर आता है और पेट फूल उठता है। दाहिनी करवट सोनेपर उदरके वाम पार्श्वमें दर्द और बाईं करवट सोनेपर उदरके दाहिने पार्श्वमें दर्द होता है। पुट्ठे (Inguinal) ग्रन्थियोंमें दर्द और सूजन। पुट्ठेके छिदके मुंहपर वायु इकट्ठा होकर बहुत दबाव मालूम

होता है, प्रायः कब्जियतके साथ नाभि-प्रदेशमें महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द उत्पन्न होकर पीठमें और कोखेमें फैल जाता है—सन्ध्याके समय बढ़ना।

मलान्त्र और मल।—प्रायः स्वभाविक कब्जियत बनी ही रहती है—मल बड़ा कड़ा और गांठ गांठ तथा आपसमें सूत्रमय आमसे मिला रहता है। (हाइड्रेस्ट), गांठें बहुत बड़ी और बहुत तकलीफसे निकला करती हैं (सल्फ); पाखाना होने बाद मलद्वार चतविचत और दर्द भरा हो जाता है (मल कड़ा और खड़ियेकी तरह सफेद=पेलेड; गोल, कड़ी और काली गांठें=ओपि, चेलि, प्लम्ब, थूजा; मेषके मलकी तरह=चेलिडो, प्लम्ब, रिशुटा, बार्बा,—कुत्तेके मलकी तरह लम्बा, पतला और कड़ा=कास्टि, फास, प्रूनस—स्पाई,—बहुत बड़ी कड़ी, गांठें बड़ी तकलीफसे निकलती हैं=ब्राई, केलि-कार्ब, नक्स-वोम, वेरेट)। उदरामय,—मल धुमैला और पतला; अजीर्ण अवस्थामें खाये हुए पदार्थ मिला, उसमें असह्य बदबू,—प्रलेप, (मरहम) आदिसे घाव अच्छे कर देनेपर प्रायः ऐसा ही हो जाया करता है। कब्जियत रोगमें यकृत बहुत कड़ा मालूम होता है। कभी कभी केचुएकी तरह या सूत क्रिमि निकला करती है (ऐब्सिन्थ, कार्बो-वेज, सिना, फेरम; टियुक्रि, मार्क्यु, साइलि, सल्फ, टेरिब)। मलद्वारमें अर्शकी तरह मसा हो जाता है और पाखाना होने बाद मलद्वारमें जखम हो जानेकी तरह हो जाता है।

पेशाब।—प्रबल (कास्टि, ऐसिड-फास, पल्स, स्किला; स्टैफिस) और तकलीफ देनेवाला पेशाबका वेग—बूंद बूंद पेशाब होता है (केम्फो, आर्नि, कैन्थ, क्लिमेंट, कोपेव, इयुफोर्ब, सल्फ) और पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है (कैन्थ, ग्रैनेट, लैके, मार्क, जिङ्क)। बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ी लालका पेशाब होता है और इसके बाद ही गदला (Turbid) हो जाता है और सफेद आभा लिये कुछ लाल रङ्गकी तली जमती है (सफेद तली—Sediment=कैल्के, कोलो, कोना, ऐसिड-नाई, फास, जिङ्क,—हल्का लाल रङ्ग=केलि-ब्राई, लाई, नेट-म्यूर, पल्स, सिपि)। शय्यामें पेशाब—पेशाब करनेके समय त्रिकास्थि (Sacrum) के भीतर और पीठकी रीढ़के सबसे निचले भागमें दर्द मालूम होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—रमण और आलिङ्गनकी इच्छा न होना (ऐग्नस, कैनाब, क्लिमेंट, केलि-कार्ब, लाई, रोडो)। शिश्न

या फुंसियाँ निकलती हैं। रमण और आलिङ्गनके समय जाँघकी पोटलीकी पेशी में ऐंठन होती है। आलिङ्गनके बाद दोनों पैर ठण्डे, सुस्त, देह गर्म और पसीना हो जाया करता है। रमणके बाद वीर्यस्खलन नहीं होता (कैलेड, ग्र्युजिनिया, लेके, लाई,—बहुत थोड़ा वीर्यस्खलन=ऐगार, प्लम्ब,)। रमण आलिङ्गन में बहुत थोड़ा आराम मलूम होता है (ऐनाका, कैलेड, स्टेट)। कामके अतिरिक्त व्यवहार (बहुत ज्यादा इन्द्रिय-परिचालन) के कारण जननेन्द्रिय कमजोर और शिथिल हो पड़ती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमण और आलिङ्गनकी इच्छा न होना (कास्टि, केलि-कार्ब, नेट-मूर, पेट्रोल)। योनिके बाहरी भागमें रस और पीव भरे दाने (Pustules) निकलते हैं (मार्क, ऐण्टि-टार्ट); योनिमें जखम मालूम होता है। ठण्ड लगते ही रोगिनीका डिम्बाधार फूल उठता है, खासकर बाईं ओरका (लेके—दाहिनी ओरका=एपिस, बेल)। ऋतुके बाद डिम्बाधार फूलता है और कड़ा हो जाता है। ऋतुके पहले और ऋतुके समय दाहिने डिम्बाशयमें छेदने, दबाने और फूटनकी तरह दर्द मालूम होता है (ओपि, ग्लेड); ऋतुका स्राव बहुत फीके रङ्गका (पल्स); ऋतु देरसे होता है और बहुत दर्द होता है; ठण्डे पानीसे पैर धोनेके कारण ऋतु देरसे होता है है (पल्स, नेट-मूर)। ऋतुके समय ऊपरी पेटमें ऐसी तकलीफ होती मानो कुछ फट रहा है (यकृतके भीतर=ऐसिड-फास)। ऋतुरोध होनेकी वजहसे हाथ-पैर बहुत भारी मालूम होते हैं। प्रदर,—तलपेट जकड़ जाता है और कमरमें बहुत कमजोरी मालूम होती है,—स्राव सफेद पानीकी तरह होता है (ग्रेफ, सिपि, सिलिका; अण्डेकी लारकी तरह=ऐमोन-मूर, बोर गोवि, स्टेट); कषाय (Acrid) और त्वचाको क्षय करनेवाला (Excoriating =ऐल्यू, आर्स, बोर, कोना, क्रियो, मार्क, नेट-मूर, नाइ-ऐ; सिपि) स्राव दिन रात झटकेसे निकला करता है (कैल्के, कक्यू, ग्रेफ, लाई); ऋतु होनेके पहले और बाद प्रदरका स्राव दिखाई देता है (ऐल्यू, बोरेक्स, बोविस्टा कक्यू; स्तनके ऊपर फोड़ा हो जानेपर जो सिकुड़ी हुई मोटी त्वचा है, उसका दूधवाली शिरापर दबाव पड़नेके कारण दूध निकलनेमें व्याघात पहुँचता है; स्तनमें बार बार फोड़ा होकर फिर कर्कट (*Cancer*) रोगमें परिणत हो जाता है (कोनायम देखो)। ऋतुके पहले और बाद सुस्त करनेवाली खाँसी (पहले=सल्फ); ऋतुके समय बायें स्तनके नीचे तेज

होता है, प्रायः कब्जियतके साथ नाभि-प्रदेशमें महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द उत्पन्न होकर पीठमें और कोखेमें फैल जाता है—सन्ध्याके समय बढ़ना।

मलान्त्र और मल ।—प्रायः स्वभाविक कब्जियत बनी ही रहती है—मल बड़ा कड़ा और गांठ गांठ तथा आपसमें सूतमय आमसे मिला रहता है। (हाइड्रेस), गांठें बहुत बड़ी और बहुत तकलीफसे निकला करती हैं (सल्फ); पाखाना होने बाद मलद्वार चतविचत और दर्द भरा हो जाता है (मल कड़ा और खड़ियेकी तरह सफेद=पैलेड ; गोल, कड़ी और काली गांठें=ओपि, चेलि, प्लम्ब, थूजा ; भेंड़की मलकी तरह= चेलिडो, प्लम्ब, रियुटा, बार्बा,—कुत्तेके मलकी तरह लम्बा, पतला और कड़ा =कास्टि, फास, प्रूनस—स्पाई,—बहुत बड़ी कड़ी, गांठें बड़ी तकलीफसे निकलती हैं—ब्राई, केलि-कार्ब, नक्स-वोम, वेरेट)। उदरामय,—मल धुमेला और पतला ; अजीर्ण अवस्थामें खाये हुए पदार्थ मिला, उसमें असह्य बदबू,—मलेप, (मरहम) आदिसे घाव अच्छे कर देनेपर, प्रायः ऐसा ही हो जाया करता है। कब्जियत रोगमें यकृत बहुत कड़ा मालूम होता है। कभी कभी केचुएकी तरह या सूत क्रिमि निकला करती है (ऐब्सिन्थ, कार्बो-वेज, सिना, फेरम ; टियुक्रि, मार्क्यु, साइलि, सल्फ, टेरिब)। मलद्वारमें अर्शकी तरह मसा हो जाता है और पाखाना होने बाद मलद्वारमें जखम हो जानेकी तरह हो जाता है।

पेशाब ।—प्रबल (कास्टि, ऐसिड-फास, पल्स, स्क्लिला ; स्टेफिस) और तकलीफ देनेवाला पेशाबका वेग—बूंद बूंद पेशाब होता है (कैम्फो, आर्नि, कैन्थ, क्लिमैट, कोपेव, ड्युफोर्ब, सल्फ) और पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है (कैन्थ, ग्रैनेट, लैके, मार्क, जिङ्क)। बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ी लालका पेशाब होता है और इसके बाद ही गदला (Turbid) हो जाता है और सफेद आभा लिये कुछ लाल रङ्गकी तली जमती है (सफेद तली—Sediment=कैल्के, कोलो, कोना, ऐसिड-नाई, फास, जिङ्क,—हल्का लाल रङ्ग=केलि-ब्राई, लाई, नेट-म्यूर, पल्स, सिपि)। शय्यामें पेशाब—पेशाब करनेके समय त्रिकास्थि (Sacrum) के भीतर और पीठकी रीढ़के सबसे निचले भागमें दर्द मालूम होता है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—रमण और आलिङ्गनकी इच्छा न होना (ऐग्नस, कैनाब, क्लिमैट, केलि-कार्ब, लाई, रोडो)। शिश्न और लिङ्गावरकके ऊपर दाने

पैदा हो जाती है और उनमें स्राव होता है और उससे स्वच्छ गाढ़ा गोंदकी तरह रस निकलता है; शरीरकी त्वचा बहुत सूखी और बिना पसीनेकी। लसिका ग्रन्थियां फूली (बैराइ, कैल्के)। हाथ-पैरके गांसमें, पुट्ठेमें, गलेमें और कानके पीछे खाल उधड़नेकी तरह हो जाता है, विशेषकर बच्चोंमें ऐसा अधिक दिखाई देता है (लाइ, कैल्के, कैलि-म्यू)।

निद्रा।—दिनमें और सन्ध्याके बाद बहुत नींद आती है। रातमें अच्छी तरह नींद नहीं आती; गुरुतर विषयोंकी चिन्ताकी वजहसे आधी रातके पहले नींद नहीं आती। मृत्यु और आग लगनेके सपने देखता है। नींदमें माथेसे पसीना निकलता है। रातमें नाकसे खून गिरता है। श्वास-रोध होनेका उपक्रम होनेपर नींद खुल जाती है। निद्रित अवस्थामें अनवरत बका करता है। निद्रितावस्थामें शय्यामें पेशाब कर देता है (सिना, सिपि)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सवेरे और सन्ध्याके समय कम्प होता है (उत्ताप हो या न हो), इसके बाद ही पसीना होता है। गाड़ीपर चढ़कर घूमनेके समय शरीर गर्म हो उठता है। पसीना खट्टा, अम्लाक्त, कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है और बहुत बदबू रहती है। रोज आनेवाला प्रात्यहिक ज्वर, सन्ध्याके समय कम्प, उसके एक घण्टा पहले मुंह गर्म और पैरका तलवा ठण्ढा हो जाता है। पसीना बिलकुल ही नहीं होता।

वृद्धि।—रातमें, ऋतुस्रावके समय और बाद, शरीर हिलानेपर, गाड़ीपर चढ़नेपर (बहरापन का घटना), बाईं करवट सोनेपर, उत्ताप, स्नान और वायु-सेवनसे।

उपशम।—विश्रामसे, भोजनके बाद और गर्म दूध पीनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—अनुपूरक=कास्टि, हिप, लाइ। लाइकोपोडियम पल्सेटिलाके बाद उपयोगी है। मोटापन घटानेके लिये कैल्केरिया कार्बके बाद, चर्मरोगमें सलफरके बाद और बहुत अधिक प्रदर-स्रावके सम्बन्धमें सिपियाके बाद इसका व्यवहार लाभदायक है। इसके अलावा ऐसिड-नाइ, ऐसिट-म्यु, कार्बो-ऐन, लैके, पेट्रोल, पियोन, रैटान।

दोषघ्न।—ऐकोन, आर्स, चायना, नक्स-वोमिका।

तुलनीय।—रास-टक्स (विसर्प); दाहिना डिम्बाधार,—(पैलेड, आपियम); हँसना और रोना (अरम, पलस, लाइको इत्यादि)। स्थूलता

दर्दकी वजहसे रोगिनीकी नींद खुल जाती है (ऐक्टि); स्तनकी ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं और कड़ी हो जाती हैं (बेल, कार्बो-ऐन, कोना,—सूख जाती हैं और उनमें जखम बन जाना है=आयोड, ऐसिड-नाइ, सेनाल-सेरूल)। स्तनकी घुंडीमें घाव हो जाता है और फटा फटा-सा हो जाता है (सल्फ, कैलेण्डु, कास्टि, फाइटो, ऐसिड-फ्लू)

श्वासयन्त्र ।—वायुनलीके भीतर मानो खरोंचता है और रुखड़ापन मालूम होता है। श्वास-रुकनेकी सम्भावनाकी वजहसे रोगीको नींद खुल जाती है और वह घबड़ाकर शय्यासे उतर पड़ता है, सामने जो कुछ अवलम्बन दिखाई देता है, उसे ही पकड़ लेता है और तुरन्त ही कुछ खा लेनेपर तकलीफ घट जाती है। आधी रातके बाद तकलीफ बढ़ जाती है। सीढ़ीपर चढ़ने, या घोड़ेपर चढ़ने, जम्हाई लेने या छातीपर हाथ रखनेसे छातीमें दर्द मालूम होता है; थोड़ा हिलनेसे ही कलेजा धड़कता है; विषन्नताके साथ वक्षमें सांय सांय शब्द (स्पञ्जि, हिप, कैलि-कार्ब मैम्बु, स्ट्रैन)

प्रत्यङ्गादि ।—सर झुकानेपर या हाथ उठानेपर गर्दनके पिछले भागमें तेज दर्द मालूम होता है—मानो अस्त्रसे काट रहा है। गलेकी गांठ फूल जाती है। पीठमें ऐसा मालूम होता है, मानो चींटी रेंग रही है। अंगुलीकी गांठे सब मानो मरोड़ खा गयी हैं, इस ढङ्गका दर्द होता है (मानो सन्धि-भ्रष्ट हो गयी है=ब्राई, रियुटा)। अँगुलीकी गांठें सब वातकी वजहसे मोटी हो जाती हैं (केल्के, डिजि, लिड, स्टेफाई)। ऊरु और पैरकी अँगुलियाँ सब सुन्न और अकड़ी मालूम होती हैं; जानु टेढ़ा करनेपर ऐसा मालूम होता है मानो अकड़ गया है। दोनों पैरके बीचकी खाल उधड़ जाती है। जानुके भीतरकी ओर पुट्ठेमें दादकी तरह हो जाता है। पैरपर घाव होकर उससे गाढ़ा गोंदकी तरह रसस्राव होता है। हाथके नख सब टूटनेवाले, टुकड़े टुकड़े होकर टूट जाते हैं और टेढ़े-मेढ़े निकलते हैं। (ऐण्टि-क्रूड) नखमें दर्द और घाव हो जाता है; नख सब बहुत मोटे और व्यवहार न करने योग्य हो जाते हैं।

त्वचा—रोगीका शरीर बहुत खराब, सामान्य जखममें भी पीब पैदा हो जाता है (हिप, बोर), पुराने जखमके चिन्ह सबपर फिरसे जखम हो जाता (ऐसिड-फ्लू, कास्टि, लैके); कानके ऊपर जखम (केल्के-फाई देखो) और पीछे हाथ पैरकी अँगुलियोंके गांसेमें और शरीरके कितने ही स्थानोंमें फुन्सियाँ

स्थली क्रमसे अधिकतर खाली मालूम होती है पर भोजन नहीं कर सकता। पाकस्थलीके पीछेवाली स्नायुग्रन्थि (Solar Plexus) की उत्तेजनाकी वजहसे ऊपरी पेटमें ऐंठन होती है और यह दर्द चारों ओर फैल जाता है; मानसिक उद्वेग, चबानेकी तरह दर्द, पाकस्थलीका खाली मालूम होना और ऐसा मालूम होना कि ऊपरी पेटमें कुछ लोटता फिरता है। कमरमें पीछेकी ओर बहुत तेज मरोड़की तरह दर्द, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर शरीर कांप उठता है; चेहरा लाल और गर्म हो उठता है। मानो मस्तिष्क संकुचित हो गया है। मस्तककी ओर खूनका दौरान और माथेमें रक्त चढ़ता है और आँखसे कुछ दिखाई नहीं देता। स्त्रियोंका कामोन्माद और अस्वाभाविक उपायसे उसकी परितृप्ति यह इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है (डा० कमटन नार्नैट)।

लक्षणावली।

मन।—गहरी चिन्तामें निमग्न, स्वार्थ-सिद्धिके सिवा दूसरी बात ही नहीं जानता—(आर्स, सल्फ, प्लैट, पल्स)। बहुत अहंकारके कारण मानसिक बीमारियाँ, चिड़चिड़ा स्वभाव; जीवनसे विद्वेष (ऐसिड-फ्लू, अरम, चायना, नैट्र-मूर, ऐसिड-मूर, साइक्यू, फास, स्पाइजि; स्टंजि)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—ऐसा मालूम होना कि सारी देह चक्कर खा रही है (आर्नि, बेल, ब्राई, साइक्यू, सिक्लेमेन, नक्स; पल्स); बैठने और पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है मानो माथा सामनेसे पीछेकी ओर और पीछेसे सामनेकी ओर डोल रहा है। माथेमें बहुत तेजीसे खून चढ़नेके कारण कपालमें टपक होती है और ऐसा मालूम होता है, कि चारों ओर काला हो गया है (बेल, जेमिस, साइक्यू, लैक-कैन, लाई, पल्स)—हिलने डोलनेपर बढ़ता है; बहुत यंत्रणाकी वजहसे रोगी कभी कभी बेहोश हो पड़ता है,—दीर्घ निद्राके बाद कहीं लक्षण आदि घटते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्कके सङ्कोचनकी वजहसे मस्तक संकुचित होकर और भी छोटा हो गया है। सर-दर्दका बढ़ना—आसन छोड़कर उठनेपर (लेमियम-ऐल, सल्फ)। हिलने-डोलनेपर (ब्राई, काक्यु, क्रोकस, ग्लोन) और वायु सेवनके लिये चलनेके समय (ऐल्यू, बेल, ब्राई, ग्लोन, लाई; घटता है= सिलि, गुयाई, हायो, ऐ-मूर)। ललाट देशकी त्वचा सिकुड़कर बहुत खींचन मालूम होती है। मुंह गर्म और लाल हो उठता है।

(केल्केरिया) ; जलन (अरम)। स्त्रियोंका आर्त्तव आरम्भ होनेके समय पलस जिस तरह लाभदायक है, आर्त्तव बन्द होनेके समय उसी तरह ग्रेफाइटिससे लाभ होता है—डा० एच, सी, ऐलेन। पलसमें दूध पीनेसे वृद्धि और ग्रेफाइटिसमें दूध पीनेपर घटना ।

शक्ति ।—६ ठे दशमिक विचूर्णसे २०० शततमिक क्रम। मलद्वार और स्तनके जखम रोगमें ३ रे दशमिक विचूर्णके साथ सिटेसियन मलहम मिलाकर प्रयोग करनेपर लाभ होता है।

क्रियाका स्थायित्व ।—४० से ५० दिन।

ग्रेटियोला आफिसिनेलिस।

(GRATIOLA OFFICINALIS)

दूसरा नाम ।—हेज हिसप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल खिलनेके पहले ही पौधेसे मूल अर्क तैयार करना पड़ता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— हैजा ; कब्जियत ; ऐंठन ; अतिसार ; शोथ ; आँखकी बीमारी ; पाकाशयका शूल ; वात ; बवासीर ; सर-दर्द ; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय ; व्याधि-शङ्का ; मूर्च्छा-वायु ; उन्माद ; कृत्रिम मैथुन ; स्नायुशूल ; कामोन्माद ; धनुष्टङ्कार।

उपयोगिता और आभास ।—पाकाशय और अन्त्राशयपर ही इसकी क्रिया विशेषकर प्रकट हुआ करती है। आँतोंका शूल ; गर्मीके दिनोंमें बहुत अधिक पानी पी लेनेके कारण उदरामय, खून मिला मल, पाण्डुरोग, हाथ-पैरोंका काँपना, धनुष्टङ्कार आदि अकड़नकी बीमारियाँ, ऐंठन वगैरह इसके प्रधान क्रिया फल हैं। बहुत अधिक ईर्षा और अहङ्कार आदिकी वजहसे मानसिक बीमारियोंमें यह विशेष लाभदायक है। भोजनके बाद सरमें चक्कर आना, भोजनके बाद भी पाकस्थलीका खाली मालूम होना और साथ ही फिर भूख मालूम होना वगैरह ग्रेटियोलाके कई निर्णायक लक्षण हैं। शारीरिक परिश्रमके बाद पाखाना होनेपर बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ता है। पाक-

अन्त्राशय ।—उदरमें दबाव मालूम होता है और नाभिके पास जकड़ जानेके कारण रोगी सामनेकी ओर झुक पड़ता है,—हवा छूटनेपर आराम मिलता है। वायु इकट्ठा होकर पेटमें दबाव मालूम होता है, जी मिचलाता है और गलेमें कड़वी डकार आती है। शामको भोजनके बाद और रातमें पानीकी तरह दस्त होता है। चलनेके समय पेटमें बहुत भार मालूम होता है,—बैठनेपर फिर नहीं रहता। उदरमें मरोड़की तरह तेज दर्द,—यह दर्द समूची देहमें फैल जाता है (क्यूप्रम देखो)।

मलान्त्र और मल ।—गर्मीके दिनोंमें बार बार अधिक परिमाणमें पानी पीनेकी वजहसे पतले दस्त आना या सांघातिक विसूचिका (Cholora Mobrus)। मल पानीकी तरह पीला या हरा, फेन-भरा; दस्त वेगसे होता है; भोजनके बाद डकार आनेपर या वायु छूटनेपर घट जाता है। पाखाना होनेके पहले कलकल शब्द होता है और नाभि-प्रदेशमें काटनेकी तरह दर्द मालूम होता है; पाखाना होनेके समय जी मिचलाता है, मलान्त्रमें जलन होती है और ऐसा दर्द होता है मानो मलद्वारमें जखम हो गया हो। पाखाना हो जाने बाद कमरके पीछे ऐसा दर्द मालूम होता है मानो जोरसे मरोड़ा जा रहा है। कभी कभी अनजानमें पाखाना हो जाता है। मलके साथ सूत्रकृमि निकलती है। पाखाना होनेके साथ मलनालीमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणादायक छोटे छोटे अर्बुद (Tumors) निकल आते हैं। पाखाना होने बाद जाड़ा लगता है और सिहरावन होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु, बँधे समयके बहुत पहले होता है, स्राव बहुत ज्यादा होता है और बहुत दिनोंतक हुआ करता है। कामोन्माद (ओरिगिनम, कैन्थरिस.) और अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय-परितृप्ति। दाहिने स्तनमें तेज दर्द, ऋतुके समय उठनेपर बढ़ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने उसका गला जोरसे धर दबाया है। पीठकी और कमरमें जकड़ जानेकी तरह दर्द (कैलि-बाई, साइक्यू., कास्टि, ऐसिड-टार्ट); पाखाना होने बाद इसी कमरमें ऐसा दर्द होता है, मानो किसीने जोरसे मरोड़ दिया है। कन्धा, हाथ, और हाथकी अँगुलियोंमें वातका दर्द,—विशेषकर कोहनी और कलाईमें (ऐक्टी-स्पाई); दाहिनी तलहत्थी खुजलाती है। घूमनेपर उदरमें दर्द होता है। बैठनेपर छुकी सामनेकी हड्डीमें अस्त्राघात या छेदनेकी तरह दर्द, टहलनेपर अच्छा

आंख।—दोनों आँखें सूखी,—मानो उनमें धूलके कण गिर गये हैं (आर्स, ब्राई, कार्बो-वेज, इयुफ्रे, फाइटो)। पढ़नेके समय आँखमें पानी भर आता है और अच्छी तरह दिखाई नहीं देता—सब गदला दिखाई देता है (ड्रोसेरा, सिनियेन, नेट्र-म्यूर, रास-वेन)। पढ़नेके समय दूरकी चीज दिखाई नहीं देती (Myopia)। पासकी चीजकी अपेक्षा दूरकी चीज साफ दिखाई देती है (ड्रोसेरा, साइलि, कैल्के, आर्जेण्ट-नाई)। कभी कभी एकाएक दृष्टि लोप हो जाती है। पहले पहल आँख खोलनेके समय वृक्ष आदि सभी सफेद दिखाई देते हैं।

गलेके भीतर।—कण्ठमें ऐसा दबाव मालूम होता है कि न जाने कितना श्लेष्मा इकट्ठा हो गया है (एरम-ट्रि, आयोड, ऐल्यू, कोणा, कास्टि)। गलेमें दर्दकी वजहसे बार बार घूंट लेनेकी इच्छा होती है (बेराई, बेल, केन्थ, मार्क); कोई भी चीज निगलनेमें बहुत कष्ट होता है,—मानो कण्ठनाली संकुचित हो गयी है; खाली घूंट लेनेके समय दर्द बढ़ जाता है (कोई पदार्थ निगलनेपर नाकके छेदसे बाहर निकल आता है=एरम-ट्रि, लैके, मार्क, फाइटो)।

पाकस्थली।—मुंहमें साफ पानीकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा होता है और बार बार थूकना पड़ता है। रोटीके सिवा और किसी चीजमें रुचि नहीं रहती; धूम्रपानकी इच्छा नहीं होती। प्रबल प्यास, खानेके समय और बाद सरमें चक्कर आता है। तीता या मीठा स्वाद मिली डकार आती है, पाकस्थली शून्य या ठण्डी मालूम होती है (शून्य मालूम होना—हाइड्रेस्ट, मार्क, सल्फ, इग्ने,—ठण्डी मालूम होना=आर्स, कैम्प, चायना; कोलचि)। नाक रुकनेके साथ साथ वमन, पित्तमय खट्टा या तीता पदार्थ वमन। भोजनके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो ऊपरी पेटमें एक टुकड़ा पत्थर इधरसे उधर लोट रहा है। भोजनके बाद पाकस्थलीका खाली मालूम होना और फिर भूख लग आना (कैल्के, कास्टि, किनिन-सल्फ, सिना)। पेट खूब खाली मालूम होता है, इतने पर भी खा नहीं सकता। रह रहकर प्रबल मिचली आती है,—डकार आनेपर ही आराम मिलता है। ऊपरी पेटमें ऐंठनकी तरह दर्द आरम्भ होकर क्रमसे चारों ओर फैल जाता है। माथेमें दर्दके साथ प्रबल वमन,— पहले हरी, फिर सिर्फ पानीकी तरह कै होती है। पाकस्थली ठण्डी मालूम होती है,—मानो पानीसे भरी हो।

अन्त्राशय।—उदरमें दबाव मालूम होता है और नाभिके पास जकड़ जानेके कारण रोगी सामनेकी ओर झुक पड़ता है,—हवा छूटनेपर आराम मिलता है। वायु इकट्ठा होकर पेटमें दबाव मालूम होता है, जी मिचलाता है और गलेमें कड़वी डकार आती है। शामको भोजनके बाद और रातमें पानीकी तरह दस्त होता है। चलनेके समय पेटमें बहुत भार मालूम होता है,—बैठनेपर फिर नहीं रहता। उदरमें मरोड़की तरह तेज दर्द,—यह दर्द समूची देहमें फैल जाता है (क्युप्रम देखो)।

मलान्त्र और मल।—गर्मीके दिनोंमें बार बार अधिक परिमाणमें पानी पीनेकी वजहसे पतले दस्त आना या सांघातिक विसूचिका (Cholera Mobrus)। मल पानीकी तरह पीला या हरा, फेन-भरा; दस्त वेगसे होता है; भोजनके बाद डकार आनेपर या वायु छूटनेपर घट जाता है। पाखाना होनेके पहले कलकल शब्द होता है और नाभि-प्रदेशमें काटनेकी तरह दर्द मालूम होता है; पाखाना होनेके समय जी मिचलाता है, मलान्त्रमें जलन होती है और ऐसा दर्द होता है मानो मलद्वारमें जखम हो गया हो। पाखाना हो जाने बाद कमरके पीछे ऐसा दर्द मालूम होता है मानो जोरसे मरोड़ा जा रहा है। कभी कभी अनजानमें पाखाना हो जाता है। मलके साथ सूत्रकृमि निकलती है। पाखाना होनेके साथ मलनालीमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणादायक छोटे छोटे अर्बुद (Tumors) निकल आते हैं। पाखाना होने बाद जाड़ा लगता है और सिहरावन होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु, बँधे समयके बहुत पहले होता है, स्राव बहुत ज्यादा होता है और बहुत दिनोंतक हुआ करता है। कामोन्माद (ओरिगेज्म, कैन्थरिस) और अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय-परितृप्ति। दाहिने स्तनमें डंक-दर्द, ऋतुके समय उठनेपर बढ़ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने उसका गला जोरसे धर दबाया है। पीठकी और कमरमें जकड़ जानेकी तरह दर्द (कोलिचिडि, साइक्यू, कास्टि, ऐण्टि-टार्ट); पाखाना होने बाद इसी कमरमें ऐसा दर्द होता है, मानो किसीने जोरसे मरोड़ दिया है। कन्धा, हाथ, और हाथकी अंगुलियोंमें वातका दर्द,—विशेषकर कोहनी और कलाईमें (ऐक्टी-साई); दाहिनी तलहत्थी खुजलाती है। घूमनेपर उदरमें दर्द होता है। बैठनेपर रीढ़की सामनेकी हड्डीमें अस्त्राघात या छेदनेकी तरह दर्द, टहलनेसे अच्छा

रहता है। खानेके बाद सोनेपर एकदम चैतन्य रहनेके साथ धनुष्टंकार,—इसके बाद गहरी नींद और रेतःस्खलन ; नींद खुलनेपर शरीरके बाएं हाथ और पीठमें दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरसे भाफकी तरह पदार्थ निकलता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एपिस, बेल, नक्स, लोरो, कैस्कोरिला ; जेल्स, युफ्रे, ।

दोषघ्न ।—कास्टिक, बेल, युफ्रे, नक्स-वोम ।

तुलनीय ।—भोजनके बाद भूख—लोरोसि, कैल्के, चायना, सिना । पाखाना होने बाद पेट खाली मालूम होना—पेट्रोल । दृष्टि-लोप या सर दर्द—जेल्स ।

शक्ति ।—२रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

ग्रण्डीलिया रोबस्टा ।

(GRINDELIA ROBUSTA)

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—पत्ते और बिना खिले फूलका अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है:—दमा ; श्वास-नाली प्रदाह ; चक्षु-प्रदाह ; शरीरपर लाल रङ्गकी खुजलीके दाने ; आँखकी बहुतसी कड़ी बीमारियाँ ; तारका-प्रदाह ; खुजली ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; योनि-कपाटमें खुजली ; प्लीहामें दर्द ; बहुतसे जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—दमा, वायुनाली प्रदाह (Bronchitis) वगैरह रोगोंमें यह विशेप उपयोगी है और इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि रोगीके सोते [illegible] उसकी साँस रुक जाती है और इसीसे [illegible] प्रश्वासकी क्रिया नियमित भावसे [illegible] प्रकारकी तकलीफें पैदा हो [illegible] ऐसी [illegible] मालू [illegible]

पूर्णता और भार मालूम होता है इसके सेवनसे भी वैसा ही मालूम हुआ करता है। बहुत तरहके चर्मरोगोंमें भी इसकी उपयोगिता प्रमाणित हुई है।

लक्षणावली।

मस्तक और चक्षु।—सरमें ऐसी पूर्णता मालूम होती है, मानो न जाने कितना क्विनाइन खा लिया है, आँखें लाल,—मानो मस्तिष्कमें बहुत प्रदाह हो गया है। आँखके गोलेमें तेज दर्द, यह दर्द तेजीसे मस्तिष्ककी ओर दौड़ जाता है—आँख घुमाने फिरानेसे बढ़ता है। आँखमें वातका दर्द फैलनेकी वजहसे उपतारका प्रदाह (Iritis); इसके साथ ही असह्य यन्त्रणा प्रबल ज्वर। अन्धकारमें लक्षण आदि बढ़ जाते हैं और रोगीको अँधेरा अच्छा नहीं लगता (स्ट्रैमो)

अन्त्राशय।—प्लीहा प्रदेशसे तेज दर्द उरुतक फैल जाता है; प्लीहा बढ़ी (सियेनोथस, कार्डियुअस) हो जाती है। प्लीहा और यकृतके भीतर तेज दर्दकी वजहसे रोगी मुहूर्त भर भी स्थिर नहीं रह सकता; उसमें नयी वात व्याधिकी तरह बहुत दर्द मालूम होता है।

श्वास-यंत्र।—रोगीके सोते ही उसका श्वास प्रश्वास बन्द होनेका उपक्रम होकर नींद खुल जाती है और उस समय नियमित भावसे श्वास प्रश्वासकी क्रिया होने लगती है (क्लोरम, जेल्सि, लैक-कैन, लैके, ओपि, मार्क प्रिसिपिट-रूबर)। दमा,—बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह कफ निकल जाने बाद श्वास-कष्ट घट जाता है; श्वास-क्षच्छ्रताकी वजहसे रोगीको उठ बैठना पड़ता है। हूप खाँसीके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है (कक्कस-कैक्ट)।

त्वचा।—शरीरमें घमौरीकी तरह लाल लाल दाने सब निकल आते हैं; मुखमण्डल, गर्दन और कभी कभी समूची देह मानो ढक जाती है और बहुत जलन होती है और खुजलाती है। पैरमें घाव,—त्वचा फूलती है और भूरी हो जाती है और उससे बदबूदार रस निकलता है।

वृद्धि।—रोगवाला अङ्ग हिलाने, अन्धकारमें रहने और सोनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—नींदके बाद वृद्धि—लैके, अन्धकारमें भय—स्ट्रैमो; सोनेमें भय—कार्बो-एनि इत्यादि। क्लोराम; जेल्सि; लैक-कैन,

रहता है। खानेके बाद सोनेपर एकदम चैतन्य रहनेके साथ धनुष्टंकार,—इसके बाद गहरी नींद और रेतःस्खलन ; नींद खुलनेपर शरीरके बाएं हाथ और पीठमें दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरसे भाफकी तरह पदार्थ निकलता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एपिस, बेल, नक्स, लोरो, केस्कोरिला ; जेल्स, युफ्रे, ।

दोषघ्न ।—कास्टिक, बेल, युफ्रे, नक्स-वोम ।

तुलनीय ।—भोजनके बाद भूख—लोरोसि, कैल्के, चायना, सिना। पाखाना होने बाद पेट खाली मालूम होना—पेट्रोल । दृष्टि-लोप या सर दर्द—जेल्स ।

शक्ति ।—२रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

ग्रण्डीलिया रोबस्टा ।

(GRINDELIA ROBUSTA)

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—पत्ते और बिना खिले फूलका अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है:—दमा ; श्वास-नाली प्रदाह ; चक्षु-प्रदाह ; शरीरपर लाल रङ्गकी खुजलीके दाने ; आँखकी बहुतसी कड़ी बीमारियाँ ; तारका-प्रदाह ; खुजली ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; योनि-कपाटमें खुजली ; प्लीहामें दर्द ; बहुतसे जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—दमा, वायुनाली प्रदाह (Bronchitis) वगैरह रोगोंमें यह विशेष उपयोगी है और इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि रोगीके सोते ही उसकी साँस रुक जाती है और इसीसे उसकी नींद खुल जाती है। उसके बाद श्वास प्रश्वासकी क्रिया नियमित भावसे हुआ करती है। इसके द्वारा आँखमें भी नाना प्रकारकी तकलीफें पैदा हो करती हैं और अधिक मात्रामें किनाइन सेवन करनेपर माथेमें जैसी

पूर्णता और भार मालूम होता है इसके सेवनसे भी वैसा ही मालूम हुआ करता है। बहुत तरहके चर्मरोगोंमें भी इसकी उपयोगिता प्रमाणित हुई है।

लक्षणावली।

मस्तक और चक्षु।—सरमें ऐसी पूर्णता मालूम होती है, मानो न जाने कितना क्विनाइन खा लिया है, आँखें लाल,—मानो मस्तिष्कमें बहुत प्रदाह हो गया है। आँखके गोलेमें तेज दर्द, यह दर्द तेजीसे मस्तिष्ककी ओर दौड़ जाता है—आँख घुमाने फिरानेसे बढ़ता है। आँखमें वातका दर्द फैलनेकी वजह से उपतारका प्रदाह (Iritis); इसके साथ ही असह्य यन्त्रणा प्रबल ज्वर। अन्धकारमें लक्षण आदि बढ़ जाते हैं और रोगीको अँधेरा अच्छा नहीं लगता (स्ट्रैमो)

अन्त्राशय।—प्लीहा प्रदेशसे तेज दर्द उरुतक फैल जाता है; प्लीहा बढ़ी (सियैनोथस, कार्डियुअस) हो जाती है। प्लीहा और यकृतके भीतर तेज दर्दकी वजहसे रोगी मुहूर्त भर भी स्थिर नहीं रह सकता; उसमें नयी वात व्याधिकी तरह बहुत दर्द मालूम होता है।

श्वास-यंत्र।—रोगीके सोते ही उसका श्वास प्रश्वास बन्द होनेका उपक्रम होकर नींद खुल जाती है और उस समय नियमित भावसे श्वास प्रश्वासकी क्रिया होने लगती है (क्लोरम, जेल्सि, लैक-कैन, लैके, ओपि, मार्क प्रिसिपिट-रूबर)। दमा,—बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह कफ निकल जाने बाद श्वास-कष्ट घट जाता है; श्वास-कृच्छ्रताकी वजहसे रोगीको उठ बैठना पड़ता है। हूप खाँसीके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है (कक्कस-कैक्ट)।

त्वचा।—शरीरमें घमौरीकी तरह लाल लाल दाने सब निकल आते हैं; मुखमण्डल, गर्दन और कभी कभी समूची देह मानो ढक जाती है और बहुत जलन होती है और खुजलाती है। पैरमें घाव,—त्वचा फूलती है और भूरी हो जाती है और उससे बदबूदार रस निकलता है।

वृद्धि।—रोगवाला अङ्ग हिलाने, अन्धकारमें रहने और सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—नींदके बाद वृद्धि—लैके, अन्धकारमें भय—स्ट्रैमो; सोनेमें भय—कार्बो-ऐनि इत्यादि। क्लोरम, जेल्सि, लैक-कैन,

रहता है। खानेके बाद सोनेपर एकदम चैतन्य रहनेके साथ धनुष्टंकार,— बाद गहरी नींद और रेतःस्खलन ; नींद खुलनेपर शरीरके बाएं हाथ पीठमें दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरसे भा सरस पदार्थ निकलता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एपिस, बेल, नक्स, लोरो, केल्केरि जेल्स, थुजा ।

दोषघ्न ।—कास्टिक, बेल, थुजा, नक्स-वोम।

तुलनीय ।—भोजनके बाद भूख—लोरोसि, केल्के, चायना, सि पाखाना होने बाद पेट खाली मालूम होना—पेट्रोल। दृष्टि-लोप या दर्द—जेल्स।

शक्ति ।—२रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

ग्रण्डीलिया रोबस्टा ।

(GRINDELIA ROBUSTA)

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—पत्ते और बिना खिले फूलका अर्क तैय होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हु है:—दमा ; श्वास-नाली प्रदाह ; चक्षु-प्रदाह ; शरीरपर लाल रङ्गकी खुजली दाने ; आंखकी बहुतसी कड़ी बीमारियाँ ; तारका-प्रदाह ; खुजली ; हृत्पिण्ड बीमारी ; योनि-कपाटमें खुजली ; प्लीहामें दर्द ; बहुतसे जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—दमा, वायुनाली प्रदाह (Bron chitis) वगैरह रोगोंमें यह विशेष उपयोगी है और इसका एक प्रधान निर्ण यक लक्षण यह है, कि रोगीके सोते ही उसकी सांस रुक जाती है और इसी उसकी नींद खुल जाती है। उसके बाद श्वास प्रश्वासकी क्रिया नियमित भाव हुआ करती है। इसके द्वारा आंखमें भी नाना प्रकारकी तकलीफें पैदा जाया करती हैं और अधिक मात्रामें क्विनाइन सेवन करनेपर माथेमें जैसे

पूर्णता और भार मालूम होता है इसके सेवनसे भी वैसा ही मालूम हुआ करता है। बहुत तरहके चर्मरोगोंमें भी इसकी उपयोगिता प्रमाणित हुई है।

लक्षणावली।

मस्तक और चक्षु।—सरमें ऐसी पूर्णता मालूम होती है, मानो न जाने कितना क्विनाइन खा लिया है, आँखें लाल,—मानो मस्तिष्कमें बहुत प्रदाह हो गया है। आँखके गोलेमें तेज दर्द, यह दर्द तेजीसे मस्तिष्ककी ओर दौड़ जाता है—आँख घुमाने फिरानेसे बढ़ता है। आँखमें वातका दर्द फैलनेकी वजहसे उपतारका प्रदाह (Iritis); इसके साथ ही असह्य यन्त्रणा प्रबल ज्वर। अन्धकारमें लक्षण आदि बढ़ जाते हैं और रोगीको अँधेरा अच्छा नहीं लगता (स्ट्रैमो)

अन्त्राशय।—प्लीहा प्रदेशसे तेज दर्द उरुतक फैल जाता है; प्लीहा बढ़ी (सियेनोथस, कार्डियुअस) हो जाती है। प्लीहा और यकृतके भीतर तेज दर्दकी वजहसे रोगी मुहूर्त भर भी स्थिर नहीं रह सकता; उसमें नयी वात व्याधिकी तरह बहुत दर्द मालूम होता है।

श्वास-यंत्र।—रोगीके सोते ही उसका श्वास प्रश्वास बन्द होनेका उपक्रम होकर नींद खुल जाती है और उस समय नियमित भावसे श्वास प्रश्वासकी क्रिया होने लगती है (क्लोरम, जेल्सि, लैक-कैन, लैके, ओपि, मार्क प्रिसिपिट-रूबर)। दमा,—बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह कफ निकल जाने बाद श्वास-कष्ट घट जाता है; श्वास-कृच्छ्रताकी वजहसे रोगीको उठ बैठना पड़ता है। इस खाँसीके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है (कक्कस-कैक्ट)।

त्वचा।—शरीरमें घमौरीकी तरह लाल लाल दाने सब निकल आते हैं; मुखमण्डल, गर्दन और कभी कभी समूची देह मानो ढक जाती है और बहुत जलन होती है और खुजलाती है। पैरमें घाव,—त्वचा फूलती है और भूरी हो जाती है और उससे बदबूदार रस निकलता है।

वृद्धि।—रोगवाला अङ्ग हिलाने, अन्धकारमें रहने और सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—नींदके बाद वृद्धि—लैके, अन्धकारमें भय—स्ट्रैमो; सोनेमें भय—कार्बो-ऐनि इत्यादि। क्लोराम; जेल्सि; लैक-कैन,

रहता है। खानेके बाद सोनेपर एकदम चैतन्य रहनेके साथ प्रतुष्टकार,—इसके बाद गहरी नींद और रेतःस्खलन ; नींद खुलनेपर शरीरके बाएं हाथ और पीठमें दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरसे भाफकी तरह पदार्थ निकलता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एपिस, वेल, नक्स, लोरी, केल्करिया जेल्स, युफ्रे, ।

दोषघ्न ।—कास्टिक, वेल, युफ्रे, नक्स-वोम ।

तुलनीय ।—भोजनके बाद भूख—लोरोसि, केल्के, चायना, सिना। पाखाना होने बाद पेट खाली मालूम होना—पेट्रोल । दृष्टि-लोप या सर दर्द—जेल्स ।

शक्ति ।—२ऱे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

ग्रिण्डीलिया रोबस्टा ।

(GRINDELIA ROBUSTA)

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—पत्ते और बिना खिले फूलका अर्क होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें है:—दमा ; श्वास-नाली प्रदाह ; चक्षु-प्रदाह ; शरीरपर लाल दाने ; आँखकी बहुतसी कड़ी बीमारियाँ ; तारका-प्रदा बीमारी ; योनि-कपाटमें खुजली ; प्लीहामें दर्द ; बहुतसे

उपयोगिता और आभास ।—दमा, chitis) वगैरह रोगोंमें यह विशेष उपयोगी है और यक लक्षण यह है, कि रोगीके सोते ही उसकी साँस उसकी नींद खुल जाती है। उसके बाद श्वास हुआ करती है। इसके द्वारा आँखमें भी नाना जाया करती हैं और अधिक मात्रामें क्विनाइन

पूर्णता और भार मालूम होता है इसके सेवनसे भी वैसा ही मालूम हुआ करता है। बहुत तरहके चर्मरोगोंमें भी इसकी उपयोगिता प्रमाणित हुई है।

लक्षणावली।

मस्तक और चक्षु।—सरमें ऐसी पूर्णता मालूम होती है, मानो न जाने कितना क्विनाईन खा लिया है, आँखें लाल,—मानो मस्तिष्कमें बहुत प्रदाह हो गया है। आँखके गोलेमें तेज दर्द, यह दर्द तेजीसे मस्तिष्ककी ओर दौड़ जाता है—आँख घुमाने फिरानेसे बढ़ता है। आँखमें वातका दर्द फैलनेकी वजह से उपतारका प्रदाह (Iritis); इसके साथ ही असह्य यन्त्रणा प्रबल ज्वर। अन्धकारमें लक्षण आदि बढ़ जाते हैं और रोगीको अँधेरा अच्छा नहीं लगता (स्ट्रैमो)

अन्त्राशय।—प्लीहा प्रदेशसे तेज दर्द उरुतक फैल जाता है; प्लीहा बड़ी (सियेनोथस, कार्डियुअस) हो जाती है। प्लीहा और यकृतके भीतर तेज दर्दकी वजहसे रोगी मुहूर्त्त भर भी स्थिर नहीं रह सकता; उसमें नयी वात व्याधिकी तरह बहुत दर्द मालूम होता है।

श्वास-यंत्र।—रोगीके सोते ही उसका श्वास प्रश्वास बन्द होनेका उपक्रम होकर नींद खुल जाती है और उस समय नियमित भावसे श्वास प्रश्वासकी क्रिया होने लगती है (क्लोरम, जेलसि, लैक-कैन, लैके, ओपि, मार्कं प्रिसिपिट-रूबर)। दमा,—बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह कफ निकल जाने बाद श्वास-कष्ट घट जाता है; श्वास-अच्छन्नताकी वजहसे रोगीको उठ बैठना पड़ता है। क्रूप खाँसीके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है (कक्कस-कैक्ट)।

त्वचा।—शरीरमें घमौरीकी तरह लाल लाल दाने सब निकल आते हैं; मुखमण्डल, गर्दन और कभी कभी समूची देह मानो ढक जाती है और बहुत जलन होती है और खुजलाती है। पैरमें घाव,—त्वचा फूलती है और भूरी हो जाती है और उससे बदबूदार रस निकलता है।

वृद्धि।—रोगवाला अङ्ग हिलाने, अन्धकारमें रहने और सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—नींदके बाद वृद्धि—लैके, अन्धकारमें भय—स्ट्रैमो; सोनेमें भय—कार्बो-ऐनि इत्यादि। क्लोराम, जेलसि, लैक-कैन,

ओपि, कक्कस-कैक्ट, इरिडिक, मार्क-प्रिसिपिट-रूबर ; ऐमोन-कार्ब, एरम-ट्रि, बैडियेगा ; कैडमी-सल्फ, ग्रैफ ।

दोषघ्न ।—रास-टक्स ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम ।

गुयैको ।
(GUACO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें फायदेमन्द है ;—हैजा ; अतिसार ; जलातङ्क ; श्वेत-प्रदर ; पक्षाघात ; वात ; कशेरुकाकी बीमारी ; जीभका पक्षाघात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह सर्प-विषघ्न औषधके रूपमें विख्यात है । सदृश विधानके अनुसार परीक्षा करनेपर इसकी क्षमता मेरुदण्डपर प्रकाशित हुआ करती है और इससे पक्षाघात उत्पन्न होता है ; इसलिये जीभ, ओंठ और तालुमूल सुन्न हो पड़ता है । रोगी कोई भी चीज निगल नहीं सकता, जीभ हिलानेकी शक्ति नहीं रहती और कभी कभी, इस पक्षाघातके प्रतिक्षेपकी वजहसे (Reflex action) इसके द्वारा बहरापन भी पैदा हो जाया करता है । मेरुदण्डका उपदाह भी इसका अन्यतम क्रिया-फल है । प्रदरका स्राव गर्म, कर्कट रोग, उपदंश, विसूचिका प्रभृति इसके विषयीभूत हैं ।

लक्षणावली ।

गलेके भीतर ।—जीभ प्रायः सुन्न हो जाती है और भारी मालूम होती है और हिला नहीं सकता ; स्वर और वायुनाली मानो पतली हो गयी ऐसा मालूम होता है ; कोई चीज निगलना बहुत कष्टकर हो जाता है (जलातङ्क रोगाधिकारमें) ; इसके साथ ही बहरापन ।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है और उसके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें फास्फेट नामक पदार्थ मिला रहता है (ऐ-फास) ;

मूत्रस्थलीसे कुछ ऊपरके स्थानमें दर्द और कमर तथा उरु बहुत भारी और चीण मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रदर,—स्राव बहुत ज्यादा,—जहाँ लगता है वहीं की खाल उधड़ जाती है और रोगिनी कमजोर हो पड़ती है ; उरुमें स्राव लगनेके कारण वह जगह धुमैले रङ्गकी हो जाती है और वस्त्र आदिमें पीला दाग पड़ता है (कार्बो-ऐन, नक्स, प्रूनस) ; रातमें योनिमें खुजली और जलन होती है और रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो योनिके भीतरसे आग निकल रही है (ऋतुस्राव गर्म मालूम होता है—ऐल्यू, बेलेड)

गर्दन और पीठ ।—मेरुमज्जामें उत्तेजना (Spinal Irritation) मेरुदण्डके ऊपरी अंशमें लगातार जलन और दर्द (ऐसिड-पिक, ऐक्टि-ऐसि)—निगलनेमें तकलीफ और स्वरनाली ऐसी मालूम होती है मानो पतली होती जाती है—सामनेकी ओर देह झुका पड़नेपर दर्द बढ़ जाता है। पेटकी बीमारीमें पतला दस्त होनेके बाद कमरके पिछले भागके बीचमें और पीठमें दर्द होता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—पैरके तलवेमें जलन होती है (ऐम्ब्रा, ऐसिड-फास) और ऐसा दर्द मानो काट रहा है। दर्द आदि ऊपरसे नीचेकी ओर उतर आता है। बाहुकी पेशीमें, कन्धेमें, कोहनीमें और बाहु तथा हाथकी अंगुली में दर्द मालूम होता है। वंचण प्रदेशमें दर्द मालूम होता है। दोनों पैर बहुत भारी मालूम होते हैं। निम्नाङ्गका पक्षाघात। गुल्फ-सन्धिमें छेदनेकी तरह दर्द। बाहु और कन्धेके सन्धि-स्थानपर इस ढङ्गका दर्द मालूम होता है, मानो सन्धि खिसक गयी है (ऐसेर, ऐसिड-म्यू, रियुटा, सेबाई, टेरिब)। कन्धेमें जलन होती है (कार्बो-वेज, रास, टैबाक) इसका दर्द रातमें हिलने डोलनेपर बढ़ जाता है।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐल्यू, ऐसिड-फास, टिलिया, केलि-ब्रोम, रैफेनस, कार्बो-ऐन, प्रूनस ; कास्टि ; जेल्स, ऐक्टि-रेसि, ऐसिड-पिक।

दोषघ्न ।—क्रियोज, सलफर (श्वेत-प्रदर)।

तुलनीय ।—बेलाडो (ऋतुस्राव गर्म) ; फास्फोरिक-ऐसिड (श्वेत प्रदर) ; (पीली आभा लिये स्राव) कार्बो-ऐनिम, नाइट्रिक-ऐसिड।

शक्ति ।—२ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

गुयायेकम ।

(GUAIACUM OFFICINALE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस वृक्षके गोंद या रसमें तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—फोड़ा; रजःस्वल्पता; हड्डीकी बीमारी; श्वासनालीका प्रदाह; हड्डियोंका क्षय; बच्चोंका दस्त-कै; कब्जियत; खाँसी; अतिसार; गलनालीकी उप-झिल्लीका प्रदाह; बाधक; कानका दर्द; दुबलापन; ज्वर; छोटी सन्धियोंका वात; सर दर्द; आँत उतरना; बाधक; पारेका विकार; स्नायुशूल; कर्ण-प्रदाह; डिम्बाधार प्रदाह; क्षयकास; पार्श्व वेदना; वात; गृध्रसी; पाकस्थलीकी बीमारी; उपदंश; गलेका जखम; दाँतका दर्द; वमन इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—स्मरण शक्तिकी गड़बड़ी, काममें जी न लगना, विमर्ष और असन्तुष्ट-चित्तता और अपने मतकी प्रधानता दिखानेका स्वभाव; मस्तिष्कमें तेज सुई वेधनेकी तरह दर्द। ऐसा मालूम होना मानो मस्तिष्क माथेके भीतर अलग होकर पड़ा है; चेहरे और मस्तिष्कके बाईं ओर का स्नायुशूल, प्रत्येक दिवस सन्ध्यासे रातके अन्तिम भागतक यह दर्द हुआ करता है; ऐसी अनुभूतिके साथ कि धमनियाँ सब खूनसे भर गयी हैं, माथेमें दर्द। ऐसा मालूम होता है कि आँखें मानो फूल गयी हैं और ठिकराकर बाहर निकलना चाहती हैं; सामान्य वातके कारण नया गल-ग्रन्थि प्रदाह; कण्ठमें तेज जलनके साथ उपदंश दोषसे पैदा हुआ गलेका जखम, मुख-विवर, कण्ठ, पाकस्थली और हृत्पिण्डके शिखर देशमें जलन मालूम होना,—शरीर हिलाने और लम्बी साँस लेनेपर बढ़ना; फुसफुसावरण वगैरहसे पैदा हुआ छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, दाहिने स्तनके नीचेसे कन्धे तक फैल जानेवाला तेज दर्द (ऐक्टिया-रेस, चेलिडो, मार्क-वाई, कैलि-कार्ब देखो); दोनों हनु कसकर मिलानेपर दाँतमें दर्द आरम्भ हो जाता है; प्रत्येक दिवस तीसरे पहर बहुत भूख मालूम होती है, प्रति दिवस सवेरे पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता है; गलेके भीतर श्लेष्मा अटक जाता है और जी मिचलाया मालूम होना और पसीना न होनेके साथ सवेरेके सन्नाका के दिनोंके अतिसार रोगमें बच्चेका चेहरा बूढ़ोंकी

इसके स्राव बहुत बदबूदार होते हैं (बेपटी ; सोरिन, पाइरोज,—सुस्त करने वाला = कार्बो-ऐन) ; बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार पेशाब होते ही फिर पेशाबका वेग, तथा ही पेशाबका वेग होनेपर मूत्रस्थली ग्रीवामें सुई वेधनेकी तरह दर्द ; पेशाबके समय मूत्रस्थलीमें फाड़नेकी तरह दर्द ; कलेजा धड़कनेके साथ वायु और स्वरनालीका प्रदाहकी वजहसे रोगीमें शरीर सञ्चालन शक्तिका घट जाना और सहायता माँगनेकी शक्तिका न रह जाना,—श्वास रोध होनेका उपक्रम ; सूखी खाँसी अथवा खाँसनेपर खून मिला और पीबकी तरह कफ निकलता है ; जम्हाई आनेपर और हाथ पैर फैलानेपर शरीरके अस्वाच्छन्द्य भावका घट जाना ; सर्दी लगते ही हाथ पैरोंमें दर्द होता है ; पहने हुए कपड़े गीले मालूम होते हैं ; पाकस्थलीकी बीमारी प्रतिवर्ष ग्रीष्म या वर्षा ऋतुमें फिरसे आरम्भ हो जाती है, इत्यादि कई गुयेकमके प्रकृतिगत लक्षण हैं। वात-व्याधि और छोटी सन्धियोंके वात रोगमें ही इसका प्रधान लाभ दिखाई देता है,—रोगवाले अङ्गमें इतना दर्द होता है, कि स्पर्श सहन नहीं होता और गर्मीसे दर्द बढ़ जाता है—यह इसका अन्यतम निर्णायक लक्षण है। उपदंश या पारा-विष दूषित मनुष्योंकी वात-व्याधिमें यह विशेष लाभदायक हुआ करता है।

लक्षणावली।

मन।—विस्मृति ; नाम याद नहीं रहता (क्रोटेलस, ओलियम), अपने मतकी प्रधानता रखनेवाला स्वभाव, दूसरेके दोष देखनेमें बहुत ही पटु (कास्टि, इपिका, लैके, नक्स-वोम, प्लेट, सल्फ, वेरेट) सभी विषयोंमें आना कानी प्रकट करता है। मूर्खोंकी तरह एक ओर देखा करता है (हेलिबो) विशेषकर सवेरे।

मस्तक।—उठते ही सरमें चक्कर आता है (ब्राई, फेरम, नेट-म्यूर, फास, रोसटक्स,—कुर्सीसे उठनेपर—फेरम, नक्स, पल्स ; शय्यासे = बेलिडो, नेट-म्यूर, कक्यू) । एक पार्श्वका वातका सर दर्द,—दर्द उसी ओरके गालतक फैल जाता है। अधकपारीका दर्द । माथेमें वात (Gout); माथा और चेहरेके बाईं ओरका स्नायुशूल,—दर्द गलेके पिछले भाग तक उतर आता है। बाहरी सर-दर्द,—ऐसा मालूम होता है कि धमनी आदिमें बहुत ज्यादा खून चढ़ गया है, चेहरा और गर्दन तक दर्द हो जाया करता है। माथेके बाहरी प्रदेश

में टपक और कनपटीमें सुई वेधनेकी तरह दर्द (कैमो, क्यूप, ग्लोन, पलस),—मलने और चलनेपर, आराम मालूम होता है, किन्तु स्थिर होकर खड़े रहने या बैठनेपर बढ़ जाता है ; वायु सेवनके लिये टहलने पर माथे और कपालमें पसीना होता है । मालूम होता है, मानो दिमाग माथेकी खोपड़ीके भीतर अलग होकर पड़ा है (नक्स-मस, कार्बो-वेज, ऐमोन-कार्ब,, लोरो कास्टि, रास ।)

आँख ।— आँख सचमुच ही फूल जाती है या ऐसा मालूम होता है मानो फूल गयी है (क्रोकस, पेरिस) मानो आँख बाहर निकल पड़ना चाहती है (Protruding—बेल, ग्लोन, आयोड, मिडोरिन ; रोगीको ऐसा अनुभव होता है मानो पलक बहुत छोटी हो गयी है और उससे आँख पूरी पूरी नहीं ढकती ; (चेलिडो), भवोंमें फुंसियाँ पैदा हो जाती हैं (ऐसिड-फ्लू, सेलिन, थूजा)

कान ।—बाएँ कानमें खींचन और छेदनेकी तरह दर्द, बहुत तेज कर्णशूल (कानका दर्द)—बायें कानमें ऐसा दर्द मालूम होता है मानो फाड़े डालता है, रह रहकर भयानक दर्द होने लगता है ।

मुखमण्डल ।—गालकी पेशी और हड्डीमें अस्त्रकी चोट और तेज सुई वेधनेकी तरह दर्द । चेहरा लाल होकर फूल उठता है और उसमें दर्द होता है । आँख, नाक और गाल फूल उठते हैं, बच्चेका चेहरा बुड्ढोंकी तरह दिखाई देता है । मुंहके बाईं ओरका स्नायुशूल—दर्द माथा और गलेतक आक्रमण करता है,—नित्य संध्याके ६ बजेसे अन्तिम रातके ४ बजेतक तकलीफ़ रहती है । दाँतका दर्द,—ऊपर और नीचेका जबड़ा कसकर दबा रखनेपर बहुत दर्द हुआ करता है ।

गलेके भीतर ।—कण्ठनालीमें भयंकर जलन (ऐमोन-कास्टि,—आर्स, कैन्थ, ड्युफोर्ब, लैके, लोरो) । नया गल-ग्रन्थि प्रदाह,—दाहिनी ग्रन्थि बहुत फूलती है और लाल हो जाती है । बराबर दर्द हुआ करता है, और निगलनेके समय तेज सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है (बैराई, बेल, हिप, कैन्थ, ऐसिड-नाई; सिफिलिन) । कण्ठका भीतरी भाग सूखा,—कण्ठ-नालीको भिगोये बिना कोई चीज निगल नहीं सकता । कण्ठमें मानो श्लेष्मा घटका हुआ है, ऐसा अनुभव होता है और जी मिचलाता है ।

पाकस्थली ।—प्रति दिन तीसरे पहर बहुत भूख मालूम होना, (ऐगार, मेजेर, टियुक्रि); रोज सवेरे बड़े कष्टसे बहुत ज्यादा

श्लेष्मा वमन हो जाता है। सभी प्रकारके खाद्य पदार्थोंमें अरुचि (रास, म्यूनस-स्माई, डालका, ग्रेटि, कैल्य)। सेव अच्छे लगते हैं; सेव खानेपर पेटकी बीमारी घट जाती है; दूधसे अरुचि (सिना, इग्ने, पलस, सिपि); आगारी पेट और तलपेटमें बहुत जलन होती है। प्रति वर्ष गर्मीके दिनोंमें तेज बीमारी और खूनकी कै होती है। पेटकी पेशियां सब जकड़ जाती हैं और श्वास प्रश्वासमें तकलीफ होती है।

अन्त्राशय।—पेट फूल उठता है; आंतोंमें वायु अटककर उनमें ऐसा दर्द होता है, मानो कोई खोंचा मार रहा है। हवा छूटनेके बाद दर्द घट जाता है। संक्षण प्रदेश (Groins) में मानों आँत उतर आयगी इस ढंगका दर्द मालूम होता है (जिंक्टि-क्र, ग्रेनेट, नक्स, लाई)। उदरकी पेशियाँ फड़कती हैं।

मलान्त्र और मल।—उदरामय,—सवेरे दस्त होने लगते हैं। रोगीको जाड़ा लगता है और पसीना नहीं होता। बाल-विसूचिका या बच्चोंके ग्रीष्मातिसारके कारण रोगी दुबला हो पड़ता है और चेहरा बुड्ढोंकी तरह हो जाता है (ऐब्रोट); कब्जियत—मल कड़ा और चूर चूर होकर निकलता है (ऐमोन-मूरर, मैग-मूरर); मलमें बहुत बदबू।

पेशाब।—बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार पेशाब करते ही फिर पेशाब लग आता है। तथा पेशाबका वेग होनेपर मूत्रस्थलीकी ग्रीवामें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। पेशाब करनेके समय मूत्र-नालीमें फाड़नेकी तरह तकलीफ—मानो मूत्रनालीके माथेकी राहसे कोई तीक्ष्ण पदार्थ निकल रहा है (कैनाब-सेट, कैल्य)।

पुं-जननेन्द्रिय।—किसी तरहका सपना दिखाई दिये बिना ही निद्रावस्थामें वीर्य निकल जाता है (नेट्रम-फास, हैमा)। प्रमेहका स्राव। उपदंश—मुख्य या प्राथमिक (*Primary*),—पहला जखम आराम होनेमें बहुत दिन लगते हैं, शिश्नावरणी (चमड़ी—*Prepuce*) फूलती और कड़ी हो जाती है; यह सूजन बहुत दिनोंतक रहती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वात-प्रधान धातुवाली स्त्रियोंका थोड़ा या बहुत पुराना डिम्बाधार प्रदाह—इसके साथ ही अनियमित ऋतु, बाधक और मूत्रस्थलीमें संकोचन होनेका लक्षण।

श्वासयन्त्र।—वायु और स्वरनालीका तेज और आक्षेपिक प्रदाह,—रोगीके कलेजेमें धड़कन होनेकी वजहसे शय्यासे उतर या किसीको भी सहायताके लिये बुला नहीं सकता, उसको ऐसा मालूम होता है, मानो सांस रुक जाना चाहती है। सूखी खाँसी,—थोड़ा सा श्लेष्मा निकल जानेपर आराम मिलता है। (क्लोरम, कार्बो-वेज)। कभी कभी खून मिला या बहुत सड़ी गन्ध और पीबकी तरह बलगम (Sputa) निकलता है (कार्बो-वेज, लाई, क्रियो, ऐ-नाई); बाएँ फुसफुसावरण (Pleura) में सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है (ऐक्टी),—लम्बी सांस लेनेपर बढ़ना, विशेषकर फेफड़ेका क्षय-कास (Pthisis Pulmonalis) रोगमें। माथा हिलाने पर वक्षके ऊपरी अंशमें तेज दर्द और बदबूदार पीबका स्राव (Expectoration) निकलता है। हृदयके अगले भागमें एकाएक पूर्णता मालूम होती है और सांस रुकने जैसा हो जाता है,—निद्रावस्थामें ऐसा ही होकर सूखी खाँसी आया करती है।

गर्दन और पीठ।—पीठमें अकड़न—खासकर बाईं ओर,—गर्दनसे कमर और कमरके पिछला भाग (Sacrum) या नितम्बतक—जरा भी हिलने या कमर घुमानेपर असह्य दर्द मालूम होता है—पर वहाँ हाथ लगाने या स्थिर होकर बैठे रहनेपर दर्द नहीं होता। तीसरे पहर पीठमें शीत मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दाहिने कन्धेके शिखर-देशमें तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। बायाँ हाथ, कन्धा और कोहनीसे कलाईतक वातका दर्द। दाहिने हाथके अँगूठेमें मानो सुई गड़ गयी है—इस ढङ्गका दर्द मालूम होता है। बाएँ हाथकी कलाईमें वातका दर्द। वातकी वजहसे पैदा हुए प्रदाहके कारण घुटनेमें फोड़ा हो जाता है और वह फोड़ा इतना दर्द किया करता है, कि रोगी सो नहीं सकता। त्रिकास्थिके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है,—मानो आलपीनपर बैठा हुआ है। चलनेके समय दाहिने ऊरुके पेशीमें बहुत खींचन मालूम होती है; और रोगीको सुस्ती मालूम होती है; बैठनेपर आराम मिलता है। दाहिना पैर फूलता है, खींचन होती है, अड़कन मालूम होती है और हिल नहीं सकता,—पैर मुड़ जाते हैं और उसके साथ मिल जाते हैं। दाहिने पैरकी पोटली (Calf) में बाहरसे गुल्फतक ऐसा दर्द होता है, मानो तेज सलाई गड़ रही है। नीचेवाली सम्मुखास्थि

भरी हो जाती है। रोगी अंग अकड़ा और कड़ा हो जाता है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो तेज़ सलाई बिंध रही है या काटा जा रहा है। साथ ही खींचन होती है—जरा भी हिलनेपर इस अंगमें दर्द ज्यादा मालूम होता है (ऐमोन-म्यूर, कास्टि, साइलेसिया, नेट-कार्ब)। रोगवाला अङ्ग बहुत गर्म मालूम होता है, सन्धियाँ सब फूलती हैं और उनमें दर्द होता है, दबाव या गर्मी बिलकुल ही सहन नहीं होती। हड्डोमें दर्द, शरीरसे पसीना आदि जो कुछ निकलता है सब बदबूदार रहता है (बेपटी, सोरिन, पाइरोज,—बहुत सुस्त करनेवाला = कार्बो-ऐन)। दर्द आदि एक दिन बाएं अङ्गमें दूसरे दिन दाहिने अङ्गमें मालूम होता है, हड्डियाँ सब ठोस हो जाती हैं। सारे शरीरमें तकलीफकी वजहसे बार बार जम्हाई आती है और पैर मोड़नेकी इच्छा होती है और उससे कुछ आराम भी मिलता है। रातमें बहुत बदबूदार पानीसे तर कर देनेकी तरह पसीना।

निद्रा।—रोगी रातमें सो नहीं पाता, छटपटाया करता है। ऐसा मालूम होता है मानो गिर गया है, इसी वजहसे बार बार उसकी नींद खुल जाती है। चित्त सोनेपर गला रुक जानेकी तैयारी हो जाती है और वह चिल्ला कर जाग उठता है। नींदके बाद रोगी लगातार क्लान्ति अनुभव करता है और उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसके सभी अङ्ग कसकर बँधे हुए हैं और मानो उसके कपड़े लत्ते भींग गये हैं।

वृद्धि।—हिलने या हिलते ही, गर्मीसे, खड़े होनेपर, सवेरे, बिछावन से उठने बाद, सन्ध्यामें सोनेके पहले और ठण्ढी तर हवामें; जहाँ दर्द रहता है वहाँ छूना या रगड़ना बिलकुल ही सहन नहीं होता। कभी कभी दबानेपर घट जाता है।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न**।—नक्स-वोमिका। वात रोग वाला शरीर टेढ़ा मेढ़ा हो जाता है और हिलते ही उसमें बहुत दर्द मालूम होता है—खासकर इस सन्धि-स्थानमें वात गुटिकाएँ पैदा होनेपर **कास्टिकम** की अपेक्षा **गुयायेकम** ज्यादा फायदा किया करता है। ऐसे स्थलपर **कास्टिकम** के बाद **गुयायेकम** के प्रयोगसे बहुत लाभ दिखाई देता है।

सदृश।—मार्क, रास; ब्राई, मेजेर, रोडो, कोलो, कैलि-आयोड, स्टिलिङ्ग; फाइटो, कैलि कार्ब, सेङ्ग, ऐमोन-म्यूर, बेपटी, सोरिन, पाइरो-

जन, (शिशु विसूचिकामें सलफरके बाद इसका प्रयोग करना चाहिये)। उपदंश और वातमें मार्क-सोल, और बादमें—गर्दन अकड़नेमें या गलेके अकड़न रोगमें कास्टिकम के बाद इसका व्यवहार करना चाहिये।

तुलनीय।—फास-ऐसिड (दर्द); सिमिसि (पार्श्व-वेदना); ड्रायो (पुराना वात)।

शक्ति।—मूल अर्क से ३० शततमिक क्रम तक। निम्न क्रम ही अधिक व्यवहारमें आता है।

गुयाराना।

(GUARANA)

दूसरा नाम।—ब्रेजिल देशका ककुया, पालिनिया-सर्बिलिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक अवसाद, बहुत ज्यादा चाय या काफी पीना और शराब पीनेके कारण सर दर्द, उदरामय, शीत-पित्त, अदम्य-निद्रालुताके लक्षणमें लाभदायक है।

लगातार पलकोंका हिलना (ऐगारि) इसका एक निर्देशक लक्षण हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐगारिकस, इग्ने, नक्स, काफिया, कोका, थिया।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

गुयारिया ।

(GUARIA)

दूसरा नाम ।—रेड-उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—छालसे टिंचर और विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—संन्यास ; दमा ; हड्डी और आँखकी बीमारियां ; निगलनेमें तकलीफ ; आँत उतरना ; सविराम ज्वर ; पलकोंका पक्षाघात ; जीभकी बीमारी ; सरमें चक्कर आना ; क्रुप खाँसी ।

उपयोगिता और आभास ।—आँखें ही इसका प्रधान आक्रमण-स्थान है और इसी इन्द्रियके ऊपर इसके नाना प्रकारके लक्षण उत्पन्न हुआ करते हैं। आँखकी योजकत्वचा (Conjunctiva) की शोथकी तरह सूजन (Chemosis) और अनुपक्ष रोगमें (Pterygium)—तारकाकी ओर शिखर, और भीतरी कोनेकी ओरकी भूमि या तलदेश में—इसी तरहकी एक लाल शिरामय तिकोनिया सूजनमें इसका विशेष लाभ दिखाई देता है। बहरापन और आँखके लक्षण सब पर्यायक्रमसे प्रकट हुआ करते हैं और आँखकी बीमारी अच्छी होनेपर बहरापन पैदा हो जाता है और बहरापन दूर होनेपर आँखकी बीमारी पैदा हो जाती है। सरमें चक्कर आना,रजोनिवृत्तिके समय रक्त स्राव, सुगन्धित पसीना वगैरह कई इसके क्रियाफल हैं।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—झुकने पर (ऐनाक, कैम्फो, कास्टि, नक्स-वोम, पल्स, स्टेफि) ; सभी चीजें उलटी दिखाई देती हैं। ऐसा मालूम होता है मानो माथा सामनेकी ओर ढुलक पड़ता है (कार्बो-ऐन—नाक रुकनेके साथ—पेटि)। ऐसा मालूम होता है कि किसीने जोरसे माथेमें आघात किया है इसीलिये माथा सुन्न हो गया है और सोचनेकी शक्ति घट गयी है, सर्द गर्मी होनेपर ऐसा हुआ करता है।

आँख ।—आँखका कोना फूल जाता है (एपिस); अश्रु-ग्रन्थि (Lachrymal gland) फूलती है (बेल, साइलि)। भवें नाचती हैं (Twit-

ching=फाइजस, रियुटा)। पलक सुन्न हो जाती है (जेल्स, कास्टि, ग्रेफ, सिपि, स्पाई, वेरेट)। आँखकी योजकत्वचा फूल उठती है (ब्राई, नक्स, एपिस, सल्फ) आँखमें ऐसा दर्द होता है कि न जाने कितना रोया है (क्रोकस-सैट, टैबाक, टियुक्रि)। आँखकी गोलेमें ऐसा दर्द मानो किसीने नोच फेंका है (लाई, मार्क, पल्स),—मानो आँख बाहर निकल जाना चाहती है (ऐसेर, डेफ, लैके, गुयायेक, मेजेर)। सभी चीजें धुमैलो मालूम होती हैं (फास, स्ट्रैम)। बहरापन दूर होनेपर आँखकी बीमारी आरम्भ हो जाती है और आँखकी बीमारी आराम होनेपर बहरापन पैदा हो जाता है।

मुख-विवर।—गलेकी ऊँची हड्डी (Zygoma) में दर्द मालूम होता है और दांतमें कनकनी होती है—ठण्डी हवा लगने या जीभका धक्का लग जानेपर दर्द होता है ; जिस पार्श्वमें दर्द रहता है उसी करवट सोने या गर्म चीजें खाने (कैमो, नक्स ; फास, पल्स, साइलि) और टहलनेपर (फास) दर्द बढ़ जाता है ; ज्वराधिकारमें जीभपर मैल चढ़ा रहता है ; यह लेप या मैल हरे रङ्गका होता है। फूलन, सुन्न जीभ और उससे खून गिरता है ; ठण्डी और सूखी मालूम होती है ; जीभमें ऐसा दर्द होता है मानो छुरीसे काटा जाता है। जो कुछ खाता है उसका स्वाद नहीं मिलता (हेलिबो, नेट-म्यूर, पल्स)

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रसवका दर्द बन्द या रुक जाता है। प्रसवके बादका क्लेद स्राव (Lochia) बहुत थोड़ा हुआ करता है (नक्स, पलस, सिकेलि, सल्फ)। ऋतु बन्द होनेपर—प्रदरस्राव होता है (ऐसिड-नाई, सिपि)। ऋतुके पहले और बाद रक्त स्राव होता है (ऐम्ब्रा ; ऐक्टिया ; नेट-म्यूर, बेल, कैमो, सिलिका, सैबाई)।

प्रत्यङ्ग आदि।—शरीरमें जगह जगह ऐसा मालूम होता है मानो किसीने चोट पहुँचा दी है। अस्थि-वेष्टनीमें दर्द (कैल्की, कैलि-आयोड)। हाथ पैरकी सन्धियोंमें मटमट आवाज होती है। रातके समय हड्डीमें दर्द (ऐसिड-नाई, मार्क, सिफिलिन, कैलि-आयोड, मेजेर, ऐसाफि, ओरम, फाइटो) हड्डीमें जखम। हड्डीमें दर्द मानो किसीने मारा है (आर्नि, रियुटा) ; हड्डीका जखम, मेदमय कोषावृत्त अर्बुद (वैराई, फास, कैल्के, हिप, सिलि.) ; कितनी ही जगह फूल जाती है और गर्म हो जाती है। शरीरमें जगह जगह पित्त बिन्दु (Liver-spots) दिखाई देते हैं। बाहरी ०

आती है ; बदबूदार पसीना होता है (रोडो)। रोगवाली जगहपर गर्म वस्त्र बाँधनेसे दर्द घटता है।

वृद्धि।—रातके समय, रोगवाली करवट सोनेपर, गर्म चीजें खानेपर और खट्टे या ठण्डे पानीय पीनेपर।

घटना।—गर्म कपड़ेसे दर्दवाला अंश बाँधनेपर और बिना दर्दवाली करवट सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, ऐम्ब्रा ; साइलि, फास, ऐसाफि, मेजेर अरम, बोवि, ऐसिड-नाई, काक्यु, जेलसि, ग्रैफ, कोलोफिल।

तुलनीय।—बोविस्टा (ऋतुके बीचके समयमें ही ऋतु-स्राव); जेलसि, (सरमें चक्कर आना), एपिस (दमा); आर्निका, (आघात); इग्ने (स्नायु); मार्क (हड्डीमें शोथ)।

शक्ति।—मूल अर्क से ६ ठें दशमिक क्रम तक।

जिम्निमा-सिल्वेस्टर।

(GYMNEMA-SYLVESTRE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—इस उद्भिदकी जड़को चूर कर, साँप काटे हुए मनुष्यको खिलानेपर सर्प-विष नष्ट हो जाता है। इसका पत्ता चबाने या निम्न-शक्ति सेवन करनेपर कुछ देरके लिये मुंहका स्वाद गायब हो हो जाता है। यहांतक कि क्विनिन भी खड़ियाकी तरह स्वादहीन मालूम होता है।

जिम्नोक्लेडस।

(GYMNOCLADUS CANADENSIS)

दूसरा नाम।—अमेरिकन काफी ट्री।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी ढेंडीसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—*विसर्प; ज्वर; सर दर्द; श्रोतका दर्द; दाँतका दर्द इत्यादि।*

उपयोगिता और आभास।—"सफेद और नीला लेप चढ़ी जीभ" इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है,—विशेषकर सर दर्द, गलेका जखम, जिह्वामूलके पार्श्वके दोनों गह्वर गहरे लाल रङ्गके, चेहरेपर विसर्पकी तरह सूजन, उत्ताप और एकान्तमें रहनेकी आकांक्षा, पाकस्थलीके गोल आकारके जखम वगैरह अवस्थाओंमें इसका लाभ दिखाई देता है।

लक्षणावली।

मस्तक।—माथेके सामनेवाले भागमें लगातार दर्द,—विशेषकर दोनों भवोंके नीचे और नासा-मूलके ऊपर; आँखके गढ़हेमें बहुत दर्द मानो दोनों आँखें बाहर निकल पड़ेंगी—ऐसा मालूम होता है। इसके साथ ही माथेमें खूब कसावटका भाव, तलपेटमें और कभी कभी नाभि-प्रदेशमें महीन सलाई घुमानेकी तरह मालूम होना, इसके साथ ही सरमें तेज दर्द। सर्दीकी वजहसे सर दर्द,—प्रारम्भिक अवस्था,—माथा भरा और भारयुक्त, ललाट और कनपटीमें टपकके साथ सरमें चक्कर आना, चेहरेपर गर्मी मालूम होना, माथा सुन्नकी तरह और शरीरमें सुस्ती। किसी चीजके सहारे माथा रखनेकी इच्छा होती है।

आँख।—आँखोंमें जलन करनेवाला उत्ताप और दर्द; सवेरे आँखमें बहुत दर्द होता है। दोनों आँखोंको बार बार रगड़नेकी इच्छा होती है। बाईं आँखके ऊपरी भागमें टपकाकी तरह दर्द।

मुखमण्डल।—मुँहके दाहिने पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है, मानो मक्खी घूम रही है—(आर्स, जिनसेङ्ग)। मुखमण्डल और माथा इस तरह फूल उठता है मानो उसमें विसर्प हो गया है; मुखमण्डल गर्म और फूला हुआ

मालूम होता है; रोगी बार बार दोनों आखें रगड़ना चाहता है (क्रोकस, प्लम, पलस); गण्डास्थि (गालकी हड्डी) में बहुत दर्द होता है।

मुख-विवर।—दाँतमें हाथ लग जानेसे दर्द होता है,—विशेषकर बाईं ओरके और ऊपरवाले दाँतमें दर्द होता है; मामूली ठण्डी हवा लगते ही दर्द पैदा हो जाता है (ऐलू, कैमो, कास्टि); ठण्डे पानीय बहुत दर्द पैदा करनेवाले रहते हैं (नक्स-वोम, ऐसिड-क्रूड, आर्स,कैमो, चिमे, हिप, कैल्के, मार्क, प्लैटि, स्टैफ, ऐसिड-फ्लू); जीभ,—सफेद नीला लेप चढ़ी (नीली=ऐसिड-मूर, ऐसिड-बेन, आर्स, ओपि, टैबाक)। सारे मुख-विवरमें जलन। कोई पदार्थ भी मुंहमें अच्छा नहीं लगता।

गलेके भीतर।—गलेका जखम,—जीभकी जड़के बगलवाला गह्वर ग्रन्थिमय गाढ़ा नीली आभा लिये लाल रङ्गका दिखाई देता है; दाहिनी गल-ग्रन्थिमें प्रदाह हो जाता है और वह बैंगनी रङ्गकी मालूम होती है, गलेमें सुई बेधनेकी तरह तेज दर्द मालूम होना (कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम)।

पाकस्थली।—डकार आनेपर गलेमें खट्टा पानी आ जाता है। खानेके बाद जी मिचलाने लगता है; पेट भारी मालूम होता है और बार बार डकार आती है। अन्ननाली और पाकाशयमें जलन होती है। पेटके भीतर एक मुद्राकार—(रुपयेकी तरह) अंशमें बहुत जलन होती है—पाकाशयका गोलाकार जखम (कैलि-बाई, ऐट्रोपिन, फास)। मानो फोड़ा फूल उठा है या कोखमें इसी तरहका दर्द (ऐगार, लैक-नैन)। तलपेटमें इतना दर्द होता है कि हाथ लगाते ही दर्द होने लगता है (एपिस) तलपेट और नाभि-प्रदेशमें तेज शूल मारनेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—बाएं हाथकी कोहनीके नीचेका अंश बहुत दर्द करता है,—मानो हड्डी चूर्ण विचूर्ण हो गयी है। बाएं हाथकी तर्जनीमें (Index finger) तेज दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो अंगुलहाड़ा हो गया है।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐलेन, रास; लैक-नैन; लैके, इथ्यू, ऐगार, क्रोकस, पलस, कैलि-बाई।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे ६ ठा दशमिक क्रम।

——

हाल ।

(HALL)

परिचय ।—अस्त्रियाके हाल प्रपातका पानी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— तरल क्रम ।

उपयोगिता और आभास ।—ग्रन्थियोंका फूलना, गलगण्ड, चक्षु-तारकाका ठिकराकर बाहर निकल आने जैसा मालूम होना वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध । — तुलनीय ।—नेट्रम-म्यूर, सिलिका-मेरि, एलियम-ऐनि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हिमेटाक्सिलन ।

(HÆMATOXYLON CAMPEACHIANUM)

दूसरा नाम ।—लाग उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पदार्थसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—हृत्शूल; शूल; अतिसार; बाधक; सर दर्द; अजीर्ण; गलेका जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—कैक्टस, लिलियम,-इग्नेसिया इत्यादिकी तरह इसके द्वारा कितने ही स्थानोंमें कसावटका भाव और सङ्कोचनका भाव शरीरमें पैदा हो जाया करता है। हृत्पिण्ड प्रदेशमें यह लक्षण परिपुष्ट हुआ करता है और इसीलिये यह हृत्शूल (कलेजेका दर्द) रोग (Angina pectoris) में बहु- [illegible] हृत्पिण्ड के पाससे वक्षस्थलके दाहिने पार्श्व तक [illegible] इसका एक निर्णायक लक्षण है। आगे लिखे विषय [illegible] प्राप्त

हुए हैं:—एक वर्ष पहले उन्हें प्रायः कभी कभी कलेजेमें धड़कन होती थी और उस समय बहुत मृत्यु-भय पैदा हो जाया करता था, ऐसा मालूम होता था, कि वे उसीदम मर जायँगी और इसी समय उनकी समस्त देह और हाथ पैर आदि थर थर काँपने लगते थे; वे सुन्न हो जाते और ऐसा मालूम होता था, कि वे गिर जायँगी। बहुत तरहकी दवाएँ खाईं पर कोई लाभ नहीं हुआ, अन्तमें उन्होंने सब दवाएं खाना बन्द कर दिया। एक दिन वे बैठे थे कि उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि एक अर्गल (सिटकिनी) धीरे धीरे उनके दाहिने कन्धे के सामनेवाले कोनेसे हृत्पिण्डकी ओर फैल रहा है और वही श्वासमें रुकावट पैदा करता है, उन्होंने तुरन्त हिमैटाक्सिलन इरा दशमिक क्रम दो बूंदकी मात्रामें सेवन करना आरम्भ कर दिया क्योंकि इसके लक्षणके साथ उनके लक्षणमें बहुत सादृश्य था। पर एक विपरीत भाव यह था कि—"हृत्पिण्डकी ओरसे दाहिनी ओर" न होकर "दाहिने कन्धेसे हृत्पिण्डकी ओर" होता था, पर इतने पर भी उन्हें बहुत लाभ हुआ और फिर एक वर्षसे भी अधिक समयतक उन्हें किसी तरहका दर्द या कलेजेमें धड़कन नहीं हुई। भूख न लगना और पाचन-शक्तिमें गड़बड़ी प्रायः इससे पैदा हुए सभी लक्षणोंकी सहकारिणी है। रोगीको बहुत जाड़ा मालूम होता है; पर खुली हवामें उसे आराम मिलता है।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है—गिर जानेका उपक्रम होता है (ऐको, साइक्लू, बेल, फिलेन, रास); बुद्धि गड़बड़ा जाती है, समझ नहीं सकता। रातमें सरमें दर्द होता है, और खानेके पदार्थ न पचनेके कारण, ऊपरी और निचला पेट फूलता है, मन उद्विग्न हो जाता है, जी मिचलाता है और डकारके साथ गलेमें खट्टी चीजें चढ़ आती हैं। कपालमें दर्द होता है और सर झुकानेपर वमन होनेकी तैयारी हो जाती है। ललाटके बाएँ पार्श्वसे चेहरेके बाएँ पार्श्वमें और बाईं ओरके दांततक दर्द उतर आता है (कोलो, साइजि)। दाहिने कानमें तेज दर्द होता है और गलेके भीतरतक उतर आता है।

आंख।—आंखें लाल और अश्रुनालीके ऊपर लाल-लाल छोटे-छोटे मांसाङ्कुर पैदा हो जाते हैं। आंखमें ऐसी करकराहट होती है, मानो बाल

गिर गयी है (ऐल्यू, केमि, कास्टि, जेल्स, ग्रैफ, गुयारिया, सिपि)। ऐसा मालूम होता है, मानो घूंघटके भीतरसे सब चीजें अस्पष्ट देख रहा है (कास्टि, क्रोक, सिक्लेम, जेलसि, पेट्रोल, फास, मार्क, सल्फ,)। सभी चीजें अंधेरेसे ढकी मालूम होती हैं; पढ़नेके समय अक्षर सब अदृश्य हो जाते हैं। हवा लगनेपर आँखकी बीमारी घटती है (ठण्डी हवामें घटना,=ऐसेर)।

गलेके भीतर।—गलेमें जखम,—निगलनेमें तकलीफ होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठनाली पतली हो गयी है; बार-बार जम्हाई आती है और अंगड़ाई लेता है। साथ ही उसे ऐसा मालूम होता है मानो गलेमें कुछ अटका हुआ है (ऐमोनियेक, बेराई, बेल, ग्रैफ, लेके, नेट-म्यूर, फाइटो, सैबाड, सिपि)।

पाकाशय आदि।—ऊपरी पेटमें दबाव मालूम होता है, डकार आती है और पेट फूलता है, तथा दर्द करता है (ऐमोन-कास्टि, लाई, हिप, जिङ्कम)। पेटमें दर्द होनेपर बार बार जम्हाई आती है (केस्टोर) और अंगड़ाई लिया करता है (ऐमिल)। आँतोंके शूलमें (in colic) पेटमें इतना दर्द होता है कि हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। पेट फूलता और कड़ा हो जाता है और ऐसा दर्द होता है, मानो कुछ गड़ गया है। पेट गड़गड़ाता है, दस्त पतले आते हैं, मलद्वारमें काटनेकी तरह दर्द होता है। हाथ पैर कमजोर हो उठते हैं, छातीमें धड़कन होती है। समूची देहमें गड़बड़ी मालूम होती है और जी छटपटाता है। जब शूलका दर्द घट जाता है, तब सारे शरीर में जाड़ा मालूम होने लगता है और हाथकी तलहत्थीमें जलन होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तलपेटमें दर्द,—मानो अब ऋतु होगा, (क्रोकस, टेरिब) और योनिसे सफेद आभा लिये लसदार स्राव होता है। ऋतुके समय रोगिनी बहुत कमजोर हो पड़ती है और तलपेटमें दबाव मालूम होता है (काक्यु)।

श्वास-यंत्र।—छातीसे लेकर ऊपरी पेटतक मानो जकड़ गया है ऐसा मालूम होता है और जलन होती है। हृत्प्रदेशके दर्दमें ऐसा मालूम होता मानो हृत्पिण्डके पाससे दाहिने पार्श्वतक एक शलाका (नेजा) ठेलती हुई जाती है। हृत्पिण्डकी गति बहुत तेज, उसमें बहुत दर्द और नाड़ी क्षीण, सारे शरीरमें जाड़ा मालूम होता है और तलहत्थीमें जलन होती है,—(स्प्रेलिङ्ग)

सम्बन्ध।—सदृश।—अरम, कोक्टस, लिलियम-टाइग्रिनम, नैजा (गर्म लोहेको सलाई घुसनेकी तरह मालूम होना); कोलोसिन्थ, अरम (मानों पँजरेके नीचे एक खूंटी-सी खील गड़ रही है)।

दोषघ्न।—कैम्फर

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम तक।

हैमामिलिस।

(HAMAMELIS VIRGINICA)

दूसरा नाम।—विच हैजेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूल और पल्लवकी छालसे मेदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—गर्भ-स्रावकी आशंका; आंखका काला हो जाना; चोट लगना या काला दाग पड़ना; दाह; कर्कटका जखम; क्षय कास या यक्ष्मा; सान्निपातिक ज्वर; पाकाशयका जखम; रक्तका पेशाब; रक्तमय वमन; रक्तका स्राव; बवासीर; प्रदर; यकृतसे रक्तस्राव; आर्त्तवमें विकार; अनुकल्प रजः; स्तनमें जखम; नाकसे रक्तस्राव; वात; शीताद; चेचक; अण्डकोषका प्रदाह; जरायुकी बीमारी; शिराका फूलना; जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—शरीरके कितने ही स्थानोंसे शैरिक (Venous) खूनके स्राव हीमें यह विशेष उपयोगी है, जैसे नाक, फेफड़ा, अन्त्राशय, जरायु, मसाना, खूनका रङ्ग भी ठीक हैमामिलिसके मूल अर्क की तरह गहरा लाल रङ्गका और काली आभा लिये रहता है। आर्निकाकी तरह रोगवाले अंगमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है; पेशी या सन्धिके वातका दर्द; चोटकी वजहसे किसी अंगकी त्वचाके फटने या विदीर्ण हो जानेपर और बहुत दिन पहले किसी स्थानपर चोट लगने बाद फिरसे उसी स्थानसे खून जाने लगना—इस दवासे आराम हो जाया करता है। चोटकी वजहसे आंखकी योजकत्वचामें प्रदाह, चोट लगने या जोरसे खांसनेके कारण आंखें

लाल हो जाती हैं और उनमें बहुत दर्द होता है, यह भी इसीके विषयी भूत है। शरीरके जिस किसी अंश या द्वारसे, चाहे किसी भी कारणसे गाढ़ा या काला खून निकलता हो, हैमामेलिसका प्रयोग करना चाहिये।

लक्षणावली ।

मन ।—विस्मृति-शील ; परिश्रम करने या पढ़नेकी इच्छा न होना (बिना थके बहुत देरतक अध्ययन कर सकता है=केरिका-पेपेया ; अध्ययनसे अनुराग=पेडिक्यूलस)। वीर्यस्खलनके बाद मन दुःखित और अनुतप्त हो जाता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना; सर झुकानेपर, खड़े होनेपर मानो माथेमें चक्कर आया करता है (मैग-कार्ब); जी मिचलाया करता है और सरमें चक्कर आता है इसीलिये सोनेकी इच्छा होती है। ऐसा मालूम होता है मानो एक कनपटीसे दूसरी कनपटी तक पेंचसे खूब कसा हुआ है; नाकसे रक्तस्राव के पहले माथेमें भार मालूम होता है (नाकसे खूनका स्राव होनेके पहले चेहरा लाल हो उठता है=वेल, मिलिलोट)। नाकसे खूनका स्राव होने बाद सर दर्द घट जाता है (ब्यूफो ; फेर-फास, मिलिलोट, मैग-सल्फ)।

आँख ।—ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आखें माथेसे बाहर निकल पड़ेंगी, अँगुलीसे दबानेपर कुछ देरके लिये आराम होता है और तुरन्त ही फिर दर्द पैदा हो जाता है, चोट लगनेके कारण या जोरसे खाँसी के कारण आँखकी आवरक झिल्लीके भीतर खूनका स्राव होकर आँखमें बहुत दर्द होने लगता है (आर्नि, कैलेण्डु, लिडम) प्रदाह-युक्त केशिकायें (Capillaries) सब लाल हो उठती हैं।

नाक ।—नाकसे खूनका स्राव। बहुत दिनोंसे ऐसा ही होता है ; खून शैरिक (Venous) अर्थात घोर लाल और कालिमा लिये,—जमा हुआ नहीं रहता—(क्रोटेलस) ; नाकसे खून गिरने बाद, सर दर्द घट जाता है (ब्यूफो ; फिरम-फास ; मैग-सल्फ, मिलिलोट)। अकारण, चोटकी वजहसे या कोई दूसरा स्राव रुकने कारण (Vicarious—विकल्प रक्तस्राव—आर्द्र) सर दर्द। नासारन्ध्रसे बदबू निकलती है। बार बार छींकके साथ नासारन्ध्रसे पानीकी तरह त्वचाको चप्र करनेवाले और जलन पैदा करनेवाली श्लेष्माका स्राव हुआ करता है (सिपा)

मुख-विवर।—दांतका दर्द,—चबानेके समय दांतमें किसी अस्त्रकी चोट लगनेकी तरह तेज दर्द मालूम होता है और वह दर्द गण्डास्थितक फैल जाता है। रोगी दांतमें कीड़ा न लगा रहनेपर भी दर्दकी वजहसे रातमें नींद नहीं आती। खांसनेके समय अलि-जिह्वामें डङ्क मारनेकी तरह तेज दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो वह टूट जायगी। मुख-विवर और कण्ठ बहुत सूखा,—निगलनेके समय ज्यादा परिमाणमें पानी पीना पड़ता है (गुयायेक)। गलेका जखम—दाहिनी ओरका,—दाहिनी गलग्रन्थि ज्यादा-तर फूल जाती है और लाल हो जाती है; गर्म तर हवा लगनेपर बढ़ता है; गलेके भीतरकी कैशिका शिरायें सब फूल जाती हैं।

पाकस्थली।—सवेरे खानेकी इच्छा नहीं होती। बहुत प्यास पर थोड़ा पानी पीनेसे भी तृप्ति हो जाती है (आर्स), पानीसे वितृष्णा,—पानीकी बात याद आते ही जी मिचलाने लगता है; खानेके बाद जो डकार आती है उसमें खाये हुए पदार्थका स्वाद आता है (एसिड-आक्स, फास, पल्स, सल्फ, थूजा) जी मिचलता है और सरमें चक्कर आता है। यदि स्थिर होकर सो न जाय तो कै होना चाहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ जल गयी है (डैफ, हायो, प्लैट, सैबाड, सैङ्ग्वि, सिपि)। पाकस्थलीमें भयानक टपक (ऐसाफि, बेल, चेलिडो, साइक्यू, गेल्सोज, पल्स, रियुम)। भोजनके बाद पेटमें ऐंठन होती है (बिस्मथ, कार्बो-वेज, कास्टि, ग्रेफ, हायो, लाई, नेट्र-म्यू, पल्स)। ऊपरी पेट और नाभि-प्रदेशमें जलन होती है (ऊपरी पेट जलता है=कैलेड, कैम्फो, रैफिनस,—नाभि-प्रदेशमें=ऐकी, रैफिनस, वोवि, कैन्थ, क्रोटेलस, मैग-सल्फ, एसिड-सल्फ)।

मलान्त्र और मल।—रक्तामाशय,—खूनका परिमाण बहुत अधिक—आमके साथ गाढ़ा लाल रङ्गका खूनका जमा हुआ टुकड़ा निकलता है। आन्त्रिक ज्वराधिकारमें मलद्वारसे बहुत ज्यादा परिमाणमें अलकतरेकी तरह खून निकला करता है (क्रोटेलस)। अर्शसे बहुत ज्यादा खून निकलता है; खून काला; गहरे लाल रंगका मसा; उसमें जलन होती है और ऐसा दिखाई देता है, मानों उसकी खाल उधड़ गयी है। कमरमें बहुत दर्द मानो टूट जायगी; मलद्वारमें जखम या त्वचाका क्षय होनेकी तरह मालूम होना; मसा नीले रंगका।

लाल हो जाती हैं और उनमें बहुत दर्द होता है, यह भी इसीके विषयी भूत है। शरीरके जिस किसी अंग या द्वारसे, चाहे किसी भी कारणसे गाढ़ा या काला खून निकलता हो, हैमामेलिसका प्रयोग करना चाहिये।

लक्षणावली।

मन।—विस्मृति-शील; परिश्रम करने या पढ़नेकी इच्छा न होना (बिना थके बहुत देरतक अध्ययन कर सकता है=कैरिका-पेपैया; अध्ययनसे अनुराग=पेडिक्यूलस)। वीर्यस्खलनके बाद मन दुःखित और अनुतप्त हो जाता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; सर झुकानेपर, खड़े होनेपर मानो माथेमें चक्कर आया करता है (मैग-कार्ब); जी मिचलाया करता है और सरमें चक्कर आता है इसीलिये सोनेकी इच्छा होती है। ऐसा मालूम होता है मानो एक कनपटीसे दूसरी कनपटी तक पेंचसे खूब कसा हुआ है; नाकसे रक्तस्राव के पहले माथेमें भार मालूम होता है (नाकसे खूनका स्राव होनेके पहले चेहरा लाल हो उठता है=बेल, मिलिलोट)। नाकसे खूनका स्राव होने बाद सर दर्द घट जाता है (ब्यूफो; फेर-फास, मिलिलोट, मैग-सल्फ)।

आँख।—ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आखें माथेसे बाहर निकल पड़ेंगी, अँगुलीसे दबानेपर कुछ देरके लिये आराम होता है और तुरन्त ही फिर दर्द पैदा हो जाता है, चोट लगनेके कारण या जोरसे खाँसी के कारण आँखकी आवरक झिल्लीके भीतर खूनका स्राव होकर आँखमें बहुत दर्द होने लगता है (आर्नि, कैलेण्डु, लिडम) प्रदाह-युक्त कैशिकाएँ (Capillaries) सब लाल हो उठती हैं।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव। बहुत दिनोंसे ऐसा ही होता है; खून शैरिक (Venous) अर्थात घोर लाल और कालिमा लिये,—जमा हुआ नहीं रहता—(क्रोटेलस); नाकसे खून गिरने बाद, सर दर्द घट जाता है (ब्यूफो; फेरम-फास; मैग-सल्फ, मिलिलोट)। अकारण, चोटकी वजहसे या कोई दूसरा स्राव रुकने कारण (Vicarious—विकल्प रक्तस्राव—आदि) सर दर्द। नासारन्ध्रसे बदबू निकलती है। बार बार छींकके साथ नासारन्ध्रसे पानीकी तरह त्वचाको क्षय करनेवाले और जलन पैदा करनेवाली श्लेष्माका स्राव हुआ करता है (सिपा)

मुख-विवर।—दाँतका दर्द,—चबानेके समय दांतमें किसी अस्त्र चोट लगनेकी तरह तेज दर्द मालूम होता है और वह दर्द गण्डास्थितक फै जाता है। रोगी दांतमें कीड़ा न लगा रहनेपर भी दर्दको वजहसे रात नींद नहीं आती। खांसनेके समय अलि-जिह्वामें डङ्क मारनेकी तरह ते दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो वह टूट जायगी। मुख-विवर औ कण्ठ बहुत सूखा,—निगलनेके समय ज्यादा परिमाणमें पानी पीना पड़ता (गुयायेक)। गलेका जखम—दाहिनी ओरका,—दाहिनी गलग्रन्थि ज्यादा तर फूल जाती है और लाल हो जाती है; गर्म तर हवा लगनेपर बढ़ता है गलेके भीतरकी कैशिक शिरायें सब फूल जाती हैं।

पाकस्थली।—सवेरे खानेकी इच्छा नहीं होती। बहुत प्यास पर थोड़ा पानी पीनेसे भी तृप्ति हो जाती है (आर्स), पानीसे वितृष्णा,—पानीकी बात याद आते ही जी मिचलाने लगता है; खानेके बाद जो डकार आती है उसमें खाये हुए पदार्थका स्वाद आता है (ऐसिड-आक्स, फास, पल्स, सल्फ, थूजा) जी मिचलता है और सरमें चक्कर आता है। यदि स्थिर होकर सो न जाय तो कै होना चाहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ जल गयी है (डैफ, हायो, प्लैट, सैबाड, सैङ्ग्वि, सिपि)। पाकस्थलीमें भयानक टपक (ऐसाफि, बेल, चेलिडो, साइक्ल, गैम्बोज, पल्स, रियुम)। भोजनके बाद पेटमें ऐंठन होती है (बिसमथ, कार्बो-वेज, कास्टि, ग्रैफ, हायो, लाई, नेट्र-म्यू, पल्स)। ऊपरी पेट और नाभि-प्रदेशमें जलन होती है (ऊपरी पेट जलता है=कैलेड, कैम्फो, रैफेनस,—नाभि-प्रदेशमें=ऐको, रैफेनस, ब्रोवि, केल्म, क्रोटेलस, मैग-सल्फ, ऐसिड-सल्फ)।

मलान्त्र और मल।—रक्तामाशय,—खूनका परिमाण बहुत अधिक—आमके साथ गाढ़ा लाल रङ्गका खूनका जमा हुआ टुकड़ा निकलता है। आन्त्रिक ज्वराधिकारमें मलद्वारसे बहुत ज्यादा परिमाणमें अलकतरेकी तरह खून निकला करता है (क्रोटेलस)। अर्शसे बहुत ज्यादा खून निकलता है; खून काला; गहरे लाल रंगका मसा; उसमें जलन होती है और ऐसा दिखाई देता है, मानों उसकी खाल उधड़ गयी है। कमरमें बहुत दर्द मानो टूट जायगी; मलद्वारमें जखम या त्वचाका क्षय होनेकी तरह मालूम होना; मसा नीले रंगका।

श्वासयंत्र ।—रक्त-कास (Hœmoptysis),—कण्ठमें या वक्षमें पिट-पिट कर खाँसी आती है और मुंहमें खून या गन्धकका स्वाद आता है; शिरासे रक्त निकल कर कण्ठमें जमा होता है और प्रायः आपसे आप और सहजमें ही निकल जाता है; प्रति मास इसी तरह खून-भरा कफ निकलता हैं और कभी कभी दो चार वर्ष तक ऐसा ही हुआ करता है। बवासीरसे बहुत थोड़ी मात्रामें खूनका स्राव होनेपर भी रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है—मानो बहुत ज्यादा खून निकल गया है। (हाइड्रेस्ट)।

पेशाब ।—बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ा लाल रंगका पेशाब। खूनका पेशाब,—मूत्रग्रन्थि या दोनों मसानोंकी शिरायें खूनसे भर जाती हैं और उनमें बाहरकी ओर दर्द होता है। मूत्रनालीमें उत्तेजनाके कारण खून निकला करता है और पेशाबके समय जलन होती है (कैनाब, कैन्थ, कैप्स)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—रातमें अनजानमें वीर्यपात होकर (चिङ्को, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि, सल्फ); माथेमें दर्द पैदा हो जाता है और मन खराब हो जाता है। लिङ्गमें कड़ापन और बहुत अधिक आलिङ्गनकी इच्छा, अण्डकोषमें तेज स्नायुशूल,—दर्द एकाएक अण्डकोषसे तलपेटमें चला आता है और इसी वजहसे जी मिचलाता है और रोगीको कमजोरी मालूम होती है। दर्द रेतोरज्जु (शुक्ररज्जु) से अण्डकोषमें उतर जाता है (पल्स, रास)। अण्डकोष-प्रदाह या एकशिरा; रोगी अण्डकोषमें बहुत दर्द होता है और फूल जाता है (अरम, क्लिमेट, कोना, नक्स-वोम, पल्स, ऐको, स्पञ्जि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—डिम्बाधार-प्रदाह (Ovaritis),—चोट आदि की वजहसे समूचा तलपेट इतना अकड़ जाता है कि रोगिनी उसमें हाथ नहीं लगाने देती और ऋतुके समय यह दर्द बढ़ जाता है (ऐक्टि,पल्स) ऋतुस्राव,—गहरे लाल रंगका कालिमा लिये और बहुत ज्यादा (ब्राई, कैमो क्रोकस, फेरम, इग्ने, नाइट्रिकम, प्लैट, पल्स)। जरायु-स्राव (Metrorrhagia),—शैरिक या धामनिक,—ऊँचे नीचे रास्ते पर गाड़ीमें घूमनेकी वजहसे; त्रिकास्थिमें ऐसा मालूम होता है, मानो नीचेकी ओर खींचता है—इस ढङ्गका दर्द होता है। बाधक,—पीठके पीछे और तलपेटमें प्रचण्ड दर्द और यह दर्द पैरतक उतर आता है। माथा और पेट भरा हुआ या भारी मालूम

होता है ; समूचे माथेमें तेज दर्दकी वजहसे घोर निद्रा या आच्छन्नावस्था पैदा हो जाती है और शिराएँ सब फूल उठती हैं (Varicose Veins) (ऐस्बा) ऋतु बन्द होकर नाक या पेटसे रक्तस्राव,—विकल्प रजः (Vicarious Menses=ब्राई, इपियोन)। प्रदर—योनिपथ दर्द-भरा; स्राव रक्तभरा और बहुत ज्यादा (ऐसिट-टार्ट, सिङ्को, काफ्यु, स्यूरैक्स, ऐसिड-सल्फ)। योनि छूने नहीं देती और छूते ही योनि-पथ सङ्कुचित हो जाता है (Vaginismum=इग्ने, प्लम, साइलि)। स्तनकी घुंड़ीमें घाव। सूतिका-स्तम्भ अर्थात् गर्भावस्थामें या प्रसवके बाद जंघाकी शिराएँ फूली और प्रदाह-भरी हो जाती हैं (ऐको, पल्स, विस्मथ)। शिराओंका फैलना (Varices=ऐसिड-फ्लू, पल्स, फेरम-फास, प्लम्ब) प्रसवके बाद पेटमें दर्द (ऐण्टिम, हैमामिलिसका बाहरी प्रयोग बहुत लाभदायक है।)

श्वास-यन्त्र।—नींद खुलनेपर स्वर-भङ्ग (बोवि, कार्बो-वेज, नक्स-मोम) सोनेके समय साँस रुकनेका उपक्रम (डिजि, फास, सेम्बु)। स्वर-नालीमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है; नींद खुलनेपर मुंहमें रक्तका स्वाद आता है (विस्मिथ, ऐल्यू, ऐमोन-कार्ब, ऐसार); सूखी खाँसी, खाँसनेके समय अलि-जिह्वामें सुई वेधनेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होना मानो अलिजिह्वा फट जायगी; कफ गाढ़ा पीली आभा लिये या फीका हरा और सड़ा (Putrid) स्वाद पैदा कर देनेवाला, रक्त-कास। गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है; मुंहमें खून या गन्धकका स्वाद आता है। वक्षस्थलमें कसा-वटका भाव, फिफड़ेमें रक्त इकट्ठा होकर श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है और इसी वजहसे रोगी सो नहीं सकता। माथेमें भार मालूम होता है; चित्त स्थिर और उद्वेग शून्य हो जाता है। दोनों फिफड़ेके नीचे ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी हो, लम्बी साँस खींचने पर मालूम होता है मानों छाती जकड़ गयी है और हृद्‌प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानों काँटा गड़ गया है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनकी कशेरुकामें जखमकी तरह दर्द, ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो घाव हो गया है। कमरमें इतना दर्द हुआ करता है, मानों टूट जायगी (ऐल्यू, केलि-कार्ब, वेरियोल)। बायें पखुरेके कोनेमें लगातार दर्द हुआ करता है (क्युप्रम, आर्स, रैनान-क्युल)। दोनों पैरोंके सन्धिस्थानमें भार मालूम होता है और कमरमें

श्वासयंत्र।—रक्त-काश (Hœmoptysis),—कण्ठमें या वक्षमें पिट-पिट कर खाँसी आती है और मुंहमें खून या गन्धकका स्वाद आता है; शिरासे रक्त निकल कर कण्ठमें जमा होता है और प्रायः आपसे आप और सहजमें ही निकल जाता है; प्रति मास इसी तरह खून-भरा कफ निकलता हैं और कभी कभी दो चार वर्ष तक ऐसा ही हुआ करता है। बवासीरसे बहुत थोड़ी मात्रामें खूनका स्राव होनेपर भी रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है—मानो बहुत ज्यादा खून निकल गया है। (हाइड्रैस्ट)।

पेशाब।—बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ा लाल रंगका पेशाब। खूनका पेशाब,—मूत्रग्रन्थि या दोनों मसानोंकी शिरायें खूनसे भर जाती हैं और उनमें बाहरको ओर दर्द होता है। मूत्रनालीमें उत्तेजनाके कारण खून निकला करता है और पेशाबके समय जलन होती है (कैनाब, कैन्थ, कैप्स)।

पुं-जननेन्द्रिय।—रातमें अनजानमें वीर्यपात होकर (सिङ्को, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि, सल्फ); माथेमें दर्द पैदा हो जाता है और मन खराब हो जाता है। लिङ्गमें कड़ापन और बहुत अधिक आलिङ्गनकी इच्छा, अण्डकोषमें तेज स्नायुशूल,—दर्द एकाएक अण्डकोषसे तलपेटमें चला आता है और इसी वजहसे जी मिचलाता है और रोगीको कमजोरी मालूम होती है। दर्द रेतोरज्जु (शुक्ररज्जु) से अण्डकोषमें उतर जाता है (पल्स, रास)। अण्डकोष-प्रदाह या एकशिरा; रोगी अण्डकोषमें बहुत दर्द होता है और फूल जाता है (आरम, क्लिमेट, कोना, नक्स-वोम, पल्स, ऐको, स्पञ्जि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधार-प्रदाह (Ovaritis),—चोट आदि की वजहसे समूचा तलपेट इतना अकड़ जाता है कि रोगिनी उसमें हाथ नहीं लगाने देती और ऋतुके समय यह दर्द बढ़ जाता है (ऐक्टि,पल्स) ऋतुस्राव,—गहरे लाल रंगका कालिमा लिये और बहुत ज्यादा (आई, कैमो क्रोकस, फेरम, इग्ने, नाइट्रिकम, प्लैट, पल्स)। जरायु-स्राव (Metrorrhagia),—शैरिक या धामनिक,—ऊँचे नीचे रास्ते पर गाड़ीमें घूमनेकी वजहसे; त्रिकास्थिमें ऐसा मालूम होता है, मानो नीचेकी ओर खींचता है—इस ढङ्गका दर्द होता है। बाधक,—पीठके पीछे और तलपेटमें प्रचण्ड दर्द और यह दर्द पैरतक उतर आता है। माथा और पेट भरा हुआ या भारी मालूम

होता है ; समूचे माथेमें तेज दर्दकी वजहसे घोर निद्रा या आच्छन्नावस्था पैदा हो जाती है और शिराएँ सब फूल उठती हैं (Varicose Veins) (ऐब्ब्रा) ऋतु बन्द होकर नाक या पेटसे रक्तस्राव,—विकल्प रज: (Vicarious Menses=ब्राई, इपियोन)। प्रदर—योनिपथ दर्द-भरा ; स्राव रक्तभरा और बहुत ज्यादा (ऐसिट-टार्ट, सिङ्को, काक्यु, म्यूरेक्स, ऐसिड-सल्फ)। योनि छूने नहीं देती और छूते ही योनि-पथ संकुचित हो जाता है (Vaginism=इग्ने, प्लम, साइलि)। स्तनकी घुंड़ीमें घाव। स्तिका-स्तम्भ अर्थात् गर्भावस्थामें या प्रसवके बाद जंघाकी शिराएँ फूली और प्रदाह-भरी हो जाती हैं (ऐको, पल्स, विस्मथ)। शिराओंका फैलना (Varices=ऐसिड-फ्लू, पल्स, फेरम-फास, प्लम्ब) प्रसवके बाद पेटमें दर्द (ऐपिस्म, हैमामिलिसका बाहरी प्रयोग बहुत लाभदायक है।)

श्वास-यन्त्र।—नींद खुलनेपर स्वर-भङ्ग (बोवि, कार्बो-वेज, नक्स-वोम) सोनेके समय सांस रुकनेका उपक्रम (डिजि, फास, सैम्बु)। स्वर-नलीमें सुरसुरी होकर खांसी आती है ; नींद खुलनेपर मुंहमें रक्तका स्वाद आता है (बिस्मिथ, ऐल्यू, ऐमोन-कार्ब, ऐस्सार) ; सूखी खांसी, खांसनेके समय अलि-जिह्वामें सुई बेधनेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होना मानो अलिजिह्वा फट जायगी ; कफ गाढ़ा पीली आभा लिये या फीका हरा और सड़ा (Putrid) स्वाद पैदा कर देनेवाला, रक्त-कास। गलेमें सुरसुरी होकर खांसी आती है ; मुंहमें खून या गन्धकका स्वाद आता है। वक्षस्थलमें कसा-वटका भाव, फेफड़ेमें रक्त इकट्ठा होकर श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है और इसी वजहसे रोगी सो नहीं सकता। माथेमें भार मालूम होता है ; चित्त स्थिर और उद्वेग शून्य हो जाता है। दोनों फेफड़ेके नीचे ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी हो, लम्बी सांस खींचने पर मालूम होता है मानों छाती फाड़ गयी है और हृद्‌प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानों कांटा गड़ गया है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनकी कशेरुकामें जखमकी तरह दर्द, ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो घाव हो गया है। कमरमें इतना दर्द हुआ करता है, मानों टूट जायगी (ऐल्यू, केलि-कार्ब, वेरियोल)। बायें पखुरेके कोनेमें लगातार दर्द हुआ करता है (क्युप्रम, आर्स, रैनान-क्युल)। दोनों पैरोंके सन्धिस्थानमें भार मालूम होता है और कमरमें

ऐसा दर्द होता है, मानो काट रहा है (बार्बा, सिङ्को, कास्टि, ऐसिड-फास, रोडोड); प्रत्यङ्गोंमें कमजोरी और थकावट मालूम होती है (आर्नि, ब्राइ, ग्रेफ, आयोड)। वातकी वजहसे पेशियोंमें बहुत दर्द होता है। दोनों बाहुओंके ऊपरी अंशमें और कन्धेमें इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो चोट लगी है; हिलने-डोलनेपर बढ़ना; बायें कन्धेके शिखर-देशमें, दाहिने पखुरेके नीचे और दाहिने बगलके नीचे भयानक दर्द मालूम होता है; दिनके समय और विश्रामके अवसरपर बढ़ जाता है (क्यूप्रम, युफ्रे, पल्स, रोडो), रातमें बिलकुल ही नहीं रहता। वात वेदना,—बाएँ बाहुमें लगातार दर्द होता रहता है। बाईं कलाईमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानों छुरीसे काटता है (ऐल्यू, बोवि, हेलिबो, रियुटा, सेबाई, ऐसिड-आक्सेल, सिपि, सल्फ)। तलहत्थी फटी फटी। उरुकी हड्डी और उरुकी पेशीमें मानो घाव हो गया है या चोट लग रही है—ऐसा दर्द होता है। तीसरे पहर जानु-सन्धि क्षीण मालूम होती है;—फूली हुई शिराके भीतर ऐसा दबाव मालूम होता है, मानो फट जायगी और उसमें हाथ लगानेसे दर्द होता है।

त्वचा।—शीत स्फोट (जाड़ेके दिनोंके फोड़े) या फूली हुई शिरा या उसीकी वजहसे जखममें इस ढङ्गका दर्द होता है मानो काँटा गड़ रहा है। काला दाग (फास, रास, क्रोटेलस)। आगमें जल जानेके कारण शरीरकी बाहरी त्वचाका ध्वंस हो जाना (टेरिब, कैन्थरिस)। शिरा-प्रदाह (Phlebitis),—उसमें इतना दर्द होता है, कि छूनेसे ही दर्द होने लगता है (प्रसवके बाद = पल्स)।

वृद्धि।—हिलने-डोलने तथा मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे; निर्मल हवा लगनेपर; बर्सातके दिनोंमें और गर्म तर हवामें; गर्म घरमें (दाँतका दर्द) और छूते ही; दर्द दिन और विश्रामके समय बढ़ जाता है; रातमें बिलकुल ही नहीं रहता।

सम्बन्ध।—(खूनका स्राव और खूनके स्रावकी प्रवणताके सम्बन्धमें) अनुपूरक—फेरम।

दोषघ्न।—आर्निका; चायना; पल्स (दाँतका दर्द)।

सदृश।—आर्नि, केलेण्डियुला (आँखका भीतरी स्राव बन्द करनेके सम्बन्धमें हैमामेलिस—आर्निका और केलेण्डुलाकी अपेक्षा उत्कृष्ट है);

ऐसिड फ्लू, फास सिकेलि, लैके, ऐसिड-नाइ, ऐल्टिया-रेसि। (रक्तस्रावसे पैदा हुई बीमारी आदिके सम्बन्धमें) सिङ्कोना। (खूनका स्राव कितना ही क्यों न हो रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती) हाइड्रेस्टिस, ऐसिड-सल्फ, थैलिस-पैरेन, ट्रिलियम-पेन)। (अर्शके सम्बन्धमें) ऐसिड-म्यूर, कैल्के-फ्लू, ऐलो।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ ठा शततमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व।—एकसे ७ दिन।

हैक्ला लावा।
(HECLA-LAVA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—"हैक्ला" नामक ज्वालामुखीकी आगसे निकली हुई राखसे यह दवा तैयार की जाती है। पहले विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,— हड्डीकी बहुत सी बीमारियां; स्तनका छोटा होना; स्नायुशूल; अंगुलहाड़ा।

उपयोगिता और आभास।—अस्थि और दोनों हनु, इनपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। हनु-अस्थिका बढ़ना (Exostosis), दाँतका दर्द, मसूढ़ेका फोड़ा और बच्चोंके दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ आदिमें विशेष लाभदायक है; अधिककर हड्डीका प्रदाह (Osteitis), अस्थि-वेष्टनी प्रदाह (Periostitis), अस्थि कर्कट (Osteo Sarcoma)। वगैरह अस्थि रोगमें यह आश्चर्य-जनक कार्य करता है। हड्डीके अन्तिम भागका प्रदाह। बच्चोंकी हड्डीमें चीणता (Rachitis) रोगमें भी यह विशेष हितकर है।

लक्षणावली।

मस्तक आदि।—सरमें चक्कर आता है और सभी चीजें ऐसी मालूम होती हैं, कि कभी ऊपर उठती हैं, कभी नीचे उतरती हैं, कभी बायीं बगलकी ओर बढ़ती जाती हैं। उपदंश दोषकी वजहसे नाककी हड्डीका जखम। कीड़े लगे दाँत या दाँतकी जड़वाले खुले हुए स्नायुमें उत्तेजनाकी वजहसे मुखका स्नायुशूल

पक्षाघातकी तरह प्रायः सुन्न हो पड़ते हैं,—रोगिनी न खड़ी हो सकती है, और न हिल-डोल सकती हैं,—जरा भी हिलनेपर दर्द बहुत बढ़ जाता है। शरीरकी सभी पेशी-मण्डलियां फड़का करती हैं (ऐगार, ऐम्ब्रो, हायो, ओपि, पेट्रोल, प्लम, इग्ने, जिङ्कम)।

वृद्धि ।— शरीर हिलाने, खाने-पीने बाद और छूने या दबानेपर।

घटना ।—सोनेपर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐगार, बेल, सिपि, लिलियम-टाई, मैन्या-पाइप, प्लेट, टैबाक ओलियम,

शक्ति ।—१ म दशमिक से ६ ठे दशमिक क्रम तक ।

हेडेरा हेलिक्स ।
(HEDERA HELIX)

दूसरा नाम ।—आयन आइवि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नये ढंगसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—मस्तिष्कमें जल-सञ्चयकी पुरानी बीमारीकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। आँखका मोतियाबिन्दु, विषन्नता प्रभृति लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध ।—ऐरेलिया-रेसि, जिनसेङ्ग, सिलिका, नेट्रम-म्यूर ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

हिडिसेरस इल्डिफोनसियेनस ।

(HEDYSARUM ILDIFONSIANUM)

दूसरा नाम ।—हिडिसेरम-कैंम्रोडियम, केरापिको ।

उपयोगिता और आभास ।—पु'-जननेन्द्रियका प्रदाह, प्रमेह, प्रमेह से पैदा हुआ आँखोंका प्रदाह वगैरह लक्षणोंमें इससे विशेष सुफलकी आशाकी जा सकती ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐपिस, कैन्थरिस, कोपेवा, थूजा ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हिलियैन्थस ।

(HELIANTHUS ANNUS)

दूसरा नाम ।—सन फ्लावर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समस्त फूल और बीजसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— सर्दी ; कब्जियत ; नाकसे खून गिरना ; अर्श ; प्लीहाकी बीमारी ; गलेका जखम ; आमवात ; वमन : जखम आदि ।

उपयोगिता और आभास ।—प्लीहा बढ़नेकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है । पुराने सविराम ज्वराधिकारमें किनिनम-सल्फसे बोखार बन्द होनेके बाद हिलियैन्थसका प्रयोग करनेपर फिर बोखार आनेकी सम्भावना नहीं रहती । मिचली और वमनके साथ पाकस्थलीकी बीमारी, अर्श, काले रङ्गका मल, वगैरह इसके क्रियाफल या लक्षण हैं, पेटके दर्द आदिका वमनके बाद घट जाना, आमवात आदिकी तरह उद्भेद आदि भी इसके क्रिया-फल हैं ।

लक्षणावली।

पाकाशय आदि।—जीभ और जिह्वामूलके पार्श्वके दोनों गह्वर (Fauces) लाल और शुष्क हो जाते हैं। खानेके समय पदार्थ बहुत गर्म मालूम होते हैं। गलेमें अकड़न और सूखापन। खाते ही पाकस्थली और कण्ठनालीमें ऐसा मालूम होता है, मानो वे आगसे जल गये हैं। जिह्वामूल पार्श्व-स्थित दोनों गह्वर, अन्ननाली और ऊपरी पेटमें बहुत जलन होती है। पेटका दर्द आदि वमन होनेपर घट जाता है (फेरम, कैलि-ब्राइ, नक्स-वोम; रोगी कहता है—"यदि एकबार कै हो जाये तो मेरी सब तकलीफें घट जायें"—नक्स-वोम)। प्लीहा बड़ी और उसमें दर्द (सियेनोथस)। अर्श, वीर्यस्खलन के साथ काले रङ्गका पतला दस्त, एक दिनका अन्तर देकर कड़ा काला दस्त (लेप्टाण्ड्रा)।

श्वास यंत्र।—तीसरे पहर खांसी आती है और टुकड़ा टुकड़ा खून भरा कफ निकलता है (किनिन-सल्फ, लोरोसि)। श्वास प्रश्वास तेज और उसमें तकलीफ होती है।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि।—बाएँ घुटनेमें वातका दर्द (कैलि-बाई)—सीढ़ीसे उतरनेमें दर्द होता है (कैनाब, वेरेट; चढ़नेके समय दर्द होता है=ऐल्यु, प्लम)। समूची देह लाल और गर्म हो उठती है। घुटनेके भीतरकी ओर एक साथ ही कितनी ही लाल छोटी छोटी फुन्सियां निकलती हैं, जिनमें बहुत खुजली होती है (ऐनाक, ऐसिट-क्रूड, लेके, मार्क, ऐसिड-फास, थूजा)। बांहुकी कोहनीके भीतरकी ओर कितने ही आमवात जैसे चकत्ते निकलते हैं। नाभिके दाहिनी ओर छोटी छोटी दादकी तरह लाल फुन्सियाँ दिखाई देती हैं। शरीरपर जगह जगह चुनचुनी होती है (ऐको, कोकस, कोलचि, एसिड-सल्फ, मिडोरिन)। बाहरी उत्ताप लगनेपर चर्मरोग बढ़ जाता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—सियेनोथस, ऐमेर (प्लीहा); लेपटैन (काले रङ्गका मल); आर्निका, हाइपिर (जखम)।

शक्ति।—मूल अर्क से ३० शततमिक क्रम।

———

हेलियो ट्रोपियम।

(HELIO TROPIUM)

दूसरा नाम।—चेरि-पाई।

उपयोगिता और आभास।—इसका निर्देशक लक्षण है, **स्वरभंग और गलेका जखम। जरायुका अपने स्थानसे हटना,** श्वेतप्रदर, कमरमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें नेट्रम-क्लोरेटमके साथ इसका विशेष सादृश्य है। पर ऐसे स्थानपर इनमें यह प्रभेद है, कि नेट्रम क्लोरेटममें जरायुकी स्थूलता और गुरुत्वके कारण ऐसा मालूम होता है कि जरायु बाहर निकल पड़ेगा और हेलियो ट्रोपियममें जरायु वास्तवमें बाहर निकल पड़ता है।

काष्टरज, ऋतुके रक्तके साथ झिल्लीकी तरह पदार्थका स्राव (बोरेक्स) लक्षणमें भी यह लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बोरैक्स, सिफिलिनम, नेट्रम-क्लोरेटम।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

हेलिक्स टोस्टा।

(HELIX TOSTA)

दूसरा नाम।—रोस्टेड स्नेल; ताजी सीप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—बहुत प्राचीन कालसे सीप यक्ष्मा रोगकी एक बहुत बढ़िया दवा मानी जाती है। होमियोपैथिके मतसे यक्ष्मा और खाँसीके-साथ रक्तस्रावके लक्षणमें इसकी निम्नशक्तिका प्रयोग करनेपर बहुत जल्दी रक्तस्राव बन्द हो जाता है और यक्ष्मा रोगके अन्यान्य लक्षण भी अच्छे हो जाते हैं।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

हेलिबोरस फेटिडस।

(HELLEBORUS FŒTIDUS)

दूसरा नाम।—वियर्स फुट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट बनता है।

उपयोगिता और आभास।—हैजा, केश और नख गिर जाना, चर्म उधड़ जाना, वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—हेलिबो-नाइग्रा, हेलिबोरस वाइरि, विरेट्रम-ऐल्ब, कोल्चि।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

हेलिबोरस नाइजर।

(HELLEBORUS NIGER)

दूसरा नाम।—ब्लेक हेलिबोर; क्रिसमस रोज।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—डा० एलेन कहते हैं—"दुर्बल, रोगग्रस्त बच्चोंकी बीमारियां, जिन्हें सहज ही मस्तिष्ककी बीमारी हो जाती है; औषधपरायण; विपन्न, हताश मनुष्योंकी बीमारीमें उपयोगी है। अण्डलाल मिला पेशाब; अतिसार; शोथ; मृगी; सर-दर्द; आंत उतरना; कोरण्ड; मस्तिष्कोदक रोग; मसानेमें खूनकी अधिकता; विषादोन्माद; रातके समयका अन्धापन; रतौन्धी; सूतिकाक्षेप; आरक्त ज्वर; सान्निपातिक ज्वर; जखम; धनुष्टङ्कार; इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान आक्रमणस्थल मस्तिष्क है और मस्तिष्कावरक झिल्ली। मस्तिष्कोदक, मस्तिष्ककी आवरक झिल्लीका प्रदाह और बच्चोंके दांत निकलनेके समयके मस्तिष्कके प्रदाहके समान

लक्षण सब इसमें प्रकट होते हैं। डा० नेशकी पुस्तकमें लिखा है—"रोगी बीच बीचमें चिल्ला उठता है और तकियेके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक सर हिलाया करता है; मोहमें पड़े रहनेकी तरह नींद; चारों ओर क्या हो रहा है यह जाननेकी शक्तिका न रहना; पानी देनेपर बड़े आग्रहके साथ पिया करता है; ललाटकी त्वचा सिकुड़ी और ठण्डे पसीनेसे भरी। मानो कुछ खा रहा है इस तरह मुंह चलाता रहता है; आँखकी पुतली फैली और अधिक समयतक सुनने या समझनेकी शक्ति नहीं रहती; एक हाथ और एक पैर हमेशा हिलाया करता है और दूसरा हाथ तथा पैर सुन्नकी तरह पड़ा रहता है; पेशाब या तो बहुत थोड़ा होता है या बिलकुल होता ही नहीं है और काफीकी तलीकी तरह तली पड़ती है। नीचे लिखे कई इसके निर्णायक लक्षण हैं:—रोगी बेहोश और ज्ञान-शक्तिसे रहित होता है, कोई बात पूछनेपर धीरे धीरे उत्तर देता है। बेहोशीवाली अवस्थामें ओंठ, वस्त्र और नासारन्ध्र नोंचा करता है। मस्तिष्कोदक रोगमें गर्भावस्थामें या दाँत निकलनेके समय उदरामय।

लक्षणावली।

मन।—विमर्ष, दुःखित, निराश चित्त; चुपचाप बैठा रहता है (आन्त्रिक ज्वरके बाद या पहली जवानीमें जब एक बार ऋतु होकर फिर बन्द हो जाता है)। चिड़चिड़ा स्वभाव या सामान्य कारणसे ही क्रोधित हो जाना; समझाने या सान्त्वना देनेपर क्रोध आ जाता है (इग्ने, नेट-कार्ब, सिपि, साइलि)। यदि कोई उसकी शान्ति भङ्ग करता है, तो चिढ़ उठता है (जेल्स, नेट-कार्ब)। जड़-बुद्धि, बोध शक्तिका न रहना; कोई बात पूछने पर धीरे धीरे उत्तर देता है (जवाब देता देता सो जाता है=बैप्टी; उत्तर नहीं देता=ऐगार, ऐसिड-सल्फ, सेबाड; जल्दी जल्दी उत्तर देता है=ऐक्टी, साइना, रास;—सवाल पूछनेपर चिढ़ जाता है=कोलो,—धीरे धीरे उत्तर देता है=हेलिबो, मार्क, फास, ऐसिड-फास—असम्बद्ध उत्तर देता है=हायो, नक्स-मस, बेलि,—अनिच्छाके साथ उत्तर देता है=कैरिका-पिपेया, रास, ऐसिड-सल्फ,—कर्कश भावसे उत्तर देता है=कैमो; उत्तर सम्बद्ध देता है पर बात समाप्त होते ही फिर मोहवाली अवस्थामें हो जाता है=आर्नि, ऐसिड-फास; मस्तिष्कमें गड़बड़ी रहनेपर भी सम्बद्ध उत्तर देता

है—कोलचि, कानवेल, काक्यु, आइरिस, प्लम, टिलिया)। मूर्खोकी तरह एक ओर देखता रहता है। विशेष मनोयोग दिये बिना किसी प्रत्यङ्गकी क्रिया कर नहीं सकता। बराबर ओंठ, वस्त्र और नाक खोंटा करता है (अज्ञान अवस्थामें=अरम) भागना या पानीमें कूद पड़ना चाहता है। धनुष्टङ्कार आदिके समय कोई आवाज होनेपर प्रकोपका समय घट जाता है।

मस्तक।—मिचली; पानीकी तरह दस्त और के होनेसे माथेमें चक्कर, सर झुकानेपर बढ़ता है; सीधे होकर बैठने और खड़े होनेपर फिर दर्द नहीं रहता। सरमें दर्द,—ऐसा दर्द मानो भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है; बुद्धिकी जड़ता और माथेमें भार मालूम होना; सर हिलाने या मानसिक परिश्रमसे बढ़ना; खुली हवा लगनेपर और अन्यमनस्क होनेपर घट जाता है। बच्चोंका दाँत निकलनेके समय मस्तिष्कका उत्तेजित भाव (बेल, पोडो); मस्तिष्कके भीतर रस-स्रावकी आशङ्का (एपिस, टियुबक्युलिनम)। मस्तिष्कावरण प्रदाह (Meningitis),—मस्तिष्कमें रस-स्रावकी वजहसे एक अङ्गका पक्षाघात; रोगी रह रहकर लोमहर्षण चिल्लार कर उठता है (एपिस, क्यूप्रम, हाइपिरिक); मूर्खकी तरह एक ओर देखा करता है। रोशनीका ध्यान नहीं रहता, पुतली फैली और संकुचित हुआ करती है। रोगी मोहाच्छन्नकी तरह सोया करता है। मस्तिष्कमें जल-सञ्चय,—आरक्त ज्वरके बाद मस्तिष्कमें गुटिका पैदा हो जाना और इसी वजहसे ट्यूबरक्युलर (Tubercular); रोग तेजीसे बढ़ जाता है (एपिस, सल्फ, टियुबर्क); एक हाथ और एक पैर आपसे आप चला करता है (ऐपोसिन, बायाँ हाथ और बायाँ पैर=ब्राइ)। तकियेमें माथा गड़ाया या हिलाया करता है (एपिस, पोडो) और माथेमें हाथसे आघात करता है (टियुबर्क्युलिन); शरीर ठण्डा; सर झुकानेपर दर्द बढ़ता है। मस्तिष्क-प्रदाह (Encephalitis),—रोगी बेहोश हो जाया करता है। माथा भारी और गर्म मालूम होता है; दर्दके विषयमें सोचनेपर दर्द बढ़ जाता है (कैम्फो, हेलोन, पाइपरमिथ; अनमना रहनेपर अच्छा रहता है)। नयी सर्दी मिला बेहोश करनेवाला सर दर्द,—तीसरे पहर ४ बजेसे रातके ८ बजेतक प्रकोपकी वृद्धि, माथा नीचा करनेपर बढ़ता है और विश्राम तथा निर्मल वायु लगनेसे घटता है। माथा बहुत भारी, उसमें इतना उत्ताप मानो माथा जला जाता है, अँगुलियाँ सब ठण्डी और

हरा मलिन। सरके पिछले भागमें दर्द, मानो किसीने घूंसा मार दिया है। ाथ लगानेसे ही दर्द होने लगता है और सर झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है। रोगी र पीछेकी ओर झुका दिया करता है और बार बार एक ओरसे दूसरी ओर हिलाया करता है। इस ढङ्गका दर्द मानो माथेका पिछला भाग कोई बराबर बाता है और दर्द गर्दनके पिछले भाग तक उतर आता है। माथा हिलाने, झुकाने या सीढ़ीपर चढ़नेके समय मस्तिष्कके आवरणमें चिलक मारनेकी तरह र्द होता है। माथेके और जहां केश रहते हैं अन्यान्य उन स्थानोंके केश उड़ ाते हैं, और ब्रह्मतालु तथा माथेके पिछले भागमें इस तरहका दर्द होता है, मानो ालपीन गड़ गयी है। मुंह तथा देह फूल जाती है, मानो शोथ हो गया है। स्तकके ऊपर बहुत रूसी होती है। शोथ—मस्तिष्क, वक्ष और अन्त्राशयका ोथ,—सविराम ज्वरके बाद (कच्छ, विषवाले दोष आदिके बाद=सल्फ— ांत निकलनेके समय=पोडो,—पाकाशय और अन्त्राशयके प्रदाहके ाद=जिङ्कम)।

आंख।—माथेमें पानी जमा होना (In Hydrocephalus), ोशनीका ज्ञान लोप हो जाता है (कार्बोन-सल्फ, बेराई-मूर, कार्बो-वेज, ेम्फो, चायना, इयुफ्रे, डिजि, ऐसिड-हाइड्रो, स्ट्रेमोन)। पुतली फैली या ंकुचित, या एक संकुचित और दूसरी फैली। दिनौन्धी (*Hemoralopia* —ऐको, मार्क, साइलि; रतौन्धी=Nyctalopia=हायो, पल्स); सूर्यकी रोशनी हन न होना। रोगी निर्बोधकी तरह मुंह फाड़कर टकटकी लगाकर देखा रता है (केम्फो, ऐ-हाइड्रो, हाइयि, केलि-ब्रोम, स्ट्रेम)। आंखमें दर्द,— मानो आंखके गोलेकी बगलसे एक सूक्ष्मशलाका बेधी जा रही है (आर्स)। शवनेत्र—आंखकी पुतली ऊपर उलटी रहती है (एपिस, ऐसिड-हाइड्रो, कार्बो-वेज, स्ट्रेमो)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल, गर्म, पर मलिन; मलिन, फूला हुआ और बिगड़ी हुई भाव-भङ्गी; म्लान, आंखें और दोनों गाल गड्ढेमें धंसे और रफकी तरह ठण्डे; इसके अलावा कभी कभी नीले रङ्गके और ठण्डे पसीनेसे र। ललाट या मुखमण्डलकी त्वचा सिकुड़ी हुई (ऐन्टिट, सार्सा)। मोटी ुद्धि बतानेवाला चेहरा, चेहरेके बाएं पार्श्वका स्नायुशूल,—रोगवाले अंशमें तना दर्द होता है, कि कोई पदार्थ चबा नहीं सकता। दोनों नासापुट सूखे, मैल-भरे और फूले (विशेषकर बोखारमें)। निश्वास-वायु बहुत बदबूदार।

मुख-विवर।—बराबर इस ढङ्गका मुँह बनाया करता है मानो कुछ चबा रहा है (ब्राइ,—बच्चोंकी निद्रावस्थामें = इग्ने ; यकृत रोगमें—निद्रावस्थामें=कैल्के)। दोनो ओठोंके संयोग-स्थानपर घाव हो जाता है और वह फट जाता है (काक्यु, ग्रेफ); लगातार लार बहा करती है, ओंठ सूखे और फटे। जीभ,—दोनों किनारे लाल और बीचका स्थान पीला। फूले हुए ओंठ के ऊपर सफेद रङ्गका छाला हो जाता है। निचला जबड़ा फूल जाता है (आर्नि, आर्स, कार्बो-वेज, लैके, ओपि, स्ट्रैम, जिङ्क)। दाँतपर दाँत बराबर रगड़ा करता है (सिना, पोडो, हायो, स्ट्रैमो, लाइ, बेल, सिकेलि)। मुंहके भीतर और जीभके ऊपर रसभरी फुन्सियाँ या घाव हो जाता है। जीभ फूली और सुन्न। जीभके अगले भागमें फुन्सियाँ हो जाती हैं और उनको छूनेपर डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। कण्ठमें बहुत कड़ुवा स्वाद मालूम होता है, खानेपर बढ़ता है।

पाकस्थली।—बच्चा बड़े आग्रहसे स्तन पीता है पर दूसरी चीजोंसे अरुचि दिखाता है (ऐङ्गस, डालका, ग्रेटि ; नक्स, ओपि, रियुम)। ठण्डा पानी देनेपर बड़े आग्रहसे बहुत पी जाता है ; रोगी बेहोश रहता है पर चम्मच दाँतोंसे पकड़ रखता है (मस्तिष्कमें जल-सञ्चय रोगाधिकार में)। जलसे अरुचि फिर भी अत्यधिक प्यासका होना, जो मिचलाता है, इसलिये भूख रहनेपर भी खा नहीं सकता; पेटमें बहुत दर्द होता है, काला हरा पदार्थ वमन होता है। पाकाशयसे अन्ननाली तक भयानक जलन होती है ; ऊपरी पेट फूला और पूर्ण। ऊपरी पेट पीठकी ओर खिंचता है और खाँसने या टहलनेपर पेटमें दर्द होता है। पानी पीनेपर वह गड़गड़ाकर पेटमें उतरता है (लौरो ,ऐसिड-हाइड्रो)।

अन्त्राशय।—पेटमें गड़गड़ आवाज होती है,—मानो पेटमें पानी हिलता है ; पेट फूलता है और उसमें इतना दर्द होता है कि हाथ लगने से ही दर्द मालूम होता है। उदरी—आरक्त ज्वरके बाद पेटमें पानी इकट्ठा होता है और शोथ हो जाता है ; जिस धातुके बच्चोंकी गाँठें फूल जाया करती हैं। पेटमें भयानक दर्द,—रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है, उसकी आँखें और गाल चिपक जाते हैं, मुंह सफेद हो जाता है, और चेहरेपर ठण्डा और लसदार पसीना होता है ; नाड़ी सूतकी तरह सूक्ष्म और मल पानीकी तरह पतला। दाहिने पुट्ठेमें ऐसा दर्द मानो सुई गड़ रही है और दबाव

मालूम होता है,—मानो आँतें उतरना चाहती हैं (जेल्सि-क्रू, लाई, गुयायेका, गुयारिया ; नक्स)।

मलान्त्र और मल।—नये मस्तिष्कोदक रोगमें (in acute hydrocephalus), दाँत निकलनेके समय और गर्भवतियोंका पतला दस्त; मल पानीकी तरह पतला, साफ, गाढ़े गोंदकी तरह और बिना रङ्गका,आँव अथवा सफेद रंग का थक्का थक्का आँव। मेढ़कके अण्डेकी तरह पदार्थ मिला और अनजानमें निकल जाता है। पतला पाखाना भी कष्टसे निकलता है,—ऐसा मालूम होता है मानो आँतोंमें इतना बल नहीं है, कि कोमल मलको भी बाहर निकाल फेंके (ऐनाक और हिप)। पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें जलन और कर्कराहट होती है।

पेशाब।—पेशाब,—घोर लाल या काले रङ्गका और उसमें काफीकी तलीकी तरह तली जमती है (एपिस,—आरक्त ज्वरके बाद शोथ रोगमें=ऐम्ब्रा),—आरक्त ज्वरके बाद बहुत थोड़ा थोड़ा पेशाब होता है और उसका स्रोत बहुत क्षीण रहता है ; मस्तिष्कको बीमारीमें और शोथ रोगमें पेशाबका रुक जाना ; कभी कभी पेशाब अण्डलाल मिला। बहुत चेष्टा और तकलीफके बाद कई बूंद पेशाब होता है।

श्वास-यंत्र।—श्वास-प्रश्वास दीर्घ। वक्षोदक या वक्षमें जल सञ्चय रोगमें छाती जकड़ जाती है ; रोगी मुँह फाड़कर हाँफता रहता है ; शय्यापर तकिये पर तकिया रखकर ठेस लगाकर रोगीको बैठा रखना पड़ता है। प्रतिदिवस सन्ध्याके समय श्वास-कृच्छ्रता और मानसिक उद्वेग ; रोगीको बाध्य होकर सीधे बैठ जाना पड़ता है। खाँसी,—सूखी और लगातार खाक खाककर आया करती है—खाँसनेके समय गला रुकनेका उपक्रम हो जाता है। खाँसी रातमें बढ़ती है ; तम्बाकू पीता पीता एकाएक खाँसने लगता है। सोनेपर सांसकी तकलीफ घट जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—सर हिलानेपर गर्दन अकड़ी और दर्द-भरी मालूम होती है। गलेकी गाँठें सब फूल उठती हैं। शोथ,—भीतरी और बाहरी शोथ,—साधारणतः सफेद अंश सब लाल हो जाते हैं (लाल अंश सब सफेद हो जाते हैं=फेरम) ; प्यास बिलकुल नहीं रहती (प्यासकी अधिकता=ऐसिड-ऐसेट, ऐपोसिन),—जाड़ा लगना, गर्मीसे पसीना होता है ; सन्धि और हड्डीमें

तेज दर्द। उसके ऊपरी अंशमें अस्त्र गड़नेकी तरह भयानक दर्द और जलन। दोनों पैर स्थिर नहीं रख सकता,—खड़े होनेपर घुटने हिल जाते हैं। शरीरके कितने ही अंशमें और अस्थि-वेष्टनी (Periosteum) के भीतर तेज दर्द,—निर्मल वायु लगने, शारीरिक परिश्रम करने और खाने पीनेके बाद बढ़ना। अन्यमनस्क होनेपर हाथमें पकड़ी हुई चीज गिर जाती है,—विशेष मनोयोग दिये विना कोई भी प्रत्यंग अपना काम नहीं करता। केश और नख आदि झड़ जाते हैं। जखमसे बहुत ज्यादा रस-स्राव होता है।

ज्वर।—ज्वराधिकारमें नासापुट और दोनों छेद बहुत मैले और काले हो जाता है; जीभ सूखी और पीली और उसके दोनों किनारे लाल, श्वास-प्रश्वासमें बदबू; पानी पीनेपर वह गड़गड़ शब्दके साथ पेटमें उतर जाता है। दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक बोखारका बढ़ना; चेहरा सफेद और ठण्डा; नाड़ी बहुत क्षीण; ओंठ और कपड़े नोंचा करता है। शीतके समय शरीरमें सिहरावन मालूम होती है और सन्धियोंमें दर्द हुआ करता है। चेहरा गर्म, रोगीको नींद नहीं आती; बिछावनसे उठने या हिलने-डोलनेपर बढ़ता है। ज्वर बढ़कर घट जाने बाद फिर शीत और दर्द पैदा हो जाता है; पानी अच्छा नहीं लगता; प्रतिक्षण थोड़ी मात्रामें पानी पीता है (आर्स) ज्वर या पसीनेके समय रोगी शरीरका वस्त्र नहीं उतारना चाहता (नक्स-वोम, आर्जेण्ट-नाई, हिप, सैम्बियु, स्ट्रैमो, स्ट्रैम)। पसीना ठण्डा लसदार, सोनेके बाद बहुत सामान्य पसीना होता है। पसीनेके बाद यन्त्रणा घट जाती है; पसीना होनेपर भी उत्ताप नहीं घटता।

वृद्धि।—तीसरे पहर ४ बजेसे रातके ८ बजेके भीतर, निर्मल ठण्डी हवामें शरीरका वस्त्र उतार डालनेपर; शारीरिक परिश्रमसे, हिलने डोलनेपर, माथा झुकाने और रोगके सम्बन्धमें याद आ जानेपर।

उपशम।—गर्म हवामें, अच्छी तरह देह ढक लेनेपर, सोनेपर श्वास-कृच्छ्रता घट जाती है और स्थिर होकर सोनेपर सर-दर्दमें आराम मालूम होता है; अन्यमनस्क होनेपर भी तकलीफ [illegible] जाती हैं

सम्बन्ध।—सदृश।—[illegible] डिजि, लैके, सल्फ, टियुबार्क, जिङ्क, कैलि-[illegible]। [illegible] लैके,—

रोगका विषय याद आने या सोचनेपर वृद्धि होती है=बैराइट, कैल्के फास, कास्टि, हेलोन, मिडोरिन, ऐसिड-आक्जेलि, पेट्रोल, पाइपर-मिथ।

तुलनीय।—(हथिमें तलवेटमें अत्यधिक स्पर्श-अनुभव होना; उत्तापसे अधिकता); डिजिट, (नाड़ीकी धीमी गति); फास ऐसिड (तन्द्रालुता, आच्छन्न भाव), ओपियम (प्रगाढ़ तन्द्रा); जिङ्कम (उद्भेद रुकना); लैकेसिस (पेशाबमें काफीकी चूरकी तरह तली) इत्यादि।

क्रियाका स्थायित्व।—२० दिनसे ३० दिन।

शक्ति।—निम्न-क्रमसे ३० शततमिक।

हेलिबोरस ओरियण्टेलिस।

(HELLEBORUS ORIENTALIS)

दूसरा नाम।—लेम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—उदरामय, बदहजमी; मुंहसे लार बहना और काफी पीनेपर घटनेके लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

हेलिबोरस-विरिडिस।

(HELLEBORUS VIRIDIS)

दूसरा नाम।—ग्रीन हेलिबोर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़ या नयी फुनगियोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—शूल; संन्यास; गलेका जखम उदरामय; जखम वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक हैं।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

हेलोडर्मा ।

(HELODERMA HORRIDUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके गिर्गिटके विषसे विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मस्तिष्कके तलदेशकी बीमारियां ; मस्तिष्क-मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप हो जाना ; स्नायुशूल ; सुन्न हो जाना ; कम्पके साथ पक्षाघात ; पक्षाघात ।

उपयोगिता और आभास ।—इस गिर्गिटके काटनेपर कम्पके साथ पक्षाघात (Paralysis agitans) या मेरुमज्जाके क्षय (Locomotor ataxia) की वजहसे चलनेकी शक्ति न रहनेकी तरह लक्षण पैदा हो जाते हैं। इसका विष बिजलीकी तरह तेजीसे मानव शरीरके चारों ओर दौड़ जाता है और रोगीके शरीरमें बेहद दर्द होता है। अङ्ग-प्रत्यङ्गमें पक्षाघात होनेपर भी दर्द अनुभव होनेकी शक्तिमें बिलकुल ही कमी नहीं होती ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा फटा जाता है। देहके भीतरी अंशमें मालूम होता है, कि बहुत अधिक सर्दीके कारण खून जम गया है। ऐसा अनु-भव होता है, मानो सारा शरीर जकड़ गया है। चलनेके समय थप थपकर पैर रखता है, उसे मालूम होता है, कि उसके पैरका तलवा रूईकी तरह कोमल है,—बहुत ऊंचाईपर पैर उठाकर जोरसे पटककर रखता है, मानो रास्ता ऊँचा समझकर पैर रखता था, जोरसे गिर गया,—कमर और हाथ पैरमें तेज दर्द, दोनों पैरोंमें कीड़ा रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना, सोनेके समय बढ़ना ; दोनों हाथ सुन्न ; जीभ सूखी और फटी फटी ; कोई पदार्थ निग-लनेमें कष्ट होना वगैरह कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली ।

मन ।—किसी तरहका परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं रहती (ऐगार, गुयायेक, आक्सि-डीप, ऐ-पिक, जिङ्क) ; किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता

टेट-फेरि, ऐवेन, लैक-कैन, इथ्यूजा, लाइकोपस ; मिलिलोट)। रोगके र आकार धारण करनेपर भी रोगी डरता नहीं है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—पीछेकी ओर गिर जानेकी सम्भावना ान्थि, ब्रोम, कैल्के, कास्टि, सिलि, स्पञ्जि—खड़े होनेपर पीछेकी ओर जानेका उपक्रम—सिङ्को)। माथा शून्य मालूम होता है और भीतर ठण्डा तथा बाहरको ओर ऐसा मालूम होता है कि कोई धक्का दे रहा है। मालूम होता है, मानो दाहिनी ओर गिर जायगा (कैम्फो, इयुपेट- , सिलि)। सर-दर्द,—रोगीको ऐसा मालूम होता है कि उसका माथा जायगा (ब्राई, कैल्के, ऐमोन-मूर, सिमिसि, रियुटा, वेराई, कक्कस-)। दाहिनी भौंके ऊपर दर्द। बाईं आँखके ऊपर प्रचण्ड दर्द— के भीतरसे दर्द मस्तिष्कके नीचे और वहाँसे पीठमें उतर आता है। दाहिने के ऊपरवाली शंखास्थि (Temporal bone) में तेज दर्द, ानों इस हड्डीके नीचे एक अर्बुद पैदा होकर अस्थि-फलकको भीतरको दबा रहा है। माथेके सम्पूर्ण दाहिने अंशमें भयानक दर्द होता है स-स्पाइजि, स्पञ्जि] और बाईं ओर सुन्न हो जाता है। माथेके भीतर होती है (फास, ग्लोन); माथा गर्म और भरा मालूम होता है, मानो के भीतर मस्तिष्कको स्थान ही नहीं मिलेगा (ग्लोन, क्रियो, कैल्के-)। मूर्द्धादेशमें टपक (हाइपिर, लाई, स्ट्रैमो, टेरिब, सल्फ), माथेमें दर्द होता है ;—मानो समूचे माथेमें कुछ बँधा है (सिवा, काक्कु, सिक्के- जेल्सि, जिम्नोक्लेड, हिप, आयोड, ऐसिड-नाई, सल्फ, टेरिब); माथेके में खींचन मालूम होती है (एपिस, ऐसिड-लैक्टिक, कास्टि, कैनाब-इन,)। रोगी बैठनेपर माथा गड़ाया करता है (हेलिबो, एपिस, बैल, , वेरेट-विर, डिजि, क्रोटोन-टिग)। रोगी माथेमें चिलक मारनेकी दर्दकी वजहसे जाग उठता है। पलक बहुत भारी, आँख आपसे आप हो जाती है (कास्टि, जेल्सि, ग्रैफ, सिपि)। दर्द दाहिने कानसे माथेके घूमकर बायें कानमें पहुँच जाता है।

मुखमण्डल।—मुँह गर्म मालूम होता है; रह रहकर गर्म हो है। मुँहपर मानो बरफकी सुई गड़ रही है—ऐसा मालूम होता ऐगार)।

मुख-विवर ।—जीभ ठण्डी, सूखी और उसमें दर्द। बहुत प्यास; जीभ फूली,—बहुत दिनोंतक ऐसी ही रहती है । गलेमें सूखापन, नीरसता, गलेके दाहिनी ओरकी गाँठमें ऐसा दर्द होता है मानो डंक मारता है, कोई भी पदार्थ बड़े कष्टके साथ निगल सकता है। कण्ठमें ऐसा दर्द मानो खाल उधड़ गयी है या पानी लग गया है।

पेशाब ।—बैठनेपर दाहिने मसाने या मूत्रग्रन्थिमें ऐसा दर्द मानो सुई गड़ रही है। ऐसा स्वप्न देखकर रोगीको नींद खुल जाती है, कि उसने बिछावनमें पेशाब कर दिया है। उसी समय पर्य्याप्त पेशाब होता है। पेशाब होते २ रुक जाता है मानो मूत्रस्थलीमें पथरी अटक गयी है। हरा पीला मिला रङ्ग और बदबूदार पेशाब।

श्वासयन्त्र ।—दाहिने स्तनकी घुंडीसे लेकर दाहिनी बगलतक मानो एक शलाका गड़नेकी तरह दर्द होता है, दाहिने फेफड़ेमें ठण्डक मालूम होती है,—(ऐमोन-ब्रोम, आयोड); हृत्पिण्डमें बहुत सर्दी मालूम होती है,—ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डकी गति रुककर उसकी मृत्यु हो जायगी। (नेट्र-म्यूर; पेट्रोल)। हृत्पिण्डकी धमक सारे शरीरमें मालूम होती है (ग्रेफ)। हृत्पिण्ड मानो उछलता रहता है—मानो वक्षमें उसे जगह नहीं मिलती,—सारा शरीर काँपा करता है (ग्रेटियोला)। हृत्पिण्ड मानो बाईं ओरसे दाहिनी ओर वेधा जा रहा है,—ऐसा तेज दर्द (स्पाई)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दन अकड़ जाती है (ऐको, ऐक्टि, ऐण्टि-टार्ट, कोलचि, डालका, रोडो—दाहिने पार्श्वमें=चेलिडो)। माथेके पीछेसे कमरके पिछले भाग त्रिकास्थितक जाड़ा मालूम होता है। दाहिने मसाने या मूत्रग्रन्थिमें ऐसा दर्द मानो सुई वेधी जा रही है। कँपकपीके साथ पक्षाघात: माथा और हाथ काँपता है और सुन्न तथा ठण्डा हो जाता है। बाएँ पार्श्वपर ही अधिक आक्रमण हुआ करता है (ऐण्टि-टार्ट)। चलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो रुईके ढेरपर पैर रख रहा है, मानो पैरका तलवा फूल गया है; चलनेके समय डगमगाया करता है (कास्टि)। चलनेके समय पैर ऊँचा उठाकर जोरसे जमीनपर रखता है, तलवा बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है (डिजि, ग्रेफ, ऐसिड-म्यूर, नेट्र-म्यूर, फास साइलि) अथवा उसमें जलन होती है (ग्रेफ, ऐसिड-फास, सेङ्गिवु, सिपि, साइलि, स्टेन)। अंगड़ाई लेनेपर पेशियोंका दर्द घट जाता है (ऐमिल, ग्रेफ,

कार्बो-वेज, एमोन-मूर), दर्दका बोध बहुत ज्यादा रहनेपर भी अङ्ग-प्रत्यङ्ग सुन्न हो जाते हैं और दर्द एक अङ्गसे दूसरे अंगतक तेजीसे फैल जाता है। दर्द वगैरह रातमें पैदा होता है और इसी वजहसे रोगीकी नींद खुल जाती है। ऐसी सुरसुरी होती है मानो दोनों पैरोंसे चल रहा है—रातमें सोनेपर ज्यादा सुरसुरी होती है, दोनों हाथ सुन्न। पैरके तलवेमें जलन होनेके कारण रातमें नींद खुल जाती है और आराम मिलनेकी आशासे रोगी बिछावनके बाहर पैर निकाल देता है (सेङ्गियु, सेनिकु, सल्फ, मिडोरिन)।

ज्वर।—शरीरके भीतर शीत मालूम होता है मानो भीतरकी सब चीजें जमती जा रही हैं। निचले पैरसे तरङ्गकी तरह शीत ऊपरकी ओर चढ़ता है। पीठकी राहसे मानो भयानक शीत निचले पैरकी ओर उतर रहा है। माथा और मुंहमें उत्ताप मालूम होता है और दाहिनी भौंके ऊपर थोड़ा थोड़ा दर्द होता है। निचला पैर बहुत गर्म; सारे शरीरमें उत्ताप। थोड़े ही समयमें उत्ताप चला जाता है और इसके बदले सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है। सर्द लसदार पसीना होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—ऐण्टि-टार्ट, ऐलू, (मेरु-मज्जाका क्षय); आर्जेण्ट-नाई, क्रोटेलस, मार्की-बाई, (कम्पके साथ पक्षाघात); लैके, जेल्स, कोना, लिसि; कैम्फो (कम्प या शीतलता), नेट्र-मूर, ग्रैफ।

शक्ति।—३० से १००० शततमिक क्रमतक।

हेलोनियस।

(HELONIAS DIOICA)

प्रस्तुत प्रक्रिया।—इसकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है। इसके सत या सार भागसे "हेलोनिन" विचूर्ण तैयार होता है

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पेशाबमें अण्ड-लाल; रजोलोप; मृत्पाण्डु; ऋतु होनेमें विलम्ब और कमजोरी; बहुमूत्र; बाधक; ध्वजभङ्ग; श्वेत-प्रदर; प्रसवके बादका स्राव बहुत दिनोंतक होता रहता है; ज्यादा रजःस्राव; जरायुसे खूनका स्राव; बातः बाँझपन; जरायुकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास ।—जिन स्त्रियोंका सुख, ऐश्वर्य, और विलासिताके साथ लालन पालन हुआ है और इसी वजहसे जिनका शरीर क्षीण हो गया है और सदा जरायु-भ्रंश (गर्भाशयका अपनी जगहसे हटना) रोग भोगा करती हैं या जो बहुत ज्यादा शारीरिक और मानसिक परिश्रमकर जीर्ण-शीर्ण तथा सुस्त हो गयी हैं, जिनकी पेशियोंमें बराबर जलन और दर्द हुआ करता है और जो बहुत अधिक सुस्तीके कारण रातमें सो नहीं सकतीं ; उनके लिये हेलोनियस सञ्जीवनी सुधाकी तरह लाभदायक है और परम बन्धुकी तरह काम किया करता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं="जरायुका अस्तित्व ज्ञान" वह स्पष्ट समझ सकती है, कि उसका वस्ति गह्वर [Pelvis] में जरायु है—"रोगिनीके हिलानेपर जरायु भी हिलता है" रोगिनीको ऐसा ही मालूम होता है। जरायु प्रदेशमें इतना दर्द होता है, कि रोगिनी किसीको भी हाथ नहीं लगाने देती ; रोगिनी अन्यमनस्क रहनेपर या रोगके विषयमें न सोचनेपर अच्छी रहती है ; बहुत बेचैनी,—एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकती ; क्रोधी स्वभाव ; सभीके कामोंमें दोष देखा करती है ; बात काटना बिलकुल ही सहन नहीं कर सकती ; गहरा विषाद ; बहुमूत्र,—नयी अवस्था—दिनों दिन रोगी दुबला होता जाता है—बहुत प्यास ; लाला मूत्र,—नया या पुराना ;—गर्भधारणके समय ; ऋतु नियमित समयसे बहुत पहले हो जाता है और स्राव भी बहुत ज्यादा होता है। योनिमें असह्य खुजली ; लारकी तरह स्राव होनेवाला प्रदर ; शरीरके कितने ही स्थानोंमें जलन मालूम होना ; कमरमें प्रचण्ड दर्द—कमर अवश और थकी मालूम होती है—पहली बार देह सञ्चालनके समय बहुत दर्द मालूम होता है, पर थोड़ा इधर उधर करनेपर फिर दर्द नहीं मालूम होता।

लक्षणावली ।

मन ।—अन्यमनस्क रहने या किसी काममें लगे रहनेपर अच्छी रहती है (पाइपर-मिथ, ऐसिड-आक्जैल, हेलिबोर, केल्के-फास, आक्सि-ट्रोप, कास्टि, पेट्रोल)। बहुत बेचैन,—एक क्षण भर भी स्थिर नहीं रह सकता। (पाइपर-मिथ, लिलियम, सिपि)। क्रोधी प्रकृति, सबके ही कामोंमें दोष देखना ; प्रतिवाद बिलकुल ही सहन न होता (ऐनाः-

नेट्र, फेरम, इग्ने, लाई) या किसीका उपदेश ५६

विषादपूर्ण चित्त (सिल्कोमेन, इग्ने, बोलि-ब्रोम, ऐक्ट, आरम-म्यूर-नेट)। अकेले रहना पसन्द करती है (ऐक्टी, सिल्कोमेन, इग्ने, आक्जिलोप)।

मस्तक।—ब्रह्मतालुमें जलन मालूम होती है (ग्राई, डाइपिर, ट्रि-म्यू, सल्फ) —सर हिलानेपर और मानसिक परिश्रमसे आराम मालूम होता है। सरमें दर्द होता है,—झुकनेपर बढ़ता है और सर-दर्दके कारण सरका चक्कर और भी बढ़ जाता है। कपालमें या ब्रह्मतालुमें दबाव और भार मालूम होता है—इस विषयको सोचनेसे रोग बढ़ जाता है।

मुखके भीतर।—रोज सबेरे बिछावनसे उठनेके समय मुँहका स्वाद बहुत कड़वा हो जाता है। बहुमूत्र रोगमें जीभ सफेद, गर्भवती स्त्रियों और दाँत निकलनेवाले बच्चोंके मुँहमें लार अधिक पैदा हो जाना।

पेशाब।—लगातार दर्द होता है और मसाना या मूत्रग्रन्थिमें विशेष कर दाहिनी ओर दर्द मालूम होना। मसानेमें जलन होती है। बहुमूत्र,—नयी या पहली अवस्था,—पेशाबका परिमाण बहुत अधिक और वह साफ पानीकी तरह चीनी मिला,—दोनों ओंठ सूखे,—लसदार, आपसमें सट जाते ; प्यासकी अधिकता ; रोगी स्थिर नहीं रह सकता और दिनों दिन दुबला होता जाता है ; रोगी चिड़चिड़ा और हमेशा दुःखित रहता है। गर्भवती रमणियोंका पेशाब अण्डलाल मिला (Albuminuria)—रोगिनी बहुत कम और हो पड़ती है, आलसिन हो जाती है और उसे हरदम नींद आती है। रोगिनीको बहुत थकावट मालूम होती है,—पर वह समझ नहीं सकती कि किस कारणसे ऐसा हो रहा है। ऐसा मालूम होनेपर भी कि मूत्राशय खाली हो गया है, उसे अनजानमें पेशाब हो जाया करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वस्ति-गह्वर (Pelvis) में बहुत भार मालूम होता है (एलेट, बेल, कोलो) और हाथ लगानेपर दर्द होता है (कैल्के, लाना, लैप्पा, ट्रिलियम पेन) ; "जरायुका अस्तित्व मालूम होना या उपलब्धि" (लिसिन, म्यूरेक्स) ; अपनी देह हिलानेपर जरायु भी हिलता है—रोगी वह अच्छी तरह समझ सकती है ; क्योंकि उसके जरायुमें बहुत दर्द होता है। जो स्त्रियाँ बार बार जरायुसे रक्तस्राव होनेके कारण जीर्ण-शीर्ण हो गयी हैं, उन्हें बहुत जल्दी जल्दी ऋतु होता है और स्राव परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है और काला थक्का थक्का तथा बदबूदार होता है ; एक:

ऋतुसे दूसरे ऋतुके बीचके समयमें, शरीरमें जितना रक्त पैदा होता है, बाद वाले ऋतु-स्रावमें उससे अधिक निकल जाता है। स्तन इतने फूल उठते हैं और उनमें ऐसा दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता (कोना, लेक-केन); जरायु भ्रंश (Prolapsus uteri) और जरायु ग्रीवाका जखम,—स्राव लगातार, काली आभा लिये और बदबूदार ; भारी चीज उठाने या किसी तरहका परिश्रम करनेपर बहुत ज्यादा रक्तस्राव हुआ करता है ; चेहरा सफेद और बीमारोंकी तरह ; योनिमें बहुत अधिक सुरसुरी और कमरमें बहुत दर्द मालूम होता है। प्रायः गर्भावस्थामें गर्भ-स्रावकी आशंका हो जाती है (सिकेलि, मेबाइ, अरम-म्यू-नेट, सेबाल ; प्लैट, एक्टि-रेसि, कोलोफिल)। किसी तरहका परिश्रम करनेसे ही रोगिनी सुस्त हो जाती है। लगातार श्रोणि-देश या नितम्बसे दोनों पैरोंतक दर्द हुआ करता है। परिश्रम करनेपर किसी तरहका दर्द नहीं रहता (रास, सिल्लामिभ ; बार्ब, केलि-कार्ब, स्टैफिस ; गर्भ स्रावके बाद कमरमें दर्द होता है=केलि-कार्ब)। प्रदर—जरायुके अवसाद और शिथिलताके कारण,—स्राव पतला मांसके धोअनकी तरह (प्लैट, हाइड्रैस्ट, ऐल्यू, पेट्रोल, बोवि, ऐमोन-म्यूर)। परिपाक शक्तिका विकार और रक्तहीनताकी वजहसे ऋतु-स्राव बन्द होना (Anemia—नैट-म्यूर) काम प्रवृत्तिका गायब हो जाना। योनिद्वार गर्म, लाल और फूल उठता है। जलन और भयानक खुजली होती है। जो सब स्त्रियाँ जरायु-भ्रंशके कारण रोग भोग रही हैं, आलस्य और विलासिताके कारण क्षीण हो पड़ी हैं, जो अन्यमनस्क रहनेपर अच्छी रहती हैं, इसलिये जब डाक्टर आता है, तब वे अच्छी रहती हैं ; कठिन परिश्रमकर जो सुस्त हो पड़ती हैं, सोनेकी इच्छा न रहना और बहुत थकी तथा अतिरिक्त परिश्रमके कारण जिनकी पेशियाँ सब बहुत दर्द भरी और जलन भरी हो जाती हैं, **हेलोनियस** उनका परम बन्धु है।

पीठ ।—कमरमें लगातार दर्द, क्लान्ति और दुर्बलता मालूम होती है ; कमर और उसके पिछले भागमें—(त्रिकास्थिकी स्थानमें—) पर जलन और थकान मालूम होती है,—बैठनेपर बढ़ जाती है।

सम्बन्ध —सदृश ।—ऐलेक्ट्रिस और लिलियम इसके विशेष सदृश हैं। पल्स ; साधारण भावसे सदृश। ऐक्टिया-रेसि, सेबाल, प्लैट, अरम-म्यू-नेट, कोलोफिल, नैट्र-म्यू, कास्टि, पाइपर-मिथ, ऐसिड-आक्सैल, लिसिन, म्यूरेक्स, हाइड्रैस्ट ।

तुलनीय ।—सिपिया, पिक-एसिड (क्लान्ति-जनक ऐंठन) ; प्लैटिना ...रायुका कड़ापन) ; कास्टिकम (संगमसे अनिच्छा) ; (जरायु रोगमें) ; ...र मिध (अन्यमनस्क होनेपर अच्छी रहती है)।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट १ स क्रमसे ३० शततमिक क्रम।

हिपर सलफ्युरिस कैल्केरियम
HEPAR SULPHURIS CALCAREUM)

साधारण नाम ।—हिपर सल्फर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, पीछे तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है— ...ा ; अन्धापन ; क्षतशूल ; भूखमें गड़बड़ी ; दमा ; दाढ़ीमें फुन्सियाँ ; ...कोंका प्रदाह ; स्तनकी बीमारी ; श्वासनालीका प्रदाह ; बाघी ; दाह ; ...व्रण (Carbuncle) ; बवाई ; हड्डियोंका क्षय ; मृत्पाण्डु ; घुँडी ; सर्दी ; ...यत ; क्षयकास ; खाँसी ; अतिसार ; कानकी बहुत-सी बीमारियाँ ; आँखकी ...ारियाँ ; खसड़ा ; विसर्प ; सन्धियोंका प्रदाह और पीब पैदा होना ; खून ...ती खाँसी ; अर्श ; सर-दर्द ; क्षय-ज्वर ; वंक्षण-सन्धिकी बीमारी ; स्वरभङ्ग ; ...ला ; स्वरनालीका प्रदाह ; श्वेत-प्रदर ; सन्धिके रोग ; ओंठका फूलना ; ...तकी बीमारी ; फेफड़ेकी बीमारी ; श्वित्र या धवल रोग ; दुबलापन ; बहुत ...दा रजःस्राव ; मुंहका जखम ; स्तन-वृन्तमें जखम ; डिम्बाधार प्रदाह ; ...र्व-वेदना ; फेफड़ेका प्रदाह ; गर्भावस्थामें अरुचि और वमन ; कर्णमूल ; ...ा ; गण्डमाला ; चर्मरोग ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; मसे ; उपदंश ; वेग ...कूपन ; गलेका जखम ; आमवात ; अंगुलहाड़ा ; हूप खाँसी।

उपयोगिता और आभास ।—अवशाङ्ग लसिका-प्रधान धातु, पतले ..., गोरा रङ्ग और जिनकी पेशियाँ शिथिल हैं, जिनके शरीरमें थोड़ेमें ही पीब ... हो जाता है, जिनका शरीर और मन दुर्बल है और जो थोड़ेमें ही कातर हो ...ते हैं, जो जल्दी जल्दी बोलते और पीते हैं; खाम खयाली, शङ्कित और हमेशा ...ाका भय लगा रहता और सर्दी बिलकुल सहन नहीं होती ; उनके लिये यह

दवा उपयोगी है। उदरामय—पतला और बदबूदार दस्त होता है,—बच्चे के सारे शरीरसे खट्टी गन्ध निकलती है; सामान्य कारणसे ही पेटकी बीमारी हो जाती है। खट्टी या कड़वे स्वादवाली चीज खानेकी प्रबल इच्छा; थोड़ी भी ठण्ड लगनेपर जोरकी खाँसी आने लगती है; पश्चिमी सूखी हवा लगनेपर श्वास-रोध करनेवाली सूखी खाँसी पैदा हो जाती है; जखम आदिमें खून मिला पीव पैदा होता है और वह सड़े पनीरकी तरह बदबू करता है; कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो मछलीका काँटा गड़ गया है शरीरके वस्त्र उतार नहीं सकता—शरीरका कोई भी अंश खोलनेपर खाँसी आने लगती है। दिनरात पसीना होता है पर लक्षण आदि घटते नहीं है; श्वास और घुंड़ी मिली गलरोधक खाँसी; शरीरकी त्वचा बहुत जखम पैदा करनेवाली; जरा भी खरोंच लगनेपर उस जगह पीव पैदा हो जाता है और बड़ा सा जखम हो जाता है; पाराके दोषकी वजहसे बीमारियाँ; शरीरकी त्वचाकी तरह रोगीका मन भी उत्तेजना प्रवण रहता है। सामान्य कारणसे क्रोधान्ध हो जाता है—विलम्ब सहन नहीं होता। बहुत चिड़चिड़ा,—अवसाद वायु-ग्रस्त और बिना किसी कारणके ही चिन्तित रहता है—वगैरह कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—अपने किये हुए या दूसरके सभी विषयोंमें असन्तुष्ट,—हमेशा गहरे विषादमें पड़ा रहता है, मानो बिना कारण ही किसीको मार डालनेतक को तैयार है। सामान्य कारणसे ही क्रोधसे अन्धा हो जाता है; बोलचाल (बेल, कैम्फ), खाना-पीना, सभी विषयोंमें जल्दबाज और तत्पर; चिड़-चिड़ा; अवसाद वायु-ग्रस्त (Hypochondriacal); अकारण शङ्कायुक्त। असन्तुष्ट चित्त; दोस्तोंसे मिलनेकी इच्छा नहीं होती। विमर्ष भाव,—रोना स्वभाव (डिजि, ग्रेफ)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है,—सर हिलानेपर (कास्टि, कोना, ब्राई, फास,—तेजीसे हिलाने=केल्के-कार्ब, कार्बो-वेज),—गाड़ीपर चढ़कर घूमनेके समय (साइलि),—या सन्ध्याके समय जी मिचलाकर, सरमें चक्कर आकर बुद्धि गड़बड़ हो जाती है और रोगीको धुंधला दिखाई देने लगता है (सिक्लेमेन, जेल्सि, केलि-बाई, फाइटो)। माथेमें ऐसा मालूम होता है;

मानो पानी हिल रहा है। सरमें दर्द होता है खासकर रातमें ; आंख हिलाने पर बढ़ता है (ऐक्टिया-रेस, कोलोसिन्थ, म्यूर-ऐ, सिपिया, सिलिका),—ऐसा मालूम होता है, मानो कपाल फटा जाता है। सर-दर्द,—इस तरहका दर्द मानो माथेमें एक कांटी गड़ायी जा रही है,—मानो उसमें एक खील ठोंक दी गयी है (इग्ने, काफि)। दाहिनी कनपटीमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक गड़हा खोदा जा रहा है। रातके समय और सवेरे नींद खुलनेपर माथेके एक पार्श्वमें मानो मोटी सलाई गड़ गयी है, ऐसा मालूम होता है ; आंख घुमाने फिराने या माथा झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है ; खड़े होने या माथेमें कपड़ा कस रखनेपर आराम मालूम होता है (आर्स, लेके, थूजा ; गर्म कपड़ेसे बाँधने पर घटना=आर्स ; माथा खुला नहीं रखना चाहता, गर्मीके दिनोंमें भी गर्म वस्त्रसे ढँक रखता है=सोरिन,—माथा खोलते ही सर्दी लग जाती है=साइलि सोरिन)। नासा-मूल मानो जकड़ गया है, इस ढङ्गका सर-दर्द (ग्लोनो-इनम)। माथा खुला रखनेसे अनिच्छा, इसके साथ ही माथा और मुंहपर ठण्डा लसदार खट्टा पसीना होता है ; थोड़ा सा परिश्रम करनेपर भी रातमें पसीना बहुत ज्यादा होता है ; विश्रामके समय और उत्तापसे घट जाता है। माथेपर लसदार फोड़े या दुधिया पपड़ी जमनेवाले फोड़े होते हैं, उसमें बहुत बदबू रहती है और नींद खुलनेपर बहुत खुजली होती है (क्रोटन-टिग, विङ्का-माइ, वायोला-ट्राई, रास-विनि, ग्रैफ, सोरिन),—खुजलाने बाद इतना दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता (जलन होती है=क्रोटन टिग)।

आंख।—आंखके गोलेमें इतना दर्द होता है, कि स्पर्श सहन नहीं होता और ऐसी तकलीफ होती है, मानो माथेकी तरफ जोरसे खिंचा जा रहा है (क्रोटन-टिग, ग्रैफ, लैके, मेजेर, पेरिस)। रोज सन्ध्याके बाद चक्षु गोलकके ठीक ऊपर ऐसा दर्द होता है, मानो फोड़ा हो गया है। सब चीजें लाल रङ्गकी दिखाई देती हैं (बेल, कोना, डिजि, हाय, नक्स-मस ; नीली दिखाई देती हैं=सिना ; काली=साइक्यू ; पीली=सिना, सैण्टोनिन, सिल्फेमेन)। रातमें आंखसे पानी गिरता है और आंखें सट जाती हैं (ऐल्यू, ग्रैफ, सिपिया)।

कान।—नाक छिड़कनेपर, कानके भीतर तेज दर्द और धम धम आवाज होती है। कानके ऊपर और पीछे पपड़ी जमे फोड़े होते हैं (ग्रैफ)

कानसे बदबूदार पीव निकलता है (कार्बो-वेज, मार्क, सल्फ ; खून मिला पीव=रास)। बहरापनके साथ कानमें साँय सांय शब्द और टपक (कोल्को, कैनाब, मैग-म्यू, फास, रियुम, ग्रैफ्रो)।

मुखमण्डल ।—रस-वटी-युक्त विसर्प (Vesicular Erysipelas) —मुखमण्डल प्रदाह भरा, मुंह और गाल फूल जाता है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी है ; चेहरेकी अस्थियाँ सब छूनेपर दर्द होता है (सिङ्को, कोलोसिन्थ) दोनों ओठोंके संयोगस्थलपर जखम (कोल्को, कोलेंसिडयु, ग्रैफ, सिलि)। निचला ओंठ फट जाता है (ऐमोन-कार्ब, नेट्र-म्यूर) मुंह फाड़नेपर हनु-सन्धिमें तेज दर्द मालूम होता है।

मुख-विवर और गलेके भीतर ।—दाँतका दर्द,—खींचने और चिलक मारनेकी तरह दर्द दाँतपर दाँत लगने, खाने और गर्म कमरेमें दर्द बढ़ जाता है। कीड़ा लगा दाँत दूसरे दाँतसे बड़ा मालूम होता है ; दाँतके मसूढ़े और मुँहके भीतर इतना दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता और सामान्य कारणसे भी मसूढ़े से खून गिरने लगता है। कोई पदार्थ निगलनेके समय मालूम होता है, मानो कण्ठनालीमें एक काग लगाकर बन्द कर दी गयी है, या उसमें एक मछलीका काँटा गड़ गया है या फूल गयी है (आर्जेण्ट-नाई, हलिकस, ऐसिड-नाई)। गल-ग्रन्थि प्रदाह (Tonsilitis)—पीव पैदा होनेवाली अवस्थामें (मार्क, ऐसिड-म्यूर, साइलि); पुरानी गल ग्रन्थिकी वृद्धिकी वजहसे श्रवण शक्तिका घट जाना (बैराई, लाई, प्लम्ब,सोरिन) ; कण्ठमें रुखड़ापन और ऐसा मालूम होना मानो छाल खरोंची जा रही है (क्रियो); कोई पदार्थ निगलनेके समय कण्ठसे कान तक सुई वेधने की तरह यन्त्रणा।

पाकाशय आदि ।—खट्टी चीज और तीती तथा तेज स्वादवाली चीजें खाना पसन्द करता है (ब्राई, सिङ्कोना, नक्स ; तीते पदार्थसे रुचि—डिजि नेट्र-म्यूर, खड़ियेका चूर वगैरहसे रुचि=ऐसिड-नाई, नक्स ; मेदमय द्रव्योंसे अरुचि—ऐसिड-नाई ; दूधसे=मार्क, नक्स ; स्निग्ध रस भरी चीजोंसे=ऐसिड-फास, वैरेट)। मेदमय पदार्थोंसे अरुचि (पेट्रोल, पल्स ; रोटी और काफीसे—लाई, नक्स ; मांस और दूधसे=इग्ने, सिपि, सल्फ ; मिष्टान्नसे अरुचि=कास्टि, ग्रैफ, ऐसिड-नाई)। बार बार स्वाद और गन्ध-रहित डकार (सड़े अण्डेकी तरह गन्धवाली डकार या धुँध डकार=आर्नि, मार्क, सिपि, सल्फ ; अजीर्ण खाये हुए पदार्थोंकी डकार ; चायना, कोना, पल्स ; लहसनकी गन्धकी डकार

मस्कस)। पेट फूल उठता है—रोगी कपड़ेसे अलग कर देना चाहता है (चायना, लाइ, नक्स)। पेटमें जलन होती है (आर्स, नक्स, पल्स)। थोड़ा भी खानेपर पेट भारी हो जाता है (मानो पाकस्थलीमें एक टुकड़ा पत्थर रखा हुआ है=आर्स, ब्राइ, कैमो, नक्स, पल्स)। टहलने, खाँसने, साँस छोड़ने या छूनेपर यकृतमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ रही है (ब्राइ, मार्क, नक्स) पुट्ठेकी गांठ फूल उठती है और उसमें पीव पैदा हो जाता है (मार्क, ऐसिड-नाइ)।

मलान्त्र और मल ।—नरम मल भी बड़े कष्टसे निकलता है (ग्रेफ ऐल्यू, कैल्के-फास, सिलिका सोरिन)। बच्चोंका उदरामय,—रोगीके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है (केल्के, रियुम); मलका रङ्ग काला (लेप्टेन, वेरेट,हिलि-येन, मार्क)। कोमल मलका पाखाना होनेपर भी खून निकलता है। मल-द्वारकी फूली हुई शिरा बाहर निकल पड़ती है (ऐसिड-म्यूर)।

पेशाब ।—पेशाब बहुत धीरे और क्षीण भावसे और बड़े कष्टसे होता है। कभी कभी तो टपटपकर सीधे भावसे गिरता है। ऐसा मालूम होता है, कि थोड़ा पेशाब बाहर निकल गया ; पेशाबके बाद मूत्रनालीसे खून निकलता है। पेशाबके समय मूत्रनालीमें जलन मालूम होती है और दूसरे समय ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी है। मूत्रनालीका मुँह प्रदाह युक्त और लाल ; मूत्रनालीसे श्लेष्माकी तरह पदार्थ निकलता है (आर्जेण्ट नाइ, सिपि, सिलिका)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—लिङ्गाग्रचर्म (चमड़ी—Prepuce) के ऊपर उपदंशकी तरह जखम होते हैं (ऐसिड-नाइ ; जखमके भीतरवाली जमीन पनीरकी तरह लेप चढ़ी रहती है=मार्क)। मूत्राधारकी मुखशायिका ग्रन्थि से रस-स्राव होता है—प्रसवके बाद और कड़ा पाखाना होनेके समय यह रस-स्राव बढ़ जाता है (ऐल्यू, कास्टि, सेलिन)। मुष्क और उरुके स्थानपर रस लगकर पानी लगने-सा हो जाता है और उसमें कुटकुटाहट होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—योनिके बाहरी भागमें और उसके बीचके स्थान की खाल उधड़ जाना। बाएँ डिम्बाधारमें सुरसुरी (Irritation), वह फूल उठती है और उसमें बहुत दर्द हो जाता है और रक्तस्राव होने लगता है। ऋतु बहुत देरसे होता है (कास्टि, कैमो, डालका, ग्रेफ, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर,

कानसे बदबूदार पीव निकलता है (कार्बो-विज, मार्क, सल्फ ; खून मिला पीव=रास)। बहरापनके साथ कानमें साँय सांय शब्द और टपक (केल्के, कैनाव, मैग-म्यू, फास, रियुम, ग्रैफो)।

मुखमण्डल।—रस-वटी-युक्त विसर्प (Vesicular Erysipelas) —मुखमण्डल प्रदाह भरा, मुंह और गाल फूल जाता है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी है ; चेहरेकी अस्थियाँ सब छूनेपर दर्द होता है (सिङ्को, कोलोसिन्थ) दोनों ओठोंके संयोगस्थलपर जखम (केल्के, केलेण्डियु, ग्रैफ, सिलि)। निचला ओंठ फट जाता है (ऐमोन-कार्ब, नेट्र-मूर) मुंह फाड़नेपर हनु-सन्धिमें तेज दर्द मालूम होता है।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—दाँतका दर्द,—खींचने और चिलक मारनेकी तरह दर्द दाँतपर दाँत लगने, खाने और गर्म कमरेमें दर्द बढ़ जाता है। कीड़ा लगा दाँत दूसरे दाँतसे बड़ा मालूम होता है ; दाँतके मसूढ़े और मुँहके भीतर इतना दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता और सामान्य कारणसे भी मसूढ़ेसे खून गिरने लगता है। कोई पदार्थ निगलनेके समय मालूम होता है, मानो कण्ठनालीमें एक काग लगाकर बन्द कर दी गयी है, या उसमें एक मछलीका काँटा गड़ गया है या फूल गयी है (आर्जेण्ट-नाई, डलिकस, ऐसिड-नाई)। गल-ग्रन्थि प्रदाह (Tonsilitis)—पीव पैदा होनेवाली अवस्थामें (मार्क, ऐसिड-म्यूर, साइलि); पुरानी गल ग्रन्थिकी वृद्धिकी वजहसे श्रवण शक्तिका घट जाना (बैराइ, लाइ, प्लम्ब,सोरिन) ; कण्ठमें रुखड़ापन और ऐसा मालूम होना मानो छाल खरोंची जा रही है (क्रियो); कोई पदार्थ निगलनेके समय कण्ठसे कान तक सुई वेधने की तरह यन्त्रणा।

पाकाशय आदि।—खट्टी चीज और तीती तथा तेज स्वादवाली चीजें खाना पसन्द करता है (ब्राई, सिङ्कोना, नक्स ; तीते पदार्थसे रुचि—डिजि नेट्र-मूर, खड़ियेका चूर वगैरहसे रुचि=ऐसिड-नाई, नक्स ; मेदमय द्रव्योंसे अरुचि—ऐसिड-नाई ; दूधसे=मार्क, नक्स ; स्निग्ध रस भरी चीजोंसे=ऐसिड-फास, वेरेट)। मेदमय पदार्थोंसे अरुचि (पेट्रोल, पल्स ; रोटी और काफीसे—लाइ, नक्स ; मांस और दूधसे=इग्ने, सिपि, सल्फ ; मिष्टान्नसे अरुचि=कास्टि, ग्रैफ, ऐसिड-नाई)। बार बार स्वाद और गन्ध-रहित डकार (सड़े अण्डेकी तरह गन्धवाली डकार या धुँआ डकार=आर्नि, मार्क, सिपि, सल्फ ; अजीर्ण खाये हुए पदार्थोंकी डकार ; चायना, कोना, पल्स ; लहसनकी गन्धकी डकार

मस्कस)। पेट फूल उठता है—रोगी कपड़ेसे अलग कर देना चाहता है (चायना, लाई, नक्स)। पेटमें जलन होती है (आर्स, नक्स, पल्स)। थोड़ा भी खानेपर पेट भारी हो जाता है (मानो पाकस्थलीमें एक टुकड़ा पत्थर रखा हुआ है=आर्स, ब्राई, कैमो, नक्स, पल्स)। टहलने, खाँसने, साँस छोड़ने या छूनेपर यकृतमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ रही है (ब्राई, सार्क, नक्स) पुट्ठेकी गांठ फूल उठती है और उसमें पीव पैदा हो जाता है (मार्क, ऐसिड-नाई)।

मलान्त्र और मल |—नरम मल भी बड़े कष्टसे निकलता है (ग्रैफा ऐल्यू, कैल्के-फास, सिलिका सोरिन)। बच्चोंका उदरामय,—रोगीके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है (कोल्के, रियुम); मलका रङ्ग काला (लेप्टैन, वेरेट, हिलियैन, मार्क)। कोमल मलका पाखाना होनेपर भी खून निकलता है। मलद्वारकी फूली हुई शिरा बाहर निकल पड़ती है (ऐसिड-म्यूर)।

पेशाब |—पेशाब बहुत धीरे और क्षीण भावसे और बड़े कष्टसे होता है। कभी कभी तो टपटपकर सीधे भावसे गिरता है। ऐसा मालूम होता है, कि थोड़ा पेशाब बाहर निकल गया ; पेशाबके बाद मूत्रनालीसे खून निकलता है। पेशाबके समय मूत्रनालीमें जलन मालूम होती है और दूसरे समय ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी है। मूत्रनालीका मुँह प्रदाह युक्त और लाल ; मूत्रनालीसे श्लेष्माकी तरह पदार्थ निकलता है (आर्जेण्ट नाई, सिपि, सिलिका)।

पुं-जननेन्द्रिय |—लिङ्गाग्रचर्म (चमड़ी—Prepuce) के ऊपर उपदंशकी तरह जखम होते हैं (ऐसिड-नाई ; जखमके भीतरवाली जमीन पनीरकी तरह लेप चढ़ी रहती है=मार्क)। मूत्राधारकी सुखशायिका ग्रन्थि से रस-स्राव होता है—प्रसवके बाद और कड़ा पाखाना होनेके समय यह रस-स्राव बढ़ जाता है (ऐल्यू, कास्टि, सेलिन)। मुष्क और उरुके स्थानपर रस लगकर पानी लगने-सा हो जाता है और उसमें कुटकुटाहट होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय |—योनिके बाहरी भागमें और उसके बीचके स्थान की खाल उधड़ जाना। बाएँ डिम्बाधारमें सुरसुरी (Irritation), वह फूल उठती है और उसमें बहुत दर्द हो जाता है और रक्तस्राव होने लगता है। ऋतु बहुत देरसे होता है (कास्टि, कैमो, डालका, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर,

पलुस, सल्फ) और स्राव बहुत थोड़ा होता है (कोना, फेरम, कार्ब, सार्सा, नेट्र-म्यू, सिपि)। प्रदर स्रावमें योनिके बाहरी भागमें कुट होती है।

श्वास-यंत्र ।—खाँसी;—शरीरका कोई अंग खुला रहनेपर खाँसी लगती है (रियुम, रास)। हुंड़ी खाँसीकी तरह श्वास-रोध करनेवाली खाँ सूखी पश्चिमी हवा लगकर खाँसी आती है (ऐको); वायु खींचनेमें सां शब्द,—सवेरे खून मिला और पीवकी तरह कफ निकलता है; साधार खट्टा या मीठे स्वादका बलगम; सन्ध्यासे आधी राततक खाँसी बढ़ करती है—कोई अंग ठण्डा होने या ठण्डी चीजें खाने या भोजन कर ठण्डी हवा लगनेपर, सोनेपर और बात करने तथा रोनेपर, खाँसी बढ़ है; खांसीके समय माथेमें दर्द और एक तरहकी तकलीफ और आवाज है;—मानो माथा फट जायगा; खाँसनेके बाद छींक आती है (बेल), (काली खाँसी)—सूखी ठण्डी हवा लगकर हो जाती है और बढ़ती है, सूखी घड़ घड़ आवाजके साथ खाँसी आती है; स्वरभङ्ग और गलनालीमें घड़ आवाज होती है (ब्रोम, स्पञ्जिया). खाँसी बढ़ती है—सूखी ठण्डी हवामें (अ लैके, फास); ठण्डी चीजें खानेपर (कार्बो-वेज, क्यु प्र, लाई, स्किला), अ रातके पहले, या रातके अन्तिम भागमें (ड्राई, केलूके, कार्बो-वेज, सि सल्फ, पलस) दमा,—रोगी बहुत चिन्तामें रहता है, उसकी छातीमें सांय और घड़ घड़ शब्द होता है; श्वास-प्रश्वास तेज और गहरा,—श्वास होनेका उपक्रम, रोगीको बाध्य होकर पीछेकी ओर सर झुकाकर सीधे बैठ पड़ा है। एकाएक कोई चर्मरोग गायब हो जानेप (सोरिन) खांसी बढ़ ज है। रोगीको ऐसा मालूम होता है कि उसके वक्षपर बूंद बूंद पानी रहा है (मानो हृत्पिण्डसे ठण्डे पानीकी बूंदें गिरती है—कैनाब-इन)। कले बहुत कमजोर मालूम होता है, यहाँतक कि बोलनेमें भी तकलीफ होती है (स्टेन)। बहुत कलेजा धड़कना, हृत्पिण्ड और बाएँ वक्षमें मानो एक पत शलाका बेधनेकी तरह दर्द, प्रायः हृत्पिण्डकी बीमारी हो जाती है (कैव फास, स्पाइजि)।

प्रत्यङ्ग ।—अँगुलहाड़ा,—पहली अवस्था,
यंत्रणा और टपक (मार्क, साइलि)। हाथकी
फटी, बगलकी गांठें फूलती हैं और वहां

(साइलि, युगारी) : दाहिने बगलकी गांठमें दर्द होता है और वह समस्त बाहुमें फैल जाता है (युग-सिनार) वंक्षण-प्रदेशकी गांठ फूल जाती है, और उसमें भयङ्कर जलन होती है, पककर उससे पीव हो जाता है (बेल, मार्क, रास), एंडी और निचला पैर फूल उठता है। बैठनेपर कमरके पीछे दर्द होता है।

त्वचा |—शरीरमें सहज ही और सामान्य कारणसे घाव हो जाता है, खरोंच लगते ही पीव पैदा हो जाता है और वह एक बड़े घावमें परिणत हो जाता है (ग्रेफ, मार्क, सोरिन, टैरेण्ट, मार्सा; सल्फ)। रोगीका शरीर रातमें ठण्डी हवा बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता, बगलके कमरेका दरवाजा खुलनेपर भी रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसके शरीरमें ठण्डी हवा लग रही है,—गर्मीके दिनोंमें भी सारी देह ढंककर सोता है (सोरिन),—शरीरका कपड़ा बिलकुल ही उतार नहीं सकता, खुली हवा लगते ही सर्दी लग जाती है (टियुबर्क), रोगीके शरीरमें स्पर्श सहन नहीं होता,—रोगवाली जगहपर पहननेके कपड़ेकी रगड़तक सहन नहीं होती, (लैके—धीरेसे स्पर्श सहन नहीं होता पर जोरसे दबानेपर आराम मिलता है और सहन हो जाता है—सिङ्को)। रोगवाली जगहपर हाथ लगानेसे रोगीको बेहोशी आ जाती है। घावके चारों ओर छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं और वे आपसमें मिलकर एक बड़े घावमें परिणत हो जाती हैं। नैजा और पाण्डु रोग, सारा शरीर और आँखके सफेद अंशतक पीले हो जाते हैं और पेशाब खूनकी तरह लाल होता है और शरीर बहुत खुजलाया करता है। पारा आदिके दोषसे पैदा हुए चर्मरोग आदि—बच्चा शरीर धोनेसे बहुत चिढ़ उठता है (ऐसिड-क्रूड, क्लिमेट, रास, सल्फ)।

शीत, उत्ताप और पसीना |—शीतका आरम्भ—सन्ध्या ६ बजेसे ७ बजेके समय, बाहरी हवामें बहुत जाड़ा मालूम होता है, शीतावस्थामें पित्ती निकल आती है; शय्यामें सोनेके समय शीत और अन्य सब तकलीफें बढ़ जाती हैं; ज्वर जपर आते ही आमवात अच्छा हो जाता है (शीतावस्था जितनी ही घटती है उतना ही आमवात निकलता है=एपिस; ज्वरके समय आमवात निकलता है=इग्ने; पसीनाके समय आमवात निकलता है=रास)। शीतके बाद बोखार आता है साथ ही साथ ज्वालामयी प्यास आरम्भ हो जाती है; सरमें बहुत दर्द होता है; बोखार ४ बजे दिनसे लेकर रातभर रहा

करता है। समूचे मुंहपर बीखारके दाने निकल आते हैं (इग्ने, नेड़-मूर, नक्स, रास)। पसीनेवाली अवस्था—दिन रात बहुत ज्यादा पसीना होनेपर भी न तो कोई लक्षण घटता है और न अच्छा होता है; जरा भी हिलने-डोलनेपर पसीना होता है (सोरिन, सिपि); बार बार शरीरसे बदबूदार कफ निकलता है। जीभके अगले भागमें घाव और दर्द होता है; जीभका पिछला भाग सूखे कीचड़की तरह दिखाई देता है (केल्की-सल्फ)।

वृद्धि।—रोगवाली करवट सोनेपर (कैलि-कार्ब, मार्क-आयोड, बेल); ठण्डी हवामें; शरीरके वस्त्र खोल देनेपर; ठण्डी चीजें खाने पीनेपर; जहां दर्द हो वहां हाथ लगानेपर (मूर्च्छातक आ जाया करती है); और पारेके अपव्यवहारसे।

उपशम।—सेंकने या गर्म प्रयोगसे; माथा या शरीरमें गर्म कपड़ा लपेट लेनेपर; तर हवामें (कास्टि, नेट-सल्फ, डालकेमेराके विपरीत।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न।**—ऐसेटिक-ऐसिड, बेलाडो, केमो, सिलिका। शरीरके कोमल अंशका जखम या चोटके सम्बन्धमें कैलेण्डुला इसका अनुपूरक (Complementary) है।

सदृश और तुलनीय।—(उत्तापसे घटनेके सम्बन्धमें)=आर्स, केल्के, नक्स-मस सोरिन। (ओढ़नेकी इच्छा न रहना)=ऐसिड-फ्ल ड, क्लिमेट, सल्फ। (स्पर्श-कातरता)—ऐसिड-फ्ल ड, आर्निका, लैके, सिलिका, थूजा। (हृत्पिण्डकी बीमारी)—कैक्टस, फास, स्पाइजि। (खरोंच लगते ही जखम हो जाता है)—ग्रैफ, मार्क, सोरिन, टेरेण्ट; सार्सा; सल्फ। (बच्चा खांसने के समय रोता है)—आर्नि, बेल। (खाँसीके बाद छींक)—बेल। (ऐसा मालूम होता है मानो माथेमें मछलीका कांटा गड़ा है)—इलिकस; आर्जेण्ट-नाई, ऐसिड-नाई। (तेजीसे खाने-पीनेसे)—बेल, लैके, डालका। (घुंड़ी)—ऐकोन, स्प्जिया, ऐसिड-टार्ट, ब्रोमियम, आयोड। (कब्जियत) ऐल्यू, ब्रायो, नक्स (खट्टा मल) केल्के, रियुम। (जखममें दर्द) लैकेसिस।

शक्ति।—१ म से ६ ठा दशमिक विचूर्ण, ६, ३० और २०० शततमिक या उससे भी उच्च शक्ति व्यवहृत होती

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ५

हिपाटिका ।

(HEPATICA)

दूसरा नाम ।—हिपाटिका-ट्राइलोबा । लिवर वार्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्तोंसे अर्क तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सर्दी ; ब्राङ्काइटिस ; अग्निमान्द्य ; खून-मिली खांसी ; गलेका जख्म, वगैरह लक्षणोंमें इसकी निम्न शक्तिका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—स्टैनम, कास्टिकम, सेङ्गुइनेरिया, लैके, सिस्टाइटिस, फास, रियुमेक्स, कैलि-बाई ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हिरेक्लियम ।

(HERACLIUM)

दूसरा नाम ।—वेङ्का आर्सिनो ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कमजोरी ; अग्निमान्द्य ; सर दर्द ; गठिया वात ; मूत्रग्रन्थिका दर्द ; उदरामय ; शूल वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है । सर दर्दके साथ औंघाई; खुली हवामें घूमनेसे बढ़ना, कपड़ेसे कसकर माथा बाँध लेनेपर घटना इसका निर्देशक लक्षण है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—एब्रिज-नाई, सियानोथस, कोनयम ब्रूसिया, जेल्स, जिनसेङ्ग, नेट्रम-सल्फ, नक्स-मस, सल्फ ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हिपोमेनिस ।

(HIPPOMANES)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पैदा हुए घोड़ेके बच्चेकी जीभमें लगे हुए लारकी तरह पदार्थको सुखाकर पहले विचूर्ण तैयार होता है, इसके बाद उससे इस औषधका अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—ताण्डव ; मूलाधार-सुखशायी ग्रन्थिका प्रदाह ; कलाईका पक्षाघात ; वात इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—सरमें दर्द,—रोगवाली करवट सोने पर घटता है और धूप लगनेपर बढ़ता है। अधिकतर पाकस्थलीमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना, हाथकी कलाई सुन्न और उसमें बहुत दर्द और हाथकी अंगुलीकी कमजोरीके कारण कोई चीज पकड़ नहीं सकता, वगैरह इसके कई प्रधान क्रियाफल हैं और निर्णायक लक्षणोंमें गिने जाते हैं; पहले यह एक प्रधान कामोद्दीपक दवाके रूपमें व्यवहृत होता था।

लक्षणावली ।

मन ।—विपन्नता ; बेचैनी ।

मस्तक ।—माथा बहुत हलका मालूम होता है (जेल्स, मिडोरिन, पल्स) ; सर दर्दमें माथा खाली मालूम होता है, नींद आती है और बार बार जम्हाई आती है (सिपा, ग्लोन, सिङ्को,—जम्हाई आनेपर सर दर्दका घटना=स्टेफिस) और बहुत प्यास लगती है। घूमनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथा सामनेकी ओर गिर जायगा (मूर्च्छाके उपक्रमके साथ=केस्टोर, हिपोजिन, वेरेट, कैल्के) ; जिस ओर दर्द होता है, उसी ओर सोनेपर घटना (ब्राई) और धूपमें घूमनेपर बढ़ता है (ग्लोन, नेट्र-कार्ब)।

मुख-विवर और पाकस्थली ।—सर दर्द या गलेके जखमसे मुंहमें बहुत अधिक लार पैदा हो [illegible] ऐसा मालूम होता है कि कण्ठके भीतर (बाएँ [illegible] आँटी छेद बन्द किये हुए हैं (ऐल्यू, हेपिड [illegible] इच्छा और मिष्टान्नसे [illegible] आर्स, बेराई

पाकस्थलीमें बरफकी तरह ठण्ढक मालूम होती है (कोलचि, कैप्स, फास लेक्टियु-वाई,—भोजनके पहले और बाद—मिरुस-कैन)।

पेशाव और पुं-जननेन्द्रिय।—पेशाबके बाद मूत्राधारकी मुख ग्रायिकासे रस निकलता है (ऐनाक, कैल्कि-कार्ब, हिप, नेट-कार्ब)। बहुत वेग देनेपर सूतकी तरह पतली धारमें पेशाव होता है। ऐसा मालूम होता है, कि मूत्रनालीके भीतरका एक अंश विशेष फूल जानेके कारण पेशाव निकलनेमें बाधा पड़ती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथकी कलाई सुन्न,—विशेषकर सवेरे बिछावनसे उठनेके पहले (ऐको, प्लम—वातकी वजहसे—रियुटा); कलाईमें भयङ्कर दर्द, मानो मोच खा गयी है (आर्निका, कार्बो-ऐन, लैके, रोडो, कैष्टोर—इकुई)—विशेषकर बाएं हाथकी कलाईमें। हाथ और अँगुलियां सब बहुत कमजोर, कोई चीज पकड़ कर रख नहीं सकती (एपिस, नेट्र-म्यू, सिलिसेन, सिना, क्युप्रम-मेट,—ताण्डव रोगाधिकारमें बाएँ हाथसे कोई चीज पकड़ नहीं सकता=लैके,—कलम नहीं पकड़ सकता=निसम्र;—वातकी वजहसे=कोलचि)। पैरके घुटना और तलवा बहुत चीण मालूम होते हैं। ऊपर लिखे लक्षण वाला ताण्डव रोग। शरीरके तेजीसे बढ़नेकी वजहसे प्रत्यङ्गोंकी कमजोरी।

सम्बन्ध।—सदृश।—कास्टि, ग्लोन, कैप्स, सिपि, ऐल्यू, मिरुस-कैन, नेट्र-म्यू, कैष्टोर-इकुई।

शक्ति।—३, ६, ३०, ३००

होयाङ्ग-नान।

(HOANG-NAN)

दूसरा नाम।—स्ट्रिकनूस-गलुधेरियाना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विशुद्ध वल्कलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सुस्तीके साथ सरमें चक्कर आना; हाथ पैरोंका सुन्न भाव, और उनमें सुरसुरी, निर्बला जबड़ा सुन्न हो जाना, छाले, फोड़े; उपदंश, एकजिमा, सुन्न हो जाना, कुष्ठ, पुराना जखम, जिन अङ्गोंमें

ग्रन्थियाँ ज्यादा हैं उनका कैन्सर, सर्प विषैले कीड़ोंका काटना वगैरह लक्षणों में लाभदायक है।

हीयाङ्गनान कैन्सरके जखमका रक्तस्राव और सड़नको तुरन्त घटा देता है तथा जखमके जो तन्तु नष्ट हो गये हों उनके दुबारा पैदा होनेमें सहायता करता है।

यह आर्सेनिकके बाद खूब अच्छा काम करता है। इस दवाके सेवन करनेके समय शराब पीना निषिद्ध है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐङ्गुस्टुरा, कुरेरि, ब्रूसिया, हाइड्रो-कोटाइल, नक्स।

शक्ति।—५ से २० बूंद मात्रामें मूल अर्क।

होमेरस।

(HOMARUS)

दूसरा नाम।—लोबस्टर (Lobster)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चिंड़ी मछलीके माथेके घेरेके साथ दूधकी चीनी मिलाकर निचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पीठमें दर्द; हड्डीमें दर्द; सर्दी; अजीर्ण; आध्मान; आँखकी बीमारी; सर दर्द; गलेमें दाने भरा जखम; यकृतमें दर्द; शोथ; पक्षाघात; प्लीहाका दर्द; कलाईमें दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।— [illegible] गलेका [illegible] सरमें दर्द वगैरह इसके विषयी-भूत हैं। [illegible] हो [illegible] बढ़ी,—रातमें वायु निकलनेकी वजहसे नींद [illegible] रोगी [illegible] हिला नहीं सकता, प्रायः पित्त बढ़ जाया [illegible] खुजली बन्द होते ही [illegible] नाक [illegible] नेकी वजहसे श्वास [illegible] हो जा[illegible] यक लक्षण हैं। दूध [illegible] बढ़ते

है कि मोचा चिंडी मछलीका माथा चबानेपर उनके मुँहकी श्लैष्मिक झिल्ली पहले पिटपिट किया करती है और कुछ ही देर बाद फूल उठती है)।

लक्षणावली।

मन।—भीत भाव, हिलने डोलनेमें भय इत्यादि।

मस्तक।—सर दर्द,—सवेरे, बाईं ओरकी कनपटीमें बहुत दर्द होता है; दर्द बाईं आँखके ऊपरसे माथेके पिछले भागतक फैल जाता है। आँखमें दर्द; बायीं आँखपर हाथ लगानेसे बहुत दर्द मालूम होता है। सवेरे बिछावनसे उठनेके समय बायीं आँखमें दर्द मालूम होता है,—मानों कुछ उड़कर गिर गया है। सवेरे पलकें सट जाती हैं और फूल उठती हैं (शरीर खुजलाना रुकनेपर); आँखसे बहुत पानी गिरता है (इयुफ्रे)।

नाक।—नासा-रन्ध्रमें ऐसा दर्द, मानो काँटा गड़ गया है। नासारन्ध्रसे गलेके भीतर तक बहुत जलन,—सवेरे उठनेके बाद नाक बन्द हो जाती है। बायीं नाकसे कच्ची सर्दीकी तरह पानी गिरता है (ऐमोन-ब्रोम, डायस्को, लिलियम-टाइ); बार बार छींक आती है।

गलेके भीतर।—कण्ठनालीका मुँह लाल हो उठता है और उसमें जलन होती है,—विशेषकर दाहिनी ओर; कण्ठके पिछले भागमें गाढ़ा श्लेष्मा जमा हुआ दिखाई देता है और जिह्वामूलके बगलवाले गह्वरमें बराबर श्लेष्मा जमा रहता है; क्रमसे गलेमें बहुत दर्द होता है, जलन होती है और वह फूलकर शिरामय हो जाता है। मुँह और गलेमें लसदार श्लेष्मा जमा रहता है और कण्ठके बाईं ओर ये सभी लक्षण बढ़ जाते हैं। नींद खुलनेपर कण्ठ सूख जाता है और उसमें दर्द मालूम होता है; गलेके भीतरवाली श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर मांसांकुर पैदा होनेकी वजहसे कफ नमकीन हो जाता है; नींद खुलने बाद कण्ठ सूखा और उसमें दर्द होता है; गलेके भीतरकी श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर छींटा पड़नेकी तरह गोल दाग होते हैं (ऐस्कु, कार्बो-वेज, ड्रोस, ग्रेफ, आयोड, लैके, लाइ, पल्स, स्टेन)। गलेमें जलन होती है और खाँसी पैदा हो जाती है,—मुँह फाड़कर ठण्डी हवा कण्ठमें खींच लेनेपर घटती है। कण्ठमें, कानके छेदमें और गलेके वाम पार्श्वमें दर्द होता है,—माथेकी बाईं कनपटी हाथपर रख लेनेसे दर्द घटता है। कण्ठ इतना फूल उठता है, कि

श्वास-प्रश्वासमें बाधा पड़नेकी सम्भावना हो जाती है (एड्रलेन, बैल, कैल्के, लेक-कैन, मार्क, फाइटो; साइक्य)।

पाकस्थली ।—पूर्वाह्नमें रह रहकर उत्तापका आविर्भाव होनेके साथ पेटमें दर्द। रातमें नींद खुलनेपर भयानक दर्द होता है; सवेरे अच्छा हो जाता है और शामके वक्त फिर आरम्भ हो जाता है; हलका भोजन करनेके पहले और बाद पेटमें दर्द हुआ करता है; पेट-भर खा लेनेपर घट जाता है; दर्द पेटसे पीठ तक फैल जाता है और मेरुदण्डके पास बहुत अधिक मालूम होता है। वायु निकालनेके लिये रोगीको नींद रातमें खुल जाती है। अक्सर पित्त बढ़ जाया करता है और इसके साथ हो कितनी ही तरहके लक्षण पैदा हो जाया करते हैं। दूध पीने पर तो लक्षण बहुत ही बढ़ जाते हैं।

अन्नाशय ।—उदरके भीतर तथा कोषमें और यकृतके निचले अंगमें बहुत दर्द होता है; यकृतका दर्द सन्ध्याके समय बढ़ जाता है; दिनमें यकृत और प्लीहामें दर्द होता है; यकृतके पासका दर्द दीर्घ निश्वास लेनेपर बढ़ जाता है (किनिन-सल्फ)। कई मिनिट सोते ही पतला पाखाना लग आता है और नींद खुल जाती है,—बहुत वायु निकलनेपर यह लक्षण घट जाता है। रातमें पाखानेके समय बहुत वेग देनेपर कहीं लम्बा और मोटा तथा गाढ़ा लसदार मल निकलता है।

श्वास-यन्त्र ।—सोनेपर श्वास कष्ट पैदा हो जाता है (डिजि, फास)। बायें फेफड़ेके भीतर और पीठमें तेज दर्द होता है। वक्षोस्थिके निचले अंशकी दाहिनी ओर भयानक जलन होती है। कभी कभी श्वास-कृच्छ्रताके साथ दोनों ओर बहुत जलन मालूम होती है। कण्ठनाली इतनी फूलती है, कि श्वास-प्रश्वास रुक जाना चाहता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—पीठकी दाहिनी ओर मसानेके पास एकाएक ऐसी तेज दर्द पैदा हो जाता है, कि रोगीको बाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है। कोहनीकी सन्धि (Elbow joint) के ऊपरी अंशमें मानो दबा रखा है,—इस ढङ्गका दर्द—दाहिने हाथमें ही दर्द अधिक होता है। घुटनेके ऊपरी अंशमें खूब अधिक दर्द होता है। घुटना बहुत चीण रहता है और काँपता है। बहुत अस्वस्थ मालूम होना; [illegible] हिलाने

डोलानेपर अच्छा रहता है। शरीरमें अस्वाच्छन्द्य मालूम होता है। जलपान और मध्यान्ह भोजनके बाद रोगी अच्छा रहता है।

त्वचा।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें दिन-रात खुजली होती है; सोनेके पहले और बाद बहुत खुजली होती है; खुजलानेपर आराम मिलता है पर फिर दूसरी जगह खुजली होने लगती है, निम्नाङ्ग विशेष कर पैरकी पोटलीकी पेशीमें बहुत खुजली होती है और रगड़नेपर घट जाती है। (आमवात = ऐस्टेकास-फ्लूवि) ; खुजलानेके कुछ ही समय बाद ओंठ, गलेका भीतरी भाग और नाक फूल उठती है।

वृद्धि।—दूध पीनेपर, सोनेपर ; ठण्डी साँस लेनेपर और रातमें।

उपशम।—हिलाने-डोलाने, वायु निकलनेके बाद, खाने या मध्यान्ह भोजनके बाद, गलेमें ठण्डी हवा घुसने और खुजलाने या रगड़ने बाद।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐस्टेकास-फ्लू, लैके, युफ्रे, फाइटो, साइक्ल्यू, लैक-कैन, ऐसिड-नाई, चायना, कोरा, सिपि, मेग-म्यू। तलवा ठण्डा (कैल्के)। नींदके बाद बढ़ना (लैकेसिस) ; दूध पीनेबाद बढ़ना (कैल्के, सिपिया, सलफर इत्यादि)।

शक्ति।—२ रे और ४ थे दशमिकसे ६ ठा दशमिक विचूर्ण और ६ठीं शततमिक क्रम।

होमेरिया।

(HOMERIA)

दूसरा नाम।—होमेरिया-फोलिना, केइप-टालिप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह एक तरहका तेज नशीला विष है। बहुत अधिक कब्जियतके साथ **पतनावस्था**—इसका निर्देशक लक्षण है।

शक्ति।—३० शततमिक।

ह्यूरा-क्रिपिटेन्स।

(HURA CRIPITANS.)

दूसरा नाम।—सेण्ड बक्स; एक तरहका फल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बीजसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—क्रोटोन, रिसिनस, केस्टर-आयलकी तरह यह भी एक विरेचक दवा है। ह्यूरा तैल २० बूंदकी मात्रामें सेवनसे दो चम्मच केस्टर आयलकी तरह विरेचनका काम होता है।

होमियोपैथी मतसे यह उदरामय, वमन, गलेका जखम, गलेमें जलन, अनुभव होना और दृष्टि-शक्तिका घटना लक्षणमें व्यवहृत होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कास्टिकम (गलनालीमें जलन); क्रोटोन, होरा ब्रेसि, रिसिनस।

दोषघ्न।—कैम्फर और ओपियम इसका विषदोष नष्ट करता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

ह्यूरा।

(HURA BRASILIENSIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—[illegible] वृक्षके गोंदसे [illegible] है।

लक्षणोंके अनुसार [illegible] लिखे [illegible] हैः—

अन्धापन; मूर्च्छावायु; कुष्ट; [illegible] में दर्द [illegible] और [illegible] इसके

द्वारा [illegible] जगह लाल [illegible]

हैं [illegible] इतने भरे [illegible]

रस [illegible] एक [illegible]

अँगूठेके नखमें ऐसा मालूम होता है, मानो काँटा गड़ गया है और गण्डा-स्थिकी तरह शरीरके जिन अंगोंकी हड्डी ऊँची हो रही है, उन उन अंगोंकी आवरक त्वचा, इससे पैदा हुए उद्भेद आदिके मनोनीत आवास-स्थल रहते हैं। क्रोटोनमें जिस तरह शरीरकी त्वचामें कसावटका भाव मौजूद रहता है, थूजासे पैदा हुई गोटियोंमें भी उसी तरहकी रसकी अधिकता दिखाई देती है। (डा० फेरिङ्गटन)

लक्षणावली।

मन।—बहुत दुःखित—मानो कोई भयङ्कर घटना घटी है। लगातार रोता रोता जोरसे हँस उठता है। मानसपटलपर भविष्यके सम्बन्धके विषाद जनक चित्र अङ्कित करता है—मानो भविष्यमें उसका जीवन बहुत दुःखमय हो उठेगा। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके किसी प्रिय बन्धुकी शीघ्र ही मृत्यु होगी,—यहाँ तक कि उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उन बन्धुओंकी लाशें उसके सामने रखी हुई हैं। सामान्य शब्दसे भी रोगी चौंक उठता है। (बेल, कास्टि, मिडोरिन, ओपि, सिलिका)।

नाक।—दोनों रन्ध्रोंसे बहुत ज्यादा खून निकलता है। ऐसा मालूम होता है, मानो नासा-मूल सट गया है (केलि-बाई, लैक-डिफ्लो, सिपि,—खूनके स्रावके साथ=रियुटा) और टपकका दर्द होता है (केलि-बाई, सैरासीनियाँ)। रन्ध्रसे खूनका स्राव होनेके पहले नाकमें खूनकी गन्ध आती है।

पाकाशय आदि।—खाना समाप्त करते ही फिर भूख मालूम होने लगती है (सिना ; फास ; फाइटो ; स्टैफिस,—जितना ही खाता है, उतना ही अधिक खाना चाहता है=लाई)। बहुत भूख मालूम होनेपर पेटमें दर्द होने लगता है। बहुत असह्य यंत्रणा-जनक अन्त्रशूल (आँतोंमें दर्द) और उसके साथ ही पतले दस्त आते हैं, और शरीर काँपता है (थूजा, कोलचि, क्रोट-टिग, कैल्को, सल्फ, वेरेट)। अन्त्रा-न्त्रप्रदेशमें (Ilio-cœcal region) में ऐसा दर्द होता है मानो सुई गड़ रही है,—हिलने डोलने पर बढ़ जाता है। बाएँ कोखमें मरोड़ की तरह या समूचे वस्ति गह्वरमें (Pelvic region) ऐसा असह्य दर्द मानो काट रहा है,—रोगी तकलीफसे चिल्लाया करता है। उदरामय,—मल पतला बिना किसी दर्दका,—हिलने डोलने पर ही पाखाना लग जाता है (ब्राई, कोलचि, फेरम ; नीचे उतरने

पर = बोरेक्स) । मल बहुत बदबूदार और मृदु, छोटी सफेदकृमि-मिला (ऐस क्लिप, टियुब ; ऐन्नोट, केल्को, स्ट्रैन, स्पाई, सिना ; इग्ने) कब्जियत,—कड़ा और बहुत थोड़े परिमाणमें मल, बहुत तकलीफसे निकलता है । मलद्वारमें संकोचन ।

पेशाब ।—चलनेके समय दाहिनी मूत्रग्रन्थिमें तेज दर्द और बहुत ज्यादा पेशाबका वेग होता है । पेशाब कुछ हरा और उसमें सफेद तली जमती है ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—असह्य लिङ्गोद्गम ; वीर्य गाढ़ा और पीला । चलनेके समय दोनों अण्डकोषोंमें भार मालूम होता है (ऐसिड-आक्जेल) ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायुमें दर्द—मानो किसीने जरायुको दबा रखा है,—मानो उसमें कोई तेज अस्त्र घुसा दिया गया है और इसके बाद योनिमें इस ढंगका दर्द होता है, मानो कोई छुरी मार रहा है । ऋतु—नियमित समयके आठ दिन पहले हो जाता है (काक्यु, आनिक ;) स्राव बहुत थोड़ा, प्रदर-स्रावके साथ बहुत ज्यादा ऋतुस्राव होता है (वोविस्टा, केलके, कार्बो-वे, सिनेमोन, लाई, लिसिन, नेट्र-म्यूर, पल्स) ।

श्वासयंत्र ।—कण्ठ सुख जाता है और सुरसुरी होकर खाँसी आती है,—काफ मिर्चको तरहके (Rusty) रङ्गका खून-मिला श्लेष्मामय (ऐण्टि-टार्ट, हिपोजिनिन, आयोड, लाई, फास) । कुछ देरतक बातचीतके बाद कण्ठके भीतर और श्वासनालीमें ऐसा मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी है और जल उठता है और बहुत-सा खून मिला पाखाना निकलता है । खून मिला कफ ।

त्वचा ।—दोनों पैरोंके प्रत्येक रोंएकी जड़में मच्छड़ काटनेकी तरह छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं । शरीरके कितने ही स्थानोंमें विशेषकर गण्डास्थिकी तरह जिस अंगकी हड्डियाँ उठी हुई हैं, उन हड्डियोंके ऊपर छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं और उनको फोड़ देनेपर रस छिटकप ड़ता है । (क्रोटोन कैन्थ, देखो) । कुष्ठ व्याधि (हाइड्रोकोट) ।

सम्बन्ध ।—सदृश या तुलनीय । – कैन्थ ; क्रोटोन ; इयुफोर्बि ; ऐसिड-आक्जेल ।

प्रतिविष या दोषघ्न ।

शक्ति ।—२ रे दशमिक

हाइड्रैञ्जिया-आर्बोरेसेन्स ।

(HYDRANGIA-ARBORESCENS)

दूसरा नाम ।—सेवेन-वर्क्स ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते और नयी फुनगीसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह मूत्र-पथरी रोगकी एक बढ़िया दवा है । कमरमें दर्द, मूत्रपथरीका शूल, लाल रङ्गका पेशाब, या खून मिला पेशाब, पेशाबमें छोटी छोटी पथरी निकलना वगैरह लक्षणोंमें विशेष लाभ-दायक है ।

किसी किसीका कथन है कि—बहुत तेज प्यासके साथ बहुमूत्र रोगमें भी यदि पेशाबका वेग रोकनेकी शक्ति न रहे तो इससे आशातीत लाभ होता है ।

सम्बन्ध । —तुलनीय ।—बार्बेरिस, सेबाल-सेरु, सोलिडेगो, श्लैस्पि-कार्सा, उवा-उर्सि, ओसिमम-कैनम, लाइको, चिमाफिला, पैरेइरा, आर्किसैथ्ड्रडन ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

हाइड्रैस्टिनिनम म्यूरियेटिकम ।

(HYDRASTININUM MURIATICUM)

परिचय ।—एक तरहका हाइड्रैस्टिस कैनाडेन्सिसका चार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दाने (Cystals) से विचूर्ण तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐलोपैथीके मतसे भीतरी रक्तस्राव में इसका व्यवहार प्रचलित है ।

होमियोपैथीके मतसे बहुत ज्यादा ऋतुस्राव और तन्तुमय अर्बुदकी एक उत्कृष्ट दवा है ।

शक्ति ।—२ दशमिकसे ६ शततमिक तक

हाइड्रैस्टिकम म्यूरियेटिकम।

(HYDRASTICUM MURIATICUM)

दूसरा नाम।—मूरियेट और हाइड्रैस्टिया।

उपयोगिता और आभास।—इसमें धमनीका संकोचन पैदा करने और जरायुसे रक्तस्राव रोकनेकी शक्ति है। इसीलिये यदि जरायुसे बहुत अधिक रक्तस्राव (विशेषकर यदि वह तन्तुमय अर्बुदके कारण हो) वगैरह लक्षणमें विशेष सफलताके साथ व्यवहृत होता है।

मुँहमें जखम, गलेमें जखम, नाकमें जखम वगैरहमें इसका बाहरी प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध तुलनीय।— हाइड्रैस्टिस केना।

शक्ति।—निम्न शक्ति।

हाइड्रैस्टिस।

(HYDRASTIS CANADENSIS)

दूसरा नाम।—आरेञ्ज रूट। गोल्डन सिल

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है:—शराब पीनेकी वजहसे मतवालापन; दमा; केन्सर या कर्कटीया जखम; सर्दी; कब्जियत; गठ्ठा; अजीर्णता; खसड़ा; कर्ण-रोग; मूर्च्छा; नासूर; पाकाशयका विकार; प्रमेह; अर्श; कामला; श्वेत-प्रदर, नखकी बीमारियाँ; स्तनकी घुंडीका जखम; यकृतकी बीमारी; कटिवात; श्वित्र; बहुत ज्यादा रजःस्राव; जरायुसे खूनका स्राव; मुँहका जखम; माथेमें आवाज; नकसीर; फूल अटकाना; गुह्यद्वारकी बीमारी; पीठ या पैरका झुनझुनीवाला वात; माथेसे रक्तस्राव; पाकस्थलीकी बीमारी ; ल' ; गलेका जखम; सान्निपातिक ज्वर; जरायुकी

उपयोगिता और आभास ।—इसका सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंपर आक्रमण होता है और कण्ठ, पाकस्थली, जरायु और मूत्रनालीकी सर्दी पैदा हो जाती है और उसके भीतरकी झिल्लीसे गाढ़ा गोंदकी तरह पीला श्लेष्मा निकला करता है। पाकस्थली और यकृतके क्रिया-विकारके साथ कर्कट पैदा होनेवाली धातुवाले मनुष्य या बहुत शराब आदि पीनेके कारण जिनका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है, उनके लिये हाइड्रेस्टिस विशेष लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—नाक, गलेका भीतरी भाग, पाकस्थली, अन्त्राशय, जरायु या मूत्रनालीकी श्लैष्मिक झिल्लीसे गाढ़ा गोंदकी तरह और पीले रङ्गका श्लेष्माका स्राव ; कर्कटका अर्बुद (Scirrhus),—कड़ा और त्वचासे सटा हुआ,—उसकी आवरक त्वचापर छींटेकी तरह दाग रहते हैं और वह सिकुड़ी हुई उसमें अस्त्रकी चोट लगने और छेदनेकी तरह दर्द होता है ; स्तनकी घुंडी पीछेकी ओर खिंचती है। ढीली और दाँतके दागसे भरी जीभ। खाँसनेपर नाकके पीछवाले छेद (Posterior Nares) और जीभकी जड़के अगल बगलवाले दोनों गह्वर (Fauces) से नीला और गाढ़ा गोंदकी तरह या पतला रबरकी तरह श्लेष्मा निकलता है। पारा या उपदंश विषके कारण पैदा हुआ गलेका जखम।

लक्षणावली।

मन ।—विस्मृति-प्रवण,—जो पढ़ता है या बोलता है, वह याद नहीं रख सकता। किये हुए अपकारका बदला चाहनेवाला स्वभाव (नक्स, केलि-फायोड)। ऐसे आकांक्षा करता है, कि वर्त्तमान रोगमें उसकी मृत्यु हो जाये (क्लोन, क्रियो, मार्क, सल्फ, सिफिलिन)।

मस्तक ।—माथेमें नशा होनेपर जैसा हो जाता है, उसी तरहकी गड़बड़ी या जड़ता मालूम होती है (जेल्स)। आँखके ऊपर, कपालमें दर्द होता है—हाथसे दबा देनेपर आराम मिलता है। ब्रह्मतालुमें दर्द होता है, एक दिनका नागा देकर,—दिनके ११ बजनेके समय आरम्भ होता है, जी मिचलाता है, ओकाई आती है और मनमें कष्ट होता है ; कपालमें जहाँ केश खतम हुए हैं वहीं फोड़ा होता है,—बाहरकी ठण्ढी हवा सेवन करते करते, गर्म कमरेमें जानेपर, घाव बढ़ जाता है और पानीसे धोनेपर रस निकला करता

है। माथेकी पेशीमें ज्यादा दर्द होता है,—माथेकी त्वचा और गलेकी पेशीमें दर्द हुआ करता है (ऐक्टि-रेस)।

आँख ।—आँख और पलकोंमें दर्द और जलन होती है और बहुत ज्यादा आँसू गिरा करते हैं। पलकें सट जाती हैं (इयुफ्रे, ग्रैफ, ब्राई, पल्स लाई)। आँखका स्वच्छ आवरक अस्वच्छ या गदला भाव लिये रहता है (कैनाब-सेट; कोना, इयुफि)। ठण्ड लगनेकी वजहसे आँखका प्रदाह,—आँखसे गाढ़ा श्लेष्मा निकलकर (बेराइ, कैल्के, हिप, मार्क, आयोड, पल्स, सल्फ), आँख घोर हरा-पीला मिले रङ्गकी हो जाती है।

कान ।—कानमें गरजनेकी आवाज़ या भों भों शब्द (कास्टि, ग्रैफ, पल्स), कर्ण-स्राव, बदबूदार गाढ़ा पीब निकलता है। गलग्रन्थियोंके (Tonsils) बढ़नेके कारण बहरापन। कर्ण-पश्चान्नलीकी सर्दी,—रोगीके कण्ठकी आवाज बहुत चढ़ी रहती है।

नाक ।—नयी सर्दी,—स्राव पानीकी तरह और ज़खम पैदा करनेवाला (आर्स, आर्स-आयोड, सिपा, एरम-ट्राई)। अक्षि-गोलकके ऊपरी भागमें भार मालूम होता है; कपालमें दर्द होता है और बार बार छींक आती है। साँस खींचनेपर नासारन्ध्रमें ठण्डक मालूम होती है। खाँसनेपर नासा-पश्चान्नलीसे पीले रङ्गका गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है (नासा-पश्चान्नालीसे श्लेष्मा कण्ठनलीके मुंहमें गिरता है=फेर, कैलि-बाई), पीनस या पुरानी सर्दीकी बीमारी,—खून मिला पीबकी तरह श्लेष्मा निकलता है कभी कभी नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है।(कोरैल-रूब्र)। पारा या उपदंश विषकी वजहसे गलेका जखम और निगलने में कष्ट। नासारन्ध्रमें सुरसुरी होती है,—ऐसा मालूम होता है, कि उसमें केश पड़ा हुआ है= विशेषकर दाहिने छेदमें (बायें छेदमें=आ एट, साइ, कैलि-बाई)।

मुखमण्डल ।—चेहरा उतरा हुआ, पीला और आंख कालिमासे घिरी; दोनों आँखें गड़हेमें धँसी, ओंठका एक तरहका कर्कट रोग; श्वेत-कुष्ठ।

मुख-विवर ।—मुंहमें ऐसी जलन मालूम होना मानो मिर्चा चबाया है। जीभपर सफेद लेप और बीचमें एक पीली रेखा; जीभ फूली और उसके दोनों ओर दांतके दाग (आर्स, मार्क); जीभ मानों झुलस गयी है (सैङ्गिनु),

ऐसा मालूम होना (कोलो, वेरेट, विर)। स्तन पिलानेवाली माताके मुँह का जखम (लेके, लेक-कोन, पोडो ; स्तनवृन्तमें जखमके साथ होनेपर=फास) पारा या क्लोरेट आव पोटास लगने या सेवन करनेके कारण मुँहका जखम ; जीभका कर्कट रोग (एपिस, कार्बो-ऐन, कोना, लेके, एसिड नाई, फाइटो, सिलिका)।

गलेके भीतर।—खाँसनेपर नासा-पश्चानली और जिह्वामूलकी जड़के दोनों गह्वरसे गाढ़ा गोंदकी तरह लसदार और पीला श्लेष्मा निकलता है। गलेमें जखम पैदा हो जाता है।

पाकस्थली।—ऊपरी पेटके कर्कट रोगमें पेट बराबर खाली और क्षीण मालूम होता है—डकार लेनेमें गलेमें अम्ल आ जाता है और पानी मिले दूधके सिवा और जो कुछ खाता है या पीता है, वह सब कै हो जाता है। रोगीको स्वभावतः अच्छा पाखाना नहीं होता (ग्रैफा, कार्डियुरेंगो)। पाकाशयका प्रतिश्याय या सर्दी (Gastric catarrh),—मुँह उजला, जीभ पीली लसदार ; खाने बाद पाकस्थलीमें सुस्ती मालूम होती है और रोगीको पर्याय क्रमसे पतला और कड़ा पाखाना हुआ करता है,—इसके साथ ही कामला रोग (Jaundice)। रोटी या साग सब्जी खानेपर अम्ल हो जाता है। रोगी आलसी हो पड़ता है और जो खाता है, वह पचता नहीं है। कलेजेमें धड़कनके साथ पाकाशयमें खालीपन और सुस्ती मालूम होती है, मानो पेटमें कुछ नहीं है। सुखण्डी (Marasmus),—पेट खोखला हो जाता है और रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है;

अन्त्राशय।—यकृतकी क्रिया न होनेके कारण उजला और बहुत थोड़े परिमाणमें पाखाना होता है। यकृत छोटा हो जाता है (Atrophied)। ऊपरी पेट और तलपेटमें थोड़ा दर्द और जलन होती है और प्लीहा-प्रदेशमें तेज दर्द मालूम होता है। पित्त पथरीका शूलका दर्द (कैल्के, कार्डुयस-मेरी, चायना)। कब्जियतके साथ छेदनेकी तरह शूलका दर्द विशेषकर तलपेटमें। वायु निकलने बाद घट जाता है, मानो छुरीसे काटनेकी तरह तेज दर्द होता है और दर्द अण्डकोषों तक उतर आता है, पाखाना हो जाने बाद मूर्च्छाकी तरह हो जाता है। पुट्ठेमें ऐसा दर्द होता है मानो जकड़ गया है और मानो काटता है, इस ढङ्गका दर्द अण्डकोषतक फैल जाता है।

मलान्त्र और मल।—दस्त पतले,—मल उजला और कुछ हरी आभा लिये, मलद्वार जखम पैदा करनेवाला। कब्जियत,—मल थक्का थक्का और पीले श्लेष्मासे ढका (ग्रैफ); किसी तरह भी पाखाना नहीं होता और माथेमें धीमा धीमा दर्द हुआ करता है। पेट बिलकुल खाली मालूम होता है और अच्छी तरह न पचनेके कारण खाँसी आ जाती है; विरेचक दवाएँ खानेपर कब्जियत और भी बढ़ जाती है। पाखानेके समय और बाद मलान्त्र में बहुत देरतक जलन हुआ करती है। मलद्वारका नासूर या भगन्दर। अर्श,—रक्त-स्राव होनेके कारण रोगी क्षीण और सुस्त हो पड़ता है। मलान्त्र प्रदाह (Proctitis of inflammation of Rectum=ऐलो, पोडो, कोलचि, ऐसिड-नाइ, फास)।

पेशाब।—मूत्रस्थलीका प्रदाह (Cystitis),—पेशाबके साथ गाढ़ा गोंदकी तरह पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है, और तली जमती है (चिमै-फिल)। मूत्र-ग्रन्थि-प्रदेशमें लगातार थोड़ा थोड़ा दर्द होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—स्वप्नदोषके बाद रोगी कमजोर हो पड़ता है (सिङ्को)। प्रमेह,—द्वितीय अवस्था, गाढ़ा पीला श्लेष्मा निकलता है। लाला प्रमेह (Gleet),—सुस्ती और बहुत ज्यादा परिमाणमें बिना दर्दवाला स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर,—स्राव कभी कभी पानीकी तरह या अधिकांश समय गाढ़ा ही होता है, रङ्ग पीला और जखम पैदा कर देनेवाला,—ऊपरी पेट खाली मालूम होता है और कलेजा धड़का करता है (डा॰ फैरिङ्गटन); ऋतु होनेपर बढ़ता है। जरायु द्वार, जरायु-ग्रीवा और योनि-पथ मानो खाल उधड़ जानेकी तरह हो जाता है (Excoriated) सूत्र-तन्तु-मय अर्बुद (Fibroid tumor) होनेके कारणसे जरायुसे रक्तस्राव होता है,—वयःसन्धिकालमें (at menopause) बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव होता है और योनि-द्वारमें भयानक सुरसुरी होती है—कभी कभी कामरमें उत्तेजना होती है। अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द, स्तनसे कन्धे तक और कन्धेसे बहुतक फैल जाता है। स्तनका कर्कट,—अर्बुदमें ऐसा मालूम होता है मानो छुरी मारी जा रही है; बाएँ स्तनमें कड़ा और ऊँचा नीचा अर्बुद, स्तनकी घुँडी भीतरकी ओर धुस जाती है। बगलकी गांठ उसम है और रोगिनी दुबली हो जाती है; जिनका व मुंहके छाले; स्तनकी घुँडीकी खाल उधड़

बहुत दर्द होता है। जरायु भ्रंश, इसके साथ ही जरायु ग्रीवा और योनि घाव हो जाता है।

श्वास-यन्त्र।—स्वरनालीमें पिट पिट करती हुई सूखी खांसी आती है। छातीमें जलन होती है, उसमें बहुत दर्द होता है और ऐसा मालूम होता मानो भीतर जखम हो गया है। दुबले पतले वृद्ध मनुष्योंका वायुनली भुज-प्रदाह (Bronchitis), कफ पीला और गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मामय [केलि-बाइ]। यक्ष्म-कास रोगमें ऊपरी पेट खाली मालूम होता है, शरीर दुबला हो जाता है, सवेरे बहुत देरतक छाती धड़कती है और भूख नहीं रहती। कलेजा धड़कना,—छातीके भीतरसे बाएँ कन्धेतक तेज दर्द फैलता है और बाँया हाथ सुन्न हो जाता है, हृत्पिण्डकी गति अनियमित और आयास साध्य, करवट बदल कर सोनेपर बढ़ जाता है; बाईं करवट सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो सांस रुक जाती है।

त्वचा।—पाण्डु रोग, शरीरकी त्वचा गाढ़ी हरी पीली रङ्गकी। शरीरके अंग विशेषमें बहुत अधिक पसीना होता है (बहुत पानी या स्वेदका स्राव), बगल और जननेन्द्रिय प्रदेशमें बहुत ज्यादा और बदबूदार पसीना होता है। शीत-पित्त या आमवात,—खुजलानेपर और रातमें बढ़ता है। बच्चों के गले और अङ्ग अङ्गके गांसेमें खाल उधड़ जानेकी तरह घाव हो जाता है (Intertrigo = लाइ, ग्रैफ)। मसूरिका या चेचक (आरम्भसे अन्ततक प्रयोग करना चाहिये)। दाने सब काले, भयानक पिट-पिटाहट और खुजली होती है। मुँह फूलता है, ऐसा मालूम होता है, मानो गलेके भीतरकी खाल उधड़ गयी है—रोगी बहुत कमजोर।

वृद्धि।—रातके समय; उत्तापसे; धोनेपर और शरीर सञ्चालनसे।

उपशम।—विश्राम और रगड़नेपर।

प्रतिविष।—(Antidote) सलफर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—**तुलनीय**।—एसिड-म्यूर, पल्स (श्लैष्मिक-झिल्ली); केलि-बाइ, ऐलो; कोलिन्सो, बार्बा, लाइ, पोड़ो, मार्क, नक्स-वोम (पाकाशयकी सर्दी); मार्क-कोर, ह्युफ्रे, (सर्दी); हिप (पीनस); कोना,

कार्ब्बुयु-रेंगो ; क्रियो, फाइटो (कर्कट) ; चेलिडो (यकृत) ; सेक्रिय, हाइड्रोकोट, वेप, थूजा, सलफर (निम्नाङ्ग) ।

शक्ति ।—मूल अर्क से ३० शततमिक क्रम (अजीर्ण रोगमें निम्न और नाकको सर्दी रोगमें उच्च क्रमका व्यवहार करना चाहिये ।)

हाइड्रोकोटाइल-एसियाटिका ।

(HYDROCOTYLE ASIATICA)

दूसरा नाम ।—एक तरहकी कोई ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—स्थलकुड़ी लताके समूचे वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मुँहासे ; कब्जियत ; गोद ; सड़नेवाले जखम ; प्रमेह ; कुष्ठ ; प्रदर ; यकृतका घटना ; स्नायुशूल ; चर्म-रोग ; जरायुकी बीमारियाँ ; योनिमें खुजली ।

उपयोगिता और आभास ।—कुष्ठ और त्वक्-रोग (मुंहका एक तरहका सफेद रङ्गका जखम) में इसका फायदा प्रसिद्ध है । शरीरकी त्वचाकी तरह स्त्री-जननेन्द्रियपर भी इसके द्वारा प्रभाव पहुंचनेके कारण प्रदर आदि उत्पन्न हो जाया करता है और यकृत, स्नायुमण्डल और श्लैष्मिक झिल्लीपर भी इसकी महान शक्तिका परिचय मिला करता है । इसके क्रियाफल-स्वरूप व्रण, एकजिमा, जले घाव (Pemphigus), त्वक् (Lupus) और तांबेके रङ्गके उद्भेद प्रभृति नाना प्रकारके चर्मरोग पैदा होते हैं ; मुखमण्डलमें स्थान स्थानपर घनी फुंसियां और शरीरकी कितनी जगहपर असह्य खुजली ; अविपाक या उपदंश दोषके कारण मुंहके घाव, बार बार मूत्राशयमें सङ्कोचनकी वजहसे पेशाब का वेग; पेशाबकी परिमाणमें अधिकता ; स्त्री-योनिमें गर्मी और सुड़सुड़ी ; जरायु भारी ; जरायुमें मांसांकुरमय जखम (Granular Ulceration) ; चेहरेका स्नायु-प्रदाह और पेशी मण्डलीमें दर्द वगैरह इसके कई क्रियाफल हैं ।

लक्षणावली।

मन।—विषन्नता; एकान्तमें रहनेकी इच्छा।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, घोर दृष्टि, नाक फूलना इत्यादि।

मुखमण्डल।—बाये' पैरकी हड्डी और आँखके कोटरके चारों ओर क्षणभर के लिये पैदा होनेवाला या रह रहकर होनेवाला दर्द। लाल व्रण (Ache Rosacea),—विशेषकर जरायुकी बीमारीकी वजहसे व्रण (ऐकी रेस)। बोलनेमें व्याघात होना। कोमल तालुमें ज्यादा रक्त जमा होनेके कारण कोई पदार्थ निगलनेमें दर्द होता है—खानेपर बढ़ता है। मुंहके भीतर वाली श्लैष्मिक झिल्लीमें खून इकट्ठा हो जाता है। दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियाँ लाल और प्रदाह युक्त हो जाती हैं।

पाकाशय आदि।—अरुचि। तम्बाकू खाना अच्छा नहीं लगता (इग्ने, काक्यु, युग-रिजी, केम्फो)। बार बार खट्टी डकार आती है। पेट फूलता है. मानो पेटमें सब वायु एक जगह एकत्र होकर एक बड़ा सा गोला बन गया है। ऐसा मालूम होता है, मानो एक आग भरी लकड़ी पेटके भीतर चारों ओर गर्मी फैला रही है। आँतें आदि इस तरह जकड़ जाती हैं, कि भयानक दर्द होने लगता है। वृहत् योजकान्त्र (Transverse colon) में क्षण भरके बाद रह रहकर दर्द। पेटके यन्त्र सब ऐसा मालूम होता है, मानो हिल रहे हैं। यकृतके ऊपरी अंशमें दर्द, यकृतमें खूनका दौरान रुक जाता है। मलनाली (Rectum) में भार मालूम होता है और मलद्वारमें जलन होती है। पाखानाकी वृथा चेष्टा। मल सूखा और काला (लेप्ट, हिलियेन)।

पेशाब और पुं-जननेन्द्रिय।—मूत्रस्थली ग्रीवाका प्रदाह (मिचेला; युपेट-पर्फि)। शुक्ररज्जुमें (Spermatic cord) ऐसा दर्द मानो जकड़ रहा है। बाईं ओर दर्द अधिक होना। मुष्क (Scrotum) भूल पड़ता है (ऐसिड-नाई, सल्फ)। रमण या आलिङ्गनकी इच्छा न होना। मूत्रधारकी मुखशायिका (Prostate gland) ग्रन्थि भारी मालूम होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु-ग्रीवा (Cervix Utori) लाल (मिचेला, रेप) और योनिके भीतर उत्ताप मालूम होता है और खुजलाती है (जरायु-द्वारमें जखम=वेस्रा)। जरायुका मांसांकुरमय जखम (Gra-

कार्बो-वेज ; ग्रिफाइट ; फाइटो (कर्कट) ; चेलिडो (यकृत) ; सेव्हिसु; हाइड्रोकोट, वेप, थूजा, सलफर (निम्नाङ्ग)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम (अजीर्ण रोगमें निम्न और नावकी सर्दी रोगमें उच्च क्रमका व्यवहार करना चाहिये।)

हाइड्रोकोटाइल-एसियाटिका ।

(HYDROCOTYLE ASIATICA)

दूसरा नाम ।—एक तरहकी कौड़ी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—थलकुड़ी लताके समूचे वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—मुँहासे ; कब्जियत ; गोद ; सड़नेवाले जखम ; प्रमेह ; कुष्ठ ; प्रदर ; यकृतका घटना ; स्नायुशूल ; चर्म-रोग ; जरायुकी बीमारियां ; योनिमें खुजली ।

उपयोगिता और आभास ।—कुष्ठ और त्वक्-रोग (मुंहका एक तरहका सफेद रङ्गका जखम) में इसका फायदा प्रसिद्ध है। शरीरकी त्वचाकी तरह स्त्री-जननेन्द्रियपर भी इसके द्वारा प्रभाव पहुंचनेके कारण प्रदर आदि उत्पन्न हो जाया करता है और यकृत, स्नायुमण्डल और श्लैष्मिक झिल्लीपर भी इसकी महान शक्तिका परिचय मिला करता है। इसके क्रियाफल-स्वरूप व्रण, एकजिमा, जले घाव (Pemphigus), त्वक् (Lupus) और तांबेके रङ्गके उद्भेद प्रभृति नाना प्रकारके चर्मरोग पैदा होते हैं ; मुखमण्डलमें स्थान स्थानपर घनी फुंसियां और शरीरकी कितनी जगहपर असह्य खुजली ; अविपात या उपदंश दोषके कारण मुंहके घाव, बार बार मूत्राशयमें सङ्कोचनकी वजहसे पेशाब का वेग, पेशाबकी परिमाणमें अधिकता ; स्त्री-योनिमें गर्मी और सुड़सुड़ी ; जरायु भारी ; जरायुमें मांसांकुरमय जखम (Granular Ulceration) ; चेहरेका स्नायु-प्रदाह और पेशी मण्डलोंमें दर्द वगैरह इसके कई क्रियाफल हैं।

लक्षणावली।

मन।—विषणता ; एकान्तमें रहनेकी इच्छा।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, घोर दृष्टि, नाक फूलना इत्यादि।

मुखमण्डल।—बाये' पैरकी हड्डी और आंखके कोटरके चारों ओर क्षणभर के लिये पैदा होनेवाला या रह रहकर होनेवाला दर्द। लाल व्रण (Acne Rosacea),—विशेषकर जरायुकी बीमारीकी वजहसे व्रण (ऐक्टी रैस)। बोलनेमें व्याघात होना। कोमल तालुमें ज्यादा रक्त जमा होनेके कारण कोई पदार्थ निगलनेमें दर्द होता है—खानेपर बढ़ता है। मुंहके भीतर वाली श्लैष्मिक झिल्लीमें खून इकट्ठा हो जाता है। दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियां लाल और प्रदाह युक्त हो जाती हैं।

पाकाशय आदि।—अरुचि। तम्बाकू खाना अच्छा नहीं लगता (इग्ने, काष्ठु, युग-रिजी, कोम्फो)। बार बार खट्टी डकार आती है। पेट फूलता है, मानो पेटमें सब वायु एक जगह एकत्र होकर एक बड़ा सा गोला बन गया है। ऐसा मालूम होता है, मानो एक आग भरी लकड़ी पेटके भीतर चारों ओर गर्मी फैला रही है। आंतें आदि इस तरह जकड़ जाती हैं, कि भयानक दर्द होने लगता है। वृहत् योजकान्त्र (Transverse colon) में क्षण भरके बाद रह रहकर दर्द। पेटके यन्त्र सब ऐसा मालूम होता है, मानो हिल रहे हैं। यकृतके ऊपरी अंशमें दर्द, यकृतमें खूनका दौरान रुक जाता है। मलनाली (Rectum) में भार मालूम होता है और मलद्वारमें जलन होती है। पाखानाकी वृथा चेष्टा। मल सूखा और काला (लेप्ट, हिलियेन)।

पेशाब और पुं-जननेन्द्रिय।—मूत्रस्थली ग्रीवाका प्रदाह (मिचेला ; युपेट-पर्पि)। शुक्ररज्जु में (Spermatic cord) ऐसा दर्द मानो जकड़ रहा है। बाईं ओर दर्द अधिक होना। मुष्क (Scrotum) फूल पड़ता है (ऐसिड-नाई, सल्फ)। रमण या आलिङ्गनकी इच्छा न होना। मूत्रधारकी मुखशायिका (Prostate gland) ग्रन्थि भारी मालूम होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु-ग्रीवा (Cervix Uteri) लाल (मिचेला, रेप) और योनिके भीतर उत्ताप मालूम होता है और खुजलाती है (जरायु-द्वारमें जखम=वेसा)। जरायुका मांसांकुरमय जखम (Gra-

nular ulceration in womb), जरायु बहुत भारी मालूम होता है (ऐलैट, बेल, कैल्के, कौलोफिल, फ्रैक्स-ऐमे, जेलसि, नक्स)। बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव (सिफिलिन, सिलिका, कैल्के, स्टैन)। जरायु के बाएँ पार्श्वमें बहुत दर्द होता है। जरायु और उससे लगे हुए यंत्रोंमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता हैं (ऊेमस, इग्ने, पल्स)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बाहुका अगला आधा भाग और दोनों पैर, ऐसा मालूम होता है, मानो छोटे होते जा रहे हैं। हाथ पैर फैला फैलाकर अङ्गड़ाई लेनेकी इच्छा (ऐमिल, साइमैक्स, हेलोडर्मा)। प्रत्येक पेशी और हरेक सन्धिमें दर्द मालूम होता है,—बायें अङ्गमें अधिक। अस्थि-मज्जाके भीतरसे ऐसा बोध होता है मानों गर्म पानी बह रहा है। चलनेके समय डगमगाया करता है; खड़ा नहीं रह सकता। उरुमें तेज दर्द। नींद खुलनेपर मालूम होता है, कि सभी पेशियोंमें दर्द हो रहा है। समूची देहमें क्लान्ति और असाच्छन्द्य मालूम होना।

त्वचा ।—सूखी फुन्सियाँ। गाल और नाकके अगले भागमें सफेद जखम (हाइड्रैस्ट, फेर-पिक)। उप-त्वचा बहुत मोटी हो जाती हैं और रूसी या खाल उधड़ जाया करती है; चेहरेपर ताँबेके रङ्गके उद्भेद निकलते हैं। विचर्चिका (Psoriasis),—अर्थात कितनी ही पूरी पूरी न निकली हुई फुन्सियाँ सूखकर रूसी या मरी छालकी तरह हो जाती हैं और फिर रसीले दानेके रूपमें हो जाती हैं। चेहरेपर छोटी छोटी फुन्सियां (Pimples) निकलती हैं और वक्षस्थलमें रस भरी फुंसियां (Vesicles) निकलती हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंमें पिटपिटी होती है। कितनी ही जगह फोकार और ऐसे उद्भेद निकलते हैं जिनके किनारे पपड़ीसे ढके रहते हैं। पैरमें बहुत खुजलाहट होती है। शरीरमें जगह जगह अरुणिका (Erythema) निकलती है, उनमें बहुत खुजली होती है और बहुत ज्यादा पसीना निकला करता है। पेटपर खसड़ेकी तरह दाने निकलते हैं।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—हाइड्रैस्टिस, हियुरा, फेरम-पिक, (कुष्ट व्याधि; शरीरकी त्वचा मोटी हो जाती है), ऐनाकार्ड, थ्रैस्पाई—बार्बा (जरायु); फ्रैक्सि-ऐमे, मिचेला-रेप, इयु-पर्पि, हाइड्रैञ्जिया (मूत्रस्थलीको

सर्दी; मूत्रस्थली-ग्रीवा और वेस्ट-पेशीका प्रदाह; वृक्ककी सर्दी (Renal Catarrh), पेशाबमें पीला चूर दिखाई देता है और मूत्रस्थली में जलन होती है; मुखगायिका ग्रन्थिका बढ़ना वगैरह = सेबाल-सेरु, एपिस

शक्ति ।—मूल अर्कसे १२ शततमिक क्रम तक ।

हाइड्रोफाइलम वर्जिनियेनम ।

(HYDROPHYLLUM VIRGINIANUM)

दूसरा नाम ।—वर्जिनियम वाटर लीफ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे तुरन्तके खिले उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यूफ्रेशियाकी तरह यह भी आँखकी बीमारियोंकी एक बढ़िया दवा है। आँखसे आँसू बहना, जलन, खुजली, आँखसे कीच निकलना, पलकें सट जाना, फूलना और लाल हो जाना; रोशनीका सहन न होना वगैरह आँखोंके प्रदाहके लक्षणमें लाभदायक है ।

यह रास्टक्सका विष-दोष नष्ट करता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हायोसायेमिनम ।

(HYOCYAMINUM)

परिचय ।—हायोसायामसका एक तरहका दानेदार क्षार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण या तरल आकारमें क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—चक्षु चिकित्सक ऐट्रोपिनकी तरह आँखकी पुतली फैलानेके लिये इसका व्यवहार करते हैं ।

nular ulceration in womb), जरायु बहुत भारी मालूम होता है (ऐलेट, वेल, वोल्फे, कोलोफिल, फ्रेक्स-ऐमे, जेलसि, नक्स)। बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव (सिफिलिन, सिलिका, कैल्के, स्टैन)। जरायु के बाएँ पार्श्वमें बहुत दर्द होता है। जरायु और उससे लगे हुए यंत्रोंमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता है (जेमस, इग्ने, पल्स)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बाहुका अगला आधा भाग और दोनों पेर, ऐसा मालूम होता है, मानो छोटे होते जा रहे हैं। हाथ पेर फैला फैलाकर अङ्गड़ाई लेनेकी इच्छा (ऐमिल, साइमेक्स, हेलोडर्मा)। प्रत्येक पेशी और हरेक सन्धिमें दर्द मालूम होता है,—बायें अङ्गमें अधिक। अस्थि-मज्जाके भीतरसे ऐसा बोध होता है मानों गर्म पानी बह रहा है। चलनेके समय डगमगाया करता है; खड़ा नहीं रह सकता। उरुमें तेज दर्द। नींद खुलनेपर मालूम होता है, कि सभी पेशियोंमें दर्द हो रहा है। समूची देहमें क्लान्ति और अस्वाच्छन्द्य मालूम होना।

त्वचा ।—सूखी फुन्सियाँ। गाल और नाकके अगले भागमें सफेद जखम (हाइड्रैस्ट, फेर-पिक)। उप-त्वचा बहुत मोटी हो जाती हैं और रूसी या खाल उधड़ जाया करती है; चेहरेपर ताँबेके रङ्गके उद्भेद निकलते हैं। विचर्चिका (Psoriasis),—अर्थात कितनी ही पूरी पूरी न निकली हुई फुन्सियाँ सूखकर रूसी या मरी छालकी तरह हो जाती हैं और फिर रसीले दानेके रूपमें हो जाती हैं। चेहरेपर छोटी छोटी फुन्सियां (Pimples) निकलती हैं और वक्षस्थलमें रस भरी फुंसियां (Vesicles) निकलती हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंमें पिटपिटी होती है। कितनी ही जगह क्षोकर और ऐसे उद्भेद निकलते हैं जिनके किनारे पपड़ीसे ढके रहते हैं। पैरमें बहुत खुजलाहट होती है। शरीरमें जगह जगह अरुणिका (Erythema) निकलती है, उनमें बहुत खुजली होती है और बहुत ज्यादा पसीना निकला करता है। पेटपर खसड़ेकी तरह दाने निकलते हैं।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—हाइड्रैस्टिस, हियुरा, फेरम-पिक, (कुष्ट व्याधि; शरीरकी त्वचा मोटी हो जाती है), ऐनाकार्ड, थ्रेस्पाई—बार्बा (जरायु); फ्रेक्सि-ऐमे, मिचेला-रेप, इयु-पर्पि, हाइड्रेञ्जिया (मूत्रस्थलीकी

स्राव रुक जाना ; उन्माद ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाकी झिल्लीका प्रदाह ; मानसिक विकार ; स्नायुशूल ; रतौंधी ; पक्षाघात ; कानका दर्द और प्रदाह ; फिफड़ेका प्रदाह ; सूतिकोन्माद ; क्रोधका दुष्परिणाम ; नींदमें व्याघात ; तोतलाना ; धनुष्टङ्कार ; दाँतका दर्द ; पेशाब रुकना ; दृष्टिमें गड़बड़ी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रक्त-प्रधान, क्रोधी, थोड़ेमें ही कातर परिवर्त्तन शील स्वभाव और भूरे केशवाले मनुष्योंके लिये यह विशेष लाभदायक है। भय या कृमिके कारण धनुष्टंकार ; प्रसवके बादका या प्रसवके समय का धनुष्टंकार ; मस्तिष्ककी प्रदाह शून्य उत्तेजना, मदात्यय (Delirium Tremens)। विकार और प्रलाप,—शय्यासे उठकर भाग जाना चाहता है ; कोई बात पूछनेपर उत्तर देता है, पर तुरन्त सो जाता है ; बहुत सन्दिग्ध चित्त,—अपने आत्मीय ही उसे विष खिला देंगे, ऐसी धारणा रहती है, ऐसा विश्वास रहता है, कि वह जिस जगह है, वह उसका घर नहीं है ; पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना ; आंखोंसे पैरकी अंगुली तक प्रत्येक पेशी एक बार सिकुड़ती फिर फैला करती है,—अचेतन अवस्था ; प्रणयकी पूर्त्ति न होनेकी वजहसे मानसिक विकार ; असम्बद्ध प्रलाप ; ठहाका मारकर हँसनेका आवेग ; कामोन्माद,—शरीर खोलकर गुप्ताङ्ग या लिङ्ग आदिका स्थान निर्लज्ज भावसे सबको दिखाता है ; खाँसी,—सोते ही बढ़ जाती है और उठ बैठनेपर घटती है ; विषय आदिकी दुश्चिन्ताकी वजहसे नींद न आना। मूत्रस्थलीका पक्षाघात,—प्रसवके बादकी बहुव्यापक सर्दी (Influenza) और फिफड़ेके प्रदाहकी वजहसे बोखार,—विकार-प्राप्त या आच्छन्न भावापन हो पड़ता है,—रोगी अपने केश पकड़कर खींचा करता है,—विकार अवस्थामें रोगी सोचता है, कि रूई या कीड़े आदि उड़ रहे हैं और उन्हें पकड़नेकी चेष्टा करता है। शय्या और अपने नख खोंटा करता है। अनजानमें पाखाना पेशाब वगैरह करई हायोसायमसके प्रधान निर्णायक और सिद्धिप्रद लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—अकेले रहनेमें डरता है (केल्के, कैम्फो, क्लिमेट, केलि-कार्ब, मार्क, नक्स, लाइ, ष्ट्रैमोन) ; बहुत सन्दिग्ध चित्त (ऐनाग्नि, कास्टि, केलि-

होमियोपैथीके मतसे यह स्नायुशूल, आक्षेप, अस्पष्ट दृष्टि, चेहरेपर खूनकी झलक, कण्ठ सूखा, पलकोंका स्नायुशूल और आक्षेप, स्नायविकता, अनिद्रा, गलेका जखम और सान्निपातिक ज्वर प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—हायोसिन-हाइड्रोब्रोम, हायोसायमस-नाइगर, वेल, ऐट्रोपियम, स्ट्रैमो।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

हायोसिन हाइड्रोब्रोम

(HYOSIN HYDROBROM)

दूसरा नाम।—स्कोपोलेमिन-हाइड्रोब्रोमाइ।

उपयोगिता और आभास।—अनिद्रा, यक्ष्मारोगमें सूखी खाँसी, पक्षाघातग्रस्त अंगोंका काँपना, मूत्र विकार, नयी स्नायविक कमजोरी, एकाएक गहरा शोक समाचार सुननेके कारण उपसर्ग वगैरह लक्षणकी उत्कृष्ट दवा है।

शक्ति।—३x—६x।

हायोसायमस।

(HYOSCYAMUS NIGER)

दूसरा नाम।—हेन-बेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अन्नापन; कलेजेका दर्द; मूत्राशयका पक्षाघात; श्वासनाली प्रदाह; ताण्डव; तन्द्रा; खाँसी; मदात्यय; अतिसार; बाधक; सान्निपातिक ज्वर; मृगी; नाकसे रक्तस्राव; कामोन्माद; आँखकी बीमारी; रक्त-कास; रक्तस्राव; हिचकी; जलातङ्क रोग; व्याधि-शङ्का; प्रसवके बादका स्राव; प्रसवके बादको

स्राव रुक जाना ; उन्माद ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाकी झिल्लीका प्रदाह ; मानसिक विकार ; स्नायुशूल ; रतौंधी ; पक्षाघात ; कानका दर्द और प्रदाह ; फेफड़ेका प्रदाह ; सूतिकोन्माद ; क्रोधका दुष्परिणाम ; नींदमें व्याघात ; तोतलाना ; धनुष्टङ्कार ; दाँतका दर्द ; पेशाब रुकना ; दृष्टिमें गड़बड़ी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रक्त-प्रधान, क्रोधी, थोड़ेमें ही कातर परिवर्त्तन शील स्वभाव और भूरे केशवाले मनुष्योंके लिये यह विशेष लाभदायक है। भय या क्रमिके कारण धनुष्टंकार ; प्रसवके बादका या प्रसवके समय का धनुष्टंकार ; मस्तिष्ककी प्रदाह शून्य उत्तेजना, मदात्यय (Delirium Tremens)। विकार और प्रलाप,—शय्यासे उठकर भाग जाना चाहता है ; कोई बात पूछनेपर उत्तर देता है, पर तुरन्त सो जाता है ; बहुत सन्दिग्ध चित्त,—अपने आत्मीय ही उसे विष खिला देंगे, ऐसी धारणा रहती है, ऐसा विश्वास रहता है, कि वह जिस जगह है, वह उसका घर नहीं है ; पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना ; आंखोंसे पैरकी अंगुली तक प्रत्येक पेशी एक बार सिकुड़ती फिर फैला करती है,—अचेतन अवस्था ; प्रणयकी पूर्त्ति न होनेकी वजहसे मानसिक विकार ; असम्बद्ध प्रलाप ; ठहाका मारकर हँसनेका आवेग ; कामोन्माद,—शरीर खोलकर गुप्ताङ्ग या लिङ्ग आदिका स्थान निर्लज्ज भावसे सबको दिखाता है ; खाँसी,—सोते ही बढ़ जाती है और उठ बैठनेपर घटती है ; विषय आदिकी दुश्चिन्ताकी वजहसे नींद न आना। मूत्रस्थलीका पक्षाघात,—प्रसवके बादकी बहुव्यापक सर्दी (Influenza) और फेफड़ेके प्रदाहकी वजहसे ज्वर,—विकार-प्राप्त या आच्छन्न भावापन्न हो पड़ता है,—रोगी अपने केश पकड़कर खींचा करता है,—विकार अवस्थामें रोगी सोचता है, कि रूई या कीड़े आदि उड़ रहे हैं और उन्हें पकड़नेकी चेष्टा करता है। शय्या और अपने नख खोंटा करता है। अनजानमें पाखाना पेशाब वगैरह कई हायोसायमसके प्रधान निर्णायक और सिद्धिप्रद लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—अकेले रहनेमें डरता है (कोक्कि, कैम्फो, लिमेट, कैलि-कार्ब, मार्क, नक्स, लाइ, ष्ट्रेमोन) ; बहुत सन्दिग्ध चित्त (ऐनाक्नि, कास्टि, कैलि-

होमियोपैथीके मतसे यह स्नायुशूल, आक्षेप, अस्पष्ट दृष्टि, चेहरेपर खूनकी झलक, कण्ठ सूखा, पलकोंका स्नायुशूल और आक्षेप, स्नायविकता, अनिद्रा, गलेका जखम और सान्निपातिक ज्वर प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—हायोसिन-हाइड्रोब्रोम, हायोसायमस-लाइगर, बेल, ऐट्रोपियम, स्ट्रैमो ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हायोसिन हाइड्रोब्रोम

(HYOSIN HYDROBROM)

दूसरा नाम ।—स्कोपोलेमिन-हाइड्रोब्रोमाइड ।

उपयोगिता और आभास ।—अनिद्रा, यक्ष्मारोगमें सूखी खाँसी, पक्षाघातग्रस्त अंगोंका काँपना, मूत्र विकार, नयी स्नायविक कमजोरी, एकाएक गहरा शोक समाचार सुननेके कारण उपसर्ग वगैरह लक्षणकी उत्कृष्ट दवा है।

शक्ति ।—३x—६x ।

हायोसायेमस ।

(HYOSCYAMUS NIGER)

दूसरा नाम ।—हेन-बेन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछसे मूल-अर्क बनता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अस्थापन ; कलेजेका दर्द ; मूत्राशयका पक्षाघात ; श्वासनाली प्रदाह ; ताण्डव ; तन्द्रा ; खाँसी ; मदात्यय ; अतिसार ; बाधक ; सान्निपातिक ज्वर ; मृगी ; नाकसे रक्तस्राव ; कामोन्माद ; आँखकी बीमारी ; रक्त-कास ; रक्तस्राव ; हिचकी ; जलातङ्क रोग ; व्याधि-शङ्का ; प्रसवके बादका स्राव ; प्रसवके बादकी

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—मानो शराब आदिके नशेके कारण चक्कर आ रहा है,—चारों ओर अन्धकार देखता है (ऐनाक, कोम्फो, क्युप्रम, साइक्लो-मेन,जेल्स, कैलि-बाई, फाइटो, स्ट्रैमोन, नक्स-वोम);—यंत्रणासे बेहोश हो जाता है (कोना, ओपि, पल्स)। माथेके भीतर खून जमा होनेके कारण रोगी विकार ग्रस्त और बेहोश हो पड़ता है, पर कोई बात पूछनेपर ठीक ठीक उत्तर देता है;—आँख लाल और चमकीली और चेहरा नीली आभा लिये लाल रहता है, मस्तिष्क-प्रदाह,—माथेके भीतर चुनचुनी और टपक होती है,—मानो माथेमें तरंगें उठ रही हैं। मस्तिष्क मानो माथेकी खोलसे अलग हो रहा है (ब्राई, नेट्र-सल्फ)। माथेमें पानी पैदा होकर रोगीको मोह (मूर्च्छा) हो जाता है—ऐसा मालूम होता है, मानो माथेमें पानी हिल रहा है—हाथकी मुट्ठी बँधी और हाथका अंगूठा तलहथ्थीके ऊपर मुड़ जाता है। (हेलिबोरस)।

आँख।—आँख लाल, चमकीली और दृष्टि स्थिर (बेल); पलकें आपसे आप बन्द हो जाती हैं और रोगी आँख खोले नहीं रह सकता [कोलो फिल, जेल्स, कास्टि, ग्रैफ) पुतली फैली (बेल, ओपि,—संकुचित=साइक्यूटा फास,] सभी चीजें लाल [बेल, कोना, क्रोकस, स्ट्रान,] बहुत बड़ी [लोरो] ...को दिखाई देती है; दूरकी चीज पास मालूम होती है [बोवि] ...पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाता है।

...।—चेहरा—ठण्डा उजला और नीला, अथवा फला ... मुंहकी पेशियाँ सब फड़कती हैं। मुखमण्डल ...गकी; मुंह फाड़े रहता है। दोनों जबड़े अकड़ जाते ... विकारावस्थामें चेहरा सफेद या रक्तशून्य और ...ते हैं। ऐसे व्यक्तियोंके दाँतका दर्द जो थोड़े ... आ जाता है; रोगी तकलीफसे पागल हो ...ालूम होते हैं; सवेरे ठण्डी हवा लगनेपर ... दर्द; पसीनेके समय दाँतमें कनकनी होती ...थ रही हैं, कानमें भिन भिन शब्द और ...ूम होती है; सब दाँतोंपर मैल चढ़ा

...मीन लार बहा करती है (स्यु-... भरी (कैन्थ, क्लिमेट, मार्क, राम-

ब्रोम, पल्स)—किसीपर भी विश्वास नहीं करता,—उसके आत्मीय यहाँ तक कि स्त्रियाँ भी उसे विष खिला देंगी—ऐसा ही विश्वास करता है। (ऐलिमेंट, केलि-ब्राई, रास, एपिस)। हमेशा डरता है, कि कोई उसे दाँतसे काट लेगा; उसे डर रहता है कि कोई उसे बेच डालनेकी चेष्टा करता है; उसकी ऐसी धारणा रहती है, कि सभी उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहे हैं। प्रणयका बदला न मिलनेकी वजह से मानसिक विकार (अरम-मेट, कोक्कु, फास, इग्न, लैके, नेट्र-म्यू, ऐसिड-फास),—स्त्री या पतिके चरित्रमें अविश्वास (एपिस, इग्ने, लैके, स्ट्रैमो) कर उसको मारडालनेकी चेष्टा करती है, असम्बद्ध प्रलाप बकता है (ऐनाक, कैम्फो, कैनाब-इन, कैमो, जिल्स्, नक्स-मस) और जोर जोरसे हँसनेका आवेग (क्रोकस), निर्लज्ज कामोन्माद (ओरिगेन, प्लैट,, स्ट्रैमोन, टैरेण्ट, ग्रैटि, ऐसिड-पिक, कैन्थ, फास, हाइड्रो-फोबं),—वस्त्र खोलकर शरीरके गोपनीय स्थान सब दिखाता है; अश्लील गाने गाया करता है (स्ट्रैमोन), उलंग (नंगा) होकर सोया रहता है और बका करता है। विकार और प्रलाप,—मदात्यय (Dilirium Tremens),—रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है। शय्यासे कूदकर भाग जाना चाहता है, (बेल, ब्राई, क्रोटेल-होर; रास, स्ट्रैमोन), कोई बात पूछनेपर असम्बद्ध उत्तर देता है (नक्स-मस बेलि), और बात समाप्त होते ही गहरी नींदमें अभिभूत हो जाता है। मस्तिष्कमें गड़बड़ी होनेपर भी सम्बद्ध उत्तर देता है=कोलचि, कानबेल, काक्यु, आइरि-वार्सि, ऐसिड-फास, प्लम्ब, टिलिया,—कोई बात पूछनेपर सही उत्तर देकर फिर तुरन्त बेहोश हो जाता है=ऐसिड-फास, आर्नि,—धीरे धीरे उत्तर देता है=हेलिबो, मार्क-फास, ऐसिड-फास,—घबड़ाकर जल्दीमें उत्तर देता है=ऐक्टि, सिना; रास-टक्स—कोई उत्तर नहीं देता,—ऐगार, सैबाड, ऐसिड-सल्फ) उत्तर समाप्त होते न होते सोजाता है रोगी जहाँ रहता है (बैप्टि); जिस स्थानपर रोगी रहता है उसे अपना घर नहीं समझता। वहांसे घर जानेकी इच्छा प्रकट करता है (ब्राई, कैम्स, इयुपेट पर्पि, ओपि); अमूलक अत्याचारोंकी बात कहता है, किसी तरहकी शिकायत की बात नहीं करता (ओपि) विकार उत्ताप रहित चेहरा मलिन; बेल=लाल और भीतरी उत्तापकी अधिकता रहनेपर भी हाथ पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं। अनुपस्थित या मृत व्यक्तियोंको भी मानो रोगी देख रहा है। मृत व्यक्तिके साथ बातचीत करता है। लगातार बका करता है। (स्ट्रैमोन)

बहुत बदबूदार (कार्बो-वे, रास, सिकेलि) प्रसवके बादका उदरामय। अर्श,—उससे बहुत ज्यादा रक्तस्राव होता है।

पेशाब।—प्रसवके बाद मूत्रस्थलीमें दबाव मालूम होना और पेशाब रुक जाना,—अनजानमें पेशाब हो जाता है,—मानो मूत्रस्थलीमें पक्षाघात हो गया है (आर्स, बेल, कास्टि, पल्स)। बार बार पेशाबका वेग होता है पर बहुत थोड़ा ही पेशाब निकलता है।

पुं-जननेन्द्रिय—बहुत अधिक कामोद्दीपन, शरीरके गुप्त स्थान सब खोल रखता है। ध्वजभङ्ग।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामोत्तेजन,—अपनी देहके सब गुप्त स्थान खोलकर सबको दिखाती है (ओरिगेनम, वेरेट।) गर्भस्रावके बाद रक्तस्राव,—पेशियाँ सब एक एककर धड़कती हैं और लगातार लाल रङ्गका चमकीला रक्तस्राव हुआ करता है और हाथ पैर पटका करती है। प्रसवके बादवाला क्लेद-स्राव (Lochia) रुककर पेट फूल उठता है और कड़ा हो जाता है (कोलो, कोना, नक्स, पल्स, सिकेलि)। ऋतु होनेके पहले रह रहकर हाथ पैरमें ऐंठन होती है और जोरसे ठहाका मारकर हँसना चाहती है; ऋतुके समय हाथ पैर पटकती है (कैलो-फिल, कैलि-ब्रोम, सिकेलि) । सरमें भयानक दर्द होता है (बेल, ग्लोन, क्रियो, नेट्र-म्यूर, प्लैट, सिपि) और बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है (ग्रैफ)।

श्वास-यंत्र।—रह रहकर वायुनलीके मुँहपर सुरसुराहट होती है। सूखी खाँसी आया करती है,—विशेषकर वृद्ध मनुष्योंको (सेनेगा);—वृद्धि—रातमें—विश्रामके समय, निद्रावस्थामें, ठण्डी हवा लगनेपर और खाने पीने बाद (खाने-पीने बाद; सल्फि), उठ बैठनेपर घट जाती है (पल्स, कैलि-बाई, फास—उठ बैठनेपर बढ़ जाती है; कैलि-कार्ब, जिङ्क,—थोड़ा पानी पी लेनेपर हो घट जाती है=कास्टि,क्यूप्रम)। प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसी,=दिनके समय नमकीन श्लेष्मासय या थक्का थक्का चमकीले लाल रङ्गका खून मिला कफ निकलता है। श्वास प्रश्वासके समय गलेमें घरघराहट होती है। (ऐण्टि-टार्ट), फेफड़ेका प्रदाह—बीमार और बेहोशीकी अवस्थामें सूखी श्लेष्मा पैदा करनेवाली खाँसी आती है,—रातमें बढ़ जाती है; छातीमें घड़ घड़ शब्द होता है, शरीरको हिला देनेवाली खाँसी, ऐसा दर्द होता मानो

टक्स, ड्रोसेरा, मार्क-वाइ, मार्क-कोर, ऐसिड-नाइ, व्यूफो)। मुंहसे फेन निकलता है (इनेन्थि, अर्टिमि-वाल, क्यूप्रम-ऐसेट, कैलि-ब्राइ, लोरो, लाइ,—खून-भरा फेन=लेके, स्ट्रैमोन)। मुंहसे बदबू आती है,—रोगीको स्वयं वह गन्ध मालूम होती है। दोनों ओंठ सूखे चमड़ेकी तरह मालूम होते हैं (सूखे और फटे फटे=ब्राइ, स्ट्रैमो)। जीभ—सफेद लाल या भूरे रङ्गकी; सूखी फटी फटी और जले चमड़ेकी तरह कड़ी; साफ; निरस; बहुत तकलीफसे बाहर निकाल सकता है (बहुत अधिक फूलनेके कारण बाहर नहीं निकाली जा सकती=मार्क-कोर;—गलेके जखमकी बीमारीमें=सेबाड,—बहुत अधिक कांपती है=जेल्स,—नीचेके दांतमें अटक जानेकी वजहसे—लेके); बाहर निकालनेपर सहजमें ही भीतर नहीं खींची जा सकती; बोलनेमें गड़बड़ी होती है (जीभके पक्षाघातकी वजहसे)। कण्ठनाली पतली हो जाती है, इसलिये कोई चीज निगल नहीं सकता,—खासकर पतली चीजें (बेल, लोरो, स्ट्रैमोन; कड़े पदार्थ निगलनेके समय दर्द घटा मालूम होता है=इग्ने,—ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठनालीका छेद हिलता है (हाइ-पिर)।

पाकस्थली।—पानी पीनेके समय बड़ा भय पैदा हो जाता है (कैन्थ, स्ट्रैमोन, लिसिन)। बहुत प्यास, पर पानी बहुत थोड़ा पीता है (बार बार बहुत थोड़े परिमाणमें पानी पीता है=आर्स, सिङ्को)। कुछ खाने पर के हो जाती है (खाने पीने बाद कै कर देता है—आर्स, इपिका, वेरेट)। रक्त और रक्तमय श्लेष्माका वमन होता है। पाकाशयका शूल,—वमनके बाद आराम (भोजनके बाद अच्छा होना=हिप)। भोजन आदिके बाद बच्चा वमन कर देता है और एकाएक चिल्लाकर बेहोश हो जाता है।

अन्त्राशय।—पेट फूल उठता है और बहुत कड़ा हो जाता है,—हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। हिचकी आती है और पेट गड़गड़ाता है। तल-पेटकी पेशीका आकुंचन प्रसारण (सिकुड़ना—फैलना) हुआ करता है खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, कि उदरकी पेशीमें जखम हो गया है। आँतके उपद्रवके कारण धनुष्टंकार हो जाता है।

मलान्त्र और मल।—मल पतला, पर किसी तरहका दर्द नहीं रहता;—मल पीला और पानीकी तरह (सिङ्को, हिप, पोडो)। सान्निपातिक (Typhoid) ज्वराधिकारमें अनजानमें पाखाना पेशाब होता है। मल

दांतोंपर मैल चढ़ी रहती है, निचला हनु अलग होकर भूल पड़ता है [ओपि] मल मूत्र आदि अनजानमें निकाला करता है और हाथ पैरके बन्धन सब सिकुड़ते और फैलते हैं (वेल, ऐगार, रास, स्ट्रैमोन)। नाड़ी तेज, पुष्ट और कड़ी। चेहरेपर उत्ताप और हाथ ठण्डा होकर सारे शरीरमें जाड़ा मालूम होता है। निद्रितावस्थामें इतना पसीना होता है, कि रोगी कमजोर हो पड़ता है (सिङ्को, मार्क, कार्बो-ऐन)।

वृद्धि ।—रातमें, ऋतुके समय, मानसिक आवेग और उत्तेजनासे, चरित्रमें अविश्वास और प्रणयका बदला न मिलनेके कारण ; सोनेवाली अवस्था में, ठण्डी हवाके स्पर्शसे ; रोगवाली जगह छूनेपर।

उपशम ।—उठ बैठनेपर।

सम्बन्ध—बेल, स्ट्रैमोन और वेरेट, इसके साथ तुलनीय। कामोद्दीपनमें यदि हायोसायमससे लाभ न हो तो फास्फोरसके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है। शराबियोंके रक्त-कास (खून मिली खाँसी) में नक्स-वोम और ओपियम इसके सदृश हैं।

दोषघ्न ।—ऐसिड-नाइट्रिक, बेल, चायना ; स्ट्रैमोनियम।

तुलनीय ।—प्रसवके बादका स्राव रुकना (नक्स, सिकेलि, -पल्स); अधिक बकना (स्ट्रैमो, लैके, ओपि); पतली चीज निगलनेमें तकलीफ (बेल; कैन्थ, इग्ने, मार्क इत्यादि); आक्षेप (सिना); खाँसी (ड्रोसे); ईर्षा (एपिस, इग्ने); उन्माद (स्ट्रैमो); भूत देखना(कैलि-ब्रोम); हिचकी (इग्ने); क्रोध (स्टैफि) इत्यादि।

शक्ति ।—निम्न क्रमसे उच्चतर और उच्चतम क्रम व्यवहारमें लाया जा सकता है। मानसिक रोगोंमें उच्चतम क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

क्रियाका स्थायित्व ।—६ से १४ दिन।

उदरकी पेशीमें जखम हो गया है। शराबियोंका रक्तकास (Hæmoptysis) हृत्प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह तेज दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—धनुष्टंकार—बच्चोंकी आँतमें कृमि चलनेकी वजहसे प्रसवके दर्दके समय और प्रसवका बादका आक्षेप ; खाने पीने बाद बच्चे के कर देते हैं और एकाएक चिल्लाकर बेहोश हो जाते हैं। पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना ; बेहोश अवस्था, आँखसे पैरकी अंगुली तक सभी पेशियाँ फड़का करती हैं (बेहोशी वाली अवस्थामें पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना—नक्स ; कार्बोनियम-सल्फ)। अकड़नके समय मुट्ठी बन्द हो जाती है और अंगूठा मुड़ कर हाथकी पीठपर आ पहुंचता है। रोगी शय्या नोचा करता है। हाथ-पैरकी कण्डरा और पेशियोंके प्रान्त भाग सब सिकुड़े और फैला करते हैं। चलने के समय और सीढ़ी चढ़नेके समय पैरका अंगूठा टेढ़ा हो जाता है। अपस्मार या मृगी,—चेहरेका रंग नीला और फूला। अनजानमें पेशाब और फेन निकलता है ; हाथका अंगूठा पीछेकी ओर मुड़ जाता है, आंख चमकीली और टकटकी लगी रहती है ; रोगी रह रहकर चिल्ला उठता है और दाँतपर दाँत बारकराया करता है,—प्रकोपके बाद रोगी गहरी नींदमें जा पड़ता है और उस समय उसकी नाक बोला करती है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह शून्यमें घूम रहा है। अधिकांश लक्षण पीने और भोजनके बाद और सन्ध्याके समय पैदा हो जाते हैं।

निद्रा।—गहरी नींद वाली अवस्थामें धनुष्टङ्कार, निद्रावस्थामें चौंक उठता है। (आँख बन्द करनेके समय=बेल) शिशु सोया सोया फूट फूटकर रोने लगता है। सोता सोता शय्या नोचता है या मुसकुराकर हँसता है या चौंक उठता है।

ज्वर।—आन्त्रिक या सन्निपातिक ज्वर [Typhoid fever] :—जीभ सूखी और बहुत फूल उठती है; मस्तिष्कको बहुत अधिक जड़ताकी वजहसे कुछ पूछनेके लिये जगानेपर भी वह उसका उत्तर देकर फिर तुरन्त मोह प्राप्त [बेहोश] हो जाता है [आर्नि, ऐसिड-फास], इस तरह बेहोश रोगी की दोनों आँखे खुली रहती हैं। स्थिर दृष्टिसे घरके चारों ओर देखा करता है, और चारों ओर उसे ऐसा ही मालूम होता है मानो रूईके गुच्छे उड़ रहे हैं, और उन्हें पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाता है, शय्या नोचा करता है और बुद बुदाकर बका करता है या कभी कभी दो चार घण्टे तक गुम सुम पड़ा रहता है ;

दांतोंपर मैल चढ़ी रहती है, निचला हनु अलग होकर झूल पड़ता है [ओपि] मल मूत्र आदि अनजानमें निकाला करता है और हाथ पैरके बन्धन सब सिकुड़ते और फैलते हैं (वेल, ऐगार, रास, स्ट्रैमोन)। नाड़ी तेज, पुष्ट और कड़ी। चेहरेपर उत्ताप और हाथ ठण्ढा होकर सारे शरीरमें जाड़ा मालूम होता है। निद्रितावस्थामें इतना पसीना होता है, कि रोगी कमजोर हो पड़ता है (सिङ्की, मार्क, कार्बो-ऐन)।

वृद्धि।—रातमें, ऋतुके समय, मानसिक आवेग और उत्तेजनासे, चरित्रमें अविश्वास और प्रणयका बदला न मिलनेके कारण ; सोनेवाली अवस्था में, ठण्ढी हवाके स्पर्शसे ; रोगवाली जगह छूनेपर।

उपशम।—उठ बैठनेपर।

सम्बन्ध—बेल, स्ट्रैमोन और वेरेट, इसके साथ तुलनीय। कामोद्दीपनमें यदि हायोसायमससे लाभ न हो तो फास्फोरसके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है। शराबियोंके रक्त-कास (खून मिली खांसी) में नक्स-वोम और ओपियम इसके सदृश है।

दोषघ्न।—ऐसिड-नाइट्रिक, वेल, चायना ; स्ट्रैमोनियम।

तुलनीय।—प्रसवके बादका स्राव रुकना (नक्स, सिकेलि, प्लस); अधिक बकना (स्ट्रैमो, लेके, ओपि) ; पतली चीज निगलनेमें तकलीफ (वेल, कैन्थ, इग्ने, मार्क इत्यादि) ; आक्षेप (सिना) ; खांसी (ड्रोसे) ; ईर्षा (एपिस, इग्ने) ; उन्माद (स्ट्रैमो) ; भूत देखना (केलि-ब्रोम) ; हिचकी (इग्ने) ; क्रोध (स्टैफि) इत्यादि।

शक्ति।—निम्न क्रमसे उच्चतर और उच्चतम क्रम व्यवहारमें लाया जा सकता है। मानसिक रोगोंमें उच्चतम क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

क्रियाका स्थायित्व।—६ से १४ दिन।

हाइपेरिकम पार्फोलियेटम ।

(HYPERICUM PERFOLIATUM)

दूसरा नाम ।—सेण्ट जान्स वार्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—प्रसवके बादका दर्द ; दमा ; दाँत काटना ; मस्तिष्कका संघात ; चोट लगना और काला दाग पड़ना ; हड्डी टूटना ; गट्ठे ; कमर और कमरके नीचवाले स्थानमें दर्द ; अतिसार ; बन्दूककी गोलीका आघात ; बवासीर ; सर-दर्द ; जलातङ्क रोग ; बहुत अधिक चैतन्य या स्पर्श अनुभव होना ; ध्वजभङ्ग ; प्रसव वेदना की अधिकताके दुष्परिणाम ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; मानसिक रोग ; स्नायुशूल ; नश्तर लगवानेका दुष्परिणाम ; अंगुलहाड़ा ; पक्षाघात ; वात ; स्टप्रसी ; मेरुदण्डको उत्तेजना ; गर्दन अकड़ना ; धनुष्टंकार ; हूप खाँसी ; ताजे जखम ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके कई निर्णायक लक्षण यहाँ लिखे जाते हैं:—(१) स्पर्श-ज्ञान करानेवाली अंगुली आदिका अगला भाग वगैरह स्नायुके किसी अंशमें चोटकी वजहसे बीमारियाँ ; (२) तलवा, तलहत्थी या अंगुलीके अगले भागमें काँटी, पिन या काँटा गड़नेके कारण धनुष्टंकार या हनुस्तम्भ होनेका उपक्रम । (३) मेरुदण्डमें चोट या ऊँचे स्थानसे गिरकर मेरुदण्ड के निचले अंशमें दर्द । (४) बाधक, ऋतु देरसे और जरायुमें कसावटका भाव, मानो वह एक बन्धनसे कसकर बाँधा हुआ है ; (५) प्रदर रोगमें देरसे ऋतु होना, कलेजा धड़कना, कमर और तलपेटमें बहुत भार मालूम होना ; बालिकाओंका कषाय-गुण विशिष्ट (Acrid) त्वचाको क्षय करनेवाला और दूधकी तरह प्रदरका स्राव ।

लक्षणावली ।

मन ।—लिखनेके समय बार बार भ्रम होता है ; अक्षर छोड़ जाता है ; बोलना कुछ और चाहता था, बोल गया कुछ दूसरा ही ; या भूल जाता है । रातके ४ बजनेके बाद निद्रावस्थामें प्रलाप बका करता है ; विकार ; गाता

गाता रोने लगता है और ऊँचे स्वरसे चिल्लाने लगता है। डर जानेके कारण से पैदा हुई बीमारियां (ओपि, हायो)। प्रबल और अप्रत्याशित शोककी वजहसे बीमारियाँ।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा एकाएक लम्बा हो गया,—इसके साथ ही रातमें पेशाबका वेग होता है। सर-दर्द,—चित्त गिरनेके कारण, यदि माथेके पीछे चोट लग जाय और इसी कारणसे सर-दर्द हो,—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसे शून्यमें उठाता है और कहीं इतने ऊँचेसे गिर न जाय, इसी वजहसे डरता है। रातमें ब्रह्मतालुके नीचे झुनझुनी होती है (नेट्र—सल्फ),—ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने कपालमें बरफकी तरह ठण्डा हाथ लगा दिया। ब्रह्मतालुमें टपक होती है,—बन्द घरमें दर्द बढ़ता है। मस्तिष्क और स्नायुका अवसाद और दुःखित चित्त। मस्तिष्कावरण प्रदाह (Meningitis), माथा झुकानेपर तकलीफ घट जाती है।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—मुंह और दोनों ओंठ बहुत सूखे। बायें गालकी हड्डीमें छेदनेकी तरह दर्द। जीभ,—सफेद या मैला पीला लेप चढ़ी। मुंहमें पानीकी तरह या खूनका स्वाद आ जाता है। मुंहमें गर्मी और प्यास मालूम होना। गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक कीड़ा रेंग रहा है। (पल्स, स्पाइजि)।

पाकस्थली।—गर्म पानीय पीना चाहता है (आर्स, केस्टे न-वेस्का; लेक-कैन, लाइ); चोटकी वजहसे मस्तिष्कावरण प्रदाहमें। शराब पीनेकी बहुत अधिक इच्छा (इथ्यू, आर्स, कैल्के, साइक्यू, हिप, लेके, मेजर, फास, सिपि, स्पाइजि); सवेरे और सन्ध्याके समय बहुत भूख लगती है। पाकस्थलीमें मानो एक गुल्म है (लोबेल, मिडोरिन, एबिसे ज-नाई, आर्स,) पेट बहुत फूलता है—पाखाना होनेपर घटना। पेटमें नश्तर लगवाने Laparotomy की वजहसे बीमारी।

मलान्त्र और मल।—शीतातिसार रोगमें शरीरपर एक तरहका फुंसी फुंसी जैसा उद्भेद निकलता है। उदरामय,—रोगी सवेरे शय्यासे घबड़ाकर उठ बैठता है और पाखानेकी ओर दौड़ पड़ता है (सल्फ)। कब्जियत,—भयानक कूथनके साथ एक छोटी, कड़ी, गांठ-भरं निकल जाती है; इससे कभी कभी जी मिचलाता है। मलान्त्रके भीतर (Rectum) सूखापन मालम होता है

और जलन तथा सुरसुरी होती है। बवासीरमें बहुत दर्द, बहुत ज्यादा खून जाता है और छूनेपर दर्द होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बाधक रोगमें,—बहुत देरसे ऋतु होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु एक बन्धनसे कसकर बँधा हुआ है। प्रदर,—ऋतु देरसे प्रकाश होता है, छाती धड़कती है, कमर और तलपेटमें बहुत अधिक भार मालूम होता है—बालिकाओंका प्रदर,—स्राव दूधकी तरह सफेद और जखम करनेवाला। यन्त्र आदिके सहारे प्रसव कराने बाद नकली दर्द (आर्निका)।

श्वास-यंत्र ।—दमा,—जाड़ा पड़नेपर बढ़ जाता है; बहुत बलगम निकल जाने पर कहीं घटता है। हूप खाँसी ;—सन्ध्या ६ बजेसे रातके १० बजे तक जोर रहता है। वक्षःस्थल मानो कसकर बँधा हुआ है, ऐसी अकड़न मालूम होती है; छातीके भीतर ऐसा दर्द मानो डंक मार रहा है ;—शरीर हिलानेपर बढ़ता है। फेफड़ेका प्रदाह—जिनके अर्शके मसेसे खून निकलता है। कलेजा धड़कनेकेसाथ ऐसा मालूम होता है, मानो हृदपिण्ड स्थान-भ्रष्ट हो जायगा,— सन्ध्याके समय।

प्रत्यङ्ग आदि ।—चोट लगकर बदन छिल जाता है,—उस स्थानपर बहुत दर्द होता है और हाथ लगानेसे ही अनुभव होता है (लिडम); तलवा या हाथकी अँगुलीमें काँटी, सुई, आलपीन या सींक गड़कर वे अंश फूल जाते हैं और बहुत दर्द होता है (लिडम) ; चूहा काटनेकी वजहसे पैदा हुए घावकी वजहसे धनुष्टंकार, जबड़े अटकना या दाँतो लगनेका उपक्रम हो जाता है। स्पर्श-ज्ञापक स्नायु-मय अंशमें जैसे अंगुली, पैरका अँगूठा, तलवा या तलहत्थीमें चोटकी वजहसे रोगवाली जगहमें असह्य दर्द और यन्त्रणा होती है; चोट या नश्तर लगवानेकी वजहसे स्नायविक अवसाद; एकाएक प्रबल शोक या आतङ्कके कारण पैदा हुई बीमारियाँ, जखम होने या जखममें पीव होना रोकती है; अंगुलीका अगला भाग कुचल जाना; चोटकी वजहसे धनुष्टंकार। ऊँचेसे बैठनेवाली अवस्थामें गिरनेके कारण मेरुदण्ड या मेरुदण्डके निचले स्थानमें दर्द; गर्दन या हाथ जरा हिलाते ही असह्य तकलीफ मालूम होती है और रोगी चिल्ला उठता है; इतना दर्द होता है कि मेरुदण्डमें हाथ नहीं लगाने देता। माथेमें चोट या संघात (Concussion;)

की वजहसे धनुष्टंकार। पैरके अंगूठेमें बहुत दर्द और सूजन तथा गट्ठेमें असह्य दर्द। धनुष्टंकार (फाइजस, केलि-ब्रोम)।

वृद्धि।—बरफ गिरनेके समय, बन्द घरमें और थोड़ी भी हवा लगनेपर।

उपशम।—माथा पीछेकी ओर झुकानेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्नि-केलेण्डुला ; रियुटा, हेफिस,सिम्फिटम।

दोषघ्न।—आर्सेनिक (कमजोरी ; हिलने-डोलनेपर मिचली); कैमो (मुंहमें दर्द)।

तुलनीय।—नक्स (धनुष्टंकार), ऐकोन, कोमोक्लेडिया, (चेतन्यकी अधिकता) (चत); लैकनो (दांत काटना)।

शक्ति।—मूल अर्कसे उच्चतम क्रम तक (विशेषकर बहुत दिन पहलेकी चोट आदिके कारण रोगमें)।

आइबिरिस ऐमेरा।

(IBIRIS AMARA)

प्रस्तुत प्रक्रिया।—इसके बीजसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;— दमा; श्वासनली-प्रदाह; शोथ; हृद्‌पिण्डकी बीमारियाँ वगैरहमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इसकी क्रिया प्रधानतः मानवहृदय पर प्रकट हुआ करती है। हृत्पिण्डका बढ़ना और इसी वजहसे पैदा हुई कितनी ही तकलीफोंमें यह बहुत फायदा करता है और हृत्पिण्डका अस्तित्व या उसकी गतिकी उपलब्धि, धूम्रपान या शराब पीने तथा शरीरके थोड़ा भी हिलाने-डोलानेपर हृत्पिण्डकी क्रियाका बढ़ जाना और हृत्स्पन्दन (कलेजा धड़कना) इसके कई अव्यर्थ निर्णायक लक्षण हैं। हृत्पिण्ड प्रदेशमें थोड़ा थोड़ा सूक्ष्म-शलाका वेधनेकी तरह दर्द, शरीरको हिलाते ही श्वास बन्द हो जाना

और कलेजा धड़कना ; हृत्पिण्डकी धमक या चाल ऊपरसे दिखाई देती है,— चलनेपर बढ़ना और स्थिर होकर बैठ जानेपर घटना ; गलेमें श्वास-रोधका उपक्रम और हृत्पिण्डमें छुरी मारनेकी तरह दर्द ; सरमें चक्कर आना और हाथकी अंगुलीमें सुनसुनी मालूम होना और सुन्न मालूम होनेके साथ हृत्पिण्डकी जड़में बहुत तकलीफ मालूम होती हैं। रह रहकर सामने से पीछेकी ओर फैलनेवाला तेज और डंक मारनेकी तरह दर्द तथा हृत्पिण्डमें बहुत दबाव और भार मालूम होना ; हृत्पिण्डका बहुत अधिक बढ़ना वगैरह कई लक्षण इसके प्रधान क्रियाफल हैं।

लक्षणावली।

मन।—बहुत विपन्न और दुःख भारसे दबा हुआ चित्त। बार बार ठण्डी साँस लिया करता है। बहुत चिड़चिड़ा स्वभाव,—विशेषकर सवेरे उठनेपर इसके साथ ही बुद्धिकी जड़ता और स्मरण-शक्तिका घटना। ऐसा भाव दिखाता है, मानो बहुत डर गया है और उसकी देह काँपा करती है। भय, चकित भाव और ठण्डे पसीनेसे ढका मुखमण्डल।

मस्तक।—सवेरे शय्यासे उठनेके समय सरमें चक्कर आता है (नेट्र, म्यू); फिर बाध्य होकर सो जाना पड़ता है ; खड़े होनेपर सरमें चक्कर आता है, सर झुकानेपर बढ़ता है ; माथेके पिछले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो चक्कर खा रहा है (पेट्रोल)। गर्दन और माथेके भीतर पूर्णता मालूम होना और गर्मी। चेहरा तमतमाया रहता है और हाथ पैर बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं। चेहरा तमतमाया और दोनों आँखें लाल। थोड़ा थोड़ा दर्द होता है और कलेजेमें धड़कन होती है। रोगीको अपनी आँखोंके सामने चकाचौंध-सी दिखती है।

गलेके भीतर।—कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो धूल प्रवेश कर गयी है। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेकी दोनों ग्रन्थियां (Tonsils) बड़ी हो गयी हैं। बार बार खाँस खाँसकर गोंदकी तरह कफ निकालता है खानेके बाद बन्द हो जाता है। गलेमें पूर्णता और उत्ताप मालूम होता है, इसके साथ ही श्वास रुक जाना चाहता है। कलेजा धड़कता है और खाँसनेमें तकलीफ होती है तथा हृत्पिण्डमें ऐसा दर्द होता है, मानो छुरी मार दी गयी है तथा ऐसा मालम होता है, मानो कण्ठनाली संकुचित हो गयी है।

पाकस्थली।—ऐसा अनुभव होता है, कि जो कुछ खाता है वह हजम नहीं होता और अरुचि बनी रहती है। हमेशा नशीली चीजें खाने-पीने की इच्छा। भोजनके बाद खट्टी गन्धवाली वायु निकलना, खट्टी डकार आती है, गाढ़ा लसदार कफ निकल जानेपर आराम मिलता है। यकृत प्रदेशमें पूर्णता और दर्द होता है तथा कीचकी तरहके रङ्गका पाखाना होता है (चेलिडो, आयोड, हिप)। तलपेटमें दर्द होता है और पतला सफेद आभा लिये पाखाना होता है (डिजि)।

श्वास-यन्त्र और हृत्पिण्ड।—सीढ़ीपर चढ़नेसे ही श्वास-कष्ट हो जाता है और कलेजा धड़कता है। दुबारा सांस लेनेपर भी आराम नहीं मिलता। वक्षोस्थिके नीचे पूर्णता और जकड़ जानेकी तरह तकलीफ होती है और छातीके भीतर ऐसा दर्द होता है मानो छुरी मारी जा रही है। हृत्पिण्ड का अस्तित्व या गतिका ज्ञान रहना। (पाइरोजिन, फास)। टहलने बाद माथेमें चक्कर आता है और गला दबा जानेके साथ कलेजेमें धड़कन होती है —बाएँ हाथकी अँगुलीके अगले भागसे आरम्भ होकर समूची बाईं बाँहमें झुनझुनी पैदा हो जाती है और वह सुन्न जैसा मालूम होने लगता है; सामान्य परिश्रम करनेपर भी कलेजा धड़कता है; हृत्पिण्डकी धड़कन या चाल बाहरसे दिखाई देती है,—टहलनेपर बढ़ता है और स्थिर भावसे बैठे रहनेपर घट जाता है। हृद्-प्रदेशमें भार और दबाव मालूम होता है और बीच बीचमें छातीके सामनेकी ओरसे शरीरको भेदकर पीठतक तेज डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। हृत्पिण्ड बड़ा हो जाता है (Hypertrophy); बाईं करवट सोनेपर मालूम होता है मानो हृद्कोष के भीतर एक सुई लम्बी पड़ी हुई है, और हृत्पिण्डके प्रत्येक संकोचन में ऐसा मालूम होता है, मानो वही सुई हृत्पिण्डमें घुसती है। हृत्पिण्डमें लगातार दर्द बना रहता है,—यह सोनेपर बढ़ जाता है। तकलीफ देनेवाली कलेजेकी धड़कन,—खांसने, हँसने, रातमें, सवेरे बिछावनसे उठने, सर झुकाने घूमनेके समय, सोने, बाईं करवट सोने और शय्यापर करवट बदलकर सोने पर बढ़ जाता है और स्थिर चुपचाप बैठने, सन्ध्याके कुछ पहले और निर्मल वायुके सेवनसे आराम मालूम हुआ करता है। शरीरका कांपना, सुस्ती और कातरताकी वजहसे रोगी सोया नहीं रहना चाहता।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दन और सरमें पूर्णता और गर्म मालूम होनेके साथ साथ चेहरा तमतमा उठता है और हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं। बाएँ हाथकी अंगुलीकी नोकसे आरम्भ होकर क्रमसे समूची बाहुमें झुन-झुनी पैदा हो जाती है और वह सुन्न होता जाता है; नाड़ी कांपती रहती है और उसकी गति अनियमित। बायें हाथमें ऐंठन होती है। समूची रात उस हाथको दबाकर सोया रहना चाहता है। सीढ़ीपर चढ़नेके समय साँस लेनेमें तकलीफ और कलेजेमें धड़कन होती है। समूची देहमें दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो अपने बसमें न हो,—मानो बहुत सर्दी लग गयी है। सारी देहमें कपकपी मालूम होती है (ऐसिड-सल्फ) और इसी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। नशीले पदार्थके सेवनकी बहुत इच्छा (आर्स, लेके, मार्क, नक्स-वोम, पल्स, सल्फ,—बल बढ़ानेवाली दवाके सेवनका अनुराग=कास्टि)।

वृद्धि ।—धूम्रपान या सुरापन; सवेरे शय्यासे उठनेके समय; थोड़ा ही परिश्रमसे या शरार हिलानेपर; खाँसने या हँसनेपर; सर झुकानेपर; करवट लेनेके समय या बाईं करवट सोनेपर; चलनेके समय।

उपशम ।—स्थिर बैठनेपर: सन्ध्याके पहले और निर्मल वायुके स्पर्शसे।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—तुलनीय ।—ऐमिगडेला-ऐमि, बेल, कैक्ट, क्रोटिग, डिजि, स्ट्रैफान, स्पाइजि, फेजियोल, कैलि-कार्ब।

शक्ति ।—१ म दशमिक क्रम (इसका मूल अर्क भी १ म दशमिक जैसा होता है)।

इक्थाइयोलम ।
(ICHTHYOLUM)

दूसरा नाम ।—ऐमोनियम इक्थायोल-सल्फोनेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाकी होमियोपैथिक मतसे स्वस्थ शरीरवाले मनुष्य और रोगियोंपर परीक्षा नहीं हुई।

ऐलोपैथगण वात, गलगण्ड धातु, मूलग्रन्थि प्रदाह, प्रमेह, चर्म्मरोग प्रभृतिमें इसका भीतरी और ग्रन्थिवातमें इसका बाहरी प्रयोग किया करते हैं, होमियोपैथी मतसे भी कोई कोई ऊपर लिखे रोगोंमें इसका निम्न क्रम व्यवहार करने का उपदेश दिया करते हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—पेट्रोलियम, कैल्के-कास्टि, सल्फ, प्लैण्टेगो, कार्बोलिक-ऐसिड।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इक्टोडिस फिटिडा।

(ICTODES FŒTIDA)

दूसरा नाम।—पोथस फिटिडस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़के साथ समूचे गाछसे मूल अर्क बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—दमा; सर्दी; खाँसी; शोथ; मूर्च्छा; वात वगैरह रोगमें लाभदायक हुआ है।

उपयोगिता और आभास।—दमा रोगमें यह ज्यादा फायदेमन्द हुआ करता है,—विशेषकर जब वायुनलीमें धूलके कण प्रवेशकर जाते हैं और इसी वजहसे दमा बढ़ जाता है। जगह बदलनेवाला और आक्षेपिक दर्द, वायुसे पेट फूला हुआ और कड़ा; जिह्वा मूलके पार्श्व के दोनों गह्वर से कण्ठनालीके भीतर तक जलन; गल ग्रन्थिका बढ़ना; नाककी फूलन और बार बार छींक तथा अकड़न भरी खाँसी और दादकी तरह नाना प्रकारके चर्म्म रोगोंमें इसका साधारणत: व्यवहार हुआ करता है। पाखाना होने बाद दमा या श्वासमें कष्टका घटना इसका एक प्रकृतिगत लक्षण है।

लक्षणावली।

मन।—बहुत चिड़चिड़ा; अविमृष्यकारी; प्रतिवाद करनेमें बहुत पटु; हमेशा अन्यमनस्क और सभी विषयोंमें मन न लगा सकनेवाला।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है,—और धुआँ दिखाई देता है (ऐनाक, फेरम, लैकिटयु, मार्क, वेरेट, कैलि-कार्ब)। सरमें दर्द,—किसी किसी समय किसी किसी जगहमें दर्द होता है और कुछ देर बाद दूसरी जगह हट जाता है; कभी दाहिनी, कभी बायीं कनपटीमें अधिक दर्द होता है और धमनीमें टपक जैसा मालूम होता है।

नाक और मुखमण्डल।—नाकका समूचा हड्डीवाला अंश फूला हुआ और हलका लाल रङ्गका; छूनेपर बहुत दर्द होता है;—बाईं बगलमें दर्दकी अधिकता; गालपर लाल चकत्ते और बाएँ गालपर छोटी छोटी रस-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं। तालु, जीभकी जड़के बगलवाले दोनों गह्वर और अन्ननालीसे पाकस्थली तक सब स्थानोंमें दर्द,—जोरकी छींकके साथ हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं। जीभ सुन्न हो जानेके कारण उससे दाँत छुए नहीं जाते। जीभके काँटे सब ऊंचे उठ जाते हैं। जीभका अगला भाग और अगल बगलके दोनों स्थान लाल और क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होते हैं। जीभकी जड़के अगल बगलवाले दोनों गह्वरसे वक्षके भीतर तक जलन मालूम होती है। छींक आनेपर अन्ननालीमें दर्द मालूम होता है। धूम्रपानकी इच्छा रहती है, पर अच्छा नहीं लगता।

पाकस्थली आदि।—जोरसे पैर चलानेपर उदरके ऊपरी प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ टूट गया। पेट फूला और कड़ा। चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो अन्त्रमण्डली (आतें सब) शिथिल होकर झूल गयी हैं (इग्ने, सोरिन; पाकस्थली मानो झूल रही है=इपिका, स्टैफ, इयुफोर्ब)।

श्वास-यन्त्र।—एकाएक मानसिक अस्थिरता, श्वासमें कष्ट और पसीना निकल आता है; पाखाना होनेपर सब तकलीफें घट जाती हैं। वक्षके भीतर खालीपन मालूम होनेके साथ बार बार लम्बी साँस लेनेकी इच्छा (इग्निइयम),—गलकोष (Fauces) और वक्षस्थल मानो जकड़ गये हैं। वायुनलीके भीतर धूल घुस जानेपर श्वास-कष्ट या दमा पैदा हो जाता है (आर्स, कैल्के, इपिका, साइलि,—पत्थरके कोयलेका चूर घुसनेपर बढ़ना=नैट्र-आर्स)। अकड़नवाली खाँसीके साथ गलकोषमें जलन मालूम होती है। (वेरेट)

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स, एरम-ट्राइ, इग्ने, मिफाइटिस, कैप्स, वेरेट।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ ठा शततमिक तक। ३ रा दशमिक साधारणतः व्यवहारमें आता है।

इग्नेशिया ऐमेरा।

(IGNATIA AMARA)

दूसरा नाम।—सेण्ट इग्नेशिया बिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके बीजसे मूल अर्क और विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—तलपेटका फूलना; शोक या क्रोधका दुष्परिणाम; मलद्वारकी बीमारी; क्षुधा विकृति (भूख लगना); निस्पन्द भाव (चुप पड़े रहना); ताण्डव आक्षेप; हुंड़ी (काली खाँसी); दुर्बलता; सुस्ती; दाँत निकलना; उपझिल्ली प्रदाह; बाधक; मृगी; मूर्च्छावायु या हिस्टीरिया; मूर्च्छा; डर जानेका दुष्परिणाम; आध्मान वायुका रुकना; ग्रन्थियोंका बढ़ना; अर्श; सर-दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; हिचकी; सविराम ज्वर; गति-शक्तिकी कमजोरी; विषाद वायु; सुन्न हो जाना; अन्ननालीकी बीमारी; पक्षाघात; चक्षुरोग; मलद्वारका बाहर निकल आना; आमवातिक ज्वर; टभसी या झुनझुनीवाला वात; चैतन्यकी अधिकता; निद्राका व्याघात; मेरुमज्जाकी उत्तेजना; वेग या कूथन; गलेका जखम; दाँतका दर्द; कम्पन; पेशाबमें गड़बड़ी; स्वरभङ्ग, जम्हाई इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रोगिनी चुपचाप अपना दुःख सहन करती रहती है; एकाएक जोरसे हँस उठती है या रोने लगती है। दुःखभारसे दबा हुआ चित्त। उदरके ऊपरी प्रदेशमें खालीपन मालूम होना, इसके साथ ही अनजानमें दीर्घ श्वास निकल जाता है। धूम्रपान करने, सुँघनी सूँघने या तम्बाकू आदि पीने वालोंके पास बैठनेपर सर दर्द पैदा हो जाता है। ज्वर-विकारमें शीतावस्थामें प्यास और बाहरी उत्तापसे आराम मालूम होता है;

उत्तापवाली अवस्थामें प्यास नहीं रहती और सेंकना या गर्मी अथवा ओढ़ना असह्य मालूम होता है; शीतावस्था असह्य मालूम होती है। शीतावस्थामें चेहरा लाल हो जाता है। बच्चा धमकानेके कुछ ही देर बाद यदि सो जाता है तो धनुष्टंकार आदि आक्षेपकी बीमारी पैदा हो जाती है। सर दर्दमें ऐसा मालूम होता है, मानो शंखदेश या कनपटीमें लोहेके खीलें गड़ रही हैं, माथेका दर्दवाला अंश दबाकर सोनेपर दर्द घट जाता है। साधारणतः बहुत ही विनम्र और कोमल स्वभाव, पर थोड़ा भी असन्तोषका कारण होनेपर इसका रोगी बहुत ही उत्तेजित हो उठता है। बहुत दिनोंतक शोक भोगनेकी वजहसे देह और मन जर्जरित, क्रोध, शोक या जिस प्रेमका बदला न मिला हो ऐसे प्रेमकी वजहसे मानसिक बीमारियां, एकान्तमें बैठकर काल्पनिक विषयको लेकर सोचते रहना पर किसीसे भी कुछ न कहना, बहुत अभिमानी। सब्बत ज्ञान बहुत ही प्रखर; अस्थिर मति, अधीर, दृढ़ प्रतिज्ञ न रहना, और विवाद-प्रिय (झगड़ालू) स्वभाव। भोजनके समय मुखमण्डलके एक छोटेसे अंशमें पसीना हो जाया करता है; दर्द आदि सहन नहीं कर सकता; गाड़ी आदि पर सवारी करनेकी वजहसे मलका कड़ापन,—मलद्वारका अपने स्थानसे हटना या काँच निकलना—कोमल मल निकलनेके समय बढ़ना; अर्श,—मलान्त्रके भीतरसे सुई बेधनेकी तरह दर्द तेजीसे ऊपरकी ओर चढ़ता है—पाखाना हो जानेके बहुत देर बादतक ऐसा दर्द हुआ करता है; नींद आनेके समय अङ्ग-प्रत्यङ्ग सब एक एककर चौंक उठते हैं। दर्द आदि हर बार ठीक एक ही समय पैदा होते हैं,—वगैरह कई इग्नेशियाके प्रधान और अव्यर्थ सिद्धिप्रद लक्षण हैं। डा० ऐलेनने लिखा है:—स्नायविक धातुवाले, अभिमानी, उत्तेजना प्रवण (सहजमें ही उत्तेजित हो जानेवाले), गहरे काले घने केशवाले साँवले, और कोमल स्वभाव तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले व्यक्तियोंके लिये यह दवा विशेष उपयोगी है। इसकी लक्षणावली पर ध्यान देनेसे मालूम होता है कि उनके ह्रास वृद्धिके कारण और अवस्थायें सब, बड़ी ही आश्चर्य जनक रीतिसे विपरीतता दिखाया करती हैं, जैसे—बहुत शोक तो है पर रोगी विकट हास्य करता है; क्लीवता है, पर रमणकी बहुत इच्छा रहती है, विश्रामके समय चेहरा उतर जाता है; ज्वरकी जाड़ेवाली शीतावस्थामें प्यास, उत्तापावस्थामें प्यासका न रहना; चलते चलते स्थिर होकर खड़े हो जाते ही खाँसी आने लगती है। रोगी जितना ही खाँसता है, खाँसी उतनी ही बढ़ती है; पाकाशयमें खालीपन

मालूम होना, यह खा लेनेपर भी दूर नहीं होता ; गलेके जखमकी बीमारीमें कोई कड़ी चीज निगलनेके समय दर्द आराम मालूम होता है ; पर कानमें भों भों शब्द ; यह संगीत सुननेसे आराम होता है और बवासीरकी बीमारीमें चलनेपर अर्शमें आराम मालूम होता है।

लक्षणावली।

मन।—मनोवृत्तियां सब बहुत तेजीसे विपरीत अवस्थायें धारण कर लेती हैं—जैसे रोता रोता जोरसे हँसता है; अभी हँसी दिल्लगी कर रहा था, तुरन्त रोना आरम्भ कर दिया (काफि, क्रोक, नक्स-मस); बहुत दिनोंतक शोक भोगनेकी वजहसे देह और मन जर्जरित हो जाता है, अनजानमें ठण्डी लम्बी सांस निकल जाती है (लैके); इसके साथ ही उदरके ऊपरी प्रदेशमें खालीपन मालूम होता है, भोजन करनेपर भी यह शून्य भाव नहीं घटता है (हाइड्रैष्ट, सिपि); क्रोध, शोक या अप्रतिदत्त (बदला हीन) प्रणयकी वजहसे मानसिक बीमारियां (कोल्के-फास, फायो); दुःखकी कल्पना कर एकान्तमें चिन्तामग्न बैठ रहता है। अन्तर्निहित (भीतरी) दृष्टि ; (इग्निगो) हमेशा अकेला रहना चाहता है। बहुत अभिमानी और सदसत (अच्छा-बुरा) का ज्ञान बहुत ही प्रखर; अस्थिर मति, अधीर, अदृढ़ प्रतिज्ञ, कलह-प्रिय स्वभाव। जब अच्छा रहता है तब बहुत ही कोमल तथा नम्र स्वभाव रहता है, पर थोड़ा-सा भी असन्तोषका कारण हुआ कि बहुत ही उत्तेजित हो उठता है ; उसका काम यदि कोई दिखाता है या उसकी बात काटता है, तो बहुत चिढ़ उठता है,—रोगी क्रोधान्ध हो जाता है। बच्चेको डाँटने या तिरस्कार करनेपर, यदि तुरन्त ही सो जाये तो चौंककर जाग उठा करता है—यहाँ तक कि उसे धनुष्टंकार तक हो जाता है। अशुभ समाचार, हृदयमें जमा क्रोध या असन्तोष ; अप्रकाशित मर्म-पीड़ा या लज्जा (ष्टेफाई) वगैरहसे पैदा हुई स्वास्थ्यकी हानि। गड़बड़ी सहन नहीं कर सकता, रातमें चोरोंका डर लगता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—आँखके सामने आगकी चिनगारियां उड़ती हुई मालूम होती हैं (कैम्फो)। नासामूलमें दबावके साथ ऊपरी भागमें सर दर्दके साथ मिचली, ललाटके भीतरसे बाहरकी ओर डंडा मारनेकी तरह दर्द (कैलि-आयोड, मैग-फास, गाल्सि)। मूर्धा और ललाट देशमें छट

या जकड़ जानेकी तरह दर्द,—चारों ओर अँधेरा दिखाई देता है, चेहरा लाल हो उठता है और रोगी रोने लगता है। सर दर्दका बढ़ना=काफि ; शराब या धूम्रपानसे (धूम्रपानसे घटना=डाय); धुएंकी गन्धसे, सुंघनीसे, शब्दसे, तेज गन्धसे, पढ़नेपर और लिखनेपर ; धूपमें तथा आँख हिलानेपर ; करवट बदलनेके समय और करवट सोनेके समय घटना। सर दर्द,—मानो कोई मस्तिष्कमें या कनपटीमें लोहेकी खील ठोंक रहा है, रोगवाला अंश दबाकर सोनेसे घट जाता है (काफी, नक्स, थूजा); मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेश और ललाटमें तेज छेदनेकी तरह दर्द—सोनेपर घट जाता है। धनुष्टंकार आदि आक्षेपके समय माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है,—उत्तापसे घटना। केश झड़ जाना।

आँख।—आँख करकराती है (कार्बो-वे, कास्टि, इयुफ्रे) और दबाव मालूम होता है,—मानो उसमें धूलके कण गिर गये हैं। आँख लाल, दिनमें आँखसे कषाय आँसुओंका स्राव होता है (इयुफ्रे) और रातमें आँखें सट जाती हैं (इयुफ्रे, ग्रैफ, हिप, फास)। आँख और पलक फड़का करती हैं (बेल, काक्यु, क्यूप्रम ; हायो, बार्बा, लैके) पुतली फैली और स्थिर दृष्टि (इथ्यू, बेल, हायो, लैके, लोरो, ओपि, सिकेलि, स्ट्रैमोन)। दृष्टिका मैलापन ; मानो चारों ओर अँधेरेसे ढका है (बेल, कैल्के, साइक्ले, मार्क, फ्रम : आँख मलनेपर यह भाव दूर हो जाता है=क्रोक, पल्स)। सर दर्दके साथ आँखके सामने बिजली चमकनेकी तरह मालूम होना (नेट्र-म्यू) और तारे सब देखना (बेल, नेट्र-म्यूर, कैस्टोर, क्रोक, नक्स-वोम ;साइलि, स्टैफि); उज्वल चमकीली रोशनी या धूपका सहन न होना।

कान।—कर्णमूल-ग्रन्थिका फूलना और उसमें बहुत तेज दर्द। मनुष्यके कण्ठ स्वरके सिवा और कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पाता (मनुष्यका कण्ठ-सहजमें ही नहीं सुन पाता—फास, साइलि, सल्फ)। कानमें तेज हवा चलनेकी आवाज या सों सों शब्द, कानमें खुजली।

मुखमण्डल।—मुंहकी पेशियाँ सब फड़का सिकुड़ा और फैला करती हैं। (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, साइक्यू, स्टैमो)। चेहरा पर्यायक्रमसे म्लान और लाल दिखाई देता है (ऐको, कैमो, सिना, मेग-कार्ब, ओपि, पल्स)। एक गाल और कान लाल और गर्म मालूम होता है। चेहरेका रङ्ग कीचड़की तरह ; आँख और गाल गड्ढेमें धँसे और दोनों आँखोंके चारों ओर नीला

घेरा। ओंठका संयोगस्थल फड़का करता है (ओपि)। दोनों हनु एकाएक आपसमें जुड़ जाते हैं (साइक्यू, हायो, लोरो, नक्स इत्यादि)। दोनों ओंठ सूखे, त्वचा फटी हुई और खूनसे भरी, गर्दन हिलानेके समय दोनों हनुके नीचेवाली ग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है।

मुख-विवर।—सामनेवाले दाँतमें छेदनेकी तरह दर्द,—काफी या धूम्रपानके बाद बढ़ जाना। दाँतका दर्द,—ऐसा दर्द मानो पिपश दाँत-सब टूट गये—भोजन करना समाप्त करनेके समय और भोजनके बाद, सन्ध्याके समय, सोने बाद या सवेरे नींद खुलनेपर या दोनों वक्तके भोजनके बीचके समयमें दर्द बढ़ जाता है। दाँत निकालनेके समय बच्चोंको नाना प्रकार की बीमारियाँ होती हैं—धनुष्टंकारतक हो जाता है। मुँहमें बहुत अधिक लार इकट्ठा होती है; धनुष्टंकार या अपस्मार मृगी आदि रोगमें मुंहसे फेन निकलता है (इथ्यू, ऐगार, बेल, कैम्फो, कैमो, साइक्यू, कास्यू, हायो, लोरो, स्ट्रेमो, वेरेट)। बोलने या चबानेके समय गालके भीतरी भागमें (कार्ब) या जीभमें (ऐ-नाई) काट लेता है। जीभ तर और सफेद मैलसे ढकी रहती है। मुँहका स्वाद खट्टा (ऐ-नाई, नक्स, सिपि)।

गलेके भीतर।—गलेका जखम,—जब कोई चीज नहीं निगलता है, उस समय मालूम होता है, मानो कुछ अड़ा हुआ है (कैमो, नक्स)। कोई चीज निगलनेके समयके अलावा और सब समय गलेमें एक सूक्ष्म शलाका या सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना; पर कड़ी चीज निगलनेके समय आराम मालूम होना। गलेके भीतरसे कानतक सुई बेधनेकी तरह दर्द (हिप)। पानीय आदि पतली चीजें निगलनेके समय अटक जाती हैं,—कड़ी चीज सहजमें ही निगल सकता है।

पाकस्थली—मुँहमें खड़ियाका स्वाद मालूम होना (नक्स-मस)। किसी भी खानेकी चीजका स्वाद नहीं मिलता। गर्म पदार्थ, दूध, मांस और तम्बाकू से अरुचि। डकारके साथ गलेमें तीता रस चढ़ आता है (आर्ज, नक्स, पल्स,—खट्टी डकार=ऐसिड-नाई, फास, ऐसिड, सल्फ, रोबिनिया,—मीठा रस चढ़ आता है=मार्क, प्लम्ब)। हिचकी,—खाने-पीने बाद और धूम्रपानकी वजहसे (सेङ्गिविन)। उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और खालीपन मालूम होना,—भोजनके बाद भी यह भाव नहीं जाता (ऐसिड, म्यूर, सिपि—पाकस्थलीमें खालीपन मालूम होना,—सैङ्गिव, सार्सा)। पाकस्थलीमें रह रहकर

या जकड़ जानेकी तरह दर्द,—चारों ओर अँधेरा दिखाई देता है, चेहरा लाल हो उठता है और रोगी रोने लगता है। सर दर्दका बढ़ना=काफि ; शराब या धूम्रपानसे (धूम्रपानसे घटना=डाय); धुएंकी गन्धसे, सुंघनीसे, शब्दसे, तेज गन्धसे, पढ़नेपर और लिखनेपर ; धूपमें तथा आँख हिलानेपर ; करवट बदलनेके समय और करवट सोनेके समय घटना। सर दर्द,—मानो कोई मस्तिष्कमें या कनपटीमें लोहेकी खील ठोंक रहा है, रोगवाला अंश दबाकर सोनेसे घट जाता है (काफी, नक्स, थूजा); मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेश और ललाटमें तेज छेदनेकी तरह दर्द—सोनेपर घट जाता है। धनुष्टंकार आदि आक्षेपके समय माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है,—उत्तापसे घटना। केश झड़ जाना।

आँख।—आँख करकराती है (कार्बो-वे, कास्टि, इयुफ्रे) और दबाव मालूम होता है,—मानो उसमें धूलके कण गिर गये हैं। आँख लाल, दिनमें आँखसे कषाय आँसुओंका स्राव होता है (इयुफ्रे) और रातमें आँखें सट जाती हैं (इयुफ्रे, ग्रैफ, हिप, फास)। आँख और पलक फड़का करती हैं (बेल, काक्यु, क्यूप्रम ; हायो, वार्बा, लैके) पुतली फैली और स्थिर दृष्टि (इथ्यू, बेल, हायो, लैके, लोरो, ओपि, सिकेलि, स्ट्रैमोन)। दृष्टिका मैलापन ; मानो चारों ओर अँधेरेसे ढका है (बेल, कैल्के, साइक्ले, मार्क, प्लम : आँख मलनेपर यह भाव दूर हो जाता है=क्रोक, पल्स)। सर दर्द के साथ आँखके सामने बिजली चमकनेकी तरह मालूम होना (नेट्र-म्यू) और तारे सब देखना (बेल, नेट्र-म्यूर, कैस्टोर, क्रोक, नक्स-वोम ;साइजि, स्ट्रैफि); उज्वल चमकीली रोशनी या धूपका सहन न होना।

कान।—कर्णमूल-ग्रन्थिका फूलना और उसमें बहुत तेज दर्द।मनुष्यके कण्ठ स्वरके सिवा और कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पाता (मनुष्यका कण्ठ-सहजमें ही नहीं सुन पाता—फास, साइलि, सल्फ)। कानमें तेज हवा चलनेकी आवाज या सों सों शब्द, कानमें खुजली।

मुखमण्डल।—मुंहकी पेशियाँ सब फड़का सिकुड़ा और फैला करती हैं। (एगार, ऐण्टि-टार्ट, साइक्यू, स्ट्रैमो)। चेहरा पर्यायक्रमसे म्लान और लाल दिखाई देता है (ऐको, कैमो, सिना, मेग-कार्ब, ओपि, पल्स)। एक गाल और कान लाल और गर्म मालूम होता है। चेहरेका रङ्ग कोचड़की तरह ; आँख और गाल गड्ढेमें धँसे और दोनों आँखोंके चारों ओर नीला

देरा। ओंठका संयोगस्थल फड़का करता है (ओपि)। दोनों हनु एकाएक आपसमें जुड़ जाते हैं (साइक्यू, हायो, लोरो, नक्स इत्यादि)। दोनों ओंठ सूखे, त्वचा फटी हुई और खूनसे भरी, गर्दन हिलानेके समय दोनों हनुके नीचेवाली ग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है।

मुख-विवर।—सामनेवाले दाँतमें छेदनेकी तरह दर्द,—काफी या धूम्रपानके बाद बढ़ जाना। दाँतका दर्द,—ऐसा दर्द मानो पेषण दाँत-सब टूट गये—भोजन करना समाप्त करनेके समय और भोजनके बाद, सन्ध्याके समय, सोने बाद या सवेरे नींद खुलनेपर या दोनों वक्तके भोजनके बीचके समयमें दर्द बढ़ जाता है। दाँत निकलनेके समय बच्चोंको नाना प्रकार की बीमारियाँ होती हैं—धनुष्टंकारतक हो जाता है। मुँहमें बहुत अधिक लार इकट्ठा होती है : धनुष्टंकार या अपस्मार मृगी आदि रोगमें मुँहसे फेन निकलता है (क्यू, ऐगार, बेल, कैम्फो, कैमो, साइका, काक्यू, हायो, लोरो, स्ट्रैमो, वेरेट)। बोलने या चबानेके समय गालके भीतरी भागमें (कार्ब्बि) या जीभमें (ऐ-नाई) काट लेता है। जीभ तर और सफेद मैलसे ढकी रहती है। मुँहका स्वाद खट्टा (ऐ-नाई, नक्स, सिपि)।

गलेके भीतर।—गलेका जखम,—जब कोई चीज नहीं निगलता है, उस समय मालूम होता है, मानो कुछ अड़ा हुआ है (कैमो, नक्स)। कोई चीज निगलनेके समयके अलावा और सब समय गलेमें एक सूक्ष्म शलाका या सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना ; पर कड़ी चीज निगलनेके समय आराम मालूम होना। गलेके भीतरसे कानतक सुई बेधनेकी तरह दर्द (हिप)। पानीय आदि पतली चीजें निगलनेके समय अटक जाती हैं,—कड़ी चीज सहजमें ही निगल सकता है।

पाकस्थली—मुँहमें खड़ियाका स्वाद मालूम होना (नक्स-मस)। किसी भी खानेकी चीजका स्वाद नहीं मिलता। गर्म पदार्थ, दूध, माँस और तम्बाकूसे अरुचि। डकारके साथ गलेमें तीता रस चढ़ आता है (ब्राई, नक्स, पल्स,—खट्टी डकार=ऐसिड-नाई, फास, ऐसिड, सल्फ, रोबिनिया,—मीठा रस चढ़ आता है=मार्क, प्लम्ब)। हिचकी,—खाने-पीने बाद और धूम्रपानकी वजहसे (सेङ्गिविन)। उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और खालीपन मालूम होना,—भोजनके बाद भी यह भाव नहीं जाता (ऐसिड, म्यूर, सिपि—पाकस्थलीमें खालीपन मालूम होना,—सेङ्गिवु, सार्षा)। पाकस्थलीमें रह रहकर

या जकड़ जानेकी तरह दर्द,—चारों ओर अँधेरा दिखाई देता है, चेहरा लाल हो उठता है और रोगी रोने लगता है। सर दर्दका बढ़ना=काफि ; शराब या धूम्रपानसे (धूम्रपानसे घटना=डाय); धुएंकी गन्धसे, सुंघनीसे, शब्दसे, तेज गन्धसे, पढ़नेपर और लिखनेपर ; धूपमें तथा आंख हिलानेपर ; करवट बदलनेके समय और करवट सोनेके समय घटना। सर दर्द,—मानो कोई मस्तिष्कमें या कनपटीमें लोहेकी खील ठोंक रहा है, रोगवाला अंश दबाकर सोनेसे घट जाता है (काफी, नक्स, थूजा); मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेश और ललाटमें तेज छेदनेकी तरह दर्द—सोनेपर घट जाता है। धनुष्टंकार आदि आक्षेपके समय माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है,—उत्तापसे घटना। केश झड़ जाना।

आंख।—आंख करकराती है (कार्बो-वे, कास्टि, इयुफ्रे) और दबाव मालूम होता है,—मानो उसमें धूलके कण गिर गये हैं। आंख लाल, दिनमें आंखसे कषाय आंसुओंका स्राव होता है (इयुफ्रे) और रातमें आंखें सट जाती हैं (इयुफ्रे, ग्रैफ, हिप, फास)। आंख और पलक फड़का करती हैं (बेल, काक्यु, क्यूप्रम ; हायो, बार्बा, लैके) पुतली फैली और स्थिर दृष्टि (इथ्यू, बेल, हायो, लैके, लोरो, ओपि, सिकेलि, स्ट्रैमोन)। दृष्टिका मैलापन ; मानो चारों ओर अँधेरेसे ढका है (बेल, कैल्के, साइक्ले, मार्क, प्लम : आंख मलनेपर यह भाव दूर हो जाता है=क्रोक, पल्स)। सर दर्दके साथ आंखके सामने बिजली चमकनेकी तरह मालूम होना (नेट्र-म्यू) और तारे सब देखना (बेल, नेट्र-म्यूर, कैस्टोर, क्रोक, नक्स-वोम ;साइलि, स्टैफि); उज्वल चमकीली रोशनी या धूपका सहन न होना।

कान।—कर्णमूल-ग्रन्थिका फूलना और उसमें बहुत तेज दर्द।मनुष्यके कण्ठ स्वरके सिवा और कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पाता (मनुष्यका कण्ठ-स्वरमें ही नहीं सुन पाता—फास, साइलि, सल्फ)। कानमें तेज हवा चलनेकी आवाज या सों सों शब्द, कानमें खुजली।

मुखमण्डल।—मुंहकी पेशियाँ सब फड़का सिकुड़ा और फैला करती हैं। (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, साइक्यू, स्टैमो)। चेहरा पर्यायक्रमसे म्लान और लाल दिखाई देता है (ऐको, कैमो, सिना, मेग-कार्ब, ओपि, पल्स)। एक गाल और कान लाल और गर्म मालूम होता है। चेहरेका रङ्ग कीचड़की तरह ; आंख और गाल गड़हेमें धँसे और दोनों आंखोंके चारों ओर नीला

घेरा। ओंठका संयोगस्थल फड़का करता है (ओपि)। दोनों हनु एका आपसमें जुड़ जाते हैं (साइक्यू, हायो, लोरी, नक्स इत्यादि)। दोनों ओंठ सू त्वचा फटी हुई और खूनसे भरी, गर्दन हिलानेके समय दोनों हनुके नीचेवा ग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है।

मुख-विवर।—सामनेवाले दाँतमें छेदनेकी तरह दर्द,—काफी धूम्रपानके बाद बढ़ जाना। दाँतका दर्द,—ऐसा दर्द मानो पिषण दाँत-स टूट गये—भोजन करना समाप्त करनेके समय और भोजनके बाद, सन्ध्या समय, सोने बाद या सवेरे नींद खुलनेपर या दोनों वक्तके भोजनके बीचके समयमें दर्द बढ़ जाता है। दाँत निकलनेके समय बच्चोंको नाना प्रकार की बीमारियाँ होती हैं—धनुष्टंकारतक हो जाता है। मुँहमें बहुत अधिक लार इकट्ठा होती है : धनुष्टंकार या अपस्मार मृगी आदि रोगमें मुंहसे फेन निकलता है (इथ्यू, ऐगार, बेल, कैम्फो, कैमो, साइक्यू, काक्यू, हायों, लोरी, स्ट्रेमो, वेरेट)। बोलने या चबानेके समय गालके भीतरी भागमें (कास्टि) या जोभमें (ऐ-नाई) काट लेता है। जीभ तर और सफेद मैलसे ढकी रहती है। मुँहका स्वाद खट्टा (ऐ-नाई, नक्स, सिपि)।

गलेके भीतर।—गलेका जखम,—जब कोई चीज नहीं निगलता है, उस समय मालूम होता है, मानो कुछ अड़ा हुआ है (कैमो, नक्स)। कोई चीज निगलनेके समयके अलावा और सब समय गलेमें एक सूक्ष्म शलाका या सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना ; पर कड़ी चीज निगलनेके समय आराम मालूम होना। गलेके भीतरसे कानतक सुई वेधनेकी तरह दर्द (हिप)। पानीय आदि पतली चीजें निगलनेके समय अटक जाती हैं,—कड़ी चीज सहजमें ही निगल सकता है।

पाकस्थली—मुँहमें खड़ियाका स्वाद मालूम होना (नक्स-मस)। किसी भी खानेकी चीजका स्वाद नहीं मिलता। गर्म पदार्थ, दूध, मांस और तम्बाकू से अरुचि। डकारके साथ गलेमें तीता रस चढ़ आता है (आर्ड, नक्स, पल्स,—खट्टी डकार=ऐसिड-नाई, फास, ऐसिड, सल्फ, रोबिनिया,—मीठा रस चढ़ आता है=मार्क, प्लम्ब)। हिचकी,—खाने-पीने बाद और धूम्रपानकी वजहसे (सेङ्किविन)। उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और खालीपन मालूम होना,—भोजनके बाद भी यह भाव नहीं जाता (ऐसिड, मूर, सिपि—पाकस्थलीमें खालीपन मालूम होना,—सेङ्गिवु, सार्स)। पाकस्थलीमें रह रहकर

एकाएक दर्द पैदा हो जाता है। पाकाशयमें सूक्ष्म सुई बेधनेकी तरह दर्द (रास)। खाये हुए पदार्थ सहजमें ही पच नहीं जाते। भोजनके बाद पेटमें दर्द हो जाता है और फूल जाता है (दो एक ग्रास खाते न खाते पेट भरा-सा मालूम होता है=(चायना, लाई, नक्स, फास, सल्फ)। संध्याके समय भूख लगनेकी वजहसे रोगी सो नहीं सकता। निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पेटमें दर्द होता है और नींदमें बाधा पड़ जाती है तथा रोगवाला अंग दबा देनेपर दर्द बढ़ जाता है। रातमें पेट खाली मालूम होनेकी वजहसे नींद नहीं आती (लाई)।

अन्त्राशय।—प्लीहाके स्थानपर सूजन और कड़ापन मालूम होना। पेटमें टपक (ऐलो, सेङ्गिय)। आँतोंमें हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द; पेटमें वायु की वजहसे आँतोंमें शूलका दर्द,—विशेषकर रातमें बढ़ना।

मलान्त्र और मल।—पाखाना होनेमें तकलीफ और मलद्वारका बाहर निकल आना। जरा भी वेग देनेपर, या माथा झुकानेपर या कोई भारी चीज़ उठानेपर मलनाली बाहर निकल आती है (ऐसिड-नाई, पोडो फिल्युटा), विशेषकर पतला पाखाना होनेके समय। बवासीर—हरेक बार पाखाना होनेके समय मसा बाहर निकल पड़ता है और अँगुली आदिके सहारेसे भीतर घुसा देना पड़ता है। मलान्त्रसे तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द ऊपरकी ओर फैलता है (ऐसिड-नाई);—पाखाना हो जाने बाद बहुत देरतक सम-भावसे दर्द हुआ करता है (रेटान, सल्फ)। कब्जियत,—गाड़ी आदि पर सवारी करनेकी वजहसे; आँतोंकी निष्क्रियतासे पैदा हुआ पाखानेका बहुत ज्यादा वेग होता है,—पेटके ऊपरी भागमें ही यह वेग अधिक मालूम होता है (वेरेट);—पाखाना होनेके समय इतनी तकलीफ होती है, कि रोगी पाखाना जानेसे डरता है। मलान्त्रमें सूतकी जैसी कृमिका रहना मालूम होता है, सन्ध्याके समय मलद्वारमें बहुत खुजली उठती है (इग्निशिया, टियुक्रि, केल्के, सिना)। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय उदरामयसे पैदा हुई उत्ते-जना, मस्तिष्कमें प्रतिक्षिप्त होकर, चेहरा एकाएक सफेद पड़ जाता है, और विकार पैदा हो जाता है; सर हिलाया करता है, कोई पदार्थ सहजमें ही निगल नहीं सकता और आँख तथा पलकें फड़का करती हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ही असमयमें ऋतु हो जाता है। प्रत्येक दस या पन्द्रह दिनका अन्तर देकर स्राव,—काला, गाढ़ा, थक्का थक्का, सड़ी बदबू-

दार (ऐमोन-कार्ब, क्रीक, साइक्लो, प्लैट) ; आर्तव स्रावके समय सरमें भार, गर्मी और दर्द मालूम होता है, रोगनीका सहन न होना; शूल और संकोचनकी तरह (कैमो, काक्यू, नक्स) दर्द; मानसिक उद्वेग; कलेजा धड़कना और बहुत थकावट मालूम होना—यहाँतक कि बेहोशी भी हो जा सकती है। साँस रुकनेका उपक्रम होनेके साथ जरायुके भीतर ऐंठनकी तरह या गड़नेकी तरह दर्द,—दबानेपर और चित्त होकर सोनेपर दर्द बढ़ जाता है। प्रदर,—स्राव आरम्भ होनेके पहले जरायुमें संकोचनकी तरह दर्द; पीबकी तरह और त्वचा को क्षय करनेवाला स्राव (क्रियो)।

श्वास-यन्त्र।—रोगी ऊँचे स्वरसे बोल नहीं सकता। गलेमें मानो गन्धकका धुआँ प्रवेश कर गया है (आर्स, ब्रिङ्को)। ऐसा मालूम होनेकी वजहसे वायुनलीके मुँहपर संकोचन और बार बार खाँसी। पतली सर्दी निकलनेके साथ दिन रात सूखी और अकड़न पैदा करनेवाली या शरीरको हिला देनेवाली खाँसी, सवेरे उदरके ऊपरी प्रदेशमें खुजलीकी वजहसे पैदा होनेवाली खाँसी,—सन्ध्याके समय बहुत दिनोंके पुराने श्लेष्माकी तरह गन्ध और स्राव मिला कफ निकलता है (सल्फ)। रोगी वायुनलीमें खुजलीके कारण जितना खाँसता है, खाँसी भी उतनी ही बढ़ती है। आधी रातके बाद वक्षःस्थलमें दबाव और बहुत श्वासकृच्छ्रता मालूम होती है—मानो छातीपर एक टुकड़ा भारी पत्थर दबाया हुआ है। चलनेके समय श्वास घट जाता है और चलते चलते खड़े होनेपर खाँसी पैदा हो जाती है। दौड़नेके समय सांस रुकने लगती है। बाएँ वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (फास, दाहिने वक्षमें=बेल)। हृत्पिण्डमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और स्पन्दन (डिजि, स्पाइ)। अन्नशूल रोगमें छाती और पंजरेमें आध्मान-वायुके कारण तेज शूलका दर्द हुआ करता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन और पीठ अकड़ी हुई मालूम होती है। सब ग्रीवा ग्रन्थियोंमें दर्द होता है। गलेकी सब गांठें फूलकर गुटिकाकी तरह दिखाई देती हैं (आयोड, कोना, लेपिस); सवेरे पीठके बल, चित्त होकर सोनेपर चूतड़में दर्द होता है; नितम्बके स्थानपर तेज दर्द,—मानो मरोड़ खा रहा है; कमरकी पीछे या त्रिकास्थिसे उरुतक इस ढङ्गका दर्द मानो अस्त्रसे आघात कर रहा है। कटि-स्नायु शूल या गृध्रसी (Sciatica) दर्द, अस्त्रकी चोट, फाड़ने या फूटन और टपककी तरह दर्द।—जाड़ेके दिनोंमें बढ़ना,—गर्मीके दिनोंमें घटना,—इसके साथ प्यास न रहना और उत्ताप पैदा हो

जाना भी मौजूद रहता है। विशेषकर मुखमण्डलमें, रोगवाली जगह फूली और उस देश गांठ जैसा मालूम होता है,—रोगिनीको उठने या सोनेमें तकलीफ होती है;—विशेषकर बायें अङ्गमें अधिक मालूम होती है। बाहु हिलानेके समय कन्धेमें ऐसा दर्द होता है मानो सन्धि खुल गयी है (ब्राई, रिशुटा)। बाहुकी त्रिकोण पेशी और बाहु तथा अँगुलियां सब रह रहकर फड़क उठती हैं। तलहथी और अँगुलीमें गर्म पसीना निकलता है। उठने के समय जानु और गुल्फ सन्धि अकड़ी मालूम होती है। घुटनेको हिलानेके समय सटमट शब्द होता है [आर्स, कैल्के, कास्टि,—शरीरकी सभी सन्धियां हो कड़कड़ाती हैं—कैप्स, लिडम, रास], चलनेके समय दोनों पैर और निचला पैर भारी मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है मानो एँडी जकड़ गयी है, बाहुकी त्वचाके नीचे मानो एक जीव घूम रहा है—ऐसा मालूम होना (फ्लोकस)।

सार्वाङ्गिक।—नींद आनेके समय अङ्ग प्रत्यङ्ग आदि यहांतक कि समूची देह फड़क उठती है (कैल्के, बेल, हायो, स्ट्रैमोन)। शरीरके छोटे छोटे सीमाबद्ध अंशोंमें दर्द पैदा हो जाता है (सीड्रन), मृगीकी तरह आक्षेप, मुंहसे फेन निकलता है, बार बार जम्हाई आती है, आँखें सब फड़का करती हैं, हाथके अंगूठे दोनों मुड़ जाते हैं और चेहरा लाल—या कभी कभी लाल और कभी सफेद मालूम होता है। धनुष्टंकार आदि के समय रोगी कभी जोरसे हँस उठता है और क्षण भर बाद ही रोने लगता है (साइक्यू—थाइरी)। लक्षण आदि प्रायः भोजनके बाद ही, सन्ध्याके समय, सोनेके बाद या सवेरे सोकर उठनेके समय पैदा हो जाते हैं। काफी, धूम्रपान और शराब आदि पीनेपर या शब्दसे बढ़ जाते हैं और चित्त होकर सोनेपर या रोगवाली करवट दबाकर सोनेपर और खड़े रहनेवाली अवस्थासे बैठने या बैठनेवाली अवस्थासे खड़े होने या सोने वगैरह शारीरिक अवस्थाका परिवर्त्तन करनेपर लक्षण आदि घट जाते हैं (रास)। दर्दकी वजह से रातमें नींदमें व्याघात होता है। शोक या डर जानेके बाद अंग-प्रत्यङ्गोंकी अकड़न जैसी अवस्था (जिल्स, कोलोसिन्थ, ओपि = बहुत दिन पहलेके शोककी वजहसे = ऐसिड-फास।)

त्वचा।—सारे शरीरमें खुजली—खुजलानेपर घट जाती है। स्त्री-योनि और मुंहके चारों ओरकी त्वचाका क्षय हो जाना। ज्वरकी उत्तापावस्थामें, समूची देहमें बहुत खुजली होती है और आमवात निकल आता है, तथा

पसीना होनेके साथ ही अदृश्य हो जाता है (शीतावस्थाके पहले और समय खुजली और डङ्क मारनेकी तरह मालूम होना और पित्ती निकल आना=हिप, शीत और उत्तापावस्थामें=रास,—उत्तापावस्थामें=एपिस)।

निद्रा।—ज्वरकी उत्तापावस्थामें नाकमें आवाजके साथ गाढ़ी मोहाच्छन्न निद्रा (एपिस, ओपि) और बार बार ठण्ढी साँसें लेना; सवेरे या दो पहरमें सोनेके बाद, बहुत जम्हाई आनेके समय निचले जबड़ेमें दर्द होता है,—मानो जबड़ा टूट गया और आँखसे आँसुआ स्राव हुआ करता है। निद्रावस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने मुंह दबा रखा है और रोगी बार बार चौंक उठता है। नींद आनेके समय सारे शरीरमें या किसी एक अंगमें चमक पैदा हो जाती है (बेल, हायो, डिजि)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—ज्वर आनेपर रोगी बार बार जम्हाई और अँगड़ाई लिया करता है, हाथ पैर फैलाता है [इयुपेट, नेट्र-म्यू, रास]। शीतावस्थामें चेहरा लाल हो उठता है [फेरम],—बहुत प्यास [चिना],—बाहरी उत्तापसे शीत घट जाता है; कम्पनकी वजहसे शीत,—गर्म घरमें और चूल्हेकी गर्मीसे घट जाता है। उत्तापावस्थामें प्यास नहीं रहती—वाह्य उत्ताप सहन नहीं होता,—किसी तरहका ओढ़ना भी सहन नहीं होता। बाहर उत्ताप, और भीतर जाड़ा मालूम होता है; उत्तापवाली अवस्थामें बहुत खुजलानेवाली जुल-पित्ती निकलती है और रोगी गहरी नींदमें अभिभूत हो जाता है तथा उसकी नाकसे आवाज निकला करती है। पसीनेवाली अवस्थामें—हाथ-पैर आदि या मुखमण्डलके एक छोटेसे अंशमें थोड़ी मात्रामें गर्म पसीना होता है,—पसीना निकलनेके साथ ही जुल-पित्ती गायब हो जाती हैं; पसीनेवाली अवस्थामें रोगीको बहुत सुस्ती मालूम होती है,—बेहोश हो जाना चाहता है। जीभ साफ, खट्टी लारसे भरी। खाये हुए किसी पदार्थका भी स्वाद नहीं मिलता। ज्वर छूटनेवाली विज्वरावस्थामें—ओंठ और ओंठके संयोगस्थलपर जल-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं; दोनों ओंठ सूखे, उनकी त्वचा फटी या कड़ी; दिनके ११ बजनेके समय रोगीको बहुत भूख मालूम होती है (सल्फ) और उसका चेहरा रक्तशून्य और उजला मालूम होता है (महात्मा हनिमैनके मतसे सविराम ज्वराधिकारमें यदि शीतावस्थामें प्यास अधिक रहे और उत्तापवाली अवस्थामें बिलकुल न रहे तो इग्नेशिया, उस ज्वरको एकदम आरोग्य कर सकता है)।

वृद्धि।—धूम्रपान, काफी या शराब पीनेपर, छूनेपर; तेज गन्धसे, मानसिक आवेग या शोककी वजहसे; जाड़ेके दिनोंमें सवेरे नींद खुलते ही, संध्याके बाद सोनेपर और कुछ स्पर्श करनेपर।

घटना।—उत्तापसे, जोरसे मलने या रगड़नेपर; कड़ी चीज निगलने और चलनेके समय तथा गर्मीके दिनोंमें, चित होकर रोगवाली करवट सोनेपर, और शरीरकी अवस्थाका परिवर्तन करनेसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—कोकस—(तेज हँसीका उद्वेग); लाई, (नींदमें व्याघात; भूख न लगना); जेल्स, ओपि,, कोलो, वेल, कास्टि, लैके (तरल पदार्थ निगलनेमें कष्ट); इग्न, नक्स (ज्वर); सल्फ (तुच्छ विषयोंमें भी क्रोध); कोलिन, पल्स (दुःखको छिपाना); पोडो, एपिस; हायो, स्टैन, काक्यु, वेरेट, क्य ग्रम।

असम्बन्ध।—काफी, नक्स; टैबाक। **तुलनीय,**—जेल्स (सर दर्दकी शान्ति, पेशाब होना); मस्कस (सहजमें ही मूर्च्छा); ओपियम (एकाएक आवेगका दुष्परिणाम); काकुलस (जरायुका आक्षेप); एपिस (स्नायविक खाँसी); ज्वर और आँसुओंके स्रावमें—नेट्रम।

दोषघ्न।—पल्स, आर्निका, कैम्फो, काकुल, काफिया, कैम्फर।

शक्ति।—निम्न-क्रमसे २०० शततमिक और इससे भी ऊँचा क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—८ दिन।

इलेक्स-एक्विफोलियम।

(ILEX AQUIFOLIUM)

दूसरा नाम।—होलि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्ते, फल और कोमल फुनगियोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, सविराम ज्वर, प्लीहामें दर्द कामला और आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ। **जाड़ेके दिनोंमें रोग लक्षणों का घटना** लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—इलैक्स पेरा, इलेक्स-वोमि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इलिसियम एनिसेटम ।

(ILLICIUM ANISATUM)

दूसरा नाम ।—एक तरहका जीरा ; स्टार साइज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—भारतवर्षमें जीरा भोजनके बाद मुखको सुगन्धित करने, पाचन करने और छौंकनमें तथा मसालेके रूपमें व्यवहृत होता है।

पेटमें वायु लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। शूलका दर्दके साथ यदि उदरमें वायु-संचयकी वजहसे घड़ घड़ शब्द हुआ करता है और नियमित भावसे ठीक एक ही समय, शूलका दर्द आरम्भ हो जाता है—इन लक्षणोंमें इससे आशासे अधिक लाभ होनेकी सम्भावना रहती है।

साधारणतः दाहिनी ओर कभी कभी बाईं ओरकी पंजरास्थिमें,वक्षोस्थि (Stornum) से एक या दो इंच दूरी पर दर्द और बार बार खाँसी पैदा होना, इसका एक विशेष लक्षण है।

पुराने शराबियोंकी सर्दी और उदरामय, पुराना दमा, श्वास-कष्ट, रक्तवमन प्रभृति लक्षणमें भी यह किसी किसी जगह लाभ करता है।

शक्ति ।—३ और ६ ।

वृद्धि ।—धूम्रपान, काफी या शराब पीनेपर, छूनेपर; तेज गन्धसे, मानसिक आवेग या शोककी वजहसे; जाड़ेके दिनोंमें सवेरे नींद खुलते ही, संध्याके बाद सोनेपर और कुछ स्पर्श करनेपर।

घटना ।—उत्तापसे, जोरसे मलने या रगड़नेपर; कड़ी चीज निगलने और चलनेके समय तथा गर्मीके दिनोंमें, चित होकर रोगवाली करवट सोनेपर, और शरीरकी अवस्थाका परिवर्तन करनेसे ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—क्रोकस—(तेज हँसीका उद्वेग); लाई, (नींदमें व्याघात; भूख न लगना); जेल्स, ओपि,, कोलो, बेल, कास्टि, लैके (तरल पदार्थ निगलनेमें कष्ट); प्लम, नक्स (ज्वर); सल्फा (तुच्छ विषयोंमें भी क्रोध); कोलिन, पल्स (दुःखको छिपाना); पोडो, एपिस; हायो, स्ट्रैम, कास्टि, विरेट, क्युप्रम ।

असम्बन्ध ।—काफी, नक्स; टैबाक। **तुलनीय**,—जेल्स (सर दर्दकी शान्ति, पेशाब होना); मस्कस (सहजमें ही मूर्च्छा); ओपियम (एकाएक आवेगका दुष्परिणाम); काकुलस (जरायुका आक्षेप); एपिस (स्नायविक खाँसी); ज्वर और आँसुओंके स्रावमें—नेट्रम।

दोषघ्न ।—पल्स, आर्निका, कैम्फो, काकुल, काफिया, कैम्फर।

शक्ति ।—निम्न-क्रमसे २०० शततमिक और इससे भी ऊँचा क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—८ दिन।

इलेक्स-एक्विफोलियम ।

(ILEX AQUIFOLIUM)

दूसरा नाम ।—होलि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते, फल और कोमल फुनगियोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और अभास।—उदरामय, सविराम ज्वर, प्लीहामें दर्द कामला और आंखकी बहुत-सी बीमारियां। **जाड़ेके दिनोंमें रोग लक्षणों का घटना** लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—इलेक्स पेरा, इलेक्स-वोमि।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इलिसियम एनिसेटम।

(ILLICIUM ANISATUM)

दूसरा नाम।—एक तरहका जीरा; स्टार साइज।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—भारतवर्षमें जीरा भोजनके बाद मुखको सुगन्धित करने, पाचन करने और छौंकनमें तथा मसालेके रूपमें व्यवहृत होता है।

पेटमें वायु लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। शूलका दर्दके साथ यदि उदरमें वायु-संचयकी वजहसे घड़ घड़ शब्द हुआ करता है और नियमित भावसे ठीक एक ही समय, शूलका दर्द आरम्भ हो जाता है—इन लक्षणोंमें इससे आशासे अधिक लाभ होनेकी सम्भावना रहती है।

साधारणतः दाहिनी ओर कभी कभी बाईं ओरकी पंजरास्थिमें,वक्षोस्थि (Sternum) से एक या दो इंच दूरी पर दर्द और बार बार खांसी पैदा होना, इसका एक विशेष लक्षण है।

पुराने शराबियोंकी सर्दी और उदरामय, पुराना दमा, श्वास-कष्ट, रक्तवमन प्रभृति लक्षणमें भी यह किसी किसी जगह लाभ करता है।

शक्ति।—३ और ६।

इम्पिरेटोरिया ।

(IMPERATORIA)

दूसरा नाम ।—प्यूसिवेनम—आष्ट्रे पियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अन्त्र और श्वासनलियोंमें श्लेष्मा स्रावकी कमी इसका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इण्डिगो ।

(INDIGO)

दूसरा नाम ।—वन-नील ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, पीछे तरल क्रम या अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मुँहासे निकलना; रजःस्वल्पता; गुह्य-द्वारका बाहर निकल आना; कब्जियत; खाँसी; अतिसार; मृगी; सर दर्द; मूर्च्छा-वायु; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात; दाँतका दर्द; क्रमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—खास खास लक्षणोंमें यह अपस्मार या मृगी रोगमें विशेष लाभदायक है,—अर्थात आँतमें क्रमि रहनेकी वजहसे अपस्मार या मृगी रोग,—रोगी बहुत दुःखित और विषादयुक्त रहता है,—या रोगके आक्रमणके पहले उन्मत्तता दिखाता है और इसके बाद नम्रता और कातरता या डरपोकपन प्रकट करता है; पाकस्थलीके पीछेवाले स्नायु समूहोंसे उत्ताप पैदा हो जाता है और मस्तककी ओर दौड़ पड़ता है,—शीत लगनेपर, मनमें डर पैदा होनेपर रोगका प्रकोप पैदा हो जाया करता है। ऐसा अनुभव होता है कि माथेमें तरंगें उठ रही हैं, इसके साथ ही चारों ओर अँधेरा दिखाई

देता है,—यह इसका एक प्रकृतिगत लक्षण है ; संध्याके समय और सोने बाद हुप खांसीकी तरह ऊपरके ऊपर लगातार खांसी आती है, इसके साथ ही नाकसे रक्तस्राव होता है ; प्रत्येक बार भोजनके बाद हाथ पैरमें दर्द ; विश्राम के बाद पहली बार शरीर हिलानेपर दाहिने ऊरूमें दर्दकी अधिकता ; बाहु और उसके पीछेवाले स्नायुमें शूलका दर्द,—बैठनेके समय बढ़ना और शरीर संचालनपर घटना ; मलान्त्रमें क्रमि चलनेकी तरह असह्य खुजली,—निद्रिता-वस्थामें क्रमि सब मलद्वारसे बाहरतक चली आती है ; थोड़ा भी ज्यादा भोजन करनेके चार पांच घण्टे बाद पाकस्थलीमें बहुत तकलीफ मालूम होती है—वगैरह कई इग्निशीके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली ।

मन ।—बहुत दुःखित और विमर्ष स्वभाव और असन्तुष्ट चित्त। निर्जनता प्रिय । अपस्मार या मृगीके आक्रमणके पहले बहुत उत्तेजित भाव और इसके बाद कोमल और भीरु स्वभाव प्रकट करता है । हमेशा किसी न किसी काममें लगा रहना पसन्द करता है (आयोड, कैलि-ब्रोम, हेलोन, लिल-टाइ, सल्फ, टैरण्ट) ।

मस्तक ।—सरमें दर्दके साथ सरमें बहुत अधिक चक्कर आना (आर्जेण्ट नाइ, बेराइ, लेके)। मस्तक स्वाभाविककी अपेक्षा बड़ा मालूम होता है,—मानो उसने अधिक जगह घेर ली है (ऐपियोल, आर्जेण्ट-नाइ, आर्नि, नक्स, मस,—एक डलियाकी तरह बड़ा=जेलसि,—मानो एक गिर्जेकी तरह बड़ा= नक्स-वोम,=मानो एक पार्श्वकी ओर बढ़ गया है=लेक-डिफ्लो,—मानो-लम्बा हुआ जाता है=हाइपिर) । ललाट देशमें ऐसा मालूम होता है, मानो बाँधा हुआ है(ऐसिड कार्बोल, सिपा ; काक्यु, साइक्लो, जेल्स, हिप, न नाइ—बाधक रोगमें=जैल्यक्स), ऐसा मालूम होता है मानो भू दबा हुआ है (ऐलो, कैल्के, ग्लोन, लेके, फेलेन)। ललाट देशमें बुलबुले फूटनेकी तरह मालूम होता है ; अर्थात मानो पानी (ऐसिड-बेन,—रातमें=पल्स)। शिरामें—पीछेकी ओरसे साम तरंगें प्रवाहित हो रही हैं (ग्लोन), ऐसा मालूम होना और अस्पष्ट दृष्टि । मिचलो-मिला सर दर्द (चेलिडो, क्लोरोफ, काफि, लेक-डिफ्लो, सिलिन, मिलिलोट, मैङ्गियुई, वेरेट-विर)—स्थिर

है और मलने, दबाने और शरीर हिलानेपर घटता है (दबानेसे घटना = लैके-पलस, सेङ्गियुई,—शरीर सञ्चालनसे घटना = ऐसिड-म्यू, नक्स-मस, रास, स्पाइजि)। अन्तर्निहित दृष्टि (Mental Introvision = इग्ने)

आँख।—दोनों पलकोंका बहुत अधिक फड़कना और काँपनेकी वजह से दृष्टिका व्याघात (ऐगार, रियुम, इग्ने, कोडेन)। लगातार सूखी खाँसीके साथ नाकसे खूनका स्राव (आर्नि, कोरैल-रूब, कोचोलेरिया, क्रोटेल, ड्रोसे, इपिक, मार्क, ऐसिड-म्यूर, नक्स-वोम, स्ट्रैमोन)।

नाक।—दृष्टि लोप हो जानेके साथ नाकसे रक्त स्राव (ऐसिड-आक्से ल)। ऊपरके ऊपर सूखी खाँसी आनेके साथ नाकसे खून जाना (आर्नि, कोरैल-रूब, कोचलेरिया, क्रोटेल, ड्रोसे, इपिक, मार्क, ऐसिड-म्यूर, नक्स-वोम, स्ट्रैमोन)।

मुखमण्डल आदि।—मुंहकी हड्डीमें,—विशेषकर निचले हनुमें छेदने, बेधने या चबानेकी तरह दर्द (आरम, ऐसिड-फ्लू, मेजेर, ऐसिड-नाई, ऐसिड-फास, रियुटा, स्टिलिञ्ज) निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थिसे दाँततक फैलनेवाला दर्द। दाँतका दर्द,—खींचने, चबाने या छेदनेकी तरह, मानो दाँत उखाड़े जाते हैं (मेजेर, रास, जिङ्कम),—उत्तापसे बढ़ना; संचालनसे घटना,—ठण्डी वायु लगनेसे थोड़ी देरके लिये घटना। खून-मिला लार-मय थूक निकलना (इयुफोर्बि ; ऐसिड-नाई, हायो, मार्क-नाई, मार्क-कोर)। जीभके अगले भागमें रस भरे दाने निकलना।

पाकस्थली आदि।—मुंहमें धातुके जंगका स्वाद। मीठी स्वाद मिली डकार। ओकाई आते आते पानीकी तरह पदार्थ निकलता है। पाकस्थलीमें ऐसा शून्य भाव मालूम होता है, मानो उपवास कर रखा है, रह रहकर गर्म डकार उठती हैं—बैठनेके समय भूख बहुत कम; कुछ अधिक आहार करते ही ४।५ घण्टेके बाद पाकाशयमें बहुत गड़बड़ी मालूम होने लगती है।

मलान्त्र और मल।—सूत्र-कृमि,—मलान्त्रमें कृमि चलनेकी तरह मालूम होना और निद्रितावस्थामें कृमि [illegible] आ जाती है (इग्ने, सिना, टियुक्रि)। पेटमें बहु[illegible] दस्त। न हटनेवाली कब्जियत,—मल बहुत [illegible] नहीं [illegible]।

पेशाब।—मूत्र-पथरीकी वजहसे शूल। मूत्रस्थलीकी नलीमें जलन के साथ बार बार पेशाबका वेग; बहुत कष्टसे थोड़े परिमाणमें गदला पेशाब होता है। पेशाबकी नलीमें बहुत अधिक संकोचन मालूम होता है और मूत्रस्थलीमें दर्दके साथ श्लेष्मा मिला बहुत ज्यादा परिमाणमें गदला पेशाब होता है। मूत्रनालीका संकोचन या अवरोध; मूत्रस्थलीमें कभी कभी पैदा होनेवाली सर्दी (Catarrh)

श्वास-यन्त्र।—ऊपरकी ऊपर तेज खाँसी; खाँसते खाँसते वमन हो जाता है और नाकसे खूनका स्राव होने लगता है (इपिका, आर्निं, कोचलोरिया-आरमो, क्रोटेल)।

प्रत्यङ्ग आदि।—स्कन्धसे या उसके पिछले भागके स्नायुमें डंक मारने की तरह दर्द और बराबर व्यथा मालूम होती है। जानु-ग्रन्थिमें मानो कोई छेद कर रहा है और पोटलीमें मानो सुई वेध रहा है—इस ढङ्गका दर्द; बैठनेके समय तीसरे पहर और संध्याके समय वृद्धि,—रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है; शरीर हिलानेपर घटता है, पर शरीर हिलाना आरम्भ करने पर दर्द हुआ करता है। दाहिने ऊरुके ऊपरी अंशमें नीचेकी ओर फैलनेवाला दर्द, विश्रामके बाद पहली बार शरीर हिलानेके समय दर्द बढ़ा मालूम होता है (रास, साइक्लो), यहांतक कि रोगी करवट नहीं बदल सकता। हाथ पैरोंमें दर्द; भोजनके बाद बहुत बढ़ जाता है। ऊरुके बीचसे जानुतक हड्डीमें बेहद दर्द, चलनेके समय घटता है और तीसरे पहर स्थिर होकर बैठनेपर फिर पैदा हो जाता है।

स्नायुमण्डल।—दर्द ज्यादा पैदा करनेवाले गुल्म वायुके आक्रमण की तरह आक्षेप, बहुत स्नायविक उत्तेजना, अपस्मार या मृगी रोग,—उदरके ऊपरी प्रदेशसे उत्ताप पैदा होकर माथेकी ओर जाता है (मानो आगकी भाफ उठ रही है—लाई),—आरम्भमें चक्कर आया करता है; रोगी बहुत ही दुःखित हो पड़ता है; दोनों कन्धोंके बीचवाले किसी दर्दभरे अंशसे सुरसुरी पैदा हो जाती है। रोगके आक्रमणके पहले रोगी बहुत उत्तेजित और उन्मत्तकी तरह हो जाता है और इसके बाद नम्र और डरपोक बन जाता है। कृमिकी वजहसे पैदा हुई उत्तेजनाके प्रतिक्षेपकी वजहसे शरीरके अङ्ग प्रत्यङ्गमें आक्षेप यहाँ तक कि धनुष्टंकार तक पैदा हो जाता है। रातमें कृमि की सुरसुरीकी वजहसे नींद खुल जाती है। कृमिकी वजहसे ज्वर।

वृद्धि ।—विश्रामके समय, बैठनेवाली अवस्थामें, तीसरे पहर और संध्या के समय (पर संध्याके समय सरमें चक्कर आना घट जाता है) और भोजन के बाद ।

घटना ।—शरीर हिलानेपर, चलनेके समय और दबाने या हाथ फेरनेपर ।

दोषघ्न ।—कैम्फर, नक्स-वोम ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—सलफर (मृगी ; कृमि-ज्वर); सिमिसि (माथेमें दर्द); ब्यूफो (मृगी); इग्ने (विषाद)। केलि-ब्रोम, ऐक्टि-रेसि, रास, ब्यफो, लाई, वेप्टी, इग्ने, सिना, स्पाइजि, स्टेन ।

शक्ति ।—३ रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

इण्डियम ।

(INDIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहका धातु, इसका विचूर्ण हुआ करता है। इसके बाद ६ ठे दशमिक क्रमके बादसे अर्क या टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पीठमें दर्द ; नाकसे रक्तस्राव ; सर दर्द ; पैरमें पसीना ; स्वप्न दोष ; गलेमें जखम; अलिजिह्वाका बढ़ना ।

उपयोगिता और आभास ।—जननेन्द्रियके सम्बन्धमें इसकी क्रिया प्रायः सेलिनियमकी तरह है। रोगीमें इन्द्रिय दमनकी शक्ति नहीं रहती ; रातमें उसे वीर्यपात हो जाता है। और वह कामोद्दीपक सपने देखा करता है। इसकी क्रियाके आधीन रोगीका चित्त सदैव दुःखी रहा करता है उसे अकसर भयानक सर दर्द होता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेके भीतर प्रचण्ड दर्द मालूम होता है, सर दर्द हो जानेपर नींद आती है और जी मिचलाता है। गलेमें दर्द, संध्याके समय बढ़ना और ठण्डा पानी पीनेपर घटना ; पेशाब कुछ देरतक पड़ा रहनेपर उसमें बहुत बदबू पैदा हो जाती है ;

बहुत बेचैनी और इधर उधर घूमनेकी इच्छा और दिनके ११ बजनेके समय रोगी बहुत कमजोर हो जाता है; इत्यादि कई इस धातव दवाके प्रधान प्रकृतिगत लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली।

मन।—दुःखित चित्त। मन बहुत थका मालूम होता है;—किसी तरहका मानसिक परिश्रम नहीं करना चाहता (बेप्टि, चेलिडो, नक्स, सेङ्गिवुई)। किसी विषयपर मन स्थिर नहीं कर सकता (इस्कि, इथ्यू, बोवि,—ऐग, लैक-कैन, ऐ-फास)। सरमें दर्द होनेपर नींद आ जाती है और क्रोध बढ़ता है (नींद आती है=क्रियो जेन्यक्स; क्रोध बढ़ता है=लैक-कैन, नक्स, लिसिन)। पढ़नेकी चेष्टा करनेपर रोगी सर दर्दसे बेचैन और उन्मत्तकी तरह हो जाता है।

मस्तक।—बैठे बैठे उठनेमें सरमें चक्कर आता है (कैल्के-फास, कैमो, कोना, डिजि, लाई, फास, पल्स); सोनेपर जी मिचलाता है और सरमें चक्कर आता है; बैठे रहनेपर (कैमो, पल्स, रास) और कुछ झुकनेपर रातके ३ बजे से ४ बजेके बीचमें,—सर घुमानेपर (कोना, फास, टिलिया) और खड़े होनेपर (लाई, नेट्र-म्यूर, सेलिन, टैबाक) बढ़ता है। रोगी सीधा तनकर नहीं बैठ सकता (कार्बो-ऐन, डायाडेमा, टेल्यू,—शय्यापर उठकर बैठ नहीं सकता=चेलिडो, काक्यु)। औंघाई (लैके, नक्स-मस, ओपि, स्टैन) के होनेके बाद जी मिचलाता है और माथेमें धीमा धीमा दर्द होता है। पूर्वाह्नमें दो पहरके पहले बहुत तेज सर दर्द,—माथेके पीछे दाहिनी ओरसे दर्द आरम्भ होकर माथेके ऊपरसे बायीं आँखमें जा पहुँचता है (स्पाई)। पाखाना होनेके समय जोर देनेपर माथेके भीतर असह्य दर्द मालूम होता है (लाई, साइलि)। सन्ध्याके समय बाएं पार्श्वका सर दर्द (क्विनिन-सल्फ)। माथेके भीतर टपक होती है और गर्म हो जाता है,—माथेमें ठण्डा पानी डालनेपर घटता है (कैल्के, फास, सेंगिविन, स्पाइजि, जिङ्कम)। मस्तिष्कमें मानो चोट लग गयी है, ऐसा दर्द मालूम होता है, ठण्डी हवा लगनेपर घटता है, सवेरे उठनेपर सरमें दर्द होता है, खानेपर घटता है,—इसके एक घण्टे बाद फिर पैदा होकर दो पहरतक रहा करता है, ब्रह्मतालुमें खुजली होती है और बहुत दिनों तक ऐसा ही हुआ करता है;—सवेरे आराम हो जाता है।

वृद्धि ।—विश्रामके समय, बैठनेवाली अवस्थामें, तीसरे पहर और के समय (पर संध्याके समय सरमें चक्कर आना घट जाता है) और के बाद ।

घटना ।—शरीर हिलानेपर, चलनेके समय और दबाने या फिरनेपर ।

दोषघ्न ।—कैम्फर, नक्स-वोम ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—सलफर (मृगी ; क्रमि-ज्वर); सिमि (माथेमें दर्द); व्यूफो (मृगी); इग्ने (विषाद)। केलि-ब्रोम, ऐकि-रे रास, व्यफो, लाई, बैप्टी, इग्ने, सिना, साइजि, स्ट्रैन ।

शक्ति ।—२ रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

इण्डियम ।

(INDIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहका धातु, इसका विचूर्ण हुआ करता है। इसके बाद ६ ठे दशमिक क्रमके बादसे अर्क या टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पीठमें दर्द ; नाकसे रक्तस्राव ; सर दर्द ; पैरमें पसीना ; स्वप्न दोष ; गलेमें जखम; अलिजिह्वाका बढ़ना ।

उपयोगिता और आभास ।—जननेन्द्रियके सम्बन्धमें इसकी क्रिया प्राय: सेलिनियमकी तरह है। रोगीमें इन्द्रिय दमनकी शक्ति नहीं रहती; रातमें उसे वीर्यपात हो जाता है। और वह कामोद्दीपक सपने देखा करता है। इसकी क्रियाके आधीन रोगीका चित्त सदैव दुःखी रहा करता है उसे अकसर भयानक सर दर्द होता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेके भीतर प्रचण्ड दर्द मालूम होता है, सर दर्द हो जानेपर मीद आती है और

बहुत बेचैनी और इधर उधर घूमनेकी इच्छा और दिनके ११ बजनेके समय रोगी बहुत कमजोर हो जाता है; इत्यादि कई इस धातव दवाके प्रधान प्रकृति-गत लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली।

मन।—दुःखित चित्त। मन बहुत थका मालूम होता है;—किसी तरहका मानसिक परिश्रम नहीं करना चाहता (बेप्टि, चेलिडो, नक्स, सैङ्गि-युई)। किसी विषयपर मन स्थिर नहीं कर सकता (इग्निउ, इथू, बोवि,—ऐग, लैक-कैन, ऐ-फास)। सरमें दर्द होनेपर नींद आ जाती है और क्रोध बढ़ता है (नींद आती है=क्रियो जोन्टस; क्रोध बढ़ता है=लैक-कैन, नक्स, लिलिन)। पढ़नेकी चेष्टा करनेपर रोगी सर दर्दसे बेचैन और उन्मत्तकी तरह हो जाता है।

मस्तक।—बैठे बैठे उठनेसे सरमें चक्कर आता है (कैल्के-फास, कैसो, कोना, डिजि, लाई, फास, पल्स); सोनेपर जी मिचलाता है और सरमें चक्कर आता है; बैठे रहनेपर (कैसो, पल्स, रास) और कुछ झुकनेपर रातके ३ बजे से ४ बजेके बीचमें,—सर घुमानेपर (कोना, फास, *टिलिया*) और खड़े होनेपर (ब्राई, नेट्र-म्यूर, सेलिन, टैबाक) बढ़ता है। रोगी सीधा तनकर नहीं बैठ सकता (कार्बो-ऐन, डायाडिमा, टेल्यू,—शय्यापर उठकर बैठ नहीं सकता=चेलिडो, काक्यु)। औंघाई (लैके, नक्स-मस, ओपि, स्ट्रैन) के होनेके बाद जी मिचलाता है और माथेमें धीमा धीमा दर्द होता है। पूर्वाह्नमें दो पहरके पहले बहुत तेज सर दर्द,—माथेके पीछे दाहिनी ओरसे दर्द आरम्भ होकर माथेके ऊपरसे बायीं आँखमें जा पहुँचता है (स्पाई)। पाखाना होनेके समय जोर देनेपर माथेके भीतर असह्य दर्द मालूम होता है (लाई, साइलि)। *सन्ध्याके समय बायें पार्श्वका सर दर्द* (क्विनिन-सल्फ)। माथेके भीतर टपक होती है और गर्म हो जाता है,—माथेमें ठण्डा पानी डालनेपर घटता है (कैल्के, फास, सैंगिविन, स्पाइजि, जिङ्कम)। मस्तिष्कमें मानो चोट लग गयी है, ऐसा दर्द मालूम होता है, ठण्डी हवा लगनेपर घटता है, सवेरे उठनेपर सरमें दर्द होता है, खानेपर घटता है,—इसके एक घण्टे बाद फिर पैदा होकर दो पहरतक रहा करता है, ब्रह्मतालुमें खुजली होती है और बहुत दिनों तक ऐसा ही हुआ करता है;—सवेरे आराम हो जाता है।

वृद्धि ।—विश्रामके समय, बैठनेवाली अवस्थामें, तीसरे पहर और संध्याके समय (पर संध्याके समय सरमें चक्कर आना घट जाता है) और भोजनके बाद ।

घटना ।—शरीर हिलानेपर, चलनेके समय और दबाने या हाथ फेरनेपर ।

दोषघ्न ।—कैम्फर, नक्स-वोम ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—सलफर (मृगी ; कृमि-ज्वर); सिमिसि (माथेमें दर्द); ब्यूफो (मृगी); इग्ने (विषाद)। कैलि-ब्रोम, ऐक्टि-रेसि, रास, ब्यफो, लाईं, वेप्टी, इग्ने, सिना, स्पाइजि, स्ट्रैन ।

शक्ति ।—३ रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

इण्डियम ।

(INDIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहका धातु, इसका विचूर्ण हुआ करता है। इसके बाद ६ ठे दशमिक क्रमके बादसे अर्क या टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— पीठमें दर्द ; नाकसे रक्तस्राव ; सर दर्द ; पैरमें पसीना ; स्वप्न दोष ; गलेमें जखम; अलिजिह्वाका बढ़ना ।

उपयोगिता और आभास ।—जननेन्द्रियके सम्बन्धमें इसकी क्रिया प्रायः सेलिनियमकी तरह है। रोगीमें इन्द्रिय दमनकी शक्ति नहीं रहती ; रातमें उसे वीर्यपात हो जाता है। और वह कामोद्दीपक सपने देखा करता है। इसकी क्रियाके आधीन रोगीका चित्त सदैव दुःखी रहा करता है उसे अकसर भयानक सर दर्द होता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेके भीतर प्रचण्ड दर्द मालूम होता है, सर दर्द हो जानेपर नींद आती है और जी मिचलाता है। गलेमें दर्द, संध्याके समय बढ़ना और ठण्डा पानी पीनेपर घटना ; पेशाब कुछ देरतक पड़ा रहनेपर उसमें बहुत बदबू पैदा हो जाती है ;

बहुत बेचैनी और इधर उधर घूमनेकी इच्छा और दिनके ११ बजनेके समय रोगी बहुत कामजोर हो जाता है; इत्यादि कई इस धातव दवाके प्रधान प्रकृतिगत लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली।

मन।—दुःखित चित्त। मन बहुत थका मालूम होता है;—किसी तरहका मानसिक परिश्रम नहीं करना चाहता (बैप्टि, चेलिडो, नक्स, सैक्रिफुई)। किसी विषयपर मन स्थिर नहीं कर सकता (इग्निश, इथ्यू, बोवि,—ऐग, लैक-कैन, ऐ-फास)। सरमें दर्द होनेपर नींद आ जाती है और क्रोध बढ़ता है (नींद आती है=क्रियो जेन्यक्स; क्रोध बढ़ता है=लैक-कैन, नक्स, लिसिन)। पढ़नेकी चेष्टा करनेपर रोगी सर दर्दसे बेचैन और उन्मत्तकी तरह हो जाता है।

मस्तक।—बैठे बैठे उठनेमें सरमें चक्कर आता है (कैल्को-फास, लिसो, कोना, डिजि, लाई, फास, पल्स); सोनेपर जी मिचलाता है और सरमें चक्कर आता है; बैठे रहनेपर (कैमो, पल्स, रास) और कुछ झुकनेपर रातके ३ बजे से ४ बजेके बीचमें,—सर घुमानेपर (कोना, फास, टिलिया) और खड़े होनेपर (ब्राई, नेट्र-म्यूर, सेलिन, टैबाक) बढ़ता है। रोगी सीधा तनकर नहीं बैठ सकता (कार्बो-ऐन, डायाडिमा, टेल्यू,—शय्यापर उठकर बैठ नहीं सकता=चेलिडो, काक्यु)। औंवाई (लैके, नक्स-मस, ओपि, टैन) के होनेके बाद जी मिचलाता है और माथेमें धीमा धीमा दर्द होता है। पूर्वान्हमें दो पहरके पहले बहुत तेज सर दर्द,—माथेके पीछे दाहिनी ओरसे दर्द आरम्भ होकर माथेके ऊपरसे बायीं आंखमें आ पहुंचता है (साइ)। पाखाना होनेके समय जोर देनेपर माथेके भीतर असह्य दर्द मालूम होता है (लाई, साइलि)। सन्ध्याके समय बाएं पार्श्वका सर दर्द (किनिन-सल्फ)। माथेके भीतर टपक होती है और गर्म हो जाता है,—माथेमें ठण्डा पानी डालनेपर घटता है (कैल्को, फास, मैंगिनम, आर्जि, जिङ्कम)। मस्तिष्कमें मानो चोट लग गयी है, ऐसा दर्द मालूम होता है, ठण्डी हवा लगनेपर घटता है, सवेरे उठनेपर सरमें दर्द होता है, घटता है,—इसके एक घण्टे बाद फिर पैदा होकर दो पहरतक रहता है, ब्रह्मतालुमें खुजली होती है और बहुत दिनों तक ऐसा ही हुआ सवेरे आराम हो जाता है।

आंख।—सभी चीजें या मनुष्य डरावने, उजले या केसरिया रङ्गके दिखाई देते हैं (डिजि)। इधर उधर आँख घुमाने पर, उसमें सामनेकी ओरसे पीछेकी ओर तक तेज दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो आँखें नींदसे बन्द हुई जाती हैं—नकली रोशनी लगनेपर बढ़ता है, हमेशा आँख बन्द किये रहनेकी इच्छा होती है, पर उससे दर्द बढ़ता है, बाईं आँखका बाहरी कोना रह रहकर फड़क उठता है।

नाक।—रह रहकर फुन्सियां हो जाती हैं और वे पकती हैं,—ऐसा मालूम होता है मानो उनमें सुई गड़ायी जा रही है; यह फुन्सियां चारों ओर बहुत दूरतक लाल हो जाती हैं। मुँहमें सब जगह व्रण हो जाते हैं। उनमें इतनी जलन और दर्द होता है कि हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। सरमें दर्द होनेपर चेहरा लाल और गर्म हो जाता है और रङ्ग उजला दिखाई देता है। मुँहका कोना फटा और जखम भरा हो जाता है (ग्रैफ, काब्यु)।

गलेके भीतर।—अलि-जिह्वा बढ़ी और तालुमूलका पिछला भाग गाढ़ा पीले श्लेष्मासे ढका रहा करता है और श्लेष्मा बड़ी तकलीफसे निकलता है। उपजिह्वा, कोमल तालु और दोनों गलग्रन्थियां जखम-भरी हो जाती हैं। ये सभी जखम गाढ़े पीले श्लेष्मासे ढके रहते हैं (कैलि-बाई, मार्क-पेरेन, फाइटो)। बाईं गलग्रन्थि (गलेकी गांठ) फूलती है,—कोई पदार्थ निगलनेमें बहुत दर्द और तकलीफ होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो काँटा गड़ गया है, (एपिस),—निगलनेमें बहुत कष्ट होता है (हिप)। कण्ठका दर्द संध्याके समय बढ़ता है और खानेके बाद (इग्ने) और ठण्डा पानी पीनेपर घटता है (इस्क्यू-हिप, ऐसिड-बेन, सिस्टस, लैके)।

पाकस्थली।—जी मिचलाता है और सरमें दर्द होता है। सबेरे खानेके समय, दिनके ११ बजनेके समय (फास, नेट्र-कार्ब, जिङ्कम, सल्फ) और बिछावनसे उठनेके समय रोगीका ऊपरी पेट खाली और बहुत कमजोरी मालूम होती है और सोनेपर सरमें चक्कर आता है और यकृतमें दर्द होता है। ऊपरी पेटमें वमन होनेकी तरह हो जाता है,—मानो कै हो जानेपर आराम मिलेगा (नक्स-वोम)। ऊपरी पेट और पा—स्थलीमें दर्द होता है। यकृतमें ऐसा दर्द होता है मानो सुई गड़ [illegible] —नाभि-प्रदेशसे नीचेकी ओर [illegible] सब मरोड़ खा [illegible] होती है,—मालूम होता [illegible] दस्त आयगा

मल ।—कार्ईकी तरह, फीका या पीला और बदबूदार मल ; खाये हुए पदार्थोंके कण मिला मल ; पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द होता है ; पेशावके समय अनजानमें (ऐलो) थोड़ा थोड़ा मल निकला करता है या मल का पहला अंश छोटी गांठ भरा और बाकी अंश ढीला ; इसके अलावा कभी कभी मल कड़ा और खून भरा भी होता है। उदरामय होदार माथेके दाहिनी ओर दर्द हो जाता है, पाखाना होने बाद जलन और मरोड़ हुआ करता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेमें बहुत दर्द होता है (लाई, पल्स, सिलिसिया, सल्फ)। जोर देनेपर ऐसा मालूम होता है मानो पेटकी कोई नस नाड़ियां टूट जायंगी (एपिस)।

पेशाब ।—पेशाब करनेके समय मलद्वार वेष्टिनी पेशीकी शिथिलता,—अनजानमें पाखाना हो जाना (ऐलो, कैन्थ, हायो, ऐसिड-म्यूर,—वायु त्यागनेके समय=ऐलो-ओलियैन, ऐसिड-फास, पोडो)। निकले हुए पेशावमें कुछ देर बाद बहुत बदबू हो जाती है (सविराम ज्वराधिकारमें बदबूदार पेशाव—युपेट-पार्फोल)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—कामेन्द्रियमें उत्तेजना और रमणशक्तिमें गड़बड़ी, . जल्दी वीर्यपात हो जाता है और उससे सुख नहीं

आंख ।—सभी चीजें या मनुष्य डरावने, उजले या केसरिया रङ्गके दिखाई देते हैं (डिजि)। इधर उधर आँख घुमाने पर, उसमें सामनेकी ओरसे पीछेकी ओर तक तेज दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो आँखें नींदसे बन्द हुई जाती हैं—नकली रौशनी लगने पर बढ़ता है, हमेशा आँख बन्द किये रहनेकी इच्छा होती है, पर उससे दर्द बढ़ता है, बाईं आँखका बाहरी कोना रह रहकर फड़क उठता है।

नाक ।—रह रहकर फुन्सियां हो जाती हैं और वे पकती हैं,—ऐसा मालूम होता है मानो उनमें सुई गड़ायी जा रही है; यह फुन्सियाँ चारों ओर बहुत दूरतक लाल हो जाती हैं। मुँहमें सब जगह व्रण हो जाते हैं। उनमें इतनी जलन और दर्द होता है कि हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। सरमें दर्द होनेपर चेहरा लाल और गर्म हो जाता है और रङ्ग उजला दिखाई देता है। मुँहका कोना फटा और जखम भरा हो जाता है (ग्रैफ, काक्यु)।

गलेके भीतर ।—अलि-जिह्वा बढ़ी और तालुमूलका पिछला भाग गाढ़ा पीले श्लेष्मासे ढका रहा करता है और श्लेष्मा बड़ी तकलीफसे निकलता है। उपजिह्वा, कोमल तालु और दोनों गलग्रन्थियां जखम-भरी हो जाती हैं। ये सभी जखम गाढ़े पीले श्लेष्मासे ढके रहते हैं (कैलि-बाई, मार्क-पेरेन, फाइटो)। बाईं गलग्रन्थि (गलेकी गांठ) फूलती है,—कोई पदार्थ निगलनेमें बहुत दर्द और तकलीफ होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो काँटा गड़ गया है, (एपिस),—निगलनेमें बहुत कष्ट होता है (हिप)। कण्ठका दर्द संध्याके समय बढ़ता है और खानेके बाद (इग्ने) और ठण्ढा पानी पीनेपर घटता है (इस्क्यू-हिप, ऐसिड-बेन, सिस्टस, लैके)।

पाकस्थली ।—जी मिचलाता है और सरमें दर्द होता है। सबेरे खानेके समय, दिनके ११ बजनेके समय (फास, नेट्र-कार्ब, [illegible]), और बिछावनसे उठनेके समय रोगीका ऊपरी पेट खाली और [illegible] मालूम होती है और सोनेपर सरमें चक्कर आता है और यकृतमें [illegible] ऊपरी पेटमें वमन होनेकी तरह हो जाता है,—मानो कै हो [illegible] मिलेगा (नक्स-वोम)। ऊपरी पेट और पाकस्थलीमें दर्द [illegible] ऐसा दर्द होता है मानो सुई गड़ गयी है। अन्त्रशूल, [illegible] और नस-नाड़ियाँ, सब मरोड़ खा रही हैं, ऐसी [illegible] होता है, मानो पतला दस्त आयगा।

मल।—काईकी तरह, फीका या पीला और बदबूदार मल; खाये हुए पदार्थोंके कण मिला मल; पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द होता है; पेशाबके समय अनजानमें (एलो) थोड़ा थोड़ा मल निकला करता है या मल का पहला अंश छोटी गांठ भरा और बाकी अंश ढीला; इसके अलावा कभी कभी मल कड़ा और खून भरा भी होता है। उदरामय होकर माथेके दाहिनी ओर दर्द हो जाता है, पाखाना होने बाद जलन और मरोड़ हुआ करता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेमें बहुत दर्द होता है (लाई, पलस, सिलिसिया, सल्फ)। जोर देनेपर ऐसा मालूम होता है मानो पेटकी कोई नस नाड़ियां टूट जायंगी (एपिस)।

पेशाब।—पेशाब करनेके समय मलद्वार वेष्टिनी पेशीकी शिथिलता,—अनजानमें पाखाना हो जाना (एलो, कैल्प, हायो, एसिड-म्यूर,—वायु त्यागनेके समय=एलो-ओलियैन, एसिड-फास, पोडो)। निकले हुए पेशाबमें कुछ देर बाद बहुत बदबू हो जाती है (सविराम ज्वराधिकारमें बदबूदार पेशाब—युपेट-पार्फोल)।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियमें उत्तेजना और रमणशक्तिमें गड़बड़ी,—रमणके समय बहुत जल्दी वीर्यपात हो जाता है और उससे सुख नहीं मालूम होता। स्वप्न-दोष—एक रातमें दो बार और लगातार चार रातोंमें होता है; रातमें अनजानमें वीर्यपात हो जाता है। लिङ्ग-मुण्डमें खुजली होती है। दाहिने अण्डकोषमें भयानक दर्द मालूम होता है (ओस्मियम, कोबाल्ट)। दोनों अण्डकोष वतौड़ेकी तरह हो जाते हैं और उन्हें छूनेपर बहुत दर्द होता है; रेतोरज्जुके भीतर ऊपरकी ओर चढ़नेवाला तेज दर्द होता है,—बाएं रज्जुमें दर्द ज्यादा मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु वगैरह वस्ति-गह्वरके सभी यन्त्र मानो टूटकर गिर जायंगे—,रोगिनी चिड़चिड़ी और रोनी हो जाती है।

श्वासयंत्र।—रोगी बिछावनसे उठकर देखता है कि उसका स्वर भङ्ग हो गया है और उसमें जखम हो गया है। सोया सोया विशेषकर बाईं करवट सोनेपर बार बार ठण्ढी सांस लेनेकी इच्छा होती है (ऐल्यू, आई कैल्के, ग्लोन, मिडोरिन, मार्क, फास, आइरिस, [illegible]

आंख।—सभी चीजें या मनुष्य डरावने, उजले या केसरिया रङ्गके दिखाई देते हैं (डिजि)। इधर उधर आँख घुमाने पर, उसमें सामनेकी ओरसे पीछेकी ओर तक तेज दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो आँखें नींदसे बन्द हुई जाती हैं—नकली रोशनी लगने पर बढ़ता है, हमेशा आँख बन्द किये रहनेकी इच्छा होती है, पर उससे दर्द बढ़ता है, बाईं आँखका बाहरी कोना रह रहकर फड़क उठता है।

नाक।—रह रहकर फुन्सियां हो जाती हैं और वे पकती हैं,—ऐसा मालूम होता है मानो उनमें सुई गड़ायी जा रही है; यह फुन्सियाँ चारों ओर बहुत दूरतक लाल हो जाती हैं। मुँहमें सब जगह व्रण हो जाते हैं। उनमें इतनी जलन और दर्द होता है कि हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। सरमें दर्द होनेपर चेहरा लाल और गर्म हो जाता है और रङ्ग उजला दिखाई देता है। मुँहका कोना फटा और जखम भरा हो जाता है (ग्रैफ, काक्यु)।

गलेके भीतर।—अलि-जिह्वा बढ़ी और तालुमूलका पिछला भाग गाढ़ा पीले श्लेष्मासे ढका रहा करता है और श्लेष्मा बड़ी तकलीफसे निकलता है। उपजिह्वा, कोमल तालु और दोनों गलग्रन्थियां जखम-भरी हो जाती हैं। ये सभी जखम गाढ़े पीले श्लेष्मासे ढके रहते हैं (कैलि-बाई, मार्क-पैरेन, फाइटो)। बाईं गलग्रन्थि (गलेकी गांठ) फूलती है,—कोई पदार्थ निगलनेमें बहुत दर्द और तकलीफ होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो काँटा गड़ गया है, (एपिस),—निगलनेमें बहुत कष्ट होता है (हिप)। कण्ठका दर्द संध्याके समय बढ़ता है और खानेके बाद (इग्ने) और ठण्डा पानी पीनेपर घटता है (इस्क्यू-हिप, ऐसिड-बेन, सिस्टस, लैके)।

पाकस्थली।—जी मिचलाता है और सरमें दर्द होता है। सवेरे खानेके समय, दिनके ११ बजनेके समय (फास, नैट्र-कार्ब, जिङ्कम, सल्फ) और बिछावनसे उठनेके समय रोगीका ऊपरी पेट खाली और बहुत कमजोरी मालूम होती है और सोनेपर सरमें चक्कर आता है और [illegible] है। ऊपरी पेटमें वमन होनेकी तरह हो जाता है,—मानो कै [illegible] मिलेगा (नक्स-वोम)। ऊपरी पेट और [illegible] दर्द [illegible] ऐसा दर्द होता है मानो सुई गड़ गयी [illegible] और नस-नाड़ियाँ, सब मरोड़ खा रही [illegible] [illegible]ता है, मानो पतला दस्त आयगा।

मल।—काईकी तरह, फीका या पीला और बदबूदार मल; खाये हुए पदार्थोंके कण मिला मल; पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द होता है; पेशावके समय अनजानमें (ऐलो) थोड़ा थोड़ा मल निकला करता है या मल का पहला अंश छोटी गांठ भरा और बाकी अंश ढीला; इसके अलावा कभी कभी मल कड़ा और खून भरा भी होता है। उदरामय होकर माथेके दाहिनी ओर दर्द हो जाता है, पाखाना होने बाद जलन और मरोड़ हुआ करता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेमें बहुत दर्द होता है (लाई, पल्स, सिलिसिया, सल्फ)। जोर देनेपर ऐसा मालूम होता है मानो पेटकी कोई नस नाड़ियां टूट जायंगी (एपिस)।

पेशाब।—पेशाब करनेके समय मलद्वार वेष्टिनी पेशीकी शिथिलता,—अनजानमें पाखाना हो जाना (ऐलो, कैल्थ, हायो, ऐसिड-म्यूर,—वायु त्यागनेके समय=ऐलो-ओलियैन, ऐसिड-फास, पोडो)। निकले हुए पेशाबमें कुछ देर बाद बहुत बदबू हो जाती है (सविराम ज्वराधिकारमें बदबूदार पेशाब—युपेट-पार्फोल)।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियमें उत्तेजना और रमणशक्तिमें गड़बड़ी,—रमणके समय बहुत जल्दी वीर्यपात हो जाता है और उससे सुख नहीं मालूम होता। स्वप्न-दोष—एक रातमें दो बार और लगातार चार रातोंमें होता है; रातमें अनजानमें वीर्यपात हो जाता है। लिङ्ग-मुण्डमें खुजली होती है। दाहिने अण्डकोषमें भयानक दर्द मालूम होता है (ओस्मियम, कोबाल्ट)। दोनों अण्डकोष बतौड़ेकी तरह हो जाते हैं और उन्हें छूनेपर बहुत दर्द होता है; रेतोरज्जुके भीतर ऊपरकी ओर चढ़नेवाला तेज दर्द होता है,—बाएँ रज्जुमें दर्द ज्यादा मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु वगैरह वस्ति-गह्वरके सभी यन्त्र मानो टूटकर गिर जायंगे,—रोगिनी चिड़चिड़ी और रोनी हो जाती है।

श्वासयंत्र।—रोगी बिछावनसे उठकर देखता है कि उसका स्वर भङ्ग हो गया है और उसमें जखम हो गया है। सोया सोया विशेषकर बाईं करवट सोनेपर बार बार ठण्डी सांस लेनेकी इच्छा होती है (पिप्, लाई, कैल्के, ग्लोन, मिडोरिन, मार्क, फास, आइरिस, नेट्र-सल्फ, डिजि)। चित सोनेपर नहीं होता (इयोडिस)। वक्षोस्थिके पास बाईं ओर छातीके भीतर

आंख ।—सभी चीजें या मनुष्य डरावने, उजले या केसरिया रङ्गके दिखाई देते हैं (डिजि)। इधर उधर आँख घुमाने पर, उसमें सामनेकी ओरसे पीछेकी ओर तक तेज दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो आँखें नींदसे बन्द हुई जाती हैं—नकली रोशनी लगने पर बढ़ता है, हमेशा आँख बन्द किये रहनेकी इच्छा होती है, पर उससे दर्द बढ़ता है, बाईं आँखका बाहरी कोना रह रहकर फड़क उठता है।

नाक ।—रह रहकर फुन्सियाँ हो जाती हैं और वे पकती हैं,—ऐसा मालूम होता है मानो उनमें सुई गड़ायी जा रही है; यह फुन्सियाँ चारों ओर बहुत दूरतक लाल हो जाती हैं। मुँहमें सब जगह व्रण हो जाते हैं। उनमें इतनी जलन और दर्द होता है कि हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। सरमें दर्द होनेपर चेहरा लाल और गर्म हो जाता है और रङ्ग उजला दिखाई देता है। मुँहका कोना फटा और जखम भरा हो जाता है (ग्रैफ, कार्बु)।

गलेके भीतर ।—अलि-जिह्वा बढ़ी और तालुमूलका पिछला भाग गाढ़ा पीले श्लेष्मासे ढका रहा करता है और श्लेष्मा बड़ी तकलीफसे निकलता है। उपजिह्वा, कोमल तालु और दोनों गलग्रन्थियां जखम-भरी हो जाती हैं। ये सभी जखम गाढ़े पीले श्लेष्मासे ढके रहते हैं (कैलि-बाई, मार्क-पेरेन, फाइटो)। बाईं गलग्रन्थि (गलेकी गांठ) फूलती है,—कोई पदार्थ निगलने में बहुत दर्द और तकलीफ होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो काँटा गड़ गया है, (एपिस),—निगलनेमें बहुत कष्ट होता है (हिप)। कण्ठका दर्द संध्याके समय बढ़ता है और खानेके बाद (इग्ने) और ठण्डा पानी पीनेपर घटता है (इस्क्यू-हिप, ऐसिड-बेन, सिस्टस, लैके)।

पाकस्थली ।—जी मिचलाता है और सरमें दर्द होता है। सबेरे खानेके समय, दिनके ११ बजनेके समय (फास, नेट्र-कार्ब, जिङ्कम, सल्फ) और बिछावनसे उठनेके समय रोगीका ऊपरी पेट खाली और बहुत कमजोरी मालूम होती है और सोनेपर सरमें चक्कर आता है और यकृतमें दर्द होता है। ऊपरी पेटमें वमन होनेकी तरह हो जाता है,—मानो कै हो जानेपर आराम मिलेगा (नक्स-वोम)। ऊपरी पेट और पाकस्थलीमें दर्द होता है। यकृतमें ऐसा दर्द होता है मानो सुई गड़ गयी है। अन्त्रशूल,—नाभि-प्रदेशसे नीचेकी ओर नस-नाड़ियाँ, सब मरोड़ खा रही हैं, ऐसी तकलीफ होती है,—मालूम होता है, मानो पतला दस्त आयगा।

मल।—काईकी तरह, फीका या पीला और बदबूदार मल; खाये हुए पदार्थोंके कण मिला मल; पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द होता है; पेशाबके समय अनजानमें (ऐलो) थोड़ा थोड़ा मल निकला करता है या मल का पहला अंश छोटी गांठ भरा और बाकी अंश ढीला; इसके अलावा कभी कभी मल कड़ा और खून भरा भी होता है। उदरामय होकर माथेके दाहिनी ओर दर्द हो जाता है, पाखाना होने बाद जलन और मरोड़ हुआ करता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेमें बहुत दर्द होता है (लाई, पल्स, सिलिसिया, सल्फ)। जोर देनेपर ऐसा मालूम होता है मानो पेटकी कोई नस नाड़ियां टूट जायंगी (एपिस)।

पेशाब।—पेशाब करनेके समय मलद्वार वेष्टिनी पेशीकी शिथिलता,—अनजानमें पाखाना हो जाना (ऐलो, कैन्थ, हायो, ऐसिड-म्यूर,—वायु त्यागनेके समय=ऐलो-ओलियैन, ऐसिड-फास, पोडो)। निकले हुए पेशाबमें कुछ देर बाद बहुत बदबू हो जाती है (सविराम ज्वराधिकारमें बदबूदार पेशाब—युपेट-पार्फोल)।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियमें उत्तेजना और रमणशक्तिमें गड़बड़ी,—रमणके समय बहुत जल्दी वीर्यपात हो जाता है और उससे सुख नहीं मालूम होता। स्वप्न-दोष—एक रातमें दो बार और लगातार चार रातोंमें होता है; रातमें अनजानमें वीर्यपात हो जाता है। लिङ्ग-मुण्डमें खुजली होती है। दाहिने अण्डकोषमें भयानक दर्द मालूम होता है (ओस्मियम, कोबाल्ट)। दोनों अण्डकोष बतौड़ेकी तरह हो जाते हैं और उन्हें छूनेपर बहुत दर्द होता है; रेतोरज्जुके भीतर ऊपरकी ओर चढ़नेवाला तेज दर्द होता है,—बाएँ रज्जुमें दर्द ज्यादा मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु वगैरह वस्ति-गह्वरके सभी यन्त्र मानो टूटकर गिर जायंगे—,रोगिनी चिड़चिड़ी और रोनी हो जाती है।

श्वासयंत्र।—रोगी बिछावनसे उठकर देखता है कि उसका स्वर भङ्ग हो गया है और उसमें जखम हो गया है। सोया सोया विशेषकर बाईं करवट सोनेपर बार बार ठण्डी सांस लेनेकी इच्छा होती है (ऐल्यू, ब्राई, कैल्के, ब्रोन, मिडोरिन, मार्क, फास, थाइरिस, नेट्र-सल्फ, डिजि)। चित सोनेपर नहीं होता (इक्वोडिस)। वक्षोस्थिके पास बाईं ओर छातीके भीतर

आंख।—सभी चीजें या मनुष्य डरावने, उजले या केसरिया रङ्गके दिखाई देते हैं (डिजि)। इधर उधर आंख घुमाने पर, उसमें सामनेकी ओरसे पीछेकी ओर तक तेज दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो आंखें नींदसे बन्द हुई जाती हैं—नकली रोशनी लगने पर बढ़ता है, हमेशा आंख बन्द किये रहनेकी इच्छा होती है, पर उससे दर्द बढ़ता है, बाईं आंखका बाहरी कोना रह रहकर फड़क उठता है।

नाक।—रह रहकर फुन्सियां हो जाती हैं और वे पकती हैं,—ऐसा मालूम होता है मानो उनमें सुई गड़ायी जा रही है; यह फुन्सियां चारों ओर बहुत दूरतक लाल हो जाती हैं। मुँहमें सब जगह व्रण हो जाते हैं। उनमें इतनी जलन और दर्द होता है कि हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। सरमें दर्द होनेपर चेहरा लाल और गर्म हो जाता है और रङ्ग उजला दिखाई देता है। मुँहका कोना फटा और जखम भरा हो जाता है (ग्रेफ, काक्यु)।

गलेके भीतर।—अलि-जिह्वा बढ़ी और तालुमूलका पिछला भाग गाढ़ा पीले श्लेष्मासे ढका रहा करता है और श्लेष्मा बड़ी तकलीफसे निकलता है। उपजिह्वा, कोमल तालु और दोनों गलग्रन्थियां जखम-भरी हो जाती हैं। ये सभी जखम गाढ़े पीले श्लेष्मासे ढके रहते हैं (कैलि-बाई, मार्क-पेरैन, फाइटो)। बाईं गलग्रन्थि (गलेकी गांठ) फूलती है,—कोई पदार्थ निगलनेमें बहुत दर्द और तकलीफ होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो कांटा गड़ गया है, (एपिस),—निगलनेमें बहुत कष्ट होता है (हिप)। कण्ठका दर्द संध्याके समय बढ़ता है और खानेके बाद (इग्ने) और ठण्डा पानी पीनेपर घटता है (इस्क्यू-हिप, ऐसिड-वेन, सिस्टस, लेके)।

पाकस्थली।—जी मिचलाता है और सरमें दर्द होता है। सबेरे खानेके समय, दिनके ११ बजनेके समय (फास, नैट्र-कार्ब, जिङ्कम, सल्फ) और बिछावनसे उठनेके समय रोगीका ऊपरी पेट खाली और बहुत कमजोरी मालूम होती है और सोनेपर सरमें चक्कर आता है और यकृतमें दर्द होता है। ऊपरी पेटमें वमन होनेकी तरह हो जाता है,—मानो कै हो जानेपर आराम मिलेगा (नक्स-वोम)। ऊपरी पेट और पाकस्थलीमें दर्द होता है। यकृतमें ऐसा दर्द होता है मानो सुई गड़ गयी है। अन्त्रशूल,—नाभि-प्रदेशसे नीचेकी ओर नस-नाड़ियां, सब मरोड़ खा रही हैं, ऐसी तकलीफ होती है,—मालूम होता है, मानो पतला दस्त आयगा।

इनुला ।

(INULA)

दूसरा नाम ।—इनुला—हेलिनियम ; स्काव वार्ट ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लैष्मिक झिल्लीपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। सूखी खाँसी, पुराना-श्वासनाली प्रदाह, यक्ष्मा यक्ष्मा बलगम निकलना, वक्षोस्थिके पीछेकी ओर सुरसुरी, गुटिका दोष, वायुनली-मुख प्रदाह प्रभृति श्वास-यन्त्रके लक्षणमें यह विशेष लाभदायक है।

उदरमें कोई जीवित प्राणी घूमता फिरता है ऐसा मालूम होता है (क्रोकस, थूजा) और उदरके भीतरवाली आंतें आदि जननेन्द्रिय या मलद्वारके पथसे बाहर निकल पड़ेंगी ऐसा मालूम होना (सिपिया) लक्षणवाले बहुतसे स्त्री रोगोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—क्रोकस, इग्नेशिया, अरम-डिकाफ्रियम, सिपिया, थूजा।

शक्ति ।—१ म और ६ ठीं ।

आयोडियम ।

(IODIUM)

दूसरा नाम ।—आयोडिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रेक्टि-फायड स्पिरिटसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—
भूखकी गड़बड़ी ; दुबलापन ; मस्तिष्क या ग्रन्थिका बढ़ना ; कर्कटका जखम ; कब्जियत ; क्षय कास ; सर्दी ; खाँसी ; घुंड़ी ; कमजोरी ; बहुमूत्र ; अतिसार ; उपझिल्ली-प्रदाह या डिफ्थीरिया ; आन्त्रिक ज्वर ; स्तनसे बहुत दूध

जलन होती है और मालूम होता है, मानो वक्षोस्थि पीछेकी ओर खिंच रही है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दन और दोनों कन्धे ऐसे मालूम होते हैं, मानो जकड़ गये हैं। पीठकी फलकके कुछ ऊपर दब जानेकी तरह दर्द होता है और स्थिर होकर बैठनेपर यह जगह अकड़ गयी-सी मालूम होती है,—पहली बार हिलाना आरम्भ करनेपर दर्द अधिक मालूम होता है। बाईं फलकमें दर्द और समूचे बाएँ बाहुमें बहुत दर्द मालूम होता है; कभी कभी यह दर्द इतना तेज हो जाता है कि मानो बायां बाहु एकदम सुन्न हो गया है, बहुत बेचैनी मालूम होनेकी वजहसे रोगी इधर उधर टहला करता है—एक स्थानपर स्थिर नहीं रह सकता। दोनों पैर बहुत अस्थिर और कमजोर मालूम होते हैं। बाएँ पैरके अंगूठेकी सन्धिके भीतर मानो किसी भोथरे अस्त्रसे खोदा जा रहा है, ऐसा दर्द होता है—रोगी तकलीफ सहन नहीं कर सकता, तकलीफ घटनेकी आशासे रोगी हमेशा पैर हिलाया करता है। पैरमें बहुत पसीना होता है और वह बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है।

वृद्धि ।—संध्याके समय ८ बजेसे ९ बजेतक दर्द होता है. दोनों पैरों कीअंगुलियोंसे बेहद जलन और खुजली होती है, गर्म घरमें, शरीर हिलानेपर और रातके ३ बजे से ४ बजे तक और दिनके ३ बजेसे ६ बजेके भीतर।

उपशम ।—भोजन करने या ठण्डा पानी आदि पीने अथवा निर्मल वायुके सेवनसे, ठण्डी हवा लगने और ठण्डे पानीसे रोगवाला अंश धोने या तर करनेपर।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—सेलिन, ओस्मियम ; नैट्र-कार्ब, सल्फ, नक्स-मस, ओसि, ऐसिड-बेन, इथ्यू, लेके।

तुलनीय ।—बेलाडो, (सर-दर्द, ऋतु) ; सेङ्गियु (वात और सर-दर्द) ; जिङ्कम (मूर्च्छा-भाव) ; फेरम (सर दर्द, कन्धेकी पेशीका सुन्न होना)

शक्ति ।—६ ठा दशमिक (६ x) से २०० शततमिक या इससे भी ऊँचा क्रम।

वने हाथसे कोई कसकर पकड़े हुए है। क्योंकि पीछे और फेफड़े की निच भागमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है; फेफड़े से वायुनलीके भीतर होकर नाक जड़तक सुरसुरी होती है। घुँड़ी—काली खाँसी (Croup) रो बच्चेकी छाती और स्वरनालीमें दर्द मालूम होता है, गलेमें साँय साँय शब्द हु करता है। कभी कभी बच्चा कण्ठनालीपर हाथ लगाता है; मुखमण्डल सं हो जाता है; बहुत मोटे ताजे बच्चेका चेहरा भी बरफकी तरह ठण्डा जाता है। कण्ठस्वर गम्भीर, कर्कश और भग्न। नकली झिल्ली पैदा करनेव घुँड़ी खाँसी, तर हवामें बढ़ जाती है। रोगी बहुत उत्तेजना प्रवण और बे रहता है, एक जगहपर स्थिर हो, बैठ नहीं सकता। ऐसी आशङ्का ह है, कि बीमारी बहुत बढ़ जायगी। मानसिक उद्वेगकी अधिकताके का किसीसे मिलना नहीं चाहता यहाँतक कि चिकित्सकसे भी नहीं मिल छिपा रहता है। ऊपर लिखे कई लक्षण आयोडियमके प्रयोगके सम्ब अव्यर्थ सिद्धि-प्रद हैं।

लक्षणावली।

मन।—सदा उदास और रोने ऐसा चेहरा बनाये रहना, दिन रात एक क्षण भी एक स्थानपर स्थिर भावसे नहीं रह सकता; चलनेके समय करता है—उसे ऐसा विश्वास रहता है कि धीरे धीरे चलनेसे गिर जा काल्पनिक या प्रकृत असद्व्यवहारके विषयमें सोचनेपर बहुत तेजीसे कलेजा कने लगता है। एकाएक उन्मत्तता पैदा हो जाती है और रोगिनी हत्या चाहती है। बहुत ही भूल जानेवाला,—दूकानमें चीज खरीदता है, पर छोड़कर चला आता है (ऐग्नस, ऐनाक, कास्टि, लेक-कैन, नेट्र-कार्ब)। सोचता है कि उसने क्या भूल की है। अपने मानसिक उद्वेगकी अ भूल जानेके लिये हमेशा किसी न किसी न किसी काममें लगा रहता है हमेशा ऐसा मालूम होता है कि उसकी बुद्धि गड़बड़ा गयी है (सिपा, इन, लैकी, हाइड्रोफ, कैलि-ब्रोम, ऐक-वैन, लिलिटाइग्रि, मिडोराइन, सिफिलिन) कोई और विशेषकर चिकित्सक, जब रोगीके पास जाता है बहुत भयभीत होकर छिप जाता है (वेराइ, वेरेट-विर)। बुद्धि हलि चालनसे बहुत नाराज रहता है। (एसिड-कार्ब)

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है,—माथा और समूचे शरीर

गिरना ; गलगण्ड ; अर्श ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डका कड़ापन और बहुत तरहके रोग ; हिचकी ; मस्तिष्कोदककी बीमारी ; आँखकी अकड़न या प्रदाह ; कामला ; सन्धियोंकी बीमारी ; स्तनके दूधका विकार ; स्वरनाली प्रदाह ; श्वेत-प्रदर ; यकृतकी बीमारी ; लसिका ग्रन्थियोंकी बीमारी ; विषाद ; डिम्बाधारकी बहुतसी बीमारियाँ ; पूतिनस्य (नकसीर, फूटना), मूत्राधारकी मुखशायिका ग्रन्थिका बढ़ना ; आमवात या सन्धि-वात ; लार बहना ; बन्ध्यात्व ; जरायुकी बीमारी ; स्वरमें गड़बड़ी ; वमन ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—नयी प्रसूताकी अवस्थाकी तरह कमजोरी और सुस्ती मालूम होना,—रोगी इतना क्षीण और दुबला हो जाता है, कि बात करनेपर भी उसे पसीना हो जाता है । ऋतुके समय बहुत बेचैनी मालूम होती है,—खासकर सीढ़ी चढ़नेके समय ; जरायुसे बहुत दिनोंतक स्थायी खूनका स्राव ; दोनों स्तन सूखे और पतले पड़ जाते हैं । प्रदर,—स्राव त्वचाको क्षय करनेवाला,—यहाँ तककी वस्त्र आदिमें लगनेपर दाग पड़ जाते हैं ; ऋतुके समय प्रदर बहुत बढ़ जाता है । जरायुका कर्कट रोग, (Cancer Uteri),—प्रत्येक बार पाखानेके समय जरायुसे खून निकलता है और उदरमें छेदनेकी तरह दर्द होता है और कमर तथा कमरके पीछे वाले भागमें दर्द होता है । बच्चोंका दुबलापन और सुखण्डी रोग (Marasmus),—चेहरा सफेद हो जाता है ; बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें ढीला पाखाना होता है ; राक्षसी भूख ; बहुत ज्यादा खाते रहनेपर भी बच्चा दिनों दिन दुबला होता जाता है । मालूम होता है, कि बच्चा खानेसे अच्छा रहता है, पर वह किसी तरह भी पचा नहीं सकता, सवेरेसे शाम तक उसे खाली डकार आया करती है—मानो जो कुछ खाता है सब भाफमें परिणत हो जाता है ; बच्चेको क्षण क्षणपर भूख लगती है और प्रत्येक बार कुछ खानेको न मिलनेपर, बहुत चिढ़ उठता है और असन्तोष प्रकट करता है । पेट भरा रहनेपर बहुत प्रसन्न और मस्त रहता है । डा० ऐलेन कहते हैं कि शरीरकी ग्रन्थियाँ सब बड़ी और कड़ी हो जाती हैं ; काले केशवाले व्यक्तियोंका गलगण्ड (घेघा) (Goitre) । प्रत्येक धमनीमें टपक मालूम होती है ; स्नायु मण्डलका संवाद (Sensibility) या अनुभव शक्ति बहुत तेज हो जाया करती है । थोड़ा भी शारीरिक परिश्रम करनेपर कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है ; ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड किसीने हाथसे दबा रखा है—मानो लोहेके

हाथसे कोई कसकर पकड़े हुए है। वक्षोस्थिके पीछे और फेफड़ेके निचले में सुरसुरी होकर खाँसी आती है; फेफड़ेसे वायुनलीके भीतर होकर नाकको तक सुरसुरी होती है। घुँड़ी—काली खाँसी (Croup) रोगमें की छाती और स्वरनालीमें दर्द मालूम होता है, गलेमें साँय साँय शब्द हुआ ता है। कभी कभी बच्चा कण्ठनालीपर हाथ लगाता है; मुखमण्डल सफेद जाता है; बहुत मोटे ताजे बच्चेका चेहरा भी बरफकी तरह ठण्ढा हो ता है। कण्ठस्वर गम्भीर, कर्कश और भग्न। नकली झिल्ली पैदा करनेवाली ड़ी खाँसी, तर हवामें बढ़ जाती है। रोगी बहुत उत्तेजना प्रवण और बेचैन हता है, एक जगहपर स्थिर हो, बैठ नहीं सकता। ऐसी आशङ्का होती कि बीमारी बहुत बढ़ जायगी। मानसिक उद्वेगकी अधिकताके कारण सीसे मिलना नहीं चाहता यहाँतक कि चिकित्सकसे भी नहीं मिलता। छपा रहता है। ऊपर लिखे कई लक्षण आयोडियमके प्रयोगके सम्बन्धमें व्यर्थ सिद्धि-प्रद हैं।

लक्षणावली।

मन।—सदा उदास और रोने ऐसा चेहरा बनाये रहना, दिन रात बेचैन, एक क्षण भी एक स्थानपर स्थिर भावसे नहीं रह सकता; चलनेके समय दौड़ा करता है—उसे ऐसा विश्वास रहता है कि धीरे धीरे चलनेसे गिर जायगा। काल्पनिक या प्रकृत असद्व्यवहारके विषयमें सोचनेपर बहुत तेजीसे कलेजा धड़कने लगता है। एकाएक उन्मत्तता पैदा हो जाती है और रोगिनी हत्या करना चाहती है। बहुत ही भूल जानेवाला,— दूकानमें चीज खरीदता है, पर वहीं छोड़कर चला आता है (ऐगनस, ऐनाक, कास्टि, लेक-केन, नेट्र-कार्ब)। हमेशा सोचता है कि उसने क्या भूल की है। अपने मानसिक उद्वेगकी अधिकता, भूल जानेके लिये हमेशा किसी न किसी न किसी काममें लगा रहता है। उसे हमेशा ऐसा मालूम होता है कि उसकी बुद्धि गड़बड़ा गयी है (सिपा, कैनाब-इन, लैकेटी, हाइड्रोफ, कैलि-ब्रोम, हैक-वैन, लिलिटाइग्रि, मिडोराइन, मक्स, सिफिलिन) कोई और विशेषकर चिकित्सक, जब रोगीके पास जाता है तो वह बहुत भयभीत होकर छिप जाता है (बेराट्रि, बेरेट-विर)। बुद्धि वृत्तिके परिचालनसे बहुत नाराज रहता है। (एसिड-कार्ब)

मस्तक।—घरमें चक्कर आताहै,—माथा और समूचे शरीरमें टपक होती है, कलेजा धड़कता है और बेहोश हो जानेकी तरह हो जाता है;

गिरना ; गलगण्ड ; अर्श ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डका कड़ापन और बहुत तरहके रोग ; हिचकी ; मस्तिष्कोदकको बीमारी ; आँखकी अकड़न या प्रदाह ; कामला ; सन्धियोंकी बीमारी ; स्तनके दूधका विकार ; स्वरनाली प्रदाह ; श्वेत-प्रदर ; यकृतकी बीमारी ; लसिका ग्रन्थियोंकी बीमारी ; विषाद ; डिम्बाधारकी बहुतसी बीमारियाँ ; पूतिनस्य (नकसीर, फूटना), मूत्राधारकी मुखग्रायिका ग्रन्थिका बढ़ना ; आमवात या सन्धि-वात ; लार बहना ; वन्ध्यात्व ; जरायुकी बीमारी ; स्वरमें गड़बड़ी ; वमन ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—नयी प्रसूताकी अवस्थाकी तरह कमजोरी और सुस्ती मालूम होना,—रोगी इतना क्षीण और दुबला हो जाता है, कि बात करनेपर भी उसे पसीना हो जाता है। ऋतुके समय बहुत बेचैनी मालूम होती है,—खासकर सीढ़ी चढ़नेके समय ; जरायुसे बहुत दिनोंतक स्थायी खूनका स्राव ; दोनों स्तन सूखे और पतले पड़ जाते हैं। प्रदर,—स्राव त्वचाको क्षय करनेवाला,—यहाँ तककी वस्त्र आदिमें लगनेपर दाग पड़ जाते हैं ; ऋतुके समय प्रदर बहुत बढ़ जाता है। जरायुका कर्कट रोग (Cancer Uteri),—प्रत्येक बार पाखानेके समय जरायुसे खून निकलता है और उदरमें छेदनेकी तरह दर्द होता है और कमर तथा कमरके पीछे वाले भागमें दर्द होता है। बच्चोंका दुबलापन और सुखण्डी रोग (Marasmus),—चेहरा सफेद हो जाता है ; बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें ढीला पाखाना होता है ; राक्षसी भूख ; बहुत ज्यादा खाते रहनेपर भी बच्चा दिनों दिन दुबला होता जाता है। मालूम होता है, कि बच्चा खानेसे अच्छा रहता है, पर वह किसी तरह भी पचा नहीं सकता, सवेरेसे शाम तक उसे खाली डकार आया करती है—मानो जो कुछ खाता है सब भाफमें परिणत हो जाता है ; बच्चेको क्षण क्षणपर भूख लगती है और प्रत्येक बार कुछ खानेको न मिलनेपर, बहुत चिढ़ उठता है और असन्तोष प्रकट करता है। पेट भरा रहनेपर बहुत प्रसन्न और मस्त रहता है। डा० ऐलेन कहते हैं कि शरीरकी ग्रन्थियाँ सब बड़ी और कड़ी हो जाती हैं ; काले केशवाले व्यक्तियोंका गलगण्ड (घेघा) (Goitre)। प्रत्येक धमनीमें टपक मालूम होती है ; स्नायु मण्डलका संवाद (Sensibility) या अनुभव शक्ति बहुत तेज हो जाया करती है। थोड़ा भी शारीरिक परिश्रम करनेपर कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है ; ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड किसीने हाथसे दबा रखा है—मानो लोहेके

पर बहुत-सा पतला श्लेष्मा निकल पड़ता है। हवा लगनेपर सूखी सर्दी तर हो जाती है।

मुख-विवर।—मुंहमें सफेद जखम या उत्सङ्ग (Aphthæ); मसूढ़े से सहजमें ही खून गिरना। बहुत बदबूदार लार बहना, जीभपर मोटा लेप चढ़ा, मसूढ़ा फूल जाता है और दर्द होता है, खून गिरता है और दोनों गाल फूल जाते हैं; मसूढ़ेमें हाथ लगानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। मुंहसे बहुत बदबूदार लार बहती है,—पाराका व्यवहार करनेपर और भी बढ़ता है।

गलेके भीतर।—अलिजिह्वा फूलती और बड़ी हो जाती है। गलेके जखमके साथ कण्ठमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो दबा रखा है; कुछ निगलनेके समय यह दर्द नहीं रहता; अन्ननाली पतली हो जाती है और निगलनेमें दर्द और तकलीफ होती है। गलेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह लार-सञ्चय होना, कण्ठको हिदल ग्रन्थि और निचले हनुकी नीचेवाली गांठें सब बड़ी और कड़ी हो जाती हैं (स्पञ्जि, थाइरायडिन, केल्के)। अन्ननालीके प्रदाहमें,—उनमें बहुत जलन होती है और त्वचा छिल जानेकी तरह दर्द मालूम होता है।

पाकस्थली।—राक्षसकी तरह भूख,—खूब खाता है—अथच दिनों दिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, नेट्र-म्यूर, सैनिक, टियुबर्क्युलिन)। भूख लगते ही कुछ भोजन न करनेसे बहुत बीमार जैसा मालूम होता है—क्षण क्षण भर पर खाता है (मानो खानेके काममें लगे रहनेपर वह अपना मानसिक उद्वेग भूल जाता है=डा० केण्ट); खानेके समय और खानेके बाद रोगी अच्छा रहता है। पेट भरा रहनेपर बहुत प्रसन्न रहता है। दिन रात लगातार खाली डकार आया करती है मानो जो कुछ खाता है, वही भाफ बन जाता है (आर्जेण्ट-नाइ, नक्स-मस ; जो खाता है, वही अम्ल बन जाता है=केल्के-कार्ब); कभी जोरसे भूख लगती है और कभी भूख बिलकुल ही नहीं लगती। गुरुपाक द्रव्य खानेपर छातीमें जलन होती है (पल्स)। खट्टी डकार आती है और गलेमें जलन होती है। खूब जोरसे वमन होता है,—खा लेनेपर फिर वमन हुआ करता है। प्रचण्ड शूलका दर्द होकर पित्त और दूध वमन होता है। पेटके भीतर एकाएक गड़बड़ी पैदा हो जाती है, जो मिचलाता है और पेटमें दर्द हुआ करता है। ऊपरी पेटमें इतना दर्द रहता है, कि हाथ नहीं लगाने देता।

आसन या शय्यासे उठते ही या सामान्य परिश्रमके बाद बैठने या सोनेपर बढ़ जाता है। माथेके बाईं ओर और ब्रह्मतालुमें दर्द और दोनों बाहु कभी कभी सुन्न मालूम होते हैं। रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसका माथा एक एक फीतेसे कसकर बांधा हुआ है (सिपा, काक्यु, सिलोम, जेम्स, हिप, ऐसिड-नाई,सल्फ, टेरिब); गर्म हवामें बहुत देरतक गाड़ीमें घूमनेपर (काक्यु,केलि-कार्ब नक्स-मस, सिपि,—गाड़ी पर चढ़नेसे घटता=ऐसिड-नाई) और तेजीसे चलनेपर बढ़ जाता है। नासामूलके ऊपरवाले एक छोटेसे अंशमें ऐसा दर्द होता है, मानो दबा रखा है। जरा हिलने डोलनेसे ही माथेमें टपक होने लगती है और सरमें चक्कर आया करता है। (एपिस, ब्राई, काक्यु, ग्लोन, लाई, नेट्र-म्यूर)।

आँख।—तिमिर-दृष्टि,—चारों ओर अँधेरा दिखाई देता है या मानो पर्देके भीतरसे चारों ओर देख रहा है (कास्टि, क्रोक, हायो, लोरो, लिथि, नेट्र-म्यूर, फास, रास, स्ट्रेमोन, सल्फ)। ऐसा दिखाई देता है मानो आँखका गोला बाहर निकल पड़ा है, (ऐमिल, बेराई, कोल्को, फेर, आयोड, इग्ने, लाइकोपस-वार्जि, फास, नेट्र-म्यूर, स्पञ्जि, थाइराइड); आँखमें करकराहट होती है (ऐल्यु, फाइजस, सिपा, केलि-कार्ब, साइलि, सल्फ)। दाहिनी आँखमें बराबर ऐसा दर्द हुआ करता है मानो काटता है— यह दर्द भीतरी कोनेसे हनु सन्धितक फैल जाता है, आँखका सफेद अंश मैला, पीला (चेलिडो, मार्क, युपेट-पार्फो, मैग-म्यूर), आँखकी पलक इतनी फूल जाती है मानो शोथ हो गया हो (एपिस, मार्क)। ऐसा दिखाई देता है, मानो आँख को सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं—सिलाईका काम करनेके समय बढ़ता है। बराबर आँख घुमाता है और पुतली बड़ी हो जाती है।

कान।—शब्द सहन न होना। सर्दीसे बहरापन (आर्स, कोल्को, कार्बो-वे, लीड, मार्क, पल्स)। कानके पीछेवाली नली रुक जानेके कारण कर्णनाद (केलि-म्यूर, पल्स)।

नाक।—संध्याके समय नाकसे पानी गिरता है और बार बार छींक आती है। नाकसे पानी गिरता है। प्रचण्ड सर्दी,—आँखसे पानी गिरता है और नासा मूलमें दर्द होता है,—श्लेष्मा गर्म और उससे नाकके छेदकी खाल उधड़ जाती है; बोखार रहता है। नासारन्ध्र बन्द हो जाता है, नाक छिड़कने

पर बहुत-सा पतला श्लेष्मा निकल पड़ता है। हवा लगनेपर सूखी सर्दी तर हो जाती है।

मुख-विवर।—मुंहमें सफेद जखम या उत्सङ्ग (Aphthæ); मसूढ़े से सहजमें ही खून गिरना। बहुत बदबूदार लार बहना, जीभपर मोटा लेप चढ़ा, मसूढ़ा फूल जाता है और दर्द होता है, खून गिरता है और दोनों गाल फूल जाते हैं; मसूढ़ेमें हाथ लगानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। मुंहसे बहुत बदबूदार लार बहती है,—पाराका व्यवहार करनेपर और भी बढ़ता है।

गलेके भीतर।—अलिजिह्वा फूलती और बड़ी हो जाती है। गलेके जखमके साथ कण्ठमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो दबा रखा है; कुछ निगलनेके समय यह दर्द नहीं रहता; अन्ननाली पतली हो जाती है और निगलनेमें दर्द और तकलीफ होती है। गलेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह लार-सञ्चय होना, कण्ठको हिदल ग्रन्थि और निचले हनुकी नीचेवाली गांठें सब बड़ी और कड़ी हो जाती हैं (स्पञ्जि, थाइरायडिन, केल्के)। अन्ननालीके प्रदाहमें,—उनमें बहुत जलन होती है और त्वचा छिल जानेकी तरह दर्द मालूम होता है।

पाकस्थली।—राचसकी तरह भूख,—खूब खाता है—अथच दिनों दिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, नेट्र-मूर; सेनिका, टियुबर्क्युलिन)। भूख लगते ही कुछ भोजन न करनेसे बहुत बीमार जैसा मालूम होता है—चण चण भर पर खाता है (मानो खानेके काममें लगे रहनेपर वह अपना मानसिक उद्वेग भूल जाता है=डा० केण्ट); खानेके समय और खानेके बाद रोगी अच्छा रहता है। पेट भरा रहनेपर बहुत प्रसन्न रहता है। दिन रात लगातार खाली डकार आया करती है मानो जो कुछ खाता है, वही भाफ बन जाता है (आर्जेण्ट-नाई, नक्स-मस; जो खाता है, वही अम्ल बन जाता है=केल्के-कार्ब); कभी जोरसे भूख लगती है और कभी भूख बिलकुल ही नहीं लगती। गुरुपाक द्रव्य खानेपर छातीमें जलन होती है (पल्स)। खट्टी डकार आती है और गलेमें जलन होती है। खूब जोरसे वमन होता है,—खा लेनेपर फिर वमन हुआ करता है। प्रचण्ड शूलका दर्द होकर पित्त और दूध वमन होता है। पेटके भीतर एकाएक गड़बड़ी पैदा हो जाती है, जो मिचलाता है और पेटमें दर्द हुआ करता है। ऊपरी पेटमें इतना दर्द रहता है, कि हाथ नहीं लगाने देता।

ऊपरी पेटमें सुई गड़ने जैसा दर्द होता है, पेट फूल जाता है और बाध्य होकर कपड़े ढीले करने पड़ते हैं (कार्बो-वे)। दूध सहन नहीं होता। बहुत प्यास, सविराम ज्वरके बाद प्लीहा फूल उठती है (आर्नि, सियानो, सिङ्को, आर्स, लैके)।

अन्त्राशय।—उदरके बायीं ओर वायु अड़ जाता है (उदरके दाहिनी ओर=नेट्र-सल्फ)। मध्यान्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थियाँ सब बड़ी हो जाती हैं और उनमें प्रदाह होता है। उदर इतना फूलता है कि रोगी यदि चित होकर सोता है तो इस अवस्थामें उसकी साँस बन्द होना चाहती है (कार्बो-वे, रैफेनस, नक्स-मस)। यकृतके ऊपर इतना दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता (डिजि, चियोनैन, ह्युपेट, टैरैक्स); यकृत फूलता और बड़ा हो जाता है; नैवा या पाण्डु रोग (कैमो, चेलिडोन, मार्क)। उदरकी वृहद्धमनीमें टपक।

मल।—मलका पतलापन, मल पानीकी तरह फेन-फेन, सफेद आभा मिला; पाखाना केवल सवेरे हुआ करता है; कभी कभी बहुत सा धस धसा मांड़की तरह मल निकल जाया करता है; आमाशय रोगाधिकारमें केवल आँम निकलती है। कभी मल कड़ा और कभी मल पतला होता है। ऐसा ही पर्यायक्रमसे हुआ करता है (ऐन्टीम-क्रूड); **स्वाभाविक सरल पाखाना कभी नहीं होता,** वृथा वेगके साथ मलका कड़ापन; ठण्डा दूध पीनेपर अच्छा हो जाता है; मल कड़ा, गांठ गाँठ, काला; अर्शका मसा बाहर निकल पड़ता है और बहुत जलन होती है; सेंकनेसे जलन बढ़ जाती है।

पेशाब।—वृद्धोंको अनजानमें पेशाब हो जाता है (बेराइट, कास्टि) और मूत्राधारकी सुखशायिका ग्रन्थि बड़ी हो जाती है; विशेषकर रातके समय। पेशाब घोर लाल, गदला या हरा पीला या दूधकी तरह सफेद होता है या कषाय होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—शुक्र रज्जुके भीतर मानो कोई जोरसे दबा रहा है या मरोड़ता है—इस तरहका दर्द; स्त्रीसे प्यार या आलिङ्गन आदि करनेपर अण्डकोष और मूत्राधारकी सुखशायिका ग्रन्थि बढ़ जाती है और कड़ी हो जाती है। रमण-शक्ति लोप हो जाती है और अण्डकोष छोटे हो जाते हैं (अग्नस, कैप्स, कार्बो-ऐन, केलि-आयोड) और जननेन्द्रिय प्रदेशमें बदबूदार

पसीना होता है। पाखाना होने बाद मूत्रनालीसे थोड़ा दूधकी तरह पदार्थ निकल जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु—नियमित, समयपर कभी बहुत पहले या कभी बहुत दिन बाद हुआ करता है ; उम्र न होनेपर भी ऋतु हो जाना,—स्राव बड़े वेगसे और परिमाणसे बहुत ज्यादा होता है। जरायु ग्रीवामें कर्कट होनेका उपक्रम (Cancerous degeneration)—उदरमें ऐसा दर्द होता है मानो कोई काटे डालता है और प्रत्येक बार पाखाना होनेके समय जरायुसे रक्तस्राव होता है। जरायुसे रक्तस्रावके साथ रोगिनीके स्तनमें भयानक दर्द होता है या वह शिथिल और शुष्क हो जाता है (कोना, केलि-आयोड, क्रियो, ऐसिड-नाइ, नक्स-मस)। दाहिने डिम्बाधारसे जरायुतक ऐसा दर्द मानो दबा रखा है। प्रदर,—स्राव शरीरमें लगनेपर जखम हो जाता है ; उस देशकी त्वचा और वस्त्र चय हो जाते हैं, ऋतुके समय प्रदर बहुत बढ़ जाता है। पुराना डिम्बाधार-प्रदाह (Ovaritis) और पीले रंगका गाढ़ा और जलन करनेवाला प्रदरका स्राव। ऋतुके समय सीढ़ी पर चलनेमें बहुत थकावट मालूम होती है और श्वास कष्ट होता है। (ऐल्यू, कार्बो-ऐन, काक्यु)।

श्वास-यन्त्र ।—स्वरभङ्ग, दिन रात बना रहता है, थोड़ा थोड़ा गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है और रोगी लगातार गला साफ करनेकी चेष्टा किया करता है। स्वरतन्तु फूलता और कांपता है—बच्चेके गलेमें घड़ घड़ साँय साँय शब्द होता है, उससे समूचा घर परिपूर्ण रहता है (वेल, ब्रोम, केलि-ब्रोम, लेके, स्प्जि)। झिल्ली पैदा करनेवाली घुंड़ी,—साँय साँय और खस खस शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास ; घन घन शब्दवाली खाँसी,—विशेषकर काली आँख और काले केशवाले बच्चोंको ; खाँसनेके समय बच्चा अपनी कण्ठनालीमें हाथ लगाता है (सिपा ; ऐकोन) ; गरम जलीय हवामें बढ़ना ; प्रायः गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है ; (हिप, मार्क, केलि-बाइ)। सीढ़ी चढ़नेसे श्वासकष्ट, हृत्स्पन्दन और बहुत थकावट मालूम होती है। वक्षोस्थिके पीछे वाले फेफड़ेके भीतर सुरसुरी होकर खाँसी आती है ; वायुनलीके भीतरसे सुरसुरी होकर नासारन्ध्र तक फैल जानेके कारण (काक्कस, कैक, कोना, फास) छींक आया करती है। कफ नमकीन या कुछ खट्टा मालूम होता है, रङ्ग भूरा या सफेद ; फेफड़ेका यकृतकी तरह हो जाना ; दाहिने फेफड़ेके ऊपरी अंशपर ही रोगका हमला अधिक होता है (चेलिडो)। बहुत तेज बोखार, बेचैनी और प्यास ; उदास

भाव, ऐसा मालूम होता है, मानो कलेजा जकड़ गया है। वक्षमें बहुत ज्यादा सुरसुरीकी वजहसे क्षुप खाँसीकी तरह खाँसी आती है। रोगीका चित्त उद्वेग-पूर्ण और देह दुबली हो जाया करती है।

हृत्पिण्ड।—कलेजा धड़कना,—शरीरसे किसी तरहका परिश्रम करते ही कलेजा धड़कने लगता है (मानसिक परिश्रम मात्रसे =कैल्के-आर्स) हृत्पिण्ड मानो कोई जोरसे दबा रहा है या लोहेके हाथसे कस-कर पकड़े हुआ है, ऐसा दर्द अनुभव होता है (कैक्ट, लिलि-टाइग्र, सल्फ)। हृदयके अगले भागमें बहुत अस्वाच्छन्द्य मालूम होता है, इसी वजहसे रोगी क्षणभर भी एक भावसे रह नहीं सकता,—कभी बैठता है, कभी सोता है और कभी कभी खड़ा होता है, या टहलने लगता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गलगण्ड (कैल्के, कार्बो-ऐन, फेर-आयोड, लेपिस, स्पञ्जिया)—कड़े, कालेकेशवाले व्यक्तियोंकी बीमारी (ब्रोमा; भूरे केशवाले व्यक्तिकी =ब्रोम); रोगीकी सभी तकलीफें खा लेनेपर अच्छी हो जाती हैं। गर्दनकी गाँठें सब फूलती और कड़ी हो जाती हैं। मेरुदण्डकी बीमारीकी वजहसे गाय बैलकी तरह पैरके अगले भागपर भार देकर चलता है (लेके, साइलि)। कमरका पिछला भाग और उसके नीचे दर्द, सवेरे शय्यासे उठनेके समय दोनों बाहु अवश मालूम होते हैं। तलहत्थी और तलवा बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है, जगह बदलनेवाला सन्धिका दर्द। सन्धि-प्रदेशमें पुराने वातकी वजहसे दर्द, रातमें बहुत बढ़ जाता है। रोगवाली सन्धियाँ फूलती नहीं हैं, हाथ पैरकी बँधनी या सब कण्डराओंके एकाएक सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे ये सब अङ्ग रहरहकर फड़क उठते हैं (ऐसिर, हायो, इग्ने, साइक्यु, रास, जिङ्क)। हाथ-पैर का फड़कना या काँपना। रोगी चलते चलते डगमगाया करता है (ऐगार, कास्टि)। समूची देहमें टपक होती है—जरा भी परिश्रम करनेपर आरम्भ हो जाता है, देह विशेषकर निचला अंश शीर्ण और कंकाल-सार हो जाता है, (ऐब्रोट, सैनिक, टियुबर्कुलिन, नेट्र-म्यू, सार्सा)। समूची देह फूलती है, मानो शोथ हो गया है (फेरम, आर्स)। घुटने गर्म और लाल रङ्गके होकर फूल उठते हैं, भयानक जलन होती है और ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ रही है—हाथ लगाने या दबानेपर बढ़ता है। पैरमें पसीना होता है और उस पसीनेसे जखम हो जाता है (बैराइ, ग्रैफ, सैनिक)। दर्द-भरे गट्टे।

रातके समय निचले पैरमें ऐंठन होती है, बहुत कमजोरी मालूम होती है, यहाँतक कि बात करनेपर भी पसीना निकलने लगता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—रातभर दोनो पैर ठण्डे रहते हैं। रोगी शीतसे काँप उठता है,—गर्म घरमें भी शीत नहीं घटता। कभी कभी समूची देहसे उत्ताप पैदा हो जाता है। फेफड़ेका प्रदाह, घुंड़ी वगैरह रोगके समय बोखारका प्रकोप बहुत बढ़ जाता है; बेचैनी, प्यासका अधिक रहना, टपकवाला सर-दर्द, *गालका कुछ भाग लाल हो उठता है* (सेङ्गियु), मन उदास। रातमें पसीना होता है; रातके अन्तिम भागमें सुस्त करनेवाला खट्टो गन्ध-लिये पसीना होता है और भयानक प्यास पैदा हो जाती है।

वृद्धि ।—शरीर हिलाने और शारीरिक परिश्रमसे, सोनेपर, उत्ताप से; गर्म जलीय वायुमें; छूने और दबानेपर; सीढ़ी चढ़नेपर।

उपशम ।—सीधे होकर बैठनेपर; खानेके समय और भोजन करने पर तथा निर्मल ठण्डी हवामें।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—झिल्ली पैदा करनेवाली घुंड़ी वगैरहमें श्लेष्मा की वजहसे रोगाधिकारमें ऐसिड-ऐसेट, क्लोरम; ब्रोम, कोना, कैलि-बाइ, स्पञ्जि, हिप, मार्क, ऐको इत्यादि इसके साथ तुलनीय हैं। ब्रोमियम (आयोडियम, काले रंगका चेहरा, केश घने काले), *नेट्रम-म्यूर* (राक्षसी भूख पर दुबला होता जाता है); कैलि-आयोड, (वाचाल); बैराइ (आन्त्रिक क्षय रोगमें); ऐल्यूमिना (आतङ्क); ऐपिस (शोथ); स्पाइजि (हृत्पिण्ड); हाइड्रेस्ट, (जरायु); फायोला (स्वरभङ्ग); इत्यादि। स्वनामधन्य डाक्टर लिपिके मतसे गलगण्ड रोगाधिकारमें पूर्णिमाके बाद या कृष्ण पक्षमें आयोडमके प्रयोगसे बहुत फायदा हुआ करता है।

अनुपूरक ।—लाइकोपोडियम।

दोषघ्न ।—ऐण्टि-टार्ट, एपिस, आर्स, बेलेडो, चायना, काफिया, हिपर ओपियम, कैम्फर इत्यादि।

सदृश ।—बैराइटा-कार्ब, नेट्र-म्यूर, सेनिक्यु, ऐब्रोट, सार्सा, कालि, फास, साइलि, टैफि, हाइड्रेस्ट, एपिस,।

शक्ति ।—२ रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० से ४० दिन।

आयोडोफार्मम।

(IODOFORMUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है।—स्तनमें दर्द; उपदंश; खाँसी; प्रलाप; दो देखना; आन्त्रिक ज्वर; आंखकी बीमारी; पक्षाघात; सर-दर्द; मस्तिष्कोदक रोग; उन्माद; मस्तिष्कावरण प्रदाह; गुटिका रोग इत्यादि।

उपयोगिता और अभास।—गुटिका दोषयुक्त मस्तिष्कावरण प्रदाह (Tubercular Meningitis), इसके सबसे प्रधान क्रियाफल है। कारण स्वस्थ शरीरमें इसका प्रयोग करनेपर उक्त रोगके प्रायः सभी लक्षण प्रकट हुआ करते हैं और इन लक्षणोंके आविर्भावके पारम्पर्यके अनुसार ही यहाँ लिखे गये हैं। जैसे,—रातमें बहुत अधिक मानसिक उद्वेग और शारीरिक अस्थिरता का मालूम होना, बहुत अधिक निद्रालुता इसके बाद क्रमसे पित्त मिला सहज वमन, मलमें कड़ापन और मस्तकमें गड़बड़ी मालूम होना; रातमें बहुत बेचैनी,—सोया सोया बार बार लम्बी साँस छोड़ता है और निद्रितावस्थामें रह रहकर चिल्ला उठता है; दिनमें औंघाई, आंखकी दोनों पुतलियोंका असम सङ्कोचन और धीरे धीरे आलोक विज्ञानका आविर्भाव; सभी विषयोंमें उदासीन, अपनी शय्याके पार्श्वके मनुष्योंको भी पहचान नहीं सकता; इसके बाद घोर अस्थिरताके बदले शान्त विकार पैदा हो जाता है, नाड़ी सूक्ष्म और उसकी गति तेज। मुखमण्डलका आकार विकृत और मुँहकी पेशियाँ सब फड़का करती हैं: माथा एक ओर झुल पड़ता है और हाथ तथा एक पैर अनजानमें हिला करता है। अधिकतर दोनों पैर क्षीण मालूम होते हैं; दो देखता है; उन्मादका लक्षण, बल और रुचिका गायब हो जाना; हमेशा घोर निद्रामें पड़े रहनेका भाव; बुद्धि गायब हो जाना और बोध शक्तिकी कमी और शारीरिक दुबलापन वगैरह भो इस दवाके कई प्रधान लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—मानसिक उत्तेजना, दुःखित भाव, भूल देखता है, और भूल ही सुनता है; शय्यासे उठकर कई क़दम जाते न जाते गिर जाता है; बुदबुदा

कर असम्बद्ध बका करता है ; कोई चीज हाथसे पकड़ नहीं सकता, क्यों
सभी चीजें उसे दो मालूम होती हैं। बहुत बकता है। मानसिक उद्वेग अ
मृत्यु-भय, शय्याके बगलवाले किसी मनुष्यको जोरसे पकड़कर अपनी आ
मृत्युकी बात कहता है और बहुत खेद प्रकट किया करता है। गहरी नींद,
धीरे धीरे मोहाच्छन्न अवस्थामें जा पड़ता है। एकाएक उन्मादके लक्ष
प्रकट करता है ; कोई बात पूछनेपर बहुत अनिच्छासे जवाब देता
अपनी शय्याके पासवाले मनुष्यको भी पहचान नहीं सकता। रोगी अ
मनमें समझता है, कि वह एक बहुत ही लम्बा चौड़ा आदमी है और ध
धीरे वह और भी बढ़ता ही जाता है। रातमें बहुत बेचैन हो जाता है। य
दिलाये बिना दो दिन पहलेकी घटना याद नहीं कर सकता। सभी विषयों
बहुत उदासी दिखाता है।

मस्तक।—सारी रात सरमें दर्द हुआ करता है ; शय्यापर उठ बैठने
माथेमें चक्कर आया करता है (ब्राई, क्यूप्रम)। माथेके भीतर मानो सुई ग
की तरह दर्द (हायो, लोरो, मार्क, नैट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, सल्फ)। नींद खुलने
बाद सरमें दर्द हुआ करता है (मिनियेन, जेल्स, ग्लोन)। माथेमें बहुत भ
मालूम होता है—यहाँ तक कि तकियेसे माथा उठानेमें बहुत तकलीफ माल
होती है (पलस,—तकियेपर सर नहीं रख सकता=ग्लोन)। कपालमें
होता है,—सीढ़ीसे उतरनेके समय बढ़ता है और कानके भीतर तेज
मालूम होता है, कपालका स्नायुशूल ; सर झुकानेसे बढ़ जाता है। माथेमें
दर्द रहनेकी वजहसे रोगी रह रहकर चिल्ला उठता है (ऐपिस, बेल, ग्लो
स्ट्रैमो)।

आँख।—आंख लाल और उसमें दर्द ; आँख करकराती है औ
उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो कांटा गड़ रहा है। सभी चीजें चौकोनि
तस्वीरदार और लाल रङ्गकी दिखाई देती हैं (बेल, कोना, हायो, नक्स-मस)
अपनी जगहसे उठनेपर घटता है। ऐसा मालूम होता है मानो पर्देके भीतर
सभी चीजें या मनुष्योंको देखता है (कास्टि, आयोडम, लोरो, स्ट्रैमो, सल्फ)
दो देखना (जेल्स, नैट्र-म्यूर, ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-नाई)। आँखकी पुतली
बराबर संकोचन न होना ; रोशनीका ज्ञान धीरे धीरे प्रकाश होता है। खड़
होकर आँख बन्द करनेपर ढलमलाया करता है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई) औ
सीधा चल नहीं सकता।

अन्त्राशय ।—गुटिका-दोष पैदा हो जाना (Tuberculous) इसके साथ ही अन्त्राशयके क्षय रोगकी वजहसे पुराना उदरामय (आयोडम, ओलि-येको, ऐसेलाई)। पेट फूल उठता है; आंतके भीतरवाली ग्रन्थियां बड़ी हो जाती हैं (आयोड, बेराइ, कार्बो-ऐन, ओलि- एकोर)। शिशु विसूचिका या गर्मीके दिनोंका शोथातिसार (इथ्यु, आर्स, इपिका, कैमो, मेग-कार्ब, ओपि, पोडो, रिसिन, वेरेट, जिङ्क)।

श्वास-यन्त्र ।—बिछावनपर सोनेपर खांसी आती है; वायुनालीमें श्लेष्मा पैदा होकर सांय सांय शब्द हुआ करता है। कभी कभी ऐसा अनुभव होता है मानो गला दबाया हुआ है। मालूम होता है, मानो वक्षके ऊपर एक भारी चीज दबायी हुई है और इसी वजहसे साँस लेनेके समय पूरी तरह कलेजा फैला नहीं सकता। फिफड़ेमें ऐसा मालूम होता है मानो बहुत सर्दी लग गयी है। दाहिने फेफड़ेके शिखर देशमें ऐसा अनुभव होता है कि जख्म हो गया है; सांस लेने और छोड़नेके समय मानो दो जखम वाले अंश आपस में रगड़ खा रहे हैं। बाईं छातीमें दर्द मालूम होता है—मानो हृत्पिण्डके तलदेशमें जोरसे दबाए हुए है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दनके पिछले भागमें ऐसा दर्द होता है मानो चोट लग गयी है। शिवदण्ड (पीठकी रीढ़में) इतना दर्द होता है, कि रोगी उसे छूने नहीं देता। दोनों पैर बहुत कमजोर,—आँख बन्द करनेपर डल-मलाया करता है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई),—स्थिर होकर खड़े रहनेपर या सीधा चल नहीं सकता। सीढ़ीपर चढ़नेके समय घुटने बहुत चीण मालूम होते हैं (रियुटा); अङ्ग-प्रत्यंग आदि और मुंहकी पेशी लगातार सिकुड़ा और फैला करती है और रोगीका श्वास प्रश्वास कभी रुक जाता है और कभी लम्बी तथा गहरी साँस चलने लगती है। मस्तिष्कावरण-प्रदाह लक्षणकी तरह बीच बीचमें रोगी चिल्ला उठता है और तकलीफसे दोनों पैर सिकोड़ लिया करता है।

त्वचा ।—कमर, बाहु और कोहनीके पीछेकी ओर भूरे रंगकी फुन्सियां पैदा हुआ करती हैं (लैङ्गाड्डि)। सारे शरीरमें भयानक सुरसुरी हुआ करती है।

निद्रा ।—रह रहकर नींद खुल जाती है, ऐसा निद्रावेश क्रमसे मोहाच्छन्न अवस्थामें परिणत हो जाता है। सोनेकी चेष्टा करनेपर स्नायुओंमें

रह रहकर झटका मालूम होता है। रातमें दो बजनेके बाद रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—हिप, सेङ्गुई (पसीना)।

सदृश ।—ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, आयोडम ; केलि-आयोड, कार्बो-ऐन, नक्स-वोम।

शक्ति ।—२ रा और ३ रा दशमिक विचूर्ण ।

इपिकाकुआन्हा ।
(IPECACUANHA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी जड़से विचूर्ण और अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— खूनकी कमी ; दमा ; स्वरनालीका प्रदाह ; सर्दी ; विसूचिका ; क्षय-कास ; आक्षेप ; खांसी ; बहरापन ; अतिसार ; आमाशय ; आन्त्रिक ज्वर ; आंखके बीमारी ; पथरी ; पाकाशयका जखम ; खूनकी के ; रक्त-स्राव ; अर्श ; मूर्च्छावायु सविराम ज्वर ; आर्त्तवमें विकार ; गर्भावस्थाके उपसर्ग और बीमारियाँ ; स्वल्प-विराम ज्वर ; लार बहना ; धनुष्टंकार ; दंतशूल ; वमनकी इच्छा, ; वमन ; हूप-खांसी ; कृमिकी वजहसे बोखार ; पीत्त-ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—विरक्त करने वाली और बहुत अधिक मिचली और बार बार ओकाई आना। "जीभ साफ पर बार बार मिचली" इसका सब से प्रधान निर्णायक लक्षण है। माथा झुकाते ही ओकाई आने लगती है। (१) मल—घास की तरह हरा और पीला या हरा, फेन भरा गुड़के फेनकी तरह सुनहरा रक्त मिला, नाभिमें ऐसा दर्द मानो मरोड़ खा रहो है, शरीर हिलाने पर बढ़ना (२) पतली सर्दी—प्रबल सूखी खांसी ; छातीमें श्लेष्माका घड़ घड़ शब्द, कभी कभी बच्चा बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा कै कर देता है। हूप खांसी,—खांसते खांसते बच्चेकी देह कड़ी हो जाती है और उसका चेहरा रक्तहीनसा दिखाई देने लगता है, इसके साथही मिचली मौजूद रहती

है। श्वासरोग या दमा—छातीमें भार और उद्वेग मालूम होता है; एकाएक बच्चमें साँय साँय शब्द हुआ करता है; श्वास और गला रुक जानेका उपक्रम और मिचली पैदा हो जाती है। —शरीर हिलानेपर बढ़ना। (४) खूनका गिरना, रक्त-कास,—चमकीला लाल खून निकला करता है। पेटसे चमकीला लाल रंगका खून लगातार धारमें निकला करता है; रोगी हांफता रहता है। (५) सरमें दर्द,—तेज अधकपारीका दर्द,—एक आंखके ऊपरी अंशमें तेज दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो रोगवाली जगह चूर;चूर हुई जाती है और बहुत ही सुस्त करने वाली मिचली। (६) पेटमें बहुत गड़बड़ी मालूम होती है,—ऐसा अनुभव होता है कि मानो पाकस्थली भूल पड़ेगी। प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर उदरमें बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलनेवाला कतरनेकी तरह तेज दर्द। (७) सारे शरीरमें प्रचण्ड दर्द—मानो हड्डियां सब टूटती जा रही हैं। (८) सविराम ज्वर,—बहुत थोड़ी देरतक रहनेवाली शीतावस्था, उत्तापावस्थामें प्यास रहती है और वह बहुत देरतक स्थायी रहती है; कमर और माथेमें दर्द, मिचली, खांसी और अन्तमें पसीना निकलना, जिन ज्वरोंमें दवाका चुनना कठिन हो जाता है और किसी एक दवाके लक्षण ठीक ठीक नहीं मिलते या क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे होनेवाले ज्वरमें पहले इपिकाक ३० का प्रयोग करने पर कितनी ही बार या तो बुखार एकदम छूट जाता है या आगेकी दवा चुननेके लक्षण साफ हो जाते हैं।

लक्षणावली।

मन।—क्रोधी और बहुत तरहकी आकांक्षा पैदा करनेवाला चित,—पर रोगी यह नहीं जान पाता कि वह किसकी आकांक्षा कर रहा है। रोगी यदि बच्चा रहता है तो वह बराबर रोता भी है और चिल्लाया भी करता है और अवस्था प्राप्त होनेपर हमेशा क्रोध प्रकट किया करता है; विमर्ष भाव और सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता हैं, उसे सामान्य शब्द भी असह्य मालूम होता हैं। क्रोध और घृणा मिली मर्म पीड़ा वा विरक्त करनेवाली मानसिक बीमारी।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—चलनेके समय और माथा घुमानेपर या खड़े होनेपर डलमलाया करता है। सरमें दर्द—माथेके हरेक अस्थि फलक और जिह्वामूल तक दर्द रहता है। इसके साथ ही मिचली और

वमनका लक्षण मौजूद रहता है (काक्य, सिपि)। अधकपारीका दर्द,– एक आंखके ऊपरी अंशमें तेज दर्द;—ऐसा मालूम होता है मानो रोगवाला अंश चूर चूर हुआ जाता है। इसके साथ ही बहुत सुस्त करनेवाला वमन (केलि कार्ब)। बहुत दिनोंके उदरामयकी वजहसे क्रमसे पैदा होनेवाला मोह या मस्तिष्कोदक रोग (एपिस, इग्ने, ऐसिड-कार्बो, सिना, फास, टियुबर्क)।

आँख।—आँख लाल और प्रदाह भरी। आँखमें (विशेषकर दाहिनी ओर) तेज कतरनेकी तरह दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है—कपालमें फैलकर यह दर्द इतना बढ़ जाता है, कि रोगी शय्यासे उठ बैठता है,—तेज रोशनीमें बढ़ता है और रोगीको क्रमसे शीत, उत्ताप तथा पसीना होने लगता है। दाहिनी आँख खोलनेपर; आँखके पानीसे तकिया भींज जाती है। गण्डमाला दोषयुक्त अक्षि प्रदाह (Scrofulous ophthalmia आर्स, हिप, मार्क,-कोर सल्फ),—ललाट और शङ्खदेश या कनपटीमें दर्द, रौशनीका सहन न होना, (ऐकोन, कोना) और सफेद आवरककी त्वचाका चय होना भी मौजूद रहता है। योजकत्वक गुलाबी रंगका हो जाता है, स्वच्छावरक गदला और दाहिनी आँख दृष्टिशक्तिसे रहित हो जाती है,—रोगी पढ़ने आदिका काम नहीं कर सकता, क्योंकि दीयेकी रौशनीमें उसकी आंख झिलमिलाने लगती है। मांसांकुर युक्त चक्षुपुट (Granular Lids=पल्स, ग्रेफ, हिप, थूजा)। पलकका फड़कना (कोडाया, ऐगार)। बहिरपाङ्ग या बाहरी कोनेमें गाढ़ा श्लेषा संचित होता है।

मुखमण्डल आदि।—मिचली बतानेवाला चेहरेका भाव (इथ्यू, ऐण्टि-टार्ट)। मुखमण्डल मलिन, पाण्डुवर्ण या पीली आभा लिये, दोनों गाल फूले और दोनों आंखें नीलिमा लिये। मुंहकी पेशियां रह रह रहकर फड़का करती हैं। एकाएक रह रहकर दांतमें दर्द पैदा हो जाता है,—ऐसा दर्द होता है मानो दांत सब उखाड़े जा रहे हैं,—तीसरे पहर और रातमें दर्द बढ़ जाता है और खा लेने बाद घट जाता है। दाहिनी कनपटीमें स्नायुशूल (वायोला-ओडो) मुंहमें बहुत लार संचय होती है, बार बार लार निगलनी पड़ती है। सोनेपर मुंहसे लार बहकर तकिया तक तर हो जाती है (कैमो, नक्स, फास। जीभ मोटे सफेद लेपसे चढ़ी। स्वाद लेनेकी शक्तिका गायब हो जाना।

पाकाशय आदि।—सभी पदार्थोंसे अरुचि; मिठाई, मिष्टान्न आदि खानेकी इच्छा (हिपर)। इसके सभी रोगोंमें लगातार मिचली और वमन

मौजूद रहता है (ऐसिड-टार्ट, फास, वेरेट)। मिचली—बहुत ज्यादा लार संचय होनेके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें सफेद रंगका उजला श्लेष्मा कै हो जाता है बार बार वमन होनेपर भी मिचली शान्ति नहीं होती; खाये हुए पदार्थ अजीर्ण अवस्थामें कै हो जाते हैं (ऐन्टीट, ब्राई, नक्स, इथ्यू, पल्स),—पित्तमय तीते पदार्थका वमन (कैमो, मार्क, फास, वेरेट,—मीठा स्वाद मिला पदार्थ वमन होता है=क्रेट्रोफा ; खूनकी कै=ब्राई, हैमा, हायो, नक्स ; काले अलकतरेकी तरह पदार्थ वमन=आर्स,सिकेलि,वेरेट,—मल-मूत्र वमन=ओपियम)। माथा झुकानेपर वमन बढ़ जाता है (पेल्स, रास ; गाड़ीपर सवारी करने ;जहाज या नाव आदिमें घूमनेकी वजहसे वमन=आर्स,काक्यु, पेट्रोल,—खाने बाद वमन=इथ्यू, आर्स, ब्राई, नक्स, पल्स,—पीने बाद=आर्स, बिसथ, ब्राई,क्रोटोन-टिग, वेरेट); वमनके बाद औंघाई (इथ्यू) बहुत ज्यादा धूम्रपान करनेसे और गर्भावस्थामें वमन। पाकस्थली बहुत शिथिल मालूम होती है—मानो झूल पड़ी है (इग्ने, लोबेल, ऐसिड-मूर, टैब, सिपी, स्टैफ)। पाकस्थली में प्रचण्ड और असह्य दर्द और मिचली। घृतपक्व द्रव्य आदि खानेकी वजहसे पाकाशयमें विकार, इसके साथ ही प्रायः निर्मल जिह्वाका लक्षण मौजूद रहता है (जीभपर मैलके साथ=पल्स)।

अन्त्राशय।—आँतोंमें शूलका प्रचण्ड दर्द; मानो कोई बड़े जोरसे हाथोंसे अन्त्रमण्डली पकड़कर प्रत्येक अँगुली कसकर आँतोंमें गड़ाये देता है और मरोड़ता है। नाभि-प्रदेशमें आध्मानसे पैदा हुआ कतरनेकी तरह दर्द—शरीर हिलानेपर सभी तकलीफें बढ़ जाती हैं और स्थिर रहनेपर आराम मालूम होता है। बच्चोंका अंत्रशूल,—बच्चा तकलीफसे चिल्लाकर रोता है,—छटपटाया करता है और बहुत कातरता प्रकट करता है। प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर उदरके बाईं ओरसे दाहिनी ओर जानेवाला छेदनेकी तरह दर्द (लैके ; दाहिनी ओरसे बाईं ओर=लाइ ; एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वकी ओर =ऐक्टि)।

मल।—उदरामय,—मल सड़े हुए गुड़की तरह फेनमय या इक्षुसार की तरह (रियुम, सेबाड ; शराबके फेनकी तरह=आर्नि, ; घासकी तरह हरा=आर्जेण्ट-नाई ; गहरा पीला आम-भरा=मार्क ; सड़ी तलैयाके पानीमें तैरती हुई काईकी तरह=मैग-कार्ब) सफेद रंगका आम-भरा (कोलचि), या चमकीले लाल रंगका खून मिला। शरद ऋतुमें होनेवाला आमाशय जब

दिनमें गर्मी और रातमें सर्दी पड़ती है (कोलचि, मार्क)। बहुव्यापक विसूचिका,—पहली अवस्थामें मिचली और वमन बहुत ज्यादा रहता है (कोलचि) ; दुरारोग्य उदरामय।

पेशाब।—पेशाब खून मिला (कैक्ट, मिलिफो, ऐसिड-नाई)। गदला पेशाब, ईंटके चूरकी तरह तली मिला (बेल, फास,—कुछ लाल रंगका पेशाब और ईंटके चूरकी तरह तली=नक्स-वोम, लाई,—काली आभा लिये पेशाब और ईंटके चूरकी तरह तली=सिष्ठो)। कीड़े काटनेकी तरह दर्दके साथ पेशाबसे पीबका स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु,—नियमित समयके बहुत पहले प्रकट हो जाता हैऔर स्राव भी बहुत अधिक हुआ करता है (बेल, कैल्के, सैबाई)। जरायुसे खूनका स्राव,—खून बहुत ज्यादा, जमा हुआ और थक्का थक्का,—स्राव की वजहसे सुस्तीके कारण रोगिनी हाँफा करती है और नाभिके पाससे जरायुतक सुई बेधनेकी तरहदर्द मालूम होता है। जरायुसे रक्तका स्राव होनेकी वजहसे रोगिनीका शरीर और मन सुस्त हो जाता है। दाहिने ललाटमें दर्द, और जरायु प्रदेशमें बाएँ उरूके पिछले भागमें बहुत दर्द मालूम होता है ; शरीरकी त्वचा पीली, खुजली-भरी और आँखें काले घेरेसे घिरी रहती हैं। स्रावके बाद बहुत ज्यादा चमकीले लाल रङ्गके खूनका स्राव होता है। प्रसव या गर्भ-स्राव होनेकी आशंकाजनक दर्दमें मिचलीके साथ तलपेटकी बाईं ओरसे दाहिनी ओर बार बार तेज दर्द फैल जाया करता है (कैके)

श्वास-यन्त्र।—सूखी, आक्षेपिक या शरीर हिला देनेवाली खाँसी,—दमाकी तरह श्वासनलीका सङ्कोचन। दमा,—छातीमें दबाव और उद्वेग मालूम होना, एकाएक बचमें साँय साँय शब्दसे खाँसी आरम्भ होती है, श्वास और गलरोध होनेका उपक्रम हो जाता है और मिचली आ जाया करती है ; शरीर हिलानेपर बढ़ना। थोड़ा भी शारीरिक परिश्रम करनेपर श्वासमें कष्ट पैदा हो जाता है। खाँसनेके समय वायुनलीभुजमें श्लेष्माकी आवाज अर्थात घड़ घड़ शब्द हुआ करता है, विशेषकर साँस लेनेके समय (ऐण्ट) ; वायुनलीके भीतर श्लेष्मा अधिक हो जानेकी वजहसे श्वास रुक जानेकी आशङ्का ; (खाँसी रुककर यदि रोगी औंघाई प्रकट करता हो तो समझना चाहिये, कि फेफड़ेकी क्रिया में अवसाद पैदा होनेका लक्षण आ रहा है और उस समय इपिकाकके बदले ऐण्टि-टार्टका प्रयोग करना चाहिये)। वक्षगह्वर श्लेष्मासे भरा मालूम

किन्तु खांसनेपर थोड़ा भी नहीं निकलता (ऐण्टि-टार्ट ; श्वास रोधक खांसी ; गलनलीमें सङ्कोचनके साथ खुजलाहट, खाँसते खाँसते श्लेष्माकी कै हो जाती है—ऐण्टि-टार्ट)। हूप खाँसी,—खाँसते खाँसते बच्चेकी देह अकड़ जाती है और कड़ी हो जाती है (कोरेल-रूब), श्लेष्मा-सञ्चय और वमनकी वजहसे गलरोध होनेका उपक्रम हो जाता है और नाकके छेद तथा मुँहसे खूनका स्राव हुआ करता है (ड्रसिड्रा, आर्निका) ; रातमें खाँसी बढ़ जाती हैं और खांसने पर माथे और पाकस्थलीमें चोट लगती है (ब्राई, नेट्र-म्यूर, नक्स) रक्त कास,—थोड़े भी शारीरिक परिश्रमसे बढ़ जाती है (धीरे धीरे चलनेपर घटना=फेर)। घरके भीतर श्वास-रोध होनेका उपक्रम और घरके बाहर घटना। भोजनके बाद खांसीकी वृद्धि (नक्स) और ठण्डा पानी पीनेपर घटना। खसड़ेका एकाएक बैठ जाना और इसी वजहसे फेफड़े आदिकी बीमारी (ब्राई, मस्तिष्क रोग=क्यूप्रम)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हड्डीमें चोटकी तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डियाँ सब छिन्न विच्छिन्न होती जा रही हैं (मानो टूट रही हैं=इयुपेट)। एकाएक सारे शरीरमें अस्वाच्छन्द्य पैदा हो जाना ; सभी तरहके खाद्य पदार्थोंसे अरुचि और सुस्ती मालूम होती है। धनुष्टंकार, कभी रोगी की देह पीछेकी ओर टेढ़ी हो जाती है और चेहरा बिगड़ जाता है या चेतनाशक्ति जाती रहती है ; चेहरा नीला और तमतमाया, अधमुंदी आँख और मुंहकी पेशी, ओंठ, पलक और अंग प्रत्यंगोंका सिकुड़ना फैलना, बीच बीचमें ऊँची आवाजसे रोना, मिचली और छातीमें श्लेष्माकी आवाज हुआ करती है। शीत और उत्तापका बहुत अनुभव होना।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था, बहुत जाड़ा मालूम होना, पानी पीनेपर घटना (आर्स, इग्ने, कैलि-कार्ब,)। शीतके साथ बोखार सवेरे ६ से १२ बजेके समय (१० से ११ के भीतर=नेट-म्यूर,), आता है और बिना जाड़ेका बोखार दिनके ४ बजे एकाएक पैदा हो जाता है। प्यास नहीं रहती। बहुत अधिक पाकाशयका विकार मिला हुआ सविराम ज्वर, क्विनिनके बहुत ज्यादा व्यवहार या अपव्यवहारकी वजहसे ज्वर। शीतवाली अवस्था बहुत थोड़ी देरतक रहती है, पर उत्तापकी अवस्था बहुत देरतक स्थायी रहती है, कमरमें बहुत ज्यादा दर्द रहता है। अधिकांश स्थानोंमें केवल

उत्ताप, प्यास, सर दर्द, मिचली, खाँसी और अन्तमें पसीना होता है। भीतरी उत्तापके साथ बाहर शीत मालूम होना।

वृद्धि।—छूनेपर, शीतऋतु और सूखी हवामें, गर्म घरमें या बाहरी उत्तापसे, जलीय दक्षिणी हवामें (इयुफ्रे), वमनके बाद, खांसनेपर, खुजली विलोप हो जानेपर, गुरु पाक पदार्थ खानेपर, भोजनके बाद, शरीर हिलाने और क्विनिनके अपव्यवहारको वजहसे।

घटना।—विश्रामसे, दबानेपर; आंख बन्द करनेपर, ठण्डा पानी पीनेपर।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।— एपिस, आर्नि, चायना; फेर, लोरो, ओपि, नक्स; टैबाक।

अनुपूरक।—क्यूप्रम।

सदृश।—ऐण्टि-क्रूड; ऐण्टि-टार्ट, पल्स इत्यादि।

तुलनीय।—भोजनके बाद खांसी,—नक्स; एक हाथ ठण्डा और दूसरा गर्म,—चायना, पल्स इत्यादि। हमेशा मिचली,—काकु, सल्फ, इग्ने; घासकी तरह हरा मल,—मार्जेण्ट-नाई; कुचलनेकी तरह सर दर्द=विरे-ट्रम; गुरुपाक द्रव्यसे पाकाशयमें विकार,—पल्स; दमा—क्यूप्रम; लोबेलिया; क्रुप खांसी—सिना; वमन—ऐण्टि-टार्ट; वक्षका लक्षण—ब्रायो इत्यादि।

शक्ति।—१x से १००० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—७ से १० दिन।

आइरिडियम।
(IRIDIUM)

दूसरा नाम।—धातु-विशेष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—रक्तकी कमी, रक्तमें रक्त-कणका अभाव, संन्यास, वात, ग्रन्थिवात, जरायुका अर्बुद, अन्तःसत्वावस्थाके समयकी

किन्तु खांसनेपर थोड़ा भी नहीं निकलता (ऐण्टि-टार्ट ; श्वास रोधक खांसी ; गलनलीमें सङ्कोचनके साथ खुजलाहट, खाँसते खांसते श्लेष्माकी के होजाती है— ऐण्टि-टार्ट)। हुप खाँसी,—खाँसते खाँसते बच्चेकी देह अकड़ जाती है और कड़ी हो जाती है (कोरैल-रूब), श्लेष्मा-सञ्चय और वमनकी वजहसे गलरोध होनेका उपक्रम हो जाता है और नाकके छेद तथा मुँहसे खूनका स्राव हुआ करता है (ड्रासिरा, आर्निका) ; रातमें खाँसी बढ़ जाती हैं और खांसने पर माथे और पाकस्थलीमें चोट लगती है (ब्राई, नेट्र-म्यूर, नक्स) रक्त कास,—थोड़े भी शारीरिक परिश्रमसे बढ़ जाती है (धीरे धीरे चलनेपर घटना=फेर)। घरके भीतर श्वास-रोध होनेका उपक्रम और घरके बाहर घटना। भोजनके बाद खांसीकी वृद्धि (नक्स) और ठण्डा पानी पीनेपर घटना। खसड़ेका एकाएक बैठ जाना और इसी वजहसे फेफड़े आदिकी बीमारी (ब्राई, मस्तिष्क रोग=कूप्रम)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—हड्डीमें चोटकी तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डियाँ सब छिन्न विच्छिन्न होती जा रही हैं (मानो टूट रही हैं= इयुपेट)। एकाएक सारे शरीरमें अस्वाच्छन्द्य पैदा हो जाना ; सभी तरहके खाद्य पदार्थोंसे अरुचि और सुस्ती मालूम होती है। धनुष्टंकार, कभी रोगी की देह पीछेकी ओर टेढ़ी हो जाती है और चेहरा बिगड़ जाता है या चेतनाशक्ति जाती रहती है ; चेहरा नीला और तमतमाया, अधमुंदी आँख और मुंहकी पेशी, ओंठ, पलक और अंग प्रत्यंगोंका सिकुड़ना फैलना, बीच बीचमें ऊँची आवाजसे रोना, मिचली और छातीमें श्लेष्माकी आवाज हुआ करती है। शीत और उत्तापका बहुत अनुभव होना।

शीत,उत्ताप और पसीना ।—शीतावस्था, बहुत जाड़ा मालूम होना, पानी पीनेपर घटना (आर्स, इग्ने, कैलि-कार्ब,)। शीतके साथ बोखार सवेरे ६ से १२ बजेके समय (१० से ११ के भीतर=नैट-म्यूर,), आता है और बिना जाड़ेका बोखार दिनके ४ बजे एकाएक पैदा हो जाता है। प्यास नहीं रहती । बहुत अधिक पाकाशयका विकार मिला हुआ सविराम ज्वर, क्विनिनके बहुत ज्यादा व्यवहार या अपव्यवहारकी वजहसे ज्वर। शीतवाली अवस्था बहुत थोड़ी देरतक रहती है, पर उत्तापकी अवस्था बहुत देरतक स्थायी रहती है, कमरमें बहुत ज्यादा दर्द रहता है। अधिकांश स्थानोंमें केवल

उत्ताप, प्यास, सर दर्द, मिचली, खाँसी और अन्तमें पसीना होता है। भीतरी उत्तापके साथ बाहर शीत मालूम होना।

वृद्धि।—छूनेपर, शीतऋतु और सूखी हवामें, गर्म घरमें या बाहरी उत्तापसे, जलीय दक्षिणी हवामें (ड्युफ्रि), वमनके बाद, खांसनेपर, खुजली विलोप हो जानेपर, गुरु पाक पदार्थ खानेपर, भोजनके बाद, शरीर हिलाने और छिनिनके अपव्यवहारकी वजहसे।

घटना।—विश्रामसे, दबानेपर; आंख बन्द करनेपर, ठण्डा पानी पीनेपर।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।— एपिस, आर्नि, चायना; फेर, लोरो, ओपि, नक्स; टैबाक।

अनुपूरक।—क्यूप्रम।

सदृश।—ऐण्टि-क्रूड; ऐण्टि-टार्ट, पल्स इत्यादि।

तुलनीय।—भोजनके बाद खाँसी,—नक्स; एक हाथ ठण्डा और दूसरा गर्म,—चायना, पल्स इत्यादि। हमेशा मिचली,—काकु, सल्फ, इग्ने; घासकी तरह हरा मल,—मार्जेण्ट-नाई; कुचलनेकी तरह सर दर्द=विरेट्रम; गुरुपाक द्रव्यसे पाकाशयमें विकार,—पल्स; दमा—क्यूप्रम; लोबेलिया; क्रुप खांसी—सिना; वमन—ऐण्टि-टार्ट; वचका लक्षण—ब्रायो इत्यादि।

शक्ति।—१x से १००० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—७ से १० दिन।

आइरिडियम।
(IRIDIUM)

दूसरा नाम।—धातु-विशेष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—रक्तकी कमी, रक्तमें रक्त-कणका अभाव, संन्यास, वात, ग्रन्थिवात, जरायुका अर्बुद, अन्तःसत्वावस्थाके समयकी

मूत्रग्रन्थि प्रदाह, कमजोर और जल्दी बढ़नेवाले बालकोंके उपसर्ग, रोगके बाद वाली कमजोरी वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आइरिडियम-क्लोराइ ; प्लेटिना ; पैलेडियम ; आस्मियम ।

शक्ति ।—६—२०० ।

आइरिस टैनेक्स ।

(IRIS TENAX)

दूसरा नाम ।—आइरिस माइनर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—उपास्थि-प्रदाह ; ज्वर ; सर दर्द ; अपना घर छूटनेकी वजहसे विषाद ; सविराम ज्वर ; उन्माद ; अनिद्रा ; पाकाशयका प्रदाह ; वमन ।

उपयोगिता और आभास ।—उपास्थि-प्रदाह ही इसका प्रधान क्रियास्थल है और इसी रोगमें इसके व्यवहारसे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। इसके साथके अन्यान्य लक्षण यहां संक्षेपमें लिखे जाते हैं,—बहुत ही दुःखित भाव, निर्वासनकातरता अर्थात घर छोड़कर जानेमें तकलीफ, मुंह और गलेमें जलन, मुख-विवर बहुत सूखा और लारका न रहना, पाकाशयमें शून्य भाव, रोगीके बहुत सुस्त हो जानेकी वजहसे बाध्य होकर सोना पड़ता है ; भयानक जाड़ा लगने बाद, उत्तापकी अधिकता, अन्धान्त्र-प्रदेशमें स्पर्श सहन न होना ; पित्तमय वमन इत्यादि ।

लक्षणावली ।

मन ।—दुःखित भाव, अपना घर छूटनेका दुःख ; एकाएक रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके कई बन्धुओंको मृत्यु हो गयी है (लेक-कैन)। परन्तु दूसरे दिन ही महान हर्ष प्रकट करती है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसको बुद्धिमें गड़बड़ी आ जाना चाहती है

(ऐथि, लैक-कैन)। रोगिनी बहुत रोनी हो जाती है। (पलस, नैट्र-म्यूर, इग्ने, सिपि)।

मस्तक।—कई वर्ष तक प्रति-सप्ताह दाहिने पार्श्वका अधकपारीका दर्द,—दाहिनी आँखसे दर्द आरम्भ होकर क्रमसे माथेका समूचा दाहिना अंश घेर लेता है, और जब दर्द चरम सीमापर पहुँच जाता है, तब हरे रंगके पित्तकी कै होती है (एथिस, आइरिस-वार्स, लैक-डिफ्लो, सेङ्गुइन) वमन न होनेपर तीसरे पहर दो बजेसे ३ बजेके भीतर मिचली और जाड़ा पैदा हो जाता है। सवेरे ५ बजेके समय दोनों कनपटियोंमें दर्द और आँख में खुजलाहटकी वजहसे नींद खुल जाती है, फिर नींद नहीं आती और और ठण्डी जगहपर माथा रखनेकी इच्छाके कारण बार बार तकिया उलट दिया करता है। कारण ठण्डे स्पर्श होनेसे उसका सर दर्द घट जाता है; माथे की त्वचापर बहुत खुजलाहट और जलन,—मानो मिर्च पीसकर माथेमें लगा दी गयी है और इसके साथ ही दोनों आँखोंमें भी जलन हुआ करती है, पर एक बूंद भी आंसू नहीं गिरता।

आंख।—दोनों कनपटियोंमें दर्दके साथ आँखमें खुजली। व्रशसे केश झाड़नेपर आँखमें करकराहट होती है;—मानो उसकी आँखके सामने कोई धूल उड़ा रहा है; परन्तु आँसुओंका स्राव नहीं होता।

मुंह और गलेके भीतर।—मुँह और गलेमें क्रमसे बढ़ती हुई जलन,—अन्तमें ऐसा मालूम होता है मानो मुँह और गलेमें आग जल रही है,—ठण्डा पानी लगनेपर भी नहीं घटती (कैप्स); आधी रातके बाद, या जायतूनका तेल या कपूरके प्रयोगसे या मुँहमें ठण्डी हवा खींच लेनेपर आराम मालूम होता है। मुख-विवर सूखा और लारहीन। बार बार घूंट लेनेकी इच्छा।

पाकाशय और अन्त्राशय।—सवेरे नींद खुलनेके बाद खड़े होने-पर पाकस्थलीमें खालीपन और सुस्ती मालूम होती है और थोड़ा-सा हरा पीला गोंदकी तरह पर अतिरिक्त पदार्थकी कै हो जाती है। एक प्याला चाय पीनेपर घट जाता है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें भयानक मिचली अनुभव होनेके साथ गाढ़ा हरे रङ्गका पित्त वमन होता है (आइरिस-वार्सि, आर्स, ब्राई, कैमो, कोलचि, क्रोटेल, डल्किस, इयुपेट, इपिक, लेप्टैन, मार्क, नक्स, पल्स, वेरेट)।

मूत्रग्रन्थि प्रदाह, कमजोर और जल्दी बढ़नेवाले बालकोंके उपसर्ग, रोगके बाद वाली कमज़ोरी वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आइरिडियम-क्लोराइ ; प्लेटिना ; पैलेडियम ; आस्मियम ।

शक्ति ।—६—२०० ।

आइरिस टैनेक्स ।

(IRIS TENAX)

दूसरा नाम ।—आइरिस माइनर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—उपास्थि-प्रदाह ; ज्वर ; सर दर्द ; अपना घर छूटनेकी वजहसे विषाद ; सविराम ज्वर ; उन्माद ; अनिद्रा ; पाकाशयका प्रदाह ; वमन ।

उपयोगिता और आभास ।—उपास्थि-प्रदाह ही इसका प्रधान क्रियास्थल है और इसी रोगमें इसके व्यवहारसे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। इसके साथके अन्यान्य लक्षण यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं,—बहुत ही दुःखित भाव, निर्वासनकातरता अर्थात घर छोड़कर जानेमें तकलीफ, मुंह और गलेमें जलन, मुख-विवर बहुत सूखा और लारका न रहना, पाकाशयमें शून्य भाव, रोगीके बहुत सुस्त हो जानेकी वजहसे बाध्य होकर सोना पड़ता है ; भयानक जाड़ा लगने बाद, उत्तापकी अधिकता, अन्त्रान्त्र-प्रदेशमें स्पर्श सहन न होना ; पित्तमय वमन इत्यादि ।

लक्षणावली ।

मन ।—दुःखित भाव, अपना घर छूटनेका दुःख ; एकाएक रोगिनी को ऐसा मालूम होता है, मानो उसके कई बन्धुओंको मृत्यु हो गयी है (लेक-कैन)। परन्तु दूसरे दिन ही महान हर्ष प्रकट करती है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसको बुद्धिमें गड़बड़ी आ जाना चाहती है

तुलनीय ।—अम्लाम्ल-प्रदेशमें (आर्निका, आर्स, लैके); सर-दर्द (जेल्स, आइरिस, इग्ने); अपना घर छोड़नेमें (कैप्सि, फास्फोरिक-एसिड)।

शक्ति ।—२ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

आइरिस-फ्लोरेण्टिना ।

(IRIS FLORENTINA)

दूसरा नाम ।— व्हाइट फ्लेग ; ओरिस रुट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—प्रलाप, आक्षेप, पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग पक्षाघात, सर-दर्द, उदरामय, वगैरहमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।--विरेट्रम, सैबाडिला, आइरिस-वार्सि।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

आइरिस फिटिडिसिमा ।

(IRIS FŒTIDISSIMA)

दूसरा नाम ।—आइरिस फेकटिसिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—सर-दर्द, आंत उतरना लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

अंत्राशय ।—अन्धान्त्र प्रदेश अर्थात छोटी और बड़ी आंतोंके संयोग-स्थलपर भयंकर दर्द मालूम होता है। अन्धांत्र प्रदेशमें दबानेपर उदरके ऊपरी भागमें भयानक मिचली पैदा हो जाती है। अन्धांत्र प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानो जखम पैदा हो गया है। अंत्राशयमें दर्दको वजहसे माथेकी कनपटीमें दर्दकी वृद्धि हो जाती है। हरे रंगके पित्तकी कै हुआ करती है,—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे अंत्राशयका दर्द घटता है और आधी रातके समय बहुत अधिक परिमाणमें पाखाना होता है। अन्धांत्र-पुच्छ या उपाङ्ग-प्रदाह (कौलचि, क्रोटल-होर, एकिनेशिया, लैक-डिफ्लो, प्लम, सेबाल, टियुबर्क)। रोगीको बहुत अधिक सुस्तीकी वजहसे यद्यपि अन्त्राशयका दर्द आदि घट जाता है तथापि सवेरे शय्यासे नहीं उठ सकता। तीसरे पहर दो बजनेके समय समूचे शरीरमें अस्वाच्छन्यकी वजहसे बाध्य होकर उसे शय्याका आश्रय लेना पड़ता है।

निद्रा ।—उत्तम रूपसे नींद न आनेके कारण रोगी क्रमसे अधिकसे अधिकतर दुःखित हो जाया करता है। रातके १ बजनेके बाद यद्यपि नींद आती भी है, परन्तु ५ बजते न बजते दोनों ओरकी कनपटियोंमें दर्द और आंखमें खुजलीकी वजहसे नींद खुल जाती है और ठण्डी जगहपर माथा रखनेकी आशासे रोगी बार बार तकिया उलट दिया करता है, कारण ठण्डा लगनेपर उसके सरका दर्द घटा जाता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—तीसरे पहर २ बजनेके समय भयानक शीत पैदा हो जाता है और इसके बाद ही बोखार आ जाता है और उत्ताप बढ़ा करता है। यह उत्ताप घटते ही थोड़ा पसीना हुआ करता है।

वृद्धि ।—निद्रा भङ्ग होनेपर।

उपशम ।—शीतल तकिया लगनेपर (सर-दर्द), बाहरी उत्तापके प्रयोगसे (अन्त्राशयका दर्द); ठण्डी हवा मुंहमें खींच लेनेपर या जायतूनका तेल और कर्पूरारिष्टका प्रयोग करनेपर (मुंह और गलेमें जलन) और चाय पी लेनेपर (वमन)।

सम्बन्ध—सदृश ।—कौलचि, लैके, प्लम, आर्स, कैप्स, कैलि-बाइ, एपिजि, लैक-डिफ्लो, सैङ्गुइन, ग्रेटि, आइरिस-वार्स, ।

तुलनीय ।—अन्यान्य-प्रदेशमें (आर्निका, आर्स, लेके); सर-दर्द (जेल्स, आइरिस, इग्ने); अपना घर छोड़नेमें (कैप्सि, फास्फोरिक-ऐसिड)।

शक्ति ।—२ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

आइरिस-फ्लोरेण्टिना ।

(IRIS FLORENTINA)

दूसरा नाम ।— व्हाइट फ्लेग ; ओरिस रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—प्रलाप, आक्षेप, पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग पक्षाघात, सर-दर्द, उदरामय, वगैरहमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—विरेट्रम, सेबाडिला, आइरिस-वार्सि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

आइरिस फिटिडिसिमा ।

(IRIS FŒTIDISSIMA)

दूसरा नाम ।—आइरिस फेकटिसिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—सर-दर्द, आंत उतरना लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

अंत्राशय ।—अन्धान्त्र प्रदेश अर्थात छोटी और बड़ी आँतोंके संयोग-स्थलपर भयंकर दर्द मालूम होता है। अन्धांत्र प्रदेशमें दबानेपर उदरके ऊपरी भागमें भयानक मिचली पैदा हो जाती है। अन्धांत्र प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानो जखम पैदा हो गया है। अंत्राशयमें दर्दकी वजहसे माथेकी कनपटीमें दर्दकी वृद्धि हो जाती है। हरे रंगके पित्तकी कै हुआ करती है,—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे अंत्राशयका दर्द घटता है और आधी रातके समय बहुत अधिक परिमाणमें पाखाना होता है। अन्धांत्र-पुच्छ या उपाङ्ग-प्रदाह (कोलचि, क्रोटल-होर, एकिनेशिया, लैक-डिफ्लो, प्लम, सेवाल, टियुबर्क)। रोगीकी बहुत अधिक सुस्तीकी वजहसे यद्यपि अन्त्राशयका दर्द आदि घट जाता है तथापि सवेरे शय्यासे नहीं उठ सकता। तीसरे पहर दो बजनेके समय समूचे शरीरमें अस्वाच्छन्द्यकी वजहसे बाध्य होकर उसे शय्याका आश्रय लेना पड़ता है।

निद्रा ।—उत्तम रूपसे नींद न आनेके कारण रोगी क्रमसे अधिकसे अधिकतर दुःखित हो जाया करता है। रातके १ बजनेके बाद यद्यपि नींद आती भी है, परन्तु ५ बजते न बजते दोनों ओरकी कनपटियोंमें दर्द और आँखमें खुजलीकी वजहसे नींद खुल जाती है और ठण्डी जगहपर माथा रखनेकी आशासे रोगी बार बार तकिया उलट दिया करता है, कारण ठण्डा लगनेपर उसके सरका दर्द घटा जाता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—तीसरे पहर २ बजनेके समय भयानक शीत पैदा हो जाता है और इसके बाद ही बोखार आ जाता है और उत्ताप बढ़ा करता है। यह उत्ताप घटते ही थोड़ा पसीना हुआ करता है।

वृद्धि ।—निद्रा भङ्ग होनेपर।

उपशम ।—शीतल तकिया लगनेपर (सर-दर्द), बाहरी उत्तापके प्रयोगसे (अन्त्राशयका दर्द); ठण्डी हवा मुंहमें खींच लेनेपर या जायतूनका तेल और कर्पूरारिष्टका प्रयोग करनेपर (मुंह और गलेमें जलन) और चाय पी लेनेपर (वमन)।

सम्बन्ध—सदृश ।—कोलचि, लैके, प्लम, आर्स, कैप्स, कैलि-बाई, एपिजि, लैक-डिफ्लो, सैङ्गुइन, थ्रैटि, आइरिस-वार्स, ।

वमन, पानीकी तरह मल निकलना और तलपेटमें आवाज, अरुचि स्वाद-शक्तिका न रहना, खाये हुए सभी पदार्थ अम्लमें परिणत हो ज तिमिर दृष्टि पैदा करनेवाला पित्ताश्रित अधकपारीका दर्द,—दर्दकी प्र वस्थामें खट्टा पानीकी तरह के होती है, बाईं ओरके हड्डकी पिछले भ स्नायुशूल और इसी तरहके नाना प्रकारके चर्मरोगपर इसकी विशेष क्रिया है। इसका दर्द घूमनेवाला और दाहिनी ओरसे बाईं ओर तेजीसे द है। इसका सर दर्द, अम्लशूल वगैरह बँधे समयपर पैदा होता है; उद आमरक्त (रक्तामाशय) रोग वगैरह वसन्त और शरत् कालमें और उदर तथा आमाशयका दर्द रोज रातमें दोसे तीन बजनेके समय पैदा होता थोड़ी देरका अन्तर देकर और एकाएक लक्षण आदिके प्रकोपकी अ हो जाया करती है।

लक्षणावली।

मन ।—तुरन्त रोग हो जानेकी आशंका। अपने पढ़नेके विष मन नहीं लगा सकता। स्थूल बुद्धि।

मस्तक ।—माथा भरा और बहुत भारी मालूम होता है। सर कनपटी और आँखमें दर्द, कभी मीठा स्वाद मिला या कभी थोड़ा पित्त तकलीफ देनेवाला वमन होता है। ललाटके दाहिने पार्श्वमें शूल वेंधनेकी तेज दर्द और मिचली, संध्याके समय, ठण्डी हवामें और खाँसने पर वृद्धि थोड़ी देर तक चलनेपर आराम मालूम हुआ करता है। अधकपारीका पहले दृष्टि शक्तिकी गड़बड़ी पैदा हो जाती है, (बेल, कास्टि, जेल्सि, केलि नेट्र-म्यू) ; इसके बाद खट्टा पानीकीतरह वमन (केल्के, कार्बो, नेट्र-म्यू) ; और चक्षुगोलकके ऊपरवाले स्नायुमें तेज दर्द और बेहोश करनेवाला सर दर्द आराम होने बाद रोगवाले अंशमें बहुत दर्द होता है। दाहिने प अधकपारीका दर्द—दृष्टिका धुन्धलापन और ललाटमें असह्य दर्द ; सर समय बहुत मिचली मालूम होना और बहुत ज्यादा लार बहना (ऐमोन मार्क)। ललाट और मूर्द्धादेशमें बहुत दर्द ,—मानो खोपड़ी या करो जायगी (बैप्टि, कैमो, ऐक्टिया-रेस, रेस, कोबाल्ट, नेट्र-क्लोर, इयुका-पि माथेके ऊपर पीब भरी फुन्सियाँ निकलती हैं।

आँख ।—दाहिनी आँखके बाएं कोनेमें जलन और आँसू आँखके ऊपरी प्रदेशमें भयानक दर्द।

आइरिस जर्मेनिका ।

(IRIS GERMANICA)

दूसरा नाम ।—फ्लू-गार्डेन-आइरिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय त्वचापर मसेकी तरह उद्भेद लक्षणमें यह खूब लाभ करता है ।

शोथ रोगमें इसकी निम्न-शक्तिका बार बार प्रयोग करनेपर बहुत ज्यादा पेशाब होकर शोथ घट जाता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

आइरिस-वार्सिकोलर ।

(IRIS VERSICOLOR)

दूसरा नाम ।—ब्लू-फ्लैग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—वसन्त ऋतुमें संग्रह किये हुए वृक्ष मूलसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मलद्वारका फटना या फटा घाव; पैत्तिकता; कब्जियत; दुधिया पपड़ी जमना; बहुमूत्र; अतिसार; आमाशय; बाधक; अजीर्ण; पामा; मलद्वारका नासूर; पाकाशयका शूल; सविराम ज्वर; सर दर्द; यकृतकी बीमारी; अधकपारीका सर-दर्द; स्नायुशूल; रातमें रेतःस्खलन या स्वप्नदोष; क्लोम-रोग; कानका शूल; गर्भावस्थामें वमन; विचर्चिका; मलद्वारमें जलन; वात; लार बहना; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात; वमन; अंगुलहाड़ा इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—मुंह, पाकस्थली और क्लोम-प्रदेशमें असह्य जलन, मुंहसे लगातार लार गिरना, गाढ़ा गोंदकी तरह लार-भरा

फूला करता है। पहले न पची हुई चीजें,—इसके बाद खट्टे तरल पदार्थ और अन्तमें पीला या हरा पित्त-वमन होता है और सरमें बहुत उत्ताप मालूम होता है। तेज खट्टा स्वाद-वाला और गलेके भीतरकी त्वचाको क्षय करनेवाला पानीकी तरह वमन।

अंत्राशय।—यकृत प्रदेशमें दर्द, शरीर हिलानेपर वृद्धि। क्लोम-प्रदेशमें भयंकर जलन,—ठण्डा पानी पीनेपर कुछ भी नहीं घटता। अंत-शूल,—शरीर सामनेकी ओर झुकानेपर आराम मिलता है (कोलो, क्यूप्रम; पीछेकी ओर = डायस्को),—वायु छूटनेपर आराम मालूम होता है। छूटी हुई हवा बहुत ही बदबूदार। तलपेटमें छेदनेकी तरह दर्द।

मल।—आँतोंमें शूल और गड़गड़ाहटके साथ उदरामय, मल पतला पानीकी तरह; आँतोंमें गड़गड़ाहटके साथ कोमल हरे रङ्गका मल, खूनभरा आम मिला मल,—इसके साथ ही कूथन। मलद्वारमें जलनके साथ बार बार पानीकी तरह पाखाना होना। पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें भयानक जलन, मानो आग छू गयी है। कभी कभी रातमें होनेवाला उदरामय, हरे रंगका मल और पेटमें दर्द (इपिक, आर्जेण्ट-नाइ)। उदरामय और रक्तामाशय रोग,—प्रति वर्ष शरत् और वसन्त ऋतुमें पैदा हो जाता है। कई दिनोंतक कब्जियत रहने बाद पानीकी तरह पतला पाखाना होता है,—आध्मान वायुकी वजहसे आँतोंका शूल, अर्श या अधकपारीका दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुमें स्नायुशूल वा वाताश्रित दर्द। गर्भावस्था में सवेरेके समय वमन—खट्टा या तीता स्वाद मिला वमन; बहुत ज्यादा गाढ़ी गोंदकी तरह लार मुँहमें बराबर इकट्ठा रहती है। जरायु-प्रदाह-भरा और दर्दसे भरा रहता है—स्पर्श सहन नहीं होता। पीले रंगका पित्त-मिला दस्त।

प्रत्यङ्ग आदि।—अम्ल और अजीर्ण रोगाधिकारके साथ वक्षस्थलका पेशीवात। दाहिने कन्धेका नया वात,—शरीर हिलाने, विशेषकर दाहिना हाथ उठानेपर दर्द ज्यादा मालूम होता है (सैङ्गिव)। अँगुलियोंकी सन्धिमें प्रचण्ड दर्द, उरुके पीछेवाले स्नायुमें शूल—उरुदेशमें तकलीफ देनेवाली अकड़न और सुन्नकी तरह मालूम होना,—मानो उरु मोच खा गयी है—जानु-सन्धिके पीछेतक दर्द चला जाता है। बाएँ उरुके पीछे वाले स्नायुमें

कान।—बहरापनके साथ कानमें भयंकर आवाज (सिङ्को, चिनिन सल्फ)। भयंकर कानकी आवाजके साथ सरमें चक्कर आना ; वमन और आंखके सामने पर्यायक्रमसे रोशनी और अन्धकार दिखाई देना।

मुखमण्डल।—मुंहके दाहिने पार्श्वके स्नायुशूलकी वजहसे नींद खुल जाती है और दो चय हुए दाँतोंमें तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है। ऊपरी और निम्न अंगका स्नायुशूल ; रोज सवेरेके भोजनके बाद पैदा हो जाता है। मुंहमें जगह जगह पीव भरे दाने पैदा हो जाते हैं और उनसे रक्तस्राव हुआ करता है।

मुख-विवर।—खाद्य पदार्थ आदिमें स्वादमें नहीं रहता या खट्टा मालूम होता है। मुँह सूखा और लसदार मालूम होता है। मुखविवर और पाकस्थली जलती हुई मालूम होती है। (आर्स, कैन्थ)। मुंहमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह लार पैदा होती है और बातचीतके समय रोगीके मुंहसे बूंद बूंद गिरा करती है। सवेरे उठनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो जीभ और दोनों मसूढ़े चर्बीकी तरह पदार्थसे लिपटे हुए हैं। दोनों ओंठ सूखे और फटे।

गलेके भीतर।—गलेका जखम,—तालुमूल संकुचित और निगलनेमें तकलीफ, गलेमें सूखापन, खूनसे तर और चमकीला लाल रंगका दिखाई देता है तथा जलते हुए गह्वरकी तरह उसमें जलन (आर्स, कैप्स) मालूम हुआ करती है (आइरिस टैन, आर्स, इयुफोर्ब, कार्बो-वे, फास)। जिह्वामूलके पार्श्व वाले दोनों गह्वरसे पाकस्थली तक सब जगह भयानक जलन होती है (आइरिस टैन, आर्नि)। वायुनलीमें खुजलानेकी वजहसे खांसी और गलेमें जलन होती है। मुँहके भीतर ठण्डी हवा खींचने या ठण्डा पानी पीनेपर थोड़ी देरके लिये आराम मालूम होता है।

पाकस्थली।—मिचली और बहुत ही खट्टा पानीकी तरह वमन। पाकाशयके भीतरकी सभी चीजें खट्टी हो जाती हैं (कैल्के-कार्ब)। खाये पदार्थ आदि खट्टे या पित्तमय मीठे स्वाद मिले। जलीय पदार्थ और बच्चोंको खट्टे दूधकी कै होती है (कैल्के, इथ्यू)। समूची अन्ननालीमें जलन। बहुत ज्यादा लारका स्राव होना (इपिका, मार्क, केलि-आयोड)। गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा या लार वमन; (एपिफिगा, केलि-बाई); मुंहसे जमीनतक श्लेष्मा

इटू।
(ITU)

दूसरा नाम।—रेसिना इटू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—रेसिन सुरासारमें गलाकर मूल अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—ऐसा मालूम होना मानो दृष्टिके सामने छोटी छोटी चीजें उड़ रही हैं। एकाएक कानमें गरजनेकी आवाज सुन पड़ना और इसी शब्दके कारण दाँतमें दर्द; आँत उतरना। योनि-प्रदाह, गर्दन न झुका सकना प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।— निम्न-शक्ति।

जेबोरेण्डी।
(JABORANDI or PILOCARPUS)

दूसरा नाम।—पाइलोकार्पस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तोंसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—केश झड़ना; क्षीण दृष्टि, श्वासनली प्रदाह; दाह; मोतियाबिन्द; क्षय-रोग; अतिसार; बाधक; विसर्प; चर्मरोग; हृत्पिण्डकी बीमारी; श्वेत-प्रदर; कर्णमूल, बहुत पसीना; बहुत लार बहना; कृमि-रोग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—क्षयकास आदि रोगोंमें अनियमित पसीना निकलना ही इसका प्रधान लक्षण है। मुखविवरवाली लार बहनेवाली ग्रन्थि मात्रही इससे उत्तेजित हो जाया करती है और मुंहमें अनियमित लार संचय होनेके कारण रोगी बार बार थूंका करता है। चेहरा तमतमाया और गर्म हो जाया करता है। कनपटीवाली शंख-देशीय धमनियोंमें टपक होने लगती है और ललाट, गाल और सारे शरीरसे सोतेकी तरह पसीना

एकाएक तेज दर्दकी वजहसे सुन्नपन पैदा हो जाता है। रोगवाली जगह हिलानेपर दर्दका बढ़ना ; थोड़ा भी हिलानेपर बहुत दर्द मालूम होता है पर रोगवाले अंगको जोरसे हिला देनेपर किसी तरहका दर्द नहीं होता। दर्द आदि एकाएक पैदा हो जाता है। जगह बदलनेवाला दर्द ।

त्वचा ।—दाद—दाहिनी ओर, अम्लपित रोगके कारण शिर: प्ररोहिका अर्थात माथेमें पीव भरी फुन्सियोंके आकारमें दाने पैदा होकर, रस गिरता है और वे फटे घावमें परिणत हो जाते हैं ; रातमें वे बहुत खुजलाते हैं, विचर्चिका चिकनी रूसीसे ढकी ।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—सारी रात जाड़ा मालूम होना। समूची देहमें उत्ताप मालूम होता है, पर हाथ और दोनों पैर बहुत ठण्डे मालूम होते हैं। पसीनेवाली अवस्थामें कोखेमें बहुत अधिक परिमाणमें पसीना होता है। खट्टी गन्ध लिये पसीना ।

वृद्धि ।—विश्रामसे (सर दर्द) ; जोरसे शरीर हिलाने और सन्ध्या और रातके समय ठण्डी हवामें (सर-दर्द और मिचली) ।

घटना ।—धीरे धीरे शरीर हिलानेपर (सर दर्दका घटना, परन्तु उसके पीछेवाला स्नायुशूल बढ़ जाता है) ; निर्मल वायु लगने और ऊपरी आधा शरीर झुकानेपर ।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—नक्स-वोम ।

सदृश ।—तुलनीय ।—इपिका (वमन) ; आइरिस-टैनेक्स कैन्थरिस, कैप्सिकम, (गलेमें जलन) ; कैलि-बाई (सर-दर्द) ; सेङ्ग्विन ; (सामयिक सर दर्द) ; लैक-डिफ्लो, जेलस, नेट्र-म्यूर, कोली, नैफेल, ऐरिष्ट-क्रूड, आर्स, लेप्टैन, एपिजिया, एपिफिगस, विरेट्रम (अतिसार) ; पल्स, (रातके समय दस्त) ; चायना (गर्मीके दिनोंका उदरामय) ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे १००० शततमिक क्रम ।

रातमें बहुत बढ़ जाना। बच्चा दिन भर शान्त रहता है पर रातमें लगातार चिल्लाया करता है और छटपटाया करता है, यंत्रणासे बच्चेकी देह कभी पीछेकी ओर कभी सामनेकी ओर और कभी बाईं ओर घूम जाती है या टेढ़ी पड़ जाती है। बच्चा शारीरिक और मानसिक अस्थिरता प्रकट किया करता है, उसकी देह बरफकी तरह ठण्डी और चेहरा नीला हो जाता है। बाईं कोखके नीचे स्थूलान्त्रकी हिमांज ग्रन्थि-प्रदेशमें भयानक दर्द मालूम होता है। यंत्रणासे बच्चा हाथ पैर पटका करता है।

मल।—उदरामय—मल खट्टी गन्धसे भरा, पानीकी तरह या खून मिला; वेगसे निकलनेवाला और परिमाणमें अधिक; पाखाना होनेके पहले और समय तलपेटमें छेदनेकी तरह दर्द। मलद्वारकी त्वचा घाव हुई सी मालूम होती है। पेशाबके समय मूत्रनालीमें महान सुख मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ पैरोंमें दर्द। पैरके अंगूठेकी सन्धिमें बहुत उत्ताप, टपक और छेदनेकी तरह दर्द। पैरके तलवेमें जलन (ऐम्ब्रा, कैल्कि, सल्फ, लैके)। नखकी जड़में करकराहट होती है। माथे और कान्धेमें बहुत पसीना होता है। तकलीफसे हाथ पैर पटका करता है।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न।**—कैनाब-सैट, इलेटिर।

सदृश।—कैमो, कोलो, स्टैफाई, वेरेट-ऐल्ब, कैम्फो।

तुलनीय।—कैम्फर (अतिसार और कम्प); कोलोसिन्थ (पेटमें दर्द); आइरिस-टे, (अन्धान्त्रमें दर्द)।

शक्ति।—३ रे दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रम तक।

जैस्मिनम।

(JASMINUM)

दूसरा नाम।—जैस्मिनम आफसिनेल; सफेद जैस्मिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लाल बीजोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न** ।—मर्कु रियस । यह मर्कु रियसका दोषघ्न है ।

तुलनीय ।—बेल, मर्कु रियस, फाइटो, डेकारेरडा ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

जैलापा इपोमिया ।

(JALAPA IPOMOEA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले मूलका विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मलद्वारको अकड़न या जखम ; सर्दी ; अतिसार ; वात ; मूर्च्छा ; बेचैनी ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐलोपैथिक मतसे यह एक प्रधान विरेचक दवा है—इसलिये, सदृश विधानके मतसे यह एक विशेष प्रकारके उदरामयमें बहुत लाभदायक है । इसके कई प्रधान लक्षण नीचे लिख देनेसे ही इसके गुणोंका आभास मिल जायगा—खट्टी गन्ध लिये पानीकी तरह या खून मिला मल,—रातमें बढ़ना ; उदरमें काटनेकी तरह दर्द , बच्चा मानसिक और शारीरिक अस्थिरता बहुत अधिक प्रकट करता है ; दिनभर तो बच्चा शान्त रहता है पर रातमें असह्य अंत्रशूलकी वजहसे चिल्लाता, छटपटाता और दोनों पैर फेंका करता है और चेहरा नीला हो जाता है । बच्चोंको रातमें होनेवाले असह्य यंत्रणा-दायक शूलके दर्दकी यह एक प्रधान दवा है (कैमोमिला, कोलोसिन्थिस, स्टैफाइसेयिग्रा और वेरेट्रम ऐल्बम) ये चारों दवायें भी बच्चोंके अन्त्रशूलमें बहुत लाभदायक हैं ।

लक्षणावली ।

पाकस्थली और अंत्राशय ।—मिचली और वमन । आध्मानकी वजहसे फेन भरी डकार,—डकार आनेपर अन्त्रशूल आराम हो जाता है । रातमें तलपेटमें ऐसा दर्द होता है मानो आँतें आदि मरोड़ खा रही हैं या छुरीसे फाटी जा रही हैं । पाखाना होनेके पहले और समय काटनेकी तरह अन्त्रशूल ;

रातमें बहुत बढ़ जाना। बच्चा दिन भर शान्त रहता है पर रातमें लगातार चिल्लाया करता है और छटपटाया करता है, यंत्रणासे बच्चेकी देह कभी पीछेकी और कभी सामनेकी ओर और कभी बाईं ओर घूम जाती है या टेढ़ी पड़ जाती है। बच्चा शारीरिक और मानसिक अस्थिरता प्रकट किया करता है, उसकी देह बरफकी तरह ठण्डी और चेहरा नीला हो जाता है। बाईं कोखके नीचे स्थूलान्त्रकी हिभॉज ग्रन्थि-प्रदेशमें भयानक दर्द मालूम होता है। यंत्रणासे बच्चा हाथ पैर पटका करता है।

मल।—उदरामय—मल खट्टी गन्धसे भरा, पानीकी तरह या खून मिला; वेगसे निकलनेवाला और परिमाणमें अधिक; पाखाना होनेके पहले और समय तलपेटमें छेदनेकी तरह दर्द। मलद्वारकी त्वचा घाय हुई सी मालूम होती है। पेशावके समय मूत्रनालीमें महान सुख मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ पैरोंमें दर्द। पैरके अंगूठेकी सन्धिमें बहुत उत्ताप, टपक और छेदनेकी तरह दर्द। पैरके तलवेमें जलन (ऐम्ब्रा, कैल्के, सल्फ, लैके)। नखकी जड़में करकराहट होती है। माथे और कन्धेमें बहुत पसीना होता है। तकलीफसे हाथ पैर पटका करता है।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न**।—कैनाब-सैट, इलैटिर।

सदृश।—कैमो, कोलो, स्टैफाई, वेरेट-ऐल्ब, कैम्फो।

तुलनीय।—कैम्फर (अतिसार और कम्प); कोलोसिन्थ (पेटमें दर्द); आइरिस-टे, (अन्त्रान्त्रमें दर्द)।

शक्ति।—२ रे दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रम तक।

जेस्मिनम।

(JASMINUM)

दूसरा नाम।—जैस्मिनम आफसिनेल; सफेद जेस्मिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लाल बीजोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—मर्कुरियस । यह मर्कुरियसका दोषघ्न है ।

तुलनीय ।—बेल, मर्कुरियस, फाइटो, डेकारेण्डा ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

जैलापा इपोमिया ।
(JALAPA IPOMOEA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले मूलका विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मलद्वारकी अकड़न या जखम ; सर्दी ; अतिसार ; वात ; मूर्च्छा ; बेचैनी ।

उपयोगिता और आभास ।—एलोपैथिक मतसे यह एक प्रधान विरेचक दवा है—इसलिये, सदृश विधानके मतसे यह एक विशेष प्रकारके उदरामयमें बहुत लाभदायक है । इसके कई प्रधान लक्षण नीचे लिख देनेसे ही इसके गुणोंका आभास मिल जायगा—खट्टी गन्ध लिये पानीकी तरह या खून मिला मल,—रातमें बढ़ना ; उदरमें काटनेकी तरह दर्द , बच्चा मानसिक और शारीरिक अस्थिरता बहुत अधिक प्रकट करता है ; दिनभर तो बच्चा शान्त रहता है पर रातमें असह्य अंत्रशूलकी वजहसे चिल्लाता, छटपटाता और दोनों पैर फेंका करता है और चेहरा नीला हो जाता है । बच्चोंको रातमें होनेवाले असह्य यंत्रणा-दायक शूलके दर्दकी यह एक प्रधान दवा है (कैमोमिला, कोलोसिन्थिस, स्टैफाइसेग्रिया और वेरेट्रम ऐलबम) ये चारों दवायें भी बच्चोंके अन्त्रशूलमें बहुत लाभदायक हैं ।

लक्षणावली ।

पाकस्थली और अंत्राशय ।—मिचली और वमन । आध्मानकी वजहसे फेन भरी डकार,—डकार आनेपर अन्त्रशूल आराम हो जाता है । रातमें तलपेटमें ऐसा दर्द होता है मानो आँतें आदि मरोड़ खा रही हैं या छुरीसे काटी जा रही हैं । पाखाना होनेके पहले और समय काटनेकी तरह अन्त्रशूल ;

कारण फूला रहता है और उसको छूना सहन नहीं होता। पेटमें इस तरहका कलकल गड़गड़ शब्द होता है मानो बोतलसे पानी ढाला जा रहा है, पाखाना होनेके पहले और बाद यह आवाज बराबर समभावसे सुन पड़ती है। ऊपरी और निचले पैरमें ऐंठन हुआ करती है; पाखाना होनेके पहले और बाद यह शब्द समान भावसे सुन पड़ता है; ऊपरी और निचले पैरमें ऐंठन होती है; देह बरफ जैसी ठण्डी रहती है और सारे शरीरमें ठण्डा और लसदार पसीना होता है।

लक्षणावली।

मन।—सारा शरीर शीतल और पाकस्थलीमें जलनके साथ चित्तकी चञ्चलता। प्रशान्त चित्त; उदास-भाव; यन्त्रणा बर्दाश्त नहीं कर सकता; सारे शरीरमें सुस्ती मालूम होती है। दर्द पैदा करनेवाले उदरामयमें शरीर भाफकी तरह हलका और चित्त प्रफुल्ल रहता है।

मुखमण्डल।—चेहरा और माथा गर्म; चेहरा रक्तहीन, उजला और दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं। मुख-विवर, जीभ और गलेमें सूखापन और जलन, और उनमें बहुत पतली लार संचित हुआ करती है। रातमें मुख-विवर और जीभ सूखी रहती है, पर रोगीको प्यास नहीं लगती।

पाकस्थली।—दुर्दमनीय जलन भरी प्यास, पानी पीनेसे प्यास बिलकुल ही नहीं जाती। रोगी के हो जानेके भयसे पानी नहीं पीना चाहता। बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा हरे रंगका पित्त या श्लेष्मा वमन हो जाता है (आर्स, बिस्मथ)। बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह लार-भरा पदार्थ वमन होता है (मार्क-कोर, ग्रम) और इसके साथ ही बराबर पानीकी तरह दस्त हुआ करता है; पाकस्थलीके एकाएक संकोचनकी वजहसे भयानक दर्द और जंघाकी पोटलीमें ऐंठन हुआ करती है (कूप्रम, सिकेलि, वेरेट)। शरीर बरफकी तरह ठण्डा और लसदार पसीना। पाकस्थलीमें जलन और उत्ताप मालूम होना। पाकस्थली और आँतोंका प्रदाह।

अन्त्राशय।—उदर आध्मान वायुसे फूला रहता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। अंत्राशयमें ऐसा मालूम होता है मानो एक गोल पदार्थ लुढ़क रहा है। अन्त्रशूल—अस्त्राघात और शूलकी तरह दर्द। उदरमें जलन, ठण्डक पानेकी आशासे शरीरका आवरण उतार डालता है और जमीनपर

उपयोगिता और आभास ।—तन्द्रालुता, पतले दस्त, आक्षेप, और अन्तमें धनुष्टंकार लक्षणमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।--निकुनैन्थस ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

जेट्रोफा कार्कस ।
(JATROPHA CURCAS)

दूसरा नाम ।—फिजिक-नट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे टिंचर और विचूर्ण तैयार हुआ करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पलकोंका आक्षेप ; पेट बोलना या गड़गड़ाहट ; हैजा ; विसूचिकाकी तरह उदरामय ; ऐंठन ; अतिसार ; मुंहमें जखम ; त्वचाकी बीमारियाँ ; वमन ; कृमि-रोग ।

उपयोगिता और आभास ।—विसूचिका और उदरामय रोगमें, किसी खास अवस्थामें आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। इसकी लक्षणावली बहुतसे अंशोंमें इलाटेरियम, क्रोटन—टिग्लियम और वेरेट्रम-एल्बमकी तरह है। मल पानीकी तरह और वेगसे निकलता है। रोगी उदास भावसे सोया रहता है, किसी तरहकी तकलीफ नहीं प्रकट करता ; पर उसकी मूर्त्ति मानसिक बेचैनी और तकलीफ प्रकट किया करती है ; दोनों आंखें नीली रेखासे घिरीं और चेहरा उतरा हुआ ; मुख-विवर, जीभ और गलेमें सूखापन और जलन या उसमें पानीकी तरह लार संचय हुआ करती है; दुर्दमनीय जलन भरी प्यास और डकार ; बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा हरे रंगका थक्का थक्का पित्त और श्लेष्मा या अण्डलालकी तरह पदार्थकी कै हुआ करती है ; पाकस्थलीमें जलन मालूम होती है ; रह रहकर एकाएक पाकस्थलीके संकोचनकी वजहसे भयानक दर्द पैदा हो जाता है ; पेट आध्मान वायुके

कारण फूला रहता है और उसको छूना सहन नहीं होता। पेटमें इस तरहका कलकल गड़गड़ शब्द होता है मानो बोतलसे पानी ढाला जा रहा है, पाखाना होनेके पहले और बाद यह आवाज बराबर समभावसे सुन पड़ती है। ऊपरी और निचले पैरमें ऐंठन हुआ करती है; पाखाना होनेके पहले और बाद यह शब्द समान भावसे सुन पड़ता है; ऊपरी और निचले पैरमें ऐंठन होती है; देह बरफ जैसी ठण्ढी रहती है और सारे शरीरमें ठण्ढा और लसदार पसीना होता है।

लक्षणावली।

मन।—सारा शरीर शीतल और पाकस्थलीमें जलनके साथ चित्तकी चञ्चलता। प्रशान्त चित्त; उदास-भाव; यन्त्रणा बर्दाश्त नहीं कर सकता; सारे शरीरमें सुस्ती मालूम होती है। दर्द पैदा करनेवाले उदरामयमें शरीर भाफकी तरह हलका और चित्त प्रफुल्ल रहता है।

मुखमण्डल।—चेहरा और माथा गर्म; चेहरा रक्तहीन, उजला और दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं। मुख-विवर, जीभ और गलेमें सूखापन और जलन, और उनमें बहुत पतली लार संचित हुआ करती है। रातमें मुख-विवर और जीभ सूखी रहती है, पर रोगीको प्यास नहीं लगती।

पाकस्थली।—दुर्दमनीय जलन भरी प्यास, पानी पीनेसे प्यास बिलकुल ही नहीं जाती। रोगी कै हो जानेके भयसे पानी नहीं पीना चाहता। बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा हरे रंगका पित्त या श्लेष्मा वमन हो जाता है (आर्स, विस्मथ)। बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह लार-भरा पदार्थ वमन होता है (मार्क-कौर, ग्रम) और इसके साथ ही बराबर पानीकी तरह दस्त हुआ करता है; पाकस्थलीके एकाएक संकोचनकी वजहसे भयानक दर्द और जंघाकी पोटलीमें ऐंठन हुआ करती है (क्यूप्रम, सिकेलि, वैरेट)। शरीर बरफकी तरह ठण्ढा और लसदार पसीना। पाकस्थलीमें जलन और उत्ताप मालूम होना। पाकस्थली और आँतोंका प्रदाह।

अन्त्राशय।—उदर आध्मान वायुसे फूला रहता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। अंत्राशयमें ऐसा मालूम होता है मानो एक गोल पदार्थ लुढ़क रहा है। अन्त्रशूल—अस्त्राघात और शूलकी तरह दर्द। उदरमें जलन, ठण्ढक पानेकी आशासे शरीरका आवरण उतार डालता है और जमीनपर

सोया रहता है। नाभिसे कमरतक मानो रह रहकर शूल गड़नेकी तरह मालूम होता है। अन्त्रशूलाधिकारमें उदरमें कलकल ध्वनि सुन पड़ती है, वायु सेवनके लिये बाहर घूमनेके समय बढ़ जाती है। पाखाना होनेके पहले और बाद पेटमें भकभक शब्द होता है, मानो बोतल या पीपेके छेदसे पानी निकल रहा है। पतला पाखाना होनेके बाद यह आवाज आनी बन्द हो जाती है।

मलान्त्र और मल।—एकाएक मलवेग और उदरमें लगातार कलकल शब्द, मानो पेट पानीसे भरा है, बाईं ओर ही यह अधिक सुन पड़ता है। उदरामय या विसूचिका,—मल जलवत् और तेज सोतेके जलकी तरह बड़े वेगसे निकलनेवाला, चावलके सिझाये हुए पानी या माड़की तरह अर्थात फेनकी तरह; विसूचिकाकी पहली अवस्था,—हिमाङ्ग (Collapse) होनेके पहले उदरामयमें कभी कभी बहुत ज्यादा परिमाणमें सूत्र या केंचुएकी तरह क्रमि मिला रुखड़ा मल निकता है। सर्दी लगने बाद बहुत सुस्ती पैदा करनेवाला पानीकी तरह उदरामय।

प्रत्यङ्ग आदि। — प्रचण्ड आक्षेपकी वजहसे प्रत्यङ्गोंकी पेशियोंका प्रबल संकोचन; जंघाकी पोटलीकी पेशीका प्रबल खिंचाव या सिकुड़कर पिण्डकी तरह बन जाना। चलनेके समय एड़ीमें बहुत दर्द मालूम होता है। सारे शरीरकी शीतलता और उठनेकी शक्ति का न रहना; नाड़ी बहुत क्षीण और तेज,—थोड़ा भी शरीर हिलानेपर बढ़ जाती है। मुखमण्डल और माथेमें उत्ताप और पीठमें शीत मालूम होना। बरफकी तरह ठण्डा हाथ और नीले रङ्गके नखके साथ शीत मालूम होना। अंगमें स्थान स्थानपर नीलापन; जाड़ा मालूम होना और लसदार पसीना होना।

वृद्धि।—घरके बाहरी भागमें वायुसेवनके लिये चलनेके समय, आधी रातके बाद।

घटना।—ठण्डे पानीमें हाथ धोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।— क्रोटोन-टिग, गुफ्रे, करील, इलेट, आर्स वेरेट।

तुलनीय।—विसूचिकामें (विरेट्रम); जलपानके बाद ही वमन (आर्सेनिक); जोरसे पाखाना होना (इलाटे)।

शक्ति।—३ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

जैट्रोफा इयुरेन्स ।
(JATROPHA URENS)

दूसरा नाम ।—स्पार्ज नेटल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० एलेनके मतसे यह एक विषाक्त उद्भिद और नहीं है। शोथ, हृत्पिण्डका आंशिक पक्षाघातकी वजहसे बेहोशीके लक्षणमें यह विशेष लाभदायक है ।

शक्ति ।—६—३० ।

जेक्विरिटी ।
(JEQUIRITY)

दूसरा नाम ।—ऐब्रास-प्रिकेटोरियस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे विचूर्ण या अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आंखोंपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। आंखोंका प्रदाह और जलन; आंखसे बहुत ज्यादा पीब निकलना, पलकोंपर फुन्सी वगैरह लक्षणोंमें और मुखमण्डलकी ग्रन्थियोंके दूषित लक्षणमें इसका भीतरी और बाहरी प्रयोग करनेपर बहुत फायदा होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—जैक्वेरिटस, इपिकाक ।

शक्ति ।—६, ३० ।

जुग्लैन्स कैथर्टिका या सिनारियां ।

(JUGLANS CATHARTICA or CINEREA)

दूसरा नाम ।—बटर नट ।

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—मूलकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है,—मुंहासे ; कलेजेका दर्द; बगलमें दर्द ; वक्षमें दर्द ; सर्दी ; पामा ; विसर्प ; सर दर्द ; वक्षोदक ; नाना प्रकारके चर्म रोग ; विस्फिका ; अरुणिका ; दाद ; जखम ; पृष्ठ-फलकमें दर्द ; दृष्टि दोष ।

उपयोगिता और आभास ।—सर-दर्द,—सरके पिछले भागमें तेजीसे फैलनेवाला बेधनेकी तरह और चिलक मारनेकी तरह दर्द । (२) कामला पाण्डु-रोग ; यकृत-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे दर्द,—सरके पिछले भागके दर्दके साथ—रातमें ३ बजनेके समय रोगीकी नींद खुल जाती है फिर नींद नहीं आती ; पित्त-मिला, पीली आभा लिये हरे रंगका, कूथनके साथ मल और मलद्वारमें जलन ; वक्षोदक या वक्षान्तर-वेष्टनीका शोथ, जब शरीरकी त्वचापर मच्छड़ काटनेकी तरह लाल दाग सब निकलते हैं । फेफड़ेसे गहरे लाल रंगका खूनका स्राव (युग्लेन्स-रिजिया=जरायुसे)। हृत्शूल । कक्ष-प्रदेशमें या बगलमें तेज सुस्ती पैदा करनेवाला दर्द (कक्षमें प्रदाह=युग-रिजी), दाहिने बगलसे बाहुमें दर्द चला जाता है । बार बार जलन पैदा करनेवाले पाखानेके साथ सरमें दर्द, गोल जखम, पार्श्वके चारों ओरके तन्तुओंको ध्वंसकर फैलता जाता है । आरक्त ज्वर इत्यादि रोगोंमें इस दवासे लाभ दिखाई देता है ।

लक्षणावली ।

मन ।—एकाकी (अकेला) रहना चाहता है (कैम्स, ऐम्ब्रि, साइक्ले, हायोसाया, इग्ने, आक्साद-ड्रोप) ; "खूब खाने पीनेपर नींद आयगी"—ऐसा सोचकर ही बहुत प्रसन्न हो जाता है, किसी विषयमें मन लगाने या सोचनेसे बहुत ही नाराज रहता है (ऐलोज, केम्प, कार्बो-ऐन, कोबाल्ट, कोना,

इयुपस-टी)। मस्तिष्कमें आच्छन्नता रहनेकी वजहसे पढ़नेमें मन नहीं लग सकता। हमेशा अन्यमनस्क रहता है,—क्या करना चाहता था, यह भूल जाता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना,—पाकस्थलीमें सुस्ती और शून्यता मालूम होना, इसके साथ ही अन्त्राशयतक यह शून्यभाव फैल जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर सर-दर्द (ब्राई, चेलिडो, आइरिस वा, नक्स-वोम),—पीला लेप चढ़ी जीभके साथ दो पहरके पहले होनेवाला सर-दर्द,—दाहिने पार्श्वमें, अधिक मालूम होना, माथा पीपेकी तरह बड़ा मालूम होता है (डलियेकी तरह = जैलस ; गिर्जेकी तरह बड़ा = नक्स-वोम, मानो उसका बाहरी आयतन बढ़ रहा है = लैक-डिफ्लो)। बार बार जलन करनेवाले पेशाबके साथ सरमें दर्द। पीछेवाले कपालमें स्थित (कपालके ठीक नीचेवाले भागमें) सर-दर्द,—माथेके पिछले भागमें तेज वेधनेवाला यकृतकी बीमारीकी वजहसे दर्द। सरमें खुजली—रोगी माथा खुजलाया करता है (वोवि)

मुखमण्डल आदि ।—चेहरा लाल, सूखा और जलन-भरा। दोनों आँखें लाल और फूली और ऐसा मालूम होता है, मानो एक दूसरेकी ओर खिंच रही हैं। एकाएक उठनेपर या चलना आरम्भ करनेपर दिखाई नहीं देता। सरमें चक्कर आ जाता है और शरीर सुन्न मालूम होता है। नासा-मूल और नासादण्ड बहुत सुन्न मालूम होता है—रगड़नेपर घटना। नाकके ऊपर गोल ज़खम होकर चारों ओरके तन्तुओंको ध्वंस करता हुआ फैलता है।

मुख-विवर ।—जीभ,—साधारणतः सफेद लेप चढ़ी,—सवेरे पीले रंगका लेप मालूम होता है और गलेमें जलन तथा कुटकुटी होती है। निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थियां सब फूल जाती हैं,—खासकर दाहिने पार्श्व का गलक्षत—दोपहरके पहले गलेमें खखड़ापन और सूजन मालूम होती है—विशेषकर निगलनेके समय।

पाकस्थली ।—राचसी भूख, बहुत प्यास ;—लगातार पानी पीनेकी इच्छा। रातमें मिचलीका बढ़ जाना। पाकस्थलीमें जलन। सर दर्दके साथ पाकस्थलीमें उदरतक फैलनेवाला खालीपन और सुस्ती मालूम होना।

अन्त्राशय ।—कामला या पाण्डु रोगमें तथा यकृत प्रदेशमें और दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे (ब्राई, चेली, नक्स) सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम

होना। दो पहरकी भोजनके बाद उदरमें दर्द और इसके बाद पतला पाखाना होना और मलद्वारमें जलन; सोयी या अर्द्धसुषुप्तावस्था त्यागकर उठनेके समय वंक्षण या पुट्ठेके स्थानपर जखमकी तरह दर्द। पाखाना हो जानेपर पेटमें जलन मालूम होती है।

मलान्त्र, मल और मूत्र।—पाण्डु-रोगमें उदरामय,—बहुत अधिक कूथन पैदा करनेवाला पित्त-भरा मल या पीली आभा लिये हरा मल—पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें जलन। विदेशमें खुली जमीनपर खेमेमें रहनेके समयका उदरामय (बेप्टो, सिप्टि-सिमिन)। बार बार जलन करनेवाले पेशाबके साथ सरमें दर्द, मलान्त्रसे मूत्रस्थलीतक फैलने वाला तेज दर्द,—चलनेके समय घटता है।

श्वास-यन्त्र आदि।—फेफड़ेमें काटनेकी तरह दर्द और छातीमें दबाव मालूम होना। फेफड़ेसे खूनका स्राव; खून गहरे लाल रंगका और जमा (जरायु से ऐसा ही स्राव=युग्लेन्स-रिजिया) वक्षोस्थिलके पीछे दर्द; ऊपर चढ़ने या घरके बाहरी भागमें घूमते समय मालूम होता है या बढ़ जाता है। वातकी वजहसे वक्षोदक या वक्षान्तर्वेष्टनीका शोथ, शरीरकी त्वचापर मच्छड़ काटनेकी तरह लाल बिन्द सब दिखाई देते हैं। तीसरे पहर ६ बजनेके समय, चलनेके समय एकाएक बाईं छातीमें ऐसा दर्द मानो मोच खा गयी है। इसी वजहसे रोगीको बाध्य होकर खड़ा हो जाना पड़ता है परन्तु, उससे भी घटता नहीं है।

प्रत्यङ्ग आदि।—मेरुदण्डमें ऊपरसे नीचेतक सुई गड़नेकी तरह मालूम होना, झुकनेपर दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द,—रोगवाला अंग हिलानेपर या लम्बी साँस लेनेपर बढ़ जाता है, त्रिकास्थि और श्रोणिदेशके बीचवाली सन्धिमें दर्द,—पूर्वान्ह और बैठनेवाली अवस्थामें बढ़ जाता है। कन्धा और कलाईमें वातका तेज दर्द, दाहिनी बगलमें तेज दर्द,—यह दर्द दाहिने बाहुमें चला जाता है (दाहिनी बगलकी भीतरवाली ग्रन्थिका प्रदाह और छोटे छोटे फोड़े निकलना=युग-रिजि)। सीढ़ी चढ़नेके समय दाहिनी जंघामें दर्द मालूम होता है। सब भाव—बैठे बैठे उठकर चलनेके समय घट जाता है।

त्वचा।—कामला—यकृत प्रदेशमें और दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ; शरीर गर्म होनेपर खुजलानेवाले दाने निकल

आते हैं और वे सुरसुर करते हैं। फुन्सियाँ निकलना। निम्नाङ्गमें,—त्रिकास्थि प्रदेशमें और हाथके ऊपर अकौता और अन्य स्थानोंपर अरुणिकासे ढँके रहने की तरह लाल वर्ण। बाहुमें खुजली—खुजलाने पर घटना।

वृद्धि।—शरीर गर्म होनेपर (खुजली)। चलनेमें (हृत्शूल); सीढ़ीपर चढ़ने और झुकनेपर।

उपशम।—चलनेके समय (मलान्त्रसे मूत्रनालीतक फैलनेवाला दर्द) और उठनेके समय (सर दर्द)।

सम्बन्ध।—प्रतिविष-दोषघ्न।—ब्राइयोनिया।

सदृश।—ब्राई, नक्स, चेलिडो, बैपटी, सेप्टिसिमिन, ओलियेन, जीलूस, कक्यू, ग्लोन।

तुलनीय।—ब्रायो (हृत्शूल, वात, सर-दर्द, वचका शोथ, यकृत); चेलिडो, (यकृत); नक्स-वोम (कामला); आइरिस (अतिसार); रास, आर्स, (त्वचा) इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ ठा दशमिक क्रम।

युग्लेन्स रिजिया या नक्स-युग्लेन्स।

(JUGLANS REGIA or NUX JUGLANS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मुंहासे; मलद्वारमें जलन; बगलकी गांठमें पीब; उपदंश; आँखमें दर्द; आध्मान; सर दर्द; रजस्राधिक्य; झोहामें दर्द; दादकी तरह दर्द वगैरह बीमारियोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इससे नाना प्रकारके चर्मरोग उत्पन्न हो जाया करते हैं, जैसे—कानके पीछे चकत्तेकी तरह दाद, बहुत खुजलाहटके कारण रोगीको रातमें नींद नहीं आती. बगलकी गांठमें प्रदाह होकर फोड़ा हो जाता है या उसपर पपड़ी जमा फटा घाव हो जाता है, पहले दाहिनी फिर बायीं बगलमें फोड़ा फैलता जाता है। शरीरमें जगह जगह घमौरीकी तरह बहुत खुजली पैदा होती है। शरीर धोने अथवा खुला रखने मात्रसे

होना। दो पहरके भोजनके बाद उदरमें दर्द और इसके बाद पतला पाखाना होना और मलद्वारमें जलन; सोयी या अर्द्धसुप्तावस्था त्यागकर उठनेके समय वंक्षण या पुट्ठेके स्थानपर जखमकी तरह दर्द। पाखाना हो जानेपर पेटमें जलन मालूम होती है।

मलान्त्र, मल और मूत्र।—पाण्डु-रोगमें उदरामय,—बहुत अधिक कुथन पैदा करनेवाला पित्त-भरा मल या पीली आभा लिये हरा मल—पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें जलन। विदेशमें खुली जमीनपर खेमेमें रहनेके समयका उदरामय (बेप्टो, सिप्टि-सिमिन)। बार बार जलन करनेवाले पेशाबके साथ सरमें दर्द, मलान्त्रसे मूत्रस्थलीतक फैलने वाला तेज दर्द,—चलनेके समय घटता है।

श्वास-यन्त्र आदि।—फेफड़ेमें काटनेकी तरह दर्द और छातीमें दबाव मालूम होना। फेफड़ेसे खूनका स्राव; खून गहरे लाल रंगका और जमा (जरायु से ऐसा ही स्राव=युक्लेप्ना-रिजिया) वक्षोस्थिलके पीछे दर्द; ऊपर चढ़ने या घरके बाहरी भागमें घूमते समय मालूम होता है या बढ़ जाता है। वातकी वजहसे वक्षोदक या वक्षान्तर्वेष्टनीका शोथ, शरीरकी त्वचापर मच्छड़ काटनेकी तरह लाल बिन्द सब दिखाई देते हैं। तीसरे पहर ६ बजनेके समय, चलनेके समय एकाएक बाईं छातीमें ऐसा दर्द मानो मोच खा गयी है। इसी वजहसे रोगीको वाध्य होकर खड़ा हो जाना पड़ता है परन्तु, उससे भी घटता नहीं है।

प्रत्यङ्ग आदि।—मेरुदण्डमें ऊपरसे नीचेतक सुई गड़नेकी तरह मालूम होना, झुकनेपर दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द,—रोगवाला अंश हिलानेपर या लम्बी साँस लेनेपर बढ़ जाता है, त्रिकास्थि और श्रोणिदेशके बीचवाली सन्धिमें दर्द,—पूर्वान्ह और बैठनेवाली अवस्थामें बढ़ जाता है। कन्धा और कलाईमें वातका तेज दर्द, दाहिनी बगलमें तेज दर्द,—यह दर्द दाहिने बाहुमें चला जाता है (दाहिनी बगलकी भीतरवाली ग्रन्थिका प्रदाह और छोटे छोटे फोड़े निकलना=युग-रिजि)। सीढ़ी चढ़नेके समय दाहिनी जंघामें दर्द मालूम होता है। सब भाव—बैठे बैठे उठकर चलनेके समय घट जाता है।

त्वचा।—कामला—यकृत प्रदेशमें और दाहिने पृष्ठ फलकके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ; शरीर गर्म होनेपर खुजलानेवाले दाने निकल

जाते हैं और वे सुरसुर करते हैं। फुन्सियाँ निकलना। निम्नाङ्गमें,—त्रिकास्थि देशमें और हाथके ऊपर अकौता और अन्य स्थानोंपर अरुणिकासे ढँके रहने की तरह लाल वर्ण। बाहुमें खुजली—खुजलाने पर घटना।

वृद्धि।—शरीर गर्म होनेपर (खुजली)। चलनेमें (हृत्शूल); सीढ़ीपर चढ़ने और झुकनेपर।

उपशम।—चलनेके समय (मलान्त्रसे मूत्रनालीतक फैलनेवाला दर्द) और उठनेके समय (सर दर्द)।

सम्बन्ध।—प्रतिविष-दोषघ्न।—व्राइयोनिया।

सदृश।—व्राई, नक्स, चेलिडो, वेप्टी, सेप्टिसिमिन, ओलियेन, जेल्स, लैक्य, ग्लोन।

तुलनीय।—व्रायो (हृत्शूल, वात, सर-दर्द, वक्षका शोथ, यकृत); चेलिडो, (यकृत); नक्स-वोम (कामला); आइरिस (अतिसार); रास, आर्स, (त्वचा) इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ ठा दशमिक क्रम।

युग्लेन्स रिजिया या नक्स-युग्लेन्स।
(JUGLANS REGIA or NUX JUGLANS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मुंहासे ; मलद्वारमें जलन ; बगलकी गांठमें पीव ; उपदंश ; आँखमें दर्द ; आध्मान ; सर दर्द ; रजस्राधिक्य ; प्लीहामें दर्द ; दादकी तरह दर्द वगैरह बीमारियोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इससे नाना प्रकारके चर्मरोग उत्पन्न हो जाया करते हैं, जैसे—कानके पीछे चकत्तेकी तरह दाद, बहुत खुजलाहटके कारण रोगीको रातमें नींद नहीं आती, बगलकी गांठमें प्रदाह होकर फोड़ा हो जाता है या उसपर पपड़ी जमा फटा घाव हो जाता है, पहले दाहिनी फिर बायीं बगलमें फोड़ा फैलता जाता है। शरीरमें जगह जगह घमौरीकी तरह बहुत खुजली पैदा होती है। शरीर धोने अथवा खुला रखने मात्रसे

ही खुजली बढ़ जाती ; है गौण उपदंशके उद्भेद, सन्ध्याके बाद शायितावस्थामें मस्तिष्कमें मादकता अनुभव होना और ऐसा मालूम होना मानो शून्य-मार्गसे कहीं उड़ा जाता है ; सभी विषयोंमें असन्तोष या असहिष्णुता प्रकट होती है और मनोवृत्तियाँ एकदम आलस्यपूर्ण या जड़ हो जाती हैं। माथेमें, विशेषकर ललाटमें (;माथेके पिछले भागमें—युग्लेन्स सिनारिया) तेज अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द। रमणके बाद पुंजननेन्द्रियमें प्रदाह और त्वचाका क्षय हो जाना ; जरायुसे गहरे लाल रंगके जमे खूनका स्राव, पित्तमिला उदरामय। उदर आध्मान-वायुसे फूल जाता है और उसमें उत्तेजना ; पाचन क्रियामें विकार और उसके साथ ही सहानुभूतिकी वजहसे शरीरके अन्यान्य अंशोंकी बीमारियाँ वगैरह युग्लेन्स-रिजियाकी प्रधान क्रिया-निर्देशक है।

लक्षणावली।

मन।—सन्ध्याके बाद सोनेके समय माथेमें नशा-सा मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है कि मानो माथा शून्यमें उड़ रहा है। रोगी संध्याके समय अत्यन्त असन्तोष और असहिष्णुता प्रकट करता है। ज्यादा बोलना पसन्द नहीं करता ; पढ़नेमें अमनोयोग।

मस्तक।—ललाटमें अस्त्र-वेधनेकी तरह तेज दर्द (सरके पिछले भागमें युग्लेन्स-सिना)। माथा और नाकमें सर्दीकी पूर्वावस्थाकी तरह अनुभव होना। हाथ पैर ठण्ढे और माथेमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप। आँखके ऊपरी प्रदेशमें दर्द, शरीर, माथा या आँख हिलानेपर बढ़ना,—औंघाई और बार बार जम्हाई,इसके साथ ललाटमें तेज दर्द, कानपटीमें टपक, निर्मल वायु लगनेपर घटना और गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर फिर बढ़ जाना। माथेके बाएँ पार्श्वमें अधकपारीके दर्दकी तरह दर्दकी वजहसे रोगी बोल नहीं सकता।

अंत्राशय आदि।—पाकाशयमें पूर्णता और सूजनकी वजहसे रोगी भरपूर भूख रहनेपर भी खा नहीं सकता, डकार आनेपर घटना। भोजनके बाद तेज हिचकी। उदर आध्मान वायुसे भरा, कड़ा और भारी मालूम होता है और बार बार मलवेग, डकार और वायु निकलने बाद आराम मालूम होता है, उदरमें दबाव और खोंचनकी तरह दर्द, शरीर हिलाने पर बढ़ जाता है, और रजःस्राव आरम्भ होनेपर घटता है ; इसके बाद आठ दिनोंतक बहुत ज्यादा परिमाणमें काली आभा लिये खूनका स्राव हुआ करता है, कभी

कभी थक्का थक्का खून-मिला स्राव,—रोगिनी बहुत सुस्त हो पड़ती है और किसी खाद्य-पदार्थ पर उसकी रुचि नहीं रहती। प्लीहा प्रदेशमें दबाव और खींचन की तरह दर्द—लम्बी सांस लेनेपर, हँसने या झुकनेपर दर्द बढ़ जाता है।

मलान्त्र और मल।—पतला पाखाना,—उदरमें दर्दके साथ पहले बड़ा कोमल, इसके बाद पतला पाखाना होता है। लम्बा लेंड पाखाना होनेपर मलद्वारमें भार और जलन। संध्याके समय शायितावस्थामें मलद्वारमें खुजली और सुई बेधनेकी तरह मालूम होनेकी वजहसे रोगी सोया नहीं रह सकता और इसी वजहसे घरमें टहला करता है।

पेशाव।—दिन रात बार बार पेशावका वेग और प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब निकलता है (स्क्विला ; नक्स), बहुत अधिक पेशाब होनेपर भी प्यास न रहना। गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय।—स्त्रीके साथ रमणके बाद शिश्नमें जलन और मेढ़्-त्वचा और लिङ्गमुण्डके संयोगस्थलकी त्वचा क्षय हो जाती है। इस स्थान-पर क्रमसे पीव संचय होकर जख्म हो जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—नियमित समयके १५ दिन पहलेसे आरम्भ होकर ८ दिनोंतक स्राव हुआ करता है और कभी कभी काला थक्का थक्का खूनका स्राव होता है,—स्रावके पहले उदरमें बहुत दबाव और खींचनकी तरह दर्द मालूम होता है और स्राव हो जानेपर रोगिनी बहुत सुस्त हो पड़ती है और किसी तरहकी खाद्य सामग्रीपर उसकी रुचि नहीं रहती।

त्वचा।—कानके पीछे लाल चकत्तेकी तरह दाद, खुजली रातमें इतनी अधिक बढ़ जाती है कि रोगी सो नहीं सकता। बगलकी गांठें फूलकर फोड़ेमें परिणत हो जाती हैं (हिप)। बाहु और बगलमें फटे घाव पैदा हो जाते हैं,—पहले दाहिने फिर बाएं भागपर रोगका आक्रमण होता है। गर्दनके पिछले भागमें लाल वर्णकी तरह चकत्ते। खुजलानेपर उनसे रस बहता है (सेलिन), उद्भेद आदिको धोनेपर या शरीर खोल रखनेपर खुजली बढ़ जाती है। खुजलानेवाले दाने सब, उनमें पीव पैदा होनेके कारण फोड़े बन जाते हैं। कन्धा और यकृत प्रदेशमें रक्त, फोड़ा, वातकी वजहसे गांठोंका फूलना, उपदंशके पाराविष दूषित तथा वातसे उत्पन्न फोड़े और दाद प्रकट हो जाते हैं। दाहिनी बगलमें पहले जलन, त्वचा जख्म भरी और फटी फटी और

क्रमसे लाल पपड़ोसे ढक जाती है और इसके बाद उनमें रस मिलकर वस्त्र आदिमें लगनेपर हरी आभा लिये पीला दाग पड़ता है तथा जिस स्थानपर वस्त्रमें लगता है वह सूखकर कड़कड़ करता है। इसीलिये बगलमें कभी कभी इतना दर्द होता है कि उस हाथसे किसी तरहका काम नहीं किया जाता। दाहिनी बगलसे जखम क्रमसे बायीं बगलमें पैदा होते हैं।

वृद्धि।—शरीर हिलाने, बोलने, हंसने, जखम आदि धोनेपर, संध्या और रातके समय और शरीर खोल रखनेपर।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष या दोषघ्न**।—रास।

सदृश।—ग्रुग्लेन्स-सिना, ग्रेफ, रियुमेक्स, मेजेर इरैप्स, लाई, सल्फ, स्टफ्होलिया रोब।

तुलनीय।—रासटक्स (त्वचा); ग्रेफाइ (दादकी तरह चकत्ते); सियोनोथ (प्लीहा); लाइको (पेटमें वायु)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ रा दशमिक क्रम।

जङ्कस एफ्यूसस।
(JUNCUS EFFUSUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़से मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार दर्द।—दमा; कमरमें दर्द; अश्मरी या पथरी; सर्दी; शोथ; पेट फूलना; सर दर्द; वात और मूलग्रन्थिकी बीमारीमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—यह पेशाब लानेवाली एक खास दवा है और पेशाब रुकना; पेशाबमें तकलीफ; पथरी; और मूल-ग्रन्थि वा मसानेकी बीमारीमें विशेष [illegible] ही स्थानोंमें बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज [illegible] रह आध्मान वायुकी आवाज, छातीमें दबाव [illegible] दर्द आदि कई एक इसके [illegible] हैं। बहुत घनिष्टता दिखाई [illegible] इसके

प्रकट होते हैं। रास्टक्सकी तरह इसका वातका दर्द भी विश्रामसे बढ़ता है और रास्टक्स तथा नक्सकी तरह शरीरके वस्त्र उतारनेपर जाड़ा बढ़ जाया करता है, वायु छूटनेपर पेट फूलना घट जाता है।

लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—स्थिर रहनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसके चारों ओरकी चीजें सब चक्कर खा रही हैं; चलनेके समय सरमें चक्कर आनेके साथ ही साथ मिचली। सरमें दर्द,—सर झुकानेपर ऐसा मालूम होता है कि माथा बीचसे फट जायगा। सवेरे शय्यासे उठ बैठनेपर ललाट और माथेके पिछले भागमें छेदनेकी तरह दर्द, रोगवाले अंशमें पीव जमा हो गया है, ऐसा मालूम होता है। कुछ देरतक सोनेपर दर्द एकदम गायब हो जाता है। कपालके पिछले भागके दाहिनी ओरसे दाहिने कानतक भीतर बुलबुले फूटने जैसी आवाज आती है।

आँख।—पलकोंकी बगलमें खुजली (नक्स, स्टेफाई); मलनेपर बन्द हो जाती है (आँखें मलनेपर धुंधली दृष्टिका घटना=क्रोकस, पल्स)

मुँह और गलेके भीतर।—सवेरे मुंहके बाएँ कोनेके ऊपरी अंशमें सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द होता है, मानो उसमें एक तेज काष्ठ-शलाका (सींक) गड़ रही है। दाहिनी हनु-सन्धिमें बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज सुन पड़ती है और ऐसा मालूम होता है मानो उसका भीतरी अंश फूल गया है। जीभपर सफेद पीला लेप चढ़ा रहता है और दोपहरके भोजनके बाद मुंहमें गोंदकी तरह स्वाद मालूम होता है। निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो गलेकी ग्रन्थियाँ दोनों फूल गयी हैं। बिना खाँसे ही बहुत ज्यादा परिमाणमें पीला बलगम निकलता है।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—उदरका ऊपरी भाग फूल उठता है। लगातार पेट गड़गड़ानेके कारण रोगीको बाध्य होकर पाखाना जाना पड़ता है; पर जरा भी पाखाना होनेके बदले जोरसे वायु निकलती है। उदरके दाहिने पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है मानो फोड़ा निकलना चाहता है। मलान्त्रमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। छोटी छोटी कोमल गुटिकायें निकलती हैं।

पेशाब ।—मूत्रनालीमें जकड़ जाने या सट जानेकी तरह मालूम होता है और ऐसा अनुभव होता है कि उसमें कोई सजीव पदार्थ है। मूत्र कीचड़ भरे पानीकी तरह ; उसमें लाल रङ्गकी तली जमती है। मूत्रकृच्छ्र ; मूत्राश्मरी ।

प्रत्यङ्गादि ।—त्रिकोण पेशीका फड़कना या सिकुड़ना फैलना दिखाई देता है। लिखनेके समय बाएँ हाथमें ऐंठनकी तरह दर्द । चलनेके समय बाएँ उरुमें खींचन होती है, मानो कण्डराएँ सब सिकुड़कर छोटी होती चली जाती हैं (ऐमोन-म्यूर, कास्टि, साइमेक्स, गुयायेक, नेट्र-कार्ब) । शरीरके बाएँ पार्श्वमें ही दर्द ज्यादा होता है। नितम्ब स्थानकी पेशीका सिकुड़ना और फैलना मानो उसमें कोई सजीव पदार्थ हिल रहा है (क्रोकस-सैट)। जंघाकी पोटलीकी पेशीके भीतर बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज होती है। दर्द रातके समय बढ़ता है और सवेरे और सन्ध्याके समय फिरसे पैदा हो जाया करता है। रोगवाले अङ्गको मोड़ने या पार्श्वकी ओर टेढ़ा करनेसे दर्द बहुत बढ़ जाता है और फैलानेपर घट जाता है। सवेरे उठनेके समय बहुत जाड़ा मालूम होता है और ओढ़ना उतारनेपर जाड़ा बहुत ही बढ़ जाया करता है। पुराने नश्तरके जखमके भीतर खुजली और ऐसा मालूम होता है कि फिरसे जखम पैदा हो जायगा (ऐसिड-फ्लू, साइलि, ग्रैफ)

सम्बन्ध ।—सदृश ।—तुलनीय ।—रास्टक्स (विश्राम और ओढ़ना उतारनेपर बढ़ना); बार्बेरिस (फूटन मालूम होती है) साइलि (दाग) इत्यादि। रास्टक्स, बार्बेरिस, रियुम, स्क्विला, :(बुलबुले फूटनेकी आवाज) ; ऐसिड-फ्लू, साइलि, नक्स-वोम ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न क्रम ।

जूनिपेरस कम्युनिस।

(JUNIPERUS COMMUNIS)

दूसरा नाम।—जुनिपर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पके फलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मसानेकी बीमारीके कारण शोथ, कष्टरजः, बार बार पेशाबका वेग, थोड़ा और खून मिला पेशाब आदि लक्षणोंकी एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—युकैलिप्टस, टेरिबिन्थिना, जूनि-वर्जि-निया, सैबाइना।

शक्ति।—निम्न-शक्ति और क्वाथ।

जुनिपेरस वर्जिनियेनस।

(JUNIPERUS VERGINANUS)

दूसरा नाम।—रेड-सिडर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी फुनगीसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मसानेपर ही इसकी प्रधान क्रिया दिखाई देती है। मूत्राशयमें तेज खींचन, कमरमें खींचन मालूम होनेकी तरह दर्द, मूत्राशय प्रदाह, मूत्र-पिण्डका बढ़ना, जवान आदमियोंका पेशाब रुकनेके साथ शोथ, पेशाब करनेके समय काटने और जलन करनेकी तरह दर्द प्रभृति लक्षणोंमें सुन्दर कार्य करता है।

इसके अलावा संन्यास, आक्षेप जरायुसे रक्तस्राव प्रभृति लक्षणोंमें भी यह सुन्दर कार्य करता है।

सम्बन्ध।—जुनिपेरस-कम्युनिस।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कैलि-ऐसेटिकम ।

(KALI ACETICUM)

दूसरा नाम ।—कैलि-ऐसिटम ; ऐसिटेट आव पोटास ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीमें गलाकर तरल क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐलोपैथ इसे साधारणतः एक पेशाब लानेवाली और कभी कभी विरेचक दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं । होमियोपैथीके मतसे यह बहुत ज्यादा पाखाना होनेके लक्षणमें जैसे हैजा आदि रोगमें और मूत्ररेणु प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है । शोथ, उदरी, फेफड़ेकी आवरक झिल्लीमें जल सञ्चय, उदरामय, क्षारमय मूत्रस्राव प्रभृति लक्षणोंमें इससे बहुत लाभ दिखाई देता है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—ऐसेटिक-ऐसिड, कैलि-कार्ब, ऐमोन-ऐसिड, लाइकी ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैलि-आर्सेनिकोसम ।

(KALI ARSENICOSUM)

दूसरा नाम ।—पोटास आर्सेनाइट ; फाउलर्स-सल्यूशन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले चुआये हुए पानीमें गला लिया जाता है इसके बाद सुरासारमें इसका क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—मसानेकी बीमारियां ; कर्कटका घाव ; बहरापन ; अतिसार ; शोथ ; आंखकी बहुत-सी बीमारियां ; खसड़ा ; विषाद ; व[illegible] चर्मरोग ; जीभकी बीमारी ; गिराका फलना ; [illegible]

उपयोगिता और आभास।—व्रण, विसर्प, विचर्चिका, अकौव वगैरह नाना प्रकारके चर्म्मरोगोंमें फायदेके लिये यह बहुत प्रसिद्ध और इन सब शरीरके दाहिने पार्श्वके चर्म्मरोग केलि-भार्स के (और आर्सनिक एक प्रधान निर्णायक लक्षण हैं, अन्यान्य लक्षणोंमें बाएँ पार्श्वका सर दर्द, माथा बड़ा मालूम होना, आँखके दोनों गोलोंका बाहर निकल आना जीभमें जलन और सुन्न मालूम होना, जीभ बड़ी मालूम होना, उदरो प्रदेशमें मानो एक गोला उठकर श्वासनलीको रोक रहा है, ऐसा मालूम होना लगातार मिचली; पाकस्थली खाली मालूम होना; मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक जलती हुई लोहेकी सलाई घुस रही है, लक्षणोंकी सामयिकता अर्थात बँधे समयपर लक्षण पैदा होना—इत्यादि कई इसके प्रकृति-गत और सिद्धिप्रद लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—कड़वा बोलनेवाला, विमर्ष, असन्तुष्ट और कलहप्रिय स्वभाव (अरम-म्यू, नेट, पेट्रोल, नक्स, लाई, निकोल-कार्ब, रेनान, वेरेट-विरि); सभी विषयोंमें ताच्छिल्य; कोई बात पूछनेपर अकसर जवाब नहीं देता (ऐगार, सेबाड, ऐसिड-सल्फ,—बड़ी अनिच्छासे प्रश्नका उत्तर देता है—केरिका-पेपाया, रास, ऐसिड-सल्फ) या कर्कशभावसे उत्तर देता है (कैमो); दृष्टि स्थिर और डरावनी मुख-भङ्गी;—यह भाव दो दिनका अन्तर देकर दिखाई देता है।

मस्तक।—अपना माथा बहुत बड़ा मालूम होता है (एपियोल, आर्जेण्ट-नाई, पेरिस;—ऐसा मालूम होता है, कि माथा लम्बा हो गया है—हाइपिरिक)। बाएँ पार्श्वका सर दर्द,—मानो इस स्थानपर जखम पैदा हो गया है और कोई उसे हाथसे रगड़ रहा है; यंत्रणाके कारण पागलकी तरह काम करता है। दुधिया फोड़ा (वेरोला-ड्राई, विड्रा-माई, रास-विन, लाई, सिपि, सोरिन)।

आँख।—भय-चकित दृष्टि, आँख मानो धक्का देकर बाहर निकली आ रही है; आँख चकाचौंधीभरी, चेहरा म्लान, रक्त शून्य और दोनों गाल गड्ढेमें धँसे। आँखकी सफेद झिल्ली मोटी और पीले रंगकी दिखाई देती है—पाण्डुरोग, आँख पानीसे भरी—मानो न जाने कितना रोया है (क्रोकस)।

मुख-विवर आदि ।—मसूढ़े फूले और दर्द भरे। जीभ साफ और लाल,—कच्चे मांसकी तरह (केलि-बाई, नेट्र, आर्स) मालूम होती है। जीभ के अगले भागके कुछ नीचे एक चिकनी लाल फुन्सी पैदा होकर बहुत जला करती है और जीभमें सुन्नपन पैदा करती है। जीभ फूल उठती है और बहुत बड़ी मालूम होती है (हाइड्रेस, केलि-बाई, केलि-आयोड, नेट्र, आर्स) गलेमें और स्वरनलीके मुंहपर दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो टूट जायगा। लगातार बहुत ज्यादा लार बहा करती है और गलनलीमें संकोचन मालूम होता है। चिबुकके ऊपर पपड़ी उजड़नेवाला जखम पैदा हो जाता है।

पाकस्थली ।—भोजनके बाद दर्द और मिचली ; बार बार अजीर्ण पदार्थोंका वमन। भोजनके बाद पेटमें भार मालूम होना, दो घण्टे तक ऐसा मालूम होना मानो एक गोला पाकस्थलीसे वायुनलीके मुंहपर चढ़ जाता है और इसी वजहसे सांस रुकना चाहती है। जोरसे वायु छूटनेपर घटना। उदरके ऊपरी भागमें खालीपन और सुस्ती मालूम होना। लगातार मिचली, पेटमें कुछ नहीं रहता।

अन्त्राशय ।—तलपेटमें जलन, तेज प्यास ; पेट फूलनेकी वजहसे कड़ा और दर्द भरा हो जाता है। अनजानमें पानीकी तरह मल निकलना, और ऐसा मालूम होना मानो मलद्वारमें एक गर्म लौह शलाका प्रवेश कर रही है। उदरमें लगातार मोच खानेकी तरह दर्द और बार बार मलका वेग हुआ करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायु-द्वारमें फूलगोभीकी तरह या मुर्गेकी पूँछकी तरह उपमांस पैदा होता है। चारों ओर दर्द फैल जाता है और जरायुसे सड़ी गन्ध-भरा स्राव निकला करता है। ऋतु और स्तनका दूध रुक जाता है। बहुत अधिक कमजोरीकी वजहसे रोगिनी शय्यासे उठकर बैठ नहीं सकती, किसी तरहकी ऊँची आवाज सुननेपर उसका सारा शरीर काँपा करता है।

त्वचा ।—शरीरकी त्वचा रुखड़ी ; शरीर कंकाल-सार। समूचे चेहरे पर विसर्प, कई दिवस बाद उससे रूसीकी [illegible] छाल [illegible] है। रस-गुटी या मसूरिकाकी तरहके [illegible] दाने निकलना। माथेके अलावा सारे [illegible]

तरह निकलते हैं; इसके बाद उनमें पीव संचय होता है और दानोंसे पीव या रस निकला करता है—और फटे घावमें परिणत हो जाता है। इन सब जगहोंमें असह्य खुजली रहती है और डङ्क मारनेकी तरह और जलन पैदा करनेवाला दर्द पैदा हो जाता है,—खासकर कपड़े उतारनेके समय,—देह-काण्डमें, दोनों पैरोंमें और दोनों बाहुओंके अगले आधे भागमें यह ज्यादा हुआ करता है। शैवालिका या आपसमें मिली हुई घमौरी,—चेहरा, हाथ और तलवा तथा वक्षस्थलके कुछ अंशोंके अलावा समूची देह घमौरीसे भर जाती है। तन्तुओंको क्षय करनेवाला जखम,—गहरा और घूमा हुआ पार्श्व; हाथ पैरके गांसोंकी त्वचा फटी हुई, (वात-गुटिका=केलि-आई. कैलि-आयोड)। वातकी वजहसे और उपदंशसे पैदा हुआ दर्द। पाण्डु-रोग, आंखकी सफेद त्वचा पीली हो जाती है (चेलिडो, मार्क, कैमो, क्रोटेल, फास)।

सम्बन्ध। सदृश।—तुलनीय।—नैट्र-आर्स, सोरिन, चायना, (सामयिकता); साइक्यूर (आंखकी गोलेकी स्थिरता); लोरो, लैके, ओपी, युग्लैन्स-रिजो, केलि-बाई, आयोड, लेपिस, एल, मार्क-कोर मेजीर, एसिड-नाई।

दोषघ्न।—"आर्सेनिक" सदृश।

शक्ति।—३ रे दशमिकसे २०० शततमिक।

कैलि बाइक्रोमिकम।

(KALI BICROMICUM)

दूसरा नाम।—बाइ-क्रोमेट आव पोटास।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण और चुआये हुए पानीमें द्रव या तरल क्रम। इसके बाद उच्च क्रम सब सुरासारमें तैयार होते हैं।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—संहासे; खूनकी कमी; दमा; हड्डीमें नाना प्रकारकी गोटियां; श्वासनालीप्रदाह; काली खांसी; दाद; सर्दी; निम्न कटिका शूल; चोलोंका प्रदाह; कटिप्रदाह; आंखके श्वेत आवरणका मैलापन; आंतोंमें जखम; अजीर्ण; कर्ण-प्रदाह;

दुबलापन ; मृगी ; नाकसे रक्तस्राव ; आँखकी पुतलीका प्रदाह ; पाकाशयका जखम और प्रमेह ; वात ; सर दर्द ; सविराम ज्वर ; कटि-वात ; खसड़ा ; खसड़ाके बाद वाली खाँसी ; कानका दर्द ; स्नायुशूल ; छाती दबनेकी बीमारी ; नाकमें दबावकी तरह दर्द ; जखम ; नकसीर ; नाकमें पालीपस या अर्बुद ; योनिके बाहरी भागमें खुजली ; आमवात ; गृध्रसी या पैरका झुनझुनीवाला वात ; गण्डमाला ; सूंघनेकी शक्तिमें भ्रम ; सूर्योदयके साथही साथ सर दर्द बढ़ जाना ; उपदंश ; गलेका जखम ; गलेमें केश रहनेकी तरह मालूम होना ; तम्बाकूका सहन न होना ; स्वरनालीका प्रदाह, या जखम ; मसे ; हूपखाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और अभास ।— नीचे लिखे कई इसके प्रधान और अव्यर्थ लक्षण हैं,—(१) मांसल—मोटा ताजा ; गोरा रङ्ग । कोमल देह, उपदंश और श्लेष्मामय दोषवाले मनुष्योंके लिये यह विशेष उपयोगी है। (२) इसके सभी श्लेष्माके स्राव बहुत गाढ़े, लसदार या रबरकी तरह होते हैं ;—यह स्राव वायुनली, नाक, जरायु या जखम, जहाँ कहींका हो, ऐसा ही होता है। (३) इसके जखम सब रोगवाले अंशको छेद देते हैं ; (४) सर दर्द,—मानसिक चक्षुके ऊपरके और माथेके दाहिनी ओरके अंशपर ही अधिकांश स्थानोंमें इसका आक्रमण हुआ करता है, दर्द आरम्भ होते ही आंख से दिखाई नहीं देता और दर्द बढ़नेके साथ ही साथ दृष्टि-शक्ति फिरसे लौट आती है। (५) पैत्तिकता या पित्ताधिक्य,—शरीरकी त्वचाका रंग पीला और फुन्सियोंसे भरा,—जीभ मैलसे ढकी और जगह जगहपर सफेद और कितनी ही जगह लाल। कूथनके साथ सवेरेके समय पानीकी तरह पतले दस्त। (६) आँखके सफेद आवरणको फाड़ डालनेवाला जखम। (७) दोनों गल-ग्रन्थियाँ फूलीं और जखम भरीं और उनसे पीवकी तरह रसका स्राव होता है। जीभकी जड़का स्थान पीले रंगका और वहाँसे इसीकी प्रकृतिका स्राव होता है ; उपजिह्वा फूलकर एक थैलीकी भांति हो जाती है। (८) रोहिणी या नकली झिल्ली पैदा हो जानेका लक्षण। उपझिल्लीका प्रदाह,—जीभ पीले लेपसे ढकी या सूखी और लाल,—नकली [illegible] सूत्रमय और उसका रंग कौतीकी तरह सफेद, [illegible] फैलनेवाली (६) नाककी जड़में दबावकी [illegible] तरह श्लेष्माका स्राव और जमा हुआ [illegible] हैं ।

आकां स्राव रुकनेपर सरके पिछले भागसे ललाटतक भयानक दर्द पैदा जाता है (१०) पाकाशयका गोल जखम,—गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा र रक्तका वमन ; भोजनके बाद पेट फूलना। (११) शरीरकी अंगुलीसे ाले भागके एक परिमित स्थानमें दर्द,—यह दर्द तेजीसे एक स्थानसे रे स्थानपर चला जाता है और एकाएक पैदा होकर एकाएक ही गायब हो ता है। (१२) वात-वेदना और रक्तामाशय पर्यायक्रमसे पैदा होते हैं—एकके ोपके समय दूसरा रुका रहता है। इसका दर्द तेजीसे जगह बदला करता और एकाएक पैदा होता है और हठात ही गायब भी हो जाता है।

लक्षणावली।

मन।—मनुष्य पसन्द नहीं करता ; सभी विषयोंमें ताच्छिल्य प्रकट रता है ; बहुत शिथिलताका भाव ; शारीरिक और मानसिक परिश्रम रनेकी इच्छा न रहना ; सामान्य विरक्ति मालूम होनेपर पाकस्थलीमें ड़बड़ी मालूम होनेके साथ ही उदासी और दुःखित भाव प्रकट करने गता है।

मस्तक।—एकाएक आसनसे उठनेपर सरमें चक्कर आ जाया करता । सरमें चक्कर,—शय्यामें उठ बैठनेपर घर घूमता हुआ सा मालूम होता —इसके बाद सोनेपर सरका चक्कर बढ़ जाता है और ओकाई आने लगती (उठनेके समय, माथा झुकाने या ऊपरकी ओर देखनेपर = पोडो, पल्स— ाड़ीमें सवारी करनेके समय = काक्यु, हिप, सोनेके समय या करवट बदलने े समय = कोना,—सर उठानेपर = सिक्की,—सीढ़ी चढ़नेके समय—कैल्के,— उतरनेके समय = फेरम)। सर दर्द आरम्भ होनेके पहले ही आँखसे दिखाई नहीं देने लगना (जेलुस, लैक-डिफ्लो) ; रोगीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है। रोशनी और शब्द बहुत ही विरक्तिकर मालूम होते हैं : दर्द बढ़नेके साथ ही साथ दृष्टि-शक्ति फिरसे लौट आती है (आइरिस, साइलि- सिया, नेट्र-म्यूर, सोरिन, लैक-डिफ्लो)। दाहिनी ओरके चक्षुगोलकपर दर्द बराबर समयका अन्तर देकर पैदा होता है। नासा-मूलसे बाई आँखके ऊपरवाले स्थानतक फैलनेवाला डंक या काँटा गड़नेकी तरह भयंकर दर्द— इसके साथ ही दृष्टि-लोप,—दर्द सवेरे आरम्भ होता है), मध्यान्हमें बढ़ जाता है और सन्ध्यामें आराम हो जाया करता है। बराबर समयका अन्तर देकर

पैदा होनेवाला अर्द्ध-अवभेदक या अधकपारीका दर्द, अंगुलीके अगले भाग द्वारा उसे दबा रखता है इतने छोटेसे स्थानमें दर्द होता है। ललाट-देशका सर दर्द,—बाईं भौं पर ही ज्यादा होता है। (मिचली और वमनके साथ दाहिनी भौं पर=सेङ्गिविन)। सर्दी रोगाधिकारमें नाकका स्राव रुके रहनेकी वजहसे सरके पिछले भागसे ललाट देशतक भयानक दर्द मालूम होता है (सिङ्कोन, नक्स-वोम) मूर्द्धादेशमें मानो एक भारी चीज दबाई हुई है, ऐसा दबाव मालूम होना (ऐलो, कैनाब-सेट, कैक्ट—ललाट में इस प्रकारका दबाव मालूम होना=ऐको, बैल, नक्स, सल्फ)। मध्यान्ह भोजनके कुछ ही बाद, अक्षि प्रदेशमें भार मालूम होना और टपक पैदा करनेवाला दर्द आरम्भ हो जाता है, ऐसा मालूम होता है मानो माथा दो हो जायगा। शय्या या तकिया किसी चीजपर भी माथा रगड़ने या निर्मल वायुके स्पर्शसे दर्दमें शान्ति मालूम होती है और शरीरको हिलाने या माथा झुकानेपर बढ़ जाता है। सूर्यके उदय अस्तके साथ सरका दर्द पैदा हो जाता है, बढ़ता है और अच्छा भी हो जाया करता है (फास, स्पाइजि, सेङ्गिविन, नेट्र-मूर, टेबाक)। गर्म शोरवा पीने, रगड़ने, निर्मल वायु लगने और भोजन कर लेनेपर इससे पैदा हुआ सर दर्द घट जाता है; माथा झुकाने; शरीर हिलाने या रोगवाली जगह दबाकर सोनेपर घटना (ब्राई, हिपोमेनिस) और रातमें वृद्धि। रोज ठीक समयपर सर दर्द पैदा हो जाता है (नक्स, सल्फ)।

आँख।—नींद खुलनेपर ऊपरी पलक बहुत भारी मालूम होती है,—बहुत चेष्टा किये बिना आँख खुली नहीं रखी जा सकती (कोलोफिल, कास्टि, जेल्स, ग्रेफ, सिपिया)। पलकोंमें जलन और प्रदाह तथा बहुत सूजन रहती है। आँखके बगलमें लाल दाने निकलते हैं। पलक फूली सी मालूम होती है (एपिस, केलि-कार्ब)। आँखमें जलन मालूम होती है और बार बार आँख मलनेकी इच्छा होती है; चक्षु-प्रदाह। सवेरे नींद खुलनेपर आँखें सट जाती हैं और आँखका कोना पोला रहता है और उसमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा संचित रहा करता है। पलकमें नया और बड़ा मांसांकुर पैदा हो जाता है (ऐकोन, आर्स, ग्रेफ, मार्क-कोर, सिङ्गिविन) ऊपरी पलकपर एक बहुत [illegible] वती [illegible] जाती है (ऐसिड-नाई, थूजा), आँख हिलानेपर [illegible] है,—मानो उसमें

बालूके धारदार कण सम पड़े हुए हों (आर्स, कार्बो-वेज, कोरैल-रूव, डिजि, हयुम, ऐसिड-फ्लू, हिप, साइलि, सल्फ) वातकी वजहसे आंखकी श्वेत त्वचा और उपतारकाका प्रदाह, इसके साथ ही बहुत अधिक यंत्रणा और रोशनीका सहन न होना। उपतारका प्रदाहकी परिणामावस्थामें कांटा या डंक मारने की तरह जगह बदलनेवाला;बहुत तेज दर्द,—बाई आंखमें अधिक मालूम होता है, कनीनिकाके चारों ओरकी त्वचा फूल जाती है और प्रदाहकी अपेक्षा रोशनीका भय बहुत अधिक हो जाता है। स्वच्छावरकके ऊपर जखम पैदा होकर उसमें छेद हो जानेका उपक्रम हो जाता है। सफेद झिल्ली मैली, हरे रँगकी, फूली और पीले भूरे विन्दुसे भरी। केवल दिनकी रोशनीका सहन न होना ; आंख खोलनेपर पलक हिला करती है। जलन और आंसु-ओंका स्राव ; धुंधली दृष्टि ; सभी चीजें पीली दिखाई देती हैं (कैन्थ, डिजि, सैण्टोनिन, सिना, साइक्लेम,—सफेद रंगकी मालूम होना=कैरोल,—रातमें भी=इलैप्स)। गण्डमाला दोषकी वजहसे या प्रमेहदोषकी वजहसे आंखका प्रदाह—धीरे धीरे बढ़नेवाला;—कोनेमें बहुत दर्द मालूम होता है। आंखके चारों ओर दाने निकलते हैं, चारों पलकोंका आपसमें मिल जाना और फूलना और सफेद त्वचाका पीला हो जाना। पीब पैदा होनेवाले आंखोंके प्रदाहके साथ कनीनिकाका मोटापन और लालीकी वजहसे सभी चीजें लाल दिखाई देती हैं। खुजलानेके साथ स्वच्छावरक प्रदाह—स्वच्छावरकका';बिचला अंश मैला गदला हो जाता है,—उपदंश विष दूषित धातुवाले व्यक्तियोंको (मार्क-कोर) ऐसी ही बीमारी।

कान।—बाएं कानसे मुख-विवरकी ऊपरी अंशतक जानेवाला बहुतही तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द, (दाहिने कानमें=ऐसिड नाई)। मुख-विवरसे गाढ़ा गोंदकी तरह और पीले रंगका तथा सड़ी गन्ध भरा स्राव (बेल,—खसड़ाके बाद=पल्स,—दूधिया पपड़ी रुक जाने बाद=सल्फ)। कर्णमूल ग्रन्थिका फूलना और लचीलापन न रहना।

नाक।—नासारन्ध्र बहुत सूखा (ऐसिड-नाई, ग्रैफ,—नासारन्ध्र क्षय हुई त्वचा और पपड़ीसे ढका=कैलके, ऐसिड-नाई, सिलि)। नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह, हरा और सड़ी गन्ध मिला श्लेष्माका स्राव (ग्रैफ, मार्क, हाय) पीला, बदबूदार स्राव (अरम-म्यू, पल्स)। नासा-रन्ध्रसे सूखा और कड़ा

पैदा होनेवाला अर्द्ध-अवभेदक या अधकपारीका दर्द, अंगुलीके अगले भाग द्वारा उसे दबा रखता है इतने छोटेसे स्थानमें दर्द होता है। ललाट-देशका सर दर्द,—बाईं भौं पर ही ज्यादा होता है। (मिचली और वमनके साथ दाहिनी भौं पर=सेङ्गिविन)। सर्दी रोगाधिकारमें नाकका स्राव रुके रहनेकी वजहसे सरके पिछले भागसे ललाट देशतक भयानक दर्द मालूम होता है (सिङ्कोन, नक्स-वोम) मूर्द्धादेशमें मानो एक भारी चीज दबाई हुई है, ऐसा दबाव मालूम होना (ऐक्रो, कैनाब-सेट, कैक्ट—ललाट में इस प्रकारका दबाव मालूम होना=ऐक्रो, बेल, नक्स, सल्फ)। मध्यान्ह भोजनके कुछ ही बाद, अक्षि प्रदेशमें भार मालूम होना और टपक पैदा करनेवाला दर्द आरम्भ हो जाता है, ऐसा मालूम होता है मानो माथा दो हो जायगा। शय्या या तकिया किसी चीजपर भी माथा रगड़ने या निर्मल वायुके स्पर्शसे दर्दमें शान्ति मालूम होती है और शरीरको हिलाने या माथा झुकानेपर बढ़ जाता है। सूर्यके उदय अस्तके साथ सरका दर्द पैदा हो जाता है, बढ़ता है और अच्छा भी हो जाया करता है (फास, स्पाइजि, सेङ्गिविन, नेट्र-मूर, टेबाक)। गर्म शोरबा पीने, रगड़ने, निर्मल वायु लगने और भोजन कर लेनेपर इससे पैदा हुआ सर दर्द घट जाता है ; माथा झुकाने; शरीर हिलाने या रोगवाली जगह दबाकर सोनेपर घटना (ब्राई, हिपोमेनिस) और रातमें वृद्धि। रोज ठीक समयपर सर दर्द पैदा हो जाता है (नक्स, सल्फ)।

आँख।—नींद खुलनेपर ऊपरी पलक बहुत भारी मालूम होती है,—बहुत चेष्टा किये बिना आँख खुली नहीं रखी जा सकती (कोलोफिल, कास्टि, जेल्स, ग्रेफ, सिपिया)। पलकोंमें जलन और प्रदाह तथा बहुत सूजन रहती है। आँखके बगलमें लाल दाने निकलते हैं। पलक फूली सी मालूम होती है (एपिस, केलि-कार्ब)। आँखमें जलन मालूम होती है और बार बार आँख मलनेकी इच्छा होती है ; चक्षु-प्रदाह। सवेरे नींद खुलनेपर आँखें सट जाती हैं और आँखका कोना पोला रहता है और उसमें गाढ़ी गोंदकी तरह श्लेष्मा संचित रहा करता है। पलकमें नया और बड़ा मांसांकुर पैदा हो जाता है (ऐकोन, आर्स, ग्रेफ, मार्क-कोर, सिङ्गिविन) ऊपरी पलकपर एक बहुत बड़ी बतौड़ी पैदा हो जाती है (ऐसिड-नाई, थूजा), आँख हिलानेपर उसमें करकराहट हुआ करती है,—मानो उसमें

बालूके धारदार कण मय पड़े हुए हों (आर्स, कार्बो-वेज, कोरैल-रूब, डिजि, ह्युफ्रे, ऐसिड-फ्लू, हिप, मार्क्लि, सल्फ) रातकी वजहसे आंखकी श्लेष त्वचा और उपतारकाका प्रदाह, इसके साथ ही बहुत अधिक यंत्रणा और रोशनीका सहन न होना। उपतारका प्रदाहकी परिणामावस्थामें कांटा या डंक मारने की तरह जगह बदलनेवाला;बहुत तेज दर्द,—भौंह आंखमें अधिक मालूम होता है, कनीनिकाके चारों ओरकी त्वचा फूल जाती है और प्रदाहकी अपेक्षा रोशनीका भय बहुत अधिक हो जाता है। स्वच्छावरकके ऊपर जख्म पैदा होकर उसमें छेद हो जानेका उपक्रम हो जाता है। सफेद भिल्ली मैली, हरे रंगकी, फूली और पीले भूरे बिन्दुसे भरी। केवल दिनको रोशनीका सहन न होना ; आंख खोलनेपर पलक हिला करती है। जलन और आंसुओंका स्राव ; धुंधली दृष्टि ; सभी चीजें पीली दिखाई देती हैं (कैन्थ, डिजि, सेण्टोनिन, सिना, मार्क्लेस,—सफेद रंगकी मालूम होना=कैरोल,—रातमें भी=इलैप्स)। गण्डमाला दोषकी वजहसे या प्रमेहदोषकी वजहसे आंखका प्रदाह—धीरे धीरे बढ़नेवाला;—कोनेमें बहुत दर्द मालूम होता है। आंखमें चारों ओर टाने निकलते हैं, चारों पलकोंका आपसमें मिल जाना और फूलना और सफेद त्वचाका पीला हो जाना। पीव पैदा होनेवाले आंखोंके प्रदाहके साथ कनीनिकाका मोटापन और लालीकी वजहसे सभी चीजें लाल दिखाई देती हैं। खुजलानेके साथ स्वच्छावरक प्रदाह—स्वच्छावरकका बिचला अंग मैला गदला हो जाता है,—उपदंश विष दूषित धातुवाले व्यक्तियोंकी (मार्थी-कोर) ऐसी ही बीमारी।

कान।—बाएं कानसे मुख-विवरके ऊपरी अंगतक जानेवाला बहुतही तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द, (दाहिने कानमें=ऐसिड नाई)। मुख-विवरसे गाढ़ा गोंदकी तरह और पीले रंगका तथा सड़ी गन्ध भरा स्राव (बैल,—खसड़ाके बाद=पलस,—दूधिया पपड़ी रुक जाने बाद=सल्फ)। कर्णमूल ग्रन्थिका फूलना और लचीलापन न रहना।

नाक।—नासारन्ध्र बहुत सूखा (ऐसिड-नाई, ग्रैफ,—नासारन्ध्र क्षय हुई त्वचा और पपड़ीसे ढका=कैलूके, ऐसिड-नाई, सिनि)। नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह, हरा और सड़ी गन्ध मिला श्लेष्माका स्राव (ग्रैफ- [illegible] बास) पीला, बदबूदार स्राव (अरम-म्यू, पलस)। नासा-रन्ध्रसे सूखा

श्लेष्मा खण्ड निकलता है (ऐल्यू, सिपि, साइलि, थूजा)। नाकके भीतरकी हड्डीमें जखम (अरम)। नासारन्ध्रसे बदबूदार स्राव (ऐसिड-नाई, कैल्के; मार्क)। पश्चान्नलीसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्माका स्राव (ग्रैफ, हाइड्रेस्ट)। नासामूलमें दबावकी तरह दर्द (ललाट और नासामूलमें = स्टिक्टा)। सर्दी रोगमें स्राव रुकनेकी वजहसे सिरके पिछले भागसे ललाटतक भयानक दर्द (साइलिसिया), रन्ध्रवाली भेदकास्थिका जखम। इसके साथही खून मिले श्लेष्माका स्राव या छोटासा सूखा कड़ा श्लेष्माखण्डका स्राव होता है (ऐल्यू, सिपि, टियुक्रि)। नयी सर्दीके साथ पतले श्लेष्माका स्राव; संध्याके समय, घरकेबाहरकी हवामें और वायु प्रवाह लगनेपर बढ़ जाता है; सवेरे रुक जाता है और दाहिनी नाकसे खून निकला करता है; निकला हुआ श्लेष्मा ओंठ और नाककी त्वचाको क्षय करनेवाला होता है।

मुखमण्डल।—मुंहकी सभी हड्डियोंमें चोट लगनेकी तरह दर्द। नासामूलसे ऊपरी ओंठमें उपदंशका उद्भेद; नाकके दाहिनी ओर हक रोग। दाहिनी ओरकी कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह। मुखविवर और दोनों ओंठ बहुत सूखे, ठण्डा पानी पीनेपर घटना। मुंहके भीतर गाढ़ी गोंदकी तरह और फेनभरी नमकीन लार एकत्र होती है। जीभ मोटी और प्रसर और उसपर दांतके दाग भरे रहते हैं,—मखमलकी तरह और पीले भूरे लेपसे ढकी (मार्क प्रोटो-आयोड)। आमरक्त रोगाधिकारमें जीभ लाल और चिकनी; सूखी और उसकी पीठ फटी रहा करती है (बेल, रास,—सूखी, कड़ी और कालिमा लिप्त = मार्क)। दोनों ओठोंकी श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर कड़े पार्श्ववाले सब जखम पैदा हो जाते हैं। जीभ दर्द भरे जखमसे पूर्ण; जीभमें डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

गलेके भीतर।—जीभके पिछले अंशमें मानो एक टुकड़ा केश फँसा हुआ है, ऐसा मालूम होना,—पीने या भोजनके बाद यह घट नहीं जाता है। अलिजिह्वा बहुत फूल कर थैलेकी तरह हो जाती है और ऐसा मालूम होता है, कि गलेमें एक खोल अड़ी हुई है (हिप)। उपझिल्ली प्रदाह, जिह्वामूलके बगल बगलवाले दोनों गह्वर, गलग्रन्थि और कोमल तालुके ऊपर कड़ी, मोतीकी तरह चमकीली, सफेद रंगकी और सूत्रमय नकली [illegible] पैदा हो जाती है और यह झिल्ली नीचेकी ओर वायु और [illegible]

दिखाती है (लेक-केन,—ऊपरकी ओर फैलनेवाली=ओम); उपजिह्वा और दोनों गलेकी ग्रन्थियाँ जखम-भरी (एपिस, बेल मार्क, ऐसिड-म्यू); तालुमूलसे पाकस्थली तक जलन-भरी रहती है। मुख और गलेके भीतरसे निकला हुआ गाढ़ा और डोरीकी और गोंदकी भांति श्लेष्मा—खींचने पर बढ़ता है और मुंहसे जमीनतक झूला करता है। जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वरमें गहरा जखम उत्पन्न हो जाता है,—अधिकांश स्थानोंमें उपदंश-विषका दोष वर्त्तमान रहता है।

पाकस्थली।—बियर नामक शराब और चीजें पीने तथा खानेकी इच्छा; मांससे अरुचि। बियर सेवनकी वजहसे पाकाशयकी बीमारियाँ,—अरुचि, उदरके ऊपरी प्रदेशमें भार मालूम होता है; पाकस्थलीमें आध्मान,—भोजनके बाद ही बढ़ जाता है; पाकाशयमें एक तरहका गोल जखम (जिमोक्ले, काण्डू, आर्जेण्ट-नाई)—और गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा मिली खूनकी कै। भोजनके बाद खाये हुए पदार्थ आदिसे पाकस्थलीके भीतर पत्थरकी तरह भार मालूम होता है (आर्स, ब्राई, मार्क, नक्स, सिपि)। बहुत ज्यादा परिमाणमें पीले रंगके पदार्थकी कै होती है। पाकाशयका दर्द आदि भोजनके बाद घट जाता है। कभी पाकाशयकी बीमारी और कभी वात-व्याधि,—इस तरह पर्यायक्रमसे पैदा हो जाया करती है। एक हेमन्त ऋतुमें और दूसरी बसन्त ऋतुमें पैदा होती है, वात-व्याधि और रक्तामाशय रोग भी पर्यायक्रमसे प्रकट होता है—वातका दर्द घट जाने बाद आमरक्त रोग अच्छा होनेपर वातका दर्द पैदा हो जाता है (ऐब्रोट)। पाकस्थलीके फूलनेकी वजहसे वस्त्र आदिका दबाव सहन नहीं होता (ब्राई, नक्स)

अन्त्राशय।—रातमें अन्त्रशूल और नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। पेटमें थोड़ा भी दबाव सहन नहीं होता। यकृत प्रदेशमें दबाव और सुई बेधनेकी तरह दर्द। प्लीहा प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द,—शरीर हिलाने या दबानेपर बहुत बढ़ जाता है; सुई बेधनेकी तरह दर्द प्लीहाके स्थानसे पीठतक फैल जाता है। उदराध्मान,—समूचा पेट फूल जाता है और डकार आया करती है। उदरसे मेरुदण्डतक फैलनेवाला सुई बेधनेकी तरह दर्द। खानेके कुछ ही बाद उदरमें ऐसा दर्द होता है मानो छुरीसे काटा जा रहा है। पुराना या बहुत दिनोंका आँतोंका जखम

रोगमें (मार्क) ; अजीर्ण खाये हुए पदार्थका वमन। विलेपी या क्षय ज्वर और दुबलापन।

मलान्त्र और मल।—मलका कड़ापन,—मल सूखा, गाँठ गाँठ, इसी वजहसे मलद्वारमें जखम पैदा कर देता है (नेट्र-म्यू , वेरेट), रंग स्लेटके पत्थरकी तरह और खून मिला। सवेरे पतला पाखाना होता है,—बहुत जोरसे पाखानालगनेकी वजहसे नींद खुल जाती है (नक्स-वोम, सल्फ),—मल पानीकी तरह, बहुत वेगसे निकलता है,—पाखाना हो जाने बाद कूथन ; कभी कभी खून मिला मांड़की तरह मल। मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है मानो एक काँटी गड़ी हुई है (ऐनाक, लैके,—मानो एक गोला अड़ा हुआ है= सिपि)। कभी कभी कीचड़की तरह मल भी निकला करता है (बार्बा, जेलूसि, हिप, चेलिडो, आइरिस, लेप्टेन, मार्क्युरि-सेर, ऐसिड-फास, पोडो)। मलद्वारमें जखमकी वजहसे चलनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है।

पेशाब।—पेशाबके समय मूत्रनालीमें गर्मी मालूम होना ; और मूत्रनालीके ग्रन्थिमय प्रदेशमें जलन ; पेशाबके बाद मूत्रनालीके पश्चाद्देशमें जलन और ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें एक बूंद पेशाब रुका हुआ है, पर जोर लगाने और वेग देनेपर निकलता है। बहुत देरतक पेशाब करनेके लिये बैठना पड़ता है, इसके बाद कमरके पिछले भागमें भयानक दर्द मालूम होता है, उठनेके समय यह दर्द बहुत अधिक बढ़ जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—स्थूलकाय व्यक्तियोंमें काम-प्रवृत्ति बिलकुल ही नहीं रहती। रमणके बाद क्रमसे बढ़नेवाला दमा रोग। चलनेके समय मूलाधारकी सुख-शायिका ग्रन्थिमें सुई वेधनेकी तरह दर्दके कारण रोगीको स्थिर होकर खड़े हो जाना पड़ता है। जननेन्द्रियके केश-भरे प्रदेशमें खुजली ; इस स्थानकी त्वचा प्रदाह भरी हो जाती है और उसके ऊपर छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं। उपदंशका गहरा जखम। पुराना प्रमेह,—गाढ़े गोंदकी तरह या मांड़की तरह स्राव, शिश्नके ऊपर सुई वेधनेकी तरह दर्द भरी, और पीव-भरी फुन्सियाँ और उपदंशका जखम आदि निकलता है ; रातमें बढ़ना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—नियमित समयके बहुत पहले पैदा होता है, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना और माथा घूमना ; पेशाब

बकना या लाल रंगका पेशाब ; झिल्ली-मिला बाधक। अपत्य-पथमें घाव हुई लचाकी तरह मालूम होना। प्रदरका स्राव पीला, गाढ़ा गोंदकी तरह ; कमर बहुत क्षीण, उदरके ऊपरी अंशमें धीमा दर्द मालूम होता है। जरायु-भ्रंश।

श्वास-यंत्र।—सन्ध्याके समय स्वरभङ्ग (वेल्के, कार्बो-वेज,—सवेरेके समय=कास्टि, युपेट-पर्फो, फास)। कृत्रिम झिल्ली पैदा करनेवाली घुंड़ी (काली खाँसी=ब्रोम, आयोड),—खाँसीका शब्द टूटा हुआ और कांसेकी तरह ; सवेरे नींद खुलनेपर गाढ़ा गोंदकी तरह या श्लेष्मामय तन्तुकी तरह गलक-मिला कफ निकलता है, इसके साथ ही श्वास कष्टता ; सोनेपर श्वास कष्ट घट जाता है (सोने बाद बढ़ना=ऐरेल, लैके)। खाँसी प्रबल और घड़घड़ शब्द करनेवाली (फास, स्टैफाई) और गलेमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा पैदा होनेकी वजहसे कण्ठरोध होनेका उपक्रम हो जाता है। पहननेके वस्त्र उतारनेके साथ खाँसी बढ़ जाती है (हिप)। स्वरनालीमें सुरसुरी होती है ; प्रत्येक बार साँस लेनेके समय खाँसी पैदा हो जाती है ; सवेरे खाँसीकी वृद्धि, गाढ़ा श्लेष्मा भरा कफ और उसके साथ ही वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; खाँसनेपर वक्षोस्थिमें दर्द मालूम होता है और यह दर्द पीछेकी ओर फैलकर दोनों कन्धोंके बीचमें मालूम होता है। हृत्पिण्ड प्रदेशमें काँटा गड़नेकी तरह दर्द। मोटे ताजे, जिनका मांस झूल रहा हो ऐसे बच्चोंकी नाक रुकना,—नासारन्ध्रसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है। वक्षःस्थलमें दबाव और भार मालूम होना, मानो कोई भारी चीज छातीपर दबायी हुई है। ऐसा अनुभव होनेकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है और शय्यामें उठ बैठनेपर आराम मिलता है। छातीमें बहुत दिनोंका श्लेष्मा-संचय, सवेरे ऐसा मालूम होता है, मानो छातीका भीतरी भाग श्लेष्मासे भरा हुआ है। निकला हुआ श्लेष्मा पीला या पीली आभा लिये हरा और गाढ़ा गोंदकी तरह निकलता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—सामनेकी ओर माथा झुकानेपर गर्दनमें अकड़न मालूम होती है। गले और सरके पिछले भागकी ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं। मसाना या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें तेज डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है (बार्बे)। त्रिकास्थि या नितम्ब (चूतड़) प्रदेशके एक छोटेसे अंशमें ऐसा मालूम होता है मानो फोड़ा हो गया है, इसी तरहका तेज और लगातार होनेवाला टपकका दर्द हुआ करता है, रातमें दर्द बढ़ जाता है और नींद

रोगमें (मार्का) ; अजीर्ण खाये हुए पदार्थका वमन । विलेपी या क्षय ज्वर और दुवलापन ।

मलान्त्र और मल ।—मलका कड़ापन,—मल सूखा, गाँठ गाँठ, इसी वजहसे मलद्वारमें जख्म पैदा कर देता है (नेट्र-म्यू , वेरेट), रंग स्लेटके पत्थरकी तरह और खून मिला । सवेरे पतला पाखाना होता है,—बहुत जोरसे पाखानालगनेकी वजहसे नींद खुल जाती है (नक्स-वोम, सल्फ),—मल पानीकी तरह, बहुत वेगसे निकलता है,—पाखाना हो जाने बाद कूथन ; कभी कभी खून मिला मांड़की तरह मल । मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है मानो एक काँटी गड़ी हुई है (ऐनाक, लैके,—मानो एक गोला अड़ा हुआ है—सिपि)। कभी कभी कीचड़की तरह मल भी निकला करता है (बार्बा, जेल्सि, हिप, चेलिडो, आइरिस, लेप्टेन, माइरि-सेर, ऐसिड-फास, पोडो)। मलद्वारमें जखमकी वजहसे चलनेमें बहुत तकलीफ मालूम होती है ।

पेशाब ।—पेशाबके समय मूत्रनालीमें गर्मी मालूम होना ; और मूत्रनालीके ग्रन्थिमय प्रदेशमें जलन ; पेशाबके बाद मूत्रनालीके पश्चाद्देशमें जलन और ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें एक बूंद पेशाब रुका हुआ है, पर जोर लगाने और वेग देनेपर निकलता है । बहुत देरतक पेशाब करनेके लिये बैठना पड़ता है, इसके बाद कमरके पिछले भागमें भयानक दर्द मालूम होता है, उठनेके समय यह दर्द बहुत अधिक बढ़ जाता है ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—स्थूलकाय व्यक्तियोंमें काम-प्रवृत्ति बिलकुल ही नहीं रहती । रमणके बाद क्रमसे बढ़नेवाला दमा रोग । चलनेके समय मूलाधारकी मुख-शायिका ग्रन्थिमें सुई वेधनेकी तरह दर्दके कारण रोगीको स्थिर होकर खड़े हो जाना पड़ता है । जननेन्द्रियके केश-भरे प्रदेशमें खुजली ; इस स्थानकी त्वचा प्रदाह भरी हो जाती है और उसके ऊपर छोटी छोटी फुन्सियां निकलती हैं । उपदंशका गहरा जखम । पुराना प्रमेह,—गाढ़े गोंदकी तरह या मांड़की तरह स्राव, शिश्नके ऊपर सुई वेधनेकी तरह दर्द भरी, और पीव-भरी फुन्सियाँ और उपदंशका जखम आदि निकलता है ; रातमें बढ़ना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु—नियमित समयके बहुत पहले पैदा होता है, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना और माथा घूमना ; पेशाब

मानो अस्त्रसे काट काटकर घाव बना दिये गये हैं। मसूरिका या चेचककी गोटियोंकी तरह बहुत जलन भरे उद्भेद।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था,—प्यास न रहना; बाहु, कन्धा और पीठ ठण्डी मालूम होती है और कांपा करती है; रोगीको बहुत औंघाई रहती है और शरीरको गर्म जगहमें रखना चाहता है (आर्स, हिप, रास)। जाड़ा मालूम होना,—निचले पैरसे आरम्भ होकर ऊपरकी ओर फैल जाता है; मूर्द्धाकी त्वचामें खींचनकी तरह मालूम होता है। हाथ पैर ठण्डे मालूम होते हैं; उत्तापावस्थामें प्यास,—रातमें सारे शरीरमें उत्ताप और रह रह कर चेहरेमें उत्ताप पैदा हो जाना। पसीनेवाली अवस्था,—स्थिर भावसे बैठने के समय बहुत ज्यादा पसीना होता है। थोड़ा भी शरीर हिलानेपर बहुत ज्यादा पसीना निकलना=ब्राई, सिपि, साइलि, सल्फ)। ललाटके सिवा चेहरेका बाकी अंश सूखा। दोनों बाहु ठण्डे और ठण्डे पसीनेसे भरे (सिकेलि)।

वृद्धि।—शरीर खोलनेपर, भोजनके बाद, छूनेसे, विश्रामके समय, माथा झुकानेपर, बैठनेके समय, जाड़ेके दिनोंमें, सूखी हवामें, गर्म और तर हवामें, (थुजा) और शरीर थोड़ा भी हिलानेपर।

घटना।—शरीर ढँक लेने, मलने, ठण्डी हवामें और रोगवाला अङ्ग संचालन करनेपर।

दोषघ्न।—आर्सेनिक, लेकेसिस (काली खांसी); पल्स।

सम्बन्ध।—सदृश।—आमरक्त रोगाधिकारमें कैन्थरिस या ऐसिड कार्बोलिकके प्रयोगसे मलसे आँतोंका खरोंच निकल जानेपर केलि-बाइक्रोमका प्रयोग करना चाहिये। घुंडी खांसीमें ब्रोमियम, आयोडम और हिपर इसके सदृश हैं। प्रतिश्याय या सर्दीके सम्बन्धमें और चर्म-रोगमें ऐण्टिमटार्ट इसका अनुगामी हो सकता है और नाककी सर्दीमें कल्केरियाके बाद इसका व्यवहार करना चाहिये। इसके अलावा उपदंश-विषसे दूषित रोगोंमें—कैलि-आयोड, ऐसिड नाई, फाइटो; (तेजीसे स्थान बदलनेवाले दर्दमें=कैलि-सल्फ, लैक-कैन, और पल्स);—एकाएक पैदा होनेवाले दर्दमें (ऐसिड-फ्रामिक, बेल, इग्ने, और मैग-फास) रमणके बाद लक्षणोंका बढ़ना (कास्टि, कैलि-कार्ब, स्टैफाइ)—(नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्माका स्राव (ग्रैफ, हाइड्रेस्ट, आइरिस-वार्सि); नासिकामें सूखी पपड़ी निकलना (सिपि, टियुक्रि); झिल्ली [illegible] बाद

में बाधा पैदा कर देता है। दिनमें चलनेके समय आराम मालूम होता है पर रोगी कोई भारी चीज उठा नहीं सकता। त्रिकास्थि प्रदेशमें दर्दकी वजहसे रोगी सीधा खड़ा नहीं हो सकता। मेरुपुच्छमें प्रचण्ड दर्द, सवेरे और और बैठनेके समय, चलने या स्पर्श करनेपर दर्द बढ़ जाता है। बाएँ पृष्ठ-फलकके निचले कोनेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (दाहिने पृष्ठ-फलकके भीतर की ओर निचले कोनेमें लगातार दर्द=चेलिडो)। वात वेदना;-बहुत छोटेसे अंशमें (अँगुलीके अगले भागके सीमाबद्ध स्थानमें) असह्य दर्द मालूम होता है (इग्ने) और एक जगहसे दूसरी जगह तेजीसे चला जाता है (कैलि-सल्फ, लेक-कैन, पल्स) और एकाएक पैदा होता हैं, तथा एकाएक ही गायब हो जाता है (बेल, इग्ने, मेग-फास)। स्नायुशूल नित्य एक ही समय पैदा होता है (सिड्रन ;—रोज तीसरे दिवस सवेरे=कैलि, आर्स)। वात वेदना और पाकाशयिक लक्षण या वात-वेदना और आमाशय पर्यायक्रमसे (ऐब्रोट) पैदा होता है ; हेमन्त ऋतुमें पाकाशयकी बीमारी और वातका प्रकोप हो जाया करता है। दर्द कोनाकोनी भावसे पैदा होता है,—जैसे दाहिने स्तन और बाईं कोहनीमें, बायें हाथके अगले आधे भागमें और दाहिनी ओर माथेके पिछले भागमें ; दाहिने जानु और उरु और बाएँ वक्ष और कन्धेमें ; दाहिनी बाहुके अगले भागमें और बाईं कोहनी इत्यादि (ऊपरी अङ्गके बायें और निम्नाङ्गके दाहिने अंशमें=ऐगार, ऐसिड-टार्ट, स्ट्रैम,—दाहिने अर्द्धाङ्ग और बाएँ निम्नाङ्ग=ऐम्ब्रा, ब्रोम, सिडोरिन, फास, ऐसिड-सल्फ)। सन्धि-स्थानमें, विशेषकर कलाईमें वातका दर्द (ऐसा दर्द मानो सन्धि खिसक गयी है=ब्राई, रियुटा,)। सवेरे उठनेपर सारे शरीरमें वातका दर्द मालूम होता है। सुस्ती मालूम होनेकी वजहसे रोगी हमेशा सोया रहना चाहता है।

त्वचा।—समूची देह गर्म, सूखी और लाल। सूखी खुजलीकी तरह दानोंसे समूची देह ढंक जाती है परन्तु फूटे या फटे विनाही सब दाने विलुप्त हो जाते हैं ; नखकी जड़में छोटे छोटे दाने निकलकर कलाईतक फैल जाते हैं। पीव पैदा होनेवाले दादकी तरह उठे हुए दाने निकलना (कैल्के-मार्क) ; दाहिने पैरके तलवेमें रस भरे दाने या छाले निकलना। अंगुली, नख, और लिङ्ग-मुण्डकी जड़में फटे घाव, शल्क पड़ना या त्वचाको फोड़ देनेवाला जखम,—बगलमें न फैलकर केवल गहरा होता चला जाता है। ऐसे जखम

कि उसकी बुद्धि गड़बड़ हो जायगी। (२) बच्चोंको रातका भय, सपनेमें घूमना, भयानक स्वप्न देखकर उत्तेजित हो पड़ता है। (३) अपस्मार या मृगी रोग; जन्मगत या उपदंश विषसे उत्पन्न या क्षयरोगात्मक; ऋतु होनेके दो एक दिन पहले या शुक्लपक्षके आरम्भमें प्रकोपका बढ़ जाना। (४) पेशियोंमें सामाञ्जस्य न रहना,—गति-विधायक स्नायुका सुन्न हो जाना या पक्षाघात (५) मानसिक उत्तेजना, सम्पत्ति या सम्मान-नाश या दूसरे प्रकारकी वैषयिक गड़बड़ीके कारण चित्त चंचल रहना और नींद न आना। (६) थोड़ेमें ही कातर और हमेशा अस्थिर, क्षण-भरके लिये भी हाथ-पैर स्थिर नहीं रख सकता। स्थिर होकर एक जगह बैठ नहीं सकता, एकबार इधर एक बार उधर लगातार किया करता है; किसी न किसी काममें लगे रहना ही चाहता है। (७) बाल-विसूचिका और उसके प्रतिक्षेपसे मानसिक उत्तेजना, इससे मोहावस्था प्राप्तिकी पहली अवस्थामें हरेक रातके अन्तिम भागमें ५ बजनेके समय लड़कोंकी आँतोंमें दर्द (तीसरे पहर ५ बजनेके समय=कोलो, माई)। (८) थोड़ेमें ही कातर, रक्त प्रधान व्यक्तियोंका डर जाना या क्रोध या मानसिक उद्वेगकी वजहसे अङ्ग प्रत्यंगोंका आक्षेप,—प्रसव या दाँत निकलनेके समय और हूप खाँसी या लाला मूत्र रोग आदिमें (९) व्याहत वाक् या तोतलाना—बात बहुत धीरे धीरे या बहुत कष्टसे उच्चारण करता है। (१०) व्रण, साधारण कड़ी नलीवाला या पटल व्रण, चेहरा, कन्धा या वक्षस्थलपर नीली आभा लिये पीवभरी फुन्सियोंकी तरह उद्भेद; अच्छे हो जानेपर भी बदरंग दाग रह जाता है। (११) गर्भावस्थामें स्नायविक खाँसी (कोना,—प्रबल, सूखी, लगातार होनेवाली,—गर्भपात होनेका उपक्रम हो जाना (१२) अनुभव शक्तिका लोप हो जाना खासकर जीभके अगल बगल वाले दोनों गह्वरोंकी; स्वरनाली और मूत्रनली तथा समूची देहकी; दोनों पैर अवश, चलनेके समय ढलमलाया करता है और दोनों पैर पार्श्वकी ओर मुड़ जाते हैं। (१३) बाएँ पार्श्वकी अपेक्षा दाहिने पार्श्वपर रोगका आक्रमण अधिक हुआ करता है। (१४) शरीरके अंश विशेषमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह अंश बढ़ गया है; कम्पन मालूम होना। (१५) जरायुमें कोषार्बुद और उसके कारण या किसी दूसरे ही कारणसे पैदा हुआ आर्त्तवकी अधिकताका रोग या जरायुसे खूनका स्राव— ये कई कैलि-ब्रोमैटम के प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं। डा० क्लार्कका कथन है, कि

काली खांसीमें (ब्रोम, हिप, आयोड, केयोलिन) यहाँ तक कि जब उत्पन्न हुई झिल्ली वायुनलीके भीतरतक फैल जाती है और छातीमें इतना दर्द मालूम होता है, कि रोगी उसे किसी तरह छूने नहीं देता (ऐबिस-नाइग्रा, ब्राई, नक्स, रास प्रभृति)।

तुलनीय ।—कैलि-कार्ब, (स्थूलकाय व्यक्ति); कैलि-आयोड, एसिड-नाई (उपदंश); ब्रोमिन (काली खाँसी); साइलि; मेजेर (हड्डीकी बीमारी); स्क्वि (ऐंठन); हाइड्रेस, आइरिस (लसदार स्राव); लैके टेरिबिन्थ (चमकीली जीभ;) सिपिया, टियुक्रि (शिकन पड़ना); पल्स (घूमनेवाला वात); थूजा (नकसीर); एपिस (आँखोंका प्रदाह); लैकेसिस (संकोचन); कक्स (हूप-खांसी); ऐबिस, नक्स (अजीर्ण); ग्रेफाइटिस (कर्ण-प्रदाह); सलफर (गलेमें ऐसा मालूम होना कि केश हैं)।

शक्ति ।—२ रे दशमिक विचूर्ण से ३० या २०० शततमिक क्रम ।

क्रियाकी स्थिति ।—२० दिन तक ।

कैलि बोमेटम ।

दूसरा नाम ।—ब्रोमाइड आव पोटास ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अर्कका क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुंहासे; स्वरलोप; संन्यास; दमा; शिशु-विसूचिका; शूलका दर्द; बहुमूत्र; स्वप्न-दोष; मृगी; उन्मादग्रस्त व्यक्तियोंका पक्षाघात; बवासीर; ध्वजभङ्ग; स्वर-नालीकी बीमारी; छाती दबनेके सपने; नाकके ऊपर उद्भेद; डिम्बाधारकी बीमारी; पक्षाघात; विचर्चिका; पसीना निकलना; हाथसे या नकली मैथुन; नींद न आना; स्वप्नमें घूमना; उपदंश; धनुष्टंकार; स्पर्श-चेतनाका गायब हो जाना; बोलीकी जड़ता; पेशाबका वेग रोक न सकना।

उपयोगिता और आभास ।—स्थूलकाय मनुष्य और बच्चोंकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है। (१) स्मरणशक्तिका न रहना; अन्य-मनस्क; हमेशा चिन्तित और उद्वेगपूर्ण चित्त; रोगीको डर मालूम होता है,

खाली मालूम होता है और कानमें आवाज आया करती है ; नींद नहीं आती ; सरमें चक्कर —कलेजा धड़कना, मिचली ; यहांतक कि कभी कभी बेहोशी भी आ जाती है। ऐसा मालूम होता है मानो पैरके नीचे जमीन धँस गयी है ; चलता चलता डलमलाया करता है; सुस्ती और मिचली और इसके बादही गाढ़ी नींद ; मस्तिष्कमें कसावटका भाव (केमो), और काम या अनुभव शक्तिका न रहना। सरके पिछले भागसे पीठके बीचतक लगातार टपककी तरह दर्द, सीधे होकर बैठने, चलने या सर हिलानेपर दर्द बढ़ जाया करता है; बहुत गड़बड़ी और चित्तमें विकलता मालूम हुआ करती है। चेहरा तमतमाया, गर्दनकी दोनों धमनियोंमें टपक हुआ करती है, दोनों आँखें पानीसे भरी रहती हैं और माथेमें भार मालूम होता है। खून आदि रस क्षय हो जानेसे उत्पन्न मस्तिष्ककी रक्तहीनता,लगातार औंघाई आती रहना,भौंहें तथा आंखकी पुतली फैली, आँख गड्ढेमें धंसी, लक्ष्यहीन, आँखका गोला चारों ओर घूमता रहता है, हाथ पैर नीले और बरफकी तरह ठण्डे ; नाड़ीमें स्पर्श ज्ञान नहीं रहता,— मस्तिष्कोदक हो जाने या बहुत दिनोंके उदरामयकी वजहसे ये बीमारियाँ, माथमें संघर्षकी वजहसे भयंकर सर दर्द। माथा भूल पड़ता है, सीधा रख नहीं सकता (गलेकी कमजोरीकी वजहसे होनेपर=ऐब्रोट, टियुबर्कु)। रूसी।

मुंह और गलेके भीतर।—श्वास-कष्टता—जीभ विकल; नींद खुलनेपर बहुत धीरे धीरे और कष्टसे बोलता है; व्याहतवाक् या तोतलाना, जीभ लाल, सूखी और उसका आयतन बढ़ा हुआ। कभी पहले लाल फिर सूखी और भूरे रँगकी दिखाई देती है। मुंहमें एक तरहकी घृणा पैदा करने वाली या घिनौनी गन्ध आती है, जीभका रंग सफेद, बदबूदार, बहुत ज्यादा लार निकलना। बहुत दिनोंतक शराब पीनेका विषमय फल यह होता है कि मुख-विवर, गलेका भीतरी भाग औरतालुमूल सुन्न और स्पर्श-ज्ञान हीन हो जाता है। बच्चा जलीय पदार्थ निगल नहीं सकता; कड़े पदार्थ सहजमें ही निगल नहीं सकता (कड़े पदार्थ निगलनेके समय गलेका दर्द घट जाता है=इग्ने)। उपजिह्वा या जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वर रक्तसंचय होनेकी वजहसे फूल उठते हैं। उपझिल्ली प्रदाहके कारण बोखार, नाड़ी तेज, जीभ सूखी, मुंहमें बदबू, जिह्वामूल पार्श्ववाले दोनों [illegible]रोंमें बहुत रक्तसंचयकी वजहसे वह गहरा लाल हो जाता है, [illegible] ऊपर निकला हुआ रस जमकर गोल आकारकी [illegible]

मण्डलीमें संवेद-राहित्य (सुन्न हो जाना) और सुस्ती ; आन्त्रिक या सान्निपातिक ज्वरके बाद और प्रसवान्तिक उन्माद रोग तथा अवस्था अधिक हो जानेकी वजहसे मस्तिष्ककी कोमलता—ये कई केलिब्रोमके उच्च क्रममें प्रयोग करनेके निर्देशक लक्षण हैं ।

लक्षणावली ।

मन ।—स्नायविक अस्थिरता, स्थिर होकर क्षणभर भी रह नहीं सकता, एक बार एक तरफ तो दूसरी बार दूसरी तरफ—ऐसा लगातार किया करता है ; किसी न किसी काममें मन लगा ही रहना चाहिये (आयोड); हाथ और अंगुली आदि हमेशा चंचल रहती हैं, पैर अस्थिर रहता है (इग्ने, जिङ्क-वेलि); अंगुली वगैरहका सिकोड़ना और फैलाना कठिन हो जाता है ; रुलाई आना ; गहरा विषाद ; स्मृति-लोप,—बिना तुतलाये अपनी बात कह नहीं सकता । हमेशा अन्यमनस्क रहता है ; दुःखित और उद्वेगपूर्ण चित्त ; रोगी डरता है कि कहीं उसकी बुद्धिमें विपर्यय न हो जाये (ऐक्टिया, कैल्के, कैनाब-इन, लिल-टाइ, लिसिन, नक्स); शोक, विरक्ति, सम्पत्ति या सम्मान-नाश या और किसी तरहकी साम्पत्तिक गड़बड़ीके कारण चित्तकी बेचैनी—और नींद न आना, बच्चोंका रातमें डरना = केलि-फास, अरम-ब्रोम, ऐकोन); निद्रितावस्थामें दाँत कड़कड़ाता है (बेल, कैनाब-इन, साइना, हायो, इग्ने), गों गों किया करता है (कार्बो-ऐनिम, कैमो, इपिक, लाइ, ओपि, सल्फ) या चिल्ला उठता है (एपिस, पल्स, सल्फ, भयानक सपने देखकर उत्तेजित हो उठता है,—कोई समझाता है तो उसका कुछ फल नहीं होता—इग्ने) ; सपनेमें घूमना (आर्टिमि-वाल, ब्राइ, इग्ने, केलि-फास, फास, साइलि, टैरेण्ट) । विकार—भ्रम-देखना, ऐसा विश्वास हो जाना कि लोग उसपर अत्याचार कर रहे हैं (सिङ्को, लेके); उसे ऐसा मालूम होता है कि कोई उसका पीछा कर रहा है (ऐनाक); उसे विष खिला देनेकी चेष्टा करता है (प्लम्ब, हायो, रास); रोगिनीको ऐसा विश्वास हो जाता है कि उसकी सन्तान मर गयी है (कोना, प्लम्ब); गर्भावस्थामें रातमें बहुत डरावने दृश्य सब उसके मानस-चक्षुपर उदित होते हैं । रोगी बहुतही सामान्य कारणसे कातर हो पड़ता है, सो नहीं सकता और किसी काममें लगे रहनेपर अच्छा रहता है (आयोड, टैरेण्ट) ।

मस्तक ।—मस्तिष्ककी जड़ता ; धीरे धीरे बोलता है, मतवालोंकी तरह टनमनाया करता है (बेल, ऐसिड-कार्बोलिक, जेल्सि, वेस्पा) । माथा

पतले पदार्थ निकला करते हैं, कभी कभी इसी तरह फिर पीले रंगका बदबूदार मल निकलता है।

पेशाब।—मूत्रनालीमें स्पर्श ज्ञानकी हीनता या सुन्नता मालूम होती है, बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब और बहुत प्यास। बहुमूत्र,—चीनी मिला और परिमाणमें बहुत ज्यादा पेशाब, रोगी दुबला, रक्तहीन और सफेद हो जाता है; शरीरकी त्वचा ठण्ढी और सूखी; नाड़ी तेज और क्षीण, जीभ लाल और दर्द-भरी; मसूढ़े नरम हो जाते हैं और उनसे सहजमें ही खून निकला करता है; बहुत प्यास, बहुत अधिक भूख,—मल कड़ा और पेशाब सफेद, बार बार पेशाबका वेग। पेशाब परिमाणमें बहुत ज्यादा, चीनी मिला और बहुत अधिक आपेक्षिक गुरुत्व विशिष्ट, यकृत फूला, और दर्द भरा,—मधु-मेह।

पुं-जननेन्द्रिय।—हमेशा कामोद्दीपक चिन्ता और रातमें कामोद्दीपक सपने। रातमें काम प्रवृत्तिकी उत्तेजना और बार बार लिंगमें कड़ापन आ जाना, स्नायविक अवसाद और अवसादके साथ नपुंसकता। बहुत अधिक काम-प्रवृत्तिके व्यवहारके कारण क्लीवता और मेरु-मज्जाके अवसादसे उत्पन्न पक्षाघात और प्रत्यंगोंका आक्षिप्त भाव, शुक्रक्षयके साथ विषाद, कमरमें दर्द और रोगी चलनेके समय डगमगाया करता है। प्रमेह रोगमें तकलीफ देनेवाला या दर्द-भरा लिङ्गका कड़ापन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्त्रियोंका कामोन्माद। बहुत अधिक काम परिचालनसे उत्पन्न बन्ध्यात्व; बहुत थोड़ा आर्त्तवस्रावके साथ वीतस्पृहा,—जरायुकी अनमनीयता; प्रसवके बाद जरायुकी आकृतिका बढ़ जाना और बहुत ज्यादा स्राव। जरायुके भीतरवाला सूत्र-मय-तन्तु विशिष्ट अर्बुद, अतृप्त वासनासे उत्पन्न जरायुका स्नायुशूल और अस्थिरता। डिम्बाधारका स्नायुशूल—बाएं डिम्बाधारमें दर्द; फूलन और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता; साथ ही पेशाबका वेग और बहुत थोड़े परिमाणमें पेशाब होना। जरायुके भीतरवाले अर्बुदकी उत्तेजनाकी वजहसे—बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव, जरायु-स्राव, कामोन्माद और ऋतुके समय मृगी या आर्त्तवापस्मार, गर्भवतियोंकी विकृत कल्पना,—रातमें उन्हें ऐसा मालूम होता है मानो उसने अपनी सन्तान या स्वामीका हत्यारूप महापाप किया है। मृगी;—अत्यधिक और अस्वाभाविक

पाकस्थली और अंत्राशय।—स्नायु-प्रधान रमणियोंका भोजनके बाद वमन,—विशेषकर उत्तेजक समाचार आदि सुननेपर,—इसके साथही दुर्दमनीय प्यास। मुख-विवर सूखा ; जलन भरी प्यास। बच्चा जन्मसे ही कड़ी चीजें अनायास ही निगल जा सकता है। परन्तु पतले जलीय पदार्थ पीनेसेगलारुक जानेकी तैयारी हो जाती है। मध्यान्ह भोजनके बाद पाकस्थलीमें लगातार गड़बड़ी मालूम हुआ करती है। प्लीहा और यकृत दोनोंही बढ़ जाते हैं। प्लीहा प्रदेशमें छोटा अर्बुद पैदा हो जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो आंतें आदि झूल पड़ती हैं। पेटके भीतर बहुत शीतलता मालूम होती है। शिशु विसूचिका रोगमें रोगीका उदर मेरुदण्डसे लग जाता है। बराबर समयपर पैदा होनेवाला नाभि-स्थानका शूलका दर्द,—रोज रातमें ५ बजनेके समय पैदा होजाता है (तीसरे पहर ५ बजनेके समय=कोलो, लाई)। थोड़ी उम्रवाले बच्चोंका अंत्र-शूल,—उदरकी प्राचीर संकुचित रहती है और लचीली नहीं मालूम होती, आंतें आदि गोलेकी तरह बनकर पेटमें एक जगह ऊंची उठ जाती हैं और उदरके एक किनारेसे दूसरे किनारेतक घूमती फिरती हैं। इसके साथही अकसर मुंहमें जखम और बहुतही असह्य दर्द मौजूद रहता है, कब्जियत या मलके पतलेपनके साथ इसका सम्बन्ध नहीं रहता, प्लीहा या यकृत रोग मिली उदरीकी बीमारी। शिशु-विसूचिका या ग्रीष्मातिसार,—मस्तिष्क प्रदाहान्वित, चेहरा तमतमाया—पुतली फैली,—और दोनों आंखें गड्ढेमें धंसी ; हाथ पैर ठण्डे,—रह रहकर चिल्लाकर जाग उठता है ; माथेमें धामनिक रक्तकी अधिकता ; सर्दी लगी झिल्लीसे रस बहनेके पहले प्रदाह ; बहुत दिनोंतक स्थायी, उदरामयके बाद होनेवाले, मस्तिष्कोदक रोगके आरम्भमें मल पानीकी तरह, हाथ और अंगुलियाँ बराबर हिला करती हैं, हाथसे कोई काम करनेके समय वह हाथ कांपा करता है; हाथ पेर ठण्डे और हाथ और कलाई बरफकी तरह ठण्डी तथा पसीनेसे तर मालूम होती है।

मलान्त्र और मल।—गर्म घरमें भी ठण्डक मालूम होनेके साथ ही बिना दर्दके पतला पाखाना हुआ करता है ; मल पानीकी तरह या फेनकी तरह। मारात्मक विसूचिका पहली अवस्थामें,—के, अकड़न, माड़की तरह दस्त और पेशाब रुकना (पेशाब फिर स्थापित होता है)। कभी कभी पीले रंगका पानीकी तरह और कभी कभी बहुत ज्यादा परिमाणमें खून मिला पाखाना होता है ; अधिक वेग देनेपर, मद्दीलता (केंचुआ) की तरह पतले

पतले पदार्थ निकला करते हैं, कभी कभी इसी तरह फिर पीले रंगका बदबूदार मल निकलता है।

पेशाब।—मूत्रनालीमें स्पर्श ज्ञानकी हीनता या सुन्नता मालूम होती है, बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब और बहुत प्यास। बहुमूत्र,—चीनी मिला और परिमाणमें बहुत ज्यादा पेशाब, रोगी दुबला, रक्तहीन और सफेद हो जाता है; शरीरकी त्वचा ठण्ढी और सूखी; नाड़ी तेज और क्षीण, जीभ लाल और दर्द-भरी; मसूढ़े नरम हो जाते हैं और उनसे सहजमें ही खून निकला करता है; बहुत प्यास, बहुत अधिक भूख,—मल कड़ा और पेशाब सफेद, बार बार पेशाबका वेग। पेशाब परिमाणमें बहुत ज्यादा, चीनी मिला और बहुत अधिक आपेक्षिक गुरुत्व विशिष्ट, यकृत फूला, और दर्द भरा,—मधुमेह।

पुं-जननेन्द्रिय।—हमेशा कामोद्दीपक चिन्ता और रातमें कामोद्दीपक सपने। रातमें काम प्रवृत्तिकी उत्तेजना और बार बार लिंगमें कड़ापन आ जाना, स्नायविक अवसाद और अवसादके साथ नपुंसकता। बहुत अधिक काम-प्रवृत्तिके व्यवहारके कारण क्लीवता और मेरु-मज्जाके अवसादसे उत्पन्न पक्षाघात और प्रत्यंगोंका आक्षिप्त भाव, शुक्रक्षयके साथ विषाद, कमरमें दर्द और रोगी चलनेके समय ढलमलाया करता है। प्रमेह रोगमें तकलीफ देनेवाला या दर्द-भरा लिङ्गका कड़ापन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्त्रियोंका कामोन्माद। बहुत अधिक काम परिचालनसे उत्पन्न बन्ध्यात्व; बहुत थोड़ा आर्त्तवस्रावके साथ वीतस्पृहा,—जरायुकी अनमनीयता; प्रसवके बाद जरायुकी आकृतिका बढ़ जाना और बहुत ज्यादा स्राव। जरायुके भीतरवाला सूत्र-मय-तन्तु विशिष्ट अर्बुद, अदम्य वासनासे उत्पन्न जरायुका स्नायुशूल और अस्थिरता। डिम्बाधारका स्नायुशूल—बाएं डिम्बाधारमें दर्द; फूलन और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता; साथ ही पेशाबका वेग और बहुत थोड़े परिमाणमें पेशाब होना। जरायुके भीतरवाले अर्बुदकी उत्तेजनाकी वजहसे—बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव, जरायु-स्राव, कामोन्माद और ऋतुके समय मृगी या आर्त्तवापस्मार, गर्भवतियोंकी विकृत कल्पना,—रातमें उन्हें ऐसा मालूम होता है मानो उसने अपनी सन्तान या स्वामीका हत्यारूप महापाप किया है। मृगी;—अत्यधिक और अस्वाभाविक

रूपसे इन्द्रिय परिचालनके कारण,—आर्त्तव स्राव आगम होनेके कुछ ही पहले या ऋतु-स्रावके समय,—किंवा अमावस्या या प्रतिपदाके समय प्रकोपका अधिक होना,—प्रकोपके अन्तमें सर-दर्द। मोटी ताजी स्त्रियों को थोड़ा ऋतु-स्राव होना ; वयःसन्धिके समय,—रोगिनी बेचैनी और हमेशा चंचलता दिखाती है ; उसे नींद नहीं आती शरीर काँपा करता है और रह रहकर चेहरा गर्म और तमतमा उठता है तथा सरमें रक्तका संचय अधिक हो जाता है (एमिल-नाइ, ग्लोन, लेके)। गर्भावस्थामें सवेरेके समयः वमन। गर्भावस्थामें स्नायविक उपदाहकी वजहसे ऊपरके ऊपर खाँसी;—यहाँ तक कि गर्भ-स्राव होनेकी तैयारी हो जाती है (कोना)। प्रसवके दर्दके समय धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप, जरायुका बढ़ना।

श्वास-यन्त्र ।—ज्ञानराहित्य या स्पर्श अनुभव करनेकी शक्तिका गायब हो जाना,—जिह्वामूल पार्श्वके दोनों गह्वर और स्वरनाली सुन्न हो जाती है, पुराना प्रतिश्याय या सर्दीमें कफ पीबकी तरह और स्लेटके पत्थर, जैसे रंग का निकलता है। सर्दीसे उत्पन्न और कौपिक स्वर तन्तुका प्रदाह। स्वरनालीकी अविमिश्र, स्नायविक उत्तेजना या किसी यन्त्रके रोग प्रतिक्षेपके कारण। दाँत निकलनेकी वजहसे या क्रिमिके कारण उत्तेजनाका प्रतिक्षेप होनेके कारण सूखी काली खाँसी एकाएक पैदा हो जाती है। झिल्ली पैदा करनेवाली घुँड़ी (काली खाँसी),—बलगमके साथ निकले हुए रससे उत्पन्न झिल्ली सफेद रंगकी। सूखी सुस्त करनेवाली खाँसी,—प्रत्येक दो या तीन घण्टे बाद पैदा हो जाती है,—रोगी हाँफा करता है और अन्तमें खाये हुए पदार्थ और श्लेष्मा के हो जाता है—रातमें या सोनेपर बढ़ जाता है ; श्वास प्रश्वासके समय वक्षस्थल मानो कसा हुआ है—ऐसा मालूम होता है। हूप खाँसी आक्षेपिक या देहको हिला देनेवाली सूखी खाँसी ; स्वरतन्तुके आक्षेपके साथ धनुष्टंकार।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवाकी वजहसे मेरुमज्जाका क्षय और गति-शक्ति-विधायक स्नायु प्रभृतिका पक्षाघात या शुक्रक्षयकी वजहसे कमरमें दर्द (कोवेल्ट)। हाथसे कोई काम करनेके समय वह हाथ काँपा करता है, या मदात्ययकी वजहसे हाथ आदि काँपते हैं। हाथ और अँगुली आदिका बराबर चंचल रहना, अँगुली आदिका बराबर नाचना (आर्नि, साइकृप-नाई)। चलनेके समय डगमगाया करता है,—लोग मतवाला

समझते हैं। शरीरमें स्पर्श ज्ञान न रहने या स्पर्श अनुभव शक्तिका लोप (ऐनाक, कोम्फो, कैप्स, कार्बोन-सल्फ, साइक्यु, फास, प्लम; जिङ्कम); नख लगने या आगसे छू जानेपर भी जान नहीं सकता, पैशिओंमें पारस्पर्य न रहना (जेलुस),—गतिशक्ति विधायक स्नायुमण्डलका पक्षाघात।

त्वचा।—व्रण, सरल=(कार्बो-वे, बैल, पलुस, वैलिस, आर्कटियम-लैप), इट या भूरा (कार्बो-ऐन, =जरायु विकार मिला—हाइड्रोकोट—शराब आदि पीनेकी वजहसे=नक्स, ऐग्रिट-क्रूड, अत्यन्त लाल और उत्तेजनायुक्त होनेपर =रास; नीलिमा-मिला=ऐगार, दुरारोग्य=आर्स, आयोड); मुखमण्डल, छाती और कन्धेपर नीली आभा लिये लाल रङ्गके दाने पैदा होते हैं और आराम हो जानेपर एक बदरङ्ग दाग रह जाता है (कार्बो-ऐन) —मोटे-ताजे और गन्दे स्वभाव वाले युवक और युवतियोंकी बीमारी। लगातार असंख्य छोटे छोटे और बहुत खुजलानेवाले फोड़े निकलना। बहुत दिनोंके श्लेष्माश्रित जखम आदि। उपदंश, विचर्चिका (व्रण-रोगमें आगे=युजिनिया-ऐम्बस प्रयोगके बाद कैलि-ब्रोम प्रयोग करनेपर एकदम आरोग्य हो जाता है—एइच, सी, ऐलेन)।

निद्रा।—बहुत औंघाई,—कुर्सीपर बैठते ही गहरी नींद आने लगती है और जागनेपर फिर तुरन्त निद्राभिभूत हो पड़ता है। अनिद्रा और बहुत चंचलता,—किसी काममें लगे न रहकर स्थिर नहीं रह सकता (आयोड)। बच्चोंको रातमें डर (अरम-ब्रोम; ऐको),—निद्रावस्थामें दाँत कड़कड़ाया करता है। अस्पष्ट शब्द या बुदबुदाया करता है। और कभी कभी चिल्ला उठता है, सपने देखना, बालकोंका सपनेमे घूमना (Somnambulism या Night-walking)

वृद्धि।—रातमें,—रोज रातमें २ बजनेके समय, प्रति रात्रिमें ५ बजने के समय (बच्चोंका अम्लशूल), गर्म वायुमें, ग्रीष्मऋतुमें, माथा झुकानेपर (सरमें चक्कर आना) और सोने बाद (खाँसी)।

उपशम।—किसी काममें लगे रहने और अन्यमनस्क रहनेपर और जाड़ा और ठण्डी हवा लगनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फो, नक्स, जिङ्कम, यह सीसेके विषका प्रतिविष है।

तुलनीय ।—कैल्कि, ब्रोमिन, (रातके समय भय); हायोस (उन्माद-प्रकृति) ; प्लेटिना, (भूत देखना); आर्जेण्ट-नाइ (डरा हुआ भाव) ; ग्लोनोयन, रासटक्स (विपात्त होनेका भय); स्टैफि (मानसिक अवसाद) ; जेल्स (पेशियोंको दुर्बलता) ; कोनायम (खाँसी) ; स्ट्रैमो (तोतलाना) ; इपिका (शिशु-विसूचिका); जिङ्कम (बेचैनी); टैरेण्टुला (प्रतिच्छिप्त लक्षण) ।

सदृश ।—युजिनिया-येम्बस, ब्रोमियम , कैम्फो-मनोब्रोम, ऐमोन-ब्रोम, अरम-ब्रोम, कैलि-आयोड, कार्बो-ऐन, प्लेट, हायो, रास, ग्लोन, जेल्स, स्टैफाइ, जिङ्कम-वेलिरियाना ।

शक्ति ।—साधारणतः निम्न-क्रमका (तृतीय दशमिक) विचूर्ण व्यवहृत हुआ करता है। परन्तु २०० शततमिक क्रम तकका व्यवहार भी प्रचलित दिखाई देता है ।

कैलि क्लोरोसम ।

(KALI CHLOROSUM)

दूसरा नाम ।—ऐविल-वाटर ; ब्लिचिङ्ग फ्लूड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—गलनली पर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है । सर्दी, दमा, स्वरभङ्ग ; गलनालीकी-झिल्लीका प्रदाह (Diphthiria) प्रभृति लक्षणोंमें यह विशेप लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** [illegible], क्लोरम, [illegible], नैट्रम हाइपोक्लोर ।

शक्ति ।— निम्न-शक्ति ।

कैलि-साइट्रिकम।

(KALI CITRICUM)

दूसरा नाम।—साइट्रेट आव पोटास, पोटैसिक साइट्रेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचर्ण और तरल दोनों ही आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मूत्रपिण्डपर इसकी मुख्य क्रिया दिखाई देती है। मसानेका प्रदाह और इसके साथ ही शोथके लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—साइट्रिक-एसिड।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कैलि कार्बोनिकम।

(KALI CARBONICUM)

दूसरा नाम।—कार्बोनेट आव पोटास, साल्ट आव टार्टर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

डा० ऐलेन कहते हैं।—वृद्ध मनुष्य, काले घने केश, स्थूलकाय, शोथ और पक्षाघात-युक्त मनुष्योंकी बीमारीमें उपयोगी है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—स्वल्प आर्त्तव या ऋतु-स्राव थोड़ा होना; खूनकी कमी; दमा; पीठमें दर्द; पैत्तिकता; सर्दी; श्वासनाली-प्रदाह; क्षय कास; खांसी; दुर्बलता; शोथ, बाधक; अजीर्णता; कर्ण-प्रदाह; वक्ष प्रदाह; मुंहका व्रण (मुंहआसे); पाकाशय-प्रदाह या शूल; रक्त-स्राव; अर्श, केशकी बीमारियां; सर-दर्द; हृदपिण्डकी बीमारी; वय-सन्धि-रोग; वक्षोदक रोग; मूर्च्छा-वायु; मूत्रग्रन्थि (मसाना) की बीमारियां, जानु-सन्धिकी बीमारी; स्वरनालीकी सर्दी या प्रदाह; श्वेत-प्रदाह; यकृतकी

तुलनीय ।—कैल्के, ब्रोमिन, (रातके समय भय); हायोस (उन्माद-प्रकृति); प्लेटिना, (भूत देखना); आर्जेंण्ट-नाई (डरा हुआ भाव); ग्लोनोयन, रासटक्स (विषाक्त होनेका भय); स्ट्रैमो (मानसिक अवसाद); जेल्स (पेशियोंकी दुर्बलता); कोनायम (खाँसी); स्ट्रैमो (तोतलाना); क्युप्रिका (शिशु-विसूचिका); जिङ्कम (बेचैनी); टैरेण्टुला (प्रतिबिम्ब लक्षण)।

सदृश ।—युजिनिया-येम्बस, ब्रोमियम, कैम्फो-मनोब्रोम, ऐमोन-ब्रोम, अरम-ब्रोम, कैलि-आयोड, कार्बो-ऐन, प्लेट, हायो, रास, ग्लोन, जेल्स, स्ट्रैफाई, जिङ्कम-वेलिरियाना।

शक्ति ।—साधारणतः निम्न-क्रमका (तृतीय दशमिक) विचूर्ण व्यवहृत हुआ करता है। परन्तु २०० शततमिक क्रम तकका व्यवहार भी प्रचलित दिखाई देता है।

कैलि क्लोरोसम ।

(KALI CHLOROSUM).

दूसरा नाम ।—ऐविल-वाटर; ब्लिचिङ्ग फ्लूड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—गलनली पर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। सर्दी, दमा, स्वरभङ्ग; गलनालीकी झिल्लीका प्रदाह (Diphthiria) प्रभृति लक्षणोंमें यह विशेष लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—कैल्क-म्यूर, क्लोरम, कैलि-क्लोर, नेट्रम हाइपोक्लोर।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

कैलि-साइट्रिकम ।

(KALI CITRICUM)

दूसरा नाम ।—साइट्रेट आव पोटास, पोटैसिक साइट्रेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचर्ण और तरल दोनों ही आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मूत्रपिण्डपर इसकी मुख्य क्रिया दिखाई देती है। मसानेका प्रदाह और इसके साथ ही शोथके लक्षणमें लाभ-दायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—साइट्रिक-ऐसिड ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैलि कार्बोनिकम ।

(KALI CARBONICUM)

दूसरा नाम ।—कार्बोनेट आव पोटास, साल्ट आव टार्टर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

डा० ऐलेन कहते हैं ।—वृद्ध मनुष्य, काले घने केश, स्थूलकाय, शोथ और पक्षाघात-युक्त मनुष्योंकी बीमारीमें उपयोगी है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—स्वल्प आर्त्तव या ऋतु-स्राव थोड़ा होना ; खूनकी कमी ; दमा ; पीठमें दर्द ; पैत्तिकता; सर्दी; श्वासनाली-प्रदाह; क्षय कास; खांसी; दुर्बलता ; शोथ, बाधक ; अजीर्णता; कर्ण-प्रदाह; वक्ष प्रदाह; मुंहका व्रण (मुंहासे); पाकाशय-प्रदाह या शूल ; रक्त-स्राव ; अर्श, केशकी बीमारियां ; सर-दर्द ; हृद्पिण्डकी बीमारी ; अय-सन्धि-रोग; वक्षोदक रोग; मूर्च्छा-वायु; मूत्रग्रन्थि (मसाना) की बीमारियां; जानु-सन्धिकी बीमारी ; स्वरनालीकी सर्दी या प्रदाह ; श्वेत-प्रदाह ; यकृतकी

तुलनीय ।—कैल्कि, व्रोमिन, (रातके समय भय); हायोसा (उन्माद-प्रकृति); प्लेटिना, (भूत देखना); आर्जेण्ट-नाई (डरा हुआ भाव); ग्लोनोयन, रासटक्स (विपात्त होनेका भय); स्टेफि (मानसिक अवसाद); जेल्स (पेशियोंकी दुर्बलता); कोनायम (खाँसी); स्ट्रैमो (तोतलाना); इपिका (शिशु-विसूचिका); जिङ्कम (बेचैनी); टैरेण्टुला (प्रतिक्षिप्त लक्षण)।

सदृश ।—युजिनिया-यैम्बस, व्रोमियम, कैम्फो-मनोव्रोम, ऐमोन-व्रोम, अरम-व्रोम, कैलि-आयोड, कार्वो-ऐन, प्लेट, हायो, रास, ग्लोन, जेल्स, स्टेफाई, जिङ्कम-वेलिरियाना।

शक्ति ।—साधारणत: निम्न-क्रमका (तृतीय दशमिक) विचूर्ण व्यवहृत हुआ करता है। परन्तु २०० शततमिक क्रम तकका व्यवहार भी प्रचलित दिखाई देता है।

कैलि क्लोरोसम ।

(KALI CHLOROSUM).

दूसरा नाम ।—ऐविल-वाटर ; ब्लिचिङ्ग फलूड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—गलनली पर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। सर्दी, दमा, स्वरभङ्ग ; गलनालीकी-झिल्लीका प्रदाह (Diphthiria) प्रभृति लक्षणोंमें यह विशेष लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—कैल-म्यूर, क्लोरम, कैलि-क्लोर, नैट्रम हाइपोक्लोर।

शक्ति ।— निम्न-शक्ति ।

श्लेष्मा गलेसे छिटककर बाहर निकल पड़ता है। (१४) हूप-खांसी या दमा—रातमें २ बजेसे ४ बजेतक अधिक प्रकोप रहता है; सीधे होकर या सामनेकी ओर शरीर झुकाकर बैठनेपर या हिलनेपर घट जाता है। (१५) निगलनेमें कष्ट,—तालुमूलमें सुई वेधनेकी तरह दर्द,—मानो उसमें कांटा गड़ रहा है;—खानेकी चीजें अकसर वायुनलीमें प्रवेश कर जाती हैं और अनकुस हो जाता है; निगलनेके समय पीठमें दर्द मालूम होता है। (१६) हृत्पिण्डमें मेदापजनन प्रवणता, हृत्पिण्डमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक सूतके सहारे लटकाया हुआ है। (१७) मल-काठिन्य,—मल कड़ा गाँठ गाँठ, बहुत कष्टसे निकलता है और मलान्त्रमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है,—पाखाना होनेके दो एक घण्टा पहले पेटमें तेज दर्द आरम्भ हो जाता है। (१८) भोजनके समय और बाद निद्रालुता (औंघाई)—बार बार जम्हाई आना। (१९) लक्षण आदि रातके अन्तिम भागमें (२ बजेसे ४ बजेके बीचमें) बढ़ जाते हैं और बाएंकी अपेक्षा दाहिने अंगमें ही रोगका आक्रमण अधिक हो जाया करता है। (२०) नाना प्रकारकी भ्रम कल्पना,—मानो उसकी खाट नीचे खिसकती चली जाती है,मानो उसकी देहका भीतरी भाग खाली और खोखला है; खांसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ लुढ़ककर उलट-पलट रहा है। (२१) खूनका पतलापन या खूनकी कमी,—बहुत अधिक कमजोरी और इसके साथही उजले धुमैले रंगकी त्वचा। (२२) शोथ, उदरी इत्यादि कैलि-कार्बोनिकमके कई प्रकृतिगत और अव्यर्थ निर्णायक लक्षण हैं। कच्छुसदृश विषनाशक (Antipsoric) दवाओंमें यह एक प्रधान दवा है; इसकी क्रिया बहुत गभीर और दीर्घ-काल स्थायी है।

लक्षणावली।

मन।—अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें उत्सुकता—डरता है, कि मानो अब उसकी बीमारी अच्छी न होगी। अस्थिरमति, शंकान्वित चित्त,—"शायद यह काम करूँ और कुछ अमंगल हो जाये।" सभी विषयोंमें ऐसी ही चिन्ता बनी रहती है। चिड़चिड़ा स्वभाव; अधीर; असन्तुष्ट। परिश्रम कातर, अकेला रहनेसे डरता है या रहना पसन्द नहीं करता (आर्स, विस्मथ, लाई, हायो, लेके-कैन, सिपि, स्ट्रेम,—अकेला रहना पसन्द करता है=कोष, ऐकि, साइक्लो, हेलिबो, आक्साई-ट्रोप, रास, इग्ने)। एकाएक किसी [illegible]को

बीमारी ; कटि-शूल; बहुत अधिक आर्त्तव-स्राव, जरायुसे खूनका स्राव; बगलमें दर्द ; फुसफुस-आवरक झिल्ली प्रदाह ; गर्भावस्थाकी बीमारी ; गृध्रसी ; अनिद्रा ; गलेका जखम ; दाँतका दर्द ; सान्निपातिक ज्वर ; आमवात ; जरायुका कर्कटीया जखम ; सरमें चक्कर आना ; क्रुप-खांसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—(१) सुई वेधनेकी तरह तेज दर्द ही इसका प्रधान क्रिया-फल है और विश्रामके समय या रोगवाली करवट दबाकर सोनेपर यह दर्द बढ़ जाया करता है (ब्रायोनियाके ठीक विपरीत)। रोगी शरीरके किसी भी अंशमें स्पर्श सहन नहीं कर सकता ; कितनी ही सावधानीसे उसे स्पर्श क्यों न किया जाय, वह चौंक उठता है,—खासकर पैरका निचला अंश छूनेपर। (२) शरीरके रस आदि या जीवनी शक्तिके क्षय हो जानेपर, खासकर जिनके शरीरमें खूनका भाग कम है (३) अकेला नहीं रहना चाहता। (४) सामान्य कारणसे ही सर्दी हो जाया करती है (५) भँव और ऊपरी पलकके बीचमें अर्बुदके आकारकी सूजन हो जाती है। (६) दृष्टि क्षीण,—वमन, शुक्रक्षय, गर्भस्राव या छोटी माताके बाद। (७) सवेरे मुँह धोनेके समय नाकसे खूनका स्राव होता है। (८) दाँतमें दर्द, केवल भोजन करनेके समय। दर्द टपक-भरा ; कोई ठण्डी या गर्म चीज लगते ही बढ़ जाता है। (९) पाकस्थली फूली, दर्द-भरी और उसमें स्पर्शका सहन न होना ; भोजन करते ही ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थली फट जायगी—इसी तरह शूल उठती है। आध्मान ; जो कुछ खाता है, वही ऐसा मालूम होता है, मानो भाफ बन जायगा। (१०) ऋतु होनेके एक हफता पहलेसे ही रोगिनीको बहुत गड़बड़ी मालूम होने लगती है,—रजःस्रावके पहले और समय कमरमें तेज दर्द मालूम होता है। (११) कमरमें दर्द, पसीना अधिक होना,—गर्भ-स्राव, प्रसव वेदना और जरायुसे रक्त-स्रावके बाद और भोजनके समय दुर्बलता, चलनेके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है कि वह अब अधिक चल न सकेगी, और उसे सो जाना पड़ेगा (१२) प्रसव-वेदना, क्षीण-वेग, कमरमें प्रचण्ड दर्द,—कोई अगर रोगिनीको कमर दबा देता है तो उसे आराम मालूम होता है। (१३) खांसी,—सूखी,—लगातार,—गाढ़े गोंदकी तरह या पीबकी तरह श्लेष्मा गलेमें उठकर फिर गलेके अन्दर जाता है—बाहर नहीं निकलता, खांसी आक्षेपिक और गलेको रोध करनेवाली या अनपची खायी हुई चीजें के हो जाती हैं; खांसते खांसते काढ़ा सफेद रंगका धुमैला जमा हुआ,

व्याघात पैदा कर रहा है। दृष्टिके सामने काले रङ्गके बिन्दु सब उड़ते हुए दिखाई देते हैं (काक्य, कास्टि, डिजि)। भौंह और आंखकी पलकोंके बीच अर्बुदकी तरह सूजन दिखाई देती है (निचली पलकके नीचे=एपिस) आँख और पलक सट जाती है और दीयेकी रोशनीमें दर्द मालूम होता है। आंखके कोनेकी त्वचा चय और पीब सञ्चय हो जाता है। पढ़नेके समय या आकाशकी ओर देखनेपर ऐसा मालूम होता है मानो दृष्टि-पथपर बिन्दु सब नृत्य कर रहे हैं (ऐगार ; बेल, सिङ्को, काक्यु, कोना ; फास) दिनके समय आँख झुलस जाती है। रमण, शुक्रक्षरण, गर्भ-स्राव और खसड़ा रोगके बाद क्षीण-दृष्टि।

कान ।—दोनों कानोंमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना (ऐसिड नाई, कोना)। कानमें रह रहकर कट् कट् शब्द होता है (चिबानेके समय =ग्रैफ)। कानमें सों सों भों भों शब्द ; श्रवण-शक्तिमें गड़बड़ी। कर्णमूल ग्रन्थिका कड़ापन और सूजन।

नाक ।—लाल और जलन पैदा करनेवाले उत्तापके साथ सूजन। बहुत देरतक नासारन्ध्रमें, मुँहमें चय हुई त्वचा या खाल उधड़ जाना और पपड़ी जमना। नासारन्ध्रमें जखम और उससे रक्तमय श्लेष्माका स्राव, सवेरे मुँह धोनेके समय नाकसे खूनका स्राव (ऐमोन-कार्ब, आर्नि, ब्राई), सर्दी पतली,—बार बार छींक, कमरमें दर्द और सरमें दर्दके साथ—नाकसे खून मिला श्लेष्मा-स्राव ; नाकमें पीबकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा हो जाना। बदबूदार श्लेष्मा निकला करता है।

मुख विवर ।—सूखा, थकावट प्रकट करनेवाला और तेजहीन चेहरा। गालमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। मुंहमें सूर्य दग्ध दाग। दोनों ओंठ मोटे और फटे फटे और रूसीकी तरह छाल निकलना। निचला हनु और निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थि फूली। दांतमें दर्द,—केवल भोजन करनेके समय या सवेरे नींद खुलनेपर ; दर्द टपकको तरह, कोई ठण्डी या गर्म चीज छू जानेपर दर्द बढ़ जाता है। मुंहका स्वाद तीता रहता है। मुंहसे बदबूदार हवा निकलती है। मुंहमें बहुत लार सञ्चय होती है, इतनेपर भी मुंह सूखा रहता है ; मुंहके भीतर और जीभकी पीठपर रसभरे दाने निकलते हैं [illegible] स्वाद उधड़ जाती है। जीभके अगले भागमें दर्द-

आवाज सुनते ही चौंक उठता है (बेल, बेर, हियुरा, केलि-आर्स, मैग-मूर, थिरिड, सिडोरिन, नक्स-मस)। सभी विषयोंमें ताच्छिल्य प्रकट करता है (इपिक)। कोई बात पूछनेपर स्थिर नहीं कर सकता कि क्या उत्तर दें। अत्यन्त स्पर्श-कातर—कितनी ही सावधानीसे उसे स्पर्श क्यों न किया जाय, वह चौंक उठता है—विशेषकर पदतल या तलवा छूनेपर (लिसिन,—इसके विपरीत=नेट्र-कार्ब)

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, मानो दोनों कान रुके हुए हैं ऐसा मालूम होता है। आँखके सामने अन्धेरा पैदा हो जाता है (ऐक्टि-स्पाई, डालका, ओपि,)। सवेरे, संध्याके समय और भोजनके बाद या शरीर अथवा माथा तेजीसे घुमानेपर (कैल्के, ऐक्टि)। चलनेके समय ढलमलाया करता है (ऐसिड-मूर, नक्स-मस, नक्स-वोम); मालूम होता है मानो पाकस्थलीसे सरमें चक्कर पैदा हो रहा है। गाड़ीपर चढ़नेपर (बेल, काक्यु.) छींकनेपर, खाँसने पर या सवेरे सरमें दर्द; अधकपारी या एक ओरका सर दर्द। इसके साथ ही मिचली और वमन (कोली, कोना, इपिक)—वृद्धिकी अवस्थामें माथा जरा भी हिलानेपर दर्द असह्य मालूम होता है। माथेके पिछले भागमें लगातार दर्द हुआ करता है (सामनेवाले अंशमें=बेल, ब्राई, पल्स—मूर्द्धादेशमें=हिप, लेके)—विशेषकर चलनेके समय,—क्रोध-प्रवणताके साथ। रोशनी सहन न होनेके साथ ललाटमें टपकनी तरह दर्द (बेल, कोना, ग्रेफ,—मूर्द्धादेशमें= फेस, क्रियो, नेट्र-कार्ब, स्ट्रैम,—समूचे माथेमें=लेके, पलस) कनपटीमें या शंखदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। माथेमें शीत लग जानेकी तरह मालूम होना (बेल; सिलि)। अस्त्रधारा काटनेकी तरह सर दर्द,—विशेषकर कनपटी और ललाटमें। माथा झुकाने या हिलानेपर और आँख तथा निचला हनु हिलानेपर वृद्धि, माथा उठानेके साथ, उत्ताप लगने और ललाट मलनेपर घटना। ऐसा मालूम होता है, मानो सिरमें कोई पदार्थ अलग-सा रहकर घूम रहा हैं और इन सब स्थानोंके केश चक्कर खा रहे हैं। सवेरे ललाटमें पसीना। केश झड़ जाना,—विशेषकर कनपटी, भौंह और चिबुक देशके केश रूखे दिखाई देते हैं और झड़ जाते हैं।

आंख।—आँखका सफेद अंश लाल (रक्तवर्ण=थूजा)। आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई)। सवेरे नींद खुलनेपर पलकें सट जाती हैं (इयुफ्रे, हिप, पल्स, केलि-बाई)। मानो एक टुकड़ा छेददार वस्त्र दृष्टिमें

मालूम होता है मानो एक जलता हुआ लोहेका सींखचा घुस रहा है; ठण्डे पानीके स्पर्शसे चण भरके लिये आराम मिलता है (कैलि-घार्स)। ऋतुके समय मलका कड़ापन (सिपि)। गर्भावस्थामें मलद्वारमें सुई गड़ने और पीसनेकी तरह दर्द।

पेशाव।—बार बार वेग और बहुत थोड़े परिमाणमें गर्म पेशाव होना; पेशावके अन्तमें मूलाधारकी मुखशायी ग्रन्थिसे रस-स्राव। मूत्रनालीमें काटनेकी तरह दर्द, दर्द बाईं ओरसे दाहिने पार्श्वमें चला जाता है। पेशाव करनेके समय और बाद मूत्रनालीमें जलन होती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—शिश्न और लिङ्ग-मुण्डमें खींचने और छेदनेकी तरह दर्द। मुष्कमें चोटकी तरह दर्द; रमणकी इच्छा न होना। कामोत्तेजक सपने और वीर्य-स्खलन। रमण और वीर्य-स्खलनके बाद चीण दृष्टि और आलस्य मालूम होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमणियोंकी रमणसे अनिच्छा; रमणके समय योनिके भीतरकी खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द होता है, प्रदर बहुत देरसे होता है, सफेद और थोड़ा होता है (डालका, हिप, नेट-म्यू, सल्फ, पल्स), निर्दिष्ट समयके बहुत पहले बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव (बेल, कैल्के, नक्स, फास, सेबाइ)। रोगिनी ऋतु आरम्भके बाद एक सप्ताह पहले बहुत गड़बड़ी अनुभव करती है; आर्त्तव-स्रावके पहले और बाद कमरमें दर्द होता है। गर्भ-स्राव और जरायुसे रक्तस्रावके बाद और भोजनके समय कमरमें बहुत दर्द, बहुत पसीना होना और थकावट मालूम होना; चलनेके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि वह चल न सकेगी और उसकी सो जाने की इच्छा होती है। प्रसवका दर्द, चीण वेग; नितम्बदेशमें तेज दर्द, कमर दबा देनेके लिये कहती है (काष्टि), बहुत अधिक कमरमें दर्दके साथ पीली आभा लिये प्रदरका स्राव (ऐल्यु, सल्फ,—पीले रंगका और गाढ़े गोंद की तरह=केलि)। गर्भवतियोंका खूनका स्राव,—थक्का थक्का जमा हुआ खूनका स्राव। ऋतुकालमें सवेरे सर दर्द, उदर या तलपेटमें छेदनेकी तरह दर्द; कमरमें ऐसा दर्द मानो एक भारी चीज दबाई हुई है, वक्ष-स्थानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; नयी सर्दीका स्राव और समूचे देहमें सुश्रमी सिहरन आया करती है। गर्भावस्थामें चलनेके समय जी मिचलाता है पर वमन

भरे दाने निकलते हैं ; जीभके अगले भागको लताकी तरह छोटी पेशीमें जखम। निगलनेमें कष्ट—तालुमूलमें सुई वेधनेकी तरह दर्द, मानो काँटा गड़ गया है (हिप, डलिकस, ऐसिड-नाई)। खानेके पदार्थ आदि प्रायः वायुनलीमें प्रवेश कर जाते हैं और अनकुस लग जाता है ; निगलनेके समय पीठमें दर्द मालूम होता है। दाँतमें दर्द और बाएँ वक्षमें सुई गड़नेकी तरह या छेदने की तरह दर्द पर्याय क्रमसे प्रकट होता है।

पाकाशय और अन्नाशय।—भोजनके समय औंघाई,—बार बार जम्हाई आया करती है। खटाई या चीनी खानेकी इच्छा (हिप-देखो)। दूध या गर्म चीज अच्छी नहीं लगती और सहन भी नहीं होती (पलस, सिपि)। पाकस्थली आध्मान वायुसे फूली रहती है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता ; भोजन करते ही पेट इतना फूल जाता है कि ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा। बहुत अधिक वायु-सञ्चय ; रोगी जो कुछ खाता है वह सभी ऐसा मालूम होता है, मानो भाफ बन जाता है (आयोड, नक्स-मस,—अम्लमें परिणत हो जाता है=कैल्के-आष्ट्र)। भोजनके बाद खट्टी डकार (ब्राई, कैल्के, फास,—तीते स्वादकी डकार=बेल, चायना, नक्स-वोम,—लहसनकी गन्धकी डकार=मस्कस)। मिचली इतनी अधिक रहती है, कि ऐसा मालूम होता है कि रोगी सुन्न हो पड़ेगा, सोनेपर वह बन्द हो जाता है (रास)। खायी हुई चीज अम्लमें परिणत होकर कै हो जाती है (नक्स, फास,—बहुत खट्टा जलीय वमन आइरिस)। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है मानो अस्त्रसे काटकर टुकड़े टुकड़े कर रहा है (मानो छिन्न विच्छिन्न कर रहा है=आर्स)। पाकस्थलीमें टपक (नक्स, पलस)। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होना मानो एक मुट्ठी-भरका गोलेकी तरह पदार्थ है। यकृत प्रदेशमें जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई)। आँतें आदिकी निष्क्रियता और आँतमें ठण्डक मालूम होना (आर्स, फास, सिलि)।

मलान्त्र और मल।—मलमें कड़ापन, मल कड़ा और बड़े कष्टसे निकलता है,—पाखाना होनेके एक या दो घण्टा पहले, मलान्त्रमें सुई गड़नेकी तरह शूलका दर्द अनुभव होता है। पाखाना होनेके पहले और पाखाना होनेके समय सफेद आँव निकला करती है। मलान्त्रमें जलन और खुजली। बवासीरका मसा बड़ा और फूला तथा बाहर निकला हुआ (ऐसिड-म्यूर)। बहुत दर्द भरा, खाँसनेपर अर्शका दर्द बढ़ जाया करता है। मलद्वारमें ऐसा

मालूम होता है मानो एक जलता हुआ लोहेका सींखचा घुस रहा है; ठण्डे पानीके स्पर्शसे क्षण भरके लिये आराम मिलता है (कैलि-आर्स)। ऋतुके समय मलका कड़ापन (सिपि)। गर्भावस्थामें मलद्वारमें सुई गड़ने और पीसनेकी तरह दर्द।

पेशाव।—बार बार वेग और बहुत थोड़े परिमाणमें गर्म पेशाव होना; पेशावके अन्तमें मूत्राधारकी मुखशायी ग्रन्थिसे रस-स्राव। मूत्रनालीमें काटनेकी तरह दर्द, दर्द बाईं ओरसे दाहिने पार्श्वमें चला जाता है। पेशाव करनेके समय और बाद मूत्रनालीमें जलन होती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—शिश्न और लिङ्ग-मुण्डमें खींचने और छेदनेकी तरह दर्द। मुष्कमें चोटकी तरह दर्द; रमणकी इच्छा न होना। कामोत्तेजक सपने और वीर्य-स्खलन। रमण और वीर्य-स्खलनके बाद क्षीण दृष्टि और आलस्य मालूम होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमणियोंको रमणसे अनिच्छा; रमणके समय योनिके भीतरकी खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द होता है, ऋतु बहुत देरसे होता है, सफेद और थोड़ा होता है (डालका, हिप, नेट-म्यू, सल्फ, पल्स), निर्दिष्ट समयके बहुत पहले बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव (बेल, कैल्के, नक्स, फास, सेबाई)। रोगिनी ऋतु आरम्भके बाद एक सप्ताह पहले बहुत गड़बड़ी अनुभव करती है; आर्त्तव-स्रावके पहले और बाद कमरमें दर्द होता है। गर्भ-स्राव और जरायुसे रक्तस्रावके बाद और भोजनके समय कमरमें बहुत दर्द, बहुत पसीना होना और थकावट मालूम होना; चलनेके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि वह चल न सकेगी और उसकी सो जानेकी इच्छा होती है। प्रसवका दर्द, क्षीण वेग; नितम्बदेशमें तेज दर्द, कमर दबा देनेके लिये कहती है (कास्टि), बहुत अधिक कमरमें दर्दके साथ पीली आभा लिये प्रदरका स्राव (ऐल्यू, सल्फ,—पीले रंगका और गाढ़े गोंद की तरह—केलि)। गर्भवतियोंका खूनका स्राव,—थक्का थक्का जमा हुआ खूनका स्राव। ऋतुकालमें सवेरे सर दर्द, उदर या तलपेटमें छेदनेकी तरह दर्द; कमरमें ऐसा दर्द मानो एक भारी चीज दबाई हुई है, कर्ण-विवरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; नयी सर्दीका स्राव और समूची देहमें खुजली निकल आया करती है। गर्भावस्थामें चलनेके समय जी मिचलाता है पर वमन

भरे दाने निकलते हैं ; जीभकी अगले भागकी लताकी तरह छोटी पेशीमें जखम। निगलनेमें कष्ट—तालुमूलमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, मानो काँटा गड़ गया है (हिप, डलिकस, ऐसिड-नाई)। खानेके पदार्थ आदि प्रायः वायुनलीमें प्रवेश कर जाते हैं और अनकुस लग जाता है ; निगलनेके समय पीठमें दर्द मालूम होता है। दाँतमें दर्द और बाएँ वक्षमें सुई गड़नेकी तरह या छेदने की तरह दर्द पर्याय क्रमसे प्रकट होता है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—भोजनके समय औंघाई,—बार बार जम्हाई आया करती है। खटाई या चीनी खानेकी इच्छा (हिप-देखो)। दूध या गर्म चीज अच्छी नहीं लगती और सहन भी नहीं होती (पल्स, सिपि)। पाकस्थली आधान वायुसे फूली रहती है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता ; भोजन करते ही पेट इतना फूल जाता है कि ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा। बहुत अधिक वायु-सञ्चय ; रोगी जो कुछ खाता है वह सभी ऐसा मालूम होता है, मानो भाफ बन जाता है (आयोड, नक्स-मस,—अम्लमें परिणत हो जाता है=कैल्के-आष्ट्र)। भोजनके बाद खट्टी डकार (ब्राई, कैल्के, फास,—तीते स्वादकी डकार=बेल, चायना, नक्स-वोम,—लहसनकी गन्धकी डकार=मस्कस)। मिचली इतनी अधिक रहती है, कि ऐसा मालूम होता है कि रोगी सुन्न हो पड़ेगा, सोनेपर वह बन्द हो जाता है (रास)। खायी हुई चीज अम्लमें परिणत होकर कै हो जाती है (नक्स, फास,—बहुत खट्टा जलीय वमन आइरिस)। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है मानो अस्त्रसे काटकर टुकड़े टुकड़े कर रहा है (मानो छिन्न विच्छिन्न कर रहा है=आर्स)। पाकस्थलीमें टपक (नक्स, पल्स)। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होना मानो एक मुट्ठी-भरका गोलेकी तरह पदार्थ है। यकृत प्रदेशमें जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई)। आँतें आदिकी निष्क्रियता और आँतमें ठण्डक मालूम होना (आर्स, फास, सिलि)।

मलान्त्र और मल।—मलमें कड़ापन, मल कड़ा और बड़े कष्टसे निकलता है,—पाखाना होनेके एक या दो घण्टा पहले, मलान्त्रमें सुई गड़नेकी तरह शूलका दर्द अनुभव होता है। पाखाना होनेके पहले और पाखाना होनेके समय सफेद आँव निकला करती है। मलान्त्रमें जलन और खुजली। बवासीरका मसा बड़ा और फूला तथा बाहर निकला हुआ (ऐसिड-म्यूर)। बहुत दर्द भरा, खाँसनेपर अर्शका दर्द बढ़ जाया करता है। मलद्वारमें ऐसा

जखमवाले रोगमें यह कच्छ्-विषवतदोष नाशकरनेवाली दवा सेवन न करनेपर रोगी कभी आरोग्य नहीं हो सकता" हनिमेन। रोगी कहता है—"२५ वर्षकी उम्रमें मुझे फेफड़े का जो प्रदाह हुआ था, उससे अबतक एकदम अच्छा न हो सका"। कलेजा धड़कना, विशेषकर सवेरे नींद खुलनेपर बढ़ना। इसके साथही मस्तिष्कमें जड़ता और मिचली। हृद प्रदेशमें जलन (जाड़ा मालूम होना= नैट्र-म्यूर)। हृदप्रदेशमें ऐंठनकी तरह दर्द, मानो जकड़ गया। हृत्पिण्डके भीतर या हृद-प्रदेशमें नखलगने या जकड़ जानेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो हृदपिण्ड सूत या डोरीसे झुलाया जा रहा है। दाहिनी करवट सोनेपर ऐसा मालूम होना मानो हृत्पिण्ड बाएं पार्श्वकी ठठरियोंको दाहिनी ओर खींच रहा है। दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेपर या खाँसनेपर बढ़ जाता है, शरीर हिलानेके समय दर्द मालूम होता है। शरीरमें सब जगह यहांतक कि पैरकी अंगुलीके अगले भागतक धमनीकी गति अनुभव होती है।

गर्दन और पीठ।—गर्भ-स्राव,—जरायुसे—शोणित-स्राव और प्रसवके बाद तथा भोजनके समय पीठ और कमरमें दर्द, पसीना ज्यादा होना और कमजोरी (केल्के-हाइपोफास); चलनेके समय कमरमें इतना दर्द और थकावट मालूम होती है कि रोगिनी रास्तेपर ही सो जाना चाहती है। ऋतु के पहले और समय कमरमें तेज दर्द; कमरमें अकड़न, और सुन्न करनेवाला दर्द (गलेमें—सल्फ)। दोनोंही मूत्रग्रन्थियोंमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (बाईं ओर बार्बेरिस, टैबाक, दाहिनी ओर=लाइकोपोड, ओसि-कैन)। ऐसा मालूम होता है मानो गलेका पिछला भाग जकड़ गया है (बेल, फास, सिपि, सल्फ)। ग्रीवा देशकी ग्रन्थि फूली (कास्टि, मार्क, साइलि)। निचली पीठ में लगातार आकर्षणकी तरह प्रचण्ड दर्द और कभी कभी टपक मालूम होती है, शायितावस्थामें घटना। कमरमें चोटकी तरह दर्द, केवल विश्रामके समय अनुभूत होता है।

प्रत्यङ्गादि।—कन्धेसे मणिबन्धतक, समूचे बाहुमें उखाड़नेकी तरह दर्द (रात, कन्धेकी सन्धिके स्थानपर=ब्राई, सल्फ)। ऐसा दर्द मानो कलाईकी पेशियां-सब उखाड़ी जा रही हैं। रातके समय दोनों पैरोंमें छेदनेकी तरह वातका दर्द, स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। रोगीको चाहे कितनी ही सावधानतासे छुआ जाये, वह चौंककर कांप उठता है। विशेषकर यदि निचला पैर या तलवा छू जाये। तलवेमें बहुत भार और अकड़न मालूम होती

नहीं होता और रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि वह अभी अभी लेटनेपर मर जायगी ; शरीरमें सब जगह, यहांतक कि पैरकी अँगुलीके अगले भाग तककी धमनियोंमें टपक पैदा हो जाती है ; शरीरके भीतर खालीपन मालूम होता है और रोगिनी इतनी गड़बड़ी अनुभव करती है, कि वह बड़े कष्टसे दो एक कदम चल सकती है ; कमरमें इतना दर्द होता है, कि वह रास्तेमें ही लेट जाती है। सूतिका ज्वरमें बहुत अधिक प्यास।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभंग और स्वरलोप (फास)। गलेके भीतर सुरसुरी या उत्तेजनाकी वजहसे खांसी (बेल, चायना, नक्स, फास)। खाँसी,— सूखी, ऊपरके ऊपर ; खाँसते खाँसते गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा या पीब वायुनली के भीतरसे अलग होकर गलेमें आ जाता है। पर वह बाहर न निकलकर फिर निगलनेके साथ गलेमें चला जाता है। आक्षेपिक खाँसी,—गलरोध करनेवाली या अजीर्ण खायी हुई चीजोंकी कै करा देनेवाली ; खाँसनेके समय मुंहके भीतर से कड़ा, सफेद या धुमैला जमा हुआ या छोटे श्लेष्माकी गोलियाँ सब निकलकर फैल जाती हैं (बेडि, चेलिडो)। बाएं वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ सूखी प्रबल खांसी ; रातके ३ बजेसे ४ बजनेके समय बढ़ना। स्वरनालीमें एक खील या ठेपी मानो रुकी हुई है—ऐसा अनुभव होना (स्पंजिया)। बाहरी संचालनसे खांसी आने लगती है या बेहला बजानेके समय बार बार खाँसी आती है। बलगम पीला पीबकी तरह या गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मामय, कभी खट्टा स्वाद लिये या खून मिला। , हूप-खाँसी ; बार बार सूखी, शरीरको हिला देनेवाली, हूप शब्दमें अन्त होनेवाली खाँसी—नाकसे खूनका स्राव, पाकस्थलीके भीतरके सभी खाये हुए पदार्थ वमन कर डालना। खून मिले बलगमके साथ ऊपरी पलक और भँवके बीचमें थैलीकी तरह सूजन ; रातके ३—४ बजेके समय बढ़ना। श्वासरोग या दमा ; सीधे होकर या सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर या हिलनेपर श्वास कष्टका घटना ; रातमें दो बजेसे ४ बजेतक बढ़ना। तेजीसे चलने या सवेरेके समय श्वास-प्रश्वासमें बाधा पहुंचती है। श्वास लेनेके समय वक्षोस्थि और दाहिने वक्षसे पीठतक सुई गड़नेकी तरह दर्द। रातमें श्वास प्रश्वासमें व्याघातकी वजहसे नींद खुल जाती है (सोतेही श्वासरोध होनेका उपक्रम होता है और नींद खुल जाती है=ल्लोरम , जेलसि , ग्रफिइ , मैके , लैक-केन , ओपि)। फेफड़ा और यकृतके प्रदाहमें दाहिने वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। फेफड़ेमें पीब संचय या फोड़ा निकलना। "फेफड़ेके

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—या प्रतिविष।—कैम्फो, काफि इत्यादि।

अनुपूरक।—कार्बो-वेज, फास, नेट्र-म्यूर, सिपिया, नाइट्रिक-ऐसिड।

सदृश।—ब्राई, लाई, नेट्र-म्यूर, ऐसिड नाई, स्टेन, फास, सिपि, चेलिडो, कैल्के-हाइपोफास। "जब नेट्र-म्यूरसे रुका हुआ रजःस्राव फिरसे जारी करनेकी चेष्टा विफल हो, उस समय कैलि-कार्बकी दो चार मात्रा प्रयोग करनेपर तुरन्त काम बन जाता है" (हनिमैन)। तरल और घड़ घड़ शब्द करनेवाली खाँसीमें कैली-सल्फ, फास और स्टेनमके बाद कैलि-कार्ब खूब फायदा करता है।

तुलनीय।—कास्टिकम (श्वास-प्रश्वास क्रिया; अर्श, वात); कैलि-बाई (सर्दी, सर-दर्द, अजीर्ण); ब्रायो (तेज दर्द, पित्त लक्षण); चेलिडो, मार्क-बाई (न्यूमोनिया); सिपिया (स्त्री रोग), स्पाइजि (हृदपिण्डमें दर्द); इपिकाक (हमेशा मिचली); ऐण्टिम-टार्ट (श्वासनाली प्रदाह); सोराइनम (कमजोरी); कैल्के (हताशभाव), फास-ऐसिड (उदासीन भाव); हैमा (अर्श); ब्रायो; साइलि (जानु-सन्धि); फास (हृत्पिण्डका मेदापकर्ष); लैकेसिस (हृत्पिण्ड मानो सूतेमें झुलाया हुआ है)

शक्ति।—२ रे दशमिक से १००० शततमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ६० दिन।

कैलि क्लोरिकम।

(KALI CHLORICUM)

दूसरा नाम।—पोटैसियम क्लोरेट।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पेशाबमें अण्डलाल; मुँहमें जखम; दमा; मुँहका उपक्षत; माथेमें पपड़ी जमना; मूत्राधारका प्रदाह; रक्तामाशय; कर्कटकी तरह जखम; खूनका पेशाब; रक्त-स्राव; बवासीर; नखकी बीमारी; पाराका विकार; मुँहका

है। सीढ़ी उतरने, खासकर सीढ़ी चढ़नेके समय दोनों जानु चीण और सुन्न मालूम होते हैं (रियुटा, हियुरा)। दोनों पैर बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार पसीनेसे भरे रहते हैं। किसी अंगको दबाकर सोनेपर वह सुन्न हो जाता है; तलवेके गट्ठे, छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है। पैरके अंगूठे का नख, ऐसा मालूम होता है, मानो माँसमें घुस गया है (साइलि)।

निद्रा।—दिनमें और संध्याके पहले अकसर औंघाई आया करती है। खाता खाता सो जाता है। सोया सोया दाँत कटकटाता है, कांपता और सिहर उठता है। बोलता है और भयसे चौंक उठता है। रातके ३ या ४ बजे नींद खुल जाती हैं। सांस रुकनेको वजहसे नींद खुल जाती है। डाकू, मृत्यु, विपत्ति, सर्प, प्रेत इत्यादिके सपने देखता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—नाड़ीकी गति विभिन्न प्रकारकी। सवेरे जाड़ा मालूम होना या ज्यादा कपकपी मालूम होना (सन्ध्याके समय अधिक—पलस)। दर्दके बाद प्राय: शीत मालूम होता है (दर्दके समय जाड़ा मालूम होना,=आर्स, मार्क, पल्स)। सन्ध्याके समय शीत मालूम होना, अंगीठी या चुल्हेके पास बैठनेपर आराम मालूम होता है=(आर्स, इग्ने; अँगीठी या चूल्हेके पास जाड़ा अधिक मालूम हो=इपिक)। भीतरी उत्ताप पर बाहरी जाड़ा। शीताविर्भाव—भोजनके बाद; शरीर सञ्चालनसे ही; घरके बाहरकी हवा लगनेपर बढ़ना; गर्म लगनेसे घटना; उत्तापावस्थामें प्यास नहीं रहती; बार बार जम्हाई आती है; मस्तक और वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है; श्वासकृच्छ्रता; भीतरी उत्ताप और बाहरी शीत; मानसिक परिश्रम करनेसे ही पसीना आ जाता है; रातभर पसीना होता है पर बोखार नहीं छूटता।

वृद्धि।—रातके ३ बजेसे ४ बजेतक, विश्रामके समय या सोनेपर; दाहिनी करवट सोनेपर, रोगवाला पार्श्व दबाकर सोनेपर, शरीर सामनेकी ओर झुका रखनेपर, खाँसनेपर, सवेरे, संध्याके बाद सोनेपर; ठण्ढी हवा लगनेपर, गर्म द्रव्य आदि पीनेपर, छूनेपर, दबानेपर और रमणके बाद।

उपशम।—दिनमें इधर उधर घूमते-फिरते रहनेपर, दिनमें सीधे होकर या सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर; चलनेपर (नाकका छेद रुकनेपर); निर्मल वायु सेवनसे (परन्तु शीत बढ़ जाता है); उत्ताप लगनेपर, ठण्ढा पानी पीनेपर और दबानेपर (उदरका दर्द)।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—या प्रतिविष।—कैम्फो, काफि इत्यादि।

अनुपूरक।—कार्बो-वेज, फास, नेट्र-मूर, सिपिया, नाइट्रिक-ऐसिड।

सदृश।—ब्राई, लाई, नेट्र-मूर, ऐसिड नाई, स्टैन, फास, सिपि, चेलिडो, कैल्के-हाइपोफास। "जब नेट्र-मूरसे रुका हुआ रजःस्राव फिरसे जारी करनेकी चेष्टा विफल हो, उस समय कैलि-कार्बको दो चार मात्रा प्रयोग करनेपर तुरन्त काम बन जाता है" (हनिमेन)। तरल और घड़ घड़ शब्द करनेवाली खाँसीमें कैली-सल्फ, फास और स्टैनमके बाद कैलि-कार्ब खूब फायदा करता है।

तुलनीय।—कास्टिकम (श्वास-प्रश्वास क्रिया; अर्श, वात); कैलि-बाई (सर्दी, सर-दर्द, अजीर्ण); ब्रायो (तेज दर्द, पित्त लक्षण); चेलिडो, मार्क-वाई (न्यूमोनिया); सिपिया (स्त्री रोग), स्पाइजि (हृदपिण्डमें दर्द); इपिकाक (हमेशा मिचली); ऐण्टिम-टार्ट (श्वासनाली प्रदाह); सोराइनम (कमजोरी); कैल्के (हताशभाव), फास-ऐसिड (उदासीन भाव); हैमा (अर्श); ब्रायो; साइलि (जानु-सन्धि); फास (हृत्पिण्डका मेदापकर्ष); लैकेसिस (हृत्पिण्ड मानो सूतेमें झुलाया हुआ है)

शक्ति।—३ रे दशमिक से १००० शततमिक क्रम तक।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ६० दिन।

कैलि क्लोरिकम।

(KALI CHLORICUM)

दूसरा नाम।—पोटैसियम क्लोरेट।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पेशाबमें अण्डलाल; मुँहमें जखम; दमा; मुँहका उपक्षत; माथेमें पपड़ी जमना; मूत्राधारका प्रदाह; रक्तामाशय; कर्कटकी तरह जखम; खूनका पेशाब; रक्त-स्राव; बवासीर; नखकी बीमारी; पाराका विकार; मुँहका

प्रदाह ; मसानेका प्रदाह ; स्नायुशूल ; शोथ ; पक्षाघात (मुँहका) ; स्वरनाली का प्रदाह ; मुँहासे ; धूम्ररोग ; शीताद ; उपदंश ; मुंहका स्नायुशूल ; जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान-क्रियास्थल श्लैष्मिक झिल्ली है। इसके द्वारा मुख-विवर और दोनों ओठोंकी भीतरी झिल्लीके ऊपर छाले, फोड़े आदि निकलना ; जिस झिल्लीपर रोगका आक्रमण होता है, वह लाल हो जाती है और फूल उठती है और उसके ऊपरवाले जखम आदिका तल-देश भूरा मालूम होता है, इसके अलावा शरीर सामनेकी ओर झुकाने पर या उठनेके समय सरमें चक्कर आना और दो देखना, चेहरा फूला, चेहरेका स्नायुशूल, जीभमें जलन, भूख न लगना, पेट फूलना और पेटमें भाफ पैदा हो जाना, पेशाब अधिक होना, डरावने सपने देखना, ठण्डे दिनोंमें शीत और कपकपी ; हृत्प्रदेशमें शीत मालूम होना ; यकृत आदिमें मेदापजनन, यंत्रणादायक आम-रक्त रोग वगैरह क्लेलि-क्लोरिकमके विषयीभूत हैं। वायु-मार्ग, तालुमूल वगैरहसे भी इसकी क्रियाका परिचय मिला करता है। रोग वाले पार्श्वमें स्पर्श सहन न होना इसका एक निर्णायक लक्षण है। (डा० हियूज)।

लक्षणावली।

मन।—प्रफुल्लता, इसके बाद दुःखित भाव ; ताच्छिल्य भाव, आक्षेपके बाद विकार और प्रलाप।

मस्तक।—सामनेकी ओर देह झुकानेपर और उठकर खड़े होनेपर सरमें चक्कर आ जाता है। बल पूर्वक देह हिलानेपर रक्त-संचय ज्यादा हो जाने के साथ ही साथ सरमें चक्कर आना। माथेके भीतर छेदनेकी तरह दर्द और यह दर्द गण्डास्थि तक फैल जाता है। बच्चोंका दुधिया फोड़ा (वायोला-ट्राई, विङ्का-माई, रास-विन)। आँखके गोलेके ऊपरी प्रदेशमें हलके दर्दके साथ दो देखना और ऐसा मालूम होता है, मानो द्रव्य आदि अगल बगल सटे हुए रखे हैं। खाँसी या छींकके बाद आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं।

नाक।—नाकके छेदसे बराबर पानीकी तरह श्लेष्माके [illegible] छींक आती रहना (साइक्लेमेन)। रातमें केवल [illegible] ने [illegible] स्राव,—रक्तस्राव होनेबाद चित्तकी विकलताका

मुखमण्डल ।—सवेरे नींद खुलनेपर मुँह इतना फूल जाता है, कि देखनेमें गड़बड़ी होती है। मुँह, आँख और चर्वणपेशीका स्पन्दन। मुंहकी हड्डीमें खींचन, ऐंठन और पोसनेकी तरह दर्द। एक पार्श्वका पक्षाघात (कास्टि), रोगवाले पार्श्वमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता, मुंहके बाएं पार्श्वमें बिजलीकी सलाई गड़नेकी तरह दर्द, बोलने, खाने या जरा भी छूनेपर बढ़ना; धीरे धीरे रोगवाला पार्श्व सुन्न हो जाता है। हनुसन्धिमें ऐंठन और हनु तथा दांतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना; दाहिने पार्श्वमें दर्दकी अधिकता। दोनों ओंठ नीले और फूले।

मुख-विवर ।—हनु और दांतमें डंक मारनेकी तरह दर्दके साथ गालसे हनु-सन्धितक फैलनेवाला दर्द, ऐसा मालूम होना मानो जकड़ गया है। दांतके दोनों मसूढ़े छेद-भरे, कोमल रहते हैं और उनसे सहजमें ही खून निकलता है, मुँह और गलेके भीतर छोटे सफेद आभा लिये, जखम सब निकलते हैं और मुंहसे बहुत बदबूदार वायु निकलती है। मुंहके भीतरी भागका उपचत और कौषिक-प्रदाह, आक्रान्त श्लैष्मिक झिल्ली लाल हो जाती है और फूल उठती है तथा गालका भीतरी भाग, ओंठ, मसूढ़ा वगैरहमें धुमैली तलीवाले जखम पैदा होते हैं (ऐसिड-म्यू, ऐसिड-सल्फ, मार्क-कोर)। बहुत ज्यादा लार बहना,—ओठके अगले भागसे लगातार चुआ करती है। जीभ फूली हुई।

गलेके भीतर ।—हनुके नीचेकी ग्रन्थियाँ सब फूली; गलेका भीतरी भाग लाल और फूला हुआ मालूम होता है। गलेका भीतरी भाग सूखा और त्वचामें रगड़ मालूम होनेकी तरह प्रचण्ड खाँसी, मानो गलेमें गन्धकका धुआँ घुस गया है। गल-ग्रन्थिका प्रदाह, और जखमकी तरह अवस्था और सूजन।

पाकस्थली ।—प्रचण्ड भूख पर थोड़ा-सा भी पानी पीनेपर तृप्ति हो जाती है और भूख नहीं रहती; शून्य या खट्टी डकार; कभी तेज डकार और कभी कभी वमन और पाकस्थलीमें दर्द—इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें भार और भारीपन मालूम होना और आध्मान (पेट फूलना), रातमें घटना। पीली आभा लिये काले रंगका पदार्थ वमन होता है। प्यास नहीं रहती।

अन्नाशय ।—बहुत अधिक गैस पैदा होना और पेट फूलना। पेटमें गड़गड़ाहट होकर पतला पतला पाखाना होने लगता है। नाभि-प्रदेशमें भार, कड़ापन और दर्द मालूम होता है। बायीं कोखमें दबाव मालूम होता है; दाहिनी कोखसे नाभि-प्रदेशतक भीतरसे दबाव मालूम होना; वायु निकलनेपर घटना।

मलान्त्र और मल ।—मलमें कड़ापनके साथ निकला हुआ अर्श (ऐसिड-म्यूर)। यकृत और पित्तवाही शिरामें अधिक रक्त संचय होना और पित्तके प्रवाहका रुक जाना; इसके साथही अर्श पैदा हो जानेकी सम्भावना। रक्तामाशय,—पेटमें भयंकर दर्द, मानो किसी अस्त्रसे छेद रहा है। बार बार मल-वेग; कूंथनकी वजहसे रोगी चिल्लाया करता है, बहुत थोड़ा मल। बहुत बार केवल सत्रा खून निकलता है और रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती (टी० एफ० ऐलेन)। प्रबल उदरामय, मल क्रमशः और भी पतला हो जाता है, अन्तमें केवल आम निकला करती है।

पेशाब ।—मसाना या ब्लैडर प्रदाह। पेशाब,—प्रबल और बार बार वेग। मूत्रस्थली खाली नहीं होती, कई बूंद खून मिला पेशाब बूंद बूंद कर निकलता है। मूत्रस्थली और मूत्रनालीमें उत्तेजनाके साथ बार बार अधिक परिमाणमें पेशाब होना। पेशाब लार-भरा और काली आभा लिये या पीला-काला रंग। खूनका लोहित उपादान मिला। कभी कभी गदला पेशाब होना। पेशाब रुकना।

श्वासयंत्र ।—कण्ठ और वक्षमें सूखापन मालूम होनेके साथ प्रचण्ड खाँसी;—मानो गलेमें गन्धकका धुआं घुस गया है। श्वास-रोग, इसके साथ ही वक्षस्थलमें कसावटका भाव (जिङ्क, कैड्मि-सल्फ, कैक्ट); मानो वक्षमें गन्धकका धुआं प्रवेश कर गया है। वक्षमें दबाव मालूम होना और मानो दोनों फेफड़े एक सूतेसे कसकर बंधे हुए हैं। हृदयके अगले भागमें शीत मालूम होना (कैलि-नाई, नेट्र-म्यूर)। हृत्पिण्डमें बहुत टपकका दर्द वक्षमें दबाव मालूम होना और दोनों पैरोंका [illegible]

प्रत्यङ्ग आदि । [illegible] और प्रलाप। माथा तथा अन्यान्य अंगोंका [illegible] वज- हसे दर्द कमजोरी, आलस्य, [illegible]

स्नान करनेपर पसीना और उत्तम नींद आकर घट जाता है। बहुत जाड़ा मालूम होना, लगातार सिहरावन और कम्पन और कभी दोनों हाथ ठण्डसे अकड़ जाते हैं। दोनों पैर लगातार ठण्डे रहते हैं। पेशियोंकी अकड़न। दोनों हाथ बहुत ज्यादा ठण्डे मालूम होते हैं। प्रदाह-जनक नख-शूल। ठण्डे पैरोंके साथ कलेजा धड़कना।

त्वचा।—शरीरका नीलापन, विशेषकर ओंठ और हाथ-पैरोंका; ललाट, ओंठ और चिबुकके बीचमें और उसमें लाल रङ्गके दाने निकलते हैं। हाथ पैरोंमें लाली-भरी और रस-भरी खुजलानेवाली फुन्सियाँ निकलती हैं। समूची देहमें खुजली, सन्ध्याके बाद सोनेपर बढ़ना। नेबा या कामला।

सम्बन्ध।—**प्रतिविषया दोषघ्न**।—मार्क।

तुलनीय।—कैलि-म्यूर, (मुँहका पक्षाघात); कास्टि, कैलि-बाई (गलनलीका प्रदाह), कैक्ट (दमा); कैडमियम-सल्फ, जिङ्क, कैलि-नाई, नेट्र-म्यूर (हृत्पिण्डमें ठण्डक मालूम होना)।

शक्ति।—पहला दशमिक विचूर्ण (हियुज)। १ लासे ६ ठा दशमिक क्रम। आजकल ३० या उच्च क्रम व्यवहार हुआ करता है।

कैली सायानेटम।

(KALI CYANATUM)

दूसरा नाम।—साइनाइड आव पोटास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— संन्यास; दमा; कर्कट रोग; आंखका स्नायुशूल; मृगी; सर-दर्द; स्नायुशूल; वात; बोलीकी जड़ता; जीभका कर्कटीया जखम।

उपयोगिता और आभास।—अपस्मार या मृगीकी तरह और संन्यास आदिके लक्षणमें इसका प्रधान लाभ दिखाई दिया करता है। अधिक कर कनपटी और भवोंका स्नायुशूल और जीभके कर्कट रोगमें भी यह बहुत लाभदायक है।

अन्त्राशय ।—बहुत अधिक गैस पैदा होना और पेट फूलना। पेटमें गड़गड़ाहट होकर पतला पतला पाखाना होने लगता है। नाभि-प्रदेशमें भार, कड़ापन और दर्द मालूम होता है। बायीं कोखमें दबाव मालूम होता है; दाहिनी कोखसे नाभि-प्रदेशतक भीतरसे दबाव मालूम होना; वायु निकलनेपर घटना।

मलान्त्र और मल ।—मलमें कड़ापनके साथ निकला हुआ अर्श (ऐसिड-मूर)। यकृत और पित्तवाही शिरामें अधिक रक्त संचय होना और पित्तके प्रवाहका रुक जाना; इसके साथही अर्श पैदा हो जानेकी सम्भावना। रक्तामाशय,—पेटमें भयंकर दर्द, मानो किसी अस्त्रसे छेद रहा है। बार बार मल-वेग; कूंथनकी वजहसे रोगी चिल्लाया करता है, बहुत थोड़ा मल। बहुत बार केवल सुखा खून निकलता है और रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती (टी० एफ० ऐलेन)। प्रबल उदरामय, मल क्रमशः और भी पतला हो जाता है, अन्तमें केवल आम निकला करती है।

पेशाब ।—मसाना या वृक्कका प्रदाह। पेशाब,—प्रबल और बार बार वेग। मूत्रस्थली खाली नहीं होती, कई बूंद खून मिला पेशाब बूंद बूंद कर निकलता है। मूत्रस्थली और मूत्रनालीमें उत्तेजनाके साथ बार बार अधिक परिमाणमें पेशाब होना। पेशाब लार-भरा और काली आभा लिये या पीला-काला रंग। खूनका लोहित उपादान मिला। कभी कभी गदला पेशाब होना। पेशाब रुकना।

श्वासयंत्र ।—कण्ठ और वक्षमें सुखापन मालूम होनेके साथ प्रचण्ड खाँसी;—मानो गलेमें गन्धकका धुआं घुस गया है। श्वास-रोग, इसके साथ ही वक्षस्थलमें कसावटका भाव (जिङ्क, कैड्मि-सल्फ, कैक्ट); मानो वक्षमें गन्धकका धुआँ प्रवेश कर गया है। वक्षमें दबाव मालूम होना और मानो दोनों फेफड़े एक सूतेसे कसकर बंधे हुए हैं। हृदयके अगले भागमें शीत मालूम होना (केलि-नाई, नेट्र-मूर)। हृत्पिण्डमें बहुत टपकका दर्द, वक्षमें दबाव मालूम होना और दोनों पैरोंका ठण्ढा मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—धनुष्टंकार आदि आक्षेपके बाद विकार और प्रलाप। माथा तथा अन्यान्य अंगोंका स्पन्दन। शरीरके विभिन्न अंशोंमें वातकी वजहसे दर्द। कमजोरी, आलस्य, और निद्रालुता। हिमाङ्ग अवस्था। गर्म जलमें

ान करनेपर पसीना और उत्तम नींद आकर घट जाता है। बहुत जाड़ा
ालूम होना, लगातार सिहरावन और कम्पन और कभी दोनों हाथ ठण्डसे
ाकड़ जाते हैं। दोनों पेर लगातार ठण्डे रहते हैं। पेशियोंको अकड़न।
ोनों हाथ बहुत ज्यादा ठण्डे मालूम होते हैं। प्रदाह-जनक नख-शूल। ठण्डे
रोंके साथ कलेजा धड़कना।

त्वचा।—शरीरका नीलापन, विशेषकर ओंठ और हाथ-पेरोंका;
लाट, ओंठ ओर चिवुकके बीचमें और उरुमें लाल रङ्गके दाने निकलते
। हाथ पेरोंमें लाली-भरी और रस-भरी खुजलानेवाली फुन्सियाँ निकलती
। समूची देहमें खुजली, सन्ध्याके बाद सोनेपर बढ़ना। नेंबा या कामला।

सम्बन्ध।—प्रतिविषया दोषघ्न।—मार्क।

तुलनीय।—केलि-मूर, (मुँहका पक्षाघात); कास्टि, केलि-बाई
गलनलीका प्रदाह), कोक्ट (दमा); केडमियम-सल्फ, जिङ्क, केलि-नाई,
ङ्ग-मूर, (हृत्पिण्डमें ठण्डक मालूम होना)।

शक्ति।—पहला दशमिक विचूर्ण (हियुज)। १ लासे ६ ठा दशमिक
ाम। आजकल ३० या उच्च क्रम व्यवहार हुआ करता है।

केली सायानेटम।

(KALI CYANATUM)

दूसरा नाम।—सायनाइड आव पोटास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—
ंन्यास; दमा; कर्कट रोग; आंखका स्नायुशूल; मृगी; सर-दर्द; स्नायुशूल;
ात; मोलोकी जड़ता; जीभका कर्कटीय जखम।

उपयोगिता और आभास।—अपस्मार या मृगीकी तरह और
ंन्यास आदिके लक्षणमें इसका प्रधान लाभ दिखाई दिया करता है। अधिक
ार कनपटी और भवोंका स्नायुशूल और जीभके कर्कट रोगमें भी यह बहुत
लाभदायक है।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—माथेमें बहुत चक्कर आना,—ऐसा मालूम होता है मानों उसके चारों ओर सभी चीजें घूम रही हैं। माथेके पीछे खींचन। कनपटी और भवोंमें स्नायुशूल—भयंकर यन्त्रणा, रोगी चिल्लाया करता है और रोगवाली जगहमें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता। कनपटी और ऊपरी हनुके बाएँ अंशमें प्रचण्ड स्नायुशूल,—रोज रातमें ४ बजनेके समय आरम्भ होकर १० बजे तक क्रमसे बढ़ा करता है। १० बजे बाद घट जाता और ४ बजे बाद आराम हो जाता है (प्लेट, स्ट्रेन।

आँख ।—आँखें स्थिर। अपस्मार रोगमें पलक पर्यायक्रमसे खुलती और बन्द होती है और कुछ देर बाद दृष्टि चारों ओर घूमा करती है। पलक बन्द रहनेपर भी उसके भीतरका आँखका गोला बराबर घूमा करता है। पुतली फैली हुई और उसमें रोशनीका ज्ञान नहीं रहता। धुंधली दृष्टि,—बड़े कष्टसे शय्याके पार्श्वमें खड़े हुए रिश्तेदारोंको भी पहचान पाता है।

मुखमण्डल ।—चेहरा पीला, और फूला हुआ। बेहोशीकी अवस्थामें यदि कोई जोरकी आवाजमें कोई बात पूछता है, तो रोगी मुँह हिलाया करता है, मानो उस अवस्थामें भी उसकी श्रवण-शक्ति फिरसे पैदा हो गयी है। बोलनेके समय निचला हनु हिलानेमें थोड़ी तकलीफ होती है, रोगीके हाथ पैर आदि अकड़ जाते हैं। दोनों हनु आपसमें मिल जाते हैं और इस तरह एकसे एक जकड़ जाते हैं, कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता; चक्षु-गोलक उलट जाता है, मुंहकी भाव-भंगी विकृत हो पड़ती है, नाक नुकीली हो जाती है, मुख-विवर बाहरकी ओर खिंच जाता है। नाड़ी छूनेसे नहीं मिलती और दोनों हाथ बराबर कांपा करते हैं।

मुख-विवर ।—जीभमें जख्म, जख्मके किनारे फूले और कड़े, जीभके दाहिने पार्श्वमें एक जख्म, जिह्वामूलतक रोग फैल जाता है। सहजमें ही बोली नहीं निकलती।

प्रत्यङ्ग आदि ।—अपस्मार, एकाएक बेहोश होकर गिर जाता है, अंग-प्रत्यङ्ग बहुत जोरसे फड़का करते हैं और पटकता है तथा भयानक श्वास कष्टता पैदा हो जाती है। [illegible] मन पर्याय क्रमसे फैलती हैं

(सिकेलि), और एकाएक सिकुड़ती हैं। प्रकोपके समय हाथ-पैर आदि कड़े और अकड़ जाते हैं और पेशियाँ सब सिकुड़ा और फैला करती हैं।

सम्बन्ध। —सदृश।—ऐसिड-हाइड्रो, कोम्फो, सिकेलि, स्ट्रैम, सोइन इत्यादि।

शक्ति।—३ रा दशमिक या ६ ठा दशमिक विचूर्ण।

कैली फेरोसायानेटम।

(KALI FERROCYANATUM)

दूसरा नाम।—पोटासिक फेरो साइनाइड।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—रक्तपाण्डु; दुर्बलता; वाधक; अजीर्ण; हृत्पिण्डमें चर्बी बढ़ जाना; श्वेत प्रदर, अधिक मात्रामें खून बहना; वात इत्यादि रोगोंमें फायदा पहुँचाता है।

लक्षणावली।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचना (सिपि)। बहुत ही उदास भाव, यहाँतक कि समय २ पर रुलाई तक आ जाती है,—उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और शून्यता ज्ञात होना। जरायुसे शिराओं का रक्तस्राव और उसीकी वजहसे बहुत कमजोरी। प्रदर—पीवकी तरह पीले रंगका, गाढ़े दूधकी तरह बहुत अधिक; केवल ऋतुके बाद और प्रायः दिनमें ही स्राव होता रहता है।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डकी क्रिया धीमी और क्षीण तथा उसीके कारण जाड़ा मालूम पड़ना, सुस्ती, सरमें चक्कर आना, सुन्न हो जाना और भीतरी कम्पन होना। अक्सर हृत्पिण्डमें जोरका दर्द और समय समय पर ऐसा दर्द मालूम होता है मानो छुरी घुसेड़ी जा रही है। शरीर हिलानेपर बढ़ता है, और विश्राम करनेपर घट जाता है। रोगी भली भाँति समझ सकता है कि उसे कोई कठिन हृद् रोग है और उससे उसकी मृत्यु होना निश्चित है;

लक्षणावली ।

मस्तक ।—माथेमें बहुत चक्कर आना,—ऐसा मालूम होता है मानो उसके चारों ओर सभी चीजें घूम रही हैं। माथेके पीछे खींचन। कनपटी और भवोंमें स्नायुशूल—भयंकर यन्त्रणा, रोगी चिल्लाया करता है और रोगवाली जगहमें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता। कनपटी और ऊपरी हनुके बाएँ अंशमें प्रचण्ड स्नायुशूल,—रोज रातमें ४ बजनेके समय आरम्भ होकर १० बजे तक क्रमसे बढ़ा करता है। १० बजे बाद घट जाता और ४ बजे बाद आराम हो जाता है (प्लेट, स्टेन।

आँख ।—आँखें स्थिर। अपस्मार रोगमें पलक पर्यायक्रमसे खुलती और बन्द होती है और कुछ देर बाद दृष्टि चारों ओर घूमा करती है। पलक बन्द रहनेपर भी उसके भीतरका आँखका गोला बराबर घूमा करता है। पुतली फैली हुई और उसमें रोशनीका ज्ञान नहीं रहता। धुंधली दृष्टि,—बड़े कष्टसे शय्याके पार्श्वमें खड़े हुए रिश्तेदारोंको भी पहचान पाता है।

मुखमण्डल ।—चेहरा पीला, और फूला हुआ। बेहोशीकी अवस्थामें यदि कोई जोरकी आवाजमें कोई बात पूछता है, तो रोगी मुँह हिलाया करता है, मानो उस अवस्थामें भी उसकी श्रवण-शक्ति फिरसे पैदा हो गयी है। बोलनेके समय निचला हनु हिलानेमें थोड़ी तकलीफ होती है, रोगीके हाथ पैर आदि अकड़ जाते हैं। दोनों हनु आपसमें मिल जाते हैं और इस तरह एकसे एक जकड़ जाते हैं, कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता; चक्षु-गोलक उलट जाता है, मुंहकी भाव-भंगी विकृत हो पड़ती है, नाक नुकीली हो जाती है, मुख-विवर बाहरकी ओर खिंच जाता है। नाड़ी छूनेसे नहीं मिलती और दोनों हाथ बराबर काँपा करते हैं।

मुख-विवर ।—जीभमें जखम, जखमके किनारे फूले और कड़े, जीभके दाहिने पार्श्वमें एक जखम, जिह्वामूलतक रोग फैल जाता है। सहजमें ही बोली नहीं निकलती।

प्रत्यङ्ग आदि ।—अपस्मार, एकाएक बेहोश होकर गिर जाता है, अंग-प्रत्यङ्ग बहुत जोरसे फड़का करते हैं और पटकता है तथा भयानक श्वास कृच्छ्रता पैदा हो जाती है। हाथकी अंगुलियाँ सब पर्य्याय क्रमसे फैलती हैं

(सिकेलि), और एकाएक सिकुड़ती हैं। प्रकोपके समय हाथ-पैर आदि कड़े और अकड़ जाते हैं और पेशियां सब सिकुड़ा और फैला करती हैं।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-हाइड्रो, कोम्फो, सिकेलि, ष्ट्रेम, सोइन इत्यादि।

शक्ति।—३ रा दशमिक या ६ ठा दशमिक विचूर्ण।

केली फेरोसायानेटम।

(KALI FERROCYANATUM)

दूसरा नाम।—पोटासिक फेरो साइनाइड।

प्रस्तुत प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—हृत्पाण्डु; दुर्ब्बलता; वाधक; अजीर्ण; हृत्पिण्डमें चर्बी बढ़ जाना; श्वेत प्रदर, अधिक मात्रामें खून बहना; वात इत्यादि रोगोंमें फायदा पहुँचाता है।

लक्षणावली।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचना (सिपि)। बहुत ही उदास भाव, यहाँतक कि समय २ पर रुलाई तक आ जाती है,—उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और शून्यता ज्ञात होना। जरायुसे शिराओंका रक्तस्राव और उसीकी वजहसे बहुत कमजोरी। प्रदर—पीवकी तरह पीले रंगका, गाढ़े दूधकी तरह बहुत अधिक; केवल ऋतुके बाद और प्रायः दिनमें ही स्राव होता रहता है।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डकी क्रिया धीमी और क्षीण तथा उसीके कारण जाड़ा मालूम पड़ना, सुस्ती, सरमें चक्कर आना, सुन्न हो जाना और भीतरी कम्पन होना। अक्सर हृत्पिण्डमें जोरका दर्द और समय समय पर ऐसा दर्द मालूम होता है मानो छुरी घुसेड़ी जा रही है। शरीर हिलानेपर बढ़ता है, और विश्राम करनेपर घट जाता है। रोगी भली भाँति समझ सकता है कि उसे कोई कठिन हृद् रोग है और उससे उसकी मृत्यु होना निश्चित है;

लक्षणावली ।

मस्तक ।—माथेमें बहुत चक्कर आना,—ऐसा मालूम होता है मानों उसके चारों ओर सभी चीजें घूम रही हैं। माथेके पीछे खींचन। कनपटी और भवोंमें स्नायुशूल—भयंकर यन्त्रणा, रोगी चिल्लाया करता है और रोगवाली जगहमें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता। कनपटी और ऊपरी हनुके बाएँ अंशमें प्रचण्ड स्नायुशूल,—रोज रातमें ४ बजनेके समय आरम्भ होकर १० बजे तक क्रमसे बढ़ा करता है। १० बजे बाद घट जाता और ४ बजे बाद आराम हो जाता है (ह्वेट, स्टेन।

आँख ।—आँखें स्थिर। अपस्मार रोगमें पलक पर्यायक्रमसे खुलती और बन्द होती है और कुछ देर बाद दृष्टि चारों ओर घूमा करती है। पलक बन्द रहनेपर भी उसके भीतरका आँखका गोला बराबर घूमा करता है। पुतली फैली हुई और उसमें रोशनीका ज्ञान नहीं रहता। धुंधली दृष्टि,—बड़े कष्टसे शय्याके पार्श्वमें खड़े हुए रिश्तेदारोंको भी पहचान पाता है।

मुखमण्डल ।—चेहरा पीला, और फूला हुआ। बेहोशीकी अवस्थामें यदि कोई जोरकी आवाजमें कोई बात पूछता है, तो रोगी मुँह हिलाया करता है, मानो उस अवस्थामें भी उसकी श्रवण-शक्ति फिरसे पैदा हो गयी है। बोलनेके समय निचला हनु हिलानेमें थोड़ी तकलीफ होती है, रोगीके हाथ पैर आदि अकड़ जाते हैं। दोनों हनु आपसमें मिल जाते हैं और इस तरह एकसे एक जकड़ जाते हैं, कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता ; चक्षु-गोलक उलट जाता है, मुंहकी भाव-भंगी विकृत हो पड़ती है, नाक नुकीली हो जाती है, मुख-विवर बाहरकी ओर खिंच जाता है। नाड़ी छूनेसे नहीं मिलती और दोनों हाथ बराबर कांपा करते हैं।

मुख-विवर ।—जीभमें जखम, जखमके किनारे फूले और कड़े, जीभके दाहिने पार्श्वमें एक जखम, जिह्वामूलतक रोग फैल जाता है। सहजमें ही बोली नहीं निकलती।

प्रत्यङ्ग आदि ।—अपस्मार, एकाएक बेहोश होकर गिर जाता है, अंग-प्रत्यङ्ग बहुत जोरसे फड़का करते हैं और पटकता है तथा भयानक श्वास कष्टता पैदा हो जाती है। हाथकी अंगुलियाँ सब पर्य्याय क्रमसे फैलती हैं

(सिकेलि), और एकाएक सिकुड़ती हैं । प्रकोपके समय हाथ-पैर आदि कड़े और अकड़ जाते हैं और पेशियाँ सब सिकुड़ा और फैला करती हैं ।

सम्बन्ध । —सदृश ।—ऐसिड-हाइड्रो, वोम्फो, सिकेलि, ष्ट्रेम, सोइन इत्यादि ।

शक्ति ।—३ रा दशमिक या ६ ठा दशमिक विचूर्ण ।

केली फेरोसायानेटम ।

(KALI FERROCYANATUM)

दूसरा नाम ।—पोटासिक फेरो साइनाइड ।

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—हृत्पाण्डु ; दुर्व्बलता ; वाधक ; अजीर्ण ; हृत्पिण्डमें चर्बी बढ़ जाना ; श्वेत प्रदर, अधिक मात्रामें खून बहना ; वात इत्यादि रोगोंमें फायदा पहुँचाता है ।

लक्षणावली ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचना (सिपि) । बहुत ही उदास भाव, यहाँतक कि समय २ पर रुलाई तक आ जाती है,—उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और शून्यता ज्ञात होना । जरायुसे शिराओं का रक्तस्राव और उसीकी वजहसे बहुत कमजोरी । प्रदर—पीवकी तरह पीले रंगका, गाढ़े दूधकी तरह बहुत अधिक ; केवल ऋतुके बाद और प्रायः दिनमें ही स्राव होता रहता है ।

हृत्पिण्ड ।—हृत्पिण्डकी क्रिया धीमी और क्षीण तथा उसीके कारण जाड़ा मालूम पड़ना, सुस्ती, सरमें चक्कर आना, सुन्न हो जाना और भीतरी कम्पन होना । अक्सर हृत्पिण्डमें जोरका दर्द और समय समय पर ऐसा दर्द मालूम होता है मानो छुरी घुसेड़ी जा रही है । शरीर हिलानेपर बढ़ता है, और विश्राम करनेपर घट जाता है । रोगी भली भाँति समझ सकता है कि उसे कोई कठिन हृद् रोग है और उससे उसकी मृत्यु होना निश्चित है ;

मधुरा भाभिका आश्रा मागना और हाथ पैर बर्फ जैसे ठण्डे हो जाते हैं। हृत्-पिण्डका धार्ती मकनेवाला रोग।

सम्बन्ध।—प्रदश।—सिपिया, कैलि-कार्बोनिकम। स्टेनम (शिर-दर्द); फेरम, (रक्तपाण्डु); डिजि (हृदरोग, नाड़ीकी गति धीमी हो आना); कौलिनसोनिया, हाइड्रो-ऐसिड।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे ६ ठा दशमिक क्रम तक।

कैलि-आयोडेटम।

(KALI IODATUM or KALI-HYDRIODICUM)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आव पोटास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—धमनीका अर्बुद; मूल-ग्रन्थिकी बीमारी; बाघी; कर्कटका जखम; अस्थि-चय; सर्दी; मसे; चय-कास; खांसी; घुंडी; दुर्बलता या शीर्णता; शोथ; कर्णमूल; आंखकी बीमारी; ग्रन्थिका फूलना; प्रमेह; सन्धिवात; उपदंश-विषसे उत्पन्न अर्बुदकी तरह गुटिका; रक्त-स्राव; सर्दीकी बीमारी; स्वरनालीका प्रदाह; यकृतकी बीमारी; निचले अंगकी पक्षाघातिक दुर्बलता; कटिवात; फेफड़ेकी बीमारी; आर्त्तवमें विकार; स्नायुशूल; कानमें आवाज; शरीरकी गन्ध बिगड़ी हुई; उपजिह्वाका फूलना; आक्षेप; क्षो[illegible] पक्षाघात; फुसफुस आवरक-झिल्ली प्रदाह; मूत्राधार मुत्रगायी [illegible] बीमारी; [illegible] अस्थियोंमें विकार; गठिया; कितनेही [illegible] गण्डमाला [illegible] कशेरुका-मज्जाकी [illegible] प्लीहाकी [illegible] चेहरेका अर्बुद; जखम [illegible]

उपयोगि[illegible] [illegible]

सर्वांगम [illegible] है, पारा द्वारा लमिका [illegible] होकर उसपर शु[illegible] और

होनेकी वजहसे शरीरके कितनेही स्थानोंमें सूजन और विभिन्न अंगोंमें शोथ पैदा हो जाया करता है। उदर और जरायुमें मूलतन्तुमय अर्बुद, लसिका-ग्रन्थिका बढ़ना, उपदंशकी गुटिका प्रभृति दोष पैदा हो जाते हैं; रोगवाले अंगमें फैली हुई स्पर्श-कातरता, जैसे माथेमें इस ढंगकी स्पर्श-कातरता कि खुजलानेपर मानो मुर्दादेशमें जखम हो गया है; कण्ठदेशकी ग्रन्थिमें तेजीसे बढ़नेवाली सूजन और स्पर्शका सहन न होना, नयी सर्दीके रोगमें नाकसे कसैला पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव, आँखमें करकराहटका दर्द, आँख फूलना, स्वरनाली द्वारका शोथ और घुंडी खाँसी, रातमें ५ बजनेके समय बढ़ना; छाती और फेफड़ेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; शून्यगर्भ या खोखली और भग्न-स्वर खाँसी, वक्षमें दर्द मालूम होना और बहुत ज्यादा परिमाणमें पीले रंगका साबुनके फेनकी तरह और मीठा या नमकीन स्वादवाला कफ निकलता है। नींद खुलनेपर कलेजा धड़कता है। रातमें श्वास रुकनेका उपक्रम होनेकी वजहसे रोगी उठ पड़ता है और चलनेके समय हृत्पिण्डमें दर्द बढ़ जाया करता है; अरुचि और राक्षसी भूख और उदरमें भाफ पैदा होनेके साथही साथ पेट फूलना तथा अजीर्ण रोग और शीत लगनेपर पाकाशय और अन्त्राशयके रोग आदिका बढ़ना; रमणके बाद मूत्रनालीमें दर्द; श्लेष्मा और उपदंशके कारण नाना प्रकारके चर्म-रोग; नाना प्रकारकी भ्रम कल्पना, जैसे—मानो माथा बड़ा हो गया है; मानो माथा फटकर दो हो जायगा, नासामूलमें छोटे पत्तेका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है और पीठ मानो जकड़ गयी है इत्यादि कई कैलि-आयो-डैटमके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। इसके सभी लक्षण सूर्यास्तसे सूर्योदयतक बढ़ा करते हैं (अरम, मार्क, सिफिलिन)। सर्दी लगने, यहाँतक कि ठण्डा पानी आदि पी लेनेपर भी, इसके लक्षण सब बढ़ जाते हैं अथच रोगी स्निग्ध वायु सेवनके लिये लालायित रहता है। जो सर्दी माथेका आश्रय ग्रहणकर नीचेकी ओर उतरती है कैलि-आयोडैटम उसकी अव्यर्थ दवा है।

लक्षणावली।

मन।—वाक्पटु, हँसी दिल्लगी बहुत-प्रिय, क्रोधी स्वभाव, कलह-प्रिय, आवाज-सुनते ही चौंक उठता है। उत्तेजित भाव दिखाता है, मानो शराब आदि पिये हो। स्मृति-लोप,—याददाश्तका गायब हो जाना—जब जिस बातकी जरूरत होती है, वह बात याद नहीं आती। अपने कामोंका विव-रण नहीं लिख सकता। रात भर मानो आधा पागल बना रहता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ;—अन्धकार तथा भाफवाली गाड़ीमें घूमनेपर बढ़ना। अस्थियाँ फूली या क्षीण और क्षय रोग-ग्रस्त मनुष्योंके माथे में अधिक रक्त-संचय होना ; ललाट देशमें मानो कोई हथौड़ीसे आघात कर रहा है। ऐसा मालूम होना कि माथा बढ़ गया है ; उद्वेगपूर्ण और अस्थिर निद्रा, माथेमें मानो प्रबल वेगसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी घुस रहा है। हरेक रातमें ५ बजेसे सर दर्द और माथेमें भार मालूम होना, कहीं भी सर रखनेपर आराम नहीं मिलता ; उठनेपर घटना। माथेके दोनों पार्श्व मानो स्क्रू द्वारा कस कर सांटे हुए हैं—ऐसा दर्द निर्मल वायु सेवन करनेपर घटना। बायीं कोख या कनपटीमें और बाईं आँखके ऊपरी प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो छुरी वेधी जा रही है। बाहरी माथेमें बहुत तेज सर दर्द रोगमें मूर्द्धा देशमें जगह जगह गोटियोंकी तरह ऊँचा उठ जाता है और छूते ही तेज दर्द मालूम होता है, उपदंश या पारा विषकी वजहसे या वातके कारण सर दर्द। माथा खुजलानेपर मूर्द्धामें ऐसी स्पर्शकातरता मालूम होती है मानो जखम हो गया है। उपदंशके कारण केश झड़ जाना और केशका रंग बदल जाया करता है।

आँख ।—उपदंश रोगमें पाराके अपव्यवहारके कारण आलोकावरण या उपतारका प्रदाह ; आँखें पानीसे भरी रहती हैं और गदली हो जाती हैं ; पलक बहुत लाल, दर्द आदि रातमें बढ़ जाता है। उपतारका और कृष्णा आवरक दोनोंमें ही प्रदाह,—विशेषकर उपदंश-विषकी वजहसे। बहिः सृताक्षि गोलक (गोला मानो बाहर निकला हुआ)। आँखमें दर्दके कारण नींद खुल जाती है. आँखसे आँसुओंका स्राव हुआ करता है और नाक तथा गलेमें जलन हुआ करती है। संध्याके समय पीबकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है और आँखमें जलन होती है; पलक लाल हो जाती है और दाहिनी आँखसे आँसुओंका स्राव हुआ करता है। आँख बराबर फड़का करती है, किसी तरह भी स्थिर नहीं कर सकता। ऋतुस्रावके साथ पलकोंमें शोथकी तरह सूजन। चक्षुगह्वरकी अस्थिवेष्टनीका प्रदाह, योजकत्वचाकी सूजन और आँखसे पीबका स्राव हुआ।

कान [illegible] सहन न होना, इसके साथ ही कानमें छेद [illegible] भीतर ऐसा

मालूम होना मानो शूल-गड़ रहा है। कानमें स्पर्श-कातरताके साथ शूलका दर्द ; कोई चीज निगलनेकी चेष्टा करनेपर, दाहिने कानमें कड़ाकासे आवाज हो उठती है या दाहिना कान स्फुटित हो जाता है (कैल्के, मिनियैन, ऐसिड-नाई)। कानमें नाना प्रकारकी; तेज आवाजें आती हैं (कार्बोन-सल्फ) ; मानो पानीका सोता प्रवाहित हो रहा है या मानो छत या छप्पड़पर पानी बरस रहा है, ऐसी ही आवाज आती है (रोडो, काक्यु, पल्स); श्रवण-शक्ति प्रायः गायब रहती है।

नाक ।—पाराके अपव्यवहारके कारण नाकसे बहुत अधिक खून गिरता है। सरदी लगनेके साथ ही जोरकी सर्दी हो जाती है, श्लेष्मा कषाय, पलक शोथकी तरह फूली, कानके भीतर डङ्क मारनेकी तरह दर्द, चेहरा लाल, जीभ सफेद लेपसे ढकी ; भयंकर प्यास ; पर्यायक्रमसे शीत और उत्ताप मालूम होना, सरमें दर्द, गाढ़ा लाल रङ्गका और गर्म पेशाब। नाक लाल रङ्गकी और फूली, निकला हुआ श्लेष्मा कषाय और पानीकी तरह ; इसके साथ ही आँसू बहना (ऐलियम-सिपा) ; नासा-मूलमें कसावटका भाव ; बार बार छींकके साथ नाकसे स्वच्छ पानीकी तरह जल-स्राव (साइक्लेमे)। पीनस —नाकमें जखम होकर नासास्थिमें छेद पैदाकर देता है और गाढ़ा पीले रङ्गका और बदबूदार श्लेष्माका स्राव हुआ करता है। नासा-रन्ध्रसे गर्म पानी निकलकर त्वचाको क्षय कर देता है। नासा-मूलके भीतर ऐसा मालूम होता है मानो छोटे पत्तेका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है। मानो एक छोटा कीड़ा रेंग रहा है।

मुखमण्डल ।—मुँह और जीभ फूली, विशेषकर पाराके व्यवहार के बाद पतली सर्दी होनेपर मुखमण्डलमें शूल या या डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होना, बायाँ गाल दबाकर सोनेके समय बाएँ गालकी हड्डीमें छेदने और सुई बेधनेकी तरह दर्द। गालकी हड्डियोंमें छूना बिलकुल ही सहन नहीं होना।

मुख-विवर ।—दाँतकी जड़में ऐसा मालूम होता है, मानो कीड़े रेंग रहे हैं। मसूढ़े फूले, दाँत सब क्षय हुए। क्षय हुए दाँतोंकी जड़में सूजन। दाँत-सब बड़े मालूम होते हैं ; सन्ध्याके समय दाँत और मुँहमें सिड़सिड़ाहट होती है ; लार बहुत ज्यादा, प्यास, कानमें शूल बेधनेकी तरह तेज दर्द, नाकके नीचेवाले अस्थिमय छिद्रमें फोड़ा निकलना (मेजेर)।

कुछ खाने या पीने बाद मुँहका स्वाद बहुत कड़वा हो जाता है। मुंह और गलेमें तीता स्वाद, यह सवेरेके भोजनके बाद दूर हो जाता है। जीभके अगले भागमें जलन ; जीभके अगले भागमें रस-भरे दाने निकलना। मुंहके भीतर टेढ़े मेढ़े किनारे वाले जखम ; सब ऐसे मालूम होते हैं, मानो दूधसे ढके हुए हैं। गर्भावस्थामें मुंहसे गाढ़े गोंदकी तरह और नमकीन लार बहना। मुँहमें मीठापन मालूम होना, इसके साथ ही खून-मिली लारका स्राव (ऐसिड-नाई, मार्क-कौर, नेट्र-सूर)। रातके समय जिह्वामूलमें भयानक दर्द मालूम होता है।

गलेके भीतर।—कण्ठस्थित थाइरायड ग्रन्थिकी तेजीसे बढ़नेवाली सूजन और बहुत स्पर्श-कातरता, निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थिका फूलना और उसमें पीब संचय होनेका लक्षण। गलरोध,—मानो गलेमें कुछ अड़ा हुआ है। खाँसकर थोड़ा-सा गाढ़ा श्लेष्मा निकाल देनेपर आराम मालूम होता है। निगलनेके समय बाएँ पार्श्वमें काँटा गड़नेकी तरह मालूम होना। मानो उसमें घाव हो गया है। संध्याके समय बढ़ना। उपजिह्वा फूली और बढ़ी हुई। गलेके भीतरवाली श्लैष्मिक झिल्ली शोथकी तरह फूली। गलेमें उपदंश-विष दूषित जखम,—त्वचाको छेदनेवाला और तन्तुको नष्ट करनेवाला, उपजिह्वा और कोमल तन्तुको ध्वंस कर देता है।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—बहुत ज्यादा परिमाणमें के हो जाती है, जोर जोरसे डकार आती हैं ; पाकस्थली और अन्त्रमण्डलका प्रदाह। उदरके ऊपरी प्रदेशमें जलन। पाकस्थलीमें जलन और दबाव मालूम होना, डकार आनेपर भी यह लक्षण नहीं जाता। पेटमें कुईकुई और कलकल शब्द। एकाएक पेट फूल जाता है और ऐसा मालूम होता है कि पेट फट जायगा। सवेरे नींद खुलनेपर, वायु निकलने पर घट जाना ; इसके बाद दो बार पतला पाखाना होना ; पेटमें गड़गड़ शब्द मालूम होता है, मानो उसमें एक जीव हिल रहा है (क्रोकस, कैल्के-फास, थूजा, साइक्लेम)। श्रोहा बढ़ना रोगमें, श्रोहा-प्रदेशमें स्पर्श सहन नहीं होता। कायिक परिश्रमके बाद यकृत प्रदेशमें स्पर्श- कातरता। नाभि-प्रदेशमें कतरनेकी तरह-दर्द और जलन। जलन और छेदनेकी तरह दर्द, निर्मल वायु लगनेपर घटता है परन्तु घरमें घुसते ही फिर पैदा हो जाता है। रातमें पेटमें बहुत गड़बड़ी मालूम होती है ; सर्दीका स्पर्श होते ही ; यहाँ तक कि ठण्डा पानी या दूध पीनेपर भी

लक्षण आदि बढ़ जाते हैं। दिनके ११ बजनेके समय उदरके ऊपरी-प्रदेशमें खालीका भाव (सलफर)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय,—बहुत कूथन और कमरमें भयानक दर्द—मानो चिमटेसे पकड़े हुए है ; पाराके व्यवहारके बाद। मलद्वार से रसकी तरह श्लेष्मा निकलता है। कब्जियत,—मल बहुत थोड़ा, कड़ा और बड़ी तकलीफसे निकलता है।

पेशाब।—वातकी वजहसे या पारा-विषसे दूषित उपदंशसे उत्पन्न लाल-मूत्र। मांसाङ्कुर-भरा मसाना या मूत्र-ग्रन्थि। पेशाबका वेग यन्त्रणादायक। ऋतु आविर्भाव होने बाद पेशाब रुक जानेकी वजहसे यन्त्रणा-जनक वेग। पेशाब बहुत ज्यादा परिमाणमें होता है और पानीको तरह होता है ; कभी कभी खूनकी तरह लाल भी होता है। बहुत ज्यादा पेशाब और दुर्दमनीय प्यास (लैक-डिफ्लो, सिजिजियम-येम्बोल)।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषका क्षय और दुबलापन (कैप्स, श्ररम, आयोड, कार्बो-ऐन, लिसिन)। लिङ्गमुण्डका बहुत ज्यादा बढ़ जाना और उल्टी चमड़ी (मार्क, मार्क-कोर, ऐसिड-नाई,—परिवर्त्तिका या चमड़ी-बढ़ी=कैनाब-सैट, लाई, मार्क, ऐसिड-नाई)। शिश्नके ऊपर उपदंशकी तरह उठे हुए किनारेका घाव (कैलि-बाई, लैक-कैन, ऐसिड-नाई, लैके) और मूत्रनालीमें जलन। लिङ्गार्श या माँस किल (ऐसिड-नाई, थूजा)। साधारण वस्त्रको रगड़से भी त्वचा क्षय हो जाती है (नैट्र-कार्ब)। धीरे पर दीर्घस्थायी लिङ्गका कड़ापन, रमणमें तकलीफ या दर्द, बहुत देर तक वीर्य स्खलन नहीं होता। रमणके बाद अकसर शुक्रत्वकमें अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द। रमणेच्छाकी प्रबलताका न रहना। प्रमेह,—स्राव गाढ़ा हरे रंगका। लालामेह—बहुत दिनोंतक स्थायी और दुरारोग्य।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत देरसे होता है पर स्राव बहुत ज्यादा होता है ; ऋतु रुक जाना। आर्त्तव होनेके पहले बार बार पेशाबका वेग। ऋतुके समय दोनों ऊरुमें ऐसा मालूम होता है, मानो घिसा जा रहा है (कोना, नक्स-मस) ; जाड़ा मालूम होना और सरमें उत्ताप मालूम होना। प्रदर,—स्राव पानीकी तरह, कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला। योनिके बाहरी भागमें कुटकुटी हुआ करती है। योनिके भीतरसे श्लेष्माका स्राव,

स्तन सिकुड़ जाते हैं या सूख जाते हैं (कोना ; आयोड, ऐसिड-नाई, नक्स-मस, लैक-डिफ्लो) ; चलनेके समय जरायुमें भार और ऐसा मालूम होता है, मानो नीचेकी ओर खिंच रहा है, बैठनेपर घटना (सिपि, जरायु बाहर निकल पड़नेके भयसे रोगिनी बैठ जाती है = नेट्र-मूर)। ऋतु-निवृत्तिके समय योनिसे खूनका स्राव (जरा हिलने डोलनेसे ही खून निकल जाता है = ऐम्ब्रा)। जरायुमें सूत्र-तन्तुमय अर्बुद पैदा हो जाया करते हैं। रोगिनी को हमेशा यही मालूम होता रहता है कि उसके जरायुमें अर्बुद पैदा हो गया है। स्तनका स्राव (कैल्के, आयोड, कोना, रास)।

श्वास-यंत्र।—दोनों स्वरनालियोंके शोथ रोगमें (एपिस, आर्स, सैङ्गिविन),—गर्दनकी ग्रन्थिका फूलना, स्वरलोप, गलेमें सूखापन और श्वास प्रश्वासमें व्याघातकी वजहसे रोज ५ बजनेके समय नींद खुल जाती है। पीनस रोगाधिकारमें नकियाकर बोलता है, स्वर-भग्न या लोप हो जाता है। खाँसी,—गहरी, खोखली और टूटी हुई आवाज मिली ; खाँसनेपर छातीमें दर्द होता है ; फेफड़ेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; वक्षोस्थिके मध्य-भाग में और चलनेके समय वक्षोस्थिके बीचसे पीठ या वक्षके गभीरतम प्रदेश तक नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। बहुत ज्यादा हरे रङ्गका या साबुनके फेनकी तरह कफ ; सन्ध्याके समय वक्षमें ऐसी यन्त्रणा होती है, मानो काटकर टुकड़े टुकड़े कर रहा है। सीढ़ी चढ़नेके समय हृद्प्रदेशमें दर्दके साथ श्वास-कृच्छ्रता। झुककर बैठनेपर बाएँ वक्षके ऊपरी अंशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, नीचे होकर बैठनेपर घट जाता है ; घूमने या चलते रहनेपर वक्षके भीतरका दर्द घट जाता है। श्लेष्मा पैदा होनेवाले यक्ष्मा-रोगधिकारमें पीबकी तरह कफ निकलता है। सुस्त करनेवाला पसीना रातमें होता है और पाखाना पतला होता है। फेफड़ेका प्रदाह—जब पहले पहले फेफड़ेमें श्लेष्मा इकट्ठा होना आरम्भ होता है ; या जब यक्षत भाव प्राप्त हो जानेकी प्रबलताकी वजहसे सरमें अधिक रक्तसञ्चय होता है और रस-स्राव आरम्भ हो जाता है उस समय चेहरा लाल ; आँखकी पुतली फैली ; पेशाब रुकना, और शरीरका एक अङ्ग प्रायः लकवा मार जानेकी तरह हो जाता है। फेफड़ेका शोथ,—फेफड़ेके प्रदाहके साथ या लाला-मूत्र रोगके प्रतिक्षेपकी वजहसे कफ हरा और साबुनके फेनकी तरह निकलता है। सवेरे नींद खुलनेपर छाती धड़कती है और रोगी साँस रुक जानेके डरसे उठ बैठता है। हृद्स्पन्दन,—चलनेसे

बढ़ना, पारेके व्यवहारके बाद या बार बार प्रदाहके साथ बीमारी, सर्दी लगते ही दर्द आदिका फिरसे पैदा हो जाना, इतनेपर भी रोगी निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित ही बना रहता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कमरमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक बड़े चिमटेसे किसीने कसकर पकड़ रखा है; मस्तिष्कावरणी प्रदाहमें कमरमें शूलकी चोटकी तरह दर्द मालूम होना। त्रिकास्थिके सबसे निचले प्रदेशमें दर्द, मानो किसी ऊंचे स्थानसे चूतड़के बल गिरा है। बायें कन्धेमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है। कन्धे और कानमें छेदनेकी तरह दर्द। प्रत्येक कदम बढ़ानेपर बाएं उरु शिखरमें तेज दर्द, इसी कारणसे रोगी लंगड़ाया करता है। उरुके पिछले भागका स्नायुशूल,—दाहिने उरु और जानुमें छेदनेकी तरह दर्दकी वजहसे रातमें रोगीकी नींद खुल जाती है; रातमें और रोगवाला पार्श्व दबाकर सोने (लाई) या चित होकर सोनेपर बढ़ना; निर्मल वायु लगने (दाहिने पार्श्वका=कोलो, मैग-फास, लाई) पर घटना। जानुदेश फूला और लचीला न रहना। त्वचामें जगह जगह लाल रंग और गर्म और उसमें चबाने, बेधने या छेदनेकी तरह दर्द। रातमें रोगी इस करवटसे उस करवट किया करता है; जानु-सन्धिकी सफेद रंगकी सूजन। तलवेमें चोटकी तरह दर्द। ऐंड़ीके नीचे और पैरकी अंगुलीमें जखमकी तरह दर्द। देहका क्रमशः दुबलापन। पेशियोंका एकाएक सिकुड़ना और फैलना; काष्ठाक्षेप,—हाथ-पैरकी पेशियोंके अगले भाग रह रहकर फड़क उठते हैं; रातमें और रोगवाले पार्श्व दबाकर सोनेपर बढ़ना; पारा, उपदंश विष या वात आदिसे उत्पन्न। सूर्यास्तसे सूर्योदयकालके बीचमें दर्द आदि बढ़ जाया करता है। रोगी तकलीफसे उन्मत्तकी तरह हो जाता है (अरम, मार्क, ऐसिड-नाइ, सिफिलि)। चैतन्य या स्पर्श-कातरताका बढ़ जाना। ऐसा मालूम होना मानो शरीर घूमता जा रहा है। निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित। अस्थिवेष्टनी पर रोगका हमला होकर गुटिका-दोषकी सृष्टि कर देता है। अधिकांश दर्द विश्रामके समय पैदा हो जाता है और रोगवाले अंगको हिला देनेपर घट जाता है (रास)। शरीर संचालनसे, विशेषकर चलनेपर, रोगी अच्छा रहता है और अक्लान्त भावसे बहुत दूरतक भ्रमण कर सकता है। सन्धिवात—जानुसन्धि फूली, उजली और सुई गड़नेकी तरह दर्दसे भरी। जांघकी सामनेवाली हड्डीमें रातमें भयानक दर्द।

त्वचा।—मुखमण्डलपर खुजलानेवाले दादकी तरह उद्भेद। चेहरा, कान्धा और पीठमें ज्यादा परिमाणमें फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं। मूर्द्धाकी त्वचा से पीठतक पीवभरी फुन्सियां पैदा हो जाती हैं और आराम हो जानेपर भी जखमके चिन्हका दाग रह जाता है। मुखमण्डल, माथा, गर्दन, पीठ और वक्षस्थलपर छोटे छोटे फोड़े निकलते हैं और आराम हो जानेपर उनका भी दाग रह जाता है। पारेके अपव्यवहारके बाद या श्लेष्मा प्रधान धातुमें पारा मिला रहनेकी वजहसे गौण उपदंशके कारण उद्भेद आदि। बाघी, कड़ी ऊंचे पार्श्व वाली, उपदंशका जखम और पतला, त्वचाको क्षय करनेवाला या दहीकी तरह पीव निकलना; गहरा छेद करनेवाला जखम। पाटलिका; उकौतकी तरह उद्भेद; छालेकी तरह उद्भेद निकलकर उससे पहले पानी और इसके बाद पीव निकला करता है। हड्डीमें दर्द और वात वेदना; अस्थि-क्षय या हड्डीका सड़ना—हाड़ सड़ा करता है; हड्डी बढ़ना (हेक्का) इत्यादि सब रोग ही रातमें अर्थात सूर्यास्तके बादसे सूर्योदयतक बढ़ जाया करते हैं। गांठें सब बढ़ी हुई। कण्ठदेशकी ग्रन्थिका बढ़ना, वायुनली भुजके भीतर और हनुके नीचेवाली ग्रन्थि फूली हुई। गांठें जखम भरी या क्षय होनेवाली, ढेला जैसी ऊंची हो जाया करती हैं और माथेसे पैरतक जलन हुआ करती है। रोगीको हमेशा बहुत ही अधिक गर्मी मालूम होती रहती है और किसी तरहका भी ओढ़ना सहन नहीं कर सकता।

निद्रा।—बार बार और ऊपरके ऊपर जम्हाई आती है पर नींद नहीं आती। सारी रात जागने बाद सवेरे नींद लग जाती है। सवेरे सोया सोया रोकर उठ बैठता है, पहली नींदके समयही चौंक उठता है, पर फिर तुरन्त सो जाता है, निद्रावस्थामें रोना, आनन्द या विपत्तिके उद्वेग-जनक सपने; ऐसे सपने मानो उसको कोई मार डालेगा। ऐसा सपना देखकर वह चौंक उठता है, मानो वह गिर जायगा।

शीत, उत्ताप और पसीना।—बोखार होनेके समय संध्या ४ बजेसे रातके ८ बजेतक (हिप, लाई, मेग-म्यू) और रातमें १० बजनेके समय। शीतावस्था,—प्यास, औंघाई, जाड़ा पीठसे आरम्भ होकर क्रमसे समूचे शरीरमें फैल जाता है। तीसरे पहर ४ से ७ बजेतक शीतसे कांपा करता है; शय्याके उत्तापसे शीत कुछ घटता अवश्य है पर आग या चूल्हे आदिके उत्तापसे कुछ भी

आराम नहीं मालूम होता (पोडो ; अङ्गीठीकी गर्मीसे घटना = इग्ने, सेबाड) रातमें कम्प हुआ करता है, ऐसा मालूम होना, मानो शीतसे शरीर और खू जमा जा रहा है (हेलोडर्मा) ; कितना भी ओढ़ना क्यों न ओढ़ा दिया जावे जाड़ा बिलकुल ही नहीं घटता, इसके साथही औंघाई और निद्रावेश ; पै बरफकी तरह ठण्ढे और शोथ रोग हो जानेकी तरह फूले (एपिस, आर्स) उत्तापावस्था,—बहुत उत्तापके साथ पसीना ; कुछ देर बादही फिर बहुत जाड़ पैदा हो जाता है ; रह रहकर उत्ताप पैदा होना, कभी कभी जाड़ा मालूम होन और कभी बहुत ज्यादा पसीना होना। माथेमें गर्मी मालूम होनेके साथही साथ चेहरेमें जलन और उसका लाल हो उठना। पसीनेवाली अवस्था,— पसीना थोड़ा या उत्तापावस्थामें ही पसीना होना आरम्भ हो जाता है। रातमें पसीना।

वृद्धि।—रातके समय, रोगवाले पार्श्वमें सोनेपर, ठण्ढा लगते ही, घरके भीतर, विश्रामसे, रातमें ५ बजे, ठण्ढा पानी या दूध वगैरह पीने, बैठने और स्पर्श करनेपर।

उपशम।—शरीर संचालनसे, चलनेपर, निर्मल वायु सेवन करने पर, वायु सेवनके लिये टहलनेके समय और गर्मी लगनेपर।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष**।—**या दोषघ्न**।—हिप, ऐसिड-नाई, (डा० क्लार्क और वार्नेट)।

सदृश।—ऐसिड-नाई, अरम, आयोडम, मार्क, हिप, सिफिलिन, मेजेर, लाई, कार्बो-वेज, सोरिन, आर्स, एपिस, कार्बो-सल्फ।

तुलनीय।—आयोड (गलगण्ड और हृत्पिण्डकी बीमारी); काष्टि कम (उपदंश); कैलि-कार्ब, लैकेसिस (दम अटकनेका भाव); नक्स (उपदंश); इयार्वा-सैण्टा (सर्दीसे उत्पन्न चयकास); ऐण्टि-टार्ट (फिफड़ा); बेलाडो (मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता); एपिस (शोथ); लाइकोप (आध्मान इत्यादि)।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे २०० शततमिक क्रम। गौण उपदंश लक्षणादिमें भी उच्चक्रमका प्रयोग करना चाहिये।

कैलि-म्यूरियेटिकम ।

(KALI MURIATICUM)

दूसरा नाम ।—क्लोराइड आव पोटास । कैलि क्लोरेटम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहासे ; उपक्षत ; बाघी ; दाह या जले घाव ; मोतियाबिन्दु ; नीहार कण्डु ; कब्जियत ; घुँड़ी या काली खाँसी ; मूत्राधार-प्रदाह ; अतिसार ; उपझिल्ली प्रदाह ; शोथ ; आमाशय ; कानकी बीमारियाँ ; पामारोग ; कर्णनालीकी बीमारियाँ ; आँखकी बीमारी ; ग्रन्थियोंका फूलना ; अर्श ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; खूनकी कमी ; आमला ; सर्दीमें आवाज ; श्वेत प्रदर ; कर्णमूल प्रदाह ; वात या आमवात ; शीताद ; बसन्त ; मसा ; कण्ठारकी बीमारियाँ ; गो बीजका टीका देनेका दुष्परिणाम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० सुसलरने इस दवाकी विशेष रूपसे परीक्षा की है । सर्दीसे उत्पन्न श्वास कृच्छ्रता और नकली झिल्ली पैदा करनेवाले श्लेष्माका स्राव आदिपर इसकी प्रधान क्रिया है । इसके सभी स्रावोंमें दो प्रधान गुण वर्त्तमान रहते दिखाई देते हैं, जैसे—सफेद रंगका और गाढ़ा गोंद की तरह स्राव । विचले कानकी बहुत दिनोंतक स्थायी सर्दी ; कर्णपश्चान्नाली का रुक जाना ; कानमें कुछ फूटनेकी तरह आवाज ; जीभ धुमैली सफेद ; कुछ सूखी और गोंदकी तरह लेपसे ढकी ; रक्तस्रावी-अर्श—स्राव काली आभा लिये लसदार और ढेला ढेला ; नकली झिल्ली पैदा करनेवाला उपझिल्ली-प्रदाह ; वातके कारण बोखार ; और रोगवाली सन्धिमें रससंचय और सूजन वगैरह आई कैलि-मूरियेटिकमके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं । पाकाशयकी उत्तेजनाके कारण बार बार खाँसी । खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो चक्षुगोलक बाहर निकल पड़ा है ।

लक्षणावली ।

मन ।—रोगीको विश्वास हो जाता है कि [illegible] पड़ेगा ।

मस्तक।—वमनके साथ सर-दर्द और खाँसनेपर गलेके भीतरसे दूधकी तरह श्लेष्मा निकलना, मस्तिष्कावरणी-प्रदाह (पहले फेरम-फास)। दुधिया पपड़ी या रूसी।

आंख।—आँखसे सफेद रंगकी पपड़ी या श्लेष्मा निकलता है, या पीले रंगका हरी आभा लिये श्लेष्मा और पीले रंगकी पीवकी तरह पपड़ी निकलती है। आँखके ऊपर एक छोटासा रस-भरा दाना निकलकर क्रमसे एक चिपटे बाहरी जखममें परिणत हो जाता है। आँख करकराती है,—मानो उसमें धूलके कण गिर गये हैं। पीवका स्राव ; संक्रामक आँखें उठना या आँखोंका प्रदाह, मोतिया-बिन्दु (सिनारेरिया-मैरिटाइमा)।

कान।—मध्य कानकी पुरानी सर्दी (इलेप्स-कोरेल, केली-ब्राई, मार्क, डाल, सोरिन)। कर्णपथनालीका बोध-जनित बहरापन ; कानमें फूटनकी आवाज।

नाक।—सर्दी,—श्लेष्मा-सफेद रङ्गका और गाढ़ा। सर्दीमें माथा भरा मालूम होता है और जीभपर धुमैले सफेद रङ्गका लेप चढ़ा रहता है। तालु-मूलका ऊपरी अंश सूखा और श्लेष्मासे ढका हुआ। तीसरे पहर नाकसे खूनका स्राव होता है।

मुख-विवर।—दोनों गाल फूले और दर्द-भरे। बच्चोंकी तथा स्तन पीनेवाले शिशुओंकी माताके मुँहमें उत्सङ्ग या मसूढ़ेका घाव। हनु और गलेकी ग्रन्थियाँ सब फूली, जीभ फूली। जीभ धुमैली-सफेद, कुछ सूखी और लसदार लेपसे ढँकी। जीभके ऊपर ऐसा मालूम होता है मानो कोई अर्बुद निकलेगा (डा० क्लार्क)।

गलेके भीतर।—गलग्रन्थिका प्रदाह ; दोनों ही गालकी ग्रन्थियाँ इतनी फूल उठती हैं कि श्वास रुकनेका लक्षण पैदा हो जाता है ; गाढ़ा गोंदकी तरह कड़ा श्लेष्मा निकलता है ; रोगीके लिये कोई बहुत कोमल पदार्थ निगलना भी कष्टकर हो जाता है। कण्ठनाली टेढ़ी किये बिना खाद्य आदि निगल नहीं सकता। गलेके भीतर और गल-ग्रन्थिके ऊपर धुमैले रंगके श्लेष्माका लेप चढ़ा रहता है, खाँसनेपर पनीरकी तरह बदबूदार छोटे २ श्लेष्मा खण्ड निकलते हैं। कर्णमूल प्रदाह हो जाता है। कर्णमूलीय ग्रन्थि फूल उठती है।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—चर्बी-भरे या गुरुपाक द्रव्य आदि खानेपर नहीं पचते (पल्स, कार्बो-वेज); सफेद रङ्गके स्वच्छ श्लेष्माकी कै; मुंहमें बार बार जल-सञ्चय। कब्जियतके साथ पाकस्थलीमें दर्द ; भूख ज्यादा लगती है, परन्तु पानी पीते ही भूख लगना बन्द हो जाता है और फिर खानेकी इच्छा नहीं होती (कैलि-आयोड)। द्वादश-अंगुलि-नाड़ीमें शीत लग जानेके कारण सर्दीके साथ नेवा या कमला रोग,—मल सफेद रङ्गका। यकृत क्रियामें विकार और दाहिने पुट्ठेमें दर्द, घीमें पके हुए पदार्थोंके खानेसे पैदा हुए अजीर्ण रोगमें यकृतकी विकृतिकी वजहसे कब्जियत और भरपूर पित्त न संचित होनेके कारण, मल पीले रंगका। घीमें पके या मेदमय पदार्थ आदि खानेकी वजहसे (पल्स, कार्बो-वेज, साइक्ला) और आन्त्रिक-ज्वराधिकार में (आर्स, वैप्टी, हायो, लैके, ऐसिड-म्यूर, ओपि, स्ट्रैमो), मल हलके पीले रङ्गका, कीचड़की तरह या सफेद रंगके गोंदकी तरह। आमातिसार,—मल लसदार आम मिला और पतला। अर्श,—रक्तस्राव होनेवाला, खून काली आभा लिये, गाढ़ा सूत्रमय श्लेष्मा-मिला और जमा हुआ या गाढ़ा।

पुं-जननेन्द्रिय।—प्रमेह ; रुके हुए प्रमेहकी वजहसे एकशिरा या अण्डकोष-प्रदाह। बाघी कोमल और फूली हुई। कोमल उपदंश,—इसके साथ ही लाला-मेह और उकौता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु-स्राव बहुत देरसे या बिलुप्त, रुका हुआ या बहुत असमयमें ही हो जाता है।; स्राव बहुत ज्यादा ; खून काला और गाढ़ा लसदार अलकतरेकी तरह (प्लैटि)। प्रदर,—दूधकी तरह सफेद रंगका और गाढ़ा श्लेष्मा-भरा स्राव। गर्भवतियोंकी सवेरेकी मिचली, सफेद रंगका श्लेष्मा वमन कर देना।

श्वास-यन्त्र।—स्वरभङ्ग ; स्वर-लोप, श्वास-रोग या दमा, इसके साथ ही अजीर्ण आदि पाकाशयकी बीमारी, सफेद रंगका श्लेष्मा और बड़े कष्टसे निकलता है। पाकस्थलीसे खाँसी उठती है, क्रूप खाँसीकी तरह—खुसखुसी ; तेज और आक्षेपिक खाँसी ; कफ गाढ़ा और सफेद रंगका, गाढ़ा गोंदकी तरह; श्लेष्माके बुलबुले फूटनेकी वजहसे वायुनलीमें घड़घड़ शब्द ; बड़े कष्टसे श्लेष्मा निकला करता है। खाँसनेके समय दोनों आँखें निकली मालूम होती हैं।

प्रत्यङ्ग आदि ।—वातकी वजहसे ज्वर,—रोगवाली सन्धिके भीतर रस और सूजन। शरीर हिलानेके समय दर्द मालूम होता है या दर्द बढ़ जाता है। रातमें वातका दर्द—शय्याके उत्तापसे बढ़ना ; दर्द कमरसे बिजली की शलाईकी तरह तेजीसे तलवेकी ओर दौड़ जाता है ; रोगीको शय्यासे उतरकर बाध्य होकर सीधे बैठ जाना पड़ता है। लिखनेके समय हाथ अकड़ जाते हैं।

त्वचा ।—व्रण, अरुणिका, श्वेत रस-भरी फुन्सियोंसे भरा उकौता। शरीरकी त्वचासे मैदेकी तरह चूर या भूसी उठा करती है। छोटी उमरके बच्चोंके माथे और चेहरेपर दुरारोग्य पपड़ी जमे घाव। हाथ पर मसा निकलता है (थूजा)।

वृद्धि ।—गुरुपाक द्रव्य खाने, शरीर हिलाने तथा उत्तापसे।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—तुलनीय ।—कैली-क्लो, पल्स (घृतपक्व, द्रव्य भोजनसे बढ़ना); कार्बो-वेज, कैलि-बाइ; मार्क-डाल (कर्ण-नली); कैलि-कार्ब, ऐसिड-नाइ, थूजा।

दोषघ्न ।—बेलाड, कैल्के-सल्फ, पल्स,

शक्ति ।—३ रे दशमिक विचूर्णसे २०० शततमिक क्रमतक।

कैलि नाइट्रिकम या नाइट्रम ।
(KALI NITRICUM or NITRUM)

दूसरा नाम ।—सोरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा ; वक्षस्थलमें दर्द ; शूल ; मधुमूत्र ; आमरक्त ; बाधक ; शय्यामें पेशाब कर देना ; सर दर्द ; पाकाशयका प्रदाह ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; रजसाधिक्य ; श्वासनाली-प्रदाह ; फेफड़ेका प्रदाह ; फुसफुस आवरण प्रदाह ; वात ; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—श्वास-रोगमें इसका विशेष फायदा दिखाई दिया करता है; रोगीको इतनी अधिक श्वासाल्पता हो जाती है, कि प्रत्येक बार एक चम्मचसे अधिक पानी नहीं पी सकता; लगातार दो चम्मच पानी पीनेपर श्वास-रोध हो जाना चाहता है। कैलि-कार्बोनिकाकी तरह इसका दर्द भी बहुत तेज और सुई वेधने, अस्त्र वेधने, छेदने और पीसनेकी तरह होता है; मूर्द्धाकी त्वचा, उदर, अण्डकोष, प्रभृति प्रदेशमें रोगी अत्यन्त स्पर्श-कातरता प्रकट किया करता है। अन्त्राशय और वस्ति-गह्वरमें क्रियाकी अधिकताकी वजहसे इसके द्वारा प्रचण्ड अन्त्रशूल और बहुत ही यंत्रणादायक रक्तामाशय और उदरामय, अण्डकोष और रेतोरज्जुमें उत्तेजनाकी अधिकता और दर्द तथा स्याहीकी तरह काले रंगका रक्तमय तथा बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव उत्पन्न हो जाया करता है। रोगीको क्रोध बहुत आया करता है, सभी विषयोंमें वह असहिष्णु रहता है और आलस्य प्रदर्शन किया करता है। थोड़ी मात्रामें शराब आदि पीनेपर भी नशा ज्यादा हो जाना, दाहिनी नाकके उपरी अंशमें बहुत दर्द और स्पर्श-कातरता वगैरह इसके कई निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—सवेरे मुखमण्डल और ललाटमें ज्यादा गर्मी पैदा हो जानेके साथही साथ किसी विषयको सोचनेकी शक्तिका न रह जना। आलसी, रोगी दुःखित, डरपोक और अभिमानी। जो बोलना चाहता था, भूल जाता है (हाइपिर, मेजिर, रोडो) इसके साथ ही साथ सवेरे सरमें चक्कर आना। बहुत थोड़ी मात्रामें शराब पीनेपर भी बहुत [illegible] नशा दिखाया करता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, [illegible] (सेङ्ग्र, सा[illegible]
सामनेकी ओर गिरनेका उपक्रम हो [illegible] साइक्ला[illegible]
सरमें चक्कर [illegible] बेहोश हो [illegible] लै[illegible], नेट्र
उठकर [illegible] ; बैठनेसे घटना [illegible] खाटसे
करता है, [illegible] सरमें चक्कर आ [illegible] सोते
जाता है [illegible] दर्दको [illegible] हुई [illegible]
झुकानेपर [illegible] मूर्द्धादेशमें [illegible]
(रैन्ड); [illegible] (५८ [illegible]

खींचनके साथ एक शामसे दूसरी संध्यातक यह दर्द स्थायी रहता है; सर झुकानेपर दर्द असह्य मालूम होना। पीसनेकी तरह सर दर्द, यह ललाटसे नासामूलतक फैल जाता है। मूर्द्धादेशमें दर्द,—मानो एक पत्थर दबाया हुआ है। माथेसे नाकके अगले भागतक फैलनेवाली खींचन मालूम होती है। स्त्रियोंके सरके पिछले भागमें दर्द, केश खोल देनेपर आराम मालूम होता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें केश उड़ जाना।

आंख।—आंखमें जलन, अश्रु-स्राव (आँसू बहना) और रोशनी न सहन होनेके साथ सवेरे ठण्डे पानीसे धोनेपर बढ़ जाना। चक्षुगोलके भीतर सफेदी लिये मैलापन या गदला भाव (आर्स, हैमा, सोलेनम, नाई, फार्म)। दीप-शिखाके चारों ओर इन्द्रधनुषकी तरह नाना प्रकारके रंगोंके चक्कर दिखाई देते हैं (स्टेनम)।

कान।—संध्याके समय कानमें तेज शलाका वेधनेकी तरह दर्द, रोग-वाले कानको दबाकर सोनेके समय बढ़ना; श्रवण शक्ति विधायक स्नायुके पक्षाघातकी वजहसे बहुत दिनोंतक बहरापन। कानमें आवाज, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना (नेट्र-मैलिसाई)। कानके छेदका जखम।

उपयोगिता और आभास।—श्वास-रोगमें इसको विशेष फायदा दिखाई दिया करता है; रोगीको इतनी अधिक श्वासाल्पता हो जाती है, कि प्रत्येक बार एक चम्मचसे अधिक पानी नहीं पी सकता; लगातार दो चम्मच पानी पीनेपर श्वास-रोध हो जाना चाहता है। कैलि-कार्बोनिकाकी तरह इसका दर्द भी बहुत तेज और सुई बेधने, अस्त्र बेधने, छेदने और पीसनेकी तरह होता है; मूर्द्धाकी त्वचा, उदर, अण्डकोष, प्रभृति प्रदेशमें रोगी अत्यन्त स्पर्श-कातरता प्रकट किया करता है। अन्त्राशय और वस्ति-गह्वरमें क्रियाकी अधिकताकी वजहसे इसके द्वारा प्रचण्ड अन्त्रशूल और बहुत ही यंत्रणादायक रक्तामाशय और उदरामय, अण्डकोष और रेतोरज्जुमें उत्तेजनाकी अधिकता और दर्द तथा स्याहीकी तरह काले रंगका रक्तमय तथा बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव उत्पन्न हो जाया करता है। रोगीको क्रोध बहुत आया करता है, सभी विषयोंमें वह असहिष्णु रहता है और आलस्य प्रदर्शन किया करता है। थोड़ी मात्रामें शराब आदि पीनेपर भी नशा ज्यादा हो जाना, दाहिनी नाकके ऊपरी अंशमें बहुत दर्द और स्पर्श-कातरता वगैरह इसके कई निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—सवेरे मुखमण्डल और ललाटमें ज्यादा गर्मी पैदा हो जानेके साथही साथ किसी विषयको सोचनेकी शक्तिका न रह जना। आलसी, रोगी दुःखित, डरपोक और अभिमानी। जो बोलना चाहता था, भूल जाता है (हाइपिर, मेजेर, रोडो) इसके साथ ही साथ सवेरे सरमें चक्कर आना। बहुत थोड़ी मात्रामें शराब पीनेपर भी बहुत अधिक नशा दिखाया करता है।

मस्तक।— सरमें चक्कर आना,—नींद आनेपर (सेङ्ग्र, साइलि); सामनेकी ओर गिरनेका उपक्रम हो जाता है (कास्टि, साइकुर, नक्स)। सरमें चक्कर आनेके साथ बेहोश हो जानेका उपक्रम (लेके, नेट्र-म्यूर),—सवेरे उठकर खड़े हो जानेपर; बैठनेसे घटना (जितनी ही बार खाटसे उठनेकी चेष्टा करता है, उतनी ही बार सरमें चक्कर आ जाता है और सोते ही होशमें आ जाता है=ओपि)। सरमें दर्दकी वजहसे आँख बन्द हुई जाती है; माथा झुकानेपर बहुत बढ़ जाता है, मूर्द्धादेशमें दर्द, मानो कोई केश खींच रहा है (सेल्प); शय्यासे उठनेसे बढ़ना (घटना=ऐसाफिट)। सरमें दर्द,—पलकोंमें

खींचनके साथ एक धामसे दूसरी संध्यातक यह दर्द स्थायी रहता है; सर झुकानेपर दर्द असह्य मालूम होना। पीसनेकी तरह सर दर्द, यह ललाटसे नासामूलतक फैल जाता है। मूर्द्धादेशमें दर्द,—मानो एक पत्थर दबाया हुआ है। माथेसे नाकके अगले भागतक फैलनेवाली खींचन मालूम होती है। स्त्रियोंके सरके पिछले भागमें दर्द, केश खोल देनेपर आराम मालूम होता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें केश उड़ जाना।

आंख।—आंखमें जलन, अश्रु-स्राव (आँसू बहना) और रोशनी न सहन होनेके साथ सवेरे ठण्ढे पानीसे धोनेपर बढ़ जाना। चक्षुगोलके भीतर सफेदी लिये मैलापन या गदला भाव (आर्स, हैमा, सोलेनम, नाई, फार्म)। दीप-शिखाके चारों ओर इन्द्रधनुषकी तरह नाना प्रकारके रंगोंके चक्कर दिखाई देते हैं (स्टैनम)।

कान।—संध्याके समय कानमें तेज शलाका वेधनेकी तरह दर्द, रोग-वाले कानको दबाकर सोनेके समय बढ़ना; श्रवण शक्ति विधायक स्नायुके पक्षाघातकी वजहसे बहुत दिनोंतक बहरापन। कानमें आवाज, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना (नेट्र-सैलिसाई)। कानके छेदका जखम।

नाक।—नाककी सब हड्डियाँ कुई नहीं जाती। सरमें दर्द रोगमें ललाट, आंख और संकोचनका भाव, नाकके अगले भागमें केन्द्रीभूत होता है। दाहिने रन्ध्रके भीतर सूजन मालूम होना और उसका छुआ न जाना; दाहिनी नाकके ऊपरी अंशमें जखमकी तरह दर्द और स्पर्शका सहन न होना। नाकका अगला भाग लाल और खुजलानेवाला (नाकका अगला भाग लाल=कार्बो-ऐन, लैके, ऐसिड-नाइ, जलनके साथ=निकोल, लाल और चमकीला—फास)। नासावुंद (नकसीर) या नासा रोग=थूजा, टियुक्रि।

मुख-विवर।—क्षय हुए दाँतके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो हवा बह रही है। क्षय हुए दाँतको छूनेसे तेज दर्द, रात्रिके समय दन्तमें टपककी तरह दर्द, ठण्ढे द्रव्य आदि मुँहमें ले जानेपर बढ़ जाता है। मुँहमें बदबू। जीभके अगले भागमें ज्वाला-जनक रस-भरे दाने या छोटे छाले; जीभ सफेद लेपसे ढकी। दिनभर मुखमें बदबू या कुछ खट्टा स्वाद रहता है। गलेमें जखमके साथ तेज दर्द और कोमल तालु और अलिजिह्वाका प्रदाह, विशेषतः निगलनेके समय। गलनालीके संकोचन और श्वास-प्रश्वासमें बाधा।

उपयोगिता और आभास।—श्वास-रोगमें इसका विशेष फायदा दिखाई दिया करता है ; रोगीको इतनी अधिक श्वासाल्पता हो जाती है, कि प्रत्येक बार एक चम्मचसे अधिक पानी नहीं पी सकता ; लगातार दो चम्मच पानी पीनेपर श्वास-रोध हो जाना चाहता है। कैलि-कार्बोनिकाकी तरह इसका दर्द भी बहुत तेज और सुई वेधने, अस्त्र वेधने, छेदने और पीसनेकी तरह होता है ; मूर्द्धाकी त्वचा, उदर, अण्डकोष, प्रभृति प्रदेशमें रोगी अत्यन्त स्पर्श-कातरता प्रकट किया करता है। अन्त्राशय और वस्ति-गह्वरमें क्रियाकी अधिकताकी वजहसे इसके द्वारा प्रचण्ड अन्त्रशूल और बहुत ही यंत्रणादायक रक्तामाशय और उदरामय, अण्डकोष और रेतोरज्जुमें उत्तेजना की अधिकता और दर्द तथा स्याहीकी तरह काले रंगका रक्तमय तथा बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव उत्पन्न हो जाया करता है। रोगीको क्रोध बहुत आया करता है, सभी विषयोंमें वह असहिष्णु रहता है और आलस्य प्रदर्शन किया करता है। थोड़ी मात्रामें शराब आदि पीनेपर भी नशा ज्यादा हो जाना, दाहिनी नाकके ऊपरी अंशमें बहुत दर्द और स्पर्श-कातरता वगैरह इसके कई निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली ।

मन।—सवेरे मुखमण्डल और ललाटमें ज्यादा गर्मी पैदा हो जानेके साथही साथ किसी विषयको सोचनेकी शक्तिका न रह जना। आलसी, रोगी दुःखित, डरपोक और अभिमानी। जो बोलना चाहता था, भूल जाता है (हाइपिर, मेजेर, रोडो) इसके साथ ही साथ सवेरे सरमें चक्कर आना। बहुत थोड़ी मात्रामें शराब पीनेपर भी बहुत अधिक नशा दिखाया करता है।

मस्तक।— सरमें चक्कर आना,—नींद आनेपर (सेङ्ग्र, साइलि); सामनेकी ओर गिरनेका उपक्रम हो जाता है (कास्टि, साइकूर, नक्स)। सरमें चक्कर आनेके साथ बेहोश हो जानेका उपक्रम (लैके, नेट्र-म्यूर),—सवेरे उठकर खड़े हो जानेपर ; बैठनेसे घटना (जितनी ही बार खाटसे उठनेकी चेष्टा करता है, उतनी ही बार सरमें चक्कर आ जाता है और सोते ही होशमें आ जाता है=ओपि)। सरमें दर्दकी वजहसे आँख बन्द हुई जाती है ; माथा झुकानेपर बहुत बढ़ जाता है, मूर्द्धादेशमें दर्द, मानो कोई केश खींच रहा है (पेल्स); शय्यासे उठनेसे बढ़ना (घटना=पैसाफिट)। सरमें दर्द,—पलकोंमें

खींचनके साथ एक ग्रामसे दूसरी संध्यातक यह दर्द स्थायी रहता है; सर झुकानेपर दर्द असह्य मालूम होना। पीसनेकी तरह सर दर्द, यह ललाटसे नासामूलतक फैल जाता है। मूर्द्धादेशमें दर्द,—मानो एक पत्थर दबाया हुआ है। माथेसे नाकके अगले भागतक फैलनेवाली खींचन मालूम होती है। स्त्रियोंके सरके पिछले भागमें दर्द, केश खोल देनेपर आराम मालूम होता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें केश उड़ जाना।

आंख।—आंखमें जलन, अश्रु-स्राव (आंसू बहना) और रोशनी न सहन होनेके साथ सवेरे ठण्डे पानीसे धोनेपर बढ़ जाना। चक्षुगोलके भीतर सफेदी लिये मैलापन या गदला भाव (आर्स, हैमा, सोलेनम, नाई, फास)। दीप-शिखाके चारों ओर इन्द्रधनुषको तरह नाना प्रकारके रंगोंके चक्कर दिखाई देते हैं (स्ट्रेनम)।

कान।—संध्याके समय कानमें तेज शलाका बेधनेकी तरह दर्द, रोग-वाले कानको दबाकर सोनेके समय बढ़ना; श्रवण शक्ति विधायक स्नायुके पक्षाघातकी वजहसे बहुत दिनोंतक बहरापन। कानमें आवाज, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना (नेट्र-सैलिसाई)। कानके छेदका जखम।

नाक।—नाककी सब हड्डियाँ छुई नहीं जाती। सरमें दर्द रोगमें ललाट, आंख और संकोचनका भाव, नाकके अगले भागमें केन्द्रीभूत होता है। दाहिने रन्ध्रके भीतर सूजन मालूम होना और उसका छुमा न जाना; दाहिनी नाकके ऊपरी अंशमें जखमकी तरह दर्द और स्पर्शका सहन न होना। नाकका अगला भाग लाल और खुजलानेवाला (नाकका अगला भाग लाल=कार्बो-ऐन, लैके, ऐसिड-नाइ, जलनके साथ=निकोल, लाल और चमकीला—फास)। नासाबुंद (नकसीर) या नासा रोग=थूजा, टियुक्रि।

मुख-विवर।—क्षय हुए दांतके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो हवा बह रही है। क्षय हुए दांतको छूनेसे तेज दर्द, रात्रिके समय दन्तमें टपककी तरह दर्द, ठण्डे द्रव्य आदि मुँहमें ले जानेपर बढ़ जाता है। मुँहमें बदबू। जीभके अगले भागमें ज्वाला-जनक रस-भरे दाने या छोटे छाले; जीभ सफेद लेपसे ढकी। दिनभर मुखमें बदबू या कुछ खट्टा स्वाद रहता है। गलेमें जखमकी साथ तेज दर्द और कोमल तालु और अलिजिह्वाका प्रदाह, विशेषतः निगलनेके समय। गलनालीके संकोचन और श्वास-प्रश्वासमें बाधा।

उपयोगिता और आभास।—श्वास-रोगमें इसका विशेष फायदा दिखाई दिया करता है; रोगीको इतनी अधिक श्वासाल्पता हो जाती है, कि प्रत्येक बार एक चम्मचसे अधिक पानी नहीं पी सकता; लगातार दो चम्मच पानी पीनेपर श्वास-रोध हो जाना चाहता है। केलि-कार्बोनिकाकी तरह इसका दर्द भी बहुत तेज और सुई बेधने, भल्ल बेधने, छेदने और पीसनेकी तरह होता है; मूर्द्धाकी त्वचा, उदर, अण्डकोष, प्रभृति प्रदेशमें रोगी अत्यन्त स्पर्श-कातरता प्रकट किया करता है। अन्नाशय और वस्ति-गह्वरमें क्रियाकी अधिकताकी वजहसे इसके द्वारा प्रचण्ड अन्नशूल और बहुत ही यंत्रणादायक रक्तामाशय और उदरामय, अण्डकोष और रेतोरज्जुमें उत्तेजना की अधिकता और दर्द तथा स्याहीकी तरह काले रंगका रक्तमय तथा बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव उत्पन्न हो जाया करता है। रोगीको क्रोध बहुत आया करता है, सभी विषयोंमें वह असहिष्णु रहता है और आलस्य प्रदर्शन किया करता है। थोड़ी मात्रामें शराब आदि पीनेपर भी नशा ज्यादा हो जाना, दाहिनी नाकके ऊपरी अंशमें बहुत दर्द और स्पर्श-कातरता वगैरह इसके कई निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली।

मन।—सवेरे मुखमण्डल और ललाटमें ज्यादा गर्मी पैदा हो जानेके साथही साथ किसी विषयको सोचनेकी शक्तिका न रह जना। आलसी, रोगी दुःखित, डरपोक और अभिमानी। जो बोलना चाहता था, भूल जाता है (हाइपिर, मेजिर, रोडो) इसके साथ ही साथ सवेरे सरमें चक्कर आना। बहुत थोड़ी मात्रामें शराब पीनेपर भी बहुत अधिक नशा दिखाया करता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—नींद आनेपर (सेङ्ग्र, साइलि); सामनेकी ओर गिरनेका उपक्रम हो जाता है (कास्टि, साइकूर, नक्स)। सरमें चक्कर आनेके साथ बेहोश हो जानेका उपक्रम (लैके, नेट्र-म्यूर),—सवेरे उठकर खड़े हो जानेपर; बैठनेसे घटना (जितनी ही बार खाटसे उठनेकी चेष्टा करता है, उतनी ही बार सरमें चक्कर आ जाता है और सोते ही होशमें आ जाता है=ओपि)। सरमें दर्दकी वजहसे आँख बन्द हुई जाती है; माथा झुकानेपर बहुत बढ़ जाता है, मूर्द्धादेशमें दर्द, मानो कोई केश खींच रहा है (ऐल्य); शय्यासे उठनेसे बढ़ना (घटना=ऐसाफिट)। सरमें दर्द,—पलकोंमें

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत जल्दी जल्दी होता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है; खून स्याहीकी तरह काला, अन्त्रशूल, कमरमें दर्द। वंक्षण-प्रदेशमें जलन और दोनों पेर बहुत क्षीण और इतने सुन्न मालूम होते हैं, मानो काठके बने हों। प्रदर,—सफेद रंगके रसकी तरह, स्राव वस्त्र आदिमें लगने और सूखनेपर कड़ा हो जाता है; त्रिकास्थि या नितम्ब प्रदेशमें दर्दके समय प्रदरका स्राव हुआ करता है, बाएँ स्तनके नीचे बार बार सुई गड़नेकी तरह दर्द (ऐक्टिया-रेसि)।

श्वास-यंत्र।—स्वर-भंग और स्वरनालीमें कर्कशता और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना; निकला हुआ श्लेष्मा पीला रहता है। श्वासाल्पताके कारण पानी पीनेके समय थोड़ा थोड़ा पानी पीता है। लगातार यदि दो चम्मच पानी पीना चाहता है, तो श्वास-रोधका उपक्रम हो जाता है (स्क्विला)। श्वास-रोध—संध्या और रातमें अधिक प्रकोप हुआ करता है; सीढ़ी चढ़नेके समय साँस लेनेमें तकलीफ। हाथ पैर फैलाकर सो नहीं सकता। खाँसते खाँसते रातके ३ बजनेके समय तेज सर-दर्द पैदा हो जाता है और नींद खुल जाती है; निर्मल वायु लगनेसे ही खाँसी। सीढ़ी चढ़नेके समय बोली रोक देनेपर खाँसी बढ़ जाती है और वक्षके भीतर अस्त्र और सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है। जमा हुआ खून मिला कफ निकलना, फेफड़ेके प्रदाहमें लम्बी साँस लेनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है, सोनेपर या खाँसनेपर यह दर्द बढ़ जाता है; इसके साथ ही श्वास-कृच्छ्रता और मानसिक आवेग भी मिला रहता है। वक्षपर इस तरहका भार मालूम होना मानो एक भारी चीज दबायी हुई है साथ ही साँस रुकनेका उपक्रम हो जाना। जिस तरह थोड़े परिमाणमें फेफड़ेमें रक्त संचित होता है और फेफड़ा यकृद्भावको प्राप्त होता है, श्वास-कृच्छ्रता उसको अपेक्षा कहीं अधिक मालूम होती है। हृद्स्पन्दन (कलेजा धड़कना),—शय्यासे उठने या तेजीसे चलनेपर; इसके साथ ही चेहरेमें उत्ताप और दबाव मालूम होना; चित होकर (आर्स, नक्स) या दाहिनी करवट सोनेपर (बेडी, ब्रोम, लिलियम-टाइ, प्लैट) कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है। फेफड़ेमें पीव-संचय होना और सुस्त करनेवाला पसीना।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके पीछेसे लेकर पीठतक फैला हुआ दर्द, मानो कोई जोरसे केश खींच रहा है। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें श्वास-

पाकस्थली।—मिचली ; गलेसे पाकस्थलीतक ठण्डक मालूम होना। बहुत तेज सुई बेधनेकी तरह दर्दकी वजहसे रोगी साँस नहीं ले सकता। दुष्ट भूख। भयानक प्यास रहनेपर भी श्वासाल्पताकी वजहसे एक बार एक चम्मचसे अधिक पानी नहीं पी सकता, लगातार दो चम्मच पानी पीतेही श्वास-रोध का उपक्रम हो जाता है। बार बार ओंकाई आती है और खून मिला श्लेष्मा वमन होता है। पाकस्थलीमें दर्द, ऐसा मालूम होता है कि उसमें कोई चक्कर लगा रहा है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती मालूम होना। पाकस्थलीमें ऐंठन की तरह भयंकर दर्द और संकोचन मालूम होना। उदरके दाहिने पार्श्वमें प्रचण्ड दर्द। पेट फूलना और सूजन। नाभि-प्रदेशमें ऐसा मालूम होना मानो कोई मरोड़ रहा है, वायु निकलनेपर आराम मालूम होना। सुई गड़नेकी तरह दर्द, पेट फूलना और स्पर्श सहन न होना। अन्त्रवेष्ट या अन्त्रावरक झिल्लीका प्रदाह,—उदरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, निचले अंगसब बरफकी ठण्डे और रोगवाले अंगोंका सुन्न हो जाना ;—मानो वे काठके बने हैं। छेदने की तरह दर्द, सन्ध्याके समय यह दर्द फिर नहीं रह जाता। उदरमें हुड़ हुड़ गुड़ गुड़ शब्द हुआ करता है।

मलान्त्र और मल।—मल बहुत कड़ा, बहुत जोर लगाये बिना नहीं निकलता। उदरामय, मल पानीकी तरह तरल या खून मिला, पाखाना होनेके पहले, समय और बाद, सभी समय शूलकी तरह दर्द, कूथन और कतरनेकी तरह दर्द। कभी कभी पाखानेके साथ सूत्र तन्तुमय-रूसी निकलती है और अत्यन्त कूथन हुआ करती है। रक्तामाशय,—कतरनेकी तरह अत्यधिक वेदना, बहुत प्यास एवं निचले दोनों पैर बर्फकी तरह ठंडे हो जाते हैं।

पेशाब।— लालामूत्र (अण्डनालीका पेशाब), कटिदेशमें आमवात से पैदा हुआ; ऐंठन और जलनेकी तरह दर्द ; पेशाबकी कमी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्रनलीमें उत्ताप मालूम होनेके साथ बार बार पेशाबका वेग। कैन्थरिसका अपव्यवहार या तेज दवाओं आदि (मूत्रनालीके भीतर) की पिचकारीके प्रयोगकी वजहसे मूत्रकृच्छ्रता ; या प्रमेह रोग फैल जानेके कारण पेशाबमें तकलीफ।

पुं-जननेन्द्रिय।—सङ्गमकी इच्छा पूरी न होनेकी वजहसे अण्डकोष और कोषरज्जुमें अकड़न और दर्द मालूम होता है।

कैलि आक्सैलिकम।

(KALI OXALICUM)

दूसरा नाम।—कैलि-आक्सेलस ; पोटैसियम बाई-आक्सेलेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल दोनो आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—कटिवात, वमन, आक्षेप, ताण्डव प्रभृति रोगोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कैलि पार्मैङ्गेनिकम।

(KALI PERMANGANICUM)

दूसरा नाम।—पार्माङ्गनेट आव पोटास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और चुआये हुए पानीमें द्रव (अर्क)।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—खांसीमें उपझिल्ली प्रदाह ; पाकाशय प्रदाह ; नकसीर ; गलेका जखम ; लार बहना ; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रोहिनी और गलनालीके उपझिल्ली प्रदाह रोगमें ही इसका व्यवहार और फायदा दिखाई देता है; खास कर इस प्रदाहसे पैदा हुए स्राव जब बहुत ही बदबूदार होते हैं। नासारन्ध्र, कण्ठ और स्वरनालीके भीतर बहुत अधिक उपदाह, रसकी तरह और खून मिला स्राव और बार बार निगलनेकी इच्छा ; पाकस्थलीसे बहुत ज्यादा गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलना और लगातार लार निकलना, गलेका भीतरी भाग और अलिजिह्वा फूली और कण्ठमें स्पर्श सहन न होना वगैरह कई इस दवाके प्रधान प्रयोग-लक्षण हैं।

क्षच्छ्रताके साथ सुई गड़नेकी तरह तेज दर्द, रातमें चित होकर सोनेपर बढ़ता है और दाहिनी करवट सोनेपर घटता है। स्कन्ध-देशका (कन्धे का) वात,—दर्द रातके समय बढ़ता है; हाथ अँगुलियाँ-सभी फूली मालूम होती हैं। वातकी वजहसे पक्षाघात। हाथ और अँगुलियाँ सुन्न हो जाती हैं; और उनमें झुनझुनी हुआ करती है। बाहु, कोहनी, हाथ और अँगुलीकी सन्धियोंमें छेदने और सुई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर रातमें ; हाथ बहुत बड़े मालूम होते हैं; रातमें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ वातव्याधि। रोगवाले अँग काठके बने मालूम होते हैं। दिनके समय जो लक्षण प्रकट होते हैं, शामको सोने बाद वे सब गायब हो जाते हैं; बहुत तेजीसे सारे अङ्गमें फैल जाते हैं। चलनेकी अपेक्षा बैठनेके समय बहुत थकन मालूम होती है, हाथ-पैरमें चींटी रेंगनेकी तरह मालूम होता है; अन्तमें जीभमें भी ऐसा ही मालूम होता है।

वृद्धि।—शराब पीने, ठण्डी हवा लगने, आँखमें ठण्डे पानीका प्रयोग करने, माथा झुकाकर सोने (स्पाइ, सल्फि)। रातके २ बजनेके समय, लम्बी साँस लेने और काफी पीनेपर।

घटना।—दाहिने पार्श्व सोने और गर्म चीजें पीनेपर (शीत का-आविर्भाव)।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—प्रतिविष, नाइट-स्पिरि-डाल।

सदृश।—तुलनीय।—आर्नि, ड्रोसे, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-नाइ। इपिकाकसे खाँसी घट जाती है।

शक्ति।—३ रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

कैलि फास्फोरिकम।
(KALI PHOSPHORICUM)

दूसरा नाम।—फास-फेट आव पोटेसियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—निम्न लिखित रोगोंमें लाभदायक है:— केश उड़-जाना; रजःस्वल्पता; खूनकी कमी; दमा; मस्तिष्कको शीर्णता और कोमल हो जाना; मुंहका सड़नेवाला जखम; दूषित फोड़ा; जाड़ेके दिनोंके फोड़े; विसूचिकाकी तरह पतले दस्त आना; उपझिल्ली-प्रदाह; रक्ता-माशय; अनजानमें मूत्र-स्राव; चेहरेका स्नायुशूल; सड़नेवाला जखम; व्याधि-शंका; मूर्च्छावायु; नींद न आना; विषादोन्माद; आर्त्तवमें विकारकी वजहसे सर-दर्द; स्नायविक अजीर्णत्व; रातके समय भय; कामोन्माद; पक्षाघात; फेफड़ेका प्रदाह; सूतिका ज्वर; सूतिकोन्माद; गृध्रसी; पाकाशयका जखम; आमवात; अँगुलहाड़ा इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० सुसलरने इस दवाकी विशेष रूपसे परीक्षा की है। अत्यधिक मानसिक या शारीरिक परिश्रम या बहुत दिनोंतक रोग या तृप्त काम-चेष्टा या अतृप्त काम-चेष्टाके कारण उत्तेजनाकी अधिकताकी वजहसे स्नायविक पूर्ण अवसादकी अवस्थामें यह सञ्जीवनी सुधा की तरह स्वास्थ्यको फिरसे ठीक कर देता है। डा० "रा" का कथन है—"स्वर-नलीके रोगमें, जहाँ बहुत देरकर चिकित्सा आरम्भ हुई है, और रोगीमें उठ-नेकी शक्ति न रह गयी हो; नीला मुखमण्डल वगैरह लक्षण दिखाई देता हो, वहाँ कैलि-फास विशेष उपयोगी है।" डा० हेरिङ्ग कहते हैं, कि रोगकी अन्तिम अवस्थामें जब रोगी बहुत ही निम्न स्वरमें बातें किया करता हो, जब उसकी बोली क्रमसे जकड़ती जाती हो और चारों ओरसे पक्षाघात तेजीसे हृत्पिण्डकी ओर आता दिखाई देता हो, उस समय सबसे पहले कैलि-फासका प्रयोग करना चाहिये। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं—(१) मानसिक उद्वेग, बहुत अधिक शङ्का करना; किसीके साथ यहाँतक कि पुराने बन्धुओंसे भी बात नहीं करना चाहता। डरता है, बहुत निराशा भरा

लक्षणावली ।

नाक ।—नाकसे उत्तेजना जनक रक्त-स्राव। नासारन्ध्र और स्वर-नालीसे निकले हुए पदार्थ खूनसे रंगे रहते हैं। नासारंध्रसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव। दोनों रंध्र रुक जाते हैं और उन्हें साफ करनेकी चेष्टा करनेपर खूनका स्राव आरम्भ हो जाता है।

मुख-विवर ।—बहुत ज्यादा लार बहना। बोलनेमें तकलीफ मालूम होती है।

गलेके भीतर ।—खाँसनेपर गलेके भीतरसे जो भी पदार्थ निकलता है वह खूनसे भरा रहता है। उपजिह्वा, कोमल तालु और जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वर विभिन्न रंगोंसे रंगे दिखाई देते हैं, और गहरे लाल रंगके और बीच बीचमें नीला दाग दिखाई दिया करता है। उपजिह्वा फूली और लम्बी मालूम होती है। गलेमें सूखापन और दर्द मालूम होनेपर भी बार बार निगलनेकी दुर्दमनीय प्रवृत्ति। मुँहमें बहुत ज्यादा लार-सञ्चय होना और निगलनेके समय बाधा पड़नेकी वजहसे मुंहसे लार निकला करती है। गलेकी पेशी और कर्णमूल ग्रन्थिमें ज्यादा दर्द रहनेके कारण मुंह फाड़नेमें बहुत तकलीफ होती है। मुँहसे निकली हुई हवा बहुत बदबूदार; बहुत ज्यादा सुस्ती और उठनेकी शक्तिका न रहना। कण्ठके ऊपर बहुत अधिक स्पर्श-कातरता। जलीय पदार्थ निगलनेके समय, वह नासारन्ध्रसे बाहर निकल जाता है (एरम-ट्राइ, लेक-कैन, लेके, लाई, मार्क, सायानेट)।

पाकस्थली ।—अग्निमान्द्य। पाकाशयसे प्रायः लगातार गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा-स्राव हुआ करता है (आइरिस वार्सि); इससे यद्यपि कोई तकलीफ नहीं मालूम होती तथापि इसके द्वारा मिचली दूर नहीं होती। वमन,—पहले पाकाशयस्थित खाये हुए पदार्थ आदि और इसके बाद गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्माकी कै होती है (आइरिस-वी, कैलि-बाई)। मिचली और बार बार निगलनेकी प्रवृत्ति, दुरारोग्य कब्जियत।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कैलि-बाई, ऐसिड-म्यु, ऐपिस, मार्क-सायन, मार्क-प्रोटो, फाइटो, एरम-ट्राई, कैलि-म्यु,

शक्ति ।—मूल या विचूर्णसे तृतीय दशमिक विचूर्ण तक व्यवहृत हुआ करता है।

लिखनेमें लगे रहना, विषय-सम्बन्धी चिन्ताओंसे आक्रान्त और बहुत अधिक शारीरिक परिश्रम करनेवालोंका सर दर्द। पाकस्थलीमें खालीपन और सुस्ती मालूम होनेके साथ ही साथ सरमें दर्द (इग्ने, सिपि, सल्फ)। माथेमें जगह जगहके बाल उड़ जाते हैं (ऐलोपेसिया=फास)। ऐसा मालूम होता है, मानो एक "हवाई" माथा छेदकर निकल गयी है इस ढंगका दर्द।

आंख।—उपभिल्ली प्रदाह रोगके बाद क्षीण-दृष्टि, पहचाननेकी शक्तिका अभाव। स्नायविक अवसादकी वजहसे, पलकें आपसे आप गिर जाती हैं और आंखें बन्द हो जाती हैं (कोली, कास्टि, जेलसि, ग्रैफ, सिपि);—विशेषकर बायीं आंखकी पलक। ऐसा अनुभव होना मानो आँखमें कोई सलाई या धूलका कण गिर गया है। आंखमें जलन और करकराहट होती है, आँखसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है, आंखें श्लेष्मासे भरी,—विशेषकर संध्याके समय। पलकें फूली; सवेरे सट जाया करती हैं (सिपा, इयुफ्रे, हिप, ग्रैफ); बाईं आँखकी निचली पलक पर अंजनी। बायी आंख प्रायः बन्द रहा करती है। दाहिनी आँखसे कनपटीतक तेज दर्द, दोनों कनपटी हाथसे दबा रखनेपर आराम मालूम होता है। आंखके किनारे इस ढंगका दर्द होता है, मानो जखम हो गया है तथा आँखमें इस ढंगकी जलन मालूम होती है, मानो धुआँ लग गया है (सिपि, क्रोकस); बाईं आँखमें इस तरहका दर्द होता है मानो न जाने कितना रोया है; बाईं आँखमें तेज दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है; टपक हुआ करती है और धूपमें दर्द बढ़ जाता है। पढ़नेके समय आँखें थक जाती हैं। आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते फिरते हैं (चायना, कास्टि, कोना, सिपि)।

कान।—कानमें नाना प्रकारकी आवाजें आती हैं (चायना, कास्टि, ग्रैफ, पलस)। श्रवण शक्ति बहुत तेज, ऊँची आवाज बहुत कष्टकर और असह्य मालूम होती है।

नाक।—दोनों छेद रुकेसे मालूम होते हैं; स्वच्छ और गाढ़े गोंदकी तरह (केलि-बाई) श्लेष्मा-स्राव। नयी सर्दीके लक्षणके साथ लगातार प्रबल छींक, नासा-रन्ध्रमें पीले रंगकी पपड़ीसे ढका जखम, घोर लाल रंगका रक्तस्राव। स्राव आदि बहुत बदबूदार।

लज्जाशील, और क्रोधी स्वभाव। (२) सरमें चक्कर आना,—इसके साथही माथेके पिछले भागमें दर्द, पेटमें खालीपन मालूम होना, धीरे धीरे शरीर हिलानेपर अच्छा रहता है; बहुत दिनोंतक मानसिक परिश्रम करनेके बाद सर दर्द। (३) इन्द्रियोंमें सुस्ती और रमणके बाद सुस्ती मालूम होना। कमर और हाथ पैरोंमें पक्षाघात और उनका अवश मालूम होना—परिश्रमसे वृद्धि। (४) मसूढ़े छिद्र भरे और उनसे सामान्य कारणसे ही रक्त-स्राव होना। (५) पेशाब या अन्यान्य स्राव कमला नेबू या सुनहरे रंगकी तरह पीले।

लक्षणावली।

मन।—उद्वेगकी अधिकता, सदा शंकान्वित चित्त; पुराने बन्धु आदि किसीसे भी मिलनेसे डरता है; यदि उससे कोई बात करता है, तो चिढ़ उठता है; सभी विषयोंमें निराशा; लज्जाशील; क्रोधी स्वभाव; सामान्य मानसिक परिश्रम करनेपर भी सुस्ती मालूम होना; बहुत अधिक आलस्य और विषाद; सामान्य परिश्रमका काम भी बहुत भारी मालूम होता है। स्नेह-विकार, स्वामी, पुत्र आदिके प्रति भी निष्ठुरताका आचरण करता है। काल्पनिक पदार्थ पकड़नेके लिये बाहु फैला देता है। बच्चोंको रातमें भय (अरम-ब्रोम, केलि-ब्रोम)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—सोने बाद (कास्टि,लैके, पल्स, रास), बैठनेपर (कैम्फो, कैमो, पल्स, रास), खड़े होनेपर (कक्यु) और ऊपरकी ओर देखनेपर (कैल्के, क्युप्रम, ग्रेफा, लैके, पल्स, साइलि, टैबाक), सरमें चक्कर आना। कपालके पिछले भागमें सर-दर्द,—सारी रात रहा करता है और दर्दकी वजहसे बार बार नींद खुल जाया करती है; शय्यासे उठनेपर अच्छा हो जाता है, सरके पिछले भागमें और कमरमें दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है,—चित्त होनेपर घटता है और बहुत थकावट मालूम होती है, सोनेपर और आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेपर घट जाता है (सिरियम-ऑक्सेलिक, और लैकेसिस)। आँखसे मस्तिष्कका निचला भाग भेदकर, सरके पिछले भागतक दर्द मालूम होता है, रातमें बढ़ जाता है; खा लेने और धीरे धीरे टहलनेपर घटना। आर्त्तव-स्रावके पहले और आर्त्तव-स्रावके समय सरमें दर्द, दाहिनी आँखसे सरके पिछले भागतक उत्ताप मालूम होना, मलने, सोने, खाने और धीरे धीरे टहलनेपर घटता है तथा आवाजसे बढ़ जाता है; सरमें दर्दके साथ भूख लगना। मस्तिष्कमें खूनकी कमी, सदा पढ़ने

लिखनेमें लगी रहना, विषय-सम्बन्धी चिन्ताओंसे आक्रान्त और बहुत अधिक शारीरिक परिश्रम करनेवालोंका सर दर्द। पाकस्थलीमें खालीपन और सुस्ती मालूम होनेके साथ ही साथ सरमें दर्द (इग्ने, सिपि, सल्फ)। माथेमें जगह जगहके बाल उड़ जाते हैं (ऐलोपिसिया=फास)। ऐसा मालूम होता है, मानो एक "हवाई" माथा छेदकर निकल गयी है इस ढंगका दर्द।

आंख।—डपथिरीया प्रदाह रोगके बाद क्षीण-दृष्टि, पहचाननेकी शक्तिका अभाव। स्नायविक अवसादकी वजहसे, पलकें आपसे आप गिर जाती हैं और आंखें बन्द हो जाती हैं (कोलो, कास्टि, जेलसि, ग्रैफ, सिपि);—विशेषकर बायीं आंखकी पलक। ऐसा अनुभव होना मानो आंखमें कोई सलाई या धूलका कण गिर गया है। आंखमें जलन और करकराहट होती है, आंखसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है, आंखें श्लेष्मासे भरी,—विशेषकर संध्याके समय। पलकें फूली; सवेरे सट जाया करती हैं (सिपा, इयुफ्रे, हिप, ग्रैफ); बाईं आंखकी निचली पलक पर अंजनी। बायी आंख प्रायः बन्द रहा करती है। दाहिनी आंखसे कनपटीतक तेज दर्द, दोनों कनपटी हाथसे दबा रखनेपर आराम मालूम होता है। आंखके किनारे इस ढंगका दर्द होता है, मानो जखम हो गया है तथा आंखमें इस ढंगकी जलन मालूम होती है, मानो धुआं लग गया है (सिपि, क्रीकस); आंखमें इस तरहका दर्द होता है मानो न जाने कितना रोया है; बाईं आंखमें तेज दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है; टपक हुआ करती है और धूपमें दर्द बढ़ जाता है। पढ़नेके समय आंखें थक जाती हैं। आंखके सामने काले विन्दु सब उड़ते फिरते हैं (चायना, काक्यु, कोना, सिपि)।

कान।—कानमें नाना प्रकारकी आवाजें आती हैं (चायना, कास्टि, ग्रैफ, पलस)। श्रवण शक्ति बहुत तेज, ऊंची आवाज बहुत कष्टकर और असह्य मालूम होती है।

नाक।—दोनों छेद रुकेसे मालूम होते हैं; स्वच्छ और गाढ़े गोंदकी तरह (कैलि-बाई) श्लेष्मा-स्राव। नयी सर्दीके लक्षणके साथ लगातार प्रबल छींक, नासा-रन्ध्रमें पीले रंगकी पपड़ीसे ढका जखम, घोर लाल रंगका रक्तस्राव। स्राव आदि बहुत बदबूदार।

मुखमण्डल।—आँख और दोनों गाल गड्ढेमें धँसे और चेहरा नीलापन लिये, दाहिने पार्श्वका स्नायुशूल, ठण्डे प्रयोगसे घटना। हनुकी अस्थिमें लगातार कांटा गड़नेकी तरह दर्द, खानेके बाद, बोलनेपर, चलने या स्पर्श-करनेपर घट जाता है। बायें गालमें उत्ताप मालूम होना, मानो उस गालके पास दीया रखा हुआ है। कर्णमूल और बगलकी गाँठें फूली और छूनेसे तकलीफ होना।

मुख विवर।—सवेरे मुँहसे निकली हुई हवा बहुत ही बदबूदार होती है। बाईं ओरके निचले हनुकी नीचेवाली गाँठें सब फूल जाती हैं और उन्हें छूनेसे तकलीफ होती है। जीभ, सरसोंके चूरकी तरह भूरे रंगके लेपसे ढकी रहती है या कभी कभी सफेद अथवा हरी आभा लिये पीले रङ्गके मैलसे ढकी रहती है; जीभकी पीठ अकड़ जाती है और किनारे लाल और तेज दर्दसे भरे रहते हैं। मुख-विवरका ऊपरी अंश कहीं कहीं फूला हुआ, ऐसा मालूम होता है, कि चर्बीसे लकीर खींच दी गयी है। बहुत ज्यादा लार बहती है और वह गाढ़ी तथा नमकीन रहा करती है; मुंहका स्वाद बहुत कड़वा, विशेषकर सवेरे हो जाता है। मसूढ़े बहुत शिथिल हो जानेके कारण उनसे खूनका स्राव होता है, दाँत जड़से अलग हो जाते हैं और उन्हें छूनेसे ही खून निकलता है। सर्दी लगते ही दाँतोंमें दर्द होने लगता है। बहुत ज्यादा लार बहनेके साथ ही साथ दाँतमें दर्द, जीभ ऐसी मालूम होती है, मानो टकराती है या तालुमें सट गयी है।

गलेके भीतर।—दोनों गांठें बढ़ी हुई और उन्हें छूनेसे दर्द, खास कर बायीं ओरकी (लेके); गलेमें बहुत अधिक रूखापन मालूम होना, मानो अनाज आदिकी छाल लगी हुई है। सवेरे दोनों ही गल-ग्रन्थियाँ सफेद रंगकी झिल्लीसे ढकी मालूम होती हैं और इस नकली झिल्लीका थोड़ा अंश जिह्वा-मूलके पार्श्वके दोनों गह्वरोंकी बन्धनीके ऊपर भी दिखाई देता है, जैसा कि उपझिल्ली रोगमें हुआ करता है; बायीं गलग्रन्थिसे इसी कानके भीतरी प्रदेश तक प्रचण्ड सुई वेधनेकी तरह दर्द फैल जाता है। दाहिनी गल-ग्रन्थिमें भयानक दर्द, निगलनेके समय वह दर्द बढ़ जाता है। सवेरे सोकर उठनेपर बहुत ज्यादा नमकीन श्लेष्मा निकलकर मिचली [illegible] है।
से गलेके भीतरतक ऐसा मालूम होता है, [illegible]
ऐसाफि)।

पाकस्थली।—मीठी चीजें आदि खानेकी तथा सिरकेकी खट[illegible] और बहुत ज्यादा परिमाणमें बरफकी तरह ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा। भूख खूब लगती है, परन्तु खानेका पदार्थ देखनेपर फिर रुचि नहीं रहती, भोजन के बाद मिचली और इसके बाद ही औंकाई आने लगती है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें खालीपन मालूम होना और सुस्ती (इग्ने, सिपि, सल्फ)। कलेजा धड़कना और खूनकी कै। पित्तमय डकार, भोजनके बाद बढ़ना। वायु निकलनेके बाद मिचलीका घट जाना। आर्त्तव-स्रावके समय पाकस्थलीमें शब्द हुआ करता है, ऐसा दर्द होता है, मानो किसीने घूंसा मार दिया है।

अन्त्राशय।—यकृत-प्रदेशमें दबाव डालनेपर दर्द होता है। प्लीहामें सुई या सलाई गड़नेकी तरह दर्द, शरीर हिलानेपर बढ़ना। कोखमें बहुत दर्द, छींक आनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो दोनो कोखे फट जायँगे; बार बार छींकनेकी इच्छा। तुरत ही पाखाना लग जानेके साथ ही साथ तलपेटमें शूलकी तरह दर्द, सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर घटना (कोलो, [illegible])। आँतें आदिका नीचेकी ओर खिंचना, सीधे होकर बैठनेपर घटना, [illegible] में और पानी पीनेपर बढ़ना। पेट फूलना और इस ढंगका दर्द, मानो ऐंठन या मरोड़ा हो रहा है। भोजनके समय बढ़ना।

मलान्त्र और मल।—उदरामय,—मल कीचड़की तरह, पानी जैसा पतला; बहुत ज्यादा वेग; बदबूदार वायु निकलना और पाखाना होने बाद कांखना या सफेद बदबूदार और [illegible] न होनेवाला [illegible] वजनेके पहले न रुकनेवाला बड़ी तेजीसे पाखाना लगता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें, बिना दर्दका, बदबूदार अजीर्ण, काली आभा लिये पाखाना होता है; सवेरेका भोजन, अथवा दोपहर और शामके भोजनके बाद बढ़ जाना। खाते खाते पाखाना लग जाता है ([illegible], फेरम) [illegible] पैदा हुआ उदरामय ([illegible], [illegible]), इसके साथ ही शारीरिक और मानसिक अवसाद।

रक्तामाशय।—मल, बिना [illegible] [illegible],—[illegible] [illegible] पैदा हो जाता है और पेट फूल जाया करता है। [illegible],—[illegible] धोवनकी तरह ([illegible] तरह) मल ([illegible], [illegible], [illegible])। [illegible] बाहर निकल आना या [illegible] [illegible] जाना ([illegible], [illegible])। बाहरी [illegible] फूला और [illegible] [illegible]।

पेशाव।—पेशाबका रंग कमला नीबूकी तरह (ऐब्सिन्थ) या केशर-की तरह गहरा पीला रंग, तली कुछ लाल आभा लिये धुमैली। प्रसवके बाद मूत्रनालीमें जलन मालूम होना। बच्चोंको शय्यामें पेशाब हो जाना (सिपि, सिना); पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना। मूत्रनालीसे खूनका स्राव।

पुं-जननेन्द्रिय।—काम-प्रवृत्तिकी प्रबलता। सवेरे लिङ्गमें कड़ा-पन, रमण-शक्तिका घटना या एकदम नष्ट हो जाना; क्लैव्य (ध्वजभङ्ग)। सवेरे पेशाबके वेगके साथ लिङ्गमें कड़ापन पैदा होता है। रातमें जो वीर्यपात होता है, उसमें दर्द होता है। रमणके बाद बहुत सुस्ती मालूम होती है और उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती तथा दृष्टि क्षीण हो पड़ती है (कास्टि, कैलि-कार्ब)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत असमयमें और बहुत थोड़ा आर्त्तव-स्राव; खूनका रंग अकसर काला रहता है और पहले दिन कुछ गाढ़ा हो जाता है। ऋतु-स्रावके समय पाकस्थलीमें नाना प्रकारके शब्द हुआ करते हैं और दोनों पैरोंमें बहुत दर्द हुआ करता है, मानो स्वास्थ्य-भंग हो जानेका उपक्रम हो रहा है। ऋतु होनेके कई दिन पहले कमजोरी मालूम होती है और रजःस्रावके समय आँतें आदि नीचेकी ओर खिंचती हैं। ऐसा मालूम होता है; मानो पेट फूलकर फट जायगा. बेचैनी मालूम होना शरीरको हिलाने अथवा पेटको दबाकर सोनेपर घटना (कमरका दर्द पेटको दबाकर सोनेपर घट जाता है=ऐसिड-ऐसेट, और सिना तथा ऐलोट); बायें अण्डाधार या डिम्बाधारमें तेज दर्द, चित होकर सोने या टेढ़े होकर सोनेपर घटना (लैके; बढ़ना=फास)। उदरके बाएं पार्श्वमें और बाएं डिम्बाधारमें दर्द (एपिस; लिलि-टाइग्रि, लैके, आस्टिलेगा); उदरके बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वमें फैल जाता है (लैके,—दाहिने पार्श्वसे बाएं पार्श्वमें=लाइ)। प्रदर,—स्राव पीला या कुछ हरी धारा लिये. सड़ी गन्ध मिला रस; यह स्राव जहां लगता है, वहीं छाल या रसभरे दाने पैदा हो जाते हैं, इसके साथही थोड़े समयतक होनेवाला ऋतुस्राव। रजःस्रावके चार पाँच दिनोंतक रमणेच्छा बहुत अधिक हुआ करती है। गर्भावस्थामें खून मिला स्राव (काक्यु, रास, ड्रिलियम, बहुत विश्रामके बाद और मानसिक विषादकी वजहसे=ऐसिड-नाइ,—प्रसवके [illegible] साथ=कैमो; पाँचवें और सातवें महीने में=सिपि)।

श्वास यन्त्र।—खांसी—स्वरनालीके नीचे उग्रताकी वजहसे खांसी ('वेल,सिपा, हिप, लेके)। बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ा, सफेद या पीली आभा लिये श्लेष्मामय बलगम निकलना ; गलेमें दबाव मालूम होकर (लेके) एका-एक खांसी पैदा हो जाती है। यक्ष्मारोगमें सुनहले रंगका पीला बलगम निकलता है। श्वास-रोग—बहुत थोड़ा खानेपर भी बढ़ जाता है ; सीढ़ी चढ़नेपर श्वास रुकनेका उपक्रम (आर्स, कैलि-नाइट्रि)। सीढ़ी चढ़नेपर कलेजा धड़कना ; खुनकी कै और कलेजा धड़कना ; थोड़ा भी शरीर हिलानेपर हृत्‌स्पन्दन।

प्रत्यङ्ग आदि।—ग्रन्थियोंके फूलनेकी वजहसे गलेकी अकड़न (कोना, आयोड देखो); छातीमें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ श्वास-कृच्छ्रता, चित होकर सोने, बैठने या चलनेपर बढ़ना ; किसी अवलम्बनपर भार देकर ठहर जानेपर घट जाना। सरके पिछले भागमें और कमरमें दर्दकी वजहसे दर्द होकर नींद खुल जाती है, चित सोनेपर घटता है और सोकर उठनेपर आराम हो जाता है। बहुत अधिक इन्द्रिय परिचालनकी वजहसे मेरुमज्जाका क्षय (ऐगार)। पीठमें और हाथ पैरोंमें लगातार दर्द, धीरे धीरे हिलानेपर घटना। कन्धा और दोनों बाहुओंमें दर्द,—धीरे धीरे हिलानेपर घटना। सवेरे सो सकता है। स्नायविक अस्थिरता (बेचैनी) और थोड़ा भी कारण होनेपर बहुत कातर हो जाना ; निचला पैर स्थिर नहीं रख सकता ; दोनों पैरोंकी पेशियों में खासकर जंघाकी, पैरकी पोटलीकी पेशीमें कपकपी मालूम होती है। दोनों बाहु और अंगुली आदिकी पेशियोंका संकोचन। पीठ तथा प्रत्यङ्गों का सुन्न हो जाना ; शारीरिक परिश्रमसे बढ़ना। मानसिक और शारीरिक सुस्ती।

वृद्धि।—भोजनके बाद, सवेरे शय्यासे उठनेपर, रोगवाला अंग दबाकर सोनेपर, बैठने या चलनेपर, रातमें ३ बजेसे ५ बजेके समय, बहुत सवेरे, सर्दी लगनेपर, रमणके बाद, छींकनेपर, सूर्यकी ओर मुंहकर खड़े होनेपर, पानी पीनेपर, आर्त्तव-स्रावके पहले चित होकर सोनेपर।

उपशम।—आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेपर, सोनेबाद, किसी चीजपर भार देकर ठहरनेपर, सीधे बैठनेपर, सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर, वायु निकलने पर, उत्ताप लग जानेपर, शरीर धीरे धीरे हिलानेपर, घरके बाहरकी निर्मल हवा सेवन करनेपर।

पेशाब ।—पेशाबका रंग कमला नीबूकी तरह (ऐब्सिन्थ) या केशर-की तरह गहरा पीला रंग, तली कुछ लाल आभा लिये धुमैली। प्रसवके बाद मूत्रनालीमें जलन मालूम होना। बच्चोंको शय्यामें पेशाब हो जाना (सिपि, सिना); पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना। मूत्रनालीसे खूनका स्राव।

पुं-जननेन्द्रिय ।—काम-प्रवृत्तिकी प्रबलता। सवेरे लिङ्गमें कड़ापन, रमण-शक्तिका घटना या एकदम नष्ट हो जाना ; क्लैव्य (ध्वजभङ्ग)। सवेरे पेशाबके वेगके साथ लिङ्गमें कड़ापन पैदा होता है। रातमें जो वीर्यपात होता है, उसमें दर्द होता है। रमणके बाद बहुत सुस्ती मालूम होती है और उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती तथा दृष्टि क्षीण हो पड़ती है (कास्टि; केलि-कार्ब)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत असमयमें और बहुत थोड़ा आर्त्तव-स्राव ; खूनका रंग अकसर काला रहता है और पहले दिन कुछ गाढ़ा हो जाता है। ऋतु-स्रावके समय पाकस्थलीमें नाना प्रकारके शब्द हुआ करते हैं और दोनों पैरोंमें बहुत दर्द हुआ करता है, मानो स्वास्थ्य-भंग हो जानेका उपक्रम हो रहा है। ऋतु होनेके कई दिन पहले कमजोरी मालूम होती है और रजःस्रावकी समय आँतें आदि नीचेकी ओर खिंचती हैं। ऐसा मालूम होता है; मानो पेट फूलकर फट जायगा, बेचैनी मालूम होना शरीरको हिलाने अथवा पेटको दबाकर सोनेपर घटना (कमरका दर्द पेटको दबाकर सोनेपर घट जाता है=ऐसिड-ऐसेट, और सिना तथा ऐब्रोट); बायें अण्डाधार या डिम्बाधारमें तेज दर्द, चित होकर सोने या टेढ़े होकर सोनेपर घटना (लैके ; बढ़ना=फास)। उदरके बाएं पार्श्वमें और बाएं डिम्बाधारमें दर्द (एपिस; लिलि-टाइग्रि, लैके, आस्टिलेगा); उदरके बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वमें फैल जाता है (लैके,—दाहिने पार्श्वसे बाएं पार्श्वमें=लाइ)। प्रदर,—स्राव पीला या कुछ हरी धारा लिये, सड़ी गन्ध मिला रस ; यह स्राव जहां लगता है, वहीं छाल या रसभरे दाने पैदा हो जाते हैं, इसके साथही थोड़े समयतक होनेवाला ऋतुस्राव। रजःस्रावके चार पाँच दिनोंतक रमणेच्छा बहुत अधिक हुआ करती है। गर्भावस्थामें खून मिला स्राव (काक्यु, राय, ह्रिलियम, बहुत विश्रामके बाद और मानसिक विषादकी वजहसे=ऐसिड-नाइ,—प्रसवके दर्दकी तरह दर्दके साथ=कैमो ; पाँचवें और सातवें महीने में=सिपि)।

श्वास यन्त्र।—खाँसी—स्वरनालीके नीचे उग्रताकी वजहसे खाँसी (वेल,सिपा, हिप, लैके)। बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ा, सफेद या पीली आभा लिये श्लेष्मामय बलगम निकलना ; गलेमें दबाव मालूम होकर (लैके) एकाएक खांसी पैदा हो जाती है। यक्ष्मारोगमें सुनहले रंगका पीला बलगम निकलता है। श्वास-रोग—बहुत थोड़ा खानेपर भी बढ़ जाता है ; सीढ़ी चढ़नेपर श्वास रुकनेका उपक्रम (आर्स, कैलि-नाइट्रि)। सीढ़ी चढ़नेपर कलेजा धड़कना ; खूनकी कै और कलेजा धड़कना ; थोड़ा भी शरीर हिलानेपर हृत्स्पन्दन।

प्रत्यङ्ग आदि।—ग्रन्थियोंके फूलनेकी वजहसे गलेकी अकड़न (कोना, आयोड देखो); छातीमें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ श्वास-कष्टता, चित् होकर सोने, बैठने या चलनेपर बढ़ना ; किसी अवलम्बनपर भार देकर ठहर जानेपर घट जाना। सरके पिछले भागमें और कमरमें दर्दकी वजहसे दर्द होकर नींद खुल जाती है, चित सोनेपर घटता है और सोकर उठनेपर आराम हो जाता है। बहुत अधिक इन्द्रिय परिचालनकी वजहसे मेरुमज्जाका क्षय (पेगार)। पीठमें और हाथ पैरोंमें लगातार दर्द, धीरे धीरे हिलानेपर घटना। कन्धा और दोनों बाहुओंमें दर्द,—धीरे धीरे हिलानेपर घटना। सवेरे सो सकता है। स्नायविक अस्थिरता (बेचैनी) और थोड़ा भी कारण होनेपर बहुत कातर हो जाना ; निचला पैर स्थिर नहीं रख सकता ; दोनों पैरोंकी पेशियों में खासकर जंघाकी, पैरकी पोटलीकी पेशीमें कपकपी मालूम होती है। दोनों बाहु और अंगुली आदिकी पेशियोंका संकोचन। पीठ तथा प्रत्यङ्गों का सुन्न हो जाना ; शारीरिक परिश्रमसे बढ़ना। मानसिक और शारीरिक सुस्ती।

वृद्धि।—भोजनके बाद, सवेरे शय्यासे उठनेपर, रोगवाला अंश दबाकर सोनेपर, बैठने या चलनेपर, रातमें ३ बजेसे ५ बजेके समय, बहुत सवेरे, सर्दी लगनेपर, रमणके बाद, छींकनेपर, सूर्यकी ओर मुंहकर खड़े होनेपर, पानी पीनेपर, आर्त्तव-स्रावके पहले चित होकर सोनेपर।

उपशम।—आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेपर, सोनेबाद, किसी चीजपर भार देकर ठहरनेपर, सीधे बैठनेपर, सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर, वायु निकलने पर, उत्ताप लग जानेपर, शरीर धीरे धीरे हिलानेपर, घरके बाहरकी निर्मल हवा सेवन करनेपर।

पेशाव ।—पेशाबका रंग कमला नीबूकी तरह (ऐब्सिन्थ) या केशरकी तरह गहरा पीला रंग, तली कुछ लाल आभा लिये धुमैली । प्रसवके बाद मूत्रनालीमें जलन मालूम होना । बच्चोंको शय्यामें पेशाब हो जाना (सिपि, सिना) ; पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना । मूत्रनालीसे खूनका स्राव ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—काम-प्रवृत्तिकी प्रबलता । सवेरे लिङ्गमें कड़ापन, रमण-शक्तिका घटना या एकदम नष्ट हो जाना ; क्लैव्य (ध्वजभङ्ग) । सवेरे पेशाबके वेगके साथ लिङ्गमें कड़ापन पैदा होता है । रातमें जो वीर्यपात होता है, उसमें दर्द होता है । रमणके बाद बहुत सुस्ती मालूम होती है और उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती तथा दृष्टि क्षीण हो पड़ती है (कास्टि, केलि-कार्ब) ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत असमयमें और बहुत थोड़ा आर्त्तव-स्राव ; खूनका रंग अकसर काला रहता है और पहले दिन कुछ गाढ़ा हो जाता है। ऋतु-स्रावके समय पाकस्थलीमें नाना प्रकारके शब्द हुआ करते हैं और दोनों पैरोंमें बहुत दर्द हुआ करता है, मानो स्वास्थ्य-भंग हो जानेका उपक्रम हो रहा है । ऋतु होनेके कई दिन पहले कमजोरी मालूम होती है और रजःस्रावके समय आँतें आदि नीचेकी ओर खिंचती हैं । ऐसा मालूम होता है; मानो पेट फूलकर फट जायगा, बेचैनी मालूम होना शरीरको हिलाने अथवा पेटको दबाकर सोनेपर घटना (कमरका दर्द पेटको दबाकर सोनेपर घट जाता है=ऐसिड-ऐसेट, और सिना तथा ऐलोट); बायें अण्डाधार या डिम्बाधारमें तेज दर्द, चित होकर सोने या टेढ़े होकर सोनेपर घटना (लैके ; बढ़ना=फास) । उदरके बाएं पार्श्वमें और बाएं डिम्बाधारमें दर्द (एपिस; लिलि-टाइग्रि, लैके, आस्टिलेगा) ; उदरके बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वमें फैल जाता है (लैके,—दाहिने पार्श्वसे बाएं पार्श्वमें=लाइ)। प्रदर,—स्राव पीला या कुछ हरी धारा लिये, सड़ी गन्ध मिला रस ; यह स्राव जहां लगता है, वहीं छाल या रस भरे दाने पैदा हो जाते हैं, इसके साथही थोड़े समयतक होनेवाला ऋतुस्राव । रजःस्रावके चार पाँच दिनोंतक रमणेच्छा बहुत अधिक हुआ करती है । गर्भावस्थामें खून मिला स्राव (काक्यु, रास, ट्रिलियम, बहुत विश्रामके बाद और मानसिक विषादकी वजहसे=ऐसिड-नाइ,—प्रसवके दर्दकी तरह दर्दके साथ=कैमो ; पाँचवें और सातवें महीनेमें=सिपि) ।

केलि सल्फ्यूरिकम ।

(KALI SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—पोटेसियम सल्फेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—दमा; मोतियाबिन्दु; सर्दी, ताण्डव, अजीर्ण; खसड़ा; कर्कटका जखम; बहरापन; प्रमेह; कच्छु; आमवात; नकसीर फूटना; विचर्चिका; वात; सरमें चक्कर आना; हूप-खाँसी; रास-टक्सकी विषाक्तता ।

उपयोगिता और आभास ।—केलि-सल्फ तन्तुजायु चिकित्सा शास्त्रका पल्सेटिला जैसा है। इसके सभी श्लेष्मिक-स्राव पीले रंगके होते हैं और इसके सभी लक्षण उत्तापसे बढ़ जाते हैं और खुली निर्मल हवा सेवन करनेपर घट जाते हैं और पल्सेटिलाकी तरह इसका दर्द भी जगह बदला करता है तथा पल्सेटिलाकी तरह यह भी नये पैदा हुए बच्चे को आंख उठनेमें विशेष उपयोगी है। आरक्त-ज्वर, खसड़ा या छोटी माता, उपझिल्लीका कर्कट रोग वगैरह जिन रोगोंमें उपत्वक् और उपझिल्लीमें विकार हो जाया करता है, उनमें केलि-सल्फ विशेष लाभदायक है। सारे शरीरमें भार मालूम होना, हमेशा ऐसी थकान मालूम होना कि न जाने कितना परिश्रम किया है, सरमें चक्कर आना, जाड़ा लगना, कलेजा धड़कना, मानसिक उत्सुकता, चिन्ता-विषाद, दाँत और सरका दर्द, सरकी बीमारियाँ और अंग प्रत्यङ्गोंमें दर्द वगैरह इसका प्रधान क्रिया-फल है।

लक्षणावली ।

मस्तक ।—माथेमें भयंकर चक्कर आना,—शय्या छोड़कर उठनेपर (ब्राइक्य्, ओलियेन, सल्फ) या खड़े होनेपर बढ़ता है (काक्यु)। वातकी वजहसे सरमें दर्द (कैल्क, चिनिन-आर्स, केलि-बाई, कैलो, लैके, मार्क, रेनान, फाइटो, सेङ्गिगु) गर्म घरमें और सन्ध्याके समय बढ़ना और निर्मल वायु लगनेपर घटना। [illegible] माथा हिलानेपर दर्द

तुलनीय ।—रास-टक्स, वैप्ट (सान्निपातिक अवस्था); ऐनाकार्ड (स्नायविक अजीर्णता); हायोसा (उन्माद); फेरम (आहारके समय); ध्रुले (मूर्च्छा-वायु); कैलि-कार्ब (संगमके बाद बढ़ना); ओपियम (तन्द्रा); आर्निका (आमवात) इत्यादि।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐगार, नैट्र-म्यूर, ऐसिड-म्यूर, लैके, ऐक्टिया, जेलस, जिङ्कम, कैलि-कार्ब, क्रोटोन, फेरम, ओपि, सिरियम-आक, आर्स, कार्बो-वे, फाइटो, क्रियो।

शक्ति ।—डा० हनिमैनके मतसे ३ रे दशमिकसे १२ दशमिक विचूर्ण; पर आजकल २०० शततमिक और उससे भी ऊँचे क्रम व्यवहारमें आते हैं।

कैलि पिक्रिकम।
(KALI PICRICUM)

दूसरा नाम ।—पोटासियम पिक्रेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास ।—पाण्डुरोग, उदरामय, शूल, आक्षेप, प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है। साधारणतः यकृत पर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—पिक्रिक-ऐसिड, फेरि-पिक्रि।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

पुं-जननेन्द्रिय ।—प्रमेह,—स्राव पीला या पीली आभा लिये श्लेष्मा-मय (नेट्र-सल्फ, थूजा)। रुके हुआ प्रमेहकी वजहसे अण्डकोषका प्रदाह या एकशिरा (पल्स, क्लिमेट, नेट्र-म्यूर, ऐण्टि-टार्ट)। लाला-मेह।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव—बहुत देरसे और थोड़ा स्राव, इसके साथ ही उदरमें दबाव और भार मालूम होना ; पीनस रोगाधिकारमें प्रति तीन सप्ताहका अन्तर देकर रजःप्रकाश हुआ करता है। प्रदर,—स्राव पीला, जलवत या रेतकी तरह।

श्वास-यंत्र ।—वायुनली भुज प्रदाह, श्वास-रोग,हूप-खाँसी, फेफड़ेका प्रदाह वगैरह रोगमें पीला लसदार काफ, श्लेष्मा बहुत सहजमें निकल जाता है ; छातीमें श्लेष्मा हमेशा घड़घड़ाया करता है और पतला श्लेष्मा-भरी, घड़ घड़ शब्द करनेवाली खाँसी (ऐण्टि-टार्ट, कैलि-कार्ब, फास, स्टैन) आया करती है, संध्याके समय गर्म जल-वायुमें वृद्धि। स्वरतन्तुके ऊपर गाढ़ा श्लेष्मा संचय होनेकी वजहसे स्वरभङ्ग (हिप, स्पञ्जि)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दनका अकड़ना,—माथा बाईं और फूला करता है और दोनों कन्धे कुछ ऊँचे हो जाया करते हैं। दर्द आदि भी तेज गतिसे एक स्थानसे दूसरी जगह हट जाता है (कैलि-बाई, लैक-कैन, पल्स) और गर्म घरमें बढ़ना और निर्मल वायु लगनेपर आराम मालूम होना।

त्वचा ।—शल्कसे ढके उद्भेद, बाहुमें ही ज्यादा होते हैं ; गर्म पानीसे धोनेपर अच्छे रहते हैं। कामला, रुखा हुआ खसड़ा। पीले रङ्गके गोंदकी तरह रस-स्राव करनेवाले जखम। उपझिल्लीका कर्कट रोग (आर्स, आयोड, हाइड्रैस्ट, थूजा)। उपत्वचा रूसीसे ढँकी (पिक्र-लिक, फास, ऐन्थ्राक्सिन)। छोटे छोटे सूक्ष्म दाने सब आपसमें मिल जाते हैं और इसी लिये रोगवाली जगह लाल सूजन-भरी मालूम होती है। रगड़ने या खुजलानेपर त्वचाका प्रदाह। नख रोग, विचर्चिका (आर्स, थाइराइड)। आमवात (एपिस, आर्टिका-यु)।

वृद्धि ।—उत्तापसे, गर्म घरके अन्दर, सन्ध्याके समय (पल्स)। गोधूलिके समय और बसन्त ऋतुके आरम्भमें वायु-परिवर्त्तनके समय (ऐण्टि-टार्ट, नेट्र-सल्फ)।

मालूम होना। पीली लसदार रूसी।(सफेद=कैलि-म्यूर, फास, थूजा)। माथेके बाईं ओरके तथा मूंछमें जगह जगहके केश उड़ जाना (सूजाक होने बाद)।

आँख।—आँख प्रदाहित पीवकी तरह या पीले रङ्गका श्लेषा निकलना (पल्स, कैलि-आई, कैलि-म्यूर, स्वर्ण वर्ण,=सुनहरे रंगका=कैलिफास)। नये पैदा हुए बच्चोंकी आँखोंका प्रदाह=आर्जेण्ट-नाई, केल्के, ऐसिड-नाइ पल्स, रास)।

कान।—सर्दीकी वजहसे बहरापन, कर्णपश्चान्नालीकी सूजन (कैलि-म्यूर); स्राव पतला, पीला और लसदार (लाई, नेट्र-सल्फ, हुलैप्स)।

नाक।—पीनस या नकसीर फूटना रोगमें स्वाद और आघ्राण शक्तिका लोप हो जाना; स्राव पीला बदबूदार और कभी कभी पानीकी तरह, बाएं रन्ध्रसे ज्यादा सर्दीका स्राव, पुरानी सर्दी पीले रंगकी और गाढ़े गोंदकी तरह श्लेषाका स्राव।

मुखमण्डल।—मुंहका दर्द, गर्म घर और सन्ध्याके समय बढ़ना। निर्मल वायु लगनेपर घटना। दाहिने गालके भीतर या दाहिनी नाकके छेदमें उपझिल्लीका कर्कट रोग (आर्स, आयोड, थूजा, हाइड्रेस, कैलि-सायनिट) दोनों ओंठोंमें छाले और सूजन।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द,—गर्म घरमें बढ़ जाना (केमो, पल्स), और निर्मल हवा लगनेपर आराम मालूम होना (ब्राई, सिपि, नक्स, पल्स)। स्वाद शक्तिका गायब हो जाना या खानेकी चीजोंका कोई स्वाद न मिलना। जीभ पीले गोंदकी तरह श्लेषासे लिपटी हुई, कभी कभी दोनों पार्श्वके स्थान सफेद मालूम होते हैं।

पाकस्थली।—मस्तिष्ककी कमजोरी या जड़ताके साथ पाकाशयमें सुस्ती मालूम होना। रोगिनीको हमेशा ऐसा मालूम होता है मानो उसकी बुद्धिमें विकार पैदा हो रहा है (ऐक्टि)। पीले रंगके लेप चढ़ी जीभके साथ मानो पाकस्थलीमें एक भारी चीज दबी हुई है, ऐसा मालूम होना। ज्वालामयी तृष्णा, मिचली और वमन। गर्म चीजें पीनेसे भय मालूम होता है। अर्शके साथ कब्जियत (नक्स, सल्फ)। मलका पतलापन,—मल पीला और लसदार गोंदकी तरह। कामला या पाण्डु रोग। हूपखाँसी रोगमें पेट वायुसे फूला हुआ और कड़ा।

स्नायुशूल ; पलकोंका गिरना ; गर्भावस्थामें अण्डलाल मिला पेशाब ; उपदंशसे पैदा हुआ गलेका जखम ; कानका प्रदाह ; तम्बाकूका दुष्परिणाम ; सरमें चक्कर आना ; वमन इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—नया और तेज स्नायुशूल ; वात ; छोटी सन्धियोंके प्रदाहकी वजहसे बीमारियां और वात या छोटी सन्धियोंके प्रदाहके प्रतिक्षेपकी वजहसे हृत्पिण्डकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है। हृत्शूल और वातकी बीमारी यदि पर्यायक्रमसे पैदा होती है या मौजूद रहे तो इससे बहुत फ़ायदा हुआ करता है। इसका दर्द सुई या शूल बेधनेकी तरह और पिसनेकी तरह नीचेकी ओर जानेवाला और सुन्न करनेवाला होता है। दर्द आदि स्नायुकी गतिके अनुसार चलता है, एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें जाकर ठहरता है और रोगवाली सन्धि गर्म, लाल तथा फूल जाया करती है। जरा भी हिलानेपर वहांका दर्द बढ़ जाया करता है। माथा झुकाने या नीचेकी ओर देखनेपर सरमें चक्कर आ जाता है। दाहिनी आँख और आँखके गोलेमें तेज सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है तथा पेशियोंकी अकड़न आँख हिलानेपर बढ़ जाया करती है ; आंखका दर्द और सरका दर्द सूर्योदयके समय आराम होता है, दोपहरमें खूब बढ़ता है और सूर्यास्तके समय आराम हो जाता है। छातीके भीतर धड़कन हुआ करती है और इसी वजहसे रोगी अपने जीवनके सम्बन्धमें डरा करता है ; दर्द हृत्पिण्डको बेधकर पृष्ठ-फलकके नीचे जाता है। कलेजेकी धड़कन, झुक जानेपर बढ़ जाती है। श्वासकृच्छ्रताके साथ हृत्पिण्डका बहुत ही तेज स्पन्दन। नाड़ीकी गति धीर, प्रायः छूनेपर मालूम नहीं होती, चेहरा तथा हाथ पैरका अगला भाग बरफकी तरह ठण्डा—ये कई कैल्मियाके प्रधान क्रियाफल और निर्णायक लक्षणकी तरह माने गये हैं।

लक्षणावली।

मन।—शयनावस्थामें अच्छा रहता है ; पर चलने-फिरनेपर सरमें चक्कर आने लगता है, उद्वेग, कलेजा कांपना और अप्रसन्न भाव पैदा हो जाता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—दर्द और दृष्टिहीनता (मार्क, आइरिस, नेट्र-म्यूर, केलि-बाई, वेरेट), इसके साथही हाथ पैरमें दर्द और

घटना ।—निर्मल वायु लगनेसे (पल्स, ऐण्टि-टार्ट) ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—पल्स, नेट्र-सल्फ, फास, स्ट्रैनम, ऐण्टि-टार्ट, कैलि-बाई, लैक-कैन, आर्स, हाइड्रेष्ट, (अजीर्ण और उपदतमें तुलनीय) । रास-टक्सकी विषाक्ततामें दोषघ्न ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक तक ।

कैलि टेल्यूरिकम ।
(KALI TELLURICUM)

दूसरा नाम ।—पोटैसियम-टेल्यूरेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल दोनों ही रूपमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—श्वास-प्रश्वासमें बदबू, मुँहसे लार बहना, जीभ फूली, वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—टेल्यूरियम, फास, कैलि-फास ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैल्मिया लैटिफोलिया ।
(KALMIA LATIFOLIA)

दूसरा नाम ।—अमेरिकन लोरेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल हो जानेपर ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है;—हृत्शूल ; अम्लत्व ; मूत्र-रोग ; शोथ ; बाधक ; पाकाशयका शूल ; मूर्च्छा-वायु ; वात ; आमवात ; सन्धिवात ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; प्रदर ; कटिवात ;

बढ़ना और द्वारावरोधिनी पेशीमें विकृति। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें जगह बदलने वाला वातका दर्द—दर्द बायें बाहुतक फैल जाता है। शूल या छुरी वेधनेकी तरह दर्द, हृत्पिण्डको भेदकर बाएं पृष्ठफलकतक फैल जाता है इसके साथही हृत्पिण्डमें भयङ्कर टपक, नाड़ी चीण पर तेज ; या धीर-गति चीण, छूनेपर प्राय: मालूम नहीं होती, अनियमित ; मुखमण्डल सफेद और हाथ पैर ठण्डे हो जाते हैं ; इसके अलावा कभी कभी बहुत ही धीर गति और चीण हो जाया करती है। श्वासमें तकलीफके साथ हृत्पिण्डकी गति बहुत तेज। वातका दर्द एकाएक हाथ पैरसे हृद्पिण्डमें प्रतिचिप्त हो जाता (कोलचि, ऐब्रोट)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनकी पेशियां सब छूनेपर या गर्दन हिलानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। गर्दन अकड़ी हुई ; विशेषकर कशेरुकाका सिर (गर्दन और पीठके बीचवाले अंशमें जहां एक कशेरुका कुछ ऊंची उठी हुई है) वाले स्थानमें स्नायुशूल, दर्द गलेसे दाहिने बाहु, कनिष्ठ या अनामिका (४ थी अंगुली) में चला जाता है और रह रहकर पैदा होता है तथा रात आरम्भमें बढ़ जाता है। मेरुदण्डके बीचमें लगातार दर्द, इसके साथही उत्ताप और जलन। नितम्ब देशमें शलाका वेधनेकी तरह दर्द होता और तुरन्त गायब हो जाता है, एकाएक पैदा होता है और तुरन्त अच्छा हो जाता है, शरीर हिलानेपर घटता है। पीठकी राहसे दर्द नीचेकी ओर चलता है मानो मेरुदण्ड टूट जायगा—इस ढंगका दर्द। त्रिकास्थि प्रदेशमें सुन्न जैसा मालूम होना, वात वेदना,—बहुत ही तेज, एकाएक दर्द अपनी जगह बदल देता है और एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें चला जाता है। रोगवाली सन्धि गर्म, लाल और फूली ; रोगवाली जगह जरा भी हिला देनेपर दर्द बढ़ जाता है (ब्राई, देखो)। वात वेदना ; बाहुके ऊपरी अंशमें और पैरके निचले अंशपर आक्रमण करती है,—सोनेके समय बढ़ जाती है। कन्धेमें दर्द, दाहिने कन्धेकी त्रिकोण-पेशीका वात। बाएँ पृष्ठफलकके निचले अंशमें सुई वेधनेकी तरह दर्द। बाएं बाहुमें दर्द और सुन्न मालूम होना ; कोहनीकी सन्धिमें कुटकुटाहट (ऐमोन-कार्ब, ऐग्टिक्रूड, बार्ई कोहनोमें ऊंची आवाजके साथ फुटन—जिञ्जिव)। ऊरु शिखरसे पैरकी राहसे चरणतक छेदनेकी तरह दर्द। पैरकी पोटलीकी पेशी चीण मालूम होती है। सभी पेशियां बहुत चीण और क्लान्त मालूम होती हैं ; रोगी परिश्रम बिलकुल ही करना नहीं चाहता यहां

पेशाब ।—बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होनेपर सर-दर्द घट जाता है (जेलस, साइलि)। लाला मूत—निम्नाङ्गमें दर्द और सारे शरीरमें शोथके साथ चेहरा मलिन—दीप्तिहीन, उजड़ा और त्वचा बिना पसीनेकी।

स्त्री जननेन्द्रिय ।—बाधक, ऋतु बहुत ही तकलीफ देनेवाला; हाथ, पैर, कमर और दोनों उरुके भीतरी भागमें बहुत दर्द मालूम होना। प्रदर कुछ पीला, ऋतुके एक सप्ताह बाद स्राव आरम्भ हो जाता है; प्रदर स्रावके समय दर्द आदि बढ़ जाया करता है।

श्वासयंत्र ।—ऐसा मालूम होता है, कि किसीने कण्ठनालीको अँगुलीसे दबा रखा है। सांस लेने और छोड़नेके समय स्वरनलीके आक्षेपकी तरह आवाज। गलेमें सूखापन या त्वचामें रगड़ लगनेकी तरह मालूम होना और इसी वजहसे बार बार खाँसी; बहुत ही सहजमें धुमैला और सड़ा हुआ या नमकीन स्वादका बलगम निकलता है। श्वास-कष्ट; गलेमें सूजन मालूम होती है; हृत्स्पन्दन,—उद्वेग और छातीमें दर्दके साथ कलेजा धड़कना—हृत्शूल रोगमें। साँस लेने और छोड़नेके समय और शरीरको थोड़ा भी हिलानेपर छातीमें बहुत गर्मी मालूम होती है। वक्षस्थलमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है। हृदपिण्डके ऊपरी स्थलसे शूलकी चोटकी तरह तेज दर्द वक्षको भेदकर पृष्ठ-फलक और बाईं बाँहतक उतर आता है (रास, स्पाई, कैक्ट)। वक्ष और पीठकी पेशीका वात,—शरीरके प्रत्येक संचालनसे बढ़ जाता है।

हृत्पिण्ड ।—छाती धड़कती है (कैक्ट; केलि-कार्ब; लेके; लोरो; लिलियम-टाइ; लिथिन; नक्स-मस; ऐसिड-आक्जेल)। हृत्स्पन्दन,—उद्वेग, वाधा-प्राप्त श्वास-प्रश्वास, सुस्ती या श्वास-कृच्छ्रता, हाथ पेरोंमें दर्द और वक्षके निचले अंशमें सूई वेधनेकी तरह दर्द; मुंहके दाहिने पार्श्वमें स्नायुशूल, हृत्स्पन्दन,—सामनेकी ओर झुकनेपर बढ़ जाता है। सोने बाद कलेजा धड़-कना और इसी वजहसे गलेके भीतर तक टपक मालूम होती है और समूची देह काँपा करती है; बाईं करवट सोनेपर बहुत बढ़ जाता है (डेफनो, फास, पल्स) और चित सोनेपर घटता है। रोगीके मनमें बहुत डर पैदा हो जाता है। वातके कारण हृदन्तर्वेष्टित प्रदाह और इसी वजहसे हृत्पिण्डका

बढ़ना और द्वारावरोधिनी पेशीमें विकृति। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें जगह बदलने वाला वातका दर्द—दर्द बायें बाहुतक फैल जाता है। शूल या छुरी बेधनेकी तरह दर्द, हृत्पिण्डको भेदकर बाएं पृष्ठफलकतक फैल जाता है इसके साथही हृत्पिण्डमें भयङ्कर टपक, नाड़ी क्षीण पर तेज; या धीर-गति क्षीण, छूनेपर प्रायः मालूम नहीं होती, अनियमित; मुखमण्डल सफेद और हाथ पैर ठण्ढे हो जाते हैं; इसके अलावा कभी कभी बहुत हो धीर गति और क्षीण हो जाया करती है। श्वासमें तकलीफके साथ हृत्पिण्डकी गति बहुतही तेज। वातका दर्द एकाएक हाथ पैरसे हृद्पिण्डमें प्रतिक्षिप्त हो जाता है (कोलचि, ऐम्रोट)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनकी पेशियां सब छूनेपर या गर्दन हिलानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। गर्दन अकड़ी हुई; विशेषकर कशेरुकाका सिर (गर्दन और पीठके बीचवाले अंशमें जहां एक कशेरुका कुछ ऊंची उठी हुई है) वाले स्थानमें स्नायुशूल, दर्द गलेसे दाहिने बाहु, कनिष्ठ या अनामिका (४ थी अंगुली) में चला जाता है और रह रहकर पैदा होता है तथा रातके आरम्भमें बढ़ जाता है। मेरुदण्डके बीचमें लगातार दर्द, इसके साथही उत्ताप और जलन। नितम्ब देशमें शलाका बेधनेकी तरह दर्द होता है और तुरन्त गायब हो जाता है, एकाएक पैदा होता है और तुरन्त अच्छा हो जाता है, शरीर हिलानेपर घटता है। पीठकी राहसे दर्द नीचेकी ओर चलता है मानो मेरुदण्ड टूट जायगा—इस ढंगका दर्द। त्रिकास्थि प्रदेशमें सुन्न जैसा मालूम होना, वात वेदना,—बहुत ही तेज, एकाएक दर्द अपनी जगह बदल देता है और एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें चला जाता है। रोगवाली सन्धि गर्म, लाल और फूली; रोगवाली जगह जरा भी हिला देनेपर दर्द बढ़ जाता है (ब्राई, देखो)। वात वेदना; बाहुके ऊपरी अंशमें और पैरके निचले अंशपर आक्रमण करती है,—सोनेके समय बढ़ जाती है। कन्धेमें दर्द, दाहिने कन्धेकी त्रिकोण-पेशीका वात। बाएँ पृष्ठफलकके निचले अंशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। बाएं बाहुमें दर्द और सुन्न मालूम होना; कोहनीकी सन्धिमें कुटकुटाहट (पेमोन-कार्ब, ऐण्टिक्रूड, बाई कोहनीमें ऊंची आवाजके साथ फूटन=जिञ्जिव)। बन्द शिखरसे पैरकी राहसे चरणतक छेदनेकी तरह दर्द। पैरकी पोटलीकी पेशी क्षीण मालूम होती है। सभी पेशियां बहुत क्षीण और क्लान्त मालूम होती हैं; रोगी परिश्रम बिलकुल ही करना नहीं चाहता यहां

तक कि सीढ़ी चढ़कर ऊपर भी नहीं जा सकता। उदरामयके साथ सुस्ती और माथेमें खालीपन मालूम होना।

त्वचा ।—शरीरकी त्वचाकी क्लान्ति, थोड़ासा पसीना निकलनेके साथ शरीरमें जगह जगह कुटकुटाहट होती है। जगह जगह लाली, सूजन और प्रदाह पैदा हो जाता है, मानो फोड़ा निकलना चाहता है। हाथके ऊपर विसर्पकी तरह उद्भेद और प्रदाह पैदा हो जाता है (रास)—इसके साथ ही साँसमें तकलीफ।

निद्रा ।—अस्थि-वेष्टमें दर्दकी वजहसे नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है। सोया सोया उठकर खड़ा हो जाता है और टहलने लगता है, निद्रित अवस्थामें बोलता है (ऐको, ऐलेन, इग्ने, केलि-कार्ब, लेडम, पल्स); मस्तिष्क बिगाड़ देनेवाले सपने; हत्याके सपने।

वृद्धि ।—प्रदरस्रावके समय, छूनेपर, रोज रातमें, सोने बाद तुरन्त ही; सूर्यादय और दोपहरके समय, उत्तापसे, निर्मल वायु लगनेपर (सर-दर्द और आँखकी बीमारियाँ), मानसिक परिश्रमसे, शरीर हिलाते ही, झुककर बैठनेपर, माथा झुकानेपर और नीचेकी ओर देखनेपर।

घटना ।—सूर्यास्तके समय, सर्दी लगनेपर, चित सोनेपर, सीधे होकर बैठनेपर या खड़े होनेपर और भोजनके बाद।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष या दोषघ्न ।—ऐकोन, बेलाडो।

तुलनीय ।—टैबेकम (हृत्पिण्डका रोग, नाड़ी धीर), पल्स (घूमने वाला दर्द), लेडम, ऐग्नेट (वात); इस्कू (मलान्त्र); रासटक्स (आम-वात); ऐकोन, डिजि (हृत्पिण्ड); आर्स (स्नायुका दर्द); जेलस (पलक); बेलाडो (सर-दर्द); डाइस्को (पाकाशयका शूल); केलि-बाई, (सर्दी); लाइको (सन्धिवात); कैक्टस, स्पाइजि (वात, अन्त्रशूल)।

सदृश ।—लिडम, कैक्ट, टैबाक; रोडो, स्पाइजि, कोलचि, ऐग्नेट, रास, ऐक्टि, ऐसिड-बेन, केलि-बाई, लेक्-केन, लिथिया-कार्ब, लाईको ; ऐलो। हृत्पिण्डके रोगमें नक्स, थाइरायड, और स्पाइजिलियाके बाद कैल्मियाका प्रयोग करनेपर बहुत अधिक फायदा होता है।

शक्ति ।—१म दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।
